

#### श्रीरायचन्द्र जिनागमसंघहे

# भगवत्सुधर्मस्वामित्रणीत

# श्रीमद्भगवतीसूत्र

(च्याख्याप्रज्ञप्ति)

मूळ अने अनुवादसहित

चतुर्थखंड

शतक १६-४१

प्रेरक-श्रीयुत पुंजाभाई हीराचंद

अनुवादक अने संशोधक-

पंडित भगवानदास हरखचंद दोशी

अमदावाद

मध्यकः शोपाळदाख जीवावार् पटेख, वैन साहित्व प्रकारत दुस्त, अवव्यक्तात्रकः

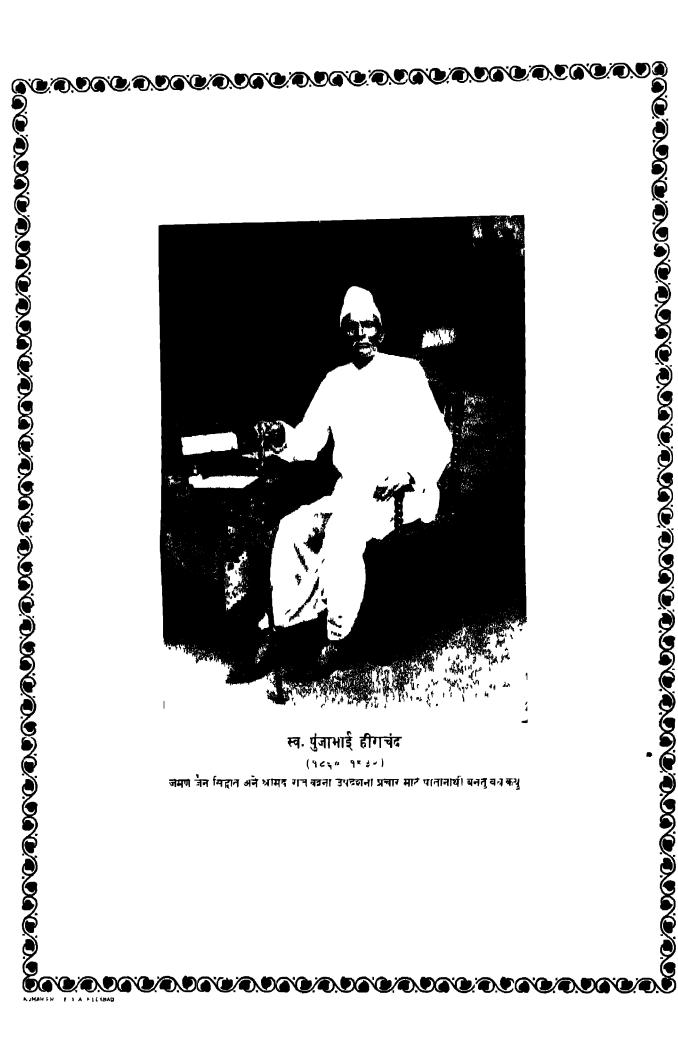
मुद्रकः-रामसंद्र येस् रोडने, निर्णयसागर प्रेस. २६-२८ कोलभाटकेन मुंबई

#### संपादकीय निवेदन

आ चोथो माग १६ मा शतकथी आरंभी ४१ मा शतक सुधीमां पूरो प्रकाशित थाय छे. आ चोथा मागना अन्ते नीचेना मुद्दाओं संबंधे कहेवानुं छे.

- १ संशोधन अने प्रतिओनो उपयोग. २ अनुत्राद. ३ परिशिष्टो.
- १ संशोधन अने प्रतिओनो उपयोग. आ सूत्रना संशोधनमां क, ख, ग, ध अने ङ ए पांच प्रतिओनो उपयोग करवामां आन्यों छे. अने ते सिवाय एक ताडपत्रनी प्रतिनो पण उपयोग करेलो छे. ते बधी प्रतिओना पाठान्तर न लेतां तेमां जे पाठ शुद्ध जणायों ते मूक्वामां आन्यों छे. आगमोनां पाठान्तर सिहत शुद्ध संस्करणनी अनिवार्य आवश्यकता छे. परन्तु ते कार्यमां प्राचीन हस्तिलिखित पुष्कळ प्रतिओनी तथा समय वगेरे साधनोनी जरूर होवाथी अने हाल ते बधी सामग्रीनो अभाव होवाथी पाठान्तरो आप्या सिवाय शुद्ध पाठ आपी संतोष मानवो पड्यो छे. प्रतिओनो सामान्य परिचय बीजा भागना निवेदनमां आप्यो छे तथी अहीं आपवामां आन्यो नथी.
- २ अनुवाद, भगवतीसूत्रनो अनुवाद मूळ पाठने अनुसरीने करवामां आव्यो छे अने विषयने स्पष्ट करवा माटे वधारानां शब्दो [ ] आवा कोष्ठकमां आप्या छे. ते सिवाय कठण विषय समजाववा आवश्यक टिप्पणो आपवामां आव्या छे. वाचकनी सुगमता खातर दरेक उदेशके प्रश्नवार सूत्रनो विभाग करी अने अनुक्रमे आंकडा मूकी तेनी नीचे तेज सूत्रना आंकडामां अनुवाद आपवामां आव्यो छे. अवान्तर प्रश्नने जुटा सूत्र तरीके न गणतां मूळ प्रश्नना सूत्रमांज नेनी गणना करी छे. ते सिवाय ज्यां प्रश्न नथी परन्तु पांग्र के वर्णनास्मक भाग छे त्यां पण जुदी जुदी कंडिका प्रमाणे जुदां जुदां सूत्र गणवामां आव्यों छे. प्रष्टना प्रान्ते विषयनुं सूचन पण करे छे छे.
- ३ परिशिष्टो, अहीं वाचकोने उपयोगी पाय ते माटे जुदा जुदा सात परिशिष्टो आपवामां आव्यां छे. (१) पहेला परिशिष्टगां मगवतीसूत्रमां आवेला पारिभाषिक शब्दोनों कोश आपवामां आव्यों छे अने जे स्थळे ते शब्द वापरवामां आव्यों छे तेनो पृष्टांक आपेल छे. (२) बीजा परिशिष्टमां देश, नगरी अने पर्वतादिनां नामों छे. (३) त्रीजा परिशिष्टमां चैत्य अने उद्याननां नामों छे. (४) चोषा परिशिष्टमां अन्यतीर्थिक अने तापसोनां नामों छे. (५) पांचमा परिशिष्टमां साधु साध्वीनां नामों, (६) छष्टा परिशिष्टमां श्रावक—श्राविकानां नामों. (७) अने सातमा परिशिष्टमां साक्षीरूपे जे जे प्रन्थोनों निर्देश कर्या छे ते ते प्रन्थोनां नामों आप्या छे. आ अनुवाद करवामां भाइश्री बेचरदासे करेला भगवतीसूत्रनी अनुवादनी कोपीनो पण उपयोग करवामां आव्यों छे माटे तेनी कृतज्ञतापूर्वक नोंध लउं छुं. आ अनुवाद करवामां अने तेना प्रकाशनमां काळजी राखवा छतां रही गयेला दोषोने माटे वाचको दरगुजर करको अने सूचन करशे एवी आशा राखी विरमुं छं.

भगवानदास दोशी



### चिरंजीव रोठ पुंजाभाई

दहेगाम पासे आवेला हरखजीना मुवाडामां तेमना पिता वेपार अर्थे रहेता. तेमनो मुख्य धंधो घीरधारनो हतो. कौटुंबिक संबंध अमदाबाद साथे हतो तेथी तेमनुं एक घर त्यां शामळानी पोळमां पण हतुं.

नानी उम्मरमां पिता गुजरी गएला तेथी तेमनुं पालन माता लेरी बाईए अने तेमना काकाए करेलुं. गामठी निशाळे बेसीने आंक लेखां नामुं वगेरे तेओ शीखेला. तेमने एक मोटा भाई पण इता. केटलाक कुटुंवीओ अमदाबाद रहेता इता. तेथी योग्य उम्मर धतां बने भाईओ अमदाबाद आवीने रह्या. मोटाभाई मीलना गृतरनो नेपार करता अने पुंजाभाईए गजीयाणीनी दुकानमां टुंका पगारथी नोकरी शरू करी अने पोतानी बाहोशी तथा प्रामाणिकताने लीधे भागीदार यह पाछळणी तेओ खतंत्र दुकानदार पण थइ शक्या इता. तेमनां प्रण लग्न यएलां. छेलुं ३६—३७ वर्षनी वये साणंदमां थएलुं. छेलां पत्नी समरथबाइथी तेमने एक पुत्र थयो, तेनुं नाम कचराभाइ हतुं. पण ए भाई चिरंजीव न घई शक्यो. लगभग ए अरसामां श्रीमद् राजचन्द्रनो तेमने सहवाम थयो अने ए सहवास वे एक वरस ठीक ठीक रह्यो. एने परिणामे एमनी दृष्टि समाजसेवाना रोकड धर्मखरूप कार्यो तरफ वळी. तेथी तेमणे फरता पुस्तकालयनी योजनीं, आविकाउचोगशाळा, श्रीरायचंद्रसाहित्यमंदिर, मजूरशाळा अने जिनागमप्रकाशकसभी वगेरे संस्थाओने उभी करवामां खूव फाळो आप्यो.

अमदाबादनी दादाभाई नवरोजजी टाईबेरीमां एमणे सारी संख्यामां पुस्तको मेट आपेलां छे अने ते श्री**मद्रायचंद्रसाहित्यमंदिर** ए नामणी जुदा विभाग तरीके त्यां राखवामां आवेलां छे.

वळी, श्रीमद्ना संबंधने लीघे तेओ महात्मा गांधीजीना सहवासमां वधारेमां ववारे आव्या एना परिणामे एमणे पुरातत्त्वमंदिर उघाडवामां असाधारण फाळो आप्यो जेयी श्रीराजचंद्रज्ञानमंडार स्थपायो. आ पछी तेमणे पोते एकलाए स्थापेली अने निमावेली जिना-गमप्रकाशकसभानी संस्थानुं काम गुजरात विद्यापीठने सोंपी तेने फरीवार लगभग रु० त्रीश हजारनुं दान आप्युं अने ए द्वारा विद्या-पीठना कार्यवाहकोए श्रीपुंजाभाई जैनग्रंथमाळा काढवी शरू करी.

तेओ सामाजिक सेवा करता कुटुवना छोकोने भुली गया न हता. पोताना व्यवसायमां दूरदूरनां पण सगांओने रोकीने नेमगे सारी पायरीए चढावेळा छे. छोमने कारणे कोई कुटुंबी कांई अव्यवस्था करतो तो पण नेना तरफ तेमनी अमीदृष्टि ज रहेती. एक कुटुं-बीए मोटी रकमनी अव्यवस्था करेली, ए रकम एक सार्वजनिक संस्थानी हती तेथी पोताना पदरथी ए रकम भरपाई करीने ए वखते पुंजामाईए पोतानी प्रामाणिकतानुं तेज बतावेळुं अने पेळा गोटाळो करनार स्वजन तरफ कहणावृत्ति ज दाखवेळी.

पोतानो पुत्र अकाळे काळवश थएलो होवाथी तेओए पोताना दौदित्रोने पुत्रवत् साचन्या, अने तेमना द्वारा शुद्ध देशी कापडनो पवित्र व्यवसाय करावीने तेमने सारी स्थिति उपर लावी मुक्या छे.

तेमनी छेलामां छेली खास नोंधवा जेवी प्रवृत्ति दांडी जवानी हती. उम्मरे वृद्ध अने शरीरे अशक्त होवा छतां तेमणे दांडीकू-चर्मा जवानी इच्छा महात्माजीने दर्शावेली पण महात्माजीए ज तेमने आश्रममां रहेवानो आग्रह करेली छता तेओ महात्माजी दांडी पहोंच्या पछी एकवार दांडी जई आवेला अने देशना गरीबो प्रत्येनी पोतानी दाज बतावीने ज मंतीप पामेला.

महात्माजीने तेमना उपर एटलो बधो प्रेम हतो के तेओ तेमने 'चिरंजीवी' शब्दथी संबोधता. श्रीमद्रायचंद्रभाईए तेमना उपर केटलाक कागळो लखेला ते उपरथी तेमना भक्त हृद्यनी प्रतीति थई शके एम छे. स्थळसंकोचने लीधे ए पत्रो अही नथी आपी शकाता.

टुंकामां श्रीपुंजामाई आप बळे वधेला अने सामाजिक कार्योमां ठेठ सुधी रस लेता रहेला. एमना जीवननु थोडुं घणुं अनुकरण धई राके तो पण घणुं छे.

७२ वर्षनी पाकी वये संवत् १९८८ना आसो वद ८ ने शनिवारना २२-१०-१९३२ना रोज तेमनुं अवसान थयुं. ते वखते महात्माजीए आश्रम समाचारमां जे लखेलुं छे ते आ साथे आपवामां आज्युं छे. ते द्वारा श्रीपुंजाभाईनी विशेष ओळखाण थई शके एम छे.

बेचरदास

१ गुजरातना नररत्न प्रसिद्ध साक्षर श्रीरमणभाई नीलकंडना इस्ते था योजना खुळी मूकेली.

२ स॰ पुंजामाईने श्रीमद्रायचंदभाईनो ए आदेश हतो के श्रीजिनागमां गुजरातीशावामां अनुवादित करीने सर्व लोक सुलम करवा. ते प्रमाणे तेमणे आ संस्थानी शरुआत करैली अने ए संस्थाने सुरक्षित राखवा जीवनपर्यंत प्रयक्ष पण करता रह्या.

३ आ ज्ञानभंदार अमदाबादमां छे, एमा जे जातनी साहित्यसामग्री एकठी कराएती छे एवी सामग्री आपणा देशना अन्य पुस्तकालयोमां चणी विरल जोवामां आवे छे. इस्तिखित पुस्तको पण एमां सचवाएलां छे.

४ स॰ श्रीपुंजाभाईना सजन भने जीवनपर्यंतना सहचर श्रीनेमचंदमाईए मोकळेली सामग्री उपरवी भा थोडुं रुखी शकायुं छे ते अर्थे कैमने यन्यवाद.

## चिरंजीवी पुंजाभाई

ज्यारे में पुंजाभाईने चिरंजीवी विशेषणथी लखवानुं शरु कर्युं त्यारे कोई बाळके आश्चर्यपूर्वक मने सवाल कर्यों "पुंजाभाई तो तमाराथी ए वये मोटा छे एने तमे चि० केम कही शको !" में कंईक आवो जवाब लख्यों हतोः 'पुंजाभाई वये तो मोटा छे पण मारी उपर ते एक निर्दीप बाळक जेटलो विश्वास मृके छे ने मारी भक्ति पण तेटलाज भावथी करे छे.' आ मारुं लखवुं अक्षरशः बरोबर हतुं. ए विश्वास अने ए भक्तिने सारु मारी योग्यताविषे मने शंका छे. पण पुंजाभाईना विश्वास विषे अने तेनी भक्तिविषे मने लेश पण शंका नथी. गमे ते प्रकारनुं मंकट आवे त्यारे पुंजाभाईने सारु मारो अभिप्राय वेदवाक्यरूपे काम करतो. पुंजाभाई बुद्धिहीन न हता पण बुद्धिपूर्वक तेणे मारी उपर विश्वास गूकवानो निश्वय करेलो.

ए पुंजाभाई जे अर्थमां में एने चि० करी संबोध्या ए अर्थमां आजे भले न होय पण तेथी बहु वधारे विस्तृत **अर्थमां** चिरंजीर्था छे.

तेने हुं चिरंजीवी कही संबोधतो खरो पण मारे तेने कंई शीखबवातुं न हतुं. हुं तो पुंजाभाईना गुणनो पुजारी हतो. पुंजाभाईनी नम्नता, पुंजाभाईनी धर्मपरायणता, पुंजाभाईनी सल्यपरायणता, पुंजाभाईनी उदारता मारी दृष्टिए कोईथी आंटी शकाय एवी न हती. पुंजाभाईमां सर्वार्पणनी शक्ति हती.

पुंजाभाई रायचंद कविने पोतानुं सर्वस्व मानता. हुं पण रायचंदभाईनो पुजारी हतो तेथी पुंजाभाई मारा तरफ आकर्षाया हता. पुंजाभाईनी जेम हुं रायचंदभाईने गुरुपद नहोतो. आपी शक्यो, तेनुं तेने दुःख न हतुं. पुंजाभाई समजता हता के कोईने गुरुपद दीधुं देवातुं नथी. लोहचुंबक जेम लोखंडने पोता प्रस्थे खेंची ले छे तेम गुरु शिष्यने पोता प्रस्थे खेंची ले छे.

पण रायचंदभाईने विषे हुं जे कंई कहेती ते पुंजाभाईने बहु गमतुं अने बधारे तो ए गमतुं के जे वस्तुनी हुं स्तुति करतो ते मारामां उतारवानो प्रयत्न करतो, आधी अमारी बच्चेनी गांठ दिवसे दिवसे दृढ थती गई.

आश्रमना आरंमधी ज पुंजामाईनो तेनी साथे निकट संबंध बंधायों ने जो के ते आश्रमवासी न थया छतां आश्रमवासी तरीके वर्तता. आश्रमना घणा संकटोमां पुंजामाईए भाग छीधो हतो. अमदावादनी बजारनी गुंचो पुंजामाई बतावे. अने जे जोईये ते पुंजामाई छावी आपे. पुंजामाईना माणसो आश्रमनी सेवा सारु गमें त्यारे वपराय, पुंजामाईनी दुकान अने घर आश्रमवासीओनुं राहेरमां आश्रयस्थान हतुं. सावरणीधी मांडीने अनाज, घी, इत्यादि केम अने क्यां ठीक मळी शके ए बनावनार पुंजामाई. पुंजाभाईनी देखरेग्वधी अने तेमनी सला-हथी आश्रमे घणा पैसा बचावी लीधा छे. जे जमीनमां हाल आश्रम छे ते शोधनार पण पुंजामाई- तेनो सोदो करनार पण पुंजामाई. आवी अनेक सेवाने सारु पुंजामाईए कोई दहाडो उपकारना वे शब्दोनी आशा सरखीये नथी करी. आश्रम पोतानुं छे. एम समजीने पुंजामाई छेवटनी घडी लगी वर्ली हता. पुंजामाईना निकट संबंधमां आवतां छतां पुंजामाईमां में अधीराई नथी जोई. नथी अतिशयोक्ति जोई. काम विना पुंजामाई बोले नहि. पुंजामाई लपसपमां भाग ले ज शाना है एनी वार्ता ते हंमेशा धर्मनी वार्ता होय. सजनोनुं स्मरण तेमने प्रिय हतुं.

युंजाभाईना मनमां कोईनो द्वेप में कदी अनुभव्यो नथी. कोईने विषे कटुवचन बोलतां में पुंजाभाईने सांभव्या नथी.

पुंजाभाई वेपारमां कुशळ हता, वे पैसा कमाया पण हता, धारत तो बधारे कमाई शकत पण रायचंदभाईना प्रसंगमां आव्या पछी तेमणे पोतानो पथारो संकेल्यो हतो, एवी मारी उपर छाप छे. पुंजाभाईनी शाख पहेली श्रेणीनी हती. तेने त्यां मुकेलुं द्रव्य दूवे धोईने पाहुं मळी शके.

आश्रमना पैसानी व्यवस्था पुंजामाई ज करता अने लांबा काळ खगी गुजरात प्रतिक समितिना खजानची पण हता.

पुंजाभाई पुण्यात्मा हता, मुमुक्षु हता, आ युगमां एना जेवा निस्ट्रही मनुष्यो आंगळीना वेढा उपर गणाय तेटलाये मळवा मुक्केळ पडे.

पुंजाभाईनो स्पर्श आश्रमने पावन करनारो हतो. पुंजाभाईनो धर्म सांकढो न हतो. तेना धर्ममा बधा धर्मने स्थान हतुं. आवा पुंजाभाई चिरंजीवी ज छे. आपणे सहु तेना गुणतुं चितवन करीये. तेना संबंधने योग्य बनवा प्रयत्न करीए.

( आश्रमसमाचारमां-गांधीजी )

#### आध्यात्मिक शोध

जीवनतंत्रना रहस्यनी जिज्ञासामांथी आध्यात्मिक शोधनुं झरण छूटे छे. ए जिज्ञासा ज आध्यात्मिक शोधनो मूळ पायो छे. आपणा देशमां जे जे महान आत्मशोधको थया छे, जेने आपणे संतो कहीये छीए तेओ ए जिज्ञासाथी ज प्रेराइने जीवन अने जगतनी गूंच उकेटवा पोते करेळी प्रवृत्तिनो जुदो जुदो कृतांत पोतपोतानी शैळीथी मूकी गया छे.

जेमनां बुद्धि अने मन ठीक ठीक विकास पाम्यां छे एवा संस्कारसंपन्न, आरोग्यसंपन्न, तेजस्वी, आत्मशोधक मुमुक्षु डोकोने पूर्वोक्त जिज्ञासायी या नीचेना केटडाक प्रश्नो थाय ते तदन स्वामाविक छे.

आ जगत ए छुं छे ! आ बधी मोहमाया ए छुं छे ! जगतमां दुःख अने असंतोषनां कारणो कयां छे ! ते टळी शके के निह ! टळे तो केवी रीते ! हुं छुं छुं ! हुं क्यांयी, शामाटे, क्यारे अने केवी रीते आ जगतमां आब्यो छूं ! जो हुं कोई छुदो छुं तो सदाने माटे आ विश्वयी मारो छूटकारो यशे के निह ! आ जगतनी उत्पत्ति क्यारे, केवी रीते, शामाटे अने कोने माटे कोणे करी! छुं आ विश्व कोई बार नाश पामशे के निह ! जो नाश पामशे तो आ बधा पदार्थो—नदी, समुद्र, पहाड, जंगलो, प्राणीओ ए बधुं क्यां जशे ! हुं पोते क्यां जईश ! छुं विश्वना प्रलय पछी हुं रहेवानो छुं ! जो रहीश तो कया आकारमां अने कोने आधारे ! जो निह रहुं तो तेनुं छुं कारण ! छुं एवी कोई विशेष शक्ति छे के जे आ विश्वने फरीयी सर्जी शके !

भा बधा प्रश्नो कोई भाजकालना नवा नथी पण वेदकालनी शरूआतधी एटले के ज्यारे आर्थगण संस्कारसंपन अने बुद्धिसंपन हतो स्मार्थी ज चर्चाता आव्या छे. आ प्रश्नो साथे आध्यासिक शोधने गाढ संबंध छे.

बेदो, उपनिषदो, ब्राह्मणो, अग्रारण्यको वगेरेमां आध्यात्मिक शोध करनारा ते ते दिव्यपुरुषोए ए प्रश्नो धने एवा बीजा धनेक प्रश्नो ऊपजावी तेनी चर्चा करेळी छे. अने जेम जेम बुद्धिबळ अने आत्मशोध उंडां जतां गयां तेम तेम बीजा पण अनेक शोधकोए ए प्रश्नो विषे जुदी खुदी दृष्टियी पोतपोताना जुदा जुदा विचारो दर्शाच्या छे.

वधुमां सांख्याचार्य कपिछ, न्यायप्रवर्तक अक्षपाद, विशेषवादी महर्षि कणाद वगेरे अनेक पुरुषोए ए प्रश्नो उपर वधारे प्रकाश आणवा प्रयास कर्यों छे. भगवान महावीरे अने भगवान बुद्धे पण जीवननी गूंच उकेल्याने जे आध्यात्मिक प्रयासी कर्या तेमां पण ए बधा प्रश्नो उपर अवश्य पोतपोतानी दृष्टिए योग्य प्रकाश नाखेलो छे.

भगवान बुद्ध विषे कहेवामां आवे छे के ते पोते बालपणथी चिंतनशील प्रकृतिना हता अने तेमनुं मन विश्वनी आ बाह्य प्रवृत्तिमां चौंटतुं न हतुं. माटे ज राजा शुद्धोदने तेमने राखवानी एवी व्यवस्था करेली के ज्यां सदा गानतान, रागरंग, विषयविलास अने अखंड स्वर्गीय सुख तेमने मळे के जेथी तेमनुं मन आ संसारमां चौंटी जाय. पण छेवटे राजा शुद्धोदनना आ बधा प्रयासी निष्फळ गया अने सिद्धार्थ पोतानी खी अने पुत्रने छोडीने मधराते, पोताना चित्तमां रहेली उंडी उंडी उदासीनता अने असंतोपनां कारणो शोधवा नीकळी पुत्रता तेमने एवी राजशाहीमां राखेला हता के मंद्याड शुं, घडपण शुं अने मरण शुं तेनी सुद्धां तेमने खबर नहिं पडेली. ज्यारे तेमणे मंद्वाड, घडपण अने मरण जोयां त्यारे तेओ वधारे विहुल बन्या अने ए दु:खोना अंतमाटे तेमणे प्रयास करवानुं एण नक्की कर्युं.

भगवान महावीर पण जेमनुं नानपणनुं नाम ब्रंधमान हतुं, जेमना माता अने पितानुं नाम अनुक्रमे त्रिश्च अने सिद्धार्य हतां, बचपणथी चिंतनशील अने संस्कारसंपन्न हता. तेमने लगती जैन साहित्यमां जे दंतकयाओं अने परंपराओं मळे छे ते उपर्यी एटछुं तो तारवी शकाय एम छे के तेमनुं मन आत्मशोध तरफ बचपणथी ज बळेलुं हतुं. साथे तेमनामां मातिपता तरफ घणो सद्भाव हतो जेथी तेमणे तेमना आप्रहंधी ज गृहस्थाश्रम स्वीकारेलो अने एक पुत्रीना पिता पण धया. तेमणे मातिपताना निर्वाण बाद पोताने बचपणधी जिप्तिय एवी आध्यात्मिक शोधने सबल प्रयक्तपूर्वक चालु करवानुं धारेलुं छतां तेओ पोताना वडील बंधुना प्रेममर्या आप्रहंथी एक वर्ष जेटलो क्खत बळी राजधानीमां ज रह्या पण ते दरम्यान तेमणे आध्यात्मिक शोधना साधन तरीके परापूर्वथी ज चाल्यो आवेलो संयममार्ग पोताना जीवनव्यवहारमां अमलमां मूक्यो. तेमनी पहेलां श्रमणोनी परंपरामां प्रार्थनाथ नामे एक प्रख्यात युगप्रवर्तक थयेला तेमज वैदिक परंपरामां अनेक प्रकारनां कर्मकांडो अने देहदंडनोनो रिवाज आत्मशोध करवामाटे चालु हतो ज.

जे साहित्य मगवान महावीरना अनुयायीओए गूंथेलुं छे ए जोतां एमनी सामेनी ए वधी श्रमणब्राह्मणपरंपराओनी माहिती आप-णने मळी शके एम छे. ए परंपराओमांथी प्रेरणा मेळवीने तेमणे हवे पोताना जीवननी गूंच उकेळवा अने विश्वमां रहेवा छतां तेनाथी यता त्रासोधी मुक्त रहेवानो मार्ग शोधवा अखंड अने उम्र प्रयत्न चालु कर्यो. तेओ पोतानी त्रीश वर्षनी उम्मरे एटले के भरखुवानीमां साधना करवा नीकळी पड्या, एथी ज एम जणाय छे के तेमने एमाटे केटली तालावेली इती. तेओ राजपाट, समृद्धि अने भोगविला-सनो लाग करीने कडकडता शियाळामां घर बहार नीकळी पड्या. बख्रयी देह ढांकवानी पण हुच्छा नहि केरेली.

घरेपी नीकळ्या पछी बरावर बार वर्ष सुघी तेमणे भारे साधना करी, जे साधनामां तेमने शारीरिक अने मानसिक अनेक कष्टी सहवां पढ्यां, जेनो सविस्तर निर्देश जैनेआगमोमां अकृत्रिम माषामां आपणी सामे मोजुद छे. मैजिसमनिकायना सिंहनादसुत्तमां जे जातनी रोमांचकारी साधना बुद्ध भगवाने पोते वर्णवेखी छे तेवी ज साधना आ भगवान वर्धमान-महावीरनी हती. ए साधनाना परिणामे तेओए हवे सर्वप्रकारनी स्थिरता साची मानसिक, वाचिक अने कायिक प्रवृत्तिओ पर तेओ निरंतर अंकुश राखी शके तेवा समर्थ थया. अने सर्व प्रकारनी आसक्ति, तृष्णा तेमणे ते साधनाद्वारा उच्छेदी नाखी. ए प्रमाणे स्थितप्रक्षपणुं अने वीतरागमाव प्राप्त कर्या पछी अने विश्वने छगतुं घणुं गंभीर मनन कर्या पछी पोताना जमानाना छोको के जेओ आर्योए स्थिर करेखा आदर्शयी घणा च्युत ययेखा हता अने जेओनी प्वी भ्रमणा हती के कर्मकांड के देहदंडमां ज सर्व सिद्धि समायेली छे, कर्मकांडमां हरेक प्रकारनी हिंसाने, असस्यने धार्मिक स्यान 👺—ते पण वेदने नामे, ईश्वरने नामे, ते टोकोनी ते अमणा टाळवा अने फरी वार आर्थोए शोधेला अहिंसा, सस्य, सर्वत्र बंधुमाव अने गुणनी प्रधानताना सिद्धांतीने प्रचारमां मूकवा देश, काल अने प्रजाशक्तिने अनुसारे तेओ पोतानां प्रवचनो मगध देशमां फरी फरीने करवा छाग्या,

आ ब्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रमां तेमनां केटलांक ते प्रवचनोनी नोंघोनो संप्रह तेमना समसमयी के परवर्ती अनुयायीओए करेलो छे.

आ प्रंथमां जीवनशुद्धिनी मीमांसा अने विश्वविचार ए बने मुद्दाओं परत्वे जे कांई कहेवामां आव्युं छे ते आजयी अदी हजार वर्ष पहेलांना सत्यना अने जीवनशुद्धिना उपासकोनी अगाध बुद्धि अने शुद्धिनुं उंडाण बताववाने पूरतुं है.

जो के प्रंथमां चर्चा बने मुद्दानी छे पण मुख्य मुद्दो तो जीवनशुद्धिनी मीमांसानो ज छे. विश्वविचारनो जे मुद्दो साथे चर्चेछो छे तेने जीवनशुद्धिमां सहायक समजीने चर्चवामां आवेलो छे. जीवनशुद्धि विनाना मात्र ते मुद्दाना नर्या ज्ञानधी ज श्रेयप्राप्ति नयी एम भगवान महावीरे पदे पदे कहेलुं छे. जीवनशुद्धिना मुद्दाने चर्चतां पण केटलीक एवी चर्चा करवामां आवी छे जे चर्चा ते समयनी रूटिने तोडी जीवनशुद्धिनो नवो मार्ग बतावनारी छे.

#### जीवनशुद्धि

था प्रयमां भगवाने कह्युं छे के संवर दुःख मात्रनो नादा करे छे, संवर एटले के इन्द्रियो उपरनो जय, मन उपरनो जय, वासना उपरनो जय; ट्रंकामां आत्मभानमां अंतरायमूत बधी वृत्तिओनो निरोध.

भगवाने कहां छे के कोई व्यक्ति अणगार—त्यागी—थाय एटले के तेने लोको श्रमण तरीके ओळखे एवो वेश पहेरे, एवी वेशधारी ब्यिक जो संवरिवनानी होय तो तेनो संसार घटवाने बदले वध्या ज करे छे अने ते भारेकर्मी धई आ अनादि अनंत संसारमां छांबा काळ सुधी रखड्या ज करे छे. ( मा० १ पा० ८१ ) मगवानना आ कथननुं तात्पर्य ए छे के मात्र वेशयी जीवनशुद्धि यती नयी, यई नयी अने षरो पण नहि. जीवनशुद्धिमां मुख्य कारण संवर छे ए भूछवुं न जोइए.

ए ज प्रमाणे जे प्राणी असंयत छे जेमां त्यागवृत्ति जरा पण जागेली नयी तेवा प्राणीओनो निस्तार नथी. एवी कोटिना प्राणीओमां जेको परतंत्रपणे पण इंदियो उपर अंकुरा राखे छे, रारीर उपर अंकुरा राखे छे अने भाषा उपर अंकुरा राखे छे तेको ए परतंत्रपणे केळवायेली सहनशक्तिने लीधे भविष्यमां सारी स्थिति मेळवे छे. (भा० १ पा० ८४) आमां मगवानना कथननुं तात्पर्य ए छे के परतंत्र-पणे पण केळवायेळो संयम जीवनविकासमां थोडी घणी मदद करी शके छे, तो जे मनुष्यो ए संयमने खेच्छाए केळवे तेओनो विकास सरल रीते थाय तेमां तो कहेवुं ज कुं!

<sup>&</sup>quot;णो चेव-इमेण वत्येण पिहिस्सामि तंसि हेमंते । ''ते पारगामी ( अगवान महाबीरे ) एवी संकल्प कर्यों के जीवनपर्यंत से पारए आवक्हाए एवं खु आणुधन्मियं तस्त्र" ॥ हुं आ वक्रवी (वेहने ) ढांकीश नहीं, तेमनी ए (संकल्प) सोग्य ज कहेवास" [ आचारांग सूत्र उपधान धुत म॰ ९ गाषा २ ]

२ जूओ क्षाचारांग---उपधानश्रुत क्षम्ययन ९।

३ जुओ भगवान बुद्दना पचास धर्म संवादी ।

४ ''दुःखेष्ट्यतुद्विप्रमनाः सुखेषु विगतस्प्रहः । गीतरागभयकोधः स्थितधीर्गुनिक्च्यते ॥''—गीता ।

एक सब्छे भगवाने जीवनशुद्धिने छक्षमां राखीने मननी स्थितिओ वर्णवी छे. ते स्थितिना तेमणे छ नाम आपेटा छे, जे जैन संप्रदायमां लेश्याने नामे प्रसिद्ध छे. मनुष्यनी अल्यंत क्र्ममां क्रू वृत्तिने कुण्णलेश्या कहेवामां आवी छे. जेम जेम ए क्रूरता ओछी पती जाय अने तेमां सास्विक वृत्तिनो भाव मेळातो जाय तेम तेम मानवजीवननो विकास वधतो जाय छे. ते विकासप्रमाणे ते चित्तवृत्ति- ओमां नाम पण जुदां जुदां बतावेछां छे. कुण्णलेश्या करतां जेमां योडो वधारे विकास छे ते वृत्तिने नीछलेश्या कहेवामां आवे छे. ते पछी जेम जेम वधारे विकास थतो जाय छे तेम तेम अनुक्रमे ते ते चित्तवृत्तिओने क्रापोत, तेज, पण अने शुक्रलेश्याना नामणी बोळखवामां आवे छे. आ नीचेना उदाहरणथी आ वृत्तिओनो मर्म सहजमां समजी शकाशे.

जेम कोई एक व्यक्ति पोतानी ज सुखसगवड माटे हजारो प्राणीओने लाचारीमां राखे एटले के जे प्राणीओद्वारा पोतानी अंगत सुखसगवड मेळवे छे ते प्राणीओना सुखनी तेने जरा पण दरकार नथी, ते प्राणीओ जीवे के मरे पण पेला सुखमोगीनी सगवडो तो सखवावी ज जोईए. आवा मनुष्यनी वृत्तिने कृष्णलेक्यानुं नाम आपी शकाय.

जे मनुष्य पोतानी सुखसगवडमां जरा पण ऊणप आववा देतो नथी पण ते सगवड जे प्राणीओहारा मळे छे तेमनी पण अज— पोषणन्याये जरातरा संभाळ ले छे. आ जातनी वृत्तिने नीखलेश्या कहे छे.

मुखसगवड आपनार प्राणीओनी पण जे पूर्वोक्त न्याये थोडी वधारे संभाळ ले ते मुखमोगीनी वृत्तिने कापोतलेश्या कही शकाय. आ त्रण लेश्याओमां वर्तनार माणसने पोते छुं छे तेनुं जरा पण मान होतुं नयी अने तेयी ज तेनामां बीजा प्रस्य सकारण मैत्रीवृत्ति राखवानो विचार पण आवतो नथी.

जे माणस पोतानी अंगत सुखसगवडने ओछी करे अने सुखसगवड आपनारा सहायकोनी ठीक ठीक संभाळ ले तेने तेजो— लेक्याबाळो कही शकाय.

जे माणस पोतानी सुखसगवड जरा वधारे ओछी करी, पोताना आश्रितोनी तेमज संबंधमां आवता दरेक प्राणीओनी, खेद मोह अने भय सिवाय सारी रीते संभाळ ले तेनी वृत्तिने प्रचलेश्या कही शकाय.

जे मुखसगवडने तर्न ओछी करी नाखे भने पोतानी शरीरनिर्वाह प्रती हाजतोने माटे पण कोई प्राणीओने लेश पण त्रास न आपे, तेमज कोई पदार्थ उपर छोटुपता न राखे, सतत समभाव जळवाय एवो व्यवहार राखे भने मात्र आत्मभानथी ज तुष्ट रहे तेनी कृतिने क्रुक्कलेश्या कही राकाय.

जीवनशुद्धिनी हिमायत करनारा माटे आमांनी पहेली त्रण दृत्ति स्थाज्य छे अने पाछली त्रण दृत्ति प्राह्म छे, तेमां पण छेक छेत्नी दृत्ति केळव्या सिवाय पूर्ण विकास सर्वेषा असंभव छे एम भगवान महावीरे पोतानी वाणीमां ठेकठेकाणे कहां छे.

भगवाने कहां छे के उत्थान छे, कर्म छे, बळ छे, वीर्य छे, पराक्रम छे, आ दारीर जीवने छईने हाले चाले छे, दारीरनी दाकि दारीरनी पुष्टिने छीधे छे, पुष्ट दारीर अनेक प्रकारनी प्रवृत्तिओं करे छे अने एमांथी प्रमाद जन्मे छे, ए प्रमादने छीधे जीव अनेक प्रकारनी मोहजाळमां फसाय छे अने अज्ञान अंधकारमां सबड्या ज करे छे, माटे प्रमादना मूळ कारण दारीरने जो संयममां राखवामां आवे तो आ मोहजाळमांथी जीव सहेजे छूटी शके. (मा० १ पा० १२०)

एक स्थळे भगवान कहे छे के मात्र संयम, मात्र संवर, मात्र ब्रह्मचर्य अने मात्र प्रवचनमाताना पाळनथी कोई प्राणीनो निस्तार थतो नथी. ज्यारे प्राणी रागद्देष उपर पूर्ण जय मेळवे छे त्यारे ज ते सिद्ध, बुद्ध अने मुक्त याय छे अने निर्वाणपदने मेळवे छे. (भा० १ प० १ अ) आमां मगवाने जे कहां छे के केवळ संयम, केवळ संवर अने केवळ ब्रह्मचर्यथी जीवनो निस्तार नथी. एनो मर्म ए छे के जे संयम, संवर अने ब्रह्मचर्य नाममात्र होय—खरेखरां न होय एटले के संयम, संवर अने ब्रह्मचर्य मात्र डोळ होय पण वासनानो जय, इन्हियोनो निरोध, विषयवृत्तिनो त्याग अने मानसिक, वाचिक अने शारीरिक प्रवृत्तिनी एकवाक्यता ए बधुं न होय एवां केवळ संयम, संवर अने ब्रह्मचर्य प्राणीना जीवननो विकास करी शक्तवाने समर्थ नथी.

मगवान मनुष्यना त्रण विभाग करे छे. केटलाकने एकांत बाळनी कोटिमां मूके छे, केटलाकने एकांत पंडितनी कोटिमां मूके छे अने केटलाकने बाळपंडितनी कोटिनां जणावे छे. आत्मभान विनाना एकांत बाळको छे, आत्मभानवाळा एकांत पंडित छे अने मध्यम शृतिना बाळपंडितकोटिनां छे. (भा० १ पा० १८९)

<sup>9</sup> हाण अने नीसकेरया एटके तामसी वृत्ति, कापोत अने तेजोकेरया एटके राजसी वृत्ति अने पद्म अने शुक्रकेरया एटके सारिवकवृत्ति एम सांख्यपरि-भाषा प्रमाणे कही सकाय.

बुद्ध भगवान जेने पृथंग्जन कहे छे ते आ एकांत बाळकोटिना छे अने जेने आर्यजन कहे छे ते एकांत पंडितकोटिना छे.

लोकोमां कहेवाती ऊंची जातिनो, ऊंची प्रतिष्ठा के एवा बीजा कोई ऐश्वर्यवाळो, आत्मभान विनानो होय तो सगवानने मन ते एकांत बाल छे अने जातिथी हलको गणातो पण जो आत्मभानवाळो होय तो भगवानने मन एकांत पंखित छे.

भगवान कहे छे के हिंसा, असल, चीर्य, मैथुन, परिप्रह तथा कोघ, मान, माया, लोभ, राग, हेष, कल्ह, अम्याख्यान, पैशुन, विदा, कपटपूर्वक व्यवहार अने अज्ञान ए बधा दोषोधी जीवो संसारमां फर्या ज करे छे. जे प्राणिओ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, व्रक्षचर्य, अपरिप्रह, क्षमा, सरलता, संतोष, अवैरष्ट्रत्ति, खत्वमावनी स्पृति वगेरे गुणोने केळवे छे, तेओ संसार ओछो करे छे अने निर्वाणने पामे छे. (भा० १ पा० १९९)

भगवान कहे छे के गृहवास छोडीने श्रमण निर्प्रेय यया पछी पण मनुष्यो विवेकनी खामीने लीघे नकामा नकामा कल्हो करी मिथ्या मोहना पाशमां फसाय छे. परस्परना जुदा वेशने लीघे, जुदा जुदा नियमोने लीघे, जुदा जुदा मार्गोने लीघे, जुदा जुदा बाह्याचारने लीघे, पोतपोताना आचार्योना जुदा जुदा मतने लीघे, शास्त्रना जुदा जुदा पाठने लीघे एम अनेक प्रकारनां बाह्यकारणोने लीघे ल्डता अपण निर्प्रयो पोताना संयमने दूषित करे छे. ( मा० १ पा० १२५)

भगवाने कहेली आ हकीकत तेमना पोताना जमानामां पण हती अने आ जमानामां पण ते आपणने प्रत्यक्ष ज छे. आ जातना खोटा कल्हो मिथ्यामोहने वधारनार छे एवुं भगवान वारंवार कहे छे.

एके स्थळे भगवानने तेमना मुख्य शिष्य इन्द्रभृति गौनमे पूछ्युं के, गुणवंत श्रमण वा ब्राह्मणनी सेवापी शुं लाभ पाय छे! भगवाने जणाव्युं के हे गौतम! तेमनी सेवा करवायी आर्य पुरुषोए कहेलां वचनो सांमळवानो लाभ याय छे अने तेयी तेने—सांभळनारने पोतानी स्थितिनुं मान याय छे, मान यवायी विवेक प्राप्त थाय छे, विवेकी थवायी खार्यीपणुं ओह्युं यई त्यागभावना केळवाय छे अने ते द्वारा संयम खीले छे अने संयमनी खीलवणीयी आत्मा दिवसे दिवसे शुद्ध तथा तपश्चर्यापरायण यतो जाय छे, तपश्चर्यापी मोहमळ दूर थाय छे अने मोहमळ दूर थवायी अजन्मा दशाने पामे छे.

भगवानना उपर्युक्त क्रयनमां गुणवंत श्रमण अने ब्राह्मण तर्फनी तेमनी दृष्टिनो मर्म समजवा आपणे प्रयक्तशील युवुं जोहए.

एक स्थले मंडितपुत्रना प्रश्नना उत्तरमां भगवान कहे छे के अनात्मभावमां वर्ततो आत्मा हंमेशा कंप्या करे छे, फडफडया करे छे, क्षोभ पाम्या करे छे अने तेम करतो ते हिंसा वगेरे अनेक जातना आरंभमां पडे छे, तेना ते आरंभो जीवमात्रने त्रास ऊपजा-बनारा याय छे. माटे हे मंडितपुत्र ! आत्माए आत्मभावमां स्थिर रहेवुं जोईए अने अनात्मभाव तरफ कदी पण न जवुं जोईए (भा० २ पा० ७६)

सातमा रातकना बीजा उद्देशकमां मगवान, इंद्रभृति गौतमने कहे छे के जे प्राणी सर्व प्राण, भूत, जीव अने सत्त्वोनी हिंसानी स्थाग करवानी वात करे छे छतां ते, प्राण भूत जीव अने सत्त्वने ओळखवा प्रयन्न करतो नथी—ते ते प्राणभूतोनी परिस्थिति समजी तेमनी साथे मित्रवत् वर्तवानो प्रयास करतो नथी तेथी तेनो, ते ते प्राणीनी हिंसानो स्थाग ए अहिंसा नथी पण हिंसा छे, असत्य छे अने आस्रवरूप छे. अने जे, जेवी पोते प्राणी छे एवा ज आ बीजा प्राणीओ छे, जेवी लागणी पोताने छे एवी ज लागणी बीजाने पण छे एम समजीने हिंसानो त्याग करे छे ते ज खरो अहिंसक छे, सस्यवादी छे अने आस्रवरहित छे. (भा० ६ पा० ७)

आ ज प्रमाणे आठमा रातकना दशमा उद्देशकमां भगवान कहे छे के कोई मनुष्य, मात्र श्रुतसंपन्न होय पण शीलसंपन्न न होय ते देशयी—अंशथी विराधक छे. जे मात्र शीलसंपन्न होय पण श्रुतसंपन्न न होय ते देशयी आराधक छे, जे श्रुत अने शील बनेयी संपन्न होय ते सर्वथी आराधक छे अने जे बने विनानो छे ते सर्वथा विराधक छे. ( मा० ३ पा० ११८ )

आ बने कथनमां प्रज्ञा अने आचार बने जीवनशुद्धिमां एक सरखां उपयोगी छे एम भगवान बतावे छे. प्रज्ञा विनानो आचार बंधनरूप थाय छे अने आचार विनानी प्रज्ञा उच्छृंखछता पोषे छे. आ ज कारणथी बुद्ध भगवाने पण बुद्धपद पामतां पहेलां प्रज्ञापारमिता, सत्यपारमिता अने बीलपारमिता केळवी हती.

कहेवानुं ए छे के भगवान महाबीर अने भगवान सुद्ध ए बनेए पोतानां प्रवचनोमां हान अने कियाने एक सरखुं स्थान आपेलुं छे.

१ पुषुज्जनो ( मूळ पाली )

२ "तहारूवं णं भंते ! समणं वा माहणं वा पजुवासमाणस्य किंफला पजुवासणा"-प्रस्तुत प्रंव भाग १ पृ॰ २८३ ।

भगवान, गीतमने कहे छे के हे गीतम हाथी अने कुंचवो ए बनेनो आत्मा एक सरखो छे. ( मा० २ पा० २७ ) एमना ए क्रियनमा नाना मोटा दरेक प्राणीओ प्रस्थे सरखो भाव राखवानो आपणने संदेशो मळे छे.

जे जे कारणोथी आत्मा अनात्मभावमां फसाय छे, ते समजावतां भगवान कहे छे के आ जगतमां अनात्मभावने पोषनारी दश संज्ञाओं छे. पहेली आहार, पछी भय, मैथुन, परित्रह, ऋोध, मान, माया, लोभ, लोक अने ओघ. ( भा० ३ पा० २७ )

मगवाने कहेळी आ संज्ञाओ केटळी दुःखकर छे ते तो सौ कोई पोताना अनुभव उपरयी जाणे छे. आ संज्ञाओमां भगवाने अनात्ममाव पोषनारी लोकसंज्ञा अने ओघसंज्ञाने जणावीने तेनाथी दूर रहेवानुं आपणने जणाव्युं छे.

आहारयी मांडीने लोमसुधीनी संज्ञाओं दुःखकर छे एमां कोइने शक नथी पण लोकसंज्ञा अने ओघसंज्ञानुं दुःखदायीपणुं प्राकृत मनुष्यना स्थालमां जलदी भावी शके तेवुं नथी. लोकसंज्ञा एटले वगर समज्ये प्राकृत लोक प्रवाहने अनुसरवानी वृत्ति अने ओघसंज्ञा एटले कुल परंपराप्रमाणे के चालता आवेला प्रवाहप्रमाणे वगर विचार्ये चाल्या करवानी वृत्ति. आ कने वृत्तिथी दोखातो मनुष्य सल्यने शोधी शकतो नयी, निर्भय रीते सल्यने बतावी शकतो नयी. तेथी ज आ बे वृत्तिओ जीवनशुद्धिनो घात करनारी छे. आम होवाथी ज अगवाने तेमने हेयकोटिमां मूक्ती छे. अल्यारे आपणा राष्ट्र, समाज के जीवननो विकास आपणामां आ बे वृत्तिनुं प्राधान्य होवाथी ज अटकेले छे. ए बे वृत्तिओ आपणामां एटली बधी जड घालीने पेसी गई छे के जेने काढवा अनेक महारयीओए प्रयक्तो कर्या. कृष्णे गीतामां अने मगवान महावीरे तथा बुद्धे पोतपोतानां प्रवचनोमां जुदीजुदी रीते आ बे वृत्तिओमां रहेली जीवननी घातकता आपणाने प्रसक्ष पाय तेवी रीते वर्णवेली छे. वर्तमानमां आपणा आ युगना राष्ट्रीय सूत्रधारो पण आपणामां रहेली ए संज्ञाओने काढवा घणो प्रयक्त करी रह्या छे.

आ रीते भगवाने मा सूत्रमां अनेक स्थळे अनेक प्रकारे जीवनशुद्धिनी पद्धितनी समजण आपेटी छे. भगवान नुं आखुं जीवन ज जीवनशुद्धिनी ज्वटंत दाखळो छे एटले तेमनां प्रवचनोमां टेकटेकाणे ए विषे एमना मुखमांथी उद्गारो नीकळे ए तहन खाभाविक छे.

एमना केटलाये उद्गारो आधुनिक वांचनारने पुनरुक्ति जेवाये लागे छतां जीवनशुद्धिना एक ज ध्येयने वळगी रहेनाराना मुखमांथी पोताना ध्येयने अनुसरता उद्गारो वारंवार नीकळे ए तहन खामाविक छे. केटलीये वार ए उद्गारोनी पुनरुक्ति न साधकने पोतानी वृक्तिमां दृढ करे छे तेथी ए पुनरुक्ति गण अत्यंत उपयोगी छे.

#### विश्वविचार

भगवान महावीरे ध्येयरूप जीवनशुद्धिने ध्यानमां राखीने ज आ सूत्रमां सृष्टिविज्ञाननी चर्चाओ अनेकरीते करेली छे. ए बची धर्माओ पण परंपराए जीवनशुद्धिनी पोषक छे एमां शक नधी, जो समजनार भगवानना मर्मने समजी शके तो.

भगवाने आ सूत्रमां अनेक जग्याए जणाव्युं छे के, पृष्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पति ए वधामां मानव जेवुं चैतन्य छे. ते बधां आहार करे छे, खासोष्ण्वास ले छे अने ते वधांने आपणी पेठे आयुष्यमर्यादा पण होय छे. ए वधां एकइन्द्रियवाळा जीवो छे, एटले तेओ मात्र एक स्पर्शइंद्रियथी ज पोतानो वधो व्यवहार निभावे छे. जे पृथ्वी—माटी पत्यर धातु वगेरे, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पति कोई रीते उपघात पाम्या नयी ते चैतन्यवाळां छे. तेमांनां पहेळा चारनां शरीरनुं कद वधारेमां वधारे अने ओछामां बोछुं आंगळना असंख्यातमा भाग जेटलुं छे, अने वनस्पतिना शरीरनुं कद ओछामां ओछुं तो तेटलुं ज छे, पण वधारेमां वधारे एक हजार योजन करतां काईक वधारे छे. ते बधानां शरीरनो आकार एक सरखो व्यवस्थित नथी होतो. माटी तथा पत्यर वगेरे पृथ्वीना शरीरनो आकार मसूरनी दाळ जेवो के चंद्र जेवो होय छे. पाणीना शरीरनो आकार परपोटा जेवो, अग्निना शरीरनो आकार सोयना भारा जेवो, बायुना शरीरनो आकार धजा जेवो अने वनस्पतिना शरीरनो आकार अनेक प्रकारनो होय छे. ते बधामां आहार, निद्रा, भय, मैथुन अने परिप्रहसंज्ञा छे. क्रोध, मान, माया अने लोम ए चारे कषायो छे. ते बधा स्पर्शेन्त्रियहारा खोराक मेळवे छे. चैतन्यवाळा पृथ्वीना एक जीवनुं आयुष्य ओछामां ओछुं अंतर्मुहूर्त अने वधारेमां वधारे २००० वर्ष अने वनस्पतिनुं १०००० वर्ष छे. ते बधां उयारे मरण पामे छे, स्थारे पोणीनुं ७००० वर्ष, अग्निनुं त्रण रातदिवस, वायुनुं ३००० वर्ष अने वनस्पतिनुं १०००० वर्ष छे. ते बधां उयारे मरण पामे छे, स्थारे पोतानी ए पांच योनिमांनी कोई एक योनिमां आववानी योग्यता धरावे छे के शंख कोडा वगेरे वे इन्द्रियवाळा जीवोनी, ज्ञमांकड

१ 'पृथिवी देवता' 'आपो देवता' इसादि मच्चो वैदिक परंपरामां प्रसिद्ध छे. यह वगेरेमां ज्यारे पृथिवी, पाणी, वनस्पति के अपि वगेरेनो उपयोग करवानो होय छे स्वारे प्रारम्भमां उक्तमच्चो बोलवामां आवे छे. मच्चो बोलनाराना के यह करनाराना स्थालमां एवं भाग्ये ज आवर्तु होय छे के तैओ पृथ्वी, पाणी, अपि के वनस्पति वगेरेसो जे दपयोग करेछे ते हिंसाजनक प्रवृत्ति छे. कारण के तेओमां एटके पृथ्वी वगेरेमां पण आपणी जेवुं ज चैतन्य छे. पर्यं समजीने एवी हिंसक प्रवृत्ति करनारा ते कर्मकांडी लोकोना स्थालमां आ वस्तु आवे ते साह भगवाने ए प्रसिद्ध वातने पण स्थामां स्वळे स्थळे जणावी छे.

बनेडा नगेरे त्रण इन्द्रियवाळा जीवोनी, पतंगिया भमरा वींछी नगेरे चार इन्द्रियवाळा जीवोनी, पशुपक्षी वगेरे पांच इन्द्रियवाळा तिर्यंच जीवोनी के मनुष्यनी योनिमां आववानी योग्यता धरावे छे. मात्र अग्नि अने वायु, मनुष्यनी योनिमां आववानी योग्यता धरावता नथी. ए वधाने चार प्राण छे एटले के स्पर्शइंदिय, शरीरवळ, श्वासोच्छ्वास अने आयुष्य.

जेवी रीते पृथ्वी बगेरेनां चैतन्य बगेरेनो विचार करवामां आज्यो छे तेवी ज रीते बेइन्द्रिय—स्पर्श अने जिह्नाबाळा, त्रणइन्द्रिय—स्पर्श, जिह्ना अने प्राणवाळा, चारइंद्रिय—स्पर्श, जिह्ना, प्राण अने चक्षुवाळा अने पांचइन्द्रिय—स्पर्श, जिह्ना, प्राण, चक्कु, अने कानवाळा जीबोनो पण विचार करवामां आज्यो छे.

पांच इंदियवाळा जीवोना चार विभाग करवामां आव्या छे. पशुपक्षी, मनुष्य, देव अने नारक. देवोना पण मुख्य चार मेद बता-बवामां आव्या छे. वैमानिक-विमानमां रहेनारा, भवनपति-भवनमां रहेनारा, वानव्यंतर-पहाड, गुफा अने वनना आंतराओमां रहेनारा अने ब्योतिथी-ज्योतिर्छोकमां रहेनारा सूर्य चंद्र वगेरे. तेमनां आहार, रहेणीकरणी, आयुष्य, वैभवविद्यास, उत्तरोत्तर संतोष, शाक्षाध्ययन, देवपूजन वगेरे पण घणा विस्तारसाथे आ सूत्रमां वर्णवेटां छे.

दाखला तरीके पहेला स्वर्गना देवो ओछामां ओछुं बेथी नव दिवस पछी आहार करे छे एटले के मनुष्य के पशुपक्षीने रोजनेरोज आहारनी अपेक्षा रहे छे तेम देवोने ए नथी होती. पण कोई देवो बे दिवसे आहार ले छे, कोई देवो त्रण दिवसे, कोई चार दिवसे अने ए रीते कोई नव नव दिवसे आहार ले छे अने वधारेमां वधारे तेओ २००० वर्ष सुची आहार विना चलावी ले छे. अने छेछा स्वर्गना देवो ३३००० वर्ष सुची आहार विना चलावी शके छे. आ ज रीते नरकमां रहेला जीवोनी स्थितिने लगतुं वर्णन पण आपवामां आन्युं छे.

आ आखा सूत्रनो मोटो भाग देव अने नरकता वर्णनमां ज रोकाएलो छे.

उपर्युक्त रीत सिवाय बीजी रीते पण जीवजंतुनो विभाग करवामां आव्यो छे, जेमके:—जरायुज, अंडज, पोतज, खेदज, उद्गिज अने उपपादुक. आ विभाग शास्त्रोनी बधी परंपराओमां प्रसिद्ध छे.

बधा जीवो जीवत्वनी दृष्टिए एक सरखा छे. ए हुकीकत भगवाने 'एगे आया' ए सूत्रमां समजावेली छे. एमां एमनो हेतु छोकोमां समभावने जगाडवानो छे. अने जीवो एक सरखा छतां तेमनी उपर बतावेली जे जुदीजुदी दशाओ याय छे ते तेमना शुभ के अञ्चम संस्कारने आभारी छे. एटले मनुष्योए संस्कारशुद्धिना प्रयह तरफ वळवुं जोईए एम भगवाननुं आ उपरथी सूचन छे. जो आपणे ए बघां वर्णनो उपरथी मैत्रीवृत्ति केळववा तरफ अने संस्कार शुद्धिना प्रयह तरफ न वळीए अने मात्र ए वर्णनो ज वांच्या करीए अने गोख्या करीए तो आपणे भगवान महावीरना संदेशाने समजवा योग्य नथी एम कहेवुं जोईए.

भगवान महावीरे आ जे वधुं कहेलुं छे तेमां तेमनी आध्यात्मिक शुद्धि अने परापूर्वधी चाली आवेली आर्योनी परंपरा ए वे मुख्य कारणो छे. एटले आ सूत्रमां के बीजा सूत्रमां ज्यां ज्यां आवां जीवने छगतां वर्णनो आवे छे तेनो खरो साक्षात्कार आपणे करवो होय तो आपणा माटे केवल चर्चा के शास्त्रम्म बधारे केवल वर्चा के शास्त्रम्म बधारे केवल वर्चा के शास्त्रम्म बधारे केवल वर्चा जोईए. प्रज्ञाशुद्धि एटले ज्यां ए वर्णनो आवे छे ते बधां शास्त्रोनो तटस्थ दृष्टिए अम्यास तथा अस्त्रारना विज्ञानशास्त्रनो पण ए ज रीते सूक्ष्म अम्यास. आटलुं कर्या पछी पण जो शास्त्रवचन अने तटस्थ अनुभवमां मेद मालुम पढे तो मुंज्ञावापणुं नधी. कारण के शास्त्रवचन वर्णनेली स्थिति देशकाळनो मर्यादाने ओळंगी शकती नधी एटले देशकाळनो फेर बदलो यतां जे स्थिति २५०० वर्ष पहेलां भगवान महावीरे जेवी बतावी होय तेवी अस्त्रारे न होय तेमां कशी असंगति नधी. वळी आवी चर्चाओ मात्र मेद बधारवा के शास्त्रार्थना झगडा करवामाटे स्थानी नथी. तेनो स्था तो आगळ कहा। प्रमाणे मात्र मैत्रीवृत्ति अने संस्कारश्चित्र माटे छे.

आधी कोई संप्रदाय बार खर्गी करतां वधारे के ओछा खर्गी कहे अथवा नारकोनी हकीकत विषे एवी भिन्नताबाळी हकीकत कहे तेनायी कशो क्षोम पामवानो नथी.

आपणे जाणीए छीए के आ जातना विचारो भगवान महावीरना जमानामां कांई नवा न हता, कारण के आ संबंधमां वैदिक परंप-रामां, बुद्धना पिटकोमां अने अवेस्ताप्रंथोमां केटलीए हकीकतो आजे उपलब्ध छे. जो के ते हकीकतो आपणे त्यां लखाएली छे तेबी सूक्ष्म नथी पण आत्मवत् सर्वभृतेषुना सिद्धांतने समजवा पूरती ए हकीकतो आपणा सिवायनी बीजी बधी परंपराओमां नौंघायेळी छे अने तेनो खरो उपयोग पण ते ज छे.

बनस्पतिविद्याथिषे चरक अने सुश्रुतमां आपणे त्या वर्णवेली छे तेटली ज सूक्ष्म पण बीजा प्रकारनी अनेक हकीकतो नोंधा-येली छे, जे आजे पण उपलब्ध छे अने व्यवहारमां पण खरी निवडेली छे.

१ जुओ स्थानांगस्त्रना मूळनो प्रारंभ ए० १०।

जेने आपणे एकेन्द्रिय कहीए छीए ए जंतुओनी स्थिति विषे अस्यारना विज्ञाने घणी उंडी शोध करेली छे. ते ज प्रमाणे बाकीमा सूक्ष्म अने स्थूल जीवजंतुओनी स्थितिविषे पण अत्यारे घणी नवी शोधो पयेली छे.

जे ममरीने आपणे असंद्वी कहीए छीए ते ममरीनी कुशळता विषेना प्रस्यक्ष प्रयोगो आपणे जोई शकीए छीए. जेने आपणे बे, श्रण, अने चार इन्द्रियोखळा कहीए छीए ते बधांने कोई अपेक्षाए पांच इन्द्रियो छे ए आपणे सूक्ष्मदर्शक यंत्रद्वारा जोई शकीए छीए. तदुपरांत ए बधां प्राणीओनां खमाब, प्रवृत्ति, हाजतो वगेरे अनेक जातनी हकीकतोविषे आजे घणुं नहुं ज्ञान आपणने मळी शके छे. ते बधा तरफ आपणे उपेक्षा राखीए अने मात्र शास्त्रवाक्य ज गोस्त्या करीए तो आपणी प्रज्ञाञ्चिद्ध धई शक्षतानी नथी.

कदाच कोईने एम लागे के विज्ञानना अभ्यासयी शास्त्रश्रद्धा मंद यतां नास्तिकतानो प्रचार यशे. पण ए कल्पना के भय बरा-बर नथी. विज्ञानथी तो शास्त्रश्रद्धा वधारे दृढ यवानो अनुभव छे अने एम कहेवानुं आपणने अमिमान रहे छे के प्राचीन लोकोए प्रण पोताना जमानामां केटला बधा वैज्ञानिक विचारो करेला हता.

कदाच शासवचनो साथे विज्ञाननो मेद मालम पढ़े तो तेना समन्वयनी चावी आपणी पासे छे. ते एक तो देशकाळ अने बीजी कहेवानी शैली. देशकाळ एटले के मगवान महावीरना जमानानी के पूर्वपरंपराथी जे हकीकतो चाली आवती हती ते अत्रे नोंघेली छे एटले ए जमाना अने आ जमाना विश्वना पणा लांबा गाळामां विश्वनुं एटले के मानवस्वभावनुं, मानवी रहेणीकरणीनुं अने मानवनी आसपासनी पारिस्थितिओनुं तथा वनस्पति अने जंतु जगतनुं जे परिवर्तन आजसुची यतुं आल्युं छे ते परिवर्तन ज मेदना समाधान माटे बस छे.

कहेवानी रौलीनो दाखलो आ प्रमाणे घटाबी राकायः आपणे ह्यां आ वात प्रसिद्ध छे के ईपळमांथी भमरी थाय छे. जैनपरिभाषा प्रमाणे ईपळ करतां भमरी वधारे इंदियवाळुं प्राणी छे एटले के चार इन्द्रियवाळुं छे. तो एक ज जन्ममां बे जन्म थाय शी रीते ? पण जे लोकोए एम कांग्रुं छे के ईपळमांथी भमरी थाय छे, ते लोकोए एम जोयेलुं छे के भमरी ईपळने लाबीने पोताना दरमां राखे छे अने तेमांथी काळांतरे ममरी नीकळे छे. मात्र आटलुं ज जोनारो ईपळमांथी भमरी निकळे छे एम जक्तर कहे पण ईपळमांथी भमरी क्यांथी आवी तेनो खुलासो नयी करी राकतो एटले तेनुं ते कथन स्थूलदृष्टिए छे एम समजीने खरा तरीके समजी शकाय खरुं. पण ज्यारे जंतुशाख्ननी मदद्दयी आ विषे विचार करीए तो तदन खुदुं ज मालम पखे छे. ते शाख कहे छे के ईपळमांथी भमरी यती नथी पण भमरी जे ईपळने दरमां लांबे छे ते ईपळमां ढंख मारीने इंडां मूके छे. अने ते इंडां काळांतरे ईपळदारा पोषाईने ईपळमांथी बहार आवे छे. ईपळ तो मात्र ते इंडानुं पोषण ज छे. आ रीते वारीकाईथी जोतां ममरीना इंडामांथी ज ममरी याय छे पण ईपळमांथी भमरी नथी थती, छतां ईपळमांथी भमरी विद्या होते हो छे एम स्थूल दृष्टिए न कही शकाय.

जैन परिमाषामां कहीए तो ईयळमांथी ममरी यवानी हकीकत उपचार प्रधान व्यवहारनयथी ठीक कही शकाय. जंतुशास्त्रथी सिद्ध यथेली हकीकत निश्चयनयथी ठीक कही शकाय.

भा प्रमाणे शास्त्रोमां जे जे हकीकतो छखायेछी मळे छे तेनो निवेडो नयबादनी दृष्टियी जरूर छावी शकाय. अने तेथी विज्ञान अने शास्त्रीय विचारणामां अथडामण यवानो संमव नहीं रहे.

देव अने नरकनी हयाती विषे तो बधी प्राचीन परंपराओ एकसरखों ज मत धरावे छे. पण ते विषे व्योद्धधी वनस्पतिविद्यानी पेठे उंडी शोध यह निर्णय न याय व्याद्धधी आपणे ए विषेनी कोईपण जूनी परंपराने खोटी कहेवा हिम्मत न करी शकीए. दरेक परंपराना मूळ पुरुषे ए विषे विचारों दर्शाच्या छे. ते विचारों विषे ते ते परंपराना अनुयायीओए कही नवी शोधखोळ करी नथी पण झाहे भागे तेना ते विचारोंनुं पिष्टपेषण कर्या कर्युं छे. पण हवे ए विषे शोध करवानो ग्रुग आवी गयो छे. जो के ग्रास्क जेवा महर्षिए ए विषे एटले देव, इंग्रं, सुर, असुर वगेरे विषे कार्द्रक नवो प्रकाश पाडवा प्रयक्ष कर्यों छे खरो पण आ लोकप्रवाह सामे ए ठीकटीक पहोंची शक्यों नथी अने मात्र पौराणिक परंपरामां वर्णवायेलां रूपको ज वधी परंपरावाळाओए खीकार्यों छे एम ए यास्कनी दृष्टिए कही शकाय.

वैदिक आर्योनी देव वगेरे विषे हुं मान्यता हती ते विषे शास्कने वांचवाथी थोडीघणी माहिती आजे पण आपणने मळी शके छे. आ सूत्रमां अने बीजां सूत्रोमां भगवान महाधीरे विश्वविद्यानने लगती जे जे माहिती आपी छे तेनो उदेश विश्ववैचित्रय जाणवा उपरांत ते हारा विश्व साथे समभाव केळववानो छे. छतां केटलीक एवी बाबतो पण तेमां बताववामां आवी छे जेमां मात्र होयनी दृष्टि मुख्य छे. तेमनो जीवनद्यदिमां सीधो उपयोग होय एवं जणातुं नथी. जेमके—

चेकनी स्थितिने समजावतां मगवान महावीरे गौतमने जणावेखं छे के, आकाश उपर वायु रहेलो छे. वायुनी उपर उदिष छे-उदिधि उपर आ पृथ्वी रहेली छे अने ए पृथ्वी उपर आ आखुं विश्व रहेलुं छे. आ हकीकत समजाववा भगवान एक सरस दाखडो

<sup>🤊</sup> भीयास्त्रना उन्नेखो माटे जुओ प्रस्तुत पंथ भा॰ २ पृ॰ ४२, ४८-४९, १२२, १३०।

आपे छे. तेओ कहे छे के जैम कोई पुरुष मशकने फुलाबीने तेनुं मोढुं बंध करे, पछी मशकने बचले मागे गांठ मारी दे, गांठ मार्या पछी मशकनुं मोढुं खुह्नुं करी तेनो पवन काढी तेमां पाणी भरी दे, पछी गांठ छोडी नाखे तो जैम ते पबनने आधारे उपरनुं पाणी नीचे न आवता उपर ज रहे छे तेम आ पृथ्वी पवनने आधारे रहेला समुद्र उपर टकी रही छे. (भा० १ पा० १७)

एक स्थळे पोताना शिष्य रोहक अणगारने समजाधतां भगधान कहे छे के जेम कूकडी अने हंडूं ए वे वचे कयुं कार्य अने क्युं कारण एवो कमवाळो विमाग यह शकतो नयी पण बन्नेने शाश्वत मानवा पडे छे, तेम लोक, अलोक, जीव, अजीव वगेरे माबोने पण शाश्वत मानवाना छे. ए वे वचे कशो कार्यकारणनो कम नथी. (भा० १ पा० १६७)

एकस्थळे गर्भस्य जीवनी स्थितिनी चर्चा करतां गर्भमां रहेलो जीव द्युं खाय छे, तेने शौच, मूत्र, स्रेष वगेरे होय छे के नही, गर्भस्य जीवे करेला आहारना कया कया परिणामो थाय छे, ते जीव मुखथी खाई शके छे के निह, ते कई रीते आहार ले छे, ते जीवमा केटलो मातानो अने केटलो पितानो अंश होय छे, तेनुं निस्सरण माथाथी थाय छे के पगथी वगेरे हकीकतो जेम महर्षि चरक समजावे छे, ते ज रीते, पण संक्षेपमां समजाववामां आयी छे. (मा० १ पा० १८१)

एक बीजी जग्याए पाणीना गर्भ विषे विचार चालेलो छे. तेमां कहेलुं छे के पाणीनो बंधाएलो गर्भ वधारेमां वधारे छ महिना सुधी टकी शके छे, पछी तो ते गळे ज. (भा० १ पा० २७३) आ विषे थोडी वधारे चर्चा ठाणांग सूर्त्रमां पण आवे छे. एनी सविद्धार चर्चा जोवी होय तो बाराहीसंहितामां उदकगर्भने लगतुं आखुं प्रकरण जोई लेबुं जोईए. गर्भ क्यारे बंधाय छे, कया महिनामां एनी केवी स्थिति होय छे, क्यारे गळे छे, ते बधुं एमां सविद्धार वर्णवायेलुं छे. बाराहीसंहिता ए वैदिक परंपरानो विश्वकोष जेवो एक मोटो प्रथ छे ते न भुलाय.

भाषा-शन्दना खरूपनी चर्चा करतां शन्दोनी उत्पत्ति, शन्दोनो आकार, बोलायेल शन्द ज्यां पर्यवसान पामे छे ते अने शन्दना परमाणुओ वगेरे विपे विस्तारथी जणावेलुं छे. (भा० १ पा० २९१) पश्चवणासूत्रमां भाषाना खरूपने लगतुं भाषापद नामनुं एक ११ मुं प्रकरण ज छे. तो विशेषार्थीए ए बधुं त्यांथी जोई लेवुं.

समुद्रमां भरती अने ओट याय छे ते सौ कोईनी जाणमां छे. ते भरतीओट थवानां कारणोनी चर्चा करतां समुद्रनी चारे दिशामां चार मोटा पातालकलशो होवानुं अने ते उपरांत बीजा अनेक क्षुद्र कलशो होवानुं जणान्युं छे. ते पातालकलशोमां नीचेना भागमां वायु रहे छे, वचला भागमां वायु अने पाणी साथे रहे छे अने उपला भागमां एकलुं पाणी रहे छे. ज्यारे ए वायु कंपे छे, क्षुच्य याय छे, बारे समुद्रनुं पाणी उज्ले छे अने ज्यारे एम नथी यतुं ब्यारे समुद्रनुं पाणी उज्ले छे. अमाणे भरतीओटना प्रश्नने लगतुं समाधान म्केलुं छे. (भा० २ पा० ८२) ए समाधानमांथी आपणे एटलुं तो जरूर तारवी शकीए छीए के कदाच वायुना कारणयी समुद्रमां भरती ओट यतां होय.

आ उपरांत सूर्यने अने ऋतुने लगती पण केटलीक चर्चा आ सूत्रमां आवेली छे. ए चर्चामां जणावेली हकीकतोनो खुलासो स्यारे ज मेळवी शकीए ज्यारे आपणे खगोळ अने ऋतुना विज्ञानशासनुं गंभीर रीते परिज्ञीलन कर्युं होय.

काने जे शब्दो आवे छे ते शब्दोनुं प्रहण कर्णेन्द्रिय अने शब्दना स्पर्शियी थाय छे के एमने एम याय छे! तेना उत्तरमां कर्णेन्द्रियने शब्दनो स्पर्श थया पछी ज शब्दनुं प्रहण थाय छे एम खीकारवामां आवेल छे. (भा० २ पा० १७१)

आ बिषे वधारे बिस्तारवाळुं वर्णन पत्नवणासूत्रना पंदरमा इन्द्रियपदमां छे. तेमां इन्द्रियोना प्रकारो, आकारो, दरेक इन्द्रियनी जाडाई, पहोळाई, कद, इन्द्रियोद्वारा पती पदार्थप्रहणनी रीत, इन्द्रिय केटले वधारे दूर के नजीकथी पदार्थने प्रहण करी शके छे ते अंतरनुं माप ए बधुं वीगतथी चर्चेल छे.

अंधारुं अने अजवाळुं केम थाय छे तेनो पण खुलासो भगवाने पोतानी रीते जणाव्यो छे. (भा० २ पा० २४६)

वनस्पति विचार करतां एक जग्याए ते सौथी ओछो आहार क्यारे ले छे अने सौथी वधारे आहार क्यारे ले छे ! ए प्रभना उत्तरमां भगवाने जणावेलुं छे के प्रावट्ऋतुमां एटले श्रावण अने भादरवा महिनामां, अने वर्षाऋतुमां एटले आसो अने कारतकमां वनस्पति सौथी वधारेमां वधारे आहार ले छे. अने पछी शरद्, हेमंत अने वसंतऋतुमां ओछो ओछो आहार ले छे. पण सौथी ओछो आहार प्रीष्मऋतुमां ले छे. आ उत्तर सांभळी फरीथी गौतमे पूछ्युं के हे भगवान! जो प्रीष्मऋतुमां वनस्पति सौथी ओछामां ओछो आहार लेती होय तो ते वखते पांदडावाळी, पुष्पवाळी, फळवाळी, लीलीछम अने अस्यंत शोभावाळी केम देखाय छे ! उत्तरमां भगवाने कह्युं छे के केटलाक उष्णयोनिक जीवो तथा पुद्गलो वनस्पतिकायरूपे तेमां उत्पन्न याय छे, एकठा थाय छे, वधारे इद्धि पामे छे, ते कारणथी हे गौतम ! प्रीष्ममां अल्पाहार करती वनस्पति पांदडावाळी, पुष्पवाळी, फळवाळी, अने आंखने ठारे एवी शोमावाळी थाय छे.

९ जुओ प्रस्तुत प्रन्य भा॰ ९ ए० २७३ तया टिप्पण ९ ए० २७५।

ज प्रकरणमां आगळ चालतां वनस्पतिनुं मूळ, वनस्पतिनो कंद, वनस्पतिनी शाखाओ, वनस्पतिनां बी, वनस्पतिनां फळो, वनस्पतिनां इंडां वगेरेने आहार पहोंचवानी पद्धति पण बतावेली छे. (भा० ३ पा० १२) आ हकीकत विषे शास्त्रोक्त वनस्पतिविद्याने जाणनार ई पंडित जो वनस्पतिविद्याविशारद जगदीशचंद्र बसु साथे बातचीत करशे तो घणो विशेष प्रकाश पाडी शकशे अने मगवान महावीरे णावेली हकीकतनी पण कसोटी यशे.

श्राठमा शतकना बीजा उदेशकमां आशीविषनी माहिती आपेली छे. आशी एटले दाट. जेनी दाढमां विष छे तेने आशीविष हिवामां आवे छे. तेना वे प्रकार छे. जन्मयी आशीविष अने कर्मयी आशीविष. जन्मयी आशीविष चार प्रकारना छे. वींछीनी मितना, देखकानी जातिना, मनुष्यनी जातिना अने सर्पनी जातिना आशीविष. ए चारे प्रकारना झेरी प्राणीओनां झेरनुं सामर्थ्य सावतां भगवान कहे छे के वींछीनी जातिनां झेरी जंतुओं अर्थ भारत जेवडा शरीरने, देखकानी जातिनां झेरी जंतुओं भरतक्षेत्र वडा शरीरने, सर्पनी जातिनां झेरी जंतुओं अर्थतक्षेत्र वडा शरीरने, सर्पनी जातिनां झेरी जंतुओं जंबुद्वीप जेवडा मोटा शरीरने अने मनुष्यनी जातिनां झेरी प्राणीओं मनुष्यलेक जेटला शताळ शरीरने झेरची ज्यात करवा समर्थ छे. आटछुं कह्मा पछी भगवान कहे छे के ए चारे प्रकारना सर्पोंना झेरनुं सामर्थ्य जे उपर जावेखुं छे ते, ते झेरी प्राणीओए कदी वताव्युं नथी, वतावतां नथी अने बताववानां पण नथी. (भा० ३ पा० ५६) भगवाने तो तत्र ते ने प्राणीओना विषनी शक्तिनो ख्याल आपवा प्रती ते ते हकीकतो जणावेली छे. आ विषे सर्पशास्त्रना अभ्यासी पासे ननप्रवचननो भक्त प्रकाश नखावशे तो जरूर भगवानना प्रवचननो महिमा वधशे तेमां शक्त नथी.

'खार्थी मनुष्य प्राणी केवो होरी छे, तेना होरनुं सामर्थ्य केवुं प्रबळ छे अने केटलुं बधुं संहारक छे' ए बन्नी हकीकत आध्यात्मिक छिथी तो समजाय तेवी छे. विषकत्या अने जीवती डाकणोनी वातो मनुष्यना स्पेपेटेना होरीपणानी साबीती माटे कही शकाय एवी छे तो ए अहीं मनुष्यने जे रीते होरी तरीके वर्णव्यो छे ए वस्तु तो अवश्य शोधने पात्र छे.

छुं शतकना सातमा उद्देशकमां भगवानने गौतम पूछे छे के हे भगवान! कोठामां अने डालामां भरेलां अने उपरथी छाणथी भैपेलां, माटी वगेरेथी चांदेलां एवा शाल, चोखा, घउं तथा जवनी ऊगवानी शांक क्यांसुधी टकी रहें! उत्तर आपतां भगवान कहे छे है हो गौतम! ओछामां ओछं संतर्मुहुर्त अने वधारेमां बधारे त्रण वर्ष सुधी ए बधां अनाजनी ऊगवानी शक्ति कायम रही शके छे.

आ ज प्रमाणे कलाय ( वटाणा ) मसूर, तल, मग, अडद, वाल, कळथी, एक जातना चोखा, त्वेर अने चणा ए त्रिषे पूर्वोक्त क्रिक्रना जवाबमां भगवान कहे छे के कलाय वगेरेनी ऊगवानी राक्ति वधारेमां वधारे पांच वर्ष सुधी रहे छे अने ओछामां ओछी अंत-केर्क्रत रहे छे. बळी अळसी, कुसुंभ, कोदवा, कांग, बंटी, बीजी जातनी कांग, बीजी जातना कोदवा, राण, सरसव, मूळानां बी असुकक्रवीजानि ) ए बधांनी ऊगवानी राक्ति वधारेमां वयारे सात वर्ष सुधी कायम रहे छे अने ओछामां ओछी अंतर्मुहर्त.

आ चर्चा पण आपणने अतिरस आपे एवी छे. पण आ विषे कोई वनस्पतिशासना अभ्यासी द्वारा ऊहापोहपूर्वक प्रकाश स्वावी शकाय तो ज ते वधारे रसिक थाय तेवं छे.

ै आ प्रंथमां जेन आत्माने छगती बधी बाजुओनो विचार करवामां आब्यो छे तेम पुद्गछ—जडद्रव्य विषे पण तेत्रो स्फुट विचार अनेक जग्याए बताववामां आब्यो छे.

भगवान महावीर मूर्तिमंत जडद्रव्यना—प्रयोगथी परिणाम पामेलां, प्रयोग अने अप्रयोग बन्नेथी परिणाम पामेलां अने अप्रयोगथी मिरिणाम पामेलां एवा—त्रण विभाग वतावे छे अने कहे छे के अप्रयोगथी परिणाम पामेलां मूर्तिमंत जडद्रव्यो विश्वमां वधारेमां वधारे है. एथी ओछां, प्रयोग अने अप्रयोगथी परिणाम पामेलां छे. तेमनी आ गणना आखा विश्वने लक्षीने छे. अहि प्रयोगनो अर्थ जीवनो व्यापार अने अप्रयोगनो अर्थ खमाव समजवानो छे.

एक स्थळे पदार्थोना परस्परना बंध विपे कहेतां भगवान भहावीरे गौतमने कह्युं छे के बंध वे प्रकारना छे. जे बंध जीवना प्रयत्नथी को देखाय छे ते प्रयोगवंध कहेवाय छे. जे बंध जीवना प्रयत्न वगर एमने एम थतो देखाय ते वीससावंध कहेवाय छे.

पाछलो वीससाबंध अनादि पण होय छे. आकाशहन्यना प्रदेशोनो जे परस्पर संबंध ते अनादि वीससाबंध छे. परमाणुपरहाणुओनो, इन्यद्दन्यनो अने वादळां वगेरेनो जे परस्पर संबंध छे ते सादि वीससाबंध कहेवाय छे. आ बंध त्रण प्रकारनो कहेवामां
हान्यो छे. परमाणुपरमाणुना एटले रूक्ष अने िकाध परमाणुना बंधने बंधनिमित्तक कहेवामां आवे छे, ते ओछामां ओछो एक समय
हान्यी अने वधारेमां वधारे असंख्य काल सुधी टके छे. इन्यइन्यना एटले गोळ, चोला, दारु वगेरे ए बधां जे भाजनमां भरवामां आवे
छे तेनी साथे बहु समय जतां चोंटी जाय छे ते तेमना परस्परना संबंधने भाजनिमित्तकवंध कहेवामां आवे छे, ते ओछामां ओछो अंतर्मुहुर्त अने बधारेमां वधारे संख्येय काल सुधी रहे छे अने वादळां वगेरेना परस्परना वंधने परिणामनिमित्तकवंध कहेलो छे अने ते
ओछामां ओछो एक समय अने वधारेमां वधारे छ महिना सुधी टके छे.

जे बंध जीवना प्रयक्तथी धाय छे तेना मुख्य त्रण प्रकार काळनी अपेक्षाए बतावेला छे; अनाविअनंत, साविअनंत अने साविसांत. आमांनी छेड्डो साविसांतवाळो प्रकार व्यवहारमां खूब प्रचलित छे. तेना पण मुख्य चार प्रकार बताववामां आव्या छे. आलावणवंभ, अछिआवणवंभ, दारीरवंध अने दारीरप्रयोगवंध. (भा० ३ पा० १०१)

भा विषे बीगतवार उदाहरण साथेनी इकीकत उपर्युक्तपाने बंधना प्रकरणमां कहेवामां आवी छे जे वांचनारने असँत रसदायक नीवडे तेवी छे.

वळी, बीजे स्थळे परमाणुनुं कंपन, परमाणुनां परिणाम, परमाणुनी अच्छेद्यता, परमाणुने मध्य होय छे के नहि ! परमाणुनो परस्पर स्पर्श, परमाणुनी परमाणुदशानी स्थिति, परमाणुना कंपननो समय, राब्दपरमाणुनी शब्द तरीकेनी स्थितिनो समय वगेरे अनेक सूक्ष्म-सूक्ष्म तम विचारो बताव्या छे ( भा० २ पा० २१६ )

आना जेवी बीजी पण अनेक चर्चाओं जेने आपणे वैज्ञानिक कही शकीए तेवी आ सूत्रमां अने बीजा सूत्रोमां अनेक स्थळे आवेली छे पण विज्ञानशास्त्रनी मदद सिवाय ए चर्चाओं वधारे समजमां आवी शके तेवुं निषी तेची जिनप्रवचनने वधारे समजमामाटे विज्ञाननों अभ्यास अधिक उपयोगी अने आवकारदायक छे ते शक विनानी वात छे.

मगवाने जे आ बधी चर्चा करी छे ते बधी तेमनी आत्मशोधमांथी जन्मी छे एम कहेवुं जराय खोटुं नथी. जीव अने तेना भेदो अने तेनी अनेक प्रकारनी स्थितिनी चर्चा, जीवमात्रनी समानता अने भिन्नमित्र संस्कारोथी पर्येठी तेनी विचित्रता बताववा करेठी छे. एकंदरे जोता ए चर्चा सर्व कोईने मैत्रीभाव अने समभाव तरफ प्रेरे एवी छे अने जडद्रन्यना परिणामो अने स्थिति वगेरेनी चर्चा आपणने विश्वनुं वैविष्य बतावी निर्वेद तरफ ठई जवामां साधनरूप बने तेवी छे.

आत्मशोधक माणस, एक ज पुद्रलना, गंयोगवश मिन्नमिन्न परिणामो जाणी कया परिणाममां ए राग करे अने कयामां ए घृणा करे ! आ वधुं जोतां भगवानना प्रवचनमां जे जे चर्चाओं करवामां आबी छे ते बधी आत्मशोधनमांथी जन्मी छे अने आत्मशोधने पोषनारी छे ए हकीकत वारंवार कहेबी पडे एवी नथी. अने उपर कह्या प्रमाणे केटलीक चर्चाओं मात्र ज्ञाननी दृष्टिए पण करवामां आबी छे ए पण खरी बात छे.

#### रूढिच्छेद

व्याख्याप्रज्ञिममां आवेळी जीवनशुद्धि अने विश्वविज्ञाननी माहिती उपर प्रमाणे आप्या पछी श्रमण भगवान महावीरे पोतानाः वखतनी रूटिओने तोड्या जे प्रयचनधारा बहेबरावी छे ते विषे आपणे हवे अहीं कहेबानुं छे. ए प्रवचनधारा आ सूत्रमां तेम बीजा सूत्रमां पण ठीकठीक प्रमाणमां उपलब्ध छे. श्रीजुत्तराध्ययनसूत्रमां जातिबादधी थती सामाजिक विषमताने तोड्या भगवाने स्पष्ट शब्दोमां कह्युं छे के जीतिबिशेषधी कोई पूजापात्र थई शकतो नथी पण गुणविशेषधी ज थई शके छे. ब्राह्मणकुल्मां जन्मेलो के मात्र मुखयी ॐ ॐ नो जाप करनार ब्राह्मण नथी पण ब्रह्मचर्यथी ब्राह्मण बने छे. एवी रीते श्रमणकुल्मां रहेनारो के कोई मात्र माथुं मुंडावनारो श्रमण यर्ह शकतो नथी पण जेनामां समता होथ ते ज श्रमण कहेत्राय छे. जंगलमां रहेवा मात्रधी कोई मुनि कहेवातो नथी पण मनन—आत्मितन

कोही य प्राणी य वही य जेसि मोसं अदर्श च परिश्महं च । ते माहणा जाइविज्ञाविहीणा ताई तु खित्ताई सपावगाई ॥ १४

सक्खं ए दीसइ तनोविसेसो न दीसइ जाइनिसेस कोइ। सोवागपुत्तं हरिएससाहुं जस्सेरिसा इङ्की महाणुभावा"॥ ३७

-उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन-१२

तपनी विशेषता साक्षात देखाय छे पण जातिनी विशेषता कशी देखाती नयी. कारण के हरिकेश साधु, चंडाळनी पुत्र होवा छतां तप अने संयमना डा(णथी महात्रमावयुक्त शक्तिशाली यई शक्यो छे. (३७)

 <sup>&#</sup>x27;'सोवागकुलसंभूओ गुणुलरघरो मुणी।
 हरिएसयलो नाम आसि भिक्ख जिहंदिओ॥ १

<sup>।</sup> चंडाळना क्रडमा पेदा थएलो अने वत्तम गुणने घारण करनारो एवो हरिकेश नामे जितेन्द्रिय मिश्च हतो. (१)

जेओना चित्तमां कोच छे, अहंकार छे, हिंसा छे, असला छे, चौर्य छे, अने मूच्छा छे तेवा जाति अने विद्याविहीन ब्राह्मणो पापक्षेत्र छे. (१४)

मारो मुनि कहेबाय छे. मात्र कोई झाडमी छाळ पहेरवाणी तापस कहेवातों नयी पण आत्माने शोधनारुं तप करे ते ज तापस विवाय छे. अा उपरांत आठ गापामां भगवाने खास करीने ब्राझणतुं स्वरूप बताव्युं छे.

भूम्मपद अने सुत्तनिपातमां भूगवान बुद्धे पण त्राह्मणनुं आ जातनुं लक्षण केटलीक गायामां बतावेलुं छे. आ उपरथी आपणे इंड जाणी शकीए छीए के ते बने महापुरुषोनो झुष्क जातिवाद सामे मोटो विरोध हतो. आने लीघे ज तेमना तीर्थोमां शूदो, क्षत्रियो वि क्षीओ ए बधाने एक सरखुं मानमर्युं स्थान मळेलुं छे.

जातिबादमी पेठे ते बखते जडमूळ घालीने बेठेली केटलीक जडिकयाओ सामे पण मगवान महाबीरे ते बखतना छोकोनी सामे होथ उठावेलो. ए कियाओमां खास करीने यज्ञ, स्नान, अर्पना मान विनातुं वेदतुं अध्ययन, भाषानी खोटी पूजातुं अभिमान, सूर्यचंद्रना हणने लगतुं कर्मकाण्ड, दिशाओनी पूजानो प्रघात, युद्धयी स्वर्ग मळवानी मान्यता—ए वधी जडप्रक्रियाओने लीघे समाजनी भाष्म-इद्दिनो हास पतो जाणी था सूत्रमां अने बीजा सूत्रमां भगवाने ते ते क्रियाओनुं खहं खहूप बताव्युं छ अने तेना जड स्वरूपनो बोक्खो विरोध कर्यो छे.

श्रीतुत्तराध्ययनसूत्रमां यज्ञना स्वरूप विषे कहेवामां आव्युं छे के बधा वेदोमां विहित करेला यज्ञो पश्चिहिसामय छे. ते पश्चिहिसा-इप पापकर्म द्वारा जे यज्ञ करवामां आवे छे ते यज्ञ याजकने पापथी बचावी राकतो नथी तेथी ज ते खरो यज्ञ नथी पण खरो यज्ञ इमाणे छे:—"जीवरूप अपिकुंडमां मनवचनकायानी शुभ प्रवृत्तिरूप वाढीथी शुभप्रवृत्तिनुं घी रेडीने शरीररूप छाणां अने दुष्कर्मरूप इन्हानं प्रदीत करीने शान्तिरूप प्रशस्त होमने ऋषिओं निस्प्राति करे छे. खरो होम आ जै छे."

"न वि मुंडिएण समणो न में कारेण बंभणो । न मुणी रण्णवासेण कुसचीरेण न तावसो ॥ २९ समयाए समणो होइ बंभचेरेण बंभणो । नाणेण य मुणी होइ तवेणं होइ तावसो ॥ ३० कम्मुणा बंभणो होइ कम्मुणा होइ खत्तियो । वहस्सो कम्मुणा होइ सुदो हवइ कम्मुणा" ॥ ३१

-उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन-२५

"जो न सज्जद् आगंतुं पव्ययंतो न सोश्रद् । रमए अजनयणस्मि तं वयं यूम माहणं ॥ २० आयस्यं जहामद्वं निद्धंतमलपादगं । रागहोसभयाईयं तं वयं वूम माहणं ॥ २१ तसे पाणे वियाणित्ता संगहेण य शावरे । जो न हिंगइ तिविद्देण तं वयं बूम माहणं ॥ २२ कोद्दा वा अइ वा हासा लोहा वा जइ वा मया। मुसंन वयइ जो उतं वयं बूम माहणं॥ २३ निसमेतमणि संवाक्षप्यं वाजहवाबहुं। न गिण्हइ अदर्स जो तं वयं वृम माहणं ॥ २४ दिव्वमाणुस्सतेरिच्छं जो न सेवे( मेहुणं। मणसा काय-विकेणं ते वयं चूम माहणं ॥ २५ जहा पोम्मं जले जायं नोबलिप्पह वारिणा । एवं अलित्तं कामेहिं तं वयं बूम माहणं ॥ २६ अलोञ्चयं मुहाजीविं अणगारं अकिंचणं । असंसत्तं गिहत्थेहिं तं नयं बूम माहणं ॥ २७ एवंगुणसमाउत्ता जे हवंति दिउत्तमा । ते समस्था उद्धनुं परं अप्याणमेव य" ॥ ३३

-उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन-२५

''िक माहणा जोइ समारभंता उदएण सोहिं बहिया विमरगद्दा ?। जंमगग्हा बाहिरिमं विसोहिं न तं सुदिहुं कुराला वर्यति ॥ ३८

कुर्स च जूबं तणकट्टमिंग सायं च पायं उदयं फुसंता । पाणाई भूयाई विहेठयंता भुजी वि मंदा पकरेह पावं ॥ ३९

तनो ओइ जीनो जोइठाणं जोगा सुया सरीरं कारिसंगं। कम्म एहा संजमजोग संती होसं हुणामि इसीणं पस्तवं''॥ ४४ —उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययम—१२

- मात्र माथुं मुंडाववाथी श्रमण यइ शकातुं नथी, ॐकारना जापगी बाह्मण थइ शकातुं नथी, अंगळमा रहेवाथी मुनि यह शकातुं नथी अने डाभ पहेरवाथी तापस थह शकातुं नथी. (२९)
- समताथी श्रमण यवाय छे, ब्रह्मचर्यथी ब्राह्मण यवाय छे, चिंतनथी सुनि यवाय हे अने तथबी तापम थवाय छे. (३०)
- कर्मथी लाह्मण थवाय छे, कर्मथी क्षत्रिय थवाय छे, कर्मशी थेर्य थवाय छे अने कर्मथी शुरू थवाय छे. (३१)
- "जे आरक्ति न राखे, शोक न करे, अने आर्थना वचन प्रमाणे रहें सेने अमे ब्राह्मण कहीए छीए. (२०)
  - घमेला अने संस्कारेला सोनानी पेटे जे शुद्ध छे अने राग, द्वेष नथा भयथी विमुक्त छे तेने अमे ब्राह्मण कहीए छीए. (२१)
  - गतिशील अने अगतिशील प्राणीओनी स्थित आणीने जे मन, वचन अने शरीरथी हिंसा नथी करतो तेने अमे ब्राह्मण कहीए छीए. (२२) कोध, मरकरी, लोभ के भयथी जे जुडुं बोलतो नथी तेने अमे ब्राह्मण

कहीए छीए. (२३)

- सजीव के निर्जाव बस्तुनी जे थोबी के बहु चोरी करतो नथी देने अमे बाह्यण कहीं ए छीए. (२४)
- जे मन, वचन ने कायाची ब्रह्मचर्य पाळे छे तेने अमे ब्राह्मण कहीए छीए. (२५)
- जेम कमळे पाणीमांथी थाय छे छतां पाणीथी लेपातुं नथी तेम जे कामोथी भलिस रहे छे तेने अमे बाह्मण कहीए छोए. (२६)
- जै लोखप नथी, खार्यने कारणे जीवतो नथी, अकिंचन छे अने गृह-स्थोमां संसक्त नथी तेने अमे बाह्मण कहीए छीए (२७)
- जे द्विजोत्तमो आवा प्रकारना गुणवाळा होय छे तेओ ज पोतानो अने परनो उदार करवाने समर्थ छे. (३३)
- हे ब्राह्मणो, अभिमां आलभन करता तमे पाणीवडे बहारनी छुड़िने छुं शोधो छो १ तमे जे बहारनी छुद्धि शोधो छो ते सार्ध नधी एम कुराळ माणसो कहे छे. (३८)
  - कुश, यूप, घास, लाकडो, अग्नि अने पाणीनो सांजे अने सवारे स्वर्ध करता तमे मंदो प्राण भूतोनी हिंसा करो छो अने तेथी वार्रवार पाप करो छो. (३९)
  - खरो होन तो आ छे: तप ए अग्नि छे, जीव ए अग्नितुं स्थान छे, प्रकृतिओ ए वाबी छे, दारीर ए छाणां छे, पुण्य पाप ए लाकडां छे अने संयम ए द्यान्ति छे. ऋषिओ ए आ वा हो मने वस्ताणेलो छे. (४४)

आ ज जातना यञ्चनुं खरूप जिनप्रवचनमां ठेक्ठेकाणे बतावेछुं छे. भूगवान महावीरे ते वखतना समाजमां यञ्चविवेनी आ जातनी मान्यतानो प्रचार करीने हिंसात्मक यज्ञनो छडेचोक विरोध करेलो अने तेने अटकावेलो.

भगवानना वखतमां अने आजे पण मात्र जळकानमां घणा लोको धर्म सैमजे छे. गंगास्नान, त्रिवेणीस्नान, प्रयागस्नानना माहा-स्पने लगता प्रयोनी परम्परा आपणा देशमां आज केटलाक वखतथी चाली आवे छे. अने भोळा लोको गंगामां स्नान करीने पोताने पुण्य मळ्यानुं माने छे.

आ जातना स्नानना माहात्म्यनी असरथी अस्तारना जैनो पण शेत्रुंजी नदीना स्नानने धर्म मानवा लाग्या छे. मगवान कहे छे के ए स्नान तो मात्र शरीरना मळने ते पण घडीभरने माटे ज दूर करे छे पण आत्माना मळने जरापण दूर नथी करी शकतुं तेथी ते स्नान . खरा पुण्यतुं कारण नथी. पण खरुं स्नान करवुं होय तो धर्मरूप जङाशयमां आनेला ब्रह्मरूप पवित्र घाटे स्नान करे तो खरेखरो शीत, विमळ अने विशुद्ध थाय छे. तथा आत्ममळनो त्याग करे छे. आ ज झानने कुशळ पुरुषोए महास्नान तरीके वर्णवेख छे अने ऋषिओने तो ते ज प्रशस्त छे."

अगवाने स्नाननी आ जातनी व्याख्या करीने विवेकपूर्वकना बाह्य स्नाननी निषेध कर्यों छे एम मानवानुं कारण नथी. पण जे लोको मात्र जलकानमां ज धर्म मानता अने तेथी ज आत्मशुद्धि समजता तेओने माटे भगवाने जीवनशुद्धि माटे खरा स्नाननुं खरूप बतावीने स्नाननो खरो मार्ग खुल्लो कर्यों छे.

तेमना वखतमां लोको पुण्यकर्म समजीने वेदने मात्र कंठस्थ करी राखता अने अर्थनो विचार भाग्ये ज करता. वेदना अर्थनी परम्परा भगवानना पहेलांना समयधी तृटी गयेली होवानो पुरावो यास्काचार्य पोते ज छे, कारण के ते वैदिक शब्दोना स्पष्ट अर्थ करी शकता नथी पण तेने छगता अनेक मतमतांतरो साथे पोतानो अमुक मत जणावे छे एटले घणा वखतथी वेदना अर्थनो विचार करवो लोकोए मांडी वाळेले अने वेद जूनो ग्रंथ होई तेने कंठस्थ करवामां अने खरपूर्वक उच्चारण करवामां ज पुण्य मनातुं अने बाह्मणो एम मानता के वेदने भणीने, ब्राह्मणोने जमाडीने अने पुत्र उत्पन्न करीने पछी आरण्यक तपस्त्री थवार्ये. पण आ जातनुं जड कर्मकांड जीवनशुद्धिनुं एकांत घातक छे एम समजीने उत्तराध्ययनसूत्रमां कहेवामां आव्युं छे के वेदोनुं अध्ययन आत्मानुं रक्षण करी शकतुं नथी। जमाडेला बाताणो आळसु पत्राथी जमाडनारने लाभ देवाने बदले ऊलटा नरकमां पाडे छे अने अपुत्रस्य गतिर्नास्ति एवो जे वैदिक प्रवाद छे ते पण बराबर नथी. कारण के उत्पन्न करेला पुत्रो पण पिताना के पोताना आत्मानुं रक्षण करी शकता नथी. आ रीते जिनप्रवचनमां वेदना शुष्क अध्ययननो विरोध करवामां आव्यो छे अने ज्ञान अने आचार उपर एक सरखो भार मूकवामां आव्यो छे.

१ "उद्देश जे सिद्धिमुदाहरंति सायं च पायं उद्दंगं कुरुंता । उदगस्त फासेण सिया य सिद्धी सिजिंशसु पाणा वहत्रे दर्गसि ॥ ५४

मध्छा य कुम्मा य सिरीसिवा य मग्गू य उद्दा दगर्वन्त्रसा य । अट्टाणमेयं कुसला वयंति उदगेण जे सिद्धिमुदाहरंति'' ॥ १५

-सत्रकृतांग प्रथमश्रुतस्कंध अध्ययन-७

- २ "धम्मे हरए बंभे संतितित्ये अणाविले असपराष्ट्रवेसे । जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥ ४६ एयं रिणाणं कुसखेग दिहुं मह।सिणाणं इसीणं परात्थं । जहिं सिणाया विमला विद्वदा महारसी उत्तमं ठाणं पत्ते" ति बेमि ४७ -उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन-१२
- ''इमं वयं वेअविजो वयंति— 1 अहिज वेए परिविस्स विष्पे पुत्ते परिद्वप्प गिहंसि जाया ! । भुषाण भोए सह इत्थियाहि आरण्णगा होइ मुणी पसत्था"॥ ९ उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन-१४
- '' वेआ क्षहीआ न भवति ताणं''-उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन-१४
- इमं षयं वेअविओ वयंति-"जहा न होइ असुआण होगो। अत्ता दिशा निंति तमं तमेण जाया य पुता न हवंति ताणं -उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन-१४

- सोजे अने सबारे पाणीनो स्पर्श करता जे लोको पाणी वडे सिद्धि माने छे तेमने मते तो पाणीना स्पर्शवहे पाणीमां रहेनारा जीव मात्रनी सिद्धि यवी जोईए ज. (१४)
  - जेवां के, माछलां, काचवा, सपों, उंटो (आ एक प्रकारनुं जळवर प्राणी छे ) अने जळराक्षसो--आ षघा प्राणीओ निरंतर जीवनपर्यंत पाणीमां रहे छे तो एमनुं निर्वाण थवुं जोइए. पण एम थनुं नथी माटे जे लोको मात्र जलज्ञानथी सिद्धि थवानुं कहे छे ते खोटुं छ एम कुशळ पुरुषो कहे छे. (१५)
- खहं आन तो आ छेः धर्मेहप पाणीनो धरो होय, बहाचर्यहप चाट होय, जो ए पवित्र, अने निर्मेळ घाटे धर्मना धरामां स्नान करवामां आवे तो स्नान करनारो विमळ, विशुद्ध अने शान्त थाय छ अने दूपणोने छोडी दे छे. आ सानने ज ऋषिओए महास्रान कहेलुं छे. कारणके ए रीते नहाबाधी विश्वद्ध यएला महर्षिओ उत्तम स्थानने पामेला छे, (४६—४७)
- वेदना जाणनाराओं आम कहें छे:-वेदोने भणीने, बाह्मणोने जनाबीने. Ţ छोकराओने बारसो सोंपीने अने संसारना भोगो भोगवीने पछी मुनि थवुं ठीक छे. ९
- पाठे करेला वेदो रक्षण करी शकता नथी. १४
- भागळ जे एम कहेवामा आच्युं छे के पुत्ररहित मनुष्योने सद्गति 4 मळती नथी ते बराबर नबी. कारण के थएला पुत्रो पण रक्षण करी वाकता नथी अने जमाडवामां आवता ब्राह्मणो अंवारामां छई जाय छे.

भगवाननां जमानामां वैदिक के छैकिक संस्कृतने ज महत्त्व अपार्त्तं, ते एटखुं वधुं के ए ज माषा बोछवामां पुण्य छे अने बीजी जिलाषा बोछवामां पाप छे. आ हकीकतनो प्रतिष्विन महाभाष्यकों आरंभमां आजे पण जोवामां आवे छे. तेमां संस्कृत सिवायनी बाकीनी जायाओंने अपश्रष्ट तरीके गणावी छे अने तेनो प्रयोग करनाराओंने दोषी ठराववामां आव्या छे अने आ रीते ते वखतना केटलाक छोको बाय्दने ब्रह्म समजी तेनी ज पूजा पाछळ पडेला. आ संबंधमां भगवाने पोतानां सर्य प्रवचनो ते वखतनी छोकभाषामां करीने ए बखते आमेखो भाषानो खोटो महिमा तोडी नांखेलो छे अने एक मात्र सदाचार ज आत्मश्चिद्धनुं कारण छे पण मात्र भाषायी कांई वळतुं नयी एम बतावी आप्युं छे.

श्रीहराराध्ययनमां कहेवामां आन्युं छे के जुदीजुदी भाषाओं आत्मानुं रक्षण करी शकती नैथी. भगवान बुद्धे पण भाषानी खोटी पूजानो प्रवाद मगवान महाबीरनी पद्धतिए ज अटकाववानो प्रयास कर्यों छे.

सूर्यप्रहण के चंद्रप्रहण विषे जे मान्यता अलारे चाले छे तेवी ज मान्यता अगवानना जमानामां पण चालती. राहु सूर्यने गळी गयो अने प्रहण पूरं थाय त्यारे राहुए सूर्य के चंद्रने छोडी दीधो एम राहुने सूर्य अने चंद्र साथे वैरमाव जाणे के न होय तेम ते वखतना लोको समजता अने एवं रूपकात्मक वर्णन हजुसुची वैदिक परम्परामां पौराणिक प्रंयोमां टकी रह्युं छे. आ प्रहण वखते धर्म मानीने जेम लोको सान माटे अत्यारे दोडधाम करे छे तेम ते वखते पण करता हरो एम मानचुं लोटुं न कहेवाय. कहेवानी मतलब ए छे के प्रहणना प्रसंगने धार्मिक प्रक्रियानं रूप आपीने लोको जेम अलारे धमाधम मचावे छे तेम ते वखते पण मचावता हरो. तेमनी सामे अगवाने कह्युं छे के राहु चंद्र के सूर्यने गळतो नथी तेम ते वे बच्चे कोई जातनो वैरमाव पण नधी. ए तो गगनमंडळमां राहु एक गतिमान पदार्थ छे तेम चंद्र अने सूर्य पण गतिमान पदार्थ छे. उयारे गतिवाळा तेओ एक बीजानी आडे आवी जाय छे लारे अंशधी के पूर्णपणे एकबीजाने ढांकी दे छे अने पछी छूटा पण पडी जाय छे एटले कोई एक बीजाथी गळातो नथी. ज्यारे एक बीजाने ढांके छे सारे लोको तेने प्रहण थयुं कहे छे एटले ए प्रहण कोई धर्मय उत्सव नथी तथी ए माटेनी दोडधाम पण धर्ममय नथी ज ए उचाहुं छे. (भा० ३ पा० २७९)

आ रीते प्रहण निमिष्ठे चालती जडिकियानो प्रहणतुं स्पष्ट सिक्स्प आपीने भगवाने आ स्थळे स्पष्ट खुलासो क्यों छे. अने वधारामां शशी अने आदित्यना स्पष्ट अर्थो पण जणाव्या छे. शशी शब्दनो पौराणिक अर्थ श्वश्च—ससला—बाळो एयो याय छे अने आदिस्मनो अर्थ अदितिनो छोकरो एवो याय छे. भगवाने आ पौराणिक परम्परा सामे जाणे के टकोर करवा खातर ज शशी अने आदित्यना तहन जुदा अर्थो बतावेला छे.

भगवान शिशानिश्री सिंहत-्रोभा सिंहत एवो अर्थ करे छे अर्थात् जे तेजवाळो, कांतिवाळो अने दीप्तिवाळो छे ते शशी—सिंशी. तेने जिनप्रथचनमां सिंसी—सिंशी कहेवामां आवे छे. अने आदित्य एटले भगवानना कहेवा प्रमाणे जेने मुख्यभूत—आदि-भूत करीने काळनी गणतरी याय ते आदित्य. काळनी गणतरीमां सूर्यनुं स्थान सर्वथी प्रथम छे माटे भगवाने कहेलो आ अर्थ ज्याजवी छे अने ज्युत्पत्तिनी दृष्टिए पण बराबर छे. भगवाने आदित्यनो जे उपर्युक्त अर्थ बनाव्यो छे ते मैस्यपुराणमां पण उपलब्ध छे.

आ प्रमाणे शशी अने आदित्यना पौराणिक अर्थी खसेडीने तेना नवा अर्थी योज्या छे. अने तेम करीने ते बे प्रत्येनी छोकोनी गैरसमज मोछी करवा प्रयास करेलो छे.

२ "न चित्ता तायए भासा कथो विज्ञाणुसासणं ?। विसम्मा पावकम्मेहिं बाका पंडिअमाणिणो ॥"

**उत्तराध्ययनसूत्र अध्**ययन-६

१ " आविस्रबादिभूतत्वाद्"—मत्स्यपुराण अ॰ १ छो॰ ३१.

अपशब्दी घणा छे अने बाब्दी ओछा छे. एक शब्दनां श्रष्टक्यो घणां थाय छे. जेमके एक गो शब्दना ज गावी, गोणी, गोता, गोपोत-लिका बगेरे घणां श्रष्टक्यो थाय छे.

जे इनाळ माणस बहुवारने बस्तते सथावत राज्दोनो प्रयोग करे छे ते वाग्योगिविद अनंत जयने पामे छे अने अपनाज्दने बोल-नारो दोषवाळो थाय छे (माष्यकार पतंजिलना वस्तमा सामान्य सोको जे बाज्दो बोलता तेने अहीं अपनाज्दो कहेगामा आग्या छे अने आम कहीने तेमनो आवाय ते वस्ततनी प्रचलित लोकमाषानी अवज्ञा करवामो अने कहेवाती संस्कृतने पूज्य स्थान आपवानो नथी?)

चित्रविचित्र भाषा कोइनुं रक्षण करी शकती नधी तेम ग्रुष्क शास्ता-भ्यास पण. पोताने पंडित भानता अज्ञानीओ पाप करवामां खंची रहे छे.

"हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम्"—(गीता छ० २ स्त्रो० २७) ए गीताना वाक्यमां एम कहेवामां आव्युं छे के छन्नने हणीने तुं स्वर्गे जईश, एथी गीताना जमानाथी के गीताना समय पहेलेथी लोकोमां एवी मान्यता प्रसरी गयेली के लडनारा लोको स्वर्गे जाय छे. आ मान्य-ताने लीचे मोटी मोटी लडाईओमां लडनारा घणा मळी आवता अने आ रीते मनुष्यजातनो कचर घाण नीकळतो. ए अटकाववा मगवाने ए मान्यता उपर स्पष्ट प्रकाश नाख्यो छे अने कह्युं छे के लोको युद्धधी स्वर्ग मळवानी वात कहे छे ते खोटी छे. पण खरी वात तो ए छे के लडनारा खर्गे ज जाय छे एम नथी पण ते पोतपोतानां शुद्धाशुद्ध कर्म प्रमाणे भिन्न भिन्न योनिओमां जन्म धारण करे छे. (भा० ३ पा० ३२)

आ हकीकत कहीने भगवाने युद्ध खर्गनुं साधन छे एवी जातनी छोकोमां फेळायेळी धारणा खोटी पा**डी अने छोकोने युद्धना** हिंसामय मार्गयी दूर रहेवानी खास भळामण करी.

वळी, ते बखतनी दिशापूजननी प्रथाने लोकोमांथी दूर करवा अने तेनुं खर्ह खरूप बताबवा भगवाने आ सूत्रमां दिशानी पण चर्चा करी छे. दशमा शतकना पहेला उदेशकनी शरूआत दिशाना विवेचनथी करवामां आवी छे. भगवाने गौतमने कहां छे के दिशाओ दश कहेवामां आवी छे जेना क्रमथी नाम ऐन्द्री (इन्द्रना खामित्ववाळी), आग्नेयी (अग्निना खामित्ववाळी), याम्या (यमना खामित्ववाळी), विक्रण देवना खामित्ववाळी) वायव्य (वायुना खामित्ववाळी) सीम्या (सोमना खामित्ववाळी) ऐशानी (ईशानना खामित्ववाळी), विमला अने तमा. आ दश दिशाओने माटे पुराणप्रसिद्ध उपर्युक्त नामो जणावा उपरांत नीचेना प्रसिद्ध शब्दो पण मूकवामां आवेला छे. पूर्व, पूर्वदक्षिण, दक्षिण, दक्षिणपश्चिम, पश्चिम, पश्चिमोत्तर, उत्तर, उत्तर- पूर्व, ऊर्च (उपरनी), अघो (नीचेनी) आ वधी दिशाओ जीवाजीवना आधाररूप छे तेथी उपचारथी ए दिशाओने जीवअजीवरूप कहेवामां आवी छे. दिशाने एक द्वय तरीके गणाववानी पद्धित वैदिक परंपरानी वैशेषिकी शाखामां प्रसिद्ध छे.

वैदिककाळमां दिशाओनी पूजा करवानो प्रघात हतो ए हकीकत ने साहित्य उपरथी जाणी शकाय छे अने दिशाओनुं प्रोक्षण करीने जमवानी पद्धित एक वर्त तरीके अमुक परंपरामां चालु हती अने ते परंपराने मानता छोको दिसापोक्सियणो कहेवाता ए हकीकत जैनआगमोमां पण मळे छे. आ रीते वेदनी जूनी परंपरामां दिशाओनुं महत्त्व विशेष प्रसिद्धि पामेलुं हतुं अने दिशाओनी पूजानो प्रचार पण लोकोमां ठीकठीक हतो. आ जड प्रचारने रोकवा माटे ज भगवाने दिशाना माहात्म्यनी निष्प्रयोजनता बताववा तेने आ सूत्रमां जीवाजीवात्मक कहीने वर्णवेली छे. दिशाओ मात्र आकाशक्रप होई जीवाजीवक्रप समस्त पदार्थना आधारक्रप छे ए वात खरी छे पण एटला मात्रथी तेनी जडपूजा करवा मंडी पडवुं ते आध्यात्मक शुद्धि के जीवनशुद्धि माटे जराय उपयोगी नथी.

भगवान बुद्धे पण दिशाओनी जडप्जाने अटकाववा पोतान। प्रवचनमां बीजी ज रीते टकोर करी छे. दीघनिकौयना श्रीजा वर्गना सिगाछोववादसुत्तमां टखेलुं छे के एक वखत बुद्ध भगवान राजगृहना बेणुवनमां रहेता हता ते वखते सिगाछ नामनो एक पुवक शहरमांथी रोज सवारे बहार आवी स्नान करी पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उपर अने नीचे ए छए दिशाने नमस्कार करतो हतो. राजगृहमां भिक्षा माटे जता बुद्ध तेने जोईने बोल्या "गृहपितपुत्र! तें आ शुं मांडपुं छे" सिगाछ बोल्यो—"हे भदंत! मारा पिताए मरती वखते छ दिशानी पूजा करता रहेवानुं मने कह्युं होवाथी हुं आ दिशाओने नमस्कार करुं छुं". भ० बुद्ध बोल्या—"हे सिगाछ! तारो आ नमस्कारविधि आर्योनी पद्धित प्रमाणे नथी." त्यारे सिगाले आर्योनी रीति प्रमाणे छ दिशाओनो नमस्कारविधि बताववा बुद्धने विनंती करी. भ० बुद्ध बोल्या—"जे आर्यश्रावकने छ दिशानी पूजा करवानी होय तेणे चार कर्मक्रेशथी मुक्त थयुं जोहए. चार कारणोने छईने पापकर्म करवां न घटे अने संपत्तिनाशनां छ हारोनो तेणे अंगीकार करवो न घटे. आ चौद वातो सांभळे तो छ दिशानी पूजा करवाने ते योग्य बने छे". आ उपरांत बुद्धे तेने एम कह्युं के भाई! मावाप ए पूर्वदिशा छे, गुरुने दक्षिण दिशा समजवी, पत्नीपुत्र पश्चिमदिशा, सगांवहालां उत्तरदिशा, दास अने मज्य नीचेनी दिशा तथा श्रमणत्राह्मण उपरनी दिशा समजवी. आटलुं कह्या पछी तेने ए दिशाओनी पूजानी पद्धित बुद्ध भगवाने विस्तारयी समजावी छे.

आ उपरथी एम मालम पडे छे के भगवान बुद्धना वखतमां दिशाओनी जडपूजानो प्रचार खूब थयेलो होवो जोईए, जेने अट-काववा श्रीबुद्धे नवा प्रकारे दिशानी पूजानी पद्धति लोकोने समजावी अने भगवान महावीरे पूर्वोक्त प्रमाणे दिशाओने जीवाजीवात्मक

 <sup>&#</sup>x27;'पृथिव्यापलेजो वायुराकाशं कालो दिग् आत्मा मन इति द्रव्याणि'

<sup>(</sup>वैशेषिकदर्शन प्रथम अध्याय )

 <sup>&#</sup>x27;'उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फल-पुष्पादि समुश्चिन्वन्ति''
 औपपातिक स्त्र पृ० ९०

जूओ धीघनिकाय-उवर्युक्तसूत्र.

<sup>।</sup> पृथ्वी, पाणी, तेज, घायु, आकाचा, काल, दिचा, आत्मा अने सन एटलां हब्यो छे.

र जे लोको पाणीथी दिशाओने अर्घ्य आपीने फळ, फुलने ब्रहण **६रे** छे तेओ दिशाप्रोक्षी **कहे**नाय.

हीने ते जडपूजामांथी छोकोने बचावी लेबा प्रयंत करों, ए एकसरखी हकीकत आ सूत्रमां आवेटा दिशाना प्रकरण उपरथी स्पष्ट रीते कांजी शकाय एवी छे. दिशा विषे भगवाननुं प्रवचन ते बखतनी दिक्पूजननी रूढिने नाबूद करनारुं छे.

आ प्रकारे भगवाने पोताना समयनी कुरूढिओने नाबूद करवा अने तेने स्थाने घुमार्ग प्रवर्ताववा पोताना प्रवचनमां घणो प्रयास करेलो के, आ जातनां उदाहरणो घणां आपी शकाय पण उपरनां उदाहरणो नमुनारूपे मात्र टांकेळां छे.

अगवान महावीरे अने अगवान बुद्धे कुरूढिने दूर करीने छोकोने सुरूढि पर छाववा पोताना प्रवचनोमां पूर्वोक्त केटकीक हकी-कतो बतावेळी छे. आधी ज था बने महापुरुषो ते वखतना प्रबळ सुधारको हता एम जे अत्यारना शोधको माने छे ते खरेखरुं है. आर्योए बतावेळा आहंसा धने सत्यमय मार्गमां जे केटळोक कचरो भराई गयेळो तेने दूर करवा आ बने महापुरुषोए घणो प्रयक्त केट्यो छे एमां शक नथी.

केटलीये एवी वैदिक मान्यताओ हती जेनायी छोकोमां हिंसा, असस्य, जडता वगेरे दुर्गुणोनो वधारो पतो अने एगी ते वख-तनी प्रजा त्रासी १ण गयेली, ए प्रजाने सन्मार्ग बताववा भगवान बुद्ध अने भगवान महावीर कल्याणित्ररूपे न आव्या होत तो अस्पारे आपणी केवी दुर्दशा होत ते कोण कही शके !

#### जैनशास्त्रो उपर वैदिक परंपरानी असर

बैदिक परंपराओमां केटलाये सुधारा करनारा जिनप्रवचनमां पण केटलीये एवी मान्यताओ मळे छे जे वैदिक परंपरानी असरने आभारी होय. आ हकीकत समजवा माटे आ सूत्रमांथी ज आपणे केटलांक उदाहरणो नीचे प्रमाणे जोई शकीशुं.

देयदानवनुं युद्ध वेदनी परंपरामां प्रसिद्ध छे. ते युद्धने निर्हंकमां विजळीना कडाका तथा मेघनी गाजबीजना रूपक तरीके वर्ण-केठ छे. भा सूत्रमां इंद्रभूति गौतम भगवान महावीरने पूछे छे के देव अने अद्धुरनो संप्राप्त छे ! आनो उत्तर भगवान हकारमां आपे के. आ पछीना सूत्रोमां देवनां शस्त्रो अने अद्धुरनां शस्त्रोनी हकीकत भगवाने इंद्रभूतिने समजावेळी छे. (भा० ४ पा० ६८) देवअद्धुरना संप्राप्तने लगता बघा प्रश्नो वैदिक परंपरामां प्रसिद्ध एवी देवदानवनी प्रख्यात लडाईने लक्षमां राखीने करवामां आव्या होय एम मालुम पढे छे एटलुं ज नहीं पण देवदानवना युद्धनी ए पौराणिक कथामां वधारे मेळवाळी हकीकत आवे ते माटे तेमना युद्धनां कारणो साथेनी एक कथा पण आ सूत्रमां मूकवामां आवेळी छे.

त्रीजा शतकना बीजा उद्देशकमां आ संबंधमां एम कहेवामां आच्युं छे के देवो अने असुरोने जन्मथी ज वैरनो खभाव छे. किने ते वे वर्षे संपत्ति अने कीओ माटे युद्ध थाय छे. वैदिक कथानी हकीकत करता देवासुरना युद्धने लगती आ हकीकत 'देवो अने असुरो पण लोभी अने विषयना निर्वेद तरफ लई छें ए वस्तु समजावे छे अने लोकोने लोभ अने विषयना निर्वेद तरफ लई जई खर्ग पण बांछनीय नथी ए वात सूचवे छे अने आ जैनकथामां ए ज मुद्दो मेळवाळो छे. अहीं एक वस्तु ख्यालमां राखवानी छे के ज्यारे वैदिक परंपरामां देव अने दानवना रपष्ट विभाग छे लारे जैनपरंपरामां असुरोने पण देव तरीके गणावेला हो.

भगनान महावीरे त्रीजा शतकना आ ज उद्देशामां पोतानी हयातीमां देवंद्र देवराज शक्त अने अधुरेंद्र अधुरराज चमरनुं युद्ध धयुं हतुं एम इन्द्रभृति गीतमने विस्तार सहित जणावेछं छे अने ते छडाईमां भगवानना ज आशराथी अधुरेंद्र चमरनु रक्षण ययुं हतुं एम पण सूचवेछं छे. आ छडाई जंबूद्धीपना भारतवर्षना सुंधुमार नगरमां ज्यारे भगवान दीक्षा छीघा पछी अगियारमे वर्षे तप तपता हता ते वखते यई हती, अधुरेंद्र अने देवेन्द्र बनेने भगवानना भक्त तरीके आ कथामां जणावेछा छे. आ सूत्रमां आवेछी आ कथानो उछेख सिद्धसेन दिवाकर पोतानी बन्नीशीओमांनी महावीरस्तुतिना त्रीजा क्षोकमां कवित्वने छाजे एवी सरस रीते करे छे.

जेम राम अने पांडवोनी कथा जैनपरंपरामां जैनदृष्टिए सारो घाट आपीने वर्णवायेळी छे तेम देवअसुरनी आ कथा सारो घाट आपीने वर्णवाई होय अने ते द्वारा विषयनिर्वेद फेलाववानो आध्यात्मिक हेतु जैनाचार्योए साध्यो होय तो ते तेमना ध्येयने बरावर अनुकूळ घयुं होय एवं लागे छे.

आवी ज बीजी हकीकत लोकपालोने लगती छे. श्रीजा शतकना सातमा उद्देशकमां कहेवामां आव्युं छे के देवेन्द्र देवराज शकना कार लोकपालो छे. सोम, यम, वरुण अने वैश्रमण. आ चारे लोकपालो शकनी आज्ञामां रहे छे.

निरुक्तना उहेब माटे जुओ प्रस्तुतप्रंथ भाग २ पृ० ४८-४९ टिप्पण २.

देवाश्व जैन समये भवनपति-व्यन्तर-उयोतिष्क्र-वैमानिक-मेदाश्वतुर्धा भवन्ति ॥३॥

जैन सिद्धान्तमां देवोना चार प्रकार छे जेमकः-भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषी अने वैमानिक.

अभिधानविन्तामणि देवकाण्ड खोक ३

**मा कोफ माढे जुओ प्रस्तुत प्रंथ आग २ पृ. ६**९ टिप्पण १

जगतमां उल्कापात, दिग्दाह, भूळनो वरसाद, चंद्रप्रहण, सूर्यप्रहण, इन्द्रधनुष्य, मोटा मोटा दाहो, प्रामदाह, नगरदाह, प्राणीक्षय, जनक्षय, धनक्षय, कुलक्षय, संध्या, गांधर्वनगर आ अने आवा बीजा बधा उत्पातो सोमनी देखरेख नीचे जगतमां आवे छे.

सोमने आचीन विद्युत्कुमार, विद्युत्कुमारी; अग्निकुमार, अग्निकुमारी; वायुकुमारी, वायुकुमारी; चंद्र, सूर्य, प्रह, नक्षत्र अने तारा ए बभां छे

शक्कने बीजो लोकपाळ यम छे. जगतमां कलह, महासंग्राम, मारफाड, रोगचाळा, शारीरिक दुःखो, बळगाड, एकांतरीयो, बेआंतरीयो, त्रणभांतरीयो, चोधीयो, खांसी, श्वास, पांडुरोग, हरस, शूळ, मरकी आ बधा उपद्रवी यमनी सत्ता नीचे याय छे. झंड, अंबरीय, महाकाळ, असिपत्र, कुंम, वालु, वैतरणी ए बधा यमना आश्रितो छे.

वरुण त्रीजो लोकपाळ छे. अतिवृष्टि, मंदवृष्टि, सुवृष्टि, दुर्वृष्टि पाणीना उपदयो, जलप्रलय अने पाणीनी रेलो ए बधुं आ वरुणनी सत्तामां छे.

लोटानी, कर्लाईनी, तांत्रानी, सीसानी, सोनानी, रुपानी, रक्षनी अने हीराओनी खाणो तथा रत, सुवर्ण वगेरेनी वृष्टिओ, सुकाळ, दुष्काळ, सोंघाई, मोंबाई आ बधुं शक्रना चोथा लोकपाळ वैश्रमणनी सत्तामां छे.

सुवर्णकुमारी, सुवर्णकुमारीओ, द्विपकुमारो, द्विपकुमारीओ, दिक्कुमारो, दिक्कुमारीओ, वानव्यंतरो, वानव्यंतरीओ ए बर्धा

आ बधुं जोतां एम मालुम पढे छे के जाणे के जगतमां चालतुं आ बधुं तंत्र आ लोकपालोने आभारी न होय ? पण आत्मबळने प्रधान माननारा अने ते उपर ज प्रवर्तनारा तीर्थंकरना शासनमां आ लोकपालोनी सत्ताथी थती ए व्यवस्था घटाववी शी रीते ?

जे कोई दृश्य अने अदृश्य बनायो बने छे ते बधा आत्माए संचित करेला कर्मना परिणामरूप छे एम जिनदेव कहे छे तो आपणे रोगचाळा के दुष्काळनां कारणो आपणां कर्ममां शोधवां के लोकपालमां ?

कदाच लोकपालोने निमित्त कारण कल्पीने उपर्युक्त व्यवस्था घटाववानो विचार यह आवे पण हरस, खांसी, शूळ वगेरेनां अधिष्टायक निमित्तो शरीरनी रक्षानुं अज्ञान अने कुपध्यादिकने कल्पवां के लोकपालोने!

वळी, कार्यमात्रने थयानां पांच कारणो जैन परंपरा बतावे छे. जेमके:—काळ, खभाय, नियति, पूर्वकृत अने पुरुप. जगतनी बची व्यवस्था आ कारणोनी व्यवस्थाने आधीन छे. एमां रोगो फेळावनारा, सुकाळ करनारा लोकपालोनुं स्थान क्यां छे ते समजबुं मुस्केली मर्खुं छे. जैनपरंपरामां संतसमागम अने तेनी अवेजीमां वीतरागनुं घ्यान, स्मरण या पूजन आदर्शने पहोंचवा सारु साधको माटे उचित मनायां छे पण रोगादिक टाळवा वा धनलाभादिक सुख मेळववा सोम, यम, वरुण के विश्वमण वा इंद्रादिकनुं घ्यान, स्मरण, पूजन के प्रार्थना सम्यग्दिष्ट साधकने सारु तो सर्वथा निधिद्ध छे. ए तो दुःखना के सुखना जे जे प्रसंगो आवे तेने पोताना ज संस्कारोनुं परिणाम जाणी समपणे अनुभवे छे त्यारे वंदिक परंपरामां तो सोम, यम, वरुण, वश्रमण के इंद्र वगेरेने लाम वा हानिकर्ता टराववामां आव्या छे अने लाम मेळववा वा हानि टाळवा ते ते सोमादिकनी पूजा प्रार्थनीनां पुरातन विधानो करवामां आव्यां छे जे आज पण प्रचलित छे तेथी आ सूत्रमां चर्चायेली आ लोकपालनी हकीकत पाराणिक पद्धतिने आभारी छे एम मानवामां कहां अनुचित नथी.

वरसाद माटे इन्द्रनी पूजा घणा ज्ञा काळ्यी वेदोमां प्रसिद्ध छे एटले के वैदिक जमानामां लोको एम मानता के वरसाद मोकल्ल्यो ए इन्द्रनी सत्तानी वात छे, तेथी ज तेओ वरसादने माटे इन्द्रने तुष्ट करवा यह करता. आ वहेम श्रीकृष्णे गोवर्धनपूजानी प्रया पाडीने दूर करवा प्रयप्त करेले ए जाणीतुं ज छे अने जैन परंपरामां वरसाद वगेरे कारणो माटे इन्द्रादिकने तुष्ट करवाना प्रयक्तो कदी करवामां आज्या नथी, कारण के भगवान महावीर ख़ुद इन्द्रयञ्च वगेरे यञ्चोना विरोधी हता एमां करो शक नथी. ए परावर्लंबन टाळवा ज एमणे पुरुषार्थवाद अने कर्मवादनो सिद्धांत ते वखतना समाज समक्ष मूकेलो, आम छतांय वरसाद मोकलनार इन्द्रने लगती ए जूनी परंपरा आ सूत्रमां सचवायेली छे.

चौदमा शतकना बीजा उद्देशकमां इन्द्रभूति गीतम भगवानने पूछे छे के देवेन्द्र देवराज शक्र ज्यारे वृष्टि करवानी इच्छावाळी होय छे त्यारे ते केवी रीते वृष्टि करे छे है तेना उत्तरमां भगवान गीतमने कहे छे के ज्यारे तेने वरसाद वरसाववानी इच्छा पाय छे त्यारे ते पोतानी आंतरसभाना देवोने बोळावे छे, आंतरसभाना देवो मध्यसभाना देवोने बोळादे छे, मध्यसभाना देवो बहारनी सभाना देवोने

त्र वर्तमानमां जैनमंदिरोनी प्रतिष्ठा करवानी विधिमां के शांतिकात्रमां शांतिकमें माटे देवोने आमंत्रवामां आवे छे अने सेओने सेतुष्ट करव विविध प्रकारना नैवेशो पण घरवामां आवे छे.

हाते छे अने ते बहारनी संभाना देवो इन्द्रमा कहेवाथी करसाद बरसावे छे. आ प्रकारनी दृष्टि साथे इन्द्रना संबंधनी हकीकत जे जैन बचनमां आवेली छे ते वेदनी पुराणी इन्द्रकथानी प्रसिद्धिनुं ज परिणाम छे. इवे ए वस्तु सिद्ध यई गई छे के वरसाद केम आवे छे अने मां कयां क्यां कारणो छे ! तथा तेनी साथे इन्द्रनो केटलो संबंध छे अने ए इन्द्र कोण छे !

९ मा शतकना ३ जा उदेशकमां एकोरुक—एक साथळवाळा—एकटंगिया मनुष्योना द्वीपनी हकीकत आदे छे. ए द्वीप जंबूद्वीपमां विका मंदर पर्वतनी दक्षिणे चुछहिमवंत पर्वतना पूर्व छेडायी ईशान कोणमां त्रणसो योजन स्ववण समुद्रमां गया पछी आवे छे. द्वीपनी छंबाई पहोळाई ३०० योजन छे अने घेरावो ९४९ योजन करतां कांईक न्यून छे.

आ प्रमाणे बीजा अनेक द्वीपो विषे पण तेमां जणावेलुं छे. ए शतकना पहेला उदेशकमां लखेलुं छे के **जं**बूद्वीपमां पूर्व पश्चिम विमिक्तीने १४५६००० नदीओ छे.

्रियों अने समुद्दों आ विश्वमां असंख्य छे एम भगवाने कहां छे. ज्यारे इन्द्रभूतिए द्वीपों अने समुद्दोनां नाम विषे भगवानने पृछयुं आरे तेमणे जणाव्युं के छोकमां जेटलां सारां रूपों, सारा रसों, सारा गंधों अने सारा स्पर्शों छे ए वधां द्वीपनां अने समुद्रनां नाम विमजवां, जेमके श्वीरसमुद्र, इक्षुसमुद्र, ज्ञृतसमुद्र वगेरे. (भा० २ पा० ३३४)

आ उपरांत चंद्र, सूर्य अने ताराओनी संख्या अने तेमां रहेनाराओनी रहेणीकरणी ए विषे पण ९ मा शतकना बीजा उदेशकमां इकीकत आवे छे. ताराओ विषे छखतां तेमणे कह्युं छे के एक छाख तेत्रीस हजार नवसी पचास कोटाकोटी तारानी समूह विश्वने शोभावी रह्यो छे.

आ सूत्रमां आवेली आ बची हकीकतो भूगोळ-खगोळने लगती प्राचीन आर्य परंपरानी अमरने आभारी होय एवं लागे छे. कारण के भूगोळ ने खगोळ विषे आने मळती मान्यता, वैदिक—महाभारन, पुराण वगेरे के अवैदिक वधी परंपराओमां फेलायेली हती.

अत्यारनुं भूगोळ ने खगोळनुं विज्ञान ए संबंधमां जे प्रकाश पाडे छे ते खास ध्यानमां लेवा जेवो छे.

ईश्वरने सृष्टिकर्ताने स्थाने समजनारी बधी परंपराओमां जगतनी जत्पत्तिनी पेटे जगतना प्रत्ययनी पण खास कल्पना चाली आने छे.

प्रलयकाळने माननारी परंपराओ एम जणावे छे के ते वखते बधा परमाणु अने जीनो सिवाय कहां रहेवानुं नथी. ज्यारे सृष्टिनी कृषी शिक्तआत थाय छे खारे ए बची रहेलां परमाणुओ अने जीवोनो उपयोग करी हृष्टिर नवी सृष्टि बनावे छे. जैन परंपरामां आ संबंधे पूर्व मानवामां आवे छे के प्रलयकाळ जेवा आरामां प्रलयना भयंकर वायु वाशे, दिशाओ धूममय थशे, सूर्य उप्रपणे नपशे, चंद अनिशय असहा शीतता आपशे, खराब रसवाळा, अग्निनी पेटे दाहक पाणीवाळा, होरी पाणीवाळा, रोगजनक पाणीवाळा, मुशळधार बरसाद वर- बशे. एवी करीने भारतवर्षमां प्राप्त, आकर, नगर, खेट, कर्बट, मडंब, द्रोणमुख, पट्टन अने आश्रममां रहेला मनुष्यो, चोपगा प्राणीओ— मायो, घेटां वगेरे, आकाशमां उडतां पक्षीओ तेमज गाम अने अरण्यमां चाळता श्रस जीवो तथा अनेक प्रकारनां दृक्षो, गुच्छाओ, ळताओ, खेटां वगेरे, आकाशमां उडतां पक्षीओ तेमज गाम अने अरण्यमां चाळता श्रस जीवो तथा अनेक प्रकारनां दृक्षो, गुच्छाओ, ळताओ, खेटां वगेरे, आकाशमां उडतां पक्षीओ तेमज गाम अने अरण्यमां चाळता श्रस जीवो तथा अनेक प्रकारनां दृक्षो, गुच्छाओ, ळताओ, खूळना उंचा टेकराओ वगेरेनो नाश थशे. गंगा अने सिन्धु सिवायनी नदीओनो पण अंत आवशे. अग्निना वरसादोने लीघे तपेळा कडाया जेवी अने धगधगता अंगारा जेवी जमीन थशे. बहु कीचडवाळी, बहु कादववाळी जमीन थशे. जेवी एना उपर बनेळां प्राणीओ पण चाली नहीं शके. ७२ निगोदो भाविसृष्टिना बीजरूप बीजमात्र बचशे अने ते वताढ्य पर्यतनो आश्रय करीने त्यां बीलोमां वहेशे. (भा० ३ पा० २१—२३)

बाइबलमां पण प्रलयकाळे जे जीवो बची रहेनारा छे तेनी संख्यानी हकीकत एक कथाना रूपमां आवे छे. तेनो सार आ प्रमाण छे:—"विश्वमां भयंकर जलप्रलय थवानी आणाही नुहने प्रभुए खप्ताद्वारा आपी, अने आज्ञा करी के तारे एक महान वहाण तैयार करतुं, जेपी तारा कुटुंबने अने पृथ्वी उपरना हरेक जातना पशु पक्षीओमांथी बब्बे—नर अने मादाने बचावी लेवां, नुहे आज्ञानुसार वहाण तैयार कर्युं अने तेमां पोताना कुटुंबने अने बीजा हरेक जातना पशु पक्षीमांथी बब्बेन पकडी पकडीने पूरी दीधां. जे पशुओ पकडायां दतां तेमां एक सिंह अने एक सिंहण, एक वाघ अने एक वाघण, एक हरण अने एक हरणी, एक मेंस अने एक पाडो, एक गाय अने एक आखलो, एक बकरो अने एक बकरी, एक घेटो अने एक घेटी हतां. पक्षीओमां एक पोपट, एक मेना, एक चकलो अने एक चकली, एक मोर अने एक हरणा अने एक पोपट, एक मेना, एक चकलो अने एक चकली,

वैदिक परंपरा अने अवेस्तानी परंपरामां पण आने मळती हकीकत नोंधाएली छे, ए ऐतिहासिकोने सुविदित ज छे.

आ प्रकारे आजधी २५०० वर्ष पहेलांनी परंपरा उपर संकलित ययेला आ प्रथमां समसमयनी के पूर्वसमयनी बीजी केटलीये इंपराओ एक के बीजे रूपे सचवाई रहे ए तइन खाभाविक छे. आ उपरथी आपणे एटलुं ज अनुमान काढी शकीए के व्यवस्थित के

अन्यवस्थित पण छोकमां प्रचार पामेछी परंपरा दरेक प्रकारना प्राचीन साहित्यमां सरखी रीते सचत्राई रहे छे. केटळीकवार तेने छीचे ज ते साहित्य छोकमान्य अने छोकप्रिय पण थई पढे छे.

आ सूत्रनुं अवलोकन करतां जीवनशुद्धिनी मीमांसा, भगवाने बतावेला विश्वने लगता विचारो, रूढिच्छेद अने बीजी बीजी परंपरा-ओनी असरयी नवी उपजेली केटलीक जैन परंपराओ, आ मुदाओ विषे विचार थई गयो.

हवे भगवाननी अनेकांत दृष्टि विषे थोडो विचार करी पछी मात्र प्रस्तुत ग्रंथना ऐतिहासिक अन्वेषण विषे नीचेना मुद्दा विचारवाना छे.

- (१) आगमनी परंपरा अने प्रंयनुं नाम
- (२) बीजा आगमोमां प्रस्तुत प्रंथनो परिचय, वर्तमान रचना शैली तथा प्रंयनुं पूर
- (३) दिगंबर संप्रदायमा प्रस्तुत प्रयनो परिचय अने तेनी साक्षीनो उल्लेख
- (V) व्याख्याप्रइप्तिमां आवेलां केटलांक मतांतरो
- (५) व्याख्याप्रज्ञप्तिमां आवेलां केटलांक विवादास्पद स्थानो
- (६) व्याख्याप्रज्ञप्तिनी टीका
- (७) व्याख्याप्रज्ञप्तिना टीकाकार

#### अनेकांतदृष्टि

भगवाने ज्यां ज्यां आचार के तत्त्वनुं प्रतिपादन करेलुं छे त्यां तेनी बची अपेक्षाओ साथे विचार करेलो छे एटले के कोई एक पदार्थ तेना मूळ द्रव्यनी दृष्टिए अमुक जातनो होय छे, तेना परिणामनी दृष्टिए कोई जुदी जातनो होय छे, ते ज प्रमाणे क्षेत्र, काल, भाव बगेरे बाजुओ लक्षमां राखीने पण विचार करवामां आवेलो छे. (भा० २ पा० २३२)

स्कंदकना प्रभना उत्तरमां भगवाने तेने कहां छे के, लोक सांत पण छे. लोक अनंत पण छे. काळ अने भावथी लोक अनंत छे अने द्रव्य अने क्षेत्रथी लोक सांत छे. जीव पण द्रव्य अने क्षेत्रथी सांत छे अने भाव अने काळपी अनंत छे. ( भा० १ पा० २३५ )

परमाणुने लगतो विचार करतां द्रव्य दृष्टिनो (द्व्वहृयाए)अने प्रदेशदृष्टिनो (पएसहृयाए) उपयोग करेलो छे. (भा० ४ पा० २३४) आचारनी बाबतमां समन्वयनी दृष्टि केशी अने गौतमना संवादमां सुप्रसिद्ध ज छे.

एक स्थळे सोमिल नामना ब्राह्मणे भगवानने पूल्युं छे के, तमे एक छो ! बे छो ! अक्षत छो ! अन्यय छो ! अने वर्तमान, भूत अने भविष्यरूप छो ! आना उत्तरमां भगवाने कह्युं छे के, द्रव्यदृष्टिए हुं एक छुं, ज्ञान अने दर्शननी दृष्टिए हुं बे छुं, प्रदेशनी दृष्टिए हुं अक्षर छुं, अन्यय छुं अने उपयोगनी दृष्टिए हुं वर्तमान भूत अने भविष्यना परिणामवाळो छुं. आ रीतनी समन्वय दृष्टि जेम भगवान महावीरे बतावेली छे तेम भगवान बुद्धे पण बतावेली छे.

सिंह सेनापितने बुद्धे कहां:—मने कोई अक्रियावादी कहे के क्रियावादी कहे के उच्छेदवादी कहे तो हुं ते बची जातनो छुं. पुण्यप्रद विचारोनी क्रिया करवी, कुशळ वृत्ति वधार्ये जवी, सिदच्छाने अनुसरवी एवो हुं उपदेश करूं छुं तेटला माटे कियावादी छुं. पापिकयानो विचार न करवो, पापना विचारो मनमां न आववा देवा अने पापिवचारोनो नाश करवो ए बधानो हुं उपदेश आपुं छुं माटे हुं अक्रियावादी छुं अने अञ्जराळ मनोवृत्तिनो उच्छेद करवानुं हुं कहुं छुं माटे उच्छेदवादी छुं.

आ प्रकारनी व्यक्तिगत के विश्वगत समन्वयनी दृष्टि जैन परंपराना अने बौद्ध परंपराना शास्त्रीनां अत्यारे पण जळवाई रही छे. आनां स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, विभज्यवाद, ए नामो जैन परंपरामां प्रसिद्ध छे अने बौद्ध परंपरामां पण मध्यमप्रतिपदा अने विभज्यवाद जाणीतां छे.

वर्तमानमां जो आपणा आचारो आ दृष्टिर्था विचाराय तो छगभग बधा साम्प्रदायिक कलहोनो अंत आवे अने आपणां बुद्धि अने जीवननो सद्व्यय यई ठीक प्रमाणमां विकास यई शके.

#### (१) आगमनी परंपरा अने ग्रंथनुं नाम

आ सूत्रना मूळ कर्ता त्रिये विचार करवो सौथी प्रथम प्राप्त हतो पण ते त्रिये जैन परंपराए खुळासो करी दीघो छे के मूळ आगम मात्र तीर्थंकरना अनुयार्याओ गुंथे छे एटले के आगमनी शब्दरचना खुद तीर्थंकरनी नथी होती पण तेमना समसमयी के परवर्ती अनुया- ओनी होय **छे. कंठस्य रहे**ला जैन आगमोमां दुकाळ आदिना कारणे केटलांय परिवर्तनो यई गयां छे एवं ख़ुद जैन परंपरा स्तीकारे छे ने ए एम पण माने <mark>छे के अ</mark>स्यारना उपलब्ध आगमो देवर्घिंगणीनी संकलनारूप छे. ए संकलना बलभी (वळा)मां भगवान महावीरना बींग पछी लगभग हजार वर्षे थयेली एम जैन इतिहास कहे छे. एथी प्रस्तुन प्रंथना कर्ता विषेनो निवेडो लगभग आवी जाय छे.

प्रस्तुत प्रंथनुं नाम भगवतीसूत्र जैनसंप्रदायमां सुप्रसिद्ध छे पण नीचेना उल्लेखो उपरथी ते तेनुं मूळ नाम नयी पण तेनी महत्ता र्घावनाइं विशेषण मात्र छे अने टीकाकार अभयदेव पण एने एम ज माने छे.

समवायांगमूत्र अने नंदीसूत्रमां वर्तमानमां उपलब्ध अंगमूत्रोनां नाम अने विषयों जणाव्या छे तेमां आ सूत्र गाटे **'वियाह'** शब्द परायेलों छे अने ते शब्दनुं मूळ 'वियाह' धातुमां बताववामां आव्युं छे. 'वि' अने 'आ' उपसर्ग साथेना 'छ्या' धातुयी थयेला 'ब्याख्या' शब्दमांथी पूर्वोक्त 'वियाह' शब्द नीपजेकों छे एटले 'वियाह' नो अर्थ अनेक प्रकारनी ब्याख्याओं—विवेचनो—थाय छे. टीकाकार पण ए वियाह' नी समजुती उपर प्रमाणे आपे छे.

केटलेक स्थळे 'जहा प्रश्नतिए' एम जणाबीने आ प्रंथना टुंका नामनो निर्देश करेलो छे. ए उपरथी अने आ प्रंथना टीकाकार अभयदेवना उल्लेख उपरथी एम पण मालुम पडे छे के आ प्रंथनुं आखुं नाम 'वियाहपण्णत्ति' होबु जोईए, आगळ जे 'वियाह' जणाल्युं के ते आनुं टुंकुं नाम छे.

'त्रियाहपण्णित्त' राब्दने बराबर मळतो संस्कृत राब्द 'ब्याख्याप्रइति' छे अने तेनो अर्थ-जेमां असंकीर्णपणे अनेक प्रकारनी व्याख्याओ प्रकृपाती होय ते छे. आ अर्थ जोतां आ नाम आ प्रंथने बराबर बंध बेततुं छे एथी ते अन्वर्थ छे.

'वियाहपण्णित' ने बदले केटलेक स्थळे 'विवाहपण्णित' शब्द पण मळे छे. पण विचार करतां जणाय छे के खरो शब्द तो वियाहपण्णिति' छे अने 'विवाहपण्णित' तो तेनुं भळतुं पाठान्तर छे जे 'य' नो 'व' बोलावाधी नीपज्युं लागे छे. ब्युत्पत्ति अने विवाहपण्शास्त्रनी दृष्टिए 'वि' अने 'आ' साथेना 'ख्या' प्रातुमांथी 'वियाह' शब्द लोपजी शके छे एटले तेनुं वकारवाळुं 'विवाह' रूप बाठान्तर मानीए तो ज चाली शके.

हीकाकारे तो 'वियाहपण्णत्ति' अने 'विवाहपण्णत्ति' ए बजे शब्दोने स्वीकारेण छे. पहेला शब्दनो अर्थ ते उपर प्रमाणे करे छे जिने बीजा शब्दनो अर्थ करतां ते तेने बगबर मळता संस्कृत शब्दो 'विवाहप्रज्ञमि' अने 'विवाधप्रज्ञप्ति' मूके छे पण प्राचीन परंपरा जीतां 'वियाहपण्णत्ति' नाम खरुं जणाय छे.

'पण्णित्त' शब्दने बगबर मळतो संस्कृत शब्द 'प्रज्ञिति' छे. तेनो स्पष्ट अर्थ 'प्रज्ञापन' थाय छे तेम छतां टीकाकारे ते शब्दने मळता आ शब्दो—'प्रज्ञाति' (प्रज्ञ+आति ) प्रज्ञेला था शब्दो—'प्रज्ञाति' (प्रज्ञ+आति ) प्रज्ञेला छे. अने तेम करीने तेमणे 'व्याख्याप्रज्ञिति' उपरांत क्याख्याप्रज्ञाति' क्याख्याप्रज्ञाति' विवाधप्रज्ञाति' 'विवाधप्रज्ञाति' क्याख्याप्रज्ञाति' अने 'विवाधप्रज्ञिति' कोरे क्याख्याप्रज्ञाति' क्याख्याप्रज्ञाति' अने 'विवाहपण्णिति' ने बदले जणाव्या छे. एथी कोईए एम न समजवुं जोडए के आ सृत्रनां आटलां क्यां नामो छे.

नाम तो 'वियाहपण्णत्ति' एक ज छे पण टीकाकारे जे एने माटे पूर्वीक्त अनेक संस्कृत शब्दो म्केला छे तेर्नु कारण तेमनो आगमो अस्येनो अधिकाधिक सद्भाव अने शब्दकुशळता मात्र छे. ज्यां ज्यां आ सृत्रना नाम माटे संस्कृत शब्द जोवामां आवे छे त्यां त्यां बधे देव्याख्याप्रकृति' नाम जणाय छे तेथी टीकाकारे मुकेला उपला शब्दो आ प्रथनां नाम तरीके न समजवा, भगवैती अब्द तो आ स्त्रनी कुष्यता बतावनारं विशेषण मात्र छे पण खास नाम नथी ते न भुलाय.

#### (२) बीजा आगमोमां प्रस्तुत य्रंथनो परिचय, वर्तमान रचनारौली तथा य्रंथनुं पूर

'समेवाय नामना चोथा अंगमां अने नैन्दीसूत्रमां आ सूत्रनो परिचय आपवामां आवेटो छे. ''वियाह सूत्रमां जीनो विंप व्याख्यान छे. जीवो विषे व्याख्यान (विवेचनो ) छे. जीवाजीव विषे व्याख्यान छे, खसमय, परसमय अने स्वपरसमय तथा छोक, अटोक अने लोका-कि ए विषे व्याख्यान छे. तथा छत्रीश हजार व्याकरणो—पुछायेटा प्रश्नोनो निर्णय आपनारा उत्तरो—शिष्यना हित माटे जणावेटां छे, जे

<sup>ै</sup> प्रस्तुत स्त्रनुं नाम तो 'व्याख्य।प्रक्रित' छे पण संप्रदायमां 'भगवती' नाम वधारे जाणितुं छे माटेज आ प्रंथना मुख पृष्ठ उपर ए नाम मोटा वर्ष कुकेळं छे अने तेना कर्ताना नामनो उक्केस पण संप्रदायप्रसिद्धि प्रमाणे सूचवंको छे.

२ समवायांग सूत्र पू० ११४

३ नंदीस्त्र पृ० २२९

व्याकरणो अनेक प्रकारना देवो, राजाओ अने राजवींओ तथा अनेक प्रकारना संशयवाळा जिज्ञासुओए श्रीजिनने प्छेलां छे. जेना जवाबो श्रीजिने द्रव्य, गुण, क्षेत्र, काल, पर्याय, प्रदेश, परिणाम, यथास्तिभाव, अनुगम, निक्षेप, नय, प्रमाण अने अनेक प्रकारना सुंदर उपक्रमो पूर्वक आमां आपेला छे." आ रिते समवाय नामना चोथा अंगमां प्रस्तुत 'व्याख्याप्रज्ञिति' सूत्रना ध्रमिषेय विषयनो परिचय आपेलो छे. त्यारे नन्दीसूत्रमां समवाय अंगमां कहेली व्याकरणो संबंधी कशी हकीकत मळती नन्दीसूत्रमां समवाय अंगमां कहेली व्याकरणो संबंधी कशी हकीकत मळती नथी. पण मात्र तेमां "जीव, अजीव, जीवाजीव, स्वसमय, परसमय, स्वपरसमय, लोक, अलोक, अने लोकालोक संबंधी व्याख्यानो व्याख्याप्रज्ञितिमां छे" एटलं ज जणावेलुं छे.

उपर जणात्या प्रमाणे ते बने सूत्रमां आ सूत्रना अभिधेयनी बावतमां जेम फरक जणाय छे तेम तेना परिमाण विषे पण मेद माखुम पडे छे. ते मेद आ प्रमाणे छे: व्याख्याप्रज्ञिति सूत्रना पदोनी संख्या समवायांगमां ८४००० जणावेली छे अने नन्दीसूत्रमां तेनी संख्या २८८००० जणावेली छे. परिमाण विषेनी बीजी हकीकतो बनेमां सरखी छे. ते जेमके; अंगनी अपेक्षाए व्याख्याप्रज्ञिति सूत्र पांचसुं अंग छे, तेमां एक श्रुतस्कंध छे, एकसो करतां वधारे अध्ययनो छे, दश हजार उद्देशको अने दश हजार समुद्देशको छे.

आ सूत्रमां वर्णवायेटा विषयनी अने परिमाणनी जे हकीकत उपर आपी छे तेनी सरखामणी आपणी सामेना आ सूत्रना विषय अने परिमाण साथे करतां खास फेर जणातो नथी. उद्देशको अने पदोनी संख्यामां फेर छे ते फेर तो प्राचीन परंपराए पण मानेलो छे.

रचनाहै। लीनी बाबतमां आ सूत्रमां प्रश्नोत्तरनी पद्धिन छे ए हकीकत समवायांगमां तो जणावेली छे अने आ वर्तमान सूत्रमां पण ते ज हां ली आपणी सामे छे. जेम आ सूत्रमां भगवान महावीर अने इन्द्रभूति गौतम वश्वनी प्रश्नोत्तरनी है। छे तेम आर्य हयामा- चार्ये रचेला पन्नवणा—प्रज्ञापना—सूत्रमां पण छे. पन्नवणा सूत्र ह्यामाचार्ये रचेलुं छे ए सिद्ध वात छे. तेयी तेमांनी भगवान महावीर अने इन्द्रभूति गौतम वश्वनी प्रश्नोत्तरहीली ह्यामाचार्ये गोठवेली छे तेम आ व्याख्याप्रज्ञतिस्त्रनी पूर्वोक्त प्रश्नोत्तरहीली प्रस्तुत सूत्रना संकलन करनारे उपजावी काढी छे के मूळ ज एम छे ए विषे काई कही हाकातुं नथी. कारण के घणा अर्वाचीन प्रथोमां पण ते ते प्रथानारीए एवी हैली राखेली जणायाथी संदेह यत्रो साभाविक छे.

वर्तमानमां आ सूत्रमां आवेटा अनुष्टुप स्रोकोनी संख्या छगभग १५८०० छे जे आगळ जणावेली पद (विभक्संत पद)नी संख्याने मळती थई शके एवी कही शकाय, शतक १३८ छे अने उद्देशको १९२५ छे. ज्यारे प्राचीन परंपरा आमां दश हजार उद्देशको अने दश हजार समुदेशको होवानु जणावे छे. १९२५ उद्देशकोनी संख्या तो आ सूत्रना प्रान्त भागमां ज जणावेली छे अने टीकाकारे पण तेने मान्य राखी छे. पदोनी संख्या प्रान्त भागनी गाथामां ८४००००० छखेली छे जे समवाय अने नन्दीसूत्र बनेथी जुदी पढे छे. पण अन्तर्ना गाथामां 'चुलसीय मयसहस्सा पदाण' ने बदले 'चुलसीई य सहस्सा पदाण' आवुं वांचवाथी समवायांग सूत्रमां जणावेली पदसंख्या साथे कशो विरोध निह आवे अने एवं वांचवं कई अयुक्त छे एम नथी.

पण ख्वी तो ए छे के अन्तनी जे गाथामां ८४००००० पदनी संख्या लखेली छे तेनी टीका करतां आचार्य अभयदेव "चतु-रशितिः शतसहस्राणि पदानामत्राङ्के इति सम्बन्धः" एम लखीने व्याख्याप्रज्ञितस्त्रमां ८४००००० पदो होवानुं माने छे अने सम-वायांग सूत्रमां जे स्थळे आ सूत्रनी पदसंख्या बतार्या छे त्यां मूळमां "चतुरासीई पयसहस्साइं पयग्गेणं" आ पाठनी टीका करतां ए ज अभयदेव "चतुरशितिः पदसहस्राणि पदाग्रेणेति" आम लखीने व्याख्याप्रज्ञितमां ८४००० पदो होवानुं लखे छे. ए रीते तेमनी पोतानी ज समन्नाय अने व्याख्याप्रज्ञितिंग टीकामा जे रपष्ट विरोध आवे छे ते तरफ तेमनुं ध्यान केम नहीं गयुं होय ? आ विरोधना परिहाननी रीत उपर वतायी छे. ए, पाठान्तरपर्यक्षणनी दृष्टिण ठीक लागे एवी छे. आ उपरांत आ सृत्रमां जे जातनी दौलीथी विषयो चर्चेला छे ए संबंधनुं निरीक्षण शरुआतमां 'आध्यात्मिक शोध'ना मथाळा नीचे करेलुं छे जे आधुनिक बांचनार माटे पूरतुं कही शकाय.

#### (३) दिगंबर संप्रदायमां प्रस्तुत ग्रंथनो परिचय अने तेनी साक्षीनो उल्लेख

विक्रमना नवमा सेकामां थयेला प्रसिद्ध दिगंबराचार्य श्रीमान भट्टाकछंकदेव मुनि तत्त्वार्यसूत्र उपरना पोताना तत्त्वार्थराजवार्ति-कमां द्वादशांगनो परिचय आपतां व्याख्याप्रक्षप्तिनो पण परिचय आपे छे. तेमां तेओ नाम तो व्याख्याप्रक्रप्ति ज जणाते छे अने तेमां ''शुं जीव छे ! शुं जीव नथी ! ए प्रकारनां ६०००० व्याकरणो छे'' एम कही व्याख्याप्रक्रप्तिना प्रतिपाद्य विषयनो एण उल्लेख करे छे.

गोमइसारनी ३५५ मी गाथामां प्रस्तुत सूत्रनुं 'विक्खापण्णत्ति' नाम सूचवेलुं छे अने नन्दीसूत्रमां कहा। प्रमाणे तेमा २८८००० पदो छे एम पण नोंघेलुं छे.

आगळ जणाच्या प्रमाणे श्वेतांबरसंप्रदायना प्रंथोमां तो व्याख्याप्रज्ञतिनी साक्षी अनेक स्थळे आवे छे. ए ज प्रमाणे दिगंबरसंप्र-

दायना तत्त्वार्यराजवार्तिकमा पण व्याख्याप्रकृतिनी साक्षी आपेली छे. तत्त्वार्यस्त्रगत ''विजयादिषु दिचरमाः'' स्त्रना वार्तिकमां ए साक्षीवाळो उक्षेख नीचे प्रमाणे छे:–''एवं हि घ्याख्याप्रक्षप्तिदण्डकेषूक्तम्-विजयादिषु देवा मनुष्यमवमास्कन्दन्तः कियतीर्गस्या-गृतीः विजयादिषु कुर्वन्ति १ इति गौतमप्रश्ने भगवतोक्तम् जघन्येनैको भवः आगत्या उत्कर्पेण गत्यागतिभ्यां द्वी भवी.''

[अनुचाह:—कारण के व्याख्याप्रकृतिना दंडकोमां एम कहे छं के मनुष्यभवने पामता विजयादि विमानमां रहेनारा देवो विजयादि विमानोमां केटकी गति अने आगति करे छे ? ए प्रकारना गीतमना प्रश्नना उत्तरमां भगवान कहे छे के आगतिनी अपेक्षाए ओछामां ओछो एक भव अने गतिआगतिनी अपेक्षाए वधारेमां वधारे वे भव."]

स्रेतांबर संप्रदायमां गौतमना प्रश्न अने भगवानना उत्तरवाळुं आ व्याख्याप्रइप्तिसूत्र ज प्रसिद्ध छे. दिगंबर संप्रदायमां ए जातनुं व्याख्याप्रइप्तिसूत्र होय एवं जाण्युं नथी. एथी उपर्युक्त वार्तिकमां गौतमना प्रश्न अने भगवानना उत्तरवाळा जे व्याख्याप्रइप्तिसूत्रनी साक्षी आपेळी छे ते स्रेतांबरसंप्रदायप्रसिद्ध प्रस्तुत व्याख्याप्रइप्तिसूत्र होय एम न कही शकाय ! ज्यां सुधी गौतमना प्रश्न अने भगवानना उत्तरवाळुं व्याख्याप्रइप्तिसूत्र दिगंबर संप्रदायमां जाणीतुं छे एवो निर्णय न धई शके त्यां सुधी तो राजवार्तिकमां साक्षी तरीके आपेछुं ए व्याख्याप्रइप्ति, आ वर्तमानसूत्र समजी शकाय एम कहेवाने कशी हरकत नथी. खरेखर आम होय तो आ उपरथी एक बीजी बात ए पण नीकळे छे के स्रेतांबरसंप्रदायसंमत सूत्रो दिगंबर संप्रदायने पण संमत हतां एठले बने संप्रदायमां शास्त्रीय एकता हती.

#### (४) न्याख्याप्रज्ञतिमां (भगवतीमां ) आवेलां केटलांक मतांतरी

आ प्रथमां जे जे मतांतरो आवेळां छे तेनां कांई विशेष खास नामो मूळ प्रथमां आपेळां नथी. तेम ए क्षि टीकाकारे पण काई खुलासो कर्यो नथी. छतां बाँद्ध त्रिपिटक अने वैदिक साहित्यनुं विशेष अन्वेषण करवाणी ए बधा मतो विषे जरुरी माहिती मळवी करण नथी.

आ सूत्रना पन्नरमा शतकमां मंखलीपुत्र गोशालकने लगती सविस्तर माहिती आपेली छे. ए माहिती अक्षरशः ऐतिहासिक छे एम कहे बुं कठण छे. पण ते उपरथी गोशालकना संप्रदायनां थोडी घणी माहिती आपणे जाणी शकीए एम छीए. एमां गोशालकने स्वभाववादी के नियतिवादी तरीके बतावेलों छे. गोशालकनुं कथन तेमां एम जणान्युं छे के ते, जीबोनां सुखदुःख साभाविक—नियत माने छे. आ सूत्रो उपरांत बीजा सूत्रोगां पण गोशालकनो मत बतावेलों छे. सूयगडांग सूत्रना पहेला श्रुतस्कंधना प्रथम अध्ययनना बीजा छदेशकमां बीजी त्रीजी गाथामां अन्य मत बतावतां एम कहे छे के ''केटलार्क एम कहे छे के जीबोने सुखदुःख थाय छे ते स्वयंकृत भयी, अन्यकृत नथी पण ए बधुं सिद्ध ज छे—साभाविक छे.''

आवो ज मत उपासक दगांगना सातमा अध्ययनमां आजीवकना उपासक सद्दालपुत्रे स्वीकारेलो छे. सद्दालपुत्र कहे छे के "उत्थान, बल, वीर्य, पुरुषकारपराक्रम नथी. बधा भावो नियत छे" ए सद्दालपुत्र आजीवकोपासक पोताना धर्मगुरु तरीके गोशालकने स्वीकारे छे. आ गैते व्याख्याप्रद्विति, सूयगढांग अने उपासकदशांगमां गोशालकना मनविषे कशो फरक जणातो नथी. ए उपरयी गोशालक स्वभाववादी—नियतिवादी—हतो एम चोक्खुं मालूम पडे छे.

बुद्ध पिटकोमां पण मंखली गोशालकने लगती हकीकत आने छे तेमां कहेला तेना प्रतिपादनने वांचवाथी माद्धम पढे छे के ते अहेतुवादी हतो. दीघनिकीयना सामञ्जफल सूत्रमां लखेलुं छे के "प्राण भूत, जीव अने सत्त्वना सुखदुःख अहेतुक छे, बल नथी, वीर्य नथी, पुरुपकारपराक्रम नथी ए गोशालकनो मत छे." आ रीते बुद्धपिटक अने जैन सूत्रोमां गोशालकना मत तरीके उपर्युक्त हकीकतनो एक सरखो उल्लेख आने छे अने टीकाकारे पण तेने ते ज रीते बतानेलो छे.

<sup>ै</sup> भोक्षमार्गप्रकाश'मां अर्थाचीन पंडित टोडरमळजी रुखे छे के ''सूत्रोमां गौतमना प्रश्न अने भगवान महावीरना उत्तरो एवी शैली घटमान नधी सूथी एवी शैलीवाळो सूत्रो दिगंबर संप्रदाय संमत नथी'' आ तेमनो उळेख दिगंबर संप्रदायना भुरंघर आचार्य महाकलंकना उपर्युक्त निर्देश सामे केटलो आमाणिक मानी वाकाय !

<sup>&</sup>quot;न तं सर्यक्रडं दुक्खं कभी अञ्चर्कं च णं। सहं वा जह वा दुक्खं सेहियं वा असेहियं ॥ सर्यक्रडं न अण्णेहिं वेदयंति पुढो जिया । संगइअं तं तहा तेशिं इहमेगेसि आहियं"॥

३ जुओ मगवान महावीरना दश उपासको-- अमे घशालपुत्र तथा ते परनुं टिप्पण.

४ जुओ दीघनिकाय ( मराठी ) ए॰ ५८.

आ सूत्रमां गोशालके वर्णवेली निर्वाणप्राप्तिनी पद्धति बताववामां आवेली छे, जेमांनी घणी खरी दीघनिकीयना उल्लेख साथे अक्षरशः मळती आवे छे. आ प्रमाणे सूत्रमां नामनिर्देशपूर्वक मात्र एक गोशालकनो ज निर्देश आवे छे.

आ उपरांत एक समये वे किया थवानुं माननार, एक समये वे आयुष्य करवानुं तथा भोगक्वानुं माननार वगेरे बीजा अनेक मतोने अन्यतीर्थिकना नाम नीचे जणाववामां आच्या छे (भा० १ पा० २१९) (भा० १ पा० २०४) ते कोना छे ते तुरतमां कहेतुं घणुं विकट छे.

बळी आ सूत्रमां अने बीजा सूत्रमां घणे टेकाणे चार समवसरणोनो निर्देश करेलो छे. ए चारमांनुं एक कियाबादीनुं, बीजुं अक्वानवादीनुं अने चोथुं विनयवादीनुं छे एम कहेवाय छे. टीकाकारो घणे स्थळे एम लखे छे के प्राचीन समयमां त्रणसोने त्रेसठ पाखंडो-परमनो हता. ते त्रणसो त्रेसठर्ना समजण आपनां ने टीकाकारो आ चार समवसरणोने मूळ भून गणावे छे. त्रणसोने त्रेसठर्ना संख्या मेळवत्राने जे पद्धति टीकाकार स्वीकारे छे ते पद्धति बरावर समजी शकाती नथी. खरी रीते तो आ त्रणसोने त्रेसठ पाखंडोनो इतिहास कळी शकाय एवं एके साधन उपलब्ध नधी पण ने संख्याने बदले वौद्ध प्रंथोमां साठ पाखंडोनो उल्लेख मळे छे. ते विप केटलीक माहिती पण तेमां नोंधेली छे. ए बधु बांचकोए बौद्ध साहित्यमांथी जोई लेवुं घटे.

आ सिवाय महावीरना तुरतना पुरोवर्ती जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथना केटलाक शिष्योए भगवान महावीर साथे अथवा तेमना केटलाक शिष्यो साथे चर्चा करेली छे जेनी नोंध आ मृत्रमां अनेक स्थळे छे. आ चर्चाओने बार्राकाईथी वांचतां अने भगवान महावीर साथेनुं पार्श्वनाथना ए शिष्योनुं वर्तन जोतां इतिहासनुं पृथक्करणपूर्वेक गवेपण करनार कोई पण विवेकीने एम स्पष्ट मालुम पडशे के ते वखतमां पार्श्वनाथना अने भगवान महावीरना शिष्योना रीतरिवाजोगां एटलो बधो फेर इतो के तेओ बन्ने एक ज परंपराने स्वीकारवा छतां एक बीजाने ओळखी शकता पण नहि. आम छतां ते बन्नेना शिष्यपरिवारमां मेदसिहण्यता अने समन्वयनी शक्ति होवाने छीधे भाग्ये ज अथडामण थएली. आ संबधे बधारे जोवानी इच्छावाळाए उत्तराध्ययन सूत्रनुं केशीगीतगीय अध्ययन वगवर ध्यान दईने बांची जबुं.

#### (५) व्याख्याप्रज्ञप्तिमां आवेलां केटलांक विवादास्पद स्थानो

- (१) सातमा शतकना नवमा उद्देशकमां वजी विदेहपुत्र कोणिक साथे काशी अने कोशलना नव महिक नय लेखिक अहार गणराजाओना संप्रामनी हकीकत आवे छे तेमां 'वजी' ए विदेहपुत्र कोणिकनुं विशेषण छे अने ते तेना वंशनुं सूचक छे. वजी लोकोनी साथे महुवंशना अने लिच्छवीवंशना राजाओनी लडाईनी हकीकत बोद्ध प्रंथमां पण आवे छे. आ प्रमाणे वजी शब्द एक राजवंशनो सूचक छे एमां शक नथी तेम छतां टीकावार ए 'वजी' शब्दनो अर्थ वजी—एटले वजी—बज्जवाळो—इन्द्र एम करे छे. जे अहि तहन अमंगत छे. क्यां आ हकीकत छे ते ठेकाणे मूळमां लखेलुं छे के "गोयमा! वजी विदेहपुत्ते जइत्या; नव महुई नव लेच्छई कासीकोहालगा अद्वारस वि गणरायाणो पराजइत्या" (भा० ३ पा० ३०) आ वाक्यमां वजीनो अर्थ कोई पण राते इंद्र घटी शकतो ज नथी पण ए वजी शब्द विदेहपुत्रना विशेषणरूप छे ए इकीकत सूत्रनी ए वाक्यरचना ज बतावी आपे छे.
- (२) भा० १ पा० २८० में पाने देवलोकमां देवोने पेदा धवानां कारणोनी हकीकत मूकेली छे. तेमां एम जणाव्युं छे के "पूर्वना संयमने लीघे देवो देवलोकमां उत्पन्न थाय छे पण आत्मभाववक्तव्यतानी अपेक्षाए ए देपो देवलोकमां उत्पन्न थता नथी" अहीं टीकाकार आत्मभाववक्तव्यतानो अर्थ 'अहंमानिता' करे छे अने तेम बतावीने आखा सूत्रनो अर्थ ते एम मंगन करे छे के "आ हकीकत 'अहंमानिता' ने लीघे कहेता नथी" पण विचार करतां टीकाकारनी संगति करवानी आ पद्धति बराबर जणाती नथी. कारण के २८२ में पाने आ वाक्य भगवान महावीरना मुखमां मूकवामां आपेलुं छे त्यां तेनो टीकाकारे कहेलो अर्थ जरापण नंगत थई शके एम नथी.

विचार करतां एम जणाय छे के आत्मभाववक्तव्यनानो अर्थ आत्मभावनी दृष्टि एटले खखरूपप्राप्तिनी दृष्टि एम करीए तो कशी असंगति आवे एवं लागतुं नथी.

एवो अर्थ करीए तो तार्त्पय ए आवे के देवलोकनी प्राप्तिनुं कारण आत्मभाव नथी. आत्मभाव एटले के खखरूपनी प्राप्ति. ए तो सीधुं ज निर्वाणनुं कारण छे. एथी आत्मभाववक्तन्यतानी अपेक्षाए देवो देवलोकमां उत्पन्न थता नथी एम सूत्रनो अर्थ थयो. माटे भगवान महावीरना मुखमां शोमे एवो आवो सीधो अने सादो अर्थ थई शके एम होवा छतां आत्मभाववक्तन्यतानो टीकाकारे अहंमानिता अर्थ कर्मों छे तेनुं कारण समजी शकातुं नथी.

९ जुओ चीचनिकाय (मराठी) ए॰ ५५.

आत्मभाववक्तव्यतानो जे जुदो अर्थ अहीं बताव्यो छे ते करता पण बीजो सारो अर्थ अहीं बंध वेसे एवो कोई बतावरो तो जरूर तेनुं प्रहण यत्रो.

'अहंमानिता' नो जे अर्थ बताव्यो छे ते अहीं भगवान महावीरना मुखमां शोभतो नयी माटे ज ए शब्दनो बीजो कोई भाव शोधकोए जरूर शोधवो जोईए. भगवान महावीरना मुखमां वाक्य छे ते आ प्रमाणे छे:——

"अहं पि णं गोयमा ! एवमाहक्तामि, भासामि, पश्चवेमि, परूवेमि-पुन्वतवेणं देवा देवलोएसु उववजन्ति, पुन्वसं-जमेणं देवा देवलोएसु उववज्रंति, कश्मियाए देवा देवलोएसु उववज्रंति, संगियाए देवा देवलोएसु उववज्रंति, पुन्वतवेणं, पुन्वसंजमेणं, कश्मियाए, संगियाए अजो ! देवा देवलोएसु उववज्रंति, सचे णं एसमहे, णो चेव णं आयमाववत्तव्याए."

[अनुवाद:—(अगवान महावीर कहे छे के ) हे गौतम। हुं पण एम कहुं छुं, आखं छुं, अलाखं छुं, अने प्रस्पुं छुं के पूर्वना तपथी देवो देवलोकमां उत्पन्न बाय छे. पूर्वना संयमवी देवो देवलोकमां उत्पन्न बाय छे. पूर्वना संयमवी देवो देवलोकमां उत्पन्न बाय छे. कर्मीपणाने लीधे देवो देवलोकमां उत्पन्न बाय छे. [अर्थात्] हे आर्थ। पूर्व तप, पूर्व संयम, कर्मीपणुं अने संगीपणुं ए कारणोबी देवो देवलोकमां उत्पन्न बाय छे ए हकीकत साची छे. आत्मभाववक्तव्यतानी अपेक्षाए एम बतुं नवी."]

- (३) गोशालकना १५ मा शतकमां भगवान महावीर माटे सिंहअनगारने जे आहार लाववानुं कहेवामां आन्युं छे ते प्रसंगना वे त्रण शब्दो घणा विवादास्पद छे, कवोयसरीरा—कपोतशरीर मज्जारकढये—मार्जारकृतक कुकुडमंसए—कुकुटमांसक—आ त्रण शब्दना अर्थमां विशेष गोटाळो मालूम पढे छे. कोई टीकाकारो अर्हि कपोतनो अर्थ 'कपोत पक्षी' मार्जारनो अर्थ प्रसिद्ध 'मार्जार' अने कुकुटनो अर्थ प्रसिद्ध 'कूकडो' कहे छे. अने बीजा टीकाकार ए शब्दनो लक्षणिक अर्थ करे छे. आमां कयो अर्थ बराबर छे ते कही शक्तातुं नथी. शोधकोए ए विषे अवस्य विचार करवो घटे.
- (४) वीशमां शतकना बीजा उदेशमां धर्मास्तिकायनां अभिवचनो—पर्याय शब्दो—केटलां छे १ एना उत्तरमां मगवाने प्राणातिपात— विरमण—अहिंसा, मृषावाद विरमण—सत्य बगेरे सद्गुणवाचक शब्दोने जणावेला छे अने ए ज प्रमाणे अधर्मास्तिकायनां अभिवचनो जणावतां प्राणातिपात—हिंसा, मृषावाद—असत्य वगेरे दुर्गुण वाचक शब्दोने सूचवेला छे. मूळमां आवेली आ हकीकत जे रीते धर्मास्तिकाय अने अधर्मा-स्तिकायनुं खरूप मानवामां आवे छे तेनी साथे जरापण बंध बेसती नथी आवती. टीकाकारे पण आ हकीकतने स्पष्ट करवा कशुं लख्यु नथी एटले आ मूळनी संगति धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायना खरूपनी मान्यता साथे केवी रीते करवी ए प्रश्न उमो ज रहे छे.

आ उपरांत आ सूत्रमां एवां केटलांए विवादास्पद स्थळो छे जे बधां अहीं लखी न राकाय. अहीं तो मात्र ए बाबतनां थोडां उदा-हरणो ज आपेलां छे.

#### (६) व्याख्याप्रज्ञप्तिनी टीका

आ सूत्रना मूळ श्लोकोनी संख्या लगभग १५८०० जेटली छे अने तेनी आ टीकाना श्लोकोनी संख्या १८६१६ छे एटले खरी रीते आ टीका एक प्रकारना टिप्पणरूप छे. टीकाकार पोते मात्र शब्दनो अर्थ करीने चालता थाय छे. जे स्थळे खूब ऊहापोह करीने समजाववानुं होय छे त्यां पण तेओ भाग्येज कंई पण टखे छे. आनुं कारण मात्र एक ज जणाय छे के टीकाकारना जमानामां आगमोना स्वाध्यायनी परंपरा लगभग नष्ट थई गया जेवी हती.

वळी टीकाकारनी पूर्वे यह गएलां टीकाचूर्णी वगेरे आ सूत्रने समजवानां जे साधनो हतां तेमां पण जोइए तेवो अने तेटलो प्रकाश न हतो एम आ टीकाकार पोते ज जणावे छे.

आ टीकांकार पोते अनेक टेकाणे छखे छे के आगमनी परंपरा नष्ट थवाने लीघे अने आगमना एवा सारा जाणकारना अभावने लीघे आ टीका संशयप्रस्त मनयी करेली छे. बळी वाचनामां केटलाए पाठमेदो होवाने लीघे अर्थ करवामां घणी मुंझवण उभी थाय छे. आ सूत्रमां दरेक शतकने अन्ते आपेला टीकाना क्षोकोमां टीकाकारे आ प्रकारनी पोतानी मुशीबतो बतावेली छे. छतां तेमणे आ सूत्र उपर करेला प्रयक्तथी आपणे काईक समजी शकीए छीए अने सूत्रनो मूळ पाठ ठीक सचवाई रहेलो छे तेथी टीकाकारना आपणे घणा ऋणी छीए ए मुलबुं न जोइए.

१ स्थानागस्त्र, प्रश्नम्याकरणस्त्र, अने प्रस्तुत स्त्रनी टीकाना अंतना खोको.

खपर्युक्त विवादास्पद स्थळो बताववामां टीकाकारनी अत्रगणना करवानो जराय उद्देश नथी. पण कोई पण टीकाकार टीका करतां सांप्रदायिक वृत्ति राखे छे अने मात्र शब्दस्पर्शी रहे छे त्यारे ते केटलीक वार मूळना खरा भावने बतावी शकतो नथी ए सूचत्रवा माटे छे.

अत्यारे जे सूत्रो विद्यमान छे, तेमनी टीकाओ जोतां ते दरेक सूत्र उपर हवे नवी टीकाओ करवानो समय आवी पहोंच्यो छे. पण ते थनारी बधी टीकाओ पृथकरणनी, तुल्लानी अने विशाळतानी दृष्टि मुख्य राखीने ज थवी जोइए ए न मुलाय.

सिद्धसेन दिवाकर कहे छे तेम मात्र सूत्रो गोखनाथी अर्थनुं ज्ञान थई शकतुं नथी. अर्थनुं ज्ञान नयवाद उपर अवलंबे छे, ए नयवाद गहन छे माटे नयवादनी समज साथे सूत्रार्थना अभ्यासी पेदा करवा खूब प्रयत्न थनो जोइए. द्रष्य, क्षेत्र, काल, भाव, पर्याय, देश, संयोग अने मेद ए बर्धु घ्यानमां राखीने आचार अने तत्त्वनी विचारणा करवी जोइए. सूत्रोना मर्म समजवाना इच्छुके कदी एकांत तरफ न दळवुं घटे. एकांत तरफ दळतां तो अर्थनो अनर्थ यई जाय छे अने ए अनर्थने लईने ज आ बधा धार्मिक कलहो उभा याय छे.

#### (७) व्याख्याप्रज्ञप्तिना टीकाकार

टीकाकार अभयदेव विक्रमना ११ मा सैकाथी ते बारमा सैका सुचीमां हयात हता. तेमने छगती वीगतवार हकीकत प्रभावकचरित्रमां अभयदेवस्रिना प्रबंधमां आपेछी छे. ते मूळ धारानगरीना हता, तेमना पितानुं नाम मैहिधर अने मातानुं नाम धनदेवी हतुं.
अने आ आचार्यनुं मूळनाम अभयकुमार हतु. वर्धमानस्रिना शिष्य बुद्धिसागरस्रि अने जिनेश्वरस्रि हता. आ अभयदेवस्रि ए जिनेश्वरस्रिना शिष्य हता. जे जमानामां आ आचार्य हता ते जमानामां साधुसंख्या बहु शिषिछ दशामां हती. चैत्यवासीओनुं प्रवळ खूब हतुं.
चैत्यवासीओ आचारमां एटला बधा शिषिछ यई गया हता के तेओ पगारथी नोकरी करवानी हद सुची पहोंची गया हता. आ आचार्य अने एमना गुरुओ ए शिष्यछताने दूर करवानो प्रयत्न करता हता. नवअंग स्त्रो उपर आमनी टीकाओ विद्यमान छे. उपरांत एमणे पंचाशक वगेरे अनेक प्रकरणो उपर विवरणो छखेलां छे अने बीजां केटलांए नवां प्रकरणो पण बनावेलां छे. स्त्रो उपरनी घणी खरी टीकाओ
तेमणे पाटणमां करी छे तेम तेओ जणावे छे. प्रस्तुत सूत्रनी टीका एमणे ११२८ मां पाटणमां करी छे एम तेओ टीकाने प्रान्ते जणावे छे.
टीकाने छेडे आपेली प्रशस्ति उपरथी एम मालुम पडे छे के तेओ चांद्रकुलना हता. तेमना गुरुना गुरुनुं नाम वर्धमानस्रि हतुं.
एमना दीक्षा गुरु तरीके जिनेश्वरस्रिने प्रबंधमां जणावेला छे पण आ प्रशस्तिमां 'तयोविनेयेन' आम छखीने तेओ जिनेश्वर अने बुद्धिसागर बजेने पोताना बडील तरीके स्वीकारे छे. आ टीका तेमणे निर्वृतिकुलना द्रोणाचार्य पासे शुद्ध करावी हती एम तेओ लखे छे.
आ टीकाकार नवांगीवृत्तिकार तरीके संप्रदायमां प्रसिद्ध छे. आथी वधारे जाणवा माटे प्रभावकचरित्र भाषान्तरनी प्रस्तावनामां आवे द्रे
अभयदेवस्र्रिनुं वृत्तात जोई लेखुं.

प्रवंशमां पितात्तुं नाम 'महिषर' छे छतां प्रभावकचरित्र (भावनगर-आत्मानंत्वमा) नी प्रखावनामां (ए॰ ८५) धनदेव लखेखं छे,

#### उपसंहार

सद्गत रोठ पुंजाभाईनी उदारताने लीधे आजयी वीश वर्ष पहेलां एटले १९६९ नी सालमां जिनागम प्रगट करवा माटेनी एक योजना बहार पड़ी हती. ज्यारे योजना बहार पड़ी त्यारे हुं काशीमां विद्याभ्यासने अंगे रहेतो हतो. जैन आगमोने श्रद्धा अने रसपूर्वक जोवानो समय मळेलो तेथी आगमसाहित्यने लगता कामकाजनी प्रवृत्तिमां पडवुं ए ध्येय लगभग निर्णीत करेलुं हतुं. एटलामां आगमप्रका-शांकी योजना मारा हाथमां आवी के तुगत ज ते योजनाना मंत्री साथे पत्रव्यवहार करी काशीथी ए प्रवृत्ति माटे रवाना थयो.

आ बखते काशीनी यशोबिजयजैनपाठशाळाना संस्थापक सद्गत आचार्य विजयधर्मसूरिजीनी योजनाधी जोधपुरमां जैन साहित्य संमेलन थयानुं हतुं ते प्रसंगे त्यां जई आगमोना भाषान्तरनी प्रवृत्ति माटे जवानो मारो विचार तेमने अणावी तेमनी अनुमिन मागी. खरी रीते अनुमित आपवानी तेमनी इच्छा न हती छतां मारी उत्कट इच्छाने छीधे तेओ मने रोकी न शक्या. अमदाबाद आतीने मात्र बे ज महीना रही शक्यो. एटला समयमां पण जैन संप्रदायनां छाषांओए अने साधुमहाराजाओए आगमना भाषान्तरनी प्रवृत्तिनो विरोध करवा खूब बुमराण करी मुक्युं. अंगत आक्षेपोए पण मर्यादा मूकी. मने ए प्रवृत्तिमांथी खोडेबा केटलाए विचित्र उपायो करवामां आवेला पण मारे मन आगमोना भाषान्तरनी प्रवृत्ति अन्यंत पवित्र हती तेथां ते माराधी छोडी शकाय एम न हतुं, पण अमदाबादनुं ए बखतनुं वातावरण एटलुं बधुं गरम हतुं के त्यां रहीने काम करबुं घणुं कटण हतुं. एथी बच्चे एकाद बरस् एक मुनि जे अत्यारे पंजन्यास छे तेमने भगवतीसूत्र शीखववा माटे मारवाड—पालीमां रह्यो.

स्वार पछी तुरत ज मुंबईमां आवीने धणुं करीने १९७१ मां फरीबी ननेगरथी कामनी शरुआत में एकले एकला हाथे करी अने लगभग त्रण चार वरस पछी मूळपाठ, मूळनी गेरछत छाया, गूळनु गुजराती भाषान्तर, संस्कृत टीका, टीकानुं भाषान्तर, उपयोगी टिप्पणो अने शब्दकोप साथे भगवतीं मूजने प्रथम भाग प्रकाशित थयो. त्यार पछी बळी प्रकाशनसंस्थाना मंत्रीनी साथेना मनभेदने कारणे ए काम मारे फरीबी छोडी देवुं पट्युं पण पाछुं छेवटे मंत्रीण पोतानी हठने छोडी. आचार्यश्री जिनविजयजीन बच्चे रामीने हु फरीबार ए काम पर चड्यो अने राजकीटमां १९७९ नी मालमां वीजो भाग तैयार करीने प्रकाशित कर्सी. पहेला भागनी पद्धितए ज बीजो भाग तैयार यथो छे पण तेमां केटछांक खास टिप्पणो तथारवामां आब्या छे अने शब्दकोप पुस्तक पूर्व पय छेवटे आपवानी धारणाथी जतो कर्यो छे. आ दरम्यान मारे हाथे आ मूत्रनुं अने तेनी टीकानुं गंपूर्ण भाषान्तर तैयार थई गर्छुं पण ते बधुं काचा ख्या जेवुं हनुं अने तेमां क्यांय टिप्पणो नहिं थएला एटले ए छखाण प्रेसमां आपी शकाय तेवुं न हतुं. पण पाछळथी प्रस्तुत कार्य माटे ए बधुं छखाण पं० भगवानदासने सोंपवामां आब्युं.

आ वस्तते गूजरात विद्यापीठना पुरातस्त्र मंदिरमां मारी योजना थई अने आगमसंस्थाना मंत्रीनी संमितिथी नेमां हुं जोडायो. पुरा-तस्त्रमंदिरने उसुं करवामां पण सद्गत पुंजाभाईए घणी उदारता बतावी हती एथी ज ए संस्थामां जोडावाने मंत्रीए मने खुशीथी संमिति आपिती. त्यां जोडाया पछी त्यांना सन्मितिर्क्षना संपादनना खुब बोजावाळा कामथी मने जराय अवकाश निहं मळतो तेथी ज आ सूत्रना माक्तीना भागोनुं काम हुं नहीं करी शक्यो. काम तो करवानुं ज हतुं एटले श्रीपुंजाभाईए उक्त आचार्यश्री द्वारा ने काम पंडित भगवानदासने सोंखुं. १९८५ मां आ सूत्रनो त्रीजो भाग प्रकाशित थयो. काम सत्वर करवानुं होवाथी तेमां अने प्रस्तुत चोथा भागमां टीकाना अनुवादने कतो कर्यो पण टीकाना अगत्यना अंशने नीचे टिप्पणमां आप्यो छे. पूरी शब्दकीय आपवानी धारणा अतिविलंबने कारणे छोडी देवामां आवी छे अने आ वर्षमां चोथो भाग प्रकाशित थाय छे.

आ चोथो भाग पण १९८८ मां ज मुद्रित यई गए हो पण प्रस्तावनान कारणे तेने एक वर्ष मोडो बहार पडवामां आव्यो छे. अपनार्य काका कालेळकरश्रीनो आग्रह हतो के प्रस्तावना मारे ज ळखवी. प्रस्तावना ळखवानो समय आवतां मारे सङ्गीय लडतने कारणे स्सापुरनी यात्रा करवी पडी तेथी स्रांथी बाल्या बाद प्रस्तावना ळखी शकाई. एथी तैयार यएळा आ भागिने प्रकाशित करतां वळी क वरस विळंब ययो. हवे तो जैन संप्रदायनुं वातावरण घणुं बदलाई गएलुं छे. आगमना भाषांतर माटे ज्यारे शरुआत करेली स्थारे जैन संप्रदायना आगेवानोए मारी सामे सखत विरोध करेलो पण हवे तो रूढ जैन संस्थाओ पण आगमनां भाषान्तरो बहार पाढे छे. मारी अने एमनी ढबमां फेर छे. पण आगमोना भाषान्तर करवानी प्रवृत्ति सामे हवे विरोध तहन शमी गयो छे ए अस्यंत आनंदनी वात छे.

क्षा कामने अंगे आचार्यश्री जिनविजयजी, सद्गत रोठ पुंजाभाई तथा सद्गत मंत्री रा. मनसुखकालभाई (श्रीमद् राजचंद्रना माई) नो मारा तरफनो सद्भाव हुं भूठी शकुं तेम नथी.

१९७०—७१ मां सूत्रना भाषान्तरनी शरुआत थएली अने १९८९ मां आ सूत्रना भाषान्तरनुं काम पूरुं पयुं, एटला लोबा गाळामां प्राहकोए जे धेर्य राष्ट्रयुं छे तेने माटे धन्यवाद घटे छे.

प्रस्तुत पुस्तकना चारे भागमां आवेलां टिप्पणोनुं हार्द समजाय ए माटे टिप्पणोमां वपराएला प्रंघोनी अने टिप्पणीय शम्दोनी थादीनुं एक मोटुं परिशिष्ट आ भाग साथे जोड्युं छे.

सद्गत श्रीपुंजाभाईनी योजनानुसार पुंजाभाई जैन प्रंथमाळा सर्वधर्मसमभावने प्रचारवा जैन आगमोने प्रकाशित करे अने दीर्घजीवी याय ए ज अंतिम इच्छा.

कार्तिक ग्रु॰ १५,९० **अमरेली** (काठीयाबाड)

बेचरदास

#### प्रस्तावनाने नवमे पाने बीजोनी उगवानी शक्ति विषे जे चर्चा लखेली छे तेतुं आधुनिक दृष्टिए स्पष्टीकरण नीचे प्रमाणे छेः

#### बीजोनी उगवानी शक्तिनो टकाव

छाणयी के माटीयी चांदेला कोटामां, डालामां के माटीना बीजा कोई ठाममां साचवी राखेलां बीजोने हवा, मेज वगेरे लागकानो संभव छे वा अन्य कोई विघातक राक्ति ते बीजोने निर्जीय—उगवानी राक्ति रहित—करी शके छे तेथी ए बीजो बगडे छे, सडे छे अने नष्ट याय छे अने जे साबीत रहे छे तेमनी पण उगवानी शक्ति वधारे बखत टकी शकती नथी.

बीजोनी उगवानी शक्तिना संबंधमां भगवाने जे उपर्युक्त हकीकत जणावेळी छे ते तेमना समयनी बीजोनी रक्षा करवानी व्यवस्थाने आश्रीने समजवानी छे.

प्रयोगात्मक विज्ञानना आ युगमां गमे ते ऋतुमां वायु, भेज वगेरे विधातक राक्तिओं बीजोने लेश पण हानि न पहोंचाडे एवी रीते बीजोने साचववानी सगवडो यई छे तेथी ते जलदी बगडतां नथी तेम तेमनी उगवानी राक्ति पण बधारे वखत सुधी टकी रहे छे.

उपर्युक्त केटलांक बीजोनी उगवानी शक्तिनो टकाव अने तेना समयनी वावत अत्यागनुं खेतीवाडीनुं विज्ञान नीचेनी माहिती आपे छे:

बीजोनी जात	उगवानी शक्ति ७५ टकाथी वधारे केटलां वर्ष सुधी	उगवानी दाक्ति १० टकाथी ओछी केटलां वर्ष पछी
चोखा	8	Ę
घउं	Ę	<b>१</b> 0
तल	६	<b>(</b>
मग	}	
अडद	९	
कळथी	<b>U</b>	9
तुवेर	<b>9</b>	9
चणा	१ -	१२
अळसी	•	९
	<u> </u>	<u> </u>

वेचरदास

९ जेतवार्ण महाविद्यालय ( पूना )ना अप्यापको पासेशी उपर्युक्त माहिती श्रीमान् काकासाहेवे मोक्छी आपी छे.

# स्पष्टीकरण माटे, विवेचम माटे, अवतरणनां स्थळ माटे, तुलना माटे, मतान्तर बताववा माटे अने अध्याहृत भाववाळा पाठनी पूर्ति माटे उपयोगमां लीघेला प्रंथो अने ग्रंथकारोनां नाम.

पुस्तकोनां नाम	प्रष्ठ	पुस्तकोनां नाम	पृष्ठ
<b>अ</b> नुयोगद्वार	४४. <b>*२ १</b> ८३, <b>४</b> ३२.	तत्त्वार्थाधिगम <b>सू</b> त्र	४,३६,३७,८०,१३९,२१९. २ १५,
<b>अ</b> भयदेव	<b>१</b> ९.		३७,७९,१४ <b>१,</b> ३२९. <b>३३६०. ४ २७.</b>
<b>अ</b> मरकोष	<b>ત્ર ૪</b> , ૪૨.	तीर्थकल्प	<b>ર</b> १४३.
<b>अ</b> वच्रुणिं	१७८, २०५, २१९. ३ ५४, १६२.	तंदु लवैचारिक	१८५.
<b>आचा</b> रांग	२ १७५. ३ ३६९. ४१, ३०२.	देशीनाममाला	८२.
<b>आवर्</b> यकनिर्युक्ति	४,५,६,१५,१ <sup>`</sup> ६,४ <i>८.</i>	धर्मसागरपद्दावळी	<b>२</b> १३८.
<b>आव</b> दयकनिर्युक्तिअवचूर्णि १३,१४. २ ७३,१९६.		नमस्कारमंत्र	₹.
<b>आव</b> श्यकसूत्र	ે <b>૨ ૧૧,૨૭. ૨ ૧૭</b> ૨.	नाट्यशास्त्र(भरत)	<b>४</b> ३.
<b>उत्तरा</b> ध्ययन	<b>ર</b> ९२,९९. <b>३</b> ३.	निरुक्त(यास्क)	<b>२</b> ४२,४८,४९,१२२,१३०,१७ <b>१.</b>
<b>रुपास</b> कदर्शांग	<b>રૂર, ૨ ૧</b> ૦૪ <mark>૨</mark> ૬.	निशीथचूर्णि	२ १८२-
<b>ऋ</b> ग्वेदभाष्य	<b>ર</b> ૪૭.	नेमिचंद्रसूरि	<b>ર</b> ६१.
औपपातिकसूत्र अथवा		नदीसूत्र ू	<b>૨</b> ३६,३७. <b>३</b> ५९,७३. <b>४१</b> १७,२ <b>१</b> ४
<b>उववा</b> इयसूत्र	४,१९,२३,२५,२६,२७,२८,२९,३०,३१.	पातंजलयोगदर्शन	<b>२</b> ३ <b>१६</b> ,३३०.
	२ २. ३ ३०,१६६,१६७,१७३,१७६,	पालीव्याकरण (कदा	
	१७७, १७८, १७९, २२२, २२३, २२६,	पंचप्रतिक्रमणसूत्र	१.
	२२७, २३९, २४५, २४६, २५७, ३२७,	पंचसंग्रह	<b>२</b> २७८,२८६.
	३६०,४०१,४०२. 🞖 २७७.	पंचाशक	६२,२५५,२५६,२५७.
कर्मग्रंथ	३४,५१,६४,६५,७९,८२,९४. <b>२</b> १९.	पिंडनिर्यु <del>क्ति</del>	<b>ર</b> ६.
कर्मप्रकृति	<b>२</b> २७६.	प्रवचनसारोद्धार	३५,३७,४०,२५८. <b>३ १</b> ७२.
कल्पसूत्र	६,१५,२०. च ४०,१७५,	प्रश्नन्याकरण	<b>ર</b> ५३.
खरतरगच्छपद्यावली	<b>૨</b> १३९.	प्रज्ञापना अथवा पत्रवणासूत्र ४,५३,१३१,१३३,२२६,२६२,	
गच्छाचारपयन्ना	<b>ન</b>		२६८,२९१,२९२,२९६. <b>२</b> ४, <b>९,</b>
चूर्णि	१७८,३१२. २ ८१. ३ ३४८,३८१,		१०,१३,१५,१९,२०,२२,२३, २४,
	😮 १५२,२११,२५६.		४०,४९,५२,५३,५४,७३,९०,९२,
<b>जंबुद्वी</b> पप्रज्ञति	<b>२</b> ३६,१४५. <b>३</b> ४२५.	९९,१०४,१०६,१०७,१३३,१५८,	
<b>जी</b> वविचार	<b>ર</b> ૪૨.	१९१, २६१, २८६, ३१४, ३३८.	
जीवाभिगमसूत्र	४८,र६६,र९६,र९५, <b>३०३. २ १</b> ५,		<b>३</b> १,१०,४८,५ <b>१,</b> ५२,५७,७१,७४,
	३७, ४०, ४५,४६,८३,१६३,२०८,	-	
	२८६,३१४,३२६,३३५. 💐 १६, १७,	<b>,</b>	
	७४, १००, १२६, १२७, २०३, २०६,		१९५, २०८, २१३, २३६, २८९,
	<b>२२५, २६१, २९३,३०७, ३१३,३</b> ४६.		<b>२९०, २९१, ३०४, ३०५, ३११,</b>
_	<b>४</b> ८९,२३९.		<b>३२४, ३३५, ३३८, ३८२, ३८८,</b>
<b>ज्ञा</b> ताधर्म <b>कया</b>	<b>ર</b> ५,१२,१०४,१४५.	<u> </u>	४००. ४ ७,२१,२७,३९,५५,५ <b>५</b> ,

<sup>\*</sup> आगमनो मोटो आंकडो भागनो स्वक छ अने ज्यां ते न होय स्ना पहेलो भाग समजवानो छे.

पुरतकोनां नाम	ष्ट	पुरतकोनां नाम	प्रष्ट
	७९,८०,८१,८२,८९, ९०,९६,९९,	<b>ल्लितविस्तर</b>	<b>ર</b> ३९.
	१२७, १२९, १३०, १३१, १३२,	<b>बाराहीसंहिता</b>	૨ ૪૦, ११૦.
	१३३, १३४, १३६, १३७, १३८,	विशेषावज्ञयक ३,४	,५,६,८,३९,४०,४२,४३,५१,५२,६२,
	१६३, १७८, १८६, १९८, २०१,	1	. ०९,२१९,२२०,२२९. <b>२</b> ३,११,२४.
	२०३, २१४, २१५, २२०, २३५,	वेदान्तसिद्धान्तादर्श	<b>ર</b>
	३११, ३१२, ३१३, ३१६, ३३१,	<b>रातपथशासण</b>	૨ ૪૧.
	<b>३३२, ३३३, ३४७, ३६०, ३६३.</b>	सन्मतित <del>र्</del> क	<b>५</b> २.
प्राकृतसर्वस (मा <b>कै</b> डेय	) <b>२</b> १८२.	समत्रायांगसूत्र	९. २ ३,१०,११,३७,१९५.
<b>बृह</b> स्कल्पवृत्ति	₹ ₹00.	समेतशिखरगस	<b>२</b> ४४,२७६.
<b>बौद्ध</b> पर्व	<b>२</b> ५६.	<b>सरस्व</b> ती	<b>ર</b> ૪१.
भगवतीरातक	86.	सिद्धसेनदिवाकर	<b>ર</b> ६१.
मज्ज्ञिमनिकाय	२ ५५,१०५,१२१,१२२,१२९,२७२,	सूयगढांग अथवा सूत्रह	त्तांगसूत्र २ ५३,३२९. ४ ३०२.
	₹ <b>० ६</b> .	सूर्यप्रकृति	<b>૨</b> १४५.
म <b>नुस्यृ</b> ति	<b>ન</b> રશ્વ.	संयारापौरुषी	₹.
मेघमाळा	<b>ર્</b> ७६.	स्थानांगसूत्र अयवा ठाण	ागिसूत्र २६८,२७५. २ ४,११,१२,१३,
रजाकरावतारिका	<b>₹</b> ₽o.		१०¥.
रायपसेणी अथवा राजः	प्रभीय २ १०,४३,१०६,११०. ३ ५९,	स्याद्वादरताकर	80.
	१७३, १७४, १७५, २००,२०५,	हेमचंद्रस्रि	<b>૨</b> ६१,१४ <b>४,१७५</b> ,१८१.
	<b>२२१, २४३, २४५, २४६,३२२,</b>	<b>है</b> मक्तेष	१९,२०,३५. ३ २,३७,१०५,१०६,
	<b>३२५,३६०. ४१२,१३,५१,७८.</b>		<b>१</b> २२.

# बेचरदास

३

# जे लास शन्दो उपर टिप्पण छे तेनां स्थळ अने साक्षीभूत प्रंथ, प्रंथकारनां नाम

(भाग-१) व्याख्याप्रज्ञ- सिनुं पृष्ठ	जे शब्द उपर टिप्पण टिप्पण माटे साक्षीभूत व्याख्याप्रज्ञ- जे शब्द उपर छे ते शब्द ग्रंथ वगेरे सिनुं पृष्ठ छे ते श						
Ę	अढार लिपि	कल्पसूत्र, विशेषा <b>वश्यक,</b> आव-	२७	ज्योतिष्कोनो वर्णक	औपपातिकसूत्र		
•		इयक निर्युक्ति.	३६	ज्ञान	तस्वार्थसृत्र		
३२	अन्तःपुरनिर्गम	औपपातिकसूत्र	२७६	तुंगियानगरी,	समेतिशिखररास,		
<b>પ</b> ેર	अनुभागबंध	कर्मप्रंथ	८६	द्रोणगुग्व	अभयदेवटीका २ १०६		
<b>३</b> ९	अवप्रह-ईहा वगेरे	विशेषावश्यक, रताकरावतारिका,		द्वादशांगी	समवायांगसूत्र		
		स्यादादरत्नाकर.	३७	<b>धर्मध्यान</b>	तत्त्वार्थसूत्र		
8 o	अव <u>प्रह</u>	प्रवचनसारोद्धार	२५५	धूमांगार	पंचाशक		
१३९	अवधिज्ञान	तत्त्वार्थसृत्र	८६	नगर	अभयदेवटीका २ १०६		
१९	अवसर्पिणी	हैमकोप अभिधानचिन्तामणि	८६	<sup> </sup> निगम	अभयदेवटीका २ १०६		
२७	असुरोनो वर्णक	औपपातिकसूत्र	₹	नैपातिकपद	विशेपावश्यकसूत्र		
٠	आचार्य	विशेपावश्यक, आवश्यकनिर्युक्ति.		पत्तन	अभयदेवटीका २ १०६		
ខូច	आर्व:चिकमरण	<b>भ</b> गवतीसूत्र	३५	पूर्व	अभिधानचिन्तामणी कोप		
<b>ر</b> قر	¦ आश्रम	अभयदेवटीका	५१	, प्रदेशबंध -	कर्मग्रंथ		
98	आहार	कर्मप्रथ	१३	प्रसेनजितनो पुत्र	आवश्यकनिर्युक्ति अवचूर्णि		
<b>२२६</b>	आहा/पद	प्रज्ञापनासृत्र	४३	भंने	विशेपावश्यक		
२७५	उद्कगर्भ	स्थानागम्त्र	२७	भवनवासीनो वर्णक	औपपातिकमृत्र		
4	उपाध्याय	विशेपावस्यक	<b>२९</b> २	भाषा	प्रज्ञापनासूत्र		
३४	ऋषभ	<b>क</b> र्मग्रंथ	२५६	<b>भिक्षुत्रतिमा</b>	पंचाशक		
₹ ७	ऑपग्राहिक	प्रवचनसारोद्धार	८६	मडंब	अभयदेवटीका २ १०६		
८६	कर्बट	अभयदेवटीका २ १०६	२०	महार्वार	कल्पसृत्र		
१	कालादि अप्रप्रकार	पंचप्रतिकमणसूत्र, रहाकरावता	- २९०	महातपस्ती <b>र</b>	विदोपावस्यकसूत्र		
-		रिका.	१३,१७	राजगृह्	आवश्यकनिर्युक्ति अवचूर्णि		
२७८	कुत्रिकापण	अनुवादक	१२	राजगृहनो वर्णक	औपपातिकसूत्र		
८६	खाण	अभयदेवटीका	८६	राजधानी	अभयदेवटीका		
८६	खेट	अभयदेवटीका	३१	राजनिर्गम	औपपातिकस्त्र		
१६	गणभर	आवश्यकानिर्युक्ति	२४४	विपुछपर्वत	समेतशिखररास		
१८५	गर्भ	तंदुलनैचारिक	२७	वैमानिकोनो वर्णक	औपपातिकसूत्र		
२१९	गंगआचार्य	विशेषावस्यक	२७	त्र्यंतरोनो वर्णक	,,		
२५८	गुणरत्तसंत्रतसर	प्रवचनसारोद्धार	२५	शरीरनो वर्णक	,,		
८६	प्राम	अभयदेव टीका २ १०६	२४७	<b>विक्षा</b>	ऋग्वेदभाष्य		
₹8	चिल्लणा	मुलसाचरित्र गुजराती	३७	गुक्रध्यान	तस्वार्थस्त्र		
३०	जननिर्गम	औपपातिकसूत्र	48	शैलेशी	विशेषावश्यकसूत्र		
१५	जंबूखामी	कल्पसूत्र	કુપ	समय	अनुयोगद्वारसूत्र		
8 8	जमालि	विशेषावश्यक	<b>२५</b> २	समुद्घात	प्रशापनासूत्र		
<b>२६६</b>	जीवाजीवामिगम	जीवाभिगमसूत्र	1 4	साधु	आवश्यकनिर्युक्ति		

न्याख्याप्रह- तितुं पृष्ठ	जे शब्द उपर टिप्पण टिप्पण माटे साक्षीभूत छे ते शब्द प्रंथ वगेरे					जे शब्द उपर टिप्पण छे ते शब्द	टिप्पण माटे साक्षीभूत प्रंय वगेरे		
२६	साधुओनो वर्णक	औपपातिकसूत्र	१११	दिग्दाह	वाराहीसंदिता				
٦٦ 9	सिद्ध	प्रज्ञापना	१७१	दुन्दुभि	यास्कतुं निरुक्त				
<b>ર</b> પૈ	सुधर्मस्वामी	कल्पसूत्र	१२२	देव	मज्ञिमनिकाय, अभिधानचिन्ता-				
े ८६	संनिवेश	अभयदेवटीका			मणिटीका.				
८ ५ ३७	संवर	तस्वार्यसूत्र	१२९	देवेन्द्र	मज्झिमनिकाय, यास्कनुं निरुक्त.				
₹ <i>४</i>	संस्थान	कर्मप्रंथ	80	्रे <b>ध</b> न	कल्पसूत्र				
₹ 8	संहनन	कर्मग्रंथ	१३	धरणेन्द्र	प्रज्ञापनासूत्र				
પ પ્રશ	स्थितिबंध	कर्मग्रंथ	३२९	नरकपृथ्वीओ	मूत्रकृतांगसूञ, तत्त्वार्थसूत्र, पा-				
7,	(भाग-२)		~ ~ ~ ~	1 STATE HOLD	तंजल्योगदर्शन.				
३	अग्निभृति	विशेषावस्यक	४३	नाटक(बन्नीश प्रकारनं	) राजप्रश्नीय, भरतनुं माट्यशा <del>ख</del> ,				
र २७२	अभिज्ञिय	मज्ज्ञिमनिकाय	٠,	110-11/4-4131-91-11/3	जीवाभिगम.				
	अभ्रवृक्ष	वाराहीसंहीता	४२	निवर्तनिक	अनुवादक				
१११	अमोघ			्रास्त्रकारम् ∣निपेक	कर्ममकृति, पंचमंग्रह.				
११२	अर्धमागधी	" प्राकृतसर्वस्व, निशीयचूर्णि.	२७६	ŧ _	जीवामिगमसूत्र				
१८ <b>२</b> ४८	असुर	यास्कनुं निरुक्त	१०८	नैरयिक	•				
8 <i>6</i> 8.5	असुरकुमार	प्रज्ञापना	१०६	्यत्तन	अभिधानचिन्तामणि				
	आहारउद्देशक	प्रज्ञापनासूत्र	१११	परिवेष	वागहीसंहिता				
<b>२६१</b>	इन्द्र	<b>छितविस्तर</b>	१९	पर्यापि	कर्मग्रंथ				
<b>३</b> ९	ईशान -	प्रज्ञापनासूत्र	પપ	पूरण	मज्जिमनिकाय, बीद्धपर्य				
₹0	उत्क <b>रिकामेद</b>	प्रज्ञापनासूत्र	१५३	पूर्व (संख्या वाचक	) पार्कीव्याकरण ( <b>कञ्चायन</b> )				
१ <i>५१</i>	उदकमत्स्य	वाराई!संहिता वाराई!संहिता	१८१	पशाची भाषा	प्राकृतव्याकरण				
११र			१३५	प्रज्ञापना अने ते	नो प्रज्ञापनासूत्र धर्मसागरनी पद् <del>य</del> ा				
998	उल्कापात किया	" प्रज्ञापनासूत्र		कर्ता	वली, खरतरगच्छनी पट्टावली				
¥و. «Se		समयायांगसूत्र, आवश्यकनिर्युक्तिः	१११	प्रतिसूर्य	<b>बाराहीसंहिता</b>				
१९५	कुछका केवलकप	मज्झिमनिकाय	१८३	प्रमाण	अनुयोगद्वारसृत्र				
३०६ १- <b>०</b>	नावलकान्य गर्भापहार	परिशिष्टपर्व	80	प्राणामा	संग्खती (मासिक)				
१७६		वाराहीसंहिता	३१३	नहारोक नहारोक	पातंजल्योगदर्शन, मनुस्मृतिः				
१११	महयुद्ध सन्दर्भ <u>णस</u> न्द	(भाराहाताख्या	२ . २ २ ७ <b>२</b>	मनाम (मणाम)	मजिझमनिका्य				
17	प्रहर्गुगाटक प्रहापसन्य	,,,		1 '	_				
,,,	गान्धर्वनगर गान्धर्वनगर	77	৩খ	मंडितपुत्र	आवश्यकनिर्युक्ति				
"	चमर	" प्रज्ञापनासूत्र	९९	मम्र	उत्तराष्ययन, प्रज्ञापनासूत्र				
S S	चमर चमरनो उत्पात	भ्रज्ञापनान्द्रन सिद्धसेननी बत्री <b>वी</b>	१८१	मागधीमाषा	प्राकृतव्याकरण				
£ 8	चित्य चित्य	औपपातिकसूत्र, अमिधान	र ४	मार्थपुत्र तामलि	विशेषावस्यकरा <u>त्</u> त्र				
र	प्रज	चिन्तामणि,अमरकोष, शब्द	]	यम	निरुक्त (यास्क)				
		स्तोममहानिधि, शब्द	- X D	रक्ष	बागहीसंहिता, जीवाभिगम.				
		चिन्तामणि.	१६	राजप्रश्लीय उपांग	नन्दीस्त्र				
0.014	केन्द्री सम्बद्ध		೪७	रुद	शतपथनाद्यण, वेदान्तसिद्ध				
१४५	चैसनी व्युत्पत्ति	अनुवादक तीर्यकल्प, परिशिष्टपर्व	.1		न्तादर्श.				
१४३	चंपानगरी	· ·	<b>'</b>	लवण समुद्र	जीवाभिगमसूच				
<b>.</b>		महावीरचरित्र,	९०	लेश्या	प्रज्ञापनासूत्र				
<b>२७</b> २	জন্তু ————————————————————————————————————	मज्ज्ञिमनिकाय 	१२२	I -	निरुक्त (यास्यानुं)				
रुष	ताबलिमी	प्रज्ञापनास्य महाबीरचरिय (नेमिचंद्र	l l	वायुभूति	आवश्यकसृत्र, समवायांगसृत्र.				
	दानामा-प्राणामानो विपर्यास	महावीरचरिय (नेमिचंद्र महावीरचरित्र (हेमचंद्र)	4	1 -	अनुवादक				

न्यास्याप्रज्ञ- तिनुं पृष्ठ	जे शब्द उपर टिप्पण छे ते शब्द	ढिप्पण माटे साक्षी <b>मूत</b> प्रंथ वगेरे	न्याद्याप्र <b>ञ्च</b> - सितुं पृष्ठ	जे शब्द उपर टिप्पण छे ते शब्द	टिप्पण माटे साक्षीभूत प्रंथ बगेरे
१०४,५	वाराणसी	स्थानांगसूत्र, ज्ञातासूत्र, उपासक-	3	ब्राह्मणनुं खरूप	उत्तराध्ययनस <u>ू</u> त्र
, ,,,		दशांगसूत्र, पन्नवणासूत्र, अ-		बेंतालीश दोष	प्रवचनसारोद्वार
		भिधानचिन्तामणि, समेत-		महाशिलाकंटक	टीकाकार
		त्रीखरतस, मज्झिमनिकाय.	५ १	मिश्रपरिणत	"
१०	वैकिय समुद्घात	समवायांगसूत्र	६५	<b>ल</b> िष	<b>77</b>
१ं२	वैरोचनेन्द्र	प्रज्ञापनासूत्र	५९	न्यंजनाव <b>प्रह</b>	नन्दीसूत्र
१६	शकेन्द	जीवाभिगमस्त्र	३३३	वलयमरण	भनुवादक
५२	राबर	सूत्रकृतांग, प्रश्नन्याकरण, प्रज्ञा-		सर्वोत्तरगुण प्रस्याद्यान	टीकाकार
- •		पना.	90	साकारबोध	3 <b>9</b>
४२	<b>चि</b> व	निरुक्त (यास्कनुं)	६६	सामायिक चारित्र	"
१८१	शौरसेनी भाषा	प्राकृतन्याकरण	३८०	स्थविर	अनुवादक
₹88	सिकया	अनुवादक	३५६	संस्थान	टीकाकार
५६	सुं सुमारगिरि	मज्ज्ञिमनिकाय		(माग−४)	
१२२	सोम	निरुक्त (यास्कर्नु )	ર	अधिकरण	टीकाकार
888	संध्या	<b>बारा</b> हीसंहिता	પ	अवप्रहना पांच प्रकार	"
<b>१</b> ०६	संबाध	पन्नवणासूत्र	२५७	<b>आ</b> कर्ष	अनुवादक
8 8	स्कंद	अमरकोष ं	२७५	आल <del>ोचन</del>	**
_	(माग−३)		"	इच्छाकार	"
९	अपश्चिम मारणातिक-	भगवतीटीका	३५	एजना	71
	संलेखना		९३	करण	टीकाकार
Ę	आधाकर्म बगेरे दोष	<b>पिंड</b> निर्युक्तिः	११७	कालिकश्रुत	नन्दीसूत्र
१९५	आमन्नणी	प्रश्नापनासूत्र	₹४०	कुरील	अनुवादक
48	<b>आ</b> ३ीविष	टीकाकार	११८	चारण	,,
₹ 8 ₹	<b>उन्माद</b>	37	२७४	दर्प	टीकाकार
હર	ऋजुमति	नन्दीसूत्र	. ,,	दश गुण ( आलेचना	अनुवादक
३५६	औदयिकभाव	टीकाकार	"	योग्य साघुना)	
इ९३	क्योतपक्षी	टीकाकार	. ८९	निदा	प्रज्ञापना
હ	कायिकी	प्रज्ञापनासूत्र	२४०	निर्प्रन्थ	अनुवादक
३८१	गोशालकनो सिद्धांत	चूर्णिकार	"	पुलाक 💮	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
३६७	दिशाचर	टीकाकार	"	बकुश	) <b>,</b>
२४३	<b>धात्री</b>	राजप्रश्रीय	३६	मदुक	"
३६७	निमित्त	अनुवादक	२१३	श्रेणि	<del>71</del>
९२	प्रयोग	पत्रवणास्त्र	308	समक्सरण	स्त्रकृतांगस्त्र, आचारांगस्त्र
१९७	पासत्था	टीकाकार	814	सम	अनुवादक

# टीकामां के टिप्पणमां समजुती माटे मूकेला यंत्री-कोठाओ अने आकृतिओ

# भा० १

यंत्रो						ब्याद्याप	हासिनुं <b>पृष्ठ</b>
अवग्रह यंत्र	•••	•••	•••	•••	•••	1	३९
इन्द्रिय यंत्र	•••		•••	•••		•••	२६९
गणधर यंत्र	•••			• • •	•••	•••	१७
दिशानुं यंत्र	•••			•••			७१
प्रतिमा यंत्र	•••		•••			•••	२५६
भाषाना मेदोनुं दृक्ष	•••	•••	•••			***	र्९४
भाषाविचार कोष्टक	•••	•••	•••	•••	•••	***	२९३
			भा० २				
अप्रदेश सप्रदेशनी स्था	प <b>म</b> ा			•••	• • •		<b>२</b> ३६
आहारनो कोठो			•••	•••			२९८
इंद्रनी गतिनो कोठो			•••	•••	•••	***	६९
कर्मनो कोठो					•••	***	२७८
कृष्णराजिनी आकृति	•••			•••	•••	•••	३१०
देवना आहारनो कोठो	•••	•••		•••	• • •	•••	<b>ર્</b> દ્
बायुनी आकृति		-4-	•••		•••	•••	66
क्रेश्यानुं यंत्र	•••	•••	• • •	•••			९१
<b>छोकपा</b> लतुं यंत्र	•••	•••		•••	•••	•••	१६

बेचरदास



# विषयानुऋम.

#### शतक १६ उद्देशक १ ए० १-४.

हमोडावती एरण उपर वा करता बायुकाय उत्पन्न थाय अने तेनुं बीजा पदार्थना स्पर्कार्या मरण थाय १ हा थाय. पृ० १—बायुकायनुं द्वारीरसिंद्य के सरीररिंद्दित सवान्तर गमन थाय १—सग्वीमां अभिकाय केटला काळ सुधी रहे १—सोडसावती लोढुं उंचुं नीचुं करनार पुरुवने कियाओ.—लीढाने तपावी एरण पर मूक्तारने कियाओ.—अधिकरणी अने अधिकरण आवेत अधिकरण कहेवानुं कारण. पृ० २—नैरियकादि दंडकने लाश्रयी अधिकरणी अने अधिकरण.—जीव साधिकरणी के निर्धाकरणी १—आत्माधिकरणी, पराधिकरणी के उभयाधिकरणी १—जीवोने अधिकरण आत्मप्रयोग निर्वर्तित, परप्रयोग निर्वर्तित के तदुश्यय्रयोग निर्वर्तित होय १—अविरित्ते आश्रयी अधिकरण.—वारीरना प्रकार.—हिन्योना प्रकार.—वीगना प्रकार. पृ० ३—ओवादिक वारीरने बांधतो जीव अधिकरणी के अधिकरण होय १—आहारक वारीरने बांधतो जीव अधिकरणी के अधिकरण होय १—इन्द्रिय तथा मनोयोगने बांधतो जीव अधिकरणी के अधिकरण होय १ पृ० ४.

## शतक १६ उद्देशक २ पृ॰ ५-७.

जरा अने बोक.—पृथिकायिकने जरा होय के बोक होय ?—शोक नहि होवानुं काश्यः.—शकनुं वर्णन अने तेनुं भगवंत पासे आवर्तुं.—अक्प्रह-संबन्धे प्रश्न अने शकनुं स्वस्थानगमन. पृ० ५—शकेन्द्र सत्यवादी के सिध्यावादी ?—बाक सावद्य भाषा बोले के निरवद्य भाषा बोले ! तेनुं कारण ?—शक भवतिद्धिक के अभवविद्धिक होय वगेरे प्रश्न.—कर्मो चैतन्यकृत छे के अचैतन्यकृत ? पृ० ६—तेना कारणो.

# शतक १६ उद्देशक ३ ए० ७-९.

कर्मप्रकृति.—ज्ञानावरणने वेदली जीव केटली कर्मप्रकृतिओने वेदे ? ए० ७—उहुक्तीर नगर.—काउस्सरगर्मा रहेडा मुनिना अर्था कापनार वैध अने मुनिने किया.

# शतक १६ उद्देशक ४ ए० ९-१०.

नित्यमोजी श्रमण जेटलं कमें जपाबे तेटलं कमें नैरियको सो वरसे खपावे ? ना. ए० ९. चतुर्थ भक्तादि करनार मुनि जेटलं कमें खपाबे तेटलं कमें इजार के लाख वरसे नैरियक खपावे ? ना.—श्रमणने अधिक कमें क्षय गवातुं कारण. ए० ९०.

## शतक १६ उद्देशक ५ ए॰ ११-१५.

उत्तुकतीर नगर.—एक जंबूक वैद्य.—वेय बाह्य पुद्रलोने प्रहण कर्यो सिवाय अहीं आववा समर्थ छे ?—बाह्य पुद्रलोने प्रहण करीने अहीं आववा समर्थ छे ?—बाह्य पुद्रलोने प्रहण करीने वोलवा वगेरे किया करवा समर्थ छे ? ए० ११.—वाक्य उत्सुकतापूर्वक वादीने जवातुं कारण.—सम्यग्दिष्ठ गंगदत्त देवनी उत्पत्त अने तेनो मिथ्यादृष्टि देवनी साथे संवाद.—परिणाम पामता पुद्रलो परिणत कहेवाय ?—गंगदत्त देवनुं भगवंत पासे आगमन. ए० १२—गंगदत्तनो मगवंतने प्रश्न.—गंगदत्त देव भविद्यिक छे के अभविद्यिक छे इस्लादि प्रश्न.—गंगदत्तनी दिव्य देविद्य क्यां गई ? ए० १३— हित्तापुर.—सहस्राप्रवण.—गंगदत्त गृहपति.—मुनिस्रवत स्थानीतुं आगमन.—मुनिस्रवत स्थानीनी देशना अने गंगदत्तने प्रतिबोध थवो.—गंगदत्ते दीक्षा हेवी. ए० १४—गंगदत्तनी महाद्यक करूपमा देवतरीके उत्पत्ति.—गंगदत्तनी आयुवस्थिति.—गंगदत्त देवलोकथी च्यवी क्यां जहो ? ए० १५.

# शतक १६ उद्देशक ६ ए० १५-२०.

स्वादर्शन.—स्वप्न क्यारे जुए १ पृ० १५—जीवो सूता, जागता के सूता-जागता होय छे १—पंचेन्द्रिय तिर्यंचो सूना छे इत्यादि प्रश्न.—संदत जीव केंद्रे स्वप्न जुए १ जीवो संयत छे इत्यादि प्रश्न.—स्वप्नना प्रकार.—महास्वप्नना प्रकार.—सर्वे स्वप्नना प्रकार.—तीर्यंकरनी माता केटला स्वप्नो जुए १ पृ० १६—चकवर्तीनी माता केटलां स्वप्न जुए १—वासुदेवनी माता केटलां स्वप्न जुए १—छद्मावस्थामां भगवंत महानीरे दश स्वप्नोने जोवां पू० १७.—दश महास्वप्नोतुं फल, पृ० १८.—सामान्य स्वप्नुं फळ. पृ० १९.—कोष्ठपुट क्योरे वाय छे १ पृ० २०.

# शतक १६ उद्देशक ७ ए० २१.

चपयोग केटला प्रकारनो कह्यो छे ? पू॰ २१.

# शतक १६ उद्देशक ८ ए॰ २१-२५.

छोकनो पूर्वचरमात. छ० २१—दक्षिणादि चरमात.—उपरनो चरमात छ० २२.—क्षोकनी हेटेनो चरमात.—रक्षप्रभाना पूर्वादि चरमात छ० ११.—परमाणुनी गति—कामिकी आदि किया,—देव अलोकमा हस्तादिने पसारवा समर्थ छे १ छ० २५. शतक १६ उदेशक ९ ए॰ २६.

बलीन्त्रनी सुधर्मा समा क्यां कहेली छे ! पृ॰ २६.

शतक १६ उदेशक १० ए० २७.

अवधिज्ञानना प्रकार पृ० २७.

शतक १६ उद्देशक ११ पृ॰ २७.

द्वीपकुमारो समान आहारवाळा छे इखावि प्रश्न.—द्वीपकुमारोने छेर्याओ. पृ० २७.

शतक १६ उद्देशक १२-१४ ए० २८-२९.

उद्धिकुमारो बधा समान आहारबाळा छे इलादि प्रश्न. पृ॰ २८.

शतक १७ उद्देशक १ ए० २९-३२.

उदायी हस्ती कई गतिमांथी आयी उत्पन्न बयो हे ?—उदायी मरीने क्यां जहो !—स्वायी मरण पानी क्यां जहो !—भूतानंद इसी क्यांथी आक्यों हे अने मरीने क्यां जहो ? ए॰ २९.—कायिकी आदि कियाओ.—इक्षनं मूळ चलावनारने किया.—इक्षना मूळने किया. ए॰ ३०.—इक्षना कन्द चलावनारने किया.—कन्दने किया.—शरीरो.—इन्द्रियो—योग—औदारिकादि क्षरीरने बांधतो जीव केटली किया करें !—जीवो केटली कियाओं करें ! ए॰ ३१.—औदयिकादि आवो. ए॰ ३२.

शतक १७ उद्देशक २ ए० ३२-३५.

संयतादि धमें, अधमें के धर्माधमेंमां स्थित होय ?—कोई जीव धर्म, अधमें के धर्माधमेंमां वेसी दाके ?—धर्म, अधमें के घर्माधमेंमां स्थित होय एटले हुं ? ए॰ ३२.—दंडकना कमबी नैरयिकादि सबन्धे पूर्वोक्त प्रश्न.— अन्यतीर्थिको.—बालपंडित अने बालपंडन्थे अन्यतीर्थिकोनुं मन्तव्य.—पंडित, बालपंडित अने बाल,—ते संबंधे नैरयिकादि दंडकना कमबी प्रश्न. ए॰ ३३—'जीव अने जीवातमा भिन्न छे' एवो अन्यतीर्थिकनो सत.—सबन् रीरी देवमां अद्यो कप विकुर्ववाना सामर्थ्यनो अभाव अने तेनो हेन्न. ए॰ ३४— शरीररहित जीवमां कपी आकार विकुर्ववाना सामर्थ्यनो अभाव अने तेनो हेन्न. ए॰ ३४—शरीररहित जीवमां कपी आकार विकुर्ववाना सामर्थ्यनो अभाव अने तेनुं कारण. ए॰ ३५.

शतक १७ उदेशक ३ ए० ३५-३७.

ही अवस्थाने प्राप्त अनगार एजनादि कियानो अनुभव करे ?—एजनाना प्रकार.—इव्य एजनाना प्रकार. पृ॰ ३५.—नैर्यिक इव्यएजना कहे-वानुं कारण.—तिर्यंचादि इव्य एजना फहेवानुं कारण —क्षेत्र एजनाना प्रकार.—नैर्यिकादि क्षेत्र एजना कहेवानुं कारण.—चलनाना प्रकार.—द्योगचलनाना प्रकार.—शीदारिक कारीर चलना कहेवानुं कारण. पृ॰ ३६—वैकियचलना कहेवानुं कारण.—शोत्रेदियादिचलना कहेवानुं कारण.—मनोथोगचलना कहेवानुं कारण.—संवेगादिनुं फळ. पृ॰ ३७.

शतक १७ उदेशक ४ पृ॰ ३८-३९.

प्राणातिपात वर्गरे द्वारा यती किया.—स्पृष्ट के अस्पृष्ट कर्म कराय ?—मृषावादद्वारा यती किया.—क्षेत्रने आश्रयी कर्म.—प्रदेशने आश्रयी क्रिया पृ॰ ३८.—दुःख आस्मकृत, परकृत के उभयकृत छे ?—वेदना आस्मकृत, परकृत के उभयकृत छे ?—वेदनाना वेदनसंबन्धे प्रश्न. पृ॰ ३९.

शतक १७ उद्देशक ५ ए० ३९.

ईशानेन्द्रनी सुधर्मा सभा इलादि संबन्धे प्रश्न, ए० ३९.

शतक १७ उदेशक ६ ए० ४०.

ृथिवीकायिक जीवो प्रथम उत्पन्न थाय अने पछी आहार करे के प्रथम आहार करे ने पछी उत्पन्न थाय इस्रादि प्रम्न, पृ॰ ४०,

शतक १७ उद्देशक ७ पृ॰ ४१.

जे पृथिवीकायिक सीधर्मकरूपमा सरण पामी पृथिवीकायपणे उत्पन्न थवानो छे ते प्रथम उत्पन्न थाय अने पछी आहार करे बुलावि प्रम. पू॰ ४९.

शतक १७ उद्देशक ८ ए॰ ४१.

'जे अप्कायिक सीधमेकल्पमां उत्पन्न थवाने योग्य छे' इत्यादि संबन्धे प्रश्न. पृ॰ ४१.

शतक १७ उद्देशक ९ ए॰ ४१.

'जे अप्कायिक घनोद्धिवलयोमां उत्पन्न बद्दाने योग्य छे' इत्यादि संबंधे प्रश्न. पृ॰ ४९.

शतक १७ उद्देशंक १० ए० ४२.

'जे **बायुकायिक सौधर्मद**ल्पमा उत्पन्न थवाने योग्य छे' इत्यादि संबंधे प्रश्न. पृ॰ ४२,

शतक १७ उद्देशक ११ ए० ४२.

'जे बायुकायिक घनबातवलयो के ततुवातवलयोने विवे उत्पन्न थवाने योग्य छे' इत्यादि संबंधे प्रश्न. पृ० ४३.

# शतक १७ उद्देशक १२ ए० ४२.

एकेन्द्रिय जीवो समान आहारवाळा छे इखादि प्रश्न.—एकेन्द्रियोने केरबा. पृ० ४२.— छेरबावाळा एकेन्द्रियोन्तं अल्पबहुत्व — छेरबावाळा एकेन्द्रियोन्ती ऋडितं अल्पबहुत्व पृ॰ ४२.

शतक १७ उदेशक १३ ए० ४३.

बचा शामकुमारो समान भाषारवाळा डे इत्यादि प्रश्न ए॰ ४३.

शतक १७ उद्देशक १४ पृ० ४३.

प्रवर्णक्रमारी समान आहारवाळा छे इखादि प्रश्न ए॰ ४३.

शतक १७ उद्देशक १५ पृ॰ ४३.

विद्युत्कुमार संबन्धे प्रश्न. १० ४३.

शतक १७ उद्देशक १६ ए॰ ४४.

बचा बायुक्कमारी समाम बाहारवाळा 🕏 ह्लादि प्रश्न. ए॰ ४४.

शतक १७ उद्देशक १७ ए० ४४.

क्या अप्रिकुमारी समान आहारवाळा छे इसादि प्रश्न. पृ॰ ४४.

#### शतक १८ उद्देशक १ ए० ४५.

१ जीवद्वार—जीव जीवभाव वने प्रथम छै के अप्रथम ? पृष्ठ ४५—२ आहारकद्वार—आहारक आहारभाव वने प्रथम छे के अप्रथम !—एक अनाहारक संबंधे प्रश्न.—ए रीते ३ भवसिद्धिकद्वार—४ संज्ञीद्वार पृष्ठ ४६.—५ केश्याद्वार—६ दृष्टिद्वार—७ संयतद्वार—८ कवायद्वार—९ ज्ञानद्वार १० योगद्वार—११ उपयोगद्वार—१२ नेदद्वार—१३ शरीगद्वार—अने १४ पर्याप्तद्वार,—वर्ण अने अनरम—१ जीवद्वार—जीव जीवभाव वचे वरम छै के अवरम ? पृष्ठ ४८—ए रीते २ आहारकद्वार,—३ भवसिद्धिकद्वार,—४ संज्ञीद्वार,—५ छेश्याद्वार—६ दृष्टिद्वार पृष्ठ ४९—७ संयतद्वार—८ कवाय-द्वार—९ ज्ञानद्वार—१० योगद्वार—११ उपयोगद्वार—१२ नेदद्वार—१३ शरीरद्वार पृष्ठ—५० अने १४ पर्याप्तद्वार.

शतक १८ उद्देशक २ ए० ५१-५३.

कार्तिकशेठनी कुत्तान्त अने तेनी शक्रपणे उत्पाद ए० ५१.

#### शतक १८ उद्देशक ३ पृ ५३-५८.

माकंदिकपुत्र अनगारना प्रश्नो.—पृथिवीक।यिक मनुष्य शरीर पामी तुरत सिद्ध थाय ? —एम अष्कायिक अने वनस्पतिकायिक संबंधे प्रश्न. पृ॰ ५४ — निर्जरा पुत्रलो सर्वलोककथापी छे ?—छद्यस्य निर्जरा पुद्रलोत्तुं परस्पर मिलपणुं जुए ? पृ॰ ५५ घन्धना वे प्रकार.—वृष्यवन्धना वे प्रकार पृ॰ ५६ — विक्रसावन्ध अने प्रयोगवन्ध. — भाववन्धना वे प्रकार —मूलप्रकृतिवन्ध अने उत्तरप्रकृतिवन्ध, —पूर्व विवेला अने हवे पछी बंधावाना कमैनी मिलता.—नैरियक।दिना कमैवन्धनी भिलता.—आह।रहपे प्रहण ६देला पुद्रलोनो केटलो आण प्रहण याय अने केटलो आण छोडाय ?—निर्जराना पुद्रलो उपर वेसवाने, यावत् सुवाने कोई समर्थ छे ?

# शतक १८ उद्देशक ४ ए० ५८-६०.

प्राणातिपातादि जीवना परिभोगमां आवे छे के नहि १ ए० ५८.—क्षायणा चार प्रकार.—कृतयुगमादि वार राद्यिओ.—नैरयिकादि दंडकने आश्रयी कृतयुगमादि राद्यिनुं अवतरण ए० ५९.

# शतक १८ उद्देशक ५ ए० ६०.

बे अधुरकुमार देवमां एक दर्शनीय अने एक अवर्शनीय होवानुं कारण. ए० ६०— ए रीते नागकुमारादि संबन्धे प्रश्न.—ने नैरयिकोमां एक अध्य. कमैवाळो अने एक महाकर्मवाळो उत्पत्त यवानो हेतु.—नंश्यिकने मरणसमये आ भवना के परभवना आयुवनो अनुभव होय ? ए० ६१— देवोनी इष्ट अने अमिष्ट विकृषेणा.

## शतक १८ उद्देशक ६ ए० ६२-६३.

गोळ वगेरे वादरस्कन्धना वर्णोद. पृ॰ ६२—भ्रमरना वर्णोद—पोपटनी पांखना वर्णादि,—परमाणुना वर्णादि,—द्विप्रदेशिक स्कन्ध.—श्रिप्रदेशिक स्कन्ध.—श्रिप्रदेशिक स्कन्ध.—श्रिप्रदेशिक स्कन्ध.

# शतक १८ उद्देशक ७ ए॰ ६४-७०.

यक्षाविष्ट केवली सत्य के असत्य बोले ते संबन्धे अन्यतीथिक तुं मन्तन्य.—उपिना 'कमे दारीर अने वाह्योपकरण' ए त्रण प्रकार.—'स्वित्त अवित्त अने मिश्र' ए उपिना बीजा त्रण प्रकार. पृ॰ ६४—परिष्ठह्ना प्रकार.—प्रणिधानना प्रकार.—वुष्प्रणिधानना प्रकार.—सुप्रणिधान. पृ॰ ६५—अन्यतीथिको अने महुक श्रमणोपासक.—अन्यतीथिकोनो अस्तिकाय सबन्धे महुक श्रावकने प्रश्न. पृ॰ ६६—महुकनो प्रतिप्रश्रद्वारा उत्तर. पृ॰ ६५—वेदोतुं विक्रय क्ष्य करवातुं सामर्थ्य.—वैक्रिय क्षरीरनो जीव साथे संबन्ध.—तेना परस्पर अंतरनो जीवसाथे संबन्ध.—तेना परस्पर अंतरनो स्वासियी छेद वाय के नहीं !—देवासुरसंमान, पृ॰ ६८—देवोतुं गमनसामर्थ्य—देवोना पुण्यकर्मना क्षयतुं तारतम्य. पृ॰ ६९.

## शतक १८ उद्देशक ८ ए० ७०-७२.

ऐथीपचिक कमॅबन्ध—अन्यतीथिको अने भगवंत गीतमनो संवाद. पृ० ७०—छदास्थना ज्ञाननो विषय.—परमाणु. पृ० ७९—द्विप्रदेशिक स्कन्ध.—अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध,—अवधिज्ञाननो विषय.—ज्ञान अने दर्शनना समयनी भिजता पृ० ७९.

#### शतक १८ उद्देशक ९ ए० ७२-७३.

भव्यक्रव्य नैर्यिक छे ? अने ते शाथी कहेवाय छे ?—ए॰ ७२.—ए रीते भव्य द्रव्य पृथिवीकाविकादि संबंधे प्रश्न.—भव्यद्रव्य नैर्यिकादिनी आयुप स्थिति. ए॰ ७३.

# शतक १८ उद्देशक १० पृ० ७४-७७.

अनगार वैकियलिधना सामध्येंथी तलवार के अल्लानी धार उपर रहे ?—परमाणु वायुकायथी स्पृष्ट होय के वायुकाय परमाणुबी स्पृष्ट होय !—
एम द्विप्रदेशिकरकन्थ यावत अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे प्रश्न.—बस्ति वायुकायिकयी स्पृष्ट होय के वायुकाय विकास स्पृष्ट होय !—रक्षप्रभावि प्रथिवी
तथा धीधर्मादि देवलोकनी नीचेना द्व्यो ए० ७४.—सोमिलना प्रश्नो.—यात्रा, यापनीय, अध्यावाध अने प्राप्तक विहार छे एवो भगवंतने प्रश्न.—यात्रा
केवी रीते छे ?—यापनीय केवी रीते छे ! ए० ७५.—यापनीयना वे प्रकार.—इन्द्रिययापनीय अने नोइन्द्रिययापनीयनी अर्थ.—अध्यावाध केवी
वीते छे !—प्राप्तक विहार केवी रीते छे !—सरिसव भक्ष्य के अभक्ष्य !—कुल्ला अक्ष्य के अभक्ष्य ! एक छो के
अनेक ! इसावि प्रश्न ए० ७७.

शतक १९ उद्देशक १ ए॰ ७९.

केश्याना प्रकार अने प्रज्ञापनानो छेर्या उद्देशक पृ० ७९.

शतक १९ उद्देशक र ए० ८०.

**डेरयाना प्रकार अने प्रज्ञापनानो गर्भ**उद्देशक पृ० ८०.

#### शतक १९ उद्देशक ३ पृ॰ ८०-८६.

१ स्याद्द्वार—कदाच वे अथवा अनेक पृथीवीकायिको एकटा मळी साधारण शरीर बांधे ये पछी आहार करे अने परिणमावे !— र छैरवाद्वार, पृथिवीकायिकोने छेरवाओ.—ए रीते ३ दृष्टिकार पृ० ८०— ४ ज्ञानद्वार, ५ योगद्वार, ६ उपयोगद्वार, ७ किमाहार, ८ प्राणातिपातादिमां स्थिति पृ० ८०— ९ उत्पातद्वार, १० स्थितिद्वार, १० समुद्धातद्वार, १२ उद्वर्तनाद्वार कहेवा.—एम कदाच वे के अनेक अप्कायिक, अप्रिकायिक अने वनस्पतिकायिक संबंधे पण बार द्वार कहेवा.—पृथिवीकायिकादिनी अवगाहनानुं अल्पबहुत्व पृ० ८३—पृथिवीकायिकादिनी परस्पर स्क्ष्मता.—पृथिवीकायिकादिनुं परस्पर बादरपणु. पृ० ८४—पृथिवीकायिकना शरीरनुं प्रमाण.—पृथिवीकायिकना शरीरनी अवगाहना—पृथिवीकायिकने केवी पीढा थाय १ पृ० ८५—अप्का-यिकने केवी पीडा थाय १ पृ० ८५—अप्का-यिकने केवी पीडा थाय १ ८६.

## शतक १९ उद्देशक ४ ए० ८६.

कदाच नैरयिको महास्रववाळा, महाकियावाळा, महावेदनावाळा अने महानिर्जरावाळा होय हे संबंधी भंगो पृ॰ ८६.

# शतक १९ उद्देशक ५ ए॰ ८८-८९.

नैरियको चरम—अल्पआयुववाळा अने परम—अधिक आयुववाळा होय ? ए० ८८—'चरम निरियको करता परम नैरियको महास्रववाळा, महाकिया-बाळा, महावेदनावाळा अने महानिर्जरावाळा होय' इत्यादि प्रश्न —ए रीते अप्रश्कुमार संबन्धे प्रश्न.—वेदनाना 'निदा अने अनिदा'—ए वे प्रकार-नैरियकोने कया प्रकारनी वेदना होय ? ए० ८८.

#### शतक १९ उदेशक ६ ए० ८९.

द्वीप अने समुद्रो क्यां, केटला अने केवा आकारवाळा छे ? पृ॰ ८९.

## शतक १९ उद्देशक ७ ए० ८९.

असुरकुमारना भवनावासो केटला अने केवा छे ?—ए रीते धानव्यंतरना नगरो केटला अने केवा छे ?—ज्योतिषिक अने करणना विमानावासो केटला अने केवा छे ? ए० ८९.

# शतक १९ उद्देशक ८ पृ० ९०.

जीवनिर्शृतिना प्रकार ए॰ ९०—कमैनिर्शृतिना प्रकार.—बारीरनिर्शृतिना प्रकार.—सर्वेन्द्रियनिर्शृतिना प्रकार.—एथिवीकायिकने केटली इन्द्रियनिर्शृति इोय १—भाषानिर्शृतिना प्रकार.—मनोनिर्शृतिना प्रकार—कषायनिर्शृतिना प्रकार ए॰ ९१.—वर्णनिर्शृति—संस्थाननिर्शृति—संज्ञानिदृत्ति—केद्यानिदृत्ति— इष्टिनिर्दृत्ति—ज्ञाननिर्शृति—अज्ञाननिर्शृति ए॰ ९२.—योगनिर्शृति—उपयोगनिर्शृति ए॰ ९३.

# शतक १९ उद्देशक ९ ए० ९३-९४.

शरीरकरण.—इन्द्रियकरण पृ० ९३—प्राणातिपातकरण.—पुद्रलकरण.—वर्णकरण.—संस्थानकरण पृ० ९४.

# शतक १९ उद्देशक १० पृ० ९४.

'बधा वानव्यन्तरो समान आहारवाळा होय छे'—हत्यादि प्रश्न. ए० ९४.

# शतक २० उद्देशक १ ए० ९५-९७.

वेद्दिद्यादि जीवोना शरीरवन्धनो कम—वेद्दित्य साधारण शरीर बांचे के प्रत्येक शरीर बांधे !—तेओने छैरया पृ॰ ९५.—तेओमां 'अमे दृष्ट के अनिष्ट रसादिनो अनुभव करीए छीए' एवी संज्ञा अने प्रज्ञादिनो अभाव.—पंचेन्द्रिय साधारण के प्रत्येक शरीर बांधे ? पृ॰ ९६—वेद्दिन्नया-दिनुं अक्यवद्वत्व पृ॰ ९७.

# शतक २० उद्देशक २ पृ० ९७-९९.

आकाशना प्रकार.—'कोकाकाश जीवरूप छे, जीवदेशकप छे' इत्यादि प्रश्न पृ० ९०.—अधोक्षोक धर्मास्तिकायना केटला भागने अवगाहीने रहेलो छे !---धर्मास्तिकायना केटलां अभिवचनो छे !--अधर्मास्तिकायनां अभिवचनो.--आकाशास्तिकायनां अभिवचनो.---जीवास्तिकायनां अभिवचनो, पृ० ९८. ---पुद्गत्रास्तिकायना अभिवचनो पृ० ९९.

शतक २० उद्देशक ३ ए० ९९.

प्राणातिपातावि आत्मा सिवाय बीजे परिणमता नधी पृ॰ ९९.

शतक २० उद्देशक ४ पृ० ९९.

इन्द्रियोपचयना प्रकार पृ - ९९.

# शतक २० उद्देशक ५ पृ० १००-११२.

परमाणुमां केटला वर्णादि होय छे?—हिप्रदेशिक स्कन्धमां केटला वर्णादि होय ?—हिप्रदेशिक स्कन्धना ४२ भागाओ ए० १०१ — त्रिप्रदेशिक स्कन्धमां केटला वर्णादि होय ? ए० १०१ — चतुःप्रदेशिक स्कन्धना भागाओ ए० १०१ — वर्णादेशिक स्कन्धना वर्णादिने आश्रयी १० भागाओ १० भागाओ ए० १०१ — चतुःप्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिने आश्रयी १२४ भागाओ — छ प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिना भागाओ ए० १०५ — सात प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिना भागाओ ए० १०५ — सात प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिने आश्रयी ४०४ भागा — आट प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिन आश्रयी ४०४ भागा — आट प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिन अग्रयी ४०४ भागा — अट प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिन आश्रयी ६०४ भागा ए० १०० — नव प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिना भागो — वश्य प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिना भागो — वश्य प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिना भागो — वश्य प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिना भागो ए० १०८ — पांच स्पर्शना भागो ए० १०८ — पांच स्पर्शना भागो ए० १०८ — पांच स्पर्शना भागो ए० १०९ — काट स्पर्शना भागो — वादर स्कन्धना स्पर्शन आश्रयी ००% ६ भागो — परमाणुना चार प्रकार — इत्यपरमाणुना प्रकार — क्षेत्रपरमाणुना प्रकार ए० १९२ — काट स्पर्शना प्रकार — मावपरमाणुना प्रकार ए० १९२

# शतक २० उद्देशक ६ ए० ११२-११४.

'जे पृषिवीकायिक जीव रक्षप्रभा अने शर्कराप्रभानी विश्व मरणसमुद्धात करीने सीधमंदेवलोकमां पृथिवीकायिकपणे उत्तपत्त थवाने योग्य है ते पूर्वे उत्पन्न थाय अने पक्षी आहार करें हत्यादि प्रश्न पृ० ११२ — ए रीते अकायिक अने वायुकादिक संबन्धे प्रश्न जाणवो पृ० ११४.

# शतक २० उद्देशक ७ पृ० ११४-११६.

कर्मबन्द पु. १३४.--क्रानावरणीय कर्मनी बन्य.--क्रानावरणीयोदय कर्मनी बन्ध --स्रीतंदनी बन्ध.--दर्शननोहनीय कर्मनी बन्ध.

# शतक २० उद्देशक ८ पृ० ११६-११८.

कमैभूमिना प्रकार.—अकमैभूमिना प्रकार.—अकमैभूमिमां उत्सर्पिणी अने अवगर्पिणीरूप काळ होय !—भगत अने ऐरवतमो उत्सर्पिणी अने अवस-पिणीरूप काळ होय !—काळ.—अरहंतो महाविदेहमां पांच महाव्रतरूप धर्मनो उपदेश करे !—धारतवर्षमां केटला तीर्थंकरो होय ! ए० ११६—चोनीश जिनना अंतरो.—कालिक श्रुतनो विच्छेद अने अविच्छेद.—पूर्वगत श्रुतनी स्थिति —तीर्थंनी स्थिति.—सानी छेला तीर्थंकरना तीर्थंनी स्थिति.—तीर्थं अने तीर्थंकर—ए० ११७—प्रवचन अने प्रवचनी—उम्र वगेरै क्षत्रियोनो धर्ममा प्रवेश.—देवलोकना प्रकार ए० ११८.

चारण मुनिना प्रकार अने तेनु सामर्थ्य.—विद्याचारण कहेवानुं कारण.—विद्याचारणनी शीघ्र गति. ए० ११८—विद्या चारणनी तिर्धग्गतिनो विदय.—विद्याचारणनी ऊर्च्यगतिनो विदय,—जंघाचारण शाथी कहेवाय छे?—जंघाचारणनी गति—जंघाचारणनो तिर्थग्गतिविदय ए० ११९.—जंघा-चारणनो ऊर्च्यगतिविदय ए० १२०.

# शतक २० उद्देशक १० पृ० १२०.

स्रोपकम अने निहपकम आयुष.—नैरियकोनो उत्पाद आत्मोपकम, परोपकम अने निहपकमथी थाय छे १ पृ० १२०—नैरियकोनी उत्पीत आत्मोपकम परोपकमधी याय छे १ मनेरियकोनी उत्पीत स्वक्रमंथी के अन्यना क्रमंथी १ नैरियकोनी उत्पीत स्वक्रमंथी के अन्यना क्रमंथी १ नैरियकोनी उत्पीत स्वक्रमंथी के अन्यना क्रमंथी १ नैरियकोनी उत्पीत आत्मयोगवी के परप्रयोगवी १—नैरियको कितिसंखित, अकितिसंखित के अवक्तव्यसंखित होय छे १—नैरियको कितिसंखितादि होय छे १ नेरियकोनी अत्पाद स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत

#### शतक २१ पृ० १२७-१३१.

प्रधमवर्ग—शाल्यादि धाम्यना मूळ तरीके जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे ?— उत्याद— एक समये केटला जीवो उपजे ? ए॰ १२७—अवगाइना— कर्ममा बन्धक.—केद्या.— द्वाल्यादिना मूळपणे जीवनी स्थिति.—शाल्यादि अने पृथिवीकायिकनो संवेध.—शाल्यादिना मूळपणे सर्व जीवोनो उत्पाद पृ॰ १२८—द्वितीय वर्ग—कलाय वगेरे धान्यना कन्दरूपे जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे ? तृतीय वर्ग—अळसी वगेरेना मूळपणे जीवो क्यांथी आवी उपजे छे ?—पांचमो वर्ग—क्ष्यु वगेरे पर्ववाळी वनस्पतिना मूळपणे जीवो क्यांथी आवी उपजे छे ?—पांचमो वर्ग—क्ष्यु वगेरे पर्ववाळी वनस्पतिना मूळपणे जीवो क्यांथी आवी उपजे छे ?—वष्ठ धर्ग—संख्य, अंतिय वगेरे वनस्पतिना जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे ? ए॰ १३०—सातमो वर्ग—अअदहाविना मूळपणे जीवो क्यांथी आवीने उत्यक्ष याय छे ?—अष्टम वर्ग—तुळसी वगेरे इरित वर्गना मूळपणे जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे ? ए॰ १३१.

#### शतक २२ ए० १३३-१३५.

प्रथमवर्गे—ताड वगेरे वलयवर्गना मूळपणे जीवो क्यांबी आवी उत्पन्न बाय छे? पृ० १३२.—द्वितीय वर्ग —लीमडा वगेरे एकस्थिक वर्गना मूळपणे जीवो क्यांबी आवीने उपजे छे? पृ० १३३,—चतुर्व वर्ग— वंगण वगेरे गुरुछवर्गना मूळपणे जीवो क्यांबी आवीने उपजे छे?—पंचम वर्ग— सिरियक वगेरे गुरुछवर्गना मूळपणे जीवो क्यांबी आवीने उपजे छे?—पंचम वर्ग — सिरियक वगेरे गुरुमवर्गना मूळपणे जीवो क्यांबी आवीने उपजे छे?—पंचम वर्ग—एसफली वगेरे वहीवर्गना मूळपणे जीवो क्यांबी आवीने उपजे छे? पृ० १३५.

#### शतक २३ ए० १३६-१३८.

प्रथमको—आहु वगेरे साधारण वनस्पतिना मूळपणे जीवो क्यांबी आवीने उपजे छे १ ए० १३६—हितीय वर्ग—लोही वगेरे अनन्तकायिक वनस्पतिना मूळपणे जीवो क्यांबी आवीने उपजे छे १—चतुर्यं वर्ग—पाठा वर्गना मूळपणे जीवो क्यांबी आवीने उपजे छे १ ए० १३८.

# शतक २४ उद्देशक १ पृ॰ १३९-१५६.

नैरियको क्यांबी आवीने उपजे !—तिर्यंचोनो नैरियकोमां उपपात पृ० १३९— पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो नारकोमां उपपात.—असंही पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो नारको वो उपवात.--- प्यामा असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचनो नारकोमां उपपात.--असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचो केटली नरकपृथिवी सुन्नी उत्पन्न थाय ?--केटला भायषवाळा नारकमा असज्ञी तिर्येचो भावीने उपजे?---२ परिमाण-असंज्ञी पं॰ तिर्येचो रक्तप्रभामा एक समये केटला उपजे?---३ तेओना संघयण.--४ बारीरनी अवगाहना.—५ संस्थान पृ० १४०—६ टेर्या —७ दृष्टि—८ ज्ञान अने अज्ञान.—१ योग—१० उपयोग.—११ संज्ञा, १२ क्षाय.— १३ इन्द्रिय.— १४ ममुद्रात -- १५ वेदना ए० १४१.— १६ वेद-- १७ आयुष.— १८ अध्यवसाय.— १९ अनुबंध -- २० कायसंवेध.-- २ असंज्ञी पंचेन्द्रय तिर्यंचनो जघन्य आयुषवाळा रक्षप्रभा नारकमां उपपान.—रेओना परिमाणादिहारो पृ० १४२—३ कायसंवेध—असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो ढाकृष्टस्थिति रक्षप्रभागारकर्मा उपयात.—परिमाणादि.—कायसंवेध.—४. जघन्य स्थितिवाळा असंशी तिर्यंचनो रक्षप्रभामां उपयात.—परिमाणादि पू० १४३.--कायसवेध.-- ५ जघन्य असंज्ञी पचेन्द्रिय तिर्यंचनो जधन्य रक्षप्रभा नैरियकमां उपपात.--परिमाणादि.--कायसवेध-- ६ अधन्य असंज्ञी <u>विर्यं</u>चनी उत्क्रष्ट० रक्रप्रमा नैर्द्यकमां उत्पत्ति.—परिमाण।यि.—कायसंवेध पृ० १४४. ৩ *उन्*कृष्ट० असंज्ञी तिर्यंचनी रक्रप्रभा नार+मां उत्पत्ति.—परिमा-णादि – काथसंवेच.—८ उत्कृष्ट० असंक्षी तिर्येचनी जघन्य० रक्षप्रभानारकमां उत्पत्ति —परिमाणादि.—कायसंवेघ.—९ उत्कृष्ट० असंज्ञी पंचेन्द्रिय तियैचनी उत्कृष्ट<sup>,</sup> रक्रप्रभानारकमां उत्पत्ति पृ० १४५.—परिमाणादि.—कायसंवेध.—सज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचनो नारकमा उपपात—संख्याता**ः संज्ञी** वंचेन्द्रिय तिर्यंचानो नारकमां उपपात.—पर्याप्त संख्याता - संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो नारकमां उपपात.—सख्याता - संज्ञी वंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो रक्षप्रभा नारकमां उपपात.-परिमाण.- संघपण.- सस्थान - हेर्या- दष्टि-ज्ञान अने अज्ञान-कायसंवेध.- मंख्याता व संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी जघन्य रक्रप्रभानारकमां उत्पत्ति —परिमाण पृ॰ १४७.—जबन्य० सत्ती पचेन्द्रिय तिर्यचनी रक्षप्रभानारकमां उत्पत्ति —परिमाण.—जबन्य० संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी जघन्य ॰ रक्षप्रभा नारकमां उत्पत्ति.—परिमाण.— जघन्य ॰ संक्षी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्कृष्ट ॰ रक्षप्रभा नारकमां उत्पत्ति.—उत्कृष्ट ॰ संक्षी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उ<sub>र</sub>कृष्ट<sub>॰</sub> रक्रप्रभानारकमां उत्पत्ति पृ० १४८.—उत्कृष्ट० संत्री पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी जघन्य० रक्रप्रभानारकमां उत्पत्ति.—गरियाण.— उत्कृष्ट॰ संज्ञी पर्चोन्द्रय तिर्येचनी उत्कृष्ट॰ रक्षप्रभागारकमां उत्पत्ति.—परिमाणादि.—संज्ञी पचेन्द्रिय तिर्येचनी द्राकराप्रभामां उत्पत्ति.—परिमाणादि पू० १४९. सङ्याना संज्ञी पंचेन्द्रिय तियैचनो सप्तम नरकमा उपपान.—संजी तिर्यंचनी जघन्य० सप्तम नर≉पृथिवीना नारकमा उत्पत्ति.—संज्ञी पंचेन्द्रिय विर्यंचनो उत्कृष्ट॰ सप्तम नरकमा उपपात पृ॰ १५०.—अघन्य० संज्ञा पचेन्द्रिय तिर्यंचनी सप्तम नरकमा उत्पत्ति.—अघन्य० संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो बधन्य • सप्तम नरकमां उपपात.—अधन्य • सज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थेचनो उत्कृष्ट • सप्तम नरकमां उपपात —उत्कृष्ट • संज्ञी • पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी सप्तम नरकमां उत्पत्ति.---परिमाण.-- उत्कृष्ट॰ संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचनी जधन्य॰ सप्तम नरकमा उत्पत्ति.-- उत्कृष्ट॰ संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचनी उत्कृष्ट सप्तम नरकमा उत्पति पृ॰ १५१.— मंशी मनुष्योनो नरकमा उपपान — संख्याता । संशी मनुष्योनी नारकपणे उत्पत्ति.—पर्याप्ता मनुष्योनी नारकपणे उत्पत्ति.— सख्याता । सं॰ पं॰ मनुष्य केटली नरवष्ट्रियवीमा उत्पन्न थाय ?— सख्याता॰ मनुष्यनी रक्षप्रभाना क्ष्यणे उपपात,—परिमाण—एक समये केटला उत्पन्न थाय ? पृ॰ १५२—२ संज्ञी सतुष्यनी जघन्य • रक्षप्रभानारकमां उत्पत्ति.—३ संज्ञी मनुष्यनी उत्कृष्ट • रक्षप्रभानैरयिकमां उत्पत्ति.—४ जघन्य • संज्ञी मनुष्यनी रक्रप्रभामां उत्पत्ति—५ जधन्य ॰ मनुष्यनी जधन्य ॰ रक्रप्रभामां उत्पत्ति.—६ जघन्य ॰ मनुष्यनी उत्कृष्ट ॰ रक्रप्रभामां उत्पत्ति पृ॰ ९५३,—७ उत्कृष्ट • मनुष्यनी रक्षप्रभामां उत्पत्ति.—८ वत्कृष्ट मनुष्यनी अधन्य । रक्षप्रभामां उत्पत्ति.— मनुष्यनी वत्कृष्ट । रक्षप्रभामां उत्पत्ति.—मनुष्यनी वार्कराप्रभामां उरपत्ति.—परिमाण.—एक समये फेटला उरप्ष थाय ?—१ जघन्य० मनुष्यनी दार्कराप्रभामां उरपत्ति पृ० १५४.—१ उन्कृष्ट० मनुष्यनी वार्कराप्रभामां वस्यति.—ए प्रमाणे छद्वी नरवप्रांथवी सुधी जाण्युं.—१ सक्याता संशी मनुष्यनी सप्तम नरकमां उत्पत्ति—परिमाण.—१ मनुष्यनी जघन्य सप्तम नरकमां उत्पत्ति.— ३ मञुप्यनी उत्कृष्ट॰ सप्तम नरकमां ६त्पत्तिः—जघन्य॰ मजुष्यनी सप्तम नरकमां उत्पत्ति—उत्कृष्ट मजुष्यनी सप्तम नरकमां उत्पत्ति—पृ∙ १५६.

#### शतक २४ उद्देशक २ ए० १५६-१६०

अप्तरक्रमारमां उपपात.—असंबी पंचेन्त्रिय तिर्यंचनी अप्तरक्रमारमां उत्पत्ति.—परिमाण.—एक समये केटला उत्पन्न बाय १ ए० १५६.—संबी पंचेन्त्रिय तिर्यंचनी अप्तरक्रमारमां उत्पत्ति.—असंख्यात संबी पंचेन्त्रिय तिर्यंचनी अप्तरक्रमारमां उत्पत्ति स्थिति.—असंख्यात संबी पंचेन्त्रिय तिर्यंचनी अप्तरक्रमारमां उत्पत्ति ए० १५७.—अचन्य असंख्यात संबी पंचित्रेयनी अप्तरक्रमारमां उत्पत्ति.—परिमाणादि.—असंख्यात संव पंचेन्त्रिय तिर्यंचनी अप्तरक्रमारमां उत्पत्ति.—परिमाणादि.—असंख्यात संव पंचेन्त्रिय तिर्यंचनी अप्तरक्षमारमां उत्पत्ति.—असंख्यात संव पंचेन्त्रिय तिर्यंचनी अप्तरक्षमारमां उत्पत्ति.—असंख्यात संव पंचेन्त्रिय तिर्यंचनी अप्तरक्षमारमां उत्पत्ति.—उत्कृष्ट असंख्यात संव पंचेन्त्रिय तिर्यंचनी अप्तरक्षमारमां उत्पत्ति.—उत्कृष्ट असंख्यात संव पंच तिर्यंचनी अप्तरक्षमारमां उत्पत्ति.—असंख्यात संव मनुष्यनी अप्तरक्षमारमां उत्पत्ति.—अप्तरमाण संव मनुष्यनी अप्तरक्षमारमां उत्पत्ति.—अप्तरमाणादि. ए० १६०.

#### शतक २४ उद्देशक ३-११ पृ० १६०-१६२.

नाग्कुमारमां उपपात.—संत्ती पं॰ तिथँचनी नागकुमारमां उत्पत्ति —असंख्यात॰ संत्ती पंचेन्द्रिय तिथँचनी जघन्य॰ नागकुमारमां उत्पत्ति.—असंख्यात॰ संत्ती पंचेन्द्रिय तिथँचनी जघन्य॰ नागकुमारमां उत्पत्ति.—असंख्यात॰ संत्ती पंचेन्द्रिय तिथँचनी नागकुमारमां उत्पत्ति—उत्कृष्ट॰ असंख्यात॰ संत्ती पंचेन्द्रिय तिथँचनी नागकुमारमां उत्पत्ति —उप्ति स्थात॰ संत्तां पंचेन्द्रिय तिथँचनी नागकुमारमां उत्पत्ति ए॰ १६१.—संत्ती पं॰ मनुष्यनी नागकुमारमां उत्पत्ति.—असंख्यात॰ संत्री पं॰ मनुष्यनी नागकुमारमां उत्पत्ति —अघन्य॰ असंख्यात॰ संत्री पं॰ मनुष्यनी नागकुमारमां उत्पत्ति.—उत्कृष्ट॰ असंख्यात॰ संत्री पं॰ मनुष्यनी नागकुमारमां उत्पत्ति.—उत्कृष्ट॰ असंख्यात॰ संत्री पं॰ मनुष्यनी नागकुमारमां उत्पत्ति.—संख्यातबर्धाय संत्री पं॰ मनुष्योनी नागकुमारमां उत्पत्ति पृ॰ १६२.

## शतक २४ उदेशक ४-११ पृ॰ १६३.

सुवर्णकुमार्थी मांडी स्तनितकुमार सुधीना आठे उद्देशको नागकुमारीनी पेठे कहेवा.

#### शतक २४ उद्देशक १२ ए० १६३-१७३.

पृथिवीकायिकोनो उपपात.—तिर्थेचोनी पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति पृ० १६३ —परिमाणादि—कायसंवेष.—पृथिवीकायिकनां ज्ञान्य० पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—ज्ञान्य० पृथिवीकायिकनी पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—ज्ञान्य० पृथिवीकायिकनी प्रथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—ज्ञान्य० पृथिवीकायिकनी ज्ञान्य० पृथिवीकायिकनी ज्ञान्य० पृथिवीकायिकनी ज्ञान्य० पृथिवीकायिकनी ज्ञान्य० पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—ज्ञान्य० पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—ज्ञान्य० पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—ज्ञान्य० पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—ज्ञान्य० पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—ज्ञान्य० पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—ज्ञान्य० पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—वायुकायिकनी पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—अक्ष्य० पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—वायुकायिकनी पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—वायुकायिकनी पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—वायुकायिकनी पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—वायुकायिकनी पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—वायुकायिकनी पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—वायुकायिकनी पृथिवीकायिकमां उत्पत्ति.—वायुक्यविकायिकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायिकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायिकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायिकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायिकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायिकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायिकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायिकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायिकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकमां उत्पत्ति.—वयुक्यविकायकम

## शतक २४ उद्देशक १३-१९ ए० १७३-१७६.

अपकायिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? पृ॰ १७४.—उद्देशक १४—मेजस्कायिको क्यांथी आवी उत्पन्नथाय ? पृ॰ १७४—उद्देशक १५ वायुका-यिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? पृ॰ १७५.—उद्देशक १६—वनस्रतिकायिक संबन्धे प्रश्न पृ॰ १७५.—उद्देशक १७—वेद्दिय जीवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? पृ॰ १७५.—उद्देशक १८—तेद्दियिनी उत्पत्ति संबन्धे प्रश्न पृ॰ १७६.—उद्देशक १९—चउदिन्दियनी उत्पत्ति संबन्धे प्रश्न पृ॰ १७६.

## शतक २४ उद्देशक २० पृ० १७७-१८५.

पंचेन्त्रिय तिर्यंचयोनिकती उत्पत्ति.—नैरिबिकोनी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति —रक्षप्रभानैरिबिकोनी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—पिमाण.—
वारीर.—रक्षप्रभानैरिबिकी जवन्य॰ पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति पृ॰ १००.— इ्यार्वेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति स्ति पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति — अपका पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति — अपका पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति — अपका पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.— अपका पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्पत्ति — अपका पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी अवन्य पंजी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति — अपका पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी अवन्य पंजी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति — अपका पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी अवन्य पंजी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति — उत्कृष्ट॰ अपंजी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति — उत्कृष्ट॰ अपंजी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्कृष्ट संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्कृष्ट संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्कृष्ट संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्कृष्ट संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्पत्ति — परिभाणादि — र पंजी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी अवन्य संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्पत्ति — परिभाणादि — र पंजी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी अवन्य संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्पत्ति ए॰ १८१.—४ अवन्य संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्पत्ति — उत्पत्ति — अपका उत्पत्ति — उत्कृष्ट संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी संज्ञी स

पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी जयन्य - संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—उत्कृष्ट - संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्कृष्ट संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्पत्ति.—असंज्ञी मनुष्योनी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति १८२.—१ संज्ञी मनुष्योनी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—
परिमाणादि.—२ संज्ञी मनुष्यनी जयन्य - संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—६ संज्ञी मनुष्यनी उत्कृष्ट संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति. १०१८३.—६ जयम्य - संज्ञी मनुष्यनी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—७ जयम्य - संज्ञी मनुष्यनी ज - सं - तिर्यंचमां उत्पत्ति.—८ उत्कृष्ट - संज्ञी मनुष्यनी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—९ उत्कृष्ट - संज्ञी मनुष्यनी उत्कृष्ट - संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—१ वत्कृष्ट - संज्ञी मनुष्यनी उत्कृष्ट - संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—१ संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—श्रीष्मं सहस्रार्पर्यंत देवोनी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति.—श्रीष्ठमं सहस्रार्पर्यंत देवोनी संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पत्ति १० १८५.

# शतक २४ उदेशक २१ पृ० १८६-१९०.

मनुष्यमां उपपात.—रक्षप्रमा नैरविकनो मनुष्यमां उपपात.—तिर्यंचयोनिकनो मनुष्यमां उपपात प्र॰ १८६.—पृथिवीकायिकोनो मनुष्यमां उपपात.—अध्रक्षमां उपपात.—देवोनो मनुष्यमां उपपात.—अवनवादी देवोनो मनुष्यमां उपपात.—अध्रक्षमारादि देवोनो मनुष्यमां उपपात प्र॰ १८७.—यावत् सहस्रार देवोनो मनुष्यमां उपपात.—आनत देवोनो मनुष्यमां उपपात.—परिमाणादि.—कल्पातीत देवोनो मनुष्यमां उपपात.—मैबै-यक देवोनो मनुष्यमां उपपात प्र॰ १८८.—अनुत्ररोपपातिक देवोनो मनुष्यमां उपपात.—सर्वार्यसिद्ध देवोनो मनुष्यमां उपपात प्र॰ १८८.—सर्वार्यसिद्ध देवनो जच्च्यमां उपपात.—सर्वार्यसिद्ध देवनो उपपात.—सर्वार्यस्थ

#### शतक २४ उद्देशक २२ पृ० १९०-१९१.

व्यंतर देवोमा उपपात.—असंख्याता संशी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी वानव्यन्तरमा उपपात.—असंख्यात संशी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी जधन्य वानव्यन्तरमा उत्पत्ति ए॰ १९०.—असंख्यात संशी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी उत्कृष्ट वानव्यंतरमा उत्पत्ति.—असंख्याता बान्व्यंतरमा उपपात ए॰ १९०.

# शतक २४ उद्देशक २३ पृ० १९१-१९३.

ज्योतिषिकमां उपपात.—संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो ज्योतिषिकमां उपपात.—असंख्यात संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो ज्योतिषिकमां उपपात पृ॰ १९१.
—असंख्यात संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो ज्योतिषिकमां उपपात.—असंख्यात असंख्यात संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो ज्योतिषिकमां उपपात.—असंख्यात संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनी उपपातसंख्या.—असंख्यात संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनी उपपातसंख्या.—असंख्यात संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो ज्योतिषिकमां उपपात पु॰ १९२.—मनुष्योनो ज्योतिषिकमां उपपात पु॰ १९२.

#### शतक २४ उद्देशक २४ पृ॰ १९३-१९७.

वैमानिकोमां उपपातः—असंख्यातः संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो शीधमं देवलोकमां उपपातः—परिमाणादि पृ॰ १९३.—असंख्यातः संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो लिक्नां जयण्यः शीधमं देवलोकमां उपपातः—असंख्यातः संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो लिक्नां देवलोकमां उपपातः—असंख्यातः संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो सीधमं देवलोकमां उपपातः—अख्यः असंख्यातः संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो सीधमं देवलोकमां उपपातः—संख्यातः संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो सीधमं देवलोकमां उपपातः—मनुष्योनो सीधमं देवलोकमां उपपातः ए॰ १९४.— संख्यातः संज्ञी मनुष्योनो सीधमं देवलोकमां उपपातः—संख्यातः संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचने अने मनुष्योनो ह्यान देवलोकमां उपपातः—संख्यातः संज्ञी उपपातः—संख्यातः संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचने अने मनुष्योनो ह्यान देवलोकमां उपपातः—स्वतं उपपातः—अन्वयः संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो सनरकुमारमां उपपातः—मनुष्योनो सनरकुमारमां उपपातः—मानुष्यः देवोनो उपपातः—आनत देवोनो उपपातः—मैनेयःकोनो उपपातः—विजयादिनो उपपातः ए॰ १९५ः—सर्वार्थंसिद्ध देवोमां उपपातः—जयन्यः संज्ञी मनुष्यनो सर्वार्थंसिद्ध देवोमां उपपातः ए० १९५ः

# शतक २५ उद्देशक १ पृ० १९८-२०१.

छेदया.— संसारी जीवना चींद सेद पृ० १९८.—योगनुं अल्पबहुत्व पृ० १९९.—प्रथम समयमां जस्पन्न धयेला वे नैरसिकने आश्रयी योग.— योगना प्रकार.—योगनुं अल्पबहुत्व पृ० २०१.

# शतक २५ उद्देशक २ ए० २०१-२०३.

द्रव्यना प्रकार.—अजीव द्रव्योना प्रकार.—जीवद्रव्यनी संख्या.—जीवद्रव्यो अनंत होवानुं कारण ?—अजीव द्रव्योनो परिभोग पृ० २०१.—नैर्यिकोने अजीव द्रव्योनो परिभोग — असंख्य क्षोकाकाकामां अनंत द्रव्योनो स्थित —एक आकाश प्रदेशमां पुत्रत्नोनो च्यापच्य.—औदारिकादि शरीरकपे स्थित के अस्थित द्रव्यो प्रहण कराय ?—द्रव्य, होत्र, काळ अने भावथी द्रव्यप्रहण पृ० २०३.

## शतक २५ उद्देशक ३ पृ० २०४-२१५.

 उमादिकपता.—परिमंडकादि संस्थाननी प्रदेशकपे कृतयुग्मादिकपता.—परिमंडलादि संस्थानो प्रदेशकपे श्<u>रं</u> कृतयुग्मादिकप स्रेशन केटका प्रदेशावगाव होय ?--इत्तर्पस्थान, न्यसर्पस्थान, नतुरसर्पस्थान, नायतर्पस्थान पृ० २०९.--परिमंडसर्पस्थानो.-- नत्तरस्थानो.-- न्यसर्पस्थानो.-- नतुरस-<del>वंद्यानो.--आयतसंस्थानो.--परिमंडलसं</del>स्थाननी स्थिति.--परिमंडलसंस्थानोनी स्थिति.--परिमंडलादि संस्थानना वर्णादि पर्यायो पृ॰ २९०.--- हम्यक्पे अम्बाद्यप्रदेशनी श्रेणिओनी संस्था.—स्रोकाकाशनी श्रेणिओ,—स्रात्रोकाकाशनी श्रेणिओ.—आकाशश्रेणिनी प्रदेशक्षे संस्था पृ० १११.—अलोकनी अक्रि.—छोडाकाश क्षेणिओं अने सादि सपर्यवसितादि भंग.—अलोकाकाशानी क्षेणिओं संबंधे सादि सपर्यवसितादि भागा पृ० १११.—आकाशनी श्रेणिओ ह्रव्यक्षे इत्त्युग्मादिक्ष छे ?—प्रदेशक्षे इत्युग्मादिक्ष छे ?—झेकाकाशनी श्रेणिओ.—ऊर्घ अने अधी खांगी श्रेणिओ.—अलोकाकाशनी श्रेणिओ — श्रेकेका सात प्रकार पृ॰ २१३. -- परमाणुनी गति.-- द्विप्रदेखिक स्कन्ध.--नैश्यिकोनी गति.--नरकानास.-- आवारांगावि अंगनी प्रकपणा.---पांच गतिष्ट अस्पबहुत्व.—आठ गतितुं अत्पबहुत्व.—सेन्द्रियादि जीबोर्ज अल्पबहुत्व ए० २९४.—जीव—पुद्गस्रोमा सर्व पर्यासोतुं अल्पबहुत्व.—आयुषकसैना बन्धक अने अवन्थक इस्रादिनुं अस्पबहुत्व ए॰ २१५.

#### शतक २५ लंदेशक ४ ए० २१५–२३५.

षुरमना प्रकार.—नैरियकोमां केटलां युरमो होय ?—वनस्पतिकायिकमां कृतयुरमादि राधिनुं अवतरण पृ० २१५.—द्रध्यना प्रकार.—धर्मास्तिकायादि इच्यमां कृतयुरमादि राणिनुं अवतरण.—जीवास्तिकाय इच्यक्त्ये शुं होय !—पुद्गलास्तिकायमां कृतयुरमादिनुं अवतरण.—धर्मास्तिकायना प्रदेशो.—धर्मा-स्तिकायादिनुं भल्पबहुत्व.—धर्मास्तिकाय अवगाढ छे के अनवगाढ ?—छोकाकाशमां अवगाढता ए॰ २१६.—धर्मख्यात प्रदेशमां अवगाढता.—रस्रप्रभानी अवगाढता.—जीवद्रव्यमां कृतयुग्मादिनी प्ररूपणा.—नैरियकोमां कृतयुग्मादि राश्विओचुं अवतरण.—जीवप्रदेशोमां कृतयुग्मादि राशिओ.—सिद्धोमां कृतयुग्मा-दिनो समवतार प्र॰ २१७.—जीवोमा प्रदेशापेक्षाए इत्युरमादि राश्विको.— सिद्धोमां प्रदेशनी अपेकाए इत्युरमादिकपता.—एक जीवाश्रित आकाशप्रदेशमां कृतयुरमादि राविओ.—अनेक जीवाश्रित आकाशप्रदेशमां कृतयुग्मादि राविओ.—नैरविकादि दंडको अने सिद्धाश्रित आकाशप्रदेशनी अपेक्षाए कृतयुग्मादि राशिक्षो.—जीवना स्थितिकाळना समयोने आश्रयी कृतयुग्मादि राशिको.—नैरयिकादि जीवनी स्थितिकाळना समयोने आश्रयी कृतयुग्मादि राशिको प्र॰ २१८.— 'नैरिषकादि कृतयुग्मसमयनी स्थितिवाळा छे' इत्यादि प्रश्न.—जीवना काळा वर्णना पर्यायो.—जीवना आभिनिवोधिकपर्यायो कृतयुग्मादिर।विकय छे ?—-जीवोना आभिनिवोधिकादि ज्ञानना पर्यायो पृ० २१९.—जीवना केवछज्ञानना पर्यायो कृतयुग्मादि राविक्य छे !—जीवोना केवछज्ञानना पर्यायो.—जीवना मतिअज्ञानना पर्यायो.—शरीरना प्रकार.—जीवो सर्कप होय के निष्कंप होय?—देशबी के सर्वशी सकस्य होय? पृ० २२०.—परमाणु.—एक आकाश प्रदेशमां रहेला पुद्गलो.-एक समयनी स्थितिवाळा पुद्गलो.-एकगुण काळा पुद्गलो.-परमाणु अने द्विप्रदेशिक स्कन्धनुं अल्पबहुत्व. पृ० २२१.-द्विप्रदेशिक अने त्रिप्रदेशिक स्कन्धनुं अल्पबहुत्व.—दशप्रदेशिक अने संख्यातप्रदेशिकनु अल्पबहुत्व.—संख्यातप्रदेशिक स्कन्धनुं अस्यबहुत्व.—असंख्यातप्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशिक स्कन्धनुं अस्पबहुत्व.—परमाणु अने द्विप्रदेशिक स्कन्धनुं प्रदेशार्यक्पे अस्पबहुत्व.— असंख्यातप्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशिकनुं अल्पबहुत्व.—प्रदेशावगाढ पुद्गलोनुं इन्यरूपे अल्पबहुत्व पृ॰ २२२.—प्रदेशावगाढ पुद्गलोनुं प्रदेशरूपे अल्पबहुत्व.—धमयस्थितिवाळा पुद्गलोनुं अल्पबहुत्व.—वर्ण, गन्ध अने रक्षविद्यिष्ट पुद्गलोनुं अल्पबहुत्व.—स्पर्शविद्यिष्ट पुद्गलोनुं अल्पबहुत्व पृ ॰ २२३. परमाणुश्री आरंभी अनन्तप्रदेशिक स्कन्धोर्नु अल्पबहुत्व.—प्रदेशावगाढ पुद्गत्वोर्नु अल्पबहुत्व.—एक समयादि स्थितिवाळा पुद्ग-लोनुं अल्पबहुत्व पृ॰ २२४.—वर्णादिविशिष्ट पुद्गलोनुं अल्पबहुत्व.—परमाणुमौ ऋतयुग्मादि राशिनो समवतार.—परमाणुओ.—परमाणु प्रदेशरूपै इत्तयुग्मादिरूप छे १ पृ० २२५.—द्विप्रदेशिक स्कन्ध.—त्रिप्रदेशिक स्कन्ध —चतुःप्रदेशिकादि स्कन्ध.—संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध.—परमाणुओमां प्रदेशहरे कृतथुरमादि राशिओ, द्विप्रदेशिक स्कन्धो,-अप्रदेशिक स्कन्धो.-अतुष्प्रदेशिकादि स्कन्धो.- संख्यातप्रदेशिकादि स्कन्धो.-परमाणुनी प्रदेशावगाडता.—द्विप्रवेशिक.—त्रिप्रदेशिक.—चतुःप्रदेशिक.—गरमाणुपुद्गलो.—द्विप्रदेशिक स्कन्धो.—त्रिप्रदेशिक स्कन्धो.—चतुःप्रदेशिक स्कन्धो.— क्षनन्तप्रदेशिक परमाण्यादिनी कृतयुग्मादि समयनी स्थिति ए॰ २२७.—वर्णादि पर्यायोनी कृतयुग्मादिरूपता.—परमाणु सार्थके अनर्थ?—द्विप्रदे-विकादि स्कन्ध सार्ध के अनर्ध ? पृ॰ २२८,—परमाणु सर्कप होय के निर्कष होय ?—परमाणुनी सर्कपावस्थानो काळ.—परमाणुनी निर्कपतानी काळ.—सकंप परमाणुनुं अंतर पृ॰ २२९.—निष्कम्प परमाणुनुं अन्तर.—सकम्प अने निष्कम्प द्विप्रदेशिकादि स्कन्धनुं अन्तर.—निष्कम्प द्विप्रदेशि कादि स्कन्धनुं अन्तर.—सकम्प परमाणुक्षोनुं अन्तर.—सकम्प अने निष्कम्प परमाणुओनुं अल्पबहुत्व.—असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो.—सकम्प अने निष्कम्प अनन्सप्रदेशिक स्कन्धोनुं अल्पबहुत्व.—यकम्प अने निष्कम्प एवा परमाणु, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी अने अनन्तप्रदेशी स्कन्धोनुं अल्प-बहुत्व पृ०२३०.—परमाणुनो कम्प केवी रीते होय थे—हिप्रदेशिकादि स्कन्धनो कम्प केवी रीते होय थे—परमाणुओनो कम्प केवी रीते होय थे—हिप्रदेखि-कादि स्कन्धोनो कम्प केवी रीखे होय ? पृ० २३ १.—परमाणुना कंपननो काळ.—परमाणुना अर्कपननो काळ.—द्विप्रदेशिकादि स्कन्धनो देशकम्पनकाळ.— सर्वकंपनकाळ.—निष्कंपनकाळ.—परमाणुओनो कंपनकाळ.—निष्कंपनकाळ.—द्विप्रदेशिकादि स्कन्धोनो देशकंपनकाळ.—सर्वकंपनकाळ.—अकंपनकाळ.— सर्वोशे सकंप परमाणुनुं अन्तर.—निष्कंप परमाणुनुं अन्तर पृ॰ २३२.—देशाबी सकंप द्विप्रदेशिक स्कन्धनुं अन्तर.—सर्व सकंप द्विप्रदेशिक स्कन्धनुं **अन्तर.—निष्कंप द्विप्रदेशिकनुं** अन्तर.—सर्कंप परमाणुओनुं अन्तर.—अकम्प परमाणुओनुं अन्तर.—अशतः सर्कंप द्विप्रदेशिक स्कन्धोनुं अन्तर.— सर्वतः सकंप द्विप्रदेशिक स्कन्धोनुं अंतर.—निष्कंप द्विप्रदेशिक स्कन्धनुं अन्तरः—सकंप अने निष्कंप परमाणुओनुं अल्पबहुत्व.—सकंप अने निष्कंप द्विप्रदे-विक स्कन्धोनुं अल्पबहुत्व प्र॰ १३१.—अनन्तप्रदेशिकनुं अल्पबहुत्व.—द्रव्यार्थादिरूपे परमाणु वगेरेनुं अल्पबहुत्व प्र॰ २३४.—धर्मास्तिकायना मध्य प्रदेशो.—अधर्मास्तिकायना मध्यप्रदेशो.—आकाशना मध्यप्रदेशो.—जीवना मध्यप्रदेशो—जीवना मध्यप्रदेशोनी अवगाहना पृ० २३५.

# शतक २५-उदेशक ५ ए० २३५-२३९.

पर्योयना प्रकार पृ॰ २३५—आवलिकानुं खरूप—आनप्राणादिनुं खरूप—पुर्गलपरिवर्तनुं खरूप—आवलिकाओ, अनप्राणो, स्रोको अने पुरूल-परिवर्ती.--आनप्राण संस्त्याती आवलिका रूप छे १ पृ॰ २३६.--एम पत्योपम, पुर्गजपरिवर्त, आनप्राणो, पत्योपमो, पुर्गलपरिवर्ती संबन्धे प्रश्न. स्तोक <del>र्षख्यात आनप्राणक्य छे ? — सागरोपम, पुद्गलपरिवर्त, सागरोपमो अने पुद्गलपरिवर्ती संख्याता पल्योपमरूप छे ? अवसर्पिणी संख्याता सागरोपमरूप</del> 🖻 ? पुद्गलपरिवर्त अने पुद्गलपरिवर्तो संख्याती उत्सर्विणी.-अवसर्विणीरूप छे ?--अतीताद्वा, अनागताद्वा अने सर्वोद्धा संबंधे प्रश्न १० २३८--निगोदोना प्रकार.—निगोदजीदोना प्रकार.—नाम-भावना प्रकार पृ॰ २३९.

# द्यातक २५-उद्देशक ६ ए० २३९-२६१.

 अंशापनदार—निर्श्रन्थना प्रकार.—पुलाकना प्रकार.—बकुदाना प्रकार.—क्रुद्वीलना प्रकार.—प्रतिसेवनाक्षकीलना प्रकार पृष्ट २४०—क्षाय-**ङ्गीलमा प्रकार.—निर्प्रन्थना प्रकार.—कातकना प्रकार.—६ वेदद्वार—पुलाकने वेद—वकुश सर्वेद के वेदरहित** १ प्र०२४१.—कथाय क्रकील स**र्वेध** 

के अवेदी !---निर्प्रन्य वेद्यहित के वेदरहित !--- झातक सवेद के निर्वेद !--- ३ रागद्वार--पुलाक, बकुवा अने कुवील सराग 🕏 के बीतराग !---निर्प्रन्य सराग के बीतराग ?--४ कल्पद्वार--स्थित अने अस्थितकल्प.-पुळाक अने कल्प पृ॰ १४२.--वकुश अने कल्प--कवायकुद्धीक अने कल्प— निर्पन्थ अने कल्प.—५. चारित्रद्वार—पुलाक अने चारित्र.—६वायकुशील अने चारित्र.—६ प्रतिसेवनाद्वार—पु**ळाक अने प्रतिसेवना** पृ॰ १४१.—वकुश अने प्रतिसेवना.—कवायकुशील अने प्रतिसेवना.—७ ज्ञानद्वार—पुलाकने ज्ञान.—कवायकुशील अने निर्भरयोने ज्ञान— ज्ञातकने शान.—८ अतहार—पुखाकने श्रुत.—बक्नशने श्रुत ए० २४४—कषायकुशीलने श्रुत.—९ तीर्यहार—पुळाक अने तीर्य.—कषायकुशीक अने तीर्थ.—१० क्रिंगद्वार—पुलाक अने क्रिंग.—११ शरीरद्वार—पुलाकने शरीर.—वकुशने शरीर.—कथायकुशीसने शरीर—पृ०२४५, १२ केन्न-ह्वार---पुलाक अने क्षेत्र----वकुश अने क्षेत्र----१३ काळहार---पुलाकनो काळ पृ॰ २४६.---वकुशनो काळ.---१४ गतिद्वार---पुलाकनी गति पृ॰ २४७.—निर्प्रत्यनी गति.—झातकनी गति.—पुलाक कया देवपणे उपजे ?—कवायकुक्कील कया देवपणे सपजे ?—निर्प्रत्य कया देवपणे सपजे ? पुलाकनी देवलोकमां स्थिति पृ॰ २४८. — कषायकुशीलनी देवलोकमां स्थिति. — निर्मन्यनी देवलोकमां स्थिति — १४ संयमदार — पुलाकादिने संयमस्थानो . — निर्मन्थने संयमस्थानो —संयमस्थानोनुं अल्पबहुत्व.—पुलाकादिने चारित्रपर्याय.—१५ संनिकर्षद्वार.—पुलाकनो स्वस्थानसंनिकर्षे पृ० १४९.—पुलाकनो-वकुशनी अपेक्षाए परस्थानसंनिद्धपं.—वद्धशना पुलाकनी अपेक्षाए चारित्रपर्यायो.—वद्धशना खस्याननी अपेक्षाए चारित्रपर्यायो.—वद्धशना प्रतिसेवना-कुत्रीलनी अपेक्षाए चारित्रपर्यायो.—बकुवाना निर्घन्धनी अपेक्षाए चारित्रपर्यायो.— प्रतिसेवनाङ्गतील अने ऋषायकुत्रीलना चारित्रपर्यायो.—पुलाकनी भपेक्षाए निर्प्रन्थना चारित्रपर्यायो पृ॰ २५०---निर्प्रन्थना सजातीयनी अपेक्षाए चारित्रपर्यायो.--- झातकना पुलाकनी अपेक्षाए चारित्रपर्याय.---पुलाकादिनुं अल्पबहुत्व.—१६ योगद्वार.—पुलाक अने योग.—झातक अने योग.—१७ उपयोगद्वार—पुलाक अने उपयोग पृ॰ २५१.—१८ कषायद्वार.—पुलाकने कषायो.—कवायकुक्षीलने कषायो.—निर्धन्थने कषाय.—१९ छैदयाद्वार—पुलाकने छैदया.—कवायकुक्षीलने छैदया.—निर्धन्थने छेदया.—स्नातकने छेदया पृ॰ २५२.—२॰ परिणामद्वार—पुलाक अने परिणाम.—निर्धन्थ अने परिणाम.—पुलाकना परिणामनो काळ.—निर्धन्यना परिणामनो काळ ए॰ २५३ — २१ बन्धद्वार — पुलाकने कर्मप्रकृतिओनो बन्ध. — बकुशने कर्मप्रकृतिओनो बन्ध. — कथायकुषीलने प्रकृतिओनो बन्ध. — निर्मन्यने कर्मप्रकृतिओनो वंघ — ल्लातकने कर्मप्रकृतिओनो वंध.—२२ वेदद्वार—धुलाकने कर्मनुं वेदन पृ० २५४.—निर्मन्यने कर्मवेदन.—ज्ञातकने कर्मवेदन.—२३ उदीरणाद्वार—पुलाकने उदीरणा.—बकुशने उदीरणा.—कषायक्षभीकने उदीरणा.—कातकने उदीरणा.—२४ उपसंपद्–हानद्वार—पुला-कनी उपसंपद्–हान.—बकुशनी उपसंपद् अने हान पृ॰ २५५.—प्रतिसेवनाकुशीलनी उपसंपद् अने हान.—कवाय कुश्रीलनी उपसंपद् अने हान.— निर्मन्य शुं छोडे अने शुं पामे ?—स्नातक शुं छोडे अने शुं पामे ?—२५ संज्ञाद्वार—पुलाक अने संज्ञा.—वकुश अने संज्ञा.—२६ अहारद्वार—पुलाक अने आहार.—आतक अने आहार.—२० भवद्वार—पुलाकने भव पृ० २५६—बकुशने भव.—आतव.ने भव.—२८ आकर्षद्वार—पुलाकने आकर्ष.— वकुदाने आकर्ष.—निर्मन्थने आकर्ष.—आतकने आकर्ष.—पुलाकने अनेक भवमां आकर्ष.—वकुदाने अनेक भवमां आकर्ष.—निर्मन्थने आकर्ष पृ• २५७.—झातकने आकर्ष.—२९ काळद्वार—पुलाकनो काळ.—बकुशनो काळ.—निप्रेन्थनो काळ.—झातकनो काळ—पुलाकोनो काळ.—बकुशोनो काळ.—३० अंतरहार—युलाकादिनुं अन्तर.— स्नातकनुं अन्तर ए० २५८ पुलाकोनुं अन्तर.—बकुशोनुं अंतर.—निर्मेषोनु अन्तर.—३१ समुद्धातद्वार— पुलाकने समुद्रात.—बकुशने समुद्रात.—कषायकृशीलने समुद्रातो—निर्घरथने समुद्रातो.—ज्ञातकने समुद्रात.—३२ क्षेत्रद्रार—पुलाकनुं क्षेत्र.—ज्ञातकनुं क्षेत्र पृ॰ २५९.—३३ स्पर्शनाद्वार—३४ भावद्वार—पुलाकने भाव.—निर्शन्थने भाव.—ज्ञातकने भाव—३५ परिमाणद्वार—पुलाकोनी संख्या.— वकुशोनी संस्था.—कवायकुशीलोनी संस्था.—निर्धन्थोनी संस्था ए० २६०—झातकोनी संस्था.—३६ पुलाकादितुं अल्पवहुरव ए० २६१.

# शतक २५ उदेशक ७ ए० २६१-२८२.

९ प्रकापनद्वार—संयतना प्रकार.—सामायिकसंयतना प्रकार.—छेदोपस्थापनीयसंयतना प्रकार पृ० २६१.—परिहारविद्युद्धिकना प्रकार.—सृक्**मसं**प-रायना प्रकार.—यथाख्यातसंयतना प्रकार.—सामायिकसंयतादिनुं खरूप.—२ वेदद्वार—सामायिकसंयतने वेद.—३ रागद्वार—सामायिकसंयत अने राग—४ कल्पहार—सामायिकसंयतने कल्प —छेदोपस्थापनीमने कल्प पृ० २६२.—स।मायिक अने पुलकादि.—परिहारविश्वद्धि अने पुलाकादि.—यया-ख्यात अने पुलाकादि,—५ प्रतिसेवाद्वार—सामायिक सेयत अने प्रतिसेवक.—परिहारविद्युद्धिक अने प्रतिसेवक—६ ज्ञानद्वार,—७ **श्रुतद्वार.—सामायिक**-संयतने श्रुत ए॰ २६३.—परिहारविशुद्धिकने श्रुत.—यथाख्यातने श्रुत.—८ तीर्थद्वार.—९ किंगद्वार.—९० **वारीरद्वार.—११ क्षेत्रद्वार—१२ काळद्वार** प्ट॰ २६४.—१३ गतिद्वार.—सामायिकसंयतनी स्थिति.—परिहारनिद्यदिकनी स्थिति.—१४ संयमस्थानद्वार—सामायिकसंयतना संयमस्थान प्ट॰ २६५. सृक्ष्मसंवरायना संयमस्थान.—यथाख्यातना संयमस्थान.—सयमस्थानोतुं अल्पबहुत्व.—१५ संनिकर्षद्वार—सामायिकसंयतना चारित्रपर्यवो.— मामायिकसंयतर्तु सजातीय पर्योगनी अपेक्षाए अल्पबहुत्व — सामायिक अने छेदोपस्थापनीयर्तु पर्यायापेक्षाए अल्पबहुत्व.—सामायिकना सूक्ससंपरायनी अपेक्षाए पर्यायो.—स्क्मसंपरायना सामायिकनी अपेक्षाए पर्यायो प्र॰ २६६.—सामाथिकसंयतादिनुं अल्पबहुत्व.—१६ योगद्वार.—१७ डपयोगद्वार,— १८ कषायद्वार.—१९ छेश्याद्वार.—२० परिणामहार.—परिणामनो काळ.—२१ चन्धद्वार.—२२ वेदनद्वार.—२३ उ**धीरणाद्वार.—२४ उपसंपद्-हान**-द्वार—सामायिकसंयत हुं छोडे अने हुं स्वीकारे.—छेदोपस्थापनीय हुं छोडे अने हुं प्राप्त करें १ पृ० २६९.—२५ संज्ञाद्वार.—२६ आहारकद्वार.—३७ भवद्वार.—२८ आकर्षद्वार—परिहारविद्याद्वकने आकर्ष पृण २७०.—सूक्ष्मसपराय संयतने आकर्ष.—यथाख्यात संयतने आकर्ष.—सामाविक संयतने अनेक भवमां आकर्ष.—२९ काळद्वार.—सामायिकादिसंयतीनी काळ पृ० २०१.—३० अन्तरद्वार.—सामायिकादिसंयतनुं अन्तर.—सामायिकादि संयतीनुं अन्तर.--३१ समुद्धातद्वार पृ०२७२.--३२ क्षेत्रद्वार --३३ स्पर्शनाद्वार--३४ भावद्वार.--३५ परिमाणद्वार.--३६ सामायिकसंयतादिर्तु अल्पवहुत्व पृ॰ २७३.—प्रतिसेबनाना प्रकार.—आलोचनाना दरा दोष.—आलोचना करवा योग्य साधु पृ॰ २७४.—**आलोचना आपनारना गुण.—सामाचारीना दस-**प्रकार.--प्रायिशक्तना दस प्रकार.--तपना प्रकार पृष्ट २७५. अनदानना प्रकार.--इत्वरिक अनदानना प्रकार.--पाइपोप-गमनना प्रकार.—भक्तप्रत्याख्यानना प्रकार.—ऊनोदरिकाना प्रकार.—द्रव्यऊनोदरिकाना प्रकार.—उपकरणद्रव्यऊनोदरिकाना प्रकार पृ॰ २०६.—भक्त-पानद्रव्यजनोविदिकानुं खरूप--भावजनोदिदिकाना प्रकार.--भिक्षाचयोना प्रकार.---रसपरित्यागना प्रकार.---कायक्षेत्राना प्रकार.---प्रतिसंजीनताना प्रकार.---इन्द्रियप्रतिसंहीनताना प्रकार पृ॰ २७७.—कषायप्रतिसंहीनताना प्रकार.—योगसङीनताना प्रकार.—कायसंहीनताना प्रकार.—अभ्यन्तर तपना प्रकार.— प्रायिक्तना प्रकार—विनयना प्रकार.—ज्ञानविनयना प्रकार पृ० २०८.—दर्शनविनयना प्रकार.—ग्रुश्रृ्वाविनयना प्रकार.—चारित्रविनयना प्रकार.— मनविनयना प्रकार.—प्रकास मनविनयना प्रकार.—अप्रवास्त विनयना प्रकार.—वचनविनयना प्रकार पृ॰ २७९. प्र**वास्त वचनविनयना प्रकार.—** अप्रशस्त वचनविनयना प्रकार,—प्रशस्त कायविनयना प्रकार.—अप्रशस्त कायविनयना प्रकार.—लोकोपचारविनयना प्रकार.—वैयावृत्यना प्रकार.— खाध्यायना प्रकार पृ० २८०—ध्यानना प्रकार.—आर्तध्यानना प्रकार.—आर्तध्यानना लक्षण.—रीद्रच्यानना प्रकार.—रीद्रच्यानना कक्षण.—व्यर्भध्यानना

प्रकार.—वर्मध्यानना लक्षण.—धर्मध्यानना बालंबन.—धर्मध्याननी चार भावना.—शुक्रध्यानना प्रकार ए० २८१.—शुक्रध्यानना चार लक्षण.—शुक्रध्यानना चार लक्षण.—शुक्रध्याननी चार भावना.—शुक्तध्याननी चार भावना.—शुक्तध्याननी चार भावना.—शुक्तध्याननी चार भावना.—शुक्तध्याननी प्रकार.—संसार-म्बुत्सर्वना प्रकार.—कर्मभ्युत्सर्वना प्रकार ए० २८२.

# शतक २५ उद्देशक ८ ए॰ २८२-२८३.

नारकोनी उत्पत्ति पृ॰ २८२—नारकोनी गति.—परभवायुषना बंधतुं कारण.—ते जीवोनी गतिनुं कारण.—उत्पत्तिनुं कारण स्त्रीय कर्म के परकीय कर्म.—अस्पत्तिनुं कारण स्त्रप्रयोग के परप्रयोग ?—असुरकुमारनी उत्पत्ति केम माय ? पृ॰ २८३.

#### शतक २५ उद्देशक ९-१२ ए० २८४.

मविधिक नैरियकनी उत्पत्ति.—अभविधिक नैरियकनी उत्पत्ति.—सम्यग्दृष्टि नैरियकनी उत्पत्ति.—मिण्यादृष्टि नैरियको केम उपजे १ पृ० २८४.

#### शतक २६ उद्देशक १ ए० २८५.

१ जीबद्वार—सामान्य जीवने भाश्रयी पापकर्मनी बन्धवक्तव्यता.—२ लेक्साद्वार—सलेक्य जीवने भाश्रयी बन्ध ए० २८५.—लेक्सारहित जीवने बन्ध,—३ पाह्विकद्वार—कृष्णपाह्विकने भाश्रयी बन्ध.—धुक्रपाद्विकने भाश्रयी बन्ध.—४ दृष्टिद्वार.—५-६ ज्ञान अने अज्ञान.—७ संशाद्वार. ए० २८६.—८ वेदद्वार.—५ क्यायद्वार.—१०-११—योग अने उपयोगद्वार.—नैरियकादि दंडकने आध्यी पापकर्मनी बन्धक्रव्यता.—पृ० २८७.—ज्ञाना-वरणीयनो बन्ध,—वेदनीयकर्मबन्ध ए० २८८.—नैरियकादिने आश्रयी वेदनीय कर्मनो बन्ध.—मोह्नीयकर्मबन्ध,—आयुषकर्मबन्ध ए० २८९.—नैरियक्ने आश्रयी आयुषकर्मनो बन्ध ए० २९०.

शतक २६ उदेशक २ ए० २९०--२९१.

अनन्तरोपपद्म नैरियकने पापकमैनो बन्ध पृ० २९०.—आयुषनो बन्ध,--पृ० २९१.

शतक २६ उद्देशक ३ ए० २९१.

परंपरोपपच नैर्यिकने पापकमैनो बन्ध पृ० २९१.

शतक २६ उद्देशक ४ पृ० २९२.

अनन्तरावगाड नैरयिकने आश्रयी कमेंबन्ध ए० २९२.

शतक २६ उद्देशक ५ ए० २९२.

परंपरावगाळ नैर्यिकने आश्रयी कमंबन्ध ए० २९०.

शतक २६ उद्देशक ६ ए॰ २९२.

अनन्तराहारक नैर्यिकने कमैंबन्ध. पृ० २९२.

शतक २६ उद्देशक ७ ए॰ २९२.

परेपराहारक नैर्विकने कमैबन्ध्र. पृ० २९२.

शतक २६ उद्देशक ८ पृ॰ २९३.

अनन्तरपर्याप्त नैरियकने कर्मबन्ध पृष्ट २५३.

शतक २६ उद्देशक ९ ए० २९३.

परंपरपर्याप्त नैरियक्ते कर्मबन्ध पृ० २९३.

शतक २६ उद्देशक १० ए० २९३.

चरम नैरियकने कर्मबन्ध ए० २९३.

#### शतक २६ उद्देशक ११ पृ० २९३-२९५.

अवरम नैरियकने कर्मबन्ध ए॰ २९३.—अवरम मनुष्यने बन्ध.—छेऱ्यासहित अवरम मनुष्यने बन्ध.—अवरम नैरियकने ज्ञानावरणीयनो बन्ध.—अवरम नैरियकने मोहनीय कर्मबन्ध.—अवरम नैरियकने आयुषबन्ध ए॰ २९४.

शतक २७ ए० २९६.

जीवे पापकमं कर्युं इतुं, करे छे अने करवो-इत्यादि संबंधे प्रश्न पु॰ २९६.

शतक २८ उद्देशक १ पृ० २९७.

कई गतिमां पापकर्मेनुं समर्जन थाय ?--छेत्या--नैरियकोने पापकर्मेनुं समर्जन पृ० २९७.

शतक २८ उद्देशक २ पृ• २९८.

अनन्तरोपपच नैरियकोने पापकर्मनुं समर्जन पृ० २९८.

शतक २८ उद्देशको ३-११ पृ॰ २९८.

**एक ऋमगी भहीं पण आ**ठ उद्देशकतुं कथन पृ॰ २९८.

शतक २९ उद्देशक १ पृ० २९९-३००.

पापक्रमैना वेदननो प्रारंभ अने अन्त,--तेम कहेवानुं कारण ए० २९९.---छैर्याने आश्रमी प्रस्थापन अने निष्ठापन ए० ३००.

#### शतक २९ उद्देशक २ पृ॰ ३००.

अनन्तरोपपक्ष नैर्यिकने आश्रयी समक प्रस्थापनादि.--तेनो हेतु.--- सकेइय नैर्यायकने आश्रयी समक प्रस्थापनादि पृ॰ ३००.

शतक २९ उद्देशक ३-११ ए॰ ३०१.

षम्भियातकमां कहेला कमे भहीं पण नव उद्देशकोतुं कथन पृ- ३०१.

#### शतक ३० उद्देशक १ पृ० ३०२-३०८.

समवसरण.—जीवोने कियावादित्वादि.—सकेश्य जीवोने कियावादित्वादि पृ० ३०२.—केश्यारहित जीवोने कियावादित्वादि.—कृष्णपाक्षिकने कियावादित्वादि.—मिश्रहिने कियावादित्वादि.—नैरिश्कोने कियावादित्वादि.—पृथिवीकायिकोने कियावादित्वादि पृ० ३०२.—कियावादीने आयुषनो बन्ध ए० ३०४.—तैजोकेश्यावाद्या कियावादीने आयुषनो बन्ध ए० ३०४.—तैजोकेश्यावाद्या कियावादीने आयुषनो बन्ध ए० ३०४.—तैजोकेश्यावाद्या कियावादीने आयुषनो बन्ध ए० ३०४.—तेजोकेश्यावाद्या कियावादीने आयुषनो बन्ध ए० ३०४.—तेजोकेश्यावाद्या कियावादीने आयुषनो बन्ध —सम्यग्रहित कियावादीने आयुषनो बन्ध —कृष्ण सिक्ष अकियावादीने आयुषनो बन्ध —सम्यग्रहि कियावादीने आयुषनो बन्ध —सकेश्य कियावादी नेरियकोने आयुषनो बन्ध ए० ३०५.—कियावादी नेरियकोने आयुषनो बन्ध —सकेश्य कियावादी नेरियकोने आयुषनो बन्ध —कृष्णकेश्यावादी नेरियकोने आयुषनो बन्ध ए० ३०५.—कियावादी पंचिन्दिय तिर्यचने आयुषनो बन्ध —कृष्णकेश्यावादी कियावादी पंचिन्दिय तिर्यचने आयुषनो बन्ध —कृष्णकेश्यावादी कियावादी पंचिन्दिय तिर्यचने आयुषनो बन्ध —कृष्णकेश्यावादी अव्य के अभव्य १ ए० ३०५.

# श्चातक ३० उदेशक २ पृ० ३०९.

अनन्तरोपपच नैर्यिकोने क्रियाव।दित्वादि.—क्रियाथ।दी अनन्तरोपपच नैर्यिकोने आयुष्यन्थ.—अनन्तरोपपच क्रियावादी नैर्यिको अन्य के अमन्य १ पृ० ३०९.

शतक ३० उद्देशक ३ ए० ३१०.

परेपरोपपण नैर्यिको हुं कियावादी छै इत्यादि प्रश्न पृ० ३१०.

शतक ३० उदेशक ४-११ ए० ३१०.

वंधिशतकमां कहेला कमप्रमाणे आठ उद्देशकोनुं कथन. पृ॰ ३१०.

शतक ३१. उदेशक १ ए॰ ३११.-३१२.

ध्रद्रयुग्म.—चार ध्रुद्र युग्मो कहेवानो हेतु.—नैरियकोनो उपपात—उपपातसंख्या पृ० ३११.—उपपातनो प्रकार.—रझप्रभा नैरियकोनो उपपात.— ध्रुद्रश्योजराधिप्रमाण नैरियकोनो उपपात.—उपपातसंख्या.—ध्रुद्रदापर्युग्मप्रमित नैरियकोनो उपपात.—श्रुद्रकल्योजप्रमाण नैरियकोनो उपपात पृ० ३१२.

शतक ३१ उदेशक २ ए० ३१३.

ध्रत्र कृतयुग्मप्रमाण कृष्णलेज्यावाळा नैरयिकोनो उपपात.—कृष्ण० ध्रुद्रकल्योज प्रमाण नैर्यिकोनो उपपात.—कृष्ण० ध्रुद्रकल्योजप्रमाण नैर्यिकोनो उपपात पृ०३१३.

शतक ३१ उद्देशक ३ पृ० ३१३.

नील ॰ श्रुद्र कृतयुग्म नैरयिकोनो उपपात ए॰ ३११.

शतक ३१ उदेशक ४ ए॰ ३१४.

कापोत • खुद्र कृतयुग्म नैरयिको क्यांबी आवी उपजे १ पृ॰ ३१४.

शतक ३१ उद्देशक ५ ए॰ ३१४.

भव्य क्षुत्र कृत्युग्म नैर्जिकोनो उपपात पृ॰ ३१४.

शतक ३१ उद्देशक ६ ए० ३१४.

कृष्ण० भव्य कृत्युग्म नैरमिकोनो उपपात पृ० ६१४.

शतक ३१ उद्देशक ७-२८ ए॰ ३१५.

नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा नैरियको संबंधे चारे युग्मोने आश्रमी कथन—अभवतिद्विक सम्यग्दष्टि, मिध्याद्दि, कृष्णपाक्षिक अने क्या-पाक्षिक संबंधे चार चार उद्देशकोनुं कथन.

शतक ३२ उदेशको १-२८ ए० ३१६.

ध्रद्र कृतयुग्म राशिक्ष नैरयिकोनी उद्दर्तना.—एक समये केटला उद्दर्ते अने केवी रीते उद्दर्ते !—कृतयुग्मक्ष रक्षप्रभा नैरयिकोनी उद्दर्तना प्र• ३१६,

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक १ ए॰ ३१७.

एकेन्द्रियना प्रकार.—पृथिवीकायना प्रकार.—सूक्ष्म पृथिवीकायना प्रकार.—बादर पृथिकीकायिकना प्रकार.—कमैप्रकृतिको.—कमैप्रकृतिकोनो बन्ध.—कमैप्रकृतिकोनुं वेदन.—अनन्तरोपपण एकेन्द्रियना प्रकार.—अनन्तरोपपण एकेन्द्रियने कमै प्रकृतिको प्र• ११८.—अनन्तरोपपण एकेन्द्रियने कमैप्रकृतिकोनो बन्ध.—अनन्तरोपपण एकेन्द्रियने कमैप्रकृतिकोनुं वेदन.—परंपरोपपण एकेन्द्रियने कमैप्रकृतिको प्र• ३१९.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक २ ए० ३२०.

कृष्णकेर्यावाळा एकेन्द्रियोना प्रकार.—पृथिवीकाविकोला प्रकार.—कृष्णकेर्यावाळा सूक्ष्म पृथिवीकाविकोला प्रकार.—अनन्तरोपपण कृष्णकेर्यावाळा एकेन्द्रियोना प्रकार.—परंपरोपपण कृष्णकेर्यावाळा एकेन्द्रियोना प्रकार.—परंपरोपपण कृष्णकेर्यावाळा एकेन्द्रियाना प्रकार प

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक ३ ए॰ १२१.

मी<del>डडेर्</del>याबाळा एकेन्द्रियोगा प्रकार बगेरे पृ॰ ३२१.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक ४ ए॰ ३२१.

कापोत्तकेश्यावाळा एकेन्द्रियोना प्रकार वर्गरे--ए॰ ३२७.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक ५ ए॰ ३२१.

भवसिद्धिक एकेन्द्रियमा प्रकार पृ॰ १९१.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक ६ ए० ३२१.

कृष्णकेश्याबाळा भवसिक्षिक एकेन्द्रियोना प्रकार पृ॰ ३२१.—अनन्तरोपपच कृष्ण० भवसिक्षिक एकेन्द्रियना प्रकार पृ॰ ३२२.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक ७ ए॰ ३२२.

नीलकेश्यावाळा भवसिद्धिक एकेन्द्रियोना प्रकार वगेरे ए॰ ३२२.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक ८ ए॰ ३२३.

कापोतलेश्यावाळा मवसिद्धिक एकेन्द्रियोना प्रकार वनेरे. प्र॰ १२१.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक ९ ए० ३२३.

अभवसिद्धिक एकेन्द्रियोना प्रकार वगेरै ए० ३२३.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक १० ए० ३२३.

कृष्णकेन्याबाळा अभवसिद्धिक एकेन्द्रियोना प्रकाशिद संबंधे प्रश्न. ए॰ ३२३.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक ११ ए० ३२३.

नीललेश्यावाळा अभवसिद्धिक एकेन्द्रियोना प्रकारादि संबन्धे प्रश्न.

शतक ३३ एकेन्द्रियशतक १२ ए॰ ३२३.

कापोतलेश्याबाळा अभवसिदिक एकेन्द्रियना प्रकारादि पृ॰ ३२३.

शतक ३४ एकेन्द्रियशतक १ उद्देशक १ ए॰ ३२४-३३२.

एकेन्द्रियना प्रकार.—अपर्याप्त सूक्ष्म पृणिवीकायिकनी गति.—तेमां एक, वे अने त्रण समय धवानुं कारण ए॰ ३२४.—अपर्याप्त सूक्ष्म पृणिवीकायिकनी निर्मात पर्याप्त सूक्ष्म पृणिवीकायिकनी विमह्गति.—अपर्याप्त सूक्ष्म पृणिवीकायिकनी विमह्गति ए॰ ३२५.—अपर्याप्त बादर तेजकायिकनी उपपात —पर्याप्त बादर वनस्तिकायिकने उत्पाद.—अपर्याप्त सूक्ष्म पृणिवीकायिकने उत्पाद ए॰ ३२५.—अपर्याप्त सूक्ष्म पृणिवीकायिकने उत्पाद ए॰ ३२५.—अपर्याप्त सूक्ष्म पृणिवीकायिकनी विमह्न गति.—त्रण समयनी के चार समयनी विमह्गतिनुं कारण ए॰ ३२७.—अपर्याप्त सूक्ष्म पृणिवीकायिकनी विमह्न गति.—अपर्याप्त बादर तेजकायिकनी पर्याप्त सूक्ष्म पृणिवीकायिकनी विमह्न समयनी गति होय १.—अपर्याप्त बादर तेजकायिकनी विमह्न तेजकायिकनी विमह्न विमह्न प्रविचिकायिकनी कर्षायकनी विमह्न प्रविचिकायिकनी विमह्न प्रविचिकायिकनी विमह्न प्रविचिकायिकनी विमह्म प्रविच्या विमह्म प्रविचिकायिकनी विमह्म प्रविचिकायिकनी कर्म प्रविचिकायिकनी कर्मवन्ध,—एकेन्द्रियने क्रम विम्हम प्रविचिकायिकने कर्मवन्ध,—एकेन्द्रियने क्रम विद्याप्त कर्म करे १ ए॰ ३३२

शतक ३४ एकेन्द्रियशतक १ उद्देशक २ पृ॰ ३३३.

अनम्तरोपपच एकेन्द्रियना प्रकार.—अनन्तरोपपच बाहर प्रविवीकाविकना स्थानो —अनन्तरोपपच एकेन्द्रियने इमैप्रकृतिओ.—तेओ क्यांची आवीजे उपजे छे ?—अनन्तरोपपच एकेन्द्रियने समुद्धातो पृ॰ ३३३.—कर्मबंधनी विशेषता पृ॰ ३३४.

शतक ३४ एकेन्द्रियशतक १ उद्देशक ३ ए० ३३४.

परंपरोपपच एकेन्द्रियोना प्रकार.—परंपरोपपच एकेन्द्रियनी विश्रह्रगति पृ० ३३४.

शतक ३४ एकेन्द्रियशतक १ उद्देशक ४-११ पृ॰ ३३५.

ए रीते बाकीना आठ उद्देशकोनुं यावत् अवस्म सुधी कथन पृ॰ १२५.

शतक ३४ एकेन्द्रियशतक २ ए॰ ३३५.

कृष्णकेरयावाळा एकेन्द्रियोना प्रकार.—कृष्णकेरयावाळा एकेन्द्रियोनो विष्रहगतिबी उपपात.—कृष्णकेरवावाळा एकेन्द्रियना स्थानो ए० १३५.

शतक ३४ एकेन्द्रियशतक ३-५ ए० ३३६.

नीस्रकेदयाबाळा, कापोत्तकेदयाबाळा अने अवसिद्धिक एकेन्द्रियो संबन्धे अनुक्रमे श्रीजा, चोषा अने पांचमा शतकतुं कथन पृ॰ ३३६.

शतक ३४ एकेन्द्रियशतक ६ ए॰ ३३६.

कृष्णलेखावाळा भवसिद्धिक एकेन्द्रियोना प्रकार.—अनन्तरोपपत्र कृष्ण० भवसिद्धिक एकेन्द्रियोना प्रकार.—परंपरोपपत्र कृष्ण० भव० एकेन्द्रियना प्रकार.—तेओनी विष्रहराती.—पृथिवीकायिकना स्थानो.

# शतक ३४ एकेन्द्रियशतकं ७-१२ पृ० ३३७.

नीककेश्याबाळा अने कापोतकेश्याबाळा अवसिद्धिक एकेन्द्रियो सबन्धे सातमा अने आठमा शतकतुं कथन. ए रीते अभवसिद्धिको संबंधे पण चार शतकोनुं कथन पृ- ३३७.

शतक ३५ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक १ उद्देशक १ ए० ३३८-३४२.

सहायुग्मना प्रकार.—सीळ सहायुग्म कहेवानुं कारण पृ० ३३८.—कृतयुग्मकृतयुग्म राधिक्य एकेन्द्रियोनो जपपात.—एक समयमा उपपातसंख्या —ते जीवो केटला काळे खाली थाय १ पृ० ३३९. ज्ञानावरणीयना वन्धक.—वेदक.—सातावेदक अने असातावदेक.—तेओने केरया.—तेओना वारीरोना वर्षाद.—अनुवन्धकाळ पृ० ३४०—संबंधादि.—सर्व जीवोनो कृतयुग्मकृतयुग्मराधिक्य एकेन्द्रियणे जत्पाद.—कृतयुग्मत्रयोजराधिक्य एकेन्द्रियोनो जत्पाद.—कृतयुग्मद्रापरप्रमाण एकेन्द्रियोनो जत्पाद.—उत्पादसंख्या.—कृतयुग्मद्रापरप्रमाण एकेन्द्रियोनो जत्पाद.—कृतयुग्मकृतयुग्मप्रमाण एकेन्द्रियोनो जत्पाद. पृक्षित्रयोनो जत्पाद. पृक्षित्रयोनो जत्पाद. पृक्षित्रयोनो जत्पाद. पृक्षित्रयोनो जत्पाद. प्रकारित्रयोनो जत्पाद.

शतक ३५ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक १ उद्देशक २ ए० ३४२.

प्रवमसमयोत्पन कृतपुरमकृतयुरमक्प एकेन्द्रियोनो उत्पाद पृ॰ ३४२.

शतक ३५ ३-११ उद्देशको ए० ३४३-३४४

अप्रथमसमयोत्पन्न कृतयुग्मकृतयुग्मकृप एकेन्द्रियोनो उत्पाद.—वरमसमय. कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रियोनो उत्पाद.—अवरमसमय कृतयुग्मकप एकेन्द्रियोनो उत्पाद.—पृ०. ३४३

शतक ३५ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक २ ए० ३४४-३४५.

इच्चित्रयां कतयुरमङ्कतयुरमङ्ग एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उपजे छे थे.—कृष्ण० कृतयुग्म २ रूप एकेन्द्रियोनी स्थिति.—प्रथम समयोत्पन्न पूर्वीक एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उपजे थे पृ० ३४५.

शतक ३५ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक ३ पृ० ३४६

मीसकेष्यावाळा पूर्वीक एकेन्द्रियो संबंधे कथन.

शतक ३५ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक ४ पृ० ३४६.

कापोतकेश्याबाळा पूर्वोक्त एकेन्द्रिय संबंधे कथन.

शतक ३५ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक ५ ए० ३४५-३४६.

भवसिदिक कृतवुग्म २ एकेन्द्रियो क्यांबी आवी उपजे ?

शतक ३५ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक ६ ए० ३४६.

कृष्णकेश्यादाळा पूर्वोत्त एकेन्द्रियो क्यांची आवी उपजे ?

शतक ३५ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक ७ पृ० ३४६.

नीक छैर्यावाळा भवसिद्धिक एके निद्रयो संबन्धे कथन.

शतक ३५ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक ८ ए० ३४६.

कापोत्रकेरयावाळा भवसिद्धिक एकेन्द्रियो संबन्धे कथन.

शतक ३६ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक ९-१२ पृ ३४६

अभवसिद्धिक एकेन्द्रियो संबंधे चार शतको ए० ३४६.

शतक ३६ बेइन्द्रियमहायुग्मशतक १ उदेशक १ ए० ३४७.

इत्रयुग्म २ कप वैद्यन्तियोनो क्यांची आवी उत्पाद थाय ?—वेद्दिहयोनो अनुबन्धकाळ.—प्रथम समयोत्पच कृतयुग्म २ वेद्दिहियोनो क्यांची आवी उत्पाद जाय ? पृ० ३४७.

शतक ३६ बेइन्द्रियमहायुग्मशतक २-८ पृ॰ ३४८.

कृष्णकेत्र्यावाळा कृत्युग्म २ प्रमाण बेइन्द्रिय जीवो क्योंबी आवी उत्पन्न थाय ? पृ॰ ३४८.

शतक ३६ बेइन्द्रियमहायुग्मशतक ३ ए० ३४८.

नीलकेर्यावाळा बेहन्दिय सबन्धे कथन.—

शतक ३६ बेइन्द्रियमहायुग्मशतक ४ ए० ३४८.

कापीतछेश्यावाळा बैइन्द्रियसंबंधे कथन ए० ३४८.

शतक ३६ बेइन्द्रियमहायुग्मशतक ५-८ ए० ३४९.

भवसिबिक इतयुग्मकृतयुग्मराधिकप वेइन्द्रियो क्यांची आवी उत्पन्न थाय-इलादि प्रश्न.

शतक ३६ बेइन्द्रियमहायुग्मशतक ९-१२ पृ० ३४९.

अभवसिद्धिक पूर्वोक्त एकेन्द्रियो संबन्धे चार धातकोतुं कथन ए० ३४९.

शतक ३७ तेइन्द्रियमहायुग्मशतक ए॰ ३५०.

कृतपुरम कृतपुरमहप तेइन्द्रियोनी क्यांबी आबी उत्पाद बाय? पृ॰ ३५०.

शतक ३८ चउरिन्द्रियमहायुग्मशतक ए॰ ३५१.

चहरिंद्रियो संबन्धे बार शतकोतुं कथन पृ० ३५१.

शतक ३९ असंज्ञी पंचेन्द्रियमहायुग्मशतक ए॰ ३५२.

कृतयुग्मकृतयुग्नरूप अवंत्री पंचेन्द्रियो क्यांबी शावी उपजे १ ए० ३५२.

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक १ ए० ३५३.

कृतयुग्य कृतयुग्यरूप संज्ञी पंचेन्द्रियो क्यांबी आवी उपजे ! तेओ कह संज्ञान। उपयोगवाळा के ? प्रथमसमयोत्पच कृतयुग्यकृतयुग्यरूप संज्ञी पंचेन्द्रियो कर्मन। बन्बक क्यांबी आवी उपजे ? पृ. ३५४.

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक २ ए० ३५५.

कृष्णिकृत्यावाळा कृतः १ सं व पंचिनिह्यो क्यांबी आवीने उपजे !--प्रथमसमयोत्पन्न संज्ञी पंचिनिह्यो क्यांबी जावीने उपजे ! पृ० ३५५.

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक ३ पृ० ३५६.

नीलकेश्यावाळा इत्तवुग्म २ संज्ञी पंचेन्द्रियो क्यांथी आवीने वयजे १ पृ० ३५६.

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक ४ ए० ३५६.

कापोतकेश्यावाळा कृतयुगमकृतयुग्म राविक्प संज्ञी पंचेन्द्रियनो क्यांबी आवी उत्पाद बाय !

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक ५ ए० ३५६.

तेजोकेन्यावाळा संज्ञी पंचेन्द्रियको क्यांबी आवीने उत्पाद बाय !

श्चातक ४॰ संज्ञी पं॰ महायुग्मशतक ६ ए॰ ३५६.

पद्मकेद्यापाळा संशी यंचेन्द्रियमी क्यांची आवी उत्पाद याय ! पृ॰ ३५६.

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक ७ ए० ३५७.

श्रुक्रलेश्यावाळा कृतयुग्म २ सं ॰ पंचेन्द्रियनो क्यांश्री आवी उत्पाद याय ?

शतक ४० संज्ञी पं॰ महायुग्मशतक ८ ए॰ ३५७.

कृतगुरम २ सं॰ पंचेन्द्रिय भवसिद्धिकोनो क्यांथी आवी उत्पाद पाय !

शतक ४० संज्ञी पं॰ महायुग्मशतक ९ ए॰ ३५७.

कृष्ण- भवसिद्धिक सं- पंचेन्द्रियनो क्यांथी आवी उत्पाद याय !

शतक ४० संज्ञी पंचेन्द्रियमहायुग्म शतक १० पृ० ३५७.

नीलकेश्यावाळा इत्तयुग्म २ भवसिद्धिक संशी पंचेन्द्रियनो क्यांशी आषी उत्पाद थाय ? पृ० ३५७.

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक ११-१४ ए० ३५८.

संज्ञी पंचेन्द्रियों संबंधे सात औधिक शतको कला छ ए रीते अवसिद्धिक संज्ञी पंचेन्द्रिय संबंधे पूर्वोक्त सात शतकोतुं कथन पृ० ३५८.

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक १६ ए० ३५८.

इत २ अभवसिद्धिक सं व पंचेन्द्रियनो क्यांबी आवी उत्पाद वाय !--प्रयमसमयोत्पक कृत २ अभवसिद्धिक सं व पंचेन्द्रियो क्यांबी आवीने उत्पाद बाय ! ए- ३५८.

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक १६ ए० ३५९.

कृतयुग्म॰ २ कृष्णकेश्यावाळा अभवसिक्षिक सं॰ पंचेन्द्रियो क्यांबी आबीने उपजे ? ए॰ ३५९.

शतक ४० संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक १७-२१ ए० ३५९.

नीलकेदया संबंधे छ शतकोत्तं कथन ए० ३५९.

शतक ४१ उदेशक १ ए० ३६०-३६२.

राबियुग्मना प्रकार.—बार राबियुग्म कहेवानुं कारण.—कृतयुग्महप नैग्यिकोनो क्यांबी आवीने उपपात धाय?—एक समये केटला उत्पन्न धाय? विश्लोनो सान्तर के निरन्तर उत्पाद होय?—तेलो जे समये कृतयुग्मशादिक्षण होय ते समये त्र्योजराविक्षण होय इत्यादि प्रश्न पृ॰ १६०. तेलोने आश्रयी कृतयुग्म अने द्वापरयुग्मनो संबंध होय?—कृतयुग्म अने कृत्युग्म अने द्वापरयुग्मनो संबंध होय?—कृतयुग्म अने कृत्योज राबिनो संबंध होय?—जंगानो हेतु आत्मानो असंयम.—आत्मसंयम के आत्मअसंयमनो आश्रय,—तेशो सलेश्य होय के अलेश्य होय. !—सलेश्य सिक्षय होय के अकिय?—कृतयुग्म राबिक्ष्य अधुरकुमारनी क्यांबी आवी उत्पत्ति धाय?—मनुष्योना उपपातनुं कारण आत्मानो असंयम पृ॰ १६१.—आत्मसंयमी प्रतुष्यो सलेश्य छे के अलेश्य !—कियारहितनी सिद्धिः—छेश्याबाळा मनुष्योनी सिक्षयता.—सिक्षय हे भवमा सिद्ध धाय के नहि !—अत्मासअसंयमी सलेश्य छे के अलेश्य छे !—सलेश्य मनुष्यनी सिक्ष्यता.—सिक्षय स्व के मलेश्य छे !—सलेश्य मनुष्यनी सिक्ष्यता.—सिक्षय से भवमा सिद्ध धाय.

# शतक ४१ उद्देशक २ ए० ३६२.

त्र्योजराबिप्रमाण नेरयिकोनो उत्पाद. पृ० ३६२—कृतयुग्म अने त्र्योजराबिनो परस्पर संबन्ध —त्र्योजराबि अने द्वापरयुग्मनो परस्पर संबन्ध पृ॰ ३६३.

शतक ४१ उदेशक ३ ए० ३६२.

ह्वापरयुग्मराशिप्रमाण नैर्यायकोनो उत्पाद.— द्वापरयुग्म अने कृतयुग्मनो परस्पर संबन्ध.—पृ० ३६३.

शतक ४१ उद्देशक ४ पृ० ३६३.

कल्योजप्रमाण नैरियकोनो उत्पाद —कल्योज अने कृतयुग्मनो परम्पर संबन्ध पृ० ३६३.

शतक ४१ उद्देशक ५ पृ॰ ३६३.

कृष्णलेदयावाळा कृत्युग्मप्रमाण नैरविकोनो उत्पाद. प्र॰ ३६४.

शतक ४१ उद्देशक ६ पृ० ३६३.

त्र्योजराबिप्रमाण कृष्णछेश्यावाळा नैरयिकोनो उत्पाद.

दातक ४१ उदेदाक ७ पृ॰ ३६३.

द्वापरयुरमप्रमाण कृष्णळेश्याबाळा (नैरियको ) संबंधे पण एमज उद्देशक पृ॰ ३६४.

शतक ४१ उद्देशक ८ ए० ३६३.

कृष्णलेख्यावाळा कल्योज प्रमाण नैरयिकोनी उत्पाद.

शतक ४१ उद्देशक ९-१२ ए० ३६३.

नीललेक्यावाळा संबंधे चार उद्देशकोनुं कथन.

शतक ४१ उद्देशक १३-१६ ए० ३६३.

कापोत्तलेदयावाळा संबंधे एज रीते चार उद्देशकोर्नु कथन.

शतक ४१ उद्देशक १७-२० पृ० ३६६.

कृतयुग्मराशिप्रमाण तेजोळेश्यावाळा असुरकुमारोनो क्यांथी आवी उत्पाद थाय<sup>7</sup> पृ० ३६५.

शतक ४१ उद्देशक २१-२४ पृ० ३६६.

ए रीते पद्मलेख्या संबंधे चार उद्देशकोनुं कथन.

शतक ४१ उद्देशक २५-२८ पृ० ३६६.

शुक्रलेक्यासंबंधे चार उद्देशकोनं कथन

शतक ४१ उद्देशक २९-५६ ए० ३६७.

भविगिद्धिक कृतयुग्मप्रमाण नैरियकोनो क्यांथी आवी उत्पाद थाय —कृष्णलेश्याबाळा भविसिद्धिक कृतयुग्मरूप नैरियकोनो उत्पाद क्यांथी आवीने याय १—कुक लेश्याबाळा संबंध श्रीषिक सरखा चार उद्देशकोनु कथन.

शतक ४१ उद्देशक ५७-८४ पृ० ३६७.

अभवसिद्धिक कृतसुरम प्रमाण नैरियकोनो प्रयोधी आवी उत्पाद थाय (

शतक ४१ उदेशक ८५-११२ ए० ३६७.

कृतयुग्मप्रमाण सम्यग्दिष्टि नैरियकोनो क्यांथी आवी उत्पाद आय ? १० ३६७.—कृत्युग्मराशिप्रमाण कृष्णलेश्यावाळा सम्यग्दिष्टि नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि नार उद्देशकोनुं कथन.—ए प्रमाणे सम्यग्दिष्टिओने आश्रयी अत्यावीश उद्देशकोनुं कथन.

शतक ४१ उदेशक ११३-१४० ए० ३६८.

कृतयुग्मप्रमाण मिध्यादृष्टि नैरग्निकोनो क्यांथी आवी उत्पाद थाय !---

शतक ४१ उद्देशक १४१-१६८ ए० ३६८.

इत्युरमप्रमाण कृष्णपाक्षिक नैरयिकोनो क्याची आवी उत्पाद थाय ?

शतक ४१ उदेशक १६९-१९६ ए० ३६९.

क्रतयुग्मप्रमाण शुक्रपाक्षिक नैरयिकोनो क्यांथी आर्वा उत्पाद थाय १ पृ० ३६८ उत्तेशक, शतक, अने पदर्षस्या.—संघनी स्तुनि.—लेखकक्वत मंगल.

# भगवत्सुधर्मस्वामिप्रणीत भगवतीसूत्र



# सोलसमं सयं.

१ अहिगरणि २ जरा १ कम्मे ४ जावतियं ५ गंगदत्त ६ सुमिणे य । ७ जवओग ८ लोग ९ विल १० ओहि ११ दीव १२ उदही १२ दिसा १४ थणिया ॥

## पढमो उद्देसो.

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समयणं रायगिष्टं जाय-पज्जवासमाणे यथं वयासी-अध्यि णं मंते! अधिकरणिसि वाउ-वाए वक्रमति १ [उ०] हंता अध्यि । [प्र०] से मंते! कि पुट्टे उदाद, अपुट्टे उदाद १ [उ०] गोयमा! पुट्टे उदाद, नो

# सोळमुं शतक.

[ उद्देशकार्थमंत्रह— ] १ अधिकरणी—एरण प्रमुख संबन्धे पहेलो उदेशक, २ जरादि अर्थ संबन्धे बीजो उदेशक, ३ कर्म बगेरे संबन्धे बीजो उदेशक, ४ उदेशकना प्रारंभमां 'जावतिय' यार्वातक शब्द होवायी यार्वातक मामे चोथो उदेशक, ५ गंगदन देव संबन्धे पांचमो उदेशक, ६ स्वा विषे छट्टो उदेशक, ७ उपयोग संबन्धे सातमो उदेशक, ८ लोकस्वरूप संबन्धे आठमो उदेशक, ९ बलीन्द्र संबन्धे नयमो उदेशक, १० अवधिज्ञान संबन्धे दशमो उदेशक, ११ द्वीपकुमार संबन्धे अर्गायारमो उदेशक, तथा १२ उद्धिकुमार, १३ दिकुमार अने १४ स्तनितकुमार संबन्धे बारमाथी चीदमा सुधी व्रण उद्देशको—ए प्रमाणे सोळमा शतकमां चौद उद्देशको कहेवाना छै.

## प्रथम उद्देशक.

१. [प्र0] से बाळे ते समये राजगृह नगरमां यावत्—पर्युपासना वारता [ भगवान् गीतम ] आ प्रमाण बोल्या के-हे भगवन् ! अधिकरणी (परण) उपर [ हपोडो मारती वालते ] वासुकाय उत्पन्न याय ! [३०] हे गीतम ! हा, थाय. [प्र0] हे भगवन् ! ते बायुकायमी बीजा कोइ पदार्थ साथे स्पर्श थाय तोज ते मरे के स्पर्श थया सिवाय पण मरे ! [३०] हे गीतम ! तेनो बीजा पदार्थ साथे स्पर्श थाय तोज मरे, पण स्पर्श थया सिवाय न मरे. [प्र0] हे भगवन् ! [अपारे ते वायुकाय मरण पामे त्यारे ] ने शरीरमहित

थातुकायनी उत्परि।.

अयुकायनुं सरहः,

<sup>9</sup> में शिहें टीकामार हायुकावनी टरप्ति संबन्धे आ प्रमाणे खुळासो करे छे-'एरण उपर हथोड। वर्ता या मारती वसते एरण अने हयोडान। अभि-मातमी बाबु उत्पन्न बाम है, अने ते अभिवासकी उत्पन बयेखी होवाने ठीथे प्रथम अमेतन होय है अने पछीती समेतन बाय छे एम संभवे छे'.

<sup>† &#</sup>x27;दंबियीकाय कादि पांच स्थापर जातिना जीकोने ज्यारे विजातीय जीकोनो अगर विजातीयस्वर्शवाळा पदार्थोनो संघर्ष याय छे त्यारे तेमना वारीएको बात पांच के निवार काद्यामां आवेशो छे. आवारीय सूत्रना 'शक्यिरिया' नामना अध्ययनमां आ विचार सारी रीते वारीको छे. खनो-कावारीय पक्ष ९८ स्ट ८०.

अपुट्ट उद्दार । [40] से भंते ! कि ससरीरी निक्समर, असरीरी निक्समर ? [उ०] एवं जहा खंदए, जाव-'से तेणेट्टेणं नो असरीरी निक्समर ।

- २. [प्र०] इंशालकारियाए णं भंते ! अगणिकाए केवतियं कालं संचिट्टति ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं अंतोसुहुत्तं, उद्योसेणं तिक्षि राइंदियाई । असे वि तत्थ वाउयाप वक्षमति, न विणा वाउयाएणं अगणिकाए उज्जलति ।
- ३. [प्रव] पुरिसे जं मंते! अयं अयकोट्टंसि अयोमएणं संडासएणं उद्विहमाणे वा पश्चिहमाणे वा कतिकिरिए? [उ०] गोयमा! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्टंसि अयोमएणं संडासएणं उद्विहिति वा पद्विहिति वा, तावं च णं से पुरिसे कातियाए जाव—पाणाइवार्याकरियाए पंचिंह किरियािंह पुट्टे, जेसि पि णं जीवाणं सरीरेहितो अए निव्वत्तिए, अयकोट्टे निब- तिए, संडासए निव्वत्तिए, इंगाला निव्वत्तिया, इंगालकहुणी निव्वत्तिया, मत्था निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव— पंचिंह किरियािंह पुट्टा।
- ध. [प्रव] पुरिसे णं मंत! अयं अयकोट्टाओं अयोमएण संडासएणं गहाय अहिकर्राणिस उपिलवमाणे वा निक्तिव-माणे या कितिकिरिए? [उव] गोयमा! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्टाओं जाव—निविश्ववद वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायिकिरियाए पंचिंह किरियाहि पुट्टे, जोसि पि णं जीवाणं सरीरोहितो अयो निव्यत्तिए, संडासए निव्यत्तिए, चम्मेट्टे निव्यत्तिए, मृद्विए निव्यत्तिए, अधिकरणी निव्यत्तिया, अधिकरणिसोडी णिव्यत्तिया, उदगवोणी निव्यत्तिया, अधिकरणसाठा निव्यत्तिया, ने वि णं जीवा काइयाए जाव-पंचिंह किरियाहि पुट्टा।
- ५. [प्र०] जीवे णं भंते ! किं अधिकरणी, अधिकरणं ? [उ०] गोयमा ! जीवे अधिकरणी वि अधिकरणं पि । [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुचर- 'जीवे अधिकरणी वि अधिकरणं पि' ? [उ०] गोयमा ! अविरित पहुच, से तेणट्टेणं जाव-- अहिकरणं पि ।

वाकुकायनु दारीसम रित के दार्गर विना भवान्तर गमनः भवान्तरे जाय के शरीररहित जाय ? [उ०] हे गोतमा आ बाबनमा जेम <sup>#</sup>स्कंदकना उद्देशकमां कह्युं छे, ते प्रमाणे यावत्—'शरीर-रहित थईने जतो नर्धा' त्यां सुधी अहि जाणवुं.

सगडीमा लहाकाय केटला काळ सुधी रहे? २. [प्रत] हे भगवन् ! रागडीमां अग्निकाय केटला बाळ सुधी [ राचेतन ] रहे ! [उ०] हे गौतम ! जघन्यधी अंतर्मुहूर्त सुधी अने उत्कृष्टधी प्रण रात्रि दिवस सुधी रहे. बळी त्यां अन्य वायुकायिक जीवो पण उत्पन्न थाय छे, कारण के वायुकाय विना अग्निकाय प्रज्ञालित बनो नथी.

भट्टीमां सांश्रक्षा नर्ता स्टोडु उजु करनार पुरुषने कियाची- ३. [प्र०] हे भगवन् ! टोडाने तपाववानी भट्टीमां छोटाना सांडसा वर्ड छोटाने ऊंचुं के नीचुं करनार पुरुपने केटली क्रियाओ छागे ! [उ०] हे गीतम ! ज्यां सुधी ते पुरुप छोटाने तपाववानी भट्टीमां छोटाना सांडमा वर्ड छोटाने ऊंचुं के नीचुं करे छे त्यां सुधी ते पुरुपने कायिकीथी माडीने प्राणातिपात क्रिया सुधीनी पांच क्रियाओ छागे छे. वळी जे जीवीना शरीरथी छोढुं वन्युं छे, छोटानी भट्टी बनी हे, सांडसी बन्यो छे, अगाग वन्या छे, अगागकर्पणी (अंगाग वाढवानो सळीयो) बनी छे अने धमण बनी छे ते बधा जीवोने पण काथिकी यायत्-पांच क्रियाओ छागे छे.

लंखाने तपात्री एरण पर सकतारने क्रियाओं. 8. [प्र०] हं भगवन्! छोटानी भट्टीमांथी टोटानी सांउसा वह होटाने हई तेने एरण उपर देता अने मुकता पुरुपने केटही कियाओ लागे! [उ०] ते गीतम! ते पुरुप रण सुधी छोटानी भट्टीमांथी छोटाने हई यावत्—एण उपर मुके छे, त्यां सुधी ते पुरुपने कायिकी यावत्—प्राणातिपात सुधीनी पाच कियाओ लागे छे. वहीं जे जीवीना दारीरथीं छोटुं वन्युं हे, सांडसी बन्यों छे, चमेंहक—घण बन्यों छे, नानो हथोडो बन्यों हे, एएण बनी हे, एएण खोटवानुं लाव हुं बन्युं छे, गरम छोटाने टारवानी पाणीनी दोणी (कुंडी) बनी छे अने अविकरणशास (लोहाग्री कोट) बनी छे ते जीवीने पण काथिकी यावत्—पांच कियाओ लागे छे.

आधिकरणी अने अ-धिनरणा जीवने अ-भिनरणी अने शिवन रण कहेनानं कारणा

- ५. [प्रव] हे भगवन्! जीव अधिकरणी--अधिकरणवाळी छे के !अधिकरण छे ! [उ व ] हे गौतम ! जीव अधिकरणी पण छे अने अधिकरण पण छे . [प्रव] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतृयी कहो छो के 'जीव अधिकरणी पण छे अने अधिकरण पण छे ! [उ व ] हे गौतम ! "अधिरानिने आश्रयी, अर्थात् अधिरानि रूप हेतृयी जीव अधिकरणी पण छे अने अधिकरण पण छे.
- १ \* जीव तेजय अने कामण शरीकता अपेक्षाए शरारसहित भवान्तरे जाय छ अने अन्य औदाविकादि शरीरनी अपेक्षाए शरीरहित बईने जाय छे. जुओ-भगव संव १ शव २ उ० १ एव २५६.
  - ३ † काथिकी, अधिकर्गणकी, प्रवेषिकी, पारितापनिकी अने प्राणातिपाठकी-ए पांच कियाओ शरीरद्वारा स्रागे छे.
- ५ ई अधिकरण एटटे हिमादि पापवर्मना हेतुभूत वस्तु. तेना आतारक अने बाल वे मेद छे, तेमा शरीर अने इन्द्रियो आतारिक अधिकरण, अने बुद्धारा, कोश, इल अने गाडा आदि परिप्रदारमक दर्शुओ पाध अधिकरण रूपे अहि विवक्षित छे, ते जेने दीय ते जीव अधिकरणी कहेवाय छे, अने ते शरीरादि अधिकरणथी नथंबिद अभिन्न होवायी अधिकरण रूप पण छे, अर्थात् जीव अधिकरणी अने अधिकरण विवेहणे कहेवाय छे.-टीका.
- ैं जे जीय विरातवाळी होय तेने शरीरादि आंतर व.ने याहा परिश्रहात्मक वस्तुनी सद्भाव होवा छतां पण ममत्वन। सभावधी ते अधिकरणी के अधिकरण कहेवाता नथी, परंतु जे जीव अधिरतिवाळी होय छे तेने ममत्व होवाथी ते अधिकरणी अने अधिकरणहर कहेवाय छे.-टीका.

- ६, प्रि०] नेरहए जं मंते! कि अधिकरणी अधिकरणं? [उ०] गोयमा! अधिकरणी वि अधिकरणं पि। पर्य जहेव जीवे तहेव नेरहए वि । एवं निरंतरं जाव-वेमाणिए ।
- ७. [प्रव] जीवे णं मंते! कि साहिकरणी, निरहिकरणी? [उव] गोयमा! साहिकरणी, नो निरहिकरणी। [प्रव] से केणद्वेणं-पुच्छा [उ०] गोयमा ! अविरति पबुच, से तेणद्वेणं जाव-नो निरहिकरणी । एवं जाव-वेमाणिए ।
- ८. [प्र०] जीवे णं मंते! कि आयाहिकरणी, पराहिकरणी, तदुभयाहिकरणी ! [उ०] गोयमा! आयाहिकरणी वि. पराहिकरणी वि, तदुभयादिकरणी वि । [प्र०] से केणट्रेणं भंते ! एवं बुबाइ-जाव-'तद्भयादिकरणी वि' ? [उ०] गोयमा ! अविरति पडुच, से तेणट्टेणं जाय-तदुभयाहिकरणी वि । एवं जाव-वेमाणिए ।
- ९. [प्र०] जीवाणं अंते ! अधिकरणे कि आयप्पओगनिवस्तिए, परप्पयोगनिवस्तिए, तदुभयप्पयोगनिवस्तिए? [उ०] गोयमा! सायप्ययोगनिव्यत्तिए वि, परप्ययोगनिव्यत्तिए वि, नदुभयप्ययोगनिव्यत्तिए वि । [प्रः] सं केण्ट्रेणं भंते! एवं बुच्चर् ! [उ०] गोयमा । अधिरति पहुच, से तेणद्रेणं जाव-तरुभयप्योगनिव्यत्तिए वि । एवं जाव-वेमाणियाणं ।
  - १०. [प्र०] कर् वं अंते ! सरीरमा पण्णसा ? [उ०] गोयमा ! पंच सरीरा पण्णसा, तंजहा-१ ओराहिए, जाव-५ कम्मए ।
- ११. [प्रव] कित णं मंते! इंदिया पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! पंच इंदिया पण्णत्ता, तंजहा-१ सोइंदिण, जाव-५ कासिदिए।
- १२. [प्र॰] कतिविद्दे णं भंते! जोष पण्णसे ? [उ॰] गोयमा! तिविद्दे जोष पण्णसे, तंजहा-१ मणजोष, २ वर्रजोष, ३ कायजोए।

६. [प्रo] हे भगवन् ! नैर्यक अधिकरणी छे के अधिकरण छे ? [उ०] हे गीतम ! नैर्यिक अधिकरणी पण छे अने अधिकरण पण छे, जैम जीव संबंधे कहां तैम नैरियक संबंधे पण जाणवुं, अने ए प्रमाणे यावत्-निरंतर वैमानिक सुधीन जीव संबन्धे पण जाणवुं.

नैरियकादि जांवे ने आश्रयी अधिकाणी अने अधिकरण. भाव माधिकारणी

के निर धिव,ग्ली 🦫

- ७. [प्रठ] हे भगवन् ! छुं जीव साधिकरणी छे के निरिवेकरणी छे ! [उठ] हे गीतम ! जीव "साधिकरणी छे, पण निरिवेकरणी नथी. प्रिज्ञे हे भगवन् ! ए प्रमाणे द्या हेतुथी कहो छो के 'जीव साधिकरणी छे अने निरधिकरणी नथी' ! [उज् ] हे गाँतम ! अविर-तिने अभयी, अर्थात् अविरतिकृप हेतुथी जीवो साधिकरणी हे, पण निरिषवरणी नथी. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं.
- जीव आत्माधिकर्-**थी, पराधिकरणी के** तदुभयाधिकरणी 🕈
- ८. प्रि. है भगवन्! हां जीत्र आमाधिकरणी हो, पराधिकरणी हो के तदुभयाधिकरणी हो ? [उ.०] हे गौतम! जीव ोआतमाधिकरणी छे, पराधिकरणी छे अने तद्भयाधिकरणी **छे.** [प्र०] हे भगवन ! ए प्रमाणे शा हेतुथा कही छो के 'जीव आत्माधि-करणी, पराधिकरणी अने तद्वभयाभिकरणी पण छे'? [उ०] हे गातम ! अविरतिने आश्रयी, अर्थात् अविरतिरूप हेतुथी जीव यावत--निरिवकरणी नथी. ए प्रमाण यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं.
- जीवोनु अधियसण शाभी थाय छे? अभिकरणनो हेन
- ९. [प्रच] हे भगवन् ! युं जीबोनुं अबिकरण !आत्मप्रयोगधी श.य छे, परप्रयोगधी धाय छे के तद्भयप्रयोगधी धाय छे ? [उठ] हे गौतम ! जीबोनुं अधिकरण आत्मप्रयोगथी, परप्रयोगथी अने तद्भयप्रयोगथी पण थाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे आप जा हेतुथी कहो छो के जीबोनुं अधिकरण आत्मप्रयोगथी, परप्रयोगथी अने तदुभयप्रयोगथी थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! अविर्रातने आश्रयी, अर्थात् जीवोनुं अधिकरण अविरतिरूप हेतुथी यात्रत्-तदृभयप्रयोगशी थाय छे. ए प्रमाणे यात्रत्-वैमानिको सुधी जाणबुं.
- शरीरना प्रकार.
- १०. प्रिच् हे भगवन् ! शरीरो केटला कह्यां छे ? [७०] हे गौनम ! शरीरो पांच कह्यां छे, ते आ प्रमाणे- १ ओदारिक, यावत-५ कार्मण.
  - डोन्डयांचा प्रधार
- ११. [प्रच] हे भगवन् ! इंद्रियो कटली कही छे ! [उ ठ] हे गौतम ! इंद्रियो पांच कही छे, ते आ प्रमाणे—१ श्रोत्रेदिय, यावत्— ५ स्पर्शेन्द्रियः
  - योगगः प्रशः
- १२. प्रि. हे भगवन् ! योगना केटला प्रकार कहा छे ? [उ.०] हे गौतम ! योगना त्रण प्रकार बह्या छे, ते आ प्रमाणे– १ मनयोग, २ बचनयोग अने ३ काययोग.
- 🎍 ဳ दारीरादि अधिकरण सहित जीव ते साधिकरणी, (अहिं समामार्थे इन् प्रायय छे,) केमके संनारी जीदने दारीर इन्द्रियादिक रूप अनार अधिक-रण तो हमेशां साथेज होय छे. शस्त्रादिक बाह्य अभिकरण नियतपणे राथे होता नथी, पण तेनी अधिरतिरूप समत्वभाव नियत सहचारी होवाधी शस्त्राद **णास अधिकरणनी अपेक्षाए पण जीव साधिकरणी वहेवाय छे, अने तेथीज संयक्षीत शरीरादि छतां तेनी अधिरतिना अभावशी साधिकरणी**रणे नथी.-टीका.
- ८ ौ जे कृष्णादि भारेभमां खयं प्रशृत्ति करे ते आत्माधिकाणी, अन्यनी पारी करावे ते पराधिकाणी अने खयं वरे अने अन्यनी पारी पण करावे ते उभवाधिकरणी.-टीका.
- 🥄 🕽 आत्मप्रयोगनिर्वर्तित एटले हिंसादि पाप कार्यमां प्रवृत्त मन आदिना व्यापारथी उत्पन्न थएलुं अधिकरण, अन्यने हिंसादि पाप कार्यमां प्रवर्ताववा यडे उत्पन्न वएक वचनादि अधिकरण ते परप्रयोगनिर्वर्तित अने आत्मद्वारा तथा अन्यने प्रवर्तन कराववा द्वारा उत्पन्न थएल ते तदुभयप्रयोगनिर्वर्तित अधिकरण कहेबाय छे. स्थाबरादि जे जीवोने वजनादि व्यापार नबी तेमने जे परप्रयोगादि अधिकरण कहेलुं छे ते अविरतिभावने आध्यी जाणवुं.-टीका.

- १३. [प्रo] जीवे णं मंते! ओरास्त्रियसरीरं निष्ठतेमाणे कि अधिकरणी, अधिकरणं ? [उ०] गोयमा! अधिकरणी वि अधिकरणं पि । [प्रo] से केण्ट्रेणं मंते! एवं बुखर्—'अधिकरणी वि अधिकरणं पि' ? [उ०] गोयमा! अविरति यदुख, के तेण्ट्रेणं जाय—अधिकरणं पि ।
- १४. [प्र०] पुढविकाइपण णं मंते ! ओरास्त्रियसरीरं निश्चचेमाणे कि अधिकरणी, अधिकरणं ! [उ०] एवं चेव, धर्च जाव-मणुस्से । एवं वेउवियसरीरं पि, नवरं जस्स अस्यि ।
- १५. [प्रः] जीये णं अंते! आहारगसरीरं निष्ठत्तेमाणे कि अधिकरणी-पुष्का । [उ०] गोयमा! अधिकरणी चि, अधिकरणं पि। [प्र०] से केजट्टेणं जाव-अधिकरणं पि? [उ०] गोयमा! प्रमायं पहुच्च, से तेजट्टेणं जाव-अधिकरणं वि। एवं मणुस्से वि, तेयासरीरं जहा ओरालियं, नवरं सञ्चजीवाणं माणियवं, एवं कम्मगसरीरं पि।
- १६. [प्र०] जीवे णं मंते! सोइंदियं निश्चेमाणे कि अधिकरणी, अधिकरणं? [उ०] एवं जहेच बोरालियसरीरं तहेच सोइंदियं पि भाणियद्वं, नवरं जस्स अत्यि सोइंदियं, एवं चिक्कित्य-धाणिदिय-जिम्मिदिय-फार्सिदियाण वि, नवरं जाणियद्वं जस्स जं अस्थि।
- १७. [प्र०] जीवे णं मंते! मणजोगं निष्ठत्तेमाणे किं अधिकरणी, अधिकरणं ? [उ०] एवं जहेब सोईव्यं तहेब निरवसेसं, बहजोगो एवं चेब, नवरं एगिव्यवज्ञाणं। एवं कायजोगो बि, नवरं सप्तजीवाणं, जाव-वेमाणिए। 'सेवं मंते! सेवं मंते'! सि ।

#### सोलसमे सए पढमो उद्देसी समची।

श्रीदारिक दार्गशने बांधतो श्रीष अधिकरणी के अधिकरणी १३. [प्रिन] हे भगवन् ! औदारिक शरीरने बांधतो जीव अधिकरणी छे के अधिकरण छे ! [उन्न] हे गौतम! ते अधिकरणी पण छे अने अभिकरण पण छे. [प्रिन] हे भगवन् ! ए प्रमाण शा हेतुथी कहो छो के 'औदारिक शरीरने बांधतो जीव अधिकरणी छे अने अधिकरण पण छे' ! [उन्न] हे गौतम ! अविरतिने आश्रयी. अर्थात् अविरतिरूप हेतुथी पूर्व प्रमाणे यावत्—अधिकरण पण छे.

एथिबीकायिक

१४. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिक शरीरने बांधतो "पृथ्वीकायिक जीव अधिकरणो छे के अधिकरण छे ! [उ०] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे जाणवुं. अने ए प्रमाणे यावत् मनुष्यो सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे वैक्षिय शरीर संबंधे पण समजवुं, पण तेमां 'ए विशेष छे के जे जीवोने जे शरीर होय तेमना विषे ते शरीर संबन्धे कहेवुं.

भाषारक दारीरने बांधतो अधिकरणी के अधिकरण र १५. [प्र०] हे भगवन्! आहारक शरीरने बांधतो जीव अधिकरणी छे—इस्यादि प्रश्न. [उ०] हे गातम! ते अधि-करणी पण छे अने अविकरण पण छे. [प्र०] हे भगवन्! ते ए प्रमाणे शा हेतुयी कहो छो के ते यावत्—'अधिकरण पण छे'! [उ०] हे गीतम! प्रमादने आश्रयी, अर्थात् प्रमादरूप कारणने रुड्ने ते यावत्—'अधिकरण पण छे.' ए प्रमाणे मनुष्य संबंधे पण जाणवुं. औदारिक शरीरनी पेठे तैजस शरीर संबंधे पण कहेवुं, पण तेमां विशेष ए छे के, [तैजस शरीर सर्व जीवोने होश्रयी] सर्व जीवोने विषे ए प्रमाणे समजवुं. एज प्रमाणे कार्मण शरीर विषे पण जाणवुं.

क्षेत्रिन्द्रव.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! श्रोतेन्द्रियने बांधतो जीय अधिकरणी छे के अधिकरण छे ! [उ०] हे गैतिम ! जेम औदारिक शरीरने विषे कहेलुं छे तेम श्रोतेंद्रियने विषे पण कहेलुं. विशेष ए छे के जे जीबोने श्रोतेंद्रिय होय तेमना विषे ते कहेलुं. ए प्रमाणे चक्कुरिद्रिय, प्राणेंद्रिय, जिह्नेंद्रिय, अने रपरेंद्रिय संबंधे पण जाणबुं. विशेष ए के जे जीबोने जे इन्द्रिय होय तेमना विषे ते इन्द्रिय संबंधे कहेलुं.

मनोये'ग.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! मनोयोगने बांधतो जीव अधिकरणी छे के अधिकरण छे ! [उ०] हे गौतम ! जेम श्रोत्रेंद्रियना विषयमां कहां छे तेम आ विषयमां पण वधुं कहें बुं. ए प्रमाणे वचनयोग संबन्धे पण समजवुं, विशेष ए के वचनयोगमां एकेंद्रिय जीवो न लेका. ए प्रमाणे काययोग रावन्धे जाणवुं. अने तेमां विशेष ए के काययोग सर्वजीयोने होबाधी सर्वना विषे ते समजवुं. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

# सोळमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

१४ \* इंचे आहं दडकना क्रमधी प्रश्न करें छे. तेमां औदारिक शरीर नारक अने देवोने होतुं नधी, तेथी नारक अने असुरादि देवोने छोडी पृथिनीकाविकने आध्यी प्रश्न कर्यों छे.

<sup>ं</sup> नारक, देव, वायु, पंचेन्द्रिय तियँच अने मनुष्यने वैक्तियदारीर होय छे. तेशां नारक अने देवने भवप्रत्यय वैक्तियदारीर होय छे एटले के तेमने जन्म-थीज ए करीर प्राप्त होय छे, अने पंचेन्द्रिय तियँच अने मनुष्यने रुज्यित्रत्य विक्रय धरीर होय छे. एटले के वैक्टिय कारीर करवानी जेने खास शक्ति प्राप्त थई होय तेने ज होय छे. वायुवायने पण विक्रय शक्ति प्राप्त धरेली होवायी तेने विक्रय दारिर होय छे. खुओ-भग- खंब २ दाव ३ उ० ४ ए० ८७.

१५ ई आहारक घरीर चंदत मनुष्यने ज होय छे, देवी मूळ प्रश्न मनुष्यने उद्देशीने करनो जोहर, छत्तां प्रथम प्रश्न सामान्य जीवजातिने सहेतीने करहामां भाग्यों छे, देनुं बारण मात्र कमनुं अनुसरण छे. कारण के भाहि प्रथम दरेक प्रश्न सामान्य जीवसमूहने उद्देशीने करवामां आवे छे अने पछीना प्रश्नों पंडकना कम प्रमाण करवामां आवे छे. भाहें अनिरातिनो अभाव होवाधी अविरात अधिकरण नथी, पण प्रमादक्य अधिकरण छे.

#### बीओ उहेसी.

- १. [प्र0] रायगिहे जाय-पर्य ययासी-जीवाणं भंते ! कि जरा, सोगे ! [उ०] गोयमा ! जीवाणं जरा वि सोगे वि । [प्र0] हो केजहेजं भंते ! पर्य चुक्कर-जाय-'सोगे वि' ! [उ०] गोयमा ! जे णं जीवा सारीरं वेदणं वेदेंति, तेसि णं जीवाणं जरा; जे णं जीवा आणसं वेदणं वेदेंति, तेसि णं जीवाणं सोगे, से तेणहेणं जाय-सोगे वि । पर्व नेरहयाण वि । पर्व जाय-थणियकुमाराणं ।
- २. [प्र०] पुढविकार्याणं भंते! किं जरा, सोगे ! [उ०] गोयमा ! पुढविकार्याणं जरा, नो सोगे । [प्र०] से केणहेणं जान-'नो सोगे ! [उ०] गोयमा ! पुढविकार्या णं सारीरं बेदणं वेदेंति, नो माणसं वेदणं वेदेंति, से तेणहेणं जान-नो सोगे । सर्वं जान-वजरिंदियाणं । सेसाणं जहा जीवाणं, जाव-वेमाणियाणं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि जाव-पज्जवासति ।
- ३. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समपणं सके देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे जाव-भुंजमाणे विहरह । हमं च णं केवल-कृष्यं जंबुद्दीवं दीवं विपुलेणं भोहिणा आभोपमाणे २ पासित समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे । एवं जहा ईसाणे तहय-सप तहेव सके वि । नवरं माभिनोगे ण सद्दावेति, पायत्ताणियादिवां हरी, सुबोसा घंटा, पालमो विमाणकारी, पालगं विमाणं, उत्तरिक्षे निजाणमण्गे, दाहिणपुरिक्षिमिल्ले रितकरपद्यप, सेसं तं चेव, जाव-नामगं सावेत्रा पज्जवासित । धम्मकहा, ज्ञाब-परिसा पिंडण्या । तप णं से सके देविंदे देवराया समणस्स भगवनो महावीरस्स अंतियं धम्मं सोचा निसम्म हट्ट- ग्रुट० समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसित, वंदित्ता नमंसित्ता पवं बयासी-
  - ध. [प्रo] कतिबिहे जं मंते ! उमाहे पक्रसे ! [उठ] सका ! पंचिवहे उगाहे पण्णसे, संजहा-१ देविदोगाहे, २ रायो-

#### हितीय उद्देशक.

१. [प्र∘] राजगृहमां [ भगवान् गौतम ] यानत्—आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन् ! द्वां जीवोने करा—बृद्धातस्था अने शोक होय छे ! [उ०] हे गौतम ! जीवोने जरा पण होय छे अने शोक पण होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे या हेतुथी कहो छो के, जीवोने जरा अने शोक होय छे ! [उ०] हे गौतम ! जे जीवोने शारीरिक वेदना होय छे ते जीवोने जरा होय छे, अने जे जीवोने मामिसक वेदना होय छे ते जीवोने शोक होय छे, माटे ते हेतुथी एम कह्युं छे के जीवोने जरा अने शोक होय छे, ए प्रमाणे नैरियको संबंधे तथा यात्रत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

जरा अने शोक. जरा अने शोक होवानुं कारण.

4

२. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने जरा अने शोक होय छे ! [उ०] हे गातम ! पृथिवीकायिकने जरा होय छे, पण शोक नयी होतो. [प्र०] हे भगवन् ! तेनुं शुं कारण के पृथिवीकायिकोने जरा होय अने शोक न होय ! [उ०] हे गीतम ! पृथिवीकायिको शारीरिक वेदनाने अनुभवे छे, पण मानसिक वेदनाने अनुभवता नथी माटे तेओने जरा होय छे, पण शोक नथी होतो. ए प्रमाणे बाबत्—चतुरिदिय जीवो सुधी जाणवुं. बाकीना जीवो माटे सामान्य जीवोनी पेठे समजवुं. अने ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी कहेवुं. क्षेत्र प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी कहेवुं. क्षेत्र जावन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे'—एम कही यावत्—पर्शुपासना करे छे.

पृथ्वीकाथिक जीवीने जरा अने शोक होय! शोक नहिं होवानुं कारण,

३. ते काळे ते समये शक्त, देवेंद्र, देवराज, वज्रपाणि, पुरंदर यावत्—सुखने भोगवतो विहरे छे, अने पोताना विशास अवधिक्षान वहें आ समस्त जंबूद्वीपने अवस्रोकतो अवस्रोकतो जंबूद्वीपमां श्रमण भगवंत महावीरने जुए छे. अहीं तृतीय शतकमां कहेल ईशानेन्द्रनी वक्तव्यता प्रमाणे शक्तनी बधी वक्तव्यता कहेवी. विशेष ए छे के आ शक्त आभियोगिक देवोने बोस्प्रवतो नथी. एनो सेनाधिपति हरिनंगमेषी देव छे, घंटा सुघोषा छे, पास्क नामे देव विमाननो बनावनार छे, विमाननुं नाम पास्क छे, एनो निकत्स्वानो मार्ग उत्तर दिशाए छे, दक्षिण पूर्वमां—अभिकोणमां रतिकर पर्वत छे. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणबुं. यावत्—शक्त पोतानुं नाम संभळाची भगवंतनी पर्युपासना करे छे. अमण भगवंत महावीरे धर्मकथा कही. यावत्—सभा पाछी गई. त्यारबाद ते शक्त, देवेन्द्र, देवराज श्रमण भगवंन महावीर पासेथी धर्मने सामळी, अवधारी हर्षवाळो अने संतोपवाळो यई श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नभी आ प्रमाणे बोल्यो—

शकेन्द्रनुं वर्णन अने नेन मगवंग पासे भावन्.

8. [प्र०] हे भगवन् ! अत्रग्रह केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे शक्र ! अवग्रह पांच प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे— १ दिवेन्द्रावग्रह, २ राजावग्रह, ३ गृहपतिअवग्रह, ४ सागारिकावग्रह अने ५ साधर्मिकावग्रह. जे आ श्रमण निर्ग्रन्थो आजकाल विचरे

अवस्था प्रश्न अने शक्षत् स्वस्थानः समनः

९ के जरा शारितिक दुःखरूप छे अने शोक मानशिक दुःखरूप छे, माटे मनोयोग विनाना जीवोने पेवळ जरा अने मनोयोगवाळा जीवोने जरा अने शोक को होय छे.—टीका.

३ † भग॰ खं॰ २ श॰ ३ उ० १ ए० २३.

४ देश समाह-सामीपणं, तेना पांच प्रकार छे. तेमां १ प्रथम देश-दावबह. देशेन्द्र एटडे शक अने ईशानेन्द्र, तेनुं सामीपणं अनुक्रमे दक्षिण लोकार्थ अने उत्तरकोद्धांथमां छे, माटे ते देशेन्द्रावबह कहेवाय छे. २ चक्रवर्षिने अधीन भरतादि छ क्षेत्रमां राजाऽवबह होय छे. २ मांडलिक राजाना पोताना तालाना वेशमां एहपतिअवश्व होय छे. ४ एहस्थने पोतानी मालिकीना घर वगेरेमां सागारिकावबह होय छे. ५ समान धर्मवाळा साधुओ परस्पर साधिमंक कहेवाय छे, तेंभोनो वर्षाकातु तिवायना काळमां एक मास सुधी अने वर्षाकातुमां चार मास सुधी पांच कोशपर्यन्त क्षेत्रमां साधीमंकावबह होय छे.-दीका.

माहे, ३ माहाबद्दरमहे, ४ सामारियउरमहे, ५ साहस्मियउरमहे । जे इमे भंते ! अज्ञत्ताए समणा निर्माया विहरंति एएसि णं सहं उरमहं अणुजाणामीति कटु समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव दिवं जाणविमाणं दुरुहति, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउन्भूए तामेव दिसं पडिगए ।

- ५. [प्र०] 'मंते'! त्ति मगवं गोयमे समणं भगवं महाबीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'जं णं मंदे । सक्के देविंदे देवराया तुज्हे णं एवं वदद, सच्चे णं एसमट्टे' ? [उ०] हंता सच्चे ।
  - इ. [go] सक्के णं अंते! देविंदे देवराया किं सम्मावादी, मिच्छावादी ? [उo] गोयमा! सम्मावादी, नो मिच्छावादी إ
- ७. [प्र॰] सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया कि सश्चं भासं भासति, मोसं भासति, सद्यामोसं भासं भासि, असद्यामोसं भासं भासि, असद्यामोसं भासं भासित ? [उ॰] गोयमा ! सद्यं पि भासं भासित, जाव-असद्यामोसं पि भासं भासित ।
- ८. [प्र0] सके णं मंते! देविदं देवराया कि सावजं भासं भासित, अणवजं भासं भासित? [उ०] गोयमा! सावजं णि भासं भासित, अणवजं णि भासं भासित। [प्र0] से केणट्टेणं भंते! एवं बुच्चर्—सावजं णि जाव अणवजं णि मासं भासित? [उ०] गोयमा! जाहे णं सके देविदे देवराया सुहुमकायं अणिजृहित्ता णं भासं भासित ताहे णं सके देविदे देवराया सुहुमकायं निजृहित्ता णं भासं भासित ताहे णं सके देविदे देवराया सुहुमकायं निजृहित्ता णं भासं भासित ताहे णं सके देविदे देवराया सुहुमकायं निजृहित्ता णं भासं भासित ताहे णं सके देविदे देवराया अणवजं भासं भासित, से तेणट्टेणं जाव—भासित।
- ९. [प्र०] सक्के णं अते ! देविदे देवराया कि भवसिद्धीए, अभवसिद्धीए, सम्मदिद्वीए एवं जहा मोउद्देसए सर्णकु-मारो, जाव-नो अचरिमे !
- १०. [प्र॰] जीवाणं भंते ! किं चेयकडा कम्मा कज्जंति, अचेयकडा कम्मा कज्जंति ? [उ॰] गोयमा ! जीवाणं चेय-कडा कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा कज्जंति । [प्र॰] से केणट्टेणं भंते ! पर्व बुखर्-जाव-'कज्जंति' ? [उ॰] गोयमा !

छे तेओने हुं अवप्रहर्ना अनुज्ञा आपुं छुं. एम कही ते शक्षः श्रमण भगवंत महावीरने वांदी नमी तेज दिव्य विमान उपर बेसी ज्यांधी आच्यो हतो त्यां चान्यो गयो.

५. [प्र०] 'भगवन्' ! एम कही भगवंत गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे बोल्या के—हे भगवन् ! शऋ देवेन्द्र देवराजे जे आपने पूर्व प्रमाणे [ अवप्रह संबंधी ] कह्युं ते अर्थ सत्य छे ? [उ०] हा गौतम ! ए अर्थ सत्य छे.

शकेन्द्र महाबादी के मिध्य गाडी है ् ६. [प्र०] हे भगवन् ! शक्र देवेंद्र देवराज शुं सत्यवादी छे के मिथ्यावादी छे ? [उ०] हे गौतम ! ते सत्यवादी छे पण मिथ्यावादी नथी.

शकेन्द्र केवी भाषा बोले ? ७. [प्र०] हे भगवन् ! शक्र देवेन्द्र देवराज सत्यभाषा बोले छे, मृपा भाषा बोले छे, सत्यमृषा भाषा बोले छे के असत्यामृष् भाषा बोले छे ! [३०] हे गीतम ! ते सत्य भाषा बोले छे, यावत् अग्रत्यामृषा भाषा पण बोले छे.

बाकेन्द्र सावय भाषा बाले के निरवय ? सावय अने निरवय भाषा बोलवानु यारण. ८. [प्र०] हे भगवन् ! राक देवेन्द्र देवराज सावध (पापयुक्त) भाषा बोले के निरवध (पापरहित) भाषा बोले ! [उ०] हे गौतम ! ते सावध अने निरवध ए क्ले भाषा बोले ! [उ०] हे गौतम ! राक देवेंद्र देवराज ज्यारे मृत्म काय-हम्त अथवा वस्त्र बडे मृत्व हांक्या विना बोले त्यारे ते \*सावध भाषा बोले छे अने मृत्व ढांकीने बोले त्यारे ते तिरवध भाषा बोले छे, माटे ते हेतुथी ते शक्त सावध अने निरवध बन्ने भाषा बोले छे.

धु शकेन्द्र अवन् विक्रिक से वेगेरे प्रक्र

९. [प्र०] है भगवन् । ते अक देवेन्द्र देवराज भवसिद्धिक छे, अभवसिद्धिक छे, राम्यग्द्दष्टि छे, [के मिथ्याद्दष्टि छे १] [उ०] जैम<sup>ी</sup>त्रीजा शतकना प्रथम उद्देशकमां सनग्युमार माटे कहाँ छे तेम अहिं पण जाणबुं. अने ते यावत्,—'अचरम नथी' ए पाठ सुनी कहेंबुं.

सनो धीतन्यकृत के अनेपन्य कृत्य १

१०. [प्र०] हे भगवन् ! जीयोना कर्मो चैतन्यकृत होय छे के अचैतन्यकृत होय छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवोना कर्मो चैतन्य-

८ \* इस्तादिकथी मुख डांकीने बोलनार निरवद्य माया थोछे छे, कारण के तेनी वायुकायिक जीवने यचायवानी प्रयत्न होत्राथी ते सावधानतापूर्वक बांछे छे. उपाढे मुखे बोलनार सावद्य भाषा बोले छे, केनके तेनी जीवसंरक्षणनी यहा नहि होवाथी ते असावधानतापूर्वक बोले छे.-टीका.

९ + भग • खं• २ श ० ३ त• १ ए० ३४.

जीवाणं आहारोविचया पोग्गला, बॉदिचिया पोग्गला, कलेवरिचया पोग्गला तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नित्य अचेयकहा कम्मा समणाउसो !, दुष्टाणेसु, दुसेआसु, दुखिसीहियासु तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नित्य अचेयकहा कम्मा समणाउसो !, आयंके से वहाप होति, संकष्पे से वहाप होति, मरणंते से वहाप होति तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नित्य अचेयकहा कम्मा समणाउसो !, से तेणट्टेणं जाव कम्मा कर्ज्ञति, पवं नेरितयाण वि, पवं जाव-विमाणियाणं । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि जाव-विहरित ।

#### सोलसमे सए बीओ उद्देशो समत्तो ।

कृत होय छे पण अचैतन्यकृत नथी होता. [प्र०] हे भगवन्! तेनुं शुं कारण छे के 'जीबोन। कर्मी चेतन्यकृत होय छ पण अचेतन्यकृत नथी होता'! [उ०] हे गाँतम! \*जीबोण ज आहाररूपे, इतीररूपे अने कलेबररूपे उपचित (संचित) करेल। पुर्गलो ते ते रूपे परिणमें छे, माटे हे आयुष्मन् श्रमण! ‡अचैतन्यकृत कर्मी नथी. तथा दुःस्थानकृष, दुःशय्यारूपे, अने दूर्नियदारूपे ते ते पुर्गलो परिणमें छे माटे हे आयुष्मन् श्रमण! अचैतन्यकृत कर्मपुर्गलो नथी. तथा ते आतंकरूपे परिणमी जीवना वथ माटे थाय छे, गंवल्परूपे परिणमी जीवना वथ माटे थाय छे अने मरणांतरूपे परिणमी जीवना वथ माटे थाय छे माटे हे आयुष्मन् श्रमण! कर्म पुर्गलो अचैतन्य-कृत नथी. ते कारणथी यावत्—जीबोना कर्मो अचैतन्यकृत नथी. ए प्रमाणे नैरियको मंबंधे अने पावत् वेमानिको संबंधे पण जाणवुं. हि भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'—एम कही यावद् बिहरे छे.

कर्मा निवन्द्रकृत के नेना कारणी.

#### सोळमा शतकमां द्वितीय उद्देशक समाप्त-

# तईओ उदेसो.

- १. [प्र०] रायगिहे जाय-एवं वयासी-कित णं भंते! कम्मपयदीको पण्णताओ ? [उ०] गोयमा! अट्ट कम्मपयदीको पण्णताओ, तंजहा-१ नाणायरणिक्कं, जाय-८ अंतराहरं, एवं जाव-वेमाणियाणं।
  - २. [प्रo] जीवे णं मंते ! नाणावरणिज्ञं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ येदेति ? [उ०] गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पन-

## तृतीय उद्देशक.

१. [प्र॰] राजगृहमां [ मगवान् गौतम ] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के--हे भगवन् ! केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ! [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे--१ ज्ञानावरणीय, यावत् -८ अंतराय, ए प्रमाण यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं

गम्स्रीं स्थानिः

२. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्मने वेदनो जीव बीजी केटली कर्गप्र कृतिओ वेदे छे ? [उ०] हे गीतम ! आटे कर्मप्रकृति-भोने वेदे छे. ए प्रमाणे अहीं प्रक्रापनास्त्रमां कहेल 'विदावेद' नामनो समप्र टद्देशक कहेत्रो. तथा तेज प्रकारे 'विदाबंध' नामनो

शानाकार्यवने नेदगी जीव केटश वर्गप्रकृत क्षेत्रोते वेद !

- १० \* जैम जीवोत् आहारादिरूपे संचित करेला पुत्रलो आहारादिरूपे परिणमे छे, तेन धर्मपुद्गलरूपे संचित करेला पुत्रलो जीवोने ते ते रूपे परिणमे छे. तथा ते (क्मेंपुद्रलो) टाढ, तडको,डांस, मच्छर बगेरे युक्त स्थानमां, दु खोरपादक दसल्मां अने दु.खक रक स्थान्यायभूमिनां दु खोरपादकरूपे परिणमे छे, जीवोने ज दु.खनो एअव होवाधी दुःस हेतुभूत कर्मो तेणेज कर्यां छे बळी ते (कर्मपुद्रली) आतंक-रोगक्षो, संवन्त्य-अधादिक कर्यक्षे अने मरणान्त उपधात- स्पे थर्थात् रोगादिजनक असातवेदनीयहपे परिणमे छे अने ते वधना हेतुभूत थाय छे, अने वध जीवनो ज धती होवाधी वपना हेतुक्त अमातवेदनीय प्रदेशी जीवकृत छे, माटे 'चैतन्यकृत कर्मा होय छे' एम कह्यं छे.
- २ \* 'ज्ञानावरणीयादि आठ कर्ममांनी कोइ पण एक प्रकृतिने वेदतो बीजी केटली प्रकृतिओने बेदे'-ए विचार वेदावेद पदमां छे. ज्ञानावरणीय कर्मने वेदतो आठ कर्मप्रकृतिने वेदे. ज्यारे मोहनीय कर्मनो क्षय थाय त्यारे ते सिवाय सात कर्म प्रकृतिओने वेदे. जेम सामान्य जीवने आध्यी कर्मुं तेम मनुष्य-दंगकने आध्यी जाणवं. नारकवी मांडी वैमानिक सुधी कोइ पण कर्मने वेदतो आठ ज कर्म प्रकृतिओ येदे जुओ प्रज्ञा० पद २७ प० ४९७.
- † वेदाबंशपदमां कोइ पण एक कमें प्रकृतिने नेदतो केटली प्रकृतिओने बांधे एवं प्रतिपादन करेलें छे. जीव झानावरणीय कमेंने नेदतो सात, आठ, छ अने एक कमें प्रकृति बांधे. आयुषनो बन्ध करे आठ प्रकृतिओनो बन्ध करे. आयुष न बांधे लारे ते तिवाय सात प्रकृतिओ बांधे. स्इमसंप-राय गुणस्थानके आयुष अने मोहनीय तिवाय छ कमें प्रकृतिओ बांधे, अने उपशान्तमोहादि गुणस्थानके एक नेदनीय कमेंने बांधे. जुओ−प्रजा• पद २६ ४० ४९५.

क्रीको-एवं जहा पत्रवणाए वेदावेउद्देसको सो खेव निरवसेसो माणियद्यो । वेदावंधो वि तहेव, वंधावेदो वि तहेब, वंधावंधो वि तहेब माणियद्यो जाव-वेमाणियाणं ति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति जाव-विहरति ।

उदेशक पण कहेवो. तेवी ज रीते "'बंधावेद' नामनो तथा विश्वंधावंध' नामनो उदेशक पण कहेवो. एप्रमाणे यावद्-वैमानिको सुधी जाणवुं, 'हे भगवन् ने एमज छे, हे भगवन् ने एमज छे'-एम कही याबद्-विहरे छे.

<sup>्</sup>रं बन्धाबन्ध पदमा 'कोइ पण एक प्रकृतिने बांधतो जीव बीजी केटली प्रकृतिओ बांधे' एसुं प्रतिपादन करेलुं छे. जीव ज्ञानावरणीय कर्म बांधतो सात, आउ अने छ प्रकृतिओ बांधे. आयुष न बांधे त्यारे ते सिवाय सात, आयुषपहित आठ अने मोहनीय अने आयुष विमा छ प्रकृतिओ बांधे. जुओ— प्रकृति पद २४ प० ४९९.

	"हानावरणा	दे एक प्रकृतिन		य केटली प्रकृति		यि' ते स्चित	करनार 'वेदावे	दि'यच्चा.		
एक प्रकृतिनो उदय.	अन्य प्रकृतिओनो उद्य.									
	शाना •	दर्श ॰	वेद ∙	मोह•	<b>आ</b> युष	नाम	गोत्र	<b>अन्त</b> राय		
ज्ञानावरण.	3	9	9	9	9	9	٩	9		
द्र्शनायरण.	9	٩	9	٩	9	9	9	9		
वेदनीय.	9-0	ŋ o	9	9-0	9	9	٩	7~0		
मोहनीय.	٩	٩	9	9	9	9	٩	9		
भागुष.	9-0	9-0	9	9-0	9	9	4	9-0		
नाम,	9-0	9-0	9	9-0	9	9	4	9-0		
गोत्र.	9-0	9-0	9	9-0	9	9	1	9-0		
अन्तराय.	9	9	٩	9	٩	3	9	1		
	हानावर प्राटि	एक प्रकृतिनाः	न्द्रयमां अस्त्र है	केटली प्रकृतिओ	नो बन्ध होत	ते स्वीत का	तर 'वैहाबस्ध'	Jeg -		
एक प्रकृतिनो उदय.	An and a start	An signati		एउटा प्रहातका एस प्रहातकोनी		or Charles and	4 4 4 4	7 41		
	श'ना ॰	दर्श०	वेद०	मोह∙	<b>আ</b> শু •	नाम	गोत्र	धन्त•		
जानावरण.	9-0	9-0	9	9-0	9-0	9-0	9-0	9-0		
दशेनावरण,	9-0	9-0	٩	9-0	9-0	9-4	9-0	9-0		
वेदनीय.	9-0	9-0	9-0	9-0	۵- ۱	٥ – ٩	9	9-0		
मोहनीय.	9	<b>'</b> 1	٩	9	°•	9	9	9		
आयुष.	9-0	9-0	9-0	9-0	9-0	9-0	9	9-0		
नाम.	9-0	9-0	9-0	9	9-0	9-0	9-0	9- a		
गोत्र.	9-0	9-0	9-0	9 0	9 0	9	9 0	9~0		
भन्तराय.	9-0	9-0	9	9-0	9-0	9 0	9-0	9-0		

ज्ञागागरणादि एक अञ्जीतना बन्धमां अन्य केटली प्रशृतिजीनो उद्य होस ते स्चित करनार 'बन्याबेद' यन्त्र.

एक प्रकृतिनो वन्त्र.	गन्य प्रकृतिनो उद्य.							
	श् <b>न</b> (०	दर्शक	बद्	मोह्	अधुक	नान•	गः। त्र ०	क्षाःत व
ज्ञानागरण.	٩	9	٩	Ί	9	9	9	9
दर्शनावरण.	i	ๆ	9	9	9	٩	ነ	9
वेदनीय.	9- v	9-0	9-0	9-0	9-0	٩	٩	9-0
मोहनीय.	٩	9	٩	٩	٩	9	9	3
आयुप.	9	9	9	9	9	٩	9	9
नागं.	9	7	٩	9	4	9	9	9
गोत्र.	9	٩	9	9	9	٩	9	9
अन्तराय.	9	9	9	3	9	9	9	9

्रहानावरणादि एक प्रकृतिना बन्धारा अन्य केटली प्रकृतिञ्जोनो बन्ध होय ने सृष्टित करनार 'बन्धायन्थ' **यन्त्र**.

एक प्रकृतिनी बन्ध.		अन्य प्रकृतिओंनी बन्ब.								
	ज्ञ¦ना □	दर्भव	वेद •	م برابه	अपि •	नाम •	गोत्र •	अस्त •		
शानावरण.	9	9	9	9	9-0	9	9	٩		
दर्शनावरण.	9	9	9	٩	9-0	9	9	9		
वेद्दनीय.	9- 0	9-0	9-	۹ -	9	9-0	9-0	9		
मोहनीय.	٩	٩	9	٩	<b>%-0</b>	٩	9	9		
आयुष.	9	٩	٩	٩	9	1	9	٩		
नाम.	9	9	3	7 <b>—</b> •	9	9	9	1		
गोत्र.	٩	٩	9	9-0	9-0	٩	٩	9		
अन्तराय.	1	3	9	9	9-0	1	9	٩		

सुचना-आ यन्त्रीमां ज्यां ज्यां एक अंक अने शूच साथे आवेलां छे त्यां तो ते प्रकृतिना उदयादिक विकरणे समजना.

<sup>\*</sup> बन्धानेद पदमां 'कोह पण एक वर्गप्रकृतिने बांधतो केटली प्रकृतिओने नेदे' एवं प्रतिपादन करेलुं छे. जीव ज्ञानावरणीय दर्ग बांधतो अवस्य आठ प्रकृतिओ नेदे. जुओ प्रज्ञा० पद २५ प० ४९४.

- ३, तद जं समणे भगवं महावीरे समदा कदायि रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेदवाओ पिडिनिक्छमित, १-किसा विद्वा जणवयविद्वारं विद्वाति । तेणं कालेणं तेणं समयणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्या, वन्नओ । तस्स जं उल्लुयतीरस्स नगरस्य विद्या उत्तरपुरिक्षमे दिसिमाय यत्थ णं यगजंबूय नामं चेदय होत्या, वन्नओ । तय जं समणे भगवं महावीरे समदा कदायि पुषाणुपुष्टि चरमाणे जाव-यगजंबूय समोसडे । जाव-परिसा पिडिगया । 'मंते'सि भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंद्द नमंसद, वंदिसा नमंसिसा यवं वयासी-
- ध. [त्र०] अणगारस्स णं मंते! मावियप्पणो छट्टंछट्टेणं अणिक्सिलेणं जाव-आयावेमाणस्स तस्स णं पुरिच्छिमेणं अवहं दिवसं नो कप्पति हत्यं वा पावं वा जाव-ऊरं वा आउट्टावेलप वा पसारेलप वा, पश्चिक्छिमेणं से अवहं दिवसं अप्पति हत्यं वा पावं वा जाव-ऊरं वा आउट्टावेलप वा पसारेलप वा। तस्स णं अंसियाओ छंवति, तं चेव वेजे अदक्खु, र्रासि पाडेति, ईसि पाडेला असियाओ छिंदेखा, से नूणं अंते! जे छिंदित तस्स किरिया कज्जिति, जस्स छिज्ञित नो तस्स किरिया कज्जिद जण्णत्येगेणं धम्मंतराइपणं ? [उ०] हंता गोपमा! जे छिंदित जाव-धम्मंतराइपणं। 'सेवं अंते! सेवं भंते' शि

#### सोलसमे सए तईओ उद्देसी समची।

३. स्वारबाद श्रमण भगवंत महावीरे अन्य कोई दिवसे राजगृह नगरना गुणसिलक चैलयी नीकळी बहारना बीजा देशोमां विहार कर्यों. ते काळे ते समये उल्लकतीर नामनुं नगर हतुं. वर्णक. ते उल्लकतीर नामना नगरनी बहार ईशान कोणमां एकजंबूक नामनुं चैल्य हतुं. वर्णक. स्थार पछी अनुक्रमे विचरता श्रमण भगवंत महावीर अन्य कोई दिवसे एकजंबूनामक चैल्यमां समोसर्था, यावत्—सभा पाछी गइ. स्यार पछी 'भगवन' ! एम कही भगवंत गीतम श्रमण भगवंत महावीरने वादी नमी स्था प्रमाणे बोल्या——

उलक्ती∢-

ध्र. [प्र०] हे भगवन् ! "छट्ट छट्टना तपपूर्वक यावत्—निरंतर आतापना लेता भावितात्मा एवा अनगारने दिवसना पूर्वार्ध भागमां पोताना हाथ, पग, यावत्—उरु—साथळने संकोचवा के पहोळा करवा कल्पता नथी, अने दिवसना पश्चिमार्ध भागमां पोताना हाथ, पग, यावत्—उरुने संकोचवा धने पोहळा करवा कल्पे छे. हवे [कायोत्सर्गमां रहेला] एवा ते अनगारने [नासिकामां] अशों लटकता होय अने ते अशोंने कोई वैच लुए, जोईने ते अशोंने कापवाने ते ऋषिने भूमि लपर स्वादीने तेना अशों कापे तो हे भगवन् ! ते कापनार वैचने क्रिया लागे के जेना अशों कपाय छे तेने धर्मांतराय रूप क्रिया सीजी पण क्रिया लगे ! [उ०] हे गौतम ! हा, जे कापे छे तेने धर्मांतराय सिवाय बीजी क्रिया नथी लागती. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे,

काउरसम्बद्धाः सहिलाः मुनिना अर्थने कापः नार वैश्व अने मुनिने किया लागेके नहि हैं

#### सीळमा शतकमां तृतीय उदेशक समाप्त.

#### चडत्थो उद्देसो.

१. [प्र०] रायिषे जाब-एवं वयासी-जावितयं णं मंते ! अन्नगिलायए समणे निगांथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरपसु नेरतिया णं वासेण वा वासेहिं वा (वाससएण वा) वाससएहिं वा सर्वति ! [उ०] णो तिणद्रे समद्रे ।

# चतुर्थ उद्देशक.

रै. [प्र०] राजगृहमां यावत्—आ प्रभाणे बोल्या के—हे भगवन्! अञ्चग्लायक (अञ्च विना ग्लान घएलो—नित्यभोजी) अमण निर्प्रेष जेटलूं कर्म खपाचे तेटलूं कर्म नैरियक जीवो नरकमां एक वरसे, अनेक वरसे के सो वरसे खपाचे ! [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्प-यथार्थ नथी.

नित्य गोशी श्र**मण** सी वररो नेश्चिको जेटकी कर्मगी निजे**श** करेशे

४ काथोस्सर्गना अभिमहबाद्धा अने निरन्तर छहना तपपूर्वक झातापना छेता आवितातमा साधुने बायोत्सर्गमा रहेला होवाथी दिवसना पूर्व भागमां हस्त्रावि अस्पनी संकोच करवा ने कहेप, अने दिवसना पिक्षम भागमां कापोत्सर्ग निह होवाथी हस्त्रादि अवययो संकृत्रित के पहोटा करवा करपे. इने कापोस्सर्गमां रहेका ते साधुने नासिकामां अर्घ सटकता होय, तेने कोई वैध लुए अने ते साधुने सूचाडी अर्शने कापे तो ते वैद्यने धर्में विद्यार्थी सरकार्यमां भवतिक्य ग्रम किया होय, अने साधु निर्व्यापार होवाबी तेने ग्रम किया पण न होय, पण श्रमध्यानना विच्छेदशी के अर्गछेर्त्त अनुमोदन करवाबी तेने वर्षान्तराय होव-दीका,

<sup>1 &#</sup>x27;बाससरहिं' प्रति वाठो म सम्बन्ध मतिमाति । १ मे • सू-

- २. [प॰] जावतियं णं भंते ! चउत्थमत्तिष समणे निग्गंथे कम्मं निज्ञरेति एवतियं कम्मं नरपञ्च नेराया वासस्यणं या वाससपिं वा याससहस्तेष्टिं वा सवयंति ? [उ॰] णो तिणहे समहे ।
- े ३. [प॰] जावतियं णं मंते ! छटुभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्ञरेति एवतियं कम्मं नरपञ्च नेरहया वाससहस्सेण वा वाससहस्सेहिं या वाससयसहस्सेण वा खवयंति ! [उ॰] णो तिणट्ठे समट्ठे ।
- ४. [प्र०] जावतियं णं भंते ! अट्टमभिष्य समणे निग्गंथे कम्मं निज्ञरेति पवितयं कम्मं नरपसु नेरितया वाससयस-इस्सेण वा वाससयसहस्सेहिं वा वासकोडीप वा खवयंति ! [उ०] नो तिणट्टे समट्टे ।
- 4. [प्र0] से केणट्रेणं मंते ! एवं बुधार-'जावितयं अज्ञिगिलातए समणे निग्गंथे कममं निजारित एवतियं कममं नरपसु नेरितया वासंण वा वासिद्धिं या वाससएण वा नो स्वयंति, जावितयं चउत्थमिष्य-एवं तं चेच पुत्रमणियं उच्चारेववं, जाव-वासकोडाकोडीए वा नो स्वयंति' ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे जुन्ने जराजज्ञिरियदेहे सिढिलतयावित्तरंग-संपिणद्भगत्ते पविरलपिसिडियदंतसेढी उण्हाभिहए तण्हाभिहए आउरे मुंग्निए पिवासिए दुव्वले किलंते एगं महं कोसंबगंतियं सुकं जिल्ले गंठिलें चिक्कणं वाइदं अपित्तयं मुंडेण परसुणा अवक्रमेज्ञा, तए णं से पुरिसे महंताइं २ सहाइं करेइ, नो महं-ताइं २ दलाई अवहालेइ, एवामेय गोयमा ! नेरियणं पादाई कम्माई गाढीकथाई चिक्कणीकथाई-एवं जहा छट्टसए, जाव-पं नो महापज्यसाणा भवंति । से जहानामए केइ पुरिसे अहिकर्राणं आउडेमाणे महया० जाव-नो महापज्यसाणा भवंति । से

चतुर्व मक्तप्दि तप करनार शमण तेटकी नैरियको सहस्रो व-रही कमेनी निर्जरा करें!

- २. [प्र०] हे भगवन् । चतुर्यभक्त (एक उपवास) करनार श्रमण निर्प्रेय जेटलुं कर्म खपावे तेटलुं कर्म नैरियक जीवो नरकमां सो यरसे, अनेक सो यरसे के हजार बरसे खपावे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्य नथी.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! छट्ट भक्त (वे उपवास) करी श्रमण निर्मेष जेटलुं कर्म खपावे तेटलुं कर्म नैरियको नरकमा एक हजार बरसे, अनेक हजार बरसे के एक छाख बरसे खपावे ! [उ०] हे गौतम ! ए अर्ध समर्थ नथी.
- ४. [प्र०] हे भगवन् ! अप्टम भक्त (त्रण उपवास) करी श्रमण निर्प्रथ जेटलुं कर्म खपावे तेटलुं कर्म नैरियको नरकमां एक हाख वरसे, अनेक लाख वरसे के एक त्रोड वरसे खपावे ! [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी.
- ५. [प्र०] हे भगवन् ! दशम भक्त (चार उपवास) करनारो श्रमण निर्पय जेटर्स कर्म खपावे तेटर्स कर्म नैरियक जीवो नरकर्मा एक कोट वरसे, अनेक फ्रोड वरसे के कोटाकोटी वरसे खपावे ! [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी.

श्रमणने अपिक बर्मेश्वय धवानु बर्मणः ६. [प्रठ] हे भगवन् ! ए प्रमाण आप शा हेतुथी वही छो के 'अनग्रायक श्रमण निर्मंथ जेटलुं कर्म खपाने तेटलुं कर्म नैरियंक जीवो नरक्षमां एक बरसे, अनेक बम्मे के एक सो नरसे पण न खपाने, अने चतुर्थमक्त करनार श्रमण निर्मंथ जेटलुं कर्म खपाने तेटलुं कर्म से वरसे के एक बरमे न खपाने—इस्यादि बधुं पूर्व सूत्रनी पेठे कहेतुं, यायत्—कोटाकोटी बरसे न खपाने'! [उ.ठ] हे गौतम! जेम कोई एक घरले, घटपण्थी जर्जरित शरीरवाद्यो, दीला पड़ी गएला अने चामडीना बद्धीया बड़े व्याप्त थयेला गात्रवाद्यो, थोडा अने पड़ी गथेला दांतवाद्यो, गरमांथी ज्याकुल घयेलो, तरसाथी पीडाएल, दुःखी, भूख्यो तरसा, दुर्बल अने मानसिक क्रेश-बाळो पुरुष होय अने ते एक मोटा कोशंव नामना गृथ्यनं सुकी, बांकी चुंकी गांटोबाळी, चिकणी, बांकी अने निराधार रहेली गंडिका—गंडिरी उपर एक मुंट (बुडा) परुष्ठ बड़े प्रहार करें, तो ते पुरुष मोटा मोटा शब्दो (इंकार) करे पण मोटा मोटा ककड़ा न करी शके. एज प्रमाणे हे गोतम! करियकोए पोताना पाप कर्मो गांट कर्यों छे, चिकणा कर्यों छे—इस्यादि बधुं \*छट्टा शतकमां कहा। प्रमाणे कहेतुं. यावत्—तथी ते नेरियको | अस्यन येदनाने बेदना छनां पण महानिजराबाद्या अने ] निर्वाणरूप फलबाद्य बता नथी. बद्धी जेम कोई एक पुरुष एक गुरुष सेथा गांटिको मोटा शब्द करे [परन्तु ते एरणना स्थूल पुरुखोने तोडबाने समर्थ धतो नथी, ए प्रमाणे नैरियको गांड कर्मवाद्या होये छे, तथी तेओ ] यावत्—महापर्यवसानवाद्या नथी. तथा जेम कोई एक तरुण, बल्बान्, यावत्—मेधार्च अने निपुण कारीगर पुरुष एक मोटा शिमद्याना हक्ष्ता लोठी, जटाविनानी, चिकारा विनानी, सीधी अने आधारवाद्यी गंडिका उपर तीक्षण कुहाडाबढ़े प्रहार करे तो ते पुरुष मोटा मोटा शब्दो करतो नथी पण मोटा मोटा हक्तने पाह के प्रमण निर्मंथीए पोताना

१ 'सहरसेण वा' इति पाटो छपुसति एव उपलब्धने परं सभीशांगः, 'बाससहरसेहिं' इति पाटस्तु न सम्बद्ध प्रतीयते ।

६ में भग० सं० ने श्रु॰ ६ उ० ९ पू॰ २५६.

1

कहानामय केर पुरिसे तक्णे बलवं जाव-मेहाबी निजणिसप्योवगए एगं महं सामिलगंडियं उल्लं अजिडिलं अचि-कृषं अवाददं सपित्रयं तिक्केण परसुणा अक्रमेजा, तप णं से णं पुरिसे नो महंताइं २ सद्दाएं करेति, महंताइं २ दलाई अबदालेति, वबामेव गोयमा! समणाणं निग्गंथाणं अहावादराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं णिट्टियाइं कयाइं, जाय-खिल्पामेव परिविद्धत्थाइं भवंति जावतियं तावतियं जाय-महापज्जवसाणा भवंति । से जहां वा केइ पुरिसे सुक्कतणहत्थगं जायतेयंसि अक्तिकेजा-पवं जहां छट्टसप तहा अयोकवल्ले वि, जाव-महापज्जवसाणा भवंति, से तेणट्टेणं गोयमा! एवं युश्वइ -'जावितयं अक्षाइलायप समणे निग्गंथे कम्मं निजारेति-तं चेय जाय-वासकोडाकोडीए वा नो खययंति । 'सेवं भंते! सेवं भंते'! सि जाय-विदराः।

# सोलसमे सए चउत्थो उद्देसो समचो।

कर्मीने यथास्थूल, शिथिल यावत्—निष्टित करेलां छे, यावत्—ते कर्मी शीघ ज नाश पामे छे अने यावत्—तेओ (अमणो) महापर्यवसान-भाळा थाय छे. वळी जेम कोइ एक पुरुप सूका घासना पूळाने यावत्—अप्रिमां फेंके [अने ते शीघ वळी जाय ए प्रमाणे अमण निर्मन्योना यथा बादर कर्मी शीघ नाश पामे छे.] तथा पाणीना टीपाने तपावेल लोडाना कढायामां नाखे तो ते जलदी नाश पामे ए प्रमाणे श्रमण निर्मन्यना कर्म शीघ विष्यस्त थाय छे—इस्यादि वधुं \*छट्टा शतकर्ना पेठे कहेतुं, यावत्—तेओ महापर्यवसानवाळा थाय छे. माटे हे गीतम! ते हेतुषी एम कह्युं छे के 'अन्नरलायक श्रमण निर्मेष जेटलुं कर्म खपावे'—इस्यादि वधुं पूर्व प्रमाणेज कहेतुं—यावत् तेटलुं कर्म कोटाकोटी वरसे पण नैरियक जीव न खपावे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे—' एम कही यावद्—विहरे छे.

# सोळमा शतकमां चतुर्थ उद्देशक समाप्त-

#### पंचमो उद्देसो.

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं उहुपतीरे नामं नगरे होतथा, वन्नओ। एगजंव्ण चेहए, वन्नओ। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसहे। जाव-परिसा पञ्ज्यासित। तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्ने देविदे देवराया वज्जपाणी-पवं जहेच वितियउद्देसए तहेच दिश्चेणं जाणिवमाणेणं आगभो, जाव-जेणेच समणे मगवं महावीरे तेणेच उवागच्छर, २ जाव-नमंसिसा एवं वयासी-[म्र] देवे णं मंते! महहिए जाव-महेसक्ने बाहिरए पोग्गले अपियाहत्ता पम् आगमित्तए? [उ०] नो तिणहे समद्वे। देवे णं मंते! महहिए जाव-महेसक्ने बाहिरए पोग्गले परियाहता पम् आगमित्तए? [उ०] हंता पम्। [प्र०] देवे णं मंते! महहिए जाव-महेसक्ने बाहिरए पोग्गले परियाहता पम् आगमित्तए? [उ०] हंता पम्। [प्र०] देवे णं मंते! महहिए पर्ण अभिलावेणं २ गमित्तप, एवं ३ मासित्तए वा, वागरित्तए वा, ४ उम्मिसावेत्तए वा निमिसावेत्तए वा, ५ आउहावेत्तए वा पसारेत्तए वा, ६ ठाणं वा सेजं वा निसीहियं वा चेहत्तए वा, एवं ७ विउच्चित्तए वा, एवं ८ परियारावेत्तए वा जाव-हंता पम्। इमाइं अट्ट उक्लित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, इमाइं०२ पुच्छिना संमंतियवंदणएणं वंदति, संमंतिय० २ वंदित्ता तमेच दिसं जाणविमाणं दुरूहित, दुरूहिता जामेच दिसं पाउच्म्रप तामेच दिसं पढिनपः

## पंचम उद्देशक.

१. ते काळे, ते समये उहुकतीर नामनुं नगर हतुं. वर्णक. एक ग्रंयूक नामनुं चैल हतुं. वर्णक. ते काळे ते समये स्वामी समीसर्या. यावत्—सभा पर्युपासना करे छे. ते काळे ते समये शक देवेन्द्र देवराज वजपाणि—इत्यादि जैम बीज। उदेशकमां कहेवामां आव्युं छे तेम दिव्य विमान वडे अहीं आव्यो, अने यावत्—जे तरफ श्रमण भगशंत महावीर हता ते तरफ जइ यावत्—मंगे आ प्रमाण बोल्यो में [१०] हे भगवन्! मोटी ऋदिवाळो यावत्—मोटा सुख्वाळो देव वहारना पुद्गळोने प्रहण कर्या समर्थ छे ! [३०] हे शक ! ता, ए अर्थ समर्थ नथी. [४०] हे भगवन्! मोटी ऋदिवाळो यावत्—मोटा सुख्वाळो देव वहारना पुद्गळोने प्रहण करीने अर्थ समर्थ छे ! [३०] हे शक! हा समर्थ छे. हे भगवन्! गोटी ऋदिवाळो देव यावत्—एज प्रमाणे बहारना पुद्गळोने प्रहण करीने १ जवाने, २ बोळवाने, ३ उत्तर देवाने, ४ आंख उपाडवाने के आंख मींचवाने, ५ शरीरना अवयवोने रांकोचवाने के पहोळां करवाने, ६ स्थान शब्या के निपद्या—स्वाध्यायभूमिने मोगववाने, ७ विकुर्ववाने अने ८ परिचारणा—विषयोगभोग करवाने समर्थ छे ! [३०] टा यावत्—समर्थ छे. ते देवेन्द्र देवराज पूर्वोक्त संक्षित आठ प्रश्नो पूछी अने उत्सुकता—उतावळ पूर्वक भगवंत गहावीरने वादी नेज विषय विमान उपर चढी ज्यांथी आन्यो हतो त्यां ते पाछो चाल्यो गयो.

उलकतीर नग**र-**एउ*वेब्*क वैस्**व**ः

देव बाह्य पुत्रन्थेनै ज्ञाउण कर्षा सिवाय आर अध्यक्त समर्थे

क्षि पुत्र होने श्रहण क्रमन १५ मानवा समने है १

शक्ष पुद्रहोने अन्य करिने बोलवा वर्गरे विया करवा ममर्थ छे ?

६ \* मग• र्थं • २ था० ६ उ० १ पृ० २५६-२५७.

१ † भग० र्षं ० ४ श० १६ ड० २ प्ट० ५.

<sup>ि</sup>सर्व संसारी जीनो बाह्य पुरुकोने प्रहण कर्या खिवाय कोइ पण किया करी शकता नथी, परन्तु 'महद्धिक देव समर्थ होवायी कदान नाह्य पुरुकोने प्रहण कर्या खिवाय गमनादि किया करे' एवी संभावनाची शक आ प्रश्न पूछे छे.

२. [प्र॰] 'भंते' ति भगवं गोयमे समणं मगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदिता नमंसिता एवं वयासी-अजदा अं मंते! सके देविंदे देवराया देवाणुप्पियं चंदति, नमंसति, सकारेति, जाव-पद्धवासति, किण्णं मंते! अञ्ज सके देविंदे देवराया हेवाणुष्पियं अट्ट उक्किसपिसणवागरणाई पुच्छइ, २-च्छिता संभंतियबंदणपणं वंदति णमंसति, २ जाव-पिडगप ! [उ०] 'गोव-मा'हि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं बल गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं महासके कप्पे महासमापे विमाणे दो देवा महहिया जाव-महेसक्खा पगविमाणंसि देवताप उववजा, तं जहा-मायिमिच्छदिद्विउववजप य, समावितः मादिद्विज्ववन्नए य । तए णं से मायिमिच्छादिद्विज्ववन्नए देवे तं अमायिसम्मविद्विज्ववन्नगं देवं एवं वयासी--'परिणममाणा योग्गला नो परिणया, अपरिणया: परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया'। तप णं से अमायिसम्मविद्वीउववज्ञप वेबे तं मायिमिच्छिद्दिश्चित्रवाक्षणं देवं पवं वयासी-'परिणममाणा पोग्गला परिणया नो अपरिणया, परिणमंतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया'। तं मायिमिच्छिदिट्टीउववन्नगं एवं पिडहणइ, एवं पिडहणित्ता ओहि परंजह, ओहि एवंजित्ता ममं ओहिणा आभी-एर, ममं आमोपना अयमेयारुवे जाव-समुप्पजित्था-'एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुदीवे दीवे, जेणेव भारहे वाले. जेणेव उल्लयतीरे नगरे, जेणेव पगजंबुए खेरप अहापडिरूवं जाव-विहरति, तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदिसा जाव-पज्जवासिता इमं प्यारूवं वागरणं पुच्छित्तप'ति कट्ट एवं संपेद्देर, एवं संपेद्दिता चर्डाहे सामाणियसाहस्सीहिं परिवारों जहा सुरियामस्स, जाव-निग्घोसनार्यरवेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव मारहे वासे, जेणेव जङ्क्यतीरे नगरे, जेणेव एगजंबुए चेइए, जेणेव ममं अंतियं तेणेव पहारेत्य गमणाए । तए णं से सक्के देविंदे देवराया तस्स वेवस्स तं विद्यं देविहिं दिखं देवज्ञति दिखं देवाणुभागं दिखं तेयलेस्सं असहमाणे ममं भट्ट उक्किसपसिणवागरणा**रं पुच्छर, २ संभंतिप** 🔊 जाव-पश्चिगप् ।

ष्टकतुं उत्सुकता पूर्वक वादीने जवानुं कारणः

सम्बन्धि गंगदस् देवनी जग्पस्ति अने तेनो मिश्यादृष्टि देः बनी साथे संबादः परिणाम पामसां पुद्रको परिणन

कहेगायः गंगदत्त देवनुं भगः वेत पासे शागमनः

२. [प्रo] 'भगवन्'। एम कही पूज्य गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे बोल्या के-हे भगवन् ! अन्य दिवसे देवेन्द्र देवराज शक्त देवानप्रिय आपने बंदन, नमन, सत्कार यावत-पूर्यपासना करे हे, पण हे भगवन् । आजे तो ते शक्त देवेन्द्र देवराज देवानुप्रिय एवा आपने संक्षित आठ प्रश्नो पूछी अने उत्सुकतापूर्वक वांदी नमी यावत्—केम चाल्यो गयो ! [उ०] हे गौतम' । एम कही, श्रमण भगवंत महावीरे भगवंत गौतमने आ प्रमाणे कहां—हे गौतम । ए प्रमाणे खरेखर ते काळे ते समये महाद्यक कल्पना महासामान्य नामना विमानमां मोटी ऋदिवाळा, यावत्-मोटा सुखवाळा वे देवो एकज विमानमां देवपणे उत्पन्न थया, तेमां एक मायी मिथ्यादृष्टिऋषे उत्पन्न थयो अने एक अमार्था सम्यग्दिष्टिक्षे उत्पन्न थयो. त्यार पत्नी उत्पन्न थयेला ते मायिमिध्यादृष्टि देवे उत्पन्न थयेला अमायिसन्यग्दृष्टि देवने आ प्रमाणे कहां के- रपिरणाम पानता पुद्गलो 'परिणत' न कहेवाय, पण 'अपरिणत' कहेवाय. कारण के [हजी] ते परिणमे छे माटे ते परिणत नथी, पण 'अपरिणत' छे. ब्यारबाद उत्पन्न थयेला ते अमायी सम्यगृदृष्टि देवे उत्पन्न थयेला ते मायी मिथ्यादृष्टि देवने कह्यं के, परिणाम पामता पुर्गलो 'परिणत' कहेबाय, पण 'अपरिणत' न कहेबाय, कारण के ते परिणमे छे माटे ते परिणत कहेबाय, पण 'अपरिणत' न कहेत्राय. ए प्रमाणे कही उत्पन्न थयेला ते अमायिसम्यगृदृष्टि देवे उत्पन्न थयेला मायिमिश्यादृष्टि देवनो पराभव कर्यो. त्यार पछी तेण (सभ्यगृद्दष्टि देवे) अवधिज्ञाननो उपयोग कर्यो, अने अवधिद्वारा मने जोईने ते सम्यग्द्दष्टि देवने आ प्रकारनो संकल्प उत्पन्न थयो के जंबूद्वीपमां भारतवर्षमां ज्यां उल्लक्तीर नामनुं नगर छे, अने ते नगरमां ज्यां एकजंबूक नामनुं चैत्य छे, त्या श्रमण भगवंत महावीर यथायोग्य अवप्रह लेइने विहरे छे, तो लां जई ते श्रमण भगवंत महावीरने बांदी यावत्—पूर्यपासी आ प्रकारनो प्रश्न पूछवो ए मारे माटे श्रेयरूप छे, एम विचारी चार हजार सामानिक देवोना परिवार साथे-जेम रैसूर्याम देवनी परिवार कहा छे तेम आहे पण समजवं⊸ यावस्-निर्धोप नादित रवपूर्वक जे तरफ जंबृद्दीप छे, जे तरफ भारतवर्ष छे, जे तरफ उल्लुकतीर नामनु नगर छे, अने जे तरफ एकजंबूक नामनुं चैत्य छे तथा ज्यां आगळ हुं विद्यमान छूं ते तरफ आववाने तेणे (सम्यग्दृष्टि देवे) विचार कर्यो. त्यारबाद ते देवेन्द्र देवराज शक मारी तरफ आवता ते देवनो तेवा प्रकारनी दिव्य देवर्धि, दिव्य देवधित, दिव्य देवप्रभाव अने दिव्य तेजोराशिने न सहन करतो आठ संक्षिप्त प्रश्नो पूछी अने उःसुकतापूर्वक वांदी यावत्-चाल्यो गयो.

२ क 'परिणाम पामनां पुद्रलोने परिणत न कहेवा जोइए, कारण के वर्तमानकाळ अने भूतकाळनो परस्पर विशेष छे, तेवी ते अपरिणत कहेवाय, तेनो परिणाम बाल छे माटे ते परिणत न कहेवाय'- ए सिथ्यार्राध्देवलुं कथन छे. सम्बग्धि देव तेने एवो उत्तर आपे छे के परिणाम पामता पुद्रलो परिणत कहेवा जोइए, पण ते अपरिणत न कहेवाय, केम के परिणाम पामे छे एटले ते अमुक अशे परिणत थया छे, पण सर्वथा अपरिणत नथी. 'परिणमे छे' एखं कथन हो परिणामना सद्मावमां ज होइ वाके, ते सिवाय न होइ शके. जो परिणामनो सद्भाव मानीए तो अमुक अंशे परिणतपणं अवस्य मानशुं जोइए. जो अमुक अंशे परिणत छता पण परिणतपणं न मानवामां आवे सो सर्वदा परिणतपणानो अभाव थाय—टीका.

- दे. आवं व जं समने भगवं महावीरे भगवंशो गोयमस्स एयमहुं परिकहित तावं च जं से देवे तं देसं हवभागद। तप जं से देवे समनं भगवं महावीरं तिक्खुको वंदित नमंसित, वंदिका नमंसिका पवं वयासी—[प्रo] एवं खलु
  संदे ! महासुके कणे महासमाने विभागे पगे मापिमिक्छिदिष्टुडववक्षप देवे ममं एवं वयासी—'परिणममाना पोग्गला नो परिव्या, कपरिजया, परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया'। तप जं भहं तं मापिमिक्छिदिष्टुडववक्षगं देवं एवं वयासी—
  'वरिणममाना पोग्गला परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया, से कहमेयं मंते ! एवं' १
  'गंगदक्ता'दि समने मनवं महावीरे गंगदक्तं देवं पवं वयासी—'अहं पि जं गंगदक्ता! पवमाइक्जामि ४—परिणममाना पोग्गला
  आव—नो अपरिणया, सक्तमेसे अहे । तप जं से गंगदक्ते देवे समणस्स मगवओ महावीरस्स अंतियं एयमहुं सोबा निसम्म
  हरू-तुद्ध समनं मगवं महावीरं वंदित, नमंसित, वंदिक्ता नमंसिका नक्तासके जाव—पञ्चवासति।
- ४. तप णं समणे भगवं महाबीरे गंगदत्तस्स देवस्स तीसे य जाव-अग्मं परिकहेइ, जाव-आगहर भवति । तप णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोखा निसम्म इहतुहे उहाए उहेति, उ० २ उहेत्ता समणं भगवं महाबीरं धंदति नमंसति, बंदित्ता नमंसित्ता एवं घयासी - [प्र०] अहं णं मंते ! गंगदत्ते देवे कि भवसिद्धिप, अभव-सिदिप ? [४०] एवं जहा स्रियाओ, जाव-विश्वीसितिविहं नहविद्धि उवदंसेति, उवदंसेता जाव-तामेव दिसं पडिगए।
- ५. [४०] 'मंते'चि मगवं गोयमे समणं मगवं महावीरं जाव-एवं वयासी-गंगदत्तस्स णं मंते! देवस्स सा विद्वा वैविद्दी दिखा देवज्ञती जाव-अणुप्पविद्वा! [उ०] गोयमा! सरीरं गया, सरीरं अणुप्पविद्वा, क्रूडागारसालादिद्वंतो, जाव-सरीरं अणुप्पविद्वा। अहो णं मंते! गंगदत्ते देवे महिद्दिए जाव-महेसक्खे।
- ६. [प्र०] गंगदंत्तेणं भंते ! देवेणं सा दिखा देविही दिखा देवज्ञती किण्णा सदा, जाव-गंगदत्तेणं देवेणं सा दिखा देविही जाव-अभिसमन्नागया ! [उ०] 'गोयमा'दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं सलु गोयमा ! तेणं
- ३. जे बखते अमण भगवंन महावीर पूर्व प्रमाणेनी वात पूज्य गौतमने कही रह्या छे तेज बखते ते (सम्यग्दृष्टि देव) त्यां बीव आज्यो अने पछी ते देवे अमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी बांदी नमी आ प्रमाणे कह्युं के—[प्र०] हे भगवन् ! महाशुक्र कल्प-मां महासामान्य नामना विमानमां उत्पन्न पण्छा मायी मिथ्यादृष्टि देवे मने आ प्रमाणे कह्युं के परिणाम पामतां पुद्गलो 'परिणत' न कहे-वाय, पण 'अपरिणत' कहेवाय. कारण के ते पुद्गलो हजी परिणमे छे माटे ते 'परिणत' न कहेवाय, पण 'अपरिणत' कहेवाय. कारण के ते पुद्गलो परिणमे छे, माटे ते 'अपरिणत' न कहेवाय. कारण के ते पुद्गलो परिणमे छे, माटे ते 'अपरिणत' न कहेवाय, पण 'परिणत' कहेवाय. तो हे भगवन् ! ए मारुं कथन केवुं छे ! [उ०] 'गंगदत्त' ! एम कही अमण भगवंत महावीरे ते गंगदत्त देवने आ प्रमाणे कह्युं के—हे गंगदत्त ! हुं पण ए प्रमाणे कहुं छुं ४, के परिणाम पामता पुद्गलो यावत्—'अपरिणत' नथी पण 'परिणत' छे, अने ते अर्थ सत्य छे. त्यार पछी अमण भगवंत महावीर पासेथी ए वातने सांमळी अश्गरी ते गंगदत्त देव हर्षवाळो अने संतोषवाळो थई अमण भगवंत महावीरने वांदी नमी बहु दूर निह अने बहु नजीक नहीं एवी रीते पासे वेसी तेओनी पर्युपासना करे छे.

गगदस्तनो भग-वंतने मक्षः

४. पछी श्रमण मगवंत महावीर ते गंगदत्त देवने अने ते मोटामां मोटी सभाने धर्मकथा कही, यावत्—ते आराधक थयो. पछी ते गंगदत्त देव श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्मने सांभळी अववारी हर्ष अने संतोषग्रक्त थई उमो थयो, उभो घईने श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे बोल्यो के—[प्र०] हे भगवंत! हुं गंगदत्त देव भवसिद्धिक छुं के अभवसिद्धिक छुं! [उ०] जेम \*सूर्याम देव संबन्धे कहुं तेनी पेठे बधुं जाणहुं; यावत् ते गंगदत्त देव बत्रीस प्रकारना नाटक देखाडी ज्यांथी आव्यो हतो त्यां पाछो चाल्यो गयो.

गंगदस देव भवति-दिक हे के अभवति-दिक हे इत्यादि मझ-

५. [प्र0] 'हे भगत्रन्! एम कही प्रथ गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कहीं के—हे भगवन्! ए गंगदत्त देवनी ते दिव्य देविंध, दिव्य देविंध, दिव्य देविंध, दिव्य देविंध, दिव्य देविंध, दिव्य देविंध, विव्य देविंध, विव्

गंगदश्तना दिण्य देवदि वया गर्द

६. [प्र॰] हे भगवन्! गंगदत्त देवे ते दिच्य देविध अने दिच्य देवधुति शायी गेळवी, यावत्—दिच्य देविध तेने शायी अभिसमन्वा-गत—प्राप्त थई! [उ॰] 'भो गौतम'! एम कही श्रमण भगवंत महावीरे पूज्य गौतमने आ प्रमाणे कह्युं के—हे गौतम! ते काळे ते समये आज

४ \* रावपरेजीय ए० ४४-१.

५ 🛊 खुओ राजपसेचीन प० ५६-२.

कालेणं तेणं समएणं इहेय जंबुद्दीये दीवे भारहे वासे हृत्यिणापुरे नामं नगरे होत्या, वस्त्रयो । सहसंववणे उद्धाणे, वस्त्रयो । तत्थ णं हृत्यिणापुरे नगरे गंगदत्ते नामं गाहावती परिवसित, अहे जाव—अपरिभूए । तेणं कालेणं तेणं समएणं सुणिसुवर्षे अरहा आदिगरे जाव—सञ्चन्न सम्वद्दिसी आगासगएणं चक्रेणं जाव—पकिंक्षमाणेणं प० २ सीसगणसंपरिवृद्धे पुत्राश्चपुर्वि वरमाणे गामाणुगामं । जाव—जेणेव सहसंववणे उज्जाणे जाव-विहरित । परिसा निग्गया, जाव—पज्जवासित । तर पं से गंगदत्ते गाहावती इमीसे कहाए लड्डे समाणे हटुनुटु - जाय— कयवित जाव—सरीरे साओ गिहाओ पिडिनिक्समित, पिडिनिक्समित, पायविहारचारेणं हित्यणागपुरं नगरं मन्हांमन्झेणं निग्गच्छित, निग्गच्छिता जेणेव सहसंववणे उज्जाणे क्षेणेव मुणिसुवृद्ध अरहा तेणेव उवागच्छद्द, ते० २-गव्छित्ता मुणिसुवृद्धं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिण । जाव—तिविहार पज्जवासणाए पञ्जवासित ।

- ७. तए णं मुणिसुद्वए अरहा गंगदसस्स गाहावितस्स तीसे य महिति० जाव-परिसा पिटिगवा। तए णं से गंगदसे गाहावती मुणिसुद्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मं सोखा निसम्म हटुतुट्ट० उट्टाए उट्टेित, उ० २-सा मुणिसुद्वयं अर्र्ष्ट वंदिन नमंसित, वंदिसा नमंसिसा एवं वयासी-सह्हामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, जाव-से जहेयं तुज्हे बद्द, जं नवरं देवाणुण्पिया! जेटुपुसं कुहुंवे टावेमि, तए णं अर्ह देवाणुण्पियाणं अंतियं मुंडे जाव-पद्यामि। अद्दासुद्दं देवाणुण्पिया! मा पिडवंधं।
- ८. तए णं से गंगदत्ते गाहावा मुणिसुव्यणं अरहया एवं द्वते समाणे हटुतुद्दृ मुणिसुव्यं अरहं वंदित नमंसित, वंदित्ता नमंसित्ता मुणिसुव्ययस अरहओ अंतियाओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पिडिनिष्प्यमित, २-मित्ता, जेणेव हित्यणा-पुरे नगरे जेणेव सप गिहं तेणेव उवागच्छति, ते० २-गच्छित्ता विउलं असणं पाणं जाव-उवक्षडावेति, उवक्षडावेत्ता मित्त-णाति-णियग० जाव-आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जहा पूरणे, जाव-जेटुपुत्तं कुडुंवे ठावेति।तं मित्त-णाति-जाव-जेटुपुत्तं च आपुच्छति, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहाणे सीयं दुरूहित, पुरिस० २ दुक्रहित्ता मित्त-णाति-नियग० जाव-

ह स्तिनापुर. सहस्त्राझवणः गंगदन्तः गृहपतिः

भुनिमुद्रत खामीनु आगमनः जंबूद्वीपमां, भारतवर्षमां हिस्तिनापुर नामनुं नगर हतुं. दर्णन. त्यां सहसाम्रवण नामनुं उधान हतुं. वर्णन. ते हिस्तिनापुर नगरमां आढ्य, यायत्—अपिभृत एवो गंगदत्त नामनो गृहपति रहेतो हतो. ते काळे, ते समये आदिकर, यायत्—सर्वञ्च, सर्वदर्शा, आकाशगत चक्क-सहित, यावत्—देवोवके खेंचाता धर्मष्वजयुक्त, शिष्यगणधी संपरिवृत वर्ष पूर्वानुपूर्वी विचरता अने प्रामानुप्राम विहरता यावत्—श्रीमुनिसुवत नामे अरहंत यावत्—जे तरफ सहस्राम्ववण नामनुं उद्यान हतुं त्यां आव्या अने यावत् विहरवा त्याया. सभा वादवा नीकळी अने यावत्—पर्युपासना करया त्यापी. त्यारवाद ते गंगदत्त नामे गृहपति आवी रीते श्रीमुनिसुवत स्वामी आव्यानी वात सामळी हर्पयाळो अने संतोषवाळो धई यावत्—विकर्म करी शारिते श्रामुनिसुवत अरहंत हता त्यां आची भूनिगुवत अरहंतने व्या वार प्रदक्षिणा करी, यावत्—त्रण प्रका-रानी पर्युपासना वहे पर्युपासना करवा त्यायो.

श्रुविद्यवन स्वामीनी देशना अने गंग-दसने प्रतिबोध-

७. त्यार पर्छ। ते श्रीमुनिसुवत खार्माए ते गंगदन गृहपितन तथा ते मोटी महासभाने धर्मकथा वही; यावत्समा पाछी गई. त्यार बाद ते गंगदन नामे गृभिति श्रीमुनिसुवत अरिहंत पायेथी धर्मने मांमळी, अवधारी हर्ष तथा संतीपयुक्त थई उमी थयो, उठीने श्रीमुनिसुवत खार्माने बांदी, नर्मा आ प्रमाण बोल्यों के हे मगदन्! हुं निर्भयना प्रवचनमां श्रद्ध। वरुं हुं, यावत्—आप जे प्रमाणे कहो छो ते तेमज मानुं हुं. विशेष ए के हे देवानृश्रिय! साम मोटा पुनने कुटंबनो मुन्यगृत स्थापीने आप देवानुष्रियनी पासे मुंड धई यावत्— प्रवच्या लेवा इन्ह्यं हुं. [श्रीमुनिसुवत स्थापीए कह्यं के] हे देवानृश्रिय! जेम सुग्य थाय तेम बार, विलंब न कर.

गगवत्तनी दीक्षा.

८. ज्यारे ते मुनिसुत्रत स्वाभाए ते गंगवत्त नाम गृहपानि ए प्रमाण कहां त्यारे ते हर्पयुक्त अने संतीपयुक्त धई मुनिसुत्रत स्वाभीने बांदी, नर्गा मुनिसुत्रत स्वाभी पासेथी सहग्राम्रवण नामना उद्यागर्थी नीकटी जे तरफ हस्तिनापुर नगर छे अने ज्यां पोतानं घर छे त्यां आज्यो. आवीने विपुत्र अश्वन, पान—यावत्—तैयार करार्या पोताना मित्र, ज्ञाति खजन वगेरेने नोतर्या. पटी स्नान करी "पूरण शेठनी पेटे यावत् पोताना मोटा पुत्रने बुटंचमां मुन्य तर्राके स्थापा पोताना मित्र, ज्ञाति, त्वजन वगेरेने तथा मोटा पुत्रने पूछी हजार पुरुषवछे उपाधी शक्ताय तेवी शिविकामां वेसी, पोताना मित्र, ज्ञानि, खजन यावत् परियारवटे तथा मोटा पुत्रवडे अनुसरातो सर्व ऋदिसहित यावत्—वादिश्चना थता घोपपूर्वक हिन्तनापुरना वचोवच निकटी जे तरफ सहस्नाम्रवण नामे उद्यान छे, ते तरफ आवी तीर्थकरना छत्रादि-अतिशय जोई यावत्—पेउदायन राजानी पेटे यावत्—पोतानी मेळेज पोताना घरेणा उतार्या अने पोतानी मेळेज पंचमुष्टिक छोच कर्यो. ह्यार बाद श्रीमुनिसुत्रत स्वाभीनी पासे जई उदायन राजानी पेटे दीक्षा छीधी. यावत्—तेज प्रमाणे ते गंगदत्त अणगार अगीयार अंगो मण्यो, यावत्—एक

८ मान खं र श व व व पु ५४-५५. । भगवती खं व व श व व व व पू व व १२.

विदेशिणं जेहुपुरोष थ समणुगम्ममाणमणे सिंबहीय जाब-णादितरवेणं हत्थिणागपुरं मज्यंमज्येणं निगच्छा, निगच्छिता जेणेव सहसंबंधे उज्जाणे तेणेव उथागच्छा, ते० २-गच्छिता छत्तादिते तिरधगरातिसय पासित । ययं जहा उदायणो, जाव-सय-वेश आमरणे कोमुगा, स० २ भोमुहत्ता सयमेव पंचमुद्धियं छोयं करेति, स० २ करेता जेणेव मुणिसुवय वरहा एवं जहेव वृद्धायणे तहेव पष्टाय, तहेव यकारस अंगाहं अहिजा, जाव-मासियाय संलेहणाय सिंह मत्ताहं अणसणाय जाव-छेदेति। कंट्विं २ छेदेता माहोहय-पिंडकंते समाहियते कालमासे कालं किचा महासुके कण्ये महासमाणे विमाणे उववायसभाय देवस्थिकंसि जाव-गंगवत्त्वदेवसाय उववंशे। तयं णं से गंगवत्ते देवे अहुणोववश्यमत्त्र समाणे पंचविद्दाय पजसीय पजस-मानं गंगवत्ते तंजहा-आहारपज्यतीय, जाव- मासा-मणपजतीय। एवं खत्नु गोयमा। गंगवत्तेणं देवेणं सा दिवा देविही जाव-अभिसम्बागया।

- ्. [प्र०] गंगदत्तस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पन्नता ? [उ०] गोयमा ! ससरस सागरोषमाइं ठिती पन्नता ।
- १०. [प्र०] गंगद्ते णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउम्बर्णण ? [उ०] जाव-महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जाब-मंतं काहिति । 'सेयं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

### सोलसमे सए पंचमो उद्देसी समत्ती।

मासनी संलेखना वहें साठ भक्त-त्रीश दिवस अनशनपणे वीताची आहोचन-प्रितिक्रमण करी समाधिपूर्वक मरणसमये मृत्यु प्राप्त करी ते महाश्चक कल्पमां महासामान्य नामना विमानमां उपपात सभाना देवशयनीयमां यात्रत्—गंगदत्त देवपणे उत्पन्न थयो. पछी ते तुरतज उत्पन्न थएलो गंगदत्त देव पांच प्रकारनी पर्याप्तिवहें पर्याप्तपणाने पाम्यो. ते पर्याप्तिना पांच प्रकार आ प्रमाणे हे—आहारपर्याप्ति, यावत्—भाषा-मनःपर्याप्ति. ए प्रमाणे हे गौतम! ते गंगदत्त देवे ने दिव्य देविधे पूर्वोक्त कारणधी यावत्—प्राप्त करी छे.

गंगवस्तनी भद्दाशुक्र कल्पमा देवतरं के उत्पत्तिः

(प्र०) हे भगवन् ! ते गंगदत्त देवनी स्थिति केटला काळना कही छे ! (उ०) हे गौतग ! तेनी स्थिति सत्तर सागरोपमनी कही छे.

गंगदच देवनी स्थितिः

१०. [प्र०] हे भगवन्! ते गंगदत्त देव तेना आयुपनो क्षय थया पछी ते देवछोकथी निकळी क्यां जहां ! [उ०] हे गौतम! ते महाविदह क्षेत्रमां सिद्ध यहा, यावत्—सर्व दुःखोनो नाहा करहो. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.'

गंगदस्त देवलोनवी च्यवी क्यां अशे (

#### सोटमा शतकमां पंचम उद्देशक समाप्त.

# छट्टो उदेसो.

- १. [प्रव] कतिविहे णं भंते! सुविणदंसणे पण्णसे? [उ०] गोयमा! पंचविहे सुविणदंसणे पण्णसे, तंजहा-१ अहा-तथे, २ पयाणे, ३ चितासुविणे, ४ तविवरीय, ५ अवस्तरंसणे।
- २. [प्र॰] सुत्ते णं भंते ! सुविणं पासित, जागरे सुविणं पासित, सुत्तजागरे सुविणं पासित ? [उ॰] गोयमा ! नो सुत्ते सुविणं पासिद, नो जागरे सुविणं पासिद, सुत्तजागरे सुविणं पासिद ।

### षष्ट उद्देशक.

- १. [प्र॰] हे भगवान् ! स्वप्तदर्शन केटला प्रकारनुं कह्युं छे : [उ॰] हे गौतम ! पांच प्रकारनुं स्वप्तदर्शन कह्युं छे. ते आ प्रभाणे— स्वप्नदर्शन. १ \*पपातच्य स्वप्नदर्शन, २ प्रतान स्वप्नदर्शन, ३ चिंता स्वप्नदर्शन, ४ तद्विपरीत स्वप्नदर्शन, अने ५ अन्यक्त स्वप्नदर्शन.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! स्तेलो प्राणी खप्त जुए, जागतो प्राणी खप्त जुए के स्तो जागतो प्राणी खप्त जुए ! [उ०] हे गाँतम ! अध्यक्षारे जुए ! स्तेलो प्राणी खप्त न जुए, जागतो प्राणी खप्त न जुए पण स्तो जागतो प्राणी खप्तने जुए.

<sup>9</sup> कि सूती अवस्थामां कोइ पण अर्थना विकल्पनो अनुभव करवे। ते स्वप्न, तेना पांच मकार छे— १ यथातथ्य-सस्य अथवा तान्विक. तेना स्टान्यावन वारी अने फलाविसंवादी एवा वे प्रकार छे. स्वप्नमां जोएला अपने अनुसारे आगृत अवस्थामां बनाव बने ते हटार्थाविसंवादी. जेमके वोई माणम स्वप्नां कुए के 'मने कोइए हाबमां फल आप्युं' अने ते जागीने तेज प्रमाणे जुए, खप्नशा अनुसार जेनुं फळ अवस्था मळे ते फलाविसंवादी, जेमके वोई माणम स्वप्न, वळद, हाबी वगेरे उपर आहड धयेलो पोताने स्वप्नमां जुए अने जाग्या पछी काळाग्तरे संपत्ति पामे. २ प्रतानस्वप्न-विस्तारवाळुं स्वप्न, ते यथातथ्य पण होय के अन्यावा पण होत्र. आ बने स्वप्ननो परस्पर मेद मात्र विदोधणकृत छे. ३ चिन्ता—आगृत अवस्थामां जे अर्थनं चिन्तन करेलुं होय तेने स्वप्नमां जुए ते, अने स्वप्न के विदेश वस्तुनी आगृत अवस्थामां प्राप्ति धाय ते तिह्रपरीतस्वप्न. जेमके स्वप्नमां अञ्चित्र परार्थशी पिलित पोताने जुए अने आगृत अवस्थानां कोई हाम तेथी विदेश परार्थ प्राप्त अवस्थानां अनुभव करवे। वे अन्यक्त दर्शन.

- 🤾 [प्र॰] जीवा णं भंते! कि सुत्ता, जागरा, सुराजागरा ! [उ॰] गोयमा! जीवा सुत्ता वि, जागरा वि, सुराजागरा वि 🗈
- थ. [प्रज] नेरहया नं भंते ! कि सुत्ता-पुष्छा । [उ ज] गोयमा ! नेरहया सुत्ता, नो जागरा, नो सुराजागरा । पर्य जाय-वडरिंदिया ।
- ५. [प्र०] पंचितियतिरियस्त्रजोणिया णं भंते ! किं सुसा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सुत्ता, नो जागरा, सुत्तजागरा वि । मणुस्सा जहा जीवा । चाणमंतर-जोरसिय-वेमाणिया जहा नेरस्या ।
- ६. [प्रc] संबुडे जं अंते! सुविजं पासइ, असंबुडे सुविजं पासइ, संबुडासंबुडे सुविजं पासइ! [उ०] गोयमा! संबुडे वि सुविजं पासइ, असंबुडे वि सुविजं पासइ, संबुडासंबुडे वि सुविजं पासइ। संबुडे सुविजं पासित महातमं पासित। असंबुडे सुविजं पासित तहा वा तं होजा, अन्नहा वा तं होजा। संबुडासंबुडे सुविजं पासित प्रवं चेव।
- ७. [प्र॰] जीवा णं भंते! कि संबुद्धा, असंबुद्धा, संबुद्धासंबुद्धा १ [उ॰] गोयमा। जीवा संबुद्धा वि, असंबुद्धा वि, संबुद्धासंबुद्धा वि। एवं जद्देव सुत्ताणं दंडओ तद्देव भाणियद्यो ।
  - ८. प्रि॰] कति णं मंते ! सुविणा पण्णचा ! [इ॰] गोयमा ! वायाठीसं सुविणा पत्रचा ।
  - ९. [प्रः] कह णं भंते! महासुविणा पण्णता ? [उ०] गोयमा! तीसं महासुविणा पण्णता।
  - १०. [प्र॰] कति णं मंते! सबसुविणा पण्णसा ! [उ॰] गोयमा! बाबसरि सबसुविणा पण्णसा ।
- ११. [प्र॰] तित्यगरमायरो णं भंते! तित्यगरंसि गव्मं वक्तममाणंसि कित महासुविणे पासिसा णं पिर्वेषुकांति! [उ॰] गोयमा! तित्ययरमायरो णं तित्यगरंसि गव्मं वक्तममाणंसि एपसि तीसाए महासुविणाणं १मे चोइस महासुविणे पासिसा णं परिवृत्यंति, तं जहा-गय-उसभ-सीह-अभिसेय- जाव-सिर्हि च ।

थीयो स्ता-जागता के स्ता-जागता है र

- ३. [प्र०] हे भगवन् ! \*जीवो स्तेन्त्र छे, जागृत छे के स्हा-जागता छे ! [उ०] हे गौतम ! जीवो स्तेन्त्र पण छे, जागृत पण छे अने सता-जागता पण छे.
- ४. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको सूतेल छे—इलादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नैरियको सूतेल छे, पण जागता के सूता—जागता नधी. ए प्रमाणे यावत्—चर्जरिद्धिय संबन्धे पण जाणबुं.

पंचित्द्रय तिर्यमो सता छे श्लादि प्रमा ५. [प्र॰] हे भगवन् ! पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिको सुतेला छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! तेओ स्तेला छे अने सूता—जागता पण छे. पण [तद्दन] जागता नथी. मनुष्यना प्रश्नमां सामान्य जीवोनी पेटे जाणवुं. वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक देवोना प्रश्नमां नैरियकोनी पेटे समजवुं.

संष्ठत जीव केंद्र स्थाप्त जुण ? ६. [प्र०] हे मगवन् ! संवृत जीव खप्त जुए, असंवृत जीव खप्प जुए के संवृतासंवृत जीव खप्प जुए ! [उ०] हे गौतम ! संवृत, असंवृत अने संवृतासंवृत ए त्रणे जीवो खप्त जुए, पण संवृत जीव सब्स खप्त जुए, असंवृत जीव जे खप्त जुए ते सब्य पण होय असव्य पण होय; तथा असंवृतनां पेठे संवृतासंवृत जीव पण खप्त जुए.

षीयो संहत से-इत्यादि प्रश्नः

७. [प्र॰] हे भगवन् ! जीवो संवृत छे, असंवृत छे के संवृतासंवृत छे ! [उ॰] हे गौतम ! जीवो संवृत, असंवृत अने संवृता-संवृत ए त्रणे प्रकारना छे. जेम सुप्त जीवोनुं वर्णन कारेटुं छे तेम अर्श एण समजबुं.

स्याना प्रकार-

८. [प्र०] हे भगवन् ! सप्र केटल प्रकारना कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! सप्ती बेंतालीश प्रकारना कह्यां छे.

महास्वप्रमा प्रधार-

९. [प्र०] हे भगवन् ! महास्वप्न केटला प्रकारना कह्यां छे ! [उ०] हे गीतम ! महास्वप्न त्रीस प्रकारना कह्यां छे.

भवंसप्रनाप्रकारः

१०. [प्र०] हे भगतन् ! बधा मळीने केटलां खप्ती कहां छे ? [उ०] हे गौतम ! बधा मळीने बहोतेर खप्ती कहां छे.

तीर्पेकरनी माता के टला स्वभो जुए। ११. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे तीर्थंकरनो जीव गर्भमां अवतरे त्यारे तीर्थंकरनी माताओ केटला महास्वप्त जोईने जागे ! [उ०] है गौतम ! ज्यारे तीर्थंकरनो जीव गर्भमां अवतरे त्यारे तीर्थंकरनी माताओ त्रीस महास्वप्नोमांथी चौद महास्वप्तो जोईने जागे छे. ते आ प्रमाणे (१) हाथी, (२) बलद, (३) सिंह, यावत्—(१४) अग्नि.

३ \* ग्राप्त अने जायृत प्रव्य अने भावनी अपेक्षाए वे प्रकारे होय छे. तेमां निदायुक्त ब्रव्यथी सूतेलो कहेवाय छे, अने विरतिरहित भावणी सूतेलो कहेवाय छे. पूर्वना सूत्रोमां स्वप्तनी हकीकत निदानी अपेक्षाए कही छे, हवे विरतिनी अपेक्षाए जीवादि इंडयने आध्यी आवशी स्तापणा अने जायृतपणानी प्रकृषणा करे छे. तेमां जे जीवो सवैविरतिक्य नेव्यमिक जायृति विनाना अविरतिवाळा कहेवाय छे ते स्तेला, जेशो सवैविरतिक्य जायृतिवाळा छे ते जायृत कहेवाय छे, अने जेशो अविरतिवाळा अने कदंक अंदो विरतिवाळा छे तेशो स्ता-नागता कहेवाय छे-टीका,

- ्व. [द्रः] जलवहिमायरो ण मंते! वलवहिसि गरमं वलममाणंसि कति महासुमिणे पासिता ण पविबुद्धिति! [द्रः] गोयमा! बलवहिमायरो जलवहिसि जाय-वलममाणंसि एएसि तीसाए महासुविणाणंः, एवं जहा तित्थगरमायरो काय-सिहि च।
- १२, [ब्र॰] वासुदेवमायरो णं-पुष्का । [७०] गोयमा । वासुदेवमायरो आब-वक्रममाणंसि एपाँस चोइसण्डं महासु-विकाल असरो सच महासुविणे पासिचा लं पडियुज्झंति ।
- १४. [प्र०] चलवेचमायरो-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! बलवेचमायरो जाव-एएसि चोइसण्डं महासुविणाणं अन्नयर असारि महासुविणे पासित्ता णं पिडवुणसंति ।
- १५, [प्र॰] मंडलियमायरो णं भंते !-पुच्छा । [ड॰] गोयमा ! मंडलियमायरो जाव-ए०सिं चोदसर्ग्हं महासुविणाणं अवयरं दमं महासुविणं जाव-पडियुज्हंति ।
- १६. समणे मगबं महाबीरे छउमत्यकालियाप अंतिमराइयंसि इमे दस महाझुविणे पासिसा णं पिढ्युदे, तं जहा- १ पगं च णं महं घोरकविद्यक्षरं तालिपसायं सुविणे पराजियं पासिसा णं पिढ्युदे । २ पगं च णं महं सुकिलपम्बर्ग धुंसकोइलं सुविणे पासिसा णं पिढ्युदे । ३ पगं च णं महं चिस्तिविच्यपम्बर्ग पुंसकोइलगं सुविणे पासिसा णं पिड्युदे । ४ पगं च णं महं दामवुगं सहरयणामयं सुविणे पासिसा णं पिड्युदे । ५ पगं च णं महं सेयं गोचग्गं सुविणे पासिसा णं पिड्युदे । ६ पगं च णं महं सोगरं सम्प्रीयीसहस्मकलियं सुविणे । ७ पगं च णं महं सागरं सम्प्रीयीसहस्मकलियं सुवाहि तिसं सुविणे पासिसा । ८ पगं च णं महं हिपेकिल-यवजामेणं नियगेणं अंतेणं माणुसुसरं पद्ययं सब्धो समता आवेदिय-परिवेदियं सुविणे पासिसा णं पिड्युदे । १० पगं च णं महं मंदरे पद्यस् मंदरस्वृतियाप उर्वारं सीहासणवरगयं अप्पाणं सुविणे पासिसा णं पिड्युदे ।
- १२. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे चक्रवर्तींनी जीव गर्भमां अवतरे त्यारे चक्रवर्तींनी माताओं केटला महास्वप्त जोईने जागे ! [उ०] हे गीतम ! ज्यारे चक्रवर्तींनी जीव गर्भमां अवतरे त्यारे चक्रवर्तींनी माताओं ए त्रीस महास्वप्तीमांथी चीद महास्वप्ती तीर्थकर्ता माताओंनी पेटेज जुए छे अने पछी जागे छे, ते चीद स्वप्त पूर्व प्रमाण जाणवा, यावत्—अग्नि.

चकवर्तानी माता केटकां स्वप्न जुए !

1 45

१३. [प्र०] एज प्रमाणे वासुदेवनी मातानी खप्तनिवन्धे पृच्छा । [उ०] हे गीतम ! ज्यारे वासुदेवनो जीव गर्भमां अवतरे स्थारे वासुदेवनी माताओ ए चौद महास्वप्नोमांथी कोइ पण सान महास्वप्नो जोईने जागे छे.

बासुदेवनी माता केटका स्वत्र जुए रि

१४. [प्र०] ए प्रमाणे बलदेवनी माताओ संबन्धे खप्तनो प्रश्न. [उ०] हे गैतिम ! बलदेवनी माताओ ए चौद महाखप्तोमांधी कोई पण चार महाखप्तो जोईने जागे छे.

बह्देवनी माताणो केरकां स्वप्नो जुए हैं

१५. [प्र०] मांटलिक राजानी माताना स्वप्ननं एव प्रमाण पृष्टा करवी. [उ०] हे गैतिम ! मांडलिक राजाओनी माताओ ए चौद स्वमोगांधी कोई पण एक महास्वप्नने जोईने जागे छे.

माडलिवर्नामाताओं केटलां सप्त लुप् !

**१६. ज्यारे श्रमण भगवंत महावीर छद्मस्थपणामां हता त्यारे तेओ एक रात्रिना छेछा प्रहरमां आ दश महास्वप्रो जोईने जाग्या.** ते आ प्रमणि—

ध्यावस्थानः भगः भंत महावीरन् दशः स्रोते जोतुः

- (१) 'एक मोटा भवंकर अने तेजस्वी रूपबाळा ताड जेवा पिशाचने पराजित क्यों' एवं स्वप्न जोईने तेओ जाग्या.
- (२) एक मोटा घोळी पांखवाळा पुंस्कोकिलन (नरजातिना कोयलने ) तेओए स्वप्नमां जोयो अने जोईने जाग्या.
- (३) एक मोटा चित्रविचित्र पांखवाळा पुंस्कोकिलने खप्रमां जोई तेओ जाग्या.
- (४) एक महान् सर्वरताय माटायुगलने स्वप्नमां जोईने जाग्या.
- (५) एक मोटा अने धोळा गायना धणने स्वप्तमां जोई तेओ जाग्या.
- (६) चारे बाजुधी कुसुमित थएला एक मोटा पद्मसरोवरने स्वप्नमां जोईने जाग्या.
- (७) 'हजारो तरंग अने कल्लोलोथी ज्याप्त एक महासागरने पोते हाथवडे तयों' एवं स्वप्न जोई तेओ जाग्या.
- (८) तेजथी जळहळता एक मोटा सूर्यने स्वप्नमां जोईने जाग्या.
- (९) एक मोटा मानुषोत्तर पर्वतने ठीला बैड्र्यना वर्ण जेवा पोताना आंतरडावडे सर्व बाजुएथी आवेष्टित अने परिवेष्टित पर्येका स्वप्तमां जोईने जाग्या.
- (१०) अने एक महान् मंदर ( मेरु ) पर्वतनी मंदर चूलिका उपर सिंहासनमां बेटेल पोताना आत्माने जोई तेओ आग्या.

३ पूसको–बाद० २ पूसको–साद० ३ संदुरुपियं ताड० ३ स∙ पू•

१७. (१) जण्णं समणं भगवं महावीरे पगं महं घोरक्षित्वधरं तालिपसार्य सुविणे पराजियं जाव-पिड्युर्से, तण्य समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिजो कम्मे मूलाओ उग्वायिए। (२) जष्यं समणे मगवं महावीरे पगं महं खिक्कां व्यायया पिट्युर्से, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्रज्ञाणोवगए विहरति। (३) जण्णं समणे मगवं महावीरे पगं महं चिक्किकिक जाव-पिड्युर्से तण्णं समणे भगवं महावीरे विचित्तं ससमयपरसमार्यं दुवालसंगं गणिपिडगं आध्वेति, पक्षेति वंसेति, निदंसेति, उवदंसेति; तंजहा-१ आयारं, २ स्वगकं, जाव-१२ विद्वियायं। (४) जण्णं समणे भगवं महावीरे पगं महं वामदुगं सहरयणामयं सुविणे पासिचा णं पिड्युर्से तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविहे धम्मे पक्षवेति, तंजहा-शामपरसम्भे वा अणागारधमं वा। (५) जण्णं समणे भगवं महावीरे पगं महं सेयं गोवग्गं जाव-पिड्युर्से, तण्णं समणे मगवं महावीरे पगं महं सेयं गोवग्गं जाव-पिड्युर्से, तण्णं समणे मगवं महावीरे एगं महं पज्यति, तंजहा-१ मवणवासी, २ वाष्मित्तरे, ३ जोतिसिए, ४ वेमाणिए। (७) जणं समणे मगवं महावीरे एगं महं सागरं जाव-पिड्युर्से तणं समणे मगवं महावीरे एगं महं सागरं जाव-पिड्युर्से तणं समणेणं मगवया महावीरेणं अणादीए अणवदग्गे जाव-संसारकंतारे तिके। (८) जणं समणे मगवं महावीरे एगं महं विणयरं जाव-पिड्युर्से तणं समणेस्त भगवओ महावीरेस्त अणेते अणुक्तरे जाव-केवलवरनाणदंसणे समुप्पने। (९) जणं समणे जाव-वीरे पगं महं हिर्वरिल्य- जाव-पिडयुर्से तण्णं समणस्स भगवओ महावीरेस्त अगेतः अणुक्तरे महावीरे संदरे पद्य मंदरचृत्वियाप परिभमंति-इति खलु समणे भगवं महावीरे हित्वरिल्य परिभमंति-इति खलु समणे भगवं महावीरे हित्वरिल्य परिभमंति-इति खलु समणे भगवं महावीरे सद्वमणुयासुरे लोप परिभमंति-इति खलु समणे भगवं महावीरे सद्वमणुयासुरे लोप परिभमंति-इति खलु समणे भगवं महावीरे सद्वमणुयासुरे परिभमंति-इति समणे भगवं महावीरे सद्वमणुयासुरे परिसाप मज्यग्ये क्रायं आवित, जाव-उवदंसेति।

दश महास्त्रमोनुं फल-

- १७. (१) श्रमण भगवंत महावीर [ प्रथम स्वप्नगां ] जे भयंकर अने तेजस्ती रूपवाळा तथा ताडना जेवा एक पिशाचने पराजित करेटो जोईने जाग्या तेथी [ तेना फळरूपे ] श्रमण भगवंत महावी**रे मोहनीय कर्मने मूटधी नष्ट कर्युं.** 
  - (२) श्रमण भगवंत महायीरे [ बीजा खप्रमां ] जे एक मोटो घोळी पांखवाळो यायत्—पुरकोकिङ जोयो अने जाग्या तेयी तेना फळरूपे श्रमण भगवंत महावीर शुक्त ध्यानने प्राप्त करी विहर्या.
  - (३) श्रमण भगवंत महावीर [त्रीजा स्वप्नमां] जे एक मोटो चित्र विचित्र पांखवाळो यावत्—पुंस्कोकिल जोईने जाग्या तेथी श्रमणभगवंत महावीरे विचित्र स्वसमय अने परसमयना [विविध विचारपुक्त] द्वादशांग गणिपिटक कहुं, प्रज्ञान्यं, दर्शान्यं, निदर्शान्यं अने उपदर्शान्यं. ते द्वादशांगना नाम आ प्रमाणे छे—(१) आचार (२) सूत्रकृत, यावत्—(१२) दृष्टिवाद.
  - (४) श्रमण भगवंत महावीरे [चोया स्वप्नमां] जे एक महान् सर्वरत्नमय मालायुगल जोयुं अने जाग्या तेथी श्रमण भगवंत महावीरे वे प्रकारनो धर्म कहा, ते आ प्रमाणे—सागार धर्म अने अनगार धर्म.
  - (५) श्रमण भगवंत महावीर [पांचमा स्नप्नमां] जे एक घोळी गायोनुं महान् घण जोईने जाग्या तेथी श्रमण भगवंत महावीरनो चार प्रकारनो संघ थयो, ते आ प्रमाणे—१ साधु, २ साध्वी, ३ श्रावक अने ४ श्राविकाः
  - (६) श्रमण मगवंत महावीर [ छट्टा स्वप्तमां ] जे एक मोटुं यावत्—पद्म सरोवर जोईने जाग्या तेथी श्रमण मगवंत महा-वीरे भवनवासी, वानव्यंतर, ज्योतिपिक, अने वैमानिक एवा चार प्रकारना देशोने प्रतिबोध कर्यो.
  - (७) श्रमण भगवंत महावीरे [ सातमा स्वप्नमां ] जे एक मोटा यावत् महासागरने पोते हाथ बडे तरेलो जोयो अने जाग्या तथी श्रमण भगवंत महावीरे अनादि अने अनन्त यावत्—संसाररूप कांतारने पार कर्यो.
  - (८) श्रमण भगवंत महावीरे [ आठमा स्वप्नमां ] जे तेजधी जळहळतो एक मोटो सूर्य जोयो सने जाग्या तेथी श्रमण भगवंत महावीरने अनंत, अनुत्तर, निरावरण, निर्व्यावात, समप्र अने प्रतिपूर्ण एवं केवळ झान अने केवळ दर्शन उरपन्न पयुं.
  - (९) श्रमण भगवंन महावीरे [ नवमा स्वप्नमां ] एक मोटा मानुषोत्तर पर्वतने नील वैहूर्यना वर्ण जेवा, पोताना आंतरकायी चारे बाजुए आवेष्टित अने परिवेष्टित करेलो जोयो अने जोइने जाग्या तेथी श्रमण भगवंत महावीरनी देवलोक, मनु- प्यलोक अने असुरलोकमां- "आ श्रमण भगवंत महावीर छे'' एवी उदार कीर्ति, स्तुति, सन्मान अने यश व्यास पर्याः
  - (१०) श्रमण भगवंत महावीरे [दशमा स्वप्तमां ] पोताना आत्माने मंदरपर्यतनी चूलिका परना सिंहासनमां चेठेलो जोयो अने जोईने जाग्या तेथी श्रमण भगवंत महावीरे केवळी पई देव, मनुष्य अने असुर गुक्त परिपदमां वेसी धर्म कही, यावत—उपदर्शाव्योः

- १८. हत्थी था पुरिसे वा घुविणंते एगं महं ह्यपंति था गयपंति था जाव-वसमपंति वा पासमाणे पासति, दुरूहमाणे प्रस्ति, दुरूहमाणे प्रस्ति, दुरूहमाणे अवस्ति, दुरूहमाणे अवस्ति, दुरूहमाणे अवस्ति, दुरूहमाणे स्वति, दूरिकमाणे स्वति, दुरूहमाणे स्वति, दुरूहमाणे
- १९. इतथी वा पुरिसे वा सुविणंते पर्ग महं दामिणि पाईणपिडणायतं दुइथो समुद्दे पुट्टं पासमाणे पासित, संयेक्षेमाणे क्षेत्रेहेर, संवेद्धियमिति अप्याणं मन्नति, तक्सणामेय अप्याणं बुज्झति, तेणेय मयग्गहणेणं जाव-अंतं करेति ।
- २०, इत्थी वा पुरिसे वा पगं महं रज्जुं पाईणपडिणायतं दुहमो छोगंते पुट्टं पासमाणे पासति, छिंदमाणे छिंदति, छिन्नमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव जाव-अंतं करेति।
- २१. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते पर्ग महं किण्हसुत्तर्ग वा जाव-सुकिल्लसुत्तर्ग वा पासमाणे पासति, उन्गोवेमाणे क्रनोवेद, उन्गोवेतमिति अप्पाणं मस्रति, तक्खणामेव जाव-अंतं करेति ।
- २२. रत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं अयरासि वा तंबरासि तडयरासि वा सीसगरासि वा पासमाणे पासति, बुद्धमाणे बुद्धति, बुद्धमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुद्धति, वोचे भवग्गहणे सिद्धति, जाव- अंतं करेति ।
- २३. इतथी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हिरक्षरासि वा सुवक्षरासि वा रयणरासि वा वहररासि वा पासमाणे पासइ, दुरुहमाणे दुरुहर, दुरुहमिति अप्पाणं मन्नति, तक्क्षणामेय बुज्झति, तेणेव सवगाहणेणं सिज्झति, जाव-अंतं करेति ।
- २४. इत्यी वा पुरिसे वा सुविणंते पर्ग महं तणरासि वा-जहा तेयनिसग्गे, जाव-अवकररासि वा पासमाणे पासति, विक्सिरमाणे विक्सिरह, विक्सिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्कणामेव बुज्झति, तेणेव जाव-अंतं करेति ।
- २५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सरधंभं वा वीरणधंभं या वंसीमूलधंभं वा वहीमूलधंभं वा पासमाणे पासह, उम्मूलेमाणे उम्मूलेह, उम्मूलितमिति अप्पाणं मन्नह, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव जाव-अंतं करेति।
- १८. कोई की अथवा पुरुष स्वप्नने अन्ते एक मोटी अश्चपंक्ति, गजपंक्ति, यावत्—इषभ(बलद)पंक्तिने जुए अने तेना उपर चढे तथा ते उपर पोते चढ्यो छे एम पोताने माने, अने ए प्रमाणे जोई जो तुरत जागे तो ते तेज भवमां सिद्ध थाय, यावत्— सर्व दुःखोनो नाश करे.

सागान्य खप्तर्नुं. **फ**ड.

- १०. कोई स्त्री अथवा पुरुष स्वप्नने अन्ते समुद्रने बन्ने पढखे अडकेलं तथा पूर्व अने पश्चिम तरफ छांबु एक मोहुं दामण जुए अने तेने वीटाळ्युं छे एम पोताने माने तथा ते प्रकारे जोई शीघ जागे तो तेज भवमां सिद्ध थाय, यावत्—सर्व द्व:खोनो नाश करे.
- २०. कोई स्त्री अथवा पुरुष (स्वप्तने अन्ते) बने बाजुए लोकान्तने स्पर्शेष्टुं तथा पूर्व अने पश्चिम लांबु एक मोटुं दोरडुं जुए, अने तेने कापी नाखे अने ते पोते कापी नाख्युं छे एम पोताने माने तथा ते प्रकारे जोई शीव्र जागे तो ते यावत्—सर्व दुःखोनो नाश करे.
- २१. कोई स्त्री अथवा पुरुष स्वप्नने अन्ते एक मोटुं काळुं सूतर, यावत्-धोळुं सूतर जुए तथा तेने उकेले अने तेने पोते उकेल्युं के एम पोताने माने अने एम जोई पछी ते तुरत जागे तो ते यावत्-सर्व दुःखोनो नाश करे.
- २२. कोई स्त्री अथवा पुरुष स्वमने अन्ते एक मोटा लोडाना डगलाने, तांश्वाना डगलाने, कथीरना डगलाने अने सीसाना डगलाने खुए अने ते उपर चढे अने पोते ते उपर चढ्यो छे एम पोताने माने तथा एम जोई शीव्र जागे तो ते यावत्—वे भवमां सिद्ध थाय, व्यावत्—सर्व दुःखोनो नाश करे.
- २२. कोई स्त्री अथवा पुरुष खप्तने छेडे एक मोटा हिरण्य—रूपाना ढगळाने, सुवर्णना ढगळाने, रत्नना ढगळाने अने वजना ढगळाने खुर अने ते उपर चढे अने पोते ते उपर चढ्यो छे एम पोताने माने तथा तुरत जागे तो ते तेज भवमां सिद्ध थाय, यावत्⊸ सर्व दुःखनो नाश करे.
- २१. कोई स्त्री के पुरुष स्वप्नने अन्ते एक मोटा घासना ढगळाने, "तेजोनिसर्ग नामना पंदरमा शतकमां कह्या प्रमाणे यावत्— कचराना ढगळाने जुए अने तेने विखेरे अने पोते विखेरों छे एम पोताने माने अने जो तुरत जागे तो तेज भवमां यावत्-सर्व द्वार्यनो नाश करे.
- २५. कोई की के पुरुष खप्नने अन्ते एक मोटा शरक्तंभने, वीरणस्तंभने, वंशीमूलक्तंभने वा बिह्नमूलक्तंभने जुए अने तेने उखेडे वने पोते तेने उखेड्यो छे एम पोताने माने अने पछी शीघ्र जागे तो तेज भवमां यावत—सर्व दुःखोनो नाश करे.

<sup>🍍</sup> २४ सम् । 🖷 । ३ स् । १५ ष्ट । ३८६ स् । ५५.

- २६. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सीरकुंमं वा विषकुंमं वा वयकुंमं वा मधुकुंमं वा पासमाणे पासति, वण्पाडेमाणे उप्पाडेह, उप्पाडितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्लणामेव बुज्यति, तेणेव जाव-संतं करेत् ।
- २७. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणेत एगं महं सुरावियडकुंमं वा सोवीरवियडकुंमं वा तेल्लकुंमं वा वंसाकुंमं वा पास-माणे पासति, भिदमाणे मिदति, भिन्नमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्ज्ञति, दोखेणं भव- ज्ञाव- अंतं करेति ।
- २८. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं पउमसरं कुसुमियं पासमाणे पासति, शोगाहमाणे शोगाहति, सोगाह-मिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव०, तेणेव जाव-अंतं करेति ।
- २९. इतथी वा जाय-सुविणंते एगं महं सागरं उम्मीबीयी-जाय-कित्यं पासमाणे पासति, तरमाणे तरित, तिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव०, तेणेव जाव-अंतं करेति ।
- ३०. इत्थी वा जाव-सुविणंते एगं महं भवणं सन्नरयणामयं पासमाणे पासति, अणुव्यविस्ताणे अणुव्यविस्ति, अणु-व्यविद्वमिति अप्याणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव जाव-अंतं करेति ।
- ३१. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते पर्ग महं विमाणं सञ्चरयणामयं पासमाणे पासइ, वुरुहमाणे वुरुहित, वुरुहिति मण्याणं मसति, तक्खणामेय बुज्झति, तेणेव जाव-अंतं करेति ।
- ३२. [प्र०] अह मंते! कोट्टपुडाण या जाय-केयरपुडाण वा अणुधायंसि उब्भिक्कमाणाण वा जाब-टाणाओ वा टार्ब कंकामिज्ञमाणाणं कि कोट्टे वाति, जाव-केयर्र वार् ! [उ०] गोयमा ! तो कोट्टे वाति, जाव-तो केयर्र वाति, घाणसहगवा पोग्गला वाति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते'! सि ।

#### सोलसमे सए छट्टो उद्देसी समची।

- २६. कोई स्त्री या पुरुष खप्नने छेडे एक मोटा क्षीरकुंभने, दिधकुंभने, घृतकुंभने अने मधुकुंभने खुए अने तेने उपाडे तथा पोते तेने उपाड्यो छे एम पोताने माने, पछी शीव्र जागे तो तेज भवमां यावत्—सर्व दुःखनो नादा करे.
- २७. कोई स्त्री के पुरुष स्वप्नने अन्ते एक मोटा सुराना विकट (मोटा) कुंभने, सौवीरना मोटा कुंभने, तैलकुंभने के बसा-कुंभने जुए, तेने भेदे अने पीते तेने भेदी नांख्यों छे एम पोताने माने, पछी तुरन जागे तो वे भवमा यावत्—सर्व दुःखोनो नाश करे.
- २८. कोई स्त्री के पुरुष स्वमने अन्ते कुसुमित एवा एक मोटा पद्म सरोवरने जुए, तेमां प्रवेश करे अने पोते तेमां प्रवेश करों छे एम पोताने माने, पछी तुरत जागे तो तेज भवमां यावत्-सर्व दुःखनो नाश करे.
- २९. कोई स्त्री के पुरुष स्वप्नने अन्ते तरंगो अने कल्लोलोथी व्यास एक मोटा सागरने जुए अने तरे, तथा पोते तेने तरी गयो छे एम पोताने गाने, पर्छा बीघ जागे तो तेज भवमां यावत्–सर्व दुःसोनो नाश करे.
- ३०. कोई र्सा के पुरुष स्वप्तने अन्ते सर्व रत्नमय बनेछं एक मोटुं भवन खुए अने तेमां प्रवेशे, पोते तेमां प्रवेश कर्यों छे एम पोताने माने, पट्टी शीघ जागे तो तेज भवमां यावत्—सर्व दुःखनो नाश करे.
- ३१. कोई श्री के पुरुष खप्तने अन्ते सर्व रत्नमय एक मोटुं विमान जुए, तेना उपर चढे अने पोते ते उपर चढ्यो छे एम पोताने मान, स्पार पटी शीघ जाने तो तेज भवमां यावत्—सर्व दुःखनो नाश करे.

को हुपुट दगेरे वाग छे।

३२. [प्र०] हे भग६न् ! कोष्टपुटो, यावत्—केतकीपुटो यावत्—एक स्थानधी स्थानान्तरे रुई जवाता होय त्यारे पवनानुसारे जे [तमनो गंध ] पाय छे तो ते कोष्ट वाय छे के यावत्—केतकी वाय छे ? [उ०] हे गौतम ! कोष्ठपुटो के केतकीपुटो वाता नथी, पण गंधना जे पुद्गछो छे ते बाय छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### रोक्सा शतकमां पष्ट उद्देशक समाप्त.

#### सत्तमो उद्देसो.

१. [प्र०] कतिविद्दे णं मंते ! उवकोगे पश्चते ! [उ०] गोयमा ! दुविद्दे उवकोगे पश्चते, एवं अहा उवयोगपदं पश्चवणाय संदेख जिरवसेसं भाषियकं, पासणयापवं च निरवसेसं नेयकं । 'सेवं मंते ! सेपं मंते'चि ।

#### सोलसमे सए सत्तमो उद्देसी समत्ती।

#### सप्तम उद्देशक.

" १. [प्र०] हे मगवन् ! केटला प्रकारनो उपयोग कहा। छे ! [उ०] हे गौतम ! उपयोग ने प्रकारनो कहा। छे. जेम प्रज्ञापना सूत्र-मौना "उपयोग पदमां कहेवामां आन्युं छे तेम अहीं बधुं कहेवुं. तेमज अहीं कीतम् 'पश्यक्तापद!' पण समग्र कहेवुं. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### हपयोद-

#### सोळमा श्रतकर्मा सप्तम उद्देशक समाप्त.

## अहमो उद्देसी.

- १. [प्र॰] किमहालप णं मंते ! लोप पश्चले ! [उ०] गोयमा ! महतिमहालप-जहा वारसमसप तहेव जाव-असंखे-ख्राओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्केवेणं।
- २. [प्र०] होयस्स णं भंते ! पुरिष्ठिमिह्ने खरिमंते कि जीवा, जीवदेसा, जीवपण्सा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवप-संसा ! [७०] गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपण्सा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपण्सा वि । जे जीव-

#### अप्टम उद्देशक

- १. [प्र०] हे भगवन् ! छोक बेटलो मोटो कह्यो छे ! [उ०] हे गौतम ! छोक अत्यन्त मोटो कह्यो छे. जेम <sup>गु</sup>बारमा शतकमां कह्यु छे तेम सहीं पण लोक संबंधी बची हकीकत कहेवी, यावत्—ते लोकनो परिक्षेप—परिधि असंख्येय कोटाकोटी योजन छे.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना पूर्व चरमांतमां (पूर्व बाजुना छेडाना अंते ) १ जीवो छे, २ जीवदेशो छे, ३ जीवप्रदेशो छे, ४ अजीवो छे, ५ अजीवदेशो छे, ६ के अजीवप्रदेशो छे १ [उ०] हे गौतम ! त्यां कैजीवो नधी, पण जीवदेशो छे, जीवप्रदेशो छे, अजीवो

लोकतो पू**र्वः** चरमातः

९ \* उपयोग-चेतना शक्तिनो व्यापार, तेना वे सेद छे- साकार उपयोग अने अनाकार उपयोग. साकार उपयोगना पांच शान अने श्रण अकानना भेदबी आठ प्रकार छे; खनाकार उपयोगना चक्षदर्शनादिना सेदबी चार प्रकार छे. जुओ---प्रज्ञा∙ पद २९ प० ५२५-५२७.

र्म प्रज्ञाव पद ३० प० ५२८-५३२,

<sup>‡</sup> पर्यत्ता-प्रकृष्ट बोधनो परिणाम, तेना साकार अने अनाकार वे मेद छे. साकारपर्यत्ताना मतिज्ञान सिवाय बाकीना चार हान अने मतिअहान सिवाय बाकीना नएम छ प्रकार छे. अनाकार पर्यत्ताना अच्छादर्शन सिवाय बाकीना त्रण प्रकार छे. जो के पर्यत्ता अने उपयोग बने साकार अने अनाकार मेद बहे तुस्य छे, तो पण ज्यां त्रैकालिक बोध होय ते पर्यत्ता अने अच्छादर्शन छे. अहिं अनाकार पर्यत्तामां चछुदर्शन प्रहृण कर्यु अने अच्छादर्शन प्रहृण कर्यु तेनुं कारण एतुं छे के प्रकृष्ट ईक्षणने पर्यत्ता कहे छे अने ते चछुदर्शनने विषेत्र घटी शके छे, अच्छादर्शनने पर्योगनो बीजी इन्वियना उपयोगनी अल्प काळ छे अने तेथी प्रकृष्ट ईक्षण चछुनुंज होय छे, माटे पर्यत्तामां चक्षुदर्शनने प्रहृण कर्यु छे, बीजी इन्त्रियोना दर्शनने प्रहृण कर्यु नयी.-टीका.

१ ¶ भग- खं॰ ३ स- १२ उ॰ ७ पृ० २८२.

२ ई पूर्व विज्ञानो चरमान्त-लोकनो छेहो माग विषम एक प्रदेशना प्रतरहप होनायी तेमां असंख्य प्रदेशावगाही जीवनो सद्भाव होतो नयी, माटे ला जीवो नयी, परन्तु जीवदेशो अने जीवप्रदेशो सोन एक प्रदेशने विषे पण शवगाह संगते छे, माटे 'जीवदेशो अने जीवप्रदेशो होय छे' एम कतुं छे. ए प्रमाणे त्यां पुरूलस्कंघो, धर्मास्तिकायादिना देशो अने तेना प्रदेशो होवाशी अजीवो, अजीवदेशो अने अजीवप्रदेशो पण होय छे. हवे जे जीवदेशो छे तेमां पृथिव्यादि प्रकेन्द्रिय जीवोना वेशो लोकान्ते अवद्य होय छे. आ प्रथम विकल्प धयो. हवे द्विकसंयोगी विकल्प आ प्रमाणे छे. १ अथवा एकेन्द्रियोना घणा देशो अने वेहन्द्रिय काविष्य होवाधी तेनो एक देश होय छे. जो के लोकान्ते बेहन्द्रिय जीव होतो नयी, तो पण एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थनार वेहन्द्रिय जीव मरणसमुद्यातवर उत्पासित होवाधी तेनो एक देश होय छे. जो के लोकान्ते वेहां, ए प्रमाणे द्वामा शतका प्रथम उद्देशकने विषे आग्नेयी दिशा संबन्धे जे भांगा फहेला छे ते अधि जाणवा, ते आ प्रमाणे-१ एकेन्द्रियोना देशो अने एक वेहन्द्रियोना देशो हो अने एक वेहन्द्रियोना देशो अने एक वेहन्द्रियोना देशो अने एक वेहन्द्रियोना देशो अने एक वेहन्द्रियोना देशो अने अववा एकेन्द्रियोना देशो अने अववा एकेन्द्रियोना देशो अने एक वेहन्द्रियोना देशो अने अविनिद्र्यना श्री अने अनिन्द्र्यना होशो। अने अनिन्द्र्यना श्री होशो। अनि अनिन्द्र्यना होशो। अनिन्द्र्यना होशो। अनिन्द्र्यना होशो। अनिन्द्र्यना होशो। अनिन्द्र्यना होशो। अनिन्द्र्यना होशो। अनिन्द्र्यना हाशो। अनिन्द्र्यना होशो। अनिन्द्र्यना होशो। अनिन्द्र्यना होशो। अनिन्द्र्यना हाशो। अनिन्द्र्यना हाशो। स्राप्य होशो। इत्रिक्ष होशो। स्राप्य होशो स्राप्य होशो स्राप्य होशो। होशो। स्राप्य होशो

देसा ते नियमं एगिदियदेसा य, अहवा एगिदियदेसा य वेहंदियस्स य देसे-एवं जहा दसमस्य अग्गेयी दिसा तहेब, नवरे देसेसु आंपदियाण आह्लविरहिओ। जे अहवी अजीया ते छविहा, अद्धासमयो नत्थि। सेसं तं चेव निरवसेसं।

- ३. [प्र०] लोगस्स णं अंते ! दाहिणिहे चरिमंते कि जीवा॰ ? [उ०] एवं चेव, एवं पवक्छिमिहे वि, उत्तरिहे वि ।
- ४. [प्रव] लोगस्स णं भंते ! उबिरिक्षे चिरमंते कि जीवा०-पुष्छा । [उ०] गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवप॰ देसा वि, जाव-अजीवपएसा वि । जे जीवदेसा ते नियमं पिंग्हियदेसा य आणिहियदेसा य, अहवा पिंगहियदेसा य अणिहियदेसा य वेदियस्स य देसे, अहवा पिंगहियदेसा य आणिहियदेसा य बेदियाण य देसा, एवं मिश्किहविरहिक्षो जाव-पंकि॰ दियाणं। जे जीवप्पपसा ते नियमं पिंगिदियपपसा य आणिहियपपसा य, अहवा पिंगहियपपसा य अणिहियपपसा य होहि॰

छे, अजीवदेशों छे अने अजीव प्रदेशों पण छे. जे जीवदेशों छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना देशों छे, अथवा एकेंद्रियना देशों अने अनिन्द्रियनों (एक) देश छे—इत्यादि बधुं \*दशमा शतकमां कहेल आग्नेयी दिशानी वक्तव्यता प्रमाणे बाहेबुं. विशेष ए के, देशोना विषयमां अनिद्रियों माटे प्रथम भांगों न कहेबों. त्यां जे अरूपी अजीवों रहेला छे ते 'छ प्रकारना छे अने अद्वासमय (काळ) नथीं बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणबुं.

अभिणादि चरमातः

३. [प्र०] हे भगवन् ! ौलोकना दक्षिण दिशाना चरमांतमां [ दक्षिण बाजुना छेडाने अंते ] जीवो छे—इस्पादि सर्व पूर्व प्रमाणे पृछ्युं. [उ०] पूर्व प्रमाणेज बधुं कहेर्युं, अने ए प्रमाणे पृक्षिम चरमांतमां तथा उत्तर चरमांतमां पण समजदुं.

क्रपरनी चरमानः

४. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना उपरना चरमांतमां जीवो छे—इत्सादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! त्यां जीवो नधी, पण जीवदेशो छे, जीवप्रदेशो छे, यावत्—अजीवप्रदेशो पण छे. जे जीवदेशो छे ते अवस्य ६एकेंद्रियोना देशो अने अनिद्रियोना देशो छे. १ अथवा एकेंद्रियोना देशो अनिद्रियोना देशो अने बेइंद्रियोना देशो छे. १ अथवा एकेंद्रियोना देशो अनिद्रियोना देशो अने बेइंद्रियोना देशो छे. एम वचला भांगा सिवायना त्रिकसंयोगी बीजा बधा भांगा कहेवा. ए प्रमाणे यावत्—पंचेंद्रियो सुधी कहेतुं. त्यां जे जीवप्रदेशो छे ते अवस्य एकेंद्रियोना प्रदेशो अने अनिद्रियोना प्रदेशो छे. १ अथवा एकेद्रियोना प्रदेशो, अनिद्रियोना प्रदेशो अने एक बेइंद्रियना प्रदेशो छे. १ अथवा एकेद्रियोना प्रदेशो, अनिद्रियोना प्रदेशो अने एक बेइंद्रियना प्रदेशो छे. १ अथवा एकेद्रियोना प्रदेशो अने एक बेइंद्रियना प्रदेशो छे.

३ ई छोकना तथा रक्षप्रभाषादि साते नरक धने सौधर्मयी अनुत्तर ग्रुधीना देवलोकना पूर्वादि चारे दिशाओना चरमान्तने आश्रयी जीवदेश धने जीवप्रदेशना भांगाओनुं यक्स---

एक	专	अनेक	जीवीना	एक	4	थन <b>फ</b>	देशादि,
----	---	------	--------	----	---	-------------	---------

ſ	एकेन्द्रिय.	बेइन्दिय.	तेइन्द्रियः	च उरिन्दिय.	पश्चेन्द्रिय.	अनिन्दिय.	कुलभोगा.
देश.		9-9	9 9	7-7	<b>7</b> -9	9-7	
441. )	₹	१– <b>२</b>	१-२	9-7	9-7	२-२ 🗲	94
ľ		<b>ગ્- ગ્</b>	२२	<b>२</b> –२	₹–₹	<b>२–२</b>	
प्रदेश. ∤	<b>२−</b> २	9 <b>3</b>	4-á	<b>9</b> –२	9–₹	૧–૨ [	11
ι		२–₹	<b>२</b> -३	<b>२</b> –३	₹-₹	र−२ ∫	

आ एकेन्द्रियादि जीवोना देश प्रदेशना भांगाओमां प्रथम आंक जीवनो सूचक छे अने बीजो आंक तेना देश अने प्रदेशोनो सूबक छे. ज्यां २-२ अंक मुकेला छे त्यां अनेक जीवोना अनेक देशो या प्रदेशो समजवा.अहिं देशभांगाओमां एकेन्द्रियने आध्यी असंयोगी एक अने तेनी साथे बेहन्द्रिय, तेहन्द्रिय, विविद्रिय अने पंचन्द्रियना प्रण प्रण भांगा अने अनिन्द्रियना वे भांगा जीडता द्विकसंयोगी चौद भांगा जाणवा, अने ए रीते प्रदेशभांगामां असंयोगी एक अने द्विकसंयोगी दश जाणवा.

४ ई उपरना चरमान्तमां सिद्धो होवाथी त्यां एकेन्द्रियोना देशो अने अनिन्द्रियोना देशो होय छे, साटे आ द्विकसंयोगी एक भागो धाय छे. त्रिकसंयोगीमां बच्ने भागा करवा; कारण के 'एकेन्द्रियोना देशो, अनिन्द्रियोना देशो अने एक बेक्निट्रयना देशो' आ मध्यम भागो घटतो नथी. केमके कोई बेक्निट्रय जीव मरणसमुद्धात वर्ष्ट मरी उपरना चरमान्तने विषे रहेला एकेन्द्रिय जीवमां उत्पन्न धाय तो पण प्रदेशनी हानि पृद्धियी थयेल लोकदन्तक-विषम भाग नहि होवाथी पूर्व चरमान्तनी पेटे त्यां बेक्निट्रयना अनेक देशो संभवता नथी. पूर्व चरमान्तमां तो प्रदेशनी हानि-वृद्धि यती होवाबी अनेक प्रतरात्मक लोकदन्तक होवाने ठीधे त्यां बेक्निट्रय जीवना अनेक देशो संभवते छे. माटे उपरना मध्यम संगरहित त्रिकसंयोगी बच्चे भागा जाणवा.

ी पूर्व चरमान्तमां जीवदेश संबन्धे द्विकसंयोगी श्रण भांगा धाय हो, तेमानो 'एकेन्द्रियोना देशो अने बेहन्द्रियनो देश' ए प्रथम भांगो है, तेने खरना चरमान्तमां जीवप्रदेशना त्रिकसंयोगी भांगा करयामां वर्जनो. अर्थात्—'एकेन्द्रियोना प्रदेशो, अनिन्द्रियोना प्रदेशो, बेहन्द्रियनो प्रदेश'—एवो त्रिकसंयोगी भंग न करवो, कारण के तेमां 'बेहन्द्रियनो प्रदेश' ए अंशनो असंभव हो. केवलिसमुद्धात समये लोकन्यापक अवस्था सिवाय जीवोनो ज्यां एक प्रदेश होने हो। असंस्थाता प्रदेशो होय है, तेथी उपराग चरमान्तमां एकेन्द्रियो अने अनिन्द्रियोना प्रदेशो संभवे है.

२ म भग० खं० ३ श० १० उ० १ ए० १८९.

<sup>†</sup> अहरी अजीवो छ प्रकारना छे-१ धर्मास्तिकायदेश अने २ प्रदेश, ३ अधर्मास्तिकाय देश अने ४ प्रदेश, तथा ५ आकाशास्तिकायदेश अने ६ प्रदेश, समयक्षेत्रना अभावधो अक्कासमय नथी.

श्वस्स परेसा य, अहवा परिवियपपसा य अणिवियण्यपसा य बेहंवियाण य पएसा, पर्व आदिल्लविरहिओ जाव-पंचिवियाणं। सत्त्रीया जहा वृक्तमसण तमाप तहेव निरवसेसं।

- 4, [प्रव] छोगस्स णं मंते ! हेट्ठिले चिरमंते कि जीवा०-पुच्छा। [उ०] गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवप-देसा वि, जाव-अजीवप्यप्सा वि, जे जीवदेसा ते नियमं प्रिंगिद्यदेसा, अहवा प्रिंगिद्यदेसा य वेहंवियस्स देसे, अहवा प्रिंगि-वियदेसा य बेंदियाण य देसा, एवं मिन्सल्लविरहिओ जाव-अणिद्याणं। पदेसा आहल्लविरहिया सम्रोंस जहा पुरच्छिमिल्ले बरिमंते तहेव। अजीवा जहेव उवरिले चरिमंते तहेव।
- ६. [प्रव] हमीसे णं संते! रयणप्पभाष पुढवीष पुरच्छिमिहे चरिमंते कि जीवा०-पुच्छा। [उ०] गोयमा! नो जीवा एवं जहेव छोगस्स तहेव बत्तारि वि चरिमंता जाव-उत्तरिहे, उपिहे तहेव, जहा दसमसए विमला दिसा तहेव निरवसेसं हेट्कि चरिमंते जहेव छोगस्स हेट्कि चरिमंते तहेव, नवरं देसे पंचितिषसु तियमंगो ति सेसं तं चेव। पवं जहा रयणप्य भाष चत्तारि चरमंता मणिया पवं सक्करप्पमाष वि, उपरिम-हेट्कि जहा रयणप्पभाष हेट्कि। पवं जाव-अहेसत्तमाष ।

तथा ए प्रमाणे यावत्—पर्चेदिय सुधी जाणतुं. अने १दशमा शतकमां कहेल तमा दिशानी वक्तव्यता प्रमाणे अहीं अजीवोनी वक्तव्यता कहेर्वा. १

५. [प्र०] हे भगवन् ! \*होकना हेठळना चरमांतमां शुं जीवो छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! त्यां जीवो नयी, जीवदेशो छे, जीवप्रदेशो छे, यावत्—[अजीवो, अजीवना देशो अने ] अजीवना प्रदेशो पण छे. जे जीवदेशो छे ते अवस्य \*एकेंद्रियना देशो छे. १ अथवा एकेंद्रियोना देशो अने वेहंद्रियोना देशो छे. ए प्रमाणे वचला मांगा सिवाय बीजा बधा मांगा कहेवा, अने ते यावत्—अनिदियो सुधी जाणबुं. सर्वना प्रदेशोनी बावनमां पूर्व चरमांतना प्रश्नोत्तर प्रमाणे जाणबुं, पण तेमां प्रथम भांगो न कहेवो. अजीवोनी बाबतमां उपरना चरमांतमां कहा। प्रमाणे वधुं कहेवुं.

लोकनी हेठेनी चरमांत.

६. [प्र०] हे भगवन् ! आ रक्षप्रभा पृथ्वीना पूर्व चरमांतमां जीवो छे--इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! त्यां जीवो नथी. जेम स्रोकना चार चरमांत कह्या तेम रक्षप्रभाना पण चारे चरमांत यायत्—उत्तरना चरमांत मुधी जाणवा. दशमा शतकमां कहेछ

रसप्रमाना पूर्वादिः चरमातः

एक के अनेक जीवना एक के अनेक देशादि.

	एके न्द्रिय.	अनिन्द्रिय.∣	बेइन्द्रिय.	तेइन्द्रिय,	चडरिन्द्रिय.	पश्चेन्द्रिय.	कुलर्भागा.
देश. {	<b>२</b> ~२	<b>२</b> –३	9-9	9 — 9	9 9	9-9 }	•
<b>d</b> . {	4-4	,- <b>,</b>	₹₹	<b>२</b> —२	<b>₹</b> −₹	२~२ ∫	
प्रदेश. {	च.	ર~ર	<b>9</b> -₹	<b>9</b> –₹	9	9-3 }	3
***. }	4-4	4-4 4-4	₹-₹	२–२	२–२	२–२ ∫	

लोकना उपरना बरमान्तमो एकेन्द्रिय अने अनिन्द्रिय (सिद्ध) जीवो सायेज होवाथी अहि असंयोगी भागो थतो नथी, एण द्विकसंयोगीयी श्रव भाय छै. तेनी साथे नेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चजरिन्द्रिय अने पंचेन्द्रियना बच्चे भागा जोडता त्रिकसंयोगी आठ भागा थाय छे. तेथी आहि देश अने प्रदेशने आध्ययी मांगामां द्विकसंयोगी एक अने त्रिकसंयोगी आठ मळी नव नव भांगा जाणवा.

५ \* हेठळना चरमान्तमां 'एकेन्द्रियोना देशो' ए असंयोगी एकज मांगो थाय छे. अने हिक्संयोगी 'एकेन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रियोना देशो '-ए बचलो मांगो लोक्दन्तकना अभावधी थतो नबी. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय, चचरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अने अनिन्द्रियनी साथे बच्चे मांगा जाणवा. ए रीते जीवदेशने आश्रयी अगीयार मांगा थाय छे. पूर्वचरमान्तमां जीवदेशने आश्रयी जे मांगा कहेला छे ते आहें जीवप्रदेशने आश्रयी कहेवा. जेमके-एकेन्द्रियोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियना प्रदेशो अने बेइन्द्रियोना प्रदेशों अने बेइन्द्रियोना प्रदेशों ए असंयोगी एक मांगो मेळवतां जीवप्रदेशने आश्रयी आगीआर मांगा थाय छे. उपरना चरमान्तमां कहा। प्रमाणे रूपी अजीवना चार अने अरूपी अजीवना छ मळी अजीवना दश प्रकार जाणवा.

लोकनी नीचेना चरमान्त, प्रवेषक अने अनुसर विमानना उपर अने नीचेना चरमान्तरो आश्रयी जीवदेश अने जीवप्रदेशीना भांगाओर्ड यन्त्र-

एक के अनेक जीवोना देशाहि.

	एकेन्द्रिय.	बेइन्द्रिय.	तेइन्द्रिय.	चउरिन्हिय.	पधेन्द्रिय.	खानिन्दिय.	कुलमांगा.
वेश.	· ·	9-9	9-4	9-9	9-9	9-9 }	99
વશ. {	<b>२</b> –३	<b>२</b> –२	<b>२</b> ~२	₹-₹	२३	२–२ ∫	
प्रदेश. {	1-2	9-२	9-2	<b>9</b> –२	१२	<b>१</b> –२ }	11
	म	7-7	१-३	₹–₹	<b>२</b> –२	१–१	

कार्हे देश अने प्रदेशना सांगास्त्रोमां असंयोगी एक, द्विकसंयोगी दश एम अनीवार २ मांगा जाणवा.

४ ६ जिम अजीवोनी वक्तव्यता दशमा शतकना प्रथम बहेशकमां तमा दिशाने आश्रमी कहेली छे ते प्रमाणे उपराग चरमान्तने आश्रमी कहेवी. ते आ प्रमाणे—कपी अजीवना स्कन्ध, देश, प्रदेश अने परमाणु-ए चार प्रकार भने धर्मास्थिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशान्तिकायना देश अने प्रदेशो-ए रीते अकपी अजीवना दश प्रकार छे.

<sup>🎙</sup> लोकना उपरमा चरमान्तने आश्रयी जीवदेश अने जीवप्रदेशोना मांगाओनुं यन्त्र---

यदं सोहम्मस्स वि जाव-अध्ययस्त । गेविज्ञविमाणाणं यवं चेच, नवरं उचरिम-हेट्डिझेसु चरमंतेसु देसेसु पंचिदियाण दि मजिस्हृविरिहिओ चेच, सेसं तहेच । यदं जहा गेवेज्जविमाणा तहा अणुत्तरविमाणा वि, हिसपन्नारा वि ।

\*विमला दिशानी वक्तव्यता प्रमाण आ रत्नप्रभाना उपरना चरमांतनी पण वक्तव्यता जाणवी. तथा रत्नप्रभा पृथ्वीनो †नीचलो चरमांत पण लोकनी नीचेना चरमांतनी पेटे जाणवो. परन्तु विशेष ए के जीवदेशोना संबंधे पंचेंद्रियोमां त्रण मांगा कहेवा. बाकीनुं बधुं तेज प्रमाणे कहेतुंन रत्नप्रभा पृथ्वीना चार चरमांतनी पेटे शर्कराप्रभा पृथ्वीना पण चार चरमांत कहेवा. अने रत्नप्रभा पृथिवीना नीचेना चरमांतनी पेटे किताप्रभानो उपलो तथा नीचलो चरमांत समजवो. ए प्रमाणे यावत्—सातमी पृथिवी सुधी जाणवुं. तथा सौधर्म [ देवलोक ] यावत्—अच्युत [ देवलोक ] संबंधे पण एज प्रमाणे समजवुं. प्रेवेयक विमानो संबंधे पण तेज प्रमाणे जाणवुं. पण तेमां विशेष ए छे के उपला अने हेटला चरमांत विशेष पंचेंद्रियोमां पण वचलो भांगो न कहेवो. बाकीनुं बधुं पूर्व प्रमाणे ज कहेवुं. तथा प्रैवेयक विमाननी पेटे अनुत्तर विमाननी अने ईक्त्याग्मारा पृथिवीनी पण वक्तव्यता कहेवी.

रक्षप्रभागा उपरना चरमान्तने आश्रयी जीवदेश अने जीवप्रदेशीना भांगाओतुं यन्त्र.--

एक	के	अनेद	र्जावोना	देशादि.
----	----	------	----------	---------

	एकेन्द्रिय.	बेहन्द्रिय.	तेइन्द्रिय.	चडरिन्द्रिय.	<b>प्रमे</b> न्द्रिय.	धनिन्त्य.	कुलभागा.
	ſ	<b>1</b> -9	3-1	9-9	1-1	1-1	
वेदा.	{ २−३,	9-2	9~२	9-₹	<b>?</b> —₹	9- <b>?</b> }	7 4
l l	l	₹-₹	१२	<b>₹-</b> ₹	₹-₹	<b>२-२</b>	
प्रदेश.	{ २−२	9-7	<b>၅</b> – ₹	9-3	1-1	9- <b>२</b> ]	11
		₹-₹	<b>?-</b> ?	₹-₹	<b>२-१</b>	<b>२–२</b> ि	

काहि देशने आश्रयी भागाओमां असंयोगी एक अने दिवसंयोगी पंदर तथा प्रदेशने आश्रयी भागाओमां असंयोगी एक अने दिवसंयोगी दश भागा जाणवा.

ं जेम छोकनी नीचेनो चरमान्त बह्यो तेम रक्षप्रभानी नीचेनो चरमान्त पण कहेबो. मात्र विशेष ए छ के लोकनी नीचेना चरमान्तमां जीबदेश संबन्धे बेहन्दियादिना मध्यम भागारिहित बच्चे भागा कहा। छे, पण अहीं पंचेन्द्रियना त्रणे भागा कहेबा अने पंचेन्द्रिय सिवायना जीबोमां बच्चे भागा कहेबा, कारण के रक्षप्रभानी नीचेना चरमान्तमां देवहण पंचेन्द्रियोना गमनागमनद्वारा पंचेन्द्रियनो देश अने तेना देशो संभवे छे, माटे पंचेन्द्रियना अणे भागा आहिं छेबा. अने बेहन्द्रियादि तो रक्षप्रभानी नीचेना चरमान्तमां मरणसमुद्धातथी जाय लारंज तेनो संभव होवाची लां तेमनो देशाज संभवित छे, परन्तु देशो संभवता नची, केमके रक्षप्रभानी नीचेनो चरमान्त एक प्रतरहण होवाची अनेक देशनो हेतु यतो नथी.—टीका.

रक्षप्रभाग नीचेना चरमान्त तथा शर्कराप्रमा आदि वार्कीर्ना नरको अने सौधर्मबी भच्युत सुधीना देवलोकना उपर अने नीचेना चरमान्तने आश्रयी जीवदेश अने जीवप्रदेशोना भांगाओनुं यम्त्र—

एक के शनेक जीवोना एक के अनेक देश।दि.

	एकेन्द्रिय.	वेइन्द्रिय.	तेइन्द्रिय.	वड़िरिन्द्रय.	पश्चेन्द्रिय.	<b>अ</b> निन्द्रिय.	कुलभोगा.
. 1	ſ	۹-9	9-9	9-9	7-9	1-1	
देश. {	<b>4</b> -3	<b>२</b> -२	<b>२-</b> ३	₹₹	9-8	२-१ 🗲	93
	Į.				<b>२१</b>	Ş	
प्रदेश.	१-२	<b>9</b> 3	9-7	1-२	1-1	9- <b>4</b> }	••
ગળવા.	{	<b>२</b> −₹	₹-₹	₹₹	<b>२–</b> ३	<b>ર–ર</b> ∫	11

अहिं देशने आध्रयी भागामां असंयोगी एक अने द्विकसंयोगी अगीयार, तथा प्रदेशने आश्रयी भागामां असंयोगी एक अने द्विकसंयोगी इश मांगा जाणवा.

्रै शर्कराप्रभानी उपरनी तथा नीचेनो चरमान्त रक्षप्रभानी नीचेना चरमान्तनी पेठे जाणवो. त्यां वेइन्द्रियादिना जीवदेशने आध्यी मध्यम भंग रहित बाकीना चरवे भांगा जाणवा. आजीवचे आध्यी स्था नेइन्द्रियादिने विषे प्रथम भंगरहित बाकीना चरवे भांगा जाणवा. आजीवचे आध्यी स्पी शजीवना चार शने अरूपी शजीवना छ भेद जाणवा, शर्कराप्रभानी पेठे बाकीनी नरकप्रचित्रीओ अने सौधर्मद्री आरंगी प्रैनेयक ध्रुधीना विद्यानी विद

६ \* द्वामा शतकना प्रथम उद्देशका जंम विमला दिशा संबन्धे कहां छे तेम रक्षप्रमाना उपरान बरमान्त संबन्धे पण कहेतुं. जेमके—ह्यां 'जीवो नबी, कारण के ते एक प्रदेशना प्रतरहप होवाधी तेटलामा जीवो समाइ शकता नथी; पण जीबदेश अने जीवप्रदेश रही शके छे. तेमां जे जीव्या ऐकेन्द्रियदेशो अने बेहिन्द्रयनो देशो; र अथवा एकेन्द्रियदेशो अने बेहिन्द्रयनो देशो, र अथवा एकेन्द्रियदेशो अने बेहिन्द्रयोना देशो. उपराना त्रण भांगा थाय छे, कारण के रक्षप्रभामां बेहिन्द्रयो रहे छे, धने तेओ एकेन्द्रियनी अपेक्षाए थोडा होय छे, तेथी तेना उपरान चरमान्तमा बेहिन्द्रयोना एक देश अथवा अनेक देशो संभवित छे. ए प्रमाणे जीन्द्रियथी माणी अनिन्द्रय सुधी प्रत्येकना प्रण प्रण जांगा जीवदेशने आध्यी कहेवा. इवे जे जीवना प्रदेशो छे ते अवद्य एकेन्द्रियना प्रदेशो छे. १ अथवा एकेन्द्रियप्रदेशो अने बेहिन्द्रयोना प्रदेशो; २ अथवा एकेन्द्रिय जीवप्रदेशो अने बेहिन्द्रयोना प्रदेशोः ए प्रमाणे शीन्द्रयथी आरोगी अनिन्द्रय छुधी बच्चे भांगा जाणवा. तथा लगे कर्णी अर्जीवना चार प्रकार अने अहपी अजीवना सात प्रकार छे. कारण के ते समयक्षेत्रनी अदर होवाथी त्यां अद्धासमय पण होय छे.— टीका.

- ७. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं भंते ! लोगस्स पुरिच्छिमिल्लाओ चिरमंताओ पचिच्छिमिल्लं चिरमंतं एगसमएणं गच्छिति, पचिछिमिल्लाओ चिरमंताओ पुरिच्छिमिल्लं चिरमंतं एगसमएणं गच्छिति, दाहिणिल्लाओ चिरमंताओ उत्तरिल्लं जाव-गच्छित्, उचिरिल्लाओ चिरमंताओ हेट्टिल्लं चिरमंतं एवं जाव-गच्छिति, हेट्टिल्लाओ चिरमंताओ हेट्टिल्लं चिरमंतं एवं जाव-गच्छिति, हेट्टिल्लाओ चिरमंताओ हेट्टिलं चिरमंतं एवं जाव-गच्छिति, हेट्टिल्लाओ चिरमंताओ हेट्टिलं चिरमंतं एवं जाव-गच्छिति, हेर्टिल्लाओ चिरमंताओ हेट्टिलं चिरमंतं एवं जाव-गच्छिति ।
- ८. [त॰] पुरिसे णं मंते ! वासं वासित, वासं नो वासितीति हत्थं वा पायं वा वाहुं वा उद्दं वा आउद्दावेमाणे वा प्रखारेमाणे वा कितिकिरिप ? [उ॰] गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे वासं वासित वासं नो वासितीति, हत्यं वा जाव-उद्दं वा आंवहावेति वा पसारेति वा, तावं च णं पुरिसे काइयाप जाव-पंचांहं किरियाहिं पुट्टे ।
- ९. [म०] देवे णं मंते! महिहिए जाव-महेसक्खे लोगंते ठिखा पमू अलोगंसि इत्थं वा आव-उरं वा आउंटावेत्तए वा पसारेत्तए वा ? [उ०] णो तिणहे समदे [प्र०]। से केणहेणं मंते! एवं बुखह—'देवे णं महिहीए जाव-लोगंते ठिखा णो पमू अलोगंसि इत्थं वा जाव-पसारेत्तए वा'? [उ०] जीवाणं आहारोविचया पोग्गला, बोंदिविया पोग्गला, कलेवरिचया पोग्गला, पोग्गलामेव पण जीवाण य अजीवाण य गतिपरियाए आहिजाइ, अलोए णं नेवित्थ जीवा, नेवित्थ पोग्गला; से वेणहेणं जाव-पसारेत्तए वा। 'सेवं भंते! सेवं मंते'! ति।

#### सोलसमे सए अड्डमो उद्देसी समत्तो ।

७. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणु पुद्गल एक समयमां लोकना पूर्व चरमांतथी—छेडायी पश्चिम चरमांतमां, पश्चिम चरमांतयी पूर्व चरमांतमां; दक्षिण चरमांतयी उत्तर चरमांतमां, उत्तर चरमांतथी दक्षिण चरमांतमां; उपरना चरमांतयी नीचेना चरमांतमां, अने नीचेना चरमांतयी उपरना चरमांतमां जाय ? [उ०] हे गौतम ! हा, परमाणु पुद्गल एक समये लोकना पूर्व चरमान्तयी पश्चिम चरमांतमां, यावत्— नीचेना चरमांतथी उपरना चरमांतमां जाय.

**परमाणुनी गति**-

८. [प्र०] हे भगवन् ! 'वरसाद वरसे छे के नथी वरसातो' ए [ जाणवाने ] माटे कोई पुरुप पोतानो हाथ, पग, बाहु, के उरु सैकोचे के पसारे तो ते पुरुषने केटली किया लागें : [उ०] हे गैतिम ! 'वरसाद वरसे छे के नथी वरसतो' ए जाणवाने माटे जे पुरुष पोतानो हाथ, यावत्—उरु संकोचे के पसारे ते पुरुषने काथिकी वगेरे पांचे कियाओ लागे.

काश्विकी मादि किया-

९. [प्र0] हे भगवन्! मोटी ऋदिवाळो यावत्—मोटा सुखवाळो देव लोकांतमां रहीने अलोकमां पोताना हायने, यावत्—उरुने संकोचवा के पसारवा समर्थ छे ! [उ०] हे गातम! ते अर्थ समर्थ नथी. [प्र0] हे भगवन्! आप ए प्रमाणे शा हेत्थी कहो छो के भोटी ऋदिवाळो देव लोकान्तमां रहीने अलोकमां पोताना हाथने, यावत्—उरुने पमारवा समर्थ नथीं ' [उ०] हे गातम! \*जीवोने [ अनुगत एवा ] आहारोपचित, शरीरोपचित अने कलेवरोपचित पुद्गलो होय छे, तथा पुद्गलोने आश्रयीनेज जीवोनो अने अजीवोनो [ पुद्गलोनो ] गतिपर्याय कहेवाय छे. अलोकमां तो जीवो नथीं, तेम पुद्गलो पण नथी माटे ते हेत्थी पूर्वोक्त देव यावत्—पसारवा समर्थ नथी. हि भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

देव वलोकमां इस्तादि पनारवा ममर्थे हे !

#### सोळमा शतकमां अष्टम उद्देशक समाप्त.

आंग आणवा अने द्वीन्द्रयना बन्बे भागा आणवा. प्रेवेयक तथा अनुसर विमानमा देवोनु गमनागमन नहि होवाची पंचिन्द्रयमा पण बन्बे भागा थाय छे. अवापि त्रीजी नरकपृथिवी सुधी देवोनुं गमनागमन होवाची बालुकाप्रमाना उपरना चरमान्त सुधी देशने आध्यी पंचेन्द्रियना त्रण त्रण भागानो संभव छे, अने आंबी आगळनी नरकपृथिवीने विषे देवोनुं गमनागमन नहि होवाची पंचेन्द्रियना बन्बे भागा बाय छे, पण अहिं शकरात्रमानी पेठे साते नरकपृथिवी सुधी पंचेन्द्रियना त्रण भागा कहा छे ते विचारणीय छे.—टीका.

ईषत्रामारा ( सिद्धिका ) ना पूर्वादि चारे दिशाओना चरमान्तने आश्रयी जीवदेश अने जीवप्रदेशोना भागाओर्तु यन्त्र.—— एक के अनेक जीवोना एक के अनेक देशादि

	द्वा के कोचक सीचीचा दिया के कोचक त्रासि-						
	एकेन्द्रिय.	बेइन्द्रिय.	तेइन्द्रिय.	चउरिन्द्रिय.	पर्धान्द्य.	अनिन्दिय.	कुल भांगा.
	( २-२	99	9 <b>9</b>	9 9	9 9	۹٦	)
देश.	₹	9-2	9- <b>ર</b>	9-3	8 - S	र- २	<b>}</b> ٩५
	L	२- २	ર્-૨	<b>२</b> - <b>२</b>	<b>1</b> -7		)
प्रदेश. {	{ २−३	9-2	۹-۶	9-3	<b>3</b> ~ 5	9 – २	} 11
	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	२२	<b>३</b> .− <b>२</b>	२ - २	<b>२</b> २	ર−₹	<b>S</b> ''

अहिं पूर्ववत् देशने आध्यी असंयोगी एक अने तेनी साथे वे इन्द्रियादिनो योग करता हिकसंयोगी चीद मांगा तथा प्रदेशने आध्यी असंयोगी एक जने हिकसंयोगी दश भांगा जाणवा.

५ \* जीकोनी साथे रहेळा पुद्रको आहारहवे, शरीररूपे, कळेवरहपे तथा श्वासोच्छासादिहपे उपचित यर्थला होय छे. अर्थात्-पुद्रको हमेशां जीवागुगामी समाववाळा होय छे, के क्षेत्रमां जीवो छे त्यांज पुद्रकोनी गति होग छे, तेमज पुद्रकोने आश्रयी जीवोनो अने पुद्रकोनो गतिपर्म होय छे. तात्पर्य ए छे के जे के बित्रमां पुद्रको छे तेज क्षेत्रमां जीवोनी अने पुद्रकोनी गति याय छे, धर्मास्तिकायना अभावधी अलोकमां जीव अने पुद्रको होता नथी माटे त्यां जीव अने पुद्रकोनी गति पण नथी.—टीका.

#### नवमो उद्देसो.

१. [प्र०] कि हमं भंते ! विलस्स वहरोयणिदस्स वहरोयणरको सभा सहस्मा पन्नसा ! [उ०] गोयमा ! जंबुहीबे दीवे मंद्रस्स पद्ययस्स उत्तरेणं निरियमसंखे जे जहेव चमरस्म जाव—यायालीसं जोयणसहस्साई मोगाहिसा पत्य णं विलस्स वहरोयणरको रूपींगेहे नामं उप्पायपद्यप् पन्नसे । सस्तरस पद्धवीसे जोयणसप—एवं पमाणं जहेव तिगिष्णिक् हस्स । पासायवर्डेसगस्स वि तं चेव पमाणं, सीहासणं सपिवारं विलस्स परियारेणं, अट्टो तहेव, नवरं रूपींगद्व्यमाई ३, सेसं तं चेव, जाव—विल्चंचाप रायहाणीप अन्नेसि च जाव -रूपींगद्दस्स णं उप्पायपद्ययस्स उत्तरेणं छक्कोडिसप तहेव, जाव—वत्तर-लीसं जोयणसहस्साई मोगाहिसा पत्थ णं बिलस्स वहरोयणिदस्स वहरोयणरन्नो बिल्चंचा नामं रायहाणी पन्नसा । पगं जोयणसयसहस्सं पमाणं, तहेव जाव—विलपेढस्स उववाओ, जाव—वायरक्षा सद्यं तहेव निरवसेसं, नवरं सातिरेगं सागरी- बमं टिती पन्नसा, सेसं तं चेव जाव—वली वहरोयणिंदे बली० २ । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! जाव—विहरित ।

#### सोलसमे सए नवमो उद्देशो समत्तो ।

### नवम उद्देशक.

१ [प्र०] हे भगवन्! वैरोचनेन्द्र अने वैरोचन राजा एवा विलेगी सुधर्मा सभा क्यां कहेली (आवेली) छे! [उ०] हे गौतम ! जंब्र्द्वीय नामे द्वीपमां गंदर पर्वतनी उत्तरे तिरह्यं असंखेय [ द्वीप-ममुद्रो ओळंगीने ]—इस्मादि जेम "चमरनी हकीकतमां कह्यं छे तेम अरुणवर दीपनी बाह्यवेदिकायी अरुणवर समुद्रमां बेतालीश हजार योजन अवगाह्या पटी वैरोचनेन्द्र अने वैरोचनराजा एवा बलिनो रुचकेंद्र नामनो उत्पात पर्वत कह्यों छे. ते उत्पात पर्वत १७२१ योजनन उंचो छे. बाकीनुं बधुं तेनुं प्रमाण तिगिष्टिक्क्ट पर्वतनी पेटे जाणवुं तेना प्रासादावतंसकनुं पण प्रमाण तेज प्रमाणे जाणवुं. तथा बलिना परिवार सांध सपरिवार सिंहासन पण ते प्रमाणे कहेतुं. रुचकेन्द्र नामनो अर्थ पण ते प्रमाणे कहेत्रे. विशेष ए के आहं रुचकेन्द्र [ स्त्रविशेष] नी प्रभावाद्यां उत्पत्यदि जाणवां. वाकी बधुं तेज प्रमाणे यावन्त्र-ते बलिचंचा राजधानीनुं तथा अन्योनुं [आधिपत्य करतो विहरे छे.] त्यां सुधी कहतुं. ते रुचकेन्द्र उत्पात पर्वतनी उत्तरे छ सो | पचावन क्रोड, पांशीश लाख, पचास हजार योजन अरुणोदय समुद्रमां निरह्यं जडने नीचे रलप्रभा पृथिवीमां ] इत्यादि पूर्ववत् यावन्—चालीस हजार योजन गया पटी त्यां वैरोचनेन्द्र वैरोचनराजा एवा बलिनी 'बल्कंचा' नामनी राजधानी कही (आवेली) छे. ते राजधानीनो विष्कंभ—विस्तार एक लाख योजन छे. बाकीनुं बधुं प्रमाण पूर्व प्रमाणे जाणवुं, अने ते यावत्—बलिपीट सुधी समजवुं. तथा उपपात, यावत्—आत्म रक्षाने वर्ष पूर्ववत्त समजवुं. विशेष ए के वैरोचनेन्द्र वेरोचनेन्द्र वेरोचनेन्द्र विले छे' त्यां सुधी कहेतुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे.' भगवन् ! ते एमज छे.'

#### सोळमा शतकमां नवम उद्देशक समाप्त.

१ \* भगः स्व १ शव २ उ० ८ १० २९७-२९८

<sup>ि</sup>जन बीजा शतवना आरमां उद्देशकमां चनरेन्द्रनी मुपमां गमासंबंधे इधीकन कही छे तेम बिल संबंधे पण बहेती. त्यां जेम विगिच्छिकूटनामें उत्पात पर्यतनुं प्रमाण बहुं हे ते प्रमाण आहें स्चवेन्द्र उत्पात पर्यतनुं प्रमाण जाणतुं. तिगिन्छिकूटना उपर रहेला प्रासादावतंसकनुं जे प्रमाण कहुं छे ते प्रमाण कहुं छे के बिलना सामानिक देवीना आसनी साठ टजार छे अने आत्मरक्षक देवीना आसनी तेषी चार गुणा छे. जेम तिगिन्छिकूट नामनी अन्वर्थ कहुंन्ये छे, तेम आहं स्वयंक्त्रनी प्रमाण कहुं छे माटे ते तिगिन्छिकूट कहेवाय छे, तेम आहं स्वयंक्त्रनी प्रमाणाळी जत्मलादि होय छे माटे स्वयंक्त्रकृट कहेवाय छे, तम आहं स्वयंक्त्रनी प्रमाणाळी जत्मलादि होय छे माटे स्वयंक्त्रकृट कहेवाय छे, नगरीनुं प्रमाण कह्या पछी प्राकार, तेना द्वार, उपवारिकालयन, हारना उपरतुं एट, प्रासादायतंमक, मुधनंसभा, नैत्यभवन, उपवारायभा, एद, अभिषेकसभा, आलंकारिकसभा अने व्यवसायसभा वगरेतुं खहुप अने प्रमाण बिलियिन वर्णन सुसी कहेवुं.—टीका.

## दसमो उद्देसो.

१. [प्र०] कितिबिहे णं मंते ! ओही पश्चत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहा ओही पश्चता । ओहीपदं निरवसेसं माणियवं । श्लेबं भंते ! सेबं मंते ! जाब-विहरित ।

#### सोठसमे सए दसमो उद्देसो समची।

#### दशम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! अवधिज्ञान केटला प्रकारे कह्युं छे ! [उ०] हे गीतम ! अवधिज्ञान वे प्रकारे कह्युं छे. अहिं "प्रज्ञापना" अवधिज्ञान हे प्रकारे कह्युं हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे--एम कही यावद्-विहरे छे.

#### सीळमा शतकमां दशम उद्देशक समाप्त.

## इक्कारसमी उद्देसी.

- १. [प्र॰] दीवकुमारा णं भंते ! सब्वे समाहारा, सन्ने समुस्सासनिस्सासा ? [उ॰] णो तिणट्टे समट्टे । एवं जहा पढमसप पितियउद्देसप दीवकुमाराणं वत्तवया तहेव जाव-समाउया, समुस्सासनिस्सासा ।
- २. [प्र॰] दीवकुमाराणं मंते! कति छेस्साओ पन्नसाओ ? [उ॰] गोयमा ! चत्तारि छेस्साओ पन्नसाओ, तंजहा-१ कण्डछेस्सा, जाव-४ तेउछेस्सा ।
- ३. [प्र॰] एपसि णं मंते ! दीवकुमाराणं कण्डलेस्साणं आव-तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो जाव-विसेसा-दिया वा ! [उ॰] गोयमा ! सद्वत्थोवा दीवकुमारा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असंखेजागुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्डलेस्सा विसेसाहिया।
- ४. [४०] पपसि णं मंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेसाणं जाव-तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पष्टिया वा महिह्नया बा ! [उ०] गोयमा ! कण्डलेस्साहिंतो नीललेस्सा महिह्नया, जाव—सद्यमहिहीया तेउलेस्सा । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! बाव—विहरति ।

### सोलसमे सए इकारसमी उद्देशी समत्ती.

### अगियारमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! द्वीपकुमारो बधा समानआहारवाळा छे, समानउच्छुःस−िःश्वासवाळा छे १ [उ०] हे गाँतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. अहिं जेम प्रिथम शतकाना द्वितीय उद्देशकमां द्वीपकुमारोनी वक्तव्यता कहेळी छे ते बधी कहेची, यावत्—समान आयुष्यवाळा अने समान उच्छ्वास—िनःश्वास वाळा [ नथी ] त्या सुची जाणवुं.

दीपकुमारो समान भाहारवाजा हे-इत्यादि प्रश्नः

२. [प्र॰] हे भगवन् ! द्वीपकुमारोने केटली लेक्याओं कही छे? [ उ॰] हे गीनम! नेओने चार लेक्याओं कही छे. ते आ प्रमाणे— १ कृष्णलेक्या, यावत्—४ तेजोलेक्या.

डीपकुमारीने हेर्याओः

- ३. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत्—तेजोलेश्यावाळा ए द्वीपकुमारोमां कोण कोनाथी यावत्—विशेपाधिक छे ? [उ०] हे गीतम ! सीयी घोडा द्वीपकुमारो तेजोलेश्यावाळा छे, कापोनलेश्यावाळा असंखेयगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेपाधिक छे, अने तेना करतां कृष्णलेश्यावाळा विशेपाधिक छे.
- ४. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेखावाळा, यावत् तेजोलेखावाळा-ए द्वीपकुमारोमा कोण कोनाथी अर्ल्पार्धक छे अने महर्षिक छे ! [उ०] हे गौतम ! कृष्णलेखावाळा करनां नीछलेखावाळा द्वीपकुमारो महर्षिक छे; यावत्—तेजोलेख्यावाळा सीथी महर्षिक छे. है भगवन् ! ते एमज छे हे भगवन् ! ते एमज छे'--एम कही यावद् विहरे छे.

#### सोळमा शतकमां अगियारमो उद्देशक समाप्त.

<sup>9 \*</sup> अवधिज्ञान वे प्रकारनुं छे-भवप्रस्थिक अने आयोपशांभिक. देवो अने नैरियकोने भवप्रस्थिक अने मनुष्य तथा पंचिन्द्रिय तिर्थनयोगिकने कामोपशिक-अवधिज्ञानावरणना क्षयोपशमजन्य अवधिद्यान होयं छे. धिकोप माटे जुओ प्रज्ञा० पद ३३ प० ५३६-५४२.

द्विषोध्यधिः । भवप्रत्ययो नारकदेवानाम् । यथोक्तनिमित्तः पर्णविकत्यः शेवाणाम् ॥ नन्त्रा० अ० १ स्० २१-२१-२३ ॥ अर्थः—अविध्यान ने अकारे छे— भवप्रत्यय अने क्षयोपद्यमनिमित्तः नारक अने देवोने भवप्रत्यय अविधिज्ञान होय छे अने शेष मनुष्य अने पंचित्र्य तिर्यंचोने क्षयोपद्यमनिमित्तक होय छे. तेना छ प्रकार छे.

१ 🕇 भ० ग॰ सं॰ १ श• १ उ० २ ए० ९६.

# १२-१४ उदेसा.

१. [प्र॰] उद्दिकुमारा णं भंते ! सबे समाहारा॰ [७॰] एवं चेव 'सेवं भंते सेवं भंते'! ति । (१६-१२) एवं दिसाकुमारा वि (१६-१३) एवं धणियकुमारा वि । 'सेवं भंते सेवं भंते'! जाव-विहरह (१६-१४)।

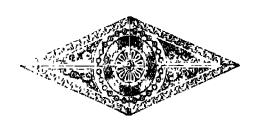
सोलसमे सए १२-१४ उद्देशा समचा सोलसमं सयं समचं.

## १२---१४ उद्देशक.

१. [प्रत] हे भगवन् ! शुं उद्धिकुमारो बधा समान आहारबाळा छे—इत्यादि पूर्व प्रमाणे प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणेज बधुं जाणबुं- कि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—(१६—१२) ए प्रमाणे विकुमारो विषे तेरमो उद्देशक जाणबो अने ए प्रमाणे स्तनित- कुमारो विषे चौदमो उद्देशक समजबो. कि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावद्—विहरे छे.

सोळमा शतकमां १२-१४ उद्देशको समाप्त सोळग्रं शतक समाप्तः

ৰ- .



## सत्तरसमं सयं

## कुंजरे संजये सेलेसितै किरिये ईसाणे पुढेंवि दंगे वेर्कि । एगिंदिये नागै सुवर्षे विक्षें वार्युं-गिंगे सत्तरसे ॥

## पढमो उद्देसो.

- १. [प्र॰] रायगिहे जाव-एवं वयासी-उदायी ण भंते! हत्थिराया कओहितो अणंतरं उद्घटिता उदायिहत्थिरायत्ताप खयवन्ने ! [उ॰] गोयमा ! असुरकुमारेहितो देवेहितो अणंतरं उद्घटिता उदायिहत्थिरायत्ताप उच्चन्ने ।
- २. [प्र०] उदायी णं भंते! हिन्यराया कालमासे कालं किया किंह गन्छिहिति, किंह उचविज्ञिहिति? [उ०] गोयमा! इमीसे ग्यणप्यभाष पुढवीष उक्कोसं सागगेवमिट्टतीयंसि निरयावासंसि नेग्ड्यत्ताए उचविज्ञिहिति।
- ३. [प्र०] से ण भंते! तओर्हिनो अर्णतरं उच्चिष्टिता किंदि गच्छिहिति, किंदि उचयिक्जिहिति? [उ०] गोयमा! महाविदेहें यासे सिज्झिहिति, जाव-अंतं काहिति ।
- ४. [प॰] भूयाणंदे णं भंते ! हत्थिराया कओहितो अणंतरं उन्नहित्ता भूयाणंदे हत्थिरायसाए० ? [उ०] एवं जहेब उदायी, जाव-अंत काहिति ।

# सत्तरमुं शतक.

[उद्देशक संग्रह—]१ कुंजर-कोणियाना प्रधान हस्ती संबन्धे प्रथम उद्देशक, २ संयतादि संबन्धे बीजो उद्देशक, ३ अलेबी प्राप्त अनगार संबन्धे श्रीजो उद्देशक, ४ जिया—कर्म संबन्धे चोथो उद्देशक, ५ ईशानेन्द्रनी सुधर्मा सभा संबन्धे पांचमो उद्देशक, ६-७ पृथिवीकायिक संबन्धे छट्टो अने सातमो उद्देशक, ८-९ अप्कायिक संबन्धे आटमो अने नगमो उद्देशक, १०-११ वायुकायिक संबन्धे दशमो अने अगीयारमो उद्देशक, १२ एकेन्द्रिय जीव संबन्धे बारमो उद्देशक, १३-१७ नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युक्तगार अने अग्नि-कुमार संबन्धे अनुज्ञमे तेर्यी आरंभी सत्तर उद्देशको-ए प्रमाण सत्तरमा शतकमां सत्तर उद्देशको कहेवामा आवशे.

#### प्रथम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां भगवान् गीतम यावत्–आ प्रमाणे बोल्या–हे भगवन् ! उदायां नामे प्रधान हस्ती कई गांतमांधी मरण पामी तुरत अहीं उदायी नामे प्रधान हस्तीपणे उत्पन्न थयों छे ई [उ०] हे गीतम ! ते असुरकुमार देव थकी मरण पामी तुरत अहीं उदायी नामे प्रधान हस्तीपणे उत्पन्न थयों छे.

नदायी इस्ती वर्ड गतिमागी आभी स्ट त्पन्न थगो स्टे<sup>8</sup>

२. [प्रo] हे भगवन् ! आ उदायी नामे हस्ती मरणसमये भरी क्यां जहो, क्यां उत्पन्न थहो ! [उ०] हे गीतम ! आ रहप्रभा पृथिवीने विषे एक सागरोपमनी उन्कृष्ट स्थितियाळा नरकावासमां नैरियकपणे उत्पन्न यहो. उदायी मरीने **स्थां** अझे !

- ३. [प्रo] हे भगवन् ! ते ( उदायी हस्ती ) त्यांथी मरण पागी तुरन क्यां जशे, क्यां उत्पन्न थशे ? [उ o ] हे गीतम ! गहानिवेह व्याणि मरण पागी वया जशे ! क्षेत्रमां उत्पन्न थई सिद्ध थशे, सर्व दु:खोनो अन्त करशे.
- 8. [प्रo] हे मगवन् ! भूतानंद नामे प्रधान हस्ती कई गतिमांथी मरण पार्मा तुरत अहिं भूतानंद नामे हस्तीयण उत्पन्न थयो भूतानंद नामे हस्तीयण उत्पन्न थयो भूतानंद नामे हस्तीनी वक्तव्यता कही तेम भूतानंदनी पण वक्तव्यता अहिं जाणवी. यावत्—सर्व दुःखोनो अन्त करशे. ने क्या असे !

- ५. [प्र॰] पुरिसे णं भंते! तालमारुह्द, तालमारुह्ति तालामो तालफलं प्रचालेमाणे वा प्रवाहेमाणे वा कितिकिरिए! [प्र॰] गोयमा! जावं च णं से पुरिसे तालमारुह्द, तालमारुहित्ता तालामो तालफलं प्रचालेद वा प्रवाहेद वा तावं च णं से पुरिसे कादयाए जाय-पंचीहें किरियाहि पुट्टे; जेसि पि णं सरीरेहितो ताले निवसिए, तालफले निवसिए ते वि णं जीवा कादयाए जाय-पंचीहें किरियाहि पुट्टा ।
- इ. [४०] अहे णं मंते! से तालफले अप्पणो गरुयत्ताप, जाय-पश्चोवयमाणे जाई तत्थ पाणाई जाय-जीवियाओ वव-रोबेति तप णं मंते! से पुरिसे कतिकिरिए? [उ०] गोयमा! जावं च णं से पुरिसे तलफ्कले अप्पणो गरुयत्ताप जाव-जीवि-याओ वयरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाप जाव-पंचिंद्ध किरियािंद्ध पुट्ट; जेसि पि णं जीवाणं सरीरेिंद्दतो तले निवित्तिप्त ते वि णं जीवा काइयाप जाव-चउिंद्ध किरियािंद्ध पुट्टा; जेसि पि णं जीवाणं सरीरेिंद्दतो तलफले निवित्तिप्त ते वि णं जीवा काइयाप जाव-पंचिंद्ध किरियािंद्ध पुट्टा; जे वि य से जीवा अद्वे वीससाप पद्योवयमाणस्स उवग्यद्दे वद्दंति ते वि य णं जीवा काइयाप जाव-पंचिंद्ध किरियािंद्द पुट्टा।
- ७. [४०] पुरिसे णं भंते ! रुक्सस्त मूलं पचालेमाणे वा, पवाडेमाणे वा कितिकिरिप ? [उ०] गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे रुक्सस्स मूलं पचालेह वा, पवाडेह वा तावं च णं से पुरिसे काह्याप जाव-पंचीहें किरियाहिं पुट्टे; जेसि पि य णं जीयाणं सर्रारोहितो मूले निश्वत्तिप, जाव-बीप निर्धात्तप, ते वि य णं जीवा काह्याप जाव-पंचीहे किरियाहिं पुट्टा।
- ८. [प्र०] अहे णं भंते! से मूळे अप्पणो गरुययाप जाय-जीवियाओ वचरोवेद तओ णं भंते! से पुरिसे कितिकि-रिष ? [उ०] गोयमा! जावं च णं से मूळे अप्पणो जाय-वचरोवेद तावं च णं से पुरिसे कादयाप जाथ-चर्जीहें किरियाहिं पुट्टे; जैसि पि य णं जीवाणं सरीरोहिंतो कंदे निव्यक्तिए, जाय-बीए निव्यक्तिए ते वि णं जीवा कादयाए जाव-बर्जाहं पुट्टा;

कायिकी आदि कियाओ.

- ५. [प्र०] हे भगवन् ! कोई पुरुप ताडना झाड उपर चढे, अने ते ताडना झाड उपर चढी त्यां रहेळा ताडना फळने हळावे के नीचे पाडे तो ते पुरुपने केटळी कियाओ लागे ! [उ०] हे गौतम ! \*जेटलामां पुरुप ताड उपर चढी ताडना फळने हळावे के नीचे पाडे, तेटलामां ते पुरुपने काथिकी वगेरे पांच कियाओ लागे. जे जीवोना शरीरद्वारा ताड दृक्ष तथा ताडनुं फळ उत्पन्न थयुं छे ते जीवोने पण काथिकी वगेरे पांच कियाओ लागे.
- इ. [प्रo] हे भगवन् ! [ ते पुरुषे हलाव्या के तोड्या पछी ] ते ताडनुं फळ पोताना भारने लीधे यावत्—नीचे पडे, अने नीचे पडता ते ताडना फळडारा जे जीवो हणाय, यावत्—जीवितथी जदा थाय, तो तेथी ते फळ तोडनार पुरुषने केटली कियाओ लागे ! [उo] हे गौतम ! जेटलामां ते पुरुष ताडना पळने तोडे अने पछी ते पळ पोताना भारने लीधे नीचे पडता जीवोने यावत्—जीवितथी जूदा करे तो तेटलामां ( तोडनार ) पुरुषने काणिकी वगेरे चार कियाओ लागे, जे जीवोना अर्रारधी ताडनुं हक्ष नीपज्युं छे ते जीवोने यावत् चार कियाओ लागे, अने जे जीवोना अर्रारधी ताडनुं फळ नीपज्युं छे ते जीवोने तो काणिकी यावत् पांचे कियाओ लागे. तथा जे जीवो खाभाविक रीते नीचे पटता नाडना फळना उपकारक थाय छे ते जीवोने पण काणिकी यावत्—पांचे कियाओ लागे.

**मृद्ध**नुं मूळ चलाव-नारने किया.

७. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ पुरुष झाडना मूळने हलावे के नीचे पाडे तो ते पुरुषने केटली किया लागे ? [उ०] हे गौतम ! झाडना मूळने हलावनार के नीचे पाडनार पुरुषने कार्यिकी वंगरे पांचे कियाओं लागे, अने जे जीवोना शरीरथी मूळ यावत् बीज नीपज्यां के ते जीवोने पण कार्यिकी वंगेरे पांचे कियाओं लागे.

कुश्चना मूळने किया।

८. [प्र०] हे भगवन् ! त्यार पर्छा ते मूळ पोताना भारने लीघ नीचे पडे अने बीज। जीवोनुं घातक थाय तो तेथी मूळने हला-बनार के तोडनार ते पुरुषने केटली शिया लगे ! [७०] हे गीतम ! जेटलमां ते मूळ पोताना भारने लीघे नीचे पडे अने बीजा जीवोनुं बातक थाय तेटलामां ते पुरुषने कायिकी कमेरे चार क्रियाओ लगे. तथा जे जीवोना दारीरथी केंद्र नीपज्यो छे, यावत्-बीज

५ कोई पुरुष लाडना झाडने हलाये के तेना फळने नीचे पाडे तो ते नाडना फळनी अने ताडना फळने आश्रयी रहेला जीयोगी हिंसा करे छे, जे हिंसा रूप किया करे छे ते कायिकी आदि चार कियाओ पण अनस्य करे छे, माटे ते पुरुषने कायिकी चगेरे पांच कियाओ लागे छे १. जेओ ताड अने फळना जीयो छे तेने पण पूर्वीक्त पांच कियाओ लागे छे, उनके ते बीज जीयोगे स्पर्शाद बड़े माझात् हण छे २. ज्यारे पुरुष ताडना फळने हलाये के तोड़े, पछा ते फळ पोताना भारथी नीचे पड़े अने ते द्वारा अन्य जीवोगी हिंगा थाय खारे ते पुरुषने चार कियाओ लागे, कारण के अहि फळना पडवाथी जे हिंगा थाय खारे ते पुरुषने चार कियाओ लागे, कारण के अहि फळना पडवाथी जे हिंगा थाय खारे ते पुरुषने चार कियाओ लागे, कारण के अहि फळना पडवाथी जे हिंगा थाय खारे ते पुरुषने चार कियाओ लागे, कारण के अहि फळना पडवाथी जे हिंगा थाय खारे तेने प्राणानिपान सिवाय बीजी चार कियाओ लागे ३. ए प्रमाण नाडना झाडने पण चार किया लागे, अने फळना जीयोगे पाच किया लागे, कारण के ते वधतुं साक्षात् कारण छे ५. नीचे पडता ताडना फळना जे उपकारक जीयो छे तेने पण पूर्वीक युक्तिथी पाच कियाओ लागे ६. ए प्रमाण फळहारा ह किया स्थानो कहा. ए रीते गूळ, कन्द, स्कंथ, त्वचा, वास्ता, प्रवाल, पांदहा, पुष्प, फळ अने बीजने विषे पूर्वीक छ कियास्थानो समजवा. विशेष माटे बाण फेकनार पुरुष संबन्धे तुओ भग० संव २ ह १० २०६–२०७.

क्रोंसि पि य जं जीवाजं सरीरोईतो मूले निवस्तिष ते वि जं जीवा काद्याए जाव-पंचींद्व किरियाहिं पुट्टा; जे थि य जं से जीवा महे बीससाय पद्मोवयमाणस्स उद्मगहे वट्टंति ते वि णं जीवा काइयाप जाव-पंचांहे किरियाहि पुट्टा।

- ९. [प्र०] पुरिसे णं भंते! रक्ष्यस्स कंदं पचालेप्र०? [उ०] गोयमा! तावं च णं से पुरिसे जाव-पंचाँद्व किरियादि पुट्टे, कोसि पि णं जीवाणं सरीरोहितो मृत्ये निष्ठतिष, जाव-बीए निष्ठतिष ते वि णं जीवा पंचिहे किरियाहि पुटा ।
- १०. [प्र०] अहे णं भंते! से कंदे अप्पणो० ? [७०] जाय-चडाई पुट्टे: जेमि पि णं जीवाणं सरीगेईंतो मुळे निध-सिए, अंधे निष्ठतिए, जाय-चउहि पुट्टा; जेसि पि णं जीवाणं सरीरोहिंतो कंदे निष्ठतिए ते वि य णं जीवा जाव-पंचहि पुट्टा; जे वि य से जीवा अहे वीससाए पद्मोवयमाणम्स जाव-पंचाहि पुट्टा, जहा कंदे, एवं जाव-बीयं।
- ११. [प्र०] कति णं मंते! सरीरमा पन्नसा? [उ०] गोयमा! पंच सरीरमा पण्णसा, तं जहा-१ ओरालिए, जाब-कस्मए ।
- १२. [प्र0] कति णं अंते ! इंदिया पण्णता ! [उ०] गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, तं जहा -१ सोइंदिए, जाव-५ कार्सिदिए।
- १३. [प्र०] कतिविद्दे णं भंते! जोए पण्णते ? [उ०] गोयमा ? तिविद्दे जोए पण्णते, तं जहा-मणजोए, वयजोए, कावजोए।
- १४. [प्र०] जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निवसेमाणे कतिकिरिए ! [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकि-रिए, सिय पंचिकरिए; पवं पुढविकाइए वि, एवं जाव-मणुस्से।
- १५. [प्र०] जीवा णं भंते ! ओरालियसरीरं निवनेमाणा कतिकिरिया " [उ०] गोयमा ! तिकिरिया वि. चउकिरिया वि, पंचिकिरिया वि: एवं पृढविकाइया वि, पवं जाव-मणुस्सा । एवं वेउश्वियसरीरेण वि दो दंडगा, नवरं जस्स अध्यि वेड-

नीपज्युं छे ते जीबोने कायिकी यावत-चार कियाओ लागे. बळी जे जीबोना शरीरथी मूळ गीपज्युं छे ते जीबोने काशिकी यावत-पांच क्रियाओं टागे. तथा जे जीवो साभाविक रीते नीचे पडता मूळना उपप्राहक.–उपकारक है ते जीवोर पण वायिकी वगेरे पांच क्रियाओ छागे छे.

९. प्रि.) हे भगवन् ! कोइ पुरुष बृक्षना कंदने हळाने तो तेने केटठी त्रिया छागे १ (उ०) हे गैतिम ! कंदने हळावनार ते पुरुषने यावत्-पाच क्रियाओ लागे. तथा जे जीबोना अरीएयी मूळ यावत्- बीज नापज्युं छे ते जीवोने पण पाच क्रियाओ लागे छे.

वृक्षना कन्द्र चला-वनारने किया-

कन्दने क्रिया-

१०. [प्र०] हे भगवन् ! त्यार पछी ते कन्द पोताना भारने अंधे नीचे पडे अने यावत-जीवोनो घात करे तो ते पुरुपने केटली क्रियाओ लागे १ [उ०] ते पुरुषंत्र यावत्⊸चार त्रियाओ लागे. [ साक्षात धातकः नहि होवार्धा प्राणातिपातित्रया न लागे. ] तथा जे जीवोना शरीरोधी मूळ, स्कंब बगेरे नीपज्यां छे ते जीवोने परंपराए घातक होताथी प्राणातिपात किया सिनाय चार कियाओ लागे, अने जे जीवोना शरीरोथी कंद नीपत्र्यों **छे ते जीवोने यात्रत् पांचे कियाओ लागे.** वर्ळा जे जीवो सामाविक रीते गींचे पड़ता ते कंदना। उप-कारक होय ते जीवोने पण पांचे कियाओं लागे. जेम केंद्र संबन्धे वक्तव्यता वही तेम यावत्-बीज सवन्धे पण जाणवी.

११. प्रिको हे सगवन् ! केटलां शारीरो कह्यां छे १ [उक] हे गोतम ! पाच शरीरो कह्या छे, ते आ प्रमाणे--? औदारिक, यावत्-५ कार्मण.

द्यागी.

इन्द्रियो.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! केटली इन्द्रियो कही छे? [उ०] हे गौतम ! पांच इन्द्रियो कही छे, ते आ प्रमाण-१ श्रोत्रेन्टिय, यावत्-५ स्पर्शेन्द्रिय.

द्रोग.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! योग केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! योग त्रण प्रकारनो कत्यो छे, ते आ प्रमाणे-मन-योग, वचनयोग अने काययोग.

जीवारिकादि शरीर ने बाधनी जीव केट-ा किया करें ?

१४. [प्रत] हे भगवन् ! औदारिक शरीरने बांधतो जीय केटली क्रियावाळो होय ? [उत्त] हे गौतम ! \*औदारिक शरीरने बांधतो जीव मोहवार त्रण कियावाळो, कोहवार चारकियावाळो अने कोहवार पांच कियावाळो होय. ए रीले पृथिवीकाविक संबन्धे काँउयुं. नाम ए प्रमाणे दंडवाना ऋमधी यावत् मनुष्य सुधी जाणतुं.

अनेव, जीपी बेह-ली किया कर है

१५. [प्रठ] हे मगवन् ! औदारिक शरीरने बांघता अनेक जीवोने केटळी क्रियाओ लागे १ [उठ] हे गीतम ! ेजोने कटर्शनाउ त्रण कियाओ, कदाचित् चार कियाओ अने कदाचित् पांच कियाओ लगे. ए प्रमाण यावत इंडकना क्रमर्था पृथ्वि प्राधित

१४ \* ज्यारे औदारिक अरीरने संघतो जीव ज्या सुधी बीजा जीवोने परिराषाँद न जन्यज्ञ करे व्यासुधी जेन काबिकी, अधिकाणिकी जेने प्रातंपकीन ए प्रण कियाओं कारो, ज्यारे परने परितापादि उत्पन्न करे त्यारे तेने पारिनापानकी सहित चार कियाओं ळांग, अंगे अन्य ओवर्गा हिसा करे त्यारे नेने प्राणातिपात सहित पांच कियाओ लागे.--टीका.

वियं, एवं जाव-कम्मगसरीरं, एवं सोइंदियं, जाव-फासिदियं, एवं मणयोगं, वयजोगं, कायजोगं, जस्स जं अस्यि तं माणि-यवं, एए एगत्त- पृष्टुत्तेणं छवीसं दंडगा ।

- १६. [प्र॰] कतिविहे णं भंते! भावे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! छिब्रिहे भावे पश्चते, तं जहा-१ उद्दूर, २ उवसमिए, जाव-६ सिश्वाइए ।
- १७. [प्र॰] से कि तं उदहए ! [उ॰] उदहए भावे दुविहे पश्चते, तं जहा-उदहए, उदयनिष्पन्ने या, एवं एएणं अभि-लावेणं जहा अणुओगदारे छन्नामं तहेच निर्वसंसं भाणियष्ठं, जाव-सेत्तं सन्निवाहए मावे । 'सेवं मंते ! सेवं मंते'! ति ।

#### सत्तरसमसए पढमो उद्देमो समत्तो ।

जाणबुं. तथा ए क्रमथी यावत्-मनुष्यो सुधी जाणबुं. ए प्रमाणे वैक्तिय शरीर संबन्धे पण एक वचन अने बहुवचनने आश्रयी बे दंडको कहेवा. परन्तु जे जीवोने वैक्तिय शरीर होय ते जीवोने आश्रयी कहेवुं. ए प्रमाणे यावत्—कार्मणशरीर सुधी समजबुं. श्रोत्रेन्द्रियथी आरंभी यावत्—स्पर्शेन्द्रिय सुधी पण एज क्रमधी जाणबुं. वळी मनयोग, वचनयोग अने काययोग विषे पण ए प्रमाणे कहेवुं, परन्तु जेने जे योग होय तेने ते योगसंबन्धे कहेवुं. एम बधा मळीने एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी छन्वीश दंडको कहेवा.

व्यदिकादि मावी,

- १६. [प्र०] हे भगवन्! भाव केटला \*प्रकारना कह्या छे १ [उ०] हे गीतम! भाव छ प्रकारना कह्या **छे. ते आ प्रमाणे--१ औद**≁ विक, २ औपशमिक, यात्रत्–६ सांनिपातिक.
- १७. [प्र०] हे भगवन् ! औदियिक भाव केटला प्रकारे कहाो छे. [उ०] हे गौतम ! औदियक भाव **बे** प्रकारे कहाो छे, ते आ प्रमाणे—औदियक अने उदयनिष्पन्न. ए प्रमाणे आ अभिलाप वडे !अनुयोगद्वारमां जेग ‡छ नामनी वक्तल्यता कही छे ते बधी आहें. कहेवी. यावद्—ए प्रमाणे सांनिपातिक भाव सुधी कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### सत्तरमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त-

### बीओ उद्देसो ।

१. [प्र०] से पूर्ण भंते! संयत-विरत-पिडहय-पश्चषकायपापकस्मे धस्मे दिए, अस्तंजय-अविषय-अपिडहयपश्चषका-यपावकस्मे अधम्मे दिते, संजयासंजए धम्माधम्मे दिते? [उ०] हंता गोयमा! संजय-विषय० जाव-धम्माधम्मे दिए। [प्र०] एएसि णं भंते! धम्मंसि वा, अहम्मंसि वा, धम्माधम्मंसि वा चिक्रेया केह आसइत्तए वा, जाव-तुयद्वित्तए वा? [उ०] गोयमा! णो तिणद्वे समद्वे। [प्र०] से केणं खाति अट्टेणं भंते! एवं बुधइ-'जाव-धम्माधम्मे दिते'। [उ०] गोयमा! संजय-

## द्वितीय उद्देशक.

संयतादि धर्मे, अधर्मे के धर्माघर्नमां स्वित होय !

कीय जीव धर्म, अ धर्म के धर्माधर्ममां बेसी शके ? धर्म, अधर्म के धर्मा-धर्ममां स्थित होय ब्युडे हों ! १. [प्र०] हे भगवन् ! संयत, प्राणातिपातादिशी विरातवाळो अने जेणे पापकर्मनो प्रतिघात अने प्रत्याख्यान वर्षुं छे एवो जीव भिन्नादित्र धर्ममां स्थित होय, अनंयत, अविरत अने जेणे पापकर्मनो प्रतिघात अने प्रत्याख्यान कर्युं नथी एवो जीव अधर्ममां स्थित होय, तथा संयतासंयत जीव धर्माधर्ममां स्थित होय ? [उ०] हे गौतम ! हा, संयत अने विरत जीव धर्ममां स्थित होय, संयतासंयत जीव यावत्—धर्माधर्ममां स्थित होय. [प्र०] हे भगवन् ! ए धर्ममां, अधर्ममां अने धर्माधर्ममां कोइ जीव बेसवान यावत्—आळोटवाने समर्थ छे ! [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ ममर्थ नधी [अर्थात्—ते जीवनो स्वभाव होवाधी धर्ममां, अधर्ममां के धर्माधर्ममां कोइ जीव बेसी शकतो नथी.] [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी आप एम वहां छो के— 'यावत्—धर्माधर्ममा स्थित होय' ! [उ०] हे गौतम ! संयत, विरत अने जेणे पापकर्मनं प्रत्याख्यान वर्षुं छे एवो जीव धर्ममां स्थित होय एटले धर्मनो आश्रय करी—स्वीकार करीने विहरे. ए प्रमाणे असंयत, अविरत अने जेणे

१६ \* पाच शरीर, पाच इन्द्रिय अने बण योगना एकत्व अने बहुत्वने आश्रयी २६ दंडको थाय छे.

१७ † औदियक भावना औष्टियक अने उदयांनप्पन-ए ने मेदे छे. आठ कर्मग्रहतिओनो उदय ने औदियक. उदयांनप्पन्नना ने प्रकार छे. जीवो-द्यांनप्पन्न अने अजीवोदयांनप्पन्न कर्मना उदयथी जीवमां निष्पन्न थयेला नारक, तिर्यंच इस्वादि पर्यायो जीवोदयांनिष्पन्न कर्मना उदयथी अजीवने विषे थयेला पर्यायो, जेमके औदारिकारिकारीय तथा औदारिकादि दारीरने विषे रहेला वर्णादि ते औदारिकशरीरनाम कर्मना उदयथी पुद्गलद्रव्यह्म अजीवने विषे निष्पन्न होवाथी अजीवोदयनिष्पन्न कहेवाय छे जुओ-अनुयोग० प० २१४.

<sup>्</sup>रै अनुयोगद्वार सूत्रमां एक नामश्री माडी छ नाम दंगरे संबंधे अथन छे, तेमां छ नामनी वक्तव्यतामां छ भाषना स्वरूपनुं वर्णन छे. जुओ-—प∙ ९९३–९२७.

<sup>🤋 🎖</sup> अहिं धर्म, अधर्म अने धर्माधर्मपदशी अनुफर्ग चारित्र धर्म, अविरति अने देशविरति विवेक्षित छे.

५ स॰ द्

P. A. P.

विरयः जान-पारकम्मे धन्मे ठिए, धम्मे श्वेष उपसंपित्रता णं विदृर्शतः असंजयः जान-पारकम्मे मधम्मे ठिते, अधन्मं श्वेष उथसंपित्रता णं विदृर्शतः संजयासंजय धन्माधम्मे ठिए, धन्माधम्मं उयसंपित्रता णं विदृर्शतः, से तेणद्वेणं जान-ठिए।

- २. [प्र॰] जीवा जं मंते! कि धम्मे ठिया, अध्यमे ठिया, धम्माधम्मे ठिया ! [उ॰] गोयमा ! जीवा धम्मे वि ठिया, अध्यमे वि ठिया।
- े १. [प्र॰] नेरतिआणं पुच्छा । [उ॰] गोयमा! गेरहया नो धम्मे डिता, अधम्मे डिता, णो धम्माधम्मे डिता । एवं आव-मार्डीवेयाणं ।
- ४. [प्र॰] पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया नो धम्मे टिया, अधम्मे हिया, धम्माधम्मे वि टिया । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोरसिय-वेमाणिया जहा नेरितया ।
- ५. [प्र०] अञ्चलियया णं भंते! एवं आइक्बंति, जाव-पर्ह्मित-एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासया वारुपंडिया, अस्स णं परापाणाए वि दंडे अणिक्बित्ते में णं 'पगंतवाले' सि वत्तवं सिया, से कहमेयं भंते! एवं ? [उ०] गोयमा! जण्णं ते अञ्चलिया पवं आइक्बंति, जाव-वत्तवं सिया; जे ते एवं आहंसु मिच्छं ते एवं आहंसु । अहं पुण गोयमा! एवं आइ-क्बामि, जाव-पर्ह्वमि-'एवं बलु समणा पंडिया, समणोयासगा बारुपंडिया, जस्स णं एगए।णाए वि दंडे निक्थित से णं नो 'पगंतवाले' सि वत्तवं सिया।
  - ६. [प्र०] जीवा णं भंते ! कि बाला, पंडिया, बालपंडिया १ [उ०] गोयमा ! बाला चि, पंडिया वि, बालपंडिया वि ।
  - ७. [प्र॰] नेरह्याणं पुष्छा । [उ॰] गोयमा ! नेरितया बाला, नो पंडिया, नो वालपंडिया । एवं जाय-चर्जादियाणं ।

पापकर्मनुं प्रलाख्यान कर्युं नयी एवो जीव अधर्ममां स्थित होय-एटले अधर्मनो आ एय करी जिहरे, तथा संयतारायत जीव धर्माधर्ममां स्थित होय-एटले जीव धर्माधर्मनो-उदावर्गतनो आश्रय करी बिहरे. ते माटे हे गीतम ! यावत्-'स्थित होय'.

- २. [प्र०] है भगवन् । द्युं जीवो धर्ममां स्थित होय, अधर्ममां स्थित होय के सर्मार्ममां स्थित होय ! [उ०] हे गौतम ! जीवो धर्ममां पण स्थित होय, अधर्ममां पण स्थित होय अने धर्माधर्ममां पण स्थित होय.
- २. [प्र०] हे भगवन ! ए प्रमाणे नैरियक संबन्धे पृच्छा करवी. [७०] हे गोताम नैरियको प्रमेगां स्थित न होय, तेम वर्गाधरीमां स्थित न होय, एण अधर्ममां स्थित होय. ए प्रपाणे यावत्-चटरिन्दिय जीवो सुवी जाणवुं.

दंटकना क्र**मशी** नगरियकादि सं**बन्धे** पूर्वास्त प्रश्ना

- ४. [प्र०] पेचेन्द्रिय तिर्पेच जीवो संबन्धे पृच्छा. [उ०] ६ गीतम! पेचेन्द्रिय तिर्पेच जीवो धर्ममां स्थित नधी, पण तेओ अधर्ममां अने धर्माधर्ममां स्थित छे. मनुष्योने विषे सामान्य जीवोनी पेठे वक्तव्यता कहेवी. बानव्यंतरी, जोतिपिको अने वैमानिको विषेनी वक्तव्यता नैरियकोनी पेठे कहेवी.
- ५. [प्र०] हे भगवन् ! अन्यतीर्थिको एम कहे छे, यावत् एम प्रकृष्ट छे के 'श्रमणो पंडित कहेवाय छे अन श्रमणोपासको वाल-पंडित कहेवाय छे, पण \*जे जीवने एक पण जीवना वधनी अविरति छे ते जीव 'एकांत वाल' कहेवाय, तो हे भगवन् ! आ (अन्यती-पिकोतुं कथन ) सत्य केंग होय ! [उ०] हे गीतम ! जे अन्यतीर्थिको आ प्रमाणे कहे छे के यावन्—'एकान्त वाल' कहेवाय, प्रम्तु जे-ओए एम कह्युं छे तेओए मिश्या—असत्य कह्युं छे, हे गीतम ! हुं तो आ प्रमाणे कहुं छुं—यावत् प्रकृणं छुं के—ए प्रमाणे व्यरेग्य श्रमणो पंडित छे अने श्रमणोपासको बालपंडित छे, पण जे जीवे एक पण प्राणिना बधनी विर्ति करी छे ते जीव 'एकांतवाल' न कहेवाय. [ परन्तु 'बालपंडित' कहेवाय. ]

अन्यतीविकीः भारूपंदित अने गान्य संबन्धे तेजीतुं मन्तन्यः

६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो बाल--विरित्तराह के, पंडित-सर्वविरित्वाळा के के बालपंडित--देशविरित युक्त के ! [उ०] हे गौतम ! जीवो बाल पण के, पंडित पण के अने बालपंडित पण के.

पंडिन, बालपं**डित** अ**ने बाल**.

७. [प्र॰] नैरियको संबन्धे ए प्रमाणे प्रश्न करवो. [उ॰] हे गौतुम ! नैरियको बाल छे, पण पंडित नथी, तेम बालपंडित पण नथी. ए प्रमाणे दंडकना ऋमशी यावत्—चउरिंद्रियो सुधी जाणतुं.

नर्यकादि वंड॰ जना कमश्री प्रश्नः

५ कि अन्यतीर्थिको 'श्रमणो पंडित-सर्विविरितिचारिश्रवाळा-छे अने श्रमणोपासक बालपंडित-देशिवरित गहित छे'-ए जिनसंमत त्रे पक्षनो अनुवाद करी तेमांना द्वितीय पक्षने कृषित करे छे-सर्व जीवोना वधनी विरित्त छतां जेने एक एक त्रीवना वधनी अधिरित छे एवा अमणोपासकने पण 'एपानतवाल' कहैंवा जोहए. तेनुं आ मन्तवय अयोग्य छे तेम भगवान महावीर जलावे छे-'जेने एक पण जीवना वधनी विरित्त छे तेने पण एकान्तवाल न कहैवाय, पण बालपंडित कहेंवाय, कारण के तेनामां देशविरित छे; अने जेनामां देशविरित होय तेने 'एकान्तवाल' न कहेवाय.

- ८. [प्र॰] पंचिदियतिरिक्स॰ पुच्छा । [उ॰] गोयमा । पंचिदियतिरिक्सजोणिया वाला, नो पंडिया, वालपंडिया वि । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोहिसय-वेमाणिया जहा नेरितया ।
- ९. [प्र०] अन्नउत्थिया णं भंते! एवं आइक्खंति, जाय-पद्देंति-'एवं खलु पाणातिवाप, मुसावाप, जाय-प्रिक्शंदंस-णसल्ले घट्टमाणस्स अन्ने जीवो, अन्ने जीवाया, पाणाइवायघेरमणे, जाय-परिग्गहवेरमणे, कोहिववेगे, जाय-पिक्शंदंसणसल्ले विने बट्टमाणस्स अन्ने जीवे, अन्ने जीवाया; उप्पत्तियाप, जाय-परिणामियाप बट्टमाणस्स अन्ने जीवे, अन्ने जीवाया; उप्पत्तियाप, जाय-परिणामियाप बट्टमाणस्स आय-जीवाया; वर्गचे, तिरिक्स-मणुस्स- देवचे बट्टमाणस्स जाव-जीवाया; नाणावरणिक्रे, जाव-अंतराइप बट्टमाणस्स जाव-जीवाया; पर्य कण्डलेस्साप, जाव-सुक्कलेस्साप; सम्मिद्दीप ३, एवं चक्खुदंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे ५, मितअन्नाणे ३, आहारसन्नाप ४, एवं ओरालियसरीरे ५, एवं मणोजोप ३, सागारोवओगे, अणागारोवओगे बट्टमाणस्स अन्ने जीवे, अन्ने जीवाया'; से कहमेयं मंते पवं १ [७०] गोयमा! जं णं ते अन्नजिथया पवं आइक्लंति, जाव-मिच्छं ते एवं आहंसु । अहं पुण गोयमा! एवं आइक्लामि, जाव-पद्वेमि-'एवं खलु पाणातिवाप, जाव-मिच्छादंसणसङ्घे बट्टमाणस्स सम्मेव जीवे, सम्नेव जीवाया, जाव-अणागारोवओगे बट्टमाणस्स सम्मेव जीवे, सम्नेव जीवाया, जाव-अणागारोवओगे बट्टमाणस्स जाव-सम्बव जीवाया। ।
- १०. [प्र०] देवे णं भंते! महिहिए, जाय-महेसक्खे पुषामेय रूवी मिषता पम् अरूविं विजितिता णं चिट्टिसए? [उ०] णो तिणहे समहे। [प्र०] से केणहेणं भंते! एवं बुद्ध-'देवे णं जाय-नो पम् अरूविं विजित्तिता णं चिट्टिसए? [उ०] गोयमा! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अमिसमज्ञागच्छामि, मए एयं नायं, मए एयं दिहं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमज्ञागयं-'जं णं तहागयस्स जीवस्स सहविस्स, सकम्मस्स, सरागस्स, सवेदगस्स, समोहस्स, सले-
- ८. [प्र०] पंचेद्रिय तिर्यंचो संबंधे प्रश्न. [७०] हे गौतम! पंचेद्रिय तिर्यंचो बाल अने बालपंडित होय छे, पण पंडित होता नथी. मनुष्यो संबंधे सामान्य जीधोनी वक्तव्यता कहेवी. तथा वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक संबंधे नैरियकनी वक्तव्यता (सू०७) कहेवी.

'जीव अने जीवा तथा मिश्र छे' एवी सन्बतीथिक नी मत ९. [प्र०] हे भगवन् ! अन्यतीर्थिको आ प्रमाणे कहे छे, यावत् प्रक्षे छे के प्राणातिपातमां, मृपावादमां यावत्—मिध्यादर्शनक्ष्यां वर्तता प्राणीनो जीव अन्य छे अने जीवात्मा तेषी अन्य छे; प्राणातिपातिपात्मां, यावत्—परिम्रहविरमणमां, कोधना स्यागमां— यावत्—मिध्यादर्शनक्ष्यना त्यागमां वर्तता प्राणीनो जीव अन्य छे अने तेथी तेनो जीवात्मा अन्य छे. औत्पत्तिकी बुद्धिमां, यावत्—परिणामिकी बुद्धिमां वर्तमान प्राणीनो जीव अन्य छे अने तेथी जीवात्मा अन्य छे; अवम्रह, ईष्टा, अवाय अने धारणामां वर्तमान प्राणीनो जीव अन्य छे अने जीवात्मा तेथी अन्य छे; उत्थानमां, यावत्—पुरुषकार—पराक्रममां वर्तमान प्राणीनो जीव अन्य छे अने जीवात्मा तेथी अन्य छे; वरिषक्षणामां, मेनुत्यपणामां तथा देवपणामां वर्तमान जीव अन्य छे अने जीवात्मा अन्य छे; ज्ञानावरणीयमां यावत्—अंतरायमां वर्तमान प्राणीनो जीव अन्य छे अने तेथी जीवात्मा अन्य छे; क्रप्णलेख्यामां, यावत्—गुक्रलेख्यामां, तथा सम्यग्दिष्ट पिध्यादृष्टि अने सम्यग्निश्यादृष्टिमां, १ चक्कुर्दर्शन २ अचक्कुर्दर्शन, ३ अवधिदर्शन अने ४ केवछ दर्शनमां, ५ आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, गनःपर्यवज्ञान अने केवळ्ज्ञानमां, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अने विभंगज्ञानमां, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, निद्यसंज्ञा अने मेथुनसंज्ञामां, साकारोपयोग अने अनाकारोपयोगमां वर्तमान प्राणीनो जीव अन्य छे अने तेनो जीवात्मा अन्य छे. तो हे भगवन् ! ते केम सत्य होय ! [उ०] हे गौतम ! छे अन्यतीर्थिको ए प्रमाणे कहे छे, यावत्—तेओ मिध्या कहे छे. हे गौतम ! छे तो आ प्रमाणे कहे छुं, यावत्—तेओ मिध्या कहे छे. भने तेज जीवात्मा छे, यावत्—अनाकारोपयोगमां वर्तमान प्राणीनो तेज जीव छे अने तेज जीवात्मा छे, यावत्—अनाकारोपयोगमां वर्तमान प्राणीनो तेज जीव छे अने तेज जीवात्मा छे, यावत्—अनाकारोपयोगमां वर्तमान प्राणीनो तेज जीव छे अने तेज जीव छे अने तेज जीवात्मा छे.''

सञ्जीती देवमा अहपी रूप विकृषंशा ना सामर्थ्यनो अ-साम अने तेनो हेतुः १०. [प्र०] हे भगवन् ! मोटी ऋदिवाळो, यावत्—मोटा सुखवाळो देव पहेलां रूपी होईने—मूर्त खरूप धारण करी पछी अरूपी रूप (अमूर्त रूप) विकुर्वीन रहेवा समर्थ छे ! [उ०] ते अर्थ समर्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! आप ए प्रमाणे शा हेतुयी कहो छो के 'मोटी ऋदिवाळो देव यावत्—अरूपी क्या विकुर्वीने रहेवा समर्थ नथी ' ! [उ०] गातम ! हुं ए जाएं छुं, हुं ए जोउं छुं, हुं ए निश्चत जाएं छुं, हुं ए सर्वया जाएं छुं, में ए जाएं छे, में ए जोयं छे, में निश्चित जाएं छे अने में ए सर्वथा जाएं छे के, तेवा प्रकारना रूपवाळा, कर्मवाळा, रागवाळा, वेदवाळा, मोहवाळा, लेदवाळा, शरीरवाळा, अने ते शरीरथी नहि मुकायेळा—जूदा नहीं थयेळा जीवने

९ \* अहि 'सर्वत्र प्राणातिपातादि कियामां प्रवर्तमान जीव एटले प्रकृति अने जीवात्मा-पुरुष परस्पर भिन्न छे'-आवी सांख्यदर्शननी मत छे. सांख्यो प्रकृतिनुं कर्तृत्व अने पुरुषने अकर्ता अने भोचा माने छे, उपनिषदी पण जीव-अन्तःकरणविषिष्ट नैतन्य-नुं कर्तृत्व अने जीवात्मा-प्रदानुं अकर्तृत्व माने छे, हेकोने मते पण जीव अने ब्रह्मनो औपाधिक मेद छे, माटे ते बन्ने दर्शनो अन्यतीर्थिकसरीके प्रहण करेला होय तेम संभवे छे.

सम्स्न, ससरीरस्त, ताबो सरीराओ अविष्यमुकस्स पर्व पन्नायति, तं जहा-कालते वा, जाव-सुकिलते वा, सुन्भिगंधते वा, बुन्भिगंधते वा, क्विमगंधते वा, तित्ते वा, जाव-महुरते वा, कक्कडते वा, जाव-सुन्धते वा से तेणहेणं गोयमा! जाव-सिट्टित्तप ।

११ [प्र•] सचेव णं मंते! से जीवे पुडामेव अकवी मिवत्ता पभू किवं विउद्वित्ता णं चिट्टित्तप? [उ०] णो तिण्हे समहे, जाव-चिट्टित्तप । गोयमा! अहं पयं जाणामि, जाव-जं णं तहागयस्स जीवस्स अकविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स, ताओ सरीराओ विष्णमुकस्स नो पयं पन्नायति, तं जहा⊸कालते वा, जाव-लुक्सते वा से तेणहेणं जाव-चिट्टित्तप वा । 'सेवं मंते! सेवं मंते'! ति ।

#### सत्तरसमे सए वीओ उद्देशो समत्तो ।

विषे एम जणाय छे, ते आ प्रमाणे—ते शरीरयुक्त जीवमां—काळापणु, यावत्—धोळागणुं, सुगंधिपणुं के दुर्गंधिपणुं, कडवापणुं के यावत्—समुरपणुं, तथा कर्कशपणुं के यावत्—रुक्षपणुं होय छे, माटे हे गीतम ! ते हेतुथी ते देव पूर्व प्रमाणे यावत्—अरूपी रूप विकुर्ववा समर्थ नथी.

११. [प्र०] हे भगवन् । तेज देवरूप जीव पहेलां अरूपी यईने पछी रूपी आकार विकुर्वना सगर्थ छे ! [उ०] ए अर्थ सगर्थ नथी—इस्यादि यावत्—'विकुर्वना समर्थ नथी' त्यांसुधी जाणवुं. कारण के हे गौतम ! हुं ए जाणुं छुं के, यावत्—ग्रूप विनाना, कर्म विनाना, राग विनाना, वेद विनाना, मोह विनाना, लेक्न्या विनाना, शरीर विनान। अने शरीरथी जूदा ययेला तेवा प्रकारना जीवने विषे एम जणातुं नथी के, ते जीवमां काळापणुं यावत्—खुखापणुं छे. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी यावत्—ते देव पूर्व प्रमाणे विकुर्ववा समर्थ नथी. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे."

शरीर रहित औदन मां रूपी आकार दिन कुर्ववाचा सामर्थको अमाव अने तेलं का-रण.

#### सत्तरमा शतकमां पीजो उद्देशक समाप्त.

# तईओ उद्देसो.

- १. [प्र०] सेलेसि पहिचन्नाए णं भंते! अणगारे सया समियं एयति, वेयति, जाव-तं तं भावं परिणमित ? [उ०] णो तिणट्टे समट्टे, णण्णस्य एगेणं परण्पयोगेणं ।
- २. [प्र०] कतिविद्या णं भंते ! प्यणा पण्णत्ता ! [उ०] गोयमा ! पंचिविद्या पण्णत्ता, तं जहा-१ द्धेयणा, २ खिते-यणा, ३ कालेयणा, ४ भावेयणा, ५ भवेयणा ।
- ३. [प्र०] द्वेयणा णं भंते! कितिबिहा पन्नता ! [उ०] गोयमा ! चउन्निहा पन्नता । तं जहा-१ नेरायद्वेयणा, २ तिरिक्ख०, ३ मणुस्स०, ४ देवद्वेयणा ।

#### तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! शैलेशी अवस्थाने प्राप्त थयेल अनगार शुं सदा निरन्तर कंपे, विशेष कंपे, भने यावत्—ते ते भावे परिणमे ! [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी, मात्र एक परप्रयोग विना ( अर्थात्–शैलेशी अवस्थामां आत्मा अत्यन्त स्थिरताने प्राप्त थयेल होवाथी परप्रयोग सिवाय न कंपे ).

दीलेशी भाष सन-गार एजनादि किया गन् वने १

- २. [प्र०] हे भगवन् ! एजना (कंपन ) केटला प्रकारनी कही छे ! [उ०] हे गीतम ! एजना पांच प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे— जनाना क्षार-१ द्रव्यएजना, २ क्षेत्रएजना, ३ कालएजना, ४ भावएजना अने ५ भवएजना-
- ३. [प्र॰] हे भगवन्! द्रव्यएजना केंटला प्रकारनी कही छे! [उ०] हे गौतम! ते चार प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—१ হঞ্ছজनाना प्रकारः नैरियकद्रष्यएजना, २ तिर्यंचयोनिकद्रव्यएजना, ३ मनुष्यद्रव्यएजना अने ४ देवद्रव्यएजना.

२ <sup>क</sup> एमना-योगद्वारा आत्मप्रदेशोनुं अथवा पृद्गलद्वन्योनुं चलन के कंपन. तेना द्रव्यादि पांच प्रकार छे. मनुष्यादि जीव द्रव्योनुं के मनुष्यादि जीव सिंहत पुद्गार द्रव्यानुं कंपन ते द्रव्योजना, मनुष्यादि कोळे वर्तमान जीवानुं कंपन ते काळजना, अनेदियकादि सावमा वर्तना जीवानुं कंपन ते काळजना, औदियकादि सावमा वर्तना जीवानुं केपन ते स्वजना.

- धे. [प्रव] से केणहेणं भंते ! एवं बुचर्-'नेरस्यव्देयणा' २ ! [उ व] गोयमा ! जं णं नेरस्या नेरस्यव्दे विहेशु वा वहंति वा, विहस्ति वा ते णं तत्य नेरस्या नेरितयद्दे वहमाणा नेरस्यव्देयणं एयं श्रु वा, एयंति वा, एरस्संति वा, वे तेणहेणं जाय-द्देयणा ।
- ५. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुधाति-'तिरिक्सजोणियद्षेयणा' २ ! [उ०] एवं चेष, नवरं-तिरिक्सजोणियद्। माणियक्षं, सेसं तं चेय, एवं जाब-देवद्षेयणा ।
- १. [प्रव] खेसेयणा णं भंते ! कतिविद्या पण्णसा ! [उव] गोयमा ! खडिबद्या पण्णसा, तं जहा-१ नेरस्यकेसेयणा, जाय-४ देवलेसेयणा।
- ७. [प्र॰] से केण्ट्रेणं भंते ! एवं बुचार्-'नेररयक्षेत्रेयणा' २ १ [उ॰] एवं चेव, नवरं 'नेररयक्षेत्रेयणा' भाणियदाः एवं जाव-देवक्षेत्रेयणाः एवं कालेयणा वि, एवं भवेयणा वि, एवं भावेयणा वि, एवं जाव-देवक्षेत्रेयणाः ।
- ८. [प्र॰] कतिविद्दा णं भंते! चलणा पण्णसा? [उ॰] गोयमा! तिबिद्दा चलणा पश्रसा, तं जद्दा-सरीरवलणा, इंदियचलणा, जोगचलणा।
- ९. [प्र∘] सरीरचलणा णं भंते ! कतिविहा पण्णसा १ [उ०] गोयमा ! पंचविहा पण्णसा, तं जहा–१ ओरालियसरी-रचलणा, जाव⊸५ कम्मगसरीरचलणा ।
- १०. [प्र०] इंदियचळणा णं भंते ! कतिविद्या पण्णत्ता ! [उ०] गोयमा ! पंचविद्या पण्णत्ता, तं जहा-१ सोइंदियच-ळणा, जाव-५ फार्सिदियचळणा ।
- ११. [प्र०] जोगचलणा णं भंते ! कतिविद्या पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविद्या पण्णत्ता, तं जहा-मणजोगचलणा; वर्षोगचलणा, कायजोगचलणा ।
  - १२. [प्र०] से केणट्टेणं भंते ! एवं वुचार-'ओरालियसरीरचलणा २ १ [उ०] गोयमा ! जं णं जीवा ओरालियसरीरे

नैर्रायकद्रष्यः।जनाः कहेभाग्नं वारणः ४. [प्र॰] हे भगवन् ! सा कारणधी 'नैरियकद्रव्यएजना' २ कहेवामां आवे छे ! [उ॰] हे गौतम ! जे माटे \*नैरियको नैरियकद्र-व्यमां वर्तता हता, वर्ते छे अने वर्तशे, ते नैरियकोए नैरियकद्रव्यमां वर्तता नैरियकद्रव्यनी एजना करी हती, करे छे अने करशे, ते माटे यात्रत्—नैरियकद्रव्यएजना कहेवामां आवे छे.

तिर्यसदिहन्यस्य-ना कहेवानुं कारण ५. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिकद्रव्यएजना २ कहेवाय छे तेतुं द्युं कारण ! [उ०] पूर्व प्रमाणेज जाणवुं. विशेष ए के नैर-यिकद्रव्यन बदले तिर्यंचयोनिकद्भव्य कहेवुं. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं. तथा ए प्रमाणे मनुष्यद्रव्यएजना अने देशह्रव्यएजना पण जाणवी.

क्षेत्रएजनाना प्रकार

६. [प्र०] हे भगवन् ! क्षेत्रएजना केटला प्रकारनी कही छे ! [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे—१ नैर-यिकक्षेत्रएजना, यावत्—४ देवक्षेत्रएजना.

नैरियकादि क्षेत्र-एजना कहेवानुं का-रणः ७. [प्रच] हे भगवन् ! नैरियकक्षेत्रणजना २ कहेवानुं हुं कारण ? [उठ] पूर्व प्रमाणे जाणहुं. विशेष ए के नैरियकद्वव्यएजनाने बदले नैरियकक्षेत्रणजना कहेती. अने एम यावत्—देव क्षेत्रएजना सुधी जाणहुं. तथा काळएजना, भवएजना अने भावएजना विषे पण ए प्रमाणे जाणहुं. यावत्—देवभावएजना सुधी समजहुं.

चलनाना प्रकार.

८. [प्र०] हे भगवन् । चलना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गातम । चलना त्रण प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे—शरीर-चलना, इन्द्रियचलना अने योगचलना.

श्रीरचलनाना प्रकारः ९. [प्र०] हे भगवन ! शरीरचटना केटला प्रकारनी कही छे ! [उ०] हे गौतम ! शरीरचटना पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—१ ओदारिक शरीरचटना, यावत्—५ कार्मणशरीरचटना.

**इन्द्रियचक**नाना प्रकारः १०. [प्र०] हे भगवन् ! इन्द्रियचलना केटल प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गीतम ! पांच प्रकारनी कही छे, ने आ प्रमाणे—१ श्रोत्रेन्द्रियचलना, यावत्—५ स्पर्शेन्द्रियचलना.

बोगचढनाना प्रकार ११. [प्र०] हे भगवन्! योगचलना केटला प्रकारनी कही छे! [उ०] हे गौतम! योगचलना त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—मनोयोगचलना, वचनयोगचलना अने काययोगचलना.

मोदारिकशरीर-चळना कहेबानु का-रण-

१२. [प्र०] है भगधन्! शा हेतुथी औदारिकशरीरचलना २ कहेवाय छे ? [व०] हे गौतम ! जे माटे औदारिक शरीरमां वर्तता

<sup>💌</sup> भ नरियक जीको नरियक शरीरमां रही ते शरीरहारा जे एजना करे ते नैरियकबन्येजना कहेवाय छे. ए प्रमाणे तिर्यंचादि इन्येजना जाणवी.

बद्दमाचा जोराहियसरीरपायोग्गादं दवादं ओराहियसरीरत्ताप परिवामेमाणा ओराहियसरीरवलनं वहिंसु वा, वलंति वा. ब्रह्मिस्तंति वा से तेणद्रेणं जाव-'भोरालियसरीरचलणा' २।

- १३. [प0] से केणहेणं मंते ! एवं वुचार 'वेउवियसरीरवलणा' २ ! [उ०] एवं चेय, नवरं-वेउवियसरीरे बहुमाणा. **दवं जाद-क्रमगस्तरी**रचळणा ।
- १४. [ब्रं०] से केण्ट्रेणं भंते ! एवं युचर-'सोइंदियचलणा' २ ? [उ०] गोयमा ! जं णं जीवा सोइंदिये बद्दमाणा स्रो-हॅंदिवपाओग्गाइं दबाइं सोइंदियत्ताप परिणामेमाणा सोइंदियचळणं चिंतसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा, से तेणट्रेणं जाव-स्रोतिदियनस्रणा २ । एवं जाय-फार्सिदियनस्रणा ।
- १५. [प्र0] से केणट्रेणं भंते ! एवं बुश्यर्-'मणजोगचलणा' २ ? [उ0] गोयमा ! जं णं जीवा मणजोए बहुमाणा मण-क्षीगपाभोग्गाइं वृहाइं मणजोगसापः परिणामेमाणा मणजोगचलणं चलिस्र वा, चलित् वा, चलिस्संति वा से तेणदेणं जाव-मणजोगचलणा २ । एवं वर्जोगचलणा वि. एवं कायजोगचलणा वि ।
- १६. [प्र0] यह मंते ! संवेगे, निवेष, गुरु-साहम्मियसुस्सूसणया, आस्रोयणया, निव्णया, गरहणया, समापणया. **स्रयसहायता, विउसमण्या, भावे अप्पडिषद्धया, विणिवद्दणया, विवित्तसयणासणसेवणया, सोर्र**दियसंबरे, जाव-फार्सिदि-वसंदरे, जीगपचप्काणे, सरीरपचप्काणे, कसायपचक्काणे, संभोगपचक्काणे, उविद्यवक्काणे, भरूपचक्काणे, क्षमा, वि-रागया, भावसचे, जोगसचे, करणसचे, मणसमभाहारणया, वरसमभाहरणया, कायसमभाहरणया, कोह्यिवेगे, जाव-मिच्छा-**र्वस**णसञ्जविषेगे, णाणसंपन्नया, दंसणसंपन्नया, चरित्तसंपन्नया, वेदणश्रह्वियासणया, मारणंतियश्रहियासणया-एए णं भंते ! पया किंपज्जवसाणफला पन्नसा समणाउसो? [उ०] गोयमा! संबेगे, निष्ठेप, जाव-मारणंतियश्रद्वियासणया-एप णं सिद्धिपञ्चवसाणफला पश्चना समणाउसो । 'संबं भंते !, सेवं भंते' ! चि जाव-विद्वरह ।

#### सत्तरसमे सए तईओ उद्देसी समत्ती।

जीवोए औदारिकशरीरयोग्य द्रव्योने औदारिकशरीरपणे परिणमावता औदारिकशरीरनी चलना करी छे, करे छे अने करशे. ते कारणयी हे गीतम ! औदारिकशरीरचलना २ कहेवामां आवे छे.

१३ [प्र०] हे भगवन् । सा कारणधी निक्रियसगैरचळना २ कहेवामां आवे छे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे वधुं जाणवुं. विशेष ए के **'बैकियशरीरने** विषे वर्तता' इस्यादि फहेर्चु. [अर्थात्⊸ओदारिकने बदले बघे विकिय कहेर्चु. ] अने एज प्रमाणे यावत्—कार्मणशरीर-चलना सुधी जाणवुं.

र्विक्ष स्टब्स कहेवाने कारण-

१४. [प्र.] हे भगवन् ! शा कारणथी श्रीत्रेन्द्रियचलना २ कहेवामां आवे छे ? [उ०] हे गौतम ! श्रीत्रेन्द्रियने धारण करता जीबोए श्रोत्रेन्द्रिययोग्य द्रव्योने श्रोत्रेन्द्रियपणे परिणमावत। श्रोत्रेन्द्रियनी चलना करी छै, करे छे अने कर्बो, ते कारण्यी श्रोत्रेन्द्रियच-लना २ कहेवामां आवे छे. ए प्रमाणे यावत्-स्पर्शेन्द्रियचलना सुधी जाणवं.

श्रोत्रद्विया**दिचकना** कहेबानं कारण.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी भनोयोगचलना २ कहेवामां आवे छे ? [उ०] हे गोतम ! जे कारणथी मनयोगने धारण करता जीबोए मनयोग्य दृज्योने मनयोगपण परिणमावता मनोयोगनी चलना करी छे, करे छ अने करशे, ते कारणथी मनायोगचळना २ कहे-बामां आवे छे. ए प्रमाणे वचनयोगचलना तथा काययोगचलना पण जाणवी.

भनोयोग चढवा कहेवानं कारण.

चना—गुरु समक्ष कथन, निंदा—आत्मद्वारा दोपोनी निन्दा, गर्हा-परसमक्ष पोताना दोपो प्रगट करवा, क्षमापना, उपशांतता, श्रुतसहायता— श्रुताभ्यास, भावाप्रतिबद्धता–हास्यादि भावोने विषे अप्रतिबंध, पापस्थानोधी निवृत्त धर्वु, विविक्तशयनासता–स्यादिरहित वसति सने आसननो उपयोग, श्रोत्रेन्द्रियसंबर, यावत्—स्परोन्द्रियसंबर, योगप्रत्याख्यान, \*शरीरप्रत्याख्यान, कवायप्रत्याख्यान, !संभोगप्रत्याख्यान, !उपिप्रत्याख्यान, मक्तप्रसाह्यान, क्षमा, विरागता, भावसत्य, योगसत्य, करणसत्य∽प्रतिलेखनादि क्रियानुं यथार्थ कर्त्वु, मनःसमन्वाहरण–मननुं संगोपन, वचः-समन्वाहरण-वचनसंगोपन, कायसमन्वाहरण-कायसंगोपन, क्रोधनो त्याग, यावत्-मिध्यादर्शनशस्यनो त्याग, ज्ञानसपन्नता, दर्शनसंप-

मंत्रेगादित फक

१६. [प्र०] हे भगवन् ! संवेग-मोक्षानो अभिलाप, निर्वेद-संसारधी विरक्तता, गुरुओनी तथा साधर्मिकोनी सेवा, पापोनी आछो-**अता, चारित्रसंपन्नता, क्ष्मादि वेदनामां सहनर्बा**लता अने मारणान्तिक कप्टमां सहनशीलता-ए बधा पदोनुं हे आयुष्मान् अमण l अन्तिम फळ श्चं कहां छे ? [७०] हे गीतम ! संवेग, निवेद, यावत्—मारणांतिक कष्टमां सहनवीलता—ए बधा पदोनुं अंतिम फळ मोक्ष कहां छे. "हे मगबन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे."

### सत्तरमा शतकमां तृतीय उद्देशक समाप्त.

९६ " शरीरमां आसक्तिनो स्थाग करवो. † साधुओ परस्पर एक मंडलीमां बेसी भोजन करे ते संभोग, जिनकल्पादिने खीकारी तेनो लाग करवो ते संभोगप्रसास्यान, 🕽 अभिक वजादिनो स्नाग करवी ते उपधिप्रसास्यान.

#### चंउत्थो उद्देसी.

- १. [प्र०] तेणं कारेणं, तेणं समण्णं रायगिंहे नगरे जाव-एवं वयासी-अस्थि णं मंते ! जीवाणं पाणाद्वाएणं किरिया कजर १ [उ०] हता, अस्यि ।
- २. [प्र०] सा भंते ! किं पुट्टा कजार, अपुट्टा कजार ? [उ०] गोयमा ! पुट्टा कजार, नो अपुट्टा कजार । पर्व जारा पर-मसर छटुदेसर जाय-णो 'अणाणुपुष्टिकडा' ति वसम्रं सिया, एवं जाय-वेमाणियाणं, नवरं-जीवाणं एगिदियाण य निम्नाबा-एणं छिद्दिसं, वाघायं पहुष्ट सिय तिदिसिं, सिय चडिद्सिं, सिय पंचितिंसं, सेसाणं नियमं छिद्दिसं ।
  - ३. [प्र॰] अत्थि णं भंते ! लीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जद ? [उ॰] इंता, अस्यि ।
- ४. [प्र॰] सा भंते ! कि पुट्टा कजार, अपुट्टा कजाति ? [उ॰] जहा पाणारवायणं दंडओ पर्ध मुसावायण वि; पर्ध अ-दिम्नादाणेण वि, मेहुणेण वि, परिग्गहेण वि । पर्व पप पंच दंडगा ।
- ् ५. [प्र॰] जं समयं णं मंते ! जीवाणं पाणाइयापणं किरिया कज्जइ सा मंते ! कि पुटा कज्जइ, अपुट्टा कज्जइ ! [ड॰] एवं तहेव जाव-वसन्नं सिया, जाव-वेमाणियाणं, एवं जाव-परिग्गहेणं, एवं एते वि एंच वंडगा ।
  - इ. [प्र०] जं देसेणं अंते! जीवाणं पाणाश्याएणं किरिया कजार ? [उ०] एवं चेव, जाव-परिणाहेणं, एते वि पंच दंडगा।
- ७. [प्र०] जं पपसं णं भंते ! जीवाणं पाणातिवापणं किरिया कज्जह सा भंते कि पुट्टा कज्जह !-पवं तहेय दंख्यो । [उ०] एवं जाय-परिगाहेणं । एवं एए वीसं दंखगा ।

# चतुर्थ उद्देशक.

प्राणातिपातं वरीरे द्वारा थवी किया- १. [प्र०] ते काळे ते समये राजगृह नगरमां [भगवान् गीतम] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन् ! जीवो वढे प्राणातिपात-द्वारा किया—कर्म कराय छे ! [उ०] हा, कराय छे.

रपृष्ट के अस्पृष्ट कर्म े कराय रि

i

1

२. [प्र०] हे भगवन्! ते किया (कर्म) रपृष्ट-आत्माए रपर्शेली कराय के अरपृष्ट-आत्माना रपर्श विना कराय! [उ०] हे गौतम! ते रपृष्ट कराय, पण अरपृष्ट न कराय-इत्यादि वधुं प्रथम शतकना "छहा उदेशकमां कह्या प्रमाणे कहेतुं; यावत्—ते किया (कर्म) अनुक्रमें कराय छे, पण अनुक्रम विना कराती नथी. ए प्रमाणे दंडकना क्रमथी यावत्—वैमानिको छुष्मी जाणतुं. परन्तु विशेष ए के जीवो अने एके-न्दियो व्याघात-प्रतिबंध सिवाय छ ए दिशामांथी आवेलां कर्म करे छे, अने जो व्याघात होय तो कदाच त्रण दिशामांथी, कदाच चार दिशामांथी अने वादाच पांच दिशामांथी, आवेलां कर्म करे छे. [ जे एकेन्द्रियो लोकान्ते रहेला छे, तेने उपरनी अने आसपासनी दिशायी कर्म आववानो संभव नथी, तेथी तेओ कचित् त्रण दिशामांथी कदाचित् चार दिशामांथी, अने कदाचित् पांच दिशामांथी आवेलुं कर्म करे छे. अने वाकीना जीवो लोकान गय्य भागमां होवायी व्याघातना अभावे छ ए दिशामांथी आवेलुं कर्म करे छे. ते सिवाय बाकीना जीवो तो अवश्य छ ए दिशामांथी आवेलां कर्म करे छे. ]

श्रुषाथाद द्वारा यती किया-

- ३. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो मृषाबादद्वारा कर्म करे छे ! [उ०] हा, करे छे.
- ४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते किया—कर्भ स्षृष्ट कराय—इत्यादि प्रश्न. [७०] जैम प्राणातिपात संबन्धे दंडक कहा हे तेम मृषाबाद संबन्धे पण दंडक कहेवो. एम अदत्तादान, मैथुन अने परिप्रहमंबन्धे पांचे दंडको कहेवा.
- ५. [प्र०] हे भगवन् ! जे समये जीवो प्राणानिपातद्वारा (वर्ष्म) करे छे ते समये हे भगवन् ! ते स्पृष्ट कर्म करे छे के अस्पृष्ट कर्म करे छे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. यावत्—ते 'अनानुपूर्वीकृत नथी' त्यांसुधी कहेवुं. ए प्रमाणे—यावत्—दंडकना कमयी वैमानिको सुधी यावत्—परिग्रह संबन्धे जाणवुं. बधा मळीने पूर्ववत् पांचे दंडको मृपावाद संबन्धे कहेवा.

भौतने आसमी फर्म.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जे क्षेत्रमां जीवो प्राणानिपात द्वारा कर्म करे छे ते क्षेत्रमां स्पृष्ट के अस्पृष्ट कर्म करे छे–इत्यादि प्रश्न-[उ०] पूर्व प्रमाणे उत्तर कहेबो. यावत्–परिग्रह सुधी जाणवुं. एम पांचे दंडको कहेबा.

मदेशने आश्रयी कियाः

७. [प्र०] हे भगवन् ! जे प्रदेशमां जीवो प्राणातिपात द्वारा कर्म करे छे ते प्रदेशमां छुं स्पृष्ट कर्म करे छे के अस्पृष्ट कर्म करे छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे दंडक कहेवो. [उ०] ए प्रमाणे यावत्-परिग्रह सुधी जाणवुं. एम बधा मळीने ांवीश दंडको कहेवा.

२ \* भग० सं० १ श० १ स० ६ प्र० १६५-१६६

७ † प्राणातिपातवी परित्रह सुधीना सामान्य पांच इंडको, अने ए प्रमाणे समय, देश अने प्रदेश आश्रयी पण पांच पांच दंडको मळी दीख दंडको जाणवा.

- ८. [प्र0] जीवाणं मंते! किं असकडे दुक्खे, परकडे दुक्खे, ततुभयकडे दुक्खे? [उ०] गोयमा! अत्तकडे दुक्खे, जो परकडे दुक्खे, जो तदुभयकडे दुक्खे, पर्व जाव-वेमाणियाणं।
- १. [घ०] जीवा णं मंते! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, परकडं दुक्खं वेदेंति, तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति? [उ०] गोयमा!
   अत्रकडं दुक्खं वेदेंति, नो परकडं दुक्खं वेदेंति, नो तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति; एतं जाव-वेमाणियाणं।
- ्रं १०. [प्र०] जीवाणं भंते ! अत्तकडा वेयणा, परकडा वेयणा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्तकडा वेयणा, णो परकडा वेयणा, णो तदुमयकडा वेयणा । एवं जाव-वेमाणियाणं ।
- ११. [प्र०] जीवा णं भंते ! कि असकडं वेदणं वेदेंति, परकडं वेदणं वेदेंति, तदुभयकडं वेदणं वेदेंति ! [उ०] गोयमा ! जीवा असकडं वेयणं वेपेति, नो परकडं, नो तदुभयकडं, एवं जाव-वेमाणियाणं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

#### सत्तरसमे सए चउत्थो उद्देसी समत्ती।

८. [प०] हे भगवन् ! जीवोने जे दुःख छे ते शुं आत्मकृत छे, परकृत छे के उभयकृत छे ? [उ०] हे गाँतम ! जीवोने जे दुःख छे ते आत्मकृत छे, परकृत नथी, तेम उभयकृत पण नथी, ए प्रमाणे दंडकना ऋमधी यावत्-वैमानिको सुधी जाणबुं.

दुःख भारसञ्जत, प<sup>.</sup> एक्त के उमयक्का क्री

९. [प्र०] हे भगवन्! जीवो शुं आत्मकृत रदुःख वेदे छे, परकृत दुःख वेदे छे के तदुभवकृत दुःख वेदे छे? [उ०] हे गीतम! जीवो आत्मकृत दुःख वेदे छे; परकृत के उभयकृत दुःख वेदता नथी. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं.

दुःखनुं वेदस्या-मकृत, परफूत के समयकृत के?

१०. [प्र०] हे भगवन् । जीवोने जे वेदना छे ते शुं आत्मकृत छे, परकृत छे—इस्थादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम । वेदना आत्मकृत छे, परकृत के उभयकृत नथी. ए प्रमाणे यायत्—वैमानिको सुधी जाणबुं.

वेदना आत्महत, परकृत के उमयकृत के र

११. [प्र०] हे भगवन्! जीवो द्युं आत्मकृत वेदनाने वेदे छे, परकृत वेदनाने वेदे छे के उभयकृत वेदनाने वेदे छे ! [उ०] हे गीतम! जीवो आत्मकृत वेदनाने वेदे छे ; परकृत के उभयकृत वेदनाने वेदता नथी. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. हि भगवन्! ते एमज छे.

वेदनाना वेदनसंबन्धे प्रश्नः

## सत्तरमा शतकमां चतुर्थ उद्गक समाप्त.

### पंचमो उद्देसो.

१. [प्र०] कोई ण मंते! ईसाणस्स देविदस्स देवरको सभा सहम्मा पण्णसा ? [उ०] गोयमा ! जंयुद्दीवे दीवे मंद-दस्स पद्मयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्यभाप पुढ्यीप बहुसमरमणिज्ञाओ भूमिभागाओ उहं चंदिम-स्रिय० जहा ठाणपदे जाब-मज्झे ईसाणवर्डेसप । से णं ईसाणवर्डेसप महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साई-एवं जहा दसमसप सक्कविमाणवत्तवया सा रह वि ईसाणस्स निरवसेसा भाणियद्वा, जाव-आयरक्स सि । ठिती सातिरेगाई दो सागरोवमाई, सेसं तं चेव, जाव-ईसाणे देविदे देवराया २ । 'सेवं मंते!, सेवं मंते' । सि ।

#### सचरसमे सए पंचमी उद्देसी समती।

#### पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! देवेंद्र देवराज ईशाननी सुधर्मी सभा वयां कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबूदीप नामे द्वीपमां मंदरपर्यतनी उत्तरे आ रक्षप्रभा पृथिवीना अव्यन्त सम अने रमणीय भूमिमागर्था उपर चद्र अने सूर्यने मूकीने आगळ गया पछी—यावत्—[प्रज्ञापना-सूत्रना बीजा] स्थानपदमां कह्या प्रमाणं मध्यभागमां ईशानावतंसक विमान आवे छे. ते ईशानावतंसक नामे महाविमान साडा बार टाख योजन छांबुं अने पहोळुं छे—इत्यादि यावत्—दशम ईशतकमां शक्रविमाननी वक्तव्यता कही छे ते बधी अर्धा ईशान संबंधे यावत्—आत्मरक्षकनी वक्तव्यता सुधी कहेवी. ते ईशानेन्द्रनुं आयुष किंचित् अधिक बे सागरोपमनुं छे, बाकी बधुं तेज प्रगाणे जाणबुं. यावत्—देवेंद्र देवराज ईशान छे २. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

ईशानेन्द्रनी सुधर्मा समाः

#### सत्तरमा शतकमां पंचम उद्देशक समाप्त.

९ \* महि दुःखवाब्द दुःखनी अथवा दुःखना हेतुभृत कर्मनी वाचक छ अने वेदनाशब्द सुख-दुःख उभयनी, अथवा सुखदु खन। हेतुभूत कृमैनी वाचक छे.

१ मिशा पद २१ प० १०२, | मगा ख । ३ शा १० उ० ६ पूर्व २०५,

## छट्टओ उद्देसो.

- १. [प्र०] पुढविकाइए णं मंते! हमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्ये पुढविकाइयत्ताए उपविकादयत्ताए से णं मंते! किं पुषि उपविकाद पच्छा संपाउणेका, पुषि संपाउणित्ता पच्छा उपविकाद ! [उ०] गोयमा! पुष्टिं वा उवविकाता पच्छा संपाउणेका, पुष्टिं वा संपाउणिता पच्छा उपविकाद । [प्र०] से केणट्रेणं जाय-पच्छा उपविकाद ! [उ०] गोयमा! पुढविकाद याणं तथी समुग्वाया पन्नता, तं जहा-वेदणासमुग्वाए, कसायसमुग्वाए, मारणंतियसमुग्वाए । मारणंतियसमुग्वाएणं समोहणमाणे देसेण वा समोहणित, सब्वेण वा समोहणित, देसेण वा समोहणमाणे पुष्टिं संपा-उणित्ता पच्छा उपविकादा, सब्वेणं समोहणमाणे पुष्टिं उपविकाता पच्छा संपाउणेका; से तेणट्टेणं जाव-उपविकाता ।
- २. [प्र०] पुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव-समोहए, समोहणिसा जे भविए ईसाणे कप्ये पुढवि० र [उ०] एवं चेव ईसाणे वि, एवं जाव-अद्यय-गेविज्ञविमाणे, अणुत्तरिवमाणे; ईसिपम्भाराए य एवं चेष ।
- ३. [प्र०] पुढविकाइए णं भंते! सकरणभाष पुढवीए समोहए, समोहणिसा जे भविए सोहम्मे कणे पुढवि०! [उ०] एवं जहा रयणणभाष पुढविकाइओ उचवाइओ एवं सकरणभाष वि पुढविकाइओ उचवाएयहो, जाव-ईसिपण्भाराप, पर्व जहा रयणणभाष वसहया भणिया, एवं जाव-अहेससमाए समोहए ईसीएब्भाराए उचवाएयहो, सेसं तं बेव। 'सेवं भंते!, सेवं भंते'! सि ।

#### सचरसमें सए छड्डओ उद्देसी समत्ती।

#### पष्ट उद्देशक.

- १. [प्रच] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिक जीव आ रत्नप्रभा पृथिवीमां मरण समुद्धात करीने सौधर्मकल्पमां पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न धवाने भोग्य छे ते हे भगवन् ! द्युं प्रथम उत्पन्न धाय अने पछी आहार करे—पुद्गल महण करे के प्रथम पुद्गल महण करे अने पछी उत्पन्न धाय ! [उ o] हे गातम ! ते \*प्रथम उत्पन्न धाय अने पछी पुद्गल महण करे; अधवा प्रथम पुद्गल महण करे अने पछी उत्पन्न धाय. [प्र o] ते द्या वारणधी यावत्—पछी उत्पन्न धाय ! [उ o] हे गातम ! पृथिवीकायिकोने त्रण समुद्धातो कह्या छे; ते आ प्रमाणे—वेदना समुद्धात, कषाय समुद्धात अने मारणांतिक समुद्धात अगे मारणांतिक समुद्धात करे छे लारे विद्यायी पण समुद्धात करे छे अने सर्वधी पण समुद्धात करे छे. ज्यारे देवाधी समुद्धात करे छे लारे प्रथम पुद्गल महण करे छे अने पछी उत्पन्न धाय छे, ज्यारे सर्वधी समुद्धात करे छे तो कारणधी यावत्—पछीथी उत्पन्न धाय छे.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव आ रतप्रभा पृथिवीमां यावत्—मरणसमुद्धात करी जे ईशानकल्पमां पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे- इत्यादि पृच्छा. [उ०] पूर्व प्रमाणे ईशानकल्पमंबन्धे जाणवुं. एम यावत्—अन्युत, प्रेवेयक विमान, अनुत्तर विमान अने ईपश्रारमाग पृथिवी संबन्धे पण जाणवुं.
- ३. [४०] दे मणवन्! जे पृथिशीकायिक जीप आ शर्कराप्रभा पृथिवीमां मरण समुद्धात वरीने सौधर्म कल्पमां पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थाग्य छे—इत्यादि प्रश्न. [३०] जेम स्वप्रभा पृथिवीकायिकनो उत्पाद कहेंगे. यावत्—ए प्रमाणे ईपल्यारभाग पृथिवी सुधी जाणवुं. तथा जेम स्वप्रभाना पृथिवीकायिकनो वक्तव्यता कही तेम यावत्— सातमी नरकपृथिवी सुधीमां मरणममुद्धातथी समबहत थयेला जीवनो ईपल्यारभागमां उपपान कहेंगे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.

### सत्तरमा शनकमां पष्ट उद्देशक समाप्त.

<sup>9</sup> कि जीव मरणसमृत्यानथी निष्टम गई ज्यारे पूर्वना शरीरने सर्वथा छोडी दडानी पेटे सर्व आत्मप्रदेशो साथे उत्पत्तिस्थळे जाय खारे पूर्वे उत्पन्न थाय अने पछी पुद्गलपहणस्य आहार करे. पण ज्यारे भरण रामृत्यान करना ज मरण पामे अने ईलिकानी गतिथी उत्पत्तिस्थाने जाय, खारे पहेलां आहार करे अने पछी उत्पन्न थाय. अर्थान् पूर्वना शरीरमां रहेला जांव प्रदेशोंने ईयळर्ना पेटे संहरी समस्य जीतप्रदेशो साथे उत्पत्तिस्थाने जाय खारे प्रयम्भ पुद्गलप्रहण करे अने पछी उत्पन्न थाय.—दीका.

<sup>ै</sup> मारणान्तिक समुद्धान करतां ज मरण पामे त्यारे ते ईयळनी गतिशी उत्पक्तिस्थाने प्राप्त शाय, ते वस्तते जीननो अंश पूर्वना शारीरमां रहेलो होवाधी धने अमुक अंश उत्पक्ति स्थाने प्राप्त थयेलो होवाधी दिशाधी समुद्धात करें एम कहेवाय छे. पण ज्यारे मरणरामुद्धाताधी निष्टन धईने पछी मरण पामे के त्यारे सर्वे प्रदेशने संहरी द्वानी पेठे उत्पक्तिस्थळे प्राप्त थाये छे, माटे 'सर्वधी समुद्धात करें छे' एम कहेवाय छे.—टीका.

81 m

H#

### सत्तमो उद्देसो.

हु. [म०] पुढविकाइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे मविए इमीसे रयणप्यमाए पुढवीए पुढविका-इयसाय उवयक्तिसप से णं मंते! कि पुष्टि - सेसं तं चेव । [उ०] जहा रयणप्यमाय पुढविकाइए सद्यक्ष्पेसु जाव-ईसिप्प-क्याराए ताब उचवारुको, पर्व सोहम्मपुढविकारुको वि सत्तासु वि पुढवीसु उववाएयद्यो जाव-अहेससमाए। एवं जहा सोहम्म-बुद्धविकाहमो सद्वपुढवीसु उववाहमो, एवं जाव-ईसिपन्मारापुढविकाहमो सद्वपुढवीसु उववापयद्वी जाव-महेससमाए । 'सेवं मंते! सेवं मंते'! चि ।

#### सत्तरसमे सए सत्तमो उद्देशो समत्तो ।

#### सप्तम उद्देशक.

१. [प्र o ] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिक जीव सीधर्मकल्पमां मरणसमुद्धात करी था रक्षप्रभा पृथिवीमां पृथिवीकायिकपणे उत्पन श्विशैकाविकांश्ने थयाने योग्य छे ते हे भगवन् ! प्रथम उत्पन्न थाय अने पछी आहार करे-हत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम रत्नप्रभाष्ट्रियवीना प्रथिवीकायिक जीवनो वधा कल्पोमां, यावत्—ईजल्लाग्भारा पृथिवीमां उपपात कहेवामां आच्यो छे तेग सौधर्मकल्पना पृथिवीकायिक जीवनो पण साते नरक-पृथिवीमां यावत्—सत्तमं नरक सुधी उपपात कहेबी. तथा जेम सौधर्मकल्पना पृथिवीकायिक जीवनी सर्व पृथिवीओमां उपपात कह्यो छ तेम बधा खर्गो, यावत्-ईपत्प्राग्भारा पृथिवीना पृथिवीकायिक जीवनो पण सर्व पृथिवीओमां यावत्–सातमी नरकपृथिवी सुधी उपपात अहेबो. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

# सत्तरमा शतकमां सप्तम उद्देशक समाप्त-

## अहमो उद्देसी।

१. [प्र०] आउकाइप र्ण मंते ! इमीसे रयणप्यभाष पुढवीष समोहष, समोहणिसा जे भविष सोहम्मे कर्षे आउकाइ-यत्ताप उवविज्ञित्तपः ? [उ०] एवं जहा पुढविकार्यो तहा आउकार्यो वि सष्ठकष्पेसु, जाव-ईसिपन्भाराप तहेव उववा-प्यची, एवं जहा-रयणप्पमआउकार्को उपचार्को तहा जाय-अहेसत्तमपुढविआउकारको उत्तवाएयहो, एवं जाव-ईसि-प्पन्माराए । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।

## मत्तरसमे सए अडुमो उद्देसो समतो ।

#### अष्टम उद्देशक.

१. [प्रo] हे भगवन् ! जे अप्काविक जीव आ रत्नप्रमा पृथिवीमां भरणसमुद्धात करीने सौधर्मकल्पमां अप्वाविकपणे उत्पन्न यवाने योग्य छे-इस्पादि प्रश्न. [30] जेम प्रथिचीकायिकसंबन्धे कहां छे तेम अध्कायिकसंबन्धे पण बन्ना कल्पोमां कहेतुं, यावत्-ईपद्याग्भात पृथिवीगां पण ते प्रमाणे उपपात करेवो. तथा जैम रक्षप्रभाना अप्कायिक जीवनो उपपात कह्यो छे तेम यावत्—सातमी पृथिवीना अप्कायिक जीवनो पण यावत्-ईपत्प्राग्भारा पृथिवी सुधी उपपात कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

## सत्तरमा शतकमां अष्टम उदेशक समाप्त.

## नवमो उद्देसो ।

१. [प्र०] आउकाइए णं भंते! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणिता जे भविए इमीसे रवणप्यभाए पुढवीए वणोदहि-पलपसु आउकाइसाए उपविज्ञित्तए से णं भंते० ? [उ०] सेसं तं चेव, एयं जाव-अहेसतमाए । जहा सोहम्मआउकाइओ अप्यं जाव-ईसिपन्भाराआउक्काइओ जाव-अहेसत्तमाए उचवाएयची ! 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! ति ।

### सत्तरसमे सए नवमो उद्देसी समत्ती ।

#### नवम उद्देशक.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जे अप्कायिक जीव सीधर्मकल्पमां मरणसमृद्धातने जास धर्दने आ रत्नप्रभाना घनोद्धिवलयोगां अप्कायिक-पणे उत्पन पवाने योग्य छे, ते हे भगवन् !-इत्यादि प्रश्न. [उ०] बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणबुं. एम यावत्-अध मनम पृथिवी सुधी जाणहुं. जेम सौधर्मकल्पना अप्कायिकनो [नर्क पृथिवीमां] उपपात कह्यो तेम यावत्-ईपत्प्रारभारापृथिवीना अप्कायिक जीवनो यावत्-अधःसतम पृथिवी सुधी उपपात कहेवो. हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे.

#### सत्तरमा शतकर्मा नवम उद्देशक समाप्त-

अप्या विक-

मप्दाविक.

## दसमो उद्देसो ।

१. [त्र॰] वाउकाइए णं मंते ! हमीसे रयणप्यभाए जाव-जे मविए सोहम्मे कप्ये वाउकाइयत्ताए उवविक्षित्तए से णं॰ ! [इ॰] जहा पुढविकाइओ तहा वाउकाइओ वि, नवरं वाउकाइयाणं चत्तारि समुग्धाया पण्णत्ता, तंजहा-वेदणासमुग्धाए, जाव-वेडियसमुग्धाए । मारणंतियसमुग्धाए णं समोहणमाणे देसेण वा समोहणइ॰, सेसं तं वेव, जाव-वेहेसत्तमाए समोहणो ईसिएब्साराए उववाएयहो । 'सेवं मंते ! सेवं भंते' ! ति ।

### सत्तरसमे सए दसमो उद्देशी समन्तो ।

## दुशम उद्देशक.

बागुक)विक

१. [प्र०] हे मनवन् ! जे बायुकायिक जीव आ एतप्रभामां मरणसमुद्धातने प्राप्त धर्ने सीधर्मकल्पमां वायुकायिकपणे उत्पन्न धवाने योग्य छे ते हे भगवन् !—इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम पृथिवीकायिकसंबन्धे कहेवामां आव्युं छे तेम वायुकायिकसंबन्धे पण जाणबुं. विशेष प्रके बायुकायिकने चार समुद्धात होय छे; अने ते आ प्रमाणे—वेदनासमुद्धात, यावत्—वैकियसमुद्धात. ते वायुकायिक मारणांतिक समुद्धातवर्षे समबहत धर्व देशथी समुद्धात करे छे—इत्यादि वाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणबुं; यावत्—सातमी नरकपृथिवीमां समुद्धातने प्राप्त ध्येल बायुकायिकनो ईपत्प्राप्तमारामां उपपात कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### सत्तरमा शतकमां दशम उद्देशक समाप्त.

# इकारसमो उद्देसी।

१. [प्र॰] बाउकाइए णं भंते ! सोइम्मे कप्पे समोइए, समोइणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए, कणुवाए, घणवायवलपस्, तणुवायवलपस् वाउकाइयत्ताए उवविज्ञत्तिए से णं भंते !० ? [उ॰] सेसं तं चेव, एवं जहा सोहम्मे बाउकाइश्रो सत्तसु वि पुढवीसु उववाइओ एवं जाव-ईसिप्पन्भाराए बाउकाइओ अहेसत्तमाए जाव-उववाएयदो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! ति ।

## सत्तरसमे सए इकारसमो उद्देसी समतो। अगीयारमो उद्देशक.

बायुकाविक.

१- [प्र०] हे भगवन् ! जे वायुकायिक जीव सीधर्मकल्पमां समुद्घात करी आ रक्षप्रमा पृषिवीना घनवात, तनुवात, घनवातवल्यो के तनुवातवल्योमां वायुकायिकपण उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन् !-इत्यादि प्रश्न. [उ०] बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. अने जैम सीधर्मकल्पना वायुकायिकनो साते पृथिवीमां उपपात कहो छे ते प्रमाणे यावत्—ईपत्पाग्भारा पृथिवीना वायुकायिकनो यावत्—अधःसप्तमः पृथिवीपपैत उपपात कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

### सत्तरमा श्रतकर्मा अगीयारमो उद्देशक समाप्त.

#### बारसमी उद्देसी।

- १. [प्र०] पींगिदिया णं भंते ! सब्वे समाहारा ? [उ०] एवं जहा पढमसए वितियउद्देसए पुढविकार्याणं वस्तवया मणिया सा चेव पींगिदियाणं इह माणियद्या, जाव-समाज्या, समोववन्नगा ।
- २. [प्र०] एर्गिदियाणं भंते ! कित लेस्साओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पन्नताओ, तं जहा-कण्ह-लेस्सा, जाव-तेउलेस्सा ।

## बारमो उद्देशक.

एकेन्द्रिय जीवो सम्प्रम जाहारवारा क्षे-दलादि प्रश्नः १. [प्रत] हे भगवन्! बधा एकेन्द्रिय जीवो समान आहारवाळा छे, समान दारीरवाळा छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम प्रथम शतकना \*द्वितीय उद्देशकमां पृथियीकायिकनी वक्तव्यता कही छे तेम अहीं एकेन्द्रियो संबन्धे पण कहेवी. यावत्—समान आयुष्यवाळा नथी, तेम साथे उत्पन्न थता पण नथी.

इकेन्द्रियोने हेरपा.

२. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियोने केटली लेखाओ कही छे ! [उ०] हे गीतम ! तेओने चार लेखाओ कही छे. ते आ प्रमाणे— १ कृष्णलेखा, यावत्—४ तेजोलेखा.

<sup>ा &</sup>lt;sup>≭</sup> भग० खं० ९ श० १ ड० २ पृ०९८.

- है. [प्र०] प्रपत्ति ण मंते! प्रिंगिद्याणं कण्हलेस्साणं जाव-विसेसाहिया वा ! [उ •] गोयमा ! सहत्योवा प्रिंगिद्या ण क्रेडलेस्सा, काडलेस्सा अणंतगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ।
  - ४. [प्र॰] एपसि मं भंते ! परिदियाणं कण्हलेस्साणं इष्टी० ? [उ०] अहेव दीवकुमाराणं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।

#### सत्तरसमे सए बारसमी उद्देशी समत्ती ।

३. [प्र०] हे भगवन्! कृष्णलेश्यावाळा, यावत्--[तेजोलेश्यावाळा ए एकेन्द्रियोमां] कोण कोनाधी यावत् विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौनम! सौथी थोडा तेजोलेश्यावाळा एकेन्द्रियो छे, तेथी अनंतगुण अधिक कापोतलेश्यावाळा छे, तेथी विशेषाधिक नीललेश्यावाळा छे, अने तेथी विशेषाधिक कृष्णलेश्यावाळा छे.

लेरयावाळा **एकेटिइ-**धोनुं सरव**नुस्य-**

४. [प्र०] हे भगवन्! ए कृष्णलेश्यावाळा, यावत्—तेजोलेश्यावाळा एकेन्द्रियोनी ऋदि—सामर्थ्य संबन्धे प्रभः -एटले कृष्णलेश्यावाळा यावत्—तेजोलेश्यावाळा एकेन्द्रियोमां कोण अल्पऋदिवाळो अने कोण महर्दिक छे : [उ०] जेम \*दीपकुमारोनी ऋदि कही छे तेम एकेन्द्रियोमी कहेवी. हे भगवन्! ते एमज छे.

टेरवावाळा एकेन्द्रि-योनी ऋडितुं अस्य-बहुत्य.

#### सत्तरमा शतकमां नारमो उद्देशक समाप्त.

## तेरसमी उद्देसी।

१. [प्र०] नागकुमारा णं मंते ! सबे समाहारा० ! [उ०] जहा सोलसमसप दीवकुमारुद्देसे बहेय निरुपसेसं माणि-यवं जाव-हत्ती । 'सेवं मंते ! सेवं मंते'! जाव-विहरति ।

#### सत्तरसमे सए तेरसमी उद्देशी समत्ती।

#### तेरमो उद्देशक.

१. [प्र०] है भगवन् । वधा नागकुमारी समान आहारवाळा छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम सोळमा दातकना हिरिपुतुमार उदेशकमा कहेवामां आन्युं छे तेम याण्यू-ऋदि सुधी कहेवुं. 'हे भगवन् । ते एमज छे, हे भगवन् । ते एमज छे'-एम कही यावय्-विहरे छे.

वधा नागकुमारी समान आहारवाळा छे-हत्यादि प्रश्नः

#### सत्तरमा शतकमां तेरमी उद्देशक समाप्त.

### चोदसमो उद्देसो ।

१. [प्र॰] सुषण्णकुमारा णं मंते! सब्ने समाहारा० ! [उ०] एवं खेव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते'! सि ।

### सत्तरसमे सए चोइसमा उद्देमी समतो।

## चौदमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! बधा सुवर्णकुमारो समान आहारवाळा छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे बधुं जाणपुं. हे भगवन् ! ते मृवर्णकुमारो समान आहारवाळा छे-इत्यादि प्रश्न-

### सत्तरमा शतकमां चौदमो उद्देशक समाप्त.

## पन्नरसमो उद्देसो ।

१. [प्र॰] विजुकुमारा णं भंते ! सबे समाहारा ! [उ॰] एवं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।

### सत्तरसमे सए पनरसमो उद्देसी समत्ती।

## पंदरमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! बधा विद्युकुमारो समान आहारत्राळा छे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे बधुं जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते । विद्युकुमार संबन्धे प्रमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

### सत्तरमा शतकमां पंदरमो उद्देशक समाप्त.

# सोलसमो उद्देसी।

 [व०] बायुकुमारा णं भंते! सबे समाहारा० ? [उ०] पवं चेव । 'सेवं भंते! सेवं भंते'! ित । सत्तरसमे सए सोलसमो उद्देसी समची ।

## सोळमो उद्देशक.

बाबुकमार-

१. [प्र॰] हे भगवन्! बधा वायुकुमारो समान आहारवाळा छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे बधु जाणवुं. हे भगवन्! ते एमज छे.

#### सत्तरमा शतकमां सोळमी उदेशक समाप्त.

### सत्तरसमी उद्देसी।

१. [प्र॰] मिगकुमारा णं भंते ! सबे समाहारा॰ ! [उ॰] एवं चेव । 'सेवं भंते! सेवं भंते' ! चि । सत्तरसमे सए सत्तरसमी उद्देसी समत्ती,

सत्तरसमं सयं समत्तं.

# सत्तरमो उद्देशक.

वया अग्निकुमारी समान आहारवाङः केन्द्रसादि प्रकः १. [प्र०] हे भगवन्! बधा अमिशुमारो समान आहारवाळा छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे बधुं जाणबुं. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.

सत्तरमा शतकमां सत्तरमो उद्देशक समाप्त-

सत्तरमुं शतक समाप्त.



# अट्टारसमं सयं।

## १ पहमे २ विसाह १ मायंदिए य ४ पाणाइवाय ५ असुरे य ६ । गुल ७ केविल ८ अणगारे ९ भविए तह १० सोमिलद्वारसे ॥

- १. [प्र॰] तेणं कालेणं तेणं समयणं रायगिहे जाव-यवं वयासी-जीवे णं भंते ! जीवभावेणं कि पढमे अपढमे ? [उ॰] गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । यवं नेराय जाव-वेमाणिय ।
  - २. [प्र०] सिद्धे णं मंते ! सिद्धभावेणं कि पढमे अपढमे ! [उ०] गोयमा ! पढमे, नो अपढमे ।
- ३. [प्र॰] जीवा णं भंते ! जीवभावेणं किं पढमा अपहमा ? [उ॰] गोयमा ! नो पहमा, अपहमा । एवं जाव-वेमा-

## अढारमुं शतक

[उदेशकसंप्रह—] १ जीवादि अर्थ संबंधे प्रथम—अप्रधमादिभावनो प्रतिपादम प्रथम उदेशक, २ विशाखा नगरीमां भगवान् महा-वीर समोसर्या—इत्यदि संबंधे बीजो उदेशक, ३ माकंदीपुत्र अनगारना प्रश्न संबंधे त्रीजो उदेशक, ४ प्राणातिपातादि सबंधे चोथो उदेशक, ५ असुरकुमारनी वक्तव्यता संबंधे पांचमो उदेशक, ६ गोळ वगेरेना वर्णादि संबंधे छट्टो उदेशक, ७ 'केवछज्ञानी यक्षना आवेशथी सत्य अने असत्य बोळे'—एवा अन्यतीर्थिकना मन्तव्य बाबत सानमो उदेशक, ८ अनगारने ऐर्यापथिकी किया होये के सांपरायिक क्रिया होय बगेरे संबंधे आठमो उदेशक, मविक द्रव्यनैरियकादि संबंधे नत्रमो उदेशक अने सोभिल ब्राव्यणना प्रश्न वगेरे संबंधे दशमो उदेशक—ए प्रमाणे आ अहारमा शतकर्मा दश उदेशको कहेनामां आवशे.

### 'प्रथम उद्देशक.

- १. [प्र०] ते काळे, ते समये राजगृह नगरमां [भगवान् गीतम ] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! जीव जीवभाववंडे अवकार. ( जीवत्वनी अपेक्षाए ) "प्रथम छे के अप्रथम छे ! [उ०] हे गीतम ! ते प्रथम नधी, पण अप्रथम छे. ए प्रमाणे [ दंडकना क्रमधी ] प्रथम अने अप्रथम के वित्वनी वावत्—वैमानिको जाणवा.
- २. [प्र॰] हे भगवन्! सिद्ध सिद्धभाववडे ( सिद्धत्वनी अपेक्षाए ) प्रथम छे के अप्रथम छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते प्रथम छे, पण अप्रथम नथी.
- ३. [प्र॰] हे भगवन् ! जीवो जीवभाववडे प्रथम छे के अप्रथम छे ! [उ॰] हे गौतम ! प्रथम नथी पण अप्रथम छे. ए प्रधाण यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं.

<sup>+</sup> आ उद्देशकमां जीवादि चौद द्वारोमां प्रथम-अत्रथमादि भावनो विचार चोवीश दंडक अने सिद्धने आश्रयी कर्यो छे. ते चौद द्वार आ प्रमाण १ जीव, व खाद्दारक, ३ भवतिद्विक, ४ खंशी, ५ छेश्या, ६ दृष्टि, ७ संयन, ८ कवाय, ९ ज्ञान, १० योग, ११ उपयोग, १२ वेद, १३ शरीर, १४ पर्थाप्त.

<sup>9</sup> के जीये जे भाव पूर्वे प्राप्त करेको छे तेनी अपेक्षाए ते अप्रथम कहेवाय छे, जेमके जीवत्व अनादि काळथी जीवने प्राप्त थयेलुं छ माटे जीवत्वनी क्ष्मेषण जीव अप्रथम कहेवाय छे. जे जीव पूर्वे अप्राप्त एवा जे भावने प्राप्त करें से अपेक्षाए ते प्रथम कहेवाय छे, जेमके सिद्धत्वनी अपेक्षाए सिद्ध प्रथम छे. कारण के सिद्धत्व पूर्वे जीवने प्राप्त थयेलुं नवी.

- ४. [प्रo] सिद्धा जं पुच्छा । [उ o] गोयमा ! पढमा, नो अपढमा ।
- ५. [प्र॰] आहारए णं भंते ! जीवे आहारभावेणं किं पढमे अपढमे ? [उ॰] गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एवं जाक-वेमाणिए, पोहसिए एवं चेव ।
- ६. [प्र॰] अणाहारए णं भंते ! जीवे अणाहारमावेणं पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपडमे ! [प्र॰] नेरहए णं भंते ॰ ! [उ॰] एवं नेरतिए, जाव-धेमाणिए नो पढमे, अपढमे । सिद्धे पढमे, नो अपढमे ।
- ७. [प्र॰] अणाहारमा णं मंते! जीवा अणाहारमावेणं पुच्छा। [उ॰] गोयमा! पढमा वि, अपहमा वि। नेराया जाव-वेमाणिया णो पढमा, अपहमा। सिद्धा पढमा, नो अपढमा पक्षेके पुच्छा माणियद्या २।
- ८. भवसिद्धीप एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारप, पवं अभवसिद्धीप वि । [प्र०] नोभवसिद्धीयनोअभवसिद्धीप णं भंते ! जीवे नोभव०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पढमे, नो अपढमे । [प्र०] णोभवसिद्धी-नोअभवसिद्धीप णं भंते ! सिद्धे नोभव० । [उ०] एवं पुहुत्तेण वि दोण्ह वि ।
- ९. [प्रः] सभी णं मंते ! जीवे सभीमायेणं कि पढमे-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एवं विगिकिदिय-वज्रं जाव-वेमाणिए । एवं पुद्दुत्तेण वि ३ । असभी एवं चेव एगलपुद्दुत्तेणं, नवरं जाव-वाणमंतरा । नोसभी-नोअसभी जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे, नो अपढमे । एवं पुद्दुत्तेण वि ४ ।
- ४. [प्र॰] हे भगवन् ! सिद्धो सिद्धभाववडे प्रथम छे के अप्रयम छै–इत्यादि पृच्छा. [उ॰] हे गौतम ! ते प्रथम छे, पण अप्र-थम नथी.

र आहारक दार.

५. [प्र०] हे भगवन् ! आहारक जीव आहारकभाव बढे प्रथम छे के अप्रथम छे ! [उ०] हे गौतम ! ते प्रथम नथी, पण अप्रथम छे. ए प्रमाणे यावत्—वंमानिको सुधी जाणबुं. बहुबचनमां पण तेज प्रमाणे समजबुं.

अनाद्वारक.

- ६. [प्र०] हे भगवन् ! अनाहारक जीव अनाहारकभाववडे प्रथम छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! कदाच "प्रथम होय अने कदाच अप्रथम पण होय. [प्र०] हे भगवन् ! नैर्रायक अनाहारकभाववडे प्रथम छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] ए प्रमाणे नैरियक यावत्—वैमान् निक अनाहारकभाववडे प्रथम छे, पण अप्रथम नथी.
- ७. [प्र०] हे भगवन् ! अनाहारक जीवो अनाहारकभाववडे प्रथम छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! प्रथम पण छे अने अप्रथम पण छे. नरियको यावत्—वैमानिको अनाहारकभाववडे प्रथम नथी पण अप्रथम छे. अने सिद्धो अनाहारकभाववडे प्रथम छे पण अप्रथम नथी. एम एक एक दंडके प्रथ्न करवो.

६ भवसिद्धिक हार.

८. आहारकजीवनी पेठे भगसिद्धिक जीवो भवसिद्धिक पण वाहेवा. [प्रव] हे भगवन्! नोभवसिद्धिक—नोअभवसिद्धिक (सिद्ध) जीव नोभवसिद्धिक—नो-आश्रयी जाणवी. एज प्रमाण अभवसिद्धिक पण वाहेवा. [प्रव] हे भगवन्! नोभवसिद्धिक—नोअभवसिद्धिक (सिद्ध) जीव नोभवसिद्धिक—नो-अभवसिद्धिकमाववडे (सिद्धावनी अपेक्षाए) प्रथम छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम! ते प्रथम छे पण अप्रथम नथी. [प्रव] हे भगवन्! नोभवसिद्धिक—नोअभवसिद्योविद्यिक्यविद्याविद्याविद्याविद्याविद्याविद्याविद्याविद्याविद्या

भ संबीदार-

९. [प्र०] हे भगवन् ! संज्ञी जीव संज्ञीभाववडे प्रथम छे—इस्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! प्रथम नथी पण अप्रथम छे. ए प्रमाणे विकलेन्द्रिय ( एकेन्द्रिय, वेइन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय ) सिवाय यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. एम बहुवचनवडे पण वक्तव्यता कहेवी. अगंज्ञी जीवोने पण एकवचन अने बहुवचनवडे एज वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के, यावत्—वानव्यंतरो सुधी समजदुं. नोसंज्ञी—नोअसंज्ञी जीव, मनुष्य अने सिद्ध नोसंज्ञी—नोअसंज्ञीभाववडे प्रथम छे पण अप्रथम नथी. ए प्रमाणे बहुवचनने आश्रयी पण आ प्रश्लोत्तर समजवो.

६ \* गिद्ध अने विष्रहर्गतिने प्राप्त थयेल संसारी जीव अनाहारक होय छे. सिद्ध अनाहारकपणावडे प्रथम छे, कारण के तेने अनाहारकपणुं पूर्वे प्राप्त कर्युं नथी. संसारी जीय अप्रथम छे, केमके तेण विष्रहर्गतिमां पूर्वे अनाहारकपणुं अनंत वार प्राप्त कर्युं छे. एम दंडकना क्रमथी नैरयिकथी मांडी वैमानिक सुधीना जीवो पण पूर्वेक्ति हेतुथी अनाहारकमार्थे वर्षे अप्रथम जाणवा.

९ † असंज्ञीद्वारमां जीव अने नरिवक्षी मांदी दंटकता क्रमधी व्यन्तर मुधीना संज्ञी जीवो पण असंज्ञीभाववदे अप्रथम छे–एम जे कहेवामां आव्युं छे, तेमां असंज्ञीपण् भृतपृर्धन्यायथी रामजबुं, केमके अमंज्ञी जीवोनो उत्पाद व्यन्तर सुधीना संज्ञी जीवोमां पण थाय छे. पृथिव्यादि अंसंज्ञी जीवो तो असंज्ञीभाव वडे अप्रथम छे.

- १०. [४०] सलेसे णं भंते !-पुरुषा । [४०] गोयमा ! जहा आहारए, एवं पुत्रुत्तेण वि । कण्हलेस्सा जाव-सुकले-स्सा एवं चेव, नवरं जस्स जा लेसा अल्यि । अलेसे णं जीव-मणुस्स-सिखे जहा नोसन्नीनोअसन्नी ५ ।
- ११. [प्रव] सम्मिद्दिशिए णं भंते ! जीवे सम्मिदिद्विमावेणं कि पढमे-पुच्छा ! [उ०] गोयमा ! सिय पढमे, सिय अप-हमे । एवं प्रिंगिदियवज्ञं जाव-वेमाणिए । सिद्धे पढमे, नो अपढमे । पुहुत्तिया जीवा पढमा वि, अपढमा वि, एवं जाव-वेमाणिया । सिद्धा पढमा, नो अपढमा । भिच्छादिद्वीए एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारगा । सम्मामिच्छादिद्वी एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मिद्दिश, नवरं जस्स अस्य सम्मामिच्छत्तं ६ ।
- १२. संजय जीवे मणुस्से य एगसपुदुसेण जहा सम्मिद्दी, असंजय जहा आहारय, संजयासंजय जीवे पांचिदियति-रिक्सजोणिय-मणुस्सा पगसपुदुसेणं जहा सम्मिद्दी। नोसंजय नोअस्संजय नोसंजयासंजय जीवे सिद्धे य एगसपुदुसेणं पढमे, नो अपढमे ७।
- १३. सकसायी कोहकसायी जाव-लोभकसायी एए एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, अकसायी जीवे सिय पढमें सिय अपढमें, एवं मणुस्से वि । सिद्धे पढमें नो अपढमें, पुहुत्तेणं जीवा मणुस्सा वि पढमा वि अपढमा वि । सिद्धा पढमा, नो अपढमा ८।
  - १४. जाजी दगसपुदुत्तेणं जहा सम्मदिट्टी, आमिणियोहियनाणी जाव-मणपञ्जवनाणी दगसपुदुत्तेणं पवं चेव, नवरं
- १०. [प्र०] हे भगवन् ! सलेश्य जीव सलेश्यभाववडे प्रथम छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गैतिम ! आहारक जीवनी पेठे ( सू. ५ ) अप्रथम जाणवी. बहुवचनवडे पण ए प्रमाणे जाणवुं. वळी कृष्णलेश्या यावत्-शुक्रन्य्या संबंधे पण एमज जाणवुं. विशेष ए के, जे लेश्या जेने होय ते लेश्या तेने कहेवी. लेश्यारहित जीव, मनुष्य अने सिद्धपदमां अलेश्यमाववटे नोसंज्ञी—नोअसंज्ञी पेठे (मृ.० ९) प्रथमपणुं जाणवु.

५ क्रेक्याद्वारः

६ दृष्टिद्वार.

११. [प्र०] हे भगवन् ! सम्यादि जीव सम्यादि श्रमाववडे प्रथम होय—इसादि प्रथ्म. [उ०] हे गीतम ! ते कदाच \*प्रथम पण होय ए प्रमाण एकेन्द्रिय सिवाय बीजा बचा दंडक यावत्—वैमानिको सुधी जाणतुं. सम्यादिशमावे सिद्ध प्रथम छे, पण अप्रथम नथी. बहुवचनवडे सम्यादिशमावे जीवो प्रथम पण छे अने अप्रथम पण छे. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी जाणतुं. सिम्यादिशमाव वडे सिद्धो प्रथम छे, पण अप्रथम नधी. मिथ्यादिशमाववडे एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी आहारकभावनी वक्तन्यता प्रमाणे (सू० ५) जीवने बधी वक्तन्यता कहेवी. मिश्रदिशमावयडे एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी सम्यादिशमावनी वक्तन्यता प्रमाणे (सू० ११) जीवने बधी वक्तन्यता कहेवी. विशेष ए के, जे जीवने मिश्रदिश होय तेने ते कहेवी.

१२. [प्रo] मंग्रेयत जीव अने मनुष्यना संबंधमां एक वचन अने बहुवचनयहे सम्यग्द्दि जीवनी वक्तव्यता पेठे (सृ० ११) बहु कहेबुं. असंयत आहारक जीवनी पेठे (अप्रथम) समजयो. अने संयतारांयत जीव, पंचेद्रियांतर्यंच तथा मनुष्य ए त्रण पदे एकवचन अने बहुवचनयहे सम्यग्दिश्नी पेठे कदाच प्रथम अने कदाच अप्रथम जाणवा. यळी नोसंयत (संयत निह्न) नोअसंयत (असंयत निह्न) तेम नोसंयतासंयत (संयतासंयत पण निह्न) एवा जीव अने सिद्ध एकवचन अने बहुवचनवहे प्रथम छे पण अप्रथम नधी.

७ संयतदार

१३. सकपायी, क्रोधकषायी यावत्—छोभकषायी ए बधा एकवचन अने बहुवचनवडे आहारक जीवनी पेटे अप्रथम समजवा. तथा श्रिकषायी जीव कदाच प्रथम पण होय अने कदाच अप्रथम पण होय, ए प्रमाणे अकषायी मनुष्य संबंधे पण जाणतुं. पण अक-षायी सिद्ध प्रथम छे पण अप्रथम नथी. बहुवचनवडे अकपायी जीवो अने मनुष्यो प्रथम पण होय छे अने अप्रथम एण होय छे. सिद्धो तो बहुवचनवडे अकपायी प्रथम छे पण अप्रथम नथी.

८ कपायदार.

१४. ैज्ञानी जीवो एकवचन अने बहुबचनवडे सम्यग्दृष्टि जीवनी पेठे ( सू० ११ ) कदाच प्रथम अने कदाच अप्रथम जाणवा.

९ शनदार-

<sup>99 \*</sup> कोई सम्यग्दष्टि प्रथम सम्यग्दर्शन प्राप्त करे ते अपेक्षाए ते प्रथम जाणवो अने कोई सम्यग्दर्शनथी पत्री करी नम्यग्दर्शन प्राप्त करे ते अपे-काए ते अप्रथम जाणवो. एकेन्द्रिय जीवोने राम्यग्दर्शन प्राप्त थतुं नथी, तेथी एकेन्द्रिय सिवाय बाकीना नारकादि दंडके सम्यग्दर्शननी प्रथम प्राप्तिनी अपेक्षाए अवस्मण्युं अने करीवार सम्यग्दर्शनप्राप्तिनी अपेक्षाए अग्रयमप्युं जाणवुं.

<sup>ै</sup> सिद्ध सम्यादिष्टभाव वडे प्रथम जाणवा, कारण के सिद्धल्याह वरित राम्यादर्शन मोक्षणमन समये प्रथम प्राप्त थाय छे.

<sup>🛨</sup> मिथ्यादृष्टि आहारकनी पेठे एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी अप्रथम छे, कारण के मिथ्यादर्शन अनादि छे.

**१२ <sup>प</sup> संयतहारमां मात्र जीवपद अने मनुष्यपद ए बे पद होय छ अने तेमां संयत सम्यदग्रहाधनी पेटे प्रथम अने अप्रथम जाणवा.** 

<sup>11 §</sup> अकषायी जीव यथास्यात चारित्रनी प्रथम प्राप्तिमां प्रथम, अने फरीवार प्राप्तिमां अप्रथम होय हो. ए प्रमाणे मनुष्यपद आश्रयीने जाणतुं. अक-वासी सिद्ध प्रथम जाणवा, कारण के तिद्ध सिद्धत्यसिंहत अकषायभावनी अपेक्षाए प्रथम छे.

१४ है ज्ञानद्वारमां ज्ञानी सम्यरदृष्टिनी पेटे प्रथम अने अप्रथम जाणवा. तेमां केवलज्ञानी केवलज्ञानती अपेक्षाए प्रथम, अने अकेवली केवलज्ञान किवाय वाकीना हातनी प्रथम प्राप्तिमां प्रथम अने करीवार प्राप्तिमां अप्रथम कहेवाय छे.

जस्स जं अत्थि, केवलनाणी जीवे मणुस्से सिद्धे य एगत्तपुढुतेणं पढमा नो अपढमा । अजाणी, महश्रवाणी, सुवधवाणी, विमंगनाणी एगत्तपुढुत्तेणं जहा आहारए ९ ।

- १५. सजोगी, मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, नवरं जस्स जो जोगो अत्य । मजोगी जीव-मणुस्स-सिद्धा एगत्तपुहुत्तेणं पढमा, नो अपढमा १०।
  - १६. सागारोघउसा अणागारोयउत्ता एगत्तपुरुत्तेणं जहा अणाहारए ११।
- १७. सवेदगो जाव-नपुंसगबेदगो दगसपुद्वत्तेणं जहा आहारप, नवरं जस्स जो वेदो अस्थि । अवेदओ दगसपुद्वतेणं तिसु वि पदेसु जहा अकसायी १२।
- १८. ससरीरी जहा आहारप, एवं जाव-कम्मगसरीरी, जस्स जं अत्थि सरीरं, नवरं आहारगसरीरी एगसपुहुत्तेणं जहा सम्मदिट्टी । असरीरी जीवो सिद्धो एगसपुहुत्तेणं पढमो नो अपढमो १३ ।
- १९. पंचिंह पञ्चिति पंचिंह अपञ्चत्तीिह एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारप, नवरं जस्स जा अत्थि, जाव⊸वेमाणिया नोप-हमा, अपदमा १७ । इमा लक्खणगाहा—
  - "जो जण पत्तपुष्टो भावो सो तेण अपटमओ होर । सेसेखु होर पढमो अपत्तपुष्टेसु भावेसु" ॥
  - २०. [प्र०] जीवे णं भंते ! जीवभावेणं किं चरिमे अचरिमे ! [उ०] गोयमा ! नो चरिमे, अचरिमे ।

आमिनिबोधिकज्ञानी यावत्–मनःपर्यवज्ञानी एकवचन अने बहुवचनवडे ए प्रमाणे समजवा. विशेष एके जे जीवने जे ज्ञान होय ते तेने कहें वुं. केवल्ज्ञानी जीव, मनुष्य अने सिद्ध ए बधा एकवचन तथा बहुवचनवडे प्रथम छे, पण अप्रथम नथी. अज्ञानी, मतिअज्ञानी श्रुतअ-झानी अने विभंगज्ञानी ए बधा एकवचन तथा बहुवचनवडे आहारक जीवोनी पेठे (सु० ५) जाणवा.

१० योगहार.

१५. स्योगी, मनयोगी, बचनयोगी अने काययोगी ए बधा एकवचन तथा बहुवचन आश्रयी आहारक जीवोनी पेठे (सू॰ ५) अप्रथम जाणवा. विशेष ए के, जे जीवोने जे योग होय तेने ते योग कहेवी. अयोगी जीव, मनुष्य अने सिद्ध ए बधा एकवचन अने बहुवचनवडे प्रथम छे पण अप्रथम नथी.

११ उपयोगद्वारः

१६. "साकारोपयोगवाळा अने अनाकारोपयोगवाळा ए बक्षे एकवचन अने बहुवचनयडे अनाहारक जीवनी पेठे (स्०६) जाणधा-

१२ वेदद्वार.

१७. सवेदक-वेदवाद्या-पावत् नपुंसक्रवेदवाद्य। ए बधा एक्यचन अने बहुवचनवढे आहारकजीवीनी पेटे (स्०५) अप्रथम जाणवा. पिशेष ए के, जे जीवने जे वेद होय तेने ने कहेंथी. एकवचन अने बहुवचनवढे अवेदक-वेदरिहत जीव, मनुष्य अने सिद्ध (ए प्रणे पदमां) अक्रपायी जीवनी पेटे (म्०१३) जाणवा.

१३ शरीरहार.

१८. सशरीर जीवी आहारक जीवनी पेठे (मृ० ६) समजवा, अने ए प्रमाणे यावत्—कार्मणशरीरवाळा संबं कि किन्नी के जीवने जे शरीर होय ते तेने कहेबुं. विशेष ए के, आहारकशरीरवाळा एकवचन अने बहुवचनवंड सम्यरहार जीवोनी पे किए १६) कदाच प्रथम अने कदाच अप्रथम समजवा, अशरीरी—शरीररहित जीव अने सिद्ध ए बन्ने एकवचन अने बहुवचनवंड प्रथम छे पण अप्रथम नथी.

१४ पर्याहरू.

१९. पांच पर्याप्तिव है पर्यामा अने पांच अपर्याप्तिव है अपर्याप्ता एक्स्यचन तथा बहुवचननी अपेक्षाए आहारक जीवनी पेठे (सू० ६) अग्रथम समजया. विशेष ए के, जैने जे पर्याप्ति होय ते नेन कहेबी. ए प्रमाणे यायत्—विमानिको सुधी समजर्यु. [ अर्थात् ते बधा प्रथम नर्या पण अप्रथम छे. ] प्रथम अने अप्रथमना स्वरूपने जणावनारी आ गाथा बाहे छे—''जे जीवे जे भाव—अवस्था पूर्वे प्राप्त करेख छे ते भावनी अपेक्षाए ते जीव अप्रथम कहेबाय छे, अने ते सिवाय पूर्वे निह प्राप्त ध्येख पण प्रथम बार प्राप्त थ्येख भावोनी अपेक्षाए ते जीवो प्रथम कहेबाय छे.''

चरम अने अनम १ जीवदार २०. [प्र०] हे भगवन ! जीव जीवन्यभाववटे !चरम छे के अचरम छे ! [उ०] हे गीतम ! चरम नथी पण अचरम छे.

१६ \* राष्कार उपयोगवाळा अने अगाकार उपयोगवाळा अगाहारकशी पेठ जाणवा. तेओ जीवपदे सिद्धनी अपेक्षाण प्रथम अने संसारीनी अपेक्षाण अप्रथम जाणवा. नरियक्षिक राशि वैमानिक सुधीना इंक्लोमों प्रयम नथी, एव अप्रथम छे. निद्धपवने विने प्रथम छे पण अप्रथम नथी, कारण के साकारीपयोग अने अगावारीपयोग अने अगावारीपयोग अने अगावारीपयोग अने अगावारीपयोग

२० । जेनो सर्वदा अन्त थाय छ ते चरम अने जेनो किर अन्त थतो नथी ते अचरम कहेवाय छे. जीवनो जीवत्वभावधी किर अन्त यतो नथी, साटे ते चरम नथी पण अचरम छे.

- २१. [म्र∘] नेरह्प णं भंते ! नेरहयमावेणं–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय चरिमे, सिय अचरिमे । एवं जाव -वेमा-हैं फिए । सिद्धे जहा जीवे ।
- २२. [ब्र॰] जीवा णं~पुच्छा । [उ॰] गोयमा! नो चरिमा, भचरिमा । नेरइया चरिमा वि अचरिमा वि, एवं जाव⊸ बेमाणिया । सिद्धा जहा जीवा १ ।
- २३. आहारए सञ्चत्थ एगतेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे, पुरुतेणं चरिमा वि अचरिमा वि । अणाहारओ जीवो सिद्धो य एगतेण वि पुरुत्तेण वि नो चरिमे, अचरिमे । सेसट्टाणेसु एगत्तपुरुत्तेणं जहा आहारओ २ ।
- २४. मवसिज्ञीभो जीवपदे एगसपुहुत्तेणं चरिमे, नो अचरिमे, सेमट्टाणेसु जहा आहारओ। अमवसिज्ञीओ सवस्थ एगसपुहुत्तेणं नो चरिमे, अचरिमे। नोभवसिज्ञीय-नोअभवसिज्ञीय जीवा सिज्ञा य एगसपुहुसेणं जहा अमवसिज्ञाओ ३।
- २५. सभी जहा आहारओ, एवं असभी वि । नोसभी-नोभसभी जीवपदे सिद्धपदे य अचरिमे, मणुस्सपदे चरिमे एगसपुदु तेणं ४ ।
  - २६. सलेस्सो जाव-सुक्कलेस्सो जहा भादारभो, नवरं जस्स जा अत्थि । अलेस्सो जहा नोसभी-नोभसन्नी ५ ।
- २७. सम्मिद्दी जहा अणाहारको, मिच्छादिद्वी जहा आहारको, सम्मामिच्छादिद्वी पर्गिदिय-विगित्तिदियवज्ञं सिय चरिमे, सिय अचरिमे, पुहुसेणं चरिमा वि अचरिमा वि ६ ।
- २१. [४०] हे भगवन्! नैरियिक नैरियकमाववडे "चरम छे के अचरम छे ' [३०] हे गौतम! ते कहाच चरम पण छे अने कहाच अचरम पण छे. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. सिद्धने जीवनी पेठे (मृ० २०) जाणवुं.
- २२. [प्रत] जीवो संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गाँउम! जीवो चरम नथी पण अन्यरम छे. नैरियको नैरियकभावयंडे चरम पण छे अने अन्यरम पण छे, ए प्रमाणे यायत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. सिद्धो जीवोनी पेटे अन्यरम जाणवा.
- २३. रिआहारक सर्वत्र एकथचनवडे कदाच चरम पण होय अने कटाच अचरम पण होय, तथा बहुबचन घडे आहारक चरम पण र जाराक होय. होय अने अचरम पण होय. अनाहारक जीव अने सिद्ध यन्ने स्थाने एकबचन अने बहुबचन वडे चरम न होय पण अचरम होय. बाकीना नैरिथकादि स्थानोमां अनाहारक आहारक जीवनी पेठे एकबचन अने बहुबचनवडे कदाच चरम होय अने कदाच अचरम होय २.
- २४. भवसिद्धिक जीवपदमां एकवचन अने बहुवचनवडे ईचरम छे पण अचरम नथी. अने वर्ष्काना स्थानीमा आहारवानी पेटे १ म्यानाहर एक कदाच चरम होय अने कदाच अचरम होय. अभयसिद्धिक जीव सर्वत्र एकवचन अने बहुवचनवडे चरम नथी पण अचरम छे. तथा नोभवसिद्धिक—नोअभवसिद्धिक जीव अने सिद्ध ए बने पदे एकवचन नथा बहुवचन वडे अभवसिद्धिकर्ना पेटे अचरम जाणवा. ३
- २५. संबी अने असंबी बन्ने आहारकर्ता पेटे (सूठ २३) कदाचित् चरम अने कदाचित् अचरम समजवा. तथा कोसंबीनोअसंबी करणाहरू जीव अने सिद्ध ए बन्ने अचरम हो, अने मनुष्य पदे | केवलीनी अपेक्षाए | एकवच्चन तथा बहुवचनवडे चरम हो. १
- २६. छेऱ्यासहित यावत् शुक्रकेश्यात्राळी आहारकती भेठे (सू० २३) जाणको. विशेष ए के, अने जे लेखा होय ते तेने कहेवी. अस्थारहित जीव नोसंश्रीनोअसंश्रीनो पेठे जाणको. ५.
- २७. ैसम्यग्द्रष्टि अनाहारक पेठे अने मिध्याद्रष्टि आहारकनी पेठे (सृ० २३) जाणवो. वळी एकेंद्रिय तथा विकलेन्द्रिय सिवायनो 💎 ६५ ७०%
- ६५ <sup>#</sup> जे नैरयिक नरकगतिमांधा जीकळी फरी नरकमां न जनां गोक्ष जक्षे ने नरियक्तभारतो गर्नदा अन्त करे छ माटे नरग फहेबाय छ अने नेश्री भिन्न अचरम कहेबाम छे. ए प्रमाणे यावद वैमानिक सुधी जाणबूं, सिद्धन्वनो गर्नदा अन्त शतो नशी माटे ने अचरम जाणवा – टीका.
- ५३ विश्वाहारक बधा जीवादि पदमां चरम के अचरम जाणवा. जे पछीना समये निर्वाण पामको ते चरम अने तेथी भिन्न ते अचरम आहा-रक जाणवा.
- १४ ई सिद्धिसम्ब घडे भव्यत्वनो अन्त धनो होवार्था भवारिष्ठिक चरम होय छे. अभविगिद्धिकनो अन्त नहि धनो होवार्धी ने अचरम होय छे. नोभन-सिद्धिक-नोअभवसिद्धिक सिद्धो होय छे अने ने अभवसिद्धिकनी पेठे अचरम जाणवा.
- २७ ¶ सम्यरदृष्टि अनाहारकनी पेटे चरम नथा अचरम जाणवा. शनाहरिक जीव अने सिद्ध ए बक्ते स्थानके होय छे, तेमां जीव अचरम छे, कारण के ते सम्यरदर्शनथी पड़िताज नथी सम्यरदर्श नेरियेकादि जे सम्यरदर्शन फरीधी पामरो निह ते चरम अने ते सिवायना बीजा अचरम कहेवाय छे. सिध्यादांष्ट जीव आहारकनी पेटे कदाचित चरम अने कदाचित अनरम जाणवा. जे निर्दाण पामरो ते सिध्यादृष्टिपणे चरम अने ते सिवायना बीजा अचरम. सिध्यादृष्टि नारकादि जे सिध्यादृष्टिपणे चरम अने ते सिवायना बीजा अचरम. सिध्यादृष्टि नारकादि जे सिध्यादृष्टिपणे चरम अने ते सिवायना बीजा अचरम. सिध्यादृष्टि नारकादि जे सिध्यादृष्टि संवन्धे नारकादि एणे फरीवार पामशे निह ते चरम अने तेथी निष्क अचरम कहेवाय छे. सिधदृष्टि एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय न किवायना सम्यरद्शि संवन्धे नारकादि दं इकमा एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय न किवायना सम्यरद्शि संवन्धे नारकादि इंग्लमा एकेन्द्रिय जने विकलेन्द्रिय न किवायना सम्यरद्शिन होतुं नथी.

- २८. संजओ जीवो मणुस्सो य जहा आहारओ, अस्संजओ वि तहेव, संजयासंजए वि तहेव, नवरं जस्स जं अध्यि। नोसंजय-नोअसंजय-नोसंजयासंजया जहा नोभवसिद्धीय-नोअमवसिद्धीओ ७।
- २९. सकसाई जाय-लोभकसायी सम्रट्ठाणेसु जहा आहारओ, अकसायी जीवपदे सिद्धे य नो वरिमो, अवरिमो, मणुस्सपदे सिय वरिमो, सिय अवरिमो ८।
- ३०. णाणी जहा सम्मिद्दिश सम्बन्ध, आभिणियोहियनाणी, जाव-मणपज्जवनाणी जहा आहारओ, नवरं जस्स जं अ-रिया केवलनाणी जहा नोसन्नी-नोअसन्नी, अन्नाणी जाव-विभंगनाणी जहा आहारओ ९।
  - ३१. सजोगी जाव-कायजोगी जहा आहारओ, जस्स जो जोगो अस्थि । अजोगी जहा नोसन्नी-नोअसन्नी १० ।
  - ३२, सामारोवउत्तो अणामारीवउत्तो य जहा अणाहारओ ११।
  - ३३. सघेदओ जाव-नपुंसगवेदओ जहा आहारओ, अवेदओ जहा अकसाई १२।
- ३४. ससरीरी जाव-कम्मगसरीरी जहा आहारओ, नवरं जस्स जं अत्थि । असरीरी जहा नोभवसिद्धीय-नोश्रमय-सिद्धीय १३ ।

मिश्रदृष्टि जीव कदाच चरम पण होय छे अने कदाच अचरम पण होय छे. ए प्रमाण बहुवचनवडे चरम अने अचरप बने जाणवा. ६

७ संयतदार

- २८. 'संयत जीव तथा मनुष्य ए बन्ने पदे आहारकर्ना पेठे ( मृ० २३ ) जाणवा. बळी असंयत अने संयतासंयत पण तेज प्रमाणे समजवा. विकेष ए के, जे जेने होय तेने ते कहेंचु. तथा नोसंयत—नोअसंयत—नोसंयतासंयत नोभवसिद्धिक—नोअभवसिद्धिकनी पेठे ( सृ० २४ ) अचरम ममजवा. ७
- ८ कामायदार.
- २९. 'सकवायी यावत्-छोभकपायी सर्वस्थानोमां आहारकनो पेठे समजवा. अकपायी-जीव अने सिद्ध ए बने चरम नथी पण अचरम छे. अने अकपायी मनुष्य कटाच चरम पण होय छे अने कटाच अचरम पण होय छे ८.
- ९ जानद्वार.
- ३०. क्षेत्रानी सर्वत्र सम्यग्द्रीष्ट्रनी पेटे बन्ने प्रकारना जाणवा. मित्र्ज्ञानी यावत्-मन पर्ववज्ञानी आहारकनी पेटे समजवा. विशेष ए के, जैने जे ज्ञान होय नेने ते कहेवुं. केयळ्ज्ञानी, नोमंद्री-नोअगंज्ञीनी पेटे अचरम जाणवा. तथा अज्ञानी यावत्-विभंगज्ञानी आहारकनी पेटे बन्ने प्रकारना समजवा. ९
- १० योगद्वार.
- ३१. सयोगी यावत्—काययोगी आहारकर्ना पेठे समजवा. विशेष ए के, जैने जे योग होय ते तेने कहेंचे अने. अयोगी नोसंही— नोअसंहीनी पेठे जाणवा. १०

11 साकारोपयोगः हारः

- ३२. साकारोपपोगवाळा अने अनाकारोपयोगवाळा अनाहारकर्ना पेठे चरम अने अचरम जाणवा. ११
- १२ वेदद्वार.
- ३३. सबेदक यायत्-नपुंसकवेदवाळा आहारकनी पेटे जाणवा. अवेदक अकपार्यानी पेटे समजवा. १२
- १३ शरीरदारः
- ३४. मधर्मार्ग यावत्-कार्मणधर्मारवाटा आहारवानी पेटे जाणवा. विशेष ए के, जेने जे शरीर होय तेने ने कहेवुं. अशरीरी, नोभवसिद्धिय-नोअभवसिद्धिय सिद्धनी पेटे समजवा. १३

२८ \* संयत जीव चरम अने अचरम बन्ने प्रकारे होय है. जैने फरीबी सयतपणु प्राप्त धवातुं नथी ते चरम अने तेथी इतर अचरम कहेबाय है. ए प्रमाणे सशुष्य राजरेथे पण आण्यतु. अस्यत पण आहारकता पेट चरम अने अवरम बन्ने प्रकारना होय है. संयतामयत-देशिवरत पण ए प्रमाणे जाणवा, परन्तु देशिवरतपणुं जीव, पंचीत्त्रय तिर्यच अने मनुष्य ए त्रणं स्थानके होय है. नोसंयतासंयत-तिद्ध अचरम जाणवा. कारण के सिद्धत्व नित्य होवाथी तेनो चरम अण होतो नथी.

५९ \* सक्रपायी जीवादि कदाचित् चरम होय अने कदाचित् अचरम पण होय. जे निर्वाण पामशे ते चरम अने अन्य अचरम.

३० ौ सम्यर्टाधनी पेट हारी। जीव अने सिद्ध अचरम जाणवा. कारण के जाव ज्ञानावस्थाधी परे तो पण तेने ते अवस्य फरीबी श्राप्त धाय छे माट्टे अचरम अने छिद्ध अवस्य ज्ञानावस्थामां ज रहे छे माटे अचरम. बाकीना जेओने ज्ञानसहित नारकत्वादिनी प्राप्तिनो फरीबी असंमय छे ते चरम, तेथी अन्य बीजा अचरम. आभिनिवोधिक ज्ञानी आहारकर्ना पेटे चरम अचरम एम बने प्रकारना जाणवा तेमा जे आभिनिवोधिक ज्ञानने केवलज्ञाननी प्राप्ति धवाधी फरी नहिं पामे ते चरम अने ते सिवाय बीजा ते अचरम. केवलज्ञानी अचरम होय छे.

३५. पंचिहे पद्मतीहि पंचिहे अपञ्चतीहि जहा आहारओ, सबत्य पगसपुदुत्तेणं दंडगा भाणियवा १४ ॥ इमा सम्बद्धणगाहा—

"जो जं पाबिहिति पुणो मार्व सो तेण अचरिमो होइ । अर्चतिविकोगो जस्स जेण मावेण सो चरिमो" ॥
"सेवं भंते ! सेवं मंते" ! ति जाव-विहरित । समस्तो ।

#### अठरसमे सए पढमो उद्देसो समत्तो।

३५. पांच पर्याप्तिवडे पर्याप्ता अने पांच अपर्याप्तिवडे अपर्याप्ता संबंधे एकतचन तथा बहुवचनवडे सक्त्र आहारकर्नी पेठे दंडक कहेवो. १४ चरम अने अचरमना स्वरूपने जणावनारी आ गाथा छे—"जे जीव जे भावने प्रतीवार पामशे, ते भावनी अपेक्षाए ते जीव अचरम कहेवार छे, अने जे जीवने जे भावनो तहन वियोग होय छे, ते भावनी अपेक्षाए ते जीव चरम कहेवार छे." हि भगवन् ! ते एमज छे है भगवन् ! ते एमज छे एम कही यावत्—विहरे छे.

१४ पर्यासदार-

# अढारमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

## बीओ उद्देसी.

- १. तेणं कालेणं तेणं समपणं विसाहा नामं नगरी होत्था । वश्वओ । वष्टुपुत्तिप चेदप । वश्वओ । सामी समोसहे, जाव-पज्ज्वासद । तेणं कालेणं तेणं समपण सक्के देविदे देयराया वज्जपाणी पुरंदरे-एवं जहा सोलसमयप वितियज्देसप नहेच दिश्वेणं जाणविमाणेणं आगओ । नवरं पत्थ आभियोगा वि अन्थि, जाव-वर्षासनिविद्दं नद्दविद्दं उचदंसेति, उचदंसेत्ता जाव-पद्धिगए ।
- र. 'भंते' सि मगवं गोयमे समणं भगवं महाधीरं जाव-एवं वयासी जहा तर्रयसए ईसाणस्स तहेव कृष्ठागा-रिद्दृंतो, तहेव पुष्ठभवपुच्छा, जाव-अभिसमन्नागया ? [उ०] 'गोयमा' दि समणे भगवं महाबीरे भगवं गोयमं एवं वयासी— 'एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुहीवे दीवे भारहे वासे हिश्यणापुरे नामं नगरे होत्था । वश्रओ । सहस्संववणे उज्जाणे । वश्नओ । तत्थ णं हित्यणागपुरे नगरे कत्तिए नामं संट्ठी एरिवसिन, अहे, जाव-अपरिभूष, णंगमपढ-मासणिए, णेगमटुसहस्सस्स यहुसु कज्जेसु य कारणेसु य को दुवेसु य-एवं जहा रायण्यसेणहजे चिन् जाव-चक्ष्युभूष, णेगमटुसहस्तस्स सयस्स य कुंदुंबस्स आहेवश्चं जाव-कारेमाणे पाकेमाणे, समणोवासए, अहिगयजीवाजीवे जाव-विहरिन ।

#### द्वितीय उद्देशक.

१. ते काळे, ते समये विशाखा नामे नगरी हती. वर्णक. अने त्यां बहुपुत्रिक नामे चेत्य हतुं. वर्णक. महावीर स्वामी समबसर्या. यावत्—परिपद् पर्युपासना करे छे. ते काळे, ते समये शक्र देवेन्द्र, देवराज, बज्रपाणि, पुरंदर—इत्यादि 'सोळमा शतकाना बीजा उदेशकमा शक्रनी कक्तव्यता कही छे ते प्रमाणे यावत्—ते दिव्यविमानमां बेसीने आव्यो. विशेष ए के, आ स्थळे आभियोगिक देवो पण होय छे. यावत्—तेणे आवी बर्जाश प्रकारनो नाट्यपिधि देखाड्यो; अने ते ज्यांथी आव्यो हतो त्या पाछी चान्यो गयो.

गारि**व हेठ** -

२. हि भगवन्'! एम कही पूज्य गाँतमे श्रमण भगवंत महावीरने यावत्—आ प्रमाण कहां के—जेम 'नृतीयशतकमा इंशानंद नंबंधे कूटागार शालानो हष्टांत अने पूर्वभवनो प्रश्न कर्यों हे तम आ स्थळे यावत्—तेने 'ऋष्टि अभिमुख थई' त्यां मुधी वधुं कहेवुं. 'हे गीतम'। एम कही श्रमण भगवंत महावीरे पूज्य गातमने आ प्रमाण कह्युं के—हे गातम! आ जंबूईापना भारतवर्षमां हम्तिनाएर नामे नगर हतुं. वर्णक. सहस्त्राम्रवन नामे उद्यान हतुं. वर्णक. ते हस्तिनागपुर नगरमां धनिक यावत्—कोईथी पराभव न पामे एको, वाणको मां पहेलुं आसन प्राप्त करनार, एक हजार अने आठ विणकोना घणा कार्योमां, कारणोमां अने कुतुम्बोमां यावत्—चक्षुरूप एको कार्तिक नामे शेठ रहेतो हतो. जेम रिराजप्रश्चीयमूत्रमां चित्रसारथितु वर्णन कर्युं छे तेम आह वधुं वर्णन कर्युं.—वर्षा त कार्तिकशेठ एक हजार आठ विणकोनुं अने पोताना कुदुम्बनुं अधिपतिपणुं करतो यावत्—पाटन करतो रहेतो हतो. ते श्रमणोपासक तथा जीवाजीव तत्वोनो जाणकार हतो.

१ \* मग० खं० ४ श० १६ उ० २ पृ० ५. २ † जुओ – भग० खं० २ श० ३ उ० १ पृ० २८. 🙏 जुओ, राज० प० १९५ – १६.

- ३. तेणं कालेणं तेणं समपणं मुणिसुन्नप् अरहा आदिगरे-जहा सोलसमसप तहेव जाव-समोसढे, जाव-परिसा पजु-वासति । तप णं से कत्तिप सेट्टी स्मीसे कहाप लद्धट्टे समाणे हट्टतुट्ट० एवं जहा पकारसमसप सुदंसणे तहेव निगाओ, जाव-पजुवासति । तप णं सुणिसुन्नप अरहा कत्तियस्स सेट्टिस्स धम्मकहा जाव-परिसा पडिगया ।
- ४. तप णं से कित्तए सेट्टी मुणिसुवय० जाय-निसम्म इट्टतुट्ट० उट्टाए उट्टेति, उ० २ उट्टेता मुणिसुवयं जाय-एवं वयासी-'एवमेयं भंते! जाय-से जहेयं तुज्हे वरह जं, नवरं देवाणुष्पिया! नेगमदुसहस्सं आपुच्छामि, जेट्टपुत्तं च कुडुंदे ठावेमि, तप णं अहं देवाणुष्पियाणं अंतियं पश्चयामि। अहासुहं जाय-मा पिडवंधं। तप णं से कितए सेट्टी जाय-पिडिनिस्क-मित, २-मित्ता जेणेव हिश्यणागपुरं नगरे जेणेव सप गेहे तेणेव उवागच्छा, २-च्छिता णेगमदुसहस्सं सहावेति, २-वेत्ता एवं वयासी-'प्यं खत्रु देवाणुष्पिया! मए मुणिसुवयस्स अरहओ अंतियं धम्मे निसन्ते, से वि य मे धम्मे इच्छिप, पिडिच्छिप, अभिष्ठहर । तप णं अहं देवाणुष्पिया! संसारभयुद्विग्गे, जाव-पवयामि, तं तुज्हे णं देवाणुष्पिया! कि करेह, कि ववसह, कि मे हियहच्छिए, कि मे सामन्थे'? तए णं तं णेगमदुसहस्सं पि तं कित्तयं सेट्टि एवं वयासी-'जह णं देवाणुष्पिया! संसारभयुद्विग्गा जाव पहरस्संति, अम्हं देवाणुष्पिया! कि अन्ने आलंबणे वा, आहारे वा, पिडवंधे वा! अम्हे वि णं देवाणुष्पिया! संसारभयुद्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं देवाणुष्पिपिहं सिद्धं मुणिसुवयस्स अरहओ अंतियं मुंडा मिवत्ता आगा-राओ जाव-पवयामी'।
- ५. तप णं से कत्तिप सेट्टी तं नेगमट्टसहस्सं एवं घयासी—'जिद्द णं देवाणुष्पिया ! संसारभयुविग्गा भीया जम्मणमरणाणं मप सिंद्ध मुणिसुष्ठय जाव-पष्ठयह, तं गच्छह णं तुज्हो देवाणुष्पिया ! सएसु गिरेसु, विषुलं असणं जाय-उवक्काहावेह, मित्तनाह जाध-जेट्टपुत्तं कुडुंबे टावेह, जेट्ट० २ टावेत्ता तं मित्तनाह जाध-जेट्टपुत्ते आपुच्छह, आपुच्छेता
  पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहह, दुरुहित्ता मित्तनाह जाव-परिजणेणं जेट्टपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सहहीप
  जाव-रवेणं अकालपरिद्वीणं चेव मम अंतियं पाउच्मवह'। तप णं ते नेगमट्टसहस्सं पि कत्तियस्स सेट्टिस्स प्यमट्टं विणएणं
  पिड्नमुणेति, पिड्नमुणेता जेणेव साई साई गिहाई तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विपुलं असण जाव-उवक्काडोंति, उव-
- ३. ने काले, ने समये धर्मना आदिकर—इत्यादि वर्णन जेम \*सोलमा शतकमां करवामां आव्युं छे तेवा मुनिसुवत तीर्धकर समोमयी अने यावत्—पर्यदाए पर्युपासना करी. त्याग्याद कार्तिकहोठ मगवंत आव्यानी वात सांभळी हर्पवाळी अने संतुष्ट थयो—इत्यादि जेम अगीगारमां शतकमां कहियामां आव्युं छे एवा 'सुटर्शन शेठनी पेठे वादवा नीकळ्यो अने यावत्—तेणे मगवननी पर्युपासना करी— वगेरे बधुं कहेतुं, पछी सुनिसुवत अहैते कार्तिक शेठने धर्मकथा कही, यावत्—परिषद् पाछी गइ.
- ४. त्यारबाद कार्तिकरोठ, मुनिसुबन अर्हत पासेथी यावत्—धर्मने सामळी, अध्धारी प्रसन्न अने संतुष्ट धर्र उमो धयो; उठीने सुनिसुबन अर्हन्तने यावत्—आ प्रमाण कर्तुं के—'हे भगवन्! ते एक प्रमाण छे के यावत्—आप जे प्रमाण करों छो. परन्तु हे देवानु-प्रिय! एक हजार आर वणिकोने पृछी मोटा पुत्रने कुटुम्बनो भार सोपी देवानुप्रिय एवा आपनी पासे प्रवच्या लेवा इच्छुं छु. श्रीमुनिसुन वत भगवने कार्युं के, 'जम सुख थाय तेम करो, गावत—प्रतिबंध न करो.' त्यारबाद कार्तिक रोट यावत्—सांधी नीकाटी ज्यां हिस्तिनाग-पुर नगर छे, अने ज्या पीतानुं घर छे त्या आज्यो. पद्यी तेण एक हजार आट वणिकोने बोल्यवी आ प्रमाण कार्युं—'हे देवानुप्रियो! में मुनिसुवत अर्हत पासेथी धर्म सांभव्यो छे, अने ते धर्म मने इष्ट, विशेष इष्ट अने प्रिय छे. तथा हे देवानुप्रियो! ते धर्म सांभव्यो छं संसारभयथी उद्विप्त थयो छुं, यावत्—प्रवच्या लेखा इन्हुं छु. गाटे हे देवानुप्रियो! तमे शुं करचा इन्ह्यो छो, शी प्रवृत्ति करवा धारो छो, तमारा हृदयने हुं इष्ट छे, अने तमार्र सामर्थ्य शुं छे' स्वारबाद ने एक हजार आट वणिकोए ते कार्तिकरोठने आ प्रमाण वार्युं—'हे देवानुप्रिय! जो तमे संसारभयथी शहरा वर्ष यावत्—प्रवच्या प्रहण करशो नो अगने बीजुं हुं आलंबन छे, बीजो शो आधार छे, अने बीजो शो प्रनिबन्ध छे हें हे देवानुप्रिय! अभे पण संसारमयथी उद्विप्त ध्या हीए, जन्म अने मरण्यी भय पाम्या छीए, तो आपनी साथ सुनिसुवत अर्हतनी पासे मुन्ट धर्डने गृहत्याग करी अन्यारपण यावत्—प्रहण करिशो.

५. लाग बाद ते कानिक होटे ने एक हजार आठ वणिकोंने आ प्रमाण कहां के, हे देवानुप्रियो ! जो नमें पण संसार भयथी उद्दिप्त थया हो, जन्म अने मरणिया भय णम्या हो, तथा मारी साथेज मुनिसुबन अहँन पासे यावत—प्रवच्या लेवा इच्छना हो तो तमे तमारे घर जाओ, अने पुष्कळ अञ्चनादि यावत—तैयार करावी, मित्र ज्ञाति वगैरेने बोलावी यावत—प्रवच्य पुत्रने कुटुम्बनो भार सोंपी अने मित्रादिक तथा ज्येष्ट पुत्रने पूछी हजार पुरुगो वहे उचकी शकाय तेथी शिविकामां घेसी, अने मार्गमां तमारी पाछळ चालता मित्र ज्ञाति यावत—परिवार वहे अने ज्येष्ट पुत्र वहे अनुसरायेला, सर्वऋदिथी युक्त यावत—वाधीना घोषपूर्वक विलंब कर्या सिवाय मारी पासे आवो. क्यार पछी कार्तिक शेठना ए कथनने विनयपूर्वक स्वीकार्या ते बधा विणक्षो पोतपोताने घेर गया अने तेओए पुष्कळ अञ्चन, पान, यावत—

१ मॅं भग० लं० ४ श० १६ उ० ५ प्र० १४. 🕴 जुओ – भग० लंब ३ श० ११ उ० ११ प्र० २३४.

क्यादावेसा मिस्तनाइ० जाव-तस्सेव मिस्तनाइ० जाव-पुरथो जेडुपुत्ते कुडुंवे ठावेति, जेडु० २ ठावेसा तं मिस्तनाइ० जाव-जेडुपुत्ते य आपुर्व्छति, जेडु० २ आपुर्व्छसा पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहंति, दुरुहित्ता मिस्तणाति० जाव-परिजन् जेजं जेडुपुत्तेहि य समगुगम्ममाणमग्गा सम्बद्धीय जाव-रवेणं अकालपरिहीणं चेत्र कत्तियस्स सेट्रिस्स अंतियं पाउम्मवति ।

- ६. तप णं से कित्तिप सेट्टी विपुलं असणं ४ जहा गंगदत्तो जाव-मित्त-णाति० जाव-परिज्ञणेणं जेट्टपुत्तेणं णेगमट्टमह-स्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सम्बद्धिप जाव-रवेणं हत्थिणापुरं नगरं मण्डांमण्डोणं जहा गंगदत्तो जाव-आलित्ते णं भंते ! लोप, पित्रते णं भंते ! लोप, आलित्तपित्तते णं भंते ! लोप, जाव-अणुगामियत्ताप भविस्सिति, तं इच्छामि णं भंते ! लेगम-द्वसहस्सेण सिंड सयमेव पद्याचियं, जाव-धम्ममाइक्सियं'। नप णं मुणिसुद्धण अरहा कित्तयं सेट्टिं णेगमट्टसहस्सेणं सिंड सयमेव पद्यावेति, जाव-धम्ममाइक्सइ-'पयं देवाणुण्यिया ! गंतद्यं, पयं चिट्टियद्यं, जाव-संजिमयद्यं।
- ७. तप णं से कतिए सेट्टी नेगमटुसहस्सेण सिंह मुणिसुद्ययस्य अग्हओ इमं प्यारुवं धिम्मयं उचदेसं सम्मं पिड-वज्जद्द, तमाणाप तहा गच्छिति, जाव-संजमेति'। तप णं से कित्तप सिट्टी णेगमटुसहस्सेणं सिंह अणगारे जाए, ईरियास-मिप जाव-गुत्तवंभयायारी। तप णं से कित्तप अणगारे मुणिसुद्ययस्य अरहओ तहारुवाणं थेराणं अंतियं सामाद्यमाद्रयादं बोह्स पुष्ठादं अहिजाद्द, सा० २ अहिजात्ता बहुद्दिं चउत्थ छट्ट-हुम० जाव-अप्पाणं भावमाणं बहुपिडपुक्षादं दुवालस वा-सादं सामन्नपरियागं पाउणद्द, पाउणित्ता मासियाप संलेहणाप अत्ताणं झोसेह, मा० २ झोसित्ता सिट्टें भनादं अणसणाए छेदेति, स० २ छेदेत्ता आलोदय० जाव-कालं किया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवर्डेंसप विमाणे उववायसमाप देवसर्यणिजंसि जाव-सक्के देविद्ताप उचवन्ने। तए णं से सक्के देविदे देवराया अहुणोयवण्णे० संस जहा गंगदत्तस्य जाव-अंतं काहिति, नवरं ठिती दो सागरोयमादं, सेसं तं चेव। 'सेषं भंते! सेव मंत्ते'ति।

## अद्वारसमे सए बीओ उदेसी समत्ते।

तैयार करावी पोताना मित्र, ह्यांत यायत्– खजनने बोळावी अने तेओनी समक्ष यावत्–मोटः पुत्रने कुटुंबनी भार सोंपी ते मित्र, ज्ञांति बगेरे अने पुत्रने पूळी हजार पुरुषोधी उपाडी शकाय एत्री शिविकामां बेसी. मार्थमां मित्र, ज्ञांति यावत्–परिजन वडे तथा ज्येष्ट पुत्र वडे अनुसराता, यावत्–सर्वऋदियुक्त बाचना घोषपूर्वक तेओ तुरत कार्तिक शेठनी पासे हाजर थया.

- ६. त्यार बाद ते कार्तिक दोटे \*गंगदत्तनां पेटे पुष्कळ अशन-यावत्-तैयार कराव्या. यावत्-मित्र, ज्ञाति, यावत्-परिवार, ष्वेष्ठ पुत्र अने एक हजारने आठ वांगको वडे अनुसरानो सर्व ऋद्भियी युक्त एवो कार्तिक दोट यावत्-वावना धोपपूर्वक हित्तनापुर नगरनी वश्चोवश्च थई गंगदत्तनी पेटे नीकल्यो, अने श्री मुनिसुन्न अहँन पासे जई आ प्रमाणे बोल्यो—'हे भगवन्! आ संसार ची तरफ अल्यन प्रव्यलिन पई रहेलो छे, हे भगवन्! आ संसार ची तरफ अल्यन प्रव्यलिन पई रहेलो छे, हे भगवन्! आ संसार ची तरफ अल्यन प्रव्यलिन पई रहेलो छे. मादे आपनी पासे प्रवच्या भ्रहण करवी ए मने श्रेयोक्य थही तेथी हे भगवन्! आ एक हजार आठ वणिको साथे हं आपनी पासे स्वयमेव प्रवच्या छेवाने अने आपे कहेल धर्म सांमळवाने इन्छुं छुं.' त्यार पछी श्रीमुनिसुन्न अहँने ते वार्तिक शेठने एक हजार आठ वणिको साथे प्रवच्या आपी अने यावत्—धर्मोपदेश कर्यो—'हे देयानुप्रियो! आ प्रमाणे चालवु, आ प्रमाणे रहेवुं-इत्यादि यावत—अ। प्रमाणे संयमनुं पालन करवुं.'
- ७. त्यार बाद ते कार्तिक रोठे एक हजार आठ वणिको साथे मुनिसुवत अहैते कहेला आया प्रकारना धार्मिक उपदेशनो सारी रित स्वीकार कर्यो, अने तेणे तेमनी आज्ञा प्रमाणे तेयांज रीते आचरण कर्युं, यावत्—संयगनु पालन कर्युं. त्यार बाद ते कार्तिक शेठ एक हजार आठ वणिको साथे अनगार थया, ईर्यासमितियुक्त अने यावत्—गुप्त ब्रह्मचारी—ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने धारण करनारा थया. पर्छा ते कार्तिक अनगारे मुनिसुवत अहँतना तेया प्रकारना स्थिक्शेनी पासे सामायिकथी आरंभी चौंद पूर्व पर्यंत अन्ययन कर्युं, अने घणा उपयम, छट्ट तथा अट्टमोथी यावत्—आत्माने माजित करता सम्पूर्ण बार वरस अमणपर्याय पाळ्यो. त्यार बाद ते कार्तिक रोठ एक मामनी गंलेखना तथ बडे रारीरने रोपची साठ मक्त (त्रीवा दिवस) अनदानपण बीतायी, आलोचना करी यावत्—काल करी सौधर्म कल्पमां सीवमीवतसक नामना विमानमां आवेडी उपपातसभामां देनशयनीय विषे यावत्—राक्त-देवेंद्रपणे उत्पन्न थया. त्यार पटी हमणां उत्पन्न थयेत राक्त देवेन्द्र देवराज हत्यादि—'बधी वक्तव्यता 'गंगदक्तनी जेम कहेवी, यावत्—ते सर्थ दुःयोनो अंत करशे.' पण विशेष ए के, (राक्रनी) स्थिति वे सागरोपमनी छे. बाकी वधुं तेज प्रभाणे जाणवं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ने एमज छे'.

## अहारमा शतकमां द्वितीय उद्देशक समाप्त.

६ \* गंगदत्त संबन्धे जुओ भगव संव ४ ता. १६ उ० ५ पृत्र १४. १ जुओ भगव संव ४ शव १६ उ० ५ पृत्र १५.

## तईओ उद्देसो.

- १. तेणं कारुणं तेणं समपणं रायगिष्टे नगरे होत्था । वन्नओ । गुणसिरुप चेरप । वन्नओ । जाव-परिसा पिराया । तेणं कारुणं तेणं समपणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव-अंतेवासी मार्गदियपुत्ते नामं अणगारे पगर्भह्ए-जहा मंडि-यपुत्ते जाव-पञ्जवासमाणे एवं वयासी-
- [प्र॰] से नूणं मंते ! काउलेस्से पुढविकाइए काउलेस्सेहितो पुढविकाइएहिंतो अणंतरं उच्चहिता माणुसं विग्गर्दं लमित, मा॰ २ लमित्ता केवलं बोर्ड बुज्झति, के॰ २ बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति, जाव-अंतं करेति ? [उ॰] हंता मागंदियपुत्ता ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव-अंतं करेति ।
- २, [प्र॰] से नूणं अंते ! काउरुसे आउकाइए काउरुसेहितो आउकाइएहितो अणंतरं उद्यक्ति माणुसं विष्णहें लभति, मा॰ २ लभिसा केवलं बोहि युज्यति, जाव अंतं करेति ? [प्र॰] हंना मार्गदियपुत्ता ! जाव-अंतं करेति ।
- ३. [प्र०] से नूणं अते ! काउलेस्से वणस्सइकाइए-एवं चेव जाव-अंतं करेति । 'सेवं अते ! सेवं अते ! ति मागं-ित्यपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं जाव-नमंसित्ता जेणेव समणे निग्गंथे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणे निग्गंथे एवं वयासी-एवं खलु अजो ! काउलेस्से पुढिविकाइए तहेव जाव-अंतं करेति, एवं खलु अजो ! काउलेस्से आउकाइए जाव-अंतं करेति'। तए णं ते समणा निग्गंथा मागंदियपुत्तस्स अणगारस्स एवमाइक्लमाणस्स जाव-एवं प्रस्वेमाणस्स प्यमहं नो सहहंति ३, एयमहं असहहमाणा ३ जेणेव समणे भगवं पहावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरे वंदंति नमंसीत, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--[प्र०] एवं खलु अंते ! मागंदियपुत्ते अणगारे अम्हं एवमाइक्लिति, जाव-एक्ष्वेति-एवं खलु अजो ! काउलेस्से पुष्टिविकाइए जाव-अंतं करेति, एवं खलु अजो ! काउलेस्से पुष्टिविकाइए जाव-अंतं करेति, एवं खलु अजो ! काउलेस्से पुष्टिविकाइए जाव-अंतं करेति, एवं खलु अजो ! काउलेस्से अगुकाइए जाव-अंतं करेति, एवं वणस्सइकाइए वि जाव-अंतं करेति' से कहमेयं अंते ! एवं ? [उ०] 'अजोशित्त समणे भगवं महावीरे ते समणे निग्गंथे आमंतित्ता एवं वयासी--'जण्णं

## तृतीय उद्देशक.

मा कंदिकपुत्र अन-गारना प्रश्तो-

पृथिषीकासिकादि मनुष्यञ्जरीर पागी दुरत सिद्ध थाय ?

अप्कायिक.

- १. ते काळे, ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. वर्णक. गुणसिलक चैत्य हतुं. वर्णक. यावत्—पर्षटा बांदीने पाछी गई. ते काळे, ते समये श्रमण गगवंत महावारना अंतेवासी यावत् गद्रप्रकृतिवाला मार्कादेपुत्र अनगारे, "मंदितपुत्र अनगारनी जैम पर्युपासना करतां श्रमण भगवंत महावारने आ ग्रमाणे प्रश्न कर्यो—[प्र०] हे भगवन ! कापोत्तलेद्यावालो पृथिवीकायिक जीव, कापोत्तलेद्यावाला पृथि-वीकायिकोमांथी भरण पाषी तुरतज मन्ष्यना वर्गरने प्राप्त कर्रा, केवलज्ञान प्राप्त करे अने प्यार वाद सिद्ध थाय, यावत्—सर्वदु खोनो नाग करे ! [उ०] हे मार्कादेवपुत्र ! हा, कापोत्तलेद्यावालो पृथिवीकायिक, यावत्—सर्व दु:खोनो नाग करे.
- २. [प्र०] हे मगवन ! कापोनलेश्यात्राळो अष्कायिक, कापोनलेश्यात्राळा अष्कायिकोगांथी मरण पाणी तुरतज मनुष्यदारीर प्राप्त करी केवल्ज्ञान प्राप्त करे अने त्यार बाद सिद्ध थाय. यावत्—सर्वे दुःखोनो नाद्य करे १ [उ०] हे मार्कदिकपुत्र ! हा, ते यावत्—सर्वे दुःखोनो नाद्य करे.
- ३. हे भगवन् ! कापोनंप्यायाच्ये वनस्पतिकायिक जीव, वनस्पतिकायिकमांथी नीकची—इत्यादि प्रश्न, अने उत्तर पूर्व प्रमाणे जाणया. 'हे भगवन् ! ते एमज छे हे भगवन् ! ते एमज छे' एम कही माकदिकपुत्र अनगार अमण भगवंत महाविरने बंदी, नमी ज्यां अमण निर्प्रत्यो छे त्यां आर्चा ते अमण निर्प्रयोने तेणे आ प्रमाणे कहां—'हे आर्थो ! कापोनलेश्यायाच्ये पृथिवीकायिक यावत्—स्वंदुःखोनो नाज्य करे, तेज प्रकारे हे आर्थो ! कापोनलेश्यावाच्ये। अध्कापिक अने वनस्पतिकायिक जीव पण यावत्—सर्वं दुःखोनो नाज्य करे.'—ए प्रमाणे कथन करता यावत्—प्रकारणा करता माकहिकपुत्र अनगारनी आ वातने ते अमण निर्प्रत्योए मान्य न करी अने तेओ ज्यां अमण भगवंत महावीर विराजमान हता त्यां आव्या; त्यां आर्वाने अमण भगवंत महावीरने बंदी नमी यावत्—तेओ आ प्रमाणे बोल्या—[प्रव] हे भगवन् ! गाकिविकपुत्र अनगारं अमने आ प्रमाणे कायुं छे, यावत्—प्रकृष्यु छे के हे आर्थो ! कापोतलेश्यावाच्ये पृथिवी-कायिक, कापोतलेश्यावाच्ये अष्कायिक अने कापोनलेश्यावाच्ये वनस्पतिकायिक यावत्—सर्वदुःखोनो नाग करे छे. तो हे भगवन् ! ते एम केची राते होय ! [उ व] 'हे आर्थो !' एम संबोधी ने अमण निर्प्रयोन अमण भगवंत महावीरे आ प्रमाणे कर्यु—'हे आर्थो ! माकंदिकपुत्र अनगारे तमने जे कर्यु छे, यावत्—सर्व दुःखोनो नाग करे छे.' ते वात सत्य छे; हे आर्थो ! हुं पण एज प्रमाणे कहुं छुं के,

१ # संडितपुत्र सबंधे जुओ--भग । खं । २ ग ० ३ उ० ३ पृ० ७३.

अखो ! मार्गदियपुत्ते अणगारे तुन्हो पर्व आइयस्ति, जाव परुवेति-एवं खलु अखो ! काउलेस्से पुढिविकाइए जाव-अंतं करेति, एवं खलु अखो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव-अंतं करेति, एवं खलु अखो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव-अंतं करेति, सच्चे णं एसमहे, अइं पि णं अखो ! एवमाइक्खामि ४-एवं खलु अखो ! कण्डलेसे पुढिविकाइए कण्डलेसेहिंतो कुडिविकाइएसिंहो जाव-अंतं करेति, एवं खलु अखो ! नीललेस्से पुढिविकाइए जाव-अंतं करेति, एवं खलु अखो ! नीललेस्से पुढिविकाइए जाव-अंतं करेति, एवं काउलेस्से वि, जहा पुढिविकाइए एवं आउकाइए वि, एवं वणस्सइकाइए वि, सच्चे णं एसमहे । 'सेवं मंते ! सेवं मंते'! सि समणा निग्गंथा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदिता नमंसिता जेणेव मार्गदियपुत्ते अणगारं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मार्गदियपुत्तं अणगारं वंदंति नमंसंति, वंदिता नमंसित्ता एयमहं सम्मं विणएणं भुखो २ खामेति ।

४. तप णं से मागंदियपुत्ते अणगारे उट्टाप उद्देति, जेणेव समणे भगवं महाद्यीरे तेणेव उदागच्छिति, ते० २ उदागिष्ठिता समणं भगवं महाद्यीरं बंदित नमंसित, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—[प्र०] अणगारस्स णं भंते! भाविय- प्रणो सद्यं कम्मं वेदेमाणस्स, सद्यं कम्मं निज्ञरेमाणस्स सद्यं मारं मरमाणस्स, सद्यं सरीगं विष्पज्ञहमाणस्स, चित्मं कम्मं वेदेमाणस्स, चित्मं कम्मं विज्ञरेमाणस्स, चित्मं सरीरं विष्पज्ञहमाणस्स, चित्मं मारं मरमाणस्स मार्णितयं कम्मं वेदेमाणस्स, मार्णितयं कम्मं विज्ञरेमाणस्स, मार्णितयं मारं मरमाणस्स, मार्णितयं सरीरं विष्पज्ञहमाणस्स जे चित्मा निज्ञरापोग्गला सुद्रुमा णं ते पोग्गला पश्चता समणाउसो! सद्यं लोगं पि णं ते ओगाहित्ता णं चिट्टंति ? [उ०] मार्गिदय-पुत्ता! अणगारस्स णं भंते! मावियप्पणो जाव-ओगाहित्ता णं चिट्टंति।

५. [प्रव] छउमत्थे णं मंते! मणुस्से तेसि निज्ञरापोग्गलाणं किंचि आणसं या णाणसं वाव! [उठ] एवं जहा इंदिय-उद्सप पढमे जाय-वेमाणिया, जाव-तत्थ णं जे ते उचउत्ता ते जाणंति, पासंति, आहारेंति, से तेणट्टेणं निक्केबो माणि-यष्टो सि न पासंति, आहारंति ।

६. [४०] नेरह्या णं मंते! निजारापुःगला न जाणंति न पासंति, आहारंति, पवं जाव-पांचिंदियतिरिधसजोणियाणं।

कृष्णलेख्यावाळो पृथिवीकायिक कृष्णलेख्यावाळा पृथिवीकायिकोथी नीकळी तुरत यावतः सर्व दुःखोनी नाश करे; ए प्रमाणे हे आयों! नीललेख्यावाळो तथा काषोतलेख्यावाळो पृथिवीकायिक पण यावतः—सर्व दुःखोनी नाश करें: ए प्रमाणे पृथिवीकायिकनी पेटे अप्कायिक तथा वनस्पतिकायिक पण यावतः—सर्व दुःखोनी नाश करें. ए वात सत्य छे. 'हे भगवन्! ते एमज छे हे भगवन्! ते एमज छे'-एम कही ते श्रमण निर्मेथी श्रमण भगवंत महार्यराने वादी नर्गा, ज्यां मार्वदिकपुत्र अनगार छे त्या आव्या, त्यां आवीने तेओए मार्कदिकपुत्र अनगारने वादी नर्गा ए वावत सम्यग् रीते विनयपूर्वक वारवार खगाव्या.

थ. स्वार पद्या माकंदिकपुत्र अनगार उठीने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर विराजमान हे त्यां आध्या. आवीन भगवंतने वांदी नमी आ प्रमाणे कहाँ—[प्रत]—हे भगवन् । वधा कमंने वेदता, वधा कमंन निर्जरता, मर्य मरणे मरता अने सर्व करीरने होडता, तथा चरम—छेछा कमंने वेदता, चरम करीने निर्जरता, चरम शरिने छोडता, चरम मरणे मरता तथा मारणान्तिक कमंने वेदता, मारणान्तिक कमंने निर्जरता, मारणान्तिक मरणे मरता अने मारणान्तिक शरिरने छोडता भावितात्मा अनगारना जे चरम—छेछा निर्जराना पुद्गको छे हे आयुष्मन् श्रमण ! ते पुद्रको सगप्र छोकने अवगाहीने रहे छे ! [उ०] हा, माकंदिकपुत्र ! मावितात्मा अनगारना ते चरम निर्जरापुद्रगठो यावत्—समप्र छोकने व्यापीने रहे छे .

निर्जरा पुक्रको सर्व-लोक न्यापी **है**?

प. [प्र०] हे मगवन् ! छक्रस्य मनुष्य ते निर्जरा पुद्रत्योनुं परस्पर जुदापणं यावत्—नानापणुं जाणं अने जुण् ! (३०) जिम प्रथम
\*इन्द्रियोद्देशकमां कहेत्रामां आत्युं छे ते प्रमाणं यावत्—[ किटलाक देवो पण जाणता नथी अने जोता नथी ] एम वैमानिको सुधी कहेतु.
तेमां जेओ ¹उपयोगयुक्त छे तेओ ते पुद्गलोने जाण छे, जुण् छे अने प्रहण करे छे. ते कारण माटे ए सगम्र निक्षेप—पाट कहेत्रो. यावन्—
जेओ उपयोगरहित छे तेओ जाणता नथी, अने देखता नथीं, पण ते पुद्गलोनो ↓आहार—प्रहण करे छे.

छशम्य निर्धरापुदगः लोन् नित्रपणु जुण् १

६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियवो संबंधे प्रश्न. (उ०] तेओ निर्धरापुद्गरुशेने जाणता नथी, जोता नथी, पण तेनो आहार करे हे. एम यावत्—पंचेन्द्रियांतर्थंचयोगिक सुधी जाणवं.

५ <sup>#</sup> प्रशा० पद १५ उ० १ प० २९२

<sup>ी</sup> जेओ विशिष्ट अवधिज्ञान।दिना उपयोगयुक्त होय छे ते स्थम कामण पुद्गकोने जाण छे अने जुए छे पण जेओ বিशिष्ट अवधिज्ञानाधिन। उपयोगरित **छे ते स्थम कार्यण पुद्**गलोने कांद्र पण जाणना के ओता नथी.

<sup>‡</sup> ओज आहार, लोमाहार अने प्रक्षेपाहार-ए त्रिविध आहारमांथी आहें औज आहार लेवो, कारण के कार्मण शरीरहण्या पुहलोचुं प्रहण करयुं ने ओज आहार कहेवाय छे अने ते आहार आहें संभवे छे.

- ७. [प्र०] मणुस्सा णं अंते! निजारापोगाले कि जाणंति पासंति आहारंति, उदाहु न जाणंति न पासंति नाहारंति ? [उ०] गोयमा! अत्थेगह्या जाणंति ३, अत्थेगह्या न जाणंति न पासंति, आहारंति। [प्र०] से केणहेणं अंते! पवं दुष्णह्— 'अत्थेगह्या जाणंति पासंति आहारंति, अत्थेगह्या न जाणंति न पासंति, आहारंति? [उ०] गोयमा! मणुस्सा दुविहा पश्चा, तंज्ञहा—सग्नीभूया य असन्नीभूया य। तत्थ णं जे ते असन्निभूया ते न जाणंति न पासंति, आहारंति। तत्थ णं जे ते सन्नीभूया ते दुविहा पश्चा तंज्ञहा—उवउत्ता अणुवउत्ता य। तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते न याणंति न पासंति, आहारंति। तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते जाणंति ३, से तेणहेणं गोयमा! पवं वुष्णह्—अत्थेगह्या न जाणंति, न पासंति, आहारंति, अत्थेगह्या जाणंति ३। वाणसंतरजोहिसया जहा नेरहया।
- ट. [प्र०] वेमाणिया णं अंते! ने निजरापोग्गले कि जाणंति ६ ! [उ०] गोयमा! जहा मणुस्सा, नवरं वेमाणिया दुविहा पन्नता, तं जहा-माइमिच्छिदिट्ठीउववन्नगा य अमाइसम्मिदिट्टीउववन्नगा य । तन्य णं जे ते मायिमिच्छिदिट्ठिउववन्नगा ते णं न जाणंति न पासंति आहारंति । तत्थ णं जे ते अमायिसम्मिदिट्टीउववन्नगा ते दुविहा पन्नता, तं जहा-अणंतरो-ववन्नगा य । तत्थ णं जे ते अणंतरोववन्नगा ते णं न याणंति न पासंति आहारंति । तत्थ णं जे ते परं-परोववन्नगा ते जुविहा पन्नता, तं जहा-पज्जन्तगा य अपजन्तगा य । तत्थ णं जे ते अपजन्तगा ते णं न जाणंति, न पासंति, भाहारंति । तत्थ णं जे ने पज्जन्तगा ते दुविहा पन्नता, तंजहा-उवजन्ता य अणुवजन्ता य, तत्थ णं जे ते अणुवजन्ता ते ण याणंति न पासंति आहारंति ।
  - ९. [प्र०] कतिविद्दे णं भन्ते ! बंधे पश्चत्ते ! [उ०] मागंदियपुत्ता ! दुविद्दे पश्चते, तं जहा-दव्वबंधे य भाववंधे य ।
- १०. [प्र०] वृक्षयंधे णं भंते ! कितविहे पक्षत्ते ! [उ०] मार्गवियपुत्ता ! दुधिहे एक्षत्ते तं जहा-पश्रोगवंधे य बीस-सावंधे य ।
- ७. [प्र०] हे भगवन ! मनुष्यो शुं निर्जरा पुद्रत्योने जाणे छे, जुए छे अने आहारे छे-प्रहण करे छे, के जाणता नथी, जोता नथी अने प्रहण करता नथी ! [उ०] हे गैंगितम ! केटलाक जाणे छे, जुए छे अने आहारे छे, अने केटलाक जाणता नथी, जोता नथी पण तेओनो आहार करे छे. [प्र०] हे भगवन ! शा माटे एम कहंबामां आत्यु के, केटलाक जाणे छे, जुए छे अने आहारे छे अने केटलाक नथी जाणता, नथी जोता, पण आहारे छे ! [उ०] हे गैंगितम ! मनुष्य बे प्रकारना कहा छे, रांझीक्य—मनसहित अने असंझीक्य—मनरहित. तेमां जे असंझीक्य छे ते जाणता नथी, जोता नथी, पण ते निर्जरा पुद्रगलोनो आहार करे छे; अने जे संझीक्य छे ते पण बे प्रकारना छे, उपयुक्त अने अनुपयुक्त. तेमां जे विशिष्ट ज्ञानना उपयोग रहित छे ते जाणता नथी, जोता नथी, पण आहार करे छे. जे विशिष्ट ज्ञानना उपयोगवाला छे तेओ तेने लाणे छे, जुए छे अने तेनो आहार करे छे, ते कारणथी हे गौतम ! एम कहेबाय छे के केटलाक जाणता नथी, जोता नथी पण तेनो आहार बारे छे अने केटलाक जाणता नथी, जोता नथी पण तेनो आहार बारे छे अने केटलाक जाणता नथी, जोता नथी पण तेनो आहार वारे छे अने केटलाक जाणे छे, जुए छे अने तेनो आहार पण करे छे'. वाणव्यंतर अने अपिष्कोनी वक्तव्यता नैरियको प्रमाणे समज्ञी.
- ८. [प्र०] हे समवन ! वैमानिको ह्युं ने निर्जरा पुद्रस्थेने जाणे हे, जुए हे अने आहारे हे के नधी जाणता, नधी जोता अने आहारता पण नधी ! [उ०] हे गैतिम ! जेम मनुष्योंनी एक्तस्यता कही हे (पृ० ७) तेम वैमानिकोनी वक्तस्यता जाणती. परन्तु विशेष ए छे के, वैमानिक वे प्रकारना कहा हे, ते आ प्रमाण—मायी मिध्यादृष्टि अने अमायी सम्यगृदृष्टि. तेमा जे मायी मिध्यादृष्टि देव हे तेओ निर्जरापुद्गलोने जाणता नधी, जोता नधी पण आहारे हे. तथा जे अमायी सम्यगृदृष्टि हो, ते बे प्रकारना कहा हे, ते आ प्रमाण—अनन्तरोपपन्नक अने परंपरोपपन्नक. तेमा जे अनंतरोपपन्नक—प्रथम समयोगन हे ते जाणता नधी, जोता नधी, पण आहारे हे, अने जे परंपरोपपन्नक (जेने उत्पन्न ध्याने द्वितीयादि समयो धरेना हे.) हे ते वे प्रकारना कहा हे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तक अने अपर्याप्तक. तेमा जे अप्रथमिक हे ते जाणता नधी, जोता नधी, पण आहारे हे. जे पर्याप्तक हे ते बे प्रकारना कहा हे, ते आ प्रमाणे—उपयुक्त अने अनुपयुक्त हे ते जाणता नधी, जोता नधी पण आहारे हे.

e. [प्र०] हे भगवन्! बंध केटला प्रकारनो कामो छे : [उ०] हे माकन्दिकपुत्र ! बंध वे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—इञ्य-बंध अने भावबंध.

कारः १०. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यवंध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [७०] हे मार्कदिकपुत्र **! वे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—** प्रयोगवन्ध अने विस्नसावन्ध (स्वाभाविकवन्ध ).

द्रव्यर्थपना प्रकारः

वस्थ.

<sup>ु \*</sup> अहि भगवंतने प्रश्न पूछनार तो माकदिकपुत्र छे, छत्तो भगवाने गीतमने संशोधी उत्तर आप्यो तेनुं कारण ए हे के, आ पाठ प्रशापना सूत्र-मांबी उद्दुत करेलो छे अने प्रशापनासूत्रनी रचनाशैली प्रायः गीतमप्रश्न अने भगवंतना उत्तर रूप होवाची अहि पण ते सळंग पाठ प्रहण करेलो छे.

- ११. [प्र॰] बीससाबंधे णं मंते ! कतिविद्दे पश्चसे ! । [उ॰] मार्गदियपुत्ता ! दुविद्दे पश्चसे, तं जहा-साहयवीससाबंधे य भणादीयवीससाबंधे य ।
- १२. [प्र॰] पयोगवंशे णं भंते! कतिविद्दे पश्चते ! [उ॰] मार्गदियपुत्ता! दुविद्दे पश्चते, तं जहा-सिद्धिलवंधणवन्धे य अधियवंधणवन्धे य ।
- १३. [प्र०] मावबंधे णं भंते ! कतिविहे पश्चते ! [उ०] मार्गदियपुत्ता ! दुविहे पश्चते, तं जहा-मूलपगडिबंधे य उत्तरपगडिबंधे य ।
- १४. [प्र०] नेरहयाणं भंते ! कतिविद्दे भाववंधे पश्चते ! [उ०] मार्गवियपुत्ता ! दुविद्दे भाववंधे पश्चते, तं जहा-मूळ-पगडिवंधे य उत्तरपगडिवंधे य । एवं जाव-वेमाणियाणं ।
- १५. [प्र०] नाणावरणिज्ञस्स णं भंते ! कम्मस्स कतिविहे भाषवंधे एश्रसे ? [उ०] मार्गदियपुसा ! दुविहे भाववंधे पश्चसे, तं जहा-मृत्रपगडिवंधे य उत्तरपयडिवंधे य ।
- १६. [प्र०] नेरितयाणं मंते ! नाणावरणिखस्स कम्मस्स कितिबिहै मावबंधे पश्चने ? [७०] मार्गिद्यपुत्ता ! दुविहै मावबंधे पश्चने , तं जहा-मूलपगडिवंधे य उत्तरपयडि०, एवं जाव-वेमाणियाणं, जहा नाणावरणिक्रेणं दंडश्रो मणिशो एवं जाव-अंतराइएणं माणियहो ।
- १७. [प्रव] जीवाणं मंते! पाचे कम्मे जे य कडे, जाव-जे य कजिस्सह, अन्धि याइ तस्स केइ णाणने ? [उव] हंता बन्धि। [प्रव] से केणट्रेणं मंते! एवं बुचाइ -'जीवाणं पाचे कम्मे जे य कडे, जाव-जे य कजिस्सित, अन्धि याइ तस्स णाणते'? [उव] मार्गाद्यपुत्ता! से जहानामए-केइ पुरिसे धणुं परामुसह, धणुं परामुसित्ता उसुं परामुसह, उसुं परामुसिता ठाणं ठाइ, ठाणं ठाएता आययकजाययं उसुं करेति, आव २ करेता उद्दे बेहासं उद्विहह, से नूणं मार्गाद्यपुत्ता! तस्स उसुस्स उद्वं
- ११. [प्र०] हे भगवन्! \*विससाबंध केटला प्रकारनो कह्यो छे : [उ०] हे भाकंत्रिश्पृत्र ! ते वे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ विस्तसाबन्ध-प्रभाणे-\*सादि विस्तसाबन्ध अने अनादि विस्नसाबन्ध.
- १२. [प्रच] हे भगवन् ! प्रयोगवन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [ट०] हे मार्कारिकपुत्र ! ते वे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रयोगवन्ध-प्रमाणे—शिथिलबन्धनवाळो बन्ध अने गाटबन्धनवाळो बन्ध.
- १३. [प्रo] हे भगवन् ! भायबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उo] हे मार्कदिवगुत्र ! बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे— भावक्य-भूलप्रकृतिबन्ध अने उत्तरप्रकृतिबन्ध.
- १४. [प्र०] हे भगवन् ! नरियकोने केटला प्रकारनो भावबन्ध कह्यो छे ! [उ०] हे माकंदिकपुत्र ! तेओने बे प्रकारनो भावबन्ध कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—मूलप्रकृतिबन्ध अने उत्तरप्रकृतिबन्ध. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुची जाणतुं.
- १५. [प्र॰] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्मनो भावबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ॰] हे मार्कदिकपुत्र ! ते वे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे- मृत्यप्रकृतिबन्ध अने उत्तरप्रकृतिबन्ध.
- १६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियकोने ज्ञानावरणीय कर्मनो भावबन्ध केटल प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे मार्कदिकपुत्र ! ते बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—मूलप्रकृतिबन्ध अने उत्तरप्रकृतिबन्ध ए प्रमाणे याप्रत्—वैमानिको सुधी जाणधु, जेम ज्ञानावरणीय संबंधे दंडक कह्यो तेम यावत्--अंतरायकर्म सुधी दंडक कहेयो.

१७. [प्र०] हे भगवन्! जीवे जे पाप कर्म कर्युं छे अने यावत्—हवे पछी करशे, तेमां परस्पर कांड मेट छे! [उ०] हे मार्थ-दिकपुत्र! हा, तेमां परस्पर मेद¹ छे. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहो छो के, 'जीवे जे पाप कर्म कर्युं छे अने यावत्—जे पाप कर्म करशे, तेमां परस्पर मेद छे! [उ०] हे मार्कदिकपुत्र! जेम कोइ एक पुरुष धनुषने ग्रहण करी, बाण टेइ अमुक आकारे उभो रही धनुषने कान सुधी खेंची छेवटे ते वाणने आकाशमां उंचे फेंके, तो हे मार्कदिकपुत्र! आकाशमां उंचे फेंकेटा ते वाणना कंपनमां

वर्गवंपनी भिन्नता-

<sup>99 \*</sup> विस्ताबन्ध-शादका वगेरेनो साभाविकबन्ध, तेना सादि विस्ताबन्ध अने अनादि विद्याबन्ध ए वे मेर छे. तेमा वादका वगेरेनो गादि विस्ताबन्ध, अने धर्मास्तिकायादिनो परस्पर अनादि विस्ताबन्ध,

१७ <sup>†</sup> पुरुषे कनेला भूत, वर्तमान अने अविष्यकाळना कर्ममां तीय मन्दादि परिणामना भेदथी भिन्नता होय छे. जेम कोई पुरुषे आनाशमां उंचे केंकिल बाणना कंपनमां तेना प्रयत्ननी विशेषताथी मेद होय छे, तेवी रीते कर्ममां पण तीव मन्द इत्यादि परिणामनी विशेषताथी विशेषताथी होय छे.

वेहासं उद्योदस्स समाणस्स एयति वि णाणतं, जाव-तं तं भावं परिणमिति वि णाणतं ! [उ०] हंता भगवं ! एयति वि णाणत्तं, जाव-परिणमिति वि णाणत्तं, से तेणहेणं मार्गदियपुत्ता ! एवं बुद्यइ-जाव-तं तं भावं परिणमिति वि णाणत्तं ।

- १८. [प्र०] नेरइयाणं मंते ! पाये कम्मे जे य कडे० ? [उ०] एवं चेव, नवरं जाव-वेमाणियाणं ।
- १९. [प्र॰] नेरहया णं भंते ! जे पोग्गले आहारसाए गेण्हंति, तेसि णं भंते ! पोग्गलाणं सेयकालंसि कतिभागं आहा-रेति, कनिभागं निजरेति ! [उ॰] मार्गदियपुत्ता ! असंखेजहभागं आहारेति, अणंतभागं निजरेति ।
- २०. [प्र०] चिक्रिया णं मंत ! केइ तेसु निजारापोग्गलेसु आसइसए वा जाव-नुयहित्तए वा ! [उ०] णो तिणहें समहे, अणाहरणमयं बुदयं समणाउसो ! एवं जाव वेमाणियाणं । 'सेवं मंते ! सेवं मंते 'ति ।

## अद्वारसमे सए तईओ उदसो समत्तो ।

मेद छे ? यावत्-ते ते भावे परिणमे छे तेमां मेद छे ? [उ०] हे भगवन् ! हा, तेना कंपनमां अने यावत्-तेना ते ते सरूपना परिणा-ममां पण मेद छे. तो हे मार्कदिकपुत्र ! ते कारणयी एम कही शकाय छे के, 'यावत्-ते कर्मना ते ते रूपादि परिणाममां पण मेद छे'.

नैरविकादिना क-मैंबन्धमां भिन्नताः

आहाररूपे प्रदण क रेला पुद्रालोनो केट-लामो भाग पृष्ठीत बाय अने केट-जमो भाग खाल्य धाय छे? निर्कराना पुद्रनो उपर क्षयनादि मई दाके ?

- १८. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियक्तीए ज पाप कर्म कर्युं छे अने यावत्—जे करशे, ते पाप कर्ममां कांइ मेद छे ? [उ०] हे मार्क-दिकपुत्र ! हा मेद छे. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी जाणबुं.
- १९. [प्र०] हे मगवन् ! नेरियको जे पुद्गलोने आहारपणे ग्रहण करे छे, भविष्य कालमां ते पुद्गलोनो केटलामो भाग आहार रूपे गृहीत थाय छे अने केटलामो भाग निर्जरे छे—त्यजे छे ! [३०] हे मार्केदिकपुत्र ! आहार ग्रहण करेला पुद्गलोनो असंख्यातमो भाग आहारको गृहीत थाय छे, अने अनतमो भाग निर्जरे छे.
- २०. [प्र०] हे भगवन् ! ए निर्जराना पुद्रलो उपर बेसवाने यावत्-मूबाने कोइ पुरुष समर्थ छे ? [उ०] हे माकंदिकपुत्र ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे आयुष्मन् ! श्रमण ! ए निर्जराना पुद्रलो अनाधार रूप कहेलां छे. तेओ कांड पण धारण करवाने समर्थ नथी, एम कहाँ छे. 'हे भगवन् ! ते एमज हे, हे भगवन् ! ते एमज हे'-एम कहाँ यावत्-विहरे छे.

## अढारमा शतकमां तृतीय उद्देशक समाप्त.

## चउत्थो उद्देसो.

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समण्णं रायगिहे जाव-भगवं गोयमे पर्व वयासी-अह भंते ! पाणाइवाप, मुसावाप, जाव-मिच्छादंसणसहो, पाणाइवाययेरमणे, मुसावाय० जाव-मिच्छादंसणसहोवरमणे, पुढिविकाइप, जाव-वणस्स-इकाइप, धम्मित्यकाप, अधम्मित्यकाप, आगासित्यकाप, जीवे असरीरपिडवदे, परमाणुपोग्गले, सेलेसि पिडवन्नप अणगारे, सक्षे य बायरवेदिधरा कलेवरा एए णं दुविहा जीवद्धा य अजीवद्धा य जीवाणं पिरभोगत्ताए हद्यमागच्छंति ? [उ०] गोयमा ! पाणाइवाण जाव-पए णं दुविहा जीवद्धा य अजीवद्धा य अत्थेगितया जीवाणं परिभोगत्ताए हृद्यमागच्छंति, अल्येगितिया जीवाणं जाव-नो हृद्यमागच्छंति । [प्र०] से केण्ट्रेणं मंते ! एवं बुच्ह-पाणाइवाप जाव-नो हृद्यमागच्छंति ?

## चतुर्थ उद्देशक.

माणातिपातादि जीवना परिभोगमा भारे हे के नहिं? १. [अ०] ते काळे, ते समये राजगृहमा यावत्—भगवान् गौतमे आ प्रमाणे कह्युं के हे भगवन् ! \*प्राणातिपात, मृपायाद, यावत्—मिध्याद-र्शनशल्य, प्राणातिपातिवरमण, मृपायाद्विरमण यावत्—भिध्याद-श्रीनशल्यधिवेक, पृथिवीकायिक, यावत्—वतन्पतिकायिक, धर्मोस्तिकाय, अध-माम्तिकाय, आकाशान्तिकाय, शरीररहित जीव, परमाणुपुद्रल, 'शेलिशीने प्राप्त थयेलो अनगार, अने स्थूलाकारवाला वधा कलेवरो—वेइंदियादि जीयो ए बचा मळीने वे प्रकारना छे, तेमांना केटलाक जीवद्दव्यरूप छे अने केटलाक अजीवद्वव्यरूप छे. तो हे भगवन् ! शुं ए वधा जीवना परिभोगमां आवे छे ! [३०] हे गौतम ! प्राणातिपात वगेरे जीवद्व्यरूप अने अजीवद्वव्यरूप छे, तेमांना केटलाक, जीवना परिभोगमां आवे

१ " प्राणातिपान वरेंगे वया गामान्यकरे ने प्रकारना छे, पण नेमाना प्रत्येकना ने प्रकार नथी. तेमा पृथिनीकायिकारि जीव इन्यक्ष छे, अने धर्मा- स्तिकायादि अजीवहन्यकष छे. प्राणातिपानादि अञ्चल करी राष्ट्राये अजीवहन्यकष छे. प्राणातिपानादि अञ्चल करी राष्ट्राये जीव प्राणातिपानादि सेने छे त्यारे चारित्रमोद्धनीय कम उदयमां आने छे. तेथी प्राणातिपानादि ते द्वारा जीवना परिमोगमा आने छे. प्राणातिपातादि ते द्वारा जीवना परिमोगमा आने छे. प्राणातिपातादि सेने एक प्राणातिपानादि ते द्वारा जीवना परिमोगमा आने छे. प्राणातिपातादि ते द्वारा उपायिक स्वता नथी, माटे देने परिमोग गमन शास्त्रात तथी. धर्मान्यकायि चार इथ्यो अमृते होवाथी, परमाणु स्थम होवाथी अने शैलेशीने प्राप्त थयेल साधु उपदेश वगेरे द्वारा प्रत्यादि न करता होवाथी अनुपयोगी छे, तथी ने जीवना परिभोगमां आवता नथी.

मिं मांश्र गमन समये मेरपर्वराना जेवी योगनी अत्यंत स्थिरतास्य आत्मानी अवस्थाने शेलेक्षी कहे है.

'[द०] गोयमा! पाणाइबाए, जाव-मिच्छादंसणसङ्घे, पुढविकाइए, जाव-वणस्सइकाइए, सष्ठे य वायरवेंदिधरा कलेवरा एए जं दुविहा जीवद्वा य अजीवद्वा य जीवाणं परिभोगन्ताए हुबमागच्छेति । पाणाइवायवरमणे, जाव-मिच्छादंसणसङ्घि-वेगे, धम्मित्यिकाए, अधम्मित्यकाए, जाव-परमाणुपोग्गले, सेलेसीं(सि) पिडवश्नए अणगारे एए णं दुविहा जीवद्वा य अजीव-दुबा य जीवाणं परिभोगनाए नो हुबमागच्छिति, से तेणद्वेणं जाव-नो हुबमागच्छिति ।

- २. [प्र०] किंत ण भेते ! कसाया पश्चता ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि कसाया पश्चता, तं जहा-कसायपदं निरवसेसं माणियवं जाय-'निजरिस्संति लोभेणं'।
- ३. [प्र०] कित ण भंते! जुम्मा पन्नता ! [उ०] गोयमा! चत्तारि जुम्मा पन्नता, तं जहा-१ कडजुम्मे, २ तेयोगे; ३ दावरजुम्मे, ४ किलओगे। [प्र०] से केणहेणं भंते! एवं बुच्चर—जाव-किलयोए ! [उ०] गोयमा! जे णं गसी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्ञवसिए सेसं कडजुम्मे । जे णं गसी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे निपज्जवसिए सेसं तेयोए । जे णं गसी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेसं दावरजुम्मे । जे णं गसी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे पुण्यज्ञवसिए सेसं किलओगे । से तेणहेणं गोयमा! एवं बुच्चर—जाव-किलओए ।
- ४. [प्र०] नेरहया णं भंते ! किं कडजुम्मा, तेयोगा, दावरजुम्मा, किंत्योगाः ४ ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपदे कड-जुम्मा, उक्कोसपदे तेयोगा, अजहजुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा, जाव-सिय किंत्योगा । एवं जाव-थणियकुमाग ।
- ५. [प्र०] वणस्सहकाहयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नपदे अपदा, उक्कोसपदे य अपदा, अजहन्नुकोसपदे सिय कड्जुम्मा, जाव-सिय कलियोगा ।

छे अने केटलाक परिभोगमां नथी आवता. [प्र०] हे भगवन ! एम आ हेतुथी कहो हो के, 'प्राणातिपात वगेरे यावत् केटलाक जीवना परिभोगमां नथी आवता' ! [ट०] हे गातम ! प्राणातिपात, यावत्—मिध्याद गंनशन्य, पृथिवी-कायिक, यावत् वनगातिकायिक अने वथा स्थ्याकारवाळा कलेवरधारी वेहंदियादिजीवी——" वधा मळीने जीवद्रव्यक्ष्य अने अजीवद्रव्यक्ष्य वे प्रकारना छे, अने ते वधा जीवना परिभोगमा आवे छे. वळी प्राणातिपातिवरमण, यावत्—मिध्यादर्शनशन्य लाग, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, यावत—परमाणुपुद्रल, जया बैलेकी प्राप्त अनगार, ए वधा मळीने जीवद्रव्यक्ष्य अने अर्जावद्यव्यक्ष्य वे प्रकारना छे, ते जीवना परिभोगमां आवता नथी. ते कारणथी एम कह्युं छे के, 'कोइ द्रव्यो परिभोगमां आवे छे अने कोइ द्रव्यो परिभोगमां आवता नथी'.

२. [प्र०] हे सगवन् ! कपाय केटला कह्या छे ? [उ०] हे गातम ! चार कपायो कह्या छे. अहिं समप्र \*कपायपद यावत्— (छोभना वेदन वडे (आठकर्मप्रकृतिओर्ना) निर्जरा करशे'—त्या सुधी कहेवुं.

अधाय-

३. [प्र०] हे भगवन् ! केटला युग्मो-राजिओ कह्यां छे, [उ०] हे गौतम ! चार युग्मो कह्यां छे, ते आ प्रमाण-१ इत्तयुग्म, २ त्र्योज, ३ हापरयुग्म ४ अने कन्योज. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्म यावत्-कल्योज, एम चार राशिओ कहेवानुं द्युं कारण छे ! [उ०] हे गौतग ! जे राशिमांथी चार चार काढतां छेवटे चार वाकी रहे ते राशि इत्तयुग्म जे राशिमांथी चार चार काढतां छेवटे त्रण वाकी रहे ते राशि अयोज. जेमांथी चार चार काढतां छेवटे वे बाकी रहे ते राशिने द्वापरयुग्म कहे छे, अने जे राशिमांथी चार चार काढतां एक वाकी रहे ते राशिने कल्योज कहे छे. ते माटे हे गौतम ! यावत्-कल्योज राशि कहेवामां आवे छे.

कृतशुग्मादि चार सविओ.

४. [प्र०] हे भगतन् ! ज्ञुं नैरियंको कृतयुग्मराशिरूप छे, त्योज छे, द्वापरयुग्म छे के कल्योजरूप छे ! [उ०] हे गातम ! तेओ जधन्यपदे कृतयुग्म छे अने उत्कृष्टपदे त्र्योज छे. तथा अजधन्योत्कृष्टपदे—मध्यमपदे कृतयुग्मरूप होय, यावत्—कदाच कल्यो-जरूप पण होय. ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

नैरांयनादि दहक**ने** आश्रयी वृतासुरमा— दिनं भवतरणः

५. [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिको संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ जघन्यपद अने उन्कृष्टपदनी अपेक्षाए अपद छे. अपीत् तेमां <sup>†</sup>जघन्य पद अने उन्कृष्ट पदनो संभव नथी. पण मध्यम पदनी अपेक्षाए कदाच कृतगुग्म अने यावत्—कदाच कन्योजरूप होय छे.

२ \* जुओ कषायपद प्रज्ञा० प० २८९-२९२.

५ <sup>†</sup> जघन्यपद अने उत्कृष्टपद नियत संख्यारुप छे अने ते नैरयिकादिने विषे काळान्तरे पण घटी शके छे, पण वनस्पतिने विषे घटी शकतुं नधी. कारण के जेटला जीवोनो मोक्ष थाय छे तेटला जीवो अनन्त राधि छतां पण छेवटे तेमांथी घटवायी ते राधि अनियत स्वरूपे होय छे.

- ६. [प्र०] बेहंदिया णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नपदे कड हुम्मा, उक्कोसपदे दावर हुम्मा, अजहन्नमणुंकोसपदे सियं कड हुम्मा, जाव-सिय किलयोगा । एवं जाब-चतुरिंदिया । सेसा पिंगिदिया जहा बेंदिया । पींचिंदियतिरिक्सजोणिया जाव- वेमाणिया जहा नेरदया । सिद्धा जहा वणस्सदकादया ।
- ७. [प्र०] इन्धीओ ण मंते ! किं कडजुम्मा० [उ०] गोयमा ! जहन्नपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपदे कडजुम्माओ, मज-हन्नमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्माओ, जाव-सिय किटयोगाओ, एवं असुरकुमारित्धीओ वि जाव-धणियकुमारदत्थीओ । एवं तिन्यिलजोणियदत्थीओ, एवं मणुसित्धीओ, एवं जाव-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवित्थीओ ।
- ८, [प्र॰] जावतिया णं भंते ! वरा अंधगवण्डिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्डिणो जीवा ? [उ॰] हंता गोयमा ! जावतिया वरा अंधगवण्डिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्डिणो जीवा । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

## अद्वारसमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ।

- ६. [प्र०] हे भगतन् ! बेइंदियो संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ जधन्यपदनी अपेक्षाए कृतयुग्म अने उत्कृष्टपदे द्वापर-युग्म, मध्यमपदे कदाच कृतयुग्म अने उत्कृष्टपदे द्वापरयुग्म तथा मध्यमपदे कदाच कृतयुग्म अने यावत्—कदाच कल्योजकूप होय-ए प्रमाणे यावत्—चउरिंद्रिय जीयो सुधी जाणवुं. बाकीना एकेद्रियो, बेइंद्रियोनी पेठे जाणवा. पंचेंद्रियतियंचो अने यावत्—वैमानिको नैरिंयकोनी पेठे समजवा. अने \*सिद्धो वनस्पतिकायिकोनी पेठे जाणवा.
- ७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं श्रीओ कृतयुग्म राशिरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ जघन्यपदे कृतयुग्म छे, उत्कृष्ट-पदे पण कृतयुग्म छे, अने मध्यम पदे कदाच कृतयुग्म अने कदाच कल्योजकूप होय छे. ए प्रमाणे असुरकुमारनी यावत्—स्तनितकुमारनी श्लीओ होय छे. तिर्यच्योनिकश्लीओ, मनुष्यक्षीओ यावत्—वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकदेवनी श्लीओ पण एमज जाणवी.
- ८. [४०] हे भगवन् ! जेटला अल्प आयुपवाळा <sup>†</sup>अंधकः विद्वजीवो छे तेटला उत्कृष्ट आयुपवाला अंधक विह्न जीवो छे ! [उ०] हे गौतम ! हा, जेटला अल्प आयुपवाळा अंधक विद्वजीवो छे तेटला उत्कृष्ट आयुपवाळा अंधक विद्वजीवो छे. हे 'भगवन् ! ते एमज छे'.

## अढारमा शतकमां चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

## पंचमो उद्देसो.

१. [प्र०] दो मंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवशाए उववन्ना, तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे पासादीए, दिस्मिणिको, अभिरुवे, पाँ असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए-नो दिस्सिणिको, नो अभिरुवे, नो पिडरूवे, से कहमेर्य मंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पन्नसा, तं जहा-वेडवियसरीरा य अवेडिवियसरीरा यः तत्थ णं जे से वेडवियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं पासादीए, जाव- पिडरूवे; तत्थ णं जे से अवेडिवयसरीरे असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए जाव-नो पिडरूवे [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुधह-तत्थ णं जे से वेडिवयसरीरे तं चेव जाव-पिडरूवे ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए-इह मणुयलोगंसि दुवे पुरिसा भवंति-एगे पुरिसे अलंकिय-विभू-

## पंचम उद्देशक.

विभ्**षित असु**ग्कु असर वर्गरे देवी. १. [प्र०] हे भगवन् ! एक असुरकुमारावासमां वे असुरकुमारो असुरकुमार देवपणे उत्पन्न यया. तेमांनो एक असुरकुमार देव प्रसन्नता उत्पन्न करनार, दर्शनीय, सुंदर अने मनोहर छे, अने बीजो असुरकुमार देव प्रसन्नता उत्पन्न करनार, दर्शनीय, सुंदर अने मनोहर नयी, तो हे भगवन् ! एम होवानुं द्युं कारण ? [उ०] हे गौतम ! असुरकुमार देवो बे प्रकारना कहा। छे, ते आ प्रमाणे—वैक्तिय—विभूषित शरीरवाळा अने अपैक्तिय-अविभूषितशरीरवाळा. तेमा जे असुरकुमार देव विभूषित शरीरवाळो छे ते प्रसन्नता उत्पन्न करनार अने मनोहर नथी. [प्र०] हे भगवन् ! शा

६ \* सिद्धोमां वनरपतिकायिकोनी पेटे जघन्य अने उत्कृष्ट पद नधी, कारण के तंओनी संख्या वधती जती होवाबी तेओ अनियत परिमाण रूपे होय छे.

८ <sup>†</sup> टीकाकार 'अंघक-अंहिप, वृक्ष; नेने आश्रयी रहेले विश्व-बादर अप्रिकायिक जीवो' आवों अर्थ करे छे, बीजा आचार्यों 'अन्यक-सूक्ष्मनाम-कर्मना उदयंथी अप्रकाशक---प्रकाश नहि करनार आंग्न, अर्थात् सुक्ष्मधांग्रकायिक जीवो' आवो अर्थ करे छे.

<sup>🤰 🏚</sup> देवेशायामा प्रथम, देव स्थामाधिक-अलंकार वंगेरे विभूषा रहित उपने छे, स्वार पछी अनुक्रमे अलंकार पहेरी विभूषित याय छे.

सिए. एने परिसे अणलंकियविभूसिए, प्रांसि णं गोयमा! दोण्हं पुरिसाणं कर्यरे पुरिसे पासादीए, जाव-पडिक्रवे, कर्यरे परिसे नो पासावीप, जाव-नो पडिकवे, जे वा से पुरिसे अलंकियविभूसिए, जे वा से पुरिसे अणलंकियविभूसिए ? मगवं ! तत्य जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए से णं पुरिसे पासादीए, जाव-पडिरूवे, तत्थ णं जे से पुरिसे अणलंकियविभूसिए से बं परिसे नो पासादीप, जाय-नो पडिकवे, से तेणट्टेणं जाव-नो पडिकवे ।

- २. [ब्र॰] दो भंते! नागकुमारा देवा एगंसि नागकुमारावासंसि॰ ? [उ॰] एवं चेव जाव-थणियकुमारा। वाणमंतर-क्रोतिसिय-वेमाणिया एवं चेव ।
- ३. [प्र०] दो मंते ! नेरितया एगंसि नेरितयावासंसि नेरितयशाए उववश्वा, तत्थ णं एगे नेराए महाकम्मतराए चेव जाव-महावेयणतराप चेवः पंगे नेरहप अप्पकम्मतराप चेवः, जाव-अप्पवेयणतराप चेवः से कहमेर्य अंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! नेरहया दुविहा पश्चता तं जहा-मायिमिच्छदिट्रिउचवश्चमा य अमायिसम्मदिद्विउचवश्चमा य । तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिद्विजववन्नए नेरर्ए से णे महाकम्मतराए चेव जाव-महावेयणतराए चेवः तत्थ णं जे से अमायिसम्मिर्दाद्वजव-वच्चप नेराप से णं अप्पक्षमातराप चेव जाव-अप्पवेयणतराप चेव ।
  - ४. प्रि॰] हो मंते ! असुरकुमारा॰ [उ॰] पर्य चेव, पर्व परिविय-विगर्लिद्यवर्ज जाय-वेमाणिया ।
- ५. [प्र०] नेरहए णं मंते ! अणंतरं उच्चट्टिसा जे भविए पाँचेदियतिरिक्खजोणिएस उचविज्ञसए से णं मंते ! कयरं बाउयं पडिसंबेदेति ? [उ०] गोयमा ! नेरइयाउयं पडिसंबेदेति, पींचेदियतिरिक्खजोणियाउए से पुरबो कडे चिट्टति, एवं मणुस्सेस वि. नवरं मणुस्साउप से पुरओ कडे चिट्टर ।
- ६, [प्रठ] असुरकुमारा णं भंते ! अणंतरं उद्यद्धिता जे भविष पुढविकाइएसु उवविज्ञत्य-पुच्छा । [उ०] असुरकु-माराउयं पश्चिसंबेदेति. प्रतविकाइयाउए से पुरओ कडे चिद्रइ, एवं जो जिंहे भविओ उवविज्ञित्तए, तस्स तं पुरओं कडें

कारणयी एम कहो छो के अलंकृत-विभूषित शरीरवाळो असुरकुमार देव यावत्-मनोहर छे अने बीजो असुरकुमार देव मनोहर नधी १ [उ०] हे गौतम ! 'आ मनुष्यलोकमा जेम कोइ वे पुरुषो होय, तेमां एक पुरुष आभूषणोधी अलंकृत अने विभूषित होय अने एक पुरुष अलंकत अने विभूषित न होय. हे गौतम ! ए बल पुरुषोगां कया पुरुष प्रसन्नता उत्पन्न करनार अने मनोहर होय अने क्यो पुरुष अप्रसन्नता करनार यावत्—अगनोवर होय, जे पुरुष अलंकत विभूषित होय ते के जे पुरुष अलंकत विभूषित होतो नथी ते' ? हे भगवन ! तेमां जे पुरुष अलंकृत विभूषित होय छे ते पुरुष प्रासादीय यावत्—मनोहर छे अने जे पुरुष अलंकृत विभूषित नधी होतो ते पुरुष प्रासादीय यावत्—मनोहर नथी. ते माटे हे गौतग ! ते असुरकुमार यात्रत्—भनोहर नथी.

२. प्रि. हे भगवन् ! वे नागकुमारदेवो एक नागकुमारावासमां नागकुमार् देवपणे उत्पन्न धया-इत्यादि प्रश्न. डि. पूर्व प्रमाणे समजदुं. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितवुःमारो सुधी जाणतुं. व्यानव्यंतर, ज्योतिपिक अने वैमानिक संबंधे पण एज प्रमाणे जाणवं.

नागकुमार्-

३. [प्र०] हे भगवन् ! एक नरकावासमां वे नरियको नरियकपण उत्पन्न पाय, तेमानो एक नैरियक महाकर्भवाळो यावत्⊸ पहावेदनावाळी होय, अने एक नैशीयक अल्प कर्मवाळी यावत्-अल्पवेदनावाळी होय तो हे भगवन् ! एम केवी रीते होय ! [उ०] हे गौतम ! नेरियको वे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–मायी मिध्यादृष्टि उत्पन्न थयेन्त्रा अने अमायिसभ्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला. तेमां जे मायिमिध्यादृष्टि उत्पन्न थयेला नैरियको छे, तेओ महाकर्मवाळा, यावत्—महावेदनावाळा होय छे अने जे अमार्या सम्यर्ग्दाष्ट उत्पन्न थयेला नैरियको छे तेओ अल्पकर्मवाळा, यावत्-अल्पवेदनावाळा होय छे.

अन्यकर्भबाद्या अने महाक्रमैवाळा नेए-विकी.

- ४. [प्रo] हे भगवन् ! वे असुरकुमारो संबंधे प्रश्न. [उ०] ए प्रमाणे समजवुं. एम \*एकेंद्रिय अने विकलेंद्रिय सिवाय यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं.
- ५. प्रि० हे भगवन् ! जे नैरियक मरीने तुरत ज पछीना समये पंचेदिय तिर्यंचयोनिकमां उत्पन्न यत्राने योग्य छे ते कया विर्णयकने भरणस-आयुपनो अनुभव करे ! [30] हे गौतम ! ते नै।यिक अयुपनो अनुभव करे छे, अने पंचेदियतिर्यंचयोगिकनुं आयुप आगळ करे छे -उदयाभिमुख करे छे. ए प्रमाण मनुष्य विषे पण समजवं. विशेष ए के, ते गनुष्यनुं आयुष उदयाभिमुख करे छे.

मये आ मवना के परभवना आञ्चपनी अनुभव शोय !

६. [प्रo] हे भगवन् ! जे असुरकुमार मरीने पर्छाना समये तुरत ज पृथिवीकायिक जीत्रोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गैतिम ! ते असुरकुमारना आयुगनो अनुभव करे छे अने पृथिवीकायिकतं आयुग उदयाभिमुख करे छे. एम जे जीव

<sup>🔻 🍍</sup> एकेन्द्रिय अने विकर्केन्द्रिय मायी मिथ्यादिष्ट द्वीय छे, पण अभायी सम्यग्दिष्ट होता नशी माटे - तेओमाना एकमा सम्यग्दर्शन साक्षेप अल्प-कमैता अने एकमां मिन्यादर्शन साक्षेप महाकर्मता घटती नथी पण वधामां महावर्मताज होय छै. तथी 'एकेन्द्रियादि निवाय' कह्युं छै.

चिट्टनि, जत्थ ठिओ तं पडिसंघेदेति, जाव- वेमाणिए, नवरं पुढिविकाइए पुढिविकाइएसु उववजाति, पुढिविकाइयाउयं पिड-संवेपित, अन्ने य सं पुढिविकाइयाउए पुरओ कडे चिट्टनि, एवं जाव-मणुस्सो सट्टाणे उववाएअक्षो, परट्टाणे तहेव ।

- ७. [प्रव] दो भेते! असुरकुमारा एगंसि अमुरकुमाराघामंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना, तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे उज्जयं विउधिक्सामीति उज्जयं विउधिक्सामीति वंकं विउधिक्सामीति वंकं विउधिक्सामीति उज्जयं विउधिक्तामीति वंकं विउधिक्सामीति उज्जयं विउधिक्तामीति वंकं विउधिक्तामीति उज्जयं विउधिक्त, जं जहा इच्छिति णो तं तहा विउधिक्त से कहमेयं भेते! एवं ? [उव] गोयमा! असुरकुमारा देवा दुविहा एकत्ता, तं जहा-मायिमिच्छिदिद्विजवक्षणा य अमायिसम्मिद्दिश्चित्रविष्ठणा य । तत्थ णं जे से मायिमिच्छिदिद्विजवक्षण असुरकुमारे देवे से णं उज्जयं विउधिक्सामीति वंकं विउधित, जाव-णो तं तहा विउधिक्, तत्थ णं जे से अमायिसम्मिदिद्विजववन्नए असुरकुमारे देवे से उज्जयं विउधिक्सामीति वंकं विउधित, जाव-णो तं तहा विउधिक्, तत्थ णं जे से अमायिसम्मिदिद्विजववन्नए असुरकुमारे देवे से उज्जयं विउधिक्सा-भीति जाव-तं तहा विउधिक्ष ।
- ८. [प्र॰] दो भंते ! नागकुमारा॰ ? [उ॰] एवं चेव । एवं जाव-थणियकुमारा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं चेव । 'सेवं मंते ! सेवं भंते' ! ति ।

## अट्टारसमे सए पंचमो उद्देशो समत्तो ।

ज्यां उत्पन्न धवाने योग्य छे, तेनुं आयुप उदयाभिमुख करे छे अने ज्यां रहेछो छे तेनुं आयुप अनुभवे छे. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको मुधी जाणवुं. विशेष ए के, जे पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकमां ज उत्पन्न धवाने योग्य छे ते पृथिवीकायिकनुं आयुष अनुभवे छे अने वीजुं पृथिवीकायिकनुं आयुष उदयाभिमुख करे छे. एम यावत्—मनुष्यो मुधी खस्थानमां उत्पाद संबंधे कहेवुं. परस्थानमां उत्पाद संबंधे पण पूर्व प्रकारे कहेवुं.

देवोनी इष्ट अने अनिष्ट विकुर्वणाः

- ७. [प्र०] हे भगवन् ! एक असुरकुमारावासमा वे असुरकुमार असुरकुमार देवपणे उत्पन्न थाय, तेमाथी एक असुरकुमार देव ऋजु— सरल रूप विकुर्ववा धारे तो ने ऋजु विकुर्वा शके छे अने वांकुं रूप विकुर्ववा धारे तो ने बांकुं विकुर्वा शके छे; जेवा प्रकारने अने जेवुं रूप विकुर्ववा शक्त है स्वप विकुर्ववा शक्त है छे अने एक असुरकुमार देव ऋजु विकुर्ववा धारे तो ते वांकुं रूप विकुर्वा शक्त छे अने जेवुं रूप विकुर्ववा थारे तो ते ऋजुरूप विकुर्वा शक्त छे अने एक असुरकुमार देव ऋजु विकुर्ववा धारे तो ते वांकुं रूप विकुर्वा शक्त अने तेवुं रूप विकुर्वा शक्त है भगवन् ! तेनुं शुं कारण ! [उ०] हे गीनम ! असुरकुमार देवो वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—मायी मिध्यादिष्ट उत्पन थयेला अने अमार्या सम्यग्दिष्ट उत्पन्न थयेला तेमां जे "मार्या मिध्यादिष्ट उत्पन्न थयेला अने अमार्या सम्यग्दिष्ट असुरकुमार देव छे ते ऋजुरूप विकुर्ववा धारे तो बांकुं करे छे, यावत्—जेवुं रूप विकुर्ववा धारे छे नेवुं रूप विकुर्वा शक्त छे.
- ८. [प्र॰] हे भगवन् ! वे नागकुमारो-इत्यादि प्रश्न अने उत्तर पूर्व प्रमाणे जाणवा. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. वानव्यंतरो, ज्योतिपिको अने वैमानिको संबंधे पण एमज जाणवुं. हि भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे'.

#### अढारमा शतकमां पंचम उद्देशक समाप्तः

## छद्रओ उद्देसी.

१. [प्र॰] काणियगुले णं भंते ! कतिवश्चे, किनगंधे, किनगंधे, किनसे, किनकासे पण्णले ? [उ॰] गोयमा ! पत्थ णं दो नया भवंति, तं जहा–निच्छदयनए य वावहारियनए य । वावहारियनयस्स गोड्डे काणियगुले, नेच्छदयनयस्स पंचवन्ने दुगंधे पंचरसे अट्रकासे पन्नते ।

#### षष्ट उद्देशक.

गोळ वर्गरे बादरस्य: स्थना वर्णादि. १. [प्र०] हे भगवन्! फाणिन—प्रवाही गोळ केटला वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शवाळो होय छे! [उ०] हे गौतम ! आहं नैश्व-यिक अने न्यावहारिक ए वे नयो विवक्षित छे, व्यावहारिक नयनी अपेक्षाए फाणित गोळ मधुर रसवाळो (गळ्यो) कह्यो छे, अने नैश्व-यिक नयनी अपेक्षाए पांच वर्ण, वे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्शवाळो छे.

<sup>ं</sup> केटलाक देवो पोतानी इच्छा प्रमाणे ऋजु के वक रूपो विकृषी शके छे अने केटलाक देवो पोतानी इच्छा मुजब रूपो विकृषी शकता वसी, तेवुं कारण क्रमशः आर्जवता अने सम्यग्दर्शननिमिक्तक बांधेलुं तीव रसवालुं वैकियनम्म कर्म अने मायामिध्यादर्शननिमिक्तक बांधेलुं मन्दरसवालुं वैकियनम्म कर्म छे. तेबी एम कल्लुं छे के अमायी सम्यग्दिष्ट देवां इच्छा मुजब रूगो विकृषी शके छे, अने मायी मिथ्यादिष्ट देव इच्छा मुजब विकृषी शकतो नबी, एण इच्छाविरुद्ध हुपो विकृषे छे'.

- २. [प्रव] ममरे णं भंते ! कतिवक्षे ० पुच्छा । [उ ०] गोयमा ! एत्य णं दो नया भवंति, तं जहा निच्छर्यनए य बाबहारियनए य । वाबहारियनयस्स कालए भमरे, नेच्छर्यनयस्स पंचवक्षे, जाय अटुफासे पन्नते ।
- ३. [प्र०] सुयपिच्छे णं मंते ! कतिवक्षे० ? [उ०] पवं चेव, नवरं वावहारियनयस्स नीलए सुयपिच्छे, नेच्छइयन-स्वस्स पंचवणो, सेसं तं चेय । पवं एएणं अभिलावेणं लोहिया मंजिट्टिया, पीतिया द्वालिहा, सुक्किल्लए संखे, सुव्भिगंधे कोट्टे, दुव्भिगंधे मयगसरीरे, तिसे निवे, कडुया सुंठी, कसाए कविट्टे, अंदा अंविलिया, महुरे खंडे, कक्खडे वहरे, मउए नवणीए, गरुए अए, लहुए उलुयपसे, सीए दिमे, उसिणे अगणिकाए, णिद्धे तेहे ।
- ४. [प्र०] छारिया णं भंते !-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पत्थ दो नया भवंति, तं जहा-निच्छश्यनए य ववहारियनए य, ववहारियनपस्स जुक्खा छारिया, नेच्छश्यनयस्स पंचवन्ना, जाय-अटुफासा पन्नता ।
- ५. [प्र॰] परमाणुपोग्गले णं भंते ! कतिवन्ने, जाव-कतिकासे पन्नसे ? [उ॰] गोयमा ! एगवन्ने, एगरसे, दुकासे पन्नसे ।
- ६. [प्र०] तुपप्सिए णं मंते ! खंधे कितवन्न-पुच्छा । [उ०] गोयमा! सिय प्रगवन्ने, सिय दुवन्ने, सिय प्रगांधे, सिय दुगंधे, सिय प्रगरसे, सिय दुरसे, सिय दुक्तासे, सिय तिकासे, सिय चउकासे पन्नचे। पवं तिपप्सिए वि, नवरं सिय प्रगवन्ने, सिय दुवन्ने, सिय तिवन्ने। एवं रसेसु वि, सेसं जहा दुपप्सियस्स। एवं चउपप्सिए वि, नवरं सिय प्रगवन्ने, जाव-सिय पंचवन्ने, जाव-सिय पंचवन्ने, पवं रसेसु वि, संसं तं चेव। एवं पंचपप्सिए वि, नवरं सिय प्रगवन्ने, जाव-सिय पंचवन्ने, पवं रसेसु वि, गंधकासा तहेव। जहा पंचपप्सिओ एवं जाव-असंखंजापप्सिओ।
  - ७. [प्र०] सुहुमपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए संधे कतिवक्षे ? [उ०] जहा पंचपपसिए तहेव निरवसेसं ।
- २. [प्र॰] हे भगवन् ! भ्रमर केटला वर्णवाळी छे--इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! अहि व्यावहारिक अने नैश्चियक ए वे नयो छे, व्यावहारिकनयनी दृष्टियी भ्रमर काळो छे, अने नैश्चियकनयनी दृष्टियी भ्रमर पाच वर्ण, वे गंध, पाच रस अने आठ स्पर्शवाळो छे.

भ्रमरना वर्णादि-

३. [प्र०] हे भगवन् ! पोपटनी पांस केटला वर्णवाळी छे—इस्यादि ग्रश्न अने उत्तर पूर्व प्रमाणे जाणवी. परन्तु व्यावहारिक नयनी अपेक्षाए पोपटनी पांस लीली छे अने नैश्वयिक नयनी अपेक्षाए पांच वर्णवाळी—इस्यादि पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवी. एम ए पाठ बहे राती मजीठ, पिळी हळदर, घोळो शंख, सुगंधा बुष्ण—पटवास, दुर्गंधा मडदुं, निक्त—कड़यो छीमडो, कटुक—तीखी मुंठ, तर्ह कोठुं, खाटी आमली, मधुर—गळी खांड, कर्कश वज्र, मृदु—सुवाळु माखण, भारे छोढुं, हळवु उल्लक्षण नवोरडीनुं पांदडुं, ठंडो हिम, उष्ण अग्निकाय, अने स्मिग्ध तेल विषे पण जाणवुं.

पोपटनी पांखना वर्णादिः

- ४. [प्र०] हे भगवन्! गस्त केटल वर्णवाली होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! अहि नश्चियक अने व्यावकारेक ए वे नयो छे, तेमां व्यावहारिक नयनी अपेक्षाए राख छखी—रुक्षस्पर्भवाली छे, अने निश्चयनवर्गा अपेक्षाए राख पांच वर्णवाली, यावत्–आठ स्पर्शवाली छे.
- प. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुदगल केटला वर्णवाळो, यावत्—केटला स्पर्शवाळो होय छे ! [उ०] हे गौतम ! एकवर्णवाळो, परमाणुना वर्णाक्षः एकगंधवाळो, एकरसवाळो अने बे स्पर्शवाळो होय छे.
- ६. [प्र०] हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध केटला वर्णवाळी—उत्सादि प्रथा. [उ०] हे गीतम ! कदाच एक वर्णवाळो, कदाच वे वर्णवाळो, कदाच एक गंधवाळो कदाच वे गंधवाळो, कदाच एक रसवाळो कटाच वे रसवाळो, अने कदाच वे स्पर्शवाळो, कदाच प्रण स्पर्शवाळो, अने वदाच चार स्पर्शवाळो पण होय छे. ए प्रमाणे जिप्रदेशिक स्कंध पण जाणवो, विशेष ए के ते कराच एक वर्णवाळो, कदाच वे वर्णवाळो अने कदाच प्रण वर्णवाळो होय, एम रसरांवंधे पण ए प्रमाणे यावत्—त्रण रसवाळो होय. वार्का वर्धे द्विप्रोणिक स्कंधनी पेठे जाणवं. एम चतुष्प्रदेशिक स्कंध विषे पण जाणवं. विशेष ए के, ते कदाच एक वर्णवाळो, यावत्—कदाच चार वर्णवाळो पण होय. रस संबंधे पण एम ज जाणवं. अने बार्का वर्धे पूर्विक रीते समजवं. ए रीत पंचप्रदेशिक स्कंधने थिये पण समजवं. विशेष ए के, ते कदाच एक वर्णवाळो, यावत्—कदाच पांच वर्णवाळो पण होय, ए प्रमाणे रसने विषे पण जाणवं. गंध अने रपर्श पूर्ववत् जाणवा. जेम पंचप्रदेशिक स्कंध संबंधे कहां, तेम यावत्—असंस्थातप्रदेशिक स्कंध संबंधे पण कहेवुं.

डिप्रदेशिक स्कन्ध.

विष्ठदक्षिकादि स्वत्योः

७. [प्र॰] हे मगवन् ! सूक्ष्मपरिणामवाळो अनंतप्रदेशिक स्कंध केटला वर्णवाळो होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] पंचप्रदेशिक स्कं-धनी पेठे वधुं कहेर्त.

अन-तप्रदेशिक स्कन्थ. ८. [४०] वाद्रपरिणए णं मंते ! अणंतपण्सिए खंधे कितवक्षे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय एगवजे, जाव-सिव पंचवक्षे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, जाव-सिय पंचरसे, सिय चउफासे, जाव-सिय अटुफासे पक्षते । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! ति ।

#### अद्वारसमे सए छट्टओ उद्देसी समत्ती ।

८. [प्र०]—हे भगवन् ! बादर—स्यूलपरिणामवाळो अनंतप्रदेशिकस्कंघ, केटला वर्णवाळो होय—इस्रादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ने कदाच एक वर्णवाळो, यावत्—कदाच पांच वर्णवाळो, कदाच एक गंधवाळो, कदाच वे गंधवाळो, कदाच एक रसवाळो, यावत्— कदाच पाच रसवाळो अने कदाच चार स्पर्शवाळो, कदाच पांच स्पर्शवाळो, यावत्—कदा च आठ स्पर्शवाळो पण होय. हे भगवन् ! ते एमज छे .

#### अढारमा शतकमां पष्ट उद्देशक समाप्त.

## सत्तमो उद्देसो।

- १. [प्रव] रायिगढे जाव-पर्व वयासी-अञ्चडित्यया णं भंते! एत्रमाइपखंति, जाव-पर्व्वेति-'एवं खलु केवली जक्खा-एसेणं आतिट्ठे समाणे आहश्च दो भासाओ भासति, तं जहा-मोसं वा, सम्बामोसं वा, से कहमेयं भंते! एवं १ [उ०] गोयमा! जण्णं ते अग्नजित्यया जाव-जे ते एवमाहंसु मिष्छं ते एवमाहंसुः अहं पुण गोयमा! एवमाइक्जामि ४-नो खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्सिति, नो खलु केवली जक्खाएसेणं आतिट्ठे समाणे आहम्ब दो भासाओ भासति, तं जहा-मोसं वा सम्बामोसं वा, केवली णं असावजाओ अपरोवधाइयाओ आहम्ब दो भासाओ भासति, तं जहा-सम्बं वा असम्बामोसं वा।
- २. [प्र॰] कतिविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ? [उ॰] गोयमा ! तिविहे उवही पन्नत्ते, तं जहा-कम्मोवही, सरीरो-वही, वाहिरभंडमत्तोवगरणोवही ।
- ३. [प्र०] नेरहयाणं भंते !-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहे उवही पश्चले, तं जहा-कम्मोवही य सरीरोवही य, सेसाणं तिविहे उवही एगिंदियवज्ञाणं जाव-वेमाणियाणं । एगिंदियाणं दुविहे उवही पश्चले, तं जहा-कम्मोवही य सरीरोवही य ।
- ४. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! उवही पन्नते ? [उ०] गोयमा ! तिबिहे उवही पन्नते, तंत्रहा—सिचित्ते, अवित्ते, मीसए, एवं नेरह्याण वि, एवं निरवसेसं जाव∽वेमाणियाणं ।

## सप्तम उद्देशक.

यक्षाविष्ट केवली सः त्य के असत्य बोने ते संबन्धे अन्यतीर्थिकत् अन्तम्यः १. [प्र०] राजगृह नगरमां भगवान् गीतम यायत—आ प्रमाण योज्या के हे भगवन् ! अन्यतीर्थिको आ प्रमाणे कहे छे, यावत्—प्रकृषे छे के, ए प्रमाणे खरेखर केवली यक्षना आवेशयी आविष्ट थईने कदाच ने भाषा नोले छे, ते आ प्रमाणे-पृषाभाषा अने सख-मृषा—गिश्र भाषा.' तो हे भगवन् ! ए प्रमाणे केम होइ शके ! [उ०] हे गीतम ! जे अन्यतीर्थिकोए यावत्—एम जे कहुं छे, तेओए ते असत्य कहुं छे. हे गीतम ! हुं एम कहुं छुं, यावत्—प्रकृषुं छुं के, ए प्रमाणे खरेखर केवलज्ञानी यक्षना आवेशयी आविष्ट यता नथी, अने यक्षना आवेशयी आविष्ट यर्दन केवली वे भाषा—अमत्य अने सत्यासत्य-मिश्रभाषा नोलता पण नथी. केवली तो पापन्यापार विनानी अने बीजानो उपधात न करे तेवी वे भाषा कदाच नोले छे. ते वे भाषाओं आ प्रमाणे, सत्य अने असत्यामृषा—सत्य पण नहि अने असत्य पण नहि एवी भाषा.

उपधिना त्रण प्रकारः

- २. [प्र०] हे भगवन् ! उपधि केटला प्रकारनो कह्यो छं ! [उ०] हे गौतम ! \*उपधि त्रण प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे⊸ १ कर्मोपधि, २ झरीरोपधि, ३ बाह्यभांडमात्रोधकरणोपधि.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! नर्रायकोने केटल प्रकारनो उपि कह्यो छे ? [उ०] हे गीतम! तेओने बे प्रकारनो उपि कह्यो छे, ते आ प्रमाणे- कर्मस्य उपिय अने शरीरस्य उपिय. एकेदिय जीयो मिनाय बधा जीयोने यावत्-वैमानिको सुधी प्रणे प्रकारनो उपिय होय छे. एकेदिय जीयोने कर्मरूप अने शरीरस्य एम वे प्रकारनो उपिय होय हो.

चपधिना बीजा त्रण प्रकार, 8. [प्र०] हे भगवन्! उपि केटल प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गातम ! उपि त्रण प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे⊸१ सचित्त, २ अचित्त अने ३ मिश्र—सचित्ताचित्त. ए प्रमाणे विरिष्यकोथी मांडी यावत्–वैमानिको सुधी (चोवीस दंडकने आश्रयी) त्रणे प्रकारनो उपि जाणवो.

२ के जीवनानिर्वाहमा उपयोगी वारीर वश्चादिन उपधि कहें थे, तेना वे प्रकार छे-आन्तर अने वाह्य. कर्म अने शरीर आन्तर उपि छे अने वाह्य वस्तुओ बाह्य उपि छे.

४ 1 नैरुयिकोशी गांडी वैमानिक सुधी चोवीसे दंडके त्रण प्रकारनो उपधि जाणवो. तेमां नारकोने सचित्त उपधि दारीर, अचित्त उपधि उत्पक्ति-स्थान अने श्वासीन ट्रामादि युक्त सचेतनाचेतनरूप मिध उपधि कहेवाय छे-टीका.

- ५. [प्रo] कतिविद्दे णं मंते ! परिग्गद्दे पद्मते ? [उ०] गोयमा ! तिविद्दे परिग्गद्दे पद्मते, तं जदा−१ कम्मपरिग्गद्दे, 🎘 सरीरपरिग्महे, ३ बाहिरगभंडमचोबगरणपरिग्महे ।
  - ह. [so] नेरह्याणं संते !o [so] एवं जहा उवहिणा दो दंडगा मणिया तहा परिग्गतेण वि दो दंडगा माणियद्या ।
- o. [प्रo] कहिबढ़े जं अंते ! पणिहाजे पश्चते ? [उo] गोयमा ! तिविहे पणिहाजे पश्चते, तं जहा-मजपणिहाजे, वह-विविद्वाणे, कायपणिहाणे।
  - ८. [प्र०] नेरच्याणं भंते ! कर्रविहे पणिहाणे पन्नते ! [उ०] एवं चेव, एवं जाव-धणियकुमाराणं ।
  - ९. [प्र०] पुढिविकाइयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगे कायपणिहाणे पश्चते । एवं जाय-वणस्सद्काद्याणं ।
- १०. [प्र०] बेइंदियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहे पणिहाणे पन्नत्ते, तं जहा-वर्षणिहाणे य कायपणिहाणे य, एवं जाव-चउरिदियाणं, संसाणं तिविद्दे वि जाव-वेमाणियाणं ।
- ११. [प्र०] कतिविहे णं मंते! दुर्पणहाणे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिविहे दुर्पणिहाणे पन्नत्ते, नंजहा-मणदुष्पणि-हाणे ः, जहेब पणिहाणेणं दंडगो भणिओ तहेच दुप्पणिहाणेण वि भाणियद्यो ।
- १२. [प्र०] कतिविद्दे नं भंते ! सुष्पणिहाने पप्तते ? [उ०] गोयमा ! तिविद्दं सुष्पणिहाने पप्तते, तंजहा-मनसुष्प-णिहाणे, वरसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे।
- १३. वि०] मणुस्साणं भंते ! कहविहे सुप्पणिहाणे पश्चते ? [उ०] पयं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! चि जाव-विहरति । तए णं समणे भगवं महावीरे जाव-बहिया जणवयविहारं बिहरह ।
- ५. [प्रo] हे भगवन् ! \*परिप्रह केटला प्रकारनो कह्यो छै ! [उ o ] हे गाँतम !ारिप्रह त्रण प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे— परिष्रहवा शक्कर १ कर्मपरिग्रह, २ शरीरपरिग्रह अने ३ बाह्य बल्लपात्रादि उपकरणन्दप परिप्रह.
- ६. [प्रo] हे भगवन्! नर्रायकोने केटला प्रवारनो परिग्रह होय हे ? [उ०] जेम उपधिसंबंधे वे दंडक कह्या तेम परिग्रह-विषे पण बे दंडक कहेवा.
- ७. [प्रo] हे भगवन् ! प्रिणियान केटला प्रकारनुं कह्यं छे ? [उ०] हे गीतम ! प्रिणियान त्रण प्रकारनुं कह्यं छे, ते आ प्रमाणे— प्रिणियानक सकरः १ मनप्रणिधान, २ वचनप्रणिधान अने ३ कायप्रणिधान.
- ८. प्रिली हे भगवन् ! नेरियकोने केटला प्रकारनं प्रणियान होय छे ? [उल] उपर कहा। प्रमाणे जाणवं. एम यावत्-स्तनित-कुमारो सुधी समजवुं.
- ९. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकाथिक संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! तेओने एक कागप्रणिधान होय छे, ए प्रमाणे यावत्— यनस्पतिकायिक जीवो सुधी जाणुर्वे.
- १०. [प्र○] हे भगवन् ! बेइन्द्रिय जीव संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओने बे प्रकारनं प्रणिधान होय छे. ते आ प्रमाणे⊸वच-नप्रणिधान अने कायप्रणिधान. ए प्रमाणे यावत्—चर्जारिदय जीयो सुधी जाणवुं. वाकी बधा जीवोने यावत्—वंगानिको सुधी त्रणे प्रका-रनुं प्रणिधान होय छे.
- ११. [प्र०] हे भगवन् ! दुष्प्रणिधान केटला प्रकार्नु कहाँ छे ! [उ०] हे गौतम ! दुष्प्रणिधान त्रण प्रकारनुं कहाँ छे, ते आ दुष्प्रणिश्च नगर प्रकार. प्रमाणे—मनदृष्प्रणिधान, वचनदुष्प्रणिधान अने कायदुष्प्रणिधान, जेम प्रणिधान विषे दंटक कहाो, तेम दुष्प्रणिधान विषे पण कहेची.
- १२. [प्र०] हे भगवन् ! सुप्रणिधान केटला प्रकारनुं छे ? [उ०] हे गौतम ! सुप्रणिधान त्रण प्रकारनुं छे, ते आ प्रमाणे–मन-तुष्रविधान-सुप्रणिधान, बचनसुप्रणिधान अने कायसुप्रणिधान.
- १३. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्योमे केटला प्रकारतुं सुप्रणिधान होय छे ? [उ०] त्रणे प्रकारतुं सुप्रणिधान होय छे. अने ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुघी जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' एम कही पूज्य गौतम स्वामी यावत् -विटरे छे. स्तार पछी श्रमण भगवंत महावीर यावत्-बहारना देशोमां विहरे छे.
- ५ \* उपिषु अने परिप्रहमां मेद एटलो छे के जीवननिर्वाहमां उपकारक कमें, शरीर अने बखादि उपिष्य इंहेषाय छे अने तेज समन्यदुर्धियी गृहीत थाय त्यारे ते परिष्रह कहेवाय छे.—टीका.
  - ७ विक्षेड्रिण प्रकारना निश्चित आलंबनमा मन, वचन अने काययोगने स्थिर करवा ते प्रणिधान.

१४. तेणं कालेणं तेणं समपणं रायगिहे नामं नगरे। गुणसिलप चेरप। यद्मभो। जाव-पुदविसिलापहुणो। तस्स णं गुणसिलस्स चेर्यस्स अदूरसामंते वहवे अन्नजित्या परिवसंति, तं जहा-कालोवायी, सेलोवायी, पवं जहा सन्तम-स्वप अन्नजित्यउद्देसए जाव-से कहमेयं मन्ने पवं ? तन्य णं रायगिहे नगरे मदुप नामं समणोवासए परिवसित, अहे, जाव-अपरिभूप, अभिगय जाव-विहरित। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कदायि पुषाणुपृष्ठं चरमाणे जाव-समोसहे, परिसा जाव-पज्जवासित। तए णं मदुए समणोवासए इमीसे कहाए लखट्टे समाणे हृदुनुह जाव-हियए ण्हाए जाव-सरीरे सयाओ गिहाओ पिनेनिक्समित, स० २ पिडिनिक्सिमत्ता पादविहारचारेणं रायगिहं नगरं जाव-निग्गच्छित, निग्ग-चिछत्ता तेसि अन्नजित्याणं अदूरसामंतेणं वीयीवयित। तए णं ते अन्नजित्यया महुयं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीयीवयमाणं पासंति, पासित्ता अन्नमन्नं सहावेति, अन्नमन्नं सहावेत्ता एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुष्पिया! अमहं इमा कहा अविजयपकडा, हमं च णं महुप समणोवासए अमहं अदूरसामंतेणं वीद्यवर, तं सेयं खलु देवाणुष्पिया! अमहं महुयं समणोवासयं पयमहं पुच्छित्तए'ति कहु अन्नमन्नस्स अंतियं पयमहं पिडसुणेति, अन्नमन्नस्स० २ पिडसुणेता जेणेव महुप समणोवासयं पयमहं पुच्छत्तर, उवागच्छित्ता महुयं समणोवासयं पयं वहासी-

१५. एवं सालु महुया ! तव घम्मायरिष धम्मोवदेसए समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाये पत्रवेह—जहा सत्तमे सप अन्नविद्यादेसण, जाव—से कहमेयं महुया ! एवं ? तए णं से महुए समणोवासए ते अन्नविद्याप्त एवं वयासी—'जित कजं कज्जिति जाणामो पासामो, अहे कज्जं न कज्जिति न जाणामो न पासामो । तए णं से अन्नविद्या महुयं समणोवासयं एवं वयासी—'केस णं तुमं महुया ! समणोवासगाणं भविस, जे णं तुमं पयमहं न जाणिस न पासिस ? ?

अन्यवीधिको अने अदुकश्रमणोपासकः १४. ते काले ते समये "राजगृह नामे नगर हतुं. गुणसिलक नामे चेस्य हतुं. वर्णक. यावत्-पृथिवाशिलपृष्ट हतो. ते गुणसिलक चैस्यनी आसपास घणा अन्यतीर्थिको रहेता हता. ते आ प्रमाणे—ांकालोदायी, शैलोदायी—इस्यादि सप्तम शतकना अन्यतीर्थिक उदेशकमां कहा। प्रमाणे यावत्—'ए वात एम केम मानी शकाय' त्यां सुधी कहेतुं. हवे ते राजगृह नगरमां आद्य—धनिक यावत्—कोइथी पराभव न पामे तेवो अने जीवादि तस्त्रोनो जाणकार, महुक नामे श्रमणोपासक—श्रावक रहेतो हतो. त्यार पछी अहिं अन्य कोइ एक दिवसे अनुक्रमे विहार करता, यावत्—श्रमण भगवंत महावीर समोसर्या. पर्षदा यावत्—पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीर आव्यानी आ वात सांमदी, हृष्ट अने संतुष्ट हृदयवाळो थयेलो महुक श्रमणोपासक, स्नान करी यावत्—शरीरने अलंकृत करी पोताना घरथी बहार नीकळी पगे चाली राजगृह नगरनी विद्याय थईने ते अन्यतीर्थिकोनी बहू दूर नहि तेम वहु पासे नहि एवी रीते जाय छे. त्यारे वे अन्यतीर्थिकोए ते महक श्रमणोपासकने पोतानी पासे थईने जतो जोई, परस्पर एक बीजाने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं—'हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर आपणने आ वात किर्लंग विदित छे, अने आ महुक श्रमणोपासक आपणी पासे थईने जाय छे, तो हे देवानुप्रियो ! आपणे ते वात महुक श्रमणोपासकने पूछवी योग्य छे.' एम विचारी परस्पर ते बात कबूल करी ज्यां महुक श्रमणोपासक छे, त्यां जईने ते अन्यतीर्थिकोए ते महुक श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं—

अन्यतीर्विकोनो अस्तिकायसंबन्धे अबुक श्रावकने प्रश्नः

१५. हे मदुक ! ए प्रमाणे खरेग्बर तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्र पांच अस्तिकाय प्ररूपे छे-इत्यादि सातमा शतकना प्रभन्यतीर्थिक उद्देशकमां कह्या प्रमाणे वधुं कहेबुं. यावत्-हे मदुक ! एम केवी रीते मानी शकाय ! त्यार पछी ते मदुक श्रमणो-

१० \* राजगृह नगरमा जीवाजीवादि तत्त्वनो ज्ञाता महुक गांभ श्रमणोपासक रहेतो हतो. भगवान् महावीर अनुक्रमे विहार करता आहे आवी गुणसिल वैद्यमां समोरायी. भगवंत आव्यानो च्लांत सांभळी महुक श्रावक प्रसन्ध अने संतुष्ट थयो अने भगवंतने वंदन करवा घरषी नीकळ्यो. ते गुणसिल वैद्यमी आरापारा कालोदायी वगेरे घणा अन्यतीथिको रहेता हता. तेओए महुक श्रायकने भगवंतने वंदन करवा पासे थईने जतो जोयों अने तेओए तेने हभी राखी पृत्युं के तमारा धर्मो देशक श्रमण ज्ञातपुत्र धर्मास्तिकायादि गांच आंन्तकायनी प्रस्त्यणा करे छे, ते केबी रीते मानी शकाय १ तुं छुं धर्मास्तिकायादिने जाणे छे १ महुके उत्तर आप्यों के जो कोई वक्त कार्य करे तो आपणे तेने कार्यहारा जाणी हाकीए, पण ते कांद्र गण कार्य न करे, निष्क्रय होय तो आपणे तेने जाणी हाकता नथी, तेम जोई शकता गण नथी. ते सांभळी अन्यतीधिकोए उपालंभपूर्वक कह्युं के तुं श्रमणोपासक छे अने तने धर्मास्तिकायादिनी पण खबर नथी १ त्यार पछी महुके ते अन्यतीधिकोने नीचे प्रमाण उत्तर आप्यों—यायु नाय छे ए बरोबर छे १ तेने तमे जाणी के जोई हाको छो १ गन्धवाळा पुद्रत्वो छे ए सत्य छे १ तेने तमे जुवो छो १ समुद्रने पार अने देवलोकमा रूपो खरेखर छ १ तेने तमे जाणो छो १ ते अन्यतीधिकोण ना कही एटले महुके तेओने कहुं के छद्यस्थ महुष्य जे न जाणे के न देखे ते बचुं न होय तो आ दुनीयामां पणी वस्तुओनो अभाव थई जाय. माटे छत्तस्थि धर्मास्तिकायादि जाणी शकाता नथी तेथी तेनो अभाव निद्र न थाय एम कही भदुक श्रवके तेओने कहुं के हो महुक श्रवक भगवंत महावीरनी पासे गयो । ते वंदन नमस्कार करी पर्युपासना करवा लायो। त्यार बाद भगवान महावीरी तेने संबोधीने कह्युं के हे महुक १ तें अन्यतीधिकोने ठीक उत्तर आप्ये 'जे माणस विद्य के सामळ्या सिवाय अहरू, अङ्गात अर्थ, हेतु, प्रश्न के उत्तरने कहे छे ते अर्हतनी अने अर्हते कहेला धर्मनी आशातना करे छे, ते सामळी महुक श्रवक सामळ्या सिवाय अहरू, अङ्गात अर्थ, हेतु, प्रश्न अत्र उत्तरने कहे छे ते अर्हतनी अने अर्हते कहेला धर्मनी आशातना करे छे, ते सामळी महुक श्रवक विद्य पर्यों.

<sup>†</sup> भग० खं० ३ वा० ७ पृ० ३६.

<sup>🙏</sup> अहिं मूळ पाठमां 'सविउप्पकडा' बाब्दनो अर्थ 'अविद्वानोए कहेलो छे' एवो बीजो अर्थ टीकाकार करे छे.

१५ 🖁 भग॰ खं॰ ३ श॰ ७ उ॰ १० पू• ३६.

तए णं से महुए समणोवासए ते अन्नजिथए एवं वयासी—'अत्य णं माउसो! वाउयाए वाति' है हंता अत्य, 'तुन्ते णं आउसो! 'वाउयायस्य वायमाणस्स रूवं पासह' शो तिणहे समहे । अत्य णं आउसो! 'प्राणसहगया पोग्गला' है हंता अत्य, 'तुन्ते णं आउसो! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह' शो तिणहे समहे । अत्य णं आउसो! अरिणसहगयस्य अगणिकाये शे 'हंता अत्य । 'तुन्ते णं आउसो! अरिणसहगयस्य अगणिकायस्य रूवं पासह' शो तिणहे समहे । 'भत्यि णं आउसो! समुद्दस्य पारगयाई रूवाई' शे हंता अत्य 'तुन्ते णं आउसो! समुद्दस्य पारगयाई रूवाई' शे हंता अत्य 'तुन्ते णं आउसो! समुद्दस्य पारगयाई रूवाई' शे हंता अत्य 'तुन्ते णं आउसो! त्वाई पासह' शो तिणहे समहे । 'मत्यि णं आउसो! वेवलोगगयाई रूवाई' है हंता अत्य । 'तुन्ते णं आउसो! वेवलोगगयाई रूवाई' शहरा अन्य । 'तुन्ते णं आउसो! वेवलोगगयाई रूवाई पासह' शो तिणहे समहे । 'प्रवामेव आउसो! अहं वा तुन्ते वा अन्नो वा छउमत्यो जह जो जं न जाणह न पासह तं सवं न मवति, पयं भे सुवहुए लोए ण मविस्सती'ति कहु ते णं अन्नजियप एवं पडिहण्ड, एवं पडिहण्ड, पद्मे पडिहण्डिण अभिगमेणं जाव—पज्जवासति।

१६. 'महुया' ! दी समणे भगवं महावीरे महुयं समणोवासगं एवं वयासी—'सुटु णं महुया ! तुमं ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, साहु णं महुया ! तुमं ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, जे णं महुया ! अट्टं वा हे उं वा एसिणं वा वागरणं वा अन्नायं अदिटुं अस्सुनं अमयं अविण्णायं बहुजणमज्झे आघवेति पन्नवेति, जाव—उवदंसेति, से णं अरिहंताणं आसावणाए बहुति, अरिहंतपन्नसस्स धम्मस्स आसावणाए बहुति, केवलीणं आसावणाए वहुति, केवलिपन्नसस्स धम्मस्स आसावणाए वहुति, ते सुदु णं तुमं महुया ! ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं महुया ! जाव—एवं वयासी' । तए णं महुए समणोवासए समणेणं भगवया महावीरेणं एवं बुसे समाणे हटु—तुटुं समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसित, वंदिसा नमंसिता णह्या-सन्ने जाव—पज्ञवासह । तए णं समणे भगवं महावीरे महुयस्स समणोवासगस्स तीमे य जाव—परिसा एडिगया । तए णं

पासके ते अन्यतीर्थिकोने आ प्रमाणे कर्यु- 'जो कोइ (वस्तु ) कार्य करे तो आपणे तेने कार्यहारा जाणी शकीए के जोई शकीए. पण जो ते पोतानुं कार्य न करे तो आपणे तेने जाणी शकता नथी, तेम जोई शकता पण नथी.' त्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते मद्रुक अमणोपासकने आ प्रमाणे कर्युं 'हे मद्रुक! तुं आ केश्री अमणोपासक हो के जे तुं आ (पंचास्तिकायनी) बात जाणतो नथी अने जोतो नथी'!

लार पछी ते महक श्रमणोपासके ते अन्यतीर्थिकोने आ प्रमाणे कहां—िह आयुष्मन्! पवन वाय छे ए बरोबर छे ! हा, बरोबर छे, हे आयुष्मन्! तमे वाता एवा पवननुं रूप जुओ छो ! ना, ए वान यथार्थ नथी. अर्थात् अमे पवननुं रूप जोई शकता नथी. हे आयुष्मन्! गंवगुणवाळा पुद्गलो छे ! हा, छे. हे आयुष्मन्! ते गंधगुणवाळा पुद्गलोनुं रूप तमें जुओ छो ! ए अर्थ समर्थ नथी- अमे तेनुं रूप जोई शकता नथी. हे आयुष्मन्! सर्णाना काष्ट साथे अग्नि छे ! हा, छे. हे आयुष्मन्! ते अर्णाना काष्टमां रहेला अग्निनं रूप तमें जुओ छो ! ना, ए वात यथार्थ नथी. हे आयुष्मन्! समुद्रना पेले पार रहेलां रूपो (पदार्थो) छे ! हा, छे. हे आयुष्मन्! समुद्रने पेले पार रहेला रूपोने तमें जुओ छो ! ना, ए वात यथार्थ नथी. हे आयुष्मन्! देवलोकमां रहेला रूपो (पदार्थो) छे ! हा, छे. हे आयुष्मन्! देवलोकमा रहेला पदार्थोने तमे जुओ छो ! ना, ए वात समर्थ नथी. 'हे आयुष्मन्! ए प्रमाण हुं, तमे के बीजो कोह लग्नस्थ, जैने न जाणे के न देखे ते बधुं न होय तो (तमारा मानवा प्रमाणे) वणा लोकनो—घणी वस्तुओनो अभाव थरो'--एम कहीने ते महुके ते अन्यतीर्थिकोनो पराभव कर्यो—तेओने निहत्तर कर्या, एम निहत्तर करीने ते महुक अमणोपासके ज्या गुणसिल्क चैल छे अने व्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवीने पांच प्रकारना अभिगम वहे श्रमण भगवंत महावीरना पासे जईन यावत्—पर्युपासना करी.

१६. त्यार बाद 'हे मदुक'! एम एंबोबी अमण भगवंत महावीरे मदुक अमणोपासकने एम कहां के, हे मदुक! तें ते अन्यतीर्थिन कोने बरोबर कहां, हे मदुक! तें ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे ठीक उत्तर आप्यो, हे मदुक! जे कोइ जाण्या, देख्या के सामळ्या मियाय, कि कोइ अदृह, अश्रुत, असंमत के अधिज्ञात अर्थने, हेतुने, प्रश्न के उत्तरने प्रणा माणसोनी बच्चे कहे छे, जणांत्रे छे, यायत्-दर्शाय छे, ते अर्हेतोनी, अर्हेते कहेळा धर्मनी, केवळज्ञानीनी अने केवळीए कहेळा धर्मनी आशातना करे छे, माटे हे मद्रुक! तें ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे ठीक कहां छे, तें यावत्-ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे सारुं कहां छे.' ज्यारे अमण भगवंत महावीरे ते मद्रुक अमणोपासकोन एम कहां स्थारे ते हृद अने संतुष्ट धर्म अमण भगवंत महावीरने वंदन अने नमस्वार करी बहु दूर नहि तेम बहु नजीक नहि एवी रीते उमा रहीने यावत्-तेओनी पर्युपासना करी. त्यार पछी अमण भगवंत महावीरे ते महुक अमणोपासक अने ते पर्यदाने धर्मकथा कही,

महकनो प्रतिप्रक्र− झरा उत्तर- महुए समणोवासए समणस्य भगवओ महावीरस्य जाव-निसम्म हट्ट-तुट्टे पिसणाहं पुच्छति, प० २ पुच्छिता अहारं परियातिह, २० २ परियादिता उट्टाए उट्टेर, उ० २ उट्टेसा समणं मगवं महावीरं वंदति नमंसति, दिवसा नमंसिसः खाव-पडिगए।

- १७. [व०] 'मंते'िस भगवं गोयमे समणे भगवं महाबीरं बंदित नमंसित, बंदिसा नमंसिसा एवं वयासी-पम् णं मंते ! महुए समणोवासए देवाणुष्पियाणं अंतियं जाव-पद्यहत्तए ? [उ०] णो तिणहे समहे, एवं जहेव संखे तहेव अरुणामे जाव-अंतं काष्टिति ।
- १८. [प्र०] देवे णं मंते ! महहिए जाव-महेसक्खे रूवसहस्सं विउक्तिसा पभू अभ्रमभेणं सर्दि संगामं संगामिखप ! [उ०] हंता पभू ।
- १९. [प्र०] ताओ णं भंते ! बोंदीओ कि एनजीवफुडाओ अणेनजीवफुडाओ ? [उ०] गोयमा ! एनजीवफुडाओ, णो अणेनजीवफुडाओ ।
- २०. [प्र॰] ते णं भंते ! तासि णं वीदीणं अंतरा कि एगजीवपुडा अणेगजीवपुडा ?, [उ॰] गोयमा ! एगजीवपुडा, नो अणेगजीवपुडा ।
  - २१. [प्र०] पुरिसे णं मंते ! अंतरे णं हत्थेण वा० एवं जहा अट्टमसए तइए उद्देसए जाव-नो खलु तत्थ सत्थं कमित ।
  - २२. [प्र॰] अत्थि णं भंते ! देवासुराणं संगामे दे० २ ? [उ०] हंता अत्थि ।
- २३. [प्र॰] देवासुरेसु णं भंते ! संगामेसु वट्टमाणेसु किन्नं तेसिं देवाणं पहरणस्यणत्ताप परिणमित ? [उ॰] गोयमा ! अन्नं ते देवा तणं वा कट्टं वा पत्तं वा सक्तरं वा परामुसंति तं णं तेसिं देवाणं पहरणस्यणत्ताप परिणमित ।
- २४. [प्र॰] जहेच देवाणं तहेच असुरकुमाराणं? [उ॰] णो तिणट्टे समद्वे, असुरकुमाराणं देवाणं निष्यं विउच्चिया पहरणरयणा पञ्चता ।

यावत्—ते पर्पदा पाछी गई. पछी ते महुक श्रमणोपासके श्रमण भगवंत महावीर पासेथी यावत्—धर्मोपदेश सांभळी हृष्ट अने संतुष्ट यई प्रश्नो पूच्या, अर्थो जाण्या, अने त्यार बाद उभा थई श्रमण भगवंत महावीरने बांदी नमी यावत्—ते पाछो गयो.

१७. [प्र०] 'हे भगवन्'! एम कही भगवान् गैतिमे श्रमण भगवंत महावीरने वांद्री नमी आ प्रमाणे कह्युं के हे भगवन्! महुक श्रम-णोपासक आप देवानुप्रियनी पासे यावत्—प्रव्रच्या लेवा समर्थ छे! [उ०] हे गौतम! ए अर्थ समर्थ नथी--इत्यादि जेम \*शंख श्रमणोपासक संबन्धे कह्युं हतुं तेम यावत्—अरुणाभविमानमां देव तरीके उत्पन्न थई यावत्—सर्य दुःखोनो अन्त करशे.

देवोनुं वैक्रिय रूप करवानुं सामर्थः १८. [प्र०] हे भगवन् ! महार्द्धिक यावत्—मोटा सुखवाळो देव हजार रूपो विकुर्वी, परस्पर संप्राप करवा समर्थ छे ! [उ०] हा गौतम ! समर्थ छे.

वैकिय अरीरोनो जीव सामे संबन्धः

१९. [प्रo] हे भगवन् ! ते विकुर्वेटां शरीरो एक जीवनी साथे संबंधवाळां होय छे के अनेक जीव साथे संबंधवाळां होय छे ! [उo] हे गौतम ! ते वधां शरीरो एक जीव साथे संबन्धवाळां होय छे, पण अनेक जीव साथे संबंधवाळां होता नथी.

**ठेना परस्पर अनरनो** जीव साथे संदन्ध-

२०. [प्र०] हे भगवन् ! ते शरीरोना परस्पर अंतरो—बच्चेना भागो एक जीव वडे संबद्ध छे के अनेक जीव वडे संबद्ध छे ! [उ०] हे गौतम ! ते शरीरो बच्चेनां अंतरो एक जीव वडे संबद्ध छे पण अनेक जीव वडे संबद्ध नथी.

वेना परस्पर अंकरनो श्रकादियी हेद थाय के नहिं !

२१. [प्र०] हे भगवन्! कोइ पुरुष ने शरीरो बश्चेना आंतराओने पोताना हायवडे, पगवडे स्पर्श करतो यावत्⊸तीक्ष्ण शख्य बढे छेदतो कांइ पण पीडा उत्पन्न करी शके ९--इत्यादि <sup>†</sup>आठमा शतकन। त्रीजा उदेशकमां कह्या प्रमाणे यावत्⊸व्यां शख असर करी शके नहि' त्यां सुधी कहेबुं.

देवासुर संमाम,

- २२. [प्र०] हे भगवन् ! देव अने असुरोनो संप्राम थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! हा, थाय छे.
- २३. [प्रo] हे भगवन् ! ज्यारे देव अने असुरोनो संप्राप्त धतो होय त्यारे ते देवोने कई वस्तु शस्त्रक्षे परिणत थाय ! [उ०] हे गौतम ! तणरू छं, त्याबहुं, पांट हुं के कांकरो वगेरं जे कोइ वस्तुनो स्पर्श करे ते वस्तु ते देवोने शस्त्रक्षे परिणत धाय छे.
- २४. [प्र०] जेम देवोने कोई पण वस्तु रपर्शमात्रथी शखरूषे परिणत थाय छे तेम असुरोने पण थाय है [उ०] हे गीतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, पण असुरकुमार देवोने तो हमेशां विकुर्वेटा शखरतो होय छे.

१७ \* जुओ भग० श० १२ उ० १ पृ० २५६.

२१ 🕇 जुओ अग० खं० ३ पृ० ७८ सू० ७.

- २५. [प्र०] देवे णं मंते ! महहिए जाय-महेसक्खे पभू लवणसमुद्दं अणुपरियष्टिसा णं हद्यमागच्छित्तप ? [उ०]
- २६. [प्र०] देवे णं मंते! महहिए एवं धायरसंडं दीवं जाव-हंता प्रभू, एवं जाव-ह्यगवरं दीवं जाव-हंता प्रभू, ते णं परं वीतीवएजा, नो चेव णं अणुपरियहेजा।
- २७. [प्र॰] अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहन्नेणं एकेण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पंचहि वासस-यहि सबयंति ? [उ॰] इंता अत्थि ।
- २८. [प्रo] अत्थि णं मंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहन्नेणं एकेण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचिर्ध वासस-इस्सोहें खबयंति ? [उo] हंता अत्थि ।
- २९. [प्र॰] अत्थि णं मंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहश्रेणं पक्षेण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पंचिह वास-स्वयसहस्सेहि खबयंति ? [उ॰] हंता अत्थि ।
- ३०. [प्र०] कयरे णं भंते! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहकेण एकेण वा जाव-पंचिह वाससपिह खवयंति? कयरे णं भंते! ते देवा जाव-पंचिह वाससहस्सी खवयंति? कयरे णं भंते! ते देवा जाव-पंचिह वाससयसहस्सी खवयंति? कयरे णं भंते! ते देवा जाव-पंचिह वाससयसहस्सी खवयंति? [उ०] गोयमा! वाणमंतरा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससपणं खवयंति, असुरिदयिक्वया भवणवासी देवा अणंते कम्मंसे दोहि वाससपिह खवयंति, असुरकुमारा णं देवा अणंते कम्मंसे ती हिं वाससपिह खवयंति, गह-नक्वस-ताराक्ष्या जोइ-सिवा देवा अणंते कम्मंसे चर्चिह वाससपिह खवयंति, सोहम्मी- साणगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससहस्तेणं जाव-खवयंति, सणंकुमार-माहिदगा देवा अणंते कम्मंसे दोहि वाससहस्ते खवयंति, एवं एएणं अभिद्यावेणं बंगस्तेग-लंगा देवा अणंते कम्मंसे ती विवाससहस्ते खवयंति, महासुक-सहस्तारणा देवा अणंते चर्चिह वाससहस्ते खवयंति, महासुक-सहस्तारणा देवा अणंते चर्चिह वाससहस्ते खवयंति, हिट्टिमगेविक्वणा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्तेणं खवयंति, मिल्हमगेवेक्वणा देवा अणंते दोहि वासस्त्रस्ते खवयंति, हिट्टिमगेविक्वणा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्तेणं खवयंति, मिल्हमगेवेक्वणा देवा अणंते वासस्त्रस्ते कम्मंसे ति हिं वास० जाव-खवयंति, विजय-वेजयंत-जयंत-जयंत-जयंत-जयंति।

२५. [प्र०] हे भगवन् ! मोटी ऋद्भियाळो यावन्-मोटा सुम्बवाळो देव, ख्वणसमुद्रनी चोनरफ फरी शीप्र आववा समर्थ છે ? દ્વાંનુ गमनमामध्यं-[उ०] हा, समर्थ છે.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! मोटी ऋदिवाळो यायत्—देव धातिकाखंड द्वीपनी चारे तरफ फरी सीव्र आववा समर्थ छे ! [उ०] हा, समर्थ छे . [प्र०] ए प्रमाणे यावत्—रूचकवर द्वीप सुधी चोतरफ आंटो मारी सीव्र आववा समर्थ छे ! [उ०] हा, समर्थ छे . स्यार पछी आगळना द्वीप—समुद्र सुधी जाय, पण तेनी "चारे बालु फरे नहि.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एवा देवो छे के, जेओ अनंत (शुभप्रकृतिस्प) कर्माशोने जवन्यथी एकसो, बसो के त्रणसो वर्षे अने देवोना पुण्यकर्मना अक्तृष्टथी पांचसो वर्षे खपावे ! [उ०] हा, एवा देवो छे.

- २८. [प्र०] हे भगवन् ! एवा देवो छे के, जेओ अनंत कमाँशोने जघन्यथी एक हजार, बे हजार के त्रण हजार वर्षे अने उत्कृष्ट्यी पांच हजार वर्षे खपावे ! [उ०] हा, छे.
- २९. [प्र०] हे भगवन् ! एवा देवो छे, के जेओ अनंत कर्माशोने जघन्यथी एक लाख, वे लाख के त्रण लाख वरसे अने उन्हा-ष्ट्यी पांच लाख वरसे खपावे ! [उ०] हा, छे.
- ३०. [प्र०] हे भगवन् ! एवा कया देवो छे के जेओ अनंत कर्माशोने जघन्यथी एक सो वर्षे यावत्—पांचसो बरसे खपावे ? हे भगवन् ! एवा कया देवो छे के यावत्—पांच ढाख बरसे खपावे ? हे भगवन् ! एवा कया देवो छे के यावत्—पांच ढाख बरसे खपावे ? [उ०] हे गौतम ! बानव्यंतर देवो एकसो वर्षे अनंत कर्माशोने खरा क्यावे , असुरेन्द्र सिवायना भवनपासी देवो अनंत कर्माशोने बसो बरसे खपावे, असुरकुमार देवो अनंत कर्माशोने त्रणसो वर्षे खपावे, प्रह—नक्षत्र अने तारास्त्य ज्योतिषिक देवो अनंत कर्माशोने चारसो वरसे खपावे, असुरकुमार देवो अनंत कर्माशोने त्रणसो वर्षे खपावे, प्रह—नक्षत्र अने तारास्त्य ज्योतिषिक देवो अनंत कर्माशोने चारसो वरसे खपावे. सौधर्म अने ईशान कल्यना देवो अनंत कर्माशोने एक हजार वर्षे खपावे, एम ए सूत्रना पाठ अने अनंत कर्माशोने एक हजार वर्षे खपावे, सनत्कुमार अने माहेन्द्रना देवो अनंत कर्माशोने वे हजार वर्षे खपावे, एम ए सूत्रना पाठ अने महालोक अने खांतकना देवो त्रण हजार वर्षे, महाशुक्र अने सहस्रारना देवो चार हजार वर्षे, आनत—प्राणत अने आरण—अन्युतना देवो

२६ \* देवो प्रयोजनना अभावधी बोतरफ फरे नहिं एम संभवे छे—टीका.

अपराजियमा देवा अणंते चउहि वास० जाव—खवयंति, सद्यद्वसिद्धमा देवा अणंते कमांसे पंचिह वाससयसहस्सेहि खवयंति, एएणट्टेणं गोयमा ! ते देवा जे अणंते कमांसे जहन्नेणं एकेण वा दोटि या तीिह वा, उक्कोसेणं पंचिह वाससपिद खवयंति, एएणट्टेणं गोयमा ! ते देवा जाव—पंचिह वाससहस्सेहि खवयंति, एएणट्टेणं गोयमा ! ते देवा जाव—पंचिह वाससहस्सेहि खवयंति, एएणट्टेणं गोयमा ! ते देवा जाव—पंचिह वाससयसहस्सेहि खवयंति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! सिवं ।

## अद्वारसमसए सत्तमो उद्सो ममत्तो।

पाच हजार वर्षे, हेटला प्रैवेयकना देवो एक लाग वर्षे, बचला प्रेवेयकना देवो बे लाख वर्षे, उपरना प्रैवेयकना देवो त्रण लाख वर्षे, विजय, विजय,

#### अढारमा शतकमां सप्तम उद्देशक समाप्त.

## अटूमो उद्देसो.

- ? [प्र०] रायगिहे जाव-एवं क्यामी-अणगारस्स णं भंते ! भाविषण्यणो पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीय-माणस्स पायम्स अहे कुकुष्टपोते या वट्टापोते वा कुलिंगच्छाए वा परियावजेजा, तस्स णं भंते ! कि ईरियाविहया किरिया कज़इ, संपराइया किरिया कज़इ ? [उ०] गोयमा ! अणगारम्स णं भावियण्यणो जाव-तस्स णं ईरियाविहया किरिया कज़इ, नो संपराइया किरिया कज़इ । [प०] से केणट्टेणं भंते ! एवं बुख्द-जहा सत्तमसए संबुद्धदेसए जाव-अट्टो निक्सितो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! जाव-विहरति । तए णं समणे भगवं महावीरं गिर्धया जाव-विहरति ।
- २. तेणं कालेणं तेणं समपणं रायगिहे जाव-पुढिविसिलापट्टए, तस्स णं गुणसिलस्स चेद्दयस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति । तए णं समणे भगवं महावीरं जाव-समोसढे, जाव-परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समपणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्टे अंतेवासी इंद्रभृती नामं अणगारे जाव-उद्वंजाण् जाव-विहरद् । तए णं ते अन्नउत्थिया जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी-'तुज्झे णं अजो ! तिविद्दं तिविद्देणं अस्संजया जाव-एगंतवाला यावि भवह'।
  - ३. तए णं भगवं गोयमे अन्नउत्थिए एवं वयासी--'से केणं कारणेणं अज्ञो ! अम्हे तिविद्दे तिविद्देणं अस्संजया जाय-

## अप्टम उद्देशक.

देशांपधिव, वरीवध.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां भगवान् गाँतम यावत्—आ प्रमाण बोल्या के, हे भगवन्! आगळ अने बाजुए युग( धूसरा )प्रमाण भूमिने जोईन गमन करता भावितात्मा अनगारना एग नीचे कुकडीने बच्चे, वतकते बच्चे के कुलिंगच्छाय (कीडी जेबो मृक्ष जंतु) आवीने मरण पामे तो हे भगवन्! ते अनगारने छुं ऐर्यापिथकी किया छागे के सांपरायिकी किया छागे! [उ०] हे गाँतम! ते भावितात्मा अनगारने यावत्—ऐर्यापिथकी किया छागे, पण सांपरायिकी किया न छागे. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुयी कहो छो—इत्यादि प्रश्न अने उत्तर सातमा कैंगतकना संवत उद्देशकमां बाह्या प्रमाणे जाणवी. यावत्—अर्थनो निक्षेप—निगमन करवो. हि भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे. त्यार पर्छा श्रमण भगवंत महावीर बहारना देशोमां विहार करे छे.

अन्यती(यको अने नगवंत गीतमनो संवादः

- कन्यनीर्विकोः
- २. ते काळे, ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. यावत्-पृथिवीदिलापदृ हतो. ते गुणिसलक चैत्सनी आसपास घणा अन्यतीर्यिको रहेता हता. त्यां श्रमण भगवंत महावीर समोसर्या. यावत्-पर्पदा वांदीने पाठी गई. ते काळे, ते समये श्रमण भगवंत महावीरना मोटा शिष्य इन्द्रभूति नामे अनगार यावत्-टींचण उंचा गर्या संयमथी आत्माने भावित करता विहरे छे. त्यारे ते अन्यतीर्थिको ज्यां भगवंत गौतम छे त्यां आव्या, आर्याने भगवंत गौतमने आ प्रमाणे, वाह्यं-दि आर्यो ! तमे त्रिविध त्रिविध असंयत-संयमरिहत अने यावत्-एवांत बाल-विगितरिहत छो.'

दोत्तम.

३. त्यार पछी भगवंत गाँतमे ते अन्यतीर्थिकोने आ प्रमाण कहां — हि आर्थे! कया कारणयी अमे त्रिविध त्रिविध असंयत यावत् एकांत बाल छीए! ? त्यारे ते अन्यतीर्थिकोए भगवंत गाँतमने आ प्रमाण कहां- हि आर्थे! तमे गमन करतां जीयोने आक्रान्त करो छो—

१ \* जुओ भग० सं० ३ दा० ७ उ० १ पृ० २३.

सगंतवाला यावि भवामो'। तप णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी-'तुज्हो णं अज्ञो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेश्वेह, अभिहणह, जाव-उवह्वेह, तप णं तुज्हो पाणे पेश्वेमाणा जाव-उवह्वेमाणा तिविहंतिविहेणं जाव-एगंतवाला यावि भवह'।

- 3. तएणं भगवं गोयमे ते अञ्चातियए एवं वयासी—'नो छलु अज्ञो! अम्हे रीयं रीयमाणा पाणे पेक्नेमो, जाव— उच्ह्वेमो, अम्हे णं अज्ञो! रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च पहुच दिस्सा २ पदिस्सा २ वयामो, तए णं अम्हे विस्सा दिस्सा वयमाणा पदिस्सा पविस्सा वयमाणा णो पाणे पेक्षेमो, जाव णो उच्ह्वेमो, तए णं अम्हे पाणे अपेक्षेमाणा जाव—अणोह्षेमाणा तिबिहं तिचिहेणं जाव—एगंतपंडिया यावि भवामो, तुन्हे णं अज्ञो! अप्पणा चेष तिबिहं तिविहेणं जाव—एगंतबाला यावि भवह'।
- ५. तए णं ते अञ्चउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी—'केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव—भयामो'। तए णं मगवं गोयमे ते अञ्चउत्थिए एवं वयासी—तुन्हों णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेश्चेह, जाव—उवहवेह, तए णं तुन्हों पाणे पेश्चेमाणा जाव—उवहवेमाणा तिविहं जाव—एगंतवाला यावि भवह'। तए णं भगवं गोयमे ते अञ्चउत्थिए एवं पिडह- णर्, पिडहणिसा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छर, उवागच्छिसा समणं भगवं महावीरे वंदित नमंसित, वंदिसा नमंसिसा णश्चासन्ने जाव—पज्ज्वासित ।
- ६. 'गोयमा'दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—'सुट्टु णं तुमं गोयमा! ते अन्नउत्थिए एवं वदासी, साहु णं तुमं गोयमा! ते अन्नउत्थिए एवं वदासी, अत्थि णं गोयमा! ममं वहवे अंतेषासी समणा निग्गथा छउमत्था, जे णं नो पभू एयं वागरणं वागरेत्तप, जहा णं तुमं, तं सुट्टु णं तुमं गोयमा! ते अन्नउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं गोयमा! ते अन्नउत्थिए एवं वयासी। तए णं भगवं गोयम समणंणं भगवया महावीरेण एवं वुने समाणे हट्ट-तुट्टे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
- ७. [प्र०] छउमत्ये णं भंते ! मणूसे परमाणुपोग्गलं किं जाणित पासित, उदाहु न जाणित न पासित ? [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिए जाणित न पासित, अत्थेगतिए न जाणित न पासित ।

दबावो हो, मारो हो, यावत्—उपद्रव करो हो, माटे प्राणोने आक्रांत करता यावत्—उपद्रव करता तमे त्रिविध त्रिविधे संयमरहित अने एकांत बाट हो.'

अन्यतीर्थिको.

8. स्त्रारे भगवंत गीतमे ते अन्यर्ताधिकोने आ प्रमाण कहुं—हि आर्यो । अमे गमन करता प्राणोने कचरता नथी, यावत्—तेने पीडा करता नथी. पण अमे गमन करता काय, गंयमथोग अने [स्वरादि सिवाय ] गमनने आश्रयी जोइ जोइने, वारीकीथी जोइ जोइने चालीए छीए, तेथी तेवी राते चालता अमे प्राणोने कचरता नथी, यावत्—उपद्रव करता नथी. ते माटे प्राणोने निह कचरता तेम यावत्—निह पीडा करता अमे त्रिविध त्रिविधे यावत्—एकांत पंटित—विर्तिसहित छीए. हे आर्थो ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे यावत्—एकांत बाल—विर्तिसहित छीए. हे आर्थो ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे यावत्—एकांत बाल—विर्तिसहित छी.'

गीतम-

प. लार बाद ते अन्यतीर्थिकोए भगवंत गीतमने आ प्रमाणे कहाँ के, हे आर्थो ! अमे जा हेतुथी त्रिविध त्रिविधे असंयत यावत्—एकांत बाल—विरितिरहित छीए ! त्यारे भगवंत गीतमे ते अन्यतीर्थिकोने आ प्रमाणे कहाँ के, हे आर्थो ! तमे हालतां चालतां जीवोने क-चरो छो, यावत्—तेने उपदव करो छो अने तथी जीवोने कचरता यावत्—उपद्वय करता तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत यावत्—एकांत बाल छो.' ए प्रमाणे भगवंत गीतमे ते अन्यतीर्थिकोने निरुत्तर कर्या. त्यार पद्धा तेमणे ज्यां श्रमण भगवंत महावीर विराजमान हता त्यां आर्या श्रमण भगवंत महावीरने वांदी नमी अने बहु दूर नहि तेम बहु नजीक नहि एवी रांते तेमनी पासे बेसी यावत्—पर्युपासना करी.

अन्य ती विंदा-

गोतमः

- ६. 'है गौतम'! एम संबोधी श्रमण भगवंत महावीरे भगवंत गौतमने आ प्रमाणे वाह्यं के, हे गौतम! तें ते अन्यतीर्थिकोने टीक कह्यं, हे गौतम! तें ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे साहं कह्यं, हे गौतम! मारा घणा शिष्यो श्रमण निर्प्रथी छयस्थ छे, जेओ तारी पेठे ए प्रमाणे उत्तर देवाने समर्थ नथी, माटे हे गौतम! तें ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे टीक कह्यं, हे गौतम! तें ते अन्यतीर्थिकोने सारं कह्यं, अमण भगवंत महावीरे भगवंत गौतमने ए प्रमाणे कह्यं त्यारे प्रसन्त अने संतुष्ट यह पूज्य गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने वांशं नमी आ प्रमाणे कह्यं.—
- ७. [प्र०] हे भगवन्! शुं छश्चस्थ मनुष्य परमाणुपुद्गरुने जाणे अने जुए के न जाणे अने न जुए ! [उ०] हे गौतम! कोइ जाणे, पण जुए नहि, अने कोइ जाणे नहि अने जुए पण नहि.

छशम्भना ज्ञाननी विषयः परमाणुः

अभे मात्र काय-श्वरीरनो आधार राखी चालीए छीए, पण अध, गाडी वगेरे वाह्नमां नेसी गमन करता नथी.

- ८. [प॰] छउमत्थे णं मंते ! मणूसे दुपयसियं खंधं कि जाणित पासित ? [उ॰] पर्य चेव । पर्व आप-असंचे-जापदेसियं ।
- ९. [प्र०] छउमत्थे णं मंते ! मणूसे अणंतपणिसयं खंघं कि-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिए जाणित पासित १, अत्थेगतिए जाणित न पासित ४ ।
- १०. [प्र०] आहोहिए ण भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं० ! [उ०] जहा छ**उमन्थे एवं आहोहिए वि, जाव-अर्णतप-**देखियं ।
- ११. [प्रव] परमाहोहिए णं भंते ! मणूसे परमाणुपोग्गळं जं समयं जाणित तं समयं पासित, जं समयं पासित तं समयं पासित तं समयं पासित तं समयं जाणित ? [उव] णो तिणहे समट्टे ! [प्रव] से केणहेणं भंते ! पवं बुच्चर—'परमाहोहिए णं मणूसे परमाणुपोग्गळं जं समयं जाणित नो तं समयं पासित नो तं समयं जाणित' ? [उव] गोयमा ! सागारे से नाणे भवर, अणागारे से इंसणे भवर, से तेणहेणं जाव—नो तं समयं जाणित, एवं जाव—अणंतपदेसियं ।
- १२. [प्र॰] केवली णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं॰ १ [उ॰] जहा परमाहोहिए तहा केवली वि, जाव-अर्णतपर सियं। 'सेवं भंते ! सेवं मंते ! सिवं ।

## अहारसमे सए अहुमो उद्देसो समत्तो ।

द्विप्रदेशिक स्कन्धः

८. [प्रत] हे भगवन् ! छुं छग्नस्थ मनुष्य द्विप्रदेशिक स्कंधने जाण अने नुए के न जाणे अने न जुए ! [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणबुं अने एम यावत्—असंख्यातप्रदेशिक स्कंध सुधी कहेबुं.

अनन्त प्रदेशिक स्था-स्था-

 ९. [प्र०] हे मगवन्! श्रुं छग्नस्थ मनुष्य अनंतप्रदेशिक स्कंबने जाणे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! १ कोइ जाणे अने जुए, २ कोई जाणे पण जुए नहि, ३ कोई जाणे नहि पण जुए अने ४ कोई जाणे नहि तेम जुए पण नहि.

अवधिज्ञाननी विधयः

१०. [प्र०] आधोऽविषय-अवधिज्ञानी गनुष्य परमाणुपुद्रावने जाणे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] जैम छद्यस्थने कह्युं तेम अवधिज्ञानीने यण कहेचुं. ए प्रमाणे यावत्-अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी आणवु.

ज्ञान अने दर्शनना समयनी सिक्षताः

- ११. [प्र०] हे भगवन्! परमायि ज्ञानी मनुष्य परमाणुपुद्गलने जे समये जाणे ते समये जुए, अने जे समये जुए ते समये जाणे हैं [उ०] ए अर्थ यथार्थ नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेनुथी कहो छो के, परमायि ज्ञानी मनुष्य परमाणु पुद्गलने जे समये जाणे ते समये न जुए अने जे समये जुए ते समये न जाणे हैं [उ०] हे गीतम! ते परमायि ज्ञानीनुं ज्ञान साकार (विशेषप्राहक) होय छे, अने दर्शन अनावार (सामान्यग्राहक) होय छे, माटे ते हेतुथी एम कह्यु छे के—'यावत्—जं समये जुए छे ते समये जाणतो नथी.' ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी समजवुं.
- १२. [प्र०] हे भगवन् ! केवल्झानी परमाणुपुद्रलने जे समये जाणे ते समये जुए-इत्यादि प्रथा. [उ०] जेम परमाविध्वानीने कहीं तेम केवल्झानीने पण कहेतुं. ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्काध सुधी जाणधुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे'.

## अडारमां शतकमां अष्टम उद्देशक समाप्त.

## नवमो उद्देसो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाच-एवं धयासी-अन्य णं मंते ! मधियदधनेरस्या मधि० २ ? [उ०] हंता अन्यि । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं वृक्षद्र-'मिवयदधनेरस्था म० २ ? [उ०] गोयमा ! जे मिवए पंचिदिए तिरिक्सजोणिए वा मणुस्से वा नेरस्एसु उचविज्ञत्तर से तेणट्टेणं० । एवं जाव-थणियकुमाराणं ।

## नवम उद्देशक.

मन्द्रः ।नेन्दि कादि १. [प्र ] राजगृहनगरमां भगवान् गीतम वायत् आ प्रभाणे श्रील्या के, हं भगवन् ! भन्यद्रव्यनैरियको २ छे ! [उ०] हे गीतम ! हा छे. [प्र ०] हे भगवन् ! आए 'भव्यद्रव्यनेरियको' २ शा कारणधी कहो छो ! [उ०] हे गीतम ! जे कोई पंचेंद्रिय तिर्यंच के मनुष्य नैरियकोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे, ते 'भव्यद्रव्यनरियक' २ कहेवाय छे. ए प्रमाणे यावत् - 'म्हानितकुमारो' सुची जाणवुं.

१ \* भून अथवा माबी पर्यायनुं कारण द्रव्य कहेवाय छे. भावी नारकपर्यायनुं कारण पंचेन्द्रिय तिर्थय के मनुष्य भव्यव्यमेरिकिक कहेवाय छे, तेना प्रण प्रकार छे-१ एकमानक, २ वहायुष्क अने ३ अभिमुखनामगोत्र.

- २. [प्र०] सत्य णं मंते! मिवयद्वपुढविकाद्दया म०२ १ [ड०] हंता अत्य । [प्र०] से केणट्रेणं० १ [उ०] गोयमा! जै मिवए तिरिक्कजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पुढविकाद्दपसु उवधिकत्तए से तेणट्रेणं०। आउकादय-धणस्सद्कादयाणं यवं बेव । तेउ-वाऊ-वेदंदिय-तेदंदिय-वउरिंदियाण य जे मिवए तिरिक्कजोणिए वा मणुस्से वा, पंचिदियतिरिक्खजो- जियाणं जे मिवए नेरदए वा तिरिक्कजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पंचिदियतिरिक्कजोणिए वा, एवं मणुस्सा वि । वावमंतर-जोद्दिय-वेमाणियाणं जहा नेरदया।
- ३. [प्र०] भवियद्धनेरस्यस्स णं मंते ! केवतियं कालं ठिती पश्चता ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुत्रकोडी ।
- ध. [प्र०] भवियद्वस्यसुरकुमारस्स णं भंते ! केवतियं कालं ठिती पश्चता ! [४०] गोयमा ! जहस्रेणं अंतोमुहुत्तं, उद्योसेणं तिकि पल्लियोवमाइं । एवं जाव-राणियकुमारस्स ।
- ५. भवियद्यपुढविकाश्यस्स णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहचेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगार् दो सागरोवमार् । यवं बाडकाश्यस्स वि । तेउ-वाऊ जहा नेरश्यस्स । वणस्सश्काश्यस्स जहा पुढविकाश्यस्स । वेश्वियस्स तेश्वियस्स चड-रिवियस्स जहा नेरश्यस्स । पंचिदियतिरिक्सजोणियस्स जहभेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमार् । एवं मणुस्सा वि । वाणमंतर-जोश्सिय-वेमाणियस्स जहा असुरकुमारस्स । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति ।

#### अद्वारसमे सए नवमी उद्देसी समत्ती।

२. [प्र०] हे भगवन् ! 'भन्यद्रन्यपृथिवीकायिको' २ शा हेतुथी कहेवाय छे ! [उ०] हे गीतम ! जे कोइ तियंच, मनुष्य के देव पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थयाने योग्य होय छे ते 'भन्यद्रन्यपृथिवीकायिक' २ कहेवाय छे. ए प्रमाणे 'अप्कायिक' अने 'वनस्पतिका-यिक' पण जाणवा. अग्निकाय, वायुकाय, हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अने चर्डिरिय विषे जे कोइ तिर्यंच के मनुष्य उत्पन्न थयाने योग्य होय ते 'भन्यद्रव्यअग्निकायादि' कहेवाय छे. जे कोई नैरियक, तिर्यंचयोनिक, मनुष्य, देव के पंचेद्रियतिर्यंचयोनिक पंचेद्रियतिर्यंचयोनिकमां उत्पन्न थवाने योग्य होय ते 'भन्य द्रव्यपंचेद्रियतिर्यंचयोनिक' कहंवाय छे. ए प्रमाणे मनुष्यो संबंधे पण जाणवुं. वानन्यंतर, ज्योतिषिको अने वैमानिको नैरियकोनी पेठे जाणवा.

भन्यद्र**न्य पृथि<del>गी-</del> कायिकादि-**

३. [प्रo] हे भगवन् ! भन्य द्रव्यनेरियकर्ना केटला काळनी स्थित कही छे ? [उ०] हे गातम ! तेनी स्थिति जघरपथी \*अंतर्भुहूर्त अने उत्कृष्टभी पूर्वकोटि वर्षनी कही छे.

गज्यद्रव्यनेर**यिका**-दिनी आयु**प स्थिति-**

- थ. [प्र०] हे भगवन् ! भव्य द्रव्य असुरकुमारनी स्थिति केटला काळनी कही छे ! [उ०] हे गाँतम ! तेनी स्थिति जधन्यथी !अंत-मुंहूर्तनी अने उन्कृष्टथी त्रण पल्योपमनी कही छे. ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणबुं.
- प. [प्र०] हे भगवन् । भज्यद्रव्यपृथिवीकायिकनी स्थिति केटला काळनी कही छे ! [उ०] हे गीतम ! तेनी स्थिति जघन्ययी अंतमृंदूर्तनी अजे उत्कृष्टथी किंह्क अधिक वे सागरोपमनी कही छे. ए प्रमाणे अप्कायिक संबन्धे पण जाणवुं. भज्यद्रव्यअप्रिकायिक अने
  भज्यद्रव्यवायुकायिक संबन्धे नैरियकनी पेठे समजवुं. बनस्पतिकायिकजे पृथिवीकायिक समान जाणवुं भव्य द्रव्य बेहन्द्रिय, तेहन्द्रिय अजे
  चउरिन्द्रियनी स्थिति नैरियकनी पेठे जाणवी. बळी भव्यद्रव्यपंचेदियतिर्यंचथीनिकनी स्थिति जघन्यथी अंतर्मुहूर्तनी अने उत्कृष्टथी तेत्रीश
  सागरोपमनी जाणवी. एज प्रमाणे मनुष्यजे विभे पण जाणवुं. बानव्यंतर, ज्योतिषिक तथा वैमानिको असुरकुमारनी पेठे समजवा. 'हे भगबन् । ते एमज छे हे भगवन् । ते एमज छे.'

#### अढारमा शतकमां नवमो उद्देशक समाप्त.

रे पे जे संज्ञी के असंज्ञी अन्तर्मुहूर्तना आयुषवाळा मरीने नरकगतिमां जवाना छे ते अपेक्षाए भव्यद्रव्यनरियकनी अन्तर्मुहूर्तनी जघन्य स्थिति कडी छै, अने उन्हरूष्ट पूर्वकोटि आयुषवाळो संज्ञी नरकगतिमां जाय ते अपेक्षाए उत्हरूष्ट स्थिति कहेवामां आवी छे—टीका.

४ ौ जघन्य अन्तर्भुहुर्तना आयुषवाळा मनुष्य के पंचेन्द्रिय तिर्थचने आश्रयी भव्य द्रव्य अमुरकुमारादिनी जघन्य स्थित जाणनी अने देव हुर्यादि युगलिक मनुष्यने आश्रयी त्रण पत्योपमनी उरकृष्ट स्थिति जाणनी.

५ ‡ सन्य द्रव्य प्रयिवीक यिकनी उत्कृष्ट स्थिति ईशानदेवलोकने आश्रयी साधिक वे सागरोगमनी जाणती अन्य द्रव्य अधिकायिक अने वायुकायिकनी जयन्य अन्तर्भद्वते अने उत्कृष्ट पूर्वकोटि स्थिति जाणवी, कारण के देवादि तथा युगलिक अनुज्यो लो उत्पन्न थता नगी. अन्य द्रव्य पंथेन्द्रिय निर्वेवनी विजीश सागरोपनी स्थिति सातमी नरक पृथिवीना नारकोनी अनेकाए जाणवी.—टीका.

## दसमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] रायगिहे जाव-पर्य वयासी-अणगारे णं मंते ! मावियप्पा असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेखा ! [७०] हंता ओगाहेखा । [प्र०] से णं तत्थ छिजेख वा मिखेख वा ! [उ०] णो तिणहे समहे, णो बलु तत्थ सत्थं कमह । एवं जहा पंचमसप परमाणुगोगालवत्तवया, जाव-अणगारे णं भंते ! मावियप्पा उदावत्तं वा जाव-नो खलु तत्थ सत्थं कमह ।
- २. [प्रव] परमाणुपोग्गले मं भंते ! वाउयाएमं फुडे, वाउयाए वा परमाणुपोग्गलेमं फुडे ! [उ०] गोयमा ! परमाणु-पोग्गले वाउवाएमं फुडे, नो वाउयाए परमाणुपोग्गलेमं फुडे ।
  - ३. [प्र॰] दुप्पपसिप णं भेते ! खंधे वाउयाएणं० ? [उ॰] एवं चेष, एवं जाय-असंखेजापपसिए ।
- ध. [प्र॰] अणंतपपसिप णं भंते ! खंधे वाउ-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! अणंतपपसिप खंधे वाउयापणं फुडे, वाउयाप अणंतपपसिपणं संधेणं सिय फुडे, सिय नो फुडे ।
- ५. [प्र॰] वत्थी मंते ! वाउयाएणं फुडे, वाउयाए वित्थणा फुडे ? [ड॰] गोयमा ! वत्थी वाउयाएणं फुडे, नो बाउ-याए वित्थणा फुडे ।
- ६. [प्र०] अत्थि णं भंते ! स्मीसे रयणणभाष पुढवीष अहे दखाई वज्ञओ काल-तील-लोहिय-हालिद्-सुकिहाई, गंधओ सुब्भिगंधाई, दुब्भिगंधाई, रसओ तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुराई, फासओ कक्षक-मउय-गठय-लहुय-सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खाई, अन्नमन्नवद्धाई, अन्नमन्नपुट्टाई, जाव-अन्नमन्नघडत्ताए चिट्टंति ? [उ०] हंता अत्थि । एवं जाव-अहेसत्तमाए । [प्र०] अत्थि णं भंते ! सोहम्मस्स कप्पस्स अहे० ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव-ईसिपम्भाराए पुढवीए । 'सेवं भंते ! सोवं भंते ! जाव-विहरह । तए णं समणे भगवं महावीरे जाव-विहिया जणवयविहारं विहरति ।

## द्शम उद्देशक.

बैकिय लब्बिन सामध्य १. [प्र०] राजगृह नगरमां भगवान् गानम यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन् । भावितातमा अनगार [वैकिय लिधना सामध्येथी] नरवारनी धार उपर के अस्त्रानी के स्वानी के स

पर्माण्.

२. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गरं वायुकायवडे स्पृष्ट—न्यात छे के बायुकाय परमाणुपुद्गरं वडे स्पृष्ट—न्यात छे ! [उ०] हे गौतम ! परमाणुपुद्गरं वायुकाय वडे व्यात छे, पण वायुकाय परमाणुपुद्गरं वडे व्यात नथी.

द्विप्रदेशियस्य स्थान्यः

३. [प्र०] हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध वायुकाय वडे स्पृष्ट-ज्यात छे के वायुकाय द्विप्रदेशिक स्कंध वडे स्पृष्ट-ज्यात छे ! [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यायत-असंख्यातप्रदेशिक स्कंध सुधी समजवुं.

अनस्तप्रदेशित. स्थन्धः ४. [प्र०] हे मगवन् ! अनंतप्रदेशिक स्कंध वायुकायवडे स्पृष्ट छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! अनंतप्रदेशिक स्कंध वायुकायवडे स्पृष्ट छे, पण वायुकाय अनंतप्रदेशिक स्कंध वडे कदाच स्पृष्ट होय अने कदाच स्पृष्ट न होय.

बस्ति अने यायुकाः यिकनी स्पर्धनाः ५. [प्र०] हे भगवन् ! बस्ति—मसक वायुकायवडे स्पृष्ट छे के वायुकाय मसक वडे स्पृष्ट छे ! [उ०] हे गीतम ! बस्ति बायुक कायवडे स्पृष्ट-व्याप्त छे पण वायुकाय वर्षित वडे स्पृष्ट-व्याप्त नथी.

रलप्रभादि पूर्विर्म तथा सोपभागि देव लोकगी नी-नेवा द्वन्धी- ६. [प्र०] हे भगवन् ! आ ग्रममा पृथिवीनी नीचे वर्णधी काळां, ठीलां, पीळां, ठाल अने घोळां, गंधधी सुगंधी अने दुर्गंधी, रसर्था कडवां, तीलां, त्रां, खाटां अने मीठां, रपर्शंधी कर्करा, कोमळ, भारे, हळ्यां, घंडा, उनां, चीकणां अने लुखां द्रव्यो अन्योन्य बद्ध, अन्योन्य रपृष्ट, यावत्—अन्योन्य संवद्ध यंग्लां छे : [उ०] हे गीतम ! छे. ए प्रमाणे यावत्—अधःसप्तम पृथिवी सुधी जाणबुं. [प्र०] हे भगवन् ! सीधर्म कल्पनी नीचे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणेज जाणबुं. ए प्रमाणे यावत्—ईवल्प्राग्भारा सुधी जाणबुं. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' एम कही यावत्—विहरे छे. त्यार पछी श्रमण भगवंत महावीर यावत्—बहारना देशो मां विहरे छे.

<sup>🤊 \*</sup> जुबो भग० सं० २ श० ५ त० ७ ए० २५४.

- ७. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नगरे होतथा। वन्नन्नो। दूनियलासए चेतिए। वन्ननो। तत्य णं याणियगामे नगरे सोमिले नामं माहणे परिवसति, अहे, जाव-अपरिभूए, रिउन्नेद० जाव-सुपरिनिद्वेष, पंचण्हं खंडियसयाणं,
  सयस्स कुडुंबरस आहेवचं जाव-विहरति। नए णं समणे मगवं महावीरे जाव-समोसढे। जाव-परिसा पञ्चासति। तए
  जं तस्स सोमिलस्स माहणस्य इमीसे कहाए लब्रुट्टस्स समाणस्स अयमेयाक्षवे जाव-समुप्पिक्तत्था-'एवं खलु समणे णायपुत्ते पुनाणुपुष्टिं चरमाणे गामाणुगामं दूरक्रमाणे सुहंसुहेणं जाव-इहमागए, जाव-दूतिपलासए चेहए अहापिडक्रवं जावविहरद। तं गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अंतियं पाउष्मवामि, इमाइं च णं प्याक्वाइं अट्टाइं जाव-वागरणाइं पुच्छिस्सामि; तं जह मे से इमाइं प्याक्वाइं अट्टाइं जाव-वागरणाइं वागरेहिति ततो णं प्याक्वाइं यट्टाइं जाव-वागरणाइं वागरेहिति तो णं प्याक्वाइं यट्टाइं जाव-वागरणिहे य निष्पट्टपसिणवागरणं करेस्सामी' ति कड्ड पवं संपेदेइ। संपेदेक्ता ण्हाप जाव-सरीरे सान्यो गिहाओ पिडेनियसमित, पिडिनियसमित्ताः पायविहारचारेणं एगेणं खंडियसएणं सिंह संपरिषुडे वाणियगामं नगरं मञ्झंमज्झेणं निग्नच्छइ, निग्नच्छित्ता जेणेव दूतिपलासए चेहए जेणेव समणे मगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, जवागच्छित्ता समणस्स मगवओ महावीरस्स अदृग्यामंते
  विद्या समणं मगवं महावीरं एवं वयासी-
- ८. [प्र॰] 'जत्ता ते मंते ! जवणिजं, अष्ठावाहं, फासुयविहारं' ? [उ॰] सोमिला ! 'जत्ता वि मे, जवणिजं पि मे, अञ्चाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि में'।
- ९. [प्र०] किं ते मंते ! जत्ता ? [७०] सोमिला ! जं मे तव-नियम-संजम-सज्झाय-झाणा-वस्सयमादीपसु जोगेसु जयणा क्षेत्रं जत्ता ।
- १०. [प्र०] किं ते भंते ! जवणिजं ? [उ०] सोमिला ! जवणिजं दुविहे पत्रसे, तंजहा-इंदियजवणिजे य नो इंदिय-जवणिजे य ।
- ११. [प्र०] से कि तं इंदियजवणिक्ने ? [उ०] इंदिय० २ जं मे सो इंदिय-व्यक्तिविय-घाणिदिय-क्रिविय-फार्सि-दियाई निरुवहयाई वसे वहुति । सेत्तं इंदियजवणिक्ने ।

७. ते काळे ते सगये वाणिज्यप्राम नामे नगर हतुं. वर्णक. दूतिपद्धारा चैत्य हतुं. वर्णक. ते वाणिज्यप्राम नामे नगरमां सोमिल नामे ब्राह्मण रहेनो हतो, जे आद्ध्य-धनिक यावत्—अपिरभृत—समर्थ हतो, तथा ऋग्वेर यावत्—बीजा ब्राह्मणना शास्त्रोमां कुराल हतो. ते पांचसो शिष्यो तथा पोनाना कुंटुंबनुं अधिपनिपणुं करतो यावत्—रहेनो हतो. त्यार बाद कोइ दिशसे श्रमण भगवंत महापीर त्यां समोसर्या. यावत्—पर्दा पर्युपासना करे छे. त्यार पत्नी श्रमण भगवंत महापीर आव्यानी आ वात सांभद्यो ते सोमिल ब्राह्मणने आवा प्रकारनो यावत्—संकल्य थयो के; "ए प्रमाणे ग्वरंग्यर अनुक्रमे विहरता अने एक गामधी वीजे गाम जता श्रमण ज्ञातपुत्र सुम्वपूर्वक आर्ह आव्या छे, अने यावत्—दूतिपत्राश चित्यमां यथा योग्य अवप्रहने प्रहण करी यावत्—विहरे छे, तो हुं ते श्रमण ज्ञातपुत्रना पासे जाउं, अने तेनी पासे प्रगट थाउं तथा तेने आ आवा प्रकारना अर्थो, यावत् त्याकरणो—उत्तरो पूछुं. जो ते मने आवा प्रकारना आ अर्थ अने यावत्—प्रश्नना उत्तरो कहेशे तो तेमने बांदीश नमीश, यावत्—तेमनी पर्युपासना करीश, जो मने आ अर्थो अने प्रश्नोत्तरो नहि कहे तो आ अर्थ अने उत्तरो बडे निरुत्तर करीश." एम विचारी स्नान करी यावत्—शरीरने अलंकृत करी पोताना घरथी नांकत्वी एकसी शिष्योनी परिवार साथे पर्ने चाली वाणिज्यप्रामनी वश्चोवच्च नीकत्वी ज्यां दूतिपत्यश चेत्य छे अने उथां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां ते आव्यो अने आवी श्रमण भगवंत महावीर थे त्यां ते आव्यो अने आवी श्रमण भगवंत महावीरनी थोडे दृर पासे बेसी तेणे तेमने आ प्रमाणे कहां—

८. [प्र०] हे भगवन् ! तमने यात्रा, यापनीय, अन्याबाध अने प्राप्तुक विहार छे ? [उ०] हे सोमिल ! मने यात्रा पण छे, यापनीय पण छे, अन्याबाध पण छे अने प्राप्तुक विहार पण छे.

यात्रा, या**पनीय** अध्यागाथ**ः अने** प्रा<u>ग</u>्नाः वि**हार**ः

योमिलना प्रश्ली-

९. [प्र०] हे भगवन् ! तमने यात्रा छुं छे ! [उ०] हे सोमिल ! तप, नियम, संयम, खाध्याय, ध्यान अने आवस्यकादिक योगोमां जे मारी यतना—प्रवृत्ति छे ते मारी यात्रा छे. भवमयात्राः

१०. [प्र०] हे भगवन् ! तमने यापनीय ए द्युं छे ? [उ०] हे सोमिल ! यापनीय वे प्रकारनुं छे, ते आ प्रमाणे—इन्द्रिययापनीय अने नोइन्द्रिययापनीय.

यापनीय.

११. [प्र०] हे भगवन्! इंदिययापनीय एटले हुं ? [उ०] हे सोमिल । श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, प्राणेंद्रिय, जिह्नेन्द्रिय अने स्पर्शने- धन्द्रिययापनीय है.

- १२. [प्र०] से किं तं नोइंदियजवणिजे ? [उ०] नोइंदियजवणिजे जं मे कोह-माण-माया-लोमा **बोच्छिका तो** उदीरेंति, सेसं नोइंदियजवणिजे, सेसं जवणिजे ।
- १३. [प्र॰] किं ते मंते ! अक्षावाहं ? [उ॰] सोमिला ! जं मे वातिय-पित्तिय-सिमिय-सिमयाहया विविद्या रोगा-यंका सरीरगया दोसा उवसंता नो उर्दारेति । सेसं अक्षावाहं ।
- १४. [प्रञ] कि ते भंते ! फासुयविद्वारं ? [उ०] सोमिला ! जन्नं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु समासु पवासु रत्यी-पसु-पंडगविवज्ञियासु वसदीसु फासु-एसणिज्ञं पीढ-फलग-सेज्ञा-संथारगं उवसंपिज्जना णं विद्दरामि, सेनं फासुपविद्वारं ।
- १५. [प्रच] सरिसवा ते भंते! किं भक्केया, अभक्केया? [उ०] सोमिला! सरिसवा मिं] मक्केया वि अभक्केया वि। [प्रच] से केणटुणं भंते एवं बुक्कर—'सरिसवा में भक्केया वि अभक्केया वि? [उ०] से नूणं ते सोमिला! वंभक्षा नएसु दुविहा सरिसवा पन्नता, तंजहा—मित्तसरिसवा य धन्नसरिसवा य। तत्य णं जे ते मित्तसरिसवा ते तिविहा पन्नता, तंजहा—सहजायया, सहचिह्वयया, सहपंसुकीलियया, ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्केया। तत्थ णं जे ते धन्नसरिसवा ते दुविहा पन्नता, तंजहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य, तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्षेया। तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नता, तंजहा—एसणिज्ञा य अणेसणिज्ञा य। तत्थ णं जे ते अणेसणिज्ञा ते समणाणं निग्गंथाणं अभवस्थेया। तत्थ णं जे ते एसणिज्ञा ते दुविहा पन्नता, तंजहा—जाह्या य अजाह्या य। तत्थ णं जे ते अजाह्या ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्षेया। तत्थ णं जे ते जातिया ते दुविहा पन्नता, तंजहा—लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जे ते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्षेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्षेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्षेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्षेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्षेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्षेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्षेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्षेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्षेया। विः।
  - १६. [प्र॰] मासा ते भंते! किं भक्लेया, अभक्लेया? [उ॰] सोमिला! मासा मे भक्लेया वि समक्लेया वि।

**ने इ**न्द्रिययापःशिधः

१२. [प्रo] हे भगवन् ! नोइन्द्रिययापनीय ए द्युं ? [उo] हे सोमिल ! जे मारा क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चारे क्रापायो व्युक्तित्र थयेला के अने उदयमां आवता नथी ते नोइंद्रिययापनीय के. ए प्रमाणे यापनीय कक्षुं.

अन्याबाधः

१३. [प्र०] हे भगवन् ! तमने अव्यावाध ए शुं छे ? [उ०] हे सोमिल ! जे मारा वात, पित्त, कफ भने संनिपातजन्य अनेक प्रकारना शरीरसंबंधी दोषो—रोगानंको उपशांत थया छे भने उदयमां आवता नधी ते अव्यावाध छे.

**प्रा**सुकविद्वारः

१४. [प्र०] हे भगवन्! तमारे प्राप्तकविहार ए शुं छे ? [उ०] हे सोमिल ! आरामो, उद्यानो, देवकुलो, सभाओ, परबो तथा स्त्री, पशु अने नपुंसकरहित वसतिओमां निर्दोप अने एपणीय पीठ, फलक, शय्या अने संथाराने प्राप्त करीने हुं विहरुं छुं ते प्राप्तक विहार छे.

सित्य भह्य के अभक्ष्य. १५. [प्र०] हे भगवन्! सिरस्त्रों आपने मध्य छे के अगध्य छे? [उ०] हे सोमिल! "सिरस्त्र मारे मध्य पण छे अने अभध्य पण छे?' [उ०] हे सोमिल! तारा अभध्य पण छे. [प्र०] हे भगवन्! एम हा हेनुथी कहो छो के 'सिरस्त्र भश्य पण छे अने अभध्य पण छे?' [उ०] हे सोमिल! तारा आहाणना नयोमां—हास्त्रोमां वे प्रकारना सिरस्त्र कहा छे, ते आ प्रमाणे—सहज्ञान—साथे जन्मेल, साथे उछरेला अने साथे धूळमां रमेला. ते त्रणे प्रकारना सिरस्त्रा समानवयस्क—मित्रो श्रमण निर्प्रत्यने अभध्य छे. अने जे धान्यसिरस्त्र छे ते वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—हासपरिणत अने अहासपरिणत. तेमां जे अहासपरिणत—अह्मपित्र हासपित्र विर्णाय नथी ते श्रमण निर्प्रत्योने अभध्य छे. अने श्रमणित्र अपित्र विर्णाय ध्येला नथी ते श्रमण निर्प्रत्योने अभध्य छे. अने श्रमणित्र (अग्नि आदिश्री निर्जाय धयेला नथी ते श्रमण निर्प्रत्योने अभध्य छे. अने श्रमणित्र (अग्नि आदिश्री निर्जाय धयेला) छे ते वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—एषणीय—इच्छवा लायका, निर्दाय अने अनेपणीय—निह इच्छवा लायक सदीप. तेमां जे अनेपणीय छे ते श्रमण निर्प्रत्योने अभध्य छे, ते आ प्रमाणे—याचित—मागेला अने अयाचित—निर्ह मागेला. तेमा जे अयाचित सिरस्त्र छे, ते श्रमण निर्प्रत्योने अभक्ष्य छे, अने जे सिरस्त्र छे, ते वे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—मळेला अने निर्ह मळेला हे ते श्रमण निर्प्रत्योने अभक्ष्य छे, अने जे सिर्ह्य छे, ते वे प्रकारना छे, ते आध्य पण छे.'

गान मध्य के अभक्ष्य <sup>ह</sup> १६. [प्र॰] हे भगवन् ! <sup>†</sup>गास तमारे भक्ष्य छ के अभक्ष्य छे ! [उ॰] हे सोमिल ! मास मारे भक्ष्य पण छे **अने अभक्ष्य पण** 

अ 'सहजायए सहविश्वयए सहपंसुकी छितए' इति क पुसके पाठः ।

१५ \* अर्हि 'सरिसव' स्थिप प्राकृत शब्द छे, तेनो एक अर्थ सर्वय एटले सरसव बाय छे अने बीजो क्षर्य सहशवयाः-सित्र बाय छे.

<sup>9</sup>६ <sup>†</sup> आर्हि मास बाब्द किए छे अने एनो एक अर्थ माप-अटद भाग **छे अने बीजो अर्थ मास-महिनो धा**ग **छे**.

[प्रव] से केणट्टेणं जाव-अमक्षेया वि ? [उ०] से नूणं ते सोमिला ! बंभन्नपसु नपसु दुविहा मासा पन्नता, तंजहा-दब-मासा य कालमासा य । तत्य णं जे ते कालमासा ते णं सावणादीया आसाढपज्जवसाणा दुवालसं पन्नता, तंजहा-सावणे, मद्वप, आसोप, कत्तिप, मग्गिसरे, पोसे, माहे, फागुणे, चित्ते, वहसाहे, जेट्टामूले, आसाढे, ते णं समणाणं निग्गंथाणं अमक्षेया । तत्थ णं जे ते व्हमासा ते दुविहा पन्नता, तंजहा-अत्थमासा य धण्णमासा य । तत्थ णं जे ते अत्थमासा ते दुविहा पन्नता, तंजहा-सत्थाणं अमक्षेया । तत्थ णं जे ते धन्नमासा ते दुविहा पन्नता, तंजहा-सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य-पवं जहा धन्नसरिसवा जाव-से तेणट्टेणं जाव-अमक्षेया वि ।

१७. [प्र०] कुल्त्या ने मंते! कि अक्सेया अमक्सेया ? [उ०] सोमिला! कुल्त्या मक्सेया वि अमक्सेया वि। [प्र०] से केण्ट्रेणं जाव-अमक्सेया वि ? [उ०] से नूणं सोमिला! ते वंभन्नयसु नयेसु दुविहा कुल्त्या पन्नता, तंजहा- इत्यिकुल्त्या य धन्नकुल्त्या य। तत्थ णं जे ते इत्यिकुल्त्या ते तिविहा पन्नता, तंजहा-कुलक्स्या इ वा कुलबहुया ति वा कुलमाउया इ वा, ते णं समणाणं निम्पंथाणं अभक्सेया। तत्थ णं जे ते धन्नकुल्त्या एवं जहा धन्नसरिसवा, से तेण- ट्रेणं जाव-अमक्सेया वि।

१८. [प्र0] एते भवं, दुवे भवं, अक्खए भवं, अव्वए भवं, अविद्विए भवं, अणेगभूयभावभविए भवं ? [उ०] सोमिला ! एते वि अहं, जाव-अणेगभूयभावभविए वि अहं। [प्र0] से केणंटुणं भंते ! एवं दुखा-जाव-'भविए वि अहं' ? [उ०] सोमिला ! दबटुयाए एते अहं, नाणदंसणट्टयाए दुविहे अहं, एएसटुयाए अक्खए वि अहं, अवए वि अहं, अविद्विए वि अहं, उवयोगटुयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं, से तेणटुणं जाव-भविए वि अहं'।

१९, पत्य णं से सोमिले माहणे संबुद्धे, समणं भगवं महावीरं० जहा संवुधो, जाव-से जहेयं नुज्ये वदह, जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहचे राईसर० एवं 'जहा रायप्यसेणहजे चिस्तो, जाय'- दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जित,

हे [प्र०] हे भगवन् ! एम शा कारणयी कहो छो के 'मास मारे भक्ष्य पण छे अने अभक्ष्य पण छे' ? [उ०] हे सोमिल ! तारा ब्राह्मणना नयां—शास्त्रोमां मास वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—इन्यमास अने कालमास. तेमां जे कालमास छे ते श्रावणयी मांडी आपाढ मास सुधी बार प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—१ श्रावण, २ भादरवी, ३ आसो, ४ कार्तिक, ५ मार्गशीर्य, ६ पोप, ७ माघ, ८ फाल्गुन, ९ चैत्र, १० वैशाख, ११ जेट अने १२ आपाढ. ते श्रमण निर्प्रन्थोने अभक्ष्य छे. तेमां जे इव्यमास छे ते वे प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे—अर्थमास अने धान्य मास. तेमां जे अर्थमास छे ते वे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—\*सुवर्ण माप अने रौप्यमाप. अने ते श्रमण निर्म्यने अभक्ष्य छे. वळी जे धान्यमाप छे ते वे प्रकारना छे—शस्त्रपरिणत (अन्यादियी अचित्त थयेला) अने अशस्त्रपरिणत (अन्यादियी अचित्त प्रयेला, सजीव) छे—इत्यादि जेम धान्यसरसव संबन्धे कह्युं तेम धान्यमास संबन्धे पण जाणबुं. यावत्—ते हेतुथी यावत्— 'अभक्ष्य पण छे.'

१७. [प्र०] हे भगवन् ! आपने कुलस्था भक्ष्य छे के अभक्ष्य छे ! [उ०] हे सोमिल ! कुलस्था भक्ष्य छे अने अभक्ष्य पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी यावत्—अभक्ष्य छे ! [उ०] हे सोमिल ! तारा ब्राह्मण शास्त्रमां कुलस्था वे प्रकारे छे—स्त्रीकुलस्था (कुलिन स्त्री) अने धान्यकुलस्था (कल्पी). तेमां जे स्त्री कुलस्था छे ते त्रण प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे—कुलकन्यका, कुलवध् अने कुलमाता. ते श्रमण निर्भन्थोने अभक्ष्य छे. तेमां जे धान्यकुलस्था छे—इस्यादि—वक्तन्यता धान्यसारेसव प्रमाणे जाणवी. ते माटे यावत्—'अभक्ष्य पण छे'.

कुलस्था भ६य के अभक्ष्य <sup>१</sup>

१८. [प्र०] आप एक छो के वे छो, अक्षय छो, अन्यय छो, अनस्थित छो के अनेक भूत, वर्तमान अने भावी परिणामने योग्य छो है [उ०] हे सोमिल हैं एक पण छुं, यावत्—अनेक भूत, वर्तमान अने भावी परिणामोने योग्य छुं. [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणयी आप कहो छो के हुं एक यावत्—अनेक भूत, वर्तमान अने भावी परिणामने योग्य छुं ! [उ०] हे सोमिल हें हत्यरूपे एक छुं अने ज्ञानकपे अने दर्शनक्रपे वे प्रकारे पण छुं. प्रदेश (आत्मप्रदेश) रूपे हुं अक्षय छुं, अन्यय छुं अने अवस्थित पण छुं, उपयोगनी दृष्टिए हुं अनेक भूत वर्तमान अने भावी परिणामने योग्य छुं. ते कारणयी हुं यावत्—अनेक भूत, वर्तमान अने भावी परिणामने योग्य पण छुं.

एक, अनेक इत्यादि

१९. अहिं सोमिल ब्राह्मण प्रतिबोध पाम्यो, अने ते श्रमण भगवंत महावीरने बंदन—नमस्कार करे छे—इत्यादि <sup>†</sup>स्कंदकनी पेटे यावत्— 'जेम आप कहो छो तेमज छे' त्यां सुधी कहेवुं । हे देवानुप्रिय ! आपनी पासे जेम घणा राजेश्वर—वगेरे [ हिरण्यादिनो त्याग करी मुंड धई

१ फमुले क्र.

१६ \* सुबर्ध अने हपुं तोळवानो माष.

१९ र मगव सं० १ श० २ त० १.

पिडविजित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति, जाव-पिडिगए। तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए, अभिगयजीवा जाव-विहर्ण । 'भंते'ित भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-[म०] एभू जं मंते ! सोमिले माहणे देवाणुष्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता० जहेच संखे तहेच निरवसेसं जाव-अंतं काहिति । 'सेवं मंते ! सेवं भंते' ! ति जाव-विहरति ।

#### अद्वारसमे सए दसमो उद्देसी समत्ती।

अनगारपणुं स्वीकारे हे तेम हूं करी शकतो नधी ]- इत्यादि राजप्रश्नीय सूत्रमां \*चित्रकतुं वर्णन छे तेम यावत्-वार प्रकारनो श्रावक धर्म अंगीकार करे छे त्यां सुधी कहेतुं. श्रावक धर्मनो स्वीकार करी श्रमण भगवंत महावीरने वांदीने यावत्-ते पोताना घेर गयो. स्यार पछी ते सोमिट ब्राह्मण श्रमणोपासक थई जीवाजीवादिक तत्त्वोने जाणतो यावत्-विहरे छे.

२०. [प्र०] 'हे भगवन्' ! एम कही भगवंत गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वांदी नमी आ प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! सोमिल ब्राह्मण आप देवानुप्रियनी पासे मुंड भई अनगारपणुं लेवा समर्थ छे—इत्यादि जेम <sup>†</sup>शंख श्रावकनी वक्तव्यता कही छे ते प्रमाणे यावत्— 'सर्व दुःखोनो अंत करशे' त्या सुधी बधी बक्तव्यता कहेवी. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावत्— विहरे छे.

अटारमा शतकमां दशम उद्देशक समाप्त.

अढारमुं शतक समाप्त.



,'ল

१९ \* जुओ राज॰ पृ॰ १२०.

२० + जुओ भगव संव ३ शव १२ उव १ पृव २५६.

## एग्र्णवीसइमं सयं।

१ लेस्सा य २ गब्भ ३ पुढवी ४ महासवा ५ घरम ६ दीव ७ भवणा य । ८ निवक्ति ९ करण १० वणचरसुरा य एगूणवीसङ्मे ॥

#### पढमो उद्देसो ।

१. [प्र॰] रायगिहे जाव-एवं वयासी-कित णं भंते ! लेस्साओ पन्नसाओ ? [उ॰] गोयमा ! छहोसाओ पन्नसाओ, तं जहा-एवं जहा पन्नवणाप चउत्थो लेसुहेसओ भाणियहो निरवसेसो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' सि ।

## एगूणवीसहमे सए पढमो उद्देसी समनी। ओगणीशमुं शतक.

[ उद्देशक संग्रह—] लेक्या विषयक प्रथम उद्देशक, गर्भसंबंधे वीजो उद्देशक, पृथिवीकायिकादिनी वक्तव्यता संबंधे तृतीय उद्देशक, 'नारको महास्रववाळा अने महाक्रियावाळा होय'—इत्यादि अर्थ संबंधे चोथो उद्देशक, 'चरम—अत्यस्थितिवाळा नारको करतां परम—अधिक-स्थितिवाळा नारको महाकर्मथाळा होय' इत्यादि बक्तव्यता संबंधे पांचमो उद्देशक, द्वीपादिक संबंधे छट्टो उद्देशक, भवनादि विषे सातमो उद्देशक, निर्वृत्ति—एकेन्द्रियादि जीव वगेरेनी उत्पत्ति गंवधे आठमो उद्देशक, द्वयादि करण संबंधे नवमो उद्देशक, अने वनचरसुर—वान-व्यन्तर देव संबंधे दशमो उद्देशक. ए प्रमाणे आ ओगणीशमा शतकमा दश उद्देशको कहेवाना छे.

## प्रथम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत्—भगवान् ! गौतम आ प्रभाणे बोल्या के हे भगवन् ! लंश्याओं केटली कही छे ! [उ०] हे गौतम ! छ \*लेश्याओं कही छे, ते आ प्रमाणे—इत्यादि प्रज्ञापना सूत्रनो चोधो 'लेश्या उदेशक आहं समप्र कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

## ओगणीशमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

9 के कृष्णांद इच्यना संबन्धभी आत्माना परिणामविशेष ने ठेदया. ज्यां सुधी योग होय छे लां सुधी टेदया होय छे अने योगना अभावे टेदया होती नदी साटे थोग साथे छेदयानों नियत संबन्ध होवाधी योगनिमित्तक टेदया छे एम जाणी शकाय छे. हवे ते ठेदया योगान्तर्गत इध्यरूप छे के योगनिमित्तक कर्म इव्यरूप छे ते विचारणीय छे. जो योगनिमित्तक कर्मइव्यरूप मानीए तो ते धार्ताकर्म इव्यरूप छे के अधारी कर्मइव्यरूप छे ए ने प्रश्न ज्या छे. टेदया धारी कर्मइव्यरूप तो नशी, कारण के सयोगी केवलीने धारी कर्म नहि होवा छतां टेदया होय छे. ते अधारी कर्मरूप छे एम पण नहि कही शकाय, केमके अयोगी केवलीने अधारी कर्म होवा छतां पण टेदया नथी. माटे ठेदया योगान्तर्गत इव्यरूप छे एम मानवुं जोईए. अर्थात् मन, वचन अने शरीरना अन्तर्गन छमाश्चम परिणामना कारणरूप कृष्णादि वर्णना पुद्रलो ते टेदया. ते टेदया ज्या मुधी कपायो छे लां सुधी तेना उदयने वधार छे. कारण के योगान्तर्गत पुद्रलोनुं कषायोदयने वधारपानुं सामर्थ्य छे. जेम के पित्तना प्रकोपथी कोधनी वृद्धि थाय छे. ते सिवाय बीजा बाह्य इच्यो पण कर्मना उदय अने श्रयोपशमादिना कारणभूत थाय छे, जेमके बाझी ज्ञानवरणक्षयोपशमानुं अने मद्यपान ज्ञानवरणोदयनुं निमित्त थाय छे, तो पछी योगइच्योनुं तेवुं मामर्थ्य होय तमां कक्षी विरोध नथी. ते टेव्याना छ प्रकार छे. जुओ प्रज्ञापना टीका पद १० प्रक ३३०.

† कृष्णलेश्यादि द्रव्यो ज्यादे नीळळेश्यादि द्रव्योने मळे छे त्यादे ते नीळळेश्यादिना खभावस्पे तथा तेना वर्णादि स्पे परिणन थाय छे. जेम दूधमां छाश नौखनाथी के वस्तने रंगवाथी दूध अने वस्तनो वर्णादि परिणाम थाय छे. आवो लेश्यापरिणाम मात्र तिर्यच अने मनुष्यनी लेश्याने आश्रयी आणवो. देव अने नारकोने खखभवपर्यन्त लेश्या द्रव्य अवस्थित होवाथी अन्य लेश्या द्रव्योनो संबन्ध थता सर्वया तेवो परिणाम थतो नथी, अर्थान् ते लेश्या सर्वथा अन्य लेश्यास्पे थती नथी पण पोताना मूळ वर्णादि खभावने छोड्या सिवाय अन्य लेश्यानी छाया मात्र धारण करे छे. जेम वेश्वयं मणिने लाल स्त्रिशी परीववामां आव्यो होय तो ते पोताना नील वर्णने नहि छोडता लाल छाया धारण करे छे, सेम कृष्णादि द्रव्यो अन्य लेश्या द्रव्यना संबन्धमां आवे छे सारे पोतानो मूळ खभाव के वर्णाद नहि छोडता तेनी छाया—आकार मात्र धारण करे छे. जुओ प्रहा० पद १७ प० ३५८-३६८.

लेश्या-

#### बीओ उद्देसो.

१. [प्र०] कित णं मंते ! हेस्साओ पन्नसाओ ! [उ०] एवं जहा पन्नवणाए गम्भुद्देसो सो चेव निरवसेसो माणियद्यो । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि ।

## एगूणवीसइमे सए बीओ उदेसी समत्ती।

## द्वितीय उद्देशक.

गर्भ. १. [प्र०] हे भगवन्! लेज्याओं केटली कही छे! [उ०] ए प्रमाणे प्रज्ञापना सूत्रना सत्तरमा पदनो छहो गर्भोदेशक सम्पूर्ण कहेगो. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

#### ओगणीशमा शतकमां दितीय उदेशक समाप्त.

## तईओ उद्देसो ।

- १. [प्र०] रायिगहे जाव-एवं वयासी-सिय मंते ! जाव-चत्तारि पंच पुढिवकाइया एगयओ साधारणसरीरं बंधित, एग० २ वंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधिति ! [उ०] नो इण्हे समद्दे । पुढिविकाइयाणं पत्तेयाहारा प्रतेयपरिणामा पत्तेयं सरीरं वंधित, प० २ वंधित्ता ततो पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा वंधिति १ ।
- २. [प्रव] तेसि णं भंते ! जीवाणं कित लेस्साओ पन्नताओ ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पन्नताओ, तं जहा— कण्डलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा तेउलेस्सा ।
- ३. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा कि सम्मिद्दिं।, मिच्छादिद्वी, सम्मामिच्छादिद्वी ! [उ॰] गोयमा ! तो सम्मिद्दिं।, मिच्छा-दिद्वी, तो सम्मामिच्छदिद्वी ३ ।

## <sup>†</sup>तृतीय उद्देशक.

१. स्याद् डाग.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत्—भगवान् गौतम आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन्! किदाच वे यावत्—चार पांच पृथिवीका-ियको एकठा धईने एक साधारण दारीर बांधे, बांध्या पछी आहार करे पछी ते आहारने परिणमाने, अने त्यार बाद दारीरनो बंध करे हैं [उ०] ए अर्थ समर्थ—यथार्थ नथी. कारण के पृथिवीकायिको प्रत्येक—जूदो जूदो आहार करवावाळा अने ते आहारनो जूदो जूदो परि-णाम करवावाळा होय छे, तेथो तेओ भिन्न भिन्न दारीर बांधे छे. अने त्यार पछी तेओ आहार करे छे, तेने परिणमाने छे अने पोतानुं दारीर बांधे छे.

२. हेड्याडार.

२. [प्र०] हे भगवन्! ने पृथिर्वाकायिक जीवोनं केटली लेखाओं कही **छे** ? [उ०] **हे** गीनम! तेओने चार लेखाओं कही **छे,** ने आ प्रमाणे—१ कृष्णलेखा, २ नीललेखा, ३ कापोतलेखा, ४ तेजोलेखा.

₹ वृष्टिद्वार.

- ३. [प्र०] हे भगवन्! ते जीवो सम्यग्दिष्ट छे, मिध्यादिष्ट छे के सम्यग्मिध्यादिष्ट-मिश्रदिष्ट छे ? [उ०] हे गौतम! तेओ सम्य-ग्दिष्ट नथी, मिश्रदिष्ट नथी, पण तेओ निध्यादिष्ट छे.
- १ में कृष्णदेश्यावाळो मनुष्य कृष्णदेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ! हा. उत्पन्न करे . एवं शते कृष्णदेश्यावाळो मनुष्य नीलदेश्यावाळा, यावत शुक्क-देशावाळा गर्भने पण उत्पन्न करे . एम नीलन्देश्यावाळो मनुष्य कृष्णादिलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे . ए प्रमाणे कापोत, तेजो, पद्म अने कुक्किस्या संबंधे पण जाणतुं. तर्वाज शते कृष्णलेश्यावाळो मनुष्य कृष्णलेश्यावाळी स्त्री धकी कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे . एम वधी कमेभूमि तथा अकर्मभूमिना मनुष्य संवर्ष जाणतुं. मात्र एटलो विशेष के अकर्मभूमिना मनुष्य संवर्ष जाणतुं. मात्र एटलो विशेष के अकर्मभूमिना मनुष्यने प्रथमनी चार लेश्याओ होवाबी तेने आध्या जाणतुं जुओ प्रज्ञा पद १७ उ० ५ ए० ३०३.
- † आ उद्देशकमां १ स्यात , २ लेदया, ३ दृष्टि, ४ ज्ञान, ५ योग ६ उपयोग, ७ किमाहार—केवा प्रकारनो आहार, ८ प्राणातिपात, ९ उत्याद, ९० स्थिति, ११ समुद्धात अने १२ उद्वर्तना ए बार द्वारो पृथिवीकायिकथी आरंभी वनस्पतिकायिक जीव पर्यन्त कहेवाना छे. तेमां प्रथम स्थात् द्वारने आश्रयी प्रश्न कर्यों छे.
- १ | वडाच अनेक पृथिवीकायिको मळी साधारण शरीर वांधे, त्यार पछी विशेष आहार तथा तेनो परिणाम करे अने पछी शरीरनी विशेष बन्ध करे हैं ए प्रश्न छे. अहिं सामान्य रीने गर्व संसारी जीवोंने प्रति ससय निरंतर आहारमहण-पुत्रलप्रहण होय छे. तेषी प्रथम सामान्य शरीरबन्धसमये पण आहार तो चालुज होय छे छतां प्रथम शरीर वांधे पछी आहार करे एम प्रश्न कमें ते विशेषाहारनी अपेकाए जाणवी. एटडे जीव उत्तिसमये प्रथम ओजाहार करे, अने त्यार पछी शरीरम्पर्शद्वारा लोमाहार करे अने तेने परिणमावे. अने त्यार बाद विशेष विशेष शरीर चन्ध करे-आ प्रश्न छे. तेना उत्तरमां जणान्धुं के पृथिवीकायिको प्रत्येक-मिन्न भिन्न आहार करे छे अने तेनी परिणाम पण भिन्न भिन्न करे छे, माटे तेओ प्रत्येक-मिन्न भिन्न शरीर बांधे छे, साधारण शरीर यांधना नथी त्यार पछी तेओ विशेषाहार, विशेष परिणाम अने विशेष शरीरबन्ध करे छे.

- ४. [प्र॰] ते जं भंते ! जीवा कि नाणी स्रकाणी ! [उ॰] गोयमा ! नो नाणी, अञ्चाणी, नियमा दुअञ्चाणी, तं जहा महअञ्चाणी य सुवस्त्राणी य ধ ।
- ५. [प्रः] ते णं मंते ! जीवा कि मणजोगी, धयजोगी, कायजोगी ! [उ०] गोयमा ! नो मणजोगी, नो वयजोगी, कायजोगी ५ ।
- ६. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा कि सागारोवडचा, अणागारोवडचा ! [उ०] गोयमा ! सागारोवडचा वि अणागारो-वडचा वि ६ ।
- ७. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ! [उ०] गोयमा ! दक्षभो णं अणंतपदेसियाई दक्षाई-एवं जहा पन्नय-जाए पढमे आहारहेसए जाव-सञ्चल्पणयाए आहारमाहारेंति ७।
- ८. [प्र॰] ते णं भन्ते ! जीवा जमाहारेति तं चिक्कंति, जं नो आहारेंति तं नो चिक्कंति, त्रिम्ने या से उद्दाद पिलस-ज्यति वा ! [उ॰] हंता गोयमा ! ते णं जीवा जमाहारेंति तं चिक्कंति, जं नो जाव-पिलसप्यति वा ।
- ९. [प्र०] तेसि णं मंते ! जीवाणं पवं समाति वा पत्ताति वा मणोति वा वर्षद् वा 'अम्हे णं आहारमाहारेमो' ! [उ०] जो तिणहे समहे, आहारेति पुण ते ।
- १०. [प्र०] तेसि णं मंते ! जीवाणं एवं समार वा जाव-वर्गति वा 'बम्हे णं इट्ठाणिट्टे फासे य पडिसंवेदेमो ! [उ०] णो तिण्डे समद्रे, पडिसंवेदेंति पुण ते ।
  - ११. [ब्र॰] ते णं अंते ! जीवा कि पाणाइवाप उवक्खाइजंति, मुसावाप, अटिब्रा॰, जाव-मिच्छादंसणसङ्घे उवक्खा-
- ४. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते (पृथियीकायिक) जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गीतम! तेओ ज्ञानी नथी, पण अज्ञानी अवस्य है, अने तेओने अवस्य है अज्ञान होय छे. ते आ प्रमाणे—मनिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान.
- ५. [प्र०] हे भगवन् ! द्धुं ते पृथिवीकापिक जीवो मनोयोगी, वचनयोगी के कावयोगी है : [उ०] हे गीतम ! तेओ मनवोगी ५ क्षेमदार-नधी, वचनयोगी नधी, पण काययोगवाळा हे.
- ६. [प्र.] हे भगवन्! ह्युं ते जीयोने साकार-क्षानोपयोग होय छे के निराकार-दर्शनोपयोग उपयोग होय छे? [उ०] हे गौतम! ६ उपयोगः तेओने साकार उपयोग पण होय छे अने निराकार पण होय छे.
- ७. [प्र०] हे भगवन्! ते (पृथिवीकायिक) जीवो केवो आहार करे छे ! [उ०] हे गौतम! तेओ द्रव्यथा अनंत प्रदेशवाळां पुद्ग- ৬ किमाहार-लोनो भाहार करे छे–इत्यादि बधुं प्रशापनासूत्रना प्रथम आहारोडेशकमां कह्या प्रमाणे जाणवुं. यावत्—'सर्व आत्मप्रदेश वडे आहार प्रहण करे छे.
- ८. [प्र०] हे भगवन्! ते जीवो जे आहार करे छे तेनो चय थाय छे अने जेनो आहार नथी करता तेनो चय नथी थतो, तथा जे आहारनो चय थएलो होय छे ते आहार [असार गागक्ये] यहार नीकळे छे अने [सारक्ये] वर्धार-इन्द्रियपणे परिणमे छे? [उ०] हे गीतम! ते जीवो जेनो आहार करे छे तेनो तेने चय—संग्रह थाय छे अने जेनो आहार नथी करता तेनो चय थतो नथी. यायत्— ते आहार दारीर-इन्द्रियपणे परिणत थाय छे.
- २. [प्र०] हे भगवन्! ते जीवोने 'अमे आहार करीए छीए' एवी संज्ञा, प्रज्ञा, मन अने वचन छे ! [उ०] ए अर्थ ययार्थ नथी. अर्थात् ते जीवोने 'अमे आहार करीए छीए' एवी संज्ञा वगेरे होता नथी, तो पण तेओ आहार तो करे छे.
- १०. [प्र०] हे भगवन्! ते जीवोने 'अमे इष्ट के अनिष्ट स्पर्शने अनुभवीए छीए' एवी रांझा, प्रज्ञा, मन अने वचन छे! [उ०] ए अर्थ समर्थ-यथार्थ नथी, तो पण एओ तेनो अनुभव तो करे छे.
- ११. [प्र०] हे भगवन्! 'ते पृथिवीकायिक जीवो प्राणातिपात (हिंसा), मिपायाद, अदत्तादान, यावत्-मिध्यादर्शन शन्यमां रहेला एम कहेवाय छे! [व ०] हे गौतम! तेओ प्राणातिपातमां रहेला छे, यावत्-मिध्यादर्शनशन्यमां पण रहेला छे एम कहेवाय छे, ते

८ प्राणातिपानादि-सास्त्रितिः

७ १ क्षेत्रची असंख्यात प्रदेशमां रहेला, काळची जघन्य मध्यम के उन्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा अने भावथी वर्ण, यंध, रस अने स्पर्शवाळा पुद्गन्तस्क-धोनो आहार करे छे. जुओ प्रज्ञा० पद १८ ७० १ प० ४९८-५११

<sup>99 ‡</sup> प्रियोकायिकादि जीवोने वचनादिनो अभाव छतां तेओ मृषावादादिमां रहेला कहेवाय छे, ते गृपावादादिनी अविरतिने आध्यी जाणवुं.—दीकाः १९ स॰ स्॰

इज्जंति ? [उ॰] गोयमा ! पाणाइवाप वि उवक्लाइजंति, जाव-मिच्छावंसणसङ्घे वि उवक्लाइजंति । जेसि पि णं जीवाणं हे जीवा प्रवमाहिजंति तेसि पि णं जीवाणं नो विश्वाप नाणसे ८।

- १२. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववर्जाति, किं नेरस्पहिंतो उववर्जाति ? [उ॰] पवं जहा वकंतीप ् काइयाणं उववाओ तहा भाणियद्वो ९ ।
- १३. [प्र०] तेसि णं भंते! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पन्नसा? [उ०] गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, र बावीसं वाससदस्सादं १०।
- १४. [प्र॰] तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्वाया पश्चता !, [उ०] गोयमा ! तओ समुग्वाया पश्चा, तं जहा-वेयणासमुग्वाय, कसायसमुग्वाय, मारणंतियसमुग्वाय ।
- १५. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुखाएणं कि समोद्दया मर्रति, असमोद्दया मर्रति ? [उ॰] गोयमा ! समो-इया वि मर्रति, असमोद्दया वि मर्रति ११।
  - १६. [प्र॰] ते णं अंते! जीवा अणंतरं उद्यष्टित्ता काहिं गच्छंति, काहिं उववज्रांति ! [उ॰] एवं उद्यष्टणा जहा वकंतीप १२।
- १७. [प्र॰] सिय भंते ! जाय-चत्तारि पंच आउकार्या पगयओ साहारणसरीरं बंधेति, पग॰ २ बंधिता तस्रो पच्छा आहारेंति ? [उ॰] पर्य जो पुढविकार्याणं गमो सो चेव भाणियद्वी जाय-उबद्दंति; नवरं ठिती सत्त वाससहस्सारं उक्कोसेणं, सेसं तं चेव ।
- १८. [प्र०] सिय भंते ! जाय-चत्तारि पंच तेउकारया० पर्व चेव, नवरं उथवाओ ठिती उद्यष्टणा य जहा पन्नवणाय, सेसं तं चेव । वाउकारयाणं पर्व चेव, नाणत्तं नवरं चत्तारि समुग्धाया ।

जीवों जे बीजा पृथिवीकायिकादि जीवोर्न। हिंस।दि करे छे एम कहेवाय छे ते जीवोने पण ('आ जीवों अमारी हिंसा करनार छे') एवो भेद ज्ञात नथी. ९.

९ ज्लाइद्दार.

- १२. [१०] हे भगवन्! ते जीवो क्यांधी आवीने उत्पन्न थाय—शुं नैरियकोथी आवीने उत्पन्न थाय?—इस्रादि. [उ०] जेम <sup>क</sup>युत्का-न्तिपदमां पृथिवीकायिकोनो उत्पाद कहेल छे तेम अहिं कहेबो.
- १० व्यितिहार.
- १३. [प्र०] हे भगवन्! ते पृथियीकायिक जीबोर्ना केटला काळना स्थिति (आयुप) कही छै ! [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्भुद्वर्त अने उत्कृष्टथी बाबीश हजार वर्षनी स्थिति कही छै.

११ समुद्रधात.

- १४. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवोने केटला समुद्घातो कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! त्रण समुद्घातो कह्या छे, ते आ प्रमाणे—१ वेदना समुद्घात, २ कपाय समुद्घात अने ३ मारणान्तिक समुद्घातः
- १५. [प्र०] हे भगवन्! हुं ते जीवो मारणान्तिक समुद्धात करीने मरे के मारणान्तिक समुद्धात कर्या सिवाय मरे ? [उ०] हे गीतम! तेओ मारणान्तिक समुद्धात करीने पण मरे अने ते कर्या सिवाय पण मरे.

१२ उद्दंनाद्वार.

१६. [प्र०] हे भगवन् । तेओ मर्राने तुरत वयां जाय, क्यां उत्पन्न थाय ? [उ०] <sup>†</sup>ब्युक्तन्ति पदमां कह्या प्रमाणे तेओनी उद्दर्तना कहेवी. १२

अप्याविक.

१७. [प्र०] हे भगवन्! कदाच वे, त्रण चार के पांच अप्कायिको मेगा थईने एक साधारण शरीर बांघे अने पछी आहार करे! [उ०] पृथिवीकायिकोने आश्रया जे पाट कहेवामां आवेल छे ते अहिं उद्दर्तना द्वार मुची कहेवो. परन्तु अप्कायिकोनी स्थिति उत्कृष्टयी सात हजार वर्षनी जाणवी. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

अधिकारिक.

१८. [प्र॰] हे भगवन्! कदाच यावत्—चार के पाच अग्निकायिक जीयो मेगा धईने एक साधारण शरीर बांधे—इस्यादि पूर्ववस् (सू॰ १) प्रश्न अने उत्तर कहेतो. परन्तु विशेष ए छे के तेओनो उपपात, स्थिति अने उद्दर्गना प्रज्ञापनास्त्रमां कह्या प्रमाणे जाणवां, अने वाकी वशुं पूर्ववत् जाणवुं. बायुकायिकोने पण ए प्रमाणे जाणवुं; परन्तु एटलो विशेष के तेओने चार समुद्धात होय छे.

१२ 1 पृथिवीकायिको नैरियकोशी आवी उत्पन्न धता नथी, पण तिर्यचयोनिक, मनुष्य अने देवोशी आवी उत्पन्न याय छे-नुओ प्रजा० पद० ६, प० ३ १६-१०

**१६** चिल्लो प्रज्ञाल पद ३ प० ३११.

१८ ‡ तेजस्कायिक जीवो तिर्यंच अने मनुष्यमांशी आवी उपजे छे. तेओनी स्थिति उत्कृष्ट त्रण अहोरात्रनी होय छे. त्याची नीकळीने तेओ तिर्यंचमां ज उत्पन्न थाय छे. वर्ळा तेमां टेर्याना पण विशेषता छे. ज्यारे पृथिवीकायिकने चार छेस्याओं होय छे, त्यारे अभिकायिकने त्रण डेक्याओं होय छे. वासुकायिकने आभिकायिकनी पेटे जाणसुं, परन्तु तकावत एटरो छे के वायुकायिकने बैकिय समुद्धात अभिक होवाची बार समुद्धात होय छे. जुनी-प्रज्ञा वह ६ एक १९२.

१९. [४०] सिय मंते ! जाव-चत्तारि पंच वणस्सइकाइया०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! णो तिणहे समहे । अर्णता मर् क्याइया पगयओ साहारणसरीरं बंधंति, एग० २ वंधिता तभो पच्छा आहारेंति वा परि० २ । सेसं जहा नेउकाइ--अवृहंति, नवरं बाहारो नियमं छहिसिं, ठिती जहभेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ।

काय कि विश्व विश्व विश्व के मंते ! पुढिविकाद्याणं आउ-तेउ-वाउ-वाज-वणस्सद्दकाद्याणं सुदुमाणं वादराणं पज्जनगणं अपकाद-जह सुकोसियाप ओगाहणाए कयरे २ जाव-विसेसाहिया वा ! [उ०] गोयमा ! सहत्योवा सुदुमिनओयस्स
काद्य स्थान अगाहणा १, सुदुमवाउकाद्दरस अपज्जत्तगस्स जहित्रया ओगाहणा असंकेज्जगुणा २, सुदुमतेउकाद्दरस
जित्त स्थान अगाहणा असंकेज्जगुणा ३, सुदुमआउकाद्दरस अपज्जत्तस्स जहित्रया ओगाहणा असंकेज्जगुणा १,
ब्रम्पुढिविकाद्द्यस्स अपज्जत्तस्स जहित्रया ओगाहणा असंकेज्जगुणा ७, वादरआउकाद्द्यस्स अपज्जत्तस्स जहित्रया ओगाहणा असंकेज्जगुणा ६, वादरतेउकाद्द्यस्स अपज्जत्तस्स जहित्रया ओगाहणा असंकेज्जगुणा ८, वादरपुढिविकाद्द्यस्स अपज्जत्तस्स जहित्रया ओगाहणा असंकेज्जगुणा ९, पत्तेवस्तरित्याद्दरवणस्सकृत्व सुदुमिनगोयस्स प्रति णं प्रज्जनगणं प्रति णं अपज्जत्तगणं जहित्रया ओगाहणा दोण्ह वि तुला असंकेज्जगुणा १०-११, सुदुमिनगोयस्स प्रज्जनगस्स जहित्रया ओगाहणा असंकेज्जगुणा १२, तस्सेव अपज्जत्तगस्स जहित्रया ओगाहणा विसेसाहिया १३, तस्स चेव प्रज्जत्तगस्स जहित्रया ओगाहणा विसेसाहिया १६, तस्स चेव प्रज्जत्तगस्स उकोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १६, तस्स चेव प्रज्जत्वमस्य उकोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १६, तस्स चेव प्रज्जत्वमस्स उकोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १५, तस्स चेव प्रज्जत्वमस्स वि १८-१९-२०, पर्व सदुमआउकाद्दरस वि २१-२२-२३, पर्व सुदुमपुढिविकाद्द्यस्स वि २४-२५-२६, पर्व वादरवाउकाद्दयस्स वि २७-२८-२६, पर्व वादरतेउकाद्दरस वि ३०-३१-३२, पर्व वादरवाउकाद्दरस वि ३०-३८-३८, सब्वेद्य त्रिया ओगाहणा असंकेज्जगुणा ३९, तस्स चेव अपज्जत्वमस्स उक्वोसिया गोगणियां, वादरितगोयस्स पज्जनगस्स जहित्रया ओगाहणा असंकेज्जगुणा ३९, तस्स चेव अपजज्जनस्स उक्वोसिया

यगरपतिकाविक.

१९. [प्रo] हे भगवन्! कदाच यावत्—चार के पांच वनस्पतिकायिको भेगा थईने एक साधारण शर्गर बांघे (- इस्रादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. पण अनंतवनस्पतिकायिक जीवो भेगा यईने एक. साधारण शर्गर बांघे छे, पद्यी आहार करे छे अने परिणमाने छे—इस्यादि बधुं अग्निकायिकोनी पेठे यावत्—'उहतें छे सांसुधी' कहेवं. विशेष ए के तेओने आहार अवस्य कि दिशानी होय छे, वळी तेओनी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मृहुर्तनी होय छे. बाकीनुं बधुं पूर्वनी पेठे ज जाणवुं.

ष्टिमीकायिका**दिनीः** अवगाहनानुं अ**स्य-व**हुत्त्व-

२०. [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त अने अपर्याप एच पृथिवीकायिको, अकायिको, अग्निवायिको, वायुकायिको अने धनरपतिकायिकोनी जे जवन्य अने उन्कृष्ट अवगाहनामां कोनी अवगाहना कोनाथी यावद्-विशेषाधिक छे ! [उ ०] हे गीनम ! अपर्याप्त सूक्ष्म-निगोद्नी जघन्य अवगाहना सीथी थोडी छे १, अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिकनी जघन्य अवगाहना तेथी असंख्यगुण छे २, अपर्याप्त सूक्ष्म अग्निकायनी जघन्य अवगाहना तेथी असंस्थगुण छे ३, अपर्याप्त सूक्ष्म अध्कायनी जघन्य अवगाहना तेथी असंस्थगुण छे ४, अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिबीकायिकनी जघन्य अनगाहना तेथी असंख्यगुण छे ५, अपयीत बादर वायुकायिकनी जघन्य अनगाहना तेथी असंख्यगुण छे ६, तेथी अपर्याप्त बादर अग्निकायिकानी जघन्य अत्रगाह्ना असंख्यगुण छे ७, तेथी अपर्याप्त बादर अप्कायिकानी जघन्य अत्रगाहना असंख्यगुण छे ८, तेथी अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकनी जवन्य अवगाहना असंख्यगुण छे ९, तेथी पर्याप्त अने अपर्याप्त प्रत्येक शरीर-बाळा बादर बनस्पतिकायिकानी अने बादर निगोदनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुण अने परस्पर सरखी छे १०-११, तेथी पर्याप्त गृक्ष निगोदनी जघन्य अवगाहना असंख्यानगुण छे १२, तेथी अपर्याप्त सृक्ष्म निगोदनी उत्कृष्ट अवगाहना विशेपाधिक छे १३, तेनाथी पर्याप्त सूक्ष्म निगोदनी उत्कृष्ट सवगाहना विशेपाधिक छै १४, तेथी पर्याप्त मृक्ष्मतायुकायनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुण छे १५, तेथी अपर्याप्त सुक्ष्म वायुकायनी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक छे १६, तेनाथी पर्याप्त मृक्ष्म वायुकायनी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक छे १७, ए प्रमाणे वायुकायनी पेठे सूक्ष्म अग्निकाय पर्याप्तनी जबन्य अवगाहना असंख्यातगुण, अने तेथी अपर्यात सूक्ष्म अग्निकायनी उत्कृष्ट अव-गाहना अने पर्याप्तनी उत्कृष्ट अवगाहना उत्तरोत्तर विशेपाधिक जाणवी. १८-१९-२०, एम सूक्ष्म अप्काय २१, २२, २३, अने मूक्ष्म पृथितीकाय संबंधे पण जाणबुं. २४--२५--२६. ए प्रमाणे बादर वायुकायिक २७--२८--२९, बादर अग्निकायिक ३०--३१--३२, बादर अप्कायिक ३३-३४-३५, अने बादर पृथिवीकायिक संबंधे पण समजवुं. ३६-३७-३८, ए बधाने एम त्रिविचपाठनडे कहेतुं. तेथी पर्याप्त बादर निगोदनी जन्नन्य अवगाहना असंख्यातगुण छे ३९, तेथी अपर्याप्त बादर निगोदनी उन्कृष्ट अवगाहना विशेपाधिक छे ४०,

१६ \* वनस्पतिकायिकोने अवस्य छ दिशाओनो आहार होय छ एम जे कहेवामां आब्युं छे तेनुं शुं ताल्पर्य छे ते रामजानुं नधी, कारणके लोकान्त निष्कुष्टमां रहेला सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोने प्रण चार के पांच दिशाओना पण आहारनी मंभव छे. पण जो बादर निगाद—साधारण वनस्पतिकायिक—ने आध्यी आ सूत्र होय तो तेने अवस्य छ दिशानोज आहार घटी शके छे, कारण के ते लोकना मध्य भागमां रहेला होवाधी तेने अवस्य छ दिशानोज आहार घटी शके छे, कारण के ते लोकना मध्य भागमां रहेला होवाधी तेने अवस्य छ दिशानो आहार होय छे. टीका.

ओगाइणा विसेसाहिया ४०, तस्स चेव पज्जसगस्स उक्कोसिया ओगाइणा विसेसाहिया ४१, परोयसरीरवाइरवणं जीवाणं हे जै यस्स पज्जसगस्स जहन्निया ओगाइणा असंखेजगुणा ४२, तस्स चेव अपज्जसगस्स उक्कोसिया ओगाइणा असंखेर क्रिक्तीर प्रक्रिया ओगाइणा असंखेजगुणा ४४।

- २१. [प्र०] एयस्स णं मंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेषकाइयस्स वाजकाइयस्स वणस्सइक् काये सद्यसुद्दुमे, कयरे काए सद्यसुद्दुमतराए ? [उ०] गोयमा ! वणस्सइकाए सद्यसुद्दुमे, वणस्सइकाए सद्वसुदुम् हुन्तं, र्कोलेणं
- २२. [प्र॰] एयस्स णं भंते ! पुदविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउक्काइयस्स कयरे काये सबर् काये सबसुद्धमतराप ? [उ॰] गोयमा ! वाउकाए सबसुद्धमे, वाउकाए सबसुद्धमतराए २ ।
- २३. [प्र०] एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स कयरे काये सम्रसुदुमे, कयरे कार्ष मतराए ! [उ०] गोयमा ! तेउकाए सम्रसुदुमे, तेउकाए सम्रसुदुमतराए ३ ।
- २४. [प्र०] एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आइकाइयस्स कयरे काप सम्रसुदुमे, कयरे काप सम्रसुदुमतराप रे [र्रे
- २५. [प्र०] एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सद्काइयस्स कयरे कार्ये सम्बन्धदरे, कयरे कार्ये सम्बन्धदरतराए ! [उ०] गोयमा ! वणस्सद्काये सम्बन्धदरे, वणस्सद्काये सम्बन्धदरतराए १ ।
- २६. [प्र॰] एयस्रा णं मंते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउक्काइयस्स कयरे काप सञ्चवादरे, कयरे काप सञ्चवाद्ग्तराप ? [उ॰] गोयमा ! पुढविकाप सञ्चवादरे, पुढविकाप सञ्चवाद्रतराप २ ।
- २७. [प्र०] एयस्स णं भंते ! आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स वाउकाइयस्स कयरे काए सञ्चवादरे, कयरे काए सञ्चवादरे तराए ? [उ०] गोथमा ! आउक्काए सञ्चवादरे, आउक्काए सञ्चवादरेनराए ३।
- २८. [प्र०] एयस्स णं भंते ! तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स कयरे काए सष्टवादरे, कयरे काए सष्टवादरतराए ? [उ०] गोयमा ! तेउकाए सष्टवादरे, तेउकाए सष्टवादरतराए ४।

तेथी पर्याप्त बादर निगोदनी उत्कृष्ट अवगाहन। विशेषाधिक छे ४१, तेथी प्रत्येक शरीरवाळा पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकनी जघन्य अव-गाहना असंख्यातगुण छे ४२, तेथी प्रत्येक शरीरवाळा अपर्याप्त बादर वनस्पतिकायिकनी उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यातगुण छे ४३, अने तेथी प्रत्येक शरीरवाळा बादर वनस्पतिकायिकनी उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यातगुण छे ४४.

**पृ**थिवीकायः दिनी **परस्पर** सृष्टमनाः

- २१. [प्र०] हे भगवन्! पृथिर्वाकायिक, अफायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक अने वनस्पतिकायिक ए बधामां कई काय सौधी सूक्ष्म अने सृक्ष्मतर छे! [७०] हे गातम ! वनस्पतिकायिक साँधी \*मृक्ष्म अने सृक्ष्मतर छे.
- २२. हे भगवन् ! ए पृथिवीकाय, अध्काय, अभिकाय अने वायुकायमां कई काप सर्वेषी सूक्ष्म अने सृक्ष्मतर छे ? [उ०] हे गौतम ! वायुकाय सीर्था सूक्ष्म अने सूक्ष्मतर छे.
- २२. हे भगवन् ! ए पृथिवीकाय, अब्काय अने तेजस्यायमां कई काय सर्व स्कृम अने सर्व मृक्ष्मतर छे ! [उ०] हे गौतम ! अग्नि-काय सौथी सृक्ष्म अने मृक्ष्मतर छे.
- २४. [प्र०] हे भगवन्! ए पृथिवीकाय अने अध्कायमां कई काय सर्व सूक्ष्म अने सर्व सूक्ष्मतर छे ? [उ०] हे गौतम ! अध्काय सौथी सूक्ष्म अने सृक्ष्मतर छे.

**वृधि**वीकाशादिनुं **धरस्पर** भादस्यणु-

- २५. [प्र०] हे भगवन् ! ए पृथिवीकाय, अकाय, अग्निकाय, वायुकाय अने वनस्पति कायमां कई काय सीधी वादर अने बादरतर है ! [उ०] हे गीतम ! वनस्पतिकाय सीधी बादर अने बादरतर है.
- २६. [४०] हे भगवन् ! ए पृथिवीकाय, अष्काय, अग्निकाय अने वायुकायमां कई काय बादर अने बादरतर छे ! [उ०] हे गौतम ! पृथिवीकाय सीथी वादर अने बादरतर छे.
- २७. [प्रo] हे भगवन् ! ए अध्काय, अग्निकाय अने वायुकायमां ऋई काय सौधी बादर अने बादरतर छे ! [उ०] हे गौतम ! अध्काय सौधी वादर अने बादरतर छे !
- २८. [प्र॰] हे भगवन् ! ए अभिकाय अने वायुकायमां कई काय सर्वधी बादर अने सर्वधी बादरनर छे ! [उ॰] हे गौतम ! अप्रिकाय सौधी बादर अने बादरतर छे.

२ ) \* वनस्पतिकाय सूक्ष्म वनस्पतिकायनी अपेक्षाए सर्व करतां अधिक सूक्ष्म छ अने प्रत्येक वनस्पतिकायनी अपेक्षाए सर्व करतां अधिक पादर छे.

- २९. [प्र0] केमहालय णं मंते ! पुढिवसरीरे पद्मते ! [उ०] गोयमा ! अणंताणं सुहुमवणस्सद्दकाद्याणं जावद्या सरीरा से एगे सुहुमवाउसरीरे, असंखेजाणं सुहुमवाउसरीराणं जावितया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरिरे, असंखेजाणं सुहुमतेउकाइयसरीराणं जावितया सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे, असंखेजाणं सुहुमआउकाद्यसरीराणं जावद्या सरीरा से एगे सुहुमे
  पुढिवसरीरे, असंखेजाणं सुहुमपुढिविकाद्यसरीराणं जावद्या सरीरा से एगे वाद्रवाउसरीरे, असंखेजाणं वाद्रवाउकाद्याणं
  जावद्या सरीरा से एगे वाद्रतेउसरीरे, असंखेजाणं वाद्रविकाद्याणं जावित्या सरीरा से एगे वाद्रवाउसरीरे, असंखेजाणं
  वाद्रवाउकाद्याणं जावित्या सरीरा से एगे वाद्रवाउसरीरे एप्रसे।
- ३०. [प्र०] पुढिवकाइयस्स णं भंते ! केमदालिया सरीरोगाइणा पश्चता ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए रक्षो चाउरंतचक्कषष्टिस्स वक्षगपेसिया तरुणी बलवं जुगवं जुवाणी अप्पायंका० वक्षओ जाय-निउणसिप्पोयगया, नवरं चम्मट्ट-दुइणमुद्वियसमाइयणिचियगत्तकाया न भण्णित, सेसं तं चेय जाय-निउणसिप्पोयगया तिक्खाए वयरामईए सण्हकरणीए तिक्खेणं
  वहरामएणं वहावरएणं एगं महं पुढिविकाइयं जनुगोलासमाणं गहाय पिडसाइग्य प० २ पिडसंखिविय पिडि० २ जाव-'६णामेय'ित कहु तिसन्तक्खुत्तो उप्पीसेजा, तन्य णं गोयमा ! अत्थेगतिया पुढिविकाइया आलिखा अत्थेगह्या पुढिविकाइया नो आलिखा, अत्थेगह्या संघिट्ट(द्वि)या अत्थेगह्या नो संघिट्ट(द्वि)या, अन्थेगह्या परियाविया अत्थेगह्या नो परियाविया, अत्थेगह्या पिट्ठा अत्थेगह्या नो परियाविया, अत्थेगह्या पिट्ठा अत्थेगह्या नो परियाविया। एमहालिया सर्रारोगाहणा पण्णत्ता।
- ३१. [प्र०] पुढियकाइए णं भंते ! अक्कंते समाणे केरिसियं वेदणं पश्चणुच्भवमाणे विहृरित ? [उ०] गोयमा ! से जहानामप-केर पुरिसे तरुणे बलवं जाव-निउणसिष्पोयगए एगं पुरिसं जुन्नं जराजज्जरियदेहं जाव-दुष्वलं किलंतं जमलपाणिणा
  मुद्धाणंसि अभिहणिज्जा, से णं गोयमा ! पुरिसे तेणं पुरिसेणं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहए समाणे केरिसियं वेदणं
  पश्चणुच्भवमाणे विहृरित ! अणिट्टं समणाउसो ! तस्स णं गोयमा ! पुरिस्तस्स वेदणाहितो पुढिवकाइए अक्कंते समाणं एसो
  अणिट्टतरियं चेव अक्तंतरियं जाव-अमणामतरियं चेव वेदणं पश्चणुच्भवमाणे विहृरित ।
- २९. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनं केटलं मोटुं शरीर कहां छे ! [उ०] हे गौतम ! अनंत सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोना जेटलं शरीरो थाय तेटलं एक सूक्ष्म वायुकायनं शरीर छे. असंख्य सूक्ष्म वायुकायनां जेटलं शरीरो थाय तेटलं एक सूक्ष्म अफ्रिकायनं शरीर छे. असंख्य सूक्ष्म अफ्रिकायनां जेटला शरीरो थाय हे, तेटलं एक सूक्ष्म अफ्रिकायनां जेटला शरीरो थाय तेटलं एक सूक्ष्म पृथिवीकायनं शरीर छे, असंख्य तृक्ष्म पृथिवीकायनं शरीर छे, असंख्य वादर वायुकायनां जेटला शरीरो थाय तेटलं एक वादर वायुकायनं शरीर छे, असंख्य वादर वायुकायनां जेटलां शरीरो थाय तेटलं एक वादर अफ्रिकायनं शरीर छे, असंख्य वादर अफ्रिकायनं शरीरो थाय तेटलं एक वादर अफ्रिकायनं शरीर छे एक वादर पृथिवीकायनं शरीर छे. हे गौतम ! [वीजी कायनी अधिकाए] एटलं मोटुं पृथिवीकायनं शरीर कहां छे.

३०. [प्र०] हे भगवन्! पृथिवीकायना शरीरनी केटली मोटी अवगाहना कही छें [उ०] हे गौतम! जेमके कोइ एक चार दिशाना खागी चक्रवर्ती राजानी चंदन घसनारी दासी होय, ते दासी युवान, बलवान्, युगवान्—सुपमादि विश्विष्ट बाळमां उत्पन्न पर्येली, उमर लायक, नीरोगी—इसादि वर्णन जाणवुं, यावत्—असंत कळाकुशळ होय, परन्तु 'चमेष्ट, में दुघण, अने मौष्टिकादि व्यायामना साधनोधी मजबूत थयेला शरीरवाळी' ए विशेषण न कहेवुं. पूर्वोक्त एवी ते दासी चूर्ण बाटवानी वक्रनी कठण शिला उपर बक्रमय कठण पाषाणवडे लावना दडा जेटला एक मोटा पृथिवीकायना पिंडने लईने तेने बारंबार एकटो करी करीने, तेनो संक्षेप करी करीने बाटं, यावत्—'आ तुरतमां बाटी नाखुं छुं' एम धारी एकवीस बार पीसे, तो पण हे गौतम! तेमां केटलाएक पृथिवीकायिकोने ते शिला अने बाटवाना पाषाणनो मात्र स्पर्श धाय छे अने केटलाएकने स्पर्श पण धती नथी, केटलाएकने संघर्ष धाय छे अने केटलाएक मरता पण नथी; तथा केटलाएक पीसाय छे अने केटलाएक पीसाता पण नथी. हे गौतम! पृथिवीकायना शरीरनी एटली [सुक्षा] अवगाहना कही छे.

३१. [प्र०] हे भगवन्! ज्यारे पृथिशीकाय दवाय त्यारे ते केवी पीडानो अनुभव करे ! [उ०] हे गौतम! जेम कोई एक पुरुष जुनान, बख्वान्, यावत्—अत्यन्तकळा कुराळ होय, ते बीजा कोई घडपणथी जीर्ण ययेळा शारीरवाळा यावत्—दुबळा ग्यान पुरुषना माथामा पोताना बने हाथे मारे तो हे गौतम! ते पुरुषना बने हाथना मारथी घवायेळो ते बृद्ध पुरुष केवी पीडा अनुभवे ! हे आयुष्मन् अमण! ते बृद्ध घणीज अनिष्ठ पीडाने अनुभवे. हे गौतम! ते पृथिशीकाय ज्यारे दवाय त्यारे ते पुरुषनी वेदना करता पण आनिष्टनर, अप्रिय अने अणगमती एवी घणी वेदना अनुभवे.

**पृथिवीकायिक**ना शरीरनु प्रमाणः

पृथिनीकायिकना अस्तरमा अवसाहना-

पृथित्रीकाषिकने के तो गीडा थाय ?

१ 'सुरुमदादकार्माणे'-टीका.

इ.च. व दासीने साधनो द्वारा व्यायामनी प्रवृत्तिनो असंभव होवायी आ विशेषण न कहेवुं.-टीका.

३२. [प्र॰] आउयाप णं भंते ! संघष्टिप समाणे केरिसियं वेदणं पश्चणुग्भवमाणे विहरित ! [उ॰] गोयमा ! जहा पुर-विकाह्य एवं चेव, एवं तेऊयाप वि, एवं वाऊयापवि, एवं वणस्सहकाए वि, जाव-विहरित । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' कि ।

## एगूणवीसइमे सए तईओ उदेसो समत्तो ।

अप्कायिकने केवी पीडा थाय ! ३२. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे अप्कायिक जीवनो स्पर्श धाय त्यारे ते केबी वेदना अनुमवे ! [उ०] हे गाँतम ! जेम पृथिवीकाप संबंधे कह्युं तेम अप्काय संबंधे पण कहेवुं. ए प्रमाणे अग्निकाय, बायुकाय अने बनस्पतिकाय संबंधे पण जाणवुं. हे भगवन् ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

#### ओगणीयमा शतकमां तृतीय उद्देशक समाप्त.

## चउत्थो उद्देसी।

- १. [प्र०] सिय भंते ! नेरहया महासत्रा महाकिरिया महावियणा महानिजारा ? [उ०] गोयमा ! जो तिजहे समहे १ ।
- २. [प्र०] सिय भंते ! नेरहया महासवा महाकिरिया महावेषणा अप्पनिजरा ! [उ०] हंता सिया २।
- ३. [प्र०] सिय मंते ! नेरह्या महासवा महाकिरिया अप्यवेयणा महानिज्ञरा ? [उ०] गोयमा ! णो तिणहे समहे ३।
- ४. [प्र०] सिय भंते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पंबदणा अप्पनिज्ञरा ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्टे समट्टे ४ ।
- ५. [प्र०] सिय भंते ! नेरह्या महासवा अप्पिकिरिया महावेदणा महानिज्ञरा ? [उ०] गोयमा ! जो तिणहे समहे ५ ।

## चतुर्थ उद्देशक.

महासव, मधाकिया, महावेदना अने महानिकंगः

- १. [प्र०] हे भगवन्! नैरियको महास्वच-"मोटा आस्त्रववाळा, मोटी कियावाळा, मोटी वेदनावाळा अने मोटी निर्जरावाळा होय*ै* [उ०] हे गौतम! ए अर्थ समर्थ नथी.
- २. [प्र०] हे भगवन्! नैरियको मोटा आसववाळा, मोटी कियाबाळा, मोटी वेदनावाळा अने थोडी निर्जराबाळा होय [उ०] हे गीतम ! हा होय.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको मोटा आसववाळा, मोटी क्रियावाळा, अत्य वेदनावाळा अने मोटी निर्जरावाळा होय ? [उ०] हे गीतम ! ए अर्थ समर्थ नथी.
- ४. [प्र०] हे भगवन्! नैरियको मोटा आस्रववाळा, मोटी क्रियावाळा, अन्य वेदनावाळा अने अन्य निर्जरावाळा होय ! [उ०] हे गातम! ए अर्थ समर्थ नथी.
- ५- [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको महाआस्रववाळा, अल्प क्रियावाळा, मोटी बेदनावाळा अने मोटी निर्जरावाळा होय ! [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी.

🤊 \* नेरियकोने घणां कमोंनो बन्ध थतो होवाश्री ते महाश्रववाळा, कायिकी वगेरे घणां क्रियावाळा, असातानो तीव उद्य होवाश्री घणी वेदनावाळा अने घणा कर्मनो क्षय थतो होवाश्री महानिर्जरावाळा होय १-ए प्रश्न छे तेमां उपरना चार पदन। नीचे प्रमाणे सोळ भांगा **धाय छे:—** 

	आस्त्रव	किया	वेदन।	निजंस ।		आस्रव	किया	वेदना	निर्जरा
٩	भहा-	महा	महा-	महा-	٩	अरूप	महा	महा	महा
২	33	3,1	32	अल्प	90	,,	12	,,	अस्प
3	,,,	11	अल्प	महा	99	,,,	73	अल्प	महा
A	1)	37	33	अल्प	97		7)	1)	अल्प
4	,,	अरप	महा	महा	9 3	,,	अत्य	महा	महा
Ę	"	"	33	अल्प	98	93	2)	33	अल्प
v	*)	2)	अन्य	महा	94	21	"	अल्प	महा
4	7)	"	"	अल्प	9 ६	33			अल्प

नेमां नैरियकोने 'महाव्यवाळा, महाक्रियावाळा, महाविद्याभाळा अने अल्पणिर्जरावाळा'-आ बीजो आंगो लागु पढे छे. केमके तेने महास्रवादि श्रणे होग छे, परन्तु आंदरित होवायी अरप निर्जरा होय छे. बाकीना भांगाओं नेरियकोने लागु पटना नथी. अमुरकुमारादि देवोमा 'महास्रव, महाक्रिया, अस्य विद्या अने अल्प निर्जरा '-ए चौथो मांगो होय छे. केमके तिओमा आंवरित होताथी महास्रव, महाक्रिया अने अल्प निर्जरा होय छे, पण असातानो उदय प्रायः निर्हि होवाथी अल्प नेदना होय छे. बाकीना भांगाओं तेओमा होता नथी. प्रियोकायिकादिमां बधा रोळे भांगाओ होय छे.-टीका.

९ एवं आउकापु वि द्ध.

- ६. [प्र॰] सिय भंते ! नेराया महासवा अप्यकिरिया महावेयणा अप्यनिज्ञरा ? [उ॰] गोयमा ! नो तिणहे समहे ६।
- ७. [४०] सिय मंते ! नेरतिया महासवा अप्पिकरिया अप्पिवेदणा महानिकारा ! [उ०] नो तिणहे समट्टे ७।
- ८. [प्र॰] सिय मंते ! नेरतिया महासवा अप्यकिरिया अप्यविद्गा अप्यनिजारा ? [उ॰] णो तिणहे समट्टे ८।
- ९. [प्रo] सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेदणा महानिकारा ! [उ०] नो तिणहे समहे ९।
- १०. [प्र०] सिय भंते ! नेराया अप्पासवा महाकिरिया महावेवणा अप्पनिज्ञरा ? [उ०] नो तिणट्ठे समट्ठे १०।
- ११. [प्र०] सिय भंते ! नेरहया अप्पासचा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिखरा ? [उ०] नो तिणद्वे समट्टे ११।
- १२. [प्रo] सिय भंते ! नेराया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेदणा अप्पनिज्ञरा ? [उo] जो तिजट्टे समट्टे १२।
- १३. [प्र०] सिय भंते ! नेराया अप्पासवा अप्पिकिरिया महावेषणा महानिजारा ? [उ०] नो तिणट्रे समट्रे १३।
- १४. [प्र॰] सिय मंते ! नेरतिया अप्पासवा अप्पिकिरिया महावेदणा अप्पनिज्ञरा ? [उ०] नो तिणद्वे समद्रे १४।
- १५. [प्र०] सिय भंते ! नेराया अप्पासवा अप्पिकिरिया अप्पवेयणा महानिज्ञरा ? [उ०] नो तिणद्रे समट्रे १५।
- १६. [प्र॰] सिय मंते ! नेरहया अप्पासवा अप्पिकिरिया अप्पविषणा अप्पिनिज्ञरा ? [उ॰] णो तिणट्टे समट्टे १६। एते सोलस मंगा।
- १७. [प्र0] सिय मंते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया महावेदणा महानिज्ञरा ? [उ०] णो तिणहे समहे । एवं बढरथो भंगो भाणियद्यो, सेसा पत्ररस मंगा कोडेयद्या, एवं जाध-थणियकुमारा ।
- ६. [प्रo] हे भगवन्! नैरियको मोटा आश्रववाळा, अल्प कियाबाळा, मोटी वेदनावाळा अने अल्प निर्जरावाळा होय है [उठ] हे गीतम ! ए अर्थ समर्थ नथी.
- ७. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको मोटा आश्रववाळा, अल्प कियाबाळा, अल्प वेदनावाळा अने महानिर्नरावाळा होय ! [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी.
- ८. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको मोटा आश्रयवाळा, अल्प क्रियाबाळा, अल्प वेदनावाळा अने अल्प मिर्जरावाळा होय ! [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी.
- ९. [प्रo] हे भगवन् ! नैरियको अल्प आश्रववाळा, मोटी ऋियावाळा, मोटी वेदनावाळा अने मोटी निर्जरावाळा होय ? [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी.
- १०. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको अल्प आश्रववाळा, मोटी कियाबाळा, मोटी वेदनावाळा अने अल्प निर्जरावाळा होय? [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी.
- ११. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको अल्प आश्रववाळा, मोटी कियावाळा, अल्प वेदनावाळा अने मोटी निर्जरावाळ होय ! [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी.
- १२. हे भगवन्! नैरियंको अल्प आश्रववाळा, मोटी क्रियावाळा, अल्प वेदनायाळा अने अल्प निर्जरावाळा होय ! [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी.
- १३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको अल्प आश्रववाळा, अल्प कियावाळा, मोटी वेदनावाळा अन मोटी निर्जरावाळा होय ! [उ०] ছ अर्थ समर्थ नथी.
- १४. [प्रo] हे भगवन् ! नैरियको अल्प आस्रववाळा, अल्प कियावाळा, मोटी वेदनावाळा अने अल्प निर्जरावाळा होय? [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी.
- १५. [प्रo] हे भगवन् ! नैरियको थोडा आश्रवबाळा, थोडी कियाबाळा, घोडी वेदनाबाळा अने मोटी निर्जरात्राळा होय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी.
- १६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको अल्प आश्रववाळा, अल्प कियावाळा अल्प वेदनावाळा अने अल्प निर्जरावाळा होय ! [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे सोळ भांगा जाणवा.
- १७. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारो मोटा आश्रववाळा, मोटी कियावाळा, मोटी वेदनावाळा अने मोटी निर्जरावाळा होय ! [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे अहिं चोथो भांगो कहेवो, अने बाकीना पंदर भांगाओनो प्रतियेध करवो. एम यावत्—स्तानतकुमारो क्वां जाणदुं.

१८. [प्र०] सिय भंते ! पुढविकाश्या महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिजारा ! [उ०] हंता सिया । [प्र०] एवं जाव-सिय भंते ! पुढविकाश्या अप्यासवा अप्याकिरिया अप्यायेयणा अप्यानिजारा ! [उ०] हंता सिया, एवं जाव-मणुस्सा, वाणमंतर-जोशसिय-वेमाणिया जहा असुग्कुमारा । 'सेर्व भंते ! सेवं मंते !' ति ।

### एगूणवीसहमे सए चउन्थो उद्देसी समत्ती ।

१८. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको मोटा आश्रववाळा, मोटी कियावाळा, मोटी वेदनावाळा अने मोटी निर्जरावाळा होय ! [उ०] हा होय.—ए प्रमाणे यावन्—[प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको अन्य आश्रववाळा, अन्य कियावाळा, अन्य वेदनावाळा अने अन्य निर्जरावाळा होय ! [उ०] गौतम ! हा, होय. ए प्रमाणे यावत्—मनुष्यो सुधी जाणवुं. वानव्यंतरो, ज्योतिषिको तथा वैमानिको असुरकुमारोनी पेटे कहेवा. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

# ओगणीशमा शतकमां चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

# पंचमो उद्देसो.

- १. [प्र०] अन्यि णं भंते ! चरिमा वि नेरितया परमा वि नेरितया ? [उ०] हंता अन्धि ।
- २. [प्रव] से नूणं मंते! चरमेहिंतो नेरहपहिंतो परमा नेरहया महाकम्मतरा प चेव, महाकिरियतरा प चेव, महस्सव-तरा प चेव, महावेयणतरा प चेव; परमेहिंतो वा नेरहपिंहितो चरमा नेरहया अप्पकम्मतरा प चेव, अप्पिकिरियतरा प चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पियणतरा चेव ? [उ०] हंता गोयमा! चरमेहिंतो नेरहपिंहितो परमा जाब-महावेयणतरा प चेव, परमेहिंतो वा नेरहपिंहितो चरमा नेरहया जाव-अप्पवेयणतरा चेव। [प्रव] से केणट्टेणं भंते! प्रवं बुच्चर्-जाव-'अप्पवेय-णतरा चेव'? [उ०] गोयमा! दिति पहुच, से तेणट्टेणं गोयमा! एवं बुच्चर्-जाव-'अप्पवेदणतरा चेव'।
- ३. [प्र॰] अन्यि णं संते ! चरमा वि असुरकुमारा परमा वि असुरकुमारा० ? [उ०] एवं चेव, नवरं विवरीयं माणि-ववं, परमा अप्पकम्मा, चरमा महाकम्मा । सेसं तं चेव, जाव-थणियकुमारा ताव प्रवमेव । पुढविकाइया जाव-मणुस्सा पते जहा नेरहया । वाणमंतर-जोहसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ।
  - ध. [प्र□] कदविद्या णं अंते ! वेदणा पन्नता ? [उ०] गोयमा ! दुविद्या वेदणा पन्नता । तं जहा-निदा य अनिदा य ।

### पंचम उददशक.

चरम अने परम.

- १ [प्र०] हे भगवन्! नैरियको चरम-अल्प आयुपवाळा अने परम-अधिक आयुपवाळा छे ! [उ०] हे गातम ! छे.
- २. [प्रः] हे भगवन्! चरम नैरियको करतां परम नैरियको महावर्तम्याचा, महाक्रियायाळा, महाआस्रवयाळा अने महावेदनावाळा होय छे ! तथा परम—अधिक स्थितियाळा नैरियको करतां चरम—अन्यस्थितियाळा नैरियको अन्यकर्मवाळा, अन्यक्रियावाळा, अन्यआसन्याळा अने अन्यवेदनावाळा होय छे ! [उ०] हा गाँतम ! अन्य आयुपयाळा नैरियको करतां अधिक आयुपयाळा नैरियको यावत्—अन्य वेदनावाळा होय छे . [प्र०] हे भगवन्! शा हेनुथी एम कहो छो के यावत्—अधिक आयुपयाळा नैरियको करतां अन्य आयुपयाळा नैरियको यावत्—अन्य वेदनावाळा होय छे ! [उ०] हे गाँवम "आयुपना स्थितिने आथुपी यावत्—अन्य वेदनावाळा होय छे !
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारो अल्पआयुपयाळा अने अधिक आयुपयाळा पण होय छे ! [उ०] पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवुं. पण विशेष ए के अहा पूर्व करता विपरीन कहेवुं. अधिकआयुपयाळा असुरकुमारो [ अञ्चम कर्मनी अपेक्षाए ] अल्प कर्मवाळा, अने अल्प- आयुपवाळा असुरकुमारो महाकर्मयाळा होय छे. बाकी बधुं तेज प्रमाणे कहेवुं, यावत्—स्तिनितकुमारो सुची जाणवुं. जेम नैरियको कहा तेम पृथिवीकायिकादि यावत्—मनुष्यो सुची कहेवा, असुरकुमारोनी पेठे वानव्यंतरो, ज्योतिषिको अने वैमानिको कहेवा.
- ४. [प्र०] हे भगवन् । वेदना केटला प्रकारनी कही छे १ [उ०] हे गीतम ! वेदना **वे प्रकार**नी कही **छे, ते आ प्रमाणे—निदा**⊸ ज्ञानपूर्वक वेदना अने अनिदा—अज्ञानपूर्वक वेदना.

र ें जे नैरियकोनी मोटी स्थिति होस छे, तेने बीजा नैरियको करतो घणा अञ्चम कर्म होवाबी ते अपेक्षाए महाकमेवाळा इत्यादि क्या छे, अने जेओनी अन्य स्थिति छे तेने बीजा करतां अञ्चम कर्म थोडां होवाबी अस्य कर्मवाळा इत्यादि कथा छे-टीका.

५. [प्र०] नेरद्रथा णं भंते ! किं निवायं वेदणं वेयंति, अनिदायं जहा-पन्नवणाप जाव-'वेमाणिय' सि । 'सेवं अंते ! सेवं अंते' ! सि ।

### एगूणवीसइमे सए पंचमी उद्देसी समतो।

प्. [प्रत] हे भगवन् ! शुं नैरियको ज्ञानपूर्वक वेदनाने वेदे—अनुभवे छे के अज्ञानपूर्वक वेदनाने वेदे छे ! [उत्] हे गौतम ! \*प्रज्ञापनासूत्रमां कह्या प्रमाणे अहिं कहेंबुं. ए प्रमाणे यावत्—वेमानिको सुधी जाणबुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### ओगणीशमा शतकमां पंचम उद्देशक समाप्त.

### छट्टओ उद्देसो.

१. [प्रc] किह णं मंते ! दीवसमुद्दा ? केवहया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? किसंठिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? [उ०] एवं जहा जीवाभिगमे दीवसमुद्दुदेसो सो चेव दह वि जोइसियमंडिउदेसगवज्ञो भाणियद्वो जाव-परिणामो, जीवउचवाओ, जाव-अणंतखुसो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।

### एगूणवीसइमे मए छट्ठओ उद्देसी समत्ती।

### पष्ट उद्देशक.

१. [प्रत] हे भगवन् ! द्वीप अने गम्डो क्यां कह्या छे, हे भगवन् ! हीप समुद्रो केटला कह्या छे अने हे भगवन् ! द्वीप प्रीप अने समुद्रो समुद्रो केवा आकारे कह्या छे ? [उत्] 'जीवाभिगमस्त्रमां कहेल ज्योतिषिकमंडित उदेशक सिवाय द्वीपसमुद्रोदेशया यापत्—'परिणाम, जीवनो उपपान अने यावत्—अनंतवार'घटित वाक्य सुधी कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### ओगणीशमा शतकमां छहो उद्शक समाप्त.

### मत्तमो उद्देशो.

- १. [प्र०] केवतिया णं भंते ! असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पन्नसा ? [उ०] गोयमा ! चउसिंह असुरकुमारभव-णावाससयसहस्सा पन्नसा ।
- २. [प्र॰] ते णं भंते ! किंमया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! सञ्चरयणामया, अच्छा, सण्हा, जाव-पटिरुवा । तत्थ णं यहचे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति, विउक्कमंति, चर्यति, उववर्ज्जति । सासया णं ते भवणा दघट्टयाए, वन्नपज्जर्वाहं, जाव-फासपज्जर्वाहं असासया, एवं जाव-थणियकुमारावासा ।

### मप्तम उद्देशक.

१. [४०] हे भगवन् ! असुरकुमारोना भवनावासो केटला लाख कता छे ८ [४०] हे गातम ! असुरकुमारोना मधनावासो चौसट लाख कहा छे.

त्यसायाको अने विमानायामी

२. [४०] हे भगवन् ! ते भवनावामो केथ! छे ! [४०] हे गीतम ! ते भवनावासो सर्थस्त्रम्य, स्वन्छ, सुंवान्य, यावत्-प्रांतर प-सुन्दर छे. अने त्यां धणा जीवो अने पुद्रन्थे उपने छे अने विनास पामे छे, तथा न्यव छे अने उपने छे. ते भवनो द्रव्यायिक पण साधत छे अने वर्णपर्यायोवडे यावत्-स्पर्शपर्यायोवडे अशाश्वत छे. ए प्रमाणे यावत्-स्तनित्रकुमारो सुधी जाणबुं.

- ५ ें निया-जानपूर्वक अथवा सम्यन्विनेकपूर्वक अने अनिया-अज्ञानपूर्वक अथवा सम्यागियंकशन्यपण वेदना-सुमदु, खादिना अनुभव यम्भी, तेमा नारकोने बन्ने प्रकारनी वेदना होय छे. जेओ असंशीधी आबी उपपन्न थयेना छे तेने निदा वेदना होय छे अने जेओ असंशीधी आबी उपपन्न यये अ छ तेने अनिया वेदना होय छे. ए प्रमाणे असुम्युनारादि देवोने पण जाणवुं. पृथिवीकायादिशी मांशी चर्चा दिय सुधीना जीवोने मात्र अनिदा वेदना हो। छे प्रचान्त्रय तिर्यंच, मनुष्य अने बानव्यंतरने नारकोनी पेटे बंग प्रकारनी वेदना होय छे ज्योतिषिक अने बमानिकने पण बन्ने प्रकारनी वेदना होय छे, प्रमाणे देवों के तेशो अनिया-सम्यक्षिवेकरित्रपणे वेदना वेदे छे अने जेओ अमायी सम्यग्ध देवों के तेशो अनिया-सम्यक्षिवेकरित्रपणे वेदना वेदे छे अने जेओ अमायी सम्यग्ध देवों के तेशो अनिया-सम्यक्षिवेकरित्रपणे वेदना वेदे छे अने जेओ अमायी सम्यग्ध है ते निदा-सम्यक्षिवेकरित्रपणे वेदना वेदे छे. जुओ-प्रजाण पद ३५ प० ५५६-५७.
- 9 ी परिणामसंबंधे 'हे भगवन्! वथा द्वापरासुद्दी द्युं प्रथिवीना परिणासस्य छे' !—जीवना उपपात शबन्धे 'हे भगवन्! द्वापरासुद्दीमा भर्च जीवे। प्रथिवीकायिकादिपणे पूर्वे उत्पन्न थया छे' !-ए वजे वाक्यो गौतम स्वामीना प्रश्नरूपे छे, अने अनन्तवार संबन्धे 'हा गौतम ! अनेकवार अथवा 'शनंतवार' उत्पन्न थया छे'-ए वाक्य भगवान् महावीरता उत्तररूपे छे. जुओ-जीवाभि० प्रति० ३ प० ३७३.

- ३. [प्र०] केवतिया णं भंते ! वाणमंतरभोमेज्ञनगरावाससयसहस्सा पन्नसा ! [उ०] गोयमा ! असंखेजा वाणमंतर-भोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पन्नसा ।
  - ध. [प्र॰] ते णं भंते ! किमया पन्नता ? [उ॰] सेसं तं चेव ।
  - ५. [प्रठ] केवतिया णं भंते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! असंखेजा जोइसिय० ।
  - इ. [प्रo] ते णं भंते ! किंमया पन्नता ? [उ०] गोयमा ! सबकालिहामया, अच्छा, सेसं तं चेव ।
- ७. [प्र॰] सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पश्चता ? [उ॰] गोयमा ! वत्तीसं विमाणावास-सयसहस्सा पश्चता ।
- ८. [प्र॰] ते णं भंते ! किंमया पन्नता ? [उ॰] गोयमा ! सष्टरयणामया, अच्छा, सेसं तं चेव जाव-अणुत्तरिवमाणा, नवरं जाणेयद्या जन्य जित्तया भवणा विमाणा वा । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

### एगूणवीसइमे सए सत्तमो उद्देसो समत्तो ।

- ३. [प्र०] हे भगवन ! वानव्यन्तरोनाः भूभिनी अन्तर्गत केटला त्याच नगरी कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! वानव्यन्तरोनाः भूमिनी अन्तर्गत असंख्याता नगरी कह्या छे.
  - ४. [प्रत] हे भगवन् ! ते वान यन्तरना नगरो केवां छे : [30] पूर्व प्रमाणे वाकीनुं बधुं छे.
- ५. [४०] हे भगवन् ! ज्योतिधिकना केटला लाख विमानावासो कह्या छे ? [उ०] हे गीतम ! ज्योतिधिकना असंस्य लाख विमानावासो कह्या छे .
- ६. [प्र०] हे समवन ! ते विमानावासी केवा छे / (उ०) हे गैतिम ! ते विमानावासी वधा स्फटिकमय अने स्वन्त छे. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवं.
  - ७. [प्र०] हे गमन ! सीवर्म कल्पमा केटल लाख विमानायासी कत्या छे १ [३०] हे गीतम ! त्यां वत्रील लाख विमानापासी कह्या छे.
- ८. [प्रच् ] हे भगवन ! ते बधा विमानावासी केवा छे ' [उच्च ] हे गातम ! ने वधा मर्ब रक्षमय अने स्वच्छ छे. बाकी बधुं पूर्व प्रमाण यायत्-अनुत्तरिकान सुधी जाणत्, विशेष ए के व्या जटारां मधनों के विभानी होय त्यां तेटलां कहेवा. 'हे भगवन् ! ने एमज छे'.

### ओंगणीशमा शतकर्मा सप्तम उदेशक समाप्त.

# अहमो उद्देशी।

- १. [प्र०] कतिविद्या णं भंते ! जीवनिश्वर्ता पन्नता ? [उ०] गोयमा ! पंचविद्या जीवनिश्वर्ता पन्नता, तं जहा-एगिदिय-जीवनिश्वर्ता, जाव-पंचिदियजीवनिश्वर्ता ।
- २. [प्र०] र्णगदियजीवनिवर्त्ता णं भेते ! कतिविद्वा पत्रत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविद्वा पप्तत्ता, तं जहा-पुढविकाइय-पर्गिदियजीवनिवर्त्ता, जाव-वणस्सद्दकाइयपर्गिदियजीवनिवर्ता ।
- ३. [प्र०] पुढिविकाइयर्णांगिदियजीविनद्यत्ती णं भेते ! कतिविहा पस्नता ? [उ०] गोयमा ! वुविहा पश्नता, तं जहा सुहुमपुढिविकाइयर्णांगिद्यजीविनद्यत्ती य वादरपुटिवि०, एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा वङ्गगवधी तेयगसरीरस्स, जाव-

### अप्टम उद्देशक.

दीशनपृत्ति,

- १. (प्रच] हे गगान : जीवांगर्शन केटल प्रकारमी कही छै : (उ०) हे गीतम ! जीवांगर्शन पांच प्रकारमी कही **छे, ने आ** प्रमाण - एकेन्द्रियमी संग्रहीन, यावत⊖पंचेन्द्रियमीवंश्वित्त.
- २. [प्रार] हे मगवन ! एकेन्द्रियाजीवनिर्दृत्ति वेटला प्रकारनी कही छे ( (उरु) हे गीतम ! पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-पृथिवीम यिक एकेन्द्रिय जीवनिर्दृत्ति, यावत वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय जीवनिर्दृत्ति.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथितीकाधिक एकेन्द्रिय जीवनिर्शति केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गीतम ! वे प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे–मृद्गपृधियीकाधिक–एकेन्द्रिय जीवनिर्शति अने बादर पृथियीकाधिक - एकेन्द्रियजीवनिर्शत्ति. ए प्रमाणे ए पाठ वडे महदू बंधना अधिकारमां जेम विजसशरीरनो भेद कही छे तेम अहि कहेवी. यावत्–[प्र०] हे भगवन् ! सर्वार्थसिक अनुत्तरीपपानिक वैमानिक

३ मिग० खे० ३ शा० ८ उ० ९ पृ० ११२. अज्ञा० पद २१ प० ४२५.

- [प्र०] 'सम्रद्वसिद्धअणुक्तरोयवातियकण्पानीतवेमाणियदेवपंचिदियजीवनिश्वक्ती णं मंते ! कितिविहा पश्चता ? [उ०] गोयमा ! दुविहा पश्चता, तं तहा—पज्जक्तगसप्रद्वसिद्धअणुक्तरोववानिय—जाव—देवपंचिदियजीवनिश्वक्ती य अपज्जक्तमश्चद्वसिद्धअणुक्तरोववानिय—जाव—देवपंचिदियजीवनिश्वक्ती य'।
- ध. [प्र०] कतिविद्दा णं भंते ! कम्मनिष्ठची पन्नचा ? [उ०] गोयमा ! अट्टविद्दा कम्मनित्रची पन्नचा, नं जहा–नाणा-वरणिज्ञकम्मनिष्ठची, जाव-अंतराइयकम्मनिष्ठची ।
- ५. [प्र॰] नेरइयाणं भंते ! कतिविद्दा कम्मनिष्ठत्ती पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! अट्टविद्दा कम्मनिष्ठत्ती पन्नत्ता, नं जहर-नाणावरणिज्ञकम्मनिष्ठत्ती, जाव-अंतराइयकम्मनिष्ठत्ती, एवं जाव-वेमाणियाणं ।
- ६. [प्र॰] कतिविद्या णं भंत ! सरीरनिष्ठत्ती पश्चता ? [उ॰] गोयमा ! पंचविद्या सरीरनिष्ठत्ती पश्चना, नं जद्या -ओरा-लियसरीरनिष्ठत्ती, जाव कम्मगसरीरनिष्ठती ।
  - ७. [प्र०] नेरहयाणं भंते !० ? [उ०] एवं चेव, एवं जाय वेमाणियाणं । तवरं नायक्षं जस्स जह सरीराणि ।
- ८. [प्र॰] कडविहा णं भंते ! साँछदियनिष्ठत्ती पन्नता ! [उ॰] गोयमा ! पंचविहा साँवदियनिष्ठत्ती पन्नता, तं जहा सोइदियनिष्ठत्ती, जाव फासिदियनिष्ठत्ती, एवं जाव नेरडया णं), जाव धणियकुमाराणं।
- ९. [प्र०] पुढविकादयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगा फासिदियनिष्ठत्ती पञ्चत्ता, एवं जम्म जद्द हेदियाणि, जाव--वैमाणियाणं ।
- १०. [प्र०] कहविहा णं भेते ! भासानिष्ठची पश्चचा ? [उ०] गोयमा ! चउष्ठिहा भासानिष्ठची पश्चचा, तं जहा–सद्या-भासानिष्ठची, मोमाभासानिष्ठची, सद्यामोसभासानिष्ठची, असद्यामोसभासानिष्ठची । एवं एगिदियवज्ञं जस्य जा भासा जाव–वेमाणियाणं ।
- १२. [त्र०] कड़ियहा णं भंते ! मणनिव्वत्ती पद्मता ? [उ०] गोयमा ! वउद्यिहा मणनिव्वत्ती पञ्चतः, तं जहा १ सम्ब-मणनिव्यत्ती, जाव--असम्बामोसमणनिव्यत्ती । एवं गगिदियविर्गालंदियवज्ञं जाय-वेमाणियाणं ।
- १२. [प्र०] कद्दविद्या णं भंते ! कसायनिद्यत्ती पन्नता ? [उ०] गोयमा ! चउद्विद्या कसायनिद्यत्ती पन्नता, तं जहा— कोहकसार्यानदत्ती, जाव-टोभकसायनिद्यत्ती, एवं जाव-वंमाणियाणं ।

देवपंचिन्दिय जीर्यानर्युत्ति केटल प्रकारे कही छे ( |उ.०] हे गीतम ! वे प्रकारे वर्ध छे, ते आ प्रमाणे—भर्षाध सर्वार्यसिङ अनुक्तरीप-गांगिक याप्रत्— देवपंचिन्द्रियजीर्यानर्युत्ति अने अपर्याप सर्वार्थासङ अनुक्तरीपपालिक यायत्—देवपंचेद्रिय जीवनिर्युक्ति

४. (प्रार्त) हे मगवन् ! कर्मान्वित्ति केटला प्रकारनी कही छे ? (उरु) हे गौलम ! कर्मनिर्धत्ति आठ प्रकारनी कही छे, ते आ वर्मनिर्धत्ति प्रमाणे–१ क्रानावरणीय कर्मान्वित्ति, यावत्–अवराय कर्मनिर्वति.

प. [४०] है भगतम् ! नेरियकोने केटचा प्रकारनी कर्मान्वित्ति कही छै, [३०] है पोतम ! आट प्रकारनी कर्मनिवृत्ति कही छै, ते आ प्रमाणे १ ज्ञानावरणीय कर्मनिवृत्ति, यावत् ८ अन्तराय कर्मनिवृत्ति, ए प्रमाणे यावत्—वेमानिक सुधी जाणव्.

६. [प्र०] हे समयत ! शरीरनिर्दात्त केटला प्रकारनी कही है ? [३०] हे गैतिस ! शरीरनिर्दात्त पाच प्रकारना कही है, ते आ अधननिर्दार प्रमाणे—१ अँदारिकशरीर्निर्दत्ति थावत्—५ कार्यगरीरिनिर्दत्ति.

७. [प्र०] हे मगवत् ! निर्मिकोने शरीरिविश्वीत्त शिटला प्रकारनी छे / [४०] पूर्व प्रमाणे जाणतुः तथा एप्रमाणे वावद् वैधानिकोने जाणतुः विशेष ए के, जेने जेटलां शरीरी होष तेने नेटलां कहेवां.

८. [४०] हे भगवन् ! सर्वेन्द्रियनिर्देश्ति केटल प्रकारमी कही छे १ [७०] हे गैतिम ! सर्वेन्द्रियनिर्देशि पास प्रकारमी वही हे , ते - स्वेन्द्रियनिर्देशिक आ प्रमाणे -श्रोत्रेन्द्रियनिर्देशि यावत्-स्पर्वेन्द्रियनिर्देशिक प्रमाणे निर्विको यावत्-स्पर्वेन्द्रियानिर्देशिक प्रमाणे निर्विको यावत्-स्पर्वेन्द्रियनिर्देशिक प्रमाणे निर्विको यावत्-स्पर्वेन्द्रियनिर्देशिक प्रमाणे निर्विको यावत्-स्पर्वेन्द्रियनिर्देशिक प्रमाणे निर्विक स्वतिक स्वतिक

९. [प्रच] हे समयन् ! पृथियीकायिकोने केटली इन्द्रियनिर्वृत्ति कही छे / [उच्च] हे मैश्तम ! तेओने एक स्पर्वेन्द्रियनिर्वृत्ति कही छे. ए प्रमाणे जैने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली इन्द्रियनिर्वृत्ति कहेती. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको सुधी जाणतुं.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! भाषानिईत्ति केटल प्रकारनी कही छे ! [उ०] हे गौतम ! भाषानिईत्ति चार प्रकारनी कही छे, ते आ अवनिरंधिः प्रमाणे-१ संस्थापानिईत्ति, २ मृषाभाषानिईत्ति, ३ संस्थमृषाभाषानिईत्ति अने ४ असल्यामृषाभाषानिईत्ति. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय शिक्षाय यावत्-वैमानिको सुधी जैने जे भाषा होय तेने तेटली भाषानिईत्ति कहेवी.

११. [प्र०] हे भगवन्! मनोनिर्वृत्ति केटला प्रकारनी कही छे ! [उ०] हे गौतम ! मनोनिर्वृत्ति चार प्रकारनी कर्ष छे. ते आ प्रमाणे— मनोनिर्वृत्तिः संस्थमनोनिर्वृत्ति यावत्—असत्साऽमृषामनोनिर्वृत्ति. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय अने विकलिन्द्रिय सिवाय बाकी बना माटे यावत्—वैगानिको सुधी जाणवुं.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! कवार्यानर्शृत्ति केटला प्रकारनी कही छे ! [उ०] हे गोतम ! कपार्यानर्शृत्ति चार प्रकारनी कही छे, ते अपायनिर्शृत्ति आ प्रमाणे—फ्रोधकषायनिर्शृत्ति, यावत्—लोभकषायनिर्शृत्ति. ए प्रमाणे—यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं.

- १३. [प्र०] कर्विद्या णं भंते ! वस्ननिष्ठत्ती पश्चता ! [उ०] गोयमा ! पंचविद्या वस्ननिष्ठत्ती पश्चता, तं जहा-कालका-निष्ठत्ती, जाव-सुक्किलवस्ननिष्ठत्ती, पर्य निर्यसेसं जाव-वेमाणियाणं । पर्य गंधनिष्ठत्ती दुविद्या जाव-वेमाणियाणं । एसनि-ष्ठती पंचविद्या जाव-वेमाणियाणं । फासनिष्ठत्ती अट्टविद्या जाव-वेमाणियाणं ।
- १४. [प्र॰] कतिविद्वा णं भंते ! संटाणनिवसी पन्नसा ! [उ॰] गोयमा ! छिन्नदा संटाणनिवसी पन्नसा, तंजदा-सम-चउरंससंटाणनिवसी, जाव हुंडसंटाणनिवसी ।
  - १५. [प्र0] नेरइयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगा हुंडसंटाणनिष्ठत्ती पन्नता ।
- १६. [प्रc] असुरकुमाराणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगा समचउरंससंठाणनिवसी पन्नसा, एवं जाव-थणिय-
- १७. [प्र०] पुढविकाइयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगा मस्रचंदसंठाणनिष्ठत्ती पन्नत्ता, एवं जस्स जं संठाणं जाव-वेमाणियाणं ।
- १८. [प्र०] कद्दविद्या णं भंत ! सन्नानिष्ठत्ती पद्मत्ता ? [उ०] गोयमा ! चउविद्या सन्ना निव्वत्ती पन्नत्ता, तं जहा-आहा-रसन्नानिव्वत्ती, जाव-परिग्गहसन्नानिवर्त्ता, एवं जाव-वेमाणियाणं ।
- १९. [प्र०] कइविद्या णं भंते ! लेस्सानिष्ठत्ती प्रवत्ता ? [उ०] गोयमा ! छिष्ठद्दा लेस्सानिष्ठत्ती पन्नता, तं जहा– कण्हलेस्सानिष्ठत्ती, जाव- सुकलेस्सानिष्ठत्ती, पत्रं जाव–वेमाणियाणं जस्म जद्द लेस्साओ ।
- २०. [प्र०] कद्दविद्दा णं भंते ! दिर्द्वानिष्टर्सा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविद्दा दिट्टीनिष्ठत्ती पन्नत्ता, तंजहा–सम्मा-दिद्दिनिष्ठती, मिच्छादिद्विनिष्टत्ती, सम्मामिच्छदिर्द्वानिथर्त्ता । एवं जाव–वेमाणियाणं जस्स जद्दविद्दा दिट्टी ।
- २१. [२०] कतिविदा णं भंते ! णाणनिवसी पन्नसा ! [उ०] गोयमा ! पंचविद्या णाणनिवसी पन्नसा, तं जहा-आभि-णियोहियणाणनिवसी, जाव-केवलनाणनिवसी । एवं प्रिंगिदियवर्ज्ञ जाव-वेमाणियाणं जस्स जइ णाणा ।
- २२. [प्र०] कतियिहा णं भंते ! अञ्चाणनिवर्त्ता पन्नता ? [उ०] गोयमा ! तिविष्टा अञ्चाणनिवर्त्ता पन्नत्ता, तं जहा-मइ-अञ्चाणनिवर्ता, सुयअञ्चाणनिवर्त्ता, विभंगनाणनिवर्त्ता । एवं जरुस जइ अञ्चाला जाव-वेमाणियाणं ।

वर्णनिसृत्तः

{३. [४०] हे भगवन्! वर्णानवृत्ति केटल प्रकारनी कही छे ′ [उ०] हे गीतम! वर्णानवृत्ति पाँच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे काळावर्णनी निर्वृत्ति, यावत−केतदर्णनी निर्वृत्ति. ए प्रमाणे सघळुं यावत्⊬वेमानिको सुधी जाणवुं. एम वे प्रकारनी गंधानवृत्ति, यांच प्रकारनी स्मनिर्वृत्ति अने आठ प्रकारनी रपर्वानिवृत्ति यावत्-वेमानिक सुधी कहेवी.

सं**स्थानांन**न्यन

- १४. [प्र०] हे भगवन ! संस्थाननिर्शत्त केटला प्रकारे कही छै : [उ०] हे गीतम ! संस्थाननिर्शत्त छ प्रकारनी कही छै, ते आ प्रमाण-समञ्जूरसरंस्थाननिर्शत्त, यावत्—हुटसंस्थाननिर्शत्त.
  - १५. [प्रत] हे गगवन् ! नैर्रायकोंने केटली संस्थानांगवृत्ति हे ( (४०) हे गीतम ! नेओने एक हुंडगंस्थानांगवृत्ति कही हे.
- १६. (४०) हे मगवर् ! असुरकुमारी संबधे प्रश्न. [उ०) हे गीतम ! तेओने एवा समचतुरस्रतस्थानांनर्वृत्ति छे. ए प्रमाणे यात्रस्— स्तर्गितकुभारी सुधी जाणबुं.
- १७. [য়०] हे समयन ! पृथिवीकायिकोने आश्रयी प्रश्न. (उ०) हे गीतम ! तेओने एक मसूर अने चंद्राकारसंस्थानांनर्शृत्ति छे. एम जैने जे संस्थान होय तेस ने यावत्—वमानिको सुधी जाणातुं.

संज्ञानिपृत्ति.

१८. (४०) हे भगवन् ! गंडानिर्वृत्ति केटण प्रकार कहा छे ! [३०] हे गीतम ! संज्ञानिर्वृत्ति चार प्रकारे कहा छे, ते आ प्रमाणे— १ आहाररांडानिर्वृत्ति, यावत्—४ परिप्रहराजानिर्वृत्ति. ए गंति यावत्—वैमानिको सुवी जाणतु.

हेर्यानिष्ट्रानि.

१८. [४०] हे मगदन्! छेश्यानिर्वृत्ति केटल प्रकारं कहा छे १ [३०] हे गातम ! छेश्यानिर्वृत्ति छ प्रकारे कही छे, ते आ प्रमाणे – १ कृष्णलेखानिर्वृत्ति, यायत्–६ शुक्रलेखानिर्वृत्ति. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको सुधी जैने जे छेश्या होय ते तेन छेश्यानिर्वृत्ति कहेवी.

ट्टिनिवृत्तिः.

२०. [प्र०] हे भगवन ! द्रार्थान्द्रीत्त केटला प्रकारे कहा छे ! [उ०] हे गोतम ! द्रार्थान्द्रीत्त प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे— १ सम्बग्दर्शिन्द्रीत, २ मिथ्यादर्शिनर्द्रीत अने ३ सम्यग्मिथ्याद्रप्रिनिद्रीत. ए प्रमाणे यावन्—वैमानिको सुधी जेने जे दृष्टि होग तेने ते दृष्टिनिर्दृत्ति कहेवी.

बार्नानर्वृतिः

२१. [प्र०] हे सगयन ! झानिनिन्ति केटला प्रकार कही छे : [उ०] हे गीतम ! झानिर्निन पांच प्रकारती कही छे, ते आ प्रमाण-१ आधिनियोधिकज्ञानिर्वृत्ति, यायत्-५ केवलझानिर्वृत्ति. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवाय यावत्-वैमानिको सुधी जेने जेटलां ज्ञान होय तेने तेटलां निर्वृत्ति कहेवां.

अज्ञाननिवृत्ति.

२२. [प्र०] हे भगवन्! अज्ञानिर्वृत्ति केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! अज्ञानिर्वृत्ति त्रण प्रकारे कही छे, ते आ प्रमाणे—१ मनिअज्ञानिर्वृत्ति, २ श्रुतअज्ञानिर्वृत्ति अने ३ विभंगज्ञानिर्वृत्ति. ए प्रमाणे यायत्—वैमानिको सुधी जेने जेटला अज्ञानो होय तेने तेटली अज्ञानिर्वृत्ति कहेवी.

२६. [प्र०] कहिष्टा णं मंते ! जोगनिवसी पत्रसा ? [७०] गोयमा ! तिथिष्टा जोगनिवसी पत्रसा, तं जहा-मणजोग-निवसी, वयजोगनिवसी, कायजोगनिवसी । एवं जाव-वेमाणियाणं जस्स जहिष्टो जोगो ।

२४. [प्र०] कद्दविद्वा णं भंते ! उवओगनिवसी पन्नसा ! [उ०] गोयमा ! दुविद्वा उवओगनिवसी पन्नसा, तं जहा-सागारोवओगनिवसी, अणागारोवओगनिवसी । एवं जाव-वेमाणियाणं । [ अत्र सङ्गृहणीगाथे वाचनान्तरे- ]

"जीवाणं निष्ठत्ती कम्मप्पगडी सरीरनिष्ठत्ती । सिंहिदियनिष्ठत्ती भासा य मणे कसाया य ॥ बन्ने गंधे रसे फासे संठाणविद्दी य होइ बोद्धद्यो । लेसा दिट्टी णाणे उवजोगे चेव जोगे य"॥ 'सेवं भंते ! 'सेवं भंते' ! त्ति ।

### एगूणवीसइमे सए अडमो उदेसी समनी।

२३. [ब्र०] हे भगवन् ! योगनिर्दृत्ति केरण प्रकारे कही छे ∴ [उ०] हे गौतत ! योगनिदृत्ति त्रण अवारे कही छे, ते आ प्रभाणे— १ मनोयोगनिर्दृत्ति, २ त्रचनयोगनिर्दृत्ति अने ३ काययोगनिर्दृत्ति. ए रीते यावद्∹वैमानिको सुधी ोने जेटला योगो होय तेने तेटली योगनिर्दृत्ति कहेगी.

जपथोग**ितृं**सि.

योगनिर्भृतिः

२४. [प्र०] हे भगवन्! उपयोगनिर्धृति केटल प्रकारे कही छे ८ [उ०] हे गैतिम ! उपयोगनिर्धृति के प्रकारनी कही हे, ते अह प्रमाण-साकारोपयोगनिर्धृति अने निराकारोपयोगनिर्धृति. ए प्रमाण यावत्-वेमानिको सुधी जालगुं. अहि बीजं। वाचनामां बे संग्रहगायाओं छे.—"१ जीव, २ कर्मप्रकृति, ३ हारीर, ४ सुर्वेद्धिय, ५ भाषा, ६ मन् ७ कपाय, ८ वर्ण, २ गंध, १० रस, ११ स्पर्ध, १२ सम्भाद, १३ हेस्या, १४ हिंग, १५ ज्ञान, १६ उपयोग अने योग ए बधानी निर्वृत्ति आ उद्याकमां कही छे." 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.

#### ओगणीशमा शतकमां अष्टम उद्देशक समाप्त.

### नवमो उदेसो ।

- १. [प्रव] कडविहे णं भंते ! करणे पण्णते ? [उ०] गोपमा ! पंचविहे करणे एक्से, तं जहा-१ दधकरणे, २ खेसक-रणे, ३ कालकरणे ४ भवकरणे, ५ भावकरणे ।
- २. [प्रव] नेरइयाणं भंत ! कतिविहे करणे पक्षचे ? [उ व] गोयमा ! पंचिविहे करणे पन्नचे, तं जहा-दखकरणे, जाव-भावकरणे । एवं जाव-चेमाणियाणं ।
- ३. [प्र०] कतिबिंह णं भंते ! सर्गारकरणे पश्चते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे सर्गाग्करणे पश्चते, नं जहा -१ ओरालिय-सर्गारकरणे, जाव- कम्मगमरीरकरणे । एवं जाव-वेमाणियाणं जस्म जह सरीगणि ।
  - ध. [प्र०] कड्बिहे णं भंते ! इंदियकरणे पन्नते ? [उ०] गोयमा ! पंचिवहे इंदियकरणे पन्नते, तंजहा—सोइंदियक-

### नवम उद्देशक.

- १. [प्रo] हे मगवन् ! \*करण केटला प्रकारे कह्यं छे ? [उठ] हे गीतम ! करण पांच प्रकारे कह्यु छे, ते आ प्रमाणे- १ द्वव्य-करण, २ क्षेत्रकरण, ३ कालकरण, ४ भवकरण अने ५ भावकरण.
- २. [प्रo] हे भगवन् ! नैरियकोन केटण प्रकारनुं करण कह्युं छे ? [उ o] हे गौतम ! तेओने पांचे प्रकारनुं करण कह्युं छे, ते आ प्रमाण-१ द्रव्यकरण, यावत्-भावकरण, ए प्रमाण यावत्-वेमानिको सुधी जाणनुं.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! अरीरवरण केटल प्रकारमुं कर्षा छे ! [उ०] हे मौतम ! हारीरवरण पांच प्रकारमुं कर्षा छे, ते आ प्रमाणे— १ औदारिकशरीरकरण, यावत् ५ कार्मणशरीरकरण. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिकी सुधी जाणगुं. जेने जेटलां शरीरो होय तेने तेटल शरीरकरणो कटेवा.

शरीरकार™.

थ. [प्र०] हे भगवन् ! इंद्रियकरण केटाश प्रकारतुं कर्ष्युं छे १ [उ०] हे गीतम ! ईद्रियकरण पांच प्रकारतुं कर्षुं छे, ते आ । अदियकरण

- १ \* जे वटे वराय ते वरण—िव्याने साधन अथवा करत्रे ने करण, आ बीजी ज्युत्पात्त प्रमाणे करण अने निवास्त एक ज गई जले जन न जाणत् कारण के करण ए आरंभिकियास्य छे अभे निर्मास कार्यनी समाधिस्य छे. नेना पांच प्रकार छे—१ इत्यस्य दानरण। वर्गरे वरण ने इत्यस्यम्य झालाकादि इत्यावडे कटादि इत्यनुं करतुं ते इत्यकरण, २ क्षेत्रस्य करण, अथवा झालिक्षेत्राणिनुं करण, अथवा क्षेत्रहारा साध्यायनुं करतुं ते क्षेत्रकरण, २ वालम्य करण, अथवा काळनुं, काळवडे अथवा काळमां करतुं ते काळकरण अनारकादि अवस्य करण ने अवकरण ए प्रमाणे ५ भावकरण सवन्धे पण जाणतुं —टीका
- \* अहिं उ पुरतक्षमां करणसंबन्ध वे संप्रहणी गाथा आपेत्री छे, तेनो अर्थः—१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भय, ५ भाव, ६ शरीर, ७ विष्ट्रं ३ भाषा, ९ मन, ९० क्षाय, ११ समुद्धान, १२ संज्ञा, १३ छेद्या, १४ टिंट, १५ वेद, १६ प्राणातिपान, १७ पुद्रल, १८ वर्ण, १९ संघ, २० रम, २१ स्पर्स अने १२ संस्थान-ए षावीश करण छे.

रणे, जाब-फासिदियकरणे। एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जह इंदियाइं। एवं एएणं कमेणं भासाकरणे चउिष्ठहे, मणकरणे चउिष्ठहे, कसायकरणे चउिष्ठहे, समुग्वायकरणे सन्तिविहे, सन्नाकरणे चउिष्ठहे, लेसाकरणे छिष्ठहे, दिट्ठीकरणे तिथिहे, थेव-करणे तिथिहे एक्से, तं जहा-१ इन्धिवेदकरणे, २ पुरिसवेदकरणे, ३ नपुंसगवेदकरणे। एए सष्टे नेरायादी दंडणा जाब-वेमाणियाणं जस्स जं अन्थि तं तस्स सर्व भाणियवं।

- ५. [प्रत] कतिविहे णं भंते ! पाणाइवायकरणे पन्नते ? [उत] गोयमा ! पंचिवहे पाणाइवायकरणे पन्नते, तं जहा--पर्गिदियपाणाइवायकरणे. जाव-पंचिदियपाणाइवायकरणे । एवं निरुवसेसं जाव-वैमाणियाणं ।
- द. [प्र०] कइविहें णं भंते ! पोग्गलकरणे पश्चते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पोग्गलकरणे पश्चते, तं जहा-१ वश्वकरणे, ६ गंधकरणे, ३ रमकरणे, ४ फासकरणे, ५ संठाणकरणे ।
- ७. [प्र॰] वन्नकरणे णं भंते ! कतिविहे पन्नते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पन्नते, तं जहा-कालवन्नकरणे, जाय-सुकि-ह्यप्रकरणे, एवं भेदो, गंधकरणे दुविहे. रसकरणे पंचिद्धे, फासकरणे अट्टविहे ।
- ८. [प्र॰]संटाणकरणे णं भंते ! कितिवहे पस्ने ! [उ॰] गोयमा ! पंचिवहे पद्यत्ते, तं जहा परिमंडलसंटाणकरणे, जाय-आयतसंटाणकरणे । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति जाय विहरति ।

### एगूणवीसइमे सए नवमा उदेसी ममत्तो ।

प्रमाण - १ श्रोत्रेन्द्रियकरण, यावत् ५ रपहेन्द्रियकरणः ए प्रमाण यावतः-वैमानिको सुधी जेने जेटली इंद्रियो होय तेने तेटला इंद्रियकरणो कहेवा. एम ए कमवंड चार प्रकारे भाषाकरण, चार प्रवारे मनकरण, चार प्रकारे कपायकरण, सात प्रकारे समुद्धानकरण, चार प्रकारे राज्ञाकरण, छ प्रकारे राज्ञाकरण, अने वण प्रकारे द्राधाकरण, अने वण प्रकारे द्राधाकरण, अने वण प्रकारे द्राधाकरण, ए सम्बु नेरायकीयी माडी यावत्—वेमानिको सुधी जेने जे होय तेने ते बधु कहेवु.

**प्राणाति**पानकरः।

५. [प्र०] हे भगवन् ! प्राणानिपातकरण केटला प्रकारे कहां हे ! [उ०] हे गैतिम ! प्राणानिपातकरण पांच प्रकारे कहां हे, ते आ प्रमाण-१ एकेन्द्रियप्राणानिपातकरण, यावन्-पंचेन्द्रियप्राणानिपातकरण, ए प्रमाणे सवर्तुं यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुः

पुक्रलकर्ण-

६. [प्र०] हे मगवर् ! पुद्रत्वतम्य कंटम्य प्रकारे कह्य छे ? (५०) हे गीतम ! पुद्रत्वकरण पांच प्रकारे कहा छे, ते आ प्रमाणे— १ वर्णवरण, २ गंधकरण, ३ रसकरण, ४ स्पर्शकरण अने ५ संस्थानकरण.

वर्णेक्र भ

७. (प्रत्रे हे भगवन् ! वर्णकरण केटला प्रकारने क्या छे : [उत्रो हे गीतम ! वर्णकरण पांच प्रकारने कहाँ छे, ते आ प्रमाणे-१ कृष्णवर्णकरण, यावत्- ५ धेतवर्णकरण, ए प्रमाण पुक्रकवरणना वर्णादि भेदी कहेवा. एम वे प्रकारे गंधकरण, पांच प्रकारे रसकरण अने आठ प्रकारे स्पर्यकरण छे.

**संस्**यानकरण.

८. पि०} हे भगवन् ! सम्थानकरण केटल प्रकारे कुछुँ छैं ? [उ४] हे गीतम ! संस्थानकरण पाच प्रकारे कहाँ छे, ते आ प्रमाणे— १ परिमेडल्टनम्थानकरण, यावत्- २ आयतसंस्थानकरण, कि समान् ! ते प्याज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे—एम कही यावत्--विहरे छे.

### ओगर्णाश्रमा शतकमां नवम उदेशक समाप्त.

### दसमो उद्देगो.

१. [प्र०] वाणमंतरा णं भंते ! सबे समाहारा०- एवं जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसओ जाव-'अप्पिड्डिय'सि । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।

### एगृणवीमइमे सए दसमी उद्देमी समत्तो । एगृणवीमतिमं सयं समत्तं।

### दशम उद्देशक.

१. [अं०] हे मगवन्! यथा वानव्यन्तरो समानआहारवाटा होग छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गातम! 'सोळमां शतकना द्वीपकु-मारोदेशकमां कह्या प्रमाणे वावत्-'अव्याधिक मुधी जाणवुं. हि सगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.'

# ओगणीशमा शतकमां दशम उद्देशक समाप्त-

# ओगणीशमुं शतक समाप्त.

<sup>ै</sup> १ अल्पर्दिक संबन्धं आ प्रमाण उद्देश हे—'हे भगवन् । कृष्णठेदयावाळा यावत्— तेजोलेदयावाळा बानव्यंतरीमां भोण कोनाधी अन्पर्दिक छे के महार्दिक छे ! हे गीनम ! कृष्णठेदयावाळा करतां नीललेदयावाळा वानव्यंतर महार्दिक छे, यावत्—सर्वशी महार्दिक तेजोलेदयावाळा वानव्यंतर छे. जुओ—भगव संव ४ द्वाव १६. उव ११ पृव २७ सूव ३.

# वीसइमं सयं।

### १ बेइंदिय २ मागासे ३ पाणवहे ४ उत्रचए य ५ परमाणू। ६ अंतर ७ वंधे ८ भूमी ९ चारण १० सोवक्कमा जीवा॥

### पढमो उद्देसो.

- १. [प्र॰] रायगिहे जाय-एवं वयासी-सिय भंते ! जाव-चत्तारि पंच वेंदिया पगयओ साहारणसरीरं वंश्वेति, प्र गयओ॰ २ वंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणार्मेति वा सरीरं वा वंश्वेति . [उ॰] णो तिणट्टे समट्टे । वेंदिया णं पने-बाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयसरीरं वंश्वेति, प॰ २ वंशित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणार्मेति वा सरीर वा वंश्वेति ।
- २. [प्रव] तेनि णं भंते ! जीवाणं कित लेस्साओ पन्नताओ ? [उ०] गोयमा ! तओ लेस्साओ पन्नताओ, तंजहा—कण्ह-लेम्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा। पवं जहा पग्णवीसितमे सप तेउकादयाणं जाव 'उन्नदंति'। नवरं सम्मदिट्टी वि मिच्छिद्दिटी वि. नो सम्मामिच्छिदिट्टी, दो नाणा दो अन्नाणा नियमं, नो मणजोगी, वयातेगा वि कायजोगी विः श्राहागे नियमं छिद्दिमि।

# वीशमुं शतक.

[ उदेशक संप्रतः ] बेइन्द्रियादिनी वक्तव्यता संबंधे प्रथम उदेशक, आकाशादि अर्थ विषे वीजी उदेशक, प्राणानियानादि अर्थ परले बीजी उदेशक, इन्द्रियोपचय संबंधे चीशी उदेशक, परमाणुयी आरमी अनन्तप्रदेशिकस्कंथ विषे परंचमी उदेशक, रहयमादि नरक पृथिवीना अन्तराय संबंधे छट्टी उदेशक, जीवप्रयोगादि वन्ध विषे सातमी उदेशक, कर्मभूमि अने अकर्मभूमि संबंधे अरुमी उदेशक, विद्याचारणादि विषे नयमी उदेशक अने मोपक्रम तथा निरुपक्रम आयुष्पाठा जीव संबंधे दशमी उदेशक मण्म आ वीशमा अन्यत्मा दण उदेशको कहेवामा आवशे.

### प्रथम उद्देशक.

१. [प्रव] राजगृहनगरमां पायत- गगयान् गीतम आ प्रमाणे बोल्या के, हे मगवन् ! कदावित्—वे यावत्—चार के पांच बेटिया जीवो एकटा धईने एक साधारण द्यार बांचे, लार पढ़ी आहार करे, तेने परिणमाचे अने पढ़ी बिशिए अगर बांचे ! [उठ] ते गीतम ! ए अथे समर्थ नथी. कारण के बेइन्द्रिय जीवो जुटा जुटा आहार करनारा अने तेनो भिन्न भिन्न परिणाम करनारा होय छे, नेथी तिओं प्रस्के—जुदा जुटा शांगरने बांचे छे, अने प्रस्केक हारीर बांची आहार करे छे, तेनो परिणाम करे छे अने पढ़ी विशिए दागिर बांचे छे.

प्रेर्टान्द्र गांध मीक्टेन। असंस्कृषणी क्रम-वेट्डिय साधारण अर्थर द्वारे के प्रत्येक अपर वार्ष है

२. [प्र०] हे भगवन्! बेइन्डिय जीवोने केटली लंद्याओं कही छे ? [३०] हे गानम! तेओने त्रण लेक्याओं कही छे, ने उ. प्रमाणं-१ कृष्णलेखा, २ नीललेखा अने ३ कापोनलेखा. ए प्रमाणं जेम \*ओगणीशमा शनकमां नेजस्कायिक जीवो विषे वर्तुं है, तेम अहिं पण यावत्-'उद्वर्ते छे' त्यां सुधी कहेतुं. विशेष ए के, बेइन्द्रिय जीवो सम्थरिष्टि पण होय छे अने मिध्यादिष्टे पण हो। छे, पण सम्यग्मिष्या (मिश्रदृष्टि) दृष्टि होता नधी. तेओने अवस्य बे ज्ञान के वे अज्ञान होय छे, तेओने मनोगोग नथी, पण बच्चनयोग अने काय-योग होय छे. तेओने अवस्य छ दिशानो आहार होय छे.

ने स्था

- ३. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सन्ना ति वा पन्ना ति वा मणे ति वा चई ति वा-'अम्हे णं इट्टाणिट्टे रसे इट्टा-णिट्टे फासे पिडसंघेदेमों ? [उ०] णो तिणट्टे समट्टे, पिडसंघेदेति पुण ते । ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वारस संबच्छराई, सेसं तं चेव, एवं ते इंदिया(ण)वि, एवं चडिंदिया(ण)वि, नाणत्तं इंदिएसु ठितीए य, सेसं तं चेव, ठिती जहा पन्नवणाए ।
- ४. [प्र॰] सिय अंते ! आव-चत्तारि पंच पींचदिया प्रायओ साहारणं॰ [उ॰] एवं जहा वेंदियाणं, नवरं छहेसाओ, दिट्टी तिविद्दा यि, चत्तारि नाणा तिम्नि अम्राणा भयणाप, तिविद्दी जोगो ।
- ५. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सन्ना ति वा पन्ना ति वा जाव-वती ति वा-'अम्हे णं आहारमाहारेमो' ! [उ०] गोयमा ! अत्थेगहयाणं एवं सन्ना इ वा पन्ना इ वा मणे इ वा वती ति वा-'अम्हे णं आहारमाहारेमो' । अत्थेगह्याणं नो एवं सन्ना ति वा जाव-वती ति वा-'अम्हे णं आहारमाहारेमो', आहारेंति पूण ते ।
- ६. [प्र॰] तेसि णं भंते ! जीवाणं पर्व सन्ना ति वा जाव-वह ति वा-'अम्हे णं हट्टाणिट्ठे सद्दे हट्टाणिट्ठे रूवे, इट्टाणिट्ठे गंधे, इट्टाणिट्ठे रसे, इट्टाणिट्ठे प्रासे पिडसवेदेमो' ? [उ॰] गोयमा ! अन्धेगतियाणं एवं सन्ना ति वा जाव-वयी ति वा-'अम्हे णं इट्टाणिट्ठे सदे, जाव-इट्टाणिट्ठे फासे पिडसवेदेमो': अत्थेगतियाणं नो एवं सन्ना इ वा जाव-वयी इ वा-'अम्हे णं इट्टाणिट्ठे सदे, जाव-इट्टाणिट्ठे फासे पिडसवेदेमो'; पिडसवेदेति पुण ते ।
- ७. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा कि पाणाइवाप उवक्ताइज्ञंति० ? [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिया पाणातिवाप वि उवक्याइज्ञंति, जाव-भिच्छादंमणसहे वि उवक्खाइज्ञंति; अत्थेगतिया नो पाणाइवाप उवक्खातिज्ञंति, नो मुसा० जाव-नो मिच्छादंसणसहे उवक्खातिज्ञंति । जैसि पि णं जीवाणं ते जीवा प्रमाहिज्ञंति तेसि पि णं जीवाणं अत्थेगतियाणं विन्नाप

संबा अने प्रबार दिनो अभावः ३. [४०] हे भगवन ! ते जीवोने 'अमे इष्ट अने अनिष्ट रापने तथा इष्ट अने अनिष्ट सार्शने अनुभवीए छीए' एवी संज्ञा, प्रज्ञा, मन के बचन होय छे ! [उ ब] ए अर्थ समर्थ नथी, परन्तु तेओ ते रसिद्यानी अनुभव करे छे. तेओनी जघन्य स्थिति--आयुप अन्तर्मुहूर्न अने उन्कृष्ट स्थिति वार वरमनी छे. बाकी वर्षु पूर्व प्रमाण जाणबुं. ए प्रमाण नेहिन्द्रय अने चउरिन्द्रिय जीवो संबंधे पण कहिबुं. मात्र स्थितिमा अने इन्द्रियोमी विद्याप छे, बाकी वर्षु पूर्व प्रमाणे जाणबुं. स्थिति \*प्रज्ञापनाम्त्रमां कहा प्रमाणे जाणवी.

पंचेन्द्रियः मधारण **के प्रत्येक श**ीर वार्थे?

- 8. [प्रत] हे भगवन ! बदाचित् यावत्—त्तार पांच पंचेन्द्रियो भेगा मठीने एक साधारण शर्गर बांघे ! [उठ] बधुं बेइन्द्रियोनी पेटे कहेर्चु, विशेष ए के तेओने छ ए व्हरपाओ होय छे, सम्यम् , मिध्याय अने मिश्र ए त्रण दृष्टि होय छे, <sup>1</sup>चार ज्ञान अने प्रण अज्ञान भजनाए- पिकल्पे होय छे अने योग त्रण होय छे.
- ५. [प्रव] हे भगवन् ! ते जीवोने 'अमे आहार कर्मण् र्ह्मण्'--एवी मंज्ञा, प्रज्ञा, मन के बचन होयु हे ? [उव] हे गातम ! केट-लाक जीवोने (संशी जीवोने) 'अमे आहार प्रहण कर्मण् र्ह्मण्' एवी रांज्ञा, प्रज्ञा, मन के बचन होय हो, अने केटलाक जीवोने (असंज्ञी जीवोने ) 'अमे आहार यहण कर्मण् र्ह्मण्'--एवी रांज्ञा, यावत -यचन होतुं नथी, पण तेओ आहार तो करे हे.
- ६. (प्रत्) हे भगवन ! ते जीवोने 'अमे इष्ट के ऑनष्ट रूप, गंध, रस अने स्पर्शने अनुभवीए हीए'-एवी सक्षा, यायत-क्यन होय छे ! (प्रत) हे गौतम ! 'अमे इष्ट के अनिष्ट राज्य यायत्-स्पर्शने अनुभवीए छीए'-एवी संज्ञा, यायत्-बचन केटलाएक जीवोने (गंजी जीवोने ) होय छे अने 'अमे इष्ट के ऑनष्ट शब्दने यायत्-रपर्शने अनुभवीए हीए' एवी गंजा, यायत्-बचन केटलाएक जीवोने (असंज्ञी जीवोने ) नथी होतुं. पण तेओं ने शब्द अगेरेनो अनुभव तो करे छे.
- ७. [प्रत्र हे भगवन् ! ते जीवो 'प्राणातिपातमा रहेला छे'—हत्यादि कहेवाय ! [उठ] हे गातम ! ते जीवोमांना केटलएक 'प्राणातिपातमां यावत—मिध्यादर्शनसम्बद्धां पण रहेला छे'—एम कहेवाय छे अने केटलएक जीवो 'प्राणातिपातमां, मृपावादमां यायत्—मिध्यादर्शनसत्यमां रहेला छे'—एम कहेवातुं नथी. जे जीवोना श्राणातिपात—हिसा वगेरे तेओ करे छे, ते जीवोमांना पण केटलएक जीवोने
  'अमे हणाइए छीए अने आ अमाग घातक छे' एवं गेदज्ञान होय छे अने केटलएक जीवोने एवं भेदज्ञान होतुं नथी. तेमां उपपात
  सर्वजीकोधी यावत- सर्वार्थस्टिकथी पण होय छे. स्थित (आयुप) जवन्यथी अन्तर्सुहूर्त अने उत्कृष्टश्च तेत्रीश सागरोपम होय छे.

३ है तेइन्द्रिय जीवनी उन्कृष्ट स्थिति ओगणपत्याम दिवसनी अने चउरिन्द्रियनी छ मास होय छे, अने जघन्य स्थिति बन्नेनी अन्तर्भुहूर्न जाणवी। सुओ-प्रज्ञा० पद ६ प० ३११.

पंचेन्द्रिय जीवने मत्यादि चार ज्ञान होय छे अने केवळज्ञान अनिन्द्रियने ज होय छे—टीका.

नाणसे, अत्थेगतियाणं नो विण्णाय नाणसे, उवधाओ सद्यत्रो जाव-सद्यद्वसिद्धाओ, ठिती जद्दनेणं अंतोमुहुसं, उद्योसेणं तेसीसं सागरोवमादं, छस्तमुग्धाया केवलिवजा, उद्यद्यणा सद्यत्य गच्छंति जाच-सद्यद्वसिद्धं ति, सेसं जद्दा वेंदियाणं।

८. [प्रत] एएसि णं भंते! बेइंदियाणं जाव-पंचिदियाण य कथरे कयरेहितो जाव-विकेसाहिया वा ! [उ०] गोयमा ! सम्बन्धोदा पंचिदिया, चर्डरिदया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, वेइंदिया विसेसाहिया। 'सेवं भंते! सेवं भंते! सि जाव-विहरित ।

### वीसइमे सए पढमो उद्देमो समत्तो ।

तेओने (पंचिन्दियोने ) केविलसमुद्धात सिवाय बाकीना छ समुद्धातो जाणवा. उद्वर्तना-मरीने तेओ यावत्-सर्वायितिछ सुधी वरे जाय छे, बाकी बधुं बेइन्द्रियोनी पेठे जाणवुं.

८. [प्र0] हे भगवन् ! पूर्वोक्त बेहन्द्रिय यारत्—पंचिन्द्रिय जीवोमां कया जीवो कोनाधी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गोतम ! सौधा थोडा पंचिन्द्रिय जीवो छे, तथी चउरिन्द्रिय जीवो विशेषाधिक छे, तथी नेहन्द्रिय जीवो विशेषाधिक छे, अने तेथी येहन्द्रिय जीवो निशेषाधिक छे. 'हे भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे'—एम कही (भगवान् गौतम) यावत्—िम्हरे छे.

वेशन्द्रवादिनुं भल्प बहुत्वः

#### वीसमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

# बीओ उद्देसो ।

- १. [प्रव] कहिवहे णं भंत ! आगासे पन्नते ! [उव] गोयमा ! दुविहे आगासे पन्नते, तंजहा-लोयागासे य अलो-यागासे य ।
- २. [प्र०] लोयागासे णं भंते ! किं जीवा, जीवदेसा !--एवं जहा वितियसए अन्यिउद्देस तह चेव इह वि भाणिय**वं,** नवरं अभिलावो जाव-'धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पश्चते ! गोयमा ! लोए लोयमेसे लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव बोगाहिसा णं चिट्टीर. एवं जाव-पोग्गलन्थिकाए ।
- ३. [प्र०] अहेलोप णं भंते ! धम्मत्थिकायम्स केवितयं ओगाढे ? [उ०] गोयमा ! मानिरेगं अद्धं ओगाढे, एवं पणणं अभिलायेणं जहा वितियसप जाव-'ईसिपष्भारा णं भंते ! पुढवी लोयागासस्य किं संखेज्जदभागं० ओगाढा-पुच्छा । गोयमा ! नो संखेजदभागं ओगाढा, अमंखेजदभागं ओगाढा, नो सद्वलीयं ओगाढा' । सेसं तं चेव ।

### द्वितीय उद्देशक.

- १. [प्र०] हे भगवन्! आकारा केटला प्रकारनुं कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम! आकारा वे प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे⊸ भगवारा कोरे द्रव्यः लोकाकारा अने अलोकाकारा
- २. [प्र०] हे भगवन् ! लोकाकाश ए युं जीवन्त्य छे, जीयदेशरूप छे—इत्यादि \*बीजा शतकना अस्ति उदेशकमां कह्या प्रमाणे अहिं कहेवुं. विशेष ए के , आ अभिलाप (पाट) अहिं कहेवो'—'हे भगवन् ! धर्मास्तिकाय केवडो मोटो छे ! हे गौतम ! धर्मास्तिकाय छोकरूप, लोकमात्र, लोकप्रमाण अने लोक वडे स्पर्शायलो छे अने लोकने अवगादीने रह्यो छे.' ए प्रमाणे यावत्—पुद्दलास्तिकाय सुधी जाणवुं.
- ३. [प्र०] हे भगवन्! अघोलोक धर्मास्तिकायना केटल भागने अवगाद्दीने रह्यों छे ? [उ०] हे गांतम! कंड्क अधिक अर्ध भागने अवगाद्दीने रह्यों छे. ए प्रमाणे ए अभिलापथी जेम विजा शांतकमां कह्युं छे तेम अहि कहेबुं. यावत्—[प्र०] हे भगवन्! ईप-रप्राग्भारा पृथिवीए लोकाकाशनो शुं संख्यातमो भाग (के असंख्यातमो भाग) बंगरे अवगाह्यों छे ! [उ०] हे गांतम ! लोकाकाशनो संख्यातमो भाग अवगाह्यों नथी, पण असंख्यातमो भाग अवगाह्यों नथी, पण असंख्यातमो भाग अवगाह्यों नथी, विस् मर्थ- खोकने पण अवगाह्यों नथी, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

रे \* मग॰ खं∘ १ शा० २ उ० १० पृ० ३१०—३१२,

रे मिया सं १ शा २ उ० १० छ० ३१२.

११ स॰ स्॰

- ध. [प्र०] धम्मित्थकायस्स णं मंते ! केवर्या अभिवयणा पन्नता ? [उ०] गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पन्नता, तंजहा—धम्मे इ वा धम्मित्थकाये ति वा पाणाइवायवेरमणे इ वा मुसावायवेरमणे ति वा—एवं जाव—परिग्गहवेरमणे ति वा, कोहिववेगे ति वा जाव- मिच्छादंसणसहिववेगे ति वा, ईरियासमिती ति वा भासासमिती ति वा, एसणासमिती ति वा आया- णभंडमसिनिक्वेयणसिमिती ति वा, उच्चारपासवणकेलज्ञहाँसघाणपारिद्वावणियासमिती ति वा, मणगुत्ती ति वा, वरगुत्ती ति वा, कायगुत्ती ति वा, जे यावने तहप्पगारा सबे ते धम्मित्थकायस्स अभिवयणा ।
- ५. [प्र०] अधम्मित्थिकायस्य णं भंते ! केवितया अभिवयणा पश्चता ? [उ०] गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पश्चता, तंज्ञहा—अधम्मे ति वा, अधम्मित्यिकाप ति वा, पाणाइवाप ति वा, जाव-मिच्छादंसणसहिति वा, ईरियाअसिमिती ति वा, जाव-उद्यारपासवण-जाव—पारिट्ठावणियाअसिमिती ति वा, मणअगुत्ती ति वा वइअगुत्ती ति वा, कायअगुत्ती ति वा, जे यावेश्व तद्वप्पगारा सम्रे ते अधम्मित्थकायस्स अभिवयणा ।
- ६. [प्र०] आगासित्थकायस्स णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पन्नत्ता, तंजहा-आगासे ति वा, आगा-सित्थकाये ति वा, गगणे ति वा, नमे ति वा, समे ति वा, विसमे ति वा, खंदे ति वा, विदे ति वा, वीयी ति वा, विवरे ति वा, अंबरे ति वा, अंबरसे ति वा, छिड्डे ति वा, झुसिरे ति वा. मग्गे ति वा, विमुद्दे ति वा, अहे ति वा, (अहे ति वा) वियद्दे ति वा, आधारे ति वा, वोमे ति वा, भायणे ति वा, अंतिष्क्ले ति वा, सामे ति वा, उवासंतरे इ वा, अगिम इ वा, फलिटे इ वा, अणंते ति वा, जे यावन्ने तहप्पगारा सम्चे ते आगामित्थकायस्म अभिवयणा ।
- ७. [प्र०] जीवत्थिकायस्स णं भंत ! केवतिया अभिवयणा पन्नता ? [उ०] गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पन्नता, तंजहा— जीवे ति वा, जीवित्थकाये ति वा, पाणे ति वा, भूण ति वा, सत्ते नि घा, विश्व ति वा, चेया ति वा, जेया ति वा, आया ति वा, रंगणा ति वा, हिंदुए ति वा, पोग्गछे ति वा, माणवे ति वा, कत्ता ति वा, विकत्ता ति वा, जए नि वा, जंतु ति वा- जोणी ति वा, सयंभू ति वा, ससरीरी नि वा, नायए ति वा, अंतरूपा ति वा, जेयावन्ने नहप्पगारा सम्रे ते जावः अभिवयणा ।

**पर्मा**स्तिकत्यनाः **अ**भिनचनोः ४. [प्र०] हे भगवन् ! "धर्मास्तिकायना अभिवचनो-अभिधायक शब्दो केटलं कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! प्रिकेट अभेक अभिवचनो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे-धर्म, धर्मास्तिकाय, प्राणातिपातिवरमण, मृपाबादिवरमण, ए प्रमाणे यावत्—परिप्रहिव सूर्याची संह क्षेत्रिको स्वापः, धावत् मिध्यादर्शनशल्यनो स्वागः, ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, "आदानभांडमात्रनिक्षेषणासमिति अवणसेल- अर्ह्मसंघानकपारिष्टापनिकासमिति, मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति-ए बधां अने तेना जेवा बीजा अन्दो ते सर्वे धर्मास्तिकायनां अभिवचनो छे.

अथमास्तिकायना अभिवननोः ५. [प्रज] हे भगवन ! अधर्मास्तिकायनां केटलां अभियचनो कह्यां छे ? [उज] हे गीतम ! तेना अनेकः अभियचनो कह्यां छे, ते आ प्रमाण-अधर्म, अधर्मास्तिकाय, प्राणातिपात, यावत्-मिध्यादर्शनशस्य, इंशीसंबर्धी असमिति, यावत्-उच्चारप्रस्वयण-यावत्-पारिष्ठापिनका संबन्धे असमिति, मननी अगुप्ति, बचननी अगुप्ति, कायनी अगुप्ति-ए बचा अने तेनां जेवा बीजां अनेक बचनो छे ते सर्वे अधर्मास्तिकायनां अभिवचनो छे.

भाकाशास्त्रिकायनाः अभिवन्यनाः ६. [प्र०] हे मगवन ! आकाशास्तिकाय संबंधे प्रश्न. [अ०] हे गौतम ! तेनां अनेक अभित्रचनो कह्यां छे. ते आ प्रमाण -आकाश, आकाशास्तिकाय, गगन, गम, सम, विषम, खह, तिहाय, श्रीच, विषय, अंबर, अंबरस (अंब- जलस्प रम जेनाथी प्राप्त याय छे ते ) छिद्र, श्रीपर, मार्ग, विमुख (मुख-आदिरहित), अर्द [अह ] (जेहारा गमन कराय ते ), व्यर्ट, आधार, व्योम, भाजन, अंतिरक्ष, स्याम, अवकाशांतर, अगम, (गमन कियारहित) स्पटिक-सम्स्ट अने अनंत-ए बधां अने तेना जेवा बीजा अनेक शब्दों ते बधां आकाशास्तिकायनां अभिवचनो छे.

जीवास्तिकायनाः जीभवन्त्रनीः ७. [प्र०] हे भगवन ! बीवास्तिकायनां केटलां अभिवचनों कथा छे ! [उ०] हे गीतम ! जीवास्तिकायनां अनेक अभिवचनों कथां छे , ते आ प्रमाणे - जीव, जीवास्तिकाय, प्राण, भूत, सत्त्व, विज्ञ, चेता (पुद्गल्दोनों चय करनार), जेता - कर्मरूपी शत्रुने जीतनार, आत्मा, रंगण (रागयुक्त), हिंडुक--गमन करनार पुद्दल, मानव (नवीन निर्द्ध पण प्राचीन) कर्ता, विकर्ता (विविधक्त्ये कर्मनों कर्ता) जगत्-(गमनशील), जंतु, योनि (उत्पादक), खयंभूति, शरीरी, नायक-कर्मनों नेता अने अन्तरात्मा ए वधां अने तेना जेवा बीजा अनेक शब्दो जीवास्तिकायनां अभिवचनों छे.

द \* आहे धर्मास्तिकायशब्द प्रांतपाय अर्थना वाचक शब्दो केटला छे ए प्रश्न छे. तेमा मुख्यत्वे धर्मास्तिकायशब्दना प्रतिपाद वे अर्थ छे—धर्मा-स्तिकाय इच्य तथा सामान्यधर्म अने विशेष धर्म. मामान्यवर्म प्रतिपादक अने धर्मास्तिकाय इच्य प्रतिपादक धर्म शब्द छे अने विशेष धर्मप्रतिपादक प्राणाति-पार्तावरमणादि शब्दो छे. ते सिवाय बीजः सामान्यस्पे के विशेषस्पे चारित्रधर्मना प्रतिपादक जे शब्दो छे ते बधा धर्मास्तिकायना अभिवचनो कह्यां छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायादि संबन्धे पण जाणवं.

<sup>ं</sup> वस्तपात्रादि वस्तुने प्रहण करवा अने मूकवामां सम्यक् प्रवृत्ति ते आदानभाडमात्रनिक्षेपणा समिति, उचार-विष्टा, प्रस्नवण-मूत्र, खेल-कफ, जह्न-काननो मेल, सिंधानक-नाकनो मेल वगरे त्याज्य वस्तुने त्याग करवा सम्यक् प्रवृत्ति करवी, अर्थात् निजीव भूमि उपर यतनापूर्वक तेनो ह्याग करवो ते उचारप्रस्नवणखेलजहसिंधानकपारिष्ठापनिकासमितिः

८. पोग्गलियकायस्स णं भंते ! पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पन्नसा, नंजहा-पोग्गले ति वा, पोग्गल-त्थिकाये ति वा, परमाणुपोग्गले ति वा, दुपपसिए ति वा, तिपपसिए ति वा जाय-असंखेजपपसिए ति वा, अणंतपपसिए ति वा, वे यावजे तहप्पगारा सबे ते पोग्गलियकायस्स अभिवयणा । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

#### वीसइमे सए बीओ उद्देशी समत्ती।

८. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गल्यस्तिकाय संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेनां अनेक अभित्रचनो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे–पुद्गल, पुद्गल्यस्तिकाय, परमाणुपुद्गल, द्विप्रदेशिक, त्रिप्रदेशिक, यावत्–असंख्यातप्रदेशिक अने अनंतप्रदेशिक स्कंध. ए बधां अने तेनां जेवां बीजां अनेक पुद्गलास्तिकायनां अभिवचनो छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

पुत्रलास्तिकायमा धर्मभवचनो-

#### वीशमा शतकमां द्वितीय उद्देशक समाप्त.

# तईओ उद्देशो ।

- १. [प्र०] अह अंते ! पाणाइवाप, मुसावाप जाव-मिच्छादंसणसहे, पाणातिवायवेरमणे, जाव-मिच्छादंसणसहिविवेगे, उप्पत्तिया, जाव-पारिणामिया, उग्गद्दे, जाव धारणा, उट्टाणे, कम्मे, बस्ने, विरेष, पुरिसक्कारपरक्षमे, नेरहयसे, असुरकुमारसे, जाय-वेमाणियसे, नाणावरणिक्रे, जाव-अंतराइप, कण्डलेस्सा, जाव सुकलेस्सा, सम्मविद्दी ३, चक्रवुदंसणे ४, आभिणियो-द्वियणाणे, जाव-विमंगनाणे, आहारसन्ना ४, ओरालियसरीरे ५, मणजोगे ३, सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जे यावधे तहप्पागरा सब्वे ते णण्णत्य आयाप परिणमंति ।
- २. [प्र०] जीये ण मंते ! गब्मं यक्कममाणे कतिवक्षे, कतिगन्धे० ? [उ०] एवं जहा बारसमस्य पंचमुद्देसे जाव -'कम्मओ णं जप, णो अकम्मओ विभक्तिभावं परिणमित' । 'सेवं भंते ! सेवं मंते' ! त्ति जाव-विहरति ।

#### वीसड्मे सए तईओ उद्देमी समत्ती ।

### तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! प्राणानियान, मृपाबाद, यावत् मिन्यादर्शनशस्य, प्राणानियानिवरमण, यावन्-मिन्यादर्शनशस्यविवेक, औत्यिक्ति, यावन्-पारिणाभिकी, अवप्रह, यावत् धारणा, उत्यान, वर्म, बल, वीर्य, पुरुषकार्यराक्रम, नैरियक्तपण्चं, असुरकुमारपण्चं, यावत् वैमानिकपण्चं, ज्ञानावरणीय, यावत् अंतराय, रूष्णलेख्या, यावत् ग्रुक्रलेख्या, सम्बर्धाः, सम्यर्गक्षा, परिग्रहसंक्षा, मैथुनसंक्षा, औदारिकश्ररीर, यावत्—कार्मणश्ररीर, मनायोग, वचनयोग, काययोग, साकार् उपयोग अने निराकार उपयोगः, ए बधां अने वीजा तेना जेया वर्मी आत्मा सिवाय अन्यत्र परिणमता नथीः ! प्राणानियान, यावत्—अनाकार उपयोगः ए बधां अने वीजा तेना जेया वर्मी आत्मा सिवाय अन्यत्र परिणमता नथीः ! प्राणानियान, यावत्—अनाकार उपयोगः ए बधां अने वीजा वीजे परिणमता नथीः

प्राप्पतिपातादि आरमः मिवाय बीजे परिजनता नवीः

े २. [४०] हे भगवन् ! गर्भमा उत्पन्न यतो जीत्र केटला वर्ण, गंध, रस अने स्परीबाला परिणाम वडे परिणमे छे ! [७०] 'बारमा शतकना पाचमा उदेशकमां कहा। प्रमाण आहं कहेवुं. यावत् 'कर्मर्था जगत् छे, कर्म सिवाय तेनो विविधस्येष परिणाम यतो नथां. 'हे भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे- ' एम कही [ भगवान् गीतम ] यावत्—विहरे छे.

### वीशमा शतकमां वृतीय उद्देशक समाप्त.

### चउत्थो उद्देसो ।

१. [प्र०] कहिबहे णं भंते ! इंदियउवचए पश्चते ? [उ०] गोयमा ! पंचिवहे इंदियोवचए पश्चते, तंजहा-सोइंदियउ-वचए०-एवं चितिओ इंदियउद्देसओ निरवसेसो भाणियको जहा पश्चवणाए । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' ति भगवं गोयमे जाब-विहर्रात ।

# वीसइमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ।

### चतुर्थ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! इन्द्रियोपचय केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे गौतम ! इन्द्रियोपचय पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते इन्द्रियोपचय-अभिनेन्द्रियोपचय-इत्सादि वधुं प्रज्ञापनाना बीजा इन्द्रियउद्देशकमां कह्या प्रमाणे कहेवुं. 'हे मगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे-' एम कही यावत्-विहरे छे.

### वीशमा शतकमां चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

२ \* भग० खंब ३ इति १२ तत ५ वत २५४

१ रिक्सा० पद् १५ उ० २ पृ० ३०८.

### पंचमो उद्देशो ।

- १. [प्र०] परमाणुपोगाले णं मंते! कतिवके, कितगंधे, कितरसे, कितिपासे पश्चते ! [उ०] गोयमा ! पगवके, पगगंधे, पगरसे, दुकासे पश्चते, तंजहा—जह पगवके सिय कालप, सिय नीलप, सिय लोहिप, सिय हालिह्प, सिय सुकिल्लप, अह पगगंधे सिय सुकिगंधे, सिय हुक्मिगंधे, जह पगरसे सिय तिचे, सिय कडुप, सिय कसाप, सिय अंथिले, सिय महुरे, अह दुकासे सिय सीप य निद्धे य १, सिय सीप य लुक्के य ४।
- २. [प्र०] दुप्पपितप णं मंते! खंधे कितवके०? [उ०] एवं जहा अट्ठारसमसप छट्टाईसप जाव—'सिय चडफासें पक्षत्ते'। जह पगवके सिय कालप जाव—सिय सुक्किल्लप, जह दुवके सिय कालप य नीलप य १, सिय कालप य स्रोहि-तप य २, सिय कालप य हालिइप य ३, सिय कालप य सुक्किल्लप य ४, सिय नीलप य लोहियप य ५, सिय नीलप य सुक्किल्लप य ७, सिय नीलप य सुक्किल्लप य ७, सिय लोहियप य हालिइप य ८, सिय लोहियप य सुक्किल्लप य ९, सिय नीलप य सुक्किल्लप य १०। पवं पप दुयासंजोगे दस मंगा। जह पगगंधे सिय सुक्किगंधे १, सिय दुक्किगंधे य २, जह दुगंधे सुक्किगंधे य दुक्किगंधे य। रसेसु जहा वकेसु। जह दुफासे सिय सीप य निद्धे य, पवं जहेव परमाणुगे-गाले ४। जह तिफासे सबे सीप देसे निद्धे देसे लुक्के १, सबे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्के १, सबे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्के १, पप नव मंगा फासेसु।

### पंचम उद्देशक.

परमाणु वगेरेमां वर्णादि परमाणुः १. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गल केटला वर्णवाळो, केटला गंधवाळो, केटला रसवाळो अने केटला स्पर्शवाळो छे ! [उ०] हे गौतम ! ते एक वर्णवाळो, एक गंधवाळो, एक रसवाळो अने बे स्पर्शवाळो छे. ते आ प्रमाण--जो ते एक वर्णवाळो होय तो, कदाच काळो, कदाच लीलो, कदाच रातो, कदाच पीळो अने कदाच धोळो होय (५). जो ते एक गंधवाळो होय तो कदाच सुगंधी अने कदाच दुर्गंधी होय (२). जो ते एक रसवाळो होय तो कदाच कडवो, कदाच तीलो, कदाच तूरो, कदाच खाटो अने कदाच मधुर (मीठो) होय (५). जो ते \*बे स्पर्शवाळो होय तो कदाच शीत अने खिग्ध १, कदाच शीत अने रक्ष-दुखो २, कदाच उष्ण अने किग्ध ३, कदाच उष्ण अने रक्ष होय ४. [ए प्रमाणे परमाणुमां वर्णना ५, गंधना २, रसना ५, अने स्पर्शना ४ मळीने १६ मांगा पाय छे ].

दिप्रदेशिक स्कन्ध-

२. [प्र०] हे भगवन्! द्विप्रदेशिक स्कंध केटला वर्णवाळो होय—इस्मादि प्रश्न. [उ०] †अद्यासा शतकना छट्टा उदेशकमां कह्या प्रमाणे कहेवुं, यावत्—'ते कदाच चार स्पर्शवाळो होय.' जो ते ौएक वर्णवाळो होय तो कदाच काळो होय अने यावत्—कदाच घोळो होय ५. जो ते वे वर्णवाळो होय तो १ कदाच काळो अने रातो, ६ कदाच काळो अने पीळो, ७ कदाच लाळो अने पीळो, ७ कदाच रातो अने पीळो, ९ कदाच रातो अने पीळो, ९ कदाच रातो अने पीळो, ९ कदाच रातो अने घोळो अने र० कदाच पीळो अने घोळो होय. ए प्रमाणे द्विकसंयोगी दश भागा आणवा. जो ते एक गंधवाळो होय तो कदाच सुगंधा होय अने कदाच दुर्गवी होय २. जो ते वे गंभवाळो होय तो सुगंधा अने दुर्गन्थी वन्ने गंधवाळो होय ३. जेम वर्णोमां भागा कह्या, तेम ¹रसोमां पण १७ भागाओ जाणवा. हते जो ते वे स्पर्शवाळो होय तो कदाच शीत अने क्लिप्ध होय –इस्मादि चार भागा परमाणुपुद्रहर्जा पेटे समजया. जो ते (द्विप्रदेशिकस्कंध) त्रण स्पर्शवाळो होय तो ते कदाच सर्वशित होय अने तेनो एक देश—भाग क्लिप्ध अने एक देश क्लिस होय १; कदाच सर्व उष्ण होय अने तेनो एक देश क्लिप्ध अने एक देश क्लि होय २, अथवा कदाच सर्व क्लिप्ध होय ४. हवे जो ते चार स्पर्शवाळो होय तो तेनो एक देश उष्ण होय ४. हवे जो ते चार स्पर्शवाळो होय तो तेनो एक देश उष्ण, एक देश क्लिप्ध अने एक देश शित अने एक देश क्लि होय १. ए प्रमाणे स्पर्शना नव भागा जाणवा. [ ए रीते द्विप्रदेशिक स्कंधमां वर्णना १७, गंधना ३, रसना १७, अने स्पर्शना ९ सर्व मळीने ४२ मांगा थाय छे ].

द्विप्रदेशिक स्कन्धर्मा ४२ सांगाओ.

<sup>9 \*</sup> परमाणुमां बीत, उच्ण, क्रिय्ध अने रूक्ष-ए चार स्पर्शमांना अविरोधी वे स्पर्श होय है.

२ में भग । खं । ४ श ० १८ उ० ६ पृ । ६३ सू० ६.

<sup>‡</sup> द्विप्रदेशिक स्कन्धमां ज्यारे वसे प्रदेशोनो एकवर्णक्ये परिणाम याय छे त्यारे तेना काळो वगेरे पांच विकल्प याय छे, अने ज्यारे वसे प्रदेशोनो भिन्न भिन्न वर्णक्ये परिणाम थाय छो त्यारे तेना द्विकसंयोगी दश विकल्प थाय छे. गन्धमां एकगन्धक्ये परिणाम थाय त्यारे वे भागा अने वसे गन्धक्ये परिणाम थाय त्यारे एक भागो, रसना एक रसक्ये परिणाम थाय त्यारे पांच भागा अने वे रसक्ष्ये परिणाम थाय त्यारे दश अने स्पर्शना पूर्व कहेळा चार भागा अळीने ४२ भागाओ थाय छे. तेमां रसना असंयोगी १ तीको, २ कडवो, ३ त्रो, ४ खाटो, ५ मीठो–ए पांच भागाओ अने द्विकसंयोगी दश भागा छे— १ तीको अने कडवो, २ तीको अने त्रो, ३ तीको अने खाटो, ४ तीको अने मीठो, ५ कडवो अने त्रो, ६ कडवो अने खाटो, ७ कडवो अने मीठो, ८ त्रो अने खाटो, ९ तुरो अने मीठो, अने १० खाटो अने मीठो, वसे मळी रक्षना पंदर भागा थाय छे.

३. [४०] तिषदसिए मं मंते ! संघे कतिवचे० [४०] जहा अट्टारसमसए छहुदेसे जाय-वर्डकासे पश्चे । ता का का स्वा सिय कालए जाव-सुकिल्लए ५ । जह दुवने सिय कालए य सिय नीलए य १, सिय कालए य नीलमा य २, सिय कालमा य नीलए य ३, सिय कालए य लोहियए य १, सिय कालए य लोहियए य १, सिय कालए य लोहियए य ३, एवं हालिहएण वि समं मंगा ३, एवं सुकिल्लएण वि सम ३, सिय नीलए य लोहियए य एत्थ वि मंगा ३, एवं सुकिल्लेण वि समं ३, सिय नीलए य लोहियए य भन्ना ३, एवं सुकिल्लेण वि समं ३, सिय लोहियए य हालिहए य भन्ना ३, एवं सुकिल्लेण वि समं ३,

त्रिप्रदेशिकस्कन्थः

व. [प्र०] हे भगवन् ! त्रिप्रदेशिक रक्षंघ केटला वर्णवाळो होय- इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेन \*अटारमा शतकन। छद्रा उद्देशकमां कहां छे तेम यात्रत्-'ते कदाच चार स्पर्शत्राळो होय' त्यां सुधी कहेवुं. जो ते एक वर्णवाळो होय तो कदाच काळो होय अने यावत्-कदाच धोळो पण होय ५. जो ते वे वर्णवाळो होय तो तेनो एक अंश कदाच काळो अने एक अंश लीलो होय १; कदाच तेनो एक अंश काळो अने बीजा बे अंशो लीला होय २; कदाच बे देशो काळा अने एक देश लीलो होय ३. कदाच एक अंश कालो अने एक अंश रातो होय १. अथवा कदाच तेनो एक देश काळो अने अनेक देशो राता होय २. कदाच अनेक देशो काळा अने एक देश रातो होय 😩 , ए प्रमाणे काळावर्णना पीळानी साथे पण त्रण भांगा करवा ३. तथा ए रीते ज काळा वर्णना घोळा वर्णनी साथे पण ४ण भांगा जाणवा 3. अथवा कदाच ठीलो अने रातो होय. अहिं पण पूर्व प्रमाणे त्रण भांगा जाणवा ३. एम छीला वर्णना पीळानी साथे ३ अने घोळानी साधे त्रण त्रण भांगा करवा ३. कदाच रातो अने पीळो होय ३. ए प्रमाणे राता वर्णना धोळानी साधे पण त्रण भांगा करवा ३. कदाच पीळो अने घोळो होय ३. ए बधा मळीने दस द्विक संयोगना त्रीरा भांगा थाय छे. हवे जो ते त्रिप्रदेशिकस्कंथ त्रण वर्णयाळो होय तो कदाच १ काळो, ठीलो अने रातो, २ कदाच काळो, ठीलो अने पीळो, ३ कदाच काळो, ठीलो अने घोळो, कदाच ४ काळो, रातो अने पीळो. कदाच ५ काळो, रातो अने घोळो, कदाच ६ काळो, पीळो अने घोळो होय. अथवा कदाच ७ लीलो, रातो अने पीळो, कदाच ८ ठीज़ो, रातो अने धोळो होय, अथवा कदाच ९ ठीछो, <sup>पी</sup>ळो अने धोळो होग. कदाच १० गतो, पीळो अने धोळो होय. ए प्रमाणे ए इस त्रिकसंयोगी भागाओ जाणवा. हवे जो ते एक गंधवाळो होय तो कदाच १ सुगंधी होय अने कदाच २ दुर्गंधी होय. जो बे गंधवाळो होय तो कदाच सुगंघी अने दुर्गंघी होय. अहिं एक वचन अने बहु वचनने अन्त्रयी त्रण भांगा जाणवा. (चोथो भांगो थतो नथी.) जेम वर्णने आश्रयी ४५ नांगा कह्या; तेम रैरसोने आश्रयीने पण ४५ मांगा जाणवा. जो ते वे स्पर्शवाळी होय तो कदाच शीन अने क्षिण्य होय-इत्यादि चार मांगा द्विप्रदेशिकस्कंधनी पेटे अहिं कहेवा ४. जो (त्रिपदेशिक स्कन्ध) त्रण स्परीवाळो होय तो सर्व

‡ द्विप्रदेशिक स्कंघना रसना द्विकसंयोगी १० भागा १० १६ मानां टिप्पनमां कह्या छे, ते दरेक भागाना नीचेना त्रण त्रण भागाओ करवाथी ३० भागा थाय छे. त्रिभंगी---१---१, १---१, र---१, तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे---१ एक अंश तीखो अने एक अंश कडवो, २ एक अश तीखो अने वे अंश कडवो, ३ एक अश तीखो अने वे अंश कडवो, ३ एक अश कडवो. त्रिकसयोगी दश भागाओ नीचे प्रमाणे---

९ तीखो,	२ कडवो,	३ द्वरो.
१ तीस्रो,	२ कडवो,	४ खाटो.
९ तीखो,	२ कडवो,	५ मीठो.
१ तीस्रो,	३ तूरो,	४ खारो.
१ तीखो,	३ तूरो,	५ मीठो.
२ तीखो,	४ खाटो,	५ मीठो.
२ कडवो,	३ तूरो,	४ खाटो.
२ कडवो,	३ तूरो,	५ मीठो.
२ कडवो,	४ खाटो,	५ मीठो.
३ दुरो,	Y खाटो,	५ मीठो.

आ प्रमाणे त्रिप्रदेशिक एकरवना द्विकसंयोगी ३० भांगा, त्रिकसंयोगी १० भांगा अने असंयोगी ५ भांगा मेळवता कुछ ४५ भांगा रसने आश्रयी जाणवा.

<sup>्</sup> ३ \* जुओ भग० सं• ४ श• १८ उ० ६ प्र• ६३ स्• ६.

<sup>ं</sup> त्रिप्रदेशिक स्कन्धमां त्रण परमाणुओ होवा छन तथांवध परिणामने लीधे ते एक प्रदेशावगाही, द्विप्रदेशावगाही अने त्रिप्रदेशावगाही होय छे. ज्यारे एक प्रदेशावगाही होय छे त्यारे तेमां अशानी कल्पना धई शकती नथी ज्यारे द्विप्रदेशावगाही होय छे त्यारे तेमां वे अंशनी अने त्रिप्रदेशावगाही होय लारे त्रण अंशनी कल्पना थई शके छे. ज्यारे वे वर्णहपे परिणाम थाय छे त्यारे एक प्रदेश काळा अने वे प्रदेशों एक आकाशप्रदेशवगाही होवाथी एक अंश छीलों होय-एम द्विकसंयोगी पहेलों भांगों थाय छे. अथवा एक प्रदेश काळों होय अने वे प्रदेशों भिन्न भिन्न वे आकाश प्रदेशावगाही होवाथी थे अंश छीला होय एम विवक्षा थई शके छे. ए रीते बीजों भांगों जाणवों. एक प्रमाणे वे अंश काळा होय अने एक अश्व छीलों होय. एम एक अश्व धीला होय एम विवक्षा थई शके छे. ए रीते बीजों भांगों जाणवों. एक प्रमाणे वे अंश काळा होय अने एक अश छीलों होय. एम एक अश्व धीलाम थाय खारे एक अंश अने अनेक अशानी कल्पनाथी पूर्वनी पेठे त्रण भांगा थाय छे. ज्यारे तिप्रदेशिक स्कन्धना वे स्पर्ण होय छे लारे तेमा द्विप्रदेशिकनी पेठे चार भांगा थाय छे. ज्यारे तेना त्रण स्पर्श होय छे लारे तेना त्रण प्रदेशों शीत होवाथी सर्व शीत, एक प्रदेशात्मक एक देश क्रिक एक देश स्क्ष होय-ए प्रथम भंग, एवी रीते सर्व शीत एक देश क्रिक अने अनेक देशों हक्ष-ए बीजों भंग, सर्व शीत अनेक देश क्रिक अने एक देश रूक्ष-ए त्रीजों भंग-एम त्रण भांगा थाय. ए प्रमाणे सर्वीला, सर्व क्रिक अने सर्वहक्षनी साथे पण त्रण त्रण भांगा जाणवा.

सिय हालिइए य सुिक्क य मंगा ३, एवं सहे ते दस दुयासंजोगा मंगा तीसं मवंति। जह तिवसे सिय कालए य नीलए य लोहियए य १, सिय कालए य नीलए य हालिइए य २, सिय कालए य नीलए य हालिइए य ३, सिय कालए य नीलए य हालिइए य १, सिय कालए य नीलए य सिय कालए य हालिइए य १, सिय नीलए य लोहियए य सिय कालए य हालिइए य १, सिय नीलए य लोहियए य हालिइए य पुक्किलए य १, सिय नीलए य लोहियए य हालिइए य पुक्किलए य १, सिय नीलए य हालिइए य सुिक्किलए य १, सिय नीलए य हालिइए य सुिक्किलए य १, सिय नीलए य हालिइए य सुिक्किलए य १, सिय लोहियए य हालिइए य सुिक्किलए य १०. एवं एए दस नियासंजोगा। जह एगगंधे सिय सुिक्मांधे १, सिय दुिक्मांधे २। जह दुगंधे सिय सुिक्मांधे य दुिक्मांधे य ३ मंगा। एसा जहा वजा। जह दुक्मांसे सिय सीए य निद्धे य, एवं जहेव दुययसियस्स तहेव चतारि मंगा ४। जह तिकासे सबे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सबे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सबे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे ३ एत्थ वि मंगा तिकि, सबे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे मंगा तिकि एवं १२। जह चउफासे देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे जिखे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे जिखे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे जिखे देसे लुक्खे १, देस सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ९. एवं एए तिएएसिए फासेखु पणवीसं मंगा।

ध. [प्र॰] चउप्परिसर मंते ! संधे कितविषे ॰ १ [उ॰] जहा अट्टारसमसर जाव—'सिय चउफासे पन्नसे'। जह रगवने सिय कालर य जाव—सुकिहर ५ । जह दुवने सिय कालर य नीलर य १, सिय कालर य नीलगा य २, सिय कालगा य नीलर य ३, सिय कालगा य नीलगा य ४ । सिय कालर य लोहियर य । यन्थ वि चत्तारि भंगा ४ । सिय

शीत अने तेनो एक देश िक्वण्य अने एक देश रूक्ष होय १. अथवा सर्व शीत, एक देश िक्वण्य अने अनेक देशो रुक्ष होय २. अथवा सर्व शीत, अनेक देशो िक्वण्य अने एक देश रुक्ष होय ३. कदाच सर्व उच्ण, एक देश िक्वण्य अने एक देश रुक्ष होय. अिंह पण पूर्व प्रमाणे त्रण भांगा जाणवा ३. अथवा कदाच सर्व िक्वण्य, एक देश शीत अने एक देश उच्ण होय. अिंह पण पूर्व प्रमाणे त्रण भांगा जाणवा ३. अथवा कदाच सर्व रुक्ष, एक देश शीत अने एक देश उच्च होय. अिंह पण पूर्व प्रमाणे त्रण भांगा जाणवा ३. विकास भांगा जाणवा ३ के के एक देश होय १ अथवा एक देश िक्वण्य अने एक देश रुक्ष होय १ अथवा एक देश शिवण्य अने एक देश रुक्ष होय १ अथवा एक देश शिवण्य अने एक देश होय ३ अथवा एक देश शिवण्य अने अनेक देशो रुक्ष होय २ अथवा एक देश शिवण्य अने एक देश रुक्ष ४ अथवा एक देश शिवण्य अने एक देश हिल्प्य अने एक देश शिवण्य अने अनेक देशो रुक्ष होय ५ अथवा एक देश शिवण्य अने एक देश रुक्ष ४ अथवा एक देश शिवण्य अने एक देश रुक्ष ४ अथवा एक देश शिवण्य अने एक देश शिवण्य अने अनेक देशो रुक्ष होय ५ अथवा एक देश शिवण्य अने एक देश शिवण्य अने एक देश रुक्ष ४ अथवा अनेक देशो रुक्ष होय ५ अथवा एक देश शिवण्य अने एक देश रुक्ष ४ अथवा अनेक देशो रुक्ष ८ अथवा अनेक देशो शिवण्य अने एक देश रुक्ष ७ अथवा अनेक देशो शिवण्य अने एक देश रुक्ष ५ एक देश शिवण्य अनेक देशो शिवण्य अने एक देश रुक्ष ५ एक देश शिवण्य अनेक देशो शिवण्य अने एक देश रुक्ष ५ एक देश रुक्ष ७ एक देश शिवण्य अनेक देशो शिवण्य अनेक देशो शिवण्य अने एक देश रुक्ष एक एक देश शिवण्य अनेक देशो शिवण्य अनेक देशो शिवण्य अने एक देश रुक्ष एक देश रुक्ष एक देश शिवण्य अनेक देशो शिवण्य अने एक देश रुक्ष एक रुक्ष एक रुक्ष एक रुक्ष एक रुक्ष होय १ एक रुक्ष होय भागाओ थाय छे.

चतुःप्रदेशिक स्कन्धः ना भागाओः 8. [प्र०] हे भगवन् । चतुष्प्रदेशिक स्कंध केटला वर्णवाळो होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम <sup>†</sup>अढारमा शतकमां कहाँ **छे, ते** प्रमाणे अहिं यावत्—'ते कदाच चार स्परीवाळो होय' त्यां सुची कहें हुं. जो ते एक वर्णवाळो होय तो ते कदाच काळो होय अने यावत्—धोळो होय ५. जो ते वे वर्णवाळो होय तो (१) कदाच तेनो एक अंश काळो अने एक अंश कीलो होय, कदाच तेनो एक देश काळो अने अनेक देशो लीला होय २. कदाच अनेक देशो काळा अने एक देश कीलो होय ३. अथवा अनेक देशो काळा अने

३ \* त्रिप्रदेशिक स्कन्धना चार स्पर्शना बधा अदा एकवचनमां होय खारे प्रथम मंग थाय. जेम, १ एकदेश शीत, ३ एक देश उष्ण, ३ एक देश क्रिय अने ४ एक देश स्था. तेमां छेला रूक्ष पदने अने ६ वचनमां मूकीए खारे बीजो भंग थाय. एटले परमाणुरूप एक देश शीत अने परमाणु रूप एक देश उष्ण. पुनः वे शीत परमाणुमां एक परमाणु रूप एक परमाणु रूप एक परमाणु रूप एक परमाणु रूप एक परमाणुमां एक छे ते वक्त क्रियध अने जे एक उष्ण छे ते रूक्ष छे. बीजा पदने अनेक वचनमां मूकतां चोथो भोगो थाय. क्रियध वे परमाणुरूप एक देश शीत अने एक परमाणुरूप बीजो अंधा रूक्ष, क्रियध वे परमाणुमांनो वाकीनो अंश तथा रूक्ष अंश बक्त उष्ण. पांचमो भंग—एक अंश शीत अने क्रियध तथा बीजा वे अंश उष्ण अने रूक्ष. छुट्टो भंग—एक अंश शीत अने रूक्ष तथा बीजा वे अंशो उष्ण अने हित्यध सातमा भंगमां क्रियधरूप वे परमाणुमानो एक अने बीजो एक एम वे अंश शीत क्राणवा, बाकीना एक एक अंश उष्ण, क्रियध अने रूक्ष जाणवा. आठमा भंगमां वे अंशो शीत अने रूक्ष तथा एक अंश उष्ण अने क्रियध जाणवो. नवमां भंगमां निक्य देशा वित्यध होय अने क्रियध जाणवो. नवमां भंगमां निक्य देशा वित्यध तथा होत अने क्रियध जाणवो. नवमां भंगमां निक्य देशा वित्यध होय अने क्रियध जाणवो. नवमां भंगमां निक्य देशा वित्यध होय अने क्रियध जाणवो. नवमां भंगमां क्रियध होय. ए प्रमाणे त्रिप्रदेशिक स्कृत्यमा स्पर्धने आश्रयी प्रचीश भागा वाय छे,—दीका.

कालप व द्वालिद्य य ४। सिय कालप य सुकिद्धप य ४। सिय नीलप य लोहियप य ४। सिय नीलप य हालिद्य य ४। सिय नीलप य सुकिद्धप य ४। सिय लोहियप य हालिद्य य ४। सिय लोहियप य सुकिद्धप य ४। सिय हालिद्य य सुकिद्धप य ४। पर्व पप दस दुयासंजोगा मंगा पुण चत्तालीसं ४०। जर तिवन्ने सिय कालप य नीलप य लोहियप य १, सिय कालप नीलप लोहियगा य २, सिय कालप य नीलगा य लोहियप य ३, सिय कालगा य नीलप य लोहियप य इए संगा ४। पर्व कालनीलद्दालिद्द्यांहें संगा ४, कालनीलसुकिद्ध० ४, काललोहियदालिद् ४, काललोहियसुकिद्ध० ४, काललोहियसुकिद्ध० ४, नीलहालिद्द्युकिद्ध० ४। नीललोहियहालिद्गाणं ४ संगा, नीललोहियसुकिद्ध० ४, नीलहालिद्द्युकिद्ध० ४, लोहिय-द्वालिद्युकिद्धणाणं ४ संगा। पर्व पप दस्तियासंजोगा, पकेके संजोप चत्तारि संगा, सबे ते चत्तालीसं संगा ४०। जद चउ-क्को सिय कालप नीलप लोहियप हालिद्य हालिद्य सुकिद्धप ४, सिय कालप नीलप लोहियप सुकिद्धप २, सिय कालप नीलप सोहयप सुकिद्धप १, सिय कालप हालिद्द्य सुकिद्धप १, सिय कालप हालिद्द्य सुकिद्धप १, सिय नीलप लोहियप द्वालिद्द्य सुकिद्धप १, सिय नीलप लोहियप द्वालिद्द्य सुकिद्धप १। एवसेते चजक-गसंजोप पंच संगा। एप सबे नउद्द संगा।

जह प्रगांधे सिय सुन्भिगंधे १ सिय दुन्भिगंधे य २, जह दुगंधे सिय सुन्भिगंधे य सिय दुन्भिगंधे य ४। रसा जहा बन्ना। जह दुफासे जहेव परमाणुपोग्गले ४। जह तिफासे सबे सीप देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सबे सीप देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सबे सीप देसे निद्धे देसे लुक्खा ४, सबे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खा १, सबे उसिणे देसे निद्धे देसे सुक्खा । एवं भंगा ४, सबे निद्धे देसे सीप देसे उसिणे ४, सबे लुक्खे । एवं भंगा ४, सबे निद्धे देसे सीप देसे उसिणे ४, सबे लुक्खे देसे सीप देसे उसिणे ४। एए तिफासे सोलस मंगा।

अनेक देशो छीटा होय १. (२) अथवा कदाच एक अंश काळो अने एक अंश रातो होय. अहिं पण पूर्वनी पेटे चार भांगा करवा १. (३) कदाच एक अंश काळो अने एक अंश पीळो होय १. (४) कदाच एक अंश काळो अने एक अंश घोळो होय १ (५) कदाच एक अंश छीळो अने एक अंश रातो होय १. (६) कदाच छीछो अने पीळो होय १. (७) कदाच छीळो अने घोळो होय १. ए प्रमाणे आ दश दिक्तंयोगना चाछीश भांगा थाय छे. जो ते त्रण वर्णशाळो होय तो कदाच (१) काळो, छीछो अने रातो होय १. अथवा एक देश काळो, एक देश छीळो अने अनेक देशो राता होय २. अथवा एक देश काळो, अनेक देशो लीळा वर्णना ६, अथवा एक देश रातो होय १. अथवा छनेक देशो काळा, एक देश छीळो अने एक देश रातो होय २. अथवा छनेक देशो काळा, एक देश छीळो अने एक देश रातो होय १. अथवा एक देश काळो, अनेक देशो लीळा वर्णना १, (६) काळा, राता अने पीळा वर्णना १, (६) काळा, पीळा अने घोळा वर्णना १, (६) काळा, पीळा अने घोळा वर्णना १, (६) काळा, पीळा अने घोळा वर्णना १, (६) अथवा छीळा, राता अने पीळा वर्णना १, (८) अथवा छीळा, राता अने पीळा वर्णना १, (८) अथवा छीळा, राता अने घोळा वर्णना १, (१) अथवा छीळा, राता अने घोळा वर्णना १, (१) अथवा छीळा, राता अने घोळा वर्णना १, (१) अथवा छीळा, राता अने घोळा वर्णना १, १, अथवा छीळा, राता अने घोळा वर्णना १, १, अथवा छीळा, रातो अने घोळा वर्णना १, १, अथवा काळा, छीळा, रातो अने घोळो होय २. अथवा कराच काळो, छीळो होय १. अथवा कराच काळो, छीळो होय २. अथवा कराच काळो, छीळो होय १. अथवा कराच काळो, छीळो होय २. अथवा कराच काळो, छीळो होय १. अथवा कराच काळो, छीळो होय २. अथवा कराच काळो, छीळो होय १. ए प्रमाणे ए वधा मळीने चतुष्कसंयोगना पांच भागा थाय छे अने वधा मळीने वाणेने आश्रयी नेवुं मांगा थाय छे.

जो ते चतुःप्रदेशिक स्कन्ध एक गंधवाळो होय तो कदाच सुगंधी होय अने कदाच दुर्गंधी होय २. जो वे गंधवाळो होय तो ते कदाच सुगंधी अने दुर्गंधी होय ४. (कुल छ भांगा थाय.) जेम वर्णोंना भांगाओ कह्या तेम \*रसोना ९० भांगाओ जाणवा. जो वे स्पर्शवाळो होय तो तेना परमाणुपुद्र टर्ना पंटे (चार) भांगा कहेवा. जो ते त्रण स्पर्शवाळो होय तो सर्व शीत होय अने तेनो एक देश क्षिण्ध अने अनेक देशो रुक्ष होय २. अथवा सर्व शीत होय अने एक देश क्षिण्ध अने अनेक देशो क्षिण्ध अने एक देश रुक्ष होय ३. अथवा सर्व शीत होय अने अनेक देशो क्षिण्ध अने एक देश रुक्ष होय ४. (३) अथवा सर्व क्षिण्ध होय अने एक

रसने आश्रयी ९० मांगाओ.

चतःसंयोगी भांगाओ---

वर्णने आश्रयी ९० मांगाओः

<sup>\*</sup> ४ रसना द्विकसंयोगी अने त्रिकसंयोगी दश दश भांगाओ याय छे, अने एक एक संयोगमां एकवचन अने अनेकवचन वढे चतुर्भंगी यवाधी तेमै बार गुणा करतां तेना कुल ८० भांगा याय छे.

१ तीखो-२ कडवो-३ तूरो-४ खाटो.

१ तीखो-२ कडवो-३ तूरो-५ मीठो

९ तीखो-२ कडवो-४ खाटो-५ मीठो

१ तीस्रो-३ तूरो-४ खाटो-५ मीठो

२ कडवो-३ तूरो-४ साटो ५ मीठो

आ घउफासे देसे सीप देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्बे १, देसे सीप देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्बा २, देसे सीप देसे असिण देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्बा ३, देसे सीप देसे असिण देसे निद्धे देसे उसिणे देसा निद्धा वेसे सीप देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्बा ५, देसे सीप देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्बा ५, देसे सीप देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्बा ५, देसे सीप देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्बा ८, देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्बा ९, एवं एए चउफासे सोलस मंगा माणियहा जाव-देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्बा । सहे एते फासेसु छत्तीसं मंगा।

4. [प्र0] एंचपपिसप णं मंते ! बंधे कित्वकि ? [उ०] जहा बहारसमसप जाव-सिय चउफासे पक्षचे । जह प्रग-वसे प्रावश्रद्ववमा जहेव चउप्पपिसप । जह तिवसे सिय कालप नीलप लोहियप य १, सिय कालप नीलप लोहियगा व २, सिय कालप नीलगा य लोहिप य ३, सिय कालप नीलगा य लोहियगा य ४, सिय कालगा य नीलप य लोहियप य ५, सिय कालगा य नीलप य लोहियगा य ६, सिय कालगा य नीलगा य लोहियप य ७ । सिय कालप नीलप हालि-इप य । प्रत्य वि सत्त भंगा ७ । एवं कालगनीलगसुकिल्यसु सत्त भंगा, कालगलोहियहालिहेसु ७, कालगलोहियसुकिल्यसु ७,

देश शीत अने एक देश उष्ण होय ४. (४) अथवा सर्व रक्ष होय अने एक देश शीत अने एक देश उष्ण होय ४. ए प्रमाणे बधा मळीने त्रण स्पर्शना सोळ मांगा थाय छे १६. कदाच चार स्पर्शवाळो होय तो तेनो एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश क्षिण अने एक देश रक्ष होय १. अथवा एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश क्षिण अने अनेक देशो रुक्ष होय २. अथवा एक देश शित, एक देश उष्ण, अनेक देशो क्षिण अने एक देश रक्ष होय ३. अथवा एक देश शीत, एक देश उष्ण, अनेक देशो क्षिण अने अनेक देशो उष्ण, एक देश क्षिण अने एक देश शीत अनेक देशो उष्ण, एक देश शित अनेक देशो उष्ण, अनेक देशो क्षिण अने अनेक देशो क्षिण अने अनेक देशो क्षिण अने अनेक देशो क्षिण अने अनेक देशो हित्य स्पर्शना \*सोळ भांगा कहेवा. यावत्—तेना अनेक देशो शीत, अनेक देशो उष्ण, अनेक देशो किया अने अनेक देशो शीत, अनेक देशो हित्य संयोगी १६, अने चतुःसंयोगी १६] स्पर्श संबंधे छत्रीश भांगा याय छे. [चतुष्प्रदेशी स्कंधने आश्रयी वर्णना ६०, गंधना ६, रसना ९०, अने स्पर्शना ३६ मळी २२२ भांगाओ धाय छे.]

चतुष्पदेशिक स्कन्ध मा २१२ भोगाओः

**पांच प्रदेशिक** १कन्थः

प. प्रि॰ो हे मगवन् ! पांच प्रदेशवाळो स्कंथ केटला वर्णवाळो होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! <sup>†</sup>अदारमां शतकमां कह्या प्रमाणे यावत्-'ते कदाच चार स्पर्शवाळो कहाो छे' त्यां सुधी जाणवुं. जो ते एक वर्णवाळो के बे वर्णवाळो होय तो चार प्रदेशवाळा स्कन्धनी पेठे तेना ( ५, ४० ) भांगा जाणवा. जो ते त्रण वर्णवाळो होय तो (१) कदाच तेनो एक देश काळो, एक देश लीलो **कने** एक देश रातो होय १. कदाच एक देश काळो. एक देश छीछो अने अनेक देशो राता होय २. कदाच एक देश काळो. अनेक देशो लीला अने एक देश रातो होय ३. कदाच एक देश काळो, अनेक देशो लीला अने अनेक देशो राता होय ४. अथवा तेना अनेक देशों काळा, एक देश लीलों अने एक देश राती होय ५. अथवा अनेक देशों काळा, एक देश लीलों अने अनेक देशों राता होय ६. अथवा अनेक देशो काळा, अनेक देशो लील अने एक देश रातो होय ७. अथवा कदाच (२) तेनो एक देश काळो, एक देश लीलो अने एक देश पीळो होय. आ त्रिकसंयोगमां पण सात भांगा कहेना ७. एम (३) काळो, लीखो अने घोळो. अहिं पण सात भांगा समजवा ७. (४) अथवा काळो, रातो अने पीळो होय ७. (५) अथवा काळो, रातो अने घोळो होय ७. (६) अथवा काळो, पीळो अने घोळो होय ७. (७) लीलो, रातो अने पीळो ७. (८) अथवा लीलो, रातो अने घोळो ७. (९) अथवा लीलो, पीळो अने घोळो ७. (१०) अथवा रातो, पीळो अने घोळो होय ७. ए प्रमाणे दश त्रिकसंयोगना सीत्तेर भांगा थाय छे. हवे जो ते चार स्पर्शशाळो होय तो (१) कदाच एक देश काळो, एक देश लीलो, एक देश रातो अने एक देश पीळो होय १. अथवा एक देश काळो, लीलो, रातो अने अनेक देश पीळा होय २, अयवा एक देश काळो, लीलो, अनेक देशो राता अने एक देश पीळो होय ३, अपवा एक देश काळो. अनेक देशों छीला, एक देश रातों अने एक देश पीळो होय ४. अपना तेना अनेक देशो काळा, एक देश छीलो, एक देश रातों अने एक देशो पीळो होय ५. ए प्रमाणे एक चतुःसंयोगमां पांच भांगा जाणवा. वळो ए रीते (२) कदाच एक देश काळो, ठीछो, रातो अने भोळो ५. (३) एक देश काळो, लीलो, पीळो अने भोळो ५. (४) अथवा काळो, रातो, पीळो अने भोळो होय ५. (५) अयवा कदाच लीलो. रातो, पीळो अने घोळो होय ५. ए प्रमाणे पांच चतुःसंयोगना पचीश भांगा याय छे. वळी जो ते पांच वर्णवाळो होय तो काळो, ठीळो.

४ \* अनेक देशो शीत, एक देश उष्ण, एक देश जिर्थ अने अनेक देशो रूक्ष होय १०. अनेक देशो शीत, एक देश उष्ण अनेक देशो जिर्थ अने एक देश रूप ११. अथवा अनेक देशो शीत, एक देश उष्ण, अनेक देशो जिर्थ अने अनेक देशो रूप होय ११. अथवा अनेक देशो शीत, अनेक देशो जिर्थ अने एक देश जिर्थ अने एक देश रूप १३. अथवा अनेक देशो शीत, अनेक देशो उष्ण, एक देश जिर्थ अने एक देश रूप १३. अथवा अनेक देशो शीत, अनेक देशो उष्ण, एक देश जिर्थ अने एक देशो जिर्थ अने एक देशो जिर्थ अने एक देश हैं। अथवा अनेक देशो शीत, अनेक देशो उष्ण, एक देश जिर्थ अने हेशो जिर्थ अने एक देश इस १५. अने छेलों भागो मूळमां कहेलो छे.

५ रे भग॰ खं॰ ४ श॰ १८ उ॰ ६ पृ॰ ६३ सू॰ ६.

कालगहालिह्सुकिल्चेसु ७, नीलगलोहियहालिह्सु ७, नीलगलोहियसुकिल्चेसु सत्त मंगा ७, नीलगहालिह्सुकिल्चेसु ७, लोहि-वहालिह्सुकिल्चेसु १ सत्त मंगा ७। एवमेते तियासंजोप सत्तरि मंगा। जह बडवसे सिय कालप य नीलप लोहियप हालिह्य य १, सिय कालप य नीलप य लोहियप य हालिह्गे य १, सिय कालप नीलगा य लोहियगे य हालिह्गे य ४, सिय कालगा य नीलप य लोहियग य हालिह्गे य १, सिय कालगा य नीलप य लोहियग य दालिह्गे य ५, सिय कालगा य नीलप य लोहियग य दालिह्गे य ४, सिय कालगा य नीलप य लोहियग य हालिह्प य ५। एप पंच भंगा। सिय कालप य नीलप य लोहियप य सुकिल्लप य पत्थ वि पंच मंगा ५, एवं कालगनीलगहालिह्सुकिल्लेसु वि पंच मंगा। सिय कालगलोहियहालिह्सुकिल्लेसु वि पंच मंगा ५, नीलगलोहियहालिह्सुकिल्लेसु वि पंच मंगा ५, प्वमते चउकगसंजो-दर्ण पणवीसं मंगा। जह पंचवके कालप य नीलप य लोहियप य हालिह्प य सुकिल्लप य। सबमेते एकग-द्वयग—तियग—वजक—पंचगसंजोपणं ईयालं मंगसयं मचित। गंघा जहा चउपप्यसियस्स। रसा जहा वजा। काला जहा चउपप्रसियस्स।

इ. [10] छप्पप्सिए णं भंते! संधे कितवन्ने? [30] पवं जहा पंचपप्सिए, जाय-'सिय चउकासे पश्चे'। जह प्रावन्ने प्रावन्न-दुवन्ना जहा पंचपप्सियस्स । जह तिवन्ने सिय कालप य नीलप य लोहियए य, पवं जहेव पंचपप्सियस्स सत्त मंगा जाव-सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य ७, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य ८। प्प अट्ट मङ्गा। प्रवमेते इस तियासंजोगा, एकेकए संजोगे अट्ट मंगा, पवं सबे वि तियगसंजोगे असीति मंगा। जह चउवने सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिह्प य १, सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिह्गा य २, सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिह्प य ३, सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिह्गा य ४, सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिह्गा य ६, सिय कालए य नीलगा य लोहियण य हालिह्मा य ६, सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिह्म य ७, सिय कालण य नीलए य लोहियण य हालिह्म य ८, सिय कालगा य नीलए य लोहियण य हालिह्म य १०, सिय कालगा य नीलए य लोहियण य हालिह्म य १०, सिय कालगा य नीलए य लोहियण य हालिह्म य १०, सिय कालगा य नीलए य लोहियण य ११। प्प पकारस मंगा, प्रवमेते पंचचउकासंजोगा कायवा, प्रक्रेकसंजोप पकारस मंगा, सबे ते चउक्रसंजोपणं पणपन्नं मंगा। जह पंचवन्ने सिय कालप य नीलए य लोहियए य हालिह्म य हालिह्म य १०, सिय कालप य नीलए य लोहियए य हालिह्म य हालिह्म य १०, सिय कालप य नीलए य लोहियए य हालिह्म य हालिह्म य १०, सिय कालप य नीलए य लोहियए य हालिह्म य हालिह्म य १०, सिय कालप य नीलए य लोहियए य हालिह्म य हालिह्म य १०, सिय कालप य नीलए य लोहियए य हालिह्म य हालिह्म य १०, सिय कालप य नीलए य लोहियए य हालिह्म य हालिह्म य १०, सिय कालप य नीलए य लोहियए य हालिह्म य हालिह्म य

रातो, पीळो अने घोळो होय १. ए प्रमाणे असंयोगी ५, द्विकसंयोगी ४०, त्रिकसंयोगी ७०, चतुःसंयोगी २५, अने पंचसंयोगी १-एम बचा मळीने वर्णना १४१ मांगा थाय छे. गंध संबंधे चतुष्प्रदेशिक स्कंधनी पंठ क्र मांगा जाणवा. अने वर्णोर्ना पेठे रसना पण १४१ मांगा जाणवा. तेमज स्पर्शना ३६ मांगा पण चतुष्प्रदेशिक स्कंधनी पेठे जाणवा. [ पंच प्रदेशिक स्कंधने आश्रयी वर्णना १४१, गंधना ६, रसना १४१ अने स्पर्शना ३६ मळीने कुछ ३२४ मांगाओ थाय छे. ]

पंचप्रदेशिक स्कन्ध-ना वर्णादिने आ**नवी** १२४ भागाओ.

६. [प्र०] हे भगवन् ! छ प्रदेशवाळो स्कंध केटला वर्णवाळो होय ?—हत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम पंचप्रदेशिक स्कन्ध माटे कह्यं 🕏 तेम ते यावत्-'कदाच चार स्पर्शवाळो होय' त्यां सुधी बधुं कहेवुं. जो ते एक के बे वर्णवाळो होय तो एक वर्ण अने बे वर्णना भागा पंचप्रदेशिकनी पेठे (५ अने ४५) जाणवा. जो त्रण वर्णवाळो होय तो (१) कदाच काळो, ठीलो अने रातो होय १, ए प्रमाणे पंच प्रदेशिक स्कंबना सात भांगा कहा। छे तेम अहिं कहेबा यावत्-७ 'कदाच तेना अनेक देशो काळा, ठीला अने एक देश रातो होय.' ८ कदाच अनेक देशो काळा, लीला अने राता होय. ए प्रमाणे एक त्रिकसंयोगना आठ भांगा जाणवा. एवा दश त्रिक संयोगना एंशी भांगा थाय. जो ते चार वर्णवाळो होय तो कदाच एक देश काळो, ठीछो, रातो अने पीळो होय १, कदाच एक देश काळो, एक देश लीलो, एक देश रातो अने अनेक देशो पीळा होय २, अथवा एक देश काळो, एक देश लीलो, अनेक देशो राता अने एक देश पीळो होय ३, कदाच एक देश काळो, एक देश छीछो, अनेक देशो राता अने अनेक देशो पीळा होय ४, कदाच एक देश काळो, अनेक देशो लीला, एक देश रातो अने एक देश पीळो होय ५, अथवा एक देश काळो, अनेक देशो लीला, एक देश रातो अने अनेक देशो पीळा होय ६, अथवा एक देश काळो, अनेक देशो लीला, अनेक देशो राता अने एक देश पीळो होय ७, अथवा एक देश काळो, एक देश लीलो, एक देश रातो अने एक देश पीळो होय ८, कदाच तेना अनेक देशो काळा, एक देश छीलो, एक देश रातो अने अनेक देशो पीळा होय ९, कदाच तेना अनेक देशो काळा, एक देश छीलो, अनेक देशो राता अने एक देश पीळो होय १०, अथवा अनेक देशो काळा, अनेक देशो लीला, एक देश रातो अने एक देश पीळो होय ११. ए प्रमाणे ए चतुःसंयोगी अगीयार भांगा यया. एवा पांच चतुःसंयोग करवा. प्रत्येक चतुःसंयोगमां अगियार आगियार भांगा गणतां बधा मळीने चतुःसंयोगी पंचावन भांगा याय छे. हवे जो ते पांचवर्णवाळो होय तो (१) कदाच एक देश काळो, लीलो, रातो, पीळो अने धोळो होय १, कदाच एक देश काळो, एक देश लीलो, एक देश रातो, एक देश पीळो अने अनेक देशो घोळा होय २, अथवा एक देश काळो, लीखो, रातो, अनेक देशो पीळा अने एक देश घोळो होय ३, कदाच एक देश काळो, एक देश लीलो, अनेक देशो राता, एक देश पीळो अने एक देश घोळो होय ८, अथवा एक देश काळो, अनेक देशो लीला, एक देश रातो, पीळो अने घोळो होय ५, अपवा

छ प्रदेशिक स्क-न्धना वर्णोदिना भां-गाओ सुकिल्लगा य २, सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिङ्गा य सुकिल्लए य ३, सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिङ्ग य सुकिल्लए य ४, मिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिङ्ग य सुकिल्लए य ५, सिय कालगा य नील्ण्य य लोहियए य हालिङ्ग य सुकिल्लए य ६, एवं एए छन्मंगा भाणियञ्चा, एवमेते सच्चे वि एकग–दुयग–तियग–खउक्कग⇒ पंचगसंजोगेसु छासीयं मंगसयं भवंति । गंघा जहा पंचपपसियस्स । रसा जहा एयस्सेव वक्षा । कासा जहा चउप्पपसियस्स ।

७. [प्रव] सत्तपपसिप णं भंते! खंधे कितविषेठ ! [उठ] जहा पंचपणसिप जाय-'सिय चउफासे' पक्षते। जह पराखंबेठ एवं प्राविद्युवण्णतिविष्ठा जहा छप्पपसियस्स। जह चउवन्ने सिय कालप य नीलप य लोहियए य हालिह्ण य १, सिय कालप य नीलप य लोहियए य हालिह्ण य २, सिय कालप य नीलप य लोहियणा य हालिह्ण य ३, एवमेते खंडक्रासंजोगेणं पन्नरस मंगा माणियद्वा जाय-'सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिह्ण य १५। प्रवमेते पंचचडकसंजोगा नेयद्वा, पक्रेकें संजोप पन्नरस मंगा, सद्वमेने पंचसत्तरि मंगा मर्वति। जह पंचवन्ने सिय कालप य नीलप य लोहियप य हालिह्ण य सुक्तिल्लप य १, सिय कालप य नीलप य लोहियण य हालिह्ण य सुक्तिल्लगा य २, सिय कालप य
नीलप य लोहियण य हालिह्गा य सुक्तिल्लप य ३, सिय कालण य नीलप य लोहियण य हालिह्गा य सुक्तिल्लगा य ४,
सिय कालप य नीलप य लोहियगा य हालिहण य सुक्तिल्लप य ५, सिय कालप य नीलगा य लोहियगा य हालिहण य सुक्तिल्लप य ७, सिय कालप य नीलगा य लोहियण य
हालिहण य सुक्तिल्लप य ८, सिय कालप य नीलगा य लोहियण य हालिहण य सुक्तिल्लण य १, सिय कालप य नीलगा
य लोहियगे य हालिहणा य सुक्तिल्लप य १०, सिय कालण य नीलगा य लोहियगा य हालिहण य सुक्तिल्लप य ११, सिय
कालगा य नीलगे य लोहियण य हालिहण य सुक्तिल्लप य १२, सिय कालगा य नीलप य लोहियगे य हालिहण य सुक्तिल्लप य ११, सिय
कालगा य नीलगे य लोहियण य हालिहण य सुक्तिल्लप य १२, सिय कालगा य नीलप य लोहियगे य हालिहण य सुक्तिल्लप य १३, सिय कालगा य नीलप य लोहियगे य हालिहण य सुक्तिल्लप य १३, सिय कालगा य नीलप य लोहियगे य हालिहण य सुक्तिल्लप य १४, सिय कालगा य नीलप य लोहियगे य नीलप य लोहियगे य हालिहण य सुक्तिल्लप य १४, सिय कालगा य नीलप य लोहियगे य नीलप य लोहियगे

अनेक देशों काळा, एक देश लीलों, रातों, पीळों, अने घोळों होय. ए प्रमाण छ भांगा समजवा. ए प्रमाण [ असंयोगी ५, द्विकसंयोगी ६०, त्रिकसंयोगी ८०, चतुःसंयोगी ५५ अने पंचसंयोगी ६०सर्व मळीने वर्णने आश्रयी ] १८६ भांगा थाय छे. गंध संबंधे पंचप्रदे- शिक्तनी पेठे ६ भांगा जाणवा, रसो वर्णोनी पेठे जाणवा. अने स्पर्शना चतुष्प्रदेशिक स्कंधनी पेठे भांगा जाणवा. [ ए प्रमाणे छ प्रदेशिक स्कंधने आश्रयी वर्णना १८६, गंधना ६, रसना १८६, अने स्पर्शना ३६ मळी कुळ ४१४ भांगाओ थाय छे. ]

छ प्रदेशिक स्कन्धः ना ४१४ मांगा.

सात प्रदेशिक स्वन् न्धना वर्णादिना ,आंगाओ-

७. प्रि॰] हे भगवन् ! सात प्रदेशवाळो स्कंध केटला वर्णवाळो होय !–इत्यादि प्रश्न. (उ॰) हे गौतम ! जेम पंचप्रदेशिक स्कंध संबंधे कहां तेम अहिं पण कहेवुं. यावत्—'कदाच चार स्पर्शवाळो होय.' जो ते एक वर्णवाळो–इस्पाटि होय तो एक वर्ण, वे वर्ण अने त्रण वर्णना भांगा छ प्रदेशिक स्कंधना पेठे जाणवा. हवे जो ते कदाच चार वर्णवाटो होय तो (१) कदाच एक देश काळो, छीछो, रातो अने पीळो होय. १, कदाच एक देश काळो, एक देश लीखो, एक देश रातो अने अनेक देशो पीळा होय २, कदाच एक देश काळो. एक देश छीटो, अनेक देशो राता अने एक देश पीळो होय ३, िकदाच एक देश काळो, अनेक देशो छीला, एक देश राती अने एक देश पीळो होय ४ ] ए प्रमाणे आ चतुष्कसंयोगमां पंदर भांगा कहेवा, यावतू-१५ कदाच अनेक देशो काळा, अनेक देशों ठीला, अनेक देशों राता अने एक देश पीळों होय. ए प्रमाण पांच चतुष्कसंयोग जाणवा, एक एक चतुष्कसंयोगमा पंदर पंदर भांगाओ याय छे. बधा मळीने पंचोतेर भांगा थाय छे. जो ते पांचवर्णवाळो होय तो (१) कदाच एक देश काळो. ही हो. रातो, पीळो अने घोळो होय ?, कदाच एक देश काळो, लीटो, रातो, पीळो अने अनेक देशो घोळा होय २, कदाच एक देश काळो, एक देश टीलो, एक देश रातो, अनेक देशो पीला अने एक देश घोळो होय २, कदाच एक देश काळो, एक देश टीलो, एक देश रातो, अनेक देशो पीळा अने अनेक देशो घोळा होय ४, कदाच एक देश काळो, एक देश छीछो, अनेक देशो राता, एक देश पीळो अने एक देश घोळो होय ५. अथवा एक देश काळो, एक देश लीलो, अनंक देशो राता. एक देश पीळो अने अनेक देशो घोळा होय ६, कदाच एक देश काळो, एक देश लीलो, अनेक देशो राता, अनेक देशो पीळा अने एक देश घोळो होय ७, कदाच एक देश काळो, अनेक देशो लीला, एक देश रातो, एक देश पीळो अने एक देश घोळो होय ८, कदाच एक देश काळो, अनेक देशो सीला, एक देश रातो, पीळो अने अनेक देशो घोळा होए ९, कदाच एक देश काळो. अनेक देशो छीला, एक देश रातो, अनेक देशो पीळा अने एक देश घोळो होय १०, कदाच एक देश काळो, अनेक देशो लीला, सता, एक देश पीळो अने घोळो होय ११. कदाच अनेक देशों काळा, एक देश छीछो, रातो, पीळो अने घोळो होय १२, कदाच अनेक देशों काळा, एक देश छीछो, रातो, पीळो अने अनेक देशो घोळा होय १३, कदाच अनेक देशो काळा, एक देश लीलो, रातो, अनेक देशो पीळा अने एक देश घोळो होय १४, कदाच अनेक देशों काळा, एक देश लीलों, अनेक देशों राता, एक देश पीळों अने घोळों होंग १५, तथा कदाच अनेक देशों काळा. लीला एक देश रातो, पीळो अने घोळो होय १६. ए प्रमाणे सोळ भागाओ थाय छे. असंयोगी ५, द्विकसंयोगी ४०, त्रिकसंयोगी ८०, चतु-ष्कसंयोगी ७५ अने पंचसंयोगी १६ सोळ. बघा मळीने वर्णने आश्रमी बसो ने सोळ मांगा पाय छे. गंघ संबंधे चतुःशदेशिक स्कंधनी

ध हालिह्प य सुक्किल्लप य १५, सिय कालगा य नीलगा य लोहियप य हालिह्प य सुक्किल्लप य १६। एप सोलस अंगा, एवं सब्दमेते एक्कग-दुयग-तियग- चडकग-पंचगसंजोगेणं दो सोला अंगसया भवंति । गंधा जहा चडप्पपसियस्स । रसा जहा प्यस्स चेव वक्षा । कासा जहा चडप्पपसियस्स ।

८. [प्र०] अट्टपर्णसयस्स णं भंते ! खंधे०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय पगवन्ने० जहा सन्तपप्रियस्स जाव-सिय अबकासे पश्चेत जह एगवने एवं एगसभदुवन्नतिवन्ना जहेव सत्तपपसिए। जह चउवने सिय कालप य नीलए य लोहियए ब हालिइए ब १. सिय कालप य नीलप य लोहियए य हालिइगा य, पर्व जहेव सच्चपपसिप जाव⊸'सिय कालगा य **नीलगा य लोहियगा य हालिइ**गे य १५, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिइगा य १६'। ए**य** सोलस भंगा, प्यमेते पंच चडक्कसंजोगा, प्यमेते असीति भंगा ८० । जह पंचवने सिय कालप य नीलप य लोहियप य हालिहर य सुक्किल्लप य १. सिय कालए य नीलए य लोहियों य हालिहरों य सुक्किल्लगा य २, एवं एएणं कमणं भंगा बारेयद्वा जाव-सिय कालप य नीलगा य लोहियगा य हालिहगा य सुकिलग य १५, एसो पन्नरसमो भंगो, सिय कालगा य नीलगे य होहियमे य हालिहर य सुक्किलर य १६, सिय कालगा य नीलमे य लोहियमे य हालिहमे य सुक्किलगा य १७. सिय कालमा य नीलमे य लोहियमे य हालिहमा य सुक्किल्प य १८, सिय कालमा य नीलमे य लोहियमे य हालि-इना य सुक्किल्लमा य १९, सिय कालमा य नीलमे य लोहियमा य हालिइए य सुक्किल्लप य २०, सिय कालमा य नीलमे य लोहियगा य हालिइए य सुक्किलगा य २१, सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिइगा य सुक्किलए य २२, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिइए य सुकिल्लए य २३, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिइए य सक्किल्लगा य २४. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिइगा य सुक्किल्लप य २५, सिय कालगा य नीलगा ब लोहियगा य द्वालिइए य सुक्किल्लए य २६, एए पंचसंजोएणं छवीसं भंगा भवंति, एवमेव सपुद्वावरेणं एकग–दुयग–ति-थग-चउक्कग-पंचगसंजोर्णीह दो एकतीसं भंगसया भवंति । गंधा जहा सत्तपरिमयस्स, रसा जहा एयस्स चेव वन्ना, फासा जहा चउपपरियस्स ।

पेटे जाणवुं. आहं जैम वर्णना कह्या तेम रसना भांगा जाणवा अने स्पर्शना भांगा चतुष्प्रदेशिवः स्कंधनी पेठे जाणवा. [ ए प्रमाणे सप्त-प्रदेशिक स्कंधन आश्रयी वर्णना २१६, गंधना ६, रसना २१६ अने स्पर्शना ३६. मळीने कुळ ४७४ भागाओ याय छे. ]

८. [प्र०] हे भगवन् ! आठ प्रदेशवाळो स्कंप केरला वर्णवाळो होय !-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ने कदाच एक वर्णवाळो होय-इत्यादि सप्तप्रदेशिक स्कंधनी पेठे यावत—कदाच 'बार स्पर्शवाळो होय वगेरे कहेतुं.' हवे जो ते एक वर्णवाळो-इत्यादि होय तो तेना एक बर्ण, बे वर्ण अने त्रण वर्णना भागाओं सप्तप्रदेशिक स्कंधना पेटे समजवा. जो ने चारवर्णवाळी होय तो, कदाच तेनो एक देश काळो. हीलो. रातो अने पीळो होय १. बदाच तेनो एक देश काळो, लीलो, रातो अने अनेक देशो पीळा होय २. ए प्रमाणे सप्तप्रदेशिक स्कंधनी पेठे पंदर भागा जाणवा, यावतू-'अनेक देशो काळा, लीला, राता अने एक देश पीळो होय' १५. सोळमो भंग--कदाच अनेक देशो काळा, छीला, राता अने पीळा होय १६. एक चतुष्कासंयोगमां सोळ भांगाओ थाय हो. वधा मळीने पांच चतुष्कासंयोगन सोळ सोळ मांगा करतां एंशी मांगा थाय छे. हवे जो ते पांच वर्णवाळी होय तो कदाच एक देश काळो, छीलो, रातो, पीळो अने घोळो होय १, कदाच एक देश काळो, छीछो, रातो, पीळो अने अनेक देशो घोळा होय. ए प्रमाणे अनुक्रमे भांगाओ कहेवा, यावत एक देश काळो, अनेक देशो टीला, राता, पीळा अने एक देश घोळो होय १५. ए पंदरमो भागो जाणवो. कदाच अनेक देशो काळा, एक देश लीलो, रातो, पीळो अने घोळो होय १६, कदाच अनेक देशो काळा, एक देश लीलो, रातो, पीळो अने अनेक देशो घोळा होय १७, कदाच अनेक देशो काळा, एक देश लीलो, रातो, अनेक देशो पी<sup>ळा</sup> अने एक देश घोळो होय १८, कदाच अनेक देशो काळा, एक देश लीलो, रातो अने अनेक देशो पीळा अने घोळा होय १९, कदाच अनेक देशो काळा, एक देश ळीलो, अनेक देशो राता, एक देश पीळो अने घोळो होय २०, कदाच अनेक देशो काळा, एक देश छीछो, अनेक देशो राता, एक देश पीळो, अने अनेक देशो घोळा होय २१, कदाच अनेक देशो काळा, एक देश लीलो, अनेक देशो राता, पीळा अने एक देश घोळो होय २२. कदाच अनेक देशो काळा, लीला, एक देश रातो, पीळो अने घोळो होय २३, कदाच अनेक देशो काळा, लीला, एक देश रातो, मीळो अने अनेक देशो घोळा होय २४, कदाच अनेक देशो काळा, लीला, एक देश रातो, अनेक देशो पीळा अने एक देश भोळो होय २५, कदाच अनेक देशो काळा, छीछा, राता, एक देश पीळो अने भोळो होय २६. ए प्रमाणे ए पंच संयोगना पूर्वोक्त छन्वीश भांगाओ याय छे. अने पूर्वापर बधा मळीने असंयोगी ५, द्विकसंयोगी ४०, त्रिकसंयोगी १८०, चतुःसंयोगी ८० अने पंचसंयोगी २६-एम वर्णना बसो ने एकत्रीश भांगाओ याय छे. गंध संबंधे सप्तप्रदेशिकनी पेठे भांगाओ समजवा. वर्णोनी पेटे रसो कहेवा, अने स्पर्शना मांगा चतुष्प्रदेशिकनी पेठे कहेवा. [ ए प्रमाणे अष्टप्रदेशिक स्कंधने आश्रयी वर्णना २३१, गंधना ६, रसना २३१, अने स्पर्शना ३६ सर्व मळीने ५०४ मांगाओ याय छे. ]

सात प्रदेशिक स्क न्धना वर्णादिने आअयी ४७४ भागाः
आठ प्रदेशिक स्कन्धना वर्णादिनाः
भगोः

भए प्रदेशिक स्क-न्धना वर्णादिने आ-श्रमी ५०४ आंग्रा

- ९. [प्र०] नवपप्सियस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय पगवन्ने, जहा अट्टपप्सिए जाव-'सिय चउफासे पचरे । जर एगवन्ने एगवन्न-दुवन्न-तिवन्न-चउवन्ना जहेव अट्टपएसियस्स । जर पंचवन्ने सिय कारूप य नीरूप य खोहियप य हासि-इप य सुक्किलप य १, सिय कालप य नीलप य लोहियप य हालिहप य सुक्किलगा य २, पर्व परिवाहीप पक्कतीसं अंगी माणियद्या जाव-सिय कालगा य नीलगा य होहियगा य हालिइगा य सुक्रिलप य। एए एकचीसं मंगा। **एवं एकग-इयग-**तियग-चउक्कग-पंचगसंजोपिंह दो छत्तीसा भंगसया मवंति । गंधा जहा अट्रपपसियस्स । रसा जहा पयस्स चेव वक्का, फासा जहा चउपपसियस्स ।
- १०. [प्र०] इसपप्रसिप् णं भंते ! खंधे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय प्रावन्ने० जहा नवप्रसिप जाव-'सिय चड-फासे पन्नचे'। जह एगवन्ने एगवन्न-द्वन्न-तिवन्न-चउवन्ना जहेव नवपपसियस्स । पंचवन्ने वि तहेव, नवरं बचीसितमो भंगो मन्नति । एवमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएसु दोन्नि सत्ततीसा मंगसया भवंति । गंधा जहा नवपपसियस्स । रसा जहा प्यस्स चेव यन्ना। फासा जाव-चडप्पस्तियस्स । जहा इसप्पसिओ एवं संखेजप्पसिओ वि, एवं असंखेजप्प-सिक्षो वि. सुहुमपरिणको अर्णतपपसिक्षो वि पवं चेव।
- ११, पि॰] बायरपरिणए णं भंते ! अणंतपप्रसिप खंधे कतिवक्षे॰ ? उि॰] एवं जहा अट्टारसमसप जाब-'सिप अट्ट-फासे पद्मत्ते'। वन्न-गंध-रसा जहा दसपपसियस्स । जइ चउफासे सबे कफ्खडे सबे गठप सबे सीप सबे निद्धे १, सबे कक्खडे सहे गहए सहे सीए सहे लुक्खे २, सहे कक्खडे सहे गहए सहे उसिणे सहे निद्धे ३, सहे कक्खडे सहे गहए सबे उसिणे सबे लुक्से ४, सबे कक्सडे सबे लहुए सबे सीप सबे निद्धे ५, सबे कक्सडे सबे लहुए सबे सीए सबे लुक्से ६, सब्ने कपसड़े सब्ने टहुए सब्ने उसिणे सब्ने निद्धे ७, सब्ने कक्खड़े सब्ने टहुए सब्ने उसिणे सब्ने लुक्खे ८, सब्ने गउए सब्ने गरुप सबे सीप सबे निद्धे ९, सबे मज्य सबे गरुप सबे सीप सबे लुक्से १०, सबे मज्य सबे गरुप सबे उसिणे सबे

९. [प्र०] हे भगवन् ! नव प्रदेशिक स्कंध केटला वर्णवाळो होय !-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! अष्टप्रदेशिक स्कंधना पेठे कदाच

एक वर्णवाळो यावत्-'कदाच चार स्पर्शवाळो होय छे.' जो ते एक वर्णवाळो इत्यादि होय तो एक, बे. त्रण अने चार वर्णना भांगाओ

अष्टप्रदेशिक स्कंधनी पेठे जाणवा. हवे जो ते पांचवर्णवाळो होय तो कदाच एक देश काळो, लीखो, रातो, पीळो भने धोळो होय १,

नव प्रदेशिक स्क म्बना वर्णादिना मंगी.

नव प्रदेशिक स्क-न्यना वर्णादिने आ-अयी ५१४ भगी. दश प्रदेशिक स्क यर्णादिना त्थना

भंगो.

दश प्रदेशिक स्क म्थना ५१६ अंगो.

११. [प्र०] हे भगवन् ! वादरपरिणामवाळो (स्थूल) अनंतप्रदेशिक स्कंथ केटला वर्णवाळो होय!--इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! <sup>†</sup>अढारमा शतकमां कह्या प्रमाणे यावत्–'ते कदान्व आठ स्पर्शवाळो पण कह्यो छे' त्यां सुची जाणवुं. तेना वर्ण, गंध अने रसना मांगाओ दराप्रदेशिक स्कंधनी पेठे जाणवा. हवे जो ते चारस्पर्शवाळो होय तो, कदाच सर्व कर्करा, सर्व गुरु, सर्व शीत अने सर्व क्रिय होय १, कदाच सर्व कर्करा, सर्व गुरु, सर्व शीत अने सर्व रुक्ष होय २, कदाच सर्व कर्करा, सर्व गुरु, सुर्व उष्ण अने सर्व शिष्ध होय ३, कदाच सर्व कर्करा, सर्व ग्रुरु, सर्व उप्पा अने सर्व रक्ष होय ४, कदाच सर्व कर्करा, सर्व लघु, सर्व शीत अने सर्व क्रिय होय ५, कदाच सर्व कर्करा, सर्वे छप्तु, सर्वे शीत अने सर्वे रुक्ष होय ६, कदाच सर्वे कर्करा, सर्वे छप्तु, सर्वे उच्चा अने सर्वे क्विग्ध होय ७, कदाच सर्वे कर्करा, सर्व छघु, सर्व उच्ण अने सर्व रक्ष होय ८, कदाच सर्व मृदु-कोमळ, सर्व गुरु, सर्व शीत अने सर्व क्रिग्ध होय ९, कदाच

अनंत प्रदेशिक श्यूक परिणागवाळा स्कन्धना वर्णोदिना भंगो.

कदाच एक देश काळो, छीछो, रातो, पीळो अने अनेक देशो घोळा होय २, ए प्रमाणे ऋम पूर्वक एकत्रीश भागाओ कहेवा. यावत्-कदाच तेना अनेक देशो काळा, लीला, राता, पीळा अने एक देश धोळो होय ३१. ए प्रमाणे एकत्रीश भांगा जाणवा. एम वर्णने आश्रयी असंयोगी ५, द्विकसंयोगी ४०, त्रिकसंयोगी ८०, चतुःसंयोगी ८० अने पंचसंयोगी ३१-बधा मळीने बसो ने छ्त्रीरा भांगा थाय छे. गंधसंबंधे अष्टप्रदेशिकनी जेम कहेतुं. रक्ष संबंधे पोताना वर्णनी जेम जाणतुं अने स्पर्श संबंधे चतुःप्रदेशिक स्कंधनी पेठे कहेतुं. [ए प्रमाणे नवप्रदेशिक स्कंधने आश्रयी वर्णना २३६, गंधना ६, रसना २३६ अने स्पर्शना ३६, सर्व मळीने ५१४ भांगाओ शाय छे.] १०. प्रि०] हे भगवन् ! दराप्रदेशिक, स्कंध संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नवप्रदेशिक, स्कंधनी पेटे कदाच एक वर्णवाळी होय, यावत्-कदाच चार स्पर्शवाळो होय. जो ते एक वर्णवाळो इत्यादि होय तो, एक, बे, त्रण अने चार वर्ण संबंधे नवप्रदेशिक स्कंधनी जेम कहेवुं. जो ते पांच वर्णवाळो होय तो पण नवप्रदेशिकनी पेठे ज जाणबुं. पण विशेष ए के, आहें \*बत्रीशमो भांगो अधिक कहेवो. ए प्रमाण असंयोगी ५, द्विकसंयोगी ४०, त्रिकसंयोगी ८०, चतुःसंयोगी ८० अने पंचसंयोगी ३२-वधा मळीने बसोने साडत्रीश भांगा याय छे. गंध मंबंधे नवप्रदेशिक स्कन्धनी पेटे भांगा कहेवा. रसना भांगा पोताना वर्णनी पेटे जाणवा. अने स्पर्श संबंधी भांगा

चतुष्प्रदेशिकनी पेठे जाणवा. [ ए प्रमाणे दशप्रदेशिक स्कंधने आश्रयी वर्णना २३७, गंधना ६, रसना २३७, अने स्पर्शना ३६. बधा

मळीने ५१६ भांगाओ थाय छे. ] जेम दराप्रदेशिक स्कंध कहा। तेम मंख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने सूक्ष्मपरिणामबाळो अनंतप्र-

देशिक स्कंध पण जाणवी.

९० के अनेक देशों काळा, लीला, राता, पीळा अने भोळा होय छे ३२.

१९ ै भग । सं । ४ श । १८ द । ६ ए । ६४,

निजे ११, सबे मउए सबे गरुए सबे उसिणे सबे लुक्खे १२, सबे मउए सबे लाइ सबे सीए सबे निजे १३, सबे मउए सबे लाइ सबे सीए सबे लुक्खे १४, सबे मउए सबे लाइए सबे उसिणे सबे निजे १५, सबे मउए सबे लाइए सबे उसिणे सबे लिए । एए सोलस मंगा।

जह पंचकासे सबे कक्खडे सबे गरुप सबे सीप देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सबे कक्खडे सबे गरुप सबे सीप देसे निद्धे देसा लुक्खा २, सबे कक्खडे सबे गरुप सबे सीप देसा निद्धा देसे लुक्खे ३, सबे कक्खडे सबे गरुप सबे सीप देसा निद्धा देसे लुक्खे ४, सबे कक्खडे सबे लहुप सबे सीप देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सबे कक्खडे सबे लहुप सबे सीप देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, पयं पप कक्खडेण सोलस मंगा। सबे मडप सबे गरुप सबे गरुप सबे गरुप सबे गरुप सबे गरुप सबे निद्धे देसे लुक्खे ४, पयं पप कक्खडेण सोलस मंगा। सबे कक्खडे सबे गरुप सबे निद्धे देसे लुक्खे ४, पयं मडपण वि सोलस मंगा, पयं वत्तीसं मंगा। सबे कक्खडे सबे गरुप सबे निद्धे देसे उसिणे ४, सबे कक्खडे सबे गरुप सबे लुक्खे देसे सीप देसे उसिणे ४, पण बचीसं मंगा। सबे कक्खडे सबे सीप सबे निद्धे देसे गरुप सबे लिए सबे निद्धे देसे गरुप सबे निद्धे देसे मडप, पत्थ वि बचीसं मंगा, पवं सबे ते पंचकासे अद्वावीसं मंगस्यं भवति।

जइ छफासे सबे कक्खडे सबे गठए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सबे कक्खडे सबे गठए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा २, एवं जाव—सबे कक्छडे सबे गठए देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा १६, एए सोलस भंगा। सबे कक्खडे सबे डबुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा। सबे मउए सबे लिए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा। सबे मउए सबे लिए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस मंगा, एए चउसिंटु भंगा। सबे कक्खडे सबे सीए देसे गठए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव—सबे मउए सबे उसिणे देसा गठया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा,

सर्व मृदु, सर्व गुरु, सर्व शीत अने सर्व रक्ष होय १०, कदाच सर्व मृदु, सर्व गुरु, सर्व उष्ण अने सर्व क्षिण्य होय ११, कदाच सर्व मृदु, सर्व गुरु, सर्व उष्ण अने सर्व क्षिण्य होय १२, कदाच सर्व मृदु, सर्व छ्यु, सर्व शीत अने सर्व क्षिण्य होय १२, कदाच सर्व मृदु, सर्व छ्यु, सर्व शिण अने सर्व रक्ष होय १४, कदाच सर्व मृदु, सर्व छ्यु, सर्व उष्ण अने सर्व रुक्ष होय १५, कदाच सर्व मृदु, सर्व छ्यु, सर्व उष्ण अने सर्व रुक्ष होय १६, ए सोळ मांगाओ जाणवा.

हवे जो ते पांचस्पर्शवाळो होय तो (१) सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व शीत, एक देश क्लिम्थ अने एक देश रुक्ष होय १, बाच सर्वज्ञा मंगी अथवा सर्व कर्कश, सर्व शुरु, सर्व शीत, एक देश क्लिम्थ अने अनेक देशो रुक्ष होय २, अथवा सर्व कर्कश, सर्व शुरु, सर्व शीत, अनेक देशो क्लिम्थ अने एक देश रुक्ष होय ३, अथवा सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व शीत, अनेक देशो क्लिम्थ अने एक देश रुक्ष होय ४, अथवा (२) कराच सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व उण्ण, एक देश क्लिम्थ अने एक देश रुक्ष होय ४, [आहं उपर प्रमाणे चार मांगा जाणवा.] (३) सर्व कर्कश, सर्व छु, सर्व शीत, एक देश क्लिम्थ अने एक देश क्लिम्थ अने एक देश क्लिम्थ अने एक देश रुक्ष होय ४. ए प्रमाणे कर्कशनी साथ सोळ मांगा थया. अथवा सर्व मृदु, सर्व गुरु, सर्व शीत, एक देश क्लिम्थ अने एक देश रुक्ष होय १६. आहं मृदुनी साथे पण कर्कशनी पेठे सोळ मांगा करवा. ए रीते बधा मळीने बत्रीश मांगा थाय छे. अथवा सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व क्लिम्थ एक देश शीत अने एक देश उच्चा १६, अथवा सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व रुक्ष, एक देश गुरु अने एक देश शीत अने एक देश होय १६, ए बधा मळीने बत्रीश मांगा जाणवा. कराच सर्व कर्कश, एक देश कर्कश, एक देश गुरु अने एक देश अने एक देश अने एक देश गुरु अने एक देश गुरु अने एक देश मांगा करवा. ए गुमाणे बधा मळीने पांच स्पर्शना एकसोने अञ्चावीश मांगा पाय छे.

हवे जो ते छ स्पर्शवाळो होय तो (१) सर्व कर्करा, सर्व गुरु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश क्लिप्स अने एक देश रुक्ष होय १, कदाच सर्व कर्करा, सर्व गुरु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश क्लिप्स अने अनेक देशो रुक्ष होय २, ए प्रमाणे यावत्—सर्व कर्करा, सर्व गुरु, अनेक देशो शीत, अनेक देशो उष्ण, अनेक देशो क्लिप्स अने अनेक देशो रुक्ष होय १६. ए प्रमाणे सोळ मांगा करवा. (२) कदाच सर्व कर्करा, सर्व छघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश क्लिप्स अने एक देश रुक्ष होय १६. अहिं पण सोळ मांगा कहेवा. (३) कदाच सर्व गृदु, सर्व गुरु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश क्लिप्स अने एक देश रुक्ष होय १६. अहिं पण सोळ मांगा कहेवा. (४) कदाच सर्व गृदु, सर्व छघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश क्लिप्स अने एक देश रुक्ष होय १६. अहिं पण सोळ मांगा कहेवा. ए बधा मळीने चोसठ मांगा थाय छे. अथवा कदाच सर्व कर्कश, सर्व शीत, एक देश गुरु, एक देश छघु, एक देश क्लिप्स अने एक देश होय. ए प्रमाणे यावत्—सर्व मृदु, सर्व उष्ण, अनेक देशो गुरु, अनेक देशो क्लिप्स अने एक देश होय. ए प्रमाणे यावत्—सर्व मृदु, सर्व उष्ण, अनेक देशो गुरु, अनेक देशो क्लिप्स अने एक देश होय. ए प्रमाणे यावत्—सर्व मृदु, सर्व उष्ण, अनेक देशो गुरु, अनेक देशो क्लिप्स अने हेशो होय. अहिं चोसठ मांगा जाणवा. कदाच सर्व कर्कश, सर्व क्लिप्स, एक देश गुरु, एक

छ स्पर्शना भंगी-

पत्य वि चडसाँहुं भंगा। सबे कक्खड़े सबे निद्धे देसे गठप देसे छहुए देसे सीए देसे उसिणे १, जाव-सबे मउए सबे छुक्खे देसा गठया देसा लहुया देसा सीया दंसा उसिणा, एए चउसाँहुं भंगा। सबे गठए सबे सीए देसे कक्खड़े देसे मउए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव-सबे लहुए सबे उसिणे देसा कक्खड़ा देसा मउया देसा निद्धा देसा जुक्खा, एए खड़साँहुं भंगा। सबे गठए सबे निद्धे देसे कक्खड़े देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे, जाव-सबे लहुए सबे लुक्खे देसा कक्खड़ा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसाँहुं भंगा। सबे सीए सबे निद्धे देसे कक्खड़े देसे मड़ए देसे गठए देसे लहुए, जाव-सबे उसिणे सबे लुक्खे देसा कक्खड़ा देसा मड़या देसा लहुया, एए चउसाँहुं भंगा। सबे सीए सबे निद्धे देसे कक्खड़े देसे मड़ए देसे गठए देसे लहुए, जाव-सबे उसिणे सबे लुक्खे देसा कक्खड़ा देसा मड़या देसा गठ्या देसा लहुया, एए चउसाँहुं भंगा। सबे ते छ़कासे तिक्षि चउरासीया भंगसया भवंति ३८४।

जह ससफासे सब्वे कन्छड़े देसे गरूप देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सब्वे कक्खड़े देसे गरूप देसे लहुए देसे सीप देसे उसिणे देसे निद्धे देसे गरूप देसे लहुए देसे सीप देसे जिल्ला देसे निद्धे देसे गरूप देसे लहुए देसे सीप देसे लिखे देसे लुक्खे ४, सब्वे कक्खड़े देसे गरूप देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे १, सब्वे कक्खड़े देसे गरूप देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे । सब्वे ते सोलस भंगा माणियहा । सब्वे कक्खड़े देसे गरूप देसा लहुपा देसे सीप देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं गरूपणं एन्तेणं लहुपणं पुहुत्तेणं एते वि सोलस भंगा । सब्वे कक्खड़े देसा गरूपा देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भंगा भाणियहा । सब्वे कक्खड़े देसा गरूपा देसा लहुपा देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे । एवं मजएण वि समं चउसाईं भंगा भाणियहा । सब्वे गरूप देसे कक्खड़े देसे मजप देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे । एवं गरूपण वि समं चउसाईं भंगा कायहा । सब्वे लहुए देसे कक्खड़े देसे मजप देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे । एवं गरूपण वि समं चउसाईं भंगा कायहा । सब्वे लहुए देसे कक्खड़े देसे मजप देसे सीए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे । एवं लहुएण वि समं चउसाईं भंगा कायहा । सब्वे लहुए देसे कक्खड़े देसे मजप देसे गरूप देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे । एवं सीतेण वि समं चउसाईं भंगा कायहा । सब्वे उसिणे देसे कक्खड़े देसे मजप देसे गरूप देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे । एवं सीतेण वि समं चउसाईं भंगा कायहा । सब्वे उसिणे देसे कक्खड़े देसे मजप देसे गरूप देसे गरूप देसे लिख देसे निद्धे देसे लुक्खे ।

देश लघु, एक देश शीत अने एक देश उष्ण होय, यावत्—कटाच सर्व मृदु, सर्व हक्ष, अनेक देशो गुरु, अनेक देशो लघु, अनेक देशो श्रीत अने अनेक देशो उष्ण होय. ए प्रमाण अहिं एण चोसट भांगा करवा. कटाच सर्व गुरु, सर्व शीन, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश क्लिप्थ अने एक देश रुक्ष होय. ए प्रमाणे यावत्—सर्व लघु, सर्व उष्ण, अनेक देशो कर्कश, अनेक देशो मृदु, अनेक देशो किर्य अने अनेक देशो रुक्ष होय. ए प्रमाणे चोसट भांगा समजवा. कटाच मर्व गुरु, सर्व किर्य, एक देश कर्कश, पूर् देश मृदु, एक देश शीत अने एक देश उष्ण होय, यावत्—कटाच सर्व लघु, सर्व रुक्ष, अनेक देशो कर्कश, अनेक देशो मृदु, अनेक देशो शीत अने अनेक देशो उष्ण होय. ए प्रमाणे अहिं एण चोसट भागा जाणवा. कटाच सर्व शीत, सर्व क्लिप्थ, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु अने एक देश लघु होय. ए प्रमाणे अहिं एण चोसट भागा जाणवा. कटाच सर्व शीत कर्कश, अनेक देशो मृदु, अनेक देशो गुरु अने अनेक देशो लघु होय. ए प्रमाणे अहिं एण चोसट भागा जाणवा. ते वथा मळीने छ स्पर्श संबंधे ३८४ भागा थाय छे.

सात स्पर्शना भंगी.

हवे जो ते सात स्पर्शवाळो होय तो (१) सर्व कर्करा, एक देश गुरु, एक देश लगु, एक देश शीत, एक देश उच्ण, एक देश क्रिय अने एक देश रक्ष होय १, कटाच सर्व कर्करा, एक देश गुरु, एक देश लगु, एक देश शीत, एक देश उच्ण, अनेक देशों क्रिय अने एक देश रक्ष होय ४. [ ए प्रमाण चार मांगा करवा ]. (२) कदाच सर्व कर्करा, एक देश गुरु, एक देश लगु, एक देश लगु, एक देश लगु, एक देश लगु, एक देश तथा पर, एक देश तथा, एक देश तथा अने एक देश होय ४. (४) कदाच सर्व कर्करा, एक देश गुरु, एक देश लगु, अनेक देशों शीत, एक देश उच्ण, एक देश क्रिय अने एक देश हथा होय ४. ए बधा मळीने सोळ मांगा कहेवा. (२) कदाच सर्व कर्करा, एक देश गुरु, अनेक देशों लगु, एक देश होय ४. ए बधा मळीने सोळ मांगा कहेवा. (२) कदाच सर्व कर्करा, एक देश गुरु, अनेक देशों लगु, एक देश शीत, एक देश जागा, एक देश क्रिय अने एक देश होय १ ६. (३) कदाच सर्व कर्करा, अनेक देशों गुरु, एक देश शीत, एक देश लगा ज सोळ मांगा अहिं पण कहेवा १६. (३) कदाच सर्व कर्करा, अनेक देशों गुरु, एक देश शीत, एक देश लगा करेवा एक देश तथा हथा, एक देश लगा करेवा ६४. (२) कदाच सर्व कर्करा, अनेक देश होय १६. ए पण सोळ मांगा कहेवा. (४) वदाच सर्व कर्करा, अनेक देशों गुरु, अनेक देशों लगा करेवा हथा होय. एक देश उच्ण, एक देश क्रिय अने एक देश रक्ष होय १६. (२) कदाच सर्व मुदु, एक देश गुरु, एक देश तथा करेवा हथा, एक देश होय. ए प्रमाणे 'मुदु'नी साथे पण चोसठ भांगा करवा. (३) कदाच सर्व गुरु, एक देश रक्ष, ए प्रमाणे 'गुरु'नी साथे पण चोसठ भांगा कहेवा. (४) कदाच सर्व लगा 'मुदु'नी साथे पण चोसठ भांगा करवा. (३) कदाच सर्व हिया एक्ष, एक देश कर्करा, एक देश सर्व, ए

ख़ुक्ते । एवं उसिणेण वि समं चउसिंहुं मंगा कायबा । सबे निखे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए हेसे उसिणे। एवं निद्येण वि चउसिंट्ट भंगा कायबा। सबे लुक्खे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरूप देसे लहुए देसे सीप देसे उसिणे। एवं लुक्खेण वि समं चउसिंटू भंगा कायबा जाव-सबे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मज्या देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा । एवं सत्तफासे पंच बारसुत्तरा भंगसया भवंति । १५

जह अटुफासे देसे कक्सडे देसे मउप देसे गरुप देसे लड़ुप देसे सीप देसे उसिण देसे निडे देसे लुक्से ४, देसे कक्बडे देसे मउए देसे गरुर देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे दंसे लुक्बे ४, देसे कक्बडे देसे मउए देसे गरुप देसे लहुप देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, इसे कक्खडे देसे मजप देसे गरुप देसे लहुप देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्बे ४, एए चलारि चउका सोलस मंगा । देसे कक्बडे देसे भउए देसे गरूप देसा लहुया देसे सीप देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लक्ष्से, एवं एते गरुएणं दगत्तवणं लहुएणं पृहसपणं सोलस भंगा कायचा । देसे कक्खड़े देसे मडए देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४ । एए वि सोलस मंगा कायबा । देसे कफ्बडे देसे मउए देसा गठया देसा उहुया देसे सीए देसे उमिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे। एते वि सोलस मंगा कायबा। सबे वि ते चउसद्वि भंगा कक्खड-मउपहि एगसपिंहै। ताहे कक्खडेणं पगसपणं मउपणं पृहसंणं पतं चउसद्वि भंगा कायचा। ताहे कफ्लडेणं पृह्तपणं मउपणं पगराएणं चउसट्टिं मंगा कायचा । ताहे एतेहिं चेव दोहि वि पुहुसेहिं चउसिंह भंगा कायबा जाव-'देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा देसा निज्ञा वेसा लुक्सा' पसो अपच्छिमो भंगो । सब्वे ते अट्रफासे दो छप्पन्ना भंगसया भवंति । एवं एते बाद्रपरिणए अर्णतपपसिए संघे सम्रेस संजोपस बारस छन्नउया भंगसया मर्वति ।

शीत, एक देश उष्ण, एक देश क्रियं अने एक देश इक्ष होय. ए प्रमाणे छयु'नी साथे पण चौसट भागा कहेवा. (५) कदाच सर्व शीत, एक देश कर्फश, एक देश मृद्, एक देश गुरु, एक देश छघु, एक देश क्रिक्ष अने एक देश रुक्ष होय. ए प्रमाणे 'शीत'नी साधे पण चोसठ मांगा कहेवा. (६) कदाच सर्व उष्ण. एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश रुघु, एक देश स्निग्ध अने एक देश रुक्ष होय. ए प्रमाणे 'उष्ण'नी साथे पण चोसट भांगा कहेवा. (७) कदाच सर्व क्तिग्व, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत, अने एक देश उप्ण होय. ए प्रमाणे 'लिएव'नी साथे पण चोसठ भांगा कहेबा. (८) कदाच सर्व रुक्ष, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत अने एक देश उपण होय ए प्रमाणे 'रुक्ष' साथे पण चोसठ मांगः वस्याः यावत्–सर्व रक्ष, अनेक देशो मृदु, अनेक देशो गुरु, अनेक देशो लघु. अनेक देशो शीत अने अनेक देशो उष्ण होय ६४. ए रीते बधा मळीने सात स्पर्शना पांचसीने बार भांगा याय छे.

जो ते आठ स्पर्शवाळो होय तो (१) कदाच एक देश कर्करा, एक देश मृद्, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश श्रीत, एक बाठ स्पर्शना मंगी-देश उष्ण, एक देश क्रिया अने एक देश रुक्ष होय ४. [अहिं चार भांगा करवा. ] (२) कदाच एक देश कर्कश, एक देश मृदू, एक देश गुरु, एक देश रुघु, एक देश शीत, अनेक देशो उष्ण, एक देश क्रिय अने एक देश रुक्ष होय ४, (३) कदाच एक देश कर्कश, एक देश मृद्धं, एक देश गुरु, एक देश लघु, अनेक देशो शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निम्ध अने एक देश रुक्ष होय ४. [ अहिं पण चार भांगा करवा ]. (४) कदाच एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश ट्यु, अनेक देशो शीत, अनेक देशो उष्ण, एक देश स्निग्ध अने एक देश रुक्ष होय ४. ए प्रमाणे चार चतुष्कना सोळ भांगा करवा. (२) कहाच एक देश कर्कश, एक देश सृद्, एक देश गुरु, अनेक देशो ऌघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश क्रिप्ध अने एक देश रुक्ष होय. ए प्रमाणे 'गुरु' ने एक वचनमां थने 'छघु'ने बहुनचनमां राखी ( उपरना ज ) सोळ भांगा करवा १६. (३) कदाच एक देश कर्कश, एक देश मृदु, अनेक देशो गुरु, एक देश छपु, एक देश शीत, एक देश टप्ण, एक देश स्निम्ध अने एक देश रुक्ष होय. ए प्रमाणे अहिं पण सोळ भागा करवा. (४) कदाच एक देश कर्कश, एक देश मृदु, अनेक देशो गुरु, अनेक देशो छघु, एक देश शीत, एक देश उच्चा, एक देश क्रिय अने एक देश रुक्ष होय. अहि पण सोळ भागा करवा. ए बधा मळीने चोसठ भागा 'कर्कश अने मृदु' ने एक वचनमां राखवाधी थाय. (२) तेमां कर्कशने एक वचनमां अने मृदुने अनेक वचनमां राखी एज प्रमाणे बीजा चोसठ भांगा करवा. वळी तेमां (३) कर्कशने बहुवचनमां अने मृदुने एक वचनमां राखी पुनः चोसठ भांगा करवा. वळी पण (१) कर्कश अने मृदु बन्नेने बहुसंख्यामां राखी बीजा चोसठ भांगा करवा. याषत्—अनेक देशो कर्फश, अनेक देशो मृदु, अनेक देशो गुरु, अनेक देशो छघु, अनेक देशो शीत, अनेक देशो उष्ण, अनेक देशो क्लिग्ध अने अनेक देशो रुक्ष होय ६४. ए छेल्लो भांगो छे. ए बधा मळीने आठ स्पर्शना बसो ने छप्पन भांगा पाय छे. ए प्रमाणे बादर-परिणामवाळा अनंतप्रदेशिक स्कंथमा स्पर्शना सर्व संयोगीने आश्रयी [ चतुःसंयोगी १६, पंचसंयोगी १२८, छसंयोगी ३८४, सतसंयोगी ५१२ अने अष्टसंयोगी २५६-] बधा मळीने १२९६ मांगा याय छे.

बावर स्कम्थना स्पराने आश्रयी १२९६ वर्गो.

- १२. [प्र॰] कइविदे मंते! परमाणू पक्षते ! [उ॰] गोयमा! खउविदे परमाणू पक्षते तंत्रहा-१ द्वपरमाणू, २ केंद-परमाणू, ३ कालपरमाणू, ४ भावपरमाणू।
- १३, [प्र०] द्वपरमाण् णं भंते ! कहविहे पक्षते ? [उ०] गोयमा ! चउिहे पक्षते तंत्रहा-१ अच्छेजे, १ ममेजे, ३ अडलहे, ४ मगेज्हे ।
- १४. [प्र॰] खेलपरमाणू णं भंते ! कहविहे पक्षते ? [उ॰] गोयमा ! चउिहे पक्षते तंत्रहा-१ मणडे, २ ममजे, इ अपदेसे, ४ मविमाहमे ।
  - १५. [प्र०] फालपरमाणू-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! चउन्निहे पन्नते, तंत्रहा-१ अवन्ने, २ अगंधे, ३ अरसे, ४ अफासे ।
- १६. [प्र॰] भाषपरमाणू णं भंते ! कहिष्टे पश्चले ! [उ॰] गोयमा ! चउष्टि पश्चले तंजहा-१ वश्नमंते, २ गंधमंते, ३ रसमंते, ४ फासमंते । 'सेवं मंते ! सेवं भंते !' सि जाब-विहरति ।

### वीसहमे सए पंचमो उद्देसी समत्ती।

परमाणुना चार प्रकार- १२, [प्र०] हे भगवन्! परमाणु केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! परमाणु चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ \*दव्यपरमाणु, २ क्षेत्रपरमाणु, ३ कालपरमाणु अने ४ भावपरमाणु.

द्रव्यपरमाणुना प्रकार- १३. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यपरमाणु केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे गौतम ! द्रव्यपरमाणु चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—-१ अछेच, २ अभेच, ३ अदाह्य अने ४ अग्राह्य.

क्षेत्रपरमाणुना प्रकार- १४. [प्र०] हे भगवन् ! क्षेत्रपरमाणु केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे गातम ! क्षेत्रपरमाणु चार प्रकारनो कह्यो छे ; ते आ प्रमाणे—१ <sup>†</sup>अनर्थ, २ अमध्य, ३ अप्रदेश अने ४ अविभाग.

काळपरमाणुना प्रकारः १५. [प्र०] हे भगवन् ! कालपरमाणु केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे— १ अवर्ण, २ अगंध, ३ अरस अने ४ अस्पर्श.

**भावपर**माणुना **भकार**- १६. [प्र०] हे भगवन् ! भावपरमाणु केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गीतम ! चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे— १ वर्णवाळो, २ गंधवाळो, ३ रसवाळो अने ४ स्पर्शवाळो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.' एम कही [भगवान् गीतम ] यावत्—विहरे छे.

# वीश्वमा शतकमां पंचम उद्देशक समाप्त.

# छट्टओ उद्देसो ।

१. [प्र॰] पुढविकाइए णं भंते ! स्मीसे रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणिता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उवविकास्य से णं भंते ! कि पुर्वि उवविकास पच्छा आहारेखा पुर्वि आहारिता

### षष्ठ उद्देशक.

पृथिवीकायिकनु आहार अने उत्प-सिनुं पौर्वापर्य- १. [प्र०] हे भगवन्! जे पृथिवीकायिक जीव, आ रत्नप्रभा पृथिवी अने शर्कराप्रभा पृथिवीनी वच्चे ‡मरणसमुद्घात करीने सौधर्मक-रुपमां पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते शुं पहेलां उत्पन्न धईने पछी आहार करे के पहेलां आहार करीने पछी उत्पन्न धाय १ [उ०] हे गौतम ! ते पहेलां उत्पन्न यईने पछी आहार करे, अथवा पहेलां आहार करीने पछी उत्पन्न थाय-इत्सादि हकीकत <sup>क</sup>सत्तरमा

१२ \* वर्णादि धर्मनी विवक्षा सिवायनो एक परमाणु द्रव्य परमाणु कहेवाय छेः कारण के आहि केवल द्रव्यनी ज विवक्षा छे, एक आकाश प्रवेश क्षेत्र परमाणु, समय काळ परमाणु अने वर्णादि धर्मना प्राधान्यनी विवक्षा थी भाष परमाणु कहेवाय छे.

१४ <sup>†</sup> परमाणुना समसंख्यानाळा अवयव नवी माटे ते अनर्थ, विषम संख्यानाळा अवयवो नथी माटे अमध्य, अवयवो नथी माटे अधिदेश अने तेनो विभाग थई शकतो नथी माटे अविभाग कहेवाय छे.

<sup>9 ‡</sup> अन्तर्सुहूर्तनुं आयुष बाकी होथ खारे मरणान्त दुःखबी पीडित बयेल जीन पोताना आत्मप्रदेशो वढे मुखादि छिद्रोने प्रीने तथा शरीर प्रमाण पहोळाह अने जाडाइ राखी तथा लंबाइमां उत्पत्ति स्थानपर्यंत क्षेत्र व्यापीने अन्तर्सुहूर्तमां मरण पामे अने आयुष कर्मना घणा पुद्रलोनो क्षय करे ते मरणसप्तु-द्वात कहेबाय छे. कोइ एक जीव समुद्धात करीने भवान्तरमां उत्पन्न थाय छे अने खां आहार करे छे अने शरीर बांधे छे, कोइ जीव समुद्धातशी निवृत्त बई पोताना शरीरमां आवीने फरी समुद्धात करी भवान्तरमां उत्पन्न थाय छे. जुओ भग अव १ श ६ उ ० ६ पृ० ३१६.

<sup>ीं</sup> जीनो देशबी अने सर्वयी एम ने प्रकार भरणसमुद्धात करें छे, ज्यारे देशबी भरणसमुद्धात करें छे लारे ते भरणसमुद्धातकी निवृत्त धर्षे पूर्वना शरीरने सर्वया छोबी दहानी गतिथी जाय छे अने ते प्रथम उत्पन्न थाय छे अने पछी आहार करें छे. पण जे सर्व समुद्धात करें छे ते देखिका, गतिथी लां जई पछी शरीरनो लाग करें छे ते थी प्रथम आहार करें छे अने पछी उत्पन्न थाय छे-जुओ अगः कंट ४ श्रुट १७ उट ६ पूट ४०.

। उचवजेजा ! [ड॰] नोयमा ! पुर्वि वा उवविज्ञित्ता॰ एवं जहा सत्तरसमसय छट्टदेसे जाव—से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं क्रिक्ट-'पुर्वि वा जाव-उववज्रेजा' । नवरं तेहिं संपाउणणा, इमेहिं माहारो भन्नति, सेसं तं चेव ।

- २. [४०] पुढविकार्य णं भंते ! इमीसे रयणप्यभाय सक्षरप्यभाय य पुढवीय अंतरा समोहए, समोहणिचा जे भविप हैसाजे कपे पुडविकादयत्ताप उवविज्ञत्तप० ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव-ईसीपन्नाराए उववाएयहो।
- इ. [प्र॰] पुडविकार्य में अंते ! सकरप्यमाय बालुयप्यमाय य पुढवीय अंतरा समोहते, समोहणिसा जे मविष सोहस्मे जान-ईसीपम्भाराप, पर्व परोण कमेणं जाव-तमाय महेसत्तमाप य पुढवीप अंतरा समोहय समाणे जे मविष सोहस्मे जाव-**ईसिपभाराय उववाययद्यो ।**
- ४. [प्र०] पुढविकार्य जं मंते ! सोहम्मी-सायाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोह्य, समोहणिचा जे मबिए श्मीसे रयणप्यमाए पुढवीए पुढविकाश्यत्ताए उवविकत्तए से णं भंते ! पुर्वि उवविकत्ता पच्छा आहारेजा, सेसं तं चेव जाव-से तेणट्रेणं जाव-णिक्सेवयो ।
- ५. [प्र०] पुढविकार्य णं भंते ! सोहम्मी-साणाणं सणंकुमार-मार्हिदाण य कप्पाणं अंतरा समोह्य, समोहणिसा जे भविष सक्करप्यभाष पुढवीष पुढविकारयत्ताष उवविज्ञासप० १ [उ०] पर्व खेष, पर्व जाव–अहेसत्तमाष उववाषयद्यो । एवं सर्णकुमार-माहिदाणं बंभलोगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहप, समोहणित्ता पुणरिष जाव-अहेसत्तमाए उबवाएयद्यो, एवं बंभलोगस्स लंत-गस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, पुणरिव जाव-अहेसत्तमाए, एवं लंतगस्स महासुकस्स कप्पस्स य अंतरा समोहए, पुणरिव जाब-अहेसत्तमाप, पर्व महासुकस्स सहस्सारस्स य कप्पस्स अंतरा पुणरिष जाव-अहेसत्तमाप, पर्व सहस्सारस्स आणय-वाजयकप्याज य अंतरा पुजरिव जाव-अद्देससमाप, एवं आजय-पाजयार्ण आरज-अव्ययाज य कप्पाजं अंतरा पुजरिव जाव-अहेसत्तमाए, एवं आरण-खुयाणं गेवेखविमाणाण य अंतरा जाव-अहेसत्तमाए, एवं गेवेखविमाणाणं अणुत्तरविमाणाण य अंतरा वुजरिब जाय-अहेससमाए, एवं अणुस्तरिबमाणाणं ईमीपब्साराए य पुजरिब जाव-अहेससमाए उववाएयवी १ ।
- ६. [प्र०] आउद्धार्य णं मंते ! इमीसे रयणप्यभाष सक्करप्यभाष य पुढवीप अंतरा समोहप, समोहणिता जे मिवप सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताप उघवज्जित्तप० सेसं जहा पुढविकाइयस्स, जाव–से तेणट्टेणं०। पर्व पढम–दोबाणं अंतरा समोहप

शतकना छट्टा उदेशकमां कह्या प्रमाणे कहेवी. यावत्—ते हेतुथी हे गै।तम ! एम कहेवाय छे के—'ते पहेळां उत्पन्न थईने पछी आहार करे, अथवा पहेलां आहार करीने पंछी उत्पन्न थाय.' पण विशेष ए के, त्यां पृथिवीकार्यिको 'संप्राप्त करे-पुद्रलप्रहण करे' ए कथन छे अने अहि 'आहार करे' एम कहेवानुं छे. बाकी बधु पूर्ववत् जाणवुं.

- २. [प्र०] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिक आ रतप्रभा अने शर्कराप्रभापृथिवीनी वचे मरणसमुद्द्यात करीने ईशानकल्पमां पृथिवी-कायिकपणे उत्पन्न यवाने योग्य छे, ते द्युं पहेलां उत्पन्न थाय अने पर्छा आहार करे-इत्यादि प्रश्न [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्-ईषत्प्रारभारा पृथियी सुधी उपपान कहेवो.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिक शर्कराप्रभा अने बाहुकाप्रभा पृथिवीनी वचे मरणसगुद्धात करीने सौधर्मकल्पमां यावत्— ईषस्प्रारभारा पृथिवीमां उत्पन्न थवाने योग्य होय–इत्यादि प्रश्न अने उत्तर पूर्वयत् जाणवो. ए प्रमाणे ए ऋमवडे यावत्⊸तमा अने अध:सप्तम (तमतमा ) पृथिवीनी वच्चे मरणसमुद्धातपूर्वक पृथिवीकायिकनो सौधर्मकल्पमां यावत्—ईष्य्प्राग्मारा पृथिवीमां उपपात कहेवो.
- ४. [प्र०] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिक सौधर्म-ईशान अने सनत्कुमार-माहेन्द्रकल्पनी वच्चे मरणसमुद्**षात करीने आ र**त्नप्रभा-पृथिवीमां पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य होय ते शुं पहेलां उत्पन्न थईने पछी आहार करे के पहेलां आहार करीने पछी उत्पन्न थाय ! [उ०] बधुं पूर्व प्रमाणे जाणबुं. यावत्-ते हेतुथी यावत्-एम कहेवाय छे-इत्यादि उपसंहार कहेवी.
- प्र. [प्र०] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिक सौधर्म-ईशान अने सनत्कुमार—माहेन्द्र कल्पनी वच्चे मरणसमृद्घात करीने शर्कराप्रभा पृथि-बीमां पृथियीकायिकापणे उत्पन्न थयाने योग्य होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ते प्रमाणे यावत्—अधःसप्तम पृथिवी सुधी उप-पात कहेतो. एम सनत्कुमार-माहेन्द्र अने ब्रह्मलोक कल्पनी वश्चे मरणसमुद्घात पूर्वक फरीथी रत्नप्रभाषी मांडी यावत्-अधःसप्तम पृथिवी सुघी उपपात कहेबो. एज रीते ब्रह्मलोक अने लांतककल्पनी वस्रे मरणसमुद्घात करी पुनः यावत्—अधःसप्तम नरक सुधी, एम लांतक अने महाशुक्र कल्पनी वचे, महाशुक्र अने सहस्रार कल्पनी वचे, सहस्रार अने आनत-प्राणतकल्पनी वचे, आनत-प्राणत अने आरण-अन्युतकल्पनी वचे, आरण-अन्युत अने प्रैवेयकविमाननी वचे, प्रैवेयकविमान अने अनुत्तरविमाननी वचे तथा अनुत्तरविमान अने **ईवःप्राग्भारा पृ**थिवीनी व**चे भरणसमुद्**चात करवा पूर्वेक रत्नप्रभाषी आरंमी अधःसप्तम पृथिवी सुधी पृथिवीकायिकनो उपपात कहेवो

६. [प्रo] हे भगवन् ! जे अप्कायिक आ *र*क्तप्रभा अने दार्कराप्रभा पृथिवीनी व**चे** मरणसमुद्धात करीने सौधर्मफल्पमां अप्कायिकपणे उत्पन्न थयाने योग्य **छे—ह**स्थादि वर्षु पृथिवीकायिकनी पेठे यावत्—ते हेतुथी यावत्—[ पूर्वे आहार करे अने ] पछी पण उपजे' त्यां सुधी कहे**तुं. ए** 

अप्तावित.

जाय-ईसीपन्माराय उववाययद्वो, यवं ययणं कमेणं जाव-तमाय अहेसत्तमाय य पुढवीय अंतरा समोहय, समोहणिता जाय-ईसीपन्माराय उववाययद्वो आउकाइयत्ताय ।

- ७. [प्र०] आउयाप णं अंते ! सोहम्मी-साणाणं सणंकुमार-माहिदाण य कप्पाणं अंतरा समोहप, समोहिणिता के अविप श्मीसे स्यणप्यभाप पुढवीप घणोदिह-घणोदिह वलपसु आउद्धार्यसाप उवविक्रिसपः सेसं तं चेव, एवं पर्पाहें चेव अंतरा समोहओ जाव-अहेसत्तमाण पुढवीप घणोदिह-घणोदिह वलपसु आउद्धार्यसाप उववापयद्यो, एवं जाव-अणुसरिवमाणाणं ईसिपन्माराण य पुढवीप अंतरा समोहप जाव-अहेसत्तमाण घणोदिह-घणोदिह वलपसु उववापयद्यो २।
- ८. [प्र०] वाउकाइए णं मंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणिता जे भविए सोहम्मे कप्पे धाउकाइयत्ताए उवविज्ञत्तए० एवं जहा सत्तरसमसए बाउकाइयउद्देसए तहा इह वि, नवरं अंतरेसु समोहणा नेयवा, सेसं तं चेव, जाव-अणुत्तरविमाणाणं ईसीपन्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणिता जे भविए घणवाय-तणुवाए घणवाय-तणुवायवरूएसु वाउकाइयत्ताए उवविज्ञत्तए, सेसं तं चेव, जाव-से तेणहेणं जाव-उवव-क्रेजा। 'सेवं मंते! सेवं भंते'! ति।

### वीसइमे सए छट्टओ उद्देसी समत्ती।

प्रमाणे पहेली अने बीजी पृथिवीनी वस्त्रे मरणसमुद्घातने प्राप्त थयेल अष्कायिकनो यावत्—ईपरप्राग्भारा पृथिवी सुधी उपपात कहेवो. ए प्रमाणे ए क्रम बढे यावत्—तमा अने अधःसप्तम पृथिवीनी वस्त्रे मरणसमुद्धातने प्राप्त पयेल अष्कायिकनो यावत्—ईषस्प्राग्भारा पृथिवी सुधी अष्कायिकपणे उपपात कहेवो.

७. [प्र०] हे भगवन् । जे अप्कायिक सौंधर्म-ईशान अने सनन्कुमार-माहेन्द्रकल्पनी बच्चे मरणसमुद्धात करीने आ रक्षप्रभाष्ट्रियीमां वनोदिय अने वनोदिधिवल्योमां अप्कायिकपणे उत्पन्न प्रवाने योग्य छे-इत्यादि बधुं पूर्ववत् कहेबुं. ए प्रमाणे पूर्वे कहेला आंतराओमां मरणसमुद्धातने प्राप्त थयेल अप्कायिकनो अधः सप्तम पृथिवी सुधीना घनोदिधि अने वनोदिधिवल्योमां अप्कायिकपणे उपपात कहेबी यावत् -अनुत्तर विमान अने ईषत्प्राग्भारा पृथिवीनी बच्चे मरणसमुद्धातने प्राप्त थयेल अप्कायिकनो यावत्—सातमी पृथिवी सुधी वनोदिधि अने वनोदिधिवल्योमां अप्कायिकपणे उपपात कहेबो.

या हुन। पिक

८. [प्र०] हे भगवन् ! जे वायुकायिक आ रत्नप्रभा अने शर्कराप्रभा पृथिवीनी वश्चे मरणसमुद्धात करीने सौधर्मकल्पमां वायुकायिन कर्षणे उत्पन्न धवाने योग्य छे—हत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम "सत्तरमा शतकना वायुकायिक उदेशकमां कत्नुं छे ते प्रमाणे आहं पण कहें विशेष ए के, रत्नप्रभादि पृथिवीओना आंतरामां मरण समुद्धातसंबन्धे कहें तुं. बाकी बधुं पूर्ववत् जाणतुं. ए प्रमाणे यावत्—अनुत्तर विमान अने ईपत्प्राग्भारा पृथिवीनां वश्चे मरणसमुद्धात करीने जे वायुकायिक धनवात अने तनुवातमां तथा धनवात अने तनुवातमा वख्योम वायुकायिकपणे उत्पन्न धवाने योग्य होय—इत्यादि वाकीनुं बधुं पूर्ववत् कहेवुं. यावत्—ते हेतुधी यावत्—'उत्पन्न धाय.' हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

### वीशमा शतकमां छट्टी उद्देशक समाप्त.

# सत्तमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] कहियहें णं अंते ! वंधे पश्चले ? [उ०] गोयमा ! तिविहे वंधे पश्चले, तं जहा-१ जीवप्ययोगवंधे, २ अणं- तरवंधे, ३ परंपरवंधे ।
  - २. [प्र॰] नेरहयाणं भंते ! कहविहे बंधे पश्चले ? [उ॰] एवं चेव, एवं जाव-वेमाणियाणं ।

### सप्तम उद्देशक.

कर्मक्य.

- रै. [प्र०] हे भगवन् ! बंध केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे गौतम ! बंध त्रण प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—ॉजीव≁ प्रयोगर्वध, अनंतरबंध अने परंपरबंध.
  - २. [प्र॰] हे भगवन् ! नैरियकोने केटल प्रकारनो बंध कह्यो छे १ [उ॰] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. एम यावत्–वैमानिको सुधी कहेर्नुः
  - ८ \* मग॰ सं• ४ श॰ १७ उ० १०-११ पृ० ४२.
- 9 † जीवना प्रयोग-मन, वचन अने कायना व्यापार-वडे कर्मपुर्छोनो आत्मानी साथे संबन्ध थवो ते जीवप्रयोग बन्ध. सम्पुर्छोनो बन्ध थया प्रसीना सभ हे जे बन्ध ते अनन्तर बन्ध कहेवाय छे अने खार पछी द्वितीयादि समये जे बन्ध ते परंपर बन्ध कहेवाय छे.

- ं. [प्र०] नाणावरणिजन्स र्ण मंते ! कम्मस्स कहविहे वंधे पक्षते ! [उ०] गोयमा ! तिबिहे वंधे पक्षते, नंजहा— जीवच्ययोगवंधे, मणंतरवंधे, परंपरवंधे ।
- ध. [प्र॰] नेरहयार्थं मंते ! नाणावरणिकास्स कम्मस्स कहिवहे वंधे पश्चते ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव-वेमाणियाणं, वां जाव-वंदिक क्यां जाव-वंदिक क्यां
- ५. [प्र॰] णाणावरणिखोदयस्स णं भंते ! कम्मस्स कद्दविद्दे वंधे पन्नते ! [उ॰] गोयमा ! तिविद्दे वंधे पन्नते एवं चेव, प्रबं नेरह्याण वि, पर्व जाव-वेमाणियाणं, एवं जाव-अंतराइउद्यस्स ।
  - ६. [प्र॰] इत्थीवेवस्स णं भंते ! कइविहे बंधे पन्नते ! [उ॰] गोयमा ! तिविहे बंधे पन्नते एवं चेव ।
- ७. [प्र०] असुरकुमाराणं भंते ! इत्यीवेवस्स कतिविहे बंधे पन्नसे ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव-वेमाणियाणं, नवरं जस्स इत्यिवेदो अत्यि, एवं पुरिसवेवस्स वि, एवं नपुंसगवेवस्स वि, जाव-वेमाणियाणं, नवरं जस्स जो अत्यि वेदो ।
- ८. [प्र०] दंसणमोहणिकास्स णं भंते ! कम्मस्स कृदविष्टे वंधे पश्चे ? [७०] एवं चेव, निरंतरं जाव-वेमाणियाणं । एवं पर्पणं कमेणं ओरालियसरीरस्स जाय-कम्मगसरीरस्स, आहारसन्नाए जाय-परिगृहसन्नाए, कण्डलेसाए जाय-सुक्रलेसाए, सम्मिदृष्टीए मिच्छादिट्टीए सम्मामिच्छादिद्वीए, आमिणिबोहियणाणस्स जाय-केवलनाणस्स, मृद्यभाणस्स, सुयभन्नाणस्स, विभंगनाणस्स, एवं आभिणिबोहियणाणिवसयस्स भंते ! कृदविहे वंधे पत्रसे, जाय-केवलनाणिवसयस्स मृद्यभाणिवसयस्स सुयभन्नाणिवसयस्स विभंगणाणिवसयस्स पर्यास सब्विस पदाणं तिविहे वंधे पत्रसे । सब्वे एते चज्रविस वृंद्यगा भाणियद्वा, नवरं जाणियद्वं जस्स जं अत्थ । जाव-[४०] वेमाणियाणं भंते ! विभंगणाण-
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध केटन्त्रा प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनो कह्यो छे, ते आ ज्ञानावरणीय कर्मनो प्रमाणे—१जीवप्रयोगवंध, २ अनंतरवंध अने ३ परंपरवंध.
- ध. [प्रत] हे भगवन् । नैरियकोने ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध केटला प्रकारनो कयो छे ! [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी ज्ञानावरणीयनो बंध कहेवो. ए रीते यावत्—अंतराय कर्मनो बंध पण जाणवो.
- ५. [प्र०] हे भगवन् ! \*ज्ञानावरणीयोदय (उदयप्राप्त ज्ञानावरणीय) कमनो बंध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गीतम ! पूर्वनी पेठे त्रण प्रकारनो कह्यो छे. ए प्रमाणे नैरियको अने यावत—वैमानिकोने पण बंध वाहेवो. एम यावत्—अंतरायोदय कर्मनो बंध पण जाणको.

शानावरणीयोद्ध कर्मनो बन्ध.

६. [प्र०] हे भगवन् ! (उदय प्राप्त ) इनिवेदनो बंध केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे गौतम । पूर्व प्रमाण সण प्रकारनो कह्यो छे .

क्षीवेदनी बन्ध.

- ७. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारोने (उदय प्राप्त) स्त्रीवेदनो बंध केटला प्रकारनो कायो छे ! [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेटे प्रण प्रकारनो काद्यो छे, ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. विशेष ए के, जेने स्त्रीवेद होय तेने ते कहेवो. एम पुरुषवेद अने नपुंसकवेद संबंधे पण ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी कहेवुं. विशेष ए के जेने जे वेद होय तेने ते कहेवो.
- ८. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनमोहनीयकर्मनो बंध केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे गीतम ! पूर्व प्रमाणे त्रण प्रकारनो कह्यो छे . ए प्रमाणे निरंतर यावत्—वैमानिको सुधी कहेवुं. तथा ए रीते चारित्रमोहनीय संबंधे पण यावत्—वैमानिको सुधी कहेवुं. ए क्रम वर्ड औदारिकशरीर, यावत्—कार्मणशरीरनो, आहार, संज्ञा, यावत्—परिग्रह संज्ञानो, कृष्णलेक्ष्या, यावत्—शुक्रलेक्ष्यानो, निस्प्यटिए, मिथ्यादिए अने सम्यग्मिथ्यादिएनो, मितज्ञाननो, यावत्—केवल्ज्ञाननो, मितज्ञाननो, मितज्ञाननो, मितज्ञाननो, मितज्ञाननो विषयनो, तथा ए प्रमाणे मितज्ञानना विषयनो, यावत्—केवल्ज्ञानना विषयनो, भृतअज्ञानना विषयनो, अने विभंगज्ञानना विषयनो, ए बधानो बंध हे भगवन् ! केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] ए बधानो बंध त्रण प्रकारनो कह्यो छे, अने ते बधा संबंधे चोवीश दंडको कहेवा. विशेष ए के, जैने जे होय ते तेने कहेवुं. यावत्—[प्र०] हे भगवन् ! वैमानिकोने विभंगज्ञानना विषयनो बंध केटला प्रकारनो कह्यो छे ! [उ०] हे

दर्शनगोहनीय-कर्मनो पन्धः

५ \* १ उदय प्राप्त ज्ञानावरणीय कमेनो बन्ध पूर्वकाळनी अपेक्षाए जाणबो, २ अथवा ज्ञानावरणीयपणे जेनो उदय छ एवा कमेनो बन्ध समजवो, केमके कमें विपाक अने प्रदेश ए बने रूपे वेदाय छे, माटे अहिं विपाकोदयरूपे वेदवा लायक कमेंनो बन्ध प्रहण करवो, ३ अथवा ज्ञानावरण कमेंना उदयमां जे कमें वेधाय अथवा वेदाय ते कमेंनो बन्ध जाणबो—आ त्रण विकल्पो टीकाकारे जणाव्या छे.

८ ै पूर्वे कर्मनो आत्मानी साथे संबन्ध ते बन्ध एम कहेलुं छे, पण आहं कर्मपुद्रल के इतर पुत्रलोनो आत्मानी साथे संबन्ध ते यन्ध एम लहए तो औदारिकादि चरीर, आहादादिसंज्ञाजनक कर्म अने कृष्णादि लेक्यानो बन्ध होइ शके, पण दृष्टि, ज्ञान, अज्ञान अने तेना विषयनो बन्ध केम होइ शके ? कारण के ते बधा अपीद्रलिक छे, परन्तु आहं बन्धनो अर्थ संबन्ध मात्र विवक्षित छे, तेबी सम्यग्दृष्टि इत्यादिनो जीवप्रयोगादि बन्ध घटी शके छे.

विसयस्त कहिवहे वंधे पन्नले ? [उ०] गोयमा ! तिविहे वंधे पन्नले, तं जहा-जीवप्ययोगवंधे, वर्णतरवंधे, परंपरवंधे । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! [लि] जाव-विहरति ।

### वीसइमे सए सत्तमो उद्देसो समची ।

गातम ! त्रण प्रकारनो कहाो छे, ते आ प्रमाणे--जीवप्रयोगबंध, अनंतरबंध अने परंपरबंध. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे मगवन् ! ते एमज छे, हे मगवन् ! ते एमज छे.' एम कही यावत्-विहरे छे.

### वीश्रमा शतकमां सप्तम उद्देशक समाप्त-

# अट्टमो उद्देसो ।

- १. [प्र॰] कह णं भंते ! कम्मभूमीओ पश्चलाओ ! [उ॰] गोयमा ! पत्रस कम्मभूमीओ पश्चलाओ, तं तहा-पंच भर-हाई, यंच परवयाई, पंच महाविदेहाई ।
- २. [प्र॰] कति णं मंते! अकम्मभूमीओ पन्नसाओ ? [उ॰] गोयमा! तीसं अकम्मभूमीओ पन्नसाओ, तं जहा-पंख हेमवयाई, पंच हेरन्नवयाई, पंच हरिवासाई, पंच रम्मगवासाई, पंच देवकुराई, पंच उत्तरकुराई।
  - ३. [प्र०] प्यासु णं मंते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा ! [उ०] णो तिणहे समहे ।
- ४. [प्र॰] एएसु णं भंते ! पंचसु भरद्देसु पंचसु प्रवपसु अत्थि उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा ! [उ॰] हंता अत्थि । एएसु णं पंचसु महाविदेद्देसु णेवत्थि उस्सप्पिणी, नेवत्थि ओसप्पिणी, अवट्टिए णं तत्थ काले पन्नचे समणाउसो !।
- ५. [प्र०] एएसु णं भंते ! पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो पंचमहस्रदयं सपिडिक्समणं धम्मं पद्मवयंति ? [उ०] णो तिणद्वे समट्टे । एएसु णं भंते ! पंचसु मरहेसु, पंचसु एरवएसु, पुरिम-पद्मव्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पंचमहस्रदयं (पंचा-णुष्ठदयं) सपिडिक्समणं थम्मं पद्मवयंति, अवसेसा णं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पद्मवयंति । एएसु णं पंचसु महावि-देहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पद्मवयंति ।
- ६. [प्र॰] जंबुद्दीये णं भंते ! दीवे भारहे वासे दमीसे ओसप्पिणीप कति तित्थगरा पन्नता ! [उ॰] गोयमा ! चउवीसं तित्थगरा पन्नता, तंजहा-उसम-अजिय-संभव-अभिनंदण-सुमित-सुप्पम-सुपास-ससि-पुष्फदंत-सीयल-सेक्संस-वासु-

### अप्टम उद्देशक.

दगैभूमि.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मभूमिओ केटली कही छे ! [उ०] हे गौतम ! पंदर कर्मभूमिओ कही छे, ते आ प्रमाणे—पांच भरत, पांच ऐस्वत अने पांच महाविदेह.

अक्रमेभूगि.

२. [प्र॰] हे भगवन् ! अकर्मभूमिओ केटली कही छे ? [उ॰] हे गौतम ! त्रीरा अकर्मभूमिओ कही छे, ते आ प्रमाणे—पांच हैमबत, पांच हैरण्यत्रत, पांच हरित्रर्य, पांच स्म्यकार्य, पांच देवकुरु अने पांच उत्तरकुरु.

अक्रमेभूमिमां उत्स-पिणी अने अवसर्पि-णीरूप काळ होय ! भरत अने पेरस्तमां

- ३. [प्र०] हे भगवन् ! ए त्रीरा अकर्मभूमिओमां उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीरूप काळ छे ? [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी.
- ४. [प्र०] हे भगवन् ! ए पांच भरतोमां अने पांच ऐरवतोमां उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीरूप काळ छे ? [उ०] हा छे. [प्र०] ए पांच महाविदेहमां उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काळ छे ? [उ०] नथी. हे आयुष्मान् श्रमण ! त्यां एकरूपे अवस्थित काळ कह्यो छे.

महाविदेहमां धर्मनी जपदेश-

काछ.

५. [प्र०] हे भगवन् । ए पांच महाविदेहोमां अरहंत भगवंतो पांच महाव्रतवाटा अने प्रतिक्रमण सिंहत धर्मनो उपदेश करे छे ? [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी. परन्तु ए पांच भरतोमां अने पांच ऐरवतोमां पहेला अने छेल्ला ए वे अरहंत भगवंतो पांचमहाव्रतवाटा ( अने एगंच अणुव्रतवाटा ) तथा प्रतिक्रमणसिंहत धर्मनो उपदेश करे छे, बाकीना अरहन्त भगवंतो चारमहाव्रतवाटा धर्मनो उपदेश करे छे. वळी ए पांच महाविदेहोमां पण अरहंत भगवंतो चारमहाव्रतवाटा धर्मनो उपदेश करे छे.

मारतवर्षमां तीर्वकरोः ६. [प्र॰] हे भगवन् ! जंबूद्वीप नामे द्वीपना भारतवर्षमां आ अवसर्पिणीमां केटला तीर्पेकरो थया छे ! [उ०] हे गौतम ! चोवीश तीर्थंकरो थया छे, ते आ प्रमाणे–१ ऋषभ, २ अजित, ३ संभव, ४ अभिनंदन, ५ सुमति, ६ सुप्रभ, ७ सुपार्थ, ८ शरीन ः कुम-विमल-अर्णत-धम्म-संति-कुंधु-अर-महि-मुणिसुद्वय-निम-नेमि-पास-बदमाणा २४।

- ७. [प्र॰] एपसि णं अंते ! चडवीसाप तित्थगराणं कति जिणंतरा पन्नता ! [ड॰] गोयमा ! तेवीसं जिणंतरा पन्नता ।
- ८. [प्र॰] पर्पास र्ण मंते ! तेवीसाप जिणंतरेसु कस्स किंद्र कालियसुयस्स बोच्छेदे पन्नसे ? [उ॰] गोयमा ! एएसु णं तेवीसाप जिणंतरेसु पुरिमपच्छिमपसु अटुसु २ जिणंतरेसु पत्थ णं कालियसुयस्स अवोच्छेदे पन्नसे, मन्त्रिमपसु सत्तसु जिणं-तरेसु पत्य णं कालियसुयस्स बोच्छेदे पन्नसे, सद्वत्थ वि णं वोच्छिन्ने विद्विवाप ।
- ९. [प्र०] जंबुद्दीवे णं मंते ! दीवे मारहे वासे दमीसे मोसप्पिणीए देवाणुष्पियाणं केवतियं कालं पुत्रगए अणुसजि-स्सिति ! [उ०] गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे मारहे वासे दमीसे मोसप्पिणीए ममं दगं वाससहस्सं पुत्रगए अणुसजिस्सिति ।
- १०. [प्र०] जहा णं मंते ! अंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दमीसे ओसप्पिणीप देवाणुष्पिणाणं एगं वाससहस्सं पुष्ठगए अनुसिक्षस्सद्द, तहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दमीसे ओसप्पिणीप अवसेसाणं तित्थगराणं केवतियं कालं पुष्ठगए अणुसिक्षित्था ? [उ०] गोयमा ! अत्थेगतियाणं संसेक्षं कालं, अत्थेगद्दयाणं असंसेक्षं कालं।
- ११. [प्र॰] जंबुद्दीवे णं मंते ! दीवे मारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीप देवाणुप्पियाणं केवतियं कालं तित्थे अणुसिक्क-स्सति ! [प्र॰] गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीप ममं पगवीसं वाससहस्सारं तित्थे अणुसिकस्सित ।
- १२. [प्र०] जहा णं मंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे १मीसे जोसप्पिणीए देवाणुष्पियाणं एकवीसं वाससहस्सारं तित्थं भणुसिक्कस्तित तहा णं मंते जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साणं चरिमतित्थगरस्स केवतियं कालं तित्थे भणुसिकस्सित ! [उ०] गोयमा ! जावतिए णं उसमस्स अरहओ कोसिलियस्स जिणपरियाए एवद्दयादं संखेखादं आगमेस्साणं चरिमतित्थगरस्स तित्थे भणुसिकस्तित ।
- १३. [प्र०] तित्थं मंते ! तित्थं तित्थगरे तित्थं ! [उ०] गोयमा ! अरहा ताय नियमं तित्थकरे, तित्थं पुण चाउवधा-इम्ने समणसंघो, तं जहा-समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ।

चन्द्रप्रभ, ९ पुष्पदंत—सुविधि, १० दीतिल, ११ श्रेयांस, १२ वासुपूज्य, १३ विमल, १४ अनंत, १५ धर्म, १६ शांति, १७ कुंथु, १८ अर, १९ मक्कि, २० मुनिसुबत, २१ नांभ, २२ नेमि, २३ पार्श्व अने २४ वर्धमान.

७. [प्र०] हे भगवन् ! ए चोवीश तीर्थंकरोनां केटलां अंतरो कह्यां छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रेवीश अंतरो कह्यां छे.

चोबीश जिननां अंतरो. कालिक धुननो विच्छेद अने अधिच्छेद,

- ८. [प्र॰] हे भगवन् ! ए जिनोना त्रेवीश अंतरोमां कया जिनना अंतरमां <sup>\*</sup>कालिकश्रुतनो विन्छेद यह्यो छे ? [उ॰] हे गौतम ! ए त्रेवीश जिनांतरोमां पहेटा अने छेछा आठ आठ जिनांतरोमां कालिकश्रुतनो अविच्छेद कह्यो छे, अने वचटा सात जिनांतरोमां कालिकश्रुतनो विच्छेद कह्यो छे. दृष्टिवादनो विच्छेद तो बधाय जिनांतरोमां कह्यो छे.
- ९. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीप नामे द्वीपना भारतवर्षमां आ अवसर्पिणीमां आप देवानुप्रियनुं पूर्वगत श्रुत केटला काळ सुधी रहेशे ? पूर्वगत झतनी स्थितः [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीप नामे द्वीपना भारतवर्षमां आ अवसर्पिणी काळमां मारुं पूर्वगत श्रुत एक हजार वर्ष सुधी रहेशे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! जेम जंबूद्वीप नामे द्वीपना भारतवर्षमां आ अवसर्पिणी काळमां आप देवानुप्रियनुं पूर्वगत श्रुत एक हजारवर्ष सुधी रहेशे तेम बाकी बधा तीर्थंकरोनुं पूर्वगत श्रुत केटला काळ सुधी रह्युं हतुं ! [उ०] हे गौतम ! केटलाक तीर्थंकरोनुं संख्याता काळ सुधी अने केटलाक तीर्थंकरोनुं असंख्याता काळ सुधी पूर्वगत श्रुत रह्युं हतुं.

११. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीप नामे द्वीपना भारतवर्षमां आ अवसर्पिणीकाळमां आप देवानुप्रियनुं तीर्थ केटल काळ सुधी तीर्थनः स्थितः रहेशे ! [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीप नामे द्वीपना भारत वर्षमां आ अवसर्पिणी काळमां मारुं तीर्थ एकवीश हजार वर्ष सुधी रहेशे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! जेम जंबूदीप नामे द्वीपना भारतवर्षमां आ अवसर्पिणीकाळमां आप देवानुप्रियनुं तीर्थ एकवीश हजार वर्ष सुधी रहेशे तेम हे भगवन् ! जंबूदीपना भारतवर्षमां भावी तीर्थंकरोमांना छेछा तीर्थंकरनुं तीर्थ केटला काळ सुधी रहेशे ! [उ०] हे गौतम ! कोशलदेशना ऋपभ देव अर्हतनो जेटलो जिनपर्याय कह्यो छे, तेटलां (हजार वर्षन्यून लाख पूर्व) वर्ष सुधी भावी तीर्थं-करोमांना छेछा तीर्थंकरनुं तीर्थं रहेशे.

ना तीर्थनी स्थिति.

भावी हेहा तीर्थकर-

१३. [प्रo] हे भगवन् ! तीर्थ ए तीर्थ छे के तीर्थंकर तीर्थ छे ? [उ o] हे गीतम ! अर्हत तो अवश्य तीर्थंकर छे, (पण तीर्थ कीर्थं अने कीर्थंकर निषी.) परन्तु चार प्रकारनी श्रमण प्रधान संध-१ साधु, २ साध्वी, ३ श्रावक अने ४ श्राविका ते तीर्थ रूप छे.

७ \* जैना अध्ययनादि काळे-दिवस अने रात्रिना पहेला अने छेला प्रहरे ज वर्ष शके ते आचारांगादि कालिक श्रुत कहेवाय छे अने जेना अध्य-यकादि अभा काळे वर्ष शके ते दशकेकालिकादि उत्कालिक श्रुत कहेवाय छे-जुओ नंदिसूत्र श्रुतकानाधिकार प० २०३

- १४. [प्र॰] पवयणं मंते ! पवयणं, पावयणी पवयणं ? [ड॰] गोयमा ! अरहा ताव नियमं पावयणी, पवयणं पुण हुना-रुसंगे गणिपिडगे, तं जहा-आयारो, जाव-विद्विवासो ।
- १५. [प्र०] जे इमे भंते ! उग्गा, भोगा, राइका, इक्खागा, नाया, कोरहा एए णं अस्सि धग्मे ओगाहंति, अस्सि० ३ ओगाहित्ता अटुविहं कम्मरयमलं पवाहेंति, अटु० २ पवाहित्ता तओ पच्छा सिज्हांति, जाव–अंतं करेंति ! [उ०] हंता गोपमा ! जे इमे उग्गा भोगा तं चेव जाव–अंतं करेंति, अत्थेगह्या अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।
- १६. [प्रठ] करविद्वा णं भंते ! देवलोया पक्तता ? [उ०] गोयमा ! चउविद्वा वेवलोया पक्तता, तंजहा—सव्यवासी, वाणमंतरा, जोतिसिया वेमाणिया । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि ।

### वीसहमे सए अट्टमो उद्देसी समत्तो ।

प्रवचन अने प्रवचनी

१४. [प्र०] हे भगवन् ! प्रवचन ए प्रवचन छे, के प्रवचनी ए प्रवचन छे? [उ०] हे गौतम ! अहँत तो अवस्य प्रवचनी (प्रवचनना उपदेशक) छे, (पण प्रवचन नयी.) अने द्वादशांगगणिपिटक (आचारादि) प्रवचन छे, ते आ प्रमाणे—१ आचारांग यावत्—१२ दृष्टिवाद.

उम्र बगेरे क्षत्रियोगो धर्ममां प्रवेशः १५. [प्र०] हे भगवन् ! जे आ उप्रकुलना, भोगकुलना, राजन्यकुलना, इक्ष्वाकुकुलना, ज्ञातकुलना अने कौरव्यकुलना क्षत्रीयो, ए बधा आ धर्ममां प्रवेश करे छे अने प्रवेश करीने आठ प्रकारना कर्महत्प रजोमलने धुए छे, स्यार पछी तेओ सिद्ध थाय **छे, यावत्—सर्थ** दुःखोनो अंत करे छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, जे आ उप्रकुल वगेरेना क्षत्रियो छे ते यावत्—सर्थ दुःखोनो अंत करे छे, अने केटलाक कोइएक देवलोकोमां देवपणे उत्पन्न थाय छे.

देवलोकना प्रकार.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! देवलोको केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! देवलोको चार प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—१ भवनवासी, २ वानल्यंतर, ३ ज्योतिषिक अने ४ वैमानिक. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### वीशमा शतकमां अष्टम उदेशक समाप्त.

# नवमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] कइविहा णं मंते ! चारणा पश्चला ? [उ०] गोयमा ! दुविहा चारणा पश्चला, तं जहा⊸विज्ञाचारणा थ जंघाचारणा य ।
- २. [प्र॰] से केणट्टेणं भंते ! पवं बुबाइ-'विज्ञाचारणा' २ ! [उ॰] गोयमा ! तस्स णं छट्टंडट्टेणं अनिक्लिसेणं तबोकस्मेणं विज्ञाप उत्तरगुणलद्धि सममाणस्स विज्ञाचारणलद्धी नामं लद्धी समुप्पज्जद, से तेणट्टेणं जाव-विज्ञाचारणा २ ।
- ३. [प्र०] विज्ञाचारणस्स णं अंते ! कहं सीहा गती, कहं सीहे गितिविसए पन्नते ? [उ०] गोयमा ! अयन्नं अंबुद्दीवे दीवे जाव-किंचिविसेसाहिए परिक्सेवेणं । देवे णं महहीए जाव-महेसक्से जाव-'इणामेव'सिकट्ट केयलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहं अच्छरानिवाएहिं तिक्खुसो अणुपरियद्दिसा णं हवमागच्छेजा, विज्ञाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पन्नते ।

### नवम उद्देशक.

श्वारण मुनिना प्रकार अने तेनु सामर्थ्यः

१. [प्र०] हे भगवन् ! चारणो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! चारणो वे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे— \*विद्याचारण अने जंघाचारण.

त्रियाचारण कहेवानु कारण- २. [प्र॰] हे भगवन् ! विद्याचारण मुनिने 'विद्याचारण' एम शा हेतुथी कहेवाय छे ! [उ॰] हे गौतम ! निरंतर छट्ट छट्टना तप-कर्मवडे अने पूर्वगतश्रुतरूप विद्यावडे उत्तरगुणलब्धि—नपोलब्धिने प्राप्त थयेला मुनिने विद्याचारण नामे खब्धि उत्पन्न याय छे, माटे ते कारणथी ते यावत्—विद्याचारण मुनिने 'विद्याचारण' कहेवाय छे.

विषाचारणनी शीप्र गति. ३. [प्र०] हे भगवन् ! विद्याचारणनी केवी शीघ गति होय, अथवा तेनो गतिविषय केटलो शीघ होय ? [उ०] हे गौतम ! आ जंबूद्वीप नामे द्वीपनी यावत्—कांहक विशेषाधिक [त्रण लाख, सोळ हजार बसो सत्तावीश योजन ] परिधि छे, ते संपूर्ण जंबूद्वीपनें कोइएक महर्दिक यावत्—मोटा सुखबाळो देव यावत्—'आ फरुं छुं' एम कही त्रण चपटी बगाडे तेटली वारमां त्रणवार फरीने पाछो शीघ आवे, हे गौतम ! विद्याचारणनी तेवी शीघ गति अने तेया प्रकारनो शीघ गतिनो विषय कह्यो छे.

९ \* चरण-आकाशमां लिध्धणी अतिशय गमन करवानी शक्ति-वाळा मुनिने चारण कहे छे, तेना वे प्रकार छे-विद्या-पूर्वगत धुतहारा गमन करवानी लिध्धने प्राप्त थयेला विद्याचारण अने जंघाना व्यापारणी गमन करवानी लिध्धनाळा जंघाचारण कहेवाय छे.

- ध. [४०] विज्ञाचारणस्स णं मंते ! तिरियं केवतियं गतिविसय पक्से ? [४०] गोयमा ! से णं इभो पगेणं उप्पापणं माणुसुसरे पवय समोसरणं करेति, माणु० २ करेसा तर्हि चेदयाई वंदति, तर्हि० २ वंदिसा वितियणं उप्पायणं नंदीसरवरे क्षेत्रे समोसरणं करेति, नंदीस० २ करेसा तर्हि चेदयाई वंदति, तर्हि० २ वंदिसा तभो पिडनियस्ति, तभौ पिडनियस्तिसा इद्यमानक्षर, आगच्छिसा इद्य चेदयाई वंदति । विज्ञाचारणस्स णं गोयमा ! तिरियं पवतिय गतिविसय पद्मते ।
- े ५. [प्र०] विज्ञाचारणस्स णं भंते ! उद्दं केवतिय गतिविसय पन्नसे ! [उ०] गोयमा ! से णं इबो एगेणं उप्पारणं नंतृबवणे समोसरणं करेइ, नंद० २ करेसा तिंह चेइयाई वंदति, तिंहै० २ वंदिसा वितियणं उप्पारणं पंडगवणे समोसरणं करेइ, पंडग० २ करेसा तिंह चेइयाई वंदइ, तोंहै० २ वंदिसा तऔर पिडनियस्ति, तओ पिडनियस्तिसा इहमागच्छइ, इह-मामच्छिसा इहं चेइयाई वंदित । विज्ञाचारणस्स णं गोयमा ! उहं एवतिय गतिविसय पन्नसे । से णं तस्स ठाणस्स अणालो-इय-पिडकंते कालं करेति, नित्य तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपिडकंते कालं करेति अत्य तस्स आराहणा ।
- ६. [४०] से केणट्रेणं भंते ! एवं वुचर-'जंघाचारणा' २ ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं भट्टमंभट्टमेणं अनिक्सित्तेणं तथो-कम्मेणं भप्पाणं भावेमाणस्स जंघाचारणलग्री नाम लग्री समुप्पज्ञति, से तेणट्रेणं जाव-जंघाचारणा २ ।
- ७. [य॰] जंघाचारणस्स णं मंते ! कहं सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पश्चे ? [उ॰] गोयमा ! अयन्नं जंबुद्दीवे विचि॰ एवं जहेच विज्ञाचारणस्स, नवरं तिसच्छुत्तो अणुपरियद्वित्ता णं दृषमागच्छेजा, जंघाचारणस्स णं गोयमा ! तद्दा सीहा गती, तद्दा सीहे गतिविसए पश्चे, सेसं तं चेव ।
- ८. [प्रव] जंघाचारणस्स णं मंते ! तिरियं केवतिए गतिविसए पश्चते ? [उ०] गोयमा ! से णं इस्रो एगेणं उप्पाएणं क्यावरे दीवे समोसरणं करेति, क्यग० २ करेता तिहं चेदयादं वंदद, तिहं ० २ वंदित्ता तस्रो पिडिनियत्तमाणे वितिएणं उप्पाएणं नंदीसरवरदीये समोसरणं करेति, नंदी० २ करेता तिहं चेदयादं वंदद, तिहं ० २ वंदित्ता दहमागच्छद, आगच्छित्ता दहं चेदयादं वंदद, जंघाचारणस्स णं गोयमा ! तिरियं पवतिए गद्दविसए पश्चते ।
- 8. [प्रo] हे भगवन् ! विद्याचारणनी तिर्थग्गतिनो लिषय केटलो कह्यो छे ! [उ०] हे गौतम ! ते विद्याचारण एक उत्पात-पगलावडे मानुषोत्तर पर्वन उपर समवसरण (स्थिति) करे-त्यां जाय १, त्यां जहने त्यां रहेलां चैत्योने वांदे, वांदीने त्यांथी वीजा उत्पातवडे नंदीश्वरद्वीपमां समवसरण-स्थिति करे २, त्यां रहेलां चैत्योने वांदी पछी त्यांथी पाछो वळी अहिं आवे ३, अने अहिनां चत्यो वांदे. हे गौतम ! विद्याचारणनी तिर्थग् गतिनो विषय एटलो कह्यों छे.

विद्याचारणनी सिवं गातिमो विषयः

५. [प्र०] हे भगवन् ! विद्याचारणनी ऊर्ध्य गतिनो निषय केटले कह्यों छे ! [उ०] हे गैतिम ! ते विद्याचारण एक उत्पानवढे नंदन-बनमां समबसरण करे १, त्यां रहेलां चैत्योने बांदे, पछी बीजा उत्पातवढे पांडुकवनमां समवसरण करे २, त्यां रहेलां चैत्योने बांदे, पछी स्वांची पाछो आवी अहिं रहेलां चैत्योने बांदे ३. हे गैतिम ! विद्याचारणनी ऊर्ध्य गतिनो विषय एटलो कह्यो छे. बळी हे गैतिम ! जो ते विद्याचारण, गमनागमन संबंधी पापस्थानकने आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय काळ करे तो ते आराधक पतो नथी , अने जो ते स्थानने आलोची तथा प्रतिक्रमी काळ करे तो ते आराधक थाय छे.

विचाचारणती अर्ध्वगतिनो विचयः

६. [प्र॰] हे भगवन् ! जंधाचारणने 'जंघाचारण' शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ॰] हे गौतम ! निरंतर अट्टम अट्टमना तपकर्मवडे भारमाने भाषता मुनिने जंघाचारण नामे लब्ध उत्पन्न थाय छे. माटे ते हेतुथी जंघाचारणने 'जंघाचारण' एम कहेवाय छे.

जंधाचारण शायी कहेवाय छे !

७. [प्र०] हे भगवन् ! जंशाचारणनी केवी शीघ्र गित होय छे, या तो तेनो गतिविषय केटलो शीघ्र होय छे ? [उ०] हे गौतम ! आ जंबूद्वीप नामे द्वीपनी परिधि—इत्सादि जेम विद्याचारण संबंधे कह्युं छे तेम अहि कहेवुं, पण विशेष ए के, [ कोई महर्द्धिक देव ] आ जंबूद्वीपने यावत्—त्रण चपटी वगाडे एटली वारमां एकवीश वार फरीने शीघ्र आवे, हे गौतम ! तेवी जंघाचारणनी शीघ्र गित छे, या तो तेनो गतिविषय एवो शीघ्र होय छे, बाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं.

जंघा बारणनी गतिः

८. [प्र०] हे मगवन् ! जंघाचारणनी तिर्यग् गतिनो निषय केटलो कह्यो छे ! [उ०] हे गौतम ! ते जंघाचारण एक उत्पातवडे क्वकबरद्वीपमां समवसरण करे १, पछी त्यां रहेलां चैत्योने बांदे, बांदी त्यांथी पाछा बळतां बीजा उत्पातवडे नंदीश्वरद्वीपमां समवसरण करे २, पछी त्यांना चैत्योने बांदी, अहिं शीघ्र आवी अहिंना चेत्योने बांदे ३. हे गौतम ! जंघाचारणनी तिर्थग् गति या तेनो तिर्थग् गतिनिषय एटलो भीघ कह्यों छे.

जंघाचारणनो तिर्वय् गतिविषयः

५ \* इन्धिनो उपयोग करतो ते प्रमाद छे, द्राव्धिनो उपयोग कर्यो होय अने तेनी आलोचना न करी होय तो तेने चारित्रनी आराधना थती नवी.

१. [य०] जंघाचारणस्स णं भंते ! उहं केवतिष गतिविसष पश्चते ! [उ०] गोयमा ! से णं इसो श्गेणं उप्पादणं पंद-गवणे समोसरणं करेति, स० २ करेत्ता तिह चेदयादं वंदति, तिहं० २ वंदित्ता ततो पिडिनियत्तमाणे वितिषणं उप्पादणं पंद-णवणे समोसरणं करेति, नंदण० २ करेत्ता तिहं चेदयादं वंदति, तिहं० २ वंदित्ता इह आगच्छद्द, इह चेदयादं वंदति, जंडा-चारणस्स णं गोयमा ! उहं पवतिष गतिविसष पश्चते । से णं तस्स ठाणस्स अणालोदयपिडकंते कालं करेत् नित्य सस्य आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोदयपिडकंते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा । 'सेवं भंते ! सेवं मंते' ! ति । जाव-विहरद ।

### वीसइमे सए नवमो उद्देसी समत्ती ।

अंघाचारणनी उर्ध गतिविषय. ९. [प्र०] हे भगवन् ! जंघाचारणनी गति अने गतिविषय उंचे केटलो कहाो छे ! [उ०] हे गैतिम ! ते जंघाचारण एक \*उत्पात-यह पांडुकतनमां समवसरण करे १, पछी त्यांना चंत्यो बांदी, त्यांथी पाछा बळतां बीजा उत्पातबहे नंदनवनमां समवसरण करे २, पछी त्यांना चैत्यो बांदी त्यांथी आहि आवी, आहिना चैत्योने बांदे ३, हे गौनम ! जंघाचारणनी गति या गतिविषय उंचे एटलो कहाो छे. बळी जो ते जंघाचारण ते स्थानने आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय काळ करे तो ते आराधक थतो नथी अने ते स्थानकने आलोची के प्रतिक्रमी काळ करे तो ते आराधक थाय छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.' एम कही यावत्—विहरे छे.

### वीदामा शतकमा नवमो उद्देशक समाप्त.

### दसमो उद्देसो।

- १. [प्र॰] जीवा णं भंते ! किं सोवक्रमाउया, निरुवक्रमाउया ! [उ॰] गोयमा ! जीवा सोवक्रमाउया वि निरुवक्र-माउया वि ।
- २. [प्र०] नेरहयाणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरहया नो सोवक्रमाउया, निरुवक्रमाउया । पर्व जाव-धणियकुमारा । पुढविक्राहया जहा जीवा, पर्व जाव-मणुस्सा । वाणमंतर-जोहसिय-बेमाणिया जहा नेरहया ।
- ३. [प्र॰] नेरहया णं मंते! कि आतोवक्रमेणं उचवक्रांति, परोधक्रमेणं उचवक्रांति, निरुधक्रमेणं उचवक्रांति शिडि॰] गोयमा ! आतोवक्रमेण वि उववक्रांति, परोधक्रमेण वि उचवक्रांति, निरुधक्रमेण वि उचवक्रांति, पर्व जाव-येमाणियाणं ।

### द्शम उद्देशक.

सोपकम अने निरुपक्रम आयुषः

- १. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो सोपक्रम आयुपवाट्य होय छे के निरुपक्रम आयुपवाट्य होय छे ! [उ०] हे गीतम ! जीवो <sup>†</sup>सो-पक्रम आयुपवाट्य अने निरुपक्रम आयुपवाट्य होय छे.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! ग्रुं नैरियको सोपक्रम आयुपयाळा होय छे के निरुपक्रम आयुषयाळा होय छे ! [उ०] हे गौतम ! मैर-यिको सोपक्रम आयुपयाळा होता नथी पण निरुपक्रमआयुषयाळा होय छे. ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुबी जाणवुं. पृथिवीकायिको जीयोनी पेठे बन्ने प्रकारना जाणवा. ए प्रमाणे यावत्—सनुष्यो सुधी समजवुं. तेमज वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने नैरियकोनी पेठे (निरुपक्रम आयुषयाळा) जाणवा.

नैरिपकोनो उत्पाद आत्मोपकम, परो पक्रम अने निर्-पक्रमधी धाय हे है

३. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं नैरियको आत्मोपक्रमबडे—पोते पोताना बडेज [प्र्यंभवना आयुषने ] उपक्रमी—घटाडी उत्पन्न थाय छे, परोपक्रमबडे—कोइ पण रीते आयुषने घटाड्या सिवाय प्रेपूर्व आयुष मोगवीने उत्पन्न थाय छे ! [उ॰] हे गौतम ! तेओ आत्मोपक्रमबडे, परोपक्रमबडे अने निरुपक्कमबडे उत्पन्न थाय छे . ए प्रमाणे यावत्—वैगानिको सुधी जाणवुं.

<sup>\*</sup> विद्याचारणनुं गमन वे उत्पातची अने आगमन एक उत्पातची याय छे अने जंघाचारणनुं गमन एक उत्पातची अने आगमन वे उत्पातची याय छे ते लिंघाचारणनी विद्या आवानाना समये वधारे अभ्यासवाळी थाय छे अने गमनसमये तेवी होती नथी, तेची एक उत्पातची अहिं आगमन धाय छे अने वे उत्पाते गमन धाय छे, पण जंघाचारणनी लिंधाने जेम जेम उपयोग धाय छे तेम तेम ते अन्यसामध्येवाळी थाय छे माटे ते एक उत्पात गमन करे छे अने वे उत्पात आहिं आये छे—टीका.

१ <sup>†</sup> जेओ अप्राप्त काळे आयुषनो सय करे छे ते सोपकमायुषवाळा धने ते सिषायना बीजा निरुपकम आयुषवाळा कहेवाय छे. देवो, नैरियको, असंस्थात वर्षना आयुषवाळा तिर्येच अने मनुप्यो, उत्तम पुरुषो तथा चरमशरीरी निरुपकम आयुषवाळा होय छे, अने वाकीना सर्व संसारी जीवो सोपकम आयुषवाळा अने निरुपकमआयुषवाळा होय छे—टीका,

- ध. [प्र०] नेरस्या णं अंते ! कि आश्रोयक्रमेणं उद्यष्टिति, परोषक्रमेणं उद्यष्टिति, निरुवक्रमेणं उद्यष्टिति ! [उ०] गोयमा ! स्रो आश्रोयक्रमेणं उद्यष्टिति, नो परोषक्रमेणं उद्यष्टिति, निरुवक्रमेणं उद्यष्टिति, एवं जाय-धणियकुमारा । पुढिविकास्या जाय-संख्रस्था तिसु उद्यष्टिति, सेसा जहा नेरस्या, नवरं जोर्सिय-वेमाणिया चयंति ।
- ं ५. [प्र॰] नेरहया णं मंते ! किं आहर्ष्टीप उचवजाति, परिद्वीप उववजाति ? [उ॰] गोयमा ! आहर्षीप उववजाति, नो परिद्वीप उववजाति, एवं जाव-वेमाणिया ।
- ६. [प॰] नेराया णं मंते ! किं आरहीए उच्चहंति, परिहीए उच्चहंति ! [उ०] गोयमा ! आहहीए उच्चहंति, नो परि-हीए उच्चहंति, एवं जाव-वेमाणिया, नवरं जोहित्या वेमाणिया य चयंतीति अमिलावो ।
- ७. [म॰] नेरदया णं भंते ! कि आयकम्मुणा उववर्ज्जति, परकम्मुणा उववर्ज्जति ! [उ०] गोयमा ! आयकम्मुणा उव-बर्ज्जति, नो परकम्मुणा उववर्ज्जति । एवं जाव-बेमाणिया । एवं उच्चट्टणाइंडओ वि ।
- ८. [प्र॰] नेरहया णं भंते ! कि भायप्पभोगेणं उवयद्धंति, परप्पभोगेणं उवयद्धंति ? [उ॰] गोयमा ! आयप्पभोगेणं उवयद्धंति, नो परप्पयोगेणं उववद्धंति, एवं जाय-वेमाणिया, एवं उद्यद्धणादंडभो वि ।
- ९. [प्र॰] नेरद्या णं मंते ! किं कितसंखिया, अकितसंखिया, अवसद्वगसंखिया ? [उ॰] गोयमा ! नेरद्या कितसंखिया बि, अवसद्वगसंखिया वि। [प्र॰] से केणेट्ठणं जाय-अवसद्वगसंखिया वि ? [उ॰] गोयमा ! जे णं नेरद्या संखेळपणं पवेसणपणं पविसंति ते णं नेरद्या कितसंखिया, जे णं नेरद्या असंखेळपणं पवेसणपणं पविसंति ते णं नेरद्या
- 8. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरियको आत्मोपक्रमवडे उद्दर्ते—मरे छे, परोपक्रमक्ते उद्दर्ते छे के निरुपक्रमवडे उद्दर्ते छे ! [उ०] हे गीतम ! तेओ आत्मोपक्रमवडे के परोपक्रमवडे उद्दर्तता नधी, पण निरुपक्रमवडे उद्दर्ते छे. ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीक्तायिको अने यावत्—मनुष्यो त्रणे—आत्मोपक्रम, परोपक्रम अने निरुपक्रम—वडे उद्दर्ते छे. बाकी बधा नैरियकोनी पेटे जाणवा. विशेष ए के ज्योतिषिको अने वैमानिको 'च्यवे छे' एम कहेवुं.

नैरयिकोती उद्गर्तना आत्मोधकपथी परो-पकपथी के निरुप-कमश्री धाय छे हैं

५. [प्र॰]हे भगवन् ! नैरियको आत्मिर्द-पोताना सामर्थ्य-बडे उपजे छे के पर्रार्द्ध-बीजाना सामर्थ्य-बडे उपजे छे ! [उ॰] हे गाँतम ! तेओ पोताना सामर्थ्यबडे उपजे छे, पण बीजाना सामर्थ्यबडे उपजता नथी. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुधी कहेतुं.

नैरयिकोनो उत्पाद आत्मशक्तिथीके परनी शक्तिथी

- ६. [प्र०] हे भगवन् । शुं नैरियंको आत्मिर्द्ध पोताना सामर्ध्य-वडे उद्दर्ते छे के अन्यना सामर्थ्यवडे उद्दर्ते छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ आत्मशक्तियडे उद्दर्ते छे पण परनी शक्तियडे उद्दर्तता नथी. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. विशेष ए के ज्योति-पिक अने वैमानिको 'व्यवे छे' एयो अभिकाप—पाठ कहेवो.
- ७. [प्र०] हे मगवन् ! शुं नैरियको पोताना कर्म वडे उत्पन्न थाय छे के बीजाना कर्मवडे उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गीतम ! तेओ पोताना कर्मवडे उत्पन्न थाय छे, पण बीजाना कर्मवडे उत्पन्न थता नथी. ए रीते यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. अने ए प्रमाणे उद्धर्तनानो दंडक पण कहेवो.

नैरियकोना उत्पत्ति स्पवःभैधी के अन्यना कर्मधी ?

८. [प्र॰] हे भगवन् ! नैरियको आत्मप्रयोग-आत्मप्रयत्न-बढे उत्पन्न थाय छे, के परप्रयोगवडे उत्पन्न थाय छे ! [उ॰] हे गौतम ! तेओ आत्मप्रयोगवडे उत्पन्न थाय छे पण परप्रयोगवडे उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुची जाणवुं. तथा उद्दर्तना दंडक पण एज प्रमाणे कहेवो.

नेरविकोनी उत्पत्ति आत्मप्रयोगपी के परप्रयोगपी र

९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरियको कितिसंचित—एकसमये संख्याता उत्पन्न यएला, अकितिसंचित—एक समये असंख्याता उत्पन्न यएला को अवक्तव्यसंचित—एकसमये एक ज उत्पन्न यएला होय छे ! [उ०] हे गौतम ! नैरियको कितिसंचित पण छे, अकिति-संचित पण छे अने अवक्तव्यसंचित पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी 'तेओ यावत्—अवक्तव्यसंचित पण होय छे' ! [उ०] हे गौतम ! जे नैरियको न्रकगितमां एक माथे संख्याता प्रवेश करे छे ते नैकितिसंचित छे, वळी जे नैरियको असंख्या-

नैस्थिको कलिसंचित, अक्तिसंचित के अवक्तन्यसंचित होय छे १ नैस्थिको कलिसंचि तादि होय छे तेनुं कारण.

५-१०-११ में जेओ बीजी जातिमांथी आवी एक साथे संस्थाता उत्पन्न थाय छे ते कतिसंचित, असंस्थाता उत्पन्न थाय छे ते अकितसंचित अने एकज जलान थाय छे ते अवक्तव्यसंचित कहेवाय छे. तेमां वेथी मांडी वीर्षप्रहेलिका सुधी संस्थात व्यवहार थाय छे अने त्यार पछी असंस्थात व्यवहार थाय छे. तेमां नारको त्रणे प्रकारना छे, कारण के एक समये एकथी मांडी असंस्थाता सुधी उत्पन्न थाय छे. पृथिर्याकायिकादि पाँचे दंडको अकितसंचित छे, केमके एक समये असंस्थाता उत्पन्न थाय छे. यद्या वनस्पतिकायिको अनन्ता उत्पन्न थाय छे, परन्तु विजातीय जीवोयी आवीने उत्पन्न थाय तेनी ज आहे विवक्षा होवायी होनी पण असंस्थाता ज खपने छे. सिद्धो अकृतिसंचित नदी, कारण के एक साथे एकथी मांडी संस्थाता ज सिद्धत्व पामे छे.

अकतिसंचिया, जे णं नेरद्दया एकएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरद्दया अवसवग्रसंचिया, से तेणद्वेणं गोयमा ! जाव-अवस्य-वगसंचिया वि । एवं जाव-थणियकुमारा वि ।

- १०. [प्र०] पुढविकाइयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पुढविकाइया नो कइसंखिया, अकइसंखिया, नो अवसद्वासंखं चिता । [प्र०] से केणट्रेणं एयं बुच्चइ-जाब-'नो अवसद्वागसंखिया' ? [उ०] गोयमा ! पुढविकाइया असंबेद्धाएणं पवेसणएणं पविसंति से तेणट्रेणं जाव-नो अवसद्वागसंखिया, एवं जाव-वणस्सइकाइया, वेंदिया जाव-वेमाणिया जहा नेरहया ।
- १९. [प्र॰] सिद्धाणं पुच्छा । [ज॰] गोयमा ! सिद्धा कितसंचिया, नो अकितसंचिया, अवसवागसंचिया वि । [प्र॰] से केणट्रेणं जाय-'अवसवगसंचिया वि' ! [ज॰] गोयमा ! जे णं सिद्धा संखेज्जपणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा कितसं-चिया, जे णं सिद्धा पद्धपणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा अवसवगसंचिया, से तेणट्रेणं जाय-अवसवगसंचिया वि ।
- १२. [प्र०] एएसि णं मंते ! नेरइयाणं कितसंचियाणं अकितसंचियाणं अवसद्यानसंचियाण य कयरे २ जाव-विसे-साहिया वा ! [उ०] गोयमा ! सद्यत्योवा नेरइया अवसद्यगसंचिया, कितसंचिया संखेळगुणा, अकितसंचिया असंखेळगुणा, एवं एगिदियवज्ञाणं जाव-वेमाणियाणं अप्पायदुगं, एगिदियाणं तत्थि अप्पायदुगं।
- १३. [प्र॰] एएसि णं भंते ! सिद्धाणं कतिसंचियाणं अवत्तव्यगसंचियाण य कयरे २ जाव-विसेसाहिया वा ! [उ॰] गोयमा ! सवत्थोवा सिद्धा कतिसंचिया, अवत्तव्यगसंचिया संखेजगुणा ।
- १४. [प्र0] नेरहयाणं भंते ! कि छक्कसमिजिया १, नोछकसमिजिया २, छक्केण य नोछक्केण य समिजिया ३, छकेहि य समिजिया ४, छकेहि य नोछक्केण य समिजिया ५ ? [उ०] गोयमा ! नेरहया छक्कसमिजिया वि १, नोछक्कसमिजिया वि २, छकेण य नोछक्केण य समिजिया वि ३, छकेहि य समिजिया वि ४, छकेहि य नोछक्केण य समिजिया वि ५ । [प्र0] से केण्टुणं भेते ! एवं बुधह-'नेरहया छक्कसमिजिया वि जाव-छकेहि य नोछकेण य समिजिया वि' १ [उ०] गोयमा ! जे णं नेरहया छक्कएणं पवसणएणं पविसंति ते णं नेरहया छक्कसमिजिया १ । जे णं नेरहया जहकेणं एकेण वा दोहि वा तीहि वा उक्कोसेणं पंचएणं पवसणएणं पविसंति ते णं नेरहया नोछक्कसमिजिया २ । जे णं नेरहया एगेणं छक्कएणं अक्केण य जहकेणं

ता प्रवेश करे छे ते नैर्रायको अकृतिसंचित छे, अने जे नैर्रायको एक एक प्रवेश करे छे ते नैर्रायको यावत्-अवक्तव्यसंचित छे. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमारो मुधी जाणवुं.

पृथिवीयादिकादि.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकाधिको कांतसंचित छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ कांतसंचित नथी, अवक्तव्य-संचित नथी पण अकांतिसंचित छे. [प्र०] हे भगवन् ! 'तेओ यावत्-अवक्तव्यसंचित नथी' तेनुं द्युं कारण छे ! [उ०] हे गौतम ! पृथिवीकायिको एक साथे असंस्य प्रवेश करेछे माटे तेओ अकांतिसंचित छे, पण यावत्-अवक्तव्यसंचित नथी. ए प्रमाणे यावत्-वनस्पितकायिक जीवो सुधी जाणवुं. वेइन्द्रियथी यावत्-वमानिको सुधी नर्रावकोनी पेटे जाणवा.

सिद्धो.

११. [प्र०] हे भगवन्! शुं सिद्धो कतिसंचित छे-इस्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सिद्धो कतिसंचित अने अवक्तव्यसंचित छे, पण अर्कातसंचित नथी. [प्र०] हे भगवन् ! सिद्धो यावत्-शा हेतुथी अवक्तव्यसंचित छे ! [उ०] हे गौतम! जे सिद्धो संख्याता प्रवेश करे छे तेओ कतिशंचित छे, अने जे सिद्धो एक एक प्रवेशनकवडे प्रवेश करे छे ते अवक्तव्यसंचित छे, माटे सिद्धो यावत्— अवक्तव्यसंचित छे.

नैरियकोने आश्रयी कविसंचितादिनुं अस्पबद्धत्व- १२. [प्र०] हे भगवन् ! कितमंचित, अकितमंचित अने अवक्तव्यमंचित नरियकोमां कोण कोनाधी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! अवक्तव्यमचित नरियको साथी थोडा छे, कितमंचित नरियको संख्यातगुण छे अने अकितमंचित नरियको असंख्यात-गुण छे. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवाय यावत् -वैमानिको सुपी अन्यबहुत्व कहेवुं. एकेन्द्रियोनुं अल्यबहुत्व नथी.

सिडने भाश्रयी वर्ततलेचितादिनु अस्पवहुत्व.

नैर्यकादिने आश्रयी यद्य समजितादि.

- १३. [प्र॰] हे भगवन् ! कतिसंचित अने अवक्तव्यसंचित सिद्धोमां कोण कोनाधी यायत्-विशेषाधिक छे? [उ॰] हे गीतम ! कतिसंचित सिद्धो सोधी थोडा छे, अने अवक्तव्यसंचित सिद्धो संख्यातगुण छे.
- १४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरियको पद्भमिर्जित-एक साथे छ उत्पन्न थएला होय छे १ ! नोषद्भमिर्जित-एकधी आरंभी पांच गुंधी उत्पन्न थएला होय छे २ ! एक पद्भ अने एक नोषद्भक्षे उत्पन्न थया होय छे ! अथला एक पद्भ अने एक नोषद्भनी संख्यामां उत्पन्न थएला होय छे २ ! अनेक पद्भनी संख्यावढे ४, के अनेक पद्भ अने एक नोषद्भनी संख्यावढे उत्पन्न थयेला होय छे ५ ! [उ०] है गांतम ! नरियको एक साथे एक पद्भनी संख्याथी उत्पन्न थयेला होय छे १, नोषद्भनी संख्याथी उत्पन्न थयेला होय छे १, नोषद्भनी संख्याथी उत्पन्न थया होय छे २, एक पद्भ अने नोष-द्भवं उत्पन्न थया होय छे ३, अनेक पद्भनी संख्यावढे उत्पन्न थया होय छे ३, अनेक पद्भनी संख्यावढे उत्पन्न थया होय छे ४, अनेक पद्भनिक पद्भ तथा होय छे ५, वावत्-अनेक पद्भ तथा होय छे ५. [प्र०] हे भगवन् ! आप शा हेतुयी एम कहो छो के, नैरियको षद्भसंख्यावढे उत्पन्न थया होय छे, यावत्-अनेक पद्भ तथा

स्रकेण वा दोहि वा तीहि वा उक्कोसेणं पंचपणं पवेसणपणं पविसंति ते णं नेरहया छक्केण य नोछकेण य समज्जिया ३ । जे जं नेरहया जेगेहि छक्केहि पवेसणपणं पविसंति ते णं नेरहया छक्केहि य समज्जिया ४ । जे णं नेरहया जेगेहि छक्केहि अण्लेण य जहकेणं पक्केण वा वोहि वा तीहि वा उक्कोसेणं पंचपणं पवेसणपणं पविसंति ते णं नेरहया छक्केहि य नोछकेण य सम-जिया ५ । से तेणहेणं तं चेव जाव-समज्जिया वि । एवं जाव-थणियकुमारा ।

- १५. [त्र०] पुढिविकाश्याणं-पुच्छा । [त०] गोयमा ! पुढिविकाश्या नो छक्कसमिक्किया १, नो नोछक्कसमिक्किया २, नो छक्केण य समिक्किया ३, छकेहिं समिक्किया ४, छकेहिं य नोछकेण य समिक्किया वि ५ । [प्र०] से केणट्टेणं जाव-ध्समिक्किया वि १ [त०] गोयमा ! जे णं पुढिविकाश्या णेगोहिं छक्कपिंह पवेसणगं पविसंति ते णं पुढिविकाश्या छकेहिं समिक्किया । जे णं पुढिविकाश्या णेगोहिं छक्कपिंह य अकेण य जहकेणं पक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं पंचपणं पवेसणपणं पविसंति ते णं पुढिविकाश्या छकेहि य नोछकेण य समिक्किया, से तेणेट्टणं जाव-धमिक्कियावि । एवं जाव-वणस्सश्काश्या । विद्या जाव-विमाणिया, सिद्धा जहा नेरह्या ।
- १६. [प्र०] पपिस णं भंते ! नेरहयाणं छक्कसमिक्षयाणं, नोछक्कसमिक्षयाणं, छक्केण य नोछक्केण य समिक्रियाणं, छक्केहि य समिक्रियाणं, छक्केहि य नोछक्केण य समिक्रियाणं कयरे २ जाव—विसेसाहिया वा ! [उ०] गोयमा ! सहत्थोवा नेरहया छक्कसमिक्रिया, नोछक्कसमिक्रिया संक्षेज्जगुणा, छक्केहि य समिक्रिया असंक्षेज्ज-गुणा, छक्केहि य नोछकेण य समिक्रिया संक्षेज्जगुणा। एवं जाव—थणियकुमारा।
- १७. [प्र०] एएसि णं भंते ! पुढिचकार्याणं छकेहिं समिजियाणं, छकेहि य नोछकेण य समिजियाणं कयरे २ जाव-विसेसाहिया वा ! [७०] गोयमा ! सञ्चत्थोवा पुढिचकार्या छकेहिं समिजिया, छकेहि य नोछकेण य समिजिया संखेजगुणा । एवं जाव-वणस्सदकार्याणं । वेदंदियाणं जाव-वेमाणियाणं जहा नेरद्याणं ।

एक नोपटू संख्याबड़े पण उत्पन्न थयेट। होय छे? [उ०] हे गीतम! जे नैरियको एक समंग छनी संख्याथी प्रवेश करे छे ते नैरियको बदूसमर्जित कहेवाय छे, जे नैरियको जघन्य एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट पांच संख्याबड़े प्रवेश करे छे ते नैरियको नोपटूसमर्जित कहेवाय छे, जे नैरियको एक पटूमंख्याथी अने बीज! जघन्य एक, बे के त्रण तथा उत्कृष्ट पांचनी संख्याबड़े प्रवेश करे छे ते नैरियको एक पटू अने नोपटूबड़े समर्जित कहेवाय छे, जे नैरियको अनेक पटूनसमर्जित कहेवाय छे, जे नैरियको अनेक पटूनसमर्जित कहेवाय छे, जे नैरियको अनेक पटूनसमर्जित कहेवाय छे. ते हेतुथी हे गीतम! ए प्रमाणे कह्यु छे के यावत्—अनेक पटूबड़े अने नोपटूबड़े समर्जित पण होय छे. ए प्रमाणे यावत्—स्तिनतकुमारो सुधी जाणहुं.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं पृथिवीकायिको षट्कस्तमर्जित छे—इस्लादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पृथिवीकायिको एट्समर्जित नथी, नोषटूस्तमर्जित नथी, एक पट्ट अने नोषटूबडे समर्जित नथी, एण अनेक पट्टोवडे समर्जित छे, अने अनेक पट्ट तथा नोपटूबडे पण समर्जित छे. [प्र०] हे भगवन् ! आप शा हेतुथी एम कहो छो के, तेओ यावत्—[अनेक पट्टक तथा नोपटूबडे पण समर्जित छे ! [उ०] हे गौतम ! जे पृथिवीकायिको अनेक पट्टोवडे प्रवेश करे छे ते पृथिवीकायिको अनेक पट्टोवडे प्रवेश करे छे ते पृथिवीकायिको अनेक पट्टोवडो तथा जयन्यथी एक, वे के त्रण अने उत्कृष्ट पांचनी संख्या वहे प्रवेश करे छे ते पृथिवीकायिको अनेक पट्टो तथा नोपटूबडे पण समर्जित कहेवाय छे, माटे ते हेतुथी तेओ यावत्—'समर्जित छे.' ए प्रमाणे यावत्—वनस्पतिकायिको सुधी जाणहुं. अने वेइन्द्रियथी आरंभी यावत्—वेमानिको अने सिद्धो नेरियकोनी पेठे जाणवा.

पृथिवीकायिकादिने आश्रयी ५८कसम-र्जितःदिः

१६. [प्र०] हे भगवन् ! १ पद्रसमर्जित, २ नोपट्रसमर्जित, ३ एक पट्ट अने नोपट्टवडे समर्जित, ४ अनेक पट्ट समर्जित, ५ अनेक पट्ट समर्जित, ५ अनेक पट्ट तथा नोपट्टसमर्जित नैरियकोमां कोण कोनाथी यावत्- किशेपाधिक छे ! [उ०] हे गीतम ! १ एक पट्टसमर्जित नैरिको सेंख्यातगुण छे, ३ तेथी एक पट्ट अने नोपट्टवडे समर्जित नैरियको संख्यातगुण छे, ४ तेथी अनेक पट्ट समर्जित नैरियको अलेख्यातगुणा छे, ५ अने तेथी अनेक पट्ट तथा नोपट्टसमर्जित नैरियको अलेख्यातगुणा छे, ५ अने तेथी अनेक पट्ट तथा नोपट्टसमर्जित नैरियको संख्यातगुणा छे. ५ प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

नैरियक्षादिने आश्र-यी परकममार्जनादिः नुं जल्पबहुत्यः

१७. [४०] हे भगवन् ! अनेकपट्ससमर्जित तथा अनेक पट्टो अने नोपट्ससमर्जित पृथिवीकायिकोमां कोण कोनाथी यायत्— विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! अनेकपट्टबंड समर्जित पृथिवीकायिको सीथी थोडा छे. अने तेथी अनेक पट्टो तथा नोपट्टसमर्जित पृथिवीकायिको संख्यातगुण छे, ए प्रमाणे यावत्—वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं, बेइन्द्रियो यावत्—वेमानिको नैरियकोनी पेठे जाणवा.

पृथिनीया**यिकादिने** आश्रयी अस्**पनदुत्तः** 

- १८. [प्र०] एपसि णं भंते! सिद्धाणं छक्तसमित्रयाणं नोष्ठकसमित्रयाणं जाव-छक्केहि य नोछकेण य समित्रियाणं के क्यरे २ जाय-विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा! सबत्थोवा सिद्धा छक्केहि य नोछकेण य समित्रया, छकेहि समित्रिया संकेत्रगुणा, छकेण य नोछकेण य समित्रिया संकेत्रगुणा, छकसमित्रिया संकेत्रगुणा।
- १९. [घ०] नेरह्या णं भंते ! कि बारससमिक्किया १, नोबारससमिक्किया २, बारसएण य नोबारसएण य समिक्किया ३, बारसएहिं समिक्किया ४, बारसएहिं य नोबारसएण य समिक्किया ५ ! [उ०] गोयमा ! नेरितया बारससमिक्किया वि, जाब-बारसएहिं य नोवारसएण य समिक्किया वि । [प०] से केणट्टेणं जाब-'समिक्किया वि' ! [उ०] गोयमा ! जे णं नेरह्या बारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरह्या बारससमिक्किया १ । जे णं नेरह्या बारसएणं अक्रेण य जहकेणं एकेण बा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं, एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरह्या नोवारससमिक्किया २ । जे णं नेरह्या बारसएणं अक्रेण य जहकेणं एकेण बा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं एक्कारसएणं पविसंति ते णं नेरह्या बारसएण य नोवारसएण य समिक्किया ३ । जे णं नेरह्या णेगेहिं बारसएहिं अक्रेण य जहकेणं एकेण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरह्या बारसएहिं समिक्किया ४ । जे णं नेरह्या बारसएहिं य नोबारसएण य समिक्किया ५ । से तेणहेणं जाव-समिक्किया वि । एवं जाव-थिणियकुमारा ।
- २०. [प्र०] पुढविकाइयाणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पुढविकाइया नोवारससमिक्किया !, नो नोवारससमिक्किया २ नो वारसपण य नोवारसपण य समिक्किया ३, वारसपिंह समिक्किया ४, वारसिंहि य नोवारसेण य समिक्किया वि ५ । [प्र०] से केणट्टेणं जाव- 'समिक्किया वि' ! [उ०] गोयमा ! जे णं पुढविकाइया णेगेहिं वारसपिंह प्रवेसणगं पविसंति ते णं पुढविकाइया वारसपिंह समिक्किया । जे णं पुढविकाइया णेगेहिं वारसपिंह समिक्किया ।

सिद्धोने अध्ययी अन्यदशुखन १८ हे भगवन् । पद्भसमर्जित, नोपद्भसमर्जित, यावत्- अनेक पद्ध अने नोपद्ध समर्जित सिद्धोमां कोण कोनाथी यावत्-विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गीतम ! अनेक पद्धो तथा नोपद्ध समर्जित सिद्धो सीथी थोडा छे. तेथी अनेक पद्धममर्जित सिद्धो संख्यातगुण छे, तेथी एक पद्ध तथा नोपद्ध समर्जित सिद्धो संख्यातगुण छे, तेथी पद्ध समर्जित सिद्धो संख्यातगुण छे, अने तेथी नोपद्ध समर्जित सिद्धो संख्यातगुण छे.

नैरिवेकादिने आश्र-बी दादशगमति साहि १९. [प्र०] हे भगवन्! शुं नैरियिको १ हादशसमितित (एक समये बारनी संख्यावडे उत्पन्न धएला ) छे, २ नोद्वादशसमितित (एक समये एकथी आरंमी अगियार सुधी उत्पन्न थएला ) छे, ३ हादश अने नोद्वादशसमितित (एकथी आरंमी अगियार सुधी उत्पन्न थएला ) छे, ४ अनेक द्वादश समितित (एकसमये अनेक वारनी संख्यामा उत्पन्न थेयेला ) छे, के ५ अनेक द्वादश तथा नोद्वादशसमितित (एक समये एकथी अगीयार सुधी उत्पन्न थएला ) छे ! [उ०] हे गीतम ! नैरियको १ द्वादशसमितित एण छे, यायत्—'५ अनेक द्वादश तथा नोद्वादशसमितित एण छे हे गीतम ! ले नैरियको एक समये वारनी संख्यामां प्रवेश करे छे तेओ १ द्वादशसमितित छे, जे नैरियको लक्ष हादश तथा नोद्वादशसमितित एक हे विभा ! ले नैरियको एक समये वारनी संख्यामां प्रवेश करे छे तेओ १ द्वादशसमितित छे, जे नैरियको एक समये वार अने ज्ञान्यथी एक, वे के त्रण तथा उन्कृष्टथी अगिआर प्रवेश करे छे तेओ ३ द्वादश तथा नोद्वादशसमितित छे, जे नैरियको एक समये अनेक बारनी संख्यामां प्रवेश करे छे तेओ ३ अनेक द्वादशसमितित छे, जे नैरियको एक सगये अनेक बारनी संख्यामां प्रवेश करे छे तेओ १ अनेक द्वादश अने नोद्वादश समितित छे. ते हेतुथी हे गीतम ! यावत्—तेओ अनेक द्वादश अने नोद्वादश समितित छे. ते हेतुथी हे गीतम ! यावत्—तेओ अनेक द्वादश अने नोद्वादश समितित छे. ते हेतुथी हे गीतम ! यावत्—तेओ अनेक द्वादश अने नोद्वादश समितित छे. ते हेतुथी

पृथित्रीकायिकोने आश्रयी हादशसम शिक्षादिः २०. [प्र०] हे भगवन्! शुं पृथिवीकायिको द्वारशसमर्जित छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! पृथिवीकायिको १ द्वादशसमर्जित नथी, २ नोद्वादशसमर्जित नथी, ३ द्वादश तथा नोद्वादश समर्जित नथी, पण ४ अनेक द्वादशसमर्जित छे, ५ तेम ज अनेक द्वादश तथा नोद्वादश समर्जित छे. [प्र०] हे भगवन्! आप शा हेतुथी एम यहो छो के तेओ यावत्—'अनेक द्वादश तथा नोद्वादश समर्जित छे'! [उ०] हे गौतम! पृथिवीकायिको १ द्वादशसमर्जित—एक समये बार्गा संख्याामां उत्पन्न थता—नथी, २ नोद्वादशसमर्जित—एकथी मांडीने अगियार सुधी पण उत्पन्न थता—नथी, ३ द्वादश तथा नोद्वादशसमर्जित पण नथी, पण ४ अनेकद्वादशसमर्जित छे, तेमज ५ अनेकद्वादशो अने नोद्वादशसमर्जित थे नोद्वादशसमर्जित छे. [प्र०] हे भगवन्! आप शा हेतुथी एम कहो छो के तेओ यावत्—अनेक द्वादशो अने नोद्वादशसमर्जित छे! [उ०] हे गौतम! जे पृथिवीकायिको एक समये [असंख्य उपजता होवाथी] अनेक बार्गी संख्यामां प्रवेश करे छे ते अनेक द्वादशसमर्जित कहेवाय छे, अने जे पृथिवीकायिको एक समये अनेक द्वादश तथा नोद्वादश—एकणी अगियार सुधी—प्रवेश करे छे तेओ

विकारसर्वणं पवेसणवर्णं पविस्ति ते णं पुढविकारया बारसपिंद य नोबारसपण य समिज्ञया, से तेणहेणं जाव-'समिज्जया वि'। एवं जाव-वणस्सरकारया । वेदंदिया जाव-सिद्धा जहा नेराया ।

- ः २१. [प्र०] प्यसि णं भंते ! नेरतियाणं बारससमिखियाणं० सम्रेसि अप्यायहुगं जहा छकसमिखियाणं, नवरं बारसा-भिकाबो, सेसं तं चेव ।
- २२. [४०] नेरितया णं भंते ! कि चुलसीतिसमिक्कया १, नोचुलसीतिसमिक्किया २, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समिक्किया ३, चुलसीतीिर्द समिक्किया ४, चुलसीतीिर्द य नोचुलसीतीए य समिक्किया ५ ! [५०] गोयमा ! नेरितया चुलसीतिसमिक्किया दि, जाव—चुलसीतीिर्द य नोचुलसीतीए य समिक्किया दि। [५०] से केणट्टेणं भंते ! एवं चुच्च —जाव—'समिक्किया दि' ! [५०] गोयमा ! जे णं नेरद्दया चुलसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरद्दया चुलसीतिसमिक्किया १ । जे णं नेरद्दया चुलसीतिए व जावे व वोहिं या तीिर्द या उक्कोसेणं तेसीतिएवं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरद्द्रया चुलसीतिए णं अन्नेण य जहन्नेणं एकेण वा दोिर्द या तीिर्द या तीिर्द या जाव—उक्कोसेणं तेसीतिएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरितया चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समिक्किया ३ । जे णं नेरद्द्रया णेगेर्दि चुलसीतीएर्द पवेसणणं पविसंति ते णं नेरितया चुलसीतीएर्द समिक्किया ४ । जे णं नेरद्द्रया णेगेर्दि चुलसीतीएर्दि समिक्किया ४ । जे णं नेरद्द्रया णेगेर्दि चुलसीतीएर्दि समिक्किया ४ । जे णं नेरद्रया णेगेर्दि चुलसीतीएर्दि य अन्नेण य जहन्नेणं एकेण वा जाव—उक्कोसेणं तेसी-विष्णं जाव—पविसंति ते णं नेरितया चुलसीतीरि य नोचुलसीतीरि य समिल्वया ५, से तेणट्टेणं जाव—'समिक्किया विं'। एवं जाव—पणियकुमारा । पुढिकिहाइया तहेव पिक्छिलपिर्द दोिर्द , नवरं अभिलावो चुलसीतीओ, एवं जाव—वणस्सइकाइया । वेदिया जाव—वेमाणिया जहा नेरितया ।
- २३. [प्र०] सिद्धाणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिद्धा चुलसीतिसमिक्किया यि १, नोचुलसीतिसमिक्किया वि २, चुल्ल-सीतीए य नोचुलसीतीए य समिक्किया ६, नोचुलसीतीए य समिक्किया ६ । [प्र०] से केण्ट्रेणं जाव-'समिक्किया' ! [उ०] गोयमा ! जे णं सिद्धा चुलसीतीएणं प्रवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा चुलसी-तिसमिक्किया । जे णं सिद्धा जहकोणं एक्केण या दोहि तीहि या उक्कोसेणं तेसीनण्णं प्रवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा नोचुल-

अनेक हादरा तथा नोहादरासमर्जित कहेवाय छे ते हेतुथी हे गीतम ! तेओ यावत्-'समर्जित' छे. ए प्रमाणे यावत्-वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं, तथा बेहन्द्रियथी माडी वैमानिको सुधीना जीयो अने सिद्धो नैर्यिकोनी पेटे जाणवा.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! १ द्वादशसमर्जित, २ नोद्वादशसमर्जित, ३ द्वादश तथा नोद्वादशसमर्जित, ४ अनेक द्वादशसमर्जित अने ५ अनेक द्वादशसमर्जित एवा नैरियकादिक सर्वनुं अल्पबहुत्व जेम पटूसमर्जितीनुं अल्पबहुत्व कार्युं तेम कहें बुं. विशेष ए के, पटूने स्थाने द्वादशनो पाठ कहेंचो. बाकी वधुं पूर्ववत् जाणबुं.

नरस्यकादिने आश्रन यो द्वाद शत्मितान विन्तुं अल्पबद्धाव-

२२. [प्र०] हे भगवन्! शुं नैरियको एक समये १ चोरासी समर्जित-एक समये चोरासीना संस्थामां उत्पन्न धएत्र छे, २ नोचोरासीसमर्जित-एक समये एकथी मांडी त्र्यासी सुधी उत्पन्न थएला छे, ३ चोरासी अने नोचोरासी समर्जित-एकथी आरंभी त्र्याशी सुधी उत्पन्न थएला छे, ४ अनेक चोरासी समर्जित छे, के अनेक चोरासी अने नोचोरासी समर्जित छे १ [उ०] हे गांतम! नैरियको १ चोरासी-समर्जित छे, अने यावत्—५ अनेक चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित पण छे. [प्र०] हे भगवन्! आप शा हेतुथी एम कही छो के तेओ यावत्—'अनेक चोरासी तथा नोचोरासी समर्जित छे १ [उ०] हे गौतम! १ जे नैरियको एक समये चोरासीनी संख्यामां प्रवेश करे छे तेओ चोरासीसमर्जित छे, २ जे नैरियको एक चोरासी अने नोचारासी—एकथी त्र्यासी सुधी प्रवेश करे छे तेओ चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित छे, ३ जे नैरियको एक चोरासी अने नोचारासी—एकथी त्र्यासी सुधी प्रवेश करे छे तेओ चोरासी तथा नोचोरासी संख्यावडे प्रवेश करे छे तेओ अनेक चोरासी तथा नोचोरासी संख्यावडे प्रवेश करे छे तेओ अनेक चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित छे माटे हे गांतम! ते हेतुथी तेओ यावत्—'समर्जित छे.' ए प्रमाण यावत्— स्वितकुमारो सुधी जाणवुं, पृथिवीकायिको संबंधे ए प्रमाणे ४ अनेक चोरासी समर्जित अने ५ अनेक चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित ए प्रमाणे ४ अनेक चोरासी समर्जित अने ५ अनेक चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित ए प्रमाणे ४ अनेक चोरासी समर्जित अने ५ अनेक चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित ए प्रमाणे ४ अनेक चोरासी समर्जित अने ५ अनेक चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित ए प्रमाणे ४ अनेक चोरासी समर्जित अने ५ अनेक चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित ए प्रमाणे ४ अनेक चोरासी समर्जित अने प्रवत्—विरानिको पे छे कहेचा.

नैर्गादिने आ**श्रयी** न्यासमीसमर्जित-

२३. [प्र०] सिद्धो संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सिद्धो चोरासीसमर्जित छे १, नोचोरासीसमर्जित छे २, चोगसी तथा नोचो-रासीसमर्जित छे ३, पण अनेक चोरासीसमर्जित नथी अने ५ अनेक चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित पण नथी. [प्र०] हे भगवन् ! आप शा हेतुथी एम कहो छो के सिद्धो यावत्—'समर्जित छे' ! [उ०] हे गौतम ! जे सिद्धो एक समये चोरासीनी गंख्यामां प्रवेश करे छे तेओ चोरासीसमर्जित छे १, जे सिद्धो जवन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट त्र्यासीनी संख्यामां प्रवेश करे छे तेओ नोचोरासी

गिइने आ**ध्या** चोगक्षी**लमजितादि**- सीतिसमज्जिया। जे णं सिद्धा चुलसीतएणं अन्नेण य जहनेणं एकेण या दोहि वा तिहि वा उक्कोसेणं तेसीतएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। से तेणहेणं जाव-'समज्जिया'।

२४. [४०] वपसि जं भंते! नेरितयाणं सुलसीतिसमिजयाणं नोसुलसीतिसमिजयाणं० सहेसि अप्यावहुगं जहा स्क-समिजयाणं जाव-वेमाणियाणं, नवरं अभिलावो सुलसीतीओ।

२५. [प्र॰] एएसि जं भंते! सिद्धाणं चुलसीतिसमिजियाणं, नोचुलसीतिसमिजियाणं, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए पं समिजियाणं कयरे २ जाव-विसेसाहिया या ? [उ॰] गोयमा! सम्रत्योवा सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समिजिया, चुलसीतीसमिजिया अणंतगुणा। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! सि जाव-विहुत्स् ।

### वीसहमे सए दसमो उद्देशो समत्तो ।

#### वीसतिमं सयं समत्तं।

समर्जित छे २, जे भिद्धो एक समये एक चोरासी अने जधन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट त्र्यासी सुधी प्रवेश करे छे तेओ चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित छे ३. माटे ते हेतुथी यायत्—तेओ 'समर्जित छे.'

चोर।सीसमजिता-दिनुं अल्पबद्धलः २४. [प्रत] हे भगवन् ! चोराशीसमर्जित, नोचोरामीसप्रजित-इत्यादि यावत्-बधा नैरियकोतुं अल्पबहुत्व पट्टसमर्जितोनी पेटे कहेवुं. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुची जाणवुं. विशेष ए के. अहिं पट्टने बदले चोरासीनो पाठ कहेवो.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! १ चोरासीसमर्जित, २ नोचोरासीसमर्जित अने ३ चोरासीनोचोरासीसमर्जित सिद्धोमां कोण कोनाधी यात्रत्—िवशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! चोरासी तथा नोचोरासीसमर्जित सिद्धो सौधी थोडा छे, तेथी चोरासीसमर्जित सिद्धो अनंत गुण छे अने नोचोरासीसमर्जित सिद्धो अनंतगुण छे. 'हे भगवन् ! ते एम ज छे.'—एम कही यावत्—वहरे छे.

वीशमा शतकमां दशमो उद्देशक सम्पूर्ण.

वीशमुं शतक समाप्त.



# एगवीसइमं सयं।

सै। ि कैल अयसि वसे इक्क् ईब्मे य अब्भ तुलसी य। अद्वेप दस वग्गा असीतिं पुण होंति उद्देसा।।

#### पढमो वग्गो

## पढमो उद्देमो ।

- १. [प्र०] रायगिहे जाव--एवं वयासी-श्रह भेते ! साली-वीही-गोधूम० जाव-जवजवाणं, एएसि णं भंते ! जीवा मूल-त्ताप वक्कमंति ! ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्रंति - किं नेरदर्पीहेतो० जाव-उववज्रंति ! निरि०, मणु०, देवे-अहा वक्कंतीए तहेव उववाओ, नवरं देववज्रं ।
- २. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवितया उववज्जंति ! [७०] गोयमा ! जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्षोसेणं संखेजा वा असंखेजा वा उववज्जंति । अवहारो जहा उप्पञ्जहेसे ।

# एकवीशमुं शतक.

१ शालि वगेरे धान्य संबंधे दश उद्देशात्मक प्रथम वर्ग, २ कलाय-बटाणा वगेरे धान्य विषे बीजो वर्ग, ३ अळसीप्रमुख धान्य संबंधे बीजो वर्ग, ४ वांस वगेरे पर्यवाळी वनस्पतिसंबंधे चतुर्थं वर्ग, ५ इक्षु वगेरे पर्ववाळी वनस्पति विषे पांचमो वर्ग, ६ दर्भ वगेरे तृण संबंधे छहो वर्ग, ७ अस्र वगेरे वनस्पति संबंधे सातमो वर्ग, ८ तुल्सी प्रमुख वनस्पति विषे आठमो वर्ग. ए प्रमाणे एकवीशमां शतकमां "दश दश उद्देशकना समृह्रू एप आठ वर्ग अने एंशी उद्देशको कहेवाना छे.

#### प्रथम बर्ग

#### प्रथम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [ भगवान् गौतम ] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन् ! शालि, बीहि, घउं, यावत्—जवजव— ए बधाना मूळतरीके जे जीवो उत्पन्न थाय छे, हे भगवन् ! ते जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे !—शुं नैरियकोथी आवीने उपजे छे के तियंचो, मनुष्यो अने देवोथी पण आवीने उपजे छे ! [उ०] क्युल्कान्तिपदमां कह्या प्रमाणे तेओनो उपपात जाणवो. विशेष ए के, पतेओ देवगतिथी आवीने मूळपणे उपजता नथी.

शाल्यादि वर्गे.

२. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय ? [उ॰] हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. तेओनो अपहार उत्कृष्टथी

उत्पाद-एक **समये** केटला उपजे **१** 

<sup>।</sup> बक्ल, का। २ असीनी का−ग⊸ऊन्।

१ \* मूळ, कन्द, स्कंध, त्वचा, बाखा, प्रवाल, (कोमल पांदडा) पांदडां. पुष्प, फळ अने बीज-ए दश उद्देशको एक एक वर्गमां जाणवा—टीका.

İ प्रज्ञाच्यद् ६ प०२१३

<sup>्</sup>ष ब्युत्कान्तिपदमां देवोशी वनस्पतिमां उत्पत्ति कही छे, देवो वनस्पतिना पुष्पादि ग्रुभ अंगमां उत्पत्त याय छे, परन्तु मूळादि अग्रुभ अंगमां उत्पत्त वता नवी, माटे एम कह्युं छे के 'तेओ देवगतिथी आवीने मूळपणे उत्पत्त थता नथी'—टीका.

५ \$ अपहार—से उत्पलना जीको असंख्य उत्सर्पिणी अने अवशापिणी सुधी प्रतिसमय असंख्याना काढनामां आवे तो पूरा काढी शकाय नहि. खुओ—सग. सं॰ ३ स॰ ११ उ॰ १ पू॰ २०८,

- ३. [प॰] तेसि णं मंते ! जीवाणं केमद्दालिया सरीरोगादणा पत्रता ! [प॰] गोयमा ! जहकेणं अंगुलस्स मसंबोद्ध-इभागं, उक्कोसेणं धणुद्दपुदुत्तं ।
- ध. [प्र॰] ते णं भंते जीवा! नाणावरणिज्ञस्स कम्मस्स किं बंधगा, अबंधगा ? [उ॰] जहा उप्पलुद्देसे, एवं धेदे बि, उद्य बि, उदीरणाए वि ।
  - प. [प्रo] ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा, नील० काउ० छद्यीसं भंगा, दिट्टी जाव-इंदिया जहा उप्पल्लहेसे ।
- ६. [प्र०] ते णं भंते ! साली-वीदी-गोधूम० जाय-जवजयगमूलगजीवे कालभो केवचिरं होति ? [उ०] गोयमा ! जह होणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंस्थेजं कालं।
- ७. [प्र०] से णं मंते ! साली-वीद्दी-गोधूम०जाव-जवजवगमूलगजीवे पुद्धवीजीवे, पुणरिष साली-वीद्दी-जाव-जव-जव-जवगमूलगजीवे केवितयं कालं सेवेज्जा, केवितयं कालं गतिरागितं करिज्जा ? [उ०] एवं जद्दा उप्पलुदेसे । एएणं अभिलावेणं जाव-मणुस्सजीवे, आहारो जद्दा उप्पलुदेसे, ठिती जद्दक्षेणं अंतोमुद्दुत्तं, उक्कोसेणं वासपुदुत्तं, समुग्वाय(या),समोद्दया, उद्वद्धणा य जहा उप्पलुदेसे ।
- ८. [प्र०] अह भंते ! सम्रपाणा, जाय-सद्यसत्ता साली-बीही-जाय-जवजनगमूलगजीवसाप उववजपुता ! [उ०] हैता गोयमा ! असर्ति अदुवा अर्णतखुत्तो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

#### एकवीसहमे सए पढमवग्गस्स पढमी उद्देसी समत्ती।

अवगाहना.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवोना शरीरनी केटली मोटी अवगाहना कही छे ! [उ०] जघन्यची अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टची धनुषपृथक्तव-बेथी नव धनुष सुधीनी—कही छे.

कर्मना बन्धक

४. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं ते जीवो ज्ञानावरणीयकर्मना बंधक छे के अवंधक छे ! [उ०] जेम \*उत्परुदेशकर्मा कह्युं छे ते प्रमाणे अर्हि कहेतुं. ए प्रमाणे कर्मना वेदक (वेदनार) संबंधे जाणवुं. उदय अने उदीरणा विषे पण ए प्रमाणे समज्दुं.

हेश्या.

५. [प्र०] हे भगवन् ! झुं ते जीवो कृष्णलेश्याबाळा, नीललेश्याबाळा के कापोतलेश्याबाळा होय ! [उ०] आहं लेश्यासंबंधे <sup>†</sup>छन्त्रीरा भांगा कहेत्रा. दृष्टि अने यावत्-इन्द्रियो गंबंधे ‡उन्पलोदेशकमां कह्या प्रमाणे कहेतुं.

शास्य।दिना भूत्र गणे जीवनी स्थिता. ६. [प्र०] हे भगवन् ! शालि, बीहि, गोधूम, यावत्—जवजव—ए बधाना मूळनो जीव काळयी काळ सुधी रहे ! [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मुहूर्न, अने उन्कृष्टथी असंख्याता काळ सुधी रहे.

शास्यादि अने कृषि-मीकायिकनो संवेध.

- ७. [प्र०] हे भगवन् ! शालि, बीहि, गोधूम, यावत्—जवजव—ए बधाना मूळनो जीव पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय, पाछो फरीने शालि, बीहि अने यावत्—जवजवना मूळपणे उपजे—ए प्रमाणे केटला काळ सुधी सेवे—केटला काळ सुधी गमनागमन करे ? [उ०] जेम "उत्पल उदेशकमां कह्युं छ ते प्रमाणे आहि कहेवुं. अने ए अभिलाप वडे यावत्—मनुष्य सुधी समजवुं. वळी तेओनो आहार पण उत्पलोदेशकमां कह्या प्रमाणे जाणवो. स्थित जवन्ययी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टधी वर्षपृथक्व ( वे वर्षधी नव वर्ष सुधी ) समजवी. वळी कैसमुद्यात, समवहत—समुद्यातनी प्राप्ति अने उद्घर्तना उत्पलोदेशकमां कह्या प्रमाणे जाणवी.
- ८. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वप्राणो, यावत्-सर्व सत्त्वो शालि, ब्रीहि, यावत्-जवजवना मूळना जीवपणे पूर्वे उत्पन्न पएला छे! [उ०] हा गौतम ! अनेक वार अथवा अनंतवार उत्पन्न थएला छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### एकवीशमा शतकमां प्रथमवर्गनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

४ <sup>क</sup> ( शास्त्रादिना जीवो ) अवंधक नथी, तेमांनो एक जीव ज्ञानावरणीय कर्मनो बंधक छे, घणा जीवो पण बन्धक छे. ए प्रमाणे वेदक-उद्यवाळा अने उदीरक जाणवा. जुओ भग० स्तं । ३ হা০ १९ ३० १ ए० २०८

५ र् कृष्ण, नील अने कापोत-ए त्रण छेरयाना एकवचन अने बहुवचनना असंयोगी त्रण त्रण भागा गणता छ भागा थाय छै तथा तेना ब्रिकसंयोगी कृष्ण नील, कृष्ण कापोत अने नील कापोत ए त्रण विकल्प याय, अने अलेकना एक अने अनेकना चार चार भागा गणता बार भागा थाय. तेमज त्रिकसंयोगी एक अने अनेकना आठ विकल्प थाय-ए प्रमाणे बधा मळीने छव्वीश भागा जाणवा—टीका.

<sup>🕽</sup> भग॰ खं॰ ३ श॰ ११ उ० १ प्र॰ ३१०

ण ी जघन्यमी ने भव अने उत्कृष्टमी असंख्यात भव सुधी गमनागमननी स्थिति जाणवी-इत्यादि जुमो भगव संव ३ घ० ११ उ० १ पृ० ११६

<sup>\$ &#</sup>x27;तेओने ( शाल्यादि जीवोने ) बेदना, कवाय अने मरण-ए त्रण समुद्धातो कहेला छे, 'तेओ समुद्धातने प्राप्त धर्मने मरे अने प्राप्त धया शिवाय पण मरे,' तेओ मरीने मनुष्य अने तिर्यचगतिमां जाय छे.-इत्यादि माटे जुओ--भगण खं । ३ ६० ११ इ० ११३

# पढमवग्गस्स बीआईआ उद्देसा ।

१. [प्र०] बह मंते! साली-बीदी॰ जाय-जयजवाणं एएसि णं जे जीवा कंव्चाए वक्कमंति ते णं मंते! जीवा कबो-दितो उवचकंति! [उ०] एवं कंदादिगारेण सचेव मूलुदेसो अपरिसेसो भाणियद्यो, जाय-असर्ति अदुवा अणंतलुत्तो। 'सेवं मंते! सेवं मंते'! चि । २१-२। एवं खंधे वि उद्देसो नेयद्यो। २१-३। एवं तयाए वि उद्देसो माणियद्यो। २१-४। साले वि उद्देसो माणियद्यो। २१-५। पवाले वि उद्देसो माणियद्यो। २१-६। एते वि उद्देसो भाणियद्यो। एए सत्त वि उद्देसगा अपरिसेसं जहा मूले तद्दा नेयद्या। २१-७। एवं पुष्फे वि उद्देसओ, नवरं देवा उववक्कंति जद्दा उप्पलुदेसे। चत्तारि लेस्साओ, असीति मंगा। ओगादृणा जहकेणं अंगुलस्स असंलेक्करभागं, उद्योसेणं अंगुलपुदुत्तं, सेसं तं चेव। 'सेवं भंते! सेवं मंते'! चि । २१-८। जहा पुष्फे एवं फले वि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियद्यो। २१-९। एवं बीए वि उद्देसओ। । २१-१०। एए वस उद्देसगा॥

### एगवीसइमे सए पढमो चग्गो समत्तो। प्रथमवर्गना २-१० उद्देशको.

१. [प्र०] हे भगवन्! शालि, ब्रीहि, यावत्—जवजव—ए बधाना कंदरूपे जे जीवो उत्पन्न थाय छे तेओ हे भगवन्! क्यांथी आवीने उपजे छे! [उ०] आ कंदना अधिकारमां तेज समप्र मूळनो उद्देशक यावत्—'अनेक वार अथवा अनंतवार उत्पन्न थयेटा छे' खां सुधी कहेवो. विशेष ए के मूळने बदले कंदनो पाठ कहेवो. हि भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.' (२१—२.) ए प्रमाणे स्कंध संबंधे तथा त्वचा, शाखा, प्रवाल—कुंपळो अने पांदडां संबंधे पण एक एक उद्देशक कहेवो. ए साते उद्देशको जेम मूळ संबंधे वधुं कहुं हो म कहेवा. (२१—७.) वळी पुष्पमंबंधे पण पूर्वनी पेटे उद्देशक कहेवो. पण तेमां विशेष ए के 'पुष्पमां देवो पण उत्पन्न थाय छे' एम कहेवुं. जेम उत्पत्नोदेशकमां चार लेश्या अने तेना "एंशी भागा कत्म छे तेम अहि कहेवा. अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट अंगुल्युधक्त—बेथी नव अंगुल जाणवी. बाकी वर्षु ते प्रमाणे जाणवुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.' (२१—८.) जेम पुष्प संबंधे कह्युं तेम फळ अने बीज संबन्धे पण समप्र उद्देशक कहेवो (२१—२०.) ए प्रमाणे ए दश उद्देशको जाणवा.

### एकवीशमा शतकमां प्रथम वर्ग समाप्तः

### बीओ वग्गो ।

१. [प्र०] अह मेते ! 'कलाय-मस्र-तिल-मुग्ग-मास-निष्फाय-कुलत्थ-आलिसंदग-सडिण-पिलमंथगाणं पपिस णं जे जीवा मूलत्ताप वक्कमंति ते णं भेते ! जीवा कओहिंतो उचवज्रंति ? [उ०] एवं मूलादीया दस उद्देसगा भाणियद्या जहेव सालीणं निरवसेसं तहेव ।

### एगवीसइमे सए बितिओ वग्गो समत्तो। द्वितीय वर्ग.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कलाय—बटाणा, मधुर, तल, मग, अडद, वाल, कलथी, आलिमंदक, सटिन अने पलिमंथक—चणा—ए कलाय बगेरे धान्य बधाना मूळपणे जे जीवो उत्पन्न थाय छे ते क्यांथी आयीने उपजे छे ? [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे गृळादिक दश उद्देशको अहिं कहेवा अने जेम शालिसंबंधे कह्युं तेम बधुं अहिं कहेतुं.

#### एकवीश्रमा शतकमां द्वितीय वर्ग समाप्त.

# तईओ वग्गो।

- १. [प्र०] अह भंते ! !अयसि-कुसुंभ-कोइव-कंगु-रालग-तुवरी-कोदृसा-सण-सरिसव-मूलगवीयाणं प्रसि णं तृतीय वर्ग.
- १. [प्र०]-हे भगवन्! अळसी, कुसुंब, कोद्रव, कांग, राळ, नुत्रेर, कोद्रमा, सण, सरसव अने मृळकबीज—ए वनस्पतिना
- 9 \* प्रथमनी चार छेश्याना एकत्व अने बहुन्यने आश्रयी असंयोगी चार चार भागा गणता आठ भांगा, हिक्संयोगी छ थिकाप. अने प्र<sup>योका</sup> एकत्व अने बहुत्वने आश्रयी चार चार भंग गणता चोवीदा भांगाओ, त्रिकसंयोगी आठ विकल्प अने तेना पूर्वोक्त गीते चार चार भंग गणता विज्ञास विकल्पो तथा चतुःसंयोगी सोळ विकल्पो-ए वधा मळीने एंखी विकल्पो थाय छे.—टीका.
  - ९ <sup>†</sup> 🗴 × कल-मस्र्-तिल-सुग्ग-मास-णिप्फाष-कुलत्थ-आलिसंद-रात्तीण पलिमंथा । ×× जुओ प्रज्ञा० पद ९ प० ३३.
  - १ ‡ अयसी-कुतुंम-कोह्न-कंगू-रालग-मास-कोहंसा। सण-सरिसन-मूलगंधीया जे यावले तहापगारा। सेत्तं ओसहीओ। जुओ प्रज्ञा॰ पद १ प० ३३. १७ म॰ स्॰

जे जीवा मूलसाए वक्कमंति ते णं मंते ! जीवा कभोहितो उचवज्रांति ! [उ०] एवं एत्य वि मूलादीया वस उद्देसगा जहेव सालीणं निरवसेसं तहेव माणियवं।

#### एगबीसइमे सए तहुओ बग्गो समत्ती।

मृळपणे जे जीवो उत्पन्न थाय छे ते जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे ! [उ०] अहिं पण शालि<mark>उदेशकनी पेटे मृळादिक दश उदेशकों</mark> समग्र कहेवा.

### एकवीशमा शतकमां तृतीय वर्ग समाप्त.

#### चउत्थो वग्गो।

१. [प्र०] अह भंते ! \*वंस-वेणु-कणक-कक्कावंस-चारुवंस-दंडा-कुंडा-विमा-चंडा-वेणुया-कल्लाणीणं प्रवसि णं जे जीवा मूलत्ताप वक्कमंति० ? [उ०] एवं पत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव साठीणं, नवरं देवो सद्यत्थ वि न उचयक्कति, तिश्वि लेसाओ, सद्यत्य वि छद्वीसं भंगा, क्षेसं तं चेव ।

### एगवीसहमे सए चउत्थो वग्गो समत्तो । चतुर्थ वर्गः

वास बगेरे पर्ववाळी धनस्पति. १. [प्र०] हे भगवन् ! वांस, वेणु, कनक, कर्कावंदा, चारुवंदा, दंडा, कुडा, विमा, चंडा, वेणुका अने कल्याणी-ए वधी वनस्पर्निना मूळपणे जे जीवो उत्पन्न थाय छे ते जीवो क्याथी आवींने उपजे छे ! [उ०] पूर्व प्रमाणे शालिबर्गनी पेठे अहिं पण गूळादिक ददा उदेशको कहेवा. पिशेप ए के अहिं फोइ पण ठेकाणे देवो उत्पन्न थता नधी. त्रण लेख्याओं तथा ते संबंधे छन्वीरा मांगा कहेवा. बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.

# एकवीशमा शतकमां चतुर्य वर्ग समाप्त.

### पंचमो वग्गो।

१. [प्र०] अह भंते ! 'उक्खु-इवखुवाडिया-वीरणा-इक्कड-भमास-स्रुठि-सर्दे-वेत्त-तिमिर-सतपोरग-नलाणं प्र्यास णं जे जीवा मृत्रत्वाण वक्कमंति ! [उ०] एवं जहेव वंसवन्नो तहेव पत्थ वि मृलादीया दस उद्देसना, नवरं खंधुदेसे देवो उवधज्जति, वत्तारि लेस्साओ, सेसं तं चेव ।

# एगवीमहमे सए पंचमी वग्गी समत्ती।

#### पंचम बर्गः

इसुवगेरे पर्वबादी बनस्पतिः (. [प्र०] हे भगवन् ! इक्षु—शेव्रडां, इक्षुवाटिका, वीरण, इक्षड, भमास, सुंठ, दार, वेत्र (नेतर), तिमिर, सतपोरण अने नड— ए बची वनस्पतिना मूळपणे जे जीवो उपजे छे तेओ क्यांधी आर्वान उपजे छे ! [उ०] जेम वंशवर्गसंबंधे कह्युं छे तेम अहिं पण मूळादिक दश उदेशको कहेवा. विशेष ए के स्कंधोदेशकमां 'देवो पण उत्पन्न थाय छे अने तेओने चार लेश्याओ होय छे'—एम कहेतुं. बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवं.

### एकवीशमा शतकमां पंचम वर्ग समाप्त.

#### छहुओ बग्गो ।

१. [प्र०] यह मंते ! !सेडिये-मंतिय-इष्म-कोंतिय-इष्मकुस-पद्मग-पेंदिश्ल-अञ्चुण-आसादग-रोहिय-समु-अव-षष्ठ वर्ग.

सेश्विय बगेरे वन-स्पत्तिः १. [प्र०] हे भगवन् ! सेडिय, भंतिय (भंडिय), दर्भ, कोंतिय, दर्भकुश, पर्वक, पोदेइछ (पोहदइछ), अर्जुन (अंजन), आषाढक,

महुरतण खुर्य सिप्पिय भोद्भव्ये सुंकलितणे य ॥ ३४ ॥ जुओ प्रज्ञा • पद १ प • ३३.

१ फंडा-वे-छ । २ सत्तवत्त-ग । ३ भंडिय-ग । ४ पोइदहल-ग । ५ अंजण-ग ।

थंसे वेच्छ्( पू ) कणए कंकावंसे य जाववंसे य ।

उदए कुडए विसए कंडा वेहे य कलाणे ॥ ३२ ॥ जुओ प्रज्ञा॰ पद १ प॰ ३२

१ र्मे इक्ख य इक्खुवाडी वीडणी तह इक्कडे य मासे य ।

धुंठे सरे य वेसे तिमिरे सतपोरंग नले य ॥ जुओ प्रज्ञा॰ पद १ प॰ ३२.

संडिय मंतिय हो(को)सिय दब्भकुसे पब्बए य पोडहला ।

अज्जुण असाडए होहियंसे सुयवेय खीरभुसे ॥

एरंड कुडविंदे करजर सुंठे तहा विभंगू य ।

अभ्ररहादि.

सीर-मुस-परंड-कुरुकुंव-करकर-सुंट-विमंगु-मेंदुरयण-धुरग-सिप्पिय-सुंकिलितणाणं प्रस्ति णं जे जीवा मृलसाय वक्ष-मंति॰ ! [उ॰] एवं पत्य वि वस उद्देसमा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ।

#### एगवीसइमे सए छट्टो वग्गो समत्तो।

रोहितक, समु, अ(त)वसीर, भुस, एरंड, कुरुकुंद, करकर, सुंठ, विभंग, मधुरयण (मधुवयण), धुरग, शिल्पिक अने सुंकलितृण-ए बधाना मूळ तरीके जे जीवो उपजे छे, तेओ क्यांथी आवीने उपजे छे! [उ०] ए प्रमाणे समप्र वंशवर्गनी पेठे मूळादिक दश उद्देशको कहेवा.

#### एकवीशमा शतकमां पष्ट वर्ग समाप्त.

#### सत्तमो वग्गो

१. [म०] मह मंते! "सम्भवह-वैषयण-हरितग-तंबुकेज्ञग-तण-वत्युल-पोर्गग-मज्ञारयाई-विश्चि-पेलिक-दगिष्य लिय-दिव-सोत्यिय-सायमंडुकि-मूलग-सरिसव-अंबिलसाग-जियंतगाणं एएसि णं जे जीवा मूल० ? [उ०] एवं एत्य वि दस उद्देशमा जहेव वंसवग्गो ।

### एगवीसइमे सए सत्तमो वग्गो समत्तो । सप्तम वर्गे.

१. [प्र०] हे भगवन् ! <sup>†</sup>अभ्ररुष्ट, वायण, हरितक, तांदळजो, तृण, ‡वस्थुल, पोरक, गार्जारक, विह्नि(चिह्नि), पालक, दग-पिप्पली, दिन्न–दर्धी, खस्तिक, शाकमंडुकी, मूलक, सरसव, अंबिल्झाक, जियंतग, ए बधाना मूळपणे जे जीवो उपजे छे ते जीवो क्यांची आवीने उपजे **छे !** [उ०] पूर्वोक्त बंशवर्गनी पेटे अहिं पण मूळादिक दश उदेशको कहेवा.

# एकवीशमा शतकमा सप्तम वर्ग समाप्त.

### अहमो वग्गो

१. [प्र०] अह मंते! तुलसी-कण्ड-दराल-फणेजा-धजा-चूयणा-चोरा-जीरा-दमणा-मुख्या-इंदीवर-सयपुष्काणं प्राप्ति जं जीवा मूठताए वक्कमंति०? [उ०] एथ वि दस उद्देसमा निरवसेसं जहा वंसाणं। एवं एएसु बटुसु बमोसु असीति उद्देसमा भवंति।

# एगवीसइमे सए अट्टमो बग्गो समत्तो । एकक्वीसतिमं सयं समत्तं.

#### अप्रम वर्ग.

१. [प्र०] हे भगवन् ! तुल्सी, कृष्ण, दराल, फणेजा, अजा, चृतणा, चौरा. जीरा, दमणा, मस्या, इंदीवर अने शतपुष्प-ए तुल्सी कोरे बरित दशाना मूळपणे जे जीवो उपजे छे ते जीवो क्यांथी आयींने उपजे छे ? [उ०] वंशवर्गनी पेठे अहिं पण मूळादिक दश उद्देशको कहेवा. ए प्रमाणे ए बधा मळीने आठ वर्गना एंशी उद्देशको जाणवा. (२१-८)

### एकवीशमा शतकमां अप्टम वर्ग समाप्त.

# एकवीशमुं शतक समाप्त.

१ कुन-क । २ महुवयण-ग । ३ चापण-क । ४ चोरग-ग-घ । ५ विहुपाइ-क, चिहुियाछ-ग । ६ भृणा-क; भूयणा छ ।

१ \* अजो( २० ) रह वोडाणे हरिनग तह नदुळ ज नणे य

वत्थल पोरग मजारथाइ बिही य पाठमा ॥ ३० ॥

दग्गपिप्पली य दच्ची तोत्तिय गाए तहेव संदुर्द्धा ।

मूलग गरिमन अंविलसाए य जियंतए चेव ॥ ३८ ॥ जुओ प्रज्ञा० पद १ प० ३३.

१ विश्व उपर अमुक प्रकारनी वनस्पति थाय छे तेने अश्रवह कहे छे.

१ कुलस कण्ह उराले फणिजए अजए य भूयणए ।

वारग दमणग मखदयग सत्युफीवीवरे य नहा ॥३९॥ जे यावणे तहप्पगारा । मेलं हरिया । जुओ प्रज्ञा० पद १ प० ३३.

## बावीसतिमं सयं।

#### ताले-गद्विय-बहुबीयगा य गुच्छा य गुम्म वली य । छद्दस वग्गा एए सिंहुं पुण होति उद्देसा ॥

#### पढमो वग्गो।

१. [प्रव] रायगिहे जाव-एवं वयासी-अह भंते! "ताल-तमाल-तकलि-तेतलि-साल-सरला-सारगल्लाणं जावकेयति-कदिल-कंदिल-चम्मरुक्ख-गुंतरिक्ख-हिंगुरुवल-लवंगरुवल-पृथफल-खज्ञ्दि-नालपरीणं एपसि णं जे जीवा
मूलत्ताप वक्कमंति ते णं भंते! जीवा कओहिंतो उववज्ञंति? [उव] एवं पत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायशा जहेव
सालीणं, नवरं इमं नाणत्तं-मूले कंदे खंघे तयाप साले य पपसु पंचसु उद्देसगसु देवो न उववज्ञति। तिक्षि लेसाओ। ठिती
जहक्षेणं अंतोमुद्दुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्सादं। उविद्विसु पंचसु उद्देसपसु देवो उववज्ञति। चत्तारि लेसाओ। ठिती जहक्षेणं
अंतोमुद्दुत्तं, उक्कोसेणं वासपुदुत्तं। ओगाहणा मूलं कंदे धणुहपुदुत्तं, खंघे तयाप साले य गाउयपुदुत्तं, पदाले पत्ते धणुहपुदुत्तं,
पुष्फं हत्थपुद्धत्तं, फले वीप य अंगुलपुद्दत्तं। सद्वेसि जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जदभागं। सेसं जहा सालीणं। एवं एप
इस उद्देसगा।

# बावीसितमे सए पढमो बग्गो समत्तो। बावीशमुं शतक.

१ ताल-तमालप्रमुख इक्ष संबंधे दरा उद्देशकना समुदायकप प्रथम वर्ग, २ एकबीजवाला इक्ष संबंधे बीजो वर्ग, ३ जेना फलोमां घणां बीज छे तेवा बहुबीज इक्षो संबंधे श्रीजो वर्ग, ४ रींगणी वर्गरे गुच्छ वनस्पति विषे चोषो वर्ग, ५ सिरिय, नवमालिका वर्गरे गुन्म वनस्पति विषे पांचमो वर्ग अने ६ बिछ-पुंकली वर्गरे वेल संबंधे छहे। वर्ग-ए प्रमाण दरा दरा उद्देशकना छ वर्ग अने तेना वधा मळीने साठ उद्देशको आ शतकमां कहेवामां आवशे.

### प्रथम वर्ग.

ग्रह बगेरे बलयबर्ग.

१. [प्र०] राजगृहनगरमां यावत्—[ भगवान् गौतम ] आ प्रभाणे बोल्या के, हे भगवन्! ताड, तमाछ, तक्कि, तेतिल, साछ, सरछ—देवदार, सारगछ, यावत्—केतकी (केवडो), केळ, कंदछी, चर्मदृक्ष, गुंददृक्ष, हिंगुदृक्ष, छवंगदृक्ष, सोपारीनुं दृक्ष, खज्री अने नाळीप्री—ए बधाना मूळपणे जे जीवो उपजे छे ते जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे! [उ०] शालिवर्गनी पेठे अहि पण मूळादिक दश उदेशको कहेवा. परंतु तेमां विशेष ए छे के, आ दृक्षना मूळ, कंद, स्कंध, छाछ, अने शाखा—ए पांचे उदेशकमां देवो आवी उपजता नयी, तेथी त्यां तेओने त्रण छेदयाओ होय छे. तेओनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट दश हजार वर्ष छे. अने बाकीना पांच उदेशकमां देवो उत्पन्त थाय छे, माटे त्यां तेओने चार लेदयाओ होय छे. तेओनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट वर्षपृथकत्व—बे वरसथी नय वरस सुधीनी होय छे. अवगाहना—शरीर प्रमाण मूळ अने कंदनी धनुपृथकत्व, तथा शाखानी गाउपृथक्त्व होय छे, प्रवाट अने पांदडानी अवगाहना धनुपृथकत्व, पुष्पनी हस्तपृथकत्व अने बीजनी अंगुळपृथकत्व उत्कृष्ट अवगाहना होय छे. ए बधानी जघन्य अवगाहना अंगुळना असंख्यातमा भागनी जाणवी. बाकी बधुं शालिवर्गनी पेठे कहेतुं. ए प्रमाणे ए दस उद्देशको कहेवा.

#### वावीशमा शतकमां प्रथम वर्ग समाप्त.

१ गुंदद ग-क ।

9 #

ताल तमाले तक्कि तो( ते )यलं साली ( ले ) य सारकत्ताणे । सरले जावति केतद् कदली तह भ( च )म्मस्क्ले य ॥ ३६ ॥ सुयदक्क हिंगुस्क्ले लवंगुदक्के य होद्द बोद्धको ॥ ३६ ॥ पूयकली सञ्जुरी बोद्धका णालिएरी य ॥ ३० ॥ जेयावके तहुष्णगरा । सेतं बस्त्या । जुओ प्रज्ञा = पद १ प = ३३-१.

### बीओ वग्गो।

१. [प्र०] अह मंते! \*िनं-व-जंबु-कोसंब-ताल-अंकोल्ल-पीलु-सेलु-सल्लइ-मोयइ-मालुय-वउल-पलास-करंज-पुत्तंजीवग-रिटु-विहेलग-हरितग-मल्लाय-उंबे(वे)मरिय-बीरणि-धार्या-पियाल-पृतियींगवीयग-(करंज)-सेण्हय-पासिय -सीसब-अयसि-पुत्ताग-नागदक्क-सीवब-असोगाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताप वक्कमंति०! [उ०] एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायबा निरवसेसं जहा तौंछवग्गो।

#### बाविसतिमे सए बितिओ बग्गो समत्तो ।

#### द्वितीय वर्ग.

१. [प्रo] हे भगवन् ! लीमडो, भांबो, जांबू, कोशंब, ता(सा)ल, अंकोल्ल, पीछ, सेल्ल, सल्लकी, मोचकी, मालुक, बकुल, पत्यश, करंज, पुत्रंजीवक, अरिए—अरिटा, बहेडा, हरडे, मिलामा, उंबेभरिका, क्षीरिणी, धावडी, प्रियाल—चारोळी, प्रतिनिंब, [ करंज ], सेण्हय, पासिय, सीसम, अतसी ( असन ), नागकेसर, नागवृक्ष, श्रीपणीं( सेवन ) अने अशोक—ए बधा वृक्षोना मूळपणे जे जीबो उपजे छे ते जीबो क्यांथी आबीने उपजे छे ! [उ०] ए प्रमाणे आहें पण मूलादिक दश उद्देशको समग्र ताडबर्गनी पेठे कहेबा.

तीमका वर्गरे एका-स्थिक वर्गः

#### गावीशमा शतकमां द्वितीय वर्ग समाप्त.

### तइओ वग्गो।

१. [प्र०] अह भंते ! 'श्रंत्थिय-तिदुय-वार-किचट्ट-अंबाडग-माउलिंग-बिह्न-आमलग-फणस-दािडम-आस्तथ-उं-बर-वड-णगोह-नंदिरुक्ख-पिप्पलि-सतर-पिलक्खुरुक्ख-काउंबिरय-कुच्छुंभरिय-देवदालि-तिलग-लउय-छत्तोह-सि-रीस-सत्तवस-दिद्वस-लोद्ध-धव-चंदण-अज्जुण-जीव-कुदु(ड)ग-कलंबाणं पपसि जं जीवा मूलत्ताप वक्कमंति ने जं भंते !० ! [उ०] पवं पत्थ वि मूलादीया वस उद्देसगा तालवग्गसरिसा नेयवा जाव-बीर्य ।

#### बाविसतिमे सए तइओ वग्गो समत्तो ।

## तृतीय वर्ग.

१. [प्र०] हे भगवन् ! अगस्तिक, तिंदुक, बोर, कोटी, अंबाडग, बीजोरुं, बिल्व, आमलक, फणस, दाडिम, अश्वन्थ-पीपल्टो, उंबरो, वड, न्यग्रोध, नंदिष्टक्ष, पीपर, सतर, प्रक्षवृक्ष (खाखरो), काकोढुंबरी, कुस्तुंभरि, देवदालि, तिलक, लकुच, लग्नोंघ, चिरिप, सप्तपर्ण-सादड, दिष्पर्ण, लोधक, धव, चंदन, अर्जुन, नीप, कुटज अने कढंब-ए बधा वृक्षोना मृत्व्यपणे जे जीवो उपजे छे ते जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे ! [उ०] ए बधुं ताडवर्गनी पेठे कहेवुं. आहें पण मृत्वयी मांडी बीज सुधी दश उदेशको जाणवा.

जगस्तिक यगेरे बहुबीन बर्ग-

### बावीशमा शतकमां तृतीय वर्ग समाप्त.

#### १ वहेडग-ग, बहेछग कु । २ उंबभिरय का । ६-णिबारग-का । ४-वग्गे का । ५ अध्यया-ग-का । १ \* णिबं-ब-जंबु-कोसंब-साल-अकुल-पिल सेल य ।

राह्रइ-मोयइ-माछ्य-घउल-पलासे करंजे य ॥ १२ ॥ पुत्तंजीवय-रिद्धे बिहैलए हरिडए य भिक्षए । उंदेभरिया खीरिणी बोद्धन्वे भायइ पियाडे ॥ १३ ॥ पूद्यन्व-करंजे सुण्हा तह सीसवा य असणे य ।

पुषाग-नागरुक्को सीवण्णि तह असोगे य ॥ १४ ॥ जुओ प्रज्ञा॰ पद १ प॰ ३१-१.

पुष्ताग-नागरुक्स सावाण्य तह असाग य ॥ १४ ॥ जुव श्रास्थिय तेंदु किन्द्रे अंबाडग-माउर्लिग-बिहे व । श्रामलग फणिस दालिम आसोठे (त्ये )उंबर वडे य ॥ १५ ॥ णग्गोह णंदिरुक्से पिप्परी सयरी पिल्लक्सरुक्से य । काउंबरि कुर्स्युमरि बोद्धव्या देवदाली य ॥ १६ ॥ तिलए लउए छत्तोह सिरीस सत्तवच दहिवमे । स्रोद्धव-बंदण-रुद्धण-णीए कुटए क्यंबे य ॥ १० ॥

#### चउत्थो वग्गो ।

१. [प्र०] अह मंते ! \*वारंगणि-अल्ला-पोंडर० एवं जहा पश्चणाप गाहाणुसारेणं णेयतं, जाय- गंज-पाडला-वासि-अंकोक्काणं पप्रसि णं जे जीवा मूलसाप वक्कमंति० ? [उ०] एवं पत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा नेयता जाय-बीयं ति निरवसेसं जहा वंसवग्गे ।

# बाबीसतिमे सए चउत्थो वग्गो समत्तो ।

### चतुर्थ वर्ग.

वैषण वगेरे गुन्छ वर्गः

१. [प्र०] हे भगवन् ! वेंगण, अल्लाइ, पोंडइ-इत्यादि वृक्षोना नामो प्रज्ञापनासूत्रनी गाथाने अनुसारे पावत्—गंज, पाटला, वासी अने अंकोल सुधी जाणवां. ए वधा वृक्षोना मूळपणे जे जीवो उपजे छे ते जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे ! [उ०] अहि पण मूळादिक यावत्—बीजपर्यंत दश उद्देशको वंशवर्गनी पेठे कहेवा.

# बाबीश्रमा शतकमां चतुर्थ वर्ग समाप्त-

#### पंचमो वग्गो।

१. [प्र॰] सह भंते ! †सिरियका-जैवमालिय-कोरंटग-बंधुजीवग-मणोजा॰ जहा पश्चवणाय पढमपदे गाहाणुसारेणं जाव- नलजीय-कुंद-महाजारेणं पपसि जं जे जीवा मूलत्ताय वक्कमंति॰ ? [उ॰] एवं पत्थ यि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा सालीणं।

#### बावीसतिमे सए पंचमी वग्गी समत्तो ।

#### पंचम वर्ग.

सिरियक बगेरे गुस्मवर्गे- १. [प्र०] हे भगवन् ! सिरियक, नवमालिका, कोरंटक, बंधुजीवक, मणोज्ञा—इत्यादि बधा नामो प्रज्ञापनामूत्रमां कहेल प्रथमप-दनी गायाने अनुसारे यावत्—निलनी, कुंद अने महाजाति सुधी जाणवां. ए बधा वृक्षोना मूळपणे जे जीवो उपजे छे ते जीवो क्यांची आवीने उपजे छे ! [उ०] अहि पण शालिवर्गनी पेटे मूलादिक दश उदेशको समप्र कहेवा.

### बाबीशमा शतकमां पंचम वर्ग समाप्त.

#### छद्दो वग्गो।

१. [प्र०] अहः भंते ! प्रेपूसफलि-कार्लिगी-तुंबी-तउसी-प्रलावालुंकी० पर्व पदाणि छिदियद्वाणि पश्चवणागाहा-णुसारेणं जद्दा तालवर्गे जाव-द्घिफोल्लइ-काकलि-सोकलि-अक्षवींदीणं एएसि णं जे जीवा मूलसाय वक्कमंति० १ [उ०]

### षष्ठ वर्ग.

पूसपाठी बगेरे नः (\*

१. [प्र०] हे सगवन् ! पूसफल्का, कार्टिगी, तुंबडी, बपुपी—चीभडी, एलबाहुंकी--इत्यादि नामो प्रज्ञापनासूत्रनी गाथाने अनुसारे ताडवर्गमा कक्षा प्रमाण समजवां, यायत्–दिविकोहड, कार्काट, सोकाटि अने अर्कवोदी, ए वधा वृक्षोना सूळपणे जे जीवो उपजे छे ते

- ९ उद्देसमा तास्रवस्मयरिया ने-स-छ । २:-नालिय-स- छ ।
- ९ \* वाइंगणि-गहद-धृंडई य तह कब्धुरी य जीभुमणा । सर्वा आहर्द णीली तुरुसी तह माडिलेंगी य ॥ ९८ ॥ ट्वादि यावत्— जीवट केयट तह गंज पाडला दा( वा )सि अकोले ॥ २२ ॥ जुओ प्रजाब पद ९ पव ३५–२
- १ में सेणः निष्)यम् णोमालिय कोनंद्रय वंयुतीयम-मणो ने । पिद्रय पाणं कणयग कुंत्रय तह सिदुवारे य ॥ २३ ॥ आई मोग्गर तह जृहिया य तह मिल्रिया य वामंती । वत्थुल कन्थुल सेवाल गंठी मगदंतिया चेत्र ॥ २४ ॥ चंपकणी(जा)इ णीइया कुंदो तहा महाजाई । ×× जुओ प्रजा० पद १ प० ३२-२
- पूसकर्ति कार्तिगी तुंबी तजसी य एळवालुंकी ।
   घोसाटइ पंडीला पंचंगुली आयणीली य ॥ २६ ॥ यावत—
   द्विफोष्टर्ड कागली सोगली य तह अक्टबोंदी य ॥ ३० ॥ जुओ प्रज्ञा० पद १ प० ३३–१

पवं मूलादीया दस उद्देसमा कायबा जहा तालवग्गो। नवरं फलउद्देसे ओगाहणाए जहचेणं अंगुरुस्स बसंसेखद्भागं, उक्कोसेणं चणुहपुहुत्तं। ठिती सद्वत्य जहसेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं, सेसं तं वेव। छट्टो वग्गो समत्तो। एवं छसु वि वग्गेसु सिट्ट उद्देसमा मवंति।

# बाबीसितमे सए छट्टो बग्गो समत्तो । बाबीसितिमं सयं समत्तं ।

जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे ? [उ०] आहं पण ताडवर्गनी येठे मूळादिक दश उदेशको संपूर्ण कहेगा. विशेष ए के फलोदेशकमां फलनी जघन्य अवगाहना अंगुलना असंख्यातमा भागनी अने उत्कृष्ट धनुष्यवत्त्र—वेशी नय धनुषती होय छे. बधे स्थळे स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्तनी अने उत्कृष्ट बेथी नव वरसनी जाणवी. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणबुं. ए प्रमाणे छ वर्णना मळीने साठ उदेशको याथ छे.

बाबीशमा शतकमां पष्ट वर्ग समाप्त.

बावीशमुं शतक समाप्त.



### तेवीसतिमं सयं।

### आलुय लोही अर्वए पाढा तह मासविन वली य । पंचेते दसवग्गा पन्नीसं होंति उद्देसा ॥

#### पहमी वग्गो।

१. [प्रव] रायगिहे जाय-पवं वयासी-अह अंते ! आलुय-मूलग-सिगवेर-हिल्ह-रुठ-कंडरिय-जीरै-च्छीरिवरिल-किट्टि-कुंदुंक-कण्ट-कंडउसु-मृंहु-पयलह-मृहुसिगि-णिरुहा-सैण्पसुगंधा-छिन्नरुहा-बीयरुहाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ? [उठ] एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायद्वा वंसवग्गसिरसा, नवरं परिमाणं जहनेणं एको वा वो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेजा वसंखेजा वा अणंता वा उवयक्जंति । अवहारो-गोयमा ! ते णं अणंता समये २ अवहीरमाणा २ अणंताहि ओसिण्णिहिं उस्सिण्णिहिं एवतिकालेणं अवहीरंति, नो चेव णं अवहरिया सिया । दिती जहनेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ।

# तेवीसितमे सए पढमो वग्गो समतो। त्रेवीशमुं शतक.

[ उद्देशकार्थसंप्रह—] १ आलुक वगेरे साधारण वनस्थितना भेद संबन्धे दश उद्देशान्यक प्रथम वर्ग, २ लोही प्रमुख अनंतका-यिक वनस्पति मंबंधे बीजो वर्ग, ३ अवक वगेरे वनस्पति विषे त्रीजो वर्ग, ४ पाठा, मृगवालुंकी वगेरे वनस्पति मंबंधे चतुर्थ वर्ग अने ५ मापपणी वगेरे वनस्पति विषे पंचम वर्ग. ए प्रमाणे पांच वर्गना दस दस उद्देशको मळीने पचास उद्देशको आ त्रेवीशमां शतकमां कहेवाना छे.

#### प्रथम वर्ग.

ब्बाद्ध वगेरे साधारण बनस्पतिः १. [प्र०] राजगृहनगरमां भगवान् गौतम यावत्—आ प्रमाणे बोन्या के—हे भगवन्! आलुक, मृद्या, आदु, हळदर, रुरु, कंडरिक, जीरुं, श्रीरिविधाली (श्रीरिविधालीकार ), विहि, कुंदु, कृष्ण, कहमु, मधु, पयन्यह, मधुसिंगी, निरुहा, सर्पसुगंधा, छिन्नरुहा अने बीजरुहा—ए वधा वृक्षीना मृद्यपणे जे जीवो उपजे छे ते जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे ? [उ०] अहिं वैशवर्गनी पेठे मृद्यदिक दश उदेशको कहेवा. विशेष ए के तेओलुं परिमाण अवन्यधी एक समये एक, बे के त्रण अने उन्कृष्ट संख्याता, अमंख्याता अने अनंता आवीने उपजे छे. बद्यी हे गौतम! तेओनो अपहार आ प्रमाणे छे—जो ते अनंत जीवो, समये समये अपहरीए तो अनंत उत्सर्णिणी अने अवसर्पिणी काळे अपहराय, पण ए प्रमाणे अपहराता नथी. वळी तेओनी जधन्य अने उन्कृष्ट स्थिति अंतर्मुहूर्तनी छे. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवं.

### त्रेवीशमा शतकमां प्रथम वर्ग समाप्त.

अथय-ग । २ पक्षासा-ग । ६ जारु-क । ७ स्टुकण्ण-ङ । ५ छ्डडमु-ग । ६ मधुमयछ इ-क । ७ रूपसुर्गधा छ ।

अवार पणए सेयाँल मिहुन्थु हुन्थिसामा य । अस्सकाँक सिहकाँक सिटि तत्तो मुमुंडी य ॥ ४३ ॥ इठ कुंडोरेया जीरु छीरविराली तहेव किटीया । हालिहा सिंगवेरे य आतुन्जमा मृलए इय ॥ ४४ ॥ जुओ प्रज्ञा॰ पद ९ प॰ ३४-२

#### बीओ वग्गो।

१. [प्र०] अह भंते ! लोही-णीह-थीह-थिमगा-अस्सकन्नी-सिंहकन्नी-सीउंडी-मुसंढीणं पपसि णं जीवा मूल० ? [उ०] एवं पत्थ वि दस उद्देसगा जहेव आलुवग्गे । णवरं ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

#### तेवीसतिमे सए बितिओ वग्गो समत्तो।

#### द्वितीय वर्ग.

१. [प्र०] हे भगवन्! \*होही, नीट्ट, थीट्ट, थिभगा, अश्वकणी, सिंहवाणी, सीउंटी अने मृतुंटी--ए बधा वृक्षीना मृत्यणे जे जीवो उपजे छे तेओ क्यांथी आवीने उपजे छे ! [उ०] आहुवर्णनी पेठे अहि पण मृत्य्यदिक दस उद्देशको कहेता. परंतु विशेष ए के, अवगाहना ताडवर्णनी पेठे जाणवी. बाकी बधुं तेज प्रमाणे समजबुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे. हे भगवन्! ते एमज छे.'

लोही वगेरे अनन्त-काथिक वनस्पति∗

### त्रेवीशमा शतकमां द्वितीय वर्ग समाप्त.

### तइओ वग्गो।

१. [प्र॰] अह भंते ! आय-काय-कुडुण-कुंदुरुक-उन्नेहिलय-सफा-सज्जा-छत्ता-वंसाणिय-कुमाराणं पतेसि णं जे जीवा मृलत्ताप॰ ? [उ॰] एवं एत्य वि मृलादीया दस उद्देसमा निरवसेसं जहा आलुवग्गो, नवरं औगाहणा तालवग्ग-सरिसा, सेसं तं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ।

#### तेवीसतिमे सए तहओ वग्गो समचौ।

### तृतीय वर्ग.

१. [प्र०] हे भगवन् ! 'आय, काय, कुटुणा, फुंटुरुक, उध्वेहल्यि, सफा, सेजा, छण, पंशानिका अने कुमारी—ए बधा **दक्षोना आयादि उदणावर्ग**-मूळ तरीके जे जीवो उपजे छे ते जीवो क्यांथी आवीने लपजे छे ? [उ०] हे गौतम ! वधुं आहुवर्गनी पेटे कहेवुं. अने ए प्रमाणे दशे उद्देशको कहेवा. विशेष ए के, अवगाहना तालवर्गनी पेटे कहेवी. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

## त्रेवीशमा शतकमां त्रतीय वर्ग समाप्त.

### चउत्थो वग्गो।

१, [प्र॰] अह भंने ! पाढा-मियवालुंकि-मधुग्ग्सा-रायवहि-पउमा-मोढिर-दंति-चंडीणं एतेसि णं जे जीवा मूळ॰ ? [उ॰] एवं एत्थ वि मूळादीया दस उद्देसगा आलुयवग्गसरिमा, नवरं ओगाहणा जहा वहीणं, सेसं तं चेव । 'सेवं अंते ! सेवं भंते' ! सि ।

# तेवीसइमे गए चउन्थो वग्गो समत्तो ।

### चतुर्थ वर्ग.

१. [प्र०] हे भगवन् ! 'पाठा, मृगवाहंकी, मधुररसा, राजवछी, पद्मा, मोटरी, ढंती अने चंडी—ए बधाना मृळपणे जे जीवो उपजे छे ते जीवो क्यांथी आर्याने उपजे छे ! [उ०] आलुवर्गनां पेठे आंढ पण मृह्यदिक दस उदेशको कहेवा. विशेष ए के शरीरनुं प्रमाण पछीनी पेठे जाणबुं. बाकी बधुं तेज प्रमाणे कहेवुं. 'हे भगवन् ! ने एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

**ঘাতাৰ**গ্-

- \_ \_ \_

### त्रेवीशमा शतकमां चतुर्थ वर्ग समाप्त.

१ \* जुओ प्रज्ञा० पद १ प० ३४ — २

१ 'नवरं ओगाहणा ! ताळवगासरिसा' इति पाठो क-ग पुत्तके नोपळभ्यते । २ मोंडरि ग्-घ ।

९ <sup>†</sup> कृहणा अणेगविहा पन्नला, तंज्ञहा–आए, काण्, कुहणे, कुणके, दब्बढलिया, सकाण्, राज्याण्, छन्नोण्, वंसीण, हिनायुरण् । जुओ—प्रज्ञा० **पद् ९ प० ३३—**२

१ ‡ पाडा-मियवालुकी महुरस्सा चेय रायवत्ती(छी)य ।

#### पंचमो वग्गो ।

१ [प्र०] अह भंते! मासपन्नी-मुग्गपन्नी-जीवग-सिरसव-करणुय-काओलि-बीरकाकोलि-भंगि-णहि-किमिरासि-भइमुच्छ-णंगलइ-पओय-किंणा (किण्हाय) पउल-पा(ह)ढे-हरेणुया-लोहीणं पप्रसि णं जे जीवा मूल० १ [उ०] एवं पत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं आलुयवग्गसिरसा। एवं पत्थ पंचसु वि वग्गेसु पन्नासं उद्देसगा भाणियद्या। सद्यत्थ देवा ण उवयजंति, तिन्नि लेसाओ। 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! ति ।

तेवीसतिमे सए पंचमो वग्गो समत्तो ।

# तेवीसइमं सयं समत्तं।

#### पंचम वर्गः

मापपणी आदि अहित्यमे १. [प्रच] हे भगवन् ! मापपणीं, मुद्रपणी, जीवक, सरसव (?), करेणुक, काकोली, क्षीरकाकोली, भंगी, णही, कृमिराशि, भद्र-मुस्ता, लांगली, पड्य (पयोद), किण्णापउल्य, पाट (हर), हरेणुका अने छोही—ए बधा वृक्षोना मूळपण जे जीवो उपजे छे ते क्यांथी आवीने उपजे छे ? [उठ] आलुवर्गना पेठे आह पण मळादिक दश उदेशको कहेवा. ए प्रमाण आहें आ पांच वर्गोमां बधा मळीने पचास उदेशको कहेवा. बधे टेकाणे देवो उपजता नथीं, तथी दरेक ठेकाणे प्रथमनी त्रणज लक्ष्याओ होय छे. 'हं भगवन् ! ते एमज छे, हे मगवन् ! ते एमज छे.'

त्रेवीशमा शतकमां पंचम वर्ग समाप्त.

त्रेवीशमुं शतक समाप्त.



मासर्पाण्य मुग्यपण्यां जीवि.(व)य रसहे य रेणुया चेव । काओली खीरकाओली तहा भंगी नहीं इय ॥ ४७ ॥ किमिरासि महमुच्छा पंगलइ पेलुया इय । किण्ड पउले य हढे हरनणुया चेव लोयाणी ॥ ४८ ॥ कण्डे कंदे वज सूरणकंदे तहेव खळूरे । एए अणतजीवा जे याक्षे तहाविद्वा ॥ ४९ ॥ जुओ—प्रज्ञा० पद १ प० ३४-२

# चउवीसइमं सयं।

१ उववाय २ परीमाणं ३ संघयणु-४ ऋत्तमेव ५ संठाणं । ६ लेस्सा ७ दिद्वी ८ णाणे अन्नाणे ९ जोग १० उवओगे ॥ ११ सन्ना १२ कसाय १३ इंदिय १४ समुग्धाया १५ वेदणा य १६ वेदे य । १७ आउं १८ अज्झवसाणा १९ अणुवंधो २० कायसंवेहो ॥ जीवपदे जीवपदे जीवाणं दंडगंमि उद्देसो । चडवीसतिमंमि सए चडवीसं होंति उद्देसा ॥

#### पढमो उद्देसो ।

- १. [प्र॰] रायगिहे जाव-पयं वयासी-णेरइया णं भंते ! कओहितो उववर्जात, कि नेग्हपहितो उववर्जात, तिरि-क्सजोणिपहितो उववर्जान, मणुस्सोहितो उववर्जात, वेघोहितो उववर्जाति ! [उ॰] गोयमा ! णो नेरहपहितो उववर्जात, तिरिक्सजोणिपहितो उववर्जान, मणुस्सोहितो वि उववर्जान, णो देवेहितो उववर्जान ।
- २. [प्र०] जह तिरिक्खजोणिपिंहतो उचवज्जंति कि पिंगिदियतिरिक्खजोणिपिंहतो उचवज्जंति, बेइंदियतिरि०, तेइंदिय-तिरि० चडरिंदियतिरि० पंचिदियतिरिक्खजोणिपिंहतो उचवज्जंति ? [उ०] गोयमा ! नो पिंगिदियतिरिक्खजोणिपिंहतो उचव-ज्ञंति, णो बेंदिय०, णो तेइंदिय०, णो चडरिंदिय०, पंचिदियतिरिक्खजोणिपिंहतो उचवज्ञंति ।

# चोवीशमुं शतक.

[ उद्देशकसंग्रह-] १ \*उपपात, २ परिमाण, ३ संहनन-संघयण, ४ उंचाई, ५ संस्थान-आकार, ६ लेक्या, ७ दृष्टि, ८ ज्ञान-अज्ञान, ९ योग, १० उपयोग, ११ संज्ञा, १२ कषाय, १३ इन्द्रिय, १४ समुद्धात, १५ वेदना, १६ वेद, १७ आयुप, १८ अध्य-वताय, १९ अनुबंध, अने २० कायसंविध-आ बधा विषयो चोवीश दंडकोने आश्रयी प्रत्येक जीवपदे कहेवाना छे. अर्थात्-एक एक दंडके आ वीश द्वारो कहेवाना छे. ए रीने चोवीशमा शतकमां चोवीश दंडकने आश्रयी चोवीश उद्देशको कहेवामां आवशे.

### प्रथम उद्देशक.

- १. [प्र०] राजगृह नगरमां [ भगवान् गौतम ] यावत् आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन् ! नरियको क्यांथी आवीने उत्पन्न धाय छे, कुं नरियकोथी आवी उत्पन्न थाय छे, तिर्यंचयोनिकोथी, मनुष्योधी के देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरियको नैरियकोथी आवी उत्पन्न थता नथी, तेम देवोथी आवी उत्पन्न यता नथी, पण तिर्यंचयोनिकोथी अने मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! जो निर्यंचयोनिकोधी आर्वा उत्पन्न धाय तो शुं एकेन्द्रिय निर्यंचयोनिकोधी आवीने उत्पन्न धाय हे के वेइ-न्द्रिय, तेइन्द्रिय, चडिरिन्द्रिय अने पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोधी आर्वी उत्पन्न धाय हे ! [उ०] हे गातम ! एकेन्द्रिय, वेइन्द्रिय के चडिरिन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोधी आर्वी उत्पन्न धाय हे.

नैर्यकोनो उपपात-

तिर्थचोनी नैरयि-योमा उपपात-

<sup>\*</sup> ९ उपपातद्वारमां चोवीश दंडकने आश्रयी नारकादि जीवो क्यांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ! परिमाणद्वारमां जे जीवो नारकादिमां उत्पन्न थवाना छे नेओ पोतानी कायमां केटला उत्पन्न थाय छे ! संहननद्वारमां नारकादिमां उत्पन्न थवाने योग्य जीवोने क्युं संहयण होय ! उच्चत्वद्वारमा नारकादि गतिमां जनारा जीवोनी उंचाई केटली होय ! ए प्रमाणे बीजा संस्थानादि हारो जाणवा, अनुबन्ध-वियक्षित पर्यायनुं सातला, अमुक कायथी अन्य दायमां अथवा तेनी समान कायमां जई पुनः त्यां आवन्नं ते कायसंवेध, आ बधा द्वारो प्रलेक उद्देशकमां कहेवानां छे.

- ३. [प्रध] जद्द पंचिदियतिरिक्सजोणिपिंदितो उचवज्जंति कि सिन्नपंचिदियतिरिक्सजोणिपिंदितो उचवज्जंति, असिन्नपंचिदियतिरिक्सजोणिपिंदितो उचवज्जंति ? [उ०] गोयमा ! सिन्नपंचिदियतिरिक्सजोणिपिंदितो उचवज्जंति, असिन्नपंचिदियतिरिक्सजोणिपिंदितो व उचवज्जंति ।
- ४. [प्र०] जद असिप्तर्गिचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववर्जाति कि जलचरेहिंतो उववर्जाति, थलचरेहितो उववर्जाति, सहस्रदेहितो उववर्जाति ? [उ॰] गोयमा ! जलचरेहिंतो उववर्जाति, थलचरेहिंतो वि उववर्जाति, सहस्रदेहितो वि उववर्जाति ।
- ५. [प्र०] जह जलचर-थलचर-खहचरेहितो उववजंति कि पज्जनपहितो उववजंति अपजनपहितो उववजंति ? [उ०] गोयमा ! पजनपहितो उववजंति, णो अपजनपहितो उववजंति ।
- ६. [प्र॰] पज्जताश्रसन्निपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरर्पसु उववज्जित्तप से णं भंते ! कतिसु पुढ-वीस उववज्जेजा ? [उ॰] गोयमा ! एगाए रयणप्यभाप पुढवीए उववज्जेजा ।
- ७. [प्र॰] पज्जसामसिप्रिपेचिदियतिरिक्खजोणिए णं मंते ! जे मिवए रयणप्पमाए पुरवीए नेरहएसु उथविजसए से णं मंते ! केयतिकालिट्टितीएसु उववज्जेजा ? [उ॰] गोयमा ! जहकेणं दसवाससहस्सिट्टितीएसु, उक्कोसेणं पिल्कोवमस्स असं-केजहमागिट्टितीएसु उववज्जेजा १ ।
- ८. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्रांति ? [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं एको वा दोवा वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखंजा वा असंखेजा वा उयवज्रांति २।
  - ९. [प्र॰] तेसि णं मंते ! जीवाणं सरीरगा किसंबयणी पन्नता ! [उ॰] गोयमा ! छेवट्टसंघयणी पन्नता ३ ।
- १०. [प्र०] तेसि णं मंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखे-अद्भागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ४.
  - ११. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंठिता पन्नता ? [उ०] गोयमा ! हुंडसंठाणसंठिया पन्नता ५ ।

**4० ति**र्वचोनो नार-कोमां उपपातः ३. [प्र०] हे भगवन् ! जो नैरियको पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोषी आबी उत्पन्न याय छे तो द्युं संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोषी आबी उत्पन्न याय छे के असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोषी आबी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक अने असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकथी आबी उत्पन्न थाय छे.

**असंश**ी पं॰ तिर्यंचनी मारकोमां उपपात. ४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ( नारको ) असंज्ञी पंचेंदिय तिर्यंचयोनिकथी आवी उत्पन्न थाय छे तो शुं जलचरोथी, स्थलचरोथी के खेचरोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेओ जलचरोथी, स्थलचरोथी अने खेचरोथी आवीने उत्पन्न थाय छे.

वर्षाप्त असंजी पं० तिथैचनो नारकोमा उपपातः ५. [प्र०] जो तेओ जड़चरोधी, स्थड़चरोधी अने खेचरोधी आबी उत्पन्न थाय छे तो द्धं ते पर्याप्ता के अपर्याप्ता जड़चरो, स्थड़-चरों के खेचरोधी आबी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्ता जड़चरों, स्थड़चरों अने खेचरोधी आबी उत्पन्न थाय छे, पण अप-र्याप्ताथी आबी उत्पन्न थता नथी.

असंबी पं॰ तिर्यक्षी केटली नरकपृथिषी खबी उत्पन्न धाय ! ६. [प्र०] पर्याप्ता असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थंचयोनिक जीव, जे नैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटली नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते प्रथम रत्नप्रभा नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय !

केटला आयुषवाळा नारकमां भसंशी तिर्वेचो उपजे ? ७. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव, जे स्वप्रभाष्ट्रियीना नैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळना आयुषवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ? [ज०] हे गौतम ! ते जघन्य दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमा भागनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

र परमाण. ८. |प्र० गीतम! तेओ ज

८. [प्र०] हे भगवन् ! तेओ (रक्तप्रभाषृथिवीमां उत्पन्न थवाने योग्य असंज्ञी तिर्येचो ) एक समये केटला उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गीतम ! तेओ जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय.

रै संबदण.

९. [प्र०] हे भगवन् । ते असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोना शरीरो कया संघयणवाळां होय ! [उ०] हे गौतम ! छेवडू—सेवार्तसंघ-यणवाळां होय.

¥ शरीरनी अवगा-दना- १०. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवोनी केटली मोटी शरीरावगाहना—उंचाई होय ! [उ०] हे गौतम ! तेओनी शरीरावगाहना जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागनी अने उत्कृष्ट एक हजार योजननी होय छे.

५ संस्तान,

११. [प्र॰] तेओना शरीरोनुं क्युं संस्थान होय छे ! [उ॰] हे गौतम ! तेओना शरीरनुं हुंडकसंस्थान होय छे.

- १२. [ब्र॰] तेसि णं मंते ! जीवाणं कित लेस्साओ पश्चचाओ ? [उ॰] गोयमा ! तिश्वि लेस्साओ पश्चचाओ । तं जहा— कण्डलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा ६ ।
- १३. [प्र॰] ते णं भंते! जीवा कि सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, सम्मामिच्छादिद्वी ! [उ॰] गोयमा! णो सम्मदिद्वी, मिच्छा-विद्वी, णो सम्मामिच्छादिद्वी ७।
- १४. [प्र॰] ते णं भंते! जीवा किं णाणी, अन्नाणी ? [उ॰] गोयमा! णो णाणी, अन्नाणी, नियमा दुअन्नाणी, तं जहा-भर्मनाणी य सुयमनाणी य ८।
- १५. [प्रo] ते णं भंते ! जीवा कि मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ? [उo] गोयमा ! जो मणजोगी, वयजोगी वि, कायजोगी वि ९।
- १६. [प्र॰] ते णं अंते ! जीवा कि सागारोघउत्ता अणागारोघउत्ता ? [उ०] गोयमा ! सागारोघउत्ता वि अणागारो-वउत्ता वि १०।
- १७. [४०] तेसि णं मंते ! जीवाणं कित सम्राओ पन्नताओ ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि सन्ना पन्नता, तं जहा—आहा-रसन्ना, मयसन्ना, मेहुणसन्ना, परिग्गहसन्ना ११ ।
- १८. [प्र॰] तेसि णं मंते ! जीवाणं कति कसाया पश्चसा १ [उ०] गोयमा ! वसारि कसाया पश्चसा, तं जहा-कोह-कसाय, माणकसाय, मायाकसाय, लोभकसाय १२ ।
- १९. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं कित इंदिया पश्चता ? [उ०] गोयमा ! पंचिदिया पश्चता, तं जहा-सोइंदिए, विक्रितिया, जाय-कार्सिदिए १३।
- २०. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं कित समुग्धाया पश्चता ? [उ०] गोयमा ! तओ समुग्धाया पश्चा, तं जहा-वेयणासमुग्धाप, कसायसमुग्धाप, मारणंतियसमुग्धाप, १४ ।
- २१. [प्र॰] ते जं भंते! जीवा किं सायावेयमा असायावेयमा? [उ॰] मोयमा! सायावेयमा वि, असायावेयमा वि १५।
- १२. [प्र०] हे भगवन् ! तेओने ( असंज्ञी पंचेन्द्रियतिर्थंचोने ) केटली लेस्याओ कही छे ! [उ०] हे गौतम ! त्रण लेस्याओ ६ लेस्या कही छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेस्या, नीळलेस्या अने कापोतलेस्या.
- १३ [प्र॰] हे भगवन् ! द्युं ते जीवो सम्यग्दिएं छे, मिथ्यादिएं छे के सम्यग्निध्यादिएं छे १ [उ०] हे गौतम ! तेओ सम्यग्दिएं के ७ रहिः सम्यग्निथ्यादिष्टं नथी, पण मिथ्यादिष्टं छे
- १४. [प्रo] हे भगवन् ! ते जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ! [उo] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नधी, पण अज्ञानी छे अने तेओने विज्ञान अने अज्ञान होय छे, ते आ प्रमाणे—मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान.
- १५. [प्र०] हे भगवन् ! ते असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचो मनयोगवाळा, बचनयोगवाळा के काययोगवाळा छे ! [उ०] हे गौतम ! ९ बोगः तेओ मनयोगवाळा नथी पण बचनयोग अने काययोगवाळा छे.
- १६. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो साकार उपयोगवाळा छे के अनाकार उपयोगवाळा छे ! [उ॰] हे गाँतम ! तेओ साकार अने १० व्यवोगः अनाकार बने उपयोगवाळा छे.
- १७. [प्र॰] हे भगवन्! ते जीवोने केटली संज्ञाओं होय छे? [उ॰] हे गौतम! तेओने चार संज्ञाओं होय छे, ते आ १९ संज्ञा-प्रमाणे—१ आहारसंज्ञा, २ भयसंज्ञा, ३ मैथुनसंज्ञा अने ४ परिप्रहसंज्ञा.
- १८. [प्रo] हे भगवन् ! ते जीवोने केटला कषायो होय छे ! [उ o] हे गौतम ! तेओने चार कपायो होय छे, ते आ प्रमाणे—१ १२ क्यायः क्रीधकषाय, २ मानकपाय, ३ मायाकषाय अने ४ लोमकपाय.
- १९. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवोने केटली इन्द्रियो होय छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओने पांच इन्द्रियो होय छे, ते आ प्रमाणे— १३ शन्द्रियः १ अनिन्द्रिय, २ चक्षुइन्द्रिय, यावत्—५ स्पर्शेन्द्रिय.
- २०. [प्र०] हे भगवन् । ते जीवोने केटला समुद्घातो कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण समुद्घातो कह्या छे, ते आ १४ समुद्घात. प्रमाणे—१ वेदनासमुद्घात, २ क्षायसमुद्घात अने ३ मारणान्तिक समुद्घात.
- २१- [प्र०] हे मगवन् ! कुं ते जीवो साता—सुख अनुभवे छे के असाता—दुःख अनुभवे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सुख १५ वेहनाः अनुभवे छे अने दुःख पण अनुभवे छे.

२२. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा किं इत्यीवेयगा, पुरिसवेयगा, नपुंसगवेयगा ? [७०] गोयमा ! णो इत्वीवेयगा, जो पुरिसवेषमा, नपुंसमवेषमा १६।

२३. [प्र॰] तेलि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पक्षता ? [उ॰] गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुषकोडी १७।

२४. [४०] तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अञ्झवसाणा पन्नता ! [उ०] गोयमा ! असंखेळा अञ्झवसाणा पन्नता ।

२५. [प्र०] ते णं भंते ! किं पसत्था अप्पसत्था ? [उ०] गोयमा ! पसत्था वि अप्पसत्था वि १८।

२६. [प्र॰] से जं भंते ! पज्जसाअसिवर्गिचंदियतिरिक्खजोणियत्ति कालओ केवचिरं होर १ [उ०] गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उक्नोसेणं पुहकोडी १९।

२७. [प्र०] से णं मंते ! पज्जत्ताश्रसिपांचिदियतिरिक्सजोणिए रयणप्पभाए पुडधीए जेरहए, पुणरवि पज्जत्ताश्रस-चिपंचिदियतिरिक्**खजोणिएचि केवतियं कालं से**षेजा-केवतियं कालं गतिरागति करेजा ! [उ०] गोयमा ! भवादे<mark>सेणं दो</mark> मवन्गहणाई, कालादेसेणं जहन्नेणं दस वाससहस्ताई अंतोमुहुत्तमप्महियाई, उक्नोसेणं पलियोवमस्स असंखेखहमानं पुषको-डिमम्महियं, एवतियं कालं सेवेजा-एवतियं कालं गतिरागति करेजा २०।

२८. [प्र०] पज्जत्ताअसिक्षपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविष जद्दन्नकालद्वितीपसु रयणप्पभाषुद्विवेरह्यसु उचविज्ञत्तप से णं मंते ! केवइकालट्टितीपस उचवजेजा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सद्वितीपसु, उक्नोसेण वि दसवाससहस्सद्वितीएसु उचवजोजा ।

२९. [प्रः] ने णं मंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उबवज्रंति ! [उ०] एवं सचेव वसवया निरवसेसा माणियवा, जाव-अणुवंधो ति ।

२२. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीयो स्त्रीवेदवाळा, पुरुषवेदवाळा के नपुंसकवेदवाळा होय छे ? [उ०] हे गाँतम ! तेओ स्त्रीवेद-१६ वेद. बाळा के पुरुपवेदबाळा नथी, पण नपुंसकवेदबाळा छे.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! तेओनी केटल काळनी स्थिति–आयुप कही छे ! [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्महर्तनी अने उत्कर-ष्ट्रयी पूर्वकोटीनी स्थिति कही छे.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! तेओना अध्यवसायस्थानो केटलां कहाां छे ? [उ०] हे गातम ! तेओनां असंख्याता अध्यवसायस्थानो कह्यां छे.

२५. प्रिवा हे भगवन् ! ते अध्यवसायस्थानो प्रशस्त छे के अप्रशस्त छे ? उिवा हे गौतम ! ते प्रशस्त पण छे अने अप्र-शस्त पण छे.

२६. [प्र0] हे भगवन् ! ते जीव पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्यचयोनिकरूपे केटला काळ सुधी रहे ! [उ0] हे गौतम ! जघन्ययी अंतर्मुहर्त सुधी अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी सुधी रहे.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! ते पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक थाय, पछी रत्नप्रभा पृथिवीमां नैरियकपणे उपजे अने फरीबार पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थेचयोनिक थाय-एम केटलो काळ सेवे, केटलो काळ गमनागमन करे ! [उ०] हे गातम ! भवादेश-मवनी अपेक्षाए \* वे भव अने काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक इसहजार वर्ष तथा उत्कृष्टथी पूर्वकोटी अधिक पत्योपमनो असं-ह्यातमो भाग-एटलो काळ सेने, एटलो काळ गमनागमन करे (१).

२८. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव, जे रत्नप्रभा पृथियोमां जघन्य काळनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला वर्षनी स्थितिवाला नैरियकोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट पण दस हजार वर्षनी स्थितिवाळा नैर्यिकोमां उत्पन्न थाय.

२९. [प्र०] हे भगवन् । ते (असंज्ञी पंचेन्द्रियानर्थंचो) एक समये केटला उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम । पूर्व कहेली बधी वक्तज्यता यावत्-'अनुवंध' ( सृ. ७-२६ ) सधी अहिं कहेवी.

२७ \* प्रथम भवमां असंशी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक षाय अने बीजा भवमां नारक थाय, त्यांधी नीकळी ते पुनः असंशी पं॰ तिर्यंचयोनिक न बाय, पण अवदय संज्ञीपणुं प्राप्त करे, माटे भवनी अपेक्षाए वे भवनो कायसंवेध जाणवो अने काळनी अपेक्षाए जघन्य कायसंवेध असंज्ञाना जधन्य अन्तर्मुहुर्त आयुषसहित नारकनी जघन्य दश हजार वर्षनी स्थिति अने उत्कृष्ट कायसंबेध असंज्ञीना पूर्वकोटिवर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयुष सहित रक्रप्रमामां उत्कृष्ट आयुष पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण जाणबो-टीका.

१७ आयुष.

१८ अध्यवमावः

१९ अनुबंध.

२० कायसंबेधः

चनो जद्यन्य आयुप बाब्या रह्मप्रभा नीर-कमो उपपात.

२ असंही पं० तियं

परिमाणादिः

- ३०. [प्र०] से णं भंते ! पद्धत्ताथसिष्वपंचिवियतिरिक्सजोणिए जहस्रकालिहितीयरयणप्यमापुर्वविणेरहए, पुणरिव पद्धत्तश्यसिष्ठ जाव-गतिरागीतं करेजा ! [उ०] गोयमा ! मवादेसेणं दो भवग्गहणाई, कालावेसेणं जहस्रेणं वसवाससह-स्ताई भंतोमुहुत्तमन्मिहियाई, उक्कोसेणं पुषकोडी दर्सीई वाससहस्सेहि अन्मिहियाई, एवतियं कालं सेवेजा-प्यतियं कालं गतिरागितं करेजा २ ।
- ३१. [प्र०] पज्जसाअसिक्षपंचित्रियतिरिक्खजोणिए णं जे भविए उक्कोसकालिट्टितीएसु रयणप्पभाषुद्धविनेरह्णसु उवघ-जिस्तर से णं भंते ! केवतियकालिट्टिईएसु उवघज्जेजा ! [उ०] गोयमा ! जहकेणं पिल्योवमस्स असंकेजहमागिटिईएसु उवघ-जेजा, उक्कोसेण वि पिल्योवमस्स असंकेजहमागिट्टितीएसु उवघज्जेजा ।
  - ३२. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा० [उ०] अवसेसं तं चेव, जाव-अणुवंधो ।
- ३३. [म०] से णं भंते ! पज्जत्तावसित्रपंचिदियतिरिक्खजोणिए उद्घोसकालिट्टितीयरयणप्पभाषुद्रविनेरहए, पुणरिव पज्जत्ता० जाव—करेजा ! [उ०] गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणारं, कालादेसेणं जहसेणं पिलेओवमस्स असंखेज्जरमागं अंतोमुहुत्तमध्मिद्दियं, उद्घोसेणं पिलेओवमस्स असंखेज्जरमागं पुद्यकोडिअध्मिद्दियं, प्रवितयं कालं सेवेज्जा—एवर्यं कालं गिति-रागितं करेजा ३।
- ३४. [प्र०] जहन्नकालिट्टतीयपज्ञत्तागसिन्नपीचिदियतिरिक्नजोणिए णं मंते ! जे भविए रयणप्पभाषुद्विचेरहण्सु उब-बिज्ञत्तए से णं मंते ! केवतियकालिटितीएसु उववजेजा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं दसयाससहस्सद्वितीएसु, उक्नोसेणं पिल-भोषमस्स असंकेजहमागद्वितीएसु उववजेजा ।
- ३५. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा एगसमएणं केवतिआ० ? [उ०] सेसं तं चेच, णवरं हमाइं तिक्ति णाणसाई-आउं, अज्झवसाणा, अणुवंघो य । जहन्नेणं ठिती अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । २ तेसि णं मंते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पन्नसा ! गोयमा ! असंखेजा अज्झवसाणा पन्नसा । ते णं भंते ! किं पसत्था अप्पसत्था ! गोयमा ! णो पसत्था, अप्पसत्था । ३ अणुवंघो अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ।
- ३०. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचयोनिक थई जवन्यस्थितिवाळा रत्नप्रभा पृथिवीना नैरियक्षपणे उत्पन्न धाय, अने पुनः पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थेचयोनिक थाय–९म पावत् केटला काळ सुधी गति आगति करे ? [उ०] हे गातम ! भवनी अपेक्षाए वे भव अने काळनी अपेक्षाए जवन्य अन्तर्सुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष, तथा उत्क्रष्ट पूर्वकोटी अधिक दस हजार वर्ष-एटलो काळ सेवे, एटलो काळ गति आगति करे (२).
- ३१. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, ज उत्कृष्टिश्वितियाळा रत्नप्रभानेरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला वर्षनी स्थितियाळा नारकने विषे उत्पन्न थाय ? [उ॰] हे गौतम ! ते जघन्य अने उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमा भागनी स्थितियाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.
- ३२. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय —इत्यादि बाकीर्ना वधी हकीकत यावत्—अनुबंध सुधी (सू० ७—२६) पूर्वर्ना पेठे कहेवी.
- ३३. [प्र०] हे भगवन् ! ते पर्यात असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थंचयोनिक थाय, पछी उत्कृष्ट स्थितिशळा रक्षप्रभामां नैरियकपण उत्पन्न थाय, बळी पाछो पर्यात असंज्ञी पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक थाय-९म केटला काळ सुधी यावत्—गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपे- क्षाए बे भवो अने काळनी अपेक्षाए जवन्य अन्तर्मुदूर्त अधिक पत्योपमनो असंख्यातमो भाग तथा उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक पत्योपमनो असंख्यातमो भाग-एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (३).
- ३४. [प्र०] हे भगवन् ! जघन्यस्थितिवाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव, जे रत्नप्रमा पृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे ते केटला वर्षनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गैतिम ! ते जघन्य दस हजारवर्षनी स्थितिवाळा अने उत्कृष्ट पुल्योपमना असंख्यातमा भागनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

३५. [प्र०] हे भगवन्! ते जघन्यशायुपवाळा असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थंचयोनिको एक समये केटला उत्पन्न याय—इत्यादि बधी वक्त-व्यता पूर्वनी पेठे कहेवी. पण तेमां आयुष, अध्यवसाय अने अनुबंध संबंधे \*विशेषता आ प्रमाणे छे—१ आयुष जघन्य अने उत्कृष्ट अन्त-भुंहूर्तनुं छे. [प्र०] हे भगवन्! तेओने केटलां अध्यवसायो होय छे १ [उ०] हे गौतम! तेओने असंख्याता अध्यवसायो होय छे २. [प्र०] हे भगवन्! ते अध्यवसायो प्रशस्त छे के अप्रशस्त छे १ [उ०] हे गौतम! ते प्रशस्त नथी पण अप्रशस्त छे. ३ अनुवंध अन्तर्भुहूर्तनो छे. बाकी बधुं पूर्वोक्त जाणवुं.

३५ \* असंज्ञीनुं जबन्य आयुष अन्तर्मुहुर्त होय छे, तेशी तेने अध्यवसायस्थानो अप्रशस्त होय छे, आयुषनी शीर्घ स्थिति होय तो बन्ने प्रकारना प्रशस्त अने अप्रशस्त अध्यवसायनो संसव छे. असुबन्ध आहि आयुषना समान जाणवो-टीका. कायसंवेध.

३ असंशी पं॰ तियं॰ चनो उत्कृष्टस्थिति रत्नप्रभागारकमां उपपातः

परिमाणादि-

दायमंत्रेष.

बाळा असंझी तिर्ध-चनो रकप्रभाषा उपपातः

४ जधन्य न्थिति-

परिमःणादि-

- ३६. [प्रo] से णं मंते ! जहन्नकालट्टितीय पञ्जनाबसन्निपंचिदियः रयणप्यमाः जाव-करेजा ! [उ०] गोयमा ! मवावेसेणं दो भवग्गहणाई, कालादेसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साई अंतोमुहुत्तमस्महियाई, उक्कोसेणं पिष्ठधीवमस्स ससंसेख्यभागं अंतोमुहुत्तमस्महियं, एवितयं कालं सेवेखा, जाव-गतिरागितं करेखा ४।
- ३७. [प्र॰] जहन्नकालट्टितीयपज्जन्तअसन्निर्पाचिदियतिरिक्सजोणिय णं भंते ! जे भविय जहन्नकालट्टिरयसु रयणप्यमा-पुढविनेरप्रपसु उवविज्ञन्तय, से णं भंते ! केवतियकालट्टितीयसु उववज्जेजा ? [उ॰] गोयमा ! जहनेणं वसवाससहस्सिट्टि-तीयसु, उद्योसेण वि दसवाससहस्सिट्टितीयसु उववज्जेजा ३ ।
  - ३८. [प्रः] ते णं भंते ! जीवाः ? [उ०] सेसं तं चेव, तार् चेघ तिशि णाणसारं, जाव---
- ३९, [प्र०] से णं भंते ! जहन्नकालद्वितीयपज्जसः जाय-जोणिए जहन्नकालद्वितीयस्यणप्पमाः पुणरिब जाय- ! [उ०] गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाई, कालादेसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साई अंतोमुहुसमन्भिहयाई, उक्नोसेण वि दसवाससहस्साई अंतोमुहुसमन्भिहयाई, एवइयं कालं सेवेजा-जाव-करेजा ५ ।
- ४०. [४०] जहन्नकालिट्टतीयपज्जसा० जाव-तिरिक्सजोणिय ण भंते ! जे भविय उद्योसकालिट्टतीयसु रयणप्यमापुढ-विनेररपसु उवविज्ञस्य से ण भंते ! केवितयकालिटतीयसु उवविज्ञज्ञा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पिल्जोवमस्स असंस्कृक्त-इमागिट्टतीयसु उववज्जेजा, उद्योसेण वि पिल्जोवमस्स असंस्कृतागिट्टतीयसु उववज्जेजा ।
  - ४१. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा० ! [उ०] अवसेसं तं चेव । तारं चेव तिमि णाणसारं-जाव-
- ४२. [प्र०] से णं मंते ! जहस्रकालिट्टितीयपज्जत्त० जाय-तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालिट्टितीयरयण० जाव-करेजा ! [उ०] गोयमा ! मवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेजइमागं, अंतोमुहुत्तमप्मिह्यं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेजइमागं अंतोमुहुत्तमप्मिहयं, एवतियं कालं जाव-करेजा ६ ।

कायसंवेष-

३६. [प्र०] हे भगवन् ! जघन्यस्थितियाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव थाय, पछी रत्नप्रभामां नैरियकपणे उत्पन्न थाय अने पाछो जघन्यस्थितियाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्यंचयोनिक थाय-एम केटला काळसुधी सेवे, क्यां सुधी गमनागमन करे ! [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाण् बे भय सुधी अने काळनी अपेक्षाण् जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक पल्योपमनो अनंक्यातमो भाग—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (४).

५ जघन्य० असंबी पंचेन्द्रिय तिर्थचनो जघ० रह्मप्रभा नैर-यिकसो उपपान. ३७. [प्र०] हे भगवन्! जवन्य आयुपयाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव, जे जधन्य आयुपयाळा रत्नप्रमाष्ट्रियेचीना नैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला आयुपयाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ? [७०] हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट दस हजार वर्षना आयुपयाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

परिभाणादि.

३८. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जघन्य आयुपवाळा अमंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय-इत्यादि बधी वक्त-व्यता पूर्ववत् जाणवी. तथा आयुप, अध्यवसाय अने अनुबंध-ए बची विशेषताओ पण पूर्ववत् जाणवी. यावत्—

कायसंबेध-

३९. [प्र०] हे भगवन् ! ते जवन्य आयुपवाळो पर्याप्त अरांज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक थाय, त्यार पछी ते जवन्य आयुषवाळा रक्षप्रभा पृथिवीना नैरियकपण उत्पन्न थाय, बळी पुनः असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक थाय—एम केटला काळ सुची यावत्—गमनागमन करे ! [उ०] हे गौतम ! भवादेशथी बे भव सुधी अने काळादेशथी जवन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष-एटलो काळ सेवे, एटलो काळ गति आगित करे (५).

६ जय श्रमंती तियेश्वनी उत्कृष रहामभानेरविकमां उत्पत्तिः ४०. [प्र०] हे भगवन् ! जघन्यस्थितिवाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव जे उत्कृष्ट स्थितिवाळा रत्नप्रमा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य अने उत्कृष्ट पत्योपमना असंख्यातमा भागनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय !

परिमाणादि.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! ते (पर्याप्ता असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो ) एक समये केटला उत्पन्न चाय-इत्यादि बधी वक्तव्यता पूर्वनी पेठे जाणवी. आयुप, अध्यवसाय तथा अनुवंधसंबंधे त्रण विशेषता छे ते पूर्ववत् जाणवी.

कायसंबेध.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! ते जघन्यस्थितिवाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक धई उत्कृष्ट स्थितिवाळा रत्नप्रमा नैरियकोमां उत्पन्न थाय अने पाछो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक थाय-एम केटला काळ सुधी यावत्-गमनागमन करे ! [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए वे भव अने काळनी अपेक्षाए जवन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग-एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (६).

- ४३. [प्र॰] उद्योसकालद्विरयपज्रसम्मसमिपंधिदियतिरिक्सजोगिए जं मंते ! जे मविए रयणप्पमापुढविनेरर्एसु अवस्त्रिसप से जं मंते ! केवतियकाल॰ जाव--उववजेजा ? [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं वसवाससहस्सटिर्पसु, उद्योसेणं पश्चिमोयमस्स असंबेजार॰ जाव--उववजेजा ।
- ४४. [त्र॰] ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं॰ ! [ज॰] सवसेसं जहेव मोहियगमएणं तहेव मणुगंतवं । नवरं हमाहं श्लोखि नाणकारं-ठिती जहचेणं पुचकोडी, उक्रोसेण वि पुचकोडी, एवं मणुवंघो वि, सवसेसं तं चेव ।
- ४५. [प्र०] से णं मंते ! उद्योसकालिश्वितीयपञ्चसम्बद्धिः जाय-तिरिक्सजोणिए रयणप्यमाः जाय-! [उ०] गोयमा ! मवादेसेणं वो अवग्गहणारं, कालादेसेणं जहकेणं पुषकोडी वसिंहं वाससहस्सेहिं अम्मिहया, उद्योसेणं पिल्जोषमस्स असंखे-क्रामागं पुषकोडीए अम्मिहियं, पवितयं जाय-करेखा ७।
- ४६. [प्र॰] उक्कोसकालद्वितीयपञ्जत्त॰ तिरिक्कजोणिए णं मंते ! जे मविए जहस्रकालद्वितीपसु रयण॰ जाय-उथय-जित्तप से णं मंते ! केवति॰ जाय-उथवञ्जेजा ! [उ॰] गोयमा ! जहस्रेण दसवाससहस्सद्वितीपसु, उक्कोसेण वि दसवास-सहस्सद्वितीपसु उथवञ्जेजा ।
  - ४७. [प०] ते णं मंते ! ०१ [उ०] सेसं तं चेव, जहा सत्तमगमए । जाव-
- ४८. [प्र०] से णं भंते! उक्कोसकालद्वितीय-जाय-तिरिक्कजोणिय जद्दक्षकालद्वितीयरयणप्रभा० जाव-करेखा? [उ०] गोयमा! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहकेणं पुष्ठकोडी वसर्हि वाससहस्सेहिं अन्महिया, उक्कोसेण वि पुष्ठकोडी वसवाससहस्सेहिं अन्महिया, एवतियं जाव-करेखा ८।
- ४९. [प्र०] उक्कोसकालहितीयपज्जत्त जाब-तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालहितीपसु रयण० जाब-उवविज्ञत्तर से णं भंते ! केवतियकाल० जाब-उववज्जेजा ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं पिलेओवमस्स असंखेजहभागहितीपसु, उक्कोसेण वि पिलेओवमस्स असंखेजहभागहितीपसु उववज्जेजा ।
- ४३. [प्र०] हे भगवन् ! उत्कृष्ट आयुषवाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव, जे स्वप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला वर्षनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न धाय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी दस हजारवर्षनी अने उत्कृष्टथी पत्योप-मना असंख्यातमा भागनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

७ च**ल्हरू० असंबी** तिर्येचनी र**ब**प्रभा नारकमां **उत्पत्ति**-

४४. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय—इत्सादि वयी वक्तव्यता सामान्य पाटमां कह्या प्रमाणे जाणती. परन्तु स्थिति अने अनुबंध ए वे बावत विशेषता छे. स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वर्षनी छे अने अनुबंध पण ए प्रमाणे ज जाणवो. बाकी बधुं पूर्ववत् जाणबुं.

परिमाणादिः

४५. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्कृष्टिस्यितिवाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक यई रत्नप्रभामां नैरियक्षपणे उपजे अने पुनः उत्कृष्ट स्थितिवाळो असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक थाय−एम केटला काळ सुधी यावत्—गमनागमन करे ! [उ०] हे गौतम ! भवनी अपे-क्षाए वे भवधुधी अने काळनी अपेक्षाए जघन्य दश हजारवर्ष अधिक पूर्वकोटी, अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक पत्योपमनो असंख्यातमो भाग-एटला काळ सुधी यावत्—गमनागमन करे (७).

कायमंत्रेष.

४६. [प्र॰] हे भगवन् ! उत्कृष्ट स्थितिवाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव जे जघन्यस्थितिवाळा रत्नप्रभानैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटळा काळनी स्थितियाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ? [उ॰] हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कृष्टथी दस हजारव-र्षनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

८ उत्कृष्ट॰ असंबी तिथेचनी अधन्य॰ रक्षप्रभानारयमां उत्पत्तिः

४७. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय ! [उ॰] बाकी बधुं यावत्—अनुबंध सुधी सातमा गमकमां कह्या प्रमाणे जाणबुं.

परिमाणादि-

४८. [प्र०] हे भगवन् । ते उत्कृष्ट स्थितिवाळो पर्याप्त असंडी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक यई जघन्य स्थितिवाळा रह्मप्रभानैरियकोमां उत्पन्न पाय अने पुनः उत्कृष्टस्थितिवाळो पर्याप्त असंडी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक याय—एम केटलो काळ यावत्—गमनागमन करे ? [उ०] गौतम ! भवनी अपेक्षाए बे भव सुधी अने काळनी अपेक्षाए जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक दस हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (८).

वायसंवेष.

४९. [प्र॰] हे भगवन् ! उत्कृष्ट स्थितिवाळो पर्याप्त भसंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, जे उत्कृष्ट स्थितिवाळा रत्नप्रभा नैरियकोमां उपजवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा रत्नप्रभानारकने थिषे उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गीतम ! ते जवन्यथी अने उत्कृष्टयी पल्योपमना असंख्यातमा भागनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

९ उस्कृष्ट० अमंत्री पं॰ तिथंचनी उस्कृ-ष्ट॰ रक्षप्रभानारकर्मा उत्पत्तिः ५०, [प्र०] ते णं मंते ! जीवा एगसमएणं० ! [उ०] सेसं जहा सत्तमगमए । जाब-

५१. [य०] से णं अंते ! उक्कोसकालद्वितीयपज्यसः जाव-तिरिक्सजोणिए उक्कोसकालद्वितीयरयणप्यमाः जाव-करेजा ? [उ०] गोयमा ! अवादेसेणं दो अवग्गहणाई, कालादेसेणं जहन्नेणं पिल्योवमस्त असंबेज्जहमागं पुत्रकोडीए अन्महियं, उक्कोसेण वि पिल्योवमस्त असंबेज्जहमागं पुत्रकोडीए अन्महियं, पर्यतियं कालं सेवेजा, जाव-गतिरागितं करेजा १ । एवं एते ओहिया तिजि गमगा ३, जहन्नकालद्वितीएसु तिजि गमगा ६, उक्कोसकालद्वितीएसु तिजि गमगा ९, सबे ते जब गमा भयंति ।

५२. [प्र॰] जर सिप्तपंचिदियतिरिक्खजोणियम् तो उचवर्जति कि संखेजवासाउयसिपपंचिदियतिरिक्बजोणियम् तो उचवर्जति, असंखेजवासाउयसिप्तपंचिदियतिरिक्ज॰ जाव-उचवर्जति १ [७०] गोयमा संखेजवासाउयसिप्तपंचिदियतिरिक्क॰ जाव-उचवर्जति १ [७०] गोयमा संखेजवासाउयसिप्तपंचिदियतिरिक्किणेयां संखेजवासाउयसिप्तपंचिदियतिरिक्किणेयां स्थानिक्षणेयां स्थानिक्ष

५३. [प्र०] जह संखेजवासाउयसमिपांचिदिय० जाव-उववज्रति कि जलबरेहितो उववज्रति-पुच्छा [उ०] गोयमा रे जलबरेहितो उववज्रति, जहा असम्री, जाव-पज्रक्तपहितो उववज्रति, जो अपज्रक्तपहितो उववज्रति ।

५४. [म॰] पजनसंखेजवासाउयसिक्षपंचिदियतिरिक्सजोणिए णं मंते ! जे भविए जेरहपद्ध उवविज्ञित्तर से जं मंते ! कितिस पुटवीस उववजेजा ! [उ॰] गोयमा ! सन्तसु पुटवीस उववजेजा , तंजहा-रयणप्पभाए, जाव-सहेसन्तमारे ।

५५. [म॰] पज्जससंखेजवासाउयसिक्यांचिदियतिरिक्खजोणिए णं मंते! जे भविए रयणप्यमपुढिविनेरइपसु उच्चिक् जित्तप से णं मंते! केवितयकालिद्वितीपसु उचवजेजा १ [७०] गोयमा! जहकेणं वसवाससहस्सिद्वितीपसु, उक्कोलेणं साग-रोवमद्वितीपसु उवयजेजा।

५६. [प्रव] ते णं भंते ! जीवा पगसमएणं केवतिया उववज्रांति ? [उ०] जहेव वसन्नी ।

परिमाणादि.

५०. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय—इत्यादि सातमा गमकमां (सू० ४३) कह्या प्रमाणे जाणवुं-

कावसंवेष.

५१. [प्र०] हे भगवन् । ते उत्कृष्ट स्थितिवाळो पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक यई उत्कृष्टस्थितिवाळा रह्मप्रमा नैरियकोमां यावत्—उत्पन्न याय अने पाछो असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक थाय—ए प्रमाणे केटला काळ सुधी यावत्—गमनागमन करे ! [उ०] हे गौतम । भवनी अपेक्षाए वे भव अने काळनी अपेक्षाए जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग—एटलो काळ सेवे, यावत्—गतिआगति करे (९). ए प्रमाणे औधिक—सामान्य त्रण गम, जघन्यकाळनी स्थितियाळा संबंधे त्रण गम अने उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा संबंधे त्रण गम—ए बधा मळीने नव गमो थाय छे.

संबी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी नारकमा उपपातः ५२. [प्र०] हे भगवन् । जो [ नैरियवो ] संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोधी आवी उत्पन्न थाय तो हुं संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोगिकथी आवी उत्पन्न थाय के असंख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोगिकथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते संख्यात वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोगिकथी आवी उत्पन्न वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोगिकथी आवी उत्पन्न न थाय.

संख्याता॰ सं॰ प॰ तिर्येचोनो नारकमां उपपातः ५३. [प्र०] हे भगवन् ! जो [ नैरियको ] संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकथी आदी उत्पन्न याय तो जलचरोषी, स्थलचरोषी के खेचरोथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते जलचरोषी आवी उत्पन्न थाय—इत्सादि बधुं असंज्ञीनी पेठे जाणवुं. यावत्—पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याताथी आवी न उत्पन्न थाय.

पर्यात संस्थाता व संव पंच तिवेचनो नारकमा उपपातः ५४. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको जे नैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटली नरक पृथिवीओमां उत्पन्न थाय ! [उ०] ते साते नरक पृथिवीओमां उत्पन्न थाय . ते आ प्रमाणे—स्वप्रभा, यावत्—अध: सप्तम पृथिवी.

संख्याता॰ सं॰ पं॰ तिर्यचोनो रहमभा-नारकमां उपपातः ५५. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीवो, जे रह्मप्रभा पृथिवीना नैरिय-कोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते केटला वर्षनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्षनी स्थितिवाळा थने उत्कृष्ट सागरोपमनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

परिमाण.

५६. [प्र॰] हे भगवन् ! ते [संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीवो ] एक समये केटला उपजे-इत्यादि बधुं असंज्ञीनी पेठे जाणवुं.

- ५७. [व॰] तेसि णं अंते ! जीवाणं सरीरगा फिलंघयणी पश्चता ? [व॰] गोयमा ! छविहसंघयणी पश्चता, तं जहा— बहरोसमनारायसंघयणी, उसमनारायसंघयणी, जाव-छेबहुसंघयणी । सरीरोगाहणा जहेव असन्नीणं जहनेणं अंगुलस्स असंकेजहमाणं उद्योसेणं जोयणसहस्सं ।
- ५८. [प्र०] तेसि णं मंते ! जीवाणं सरीरगा किसंडिया पन्नता १ [उ०] गोयमा ! छविहसंडिया पन्नता, तंजहा— सम्बद्धरंसा, निग्गोहा, जाव⊣दुंडा ।
- ५९. [ब॰] तेसि वं मंते ! जीवाणं कित लेस्साओ पन्नसाओ ! [ड॰] गोयमा ! छह्नेसाओ पन्नसाओ । तंजहा—कण्ह-लेस्सा, जाव—सुक्रलेस्सा । दिट्टी तिविद्दा वि । तिश्चि नाणा तिश्चि अन्नाणा भयणाए । जोगो तिविद्दो वि । सेसं जहा असन्नीणं जाव—अणुवंधो । नवरं पंच समुग्धाया आविह्नगा । वेदो तिविद्दो वि, अवसेसं तं चेव । जाव—
- ६०. [प्र०] से णं मंते ! पज्जचसंबेजवासाउय० जाव-तिरिक्सजोणिए रयणप्यमा० जाव-करेजा ! [उ०] गोयमा ! मवादेसेणं जहकेणं दो भवग्गहणाई, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणाई । काळादेसेणं जहकेणं दसवाससहस्साई अंतोमुद्द- क्रमण्यदियाई, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाई चर्डाई पुषकोडीहि अन्महियाई, प्रवितयं काळ सेवेजा, जाव-करेजा १ ।
- ६१. [प्र०] पज्रत्तसंखेज जाव-जे मविष जहन्नकाल जाव-से णं मंते ! केवतियकालट्टितीपसु उववजेजा ! [उ०] गोयमा ! जहनेणं वसवाससहस्सटितीपसु, उद्योसेण वि वसवाससहस्सट्टितीपसु जाव-उववजेजा ।
- ६२. [प्र॰] ते णं मंते जीवा॰ ? [उ॰] एवं सो खेव पढमो गममो निरवसेसो भाणियद्वो, जाव-कालादेसेणं जहन्नेणं द्सवाससहस्सादं अंतोमुहुत्तमन्महियादं, उक्कोसेणं चत्तारि पुषकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सोहं अन्महियामो, एवतियं कालं सेवेज्ञा, एवतियं कालं गितरागीतं करेज्ञा २ ।
- ६३. सो चेत्र उक्कोसकालद्वितीपसु उववक्को जहन्नेणं सागरोवमद्वितीपसु, उक्कोसेण वि सागरोवमद्वितीपसु उववज्रेजा । अवसेसो परिमाणादीको भवावेसपज्जवसाणो सो चेत्र पढमगमो णेयक्वो जाव—कालादेसेणं जहन्नेणं सागरो-

५७. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवोनां शरीरो केटलों संध्यणवाळां होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओना शरीरो छए संध्यण-वाळां होय छे, ते आ प्रमाणे—१ वज्रऋषभनाराच संघयणवाळां, २ ऋषभनाराच संघयणवाळा, यावत्—६ छेवट्ट संघयणवाळां. शरीरनी उंचाइ असंद्रीनी पेठे जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट एक हजार योजन होय छे.

संघवण.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! तेओनां शरीरो कया संस्थानवाळां होय छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओनां शरीरो छए संस्थानवाळां होय छे, ते सा प्रमाणे—१ समचतुरात्रसंस्थानवाळां, २ न्यप्रोधपरिमंडलसंस्थानवाळां अने यावत्—६ हुंडकसंस्थानवाळां.

संस्थान-

५९. [प्रo] हे भगवन्! ते संज्ञी पचेन्द्रिय तिर्येचोने केटली लेक्याओ होय छे ! [उo] हे गौतम! तेओने छए लेक्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे —१ कृष्णलेक्या, यावत्—शुक्रलेक्या. तेओने दृष्टि त्रणे होय छे, तथा त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए—विकल्पे होय छे. योग त्रणे होय छे. वाकी बधुं असंज्ञीनी पेटे यावत्—अनुत्रंथ सुधी जाणवुं. पण विशेष ए छे के तेओने प्रथमना पांच समुद्धातो होय छे. वेद त्रणे होय छे. वाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं. यावत्—

हेस्या. इष्टि श्वान

अने अज्ञानः

कायसंवेध.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! ते पर्यात संख्याता वर्षना आयुषवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच थई रह्मप्रभामां नैरियकपणे उत्पन्न याय, पुनः संख्याता वर्षना आयुपवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच थाय—एम केटला काळ सुघी यावत्—गमनागमन करे ! [उ०] हे गौनम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी वे भव अने उत्कृष्टयी आठ मव सुची, तथा काळनी अपेक्षाए जघन्यथी अन्तर्मृहर्त अधिक दस हजार वर्ष

<del>रह्म</del> ।

६१. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळो संझी पंचेन्द्रिय तिर्येचयोनिक जीव, जे जघन्य आयुषवाळा स्वप्रमाना नैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला वर्षनी स्थितिबाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाप ? [उ॰] हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कृष्टथी पण दस हजार वर्षनी स्थितिबाळा नैरियकोमां यावत्—उत्पन्न थाय.

अने उत्कृष्टयी चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरोपम-एटलो काळ सेवे, यावत्-गमनागमन करे (१).

संख्याता॰ संबी पं॰ तिर्यचनी जव॰ रमप्रभानारकमां उत्पत्तिः

६२. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय-इत्यादि प्रश्न. [ड०] पूर्वोक्त (सू० ५६-५८) प्रथम गमक सम्पूर्ण कहेवो, यावत्—कालादेश वडे जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्टथी चालीश हजार वर्ष अधिक चार पूर्वको-टी-एटलो काळ सेवे, यावत्—गमनागन करे (२).

परिमाण-

६३. ते (संख्याता वर्षना—आयुपवाळो संझी पंचेन्द्रिय तिर्येच) उत्कृष्ट स्थितिवाळा रत्नप्रमानैरियकोमां उत्पन्न थाय तो जक्ष्म्य सागरोपमस्थितिबाळा अने उत्कृष्ट पण सागरोपम स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय. बाकी परिमाणथी मांडी भवादेश सुचीनो बमं मंतोमुद्दुत्तमम्महियं, उक्रोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चडाई पुत्रकोडीहिं मम्महियाई, एवतियं काळं खेचेखा, जाच-करेखा ३।

- ६४. [प०] जद्दमकालद्वितीयपज्जत्तसंखेजयासाउयसमिपंचिवियतिरिक्यजोणिए पं भंते ! से मिषए रयणप्यमपुदिष् जाय-उवयज्जित्तए से णं भंते ! केवितकालद्वितीएसु उवयज्जेजा ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं वसवाससहस्सद्वितीएसु, उद्यो-सेणं सागरोवमद्वितीएसु उयवजेजा ।
- ६५. [प्र०] ते णं मंते! जीवा० ? [उ०] अवसेसो सो चेव गमओ। नवरं इमाइं अट्ट णाणसाइं-१ सरीरोगाइणा जहसेणं अंगुलस्स असंखेजहमागं, उक्कोसेणं धणुहपुरुषं, २ लेस्साओ तिश्वि आदिल्लाओ, ३ णो सम्मदिट्ठी, मिष्णादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी, ४ णो णाणी, दो अन्नाणा णियमं, ५ समुखाया आदिल्ला तिनि, ६ आउं, ७ अन्यससाणा, ८ अणुवंषो य जहेय असन्नीणं। अवसेसं जहा पढमगमए जाव-कालावेसेणं जहन्नेणं इसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमन्मिह्याइं, उक्कोसेणं वसारि सागरोवमाइं चडिं अंतोमुहुत्तीहं अन्मिहयाइं, एवतियं कालं-जाव करेजा ४।
- ६६. सो चेव जहजकालद्वितीपसु उबवन्नो जहनेणं वसवाससहस्सद्वितीपसु, उक्कोसेण वि वसवाससहस्स-द्वितीपसु उववज्रेजा। ते णं अंते lo एवं सो चेव चउत्थो गमनो निरवसेसो भाणियद्वो, जाव-कालादेसेणं जहनेणं वसवाससहस्साइं अंतोमुद्दुचमञ्भिद्दयाइं, उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउिं अंतोमुद्दुचीईं अध्महियाइं, प्रवितयं जाव-करेजा ५।
- ६७. सो चेव उक्कोसकालट्टितीपसु उषवक्षो जहन्नेणं सागरोवमट्टितीपसु उचवज्रेजा, उक्कोसेण वि सागरो-वमट्टितीपसु उचवज्रेजा । ते णं भंते० ! एवं सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो माणियद्वो, जाव-कार्टादेसेणं जह्नेणं सागरोवमं शंतोमुदुत्तमन्भद्दियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमादं चउद्दि संतोमुदुत्तेर्द्धि सम्मद्दियाद्दं, पवतियं जाव-करेजा ६ ।
- ६८. [प्र०] उक्कोसकालट्टितीयपज्रत्तसंकेजवासाउय० जाय-तिरिक्कजोणिए णं मंते ! जे भविए रयणप्यमापुढिवने-रहपसु उवविज्ञत्तर से णं मंते ! केवितकालट्टितीएसु उववज्जेजा ! [७०] गोयमा ! जहकेणं दसवाससहस्सिट्टितीएसु, उक्को-सेणं सागरोवमट्टितीएसु उववज्जेजा ।

पूर्वोक्त प्रथम गमक श्राहें जाणवो. यावत्—काळनी अपेक्षाए जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अधिक सागरोपम अने उत्कृष्टपी चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरोपम—एटडो काळ सेवे, यावत्—गमनागमन करे (३).

जव॰ संबी प॰ तिर्यचनी रक्षप्रमा-नारकमां उत्पत्तिः ६४. [प्र०] हे भगवन् ! जघन्य स्थितिवाळो पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचयोनिक जीव, जे रत्नप्रभा पृथिवीमां नैरियकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटळा वर्षना आयुषवाळा नैरियकोमां उत्पन्न चाय ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्यधी दस हजार वर्ष अने उन्कृष्टथी सागरोपमनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न चाय.

परिभाग.

६५. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय-इत्यादि वधी वक्तज्यता माटे प्रथम गमक कहेवो. पण आ आठ बावत संबंधे विशेषता छे—१ तेओना शरीरनी उंचाई जघन्यथी अंगुठनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टयी धनुषपृथक्त—वेधी नव धनुष सुचीनी जाणवी. २ तेओने प्रथमनी त्रण लेश्याओ होय छे, ३ तेओ सम्यग्दिष्ट के मिश्रदृष्टि नथी, पण मिथ्यादृष्टि होय छे. ७ तेओ ज्ञानी नथी पण वे अज्ञानवाळा होय छे. ५ तेओने प्रथमना त्रण समुद्धातो होय छे. ६ आयुष. ७ अन्यवसाय अने ८ अनुबंध असंज्ञीनी पेटे जाणवा. बाकी बधुं प्रथम गमकनी पेटे जाणहुं, यावत्—काळनी अपेक्षाए अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक वार सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (४).

जब॰ संबी पं॰ तिर्ये-चनी जघ॰ रक्षप्रभा-नारकमां उत्पत्ति. परिमाण- ६६. ते (जघन्य स्थितिवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच) जघन्य काळनी स्थितिवाळा रक्षप्रभा नैरियकमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्कृष्ट दस हजार वर्षनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय. हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केळला उत्पन्न थाय—इत्यादि संबंधे संपूर्ण चोथो गम कहेवो. यावत्—काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चालीश हजार वर्ष—एटलो काळ सेवे, यावत्—गमनागमन करे (५).

जध॰ संशी दं॰ तिथेचनी उत्कृष्ट॰ रक्तप्रभा नार-कमां उत्पत्ति. ६७. ते (जघन्य आयुषवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येच ) उत्कृष्ट स्थितिबाळा रत्नप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्कृष्ट सागरोपम स्थितिवाळा निरियकोमां उत्पन्न थाय. हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटळा उपजे—हत्यादि चोधो गम सम्पूर्ण कहेवो. यावत्—काळनो अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक सागरोपम अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार सागरोपम—एटळो काळ यावत्—गमनागमन करे (६).

उत्कृष्ट॰ संत्री पं॰ तियंचनी उत्कृष्ट० रतप्रभानारकर्मा उत्पत्ति. ६८. [प्र०] हे भगवन् । उत्कृष्ट स्थितिवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक जीव, जे रहाप्रमा पृथिवीमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला वर्षनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गैतिम । ते जधन्यथी दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्टधी एक सागरोपमनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

- १९. ते जं मंते ! जीवा० मवसेसो परिमाणादीमो भवापसपज्यवसाणो पर्यासं चेव पढमगममो जेयहो, नवरं डिती जहकेलं पुषकोडी, उक्कोसेण वि पुषकोडी। एवं अणुवंघो वि, सेसं तं चेव। कालादेसेणं जहकेलं पुषकोडी इसिंह वाससहस्योही अम्महिया, उक्कोसेणं चरारि सागरोवमारं चर्डाहें पुषकोडीहिं अम्महियारं, एवतियं कालं जाव-करेजा ७।
- ७०. सो चेव जहचकारुद्वितीपसु उववद्यो जहमेणं व्सवाससहस्सद्वितीपसु, उद्योसेण वि व्सवाससहस्सद्वि-तीपसु उववक्षेत्रा।
- ७१. ते णं मंते ! जीवा॰ सो चेव सत्तमो गममो निरवसेसो. माणियहो, जाव-'भवादेसो'ति । काळादेसेणं जहचेणं पुषकोडी दसिंह वाससहस्सेहिं अन्महिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुतकोडीओ चत्ताळीलाए वाससहस्सेहिं अन्महिमाओ, एवतियं जाव-करेजा ८।
- ७२. [प्र०] उद्योसकालद्वितीयपञ्चच० जाव-तिरिक्सजोणिए णं मंते ! जे भविए उद्योसकालद्वितीय० जाव-उवव-जिन्तए से णं भंते ! केवतिकालद्वितीपसु उववज्रेजा ? [उ०] गोयमा ! जह्रकेणं सागरोवमद्वितीपसु, उद्योसेण वि सागरो-वमद्वितीपसु उववज्रेजा ।
- ७३. ते णं अंते ! जीवा० सो खेव सत्तमगप्रक्षो निरवसेसो आणियद्यो, जाव—'भवादेसो'सि । कालादेसेणं जद्दशेणं सागरोवमं पुत्रकोडीए अन्महियं, उद्घोसेणं बत्तारि सागरोवमाई चउहिं पुत्रकोडीहिं अन्महियाई, एवइयं जाव—करेजा ९ । एवं एते णव गमका उक्सेवनिक्सेवओ नवसु वि जहेव अससीणं ।
- ७४. [प्र॰] पञ्चस्तंकेञ्जवासाउयसिंपांचिदियतिरिक्कजोणिए णं मंते ! जे मविए सक्ररण्यमाए पुढवीए णेराएसु उवविज्ञसप से णं मंते ! केवाकालद्वितीएसु उवविज्ञा ? [७०] गोयमा ! जहकेणं सागरोवमद्वितीपसु, उक्रोसेणं तिसागरोवमद्वितीपसु उवविज्ञा ।
- ७५. [प्र॰] ते णं मंते ! जीवा एगसमएणं० [उ०] एवं जहेब रयणण्यभाए उववज्रंतेगस्स लग्नी सबेव निरवसेसा भाणियद्वा जाव-'मवादेसो'सि । कालादेसेणं जहन्नेणं सागरोवमं अंतोमुदुसमम्भद्दियं, उक्रोसेणं वारस सागरोवमाद्दं
- ६९. [प्र०] हे भगवन्! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय इत्यादि—परिमाणयी मांडी भयादेश सुधीनी वक्तव्यता कहेबा माटे एओनो (संझी पंचेन्द्रियोनो ) प्रथम गम कहेबो. परन्तु विशेष ए के स्थिति जधन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वर्षनी छे. ए प्रमाणे अनुबंध पण जाणबो. बाकी बधुं पूर्ववत् समजवुं. तथा काळनी अपेक्षाए जघन्यथी दस हजार वर्ष अधिक पूर्वकोटी वर्ष अने उत्कृष्टपी चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरोपम—पटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (७).
- ७०. जो ते ( उत्कृष्ट० संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच ) जघन्य स्थितिवाळा रत्नप्रभा पृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न याय तो ते जघन्य अने उत्कृष्ट दस हजार वर्षनी स्थितिवाळा नैरियकमां उत्पन्न थाय.
- ७१. हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय—इत्यादि यावत्—भवादेश सुची सातमो गम कहेतो. काळनी अपेक्षाए जघन्यथी दस हजार अधिक पूर्वकोटी वर्ष अने उत्कृष्टथी चालीश हजार अधिक चार पूर्वकोटी वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (८).
- ७२. [प्र०] हे मगवन् ! उत्कृष्ट स्थितिवाळो पर्याप्त यावत्—ितर्यचयोनिक, जे उत्कृष्ट स्थितिवाळा रत्नप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! जधन्यथी अने उत्कृष्ट्यी एक सागरोपमनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.
- ७३. हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न याय—इत्यादि यावत्—भवादेश सुधी पूर्वे कहेल सातमो गम संपूर्ण कहेबो. यावत्—काळनी अपेक्षाए जघन्यथी पूर्वकोटी अधिक सागरोपम अने उत्कृष्टथी चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरोपम—एटल काळ सुधी यावत्—गमनागमन करे, (९). ए प्रमाणे ए नव गमो जाणवा. अने नवे गमोमां प्रारंभ अने उपसंहार असंज्ञीनी पेटे कहेवो.
- ७४. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुपवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्वेचयोनिक जीव, जे शर्कराप्रमा पृथिवीमां नैर-यिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते केटला वर्षनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ? [उ॰] हे गौतम ! ते जघन्यथी एक सागरोप-मनी स्थितिवाळा अने उत्कृष्ट्यी त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

७५, [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय ? [उ०] रत्नप्रभा नरकमां उत्पन्न थनार पर्याप्ता संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकनी समप्र वक्तव्यता आहें भवादेश सुची कहेवी. तथा काळनी अपेक्षाए अन्तर्मुहूर्त अधिक सागरोपम अने उत्कृष्टथी चार

तस्त्रष्ट॰ संबी पं॰ तिर्यंचनी जमन्य॰ रक्षप्रभानारकर्मा उत्पत्तिः परिमाणः

उत्कृष्ट० संबी पं० तिर्यचनी उत्कृष्ट० रज्ञप्रभानारकमां उत्वित्तः

परिमाणाचि.

संती पं॰ तिर्यंचनी कर्कराममामा उत्पत्तिः

परिमाणादिः

चर्डा पुत्रकोडीहि अम्मिहराहं, प्रवितयं जाव-करेजा १। यवं रयणप्यमपुद्धिगमसरिसा णव वि गमगा माणियद्या। नवरं सद्यगमपसु वि नेरहयद्वितीसंबेहेसु सागरोधमा माणियद्या, प्रवं जाव-'छेट्टपुद्धि'ति । णवरं नेरहयद्वि जा जत्य पुद्धिप्र अहसुक्रोसिया सा तेणं चेव कमेण चरुगुणा कायद्या। वालुक्यमाप पुद्धिप महावीसं सागरोवमाहं चरुगुणिया मवंति, पंकप्यमाप चत्रालीसं, धूमप्यमाप अट्टसिट्टं, तमाप मद्दासीहं। संघयणाहं-वालुक्यप्यमाप पंचिवहसंघयणी, तं जहा-वयरो-सहनारायसंघयणी, जाव-बिल्डियासंघयणी, पंकप्यमाप चरित्रहसंघयणी, धूमप्यमाप तिविद्दसंघयणी, तमाप दुविद्द-संघयणी, तं जहा-वयरोसमनारायसंघयणी य १ उसमनारायणसंघयणी य २, सेसं तं चेव।

७६. [प्र॰] पञ्जससंक्षेज्रवासाययः जाय-तिरिक्सजोणियः णं भंते ! जे भवियः अहेसस्तमायः पुढवीयः नेरापसुः उथय-जिस्तयः से णं भंते ! केवतिकालहितीयसु उववज्रेजा ! [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं वावीसंसागरोवमहितीयसुः, उक्नोसेणं तेसीसंसागरोवमहितीयसुः उववज्रेजा ।

७७. [प्र०] ते णं मंते! जीवा० [उ०] एवं जहेब रयणप्यमाए णव गमका लखी वि सचेव। णवरं वयरोसमणा-रायसंघयणी। इत्थिवंयमा न उववर्जाते, सेसं तं चेव, जाव-'अणुवंधो'सि,। संवेहो मवावेक्षेणं जहकेणं तिश्वि मवग्गह-णाइं, उक्कोसेणं सत्त मवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहकेणं वावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अन्महियाइं, उक्कोसेणं छावाईं सागरोवमाइं चर्जाहं पुक्षकोडीहिं अन्महियाइं, एवतियं जाव-करेजा १।

७८. सो चेष जहन्नकालट्टितीपसु उषयन्नो० सम्बेष वत्तव्रया जाय-'मवादेसो'ति । कालादेसेणं जहन्नेणं० कालादेसो वि तहेष, जाय-चउहि पुषकोडीहि अप्महियाई, एवतियं जाय-करेजा २ ।

७९. [४०] सो चेष उक्कोसकालद्वितीपसु उचवन्नो० सचेव लखी जाव-'अणुवंधो'ति । भवादेसेणं जहनेणं तिन्नि

पूर्वकोटी अधिक बार सागरोपम-एटलो काळ यावत्-गमनागमन करे १. ए प्रमाणे रत्नप्रमा पृथिवीना गमकनी समान नवे गमक जाणवा. पण विशेष ए छे के बधा गमकोमां नैरियकनी स्थिति अने संवेधने विषे "सागरोपमो' कहेवा. अने एम यावत्-छट्टी नरक पृथिवी सुधी जाणवुं. परन्तु जे नरक पृथिवीमां जवन्य अने उत्कृष्ट स्थिति जेटला काळनी होय ते स्थितिने तेज क्रमणी चारगुणी करवी. जेमके बालुकाप्रभा नरकपृथिवीमां सात सागरोपमनी स्थितिने चारगणी करता अठ्यावीश सागरोपम याय. ते प्रमाणे पंकप्रभामां चालीश सागरोपम, धूमप्रभामां अडसट, अने तम:प्रभामां अठ्याशी सागरोपम थाय छे. हवे संघयणने आश्रयी वालुकाप्रभामां वश्रक्रष-मनाराच, यावत्-कीलिका ए पांच संघयणवाळा, पंकप्रभामां प्रथमना चार संघयणवाळा, धूमप्रभामां प्रथमना त्रण संघयणवाळा अने तम:प्रभामां प्रथमना वे संघयणवाळा नारको उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं.

संख्याता॰ सं॰ पं• तिर्धेचनो सप्तम नरकमां उपपातः ७६. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, जे सप्तम नरक पृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला वर्षनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गौतम ! जघन्य बावीश सागरोपमनी अने उत्कृष्ट तेश्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

७७. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय—इत्यादि रत्नप्रभाना नव गमकोनी अने बीजी बधी वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के त्यां वज्रऋपभनाराच संघयणवाळा (पंचेन्द्रिय तिर्येच) उपजे हे, "स्त्रीवेदवाळा जीवो त्यां उत्पन्न यता नथी. बाकी बधुं यावत्—अनुबंध सुची पूर्वोक्त कहेवुं. संवेध—जघन्यथी भवनी अपेक्षाए त्रिण भव अने उत्कृष्ट सात भव, तथा क्रांळनी अपेक्षाए जघन्य बे अन्तर्भुहूर्न अधिक बावीश सागरोपम अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक छासठ सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गमना-गमन करे (१).

संबी तिर्येचनी जव० सप्तम नरक पृथिवी-ना नारकमां अस्पत्तिः ७८. ते (संज्ञी पचेन्द्रिय तिर्येच) जघन्य स्थितिवाळा सप्तम नरक पृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न थाय—इत्यादि वक्तव्यता यावत्—मवादेश सुवी पूर्वे कह्या प्रमाणे कहेवी. जघन्यथी काळादेश पण तेज प्रकारे कहेवो, यावत्—चार पूर्वकोटी व्यधिक ( छासठ सागरोपम )—एटछो काळ यावत्–गमनागमन करे (२).

संबी पं॰ तिर्वजनी उत्कृष्ट॰ सप्तम नार-कर्मा उपपात. ७९. ते जीव उत्कृष्टस्थितिबाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय—इस्यादि वक्तन्यता यावत्—अनुबंध सुधी पूर्व प्रमाणे कहेवी.

१ छद्दीपुर-ग-घ। २ कीलिया-ग-इः।

७५ \* रलप्रभामां नैरयिकनी जघन्य स्थिति दश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपमनी छे. अने शर्कराप्रमादि नरकपृथिवीने विषे त्रण, सात, इस, रात्तर, बावीश, अने तेत्रीश सागरोपमनी कमशः उत्कृष्ट स्थिति छे. पूर्व पूर्वनी नरकपृथिवीमां जे उत्कृष्ट स्थिति होय ते पश्ची पर्छानी नरक-पृथिवीमां कनिष्ट स्थिति जाणवी, माटे स्थिति अने संविधमां सागरोपमो कहेवा—एम कह्यं छे.

<sup>🍍 👓</sup> स्वीओ छद्वी नरह प्रथियी सुधी ज उपजे छे.—टीहा.

<sup>ं</sup> वे मत्स्यना भव अने एक नारकभव-एम जघन्य त्रण भव, अने उत्कृष्ट चार मत्स्यभव अने त्रण नारकभव-एम सात भव जाणवा.—टीका.

<sup>‡</sup> सातमी नरकपृथिवीना जधन्य स्थितिवाळा नारकमा उत्कृष्ट त्रण वारज उपजे छे, जो एम न होय तो उपर कहेलो काळ वटी शके निह.—टीका.

मबनाजारं, उद्योसेजं पंच मवनगर्यणारं । कालादेसेणं जर्यणं तेत्तीसं सागरोषमारं दोहि अंतोमुदुत्तेहि अम्महियारं, उद्योसेजं छाषट्टि सागरोषमारं तिहि पुषकोबीहि अन्महियारं, पवतियं जाव-करेखा ३ ।

- ८०. तो चेव अप्पणा जहक्कतालिंद्रितीओ जाओ । सचेव रयणप्यभपुद्दविजहक्कतालिंद्रितीयवत्तवया माणियवा, जाव— 'भवादेसो'ति, नवरं पदमसंघयणं, जो इत्यिवेयणा । भवादेसेणं जद्द्रकेणं तिन्नि भवग्गहणादं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणादं । काळादेसेणं जहनेणं वावीसं सागरोवमादं दोहिं अंतोमुदुत्तेहिं अन्महियादं, उक्कोसेणं छाविंद्रं सागरोवमादं चडिंहं अंतोमुदु-सेहिं बन्महियादं, पवतियं जाव—करेजा ४ ।
- ८१. सो श्रेष जहस्रकालहितीयसु उववस्रो० एवं सो श्रेष चउत्थो गममो निरवसेसो भाणियद्वो, जाब--'कालादेसो'सि ५।
- ८२. सो खेव उक्कोसकालद्वितीपसु उववको० सखेव लडी जाव-'मणुवंघो'ति । मवादेसेणं जहकेणं तिकि मवग्ग-हणाई, उक्कोसेणं पंच मवग्गहणाई । कालादेसेणं जहकेणं तेत्तीसं सागरोवमाई दोहि मंतोमुहुत्तेहिं भन्मदियाई, उक्कोसेणं कावदि सागरोवमाई तिहिं मंतोमुहुत्तेहिं अन्महियाई, एवइयं कालं जाव-करेजा ६ )
- ८३. सो चेव मण्यणा उक्कोसकालहितीओ जहन्नेणं वाबीससागरोवमहित्यसु, उक्कोसेणं तेचीससागरोवमहि-तीयस उववजेखा ।
- ८४. ते णं मंते !० अवसेसा सचेव सत्तमपुरुविषदमगमवत्तवया माणियवा, जाव-'भवावेसो'ति । नवरं ठिती मणुवंधो य जहचेणं पुचकोडी उक्कोसेण वि पुचकोडी, सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहकेणं वावीसं सागरोवमाइं दोहि पुचकोडीहि अध्महियाइं, उक्कोसेणं छावाई सागरोवमाइं चर्जाहे पुचकोडीहि अध्महियाइं, एवइयं जाव-करेखा ७ ।
  - ८५. सो खेव जहस्तकालद्वितीपसु उववको० सचेव लड़ी संवेहो वि तहेव सत्तमगमगसरिसो ८।
  - ८६. सो बेय उद्योसकालद्वितीपसु उववन्नो० एस चेव लदी जाव-'अणुवंघो'सि । भवावेसेणं जहन्नेणं तिन्नि

भवनी अपेक्षाए जघन्यपी त्रण भव भने उत्कृष्टथी पांच भव, तथा काळनी अपेक्षाए जघन्य ने अन्तर्भुहूर्त अधिक तेत्रीश सागरोपम अने उत्कृष्टपी त्रण पूर्वकोटी अधिक छासठ सागरोपम—एटले काळ यावत्—गमनागमन करे (३).

८०. जो ते (संझी पंचेन्द्रिय तिर्यंच) जीव पोते जधन्य स्थितिवाळो होय अने ते सप्तम नरक पृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न पाय-ते संबंधे बची वक्तव्यता रक्षप्रमामां उत्पन्न थनार जधन्यस्थितिवाळा संझी पंचेन्द्रियनी वक्तव्यता प्रमाणे यावत्—भवादेश सुधी कहेवी. परन्तु विशेष ए के ते (सप्तम नरक पृथिवीमां उत्पन्न यनार) प्रथम संधयणवाळो होय छे, अने बीवेदी होतो नथी. भवनी अपेक्षाए जधन्य त्रण मव अने उत्कृष्ट सात भव, तथा काळनी अपेक्षाए जधन्य वे अन्तर्मुहूर्त अधिक बावीश सागरोपम अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक छासठ सागरोपम—एटछो काळ यावत्—गमनागमन करे (४).

अव॰ संबी पं॰ तिर्येचनी सप्तम नार-बमां उत्पत्तिः

- ८१. ते (जवन्यस्थितिवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थेचयोनिक जीव) जवन्यस्थितिवाळा सप्तम नरक पृथिवीमां नैरियकपणे उत्पन्न थाय तो ते संबंधे चोथो गम यावत्—कालादेश सुधी समप्र कहेनो (५).
- ८२. ते (जघ० संद्वी पंचेन्द्रिय तिर्यंच) उत्कृष्टस्थितिवाळा सप्तम नरक पृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न वाय तो ते संबंधे यावत्—अनुबंध सुची पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. भवनी अपेक्षाए जघन्य त्रण भव, उत्कृष्ट पांच मव, तथा काळनी अपेक्षाए जघन्य बे अन्तर्मृहर्त अधिक तेत्रीश सागरोपम अने उत्कृष्ट त्रण अन्तर्मुहर्त अधिक छासठ सागरोपम—एटले काळ यावत्—गमनागमन करे (६).
- ८३. ते पोते उत्कृष्ट स्थितिवाळो (संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थंच) होप अने सप्तम नरक पृथिवीमां उत्पन्न थाय तो ते जघन्य बाबीश सागरोपमनी अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.
- ८४. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न याय—इत्यादि बची वक्तव्यता सप्तम नरक पृथिवीना प्रयम गमकनी पेठे यावत्—भवादेश सुची कहेबी. परन्तु विशेष ए के स्थिति अने अनुबंध जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी जाणवो. बाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं. संवेध काळनी अपेक्षाए जघन्य वे पूर्वकोटी अधिक बाबीश सागरोपम अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक छासठ साग-रोपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (७).

८५. जो ते (उत्कृष्ट० संझी पंचेन्द्रिय तिर्थेच) जवन्यस्थितिबाळा सप्तम नरकपृथिनीना नैरियकोमां उत्पन्न थाय तो ते संबंधे ते ज नकन्यता अने संबंध सातमा गमकनी पेठे कहेवो (८).

८६. [प्र॰] जो ते उत्क्रष्ट स्थितिवाळो संद्री पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक उत्कृष्टस्थितिवाळा सप्तम नरकपृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न याय तो ए ज पूर्वोक्त वक्तव्यता यावत्—अनुबंध सुची कहेवी. संवेध—भवनी अपेक्षाए जघन्य \*त्रण भव अने उत्कृष्ट पांच भव जब॰ संबी थं॰
तिर्येचनो जब॰
सप्तम नरकमां
उपपातः
जब॰ सं॰ पं॰ तिर्येचनो उसक्षमां उपपातः

उत्कृष्ट॰ सं० पं० तिर्येचनी सप्तम नर-कमा उत्पत्तिः परिमाग-

उक्तुष्ट॰ सं॰ पं॰ तिर्वेचनी जघ॰ सप्त-म नरकमा उत्पत्ति-

उत्कृष्ट० सं० पं० विर्थयनी ७० सप्तम मरक्रमां बल्पत्तिः

८६ \* वे मस्याना अब अने एक नारक अव-एम अधन्यथी त्रण अब अने उत्कृष्ट त्रण मस्याभव अने वे नारक अव-एम पांच भव होय के—टीका.

मबग्गहणाइं, उद्योसेणं पंच मवगहणाइं। कालादेसेणं जहबेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहि पुत्रकोडीहि सम्महियाईं, उद्योसेणं खार्चाहुं सागरोवमाइं तिर्दि पुत्रकोडीहि अम्महियाइं, एवतियं कालं सेवेजा, जाव-करेखा ।

- ८७. [प्र॰] जर मणुस्सेहितो उपवर्जाति कि समिमणुस्सेहितो उपवर्जाति, भसमिमणुस्सेहितो उपवर्जाति ? [४०] गोयमा ! समिमणुस्सेहितो उपवर्जाति, णो असमीमणुस्सेहितो उपवर्जाति ।
- ८८. [प्र॰] जह सिष्प्रमणुस्सेदितो उषघज्जन्ति कि संखेजवासाउयसिष्मणुस्सेदितो उषवज्रति, असंखेज जाव-उषध्ज्ञति ! [उ॰] गोयमा ! संखेजवासाउयसिष्प्रमणुस्सेदितो उषध्ज्ञति, णो असंखेजवासाउय॰ जाव-उषध्ज्ञन्ति ।
- ८९. [प्र०] जद्द संखेळवासाउय० जाव-उघवज्रन्ति कि पळत्तसंखेळवासाउय०, अपळत्तसंखेळवासाउय० १ [उ०] गोयमा ! पजत्तसंखेळवासाउय०, नो अपळत्तसंखेळवासाउय० जाव-उघवळंति ।
- ९०. [प्र०] पजनसंखेजवासाउयसन्निमणुस्से णं मंते ! जे मिष्य नेरहपसु उवविजनस से णं मंते ! कित पुढवीसु उववज्रेजा ! [उ०] गोयमा ! सन्तसु पुढवीसु उववज्रेजा, तं जहा-रयणप्यमाप, जाव-अहेसन्तमाप ।
- ९१. [प्र०] पजात्तसंखेळ्यासाज्यसिकमणुस्से णं भंते ! जे मिषय रयणप्यमाय पुढवीय नेरहयसु जवविज्ञत्तय से णं भंते ! केषतिकालिहुहयसु उववज्रेजा ! [उ०] गोयमा ! जहकेणं वसवाससहस्सिहृतीयसु, उक्कोसेणं सागरोवमिहृतीयसु उववज्रेजा ।
- ९२. [४०] ते णं मंते ! जीवा पगसमएणं केवहया उचवज्ञंति ? [४०] गोयमा ! जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिश्वि वा, उक्कोसेणं संखेजा उचवज्जंति । संघयणा छ, सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलपुहुत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुस्तयाहं । एवं सेसं जहा सिंपिंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जाव-'भवादेसो'ति । नवरं चत्तारि णाणा तिश्वि अञ्चाणा मयणाए । छ समुख्याया केविंछ-

तया काळनी अपेक्षाए जघन्ययी वे पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपम अने उत्कृष्ट त्रण पूर्वकोटी अधिक छासठ सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (९).

संबी मनुष्योनी नरकमा उपपातः ८७. [प्र०] जो ते (नारक) मनुष्योधी आवी उत्पन्न याय तो ज्ञुं संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न याय के असंज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय !

संख्यात॰ संग्री म-नुष्योमी नारकपणे उत्पत्ति- ८८. [प्राची हे भगवन् ! जो ते संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय तो छुं संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय ! विश्वासी अवि उत्पन्न थाय.

पर्याप्ता मनुष्योनी नारकपणे उत्पक्तिः ८९. [प्र०] जो ते संख्याता वर्षना आयुपवाळा संज्ञी मनुष्योथी आघी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय है अपर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुपवाळा संज्ञी मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय है [उ०] हे गौतम ! ते पर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुपवाळा संज्ञी मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योथी आवी उत्पन्न न थाय.

खपपात.

९०. [प्र०] हे मगवन् ! मंख्याता वर्षना आयुपवाळो पर्याप्त मंज्ञी मनुष्य जे नैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते हे भगवन् ! केटली नरकपृथिवीओमां उत्पन्न याय ! [उ०] हे गौतम ! ते साते नरक पृथिवीओमां उत्पन्न याय ते आ प्रमाणे—१ रत्नप्रभा, यावत्—७ अधःसप्तम नरकपृथिवीमां.

रै संस्थाता॰ मनु-ष्यनी रखमानारकः पने उपपातः ९१. [प्रें॰] हे भगवन् ! संख्याता वर्षना आयुपवाळो पर्याप्त संज्ञी मनुष्य, जे रक्षप्रमाना नैरियंकोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे, ते हे भगवन् ! केटला काळनी स्थितिवाळा नैरियंकोमां उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गौतम ! ते जघन्यथी दस हजार वर्षना आयुपवाळा अने उत्कृष्टयी एक सागरोपमना आयुपवाळा नैरियंकोमां उत्पन्न थाय.

परिमाण-

९२. [प्र०] हे भगवन् ! तेओ (संख्यात वर्षना आगुपनाळा मनुष्यो ) एक समये केटला उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! जघ-न्यथी एक ने के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता उत्पन्न थाय छे. तेओने छए संघयण होय छे. शारीरमी उंचाई जघन्य नेपी नव आंगळ प्रमाण अने उत्कृष्ट पांचसो धनुष प्रमाण होय छे. नाकी बधुं संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकोनी पेठे यावत्-भगदेश सुधी कहेतुं. पण विशेष एके मनुष्योने \*चार ज्ञान अने त्रण अञ्चान भजनाए होय छे. केबलिसमुद्धात सिवाय छ समुद्धात होय छे. स्थिति अने

९२\* आहं चूर्णिकार कहे छे के, जे मनुष्य अवधि, मनःपर्मव अने आहारक शरीर प्राप्त करी त्यांची पडी नरकमां उपजे छे' ते मनुष्यने बार झान अने त्रण अज्ञान विकल्पे होय छे.

क्का । ठिती अणुवंची य जहचेणं मासपुदुत्तं, उक्कोसेणं पुक्कोडी, सेसं तं चेव । कालावेसेणं जहचेणं दसवाससहस्तारं मासपुदुत्तमध्महियारं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमारं चउहि पुक्कोडीहि अन्महियारं-एवतियं जाव-करेजा १ ।

- ९३. सो चेव जहचकारुट्टितीपसु उववको-एस चेव वत्तवया । नवरं कालावेसेणं जहकेणं दसवाससहस्सादं आसपुरुत्तमध्महियादं, उक्कोसेणं चत्तारि पुढकोडीओ चत्तालीसाप वाससहस्सेद्धि अन्महियाओ-एवतियं० २ ।
- ९४. सो खेव उक्कोसकालद्वितीपसु उववक्को-एस खेव वत्तक्षया । नवरं कालावेसेणं जहकेणं सागरोवमं मासपुहु-कमम्महियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहि पुत्रकोडीहि अम्महियाइं-एवतियं जाव-करेजा ३ ।
- ९५. सो चेव बप्पणा जहन्नकालिट्टितीओं जाओ-एस चेव वसवया। नवरं इमाइं एंच नाणसाइं-१ सरीरोगाइणा जहनेणं अंगुलपुदुत्तं, उन्नोसेण वि अंगुलपुदुत्तं, २ तिनि नाणा तिनि अन्नाणाई भवणाय, ३ एंच समुग्वाया आदिह्या, ४ ठिती ५ अणुवंघो य जहनेणं मासपुदुत्तं, उन्नोसेण वि मासपुदुत्तं, सेसं तं चेव, जाव-'भवादेसो'सि। कालादेसेणं जहनेणं दसवासस-इस्साइं मासपुदुत्तमम्मदियाइं, उन्नोसेणं चतारि सागरोवमाइं चर्जाहं मासपुद्वत्तमम्मदियाइं-एवतियं जाव-करेजा ४।
- ९६. सो चेष जहजकाछिंदृतीपसु उपवज्ञो-एस चेष वत्तवया चउत्यगमगसरिसा णेयद्या। नवरं काळादेसेणं जहकेणं दसवाससहस्सारं मासपुदुत्तमन्मदियारं, उक्रोसेणं चत्ताळीसं वाससहस्सारं चडिंहं मासपुदुत्तिर्दे अन्महियारं- एवतियं जाव-करेखा ५।
- ९७. सो खेब उद्घोसकालद्वितीपसु उववन्नो-एस चेच गमगो । नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं सागरोवमं मासपुरूत्त-मन्मद्वियं, उद्घोसेणं चत्तारि सागरोवमारं चर्डाई मासपुरूत्तेद्वि अन्मद्वियारं-एवर्यं जाव-करेजा ६ ।

अनुबंध जघन्यपी <sup>\*</sup>मासपृथक्त्य—बे मासथी नवमास सुधी अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनो होय ले. बाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं. संवेध—काळनी अपेक्षाए जघन्यपी <sup>†</sup>मासपृथक्त्व अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरोपम—एटलो काळ यावत्— गमनागमन करे, (१).

९३. जो ते मनुष्य जघन्य काळनी स्थितिवाळा रत्नप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न याय तो तेने उपर कहेली सर्व वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए छे के काळनी अपेक्षाए जघन्य मासपृथक्त्व अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक चालीश हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (२).

२ सं० मनुष्यनी जव० रहाप्रमानार कमां उत्पत्तिः

९८. जो ते मनुष्य उत्कृष्ट स्थितिवाळा रक्षप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न थाय तो तेने ए ज पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के काळादेशथी मासपृयक्त्व अधिक एक सागरोपम अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरोपम-एटलो काळ यावत-गमनागमन करे (३).

६ सं० प्रमुखनी उत्स्ट॰ रत्नप्रमा नैरम्बिकमां उत्पत्तिः

९५. जो ते मनुष्य पोते जघन्य काळनी स्थितिवाळो होय अने रह्मप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न थाय तो तेने पण ए ज वक्तव्यता कहेवी. तेमां आ पांच बाबतनी विशेषता छे—! तेओना शरीरनी अवगाहना जघन्य अने उत्कृष्ट अंगुल्पृथक्त होय छे, २ तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे, ३ प्रथमना पांच समुद्घातो होय छे, ४—५ स्थिति अने अनुबंध जघन्य अने उत्कृष्ट मासपृथक्त्व होय छे. बाकी बधुं यावत—भवादेश सुधी पूर्व प्रमाणे जाणवुं. काल्यनी अपेक्षाए जघन्यथी मासपृथक्त्व अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार मासपृथक्त्व अधिक चार सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (४).

४ जघ॰ सं॰ पं॰ मनुष्पती रत्तप्रभागी उत्पत्तिः

९६. जो ते (जघन्य स्थितिवाळो) मनुष्य जघन्य काळनी स्थितिवाळा रह्मप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न याय तो तेने पूर्वोक्त चोषा गमकना समान वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के काळनी अपेक्षाए जघन्य मासपृथक्त अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार मासपृथक्त अधिक चाळीश हजार वर्ष-एटडो काळ यावन्-गमनागमन करे (५).

५ जघ० मनुष्यनी अघ० रक्षप्रभामा उत्पत्तिः

९७. हवे तेज (जघन्य स्थितिवाळो) मनुष्य उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा रह्मप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न थाय तो तेने एज (पूर्वोक्त) गमक कहेवो. पण विशेष ए के काळादेश वढे जघन्य मासपृथक्त अधिक सागरोपम अने उत्कृष्ट चार मासपृथक्त अधिक चार सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (६).

६ जघ॰ मनुष्यनी उत्कृष्ट॰ रस्त्रमामां उत्पत्तिः

<sup>\*</sup> ९२ वे मासनी अंदरना आयुषवाळो मनुष्य नरकगतिमां जतो नवी, तेथी नरकगतिमां जनार मनुष्यनुं जधन्य आयुष मासपृथक्त होय छे.

<sup>ं</sup> मनुष्य याँने नरकमितमां जाय तो एक नरकपृथियीमां चार ज बार नारकपणे उपजे छे अने पछीथी अवस्य तिर्यंच थाय छे, माटे मनुष्यभव संबंधी चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरोपम संबंध जाणको.—टीका.

- ९८. सो येथ अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, सो वेथ पदमगमओ णेयहो। नवरं सरीरोगाइणा जहनेणं पंचधणुसयारं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयारं, दिती जहनेणं पुष्कोडी, उक्कोसेण वि पुष्ठकोडी, पवं मणुवंधो वि । कालार्सेणं जहनेणं पुष्ठकोडी दसिंह वाससहस्सेहिं अप्महिया, उक्कोसेणं वसारि सागरोवमारं चर्डाहे पुष्ठकोडीहिं अप्महियारं-पव-तियं कालं जाय-करेखा ७ ।
- ९९. सो चेव जहन्नकालट्टितीएसु उववन्नो, स चेव सत्तमगमगवत्तवया । नवरं कालादेसेणं अहनेणं पुषकोडी इसिंह वाससहरूसेहिं अब्महिया, उक्नोसेणं चत्तारि पुष्वकोडीओ चत्तालीसाप वाससहरूसे<mark>हिं अन्महियाओ-एवतियं कालं</mark> जाव-करेखा ८ ।
- १००. सो चेव उक्कोसकालिट्टितीपसु उववक्षो, स श्वेव सत्तमगमगवत्तवया । नवरं कालादेसेणं जहचेणं सागरोवमं पुत्रकोडीप अध्महियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमारं चर्जाहं पुत्रकोडीहं अब्महियारं-पवतियं कालं जाव-करेखा ९ ।
- १०१. [प्र०] पञ्जससंक्षेज्ञवासाउयसन्निमणुस्से णं मंते ! जे भविष सक्करप्यभाष पुढवीष नेरापसु जाव-उवविज्ञ-चष से णं मंते ! केवति ० जाव-उववर्ज्जजा ? [उ०] गोयमा ! जद्दश्रेणं सागरोवमद्वितीपसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमद्विती-पसु उववर्ज्जजा ।
- १०२. [प्र०] ते णं भंते !० [उ०] सो चेव रयणप्यभपुद्धविगमओ णेयद्वो। नवरं सरीरोगाहणा जहकेणं रयणिपुदुचं, उद्योसेणं पंचधणुसयारं। दिती जहकेणं वासपुदुचं, उद्योसेणं पुष्ठकोडी। पवं धणुवंधो वि। सेसं तं चेव, जाव-'भवावे-सो'चि। कालादेसेणं जहकेणं सागरोवमां, वासपुद्धत्तमम्महियं, उद्योसेणं वारस सागरोवमां चर्जाहे पुष्ठकोडीहि अन्महियारं-पवितयं जाव-करेजा। पवं पसा ओहिएसु तिसु गमपसु मणूसस्स लद्धी। नाणत्तं-नेरहयद्विती कालादेसेणं संवेहं च जाणेजा १-२-३।
  - १०३. सो चेव अप्पणा जहन्नकालहितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमपसु पस चेव लदी । नवरं सरीरोगाइणा

७ उत्कृष्ट॰ मनुष्यनी रक्तममामा उत्पत्तिः ९८. जो ते मनुष्य पोते उत्कृष्ट स्थितित्राळो होय अने रत्नप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न याय तो ते मंबंघे प्रयम गमक कहेबो. पण विशेष ए के गरीरनी अवगाहना अघन्य अने उत्कृष्ट पांचसो धनुपनी होय छे. स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वर्षनी अने अनुबंध पण ते प्रमाणे जाणबो. काळनी अपेक्षाए जघन्य पूर्वकोटी अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरोपम–एटलो काळ यावत्–गमनागमन करे (७).

८ उत्कृष्ट॰ मनुष्यनी जघ• रज्ञप्रभामां उत्पत्ति.

९.९. जो ते ज मनुष्य जघन्यकाळनी स्थितिबाळा रक्षप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न याय तो ते संबंधे ए ज सातमा गमकती वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के काळनी अपेक्षाए जघन्य दश हजार वर्ष अधिक पूर्वकोटी अने उत्कृष्ट चालीश हजार वर्ष अधिक चार पूर्वकोटी -एटलो काळ यावत्-गमनागमन करे (८).

उत्कृष्ट॰ मनुष्यनी सङ्कृष्ट॰ (जप्रभामां संपत्तिः

१००. जो ते उत्कृष्टिस्थितिवाळो मनुष्य उत्कृष्ट स्थितिवाळा रह्मप्रभा नैरियकोमां उत्पन्न थाय तो तेने सातमा गमकनी वक्त-व्यता कहेर्या. पण विशेष ए छे के काळनी अपेक्षाए जघन्य पूर्वकोटी अधिक सागरोपम अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरो-पम-एटळो काळ यावत्-गमनागमन करे (९).

मनुष्यती शर्कराप्र-भामा उत्पत्तिः

१०१. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता वर्षना आयुपवाळो पर्याप्त संज्ञी मनुष्य जे शर्कराप्रभामा उत्पन्न यवाने योग्य छे ते हे भगवन् ! केटला वर्षना आयुपवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्ययी एक सागरोपमनी स्थितिवाळा अने उत्कृष्टथी त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

परिमाण.

१०२. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय ! [उ०] अहिं रत्नप्रमा नैरियकनो गमक कहेवो. परन्तु विशेष ए के शरीरनी अवगाहना जघन्यथी रिलप्थिक्व—बेथी नव हाथ अने उत्कृष्ट पांचसो धनुष होय छे. स्थिति जघन्यथी वर्षपृथक्व अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वर्षमी होय छे. एवी रीते अनुबंध पण जाणवो. बाकी बधुं ते ज पूर्वोक्त यावत्—भवादेश सुधी कहेवुं. काळनी अपेक्षाए जघन्य वर्षपृथक्त अधिक एक सागरोपम अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक बार सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. ए प्रमाणे अधिक त्रण गमकमां मनुष्योनी वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए छे के नैरियकनी स्थिति अने काळादेश वहे तेनो संवेध जाणवो १—२—३.

४ ब्रवन्य॰ मनुष्य नी शर्कराश्रभाषां अस्पत्ति - १०३. [प्रo] ते संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त मनुष्य पोते जघन्य काळनी स्थितियाळो होय अने ते रार्कराप्रभामां उत्पन्न पाय तो ते संबंधे

१०१ " १ औषिक मौषिकमां २ औषिक जपन्य स्थितिवाळामां अने ३ औषिक उत्कृष्टस्थितिवाळामां-ए त्रणे गममां मनुष्यनी वक्तव्यता इत्नेवी.

ज्ञहक्षेणं स्विष्युहुत्तं, उक्कोसेण वि स्विणिपुहुत्तं, दिती जहक्षेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहुत्तं, एवं अणुवंधो वि । सेसं ज्ञहा ओहियाणं । संवेहो सेबो उवजुंजिऊण भाणियहो ४–५–६ ।

- १०४. सो चेव अप्पणा उद्घोसकालद्वितीको जाओ। तस्स वि तिसु वि गमपसु इमं णाणचं-सरीरोगाहणा जहकोणं पंचधणुसयाई, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाई, ठिती जहकेणं पुत्रकोडी, उक्कोसेण वि पुत्रकोडी, एवं अणुवंधो वि। सेसं जहा पढमगमप । नवरं नेरहयिठई य कायसेवेहं च जाणेजा ७-८-९। एवं जाव-छटुपुढवी। नवरं तचाप आढवेचा एक्केकं संघयणं परिदायति जहेव तिरिक्खजोणियाणं। कालावेसो वि तहेव, नवरं मणुस्सट्टिनी माणियद्वा।
- १०५. [प्र०] पञ्जत्तसंबोक्षवासाउयसिमणुरसे णं अंते ! जे मिवए अहेसत्तमाप पुटवि (बीप) नेरहपसु उवविक्रित्तप् से णं अंते ! केवतिकालहितीपसु उवविक्रेजा ! [७०] गोयमा ! जहकेणं वावीसंसागरोवमितिपसु, उक्कोसेणं नेत्तीसंसागरो-वमहितीपसु उवविक्रेजा ।
- १०६. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा पगसमपणं० ! [उ०] अवसेसो सो खेव सक्करप्पभापुद्वविगमधो णेयचो । नवरं पदमं संघयणं, इत्यिवेयगा न उपवक्षंति, सेसं तं चेव, जाव-'अणुवंधो'ति । भवादेसेणं दोमयग्गद्दणाइं । कालादेसेणं जहसेणं वावीसं सागरोषमाइं वासपुदुत्तमन्भद्दियाइं, उद्योसेणं तेत्तीसं सागरोषमाइं पुत्रकोडीप अन्भद्दियाइं-पधितयं जाव-करेखा १ ।
  - १०७. सो चेव जहसकालद्वितीएसु उववक्रो-एस चेव वसहया । नवरं नेरहयद्विति संवेदं च जाणेखा २ ।
  - १०८. सो चेव उक्कोसकालट्टितीएसु उववक्रो-एस चेव वक्तवया। नवरं संवेद्दं च जाणेखा ३।
  - १०९. सो चेव अण्पणा जहन्नकालट्टितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमपसु एस चेव वत्तवया। नवरं सरी-

त्रणे गमकमां ए पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के शरीरनी उंचाई जघन्य अने उक्तष्ट "बेथी नव हाय सुधीनी होय छे, अने आयुष जघन्य तथा उत्कृष्ट वर्षपृथक्त्व होय छे. अनुबंध पण ए ज प्रमाणे जाणवी. बाकी बधुं सामान्य गमकनी पेठे कहेवुं. अने सर्व संबेध पण विचारीने कहेवो. (४—५—६.)

१०४. [प्र०] जो ते मनुष्य पोते उत्कृष्टकाळनां स्थितियाळो होय अने ते दार्कराप्रभामां नैरियक थाय तो ते संबंधे त्रणे गमकोमां आ प्रमाणे विशेषता छे—१ दारीरनी अवगाहना जयन्य अने उत्कृष्ट पांचसो धनुषनी होय छे, २ म्थिति जयन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी होय छे, ३ अनुबंध पण ए ज प्रमाणे जाणवो. बाकी बधुं प्रथम गमकनी पेठे समजबुं. पण विशेष ए के नैरियकनी स्थिति अने कायसंबेध विचारीने कहेवो (७-८-९). ए प्रमाणे यावत्-छट्टी नरक पृथिवी सुधी जाणबुं. पण विशेष ए छे के त्रीजी नरकषी मांडी तिर्यंचयोनिकनी पेठे एक एक संघयण घटाडबुं, अने बाळांदश पण तेम न कहेत्रो. पण विशेष ए छे के अहिं मनुष्योनी स्थित कहेत्री.

रे उल्ल्ब्ट॰ म**नुष्यनी** शर्कराष्ट्रभाषा उल्लंकिः

१०५. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता वर्षना आयुषवाळो पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य जे सप्तम नरक पृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन् ! केटला काळनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गोतम ! ते जधन्यथी बावीश सागरी-प्रमनी स्थितिवाळा अने उत्कृष्टथी तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा नैरियकोमां उत्पन्न थाय.

१ संख्याता॰ सं॰ मनुष्यनी सप्तम नर-कमा उत्पत्तिः

१०६. [प्र०] हे भगवन् । ते जीबो एक समये केटला उत्पन्न पाय ! [उ०] बाकीनी बधी वक्तन्यता शर्कराप्रभा पृथिवीना गम-कनी पेटे जाणबी. परन्तु विशेष ए छे के सप्तम नरकमां प्रथम संघयणवाला उपजे छे, अने स्नीवेदबाला नथी उपजता, बाकी बधुं यावत्—अनुबंध सुधी पूर्ववत् जाणबुं. भवादेशथी बे भव, अने कालादेशथी जघन्य वर्षपृथक्त्य अधिक वाबीश सागरोपम तथा उत्कृष्टथी पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपम-एटलो काल यावत् गमनागमन करे (१).

परिमाण-

१०७. जो ते ज मनुष्य जघन्यकाळनी स्थितिवाळा सप्तम नरकपृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न थाय तो तेने पूर्वीक्त वक्तव्यता कहेबी. पण विशेष ए छे के आहें नैरियकनी स्थिति तथा संवेध विचारीने कहेबी (२).

२ मनुष्यती जघन्य सप्तम नरकमां वत्पत्तिः

१०८. जो ने मनुष्य उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा सप्तम नरकमां नैरियकपणे उत्पन्न थाय तो तेने पण ए ज वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए छे के संवेध विचारीने कहेवो (३).

<sup>3</sup> मनुष्यनी उत्क्रह**्** सप्तम नरकमां उत्पत्तिः

१०९. जो ते संज्ञी मनुष्य पोते जघन्यकाळनी स्थितियाळो होय अने सप्तम पृथिवीना नैरियकोमां उत्पन्न याय तो नेने त्रणे

जघन्य॰ मनुष्यनी सप्तम नरकर्मा उत्पक्तिः

<sup>ा &#</sup>x27;सब्बो' क-ग-इ इत्येतरपुरतकत्रये नास्ति ।

९०३ के आ क्यनदी एस जणाय छे के वे हायबी ओछी शरीरनी उंचाइवाळा अने वे बरसबी ओछा आयुषवाळा मनुष्यो बीजी नरकप्रियवीमां असम चता नवी—टीका.

रोगाहणा जहनेणं रयिणपुरुसं, उक्नोसेण वि रयणिपुरुसं । ठिती जहनेणं वासपुरुसं, उक्नोसेण वि वासपुरुसं, पर्व अणुनंत्रो वि । संवेहो उबज्रंजिऊण माणियको ४–५-६ ।

११०. सो खेव अप्पणा उक्कोसकालिट्टितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमपसु एस खेव वसवया। नवरं सरी-रोगाइणा जहन्नेणं पंचधणुसयाई, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाई। दिती जहनेणं पुषकोडी, उक्कोसेण वि पुषकोडी, एवं अणुवंधो वि। जवसु वि एतेसु गमपसु नेरस्यिट्टिती (तिं) संबेई च जाणेजा। सबत्य अवग्गहणाई दोन्नि, जाब-जवमगमप। कालादेसेणं जहनेणं तेसीसं सागरोवमाई पुषकोडीए अभ्यदियाई-एवतियं कालं सेवेखा, एवतियं कालं गतिरागितं करेजा ७-८-९। 'सेवं अंते! सेवं अंते'! सि जाब-विहरति।

#### चउवीसतिमे सए पढमो उद्देसी समची।

गमकोमां ए ज वक्तव्यता कहेबी. पण विशेष ए के शरीरनी अवगाहना जघन्य अने उत्कृष्ट बेधी नव **हाथ सुधी तथा स्थिति जघन्य अने** उत्कृष्ट वर्षपृथक्त होय छे. ए प्रमाणे अनुबंध पण जाणको. तथा संवेध ध्यान राखीने कहेको. (४–५–६).

उत्कृष्ट॰ मनुष्यनी सप्तम नरकमां उत्पत्तिः ११०. जो ते संज्ञी मनुष्य पीते उत्कृष्ट काळर्ना स्थितियाळो होय अन सप्तम नरक पृथिवीमां उत्पन्न पाय तो तेने त्रणे गमकमां ए ज पूर्वोक्त वक्तन्यता कहेवी. परन्तु विशेष ए छे के शरीरनी उंचाई जघन्य अने उत्कृष्ट पांचसी धनुषनी होय छे, स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वर्षनी होय छे. एप्रमाणे अनुबंध पण जाणवो. तथा उपर कहेळा नवे गमोमां नैरियकनी स्थिति अने संवेध विचारीने कहेवो. सर्वत्र वे भव जाणवा. यावत्—नवमा गमकमां काळनी अपेक्षाए जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपम—एटलो काळ सेवे, यावत्—गमनागमन करे (७—८—९). 'हे भगवन् । ते एमज छे, हे भगवन् । ते एम ज छे.'—एम कही यावत्—विहरे छे.

#### चोवीशमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

### बीओ उद्देसो।

- १. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-अञ्चरकुमारा णं भंते ! कञोहितो उववज्रंति-कि नेरइएहितो उववज्रंति, तिरि०, मणु०, देवेहितो उववज्रंति ! [उ०] गोयमा ! णो णेरइएहितो उववज्रंति, तिरिक्कजोणिएहितो उववज्रंति, मणु॰ स्सोहितो उववज्रंति, नो देवेहितो उववज्रंति । एवं जहेव नेरइयउद्देसए । जाव-
- २. [प्र॰] पज्जन्तअसिषपींचिदियतिरिक्खजोणिए णं मंते ! जे मिष्य असुरकुमारेसु उवविज्ञन्तए से णं मंते ! केवितका-लिहितीएसु उववज्जेका ? [उ॰] गोयमा ! जहकेणं दसवाससहस्सिट्टितीएसु, उक्कोसेणं पिलेमोवमस्स असंकेजहभागद्वितीएसु उववज्जेका ।
- ३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा० ! [उ०] एवं रयणप्यभागमगसरिसा णव वि गमा भाणियद्या । नवरं जाहे अप्पणा जहनकालट्टितीओ भवति ताहे अज्यवसाणा पसत्था, णो अप्पसत्था तिसु वि गमपसु । अवसेसं तं चेव ९ ।

### द्वितीय उद्देशक.

**मधुरकुमा**रमा सप्पात. १. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत्—[भगवान् गाँतम] आ प्रमाणे बोल्या के—हे भगवन्! असुरकुमारो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे—द्युं तेओ नैरियकोधी आवी उत्पन्न थाय छे, तिर्यचोधी, मनुष्योधी के देवोधी आवी उत्पन्न थाय छे! [उ०] हे गाँतम! तेओ नैरियकोधी आवी उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे बधुं यावत्—नैरियको-देशकर्ना पेटे जाणवुं. यावत्—

असंद्री वंश्वित्यंचनी अञ्चरकुमारमां उत्पत्ति- २. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त असंक्री पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव जे अक्षुरकुमारोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते केटला काळनी स्थितिवाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट \*पल्योपमना असंख्यातमा भागनी स्थितिवाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय.

परिमाण.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय? [उ०] ए प्रमाणे रत्नप्रभाना गमकनी पेठे नव गमको अहिं कहेवा. पण विशेष ए के ज्यारे ते पोते जधन्यकाळनां स्थितिवाळो होय त्यारे तेना (वचला) त्रणे गमकोमां अध्यवसायो प्रशस्त होय छे, पण अप्रशस्त होता नथी. बाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं ९.

२ \* अहिं पत्योपमनो असंख्यातमो भाग पूर्वकोटीरूप छेयो, कारण के संमूर्विख्य तिर्थेत्रतुं उत्कृष्ट आयुष पूर्वकोटिप्रमाण होय छे, अने ते पोताना आयुष्ता समान देवायुष बांधे छे, अधिक बांधतो नबी.—टीका.

- ध. [प्र॰] जर् सिंपर्चिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववर्जाति कि संखेजवासाउयसिक-जाव उववर्जाति, असं-क्षेज्रवासाउय॰ जाव-उववर्जाति शि [७०] गोयमा ! संखेज्रवासाउय॰ जाव-उववर्जाते, असंखेज्रवासाउय॰ जाव-उववर्जाति ।
- ५. [प्र०] असंबेखवासाउयसित्रपंचिदियतिरिक्क्षजोणिए णं मंते! जे मिष्य असुरकुमारेसु उवविज्ञचय से वं भंते! केवहकालद्वितीपसु उववजेखा ! [उ०] गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्सद्वितीपसु, उद्योसेणं तिपल्लिभोषमद्वितीपसु उववजेखा।
- ६. [प्र०] ते णं भंते! जीवा एगसमएणं-पुच्छा। [उ०] गोयमा! जहन्नेणं एको वा दो वा तिकि वा उक्रोसेणं संकेखा उववर्क्षति। वयरोसमनारायसंवयणी। ओगाहणा जहन्नेणं धणुपुदुत्तं, उक्कोसेणं छ गाउयारं। समयउरंससंडा-णसंडिया पन्नता। चत्तारि लेस्साओ आदिह्याओ। णो सम्मित्रिट्ठी, मिच्छाविट्ठी, णो सम्मित्रिच्छादिट्ठी। णो वाणी, अन्नाणी, वियमं दुअन्नाणी-मित्रिअनाणी सुयअनाणी य। जोगो तिविद्दो वि। उवभोगो दुविद्दो वि। चत्तारि सन्नाओ। चत्तारि कसाया। पंच इंदिया। तिन्नि समुग्नाया आविष्ठगा। समोहया वि मर्रति, असमोहया वि मर्रति। वेदणा दुविद्दा वि—सायावेयगा असायावेयगा। वेदो दुविद्दो वि—इत्थिवेयगा वि पुरिसवेयगा वि, णो नपुंसगवेदगा। दिती जहन्नेणं सार्रगा पुनकोडी, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमारं। अज्ञवसाणा पसत्या वि अप्यसत्या वि। अणुवंधो जहेव दिती। कायसंवेद्दो भवादे-सेणं दो भवग्गहणारं, कालावेसेणं जहन्नेणं सातिरेगा पुन्नकोडी दसिंह वाससहस्सेहि अन्मिद्दया, उक्कोसेणं छप्पलिओवमारं—पवितयं जाव—करेखा १।
  - ७. सो चेव जद्दश्रकालद्वितीपसु जववश्रो-एस चेव वश्वद्या । नवरं असुरकुमारद्विती (ति) संवेदं च जाणेखा २ ।
- ८. सो चेव उक्कोसकालट्टितीपसु उववको जहकोणं तिपलिओवमद्वितीपसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमद्वितीपसु उवव-क्रेजा-पस चेव वत्तवया । नवरं दिती से जहकेणं तिक्षि पलिओवमारं, उक्कोसेण वि तिक्षि पलिओवमारं । पवं अणुवंघो वि । कालादेसेणं जहकेणं स्वप्यलिओवमारं, उक्कोसेण वि स्वप्यलिओवमारं-प्यतिषं० सेसं तं चेव ३ ।
- ४. [प्र॰] जो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो हुं संख्यात वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयो-निकोधी आवी उत्पन्न थाय के असंख्यात वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोषी आवी उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गौतम ! संख्यातवर्षना आयुषवाळा अने असंख्यात वर्षना आयुषवाळा बन्ने प्रकारना तिर्यंचयोनिकोषी आवी उत्पन्न थाय.

संबी पं॰ तिषैचनी अञ्चरकुमारमा उत्पत्ति-

५. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्या तवर्षना आयुषपाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, जे असुरकुमारोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न याय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य दस हजारवर्षनी स्थितिवाळा अने उत्कृष्ट त्रण पत्यो-पमनी स्थितिवाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय.

बर्स॰ मंत्री पं॰ तिर्वेचनी असुरकुमा॰ रमां उत्पत्तिः

६. [प्रठ] हे भगवन्! ते (असंख्यात क्षंत्री पंचेन्द्रिय तिर्थंची) एक समये केटला उत्पन्न याय-ए प्रश्न. [उठ] हे गौतम! जघ-न्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता उत्पन्न थाय. तेओ (असंठ पंचेन्द्रिय तिर्थंची) वज्रऋषभनाराचसंघयणवाळा होय छे. तेओना शरीरनी उंचाई जघन्य धनुषपृथक्त्व अने उत्कृष्ट छ गाउनी होय छे. तेओ समचतुरस्न संस्थानवाळा होय छे, !सम्यन्दिष्ट के मिश्रदिष्ट होता नथी, पण मिथ्यादिष्ट होय छे. ज्ञानी नथी पण अज्ञानी छे अने तेने अवस्य मतिअज्ञान अने श्रुत अज्ञान ए बे अज्ञान होय छे. योग त्रणे होय छे. उपयोग साकार अने अनाकार बने प्रकारनो होय छे. चार संज्ञाओ, चार कवायो अने पाच हन्द्रियो होय छे. समुद्धात प्रथमना त्रणे होय छे. समुद्धात करीने पण मरे छे अने कर्या विना पण मरे छे. वेदना सुखरूप अने दुःखरूप-एम बने प्रकारनी होय छे. पुरुषवेद अने खीवेद-एम बे वेद होय छे, पण नपुंसक वेद होतो नयी. स्थिति जघन्यथी कांइक अधिक पूर्वकोटी अने उत्कृष्ट त्रण पत्योपमर्ना होय छे. अध्यवसायो प्रशस्त अने अप्रशस्त बने प्रकारना होय छे. स्थितिनी पेठे अनुबंध पण जाणवो. कायसं- वेध-भवनी अपेक्षाए बे भव अने काळनी अपेक्षाए जघन्यथी कांइक अधिक पूर्वकोटी सहित दस हजार वर्ष तथा उत्कृष्ट छ पत्योपम- एटलो काळ यावत्-गमनागमन करे (१).

परिमाण-

- ७. जो ते ( असंख्यात वर्षना आयुषवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच ) जघन्यकाळनी स्थितियाळा असुरकुमारमां उत्पन्न पाय तो तेने एज पूर्वोक्त वक्तन्यता कहेवी, पण अहिं असुरकुमारनी स्थिति अने संवेध विचारीने कहेवी (२).
- ८. जो ते उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळा असुरकुमारमां उत्पन्न थाय तो ते जवन्य अने उत्कृष्ट त्रण पत्योपमनी स्थितिवाळा असुरकु-मारोमां उत्पन्न थाय—इत्यादि पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए छे के तेनी स्थिति जवन्य अने उत्कृष्ट त्रण पत्योपमनी होय छे. ए प्रमाणे अनुबंध पण जाणवो. काळनी अपेक्षाए जवन्य अने उत्कृष्ट छ पत्योपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे, बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं (३).

२ अमुंख्या १ पंक तिर्वचनी अवक अझरकुपारमां उत्पत्ति. १ असंख्याक पंक तिर्वचनी उत्कृष्टक अझरकुमारमां उत्पत्ति.

- सो चेव बव्यणा जहस्रकालिट्टितीयो आथो, अहक्षेणं दसवाससहस्सिट्टितीयसु, उक्कोसेणं सातिरेगपुवकोडीयाउपसु
   उपविदेशाः।
- १०. ते णं मंते १० अवसेसं तं चेव जाव-'मवादेसो'सि । नवरं ओगाहणा जहनेणं घणुहपुहुत्तं, उद्घोसेणं सातिरेगं षणुसहस्सं । ठिती जहनेणं सातिरेगा पुषकोडी, उद्घोसेण वि सातिरेगा पुषकोडी । एवं अणुवंघो वि । कालादेसेणं जह-न्नेणं सातिरेगा पुषकोडी दसर्दि वाससहस्सेहि अन्मिहिया, उद्घोसेणं सातिरेगाओ दो पुषकोडीओ-एवतियं० ४ ।
  - ११. सो चेव जहस्रकालट्रितीएसु उववस्रो, एस चेव यत्तवया । नवरं असुरकुमारट्टिरं संवेहं च जाणेखा ५ ।
- १२. सो चेव उक्कोसकालिट्टितीयसु उवचन्नो, जहन्नेणं सातिरेगयुष्टकोडिआउयसु, उक्कोसेण वि सातिरेगयुष्टको**डीआउ-**यसु उववज्रेजा, सेसं तं चेव । नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं सातिरेगाओ दो पुषकोडीओ, उक्कोसेण वि सातिरेगाओ दो पुष-कोडीओ-पवतियं कालं सेवेजा ६ ।
- १३. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, सो चेव पढमगमगो माणियच्चो। नवरं ठिती जहकेणं तिक्षि पिलेओ-वमाई, उक्कोसेण वि तिक्षि पिलेओवमाई। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहकेणं तिक्षि पिलेओवमाई दसिई वाससह-स्सोई मध्मिहियाई, उक्कोसेणं छ पिलेओवमाई-पवितयं० ७।
  - १४. सो चेव अहस्रकालद्वितीएसु उचवन्नो, एस चेव वश्ववया । नवरं असुरकुमारद्विति संवेदं च जाणिखा ८ ।
- १५. सो चेव उक्कोसकालद्वितीपसु उवयक्षो, जहकेणं तिपलिओवम०, उक्कोसेण तिपलिओवम० पस चेव वसवया । नवरं कालावेसेणं जहकेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं-एवतियं० ९ ।
  - १६. [प्र॰] जर संखेळवासाउयसिप्पंचिदिय॰ जाव-उघवर्जाति किं जलचर॰, पर्व जाव-पज्जत्तसंखेजवासाउयस-

जवः असंख्वातः संबी पं विर्वेचनी असुरकुमारमा अधिकारित. परिमाणादिः

- ९. जो ते (असंख्यात वर्षना आयुपवाळो संज्ञी पंचिन्दिय तिर्यंचयोनिक) पोते जघन्यकाळनी स्थितिवाळो होय अने असुरकुमा-रमां उत्पन्न पाय तो ते जघन्य दस हजार वर्ष अने उन्कृष्ट कांद्रक अधिक पूर्वकोटी वर्षना आयुषवाळा असुरकुमारमां उत्पन्न पाय.
- (०. [प्र०] हे भगवन् । ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न याय ! [उ०] बाकी बधुं यावत्—भवादेश सुधी तेज प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए छे के शरीरनी उंचाई जघन्यथी बेथी \*नव धनुष सुधी अने उत्कृष्ट कोइक अधिक एक हजार धनुष होय छे. स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट कोइक अधिक पूर्वकोटी वर्षनी होय छे. ए प्रमाणे अनुबंध पण जाणवो. काळनी अपेक्षाए जघन्यथी कांइक अधिक पूर्वकोटी सिहित दस हजार वर्ष अने उन्कृष्ट काइक अधिक वे पूर्वकोटी वर्ष-एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (४).

धर्सस्यातः पण तिवैधनी जघः अद्धरकुमारमां उत्पत्तिः असंस्थातः पंग् तिर्यचनी उत्कृष्टः असुरकुमारमां उत्पत्तिः

- ११. जो ते जघन्यकाळनी स्थितियाळा असुरकुमारमां उत्पन्न थाय तो तेने एउ वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के आहं असुर-कुमारनी स्थिति अने सबेध विचारीने कहेवो (५).
- १२. हवे जो तेज जीव उत्कृष्टकाळनी स्थितियाळा असुरकुमारमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्कृष्ट कांड्क अधिक पूर्वकोटी वर्षनी स्थितियाळा असुरकुमारमां उत्पन्न थाय. बाकी वधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. पण विशेष ए के काळादेशथी जघन्य अने उत्कृष्ट कांड्क अधिक वे पूर्वकोटी वर्ष-एटलो काळ पावत्— गमनागमन करे (६).

त॰ १३. हवे तेज पोने उन्क्रष्टकाळनी स्थिनिवालो होय अने असुरकुमारमां उत्पन्न याय तो तेने प्रयम गमक कहेवो. पण विदोष ए <sup>मा-</sup> के स्थिति जधन्य अने उत्क्रष्ट त्रण पल्योपमनी होय छे, तथा अनुबंध पण एज प्रमाणे जाणवो. काळादेदाथी जधन्य दस हजार वर्ष अभिक त्रण पल्योपम अने उत्क्रष्ट छ पल्योपम एटलो काळ यावत्-गमनागमन करे (७).

अक्तूह॰ अस्त्यात॰ तिर्येचनी अमुरकुमा-रमां उत्पक्ति-

> १४. जो ते ( उत्कृष्ट स्थितिवाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच ) जघन्य काळनी स्थितिवाळा असुरकुमारमा उत्पन्न याय तो तेने एज वक्त-न्यता कहेवी. पण विशेष ए के अहिं असुरकुमारनी स्थिति अने मंत्रेथ विचारीने कहेवी (८).

उत्कृष्ट० असंस्थात० प॰ तिर्वचनी अध० अधुरकुमारमां उत्पत्ति. उत्कृष्ट असंस्थात० तिर्वचनी उत्कृष्ट० अधुरकुमारमां उत्पत्ति.

१५. जो ते ( उत्कृष्ट स्थितिवाळो पंचेन्द्रिय तिर्थंच ) उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळा असुरकुमारमां उत्पन्न याय तो ते जघन्य अने उत्कृष्ट त्रण पत्योपमनी स्थितिवाळा असुरकुमारमां उत्पन्न याय—इत्यादि पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के काळनी अपेक्षाए जघन्य अने उत्कृष्ट छ पत्योपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे ९.

संख्यात॰ संज्ञी तिर्ये चनी अद्वरकुमारमां उत्पत्तिः १६. [प्र०] हे मगवन् ! जो ते असुरकुमारो संख्याता वर्षना आयुषवाळा संब्री पंचेन्द्रिय तिर्यंचोयी आवीने उत्पन्न थाय तो शुं जलचरोयी आवी उत्पन्न थाय–इत्यादि यावत्–'हे भगवन् ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळा संब्री पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, जे

<sup>1. \*</sup> पशीओतुं उत्क्रष्ट शरीर धनुषपृथक्तव प्रमाण होय छे तेने आश्रयी आ कवन छे.

न्निपंचिदियतिरिक्सजोणिए णं मंते ! जे मिष्ट असुरकुमारेसु उवविज्ञन्तए, से णं मंते ! केवदयकालद्वितीपसु उववज्रेजा ! [४०] गोयमा ! जहकेणं वसवाससहस्सद्वितीपसु, उक्कोसेणं सातिरेगसागरोवमद्वितीपसु उववज्रेजा ।

- १७. [प्र॰] ते णं मंते ! जीवा पगसमपणं॰ ! [उ॰] एवं पतेसि स्यणप्यमपुढविगमगसरिसा नव गमगा णेयवा। नवरं जाहे अप्पणा जहश्रकालद्विरमो भवद, ताहे तिसु वि गमपसु हमं णाणत्तं—वत्तारि छेस्सामो, अञ्चयसाणा पसत्या, नो अप्यसत्या, सेसं तं चेव । संबेहो सातिरेगेण सागरोबमेण कायवो ९ ।
- १८. [प्र॰] जर मणुस्सेहितो उषवज्रंति किं सन्निमणुस्सेहितो॰ श्रसन्निमणुस्सेहितो॰ ! [उ॰] गोयमा ! सन्निमणु-स्सेहितो॰, नो असन्निमणुस्सेहितो उषवज्रंति ।
- १९. [प्र॰] जद सिन्नमणुस्सेहितो उवधक्रंति कि संखेळवासाउयसिन्नमणुस्सेहितो उवधक्रंति, असंखेळवासाउयस-चिमणुस्सेहितो उवधक्रंति ! [उ॰] गोयमा ! संखेळवासाउय॰ जाव-उवधक्रंति, असंखेळवासाउय॰ जाव-उवधक्रंति ।
- २०. [प्र०] असंधेजवासाउयसिप्तमणुस्ते णं भंते! जे भविप असुरकुमारेसु उवविज्ञसप से णं भंते! केवितकाळद्वितीपसु उवविज्ञजा ! [उ०] गोयमा ! जहकेणं वसवाससहस्सिट्टितीपसु, उक्कोस्सेणं तिपिल्लिकोवमट्टितीपसु उवविज्ञजा। पदं
  असंखेजवासाउयितिरिक्तजोणियसिरसा आदिहा तिकि गमगा नेयदा। नवरं सरीरोगाहणा पढमवितिपसु गमपसु जहकेणं
  सातिरेगाइं पंचधणुसयाई, उक्कोसेणं तिकि गाउयाई, सेसं तं चेव। तईयगमे ओगाहणा जहकेणं तिकि गाउयाई, उक्कोसेण वि तिकि गाउयाई, सेसं जहेव तिरिक्तजोणियाणं ३।
- २१. सो चेव अप्पणा जहचकालद्वितीओ जाओ, तस्स वि जहस्रकालद्वितियतिरिक्बजोणियसरिसा तिश्वि गमगा भाणियद्या । नवरं सरीरोगाइणा तिसु वि गमयसु जहकेणं साहरेगाइं पंचधणुसयाई, उद्योसेण वि सातिरेगाई पंचधणुसयाई, सेसं तं चेव ६ ।

असुरकुमारोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन् ! केटल काळनी स्थितिवाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न याय ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट कांड्क अधिक एक सागगेपमना स्थितिवाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न याय'.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो (संही पंचेन्द्रिय निर्यंचो) एक समये केटला उत्पन्न थाय ! [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे रत्नप्रभा-पृथिचीना समान नवे गमको अहिं जाणवा. पण विशेष ए के ज्यारे पोते जघन्यकाळनी स्थितिवाळो होय त्यारे वश्चेना त्रणे गमोमां आ मेद जाणवो— तेने चार लेश्याओ होय छे, अध्यवसायो प्रशस्त होय छे, पण अप्रशस्त होता नथी. बाधी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. "संवेष कांद्रक अधिक सागरोपमधी करवो.

परिभाग-

१८. [प्र॰] जो ते असुरकुमारो मनुष्योधी आधी उत्पन्न थाय तो शुं संही मनुष्योधी आधी उत्पन्न थाय के असंही मनुष्योधी आबी उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गीतम ! तेओ संही मनुष्योधी आबी उत्पन्न थाय, पण असंही मनुष्योधी आबी उत्पन्न न थाय.

मनुष्योनी अञ्चरकु-मारोमा उत्पत्तिः

१९. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वर्षना आयुपवाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय के असंख्याता वर्षना आयुपवाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेओ बंने प्रकारना आयुपवाळा मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय छे.

संबी मनुष्योनो असुरकुमारमां उप-पात-

२०. [प्र०] हे भगवन् ! असंस्थाता वर्षना आयुषवाळो संज्ञी मनुष्य, जं असुरकुमारोमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा असुरकुमारमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते जबन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे असंस्थात वर्षना आयुपवाळा तिर्यचयोनिकोनी पेठे प्रथमना त्रण गमको आणवा. पण विशेष ए के शरी-रनी उंचाई प्रथम अने द्वितीय गमकमां कांइक अधिक पांचसो धनुष अने उत्कृष्टथी त्रण गाउनी होय छे. बाकी बधुं पूर्वोक्त कहेवुं. त्रीजा गमकमां शरीरनी उंचाई जबन्य अने उत्कृष्ट पण त्रण गाउनी जाणवी. बाकी बधुं तिर्यंचयोनिकनी पेठे समजवुं. १-२-३.

असंख्यात० मनुष्य-नी असुरक्षमारोमा उत्पन्तिः

२१. जो ते पोते जघन्यकाळनी स्थितिवाळो होय तो तेने जघन्यकाळनी स्थितिवाळा तिर्यंचयोगिकोनी पेटे त्रणे गमी कहेवा. पण विशेष ए के आहें त्रणे गममां शरीरनी उंचाई जघन्य अने उत्कृष्ट कांइक अधिक पांचसो धनुष जाणवी. बाकी बधुं प्रींक कहेबुं (४-५-६).

जधन्य॰ संज्ञी मनुः स्थनी भसुरकुषा-रमो उत्पत्तिः

१० \* अञ्चरकुमारनिकायन् आयुष त्ररकृष्ट कांहक अधिक धागरोएम होवाबी तेवडे कायसंबेध करवो.

- २२. स्रो सेव सप्पणा उक्कोसकालड्डितीओ जाओ, तस्स वि ते स्रेय पिछिल्लगा तिम्नि गमगा भाणियद्वा। नवरं सरीरो-गाहणा तिस्रु वि गमपसु जहन्नेणं तिम्नि गाउयारं, उक्कोसेण वि तिम्नि गाउयारं, अवसेसं तं स्रेय ९।
- २६. [ब्र॰] जर संबेखवासाउयसित्रमणुस्सेहितो उववर्क्कति कि पज्जसमंबेखवासाउय०, अपज्जसमंबेखवासाउय० र [इ॰] गोबमा ! पज्जसमंबेख०, णो अपज्जसमंबेख० ।
- २४. [प्र॰] पञ्चत्तसंखेजवासाउयसिमगुस्से णं भंते ! जे भविष असुरकुमारेसु उवविज्ञत्तप से णं भंते ! केव-विकालद्वितीपसु उववज्रेजा ! [उ॰] गोयमा ! जहभेणं वसवाससहस्सद्वितीपसु, उक्कोसेणं साहरेगसागरोघमद्वितीपसु उववज्रेजा ।
- २५. [प्र॰] ते जं मंते ! जीवा॰ ! [उ॰] एवं जहेव पतेसि रयणप्यभाप उववज्जमाणाणं जव गमगा तहेव दह वि जव गमगा माजि यद्या। जवरं संवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायद्यो, सेसं तं चेव ९। 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! जि।

#### चन्नीसितमे सए नीओ उद्देसी समत्ती।

उत्कृष्ट॰ संबी मनुः व्यनी असुरकुमारमां उत्पत्तिः २२. जो ते पोते उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळो होय तो ते संबंधे पण पूर्वोक्त छेल्ला त्रण गमो कहेवा. पण विदेष ए के क्रणे गमोम शरीरनुं प्रमाण अघन्य अने उत्कृष्ट त्रण गाउनुं होय छे. बाकी वधुं ते प्रमाणे जाणवुं (७–८–९).

संख्यात॰ संशी मनु-ष्यनी असुरकुमारमां उत्पक्तिः

- २३. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते असुरकुमारो संख्याना वर्षना आयुपबाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्त संख्यान ता वर्षना आयुपबाळा के अपर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न याय ! [उ॰] हे गौतम ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुपबाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न याय, पण अपर्याप्ता संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न न थाय.
- २४. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळो संज्ञी मनुष्य, जे असुरकुमारोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट कांड्क अधिक सागरोपमनी स्थितिवाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय.

परिमाणादि-

२५. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभामां उत्पन्न थनार मनुष्योना नव गभो कहा। तेम आहें ५ण नव गमो कहेवा. पण विशेष ए के अहीं संवेध पूर्वकोटी सहित सागरोपमनो कहेवो. बाकी बधुं पूर्वोक्त जाणबुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### चोवीशमा श्रतकमां द्वितीय उदेशक समाप्त.

## तईआइआ उद्देसा।

- १. [प्र॰] रायगिहे जाव-एवं वयासी-नागकुमारा णं भंते ! कओहितो उचवक्रंति, किं नेरह्पहितो उचवक्रंति, तिरिक्तक्रोणि॰, मणुस्सेहितो उचवक्रंति, तिरिक्तक्रोणि॰, मणुस्सेहितो उचवक्रंति, नो देवेहितो उचवक्रंति।
  - २. [४०] जइ तिरिक्क॰ ! [७०] एवं जहा असुरकुमाराणं वसवया तहा एतेसि पि जाय-'असिबिसि'।

#### ३-११ उद्देशको.

नागकुमारमां उप<sup>.</sup> पातः

- १. [प्र०] राजगृहमां [ मगवान् गौतम ! ] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के—हे मगवन् ! नागकुमारो क्यांथी आवीने उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियकोथी के देवोधी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियकोथी के देवोधी आवी उत्पन्न थाय छे !
- २. जो तेओ तिर्यंचोषी आवी उत्पन्न थाय छे–इत्यादि जैम अधुरकुमारोनी वक्तज्यता कही तेम एओनी पण वक्तज्यता यावत्⊸ असंज्ञी सुची कहेवी.

- ३. [प्र॰] जह सम्बिर्पोचिदियतिरिक्सजोणिर्पोहतो॰ कि संखेखवासाउय॰, असंखेखवासाउय॰ १ [उ॰] गोयमा ! संखेखवासाउय॰, असंखेखवासाउय॰ जाय-अववर्काति ।
- ध. [प्र०] असंक्षेज्जवासाउयसित्रपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं मंते ! जे मविए नागकुमारेसु उवविज्ञत्तर से णं मंते ! क्रेवितकालद्विति० ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं वसवाससहस्सद्वितिएसु, उक्कोसेणं देस्णदुपित्अवेवमद्वितीएसु उववज्जेजा ।
- ५. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा० [उ०] अवसेसो सो चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स गमगो भाणियहो जाव-'मवादेसो'त्ति । कालादेसेणं जहन्नेणं सातिरेगा पुषकोडी दसिंह वाससहस्सेहि अन्मिहिया, उक्कोसेणं देसूणाई पंच पिल्रओ-वमाई-पवितयं जाव-करेजा १ ।
  - ६. सो चेव जहन्नकालद्वितीपसु उववन्नो, एस चेव वत्तवया । नवरं णागकुमारद्विति संवेहं च जाणेखा २ ।
- ७. सो चेव उक्कोसकालिटुतीपसु उववक्को, तस्स वि एस चेव वसक्षया । नवरं ठिती जहकेणं देस्णाई दो पिलकोब-माई, उक्कोसेणं तिकि पिलकोबमाई, सेसं तं चेव जाय-'भवादेसो'सि । कालादेसेणं जहकेणं देस्णाई चसारि पिलकोबमाई, उक्कोसेणं देस्णाई पंच पिलकोबमाई-एवतियं कालं० ३ ।
- ८. सो चेव अप्पणा जहन्नकालिंद्वतीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमपसु जहेव असुरकुमारेसु उववज्रमाणस्स जह-जकालिंद्वितियस्स तहेव निरवसेसं ६।
- ९. सो चेव अप्पणा उद्घोलकालिट्टितीओ जातो, तस्स वि तद्देव तिश्चि गमगा जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स । नवरं नागकुमारिट्टिति संवेद्दं च जाणेजा सेसं तं चेव ७-८-९ ।
- १०. [प्र॰] जर् संखेळवासाउयसिश्वपंचिदिय॰ जाव-किं पज्जत्तसंखेळवासाउय॰, अपज्जत्तसंखेळ॰ ? [उ॰] गोयमा ! पज्जत्तसंखेळवासाउय॰, णो अपज्जत्तसंखेळवासाउय॰।
- ३. [प्र०] जो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोर्निकोथी आवी उत्पन्न थाय तो छुं संख्याता वर्षना आयुपवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयो-निकोषी आवी उत्पन्न थाय के असंख्याता वर्षना आयुपवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेओ बने प्रकारना तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय.

संबी सिर्वेचनी नागकुमारमां नागकिमारमां

- ४. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्यात वर्षना आयुग्वाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक, जे नागकुमारोमां उत्पन्न धत्राने योग्य **छे ते** केटला काळनी स्थितिवाळा नागकुमारोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्यधी दश हजार वर्षनी स्थितिवाळा अने उत्कृष्टवी कोइक न्यून वे पन्पोपमनी स्थितिवाळा नागकुमार देवोमां उत्पन्न थाय.
- ५. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय-इत्यादि असुरकुमारमां उत्पन्न थनार असंख्याता वर्षना आयुषवाळा तिर्यचोनो यावत्—भवादेश सुधी समप्र पाठ कहेवो. काळनी अपेक्षाए, जघन्य कांडक अधिक पूर्वकोटी सहित दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट कांडक न्यून पांच पल्योपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (१).
- ६. जो ते जीव जघन्यकाळनी स्थितियाळा नागकुमारोमां उत्पन्न थाय तो तेने एज वक्तव्यता कहेवी. एण विशेष ए के अहिं नागकुमारोनी स्थिति अने संवेध जाणवी (२).

समस्यातवरां सी पंक तियं चर्नी जधवनागः कुमारमी उत्पक्तिः

- ७. जो ते जीव उत्कृष्ट काळनी स्थितियाळा नागकुमारमां उत्पन्न थाय तो तेने पण ए ज वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के जघन्य स्थिति कांडक न्यून वे पल्योपमनी अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत्—भवादेश सुधी जाणबुं. काळांदशथी जघन्य कांडक न्यून चार पल्योपम अने उत्कृष्ट कांडक न्यून पांच पल्योपम—एटल्डो काळ यावत्—गमना-गमन करे (३).
- असंस्थात**ः संद्यी पं ॰** तिर्धचनी जल्ह**ष्ट॰** नःगकुमारमा जत्पत्तिः
- ८. जो ते जीव पोते जघन्य काळनी स्थितिवाळो होय तो तेने पण त्रणे गमकोमां असुरकुमारोमां उत्पन्न धनार जघन्य काळनी स्थितिवाळा ( असंख्यातवर्पना आयुषवाळा तिर्थेचनी ) पेठे बधुं कहेवुं (४-५-६).
- -(वन्द्र० असंख्यान० संबी पं० तियंचनी नागकमारमांकरपत्ति

उत्क्रष्ट० असंख्यात≎

- ९. जो ने पोते उत्कृष्ट काळनी स्थितियाळो होय तो तेने पण त्रणे गमको असुरकुमारोमां उत्पन्न यता तिर्यंचयोनिकनी पेठे कहेया. पण विशेष ए के अहीं नागकुमारोनी स्थिति अने संवेध कहेवो. बाकी बधुं तेज प्रमाणे कहेतुं (७-८-९.).
- पण तिथंचनी नागः जुमारमां उत्पन्तिः पण्संस्यातण संसी

uo तियंचनी नाग-

कुमार्मा उत्पत्ति.

१०. [प्र०] जो ते नागकुमारो संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो द्यं तेओ पर्याप्ता के अपर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय / [उ०] हे गौतम ! तेओ पर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी तिर्यंचयोनिकथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी न उत्पन्न थाय.

- ११. [म०] पज्रससंबेजनासाउय० जाम- जे भिषय णागकुमारेसु उदयज्ञिसप से णं मंते ! केयतिकास्रद्वितीपसु उपयज्जेजा ! [उ०] जहवेणं वस वाससद्दस्तारं, उद्दोसेणं देस्णारं दो पिलमोनमारं । एवं जहेव असुरकुमारेसु उदयज्जमाणस्य वस्तवया तहेव इह वि णवसु वि गमपसु । णवरं णागकुमारिट्टेति संवेदं च जाणेजा, सेसं तं चेव ९ ।
- १२. [४०] जर मणुस्सेहितो उवयज्ञंति कि सिश्रमणु०, असिश्रमणु० ! [४०] गोयमा ! सिश्रमणु०, णो असिश्रमणु-स्सेहितो०, जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जाव-
- १३. [प्र०] असंखेळावासाउयसिक्षमणुस्से णं मंते ! जे मविष णागकुमारेसु उवविज्ञित्तप से णं मंते ! केवितकाल-द्वितीपसु उवविज्ञद ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं दसयासलहस्सादं उक्कोलेणं देस्णादं हो पिलेओवमादं, पवं जहेव असंखेळ-वासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं नागकुमारेसु आदिला तिश्चि गमगा तहेव इमस्स वि । नवरं पढमवितिपसु गमपसु सरीरो-गाहणा जहन्नेणं सातिरेगादं पंचधणुसयादं, उक्कोलेणं तिश्चि गाउयादं, तदयगमे ओगाहणा जहनेणं देस्णादं दो गाउयादं, उक्कोलेणं तिश्चि गाउयादं, सेसं तं चेव ३ ।
- १४. सो चेव अप्पणा जहचकालढितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमपसु जहा तस्स चेव असुरकुमारेसु उववजा-माणस्स तहेव निरवसेसं ६।
- १५. सो चेव अप्पणा उद्घोसकालद्वितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमपसु जहा तस्स चेव उद्घोसकालद्वितियस्स असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं णागकुमारद्विति संवेद्यं च जाणेज्ञा, सेसं तं चेव ९ ।
- १६. [प्र॰] जइ संखेजवासाउयसिम्मणु॰ कि पजलसंखेज॰, अपजलसंखेज॰ ! [उ॰] गोयमा ! पजलसंखेज॰, को अपजलसंखेज॰।
- ११. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, जे नागकुमारमां उत्पन्न यवाने योग्य छे, ते केटला काळनी स्थितियाळा नागकुमारमां उत्पन्न याय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट कांइक न्यून बे पल्योपमर्ना स्थितियाळा नागकुमारोमां उत्पन्न याय -इलादि जेम असुरकुमारोमां उत्पन्न यता संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी वक्तव्यता कही छे तेम अहिं नवे गमकोमां कहेवी. पण विशेष ए के अहीं नागकुमारनी स्थिति अने संवेध जाणवी. बाकी वर्धु तेज प्रमाणे समजबुं.

संशी मनुष्यनी नागकुमारमां उत्पत्तिः १२. [प्र०] जो तेओ मनुष्योधी आबी उत्पन्न याय तो शुं संज्ञी मनुष्योधी आबी उत्पन्न याय के असंज्ञी मनुष्योधी आबी उत्पन्न याय १ [उ०] हे गौतम ! संज्ञी मनुष्योधी आबी उत्पन्न थाय, पण असंज्ञी मनुष्योधी आबी उत्पन्न न याय-स्थादि जेम असुरकुमारोमां उत्पन्न थवाने योग्य मनुष्योनी वक्तव्यता कही हो तेम कहेवी. यावन्त—

ससंख्यवर्षीय मंदी र्ष० मनुष्यनी नागकुमारमा उत्पत्तिः १३. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्याता वर्षना आयुपदाळा संज्ञी मनुष्य जे नागकुमारोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते केटला काळनी स्थितिवाळा नागकुमारोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट कांड्रक न्यून वे पत्योपमनी स्थिति-वाळा नागकुमारोमां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे वधुं असंख्यान वर्षना आयुपत्राळा तिर्यंचयोनिकोना नागकुमारोमां उत्पन्न थवा संबंधे आदिना त्रण गमको कह्या छे ते अहिं पण कहेवा. पण विशेष ए के प्रथम अने बीजा गमकमां शरीरनुं प्रमाण जघन्य कांड्रक अधिक पांचसो घनुष अने उत्कृष्ट त्रण गाउनुं छे. त्रीजा गमकमां शरीरनी उचाई जघन्य कांड्रक न्यून वे गाउ अने उत्कृष्ट त्रण गाउनी छे. बाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं (३).

जघ॰ अमंख्यात॰ सं॰ मनुष्यनी नाग-कुभारमां उत्पत्तिः १४. जो ते पोते जघन्य काळनी स्थितियाळो होय तो तेने पण त्रणे गमकोमां असुरकुमारमां उत्पन धवाने योग्य असंख्याता वर्षना आयुष्याळा संज्ञी मनुष्यनी पेठे वर्षा हकीकत कहेवी (६).

उन्क्रष्ट॰ बसंख्यात॰ मनुष्यनी नागऊः मा(मां उत्पत्तिः १५. जो ते पोने उत्कृष्ट काळनी स्थितिबाळो होय तो ते संबंधे पण त्रणे गमकोमां असुरकुमारोमां उत्पन्न धवाने योग्य उत्कृष्ट काळनी स्थितिबाळा मंत्री असंख्यातवर्षीय मनुष्यनी पेठे जाणबुं. पण विशेष ए के अहीं नागकुमारोनी स्थिति अने संबेध जाणबो, बाकी बधुं तेज प्रमाण समजबुं (९).

संख्यातवर्षीय संबी मनुष्योनी नागकुभारमां जस्पत्तिः १६. [प्र०] जो तेओ संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योथी आवी उत्पन्न षाय तो शुं पर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योथी के अपर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेओ पर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय. १७. [४०] पज्जत्तसंक्षेज्रवासाउयसिमणुस्से णं भंते ! जे मिवए णागकुमारेसु उवविज्ञत्तर से णं भंते ! केवति० ! [४०] गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्सिट्टितिएसु, उक्कोसेणं देस्पदोपितिकोवमिट्टितिएसु उववज्रांति, एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्राति, एवं जहेव असुरकुमारेसु अववज्ञाति, एवं जहेव असुरकुमारेसु अववज्ञाति संवेहं च जाणेख्या । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! सेवं मंते ! रेते !

#### चउवीसतिमे सए ततिओ उद्देसी समची।

१७. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्य जे नायकुमारोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा नागकुमारोमां उत्पन्न धाय ! [उ०] हे गौतम ! ते किनष्ठ दस हजार वर्षनी स्थितिवाळा अने उत्कृष्ट कांहक न्यून वे पत्योपमनी स्थितिवाळा नागकुमारोमां उत्पन्न याय—इत्यादि जेम असुरकुमारोमां उत्पन्न थवाने योग्य मनुष्यनी वक्तन्यता कही छे तेम अहीं पण नवे गमकोमां वधी कहेवी. पण विशेष ए के अहीं आं नागकुमारनी स्थिति अने संवेध जाणवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### चोवीशमां शतकमां तृतीय उद्देशक समाप्त.

## चउत्ययाई उदेसा।

अवसेसा सुवन्नकुमाराई जाव-थणियकुमारा एए बहु वि उद्देसगा जहेव नागकुमारा तहेव निरवसेसा माणियद्या । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! क्ति ।

#### चउवीसतिमे सते चउत्थयाई उदेसा समचा।

#### ४-११ उद्देशको.

सुवर्णकुमारथी मांडी स्तनितकुमार सुधीना बाकीना आठे उद्देशको नागकुमारोनी पेठे कहेवा. 'हे भगवन्! ते एमज हे, हे भग-बन्! ते एमज छे'.

## चोवीश्रमा शतकमः ४-११ उद्देशको समाप्त.

## दुवालसमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] पुढविकाइया णं मंते ! कओहितो उववज्रांति, कि नेरइपहितो उववज्रांति, तिरिक्ख०, मणुस्ते०, देवेहितो उववज्रांति ! [उ०] गोयमा ! णो णेरइपहिंतो उववज्रांति, तिरि०, मणु०, देवेहितो वि उववज्रांति ।
- २. [प्र॰] जह तिरिक्खजोणिपर्दितोः कि प्रिवियतिरिक्खजोणिपः एवं जहा वक्कतीप उववाओ, जाव-[प्र॰] जह बायरपुढविकाह्यपर्गिदियतिरिक्खजोणिपर्दितो उववद्धति कि पज्जसबादरः जाव-उववद्धति, अपज्जसबादरपुढविः ? [उ॰] गोयमा ! पज्जसबादरपुढवि॰, अपज्जसबादरपुढवि॰ जाव-उववर्द्धति ।

### बारमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे—शुं नैरियकोथी, तिर्यंचोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियकोथी आवी उत्पन्न यता नथी, पण तिर्यंच, मनुष्य अने देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे.

गृभिवीकायिकोनों उपपान-

२. [प्र०] हे भगवन्! जो तेओ [ पृथिवीकायिको ] निर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न याय, तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न याय, तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न याय—इस्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! जेम \*ज्युत्कान्तिपदमां कह्युं छे ते प्रमाणे आहिं उपपात कहेवो, यावत्—'हे भगवन्! जो तेओ बादर पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न याय तो शुं पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकथी के अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकथी आवी यावत्—उत्पन्न थाय छे ! हे गौतम! तेओ पर्याप्त अने अपर्याप्त बन्ने प्रकारना बादर पृथिवीकायिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे !

तियंचीनी पृषिषी-कायिकमा उत्पत्ति-

र \* हे भैतम । एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकवी आदी उत्पन्न थाय छे, यावत्-पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकवी आदी उत्पन्न थाय छे- इत्यादि संबंधे जुओ प्रका॰ पद ६ प॰ २१२-१

- ३. [प्र०] पुढिविकारए णं संते ! जे भविए पुढिविकारएसु उवविकारएसे णं संते ! केवितिकालद्वितीएसु उवविकारणः ! [उ०] गोयमा ! जहकेणं अंतोसुदुत्तद्वितिएसु, उक्रोसेणं वाशीसवाससहस्सद्वितीएसु उवविकारा ।
- धः [प्र०] ते णं अंते! जीवा पगसमपणं-पुच्छा। [उ०] गोयमा! अणुसमयं अविरहिया असंकेष्ठा उवयक्षंति। छेषट्टसंघयणी। सरीरोगाहणा जहवेणं अंगुलस्स असंकेष्ठहभागं, उक्षोसेण वि अंगुलस्स असंकेष्ठहभागं। मस्रचंदसंठिया। बचारि लेस्साओ। णो सम्मदिट्टी, मिच्छादिट्टी, णो सम्मामिच्छादिट्टी। णो णाणी, अन्नाणी, दो अन्नाणा नियमं। णो मण-जोगी, णो वहजोगी, कायजोगी। उवओगो दुविहो वि। चचारि सन्नाओ। चचारि कसाया। एगे फासिविष पन्नते। तिन्नि समुखाया। वेदणा दुविहा। णो इत्थिवेदगा, णो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा। ठितीप जहन्नेणं अंतोमुहुन्तं, उक्कोसेणं बाबीसं वाससहस्सारं। अञ्चवसाणा पसत्था वि, अपसत्था वि। अणुवंधो जहा ठिती १।
- ५. [प्रः] से णं भंते ! पुढविकाइय पुणरिव 'पुढविकाइय'ित केवितयं कालं सेवेज्जा, केवितयं कालं गतिरागितं करेजा ? [उ॰] गोयमा ! भवादेसेणं जहक्षेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेजाइं भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहक्षेणं दो अंतोमुद्धत्ता, उक्कोसेणं असंखेजं कालं-पवितयं जाव-करेजा ? ।
- ६. सो चेव जहब्रकाट्टितीपसु उववन्नो जहन्नेणं अंतोमुदुत्तिटितीपसु, उद्गोसेण वि अंतोमुदुत्तिएसु-एवं चेष वत्त-इया निरवसेसा २।
- ७. सो चेय उक्कोसकालिट्टतीपसु उनयको, जहक्षेणं बावीसवाससहस्सिट्टितीपसु, उक्कोसेण वि बाबीसवासस-हस्सिट्टितीपसु, सेसं तं चेव, जाव—'अणुवंधो'ति । णवरं जहक्षेणं पक्को वा दो वा तिक्रि वा, उक्कोसेणं संखेळा वा असं-खेळा वा उचयिळ्ळा । मचादेसेणं जहकेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ट मचग्गहणाइं, कालादेसेणं जहकेणं बाबीसं वासस-हस्साइं अंतोमुद्दुत्तमन्भिद्दियाइं, उक्कोसेणं छावत्तीरंवाससहस्सुत्तरं सयसहस्सं—प्वतियं कालं—जाव—करेळा ३।
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा पृथिवीका-ियकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] गौतम ! ते जधन्य अन्तर्मुहूर्तनां स्थितिवाळा अने उत्कृष्ट वावीश हजार वर्षनी स्थितिवाळा पृथिवीकायि-कमां उत्पन्न थाय.

परिमाणादि.

8. [प्र०] हे भगवन्! ते जीयो एक समये केटला उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम! तेओ समये समये निरंतर असंख्याता उत्पन्न थाय. तेओ छेवट्ट संघ्यणयाळा होय छे. तेओनं दारीर जघन्य अने उत्कृष्ट पण अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण होय छे. तेओनं चार लेक्याओ होय छे. ते सम्पन्दिए के मिश्रदिए नधी होता, पण मिध्यादिए होय छे. ज्ञानी नधी होता पण अज्ञानी होय छे, तेओने अवश्य मितअज्ञान अने श्रुतअज्ञान ए वे अञ्चान होय छे. तेओ मनोयोगी के वचन-योगी नधी, पण काययोगी छे. उपयोग साकार अने निराकार बने प्रकारनी छे, चार संज्ञाओ अने चारे कपायो होय छे. इन्द्रियोमां एक स्परेंग्दिय होय छे. आदिना त्रण समुद्धानो अने वेटना बने प्रकारनी होय छे. तेओने खीवेद के पुरुषवेद होतो नथी, पण नपुंसक-वेद होय छे. स्थिति जघन्य अन्तर्मुहुर्तनी अने उनकृष्ट बाबीश हजार वर्षनी होय छे. अध्यवसायो प्रशस्त अने अप्रगस्त बने प्रकारना होय छे. अनुवंच स्थिति प्रमाणे जाणको.

कायसंबेध

५. [प्र०] हे भगवन् ! ते पृथिवीकायिक मरीने पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थाय, पुनः पृथिवीकायिक थाय-एम केटला काळ सुधी सेवे-केटला काळ सुधी गगनागमन करे ! [उ०] हे गानम ! भवना अपेक्षाए जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट संख्याता भवो, काळनी अपेक्षाए जघन्य वे अन्तर्भुहुर्न अने उत्कृष्ट असंख्याता वर्ष-एटलो काळ यावत्-गमनागमन करे (१).

पृथिवीकाशिकनं जधः पृथिवीकाः विकसः उत्पत्तिः पृथितीकाशिकनीः उत्कृष्टः पृथिवीका

विक्रमां उत्पत्तिः

- ६. जो ते पृथिवीकायिक जवन्यकाळनी स्थितिवाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न याय तो ते जवन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्तनी स्थितियाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे वधी वक्तव्यता कहेवी (२).
- ७. जो ते पृथिवीकायिक उत्कृष्ट काळनी स्थितित्राळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय तो ते जघन्य अने उत्कृष्ट बावीश हजार वर्षनी स्थितित्राळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय. बाकी वर्षु अनुवंध सुधी पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. पण विशेष ए के जघन्य एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. भवनी अपेक्षाए जघन्य वे मब अने उत्कृष्ट श्लाठ मब तथा काळ-नी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्न अधिक बावीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट एक लाखने छोतेर हजार (१७६०००) वर्ष-एटलो काळ-यावत्-गमनागमन करे (३).

<sup>\*</sup> ७ जे संवेधमां वे पक्षमांना कोइ पण पक्षमां उत्कृष्ट स्थिति होय त्यां वधारेमां वधारे आठ मवनी कायस्थिति होय छे अने ते सिवाय बीजे असंख्यात मवो जाणवा. तेथी वावीश हजारने आठे गुणतां एक लाख अने छोतेर हजार वर्ष बाय छे.

- ८. सो चेव मप्पणा जहचकालद्वितीओ जाओ, सो चेव पढिमिछ्को गमको माणियद्वो। नवरं लेस्साओ तिन्नि। दिती जहचेषां अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। अप्पसत्था अज्यवसाणा। अणुवंधो जहा दिती। सेसं तं चेव ४।
  - ९, सो बेव जहबकालद्वितिएसु उववको स बेव चउत्थगमगवत्तवया माणियदा ५।
- १०. सो चेव उक्कोसकालद्वितीपसु उथवक्षो, एस चेव वसवया । नयरं अहक्षेणं एको वा दो वा तिक्रि वा, उक्कोसेणं संस्रेजा वा, असंस्रेजा वा, जाव-मवादेसेणं अहक्षेणं दो भवग्गहणारं, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणारं, कालादेसेणं जहक्षेणं वावी-सं वाससहस्सारं अंतोमुहुत्तमध्महियारं, उक्कोसेणं अट्टासीरं वाससहस्सारं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अध्महियारं-एवतियं० ६ ।
- ११. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालिट्टितिओ जाओ, एवं तहयगमगसरिसो निरवसेसो भाणियद्यो । नवरं अप्पणा से ठिई जहन्नेणं वावीसं वाससहस्ताहं, उक्कोसेण वि वावीसं वाससहस्ताहं ७ ।
- १२. सो चेव जहभकाछिट्टिरीपसु उववन्नो जहभेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त०। एवं जहा सत्तमगमगो जाब-'मबावेसो'। कालावेसेणं जहभेणं बावीसं वासससहस्साइं अंतोमुहुत्तमन्भहियाई, उक्कोसेणं अट्टासीइं वाससहस्साइं चडिंद् अंतोमुहुत्तीहं अन्मिद्दियाई-एवतियं० ८।
- १३. सो चेव उक्कोसकालिट्टतीपसु उववको जहकेणं वावीसंवाससहस्सिट्टिनीपसु, उक्कोसेण वि वावीसवासहस्स-द्वितीपसु, एस चेव सत्तप्रगमगवत्तवया भाषियवा जाव—'भवादेसो'ति । कालादेसेणं जहकेणं चोयालीसं वाससहस्सारं, उक्कोसेणं छावत्तरिवाससहस्सुत्तरं सयसहस्सं–एवतियं ९ ।
- १४. [प्र०] जह आउक्काइयपरिंगिदियतिरिक्सजोणिपहिंतो उववज्ञांति कि सुहुमआउ०, बादरआउ०। [उ०] पवं चउ-क्रमो मेदो भाणियको जहा पुढिषकाइयाणं।
- १५. [प्र०] आउकाइए णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उवविज्ञास्य से णं भंते ! केयहकालद्वितीएसु उवस-क्षेत्रा ! [उ०] गोयमा ! जहबेणं अंतोमुदुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं वाधीसंवाससहस्सद्वितिएसु उववज्रोजा । एवं पुढविकाइयग-
- ८. जो ते पृथिनीकायिक पोते जघन्य काळनी स्थितिबाळो होय अने पृथिनीकायिकमां उत्पन्न थाय तो ते संबंधे पूर्वोक्त प्रथम गमक कहेवो. विशेष ए के अहीं त्रण लेश्याओ होय छे. स्थित जबन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्तनी होय छे. अध्यवसायो अप्रशस्त होय छे. अनुबंध स्थिति समान जाणवो. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे कहेवुं (४).

जघन्य॰ पृथिषीकाः यिकनी पृषिषीकाः यिकमां उत्पत्तिः

९. जो ते पृथिवीकाथिक जघन्य काळनी स्थितिबाळा पृथिवीकाथिकमां उत्पन्न थाय तो तेने पूर्वोक्त चोथा गमकमां कहेळी वक्तव्यत कहेबी (५).

जबन्य० पृथिनीका-यिकानी जबन्य पृथि-नीकायिकमांउरपत्तिः जबन्य० पृथिनीका-यिकानी उत्कृष्ट० पृथिनीकारियकाम

उन्पत्ति.

- १०. जो ते (जघन्य स्थितिवाळो) पृथिवीकाथिक उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा पृथिवीकायिकामां उत्पन्न थाय तो ते संबंधे ए ज वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के जघन्य एक, बे अने त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय. यावत्—भवादेशथी जघन्य बे मव अने उन्कृष्टथी आठ मव तथा काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्भुद्धृतं अधिक वावीश हजार वर्ष अने उत्कृष्टथी चार अन्त-र्मुद्धृतं अधिक अठ्याशी हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (६).
- ११. जो ते पोते उत्कृष्ट काळर्ना स्थितियाळो होय तो तेने ए प्रमाणे त्रीजा गमकना समान आखो गमक कहेवो. पण विशेष ए के तेनी पोतानी स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट बाबीश हजार वर्षनी होय छे (७).

उत्कृष्ट॰ पृथिषीका-थिकनी पृथिषीका-थिकमा उत्पत्तिः

१२. जो ते जीव जघन्यकाळनां स्थितिवाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय, तो ते जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्तनां स्थितिवा-ळामां उत्पन्न थाय-ए प्रमाणे अहीं सातमा गमकनी वक्तन्यता यावत्-भवादेश सुधी कहेवी. कालादेशथी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बावीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक अठवाशी हजार वर्ष-एटलो काळ यावत्-गमनागमन करे (८).

उत्कृष्ट॰ पृथिषीका-यिकनी जपन्य॰ पृथिबी कायिकमां उत्पत्ति

१३. जो ते जीव उत्क्रष्ट काळनी स्थितिवाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्क्रष्ट वावीश हजार वर्षनी स्थिति-वाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय. अही वधी सप्तम गमकर्नी वक्तव्यता यावत्—भवादेश सुधी कहेवी. काळादेशथी अवन्य चुम्माळीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट एक ळाखने छोतेर हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (९).

उत्क्रप्ट० पृथ्वीकायि-क्षत्री उत्क्रष्ट० पृथ्वी-कायिकमां उत्पत्ति-

१४. [प्र०] जो ते (पृथिवीकायिक) अप्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकथी आवी उत्पन्न थाय तो छुं सूक्ष्म अप्कायिकथी के बादर अप्कायिकथी आवी उत्पन्न थाय–इत्यादि पृथिवीकायिकनी पेठे सूक्ष्म, बादर, पर्याता अने अपर्याता—ए चार मेट कहेवा

अप्कायिकनी पृथि-वीक्षयिकमां उत्पक्तिः

१५. [प्र०] हे भगवन् ! जे अप्कायिक पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिबाळा पृथिवीकायि-कमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य अन्तर्मुहर्त अने उत्कृष्ट बाबीश हजार वर्षनी स्थितिबाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय. मगसरिसा नव गमगा माणियद्वा ९। नवरं थिवुगांबंदुसंडिए। दिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उद्घोसेणं सत्त वाससहस्साहं। एवं अणुबंघो वि। एवं तिसु वि गमएसु। दिती संवेहो तहयछटुसत्तमटुमणवमगमेसु-भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाई, उद्घोसेणं अह भवग्गहणाई, सेसेसु वउसु गमएसु जहन्नेणं दो भवग्गहणाई, उद्घोसेणं असंखेखाई भवग्गहणाई। तितयगमए कालादेसेणं जहन्नेणं वावीसं वाससहस्साई अंतोमुहुत्तमन्मिहयाई, उद्घोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं-एवितयं०। छट्टे गमए कालादेसेणं जहन्नेणं वावीसं वाससहस्साई अंतोमुहुत्तमन्मिहयाई, उद्घोसेणं अहुनेणं अहुनिति वाससहस्साई वउदि अंतोमुहुत्तेष्ठं अन्मिहयाई-एवितयं०। सत्तमे गमए कालादेसेणं जहन्नेणं सत्त वाससहस्साई अंतोमुहुत्तमन्मिहयाई, उद्घोसेणं अहुनेशें सत्त वाससहस्साई अंतोमुहुत्तमन्मिहयाई, उद्घोसेणं अहुनेशें वाससहस्साई व्यक्तियं०। अहुमे गमए कालादेसेणं जहन्नेणं सत्त वाससहस्साई अंतोमुहुत्तमन्मिहयाई, उद्घोसेणं अहुनितं वाससहस्साई वर्जाहें अंतोमुहुत्तेष्ठिं अन्मिहयाई-एवितयं०। णवमे गमए भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाई, उद्घोसेणं अहु भवग्गहणाई, कालादेसेणं जहन्नेणं पक्त्यतीसं वाससहस्साई, उद्घोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं-एवितयं०। एवं णवसु वि गमएसु आउद्घादिई जाणियद्वा ९।

- १६. [प्र०] जद्द तेउक्कादपहिंतो उववज्रांति० ? [उ०] तेउक्कादयाण वि एस वेव वसवया । नवरं नवसु वि गमपसु तिश्वि छेस्सामो । तेउक्कादया णं सुर्दकलावसंठिया । ठिर्द जाणियवा । तर्दयगमप कालादेसेणं जहन्नेणं वावीसं वाससहस्सादं अंतोमुहु समन्महियादं उक्कोसेणं अट्टासीति वाससहस्सादं वारसिंह राद्दिपाईं अन्महियादं –एवतियं० । एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियवो ।
- १७. [प्र०] जह वाउद्वाधपदितो० ? [उ०] वाउद्वाध्याण वि पयं चेव णव गमगा अद्देव तेउद्वाद्याणं । णवरं पढ़ागासंठिया पत्रता । संवेद्दो वाससदस्से हें कायद्वो । तद्दयगमय काळादेसेणं जहचेणं वावीसं वाससदस्सादं अंतोमुदुत्त-मन्भद्दियादं, उद्घोसेणं पर्ग वाससयसदस्सं । पवं संवेद्दो उवजुंजिऊण माणियद्वो ।
- १८. [प्र०] जद्द वणस्सदकादपर्दितो उववर्द्धाति० १ [उ०] वणस्सदकादयाणं आउकाद्दयगमगसरिसा णव गमगा भाणियद्या । नवरं णाणासंठिया । सरीरोगाहणा–पटमपसु पच्छिद्धपसु य तिसु गमपसु अहन्नेणं अंगुरुस्स असंखेद्धदमानं,

ए प्रमाणे पृथिवीकायिकनी पेटे अहि अप्काय संबंधे पण नवे गमको कहेता. पण विशेष ए के अप्कायिकना शरीरनुं संस्थान स्तिबुक्त— पाणीना परपोटाना आकारे हे. स्थिति जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट सात हजार वर्षनी होय हे. अनुबंध पण ए प्रमाणे जाणबो. ए रीत त्रणे गमना जाणवुं. त्रीजा, छहा, सातमा, आटमा अने नवमा गममां रावेष भवादेशयी जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट आठ भव होय हे, तथा बाकीना चारे गममां जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट असंख्याना भवो होय हे. त्रीजा गममां काळादेशयी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाबीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट्यी एक छाख अने राोळ हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. छहा गममां काळादेशयी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक अट्याशी हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. सातमा गममां काळादेशयी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक सात हजार वर्ष अने उत्कृष्ट अट्याशी हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. आठमा गममां काळादेशयी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक सात हजार वर्ष अने उत्कृष्ट अट्याशी हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. तथा नवमा गममां भवादेशयी जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट आठ भवो, तथा काळादेशयी जघन्य ओगणत्रीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट एक छाख सोळ हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. तथा नवमा गममां भवादेशयी जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट आठ भवो, तथा काळादेशयी जघन्य ओगणत्रीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट एक छाख सोळ हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. ए प्रमाणे नवे गमोमां अप्कायिकनी स्थिति जाणवी (९).

देवःकायिकनी पृषि वीकायिकमां उत्पन्तिः १६. [प्रo] हे भगवन् ! जो ते तेउकायथी (अग्निकायिकथी ) आवी उपने तो तेउकायिकने पण एज वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के नवे गममा त्रण लेदयाओं कहेवी. तेउकायनुं संस्थान सोयना समृहना आकारे होय छे. अने स्थिति (त्रण अहोरात्रनी) जाणबी. त्रीजा गममां काल्यदेशथी जयन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बावीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट वार अहोरात्र (रात्रिदिवस) अधिक अध्याशी हजार वर्ष पटलो काल-यावत्-गमनागमन करे. ए प्रमाण संवेष घ्यान राखीन कहेवो (९).

वायुकायिकनी पृषि-वीकायिकमा उत्पत्तिः १७. जो तेओ वायुकायिकोथी आर्वा उत्पन्न याय तो तेने तेजस्कायिकोनी पेठे नवे गमको कहेवा. पण विशेष ए के वायुका-यिकोना दारीरोनो आकार (संस्थान) ध्वजाना आकारे होय छे. संवेध हजारो धर्षबढे करवो. त्रीजा गममां काळादेशयी जधन्य अन्त-र्मुहूर्त अधिक बाबीश हजार वर्ष अने उन्हार एक टाख वर्ष--ए प्रमाणे संवेध विचारीने कहेवो.

वनस्पतिकायिकोनी पृथ्वित्रीकायिकमां उत्पत्तिः १८. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ वनस्पतिकाधिकोधी आयी उत्पन्न याय तो—इस्यादि वनस्पतिकाधिकना नवे गमको अप्का-यिकनी पेटे कहेवा. पण विशेष ए के वनस्पतिना शरीरो अनेक प्रकारना संस्थान—आकृतिवाळा होय छे. पहेला अने छेछा त्रणे गमकोमां शरीरतुं प्रमाण जघन्य अंगुल्ना असंख्यातमा भाग जेटलुं अने उत्कृष्ट एक हजार योजन करतां अधिक होय छे. मध्यमना त्रणे उद्योक्षेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं, मिन्निष्ठपञ्च तिस्र तहेव जहा पुढिवकाहयाणं। संयेही ठिती य जाणियद्या। तहयगमे काळा-हेसेणं जहक्षेणं बाबीसं बाससहस्साहं अंतोमुहुत्तमन्भिहयाहं, उक्कोसेणं अट्ठाबीस्नुत्तरं वाससयसहस्सं-एवतियं। एवं संवेहो उवस्तुंजिऊण माणियद्यो ९।

- ं १९. [प्र0] अर वेदंदिपर्दितो उपवर्जात कि पञ्जसवेदंदिपर्दितो उववर्जात, अपज्जसवेदंदिपर्दितो । [उ०] गोयमा ! पञ्जसवेदंदिपर्दितो उपवर्जात, अपज्जसवेदंदिपर्दितो वि उपवर्जाति ।
- २०. [प्र०] बेहंदिय णं भंते ! जे भविय पुढिविक्कारपसु उवविक्कारप से णं भंते ! केवतिकाल० ? [७०] गोयमा ! जहस्रेणं भंतोमुहुत्तद्वितीपसु, उक्रोसेणं वावीसंवाससहस्सद्वितीपसु।
- २१. [प्र०] ते णं भंते! जीवा एगसमएणं० ? [उ०] गोयमा! जहन्नेणं एको था दो था तिश्वि था, उक्कोसेणं संक्षेज्ञा वा असंक्षेज्ञा था उववज्ञंति । छेवट्टसंघयणी । ओगाइणा जहन्नेणं अंगु ?स्स असंक्षेज्ञहभागं, उक्कोसेणं थारस जोयणाई । इंडसंदिया। तिश्वि लेसाओ । सम्मदिट्टी वि, मिच्छादिट्टी वि, नो सम्मामिच्छादिट्टी । दो णाणा, दो अन्नाणा नियमं । णो मणजोगी, वयजोगी वि । उवथोगो दुविहो वि । बसारि सन्नाओ । बसारि कसाया । दो इंदिया पन्नसा, तं जहा-जिम्मिदिए य फार्सिदिए य । तिश्वि समुग्याया । सेसं जहा पुटिबिकाइयाणं । णवरं दिती जहन्नेणं अंतोमुदुत्तं, उक्को-सेणं बारस संबच्छराइं । एवं अणुवंघो थि, सेसं तं बेव । भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संक्षेज्ञाइं भव-ग्राहणाइं, कालोदेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुदुत्ताः उक्कोसेणं संक्षेज्ञाइं अव-ग्राहणाइं, कालोदेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुदुत्ताः उक्कोसेणं संक्षेज्ञं कालं-ग्राहणाइं, कालोदेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुदुत्ताः उक्कोसेणं संक्षेज्ञं कालं-ग्राहणाइं, कालोदेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुदुत्ताः उक्कोसेणं संक्षेजं कालं-ग्राहणाइं, कालोदेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुदुत्ताः उक्कोसेणं संक्षेजं कालं-ग्राहणाइं, वि
  - २२. सो चेव जहन्नकालद्वितीपसु उववन्नो एस चेव वत्तवया सद्या २।
- २३. सो खेव उक्कोसकालट्टितिएसु उवयको एस चेव बेंदियस्स लक्षी । नवरं भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहन्नेणं वावीसं वाससहस्साइं अंतोमुदुत्तमन्महियाइं, उक्कोसेणं अट्टासीति वासस-हस्साइं अडवालीसाए संवच्छरेहिं बन्महियाइं-एवतियं० ३ ।

गममां पृथिवीकायिकोनी पेठे जाणबुं. संवेध अने स्थिति (भिन्न) जाणबी. त्रीजा गममां काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाबीदा हजार वर्ष अने उत्कृष्ट एक ढाखने अठ्याद्यी हजार वर्ष-एटटो काळ यायत्-गमनागमन करे. ए प्रमाणे संवेध उपयोग पूर्वक कहेवो (९).

१९. [प्र०] जो तेओ बेइन्द्रियथी आवी उत्पन्न थाय तो छुं पर्याप्ता बेइन्द्रियथी के अपर्याप्ता बेइन्द्रियथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! पर्याप्त अने अपर्याप्त बने प्रकारना बेइन्द्रियोथी आबी उत्पन्न थाय.

वेदन्द्रियनी पृत्रिवी-काथिकमां उत्पत्ति.

- २० [प्र०] हे भगवन् ! जे बेइन्द्रिय, पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते केटला काळनी स्थितिवाळा पृथिवीकायि-कमां उत्पन्न पाय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्य अन्तर्भुहूर्तनी स्थितिवाळा अने उत्कृष्ट बाबीरा इजार वर्षनी स्थितिवाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न पाय.
- २१. [प्र०] हे भगवन्! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न पाय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्य एक, वे के त्रण, अने उत्कृष्ट संख्याता के असंख्याता उत्पन्न पाय . तेओ छेवट्ट संख्यावाळा होय छे. तेओना शरीरनुं प्रमाण जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण अने उत्कृष्ट बार योजन होय छे, तेओना शरीर हुंडकसंस्थानवाळा होय छे. तेओने त्रण लेक्याओ होय छे. तेओ मन्यग्रिष्ट अने मिथ्यादृष्टि होय छे, पण मिश्रदृष्टि होता नथी. तेओने वे ज्ञान अने वे अज्ञान अवश्य होय छे. तेओ मनोयोगी नधी, पण वचनयोगी अने काययोगी होय छे. उपयोग बने प्रकारनो होय छे. चार संज्ञाओ, चार कपायो, वे इन्द्रियो—जीह्नेन्द्रिय अने स्पर्शेन्द्रिय अने त्रण समुद्धातो होय छे. वाकी बधुं पृथिवीकायिकोनो पेठे कहेवुं. पण विशेष ए के स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्तनी अने उत्कृष्ट बार वर्षनी होय छे. ए प्रमाणे अनुवंध पण जाणवो. वाकी बधुं पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवुं. भवादेशथी जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट संख्याता भवो तथा काळादेशथी जघन्य वे अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट संख्यातो काळ—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे.
  - २२. जो ते वेइन्द्रिय जघन्य काळनी स्थितिवाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय तो नेने बधी ए ज पूर्वीक्त वक्तन्यता कहेवी (२).
- २३. जो ते बेइन्द्रिय, उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय तो तेने पण आ ज वक्तव्यता कहेबी. विशेष एके भवादेशथी जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट आठ भव, तथा कालादेशथी जघन्य अन्तर्भुहूर्त अधिक वाबीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट अड-तालीश वर्ष अधिक अठ्याशी हजार वर्ष —एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (३).

परिमाणादिः

वेदन्द्रियनी जवन्य*व* पृथिवीकाचिकमां उत्पन्तिः

बेइन्द्रियनी उत्कृष्ट० पृथिवीकायिकमां उत्पत्तिः २४. सो चेव अप्पणा जहन्नकालिंदृतीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तवया तिसु वि गमपसु। नवरं इमाइं सत्तः णाणत्ताइं—१ सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाणं। २णो सम्मविद्धी, मिच्छिदिद्धी,णो सम्मामिच्छादिद्धी। ३ दो अन्नाणा णियमं। ४ णो मणजोगी, णो वयजोगी, कायजोगी। ५ ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उद्घोसेण वि अंतोमुहुत्तं। ६ अज्यवसाणा मप-सत्या। ७ अणुवंघो जहा ठिती। संवेदो तहेव आदिलेसु दोसु गमपसु, तह्यगमप भवादेसो तहेव अह भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहन्नेणं वावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमन्मिद्दयाइं, उद्घोसेणं अट्टासीतिं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तिहं अम्मिद्दयाइं ६।

२५. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, प्यस्स वि ओहियगमगसरिसा तिक्कि गमगा भाषियद्वा। नवरं तिसु वि गमपसु ठिती जहकेणं वारस संवच्छराई, उक्कोसेण वि वागस संवच्छराई। एवं अणुवंधो वि। मवादेसेणं जहकेणं दो भयगहणाई, उक्कोसेणं अट्ट मवग्गहणाई। कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियद्वं, जाव-णवमे गमप जहकेणं वाबीसं वास-सहस्साई वारसिहं संवच्छरेहिं अन्मिहयाई, उक्कोसेणं अट्टासीति वाससहस्साई अडयालीसाप संवच्छरेहिं अन्मिहयाई-एवतियं० ९।

२६. [प्र०] जह तेशंदिपाहिंतो उयबज्जंति०? [उ०] एवं चेय नव गमगा माणियद्या, नवरं आदिलेखु तिसु वि गमपसु सरीरोगाहणा जहन्नणं अंगुलस्स असंसेज्जहमागं, उद्योसेणं तिन्नि गाउयाई। तिन्नि इंदियाई। दिती जहन्नणं अंतोमुदुत्तं, उद्योसेणं प्रगूणपन्नं राइंदियाई। तइयगमप काटादेसेणं जहन्नेणं वादीसं वाससहस्साई अंतोमुदुत्तमन्मिहयाई, उद्योसेणं अद्वा-सीति वाससहस्साई छन्नउई राइंदियसयमन्मिहयाई—एवतियं०। मज्जिमा तिन्नि गमगा तहेव, पिष्टिमा वि तिन्नि गमगा तहेव। नवरं दिती जहन्नेणं एगूणपन्नं राइंदियाई, उद्योसेण वि एगूणपन्नं राइंदियाई। संवेहो उच्छोजिकण माणियद्यो ९।

२७. [प्र॰] जइ चर्डारेदिएहिंतो उववज्रंति॰ ? [उ॰] एवं चेव चर्डारेदियाण वि नव गमगा भाणियद्या । नवरं पतेसु

ज्ञधन्य*ः वेद*िट्रयनी **पृष्टितीकायिक**मां उत्पत्तिः २४. जो ते बेहन्द्रिय जघन्यकाळनी स्थितिबाळो होय अने ते पृथिबीकायिकमां उत्पन्न थाय तो तेने पण त्रणे गमकोमां पूर्वीक वक्तन्यता कहेनी. पण अहिं आ मान विशेषता छे--१ \*शरीरनुं प्रभाण पृथिबीकायिकोनी पेटे (अंगुलना असंख्यातमा मागनुं) जाणतुं, २ सम्पग्दिए अने मिश्रदृष्टि नथी पण मिथ्यादृष्टि छे, ३ तेने अवश्य बे 'अज्ञान होय छे, ४ मनयोग के बचनयोग नथी, पण काययोग छे, ५ स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्तनी होय छे, ६ अध्यवसायो अप्रशस्त होय छे. ७ अनुबंध स्थितिनी पेठे जाणतो. तथा बीजा त्रिकना अथमना बे गमकोमां मंबेध पण ते ज प्रमाणे जाणको. त्रीजा गमकमा भवादेश ते ज प्रमाणे आठ भव सुचीनो जाणको. अने कात्यदेशथी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाबीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक अज्याशी हजार वर्ष-एट्डो काळ यावत्-गमनागमन करे (४-५-६).

ज्यकृष्ट० बेइन्द्रियनी पृथिबीकाथिकमा उत्पन्तिः २५. जो ते बेइन्द्रिय पोते उन्क्रष्टकाळनी स्थितिबाळो होय अने पृथिशीकायिकमां उत्पन्न थाय तेने औविक गमक समान त्रण गमक कहेबा. पण बिशेष ए के ए त्रण गमोमां स्थिति जघन्य अने उन्क्रष्ट बार वर्षनी होय छे, अनुत्रंध पण ए ज प्रमाणे छे. भवादेशथी जघन्य बे भव अने उन्कृष्ट आठ मव तथा काळादेशथी विचारीने संबंध कहेबो. यावत्—नवमा गममां जघन्य बार वर्ष अधिक बाबीश हजार थर्ष, अने उन्कृष्ट अडताछीश वर्ष अधिक अध्याशी हजार धर्म-एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (९).

नेइन्द्रियनी पृथिवी-काथिकमां नत्पन्तिः २६. जो ते पृथिवीकायिको नेइन्द्रियोथी आवी उत्पन्न याय तो तेने पण ए प्रमाणे नव गमको कहेवा. पण विशेष ए के प्रध-मना त्रणे गमकमा शरीरनुं प्रमाण जयन्य अंगुलना असंख्यातमां भागनुं अने उन्हृष्ट त्रण गाउनुं होय छे. त्रण इन्द्रियो होय छे. स्थिति जयन्य अन्तर्भुहूर्त अने उन्हृष्ट ओगणपचास राजिदिवसनी छे. त्रीजा गमकमां काळनी अपेक्षाण जयन्य अन्तर्भुहूर्त अधिक बावीश हजार वर्ष अने उन्हृष्ट एकसो छन्नं राजिदिवस अधिक अध्याशी हजार वर्ष-एटच्ये काळ यावत्—गमनागमन करे. बच्चेना त्रण गमको पण ने ज प्रमाणे जाणवा. छेला त्रण गम पण एम ज जाणवा. पण विशेष ए के स्थिति जवन्य अने उत्कृष्ट ओगणपचास राजिदिवसनी छे अने संबेध विचारीने कहेवो (९).

चनर्षिन्द्रवनी पृथि नी काथिकमां अपिका २७. जो ते पृथिवीकार्यिको चउरिन्द्रियधी आबी उपजे तो तेने पण ए ज प्रमाणे नये गमो कहेबा. परन्तु आ नीचेनी विशेषता

२४ \* अहिं वेडि इय गर्निष्ट स्थितिवाळो होवाथी तेनुं शरीर अगुलना अग्रेख्यातमा भागनुं जाणबुं. वळा तेओनी जघन्य स्थिति होवाथी तेमां साम्बा-दन सम्यर्टिष्ट उत्पन्न थतो नथी, तेथी त्यां सम्यर्टिष्ट नथी. तेम मिथाटिष्ट पण नथी. केमके साम्बादन सम्यर्टिष्ट अजघन्य स्थितिवाळा वेदिन्द्रियोमां उत्पन्न याम छे.

<sup>ं</sup> अहि वे अज्ञान कहां छे अने पूर्वे ज्ञान अने अज्ञान बन्ने बहेलां छे. योगद्वारमां जघन्य स्थितिवाळो होयाथी तेआंने वचन योग होतो नशी, अने पूर्वेना गमकमां वचन योग पण कहेलो छे. स्थिति अन्तर्मुहूर्तेनी आणवी, अने पूर्वेना गममां बार वररानी कही छे. पूर्वे प्रशस्त अने अप्रशस्त-एम बन्ने प्रकारना अध्यवसायो होय छे, पण अहि अप्रशस्त अध्यवसायो होय छे. अजुबन्ध तो स्थिति प्रमाणे जाणवो.

श्रेव ठावेसु नाणता भाणियज्ञा । सरीरोगाहणा जहन्नेणं मंगुलस्स थसंसेखरभागं, उक्कोसेणं वत्तारि गाउयारं । ठिती जहनेणं मंतोसुदुत्तं, उक्कोसेण य छम्मासा । एवं अणुवंघो वि । यत्तारि रंदियार्र, सेसं तं वेव जाव—नवमगमए 'कालादेसेणं जहनेणं वा-दीसं वाससहस्सारं छोर्डे मासेदि अम्मदियारं, उक्कोसेणं अट्टासीतिं वाससहस्सारं चडवीसाए मासेदि अम्मदियारं'-एवतियं० ९ ।

- २८. [प्र॰] जर पंचिवियविरिक्जजोणिपर्दितो उववज्रंति किं सम्निपंचिवियतिरिक्जजोणिपर्दितो उववज्रंति, अस-निर्पाचिवियतिरिक्जजोणिए॰ र्र [ड॰] गोयमा ! सन्निपंचिविय॰, असन्निपंचिविय॰।
- २९. [प्र॰] जर असमिपंचिदिय॰ कि जलचरेहितो उववज्रंति जाव-कि पज्जसपहितो उववज्रंति, अपज्जसपहितो उववज्रंति ? [उ॰] गोयमा ! जाब-पज्जसपहितो वि उववज्रंति, अपज्रसपहितो वि उववज्रंति ।
- ३०. [प्र०] असिक्षपंचिवियतिरिक्कजोणिए णं मंते ! जे मिष्य पुढिविकारपसु उवविज्ञारप से णं भंते ! केविते० ! [७०] गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वावीसं वाससहस्सारं ।
- ३१. [प्र०] ते णं संते! जीवा० [उ०] एवं जहेब बेइंदियस्स ओहियगमए छदी तहेब। नवरं सरीरोगाहणा जहबेणं अंगुलस्स असंबेज्ञहमागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। पंचिदिया। ठिती अणुवंधो (य) जहबेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुषकोडी। सेसं तं चेव। मवादेसेणं जहकेणं दो मवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ट मवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहकेणं दो मंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं वत्तारि पुषकोडीओ अट्टासीतीए वाससहस्सेहिं अन्मिहियाओ-एवतियं०। णवसु वि गमएसु कायसंवेहो-भवादेसेणं जहकेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणाइं। कालादेसेणं उवज्ञंजिऊण भाणियवं। नवरं मिज्यमपसु तिसु गमएसु जहेब बेइंदियस्स, पिछल्लएसु तिसु गमएसु जहोब प्रतस्स चेव पढमगमएसु। नवरं ठिती अणुवंधो (य) जहकेणं पुषकोडी, उक्कोसेण वि पुषकोडी, सेसं तं चेव जाव-नवमगमपसु-'जहकेणं पुषकोडी वावीसाए वाससहस्सेहिं अन्मिहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुषकोडीओ अट्टासीतीए वाससहस्सेहिं अन्मिहियाओ'-एवतियं कालं सेवेज्ञा ९।
- ३२. [प्र॰] जद सम्निर्पिचदियतिरिक्कजोणिपदितो उगवज्ञांति कि संखेळवासाउय॰, असंकेळवासाउय॰ ? [उ०] गोयमा ! संकेळवासाउय॰, णो असंकेळवासाउय॰ ।

जाणबी—'शरीरनी अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट चार गाउनी होय छे. स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट छ मासनी होय छे. अनुबंध पण एमज जाणबो. इन्द्रियो चार होय छे.' बाक्षी बधुं तेज प्रमाणे जाणबुं, यावत्—नवमा गमकमां काळादेशयी जघन्य छ मास अधिक बावीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चौबीश मास अधिक अठ्याशी हजार वर्ष—एटलो काळ सेवे—यावत्—गमनागमन करे (९).

२८. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते पृथिवीकायिक पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न याय, तो द्धं संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयो-निकोथी आवी उत्पन्न थाय के असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! संज्ञी अने असंज्ञी बन्ने प्रकारना पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय.

पंचेन्द्रिय **विर्यं जनी** पृषिषीकायिक**र्मा** उत्पक्तिः

२९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते असंद्री पॅचेन्द्रिय तिर्येचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो ह्युं जलचरोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्–पर्याप्ता के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ! [૩०] हे गौतम ! पर्याप्ता अने यावत्–अपर्याप्ताथी पण आवी उत्पन्न थाय.

असंबी तिर्वेचनी पृत्रिवीकायिकमां उत्पत्ति.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! असंबी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, जे पृथिवीकायिकमां उत्पन्न यवाने योग्य छे, ते केटला काळनी स्थिति-वाळा प्रथिवीकायिकोमां उत्पन्न याय ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट बाबीश हजार वर्षनी स्थितिवाळा पृथिवीका-पिकोमां उत्पन्न थाय.

परिमाणादि-

- ३१. [प्र०] हे भगवन् ! ते असंझी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो एक समये केटला उत्पन्न थाय—इत्यदि जेम बेइन्द्रियना औधिक—सामान्य गमकमां जे वक्तव्यता कही छे ते वक्तव्यता आहें कहेवी. पण विशेष ए के आहें शरीरानी जघन्य अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट एक हजार योजन जेटली छे. तेओने पांच इन्द्रियो छे. स्थिति अने अनुबंध जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनो छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. भवनी अपेक्षाए जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट आठ भव तथा काळनी अपेक्षाए जघन्य वे अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अवयाशी हजार वर्ष अधिक चार पूर्वकोटी—एटलो काळ यायत्—गतिआगति करे. नवे गमकोमां मवनी अपेक्षाए जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट आठ भव होय छे. अने काळनी अपेक्षाए उपयोगपूर्वक कायसंबेध कहेवो. पण विशेष एके बच्चेना त्रणे गमकोमां बेइन्द्रियना बच्चेना गमको पेठे जाणवुं. अने छेल्ला त्रणे गमकोमां आना प्रथमना त्रण गमकोनी पेठे समजवुं. पण विशेष ए के स्थित अने अनुबंध जघन्य तथा उत्कृष्ट पूर्वकोटी होय छे. बाकी बधुं पूर्य प्रमाणे जाणवुं. यावत्—नवमा गमकमां जघन्य पूर्वकोटी अधिक वावीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक अव्याशी हजार वर्ष —एटलो काळ यावत्—गतिआगति करे (९).
- ३२. [प्र॰] जो ते पृथिवीकायिक संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचयोनिकोथी आबी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वर्षना आयुपवाळा के असंख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचयोनिकोथी आबी उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गौतम ! ते संख्याता वर्षना आयुषवाळा तिर्येचयोनिकोथी आबी उत्पन्न थाय पण असंख्याता वर्षना आयुषवाळा तिर्येचयोनिकोथी आबी उत्पन्न व थाय.

संबी तिर्येचनी वृक्ति-बीकाविकमां उत्पत्ति-

- ३३. [प०] जर संबेखवासाउय० कि जलयरोहितो० ! [उ०] सेसं जहा बसबीणं, जाव-
- ३४. [प्र०] ते णं मंते! जीवा पगसमपणं केवितया उववर्जाति! [उ०] एवं जहा रयणप्यमाप उववज्रमाणस्स सिवस्स तहेव इह वि । नवरं थोगाहणा जहनेणं अंगुलस्स असंबेज्जहमागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, सेसं तहेव जाव-काला-वेसेणं जहनेणं वो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं वत्तारि पुषकोडीओ अट्टासीतीप वाससहस्सेहि अध्यहियाओ प्यतियं०। पदं संवेहो णवसु वि गमपसु जहा असधीणं तहेव निरवसेसं। लड़ी से आदिष्लपसु तिसु वि गमपसु पस चेव मजिल्लाएसु तिसु वि गमपसु पस चेव । नवरं इमारं नव णाणत्तारं-१ ओगाहणा जहनेणं अंगुलस्स असंबेज्जितमागं, उक्कोसेणं अंगुलस्स असंबेज्जितमागं। तिथि लेस्साओ । मिष्णादिट्टी। दो अधाणा । कायजोगी। तिथि समुग्याया । दिती जहनेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अप्यसत्या अज्ञवसाणा । अणुवंधो जहा दिती, सेसं तं चेव । पण्णिष्ठपसु तिसु वि गमपसु जहेव पढमगमप । णवरं दिती अणुवंधो जहनेणं पुषकोडी, उक्कोसेण वि पुषकोडी, सेसं तं चेव ९।
- ३५. [म॰] जद मणुस्सेहितो उववज्रंति कि सिन्नमणुस्सेहितो उववज्रंति, असिन्नमणुस्सेहितो॰ १ [ड॰] गोयमा १ सिन्नमणुस्सेहितो॰, असिन्नमणुस्सेहितो वि उववज्रंति ।
- ३६. [म॰] असिंबमणुस्से णं मंते! जे मविए पुढविकाइएसु से णं मंते! केवितकाल॰ ? [४०] एवं जहा असिंब-पंचिवियितिरिक्खजोणियस्स जहस्रकालद्वितीयस्स तिन्नि गमगा तहा एयस्स वि मोहिया तिन्नि गमगा भाणियन्ना तहेव निरवसेसं, सेसा छ न भण्णंति १।
- ३७. [म०] जद्द सिन्नमणुस्सेहितो उववर्क्चति किं संकेजवासाउय०, असंकेजवासाउय० ? [उ०] गोयमा ! संकेज्य-बासाउय०, णो असंकेजवासाउय० ।
- ३८. [४०] जह संबेजवासाउयः किं पज्जत्तः, अपजात्तः ! [उ०] गोयमा ! पज्जत्तसंबेजः, अपजात्तसंबेजवासा-उयः जाव--उवयजंति ।
- ३१. [प्र॰] जो संस्याता वर्षना आयुपवाळा सं॰ पं॰ निर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न याय तो शुं जलचरोथी आवी उत्पन्न याय—स्त्यादि बाकीनी बधी वक्तन्यता असंझी पंचेन्द्रिय तियर्चेनी पेठे जाणवी, यावत्—
- ३४. [प्र०] हे भगवन्! ते (पृथिवीकायिकमां उत्पन्न पवा योग्य संख्याता वर्षना आयुषवाळा संझी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो) एक समये केटला उत्पन्न पाय? [७०] हे गीतम! जेम रत्नप्रभामां उपजवाने योग्य संझी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी वक्तव्यता कही छे तेम अहिं पण कहेंनी. पण विशेष ए के शरीरनी अवगाहना जवन्य अंगुलनो असंख्यातमो माग अने उत्कृष्ट एक हजार योजन होय छे. बाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं. यावत्—काळनी अपेक्षाए जवन्य वे अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक अवयाशी हजार वर्ष—एटलो काळ यावत्—गतिआगति करे. ए प्रमाणे नवे गमकोमां बधो संवेध असंझी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी पेठे कहेंबो. प्रथमना श्रणे अने वर्षना त्रणे गमकोमां पण ए ज व्यथ्य—वक्तव्यता कहेंबी. पण वर्चना त्रणे गमकोमां आ नव विशेषताओ छे—१ 'शरीरनी अवगाहना जवन्य अने उत्कृष्ट अंगुलनो असंख्यातमो माग होय छे, २ तेओने शण लेश्याओ होय छे, ३ तेओ मिथ्यादृष्टि होय छे, ४ तेने वे अङ्गान छे, ५ तेओ काययोगवाळा छे, ६ तेओने त्रण समुद्वातो होय छे, ७ स्थिति जवन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त होय छे, ८ अध्यवसायो अप्रवास छे अने ९ अनुवंध स्थितिनी प्रमाणे जाणवो.' बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे कहेतुं. तथा छेला त्रणे आलापकमां प्रथम गमकनी पेटे वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के स्थिति अने अनुवंध जधन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनो होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवं (९).

मनुष्योनी पृथिवीः काविकोमां उत्पत्तिः ३५. [प्र०] हे भगवन्! जो ते पृथिवीकाियको मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय तो द्धं संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय के असंज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम! संज्ञी अने असंज्ञी बन्ने प्रकारना मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय.

व्यसंत्री मनुष्योनी पृष्यपीकायिकोमा अस्पत्तिः ३६. [प्र०] हे भगवन् ! असंही मनुष्य, जे पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा पृथिवीका-यिकमां उत्पन्न धाय ! [उ०] जेम जघन्यकाळनी स्थितिवाळा असंही पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक संबन्धे प्रण गमो कह्या छे तेम आ संबंधे पण सामान्य त्रण गमको सम्पूर्ण कहेवा अने बाकीना छ गमको न कहेवा.

संबंध मनुष्योनी पृष्टिकीकायिकमां स्टब्सिस

- ३७. [प्र०] जो तेओ संज्ञी मनुष्योधी आबी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वर्षना आयुषवाळा के असंख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय है [उ०] हे गीतम ! तेओ संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय, पण असंख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योधी आवी उत्पन्न न थाय.
- ३८. [प्र०] जो तेओ संस्थाता वर्षना आयुपवाळा मनुष्योची आवी उत्पन्न धाय तो शुं पर्याप्ता के अपर्याप्ता मनुष्योची आवी उत्पन्न थाय १ [उ०] हे गौतम ! पर्याप्ता अने अपर्याप्ता क्षेत्र प्रकारना संज्ञी मनुष्योची आवी उत्पन्न धाय छे.

- ३९. [प्र॰] सिमणुस्से णं मंते ! जे मविष पुढविकाइपसु उवविजयप से णं मंते ! केवतिकाल॰ ! [उ॰] गोयमा ! हाइचेणं अंतोमुहुत्तं०, उक्रोसेणं वावीसंवाससहस्सवितीपसु ।
- ye. [प्रe] ते णं मंते ! जीवा० ? [र्डe] एवं जहेव रयणप्पभाष उववज्रमाणस्स तहेव तिसू वि गमपस्र ਲੜੀ । त्रवरं सोगाहणा जहमेणं अंगुरुस्स असंकेक्षरमागं, उक्कोस्सेणं पंचधणुसयारं । दिती जहमेणं अंतोमृहत्तं, उक्कोसेणं पृष कोडी । एवं अणुवंधो । संवेहो नवसु गमएसु जहेव सन्निपंचिदियस्स । मज्जिल्लपसु तिसु गमपसु रुद्धी जहेव सन्निपंचि-वियस्त, सेसं तं खेव निरवसेसं, पच्छिल्ला तिबि गमगा जहा प्यस्स खेव ओहिया गमगा। नवरं मोगाहणा जहन्नेणं पंच चणुसयाइं, उक्कोसेणं पंच चणुसयाइं । ठिती अणुबंधो जहकेणं पुत्रकोडी, उक्कोसेण वि पृत्रकोडी, सेसं तहेव ।\*
- ४१. [प्र०] जइ देवेहितो उववर्ज्जति कि भवणवासिदेवेहितो उववर्ज्जति, वाणमंतर०, जोइसियदेवेहितो०, वेमाणि-यवेषेहितो उववज्रंति ! [उ०] गोयमा ! भवणवासिदेषेहितो वि उववज्रंति, जाव-वेमाणियदेवेहितो वि उववज्रंति ।
- ४२. पि॰ो जइ सवणवासिदेवेहितो उचवक्रांति कि असुरकुमारमवणवासिदेवेहितो उचवक्रांति. जाव-धणियकुमार-मबणवासिवेबेहितो० ! [७०] गोयमा ! असुरकुमारमवणवासिवेबेहितो उववज्ञांति, जाव-यणियकुमारमवणवासिवेबेहितो उपध्यंति ।
- ४३. [प्र॰] असुरकुमारेणं भंते । जे मविष पुडविकाइपसु उवविकास्य से णं भंते ! केवति॰ ! [उ॰] गोयमा ! जहनेणं अंतोम्हरूः, उद्घोलेणं बाबीसंवाससहस्तिवितीः।
- ४४. [प्र॰] ते णं मंते ! जीवा॰ पुच्छा। [उ॰] गोयमा! जहनेणं एको वा वो वा तिथि वा, उक्नोसेणं संबोजा वा असंखेळा वा उवबजाति ।
- ४५. [प्र०] तेसि णं मंते ! जीवाणं सरीरगा किसंघयणी पन्नता ! [उ०] गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी, जाव-परिणमंति ।
- ३९. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता वर्षना आयुषवाळा पर्याप्त संब्री मनुष्य, जे पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिबाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न याय ! [उ ०] हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्तनी अने उत्कृष्ट बाबीश हजार वर्षनी स्थितिबाळा प्रधिवीकायिकोमां उत्पन्न याय.
- ४०. [प्रत] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न याय ! [उठ] रत्नप्रभामां उत्पन्न थवाने योग्य मनुष्यनी जे वक्तव्यता कही छे ते अहिं त्रणे आलापकमां कहेवी. पण विशेष ए के शरीरनी अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट पांचसो धनुष होय छे. स्थिति जघन्य अन्तर्महर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी छे. ए प्रमाणे अनुबंध पण जाणवो. संवेध जेम संबी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो कहा है तेम नवे गमोमां कहेत्रो. बच्चेना त्रण गमोमां संही पंचेन्द्रिय तिरीचनी वक्तव्यता कहेवी. बाकी बधुं पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवं. तथा छेल्ला त्रण गमको आ औषिक-सामान्य गमनी पेठे कहेवा. विशेष ए के शरीरनी अवगाहना जघन्य अने उत्कृष्ट पांचसो धनुषनी होय छे. स्थिति अने अनुबंध जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनो होय छे. बाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं.
- ४१. [प्र0] जो ते पृथिवीकायिको देवोयी आबी उत्पन्न याय तो ह्यं भवनपति देवोयी, वानव्यन्तर देवोयी, ज्योतिषिक देवोयी के वैमानिक देवोथी आत्री उत्पन्न पाय ! [उ०] हे गौतम ! भवनवासी देवोथी यावत्—वैमानिकोथी पण आवीने उत्पन्न पाय.
- ४२. प्रि. जो ते मबनपति देशोथी भावी उत्पन्न थाय तो हां असरक्रमारोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत—स्तनितक्रमारोधी आबी उत्पन्न पाय ! [७०] हे गौतम ! ते असुरकुमार भवनवासी देवोथी यावत्—स्तनितकुमार भवनवासी देवोथी पण आबी उत्पन्न याय.
- ४३. [प्रo] हे भगवन् ! असुरकुमार जे प्रथिवीकायिकमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा प्रथिवीकायिकमां उत्पन्न याय ? [उ ० ] हे गौतम ! ते जघन्य अन्तर्मुहर्तनी अने उत्कृष्ट वाबीस हजार वर्षनी स्थितिवाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न याय.
- ४४. [प्रo] हे भगवन्! ते असुरकुमारो एक समये केटला उत्पन याय ! [उo] हे गीतम ! तेओ जघन्य एक, वे के प्रण अने उक्ष्म संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय.
- संघयण रहित होय छे [केमके तेने अस्थि, शिरा, स्नायु-इत्यादि नथी. परन्तु जे पुद्गलो इष्ट, कान्त अने मनोज्ञ छे ते शरीरसंघातरूपे] यावत्--परिणमे छे.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवोनां शरीरो केटला संघयणवाळां होय छे.! [उ०] हे गौतम! तेओना शरीरो छ प्रकारना

परिमाणादि.

देवोनी पृष्टिबीका-विकोमां उत्पत्ति.

भवनपति देवोनी प्रधिवीकायिकर्मा बरपश्ति-

भसुरकुमारनी पृथिवीयायि**कर्मा** उत्पत्ति.

परिमाण.

संघयण-

<sup>🍍 &#</sup>x27;नवरं पच्छिन्नपुतु नमपृतु संखेजा उववजंति, नो भसंखेजा उववजंति'-इति पाटो घ-पुत्तके एव उपसम्पते, परं क-ग-ऊ-पुत्तकेषु नासि, नच संवाब्यते ।

७६. [प्र॰] तेसि णं मंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा ? [उ॰] गोयमा ! दुविहा पत्रसा, तं जहा-भवधार-जिज्ञा य उत्तरवेउविया य । तत्थ णं जा सा भवधारणिज्ञा सा जहनेणं अंगुरुस्त असंबेजदमागं, उन्नोसेणं सत्त रयणीनो ह तत्थ जं जा सा उत्तरवेउविया सा जहनेणं अंगुरुस्त संबेजदमागं, उन्नोसेणं जोयणसयसहस्तं ।

४७. [प्र०] तेसि णं मंते ! जीवाणं सरीरमा किसंडिया पश्चा ! [उ०] गोयमा ! दुविहा पश्चा,तंजहा—भवधारिणजा व उत्तरवेउिषया य । तत्य णं जे ते मवधारिणजा ते समचउरंससंडिया पश्चा । तत्य णं जे से उत्तरवेउिषया ते णाणासं-ठाणसंडिया पश्चा । लेस्साओ चत्तारि । विद्वी तिविहा वि । तिश्वि णाणा नियमं, तिश्वि असाणा मयणाय । जोगो तिविही वि । उद्यओगो दुविहो वि । चत्तारि सन्नाओ । चत्तारि कसाया । पंच इंदिया । पंच समुग्धाया । वेयणा दुविहा वि । इत्थिवेदगा वि पुरिसवेयगा वि, णो णपुंसगवेयगा । ठिती जहन्नेणं द्सवाससहस्साई, उन्नोसेणं सातिरेगं सागरोवमं । अन्न-वसाणा असंस्रेज्ञा पसत्या वि अप्पसत्या वि । अणुवंधो जहा ठिती । भवावेसेणं दो भवग्गहणाई, कालादेसेणं जहन्नेणं दसवाससहस्साई अंतो मुदुत्तमम्मिहियाई, उन्नोसेणं सातिरेगं सागरोवमं वावीसाय वाससहस्सोई अम्मिहियं-यवतियं० । यवं जव वि गमा णेयदा । नवरं मिन्नस्रुपसु पिन्छस्रुपसु तिसु गमयसु असुरकुमाराणं टिइविसेसो जाणियद्वो, सेसा ओहिया वेव स्वरी कायसंवेदं च जाणेजा । सद्यत्य दो भवग्गहणाई, जाव-णवमगमय कालादेसेणं जहन्नेणं सातिरेगं सागरोवमं वावीसाय वाससहस्सोई अम्मिहियं-एवतियं. ९ ।

४८. [प्र०] णागकुमारे णं मंते ! जे भविष पुढिविक्काइपसु० ! [उ०] एस सेव वस्तवया आव-'भवावसो'ित ! णवरं िती जहुन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देस्णाइं दो पिल्योवमाइं । एवं अणुवंधो वि । कालादेसेणं जहुन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमस्मिहियाइं, उक्कोसेणं देस्णाइं दो पिल्योवमाइं वावीसाए वाससस्सेहिं अप्मिहियाइं । एवं णव वि गमगा असुरकुमारगमगसरिसा, नवरं ठिति कालादेसं च जाणेजा, एवं जाव-थणियकुमाराणं ।

इरी(नी उंचाई

४६. [प्र॰] हे भगवन्! ते जीवोनां शरीरोनी केटली मोटी अवगाहना कही छे ! [उ॰] हे गौतम ! तेओने भवधारणीय अने उत्कृष्ट उत्तरवैक्रिय एम वे जातनी अवगाहना होय छे. तेमां जे भवधारणीय अवगाहना छे ते जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट सात हाधनी छे, अने जे उत्तरवैक्रिय अवगाहना छे ते जघन्य अंगुलनो संख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट एक लाख योजन होय हे.

संस्थान-

४७. [प्र०] हे मगवन्! ते जीवोनां शरीरो केटल संस्थानवाळां कह्यां छे? [उ०] हे गौतम! तेओनां शरीरो मवधारणीय अने उत्तरवैक्रिय एम वे जातनां कह्यां छे. तेमां जे भवधारणीय शरीर छे तेने समचतुरस्र संस्थान होय छे, अने जे उत्तरवैक्रिय छे तेने अनेक प्रकारने संस्थान होय छे. लेश्याओ चार छे. दिए प्रण प्रकारनी होय छे. तेओने \*गण झान अवश्य होय छे अने अज्ञान प्रण मजनाए होय छे. तेओने प्रण योग, बने उपयोग, चार संझाओ, चार कपायो, पांच इन्द्रियो अने पांच समुद्धात होय छे. वेदना बने प्रकारनी होय छे. स्थिति जधन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट कांइक अधिक सागरीपम होय छे. अन्ववंध स्थितिनी पेटे जाणवो. (संवेध—) भवनी अपेक्षाए बे भव अने काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्भुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट बावीश हजार वर्ष अधिक साविक सागरीपम—एटलो काळ यावत्—गति आगति करे. ए प्रमाणे नवे गमो जाणवा. पण विशेष ए के मध्यना त्रण अने छेला त्रण गमोमां असुरकुमारोनी स्थितिसंबन्धे विशेषता होय छे, बाकी बधी आधिक वक्तन्यता अने कायसंबेध जाणवो. संवेधमां बधे टेकाणे वे मव जाणवा. ए प्रमाणे यावत्—नवमा गममां काळादेशथी जघन्य अने उत्कृष्ट साधिक सागरीपम सहित बावीश हजार वर्ष—एटलो काळ यावत—गतिआगति करे (९).

नामकुमारनी पृथि-बीकाविकमां उत्पत्तिः ४८. [प्र०] हे भगवन्! जे नागकुमार देव पृथिवीकायिकमां उत्पन्न यवाने योग्य छे ते केटल काळनी स्थितिवाळा पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय? [उ०] अहिं पूर्वोक्त वधी असुरकुमारनी बक्तन्यता यावत्—भगदेश सुपी कहेवी. पण विशेष ए के स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट कांइक न्यून वे पल्योपमनी होय छे. ए प्रमाणे अनुवंध पण जाणवी. काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक. दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट कांइक न्यून वे पल्योपम सिहत बावीश हजार वर्ष-एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. ए प्रमाणे नवे आलापको असुरकुमारना आलापकनी पेटे जाणवा. एण विशेष ए के अहिं स्थिति अने काळादेश (भिन्न) जाणवो. ए प्रमाणे यावत्—स्तिनतकुमारो सुची जाणवुं.

४७ के केंको सम्बग्दिष्ट के तेओने त्रण ज्ञान अवस्य होय के अने सिध्यादिष्टने त्रण अज्ञान होय के. पण केंको अर्वजीषी आवीने उत्पन्न धाय के तेओने अपर्याप्तानस्थामां निर्मण होतुं नयी, बाकीना जीवोने विभंग होय के तेवी मिध्यादिष्टने त्रण अज्ञान भजनाए होय के—एस कथुं के.

- ४६. [४०] जा वाणमंतरेहितो उववर्जाति कि पिसायवाणमंतर० जाव-गंबदवाणमंतर० १ [४०] गोयमा ! पिसाय-वाणमंतर०, जाव-गंबदवाणमंतर० ।
- ५०. [४०] वाणमंतरदेवे णं मंते ! जे मविष पुढिविकाष्ट्यसु० ! [उ०] पतेसि पि मसुरकुमारगमगसरिसा नव गमगा माविषका । नवरं ठिति काछादेसं च जाणेखा । ठिती जहनेणं दसवाससहस्सारं, उक्रोसेणं पिक्रकोवमं, सेसं तहेव ।
- ५१. [प्र॰] जर जोरसियदेवेदितो उववज्जंति किं चंदविमाणजोतिसियदेवेदितो उववज्जंति, जाय-ताराविमाणजोर-सिय॰ ? [ज॰] गोयमा ! चंदविमाण॰, जाय-ताराविमाण॰।
- ५२. [य०] जोइसियदेषे णं मंते ! जे मिषप पुढिषकाइपसु० ? [उ०] लदी जहा मसुरकुमाराणं । णवरं पगा तेउ-लेस्सा पत्रता । तिथि णाणा, तिथि मद्याणा णियमं । ठिती जहकेणं मद्वमागपिलभोवमं, उक्कोसेण पिलभोवमं वाससयसह-स्समन्मिदियं । पत्रं मणुवंघो वि । कालादेसेणं जहकेणं मद्वमागपिलभोवमं अंतोमुदुत्तमम्मिद्देगं, उक्कोसेणं पिलभोवमं वास-सयसहस्से णं वावीसाय वाससहस्सेहिं अन्मिद्देगं, पवितयं० । एवं सेसा वि मद्द गमगा माणियद्वा । नवरं ठितिं कालादे-सं य जाणेखा ।
- ५३. [प्रः] जद वेमाणियदेवेदितो उववर्ज्जति कि कप्योवगवेमाणियः, कप्यातीयवेमाणियः ? [उ०] गोयमा ! कप्यो-वगवेमाणियः, णो कप्यातीतवेमाणियः ।
- ५४. [प्र०] जद्द कप्पोवगवेमाणिय० किं सोहम्मकप्पोवगवेमाणिय०, जाय-अखुयकप्पोवगवेमा० ! [उ०] गोयमा ! सोहम्मकप्पोवगवेमाणिय०, ईसाणकप्पोवगवेमाणिय०, जो सणंकुमार०, जाय-को अखुयकप्पोवगवेमाणिय०।
- ५५. [प॰] सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविष पुढविकार्यसु उवविज्ञार, से णं मंते ! केवतिय॰ ? [७०] एवं जहा जोइसियस्स गमगो । णवरं ठिती अणुवंचो व जहन्नेणं विक्रभोवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमारं । काळादेसेणं जहनेणं पिल-
- ४९. [प्र०] जो तेओ वानव्यन्तरोधी आवी उत्पन्न याय तो छुं पिशाच वानव्यन्तरोधी, के यावत्—गांधर्वव्यानव्यन्तरोधी आवी उत्पन्न थाय? [उ.०] हे गौतम! तेओ पिशाच व्यानव्यंतरोधी यावत्—गांधर्वव्यानव्यन्तरोधी आवी उत्पन्न थाय.

बानव्यंतरोनी पृबिः बीकायिकमां उत्पत्तिः

- ५०. [प्र०] हे भगवन् । वानन्यन्तरदेव जे पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा पृथिवीका-यिकोमां आबी उत्पन्न याय १ [उ०] अहिं पण असुरकुमारोनी पेठे नवे गमको कहेवा. पण विशेष ए के अहिं स्थिति तथा काळादेश (भिन्न ) जाणवो. स्थिति जघन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट पत्योपमनी होय छे. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं.
- ५१. [प्र०] जो तेओ ज्योतिष्क देवोयी आवी उत्पन्न याय तो शुं चन्द्र विमान ज्योतिष्क देवोथी के यावत्—ताराविमान ज्योतिष्क देवोथी भावी उत्पन्न थाय है [उ०] हे गौतम तेओ चन्द्रविमान ज्योतिष्क देवोथी, अने यावत्—ताराविमान ज्योतिष्क देवोथी आवी उत्पन्न थाय.

ज्योतिष्क देवनी पृत्रिबीकायिकमां उत्पत्तिः

- ५२. [प्र०] हे भगवन्! जे ज्योतिष्कदेव पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते केटला काळनी स्थितिवाळा पृथिवीका-विकामां उत्पन्न थाय! [उ०] आहें असुरकुमारोनी लब्धि—वक्तन्यतानी पेटे सघळी वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के तेओने एक तेजो-लेश्या होय छे. त्रण ज्ञान अथवा त्रण अज्ञान अवश्य होय छे. स्थिति जघन्य पत्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट एक लाख वर्ष अधिक एक पत्योपम होय छे. ए प्रमाणे अनुबंध पण जाणवो. (संवेध—) काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पत्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट एक लाख बावीश हजार वर्ष अधिक एक पत्योपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. ए प्रमाणे बाकीना आठ गमो पण बाणवा. पण विशेष ए के आहें स्थिति अने कालादेश (पूर्व करतां भिक्त) जाणवो.
- ५३. [प्र०] जो तेओ (पृथिवीकायिको) वैमानिक देवोथी आची उत्पन्न पाय, तो ज्ञुं कल्पोपपन्नक वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न याय, के कल्पातीत वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम! तेओ कल्पोपपन्नक वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय, पण कल्पातीत वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न न थाय.

वैमानिक देवोनी पृथिवीकायिकमा उत्पत्तिः

- ५४. [प्र॰] हे भगवन् ! जो तेओ कल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं सीधर्मकल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्—अन्युत कल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गौतम ! सीधर्म अने ईशान कल्पोपपन्न देवोथी आवी उत्पन्न थाय, पण सनत्कुमार, यावत्—अन्युतकल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न न थाय.
- ५५. [प्र॰] हे भगवन् ! जे सौधर्मकल्पोपपन्न वैमानिक देव पृथिवीकायिकमां उत्पन्न यथाने योग्य छे, ते केटल काळनी स्थितियाळा प्रथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय ! [उ॰] आहें ज्योतिषिकना गमकनी पेठे कहेतुं. पण विद्योष ए के स्थिति अने अनुबंध जघन्य पल्योपम

बोवमं अंतोमुदुत्तमन्महियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं वाबीसाए वाससहस्सेद्धि अम्महियाई-एवतियं कालं । एवं खेसा वि अट्ट नमगा माणियद्या । णवरं टितिं कालादेसं च जाणेखा ।

५६. [प्रव] ईसाणदेवे जं मंते ! जे भविष् व ! [उ व ] एवं ईसाणदेवेण वि जव गमगा भाणियका । नवरं दिती अणुवंघो जहक्षेणं सातिरेगं पिळशोवमं, उक्कोसेणं सातिरेगाई दो सागरोवमाई; सेसं तं चेव । 'सेवं मंते ! सेवं भंते !' सि जाव--विदर्शत ।

### चउवीसतिमे सए दुवालसमो उद्देसी समत्ती।

अने उत्कृष्ट वे सागरोपम होय छे. ( संवेध--) काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पल्योपम अने उत्कृष्ट बाबीश हजार वर्ष अधिक वे सागरोपम--एटच्छो काळ यावत्-गमनागमन करे. ए प्रमाणे बाकीना आठे गमो जाणवा. परन्तु विशेष ए के आहें स्थिति अने काळादेश ( पूर्व करतां भिन्न ) जाणवो.

५६. [प्र०] हे भगवन् ! जे ईशानदेव, पृथिवीकाथिकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे—इत्यादि संबंधे पण नवे गमो कहेवा. पण विशेष ए के स्थिति, अनुबंध जघन्य साधिक पल्योपम, अने उत्कृष्ट साधिक वे सागरोपम. अने बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे,—एम कही यावत्—विहरे छे.

# चोवीशमा शतकमां बारमो उद्देशक समाप्त.

### तेरसमो उद्देसो।

१. [प्र०] आउकाश्या णं मंते ! कमोहितो उपवज्जिति [उ०] एवं जहेव पुढिविकाश्यउद्देसए, जाव-[प्र०] पुढिविकाश्य णं मंते ! जे मिवए आउकाश्यमु उपविक्राश्य से णं मंते ! केवति० ? [उ०] गोयमा ! जहवेणं अंतोमुद्दुत्त०, उक्कोसेणं सत्तवाससहस्सिट्टिश्एसु उववज्जेजा-एवं पुढिविकाश्यउद्देसगसिरसो माणियद्वो । णवरं दिती(ति) संवेदं च जाणेजा, सेसं तहेव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते !' ति ।

#### चउवीसतिमे सए तेरसमो उद्देसी समत्तो ।

#### तेरमो उद्देशक.

अप्ताविद.

१. [प्र०] हे मगवन् ! अप्कायिको क्यांथी आवीने उत्पन्न पाय-इत्यादि जेम पृषिवीकायिकना उदेशकमां कह्युं छे तेम जाणवुं. यायत्—[प्र०] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिको अप्कायिकोमां उत्पन्न याया योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा अप्कायिकमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! जवन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट सात हजार वर्षनी स्थितिवाळा अप्कायिकमां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे पृथिवीकायि-कना उदेशकर्ना पेठे आ उदेशक कहेवो. परन्तु विशेष ए के अहीं स्थिति अने संवेध जुदो जाणवो. बाकी बधुं पूर्वप्रमाणे कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे'.

## चोवीशमा शतकमां तेरमो उद्देशक समाप्त-

## चोइसमो उद्देसो ।

१. [प्र॰] तेउकारया णं मंते ! कथोहितो उववर्जाति ! [उ॰] एवं जहेव पुढविकार्यउद्देसगसरिसो उद्देसो माणि-यद्यो । नवरं टि:ते संवेद्दं च जाणेजा, देवेहितो ण उववर्जाति, सेसं तं चेव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते'! सि जाव-विहरति ।

### चउवीसतिमे सए चोइसमो उद्देसी समनो ।

### चउदमो उद्देशक.

तेजस्कायिक.

१. [प्र॰] हे भगवन् ! तेजस्कायिको क्यांपी आयीने उत्पन्न थाय-इत्यादि पृथिवीकायिक उदेशकर्नी पेठे आ उदेशक पण कहेनो. पण विशेष ए के अहीं स्थिति अने संवेध (भिन्न) जाणनो—तथा तेजस्कायिको देनोथी आबी उत्पन्न थता नथी. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. दि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' एम कही यावत्—विहरे छे.

#### चोवीशमा शतकमां चउदमो उद्देशक समाप्त.

#### पन्नरसमो उद्देसो ।

१. [प्र॰] बाउकाइया मं मंते ! कमोहितो उपवर्कति ! [उ॰] एवं जहेव तेउकाइयउदेसमो तहेव । नवरं ठिती(ति) संबेहं च जागेका । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! सि ।

#### चउवीसतिमे सए पन्नरसमी उद्देसी समची।

### पंदरमो उद्देशक.

१. [प्रo] हे भगवन् ! वायुकायिको क्यांयी आवी उत्पन्न याय छे—इत्यादि जेम तेजरकायिक उदेशकमां कहां छे तेम कहेवुं. पण वायुकायिक ए के अहीं स्थिति अने संवेध (भिन्न) जाणवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### वायुकायिकनो उपपात-

#### चोवीशमा शतकमां पंदरमो उद्देशक समाप्त.

#### सोलसमो उद्देसो।

१. [प्र०] वणस्सइकाइया णं मंते ! कथोहितो उपवज्ञिति ! [७०] एवं पुढविकाइयसिरसो उद्देसो । नवरं जाहे वणस्सइकाइयो वणस्सइकाइयस उवध्वाति ताहे पढम-वितिय-चज्ञाथ-पंचमेसु गमपसु परिमाणं वणसमयं अविरिद्धियं अर्णता उववज्ञिति । भवादेसेणं जहचेणं दो अवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अर्णताई अवग्गहणाइं । कास्रादेसेणं जहचेणं दो अंतो-मुद्धता, उक्कोसेणं अर्णतं कार्ल-पवितयं । सेसा पंच गमा अष्टुमयग्गहणिया तहेव । नवरं दिति संवेदं च जाणेखा । 'सेवं अंते ! सेवं अंते' । ति ।

### चडवीसितमे सए सोलसमो उदेसी समची।

### सोळमो उद्देशक.

१. [प्रठ] हे भगवन्! बनस्पतिकायिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय—इत्यादि पृथिवीकायिकना उदेशकनी पेटे आ उदेशक कहेवो. पण विशेष ए के ज्यारे बनस्पतिकायिक बनस्पतिकायिकोमां उत्पन्न थाय त्यारे पहेला, बीजा, चोया अने पांचमा आलापकमां 'प्रतिसमय निरन्तर अनंत जीवो उत्पन्न थाय छे'—एम कहेवुं. भवनी अपेक्षाए जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट अनंत भव तथा काळनी अपेक्षाए जघन्य वे अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अनंत काळ—एटलो काळ याघत्—गमनागमन करे. बाकीना पांच आलापकोमां तेज रीते आठ भव जाणवा. पण विशेष ए के अहीं \*स्थिति अने संवेध ए भिन्न भिन्न जाणवा. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.'

#### बनस्पतिकायिकः

#### चोवीश्रमा श्रवकमां सोळमो उदेशक समाप्त-

# सत्तरसमो उद्देसो ।

१. [प्र०] वेंदिया णं मंते ! कथोहितो उववर्जाति ? जाव-पुढविकाहए णं मंते ! जे मविए वेंदिएसु उवविज्ञत्तए से णं मंते ! केवति० ? [४०] स चेव पुढविकाहयस्स छदी, जाव-काळावेसेणं जहकेणं दो मंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेजाई मवग्गहणाई-एवतियं० । एवं तेसु चेव चउसु गमएसु संवेहो, सेसेसु पंचसु तहेव मट्ट मवा । एवं जाव-चउरिदिएणं समं

## सत्तरमो उद्देशक.

१. [प्र0] हे मगवन् ! बेइन्द्रिय जीवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे—इत्यादि यावत्—[प्र0] हे मगवन् ! जे पृथिवीकायिक जीव बेइन्द्रियमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा बेइन्द्रियमां उत्पन्न थाय ! [उ०] आहं पूर्वोक्त [ पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थवाने योग्य ] पृथिवीकायिकनी वक्तव्यता कहेत्री, यावत्—काळनी अपेक्षाए जघन्य बे अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट संख्याता भयो—एटलो काळ यावत्—गति आगति करे. जेम ( पृथिवीकायिकनी साथे बेइन्द्रियनो संवेध कह्यो छे ) ते प्रमाणे पहेला, बीजा, चोधा अने पांचमा—ए चार

बेश्टिय-

<sup>9 \*</sup> सर्व गमोमां जवन्य अने उत्कृष्ट स्थिति प्रसिद्ध छे. संवेध-श्रीजा अने सातमां गममां जवन्यवी अन्तर्मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट जाठ मवने साधवी एंसी हजार वर्ष. छठ्ठा अने आठमां गममां जवन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चालीश हजार वर्ष, नवमा गममां जवन्य वीश हजार वर्ष अने उत्कृष्ट एंसी हजार वर्ष होय छे—टीका.

चउसु संखेखा मया, पंचसु अट्ट मवा । पंचिदियतिरिक्सजोणियमणुस्तेसु समं तहेव अट्ट मवा । देवेसु न चेव उपवस्रति, ठिती (ति) संवेहं च जाणेखा । 'लेवं भंते ! सेवं भंते !' चि ।

#### चउवीसतिमे सए सत्तरसमी उद्देसी समत्ती।

आलापकमां संवेध कहेवो अने बाकीना पांच आलापकमां पूर्वोक्त आठ भवो जाणवा. ए प्रमाणे अपकायिकयी मांडी यावत्-चउरिन्दियो साथे चार आलापकमां संख्याता भवो अने वाकीना पांच आलापकमां आठ भवो जाणवा. पंचेन्द्रिय तिर्येचो अने मनुष्योनी साथे पूर्वोक्त आठ भवो जाणवा. तथा देवोमांथी आवी उत्पन्न थता नथी. अहिं स्थिति अने संवेध भिन्न जाणवो. 'हे भगवन् । ते एमज छे, हे भगवन् । ते एमज छे.'

#### चोवीशमा शतकमां सत्तरमो उद्देशक समाप्त.

## अद्वारसमो उद्देसो ।

१. [प्र०] तेर्रिवा णं मंते ! कओर्हितो उववज्रंति ? [उ०] एवं तेर्रिव्याणं जहेव वेर्रिव्याणं उद्देसो । नवरं ठितिं संवेर्डं च जाणेजा । तेजक्रार्णसु समं तित्यगमे उक्रोसेणं बहुत्तरार्द्र वेरार्द्रिव्यसयार्द्र, वेर्रिक्पिहें समं तित्यगमे उक्रोसेणं बड्डवाडीसं संवच्छरार्द्र छन्नउवरार्द्रिव्यसतमन्मिहियार्द्र, तेर्रिक्पिहें समं तित्यगमे उक्कोसेणं वाणउयार्द्र तिन्नि रार्द्रिक्सवार्द्र । एवं सक्षत्य जाणेजा जाव—'सन्निमणुस्स'ति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' ति ।

### चउवीसतिमे सए अट्टारसमो उद्देसो समत्तो ।

## अष्टादश उद्देशक.

ते। न्द्रियनी उत्पक्तिः

१. [प्र0] हे भगवन् । तेइन्द्रियो क्यांथी आबी उत्पन्न थाय छे—इत्यादि बेइन्द्रियना उद्देशकानी ऐटे त्रीन्द्रियो संबंधे पण कहेबुं. विशेष ए के अहीं स्थिति अने संबंध (भिन्न भिन्न) जाणवो. तेजस्काधिकोनी साथे [तेइन्द्रियोनो संबंध ] श्रीजा गममां उत्कृष्ट "बसोने आठ रात्रिदिवसोनो होय छे अने बेइन्द्रियोनी साथे त्रीजा गममां उत्कृष्ट एकसो छन्ने रात्रिदिवस अधिक अडतालीश वर्ष होय छे. तेइन्द्रियोनी साथे त्रीजा गममां उत्कृष्ट त्रणसोने बाणुं रात्रिदिवस जाणवो. ए प्रमाणे यावत्—संही मनुष्य सुची क्षेत्र जाणवुं. दे भगवन् ! ते एमज छे.'

### चोवीशमा शतकमां अढारमी उद्देशक समाप्त.

## एगूणवीसइमो उद्देसो ।

१. [प्र॰] चर्डारेदिया णं भेते ! कथोहिंतो उषयज्ञंति ? [उ॰] जहा तेइंदियाणं उद्देसओ तहेव चर्डारेदियाण वि । नवरं ठिति संबेहं च जाणेजा । 'सेवं मंते ! सेवं मंते !' चि ।

#### चउवीसतिमे सए एगूणवीसतिमी उद्देसी समत्ती।

#### ओगणीशमो उद्देशक.

च**उरिन्दियनी** स्त्पत्तिः १. [प्र0] हे भगवन् ! चउरिन्दिय जीवो क्यांथी आवी उत्पन्न षाय छे ? [उ0] जेम तेइन्द्रियोनो टहेराक कहा तेम चउरिन्दियो संबंधे पण कहेत्रो. परन्तु विशेष ए के स्थिति अने संवेध भिन्न जाणवो. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

## चोवीश्रमा शतकमां ओगणीशमो उद्देशक समाप्त.

१ \* तेजस्कायिकनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण रात्रि-दिवसनी छे. तेने चार भवनी स्थिति साथै गुणता बार रात्रि-दिवस थाय. तेइन्द्रियनी उत्कृष्ट स्थिति ओगण पचास दिवसनी छे, ते चार भवने आश्रयी १९६ रात्रि-दिवस थाय. वंक रात्रि मेळवता २०८ रात्रि-दिवस थाय छे-टीका.

<sup>ं</sup> ए प्रमाणे नजरिन्दिय, असंज्ञी, संज्ञी तिर्यंच अने मनुष्य साथे श्रीजा गमनो संवेध जाणवोः श्रीजा गमनो संवेध बतावदा वडे छह्य करेरे गमनो संवेध स्थित धयेलो जाणवोः केमके तेमां पण आठ भवो होय छे. श्रथम वगेरे चार गमनो संवेध भवनी अपेक्षाए संद्याता भवरूप अने काळनी अपेक्षाए संद्यात काळ रूप जाणवो.

## वीसइमो उद्देसो।

- १. [प्र॰] पंचितिपतिरिक्सजोणिया णं मंते ! कमोहितो उववजाति ! [ज॰] कि नेरहपहितो॰, तिरिक्स॰, मणुस्सेहितो वेबेहितो उववजाति ! [ज॰] गोयमा ! नेरहपहितो उववजाति, तिरिक्स॰, मणुस्सेहितो वि०, देवेहितो वि उववजाति ।
- २. [प्र०] जर नेररपहितो उववजंति, कि रयणप्पमपुढविनेररपहितो उववजंति, जाव-अहेसत्तमपुढविनेररपहितो उववजंति, शिवा गोयमा ! रयणप्पमपुढविनेररपहितो उववजंति, जाव-अहेसत्तमपुढविनेररपहितो ।
- ३. [४०] रयणप्पमपुढविनेरहए णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्सजोणिएसु उवविक्षित्तए से णं भंते ! केषहकाल-द्वितिएसु उवविक्षेत्रा ? [४०] गोयमा ! जहकेणं भंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेणं पुषकोडिभाउएसु उवविक्षेत्रा ।
- ४. [प्र॰] ते णं मंते ! जीवा एगसमएणं केवहया उववज्ञंति ! [उ॰] एवं जहा असुरकुमाराणं वसख्या । नवरं संघयणे पोग्गला अणिट्ढा अकंता जाव-परिणमंति । ओगाहणा दुविहा पश्चा, तं जहा-मवधारिणज्ञा उत्तरवेउिंघया य । तत्थ णं जा सा मवधारिणज्ञा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेजहमागं, उद्योसेणं सत्त धणूरं तिथि रयणीओ छचंगुलारं । तत्थ णं जा सा उत्तरवेउिंघया सा जहनेणं अंगुलस्स संखेजहमागं, उद्योसेणं एश्वरस धणूरं अद्वाहजाओ रयणीओ ।
- ५. [प्र०] तेसि णं मंते ! जीवाणं सरीरगा किसंदिया पश्चता ! [उ०] गोयमा ! दुविहा पश्चता, तं जहा—सवधारणि-ज्ञा य उत्तरवेउद्यिया य । तत्य णं जे ते भवधारणिज्ञा ते हुंडसंदिया पश्चता । तत्य णं जे ते उत्तरवेउद्यिया ते वि हुंडसं-दिता पश्चता । पगा काउलेस्सा पश्चता । समुन्वाया चत्तारि । णो इत्थिवेदगा, णो पुरिसवेदगा, णपुंसगवेदगा । दिती जहस्रेणं व्सवाससहस्साई, उद्योसेणं सागरोपमं । एवं अणुवंधो वि, सेसं तदेव । भवादेसेणं जहस्रेणं दो भवग्गहणाई, उद्योसेणं अट्ठ भवग्गहणाई । कालादेसेणं जहस्रेणं दसवाससहस्साई अंतोमुहुचमन्मिहयाई, उद्योसेणं चत्तारि सागरोपमाई चडिहें पुद्यकोडीहिं अन्मिहयाई—एवतियं० ।
- ६. सो चेव जहन्नकालद्वितीपसु उववन्नो, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तद्वितीपसु०, उन्नोसेण वि अंतोमुहुत्तद्वितीपसु०, अव-सेसं तहेव । नवरं कालदेसेणं जहन्नेणं तहेव, उन्नोसेणं चत्तारि सागरोवमाई चर्जाई अंतोमुहुत्तोई अध्मद्वियाई-प्रव-

#### वीशमी उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! पंत्रेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? शुं नैरियकोयी, तिर्यंचयोनिकोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गातम ! तेओ नैरियकोथी, तिर्यंचोथी, मनुष्योथी अने देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय छे.

पंचेन्द्रिय तियंचयो-निक्नी उत्पत्तिः

२. [प्र॰] जो तेओ नैरियकोथी आवी उत्पन्न थाय तो हुं रत्नप्रभाष्ट्रियिवीना निरियकोथी के यावत्—अधःसप्तम पृथिवीना नैरियकोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गातम ! तेओ रत्नप्रभाष्ट्रियवीना नैरियकोथी आवी उत्पन्न थाय, यावत्—अधःसप्तमपृथिवीना नैरियकोथी पण आवी उत्पन्न थाय.

नैरविकोती पंचेन्द्र-य तिर्वेचमां ऋपत्ति.

३. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनो नैरियक जे पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थिति-वाळा तिर्यंचोमां उत्पन्न याय १ [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न याय.

रत्नमभानैर्यायकोनी पं॰तियंचमा उत्पत्ति.

४. [प्र०] हे भगवन्! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न धाय ! [उ०] जेम असुरकुमारनी वक्तव्यना कही छे तेम आहं कहेवी. पण विशेष ए के [ रहाप्रभाना नारकोने ] संघयणमां अनिष्ट अने अमनोज्ञ पुद्गलो यावत्—परिणमे छे. अवगाहना भवधारणीय अने उत्तर-वैक्तिय—एम वे प्रकारनी छे. तेमां जे भवधारणीय शरीरनी अवगाहना छे ते [ उत्पत्तिसमयनी अपेक्षाए ] जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागनी अने उत्कृष्ट सात धनुष, त्रण हाथ अने छ अंगुलनी छे. तथा जे उत्तरवैक्रिय शरीरनी अवगाहना छे ते जघन्य अंगुलनो संख्या-तमो भाग अने उत्कृष्ट पंदर धनुष अने अडी हाथनी होय छे.

परिमाण.

५. [प्र०] हे मगवन्! ते जीवोनां शरीरो केटलां संस्थानत्राळां कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! तेनां शरीरो वे प्रकारनां कह्यां छे, भवधारणीय अने उत्तरवैक्तिय. तेमां जे भवधारणीय शरीर छे, ते हुंडकसंस्थानवाळुं होष छे, अने जे उत्तरवैक्तिय छे ते पण हुंडकसंस्थानवाळुं छे. तेने एक कापोतलेक्ष्या छे. समुद्धात चार छे. स्त्रीवेद अने पुरुप वेद नथी, पण एक नपुंसक वेद छे. स्थिति जवन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट सागरोपम प्रमाण छे. ए प्रमाणे अनुबंध पण जाणवो. वाकी वधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. भवनी अपेक्षाए जवन्य वे भव उत्कृष्ट आठ भव, तथा काळनी अपेक्षाए जवन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक चार सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गतिसागति करे. (१).

शरीर-

६. जो ते [ रहाप्रभा नैरियक ] जघन्य काळनी स्थितिबाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचर्मा उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्कृष्ट पण अन्तर्मु-इर्तनी स्थितिबाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पन्न याय. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे कहेवुं. पण विशेष ए के काळनी अपेक्षाए जघन्य उपर

रसप्रभानेग्यिकनी जद्य० पर्चेद्रिय तिर्थे॰ चर्मा उत्पक्तिः तियं कालं॰ २ । एवं सेसा वि सत्त गमगा भाणियद्वा जहेव नेरहयउद्देसए सिन्नपंचिदिपर्हि समं। णेरहयाणं मिन्समपसु य तिसु वि गमपसु पव्छिमपसु तिसु वि गमपसु डितिणाणतं भवति, सेसं तं चेव । सद्वत्य डिर्ति संवेद्दं च जाणेखा ९ ।

- ७. [प्र०] सक्करप्पमापुद्धविनेरइय णं भंते ! जे भविष० ? [उ०] एवं जद्दा रयणप्पभाए णव गमगा तद्देव सक्करप्प-माए वि । नवरं सरीरोगाद्दणा जद्दा ओगाद्दणासंठाणे । तिक्कि णाणा तिक्रि अन्नाणा नियमं । दिती अणुकंषा पुष्टभणिया । एवं णय वि गमगा उवर्जुजिङ्गण भाणियद्वा, एवं जाव-छटुपुद्धवी । नवरं ओगाद्दणा लेस्सा दिति अणुकंषी संवेद्दो य जाणियद्वा ।
- ८. [प्र०] अहेसत्तमपुद्धविनेरहप णं मंते ! जे मिवप० ! [उ०] एवं चेय णय गमगा । णवरं ओगाहणा—छेस्सा—ठितिअणुवंधा जाणियद्या । संबेहो भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणारं, उक्कोसेणं छन्भवग्गहणारं । काळावेसेणं जहन्नेणं वावीसं
  सागरोवमारं अंतोमुहुत्तमन्मिद्दियारं, उक्कोसेणं छाविट्टं सागरोवमारं तिर्दि पुद्यकोडीिटं अन्मिद्दियारं—एवतियं० । आदिल्लप्तु
  छसु वि गमपसु जहन्नेणं दो भवग्गहणारं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणारं, पित्छल्लप्तु तिसु गमपसु जहन्नेणं दो भवग्गहणारं,
  उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणारं । छद्दी नवसु वि गमपसु जहा पदमगमप । नवरं ठितीविसेसो काळादेसो य वितियगमपसु
  जहन्नेणं वावीसं सागरोवमारं अंतोमुहुत्तमन्भिद्दियारं, उक्कोसेणं छाविटं सागरोवमारं तिर्दि अंतोमुहुत्तिहं अन्मिहियारं—
  एवतियं काळं० । तह्यगमप जहन्नेणं वावीसं सागरोवमारं पुद्यकोडीप अन्मिहियारं, उक्कोसेणं छाविटं सागरोवमारं तिर्दि
  पुद्यकोडीिटं अन्मिहियारं । चउत्थगमे जहन्नेणं वावीसं सागरोवमारं अंतोमुहुत्तमन्मिहियारं, उक्कोसेणं छाविटं सागरोवमारं
  तिर्दि पुद्यकोडीिटं अन्मिहियारं । एवमगमप जहन्नेणं वावीसं सागरोवमारं अंतोमुहुत्तमन्मिहियारं, उक्कोसेणं छाविटं
  सागरोवमारं तिर्दि अंतोमुहुत्तेर्दि अन्मिहियारं । सत्तमगमप जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमारं अंतोमुहुत्तमन्मिहियारं, उक्कोसेणं
  छाविटं सागरोवमारं दोर्दि अंतोमुहुत्तीर्द अन्मिहियारं । अटुमगमप जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमारं अंतोमुहुत्तमन्मिहियारं, उक्कोसेणं
  छाविटं सागरोवमारं दोर्दि अतोमुहुत्तीर्द अन्मिहियारं । अटुमगमप जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमारं अंतोमुहुत्तमन्मिहियारं, उक्कोसेणं
  छाविटं सागरोवमारं दोर्दि अतोमुहुर्त्तीर्द अन्मिहियारं । णवमगमप जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमारं पुत्रकोडीिटं अन्मिहियारं, उक्कोसेणं छाविटं सागरोवमारं पुत्रकोडीिटं अन्मिहियारं, उक्कोसेणं छाविटं सागरोवमारं पुत्रकोडीिटं अन्मिहियारं । णवमगमप जहन्नेणं तेत्तीसं सागरोवमारं पुत्रकोडीिटं अन्मिहियारं, उक्कोसेणं छाविटं सागरोवमारं पुत्रकोडीिटं अन्मिहियारं, उक्कोसेणं छाविटं सागरोवमारं पुत्रकोडीिटं अन्मिहियारं, उक्कोसेणं छाविटं सागरोवमारं पुत्रकोडीिटं अन्मिहियारं, उक्कोसेणं चित्रतियं ९ ।

प्रमाणे अने उन्कृष्ट चार अन्तर्सहूर्त अधिक चार सागरोपम-एटलो काळ यावत्-गतिआगित करे (२). ए प्रमाणे बाकीना सान गमो जेम नैरियकउदेशकमां संज्ञी पचेन्द्रियो साथे कह्या छे तेम अहिं पण जाणवा. बच्चेना त्रण गमको अने छेल्ला त्रण गमकोमां स्थितिनी विशेषता छे. बाकी वधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. बधे ठेकाणे स्थिति अने संवेध भिन्न भिन्न विचारीने कहेवो ९.

शर्कराष्ट्रभानारकः नी प॰ तिर्येचमां उत्पक्षिः

७. [प्र०] हे भगवन् ! शर्कराप्रभानो नैरियक जे पंचेन्द्रिय निर्यंचीमां उत्पन्न घवाने योग्य छे—इत्यादि जेम रक्षप्रभा मंबंधे नव गमको कहा छे तेम शर्कराप्रभा संबंधे पण नव गमको कहेवा. परन्तु विशेष ए के शरीरनी अवगाहना \*अवगाहना—संस्थानपदमां कह्या प्रमाणे जाणवी. तेन त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे. स्थिति अने अनुवंध पूर्वे कहेल छे. ए प्रमाणे नवे गमो विचारपूर्वक कहेवा. एम यावत्—छटी नरकपृथिवी सुधी जाणवुं. पण विशेष ए के अहीं अवगाहना, लेश्या, स्थिति, अनुवंध अने संवेष्ठ भिन्न भिन्न जाणवा.

सप्तमगरकना नैर-यिकनी पं० तिर्येच-मां जल्पत्तिः ८. [प्र०] हे मगवन् ! अधःसप्तम नरक पृथिवीनो नैर्रायक जे पंचेन्द्रिय निर्यंचयोनिकोमं उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा पंचेन्द्रिय निर्यंचमा उत्पन्न थाय ? [उ०] पृयं प्रमाण नवे गमको कहेवा. विशेष ए के अहं अवगाहना, ठेऱ्या, स्थिति अने अनुवंध मिल मिल जाणवा. रविध—भवनी अपेक्षाए जघन्य वे भव अने उन्कृष्ट छ भव, तथा काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बावीश सागरोपम अने उन्कृष्ट छण पूर्वकोटी अधिक छासठ सागरोपम -एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. पहेला छ ए गमकोमां जघन्य वे भव अने उन्कृष्ट छ भव, तथा पाछळना त्रणे गमकोमां जघन्य वे भव अने उन्कृष्ट चार भव जाणवा. नवे गमकोमां प्रथम गमकनी पेटे वक्तव्यता कहेवी. पण बीजा गममां स्थितिनी विशेषता छे. तथा काळनी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बावीश सागरोपम अने उन्कृष्ट त्रण अन्तर्मुहूर्त अधिक छासठ सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. त्रीजा गममां जघन्य पूर्वकोटी अधिक वावीश सागरोपम अने उन्कृष्ट त्रण पूर्वकोटी अधिक छासठ सागरोपम, चोथा गममां जवन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बावीश सागरोपम अने उन्कृष्ट त्रण पूर्वकोटी अधिक छासठ सागरोपम; पांचमा गममां जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक छासठ सागरोपम; पांचमा गममां जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक छासठ सागरोपम, अने उन्कृष्ट वे अन्तर्मुहूर्त अधिक छासठ सागरोपम, अने उन्कृष्ट वे अन्तर्मुहूर्त अधिक छासठ सागरोपम, आठमा गममां जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीश सागरोपम, अने उन्कृष्ट वे अन्तर्मुहूर्त अधिक छासठ सागरोपम, को जन्कृष्ट वे पूर्वकोटी अधिक छासठ सागरोपम, जघन्य पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपम, अने उन्कृष्ट वे अन्तर्मुहूर्त अधिक छासठ सागरोपम करे.

- ९. [प्र०] जह तिरिक्खजोणियर्हितो उववज्रन्ति कि पर्गिदियतिरिक्खजोणियर्हितो० १ [उ०] एवं उववामो जहा पुरुविकाइयउद्देसप, जाव-
- १०. [प्र०] पुढविकारए णं अंते ! जे मविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उचविज्ञत्तए से णं मंते ! केवति० ? [उ०] गोयमा ! जहनेणं अंतोमुहुत्तिदिसु, उक्कोसेणं पुत्रकोडीआउएसु उचविज्ञति ।
- ११. [प्र॰] ते णं मंते ! जीवा॰ ! [उ॰] एवं परिमाणादीया अणुवंधपञ्जवसाणा जच्चेव अप्पणो सट्ठाणे वसवया सच्चेव पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु वि उववज्जमाणस्स भाणियद्या । णवरं णवसु वि गमपसु परिमाणे जहनेणं एको वा दो वा तिथि वा, उन्नोसेणं संबेज्जा वा असंबेज्जा वा उववज्जंति । भवादेसेण वि णवसु वि गमपसु जहनेणं दो भवगहणाई, उन्नोसेणं यट्ट भवग्गहणाई, सेसं तं चेव । कालादेसेणं उभभो द्वितीए करेज्जा ।
- १२. [प्र०] जर आउक्कारपर्दितो उववक्कंति० ? [उ०] पवं आउक्कारयाण वि । पवं जाव—चउरिदिया उववापयद्या । नवरं सद्यत्य अप्पणो लक्की माणियद्या । णवसु वि गमपसु भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणारं, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणारं । कालादेसेणं उमओ ठिति करेजा सद्वेसि सद्यगमपसु । जहेव पुदविकारपसु उववज्रमाणाणं लदी तहेव सद्यत्य ठिति संवेद्दं च जाणेजा ।
- १३. [प्र॰] जइ पंचिदियतिरिक्खजोणिपहिंतो उववज्रांति किं सिश्चपंचिदियतिरिक्खजोणिपहिंतो उववज्रांति, अस-न्निपंचिदियतिरिक्खजोणिपहिंतो उववज्रांति ? [उ॰] गोयमा ! सिश्चपंचिदिय॰, असिश्चपंचिदिय॰, मेभो जहेव पुढवि-क्काइपसु उववज्रमाणस्स, जाव-
- १४. [प्र०] असिक्षपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविष पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उवविज्ञत्तर से णं मंते ! केवतिकालः ? [उ०] गोयमा ! जहसेणं अंतोसुहृत्त०, उकोसेणं पर्किओवमस्स असंखेजहभागद्वितीएसु उववर्जाति ।
- १५. [४०] ते णं भंते १० ? [उ०] अवसेसं जहेव पुढिविकाइएसु उववज्जमाणस्स असिन्नस्स तहेव निग्यसेसं, जाव-'मवादेसो'ति । कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पलिमोवमस्स असंखेज्जस्मागं पुढकोडिपुहुत्तमण्महियं-
- ९. [प्र०] हे भगवन् । जो ते ( संज्ञी पंचिन्दिय तिर्यंच ) तिर्यंचयोनिकोधी आवी उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोधी आवी उत्पन्न थाय—इत्यादि पृथिवीकायिक उदेशकमां कह्या प्रमाणे अहीं उपपात कहेवो. यावत्—
- १०. [प्र०] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिक, पंचिन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा पंचिन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गीतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनां स्थितिवाळामां उत्पन्न थाय.

पृथिनीकाथिकनी पंचेन्द्रिय तिर्यचर्मा चत्पत्तिः परिमाणः

- ११. [प्र०] हे भगवन् ! ते (पृथिशीकायिको ) एक समये केटला उत्पन्न थाय-इत्यादि परिमाणशी मांडी अनुबंध सुधी जे पोताना खस्थानमां वक्तव्यता कही हो तेज प्रमाणे आहं पण कहेबी. परन्तु विशेष ए के नवे गमकोमां परिमाण जबन्य एक, वे के त्रण अने उन्कृष्ट संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय हो. संवेध—भवनी अपेक्षाए नवे गमोमां जबन्य वे भव अने उन्कृष्ट आठ भव जाणवा. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणहुं. काळनी अपेक्षाए बन्नेनी स्थिति एकडी करवाबड़े संवेध करवो.
- १२. जो ते (पं किंग्बेचो ) अप्नाधिकीथी आवी उत्पन्न थाय तो—इत्यादि पूर्व प्रमाणे अप्नाय संबंधे पण कहेतुं. अने ए प्रमाणे यावत्—चउरिन्दिय सुधीनो उपपात कहेवो. परन्तु सर्व टेकाणे पोतपोतानी वक्तव्यता कहेवी. नवे गमकोमां भवादेश जधन्य बे भव अने उत्कृष्ट आठ भव, तथा काळादेश बन्नेनी स्थिति जोडीने करवो. जे प्रमाणे प्रथिवीकायिकोमां उत्पन्न थनारनी वक्तव्यता कही छे तेज प्रमाणे बधा गमोमां बधा जीवो संबंधे कहेवी, अने बधे टेकाणे स्थिति अने संबंध भिन्न जाणवो.

अप्कायिकोनी प ॰ तिर्यचमा उत्पश्चि-

१३. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते ( पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको ) पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आत्री उत्पन्न थाय तो हुं संज्ञी पंचेन्द्रिय-तिर्यंचयोनिकायी आवी उत्पन्न थाय के असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोधी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ बने प्रकारना तिर्यंचोमांथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थनार तिर्यंचोना मेदो \*कह्मा छे तेम अहीं पण कहेवा. यावत्-

प० तियंचोनी पं० तियंचोमा उत्पत्तिः

१४. [प्र०] हे भगवन् ! असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थंचयोनिक, जे पंचेन्द्रिय तिर्थंचयोनिकोमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा सं० पंचेन्द्रिय तिर्थंचमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गोतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पत्योपमना असंख्यानमा भागनी स्थितिवाळा पंचेन्द्रिय तिर्थंचमां उत्पन्न थाय.

असंबी पं॰ तिर्वेचर्ग। सं॰ पं॰ तिर्वेचमां उत्पत्ति.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! ते (असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको) एक समये केटला उत्पन्न धाय—इत्यादि संबंधे पृथिवीका-यिकमां उत्पन्न धनार असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनी वक्तव्यता कही छे ते प्रमाणे यावत्—भवादेश सुची कहेवी. काळनी अपेक्षाए जघन्य वे उत्पात परिमाण-

- प्रवितयं १ । वितियगमप एस चेव लखी । नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं हो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अत्तारि पुष्टकोडियो चर्जाहें अंतोमुहुत्तेहिं अध्महियाओ-प्रवितयं ०२ ।
- १६. सो खेव उक्कोसकालद्वितीपसु उववक्षो जहकेणं पिल्नोवमस्स असंखेजितिमागद्विरपसु, उक्कोसेण चि पिल्नो-चमस्स असंखेज्जरमागद्वितिपसु उववर्जित । [प्र०] ते णं मंते ! जीवा० ! [उ०] पर्व जहा रयणप्पमाप उववज्जमाणस्स असिन्नस्स तहेच निरवसेसं जाव—'कालदेसो'ति । नवरं परिमाणे जहन्नेणं पक्को चा दो वा तिश्वि वा, उक्कोसेणं संखेजा उववज्जति, सेसं तं चेव ३ ।
- १७. सो चेव अप्पणा जहन्नकालिंदितीओ जाओ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तिदितीपसु, उक्कोसेणं पुष्टकोडिआउपसु उवयद्धिति । ते णं भंते !— अवसेसं जहा एयस्स पुढियकाइपसु उवयद्धमाणस्स मन्सिमेसु तिसु गमपसु तहा एड वि मन्दिमेसु तिसु गमपसु जाव—अणुवंधो कि । भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाई, उक्कोसेणं अट्ट भवग्गहणाई। कालादेसेणं जहनेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुष्टकोडीओ चर्डाई अंतोमुहुत्तीई अन्मिहियाओ ४।
- १८. सो चेव जहन्नकालिंदुतीपसु उववन्नो एस चेव वसद्या । नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्नोसेणं अट्ट अंतोमुहुत्ता-एवतियं० ५ ।
- १९. सो चेय उक्कोसकालद्वितिपसु उचवक्षो जहक्षेणं पुत्रकोडिआउपसु, उक्कोसेण वि पुत्रकोडिआउपसु उववज्रह्— एस चेव वत्तवया । नवरं कालादेसेणं जाणेज्ञा ६ ।
- २०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालिंदृतीओ जाओ सक्षेव पढमगमगवत्तवया । नवरं दिती जहक्षेणं पुत्रकोडी, उक्को-सेण वि पुत्रकोडी, सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहन्नेणं पुष्ठकोडी अंतोमुहुत्तमन्भिह्या, उक्कोसेणं पिल्ओवमस्स असंखेजा-भागं पुत्रकोडिपुहुत्तमन्भिद्दयं-प्वतियं० ७ ।
- २१. सो चेव जहन्नकाल्डिट्टितीएसु उववन्नो, एस चेव वत्तवया जहा सत्तमगमे । नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं पुषकोडी अंतोमुद्वत्तमन्महिया, उक्नोसेणं चत्तारि पुषकोडीओ चउहिं अंतोमुद्वत्तेहिं अन्महियाओ-एवतियं० ८ ।

अन्तर्मुहूर्न अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग–एटलो काळ यात्रत्–गमनागमन करे (१). बीजा गममां पण एज वक्तव्यता कहेची. पण विशेष ए के काळादेशथी जवन्य वे अन्तर्मुहूर्न अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटी– एटलो काळ यावत्–गतिआगति करे (२).

असंज्ञी पं॰ तियँचनी उ॰ संज्ञी पं॰ तियँ-चमा उत्पत्तिः

१६. जो ते (असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्यंचयोगिक) उत्कृष्ट काळनां स्थितिवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिकोमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्कृष्ट पत्योपमना असंस्थातमा भागनां स्थितिवाळा संज्ञां पंच तिर्यंचमां उत्पन्न थाय. हे मगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय-इत्यादि जेम रक्षप्रभा पृथिवीमां उत्पन्न थनार असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी वक्तन्यता कही छे तेम यावत्—काळादेश सुधी बधी वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के परिमाण—जघन्य एक, बे, के त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता उत्पन्न थाय छे. वाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं (३).

जघ० असंशी पं॰ तिर्वचनी सभी प॰ तिर्वचमां उत्पत्तिः १७. जो ते पोते जबन्यकाळनी स्थितिबाळो होय तो जबन्य अन्तर्मुहूर्तनी स्थितिबाळा अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वर्षनी स्थितिबाळा संज्ञी पं० तिर्यचमा उत्पन्न थाय. हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय—इत्यादि प्रथिवीकायिकोमां उत्पन्न थता जबन्य आयुपबाळा असंज्ञी पंचिन्द्रिय तिर्यंचने वश्चेन। त्रण गममा जेम कहाँ छे तेम अहिं पण त्रणे गमकोमां यावत्— अनुबंध सुधी वधुं कहेंबुं. भवादेशथी जबन्य वे भव अने उत्कृष्ट आठ भव तथा काळादेश वडे जबन्य वे अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटी वर्ष— एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (४).

असंबी पंग्रितियेचनी जवणसंबी पंग्रितियेन चमा उरपत्तिः १८. जो ते (असंबी पंचेन्द्रिय तिर्यंच) जवन्य काळना स्थितित्राळा संबी पंचेन्द्रिय तिर्यंचीमां उत्पन्न थाय तो तेने पण एज वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के काळादेशथी जवन्य वे अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट आठ अन्तर्मुहूर्त-एटटो काळ यावत्— गतिआगति करे (५).

असेशी पं॰ तिर्येचनी उ॰ संझी पं॰ तियै-चर्मा उत्पत्तिः १९. जो ते ज उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा संज्ञी पंचिन्द्रिय निर्यचयोनिकोमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वर्षनी स्थितिवाळा संज्ञी पं ० तिर्यचमां उत्पन्न थाय. अहीं एज पूर्वोक्त वक्तन्यता कहेती. पण विशेष ए के अहीं काळादेश मिन जाणवी (६).

ड॰ असंबी पं॰ तिर्ये-चनी सं॰ पं॰ तिर्ये-चर्मा उत्पत्तिः २०. जो ते ज जीव पोते उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळो होय तो तेन प्रशम गमकानी वक्तव्यना कहेवी. पण विशेष ए के स्थिति जमन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी होय छे. वाकी वधुं पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवुं. काळादेशथी जधन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटी अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीपृथक्त अधिक पत्योपमनो असंख्यातमो भाग—एटळो काळ यावत्—गमनागमन करे (७).

उ॰ भ्रसंत्री पं॰ तिर्ये-चनी जव॰ संज्ञी पं॰ तिर्येचमां उत्पन्तिः

२१. जो ते जीव जबन्यकाळनी स्थितिवाळा तिर्येचमां उत्पन्न पाय तो तेने पण एज (सातमा गमकनी) वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के काळादेशथी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटी अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटी—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (८).

- २२. सो खेव उद्योसकालिट्टिश्पसु उवषयो, जहनेणं पिलेशोवमस्स असंखेज्जरमागं, उद्योसेण वि पिलेशोवमस्स असंखेज्जरमागं, एवं जहा रयणप्पमाप उववज्जमाणस्स असम्निस्स नयमगमप तहेव निरवसेसं जाव-'कालादेसो'सि । नवरं परिमाणं जहा प्यस्सेव ततियगमे, सेसं तं चेव ९ ।
- २३. [प्र०] जद्द सन्निपंचिदियतिरिक्खजोणिपहिंतो उववर्क्षति किं संखेळवासाउय०, असंखेळवासाउय० ? [उ०] गोयमा ! संखेळ०, णो असंखेळा० ।
  - २४. [४०] जर संसेज॰ जाय-किं पज्जसमंत्रेज॰, अपज्जसमंत्रेज॰ ? [उ०] दोसु वि।
- २५. [प्र०] संक्षेत्रवासाउयसिंपाचिदियतिरिक्खजोणिए जे मिष्य पंचिदियतिरिक्खजोणियसु उवविज्ञत्तप से णं मंते ! केवति० ? [उ०] गोयमा ! जद्द्रेणं अंतोमुहुत्त०, उद्घोसेणं तिपिठश्रोयमिट्टितिएसु उववज्जेजा ।
- २६. [प्र०] ते णं अंते ! अवसेसं जहा एयस्स चेव सिन्नस्स रयणप्यभाष उववज्जमाणस्स पढमगमए । नवरं ओगा-हृणा जहकेणं अंगुरुस्स असंखेजहमागं, उकोसेणं जोयणसहस्सं, सेसं तं चेव जाय-'भवादेसो'ति । कालादेसेणं जहकेणं दो अंतोमुहुत्ता, उकोसेणं तिक्षि पर्टिओयमारं पुत्रकोडीपुहुत्तमध्महियारं-एवतियं० १ ।
- २७. सो खेव जहभकालद्वितीपसु उववश्रो एस चेव वश्तवया । नवरं कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोसुदुत्ता, उद्गोसेणं जत्तारि पुत्रकोडीओ चउद्दि अंतोसुदुत्तेद्विं अन्महियाओ २ ।
- २८. सो चेव उक्कोसकालट्टितीपसु उववको जहन्नेणं तिपितिओवमट्टितीपसु, उक्कोसेण वि तिपितिओवमट्टितीपसु उववज्जित—पस चेव वसस्या । नवरं परिमाणं जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिक्ति वा, उक्कोसेणं संकेजा उववज्जिति । ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंकेज्जहभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, सेसं तं चेव जाय—'अणुवंघो'ति । भवादेसेणं दो भवग्गहणाई । कालदेसेणं जहन्नेणं तिक्ति पितिओवमाई अंगोमुहुत्तमन्महियाई, उक्कोसेणं तिक्ति पितिओवमाई अंगोमुहुत्तमन्मिति ।
- २२. जो ते उत्कृष्टकाळनी स्थितियाळा मंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पन्न थाय तो ते जघन्य अने उत्कृष्ट पल्योपमना अमंख्या-तमा भागनी स्थितियाळा मंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां, उत्पन्न थाय—इत्यादि जेम रत्नप्रभामां उत्पन्न थनार असंज्ञी पंचेन्द्रियनी वक्तन्यता कही छे तेम यात्रत्—काळादेश सुधी वधी वक्तन्यता कहिती. परन्तु आना त्रीजा गममां कह्या प्रमाणे परिमाण कहेवुं. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं (९).

च॰ असंज्ञी पं॰ तिर्य-चनी उ॰ संबी पं॰-तिर्यचमां उत्पत्ति-

२३. [प्र०] जो ते ( संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच ) संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न याय तो शुं संख्याता वर्षना आयु-पवाळा के असंख्याता वर्षना आयुपवाळामांथी आवी उत्पन्न याय ? [उ०] हे गैतिम ! तेओ संख्याता वर्षना आयुषवाळा तिर्यंचोमांथी आवी उत्पन्न थाय, पण असंख्याता वर्षना आयुपवाळा तिर्यंचोमांथी आवी न उत्पन्न थाय.

१ मंत्री पं**० तिर्येचनी** सं० पं० तिर्येचमा उत्पत्तिः

- २४. [प्र०] जो तेओ संख्याता वर्षना आयुपवाळा रांङ्गी पंचेन्द्रिय तिर्थेचमांथी आदी उत्पन्न थाय तो छुं पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषयाळा के अपर्याप्त संख्याता वर्षना आयुपयाळा संज्ञी पं० तिर्येचमांथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] तेओ बन्नेमांथी आदी उत्पन्न थाय.
- २५. [प्र०] हे भगवन् ! मंख्याता वर्षना आयुषयाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थंचयोनिक, जे मंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थंचयोनिकोमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितियाळा संज्ञी पं० तिर्थंच मां उत्पन्न धाय ? [उ०] हे गीतम ! जघन्य अन्तर्मृहर्त अने उन्कृष्ट त्रण पल्योगमर्ना स्थितियाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थंचमां उत्पन्न धाय.
- २६. [प्र०] हे भगवन् ! ते संज्ञी पंचिन्दिय तिर्यंचो एक समये केटला उत्पन्न थाय-इत्सादि रहाप्रभामां उत्पन्न धनार आ संज्ञी पंचिन्दिय तिर्यंचना प्रथम गमकनी पेठे वधुं जाणबुं. परन्तु झरीरप्रमाण जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट एक हजार योजन होय छे. बाकी वधुं ते ज प्रमाणे यावत्—भवादेश सुधी जाणबुं. काळादेशथी जघन्य वे अन्तर्मुहूर्न अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्तव अधिक त्रण पत्योपग—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (१).

परिमाणावि-

२७. जो ते ज जीव जघन्यकाळनी स्थितिबाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पन्न थाय तो तेने ए ज पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. परन्तु काळादेशथी जघन्य बे अन्तर्मुहुर्न अने उन्कृष्ट चार अन्तर्मृहर्न अधिक चार पूर्वकोटी-एटडो काळ यावत् -गमनागमन करे. (२)

जम्बन्य संबी पें शिय जमां उत्पत्तिः ३ संबी पं॰ तिर्यचनी उत्कृष्ट॰ संत्री पं॰ तिर्यचमां उत्पत्तिः

र संज्ञी पं० तिर्येचनी

२८. जो ते ज उत्कृष्ट काळनी स्थितिबाळा संज्ञी पं० तिर्थंचमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उन्कृष्ट त्रण पल्योपमनी स्थितिबाळा संज्ञी पं० तिर्थंचमां उत्पन्न थाय-इत्यादि पूर्वोक्त बक्तन्यता कहेवी. पण परिमाण-जघन्य एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट \*संख्याता जीवी उत्पन्न थाय. तेनुं शरीर जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट एक हजार योजन होय छे. बाकी बशुं पूर्वे कता प्रमाणे यावत्—अनुबंध सुधी जाणवुं. भवादेशथी बे भव अने काळादेशथी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक त्रण पल्योपम तथा उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक त्रण पल्योपम-एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (३).

२८ \* उत्कृष्ट स्थितिबाह्या संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो असंख्यात वर्षना आयुपबाद्धा ज होय छे, अने ते संख्याता होवाधी उत्कृष्टपण पण संख्याता ज सपजे छे.

- २९. सो येव अन्यणा जहक्रकालिट्टितीओ जातो, जहक्षेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं पुत्रकोडीआउपसु उववज्जति । लडी से जहा प्रयस्त येव सिन्नपंचिवियस्त पुढिविकाहपसु उववज्जमाणस्त मिन्निल्लपसु तिसु गमपसु सबेव इह वि मिन्समेसु तिसु गमपसु कायद्या । संबेहो जहेव पत्थ येव असिन्नस्त मिन्समेसु तिसु गमपसु ६ ।
- ३०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ जहा पढमगमओ। णवरं ठिती अणुवंधो जहचेणं पुषकोडी, उक्को-सेण वि पुष्नकोडी। कालादेसेणं जहकेणं पुषकोडी अंतोमुहुत्तमन्महिया, उक्कोसेणं तिक्रि पलिओवमाहं पुषकोडीपुहुत्तम-म्महियाहं ७।
- ३१. सो चेव जहस्रकालद्वितिएसु उववन्नो एस चेव वत्तद्वया । नवरं कालादेसेणं जहस्रेणं पुत्रकोडी अंतोमुहुत्तमम्म-हिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुत्रकोडीओ चर्जाहं अंतोमुहुत्तेहिं अम्भहियाओ ८ ।
- ३२. सो चेव उक्कोसकालिट्टितिएसु उघवन्नो जहन्नेणं तिपलिओवमिट्टितिएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमिट्टितिएसु, सबसेसं तं चेव । नवरं परिमाणं झोगाहणा य जहा प्यस्सेव तहयगमए । भवादेसेणं दो मवग्गहणाइं, कालावेसेणं जहनेणं तिन्नि पलिझोवमाइं पुषकोडीए अन्महियाई, उक्कोसेणं तिन्नि पलिझोवमाइं पुषकोडीए अन्महियाई-घवतियं ९ ।
- ३३. [प्र॰] जद मणुस्सेर्हितो उववज्रंति कि सम्निमणु॰, असम्निमणु॰ र [उ॰] गोयमा ! सम्निमणुस्सेर्हितो वि, अस-म्निमणुस्सेर्हितो वि उववज्रंति ।
- ३४. [प्र०] असिष्मणुस्से णं भंते ! जे मिष्य पंचिवियतिरिवश्वजोणियसु उवविज्ञत्तय से णं भंते ! केवितकाल० ! [उ०] गोयमा ! जहभेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं पुष्ठकोडिआउपसु उववज्जति । लदी से तिसु वि गमपसु जहेव पुढ-विकाइपसु उववज्जमाणस्स । संबेहो जहा पत्थ चेव असिष्ठपंचिदियस्स मिल्हिमेसु तिसु गमपसु तहेव निरवसेसो माणियद्यो ।

४ जघन्य० संज्ञी पं० तिर्वेचनी संज्ञी प० तिर्वेचमां उत्पत्तिः २९. जो ते (संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच) पोते ज जघन्य स्थितिवाळो होय [अने ते संज्ञी पं० तिर्यंचमां उत्पन्न थाय] तो ते जघन्य अन्तर्मुहूर्त आयुषवाळा अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकमां उत्पन्न थाय. तेने पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थता आज संज्ञी पंचेन्द्रियनी जे वक्तव्यता कही छे ते आ उद्देशकमां मध्यना चोथा, पांचमा अने छट्टा ए त्रण गमकमां कहेवी. अने [संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां उत्पन्न थता] असंज्ञी पंचेन्द्रियने मध्यना त्रण गमकमां जे संवेध कह्यों छे ते प्रमाणे अहि कहेवी (६).

७ उत्कृष्ट्रः सं० प० तिर्वेचनी सं० पं० तिर्वेचमां बत्पसिः ३०. जो ते पोते उत्क्रष्ट काळनी स्थितिवाळी होय नो तेने प्रथम गमकनी पेठे कहेतुं. परन्तु स्थिति अने अनुवंध जघन्य तथा उत्क्रष्ट पूर्वकोटी होय छे. काळादेशथी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटी अने उत्क्रष्ट पूर्वकोटी प्रथक्त अधिक प्रण पल्योपम--एटलो काळ यावत्-गमनागमन करे (७).

८ डाक्कृष्ट० सं० पं० तिर्येचनी ज० सं० पं० तिर्येचमां डस्पत्तिः ३१. जो ते ज जीव ( उ० संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच ) जघन्य स्थितगळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकमां उत्पन्न याय तो तेने ए ज पूर्वोक्त वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के काळादेशयी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटी अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटी-एटको काळ यावत्-गमनागमन करे (८).

उ॰ सं॰ पं॰ तियं॰ बनी उ॰ सं॰ प॰ तिर्येचमां उत्पत्तिः ३२. जो ते उत्कृष्टकाळनी स्थितिबाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकमां उत्पन्न थाय तो ते जबन्य अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी स्थितिबाळा सं० पं० तिर्यंचमां उत्पन्न थाय. बाक्षी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाण जाणवुं. पण विशेष ए के परिमाण अने अवगाहना आना श्रीजा गमकमां कह्या प्रमाण जाणवां. भवादेशथी बे भव अने काळादेशथी जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक त्रण पल्योपम—एटलो काळ यावत्—गतिआगित करे (९).

मनुष्योनी सं॰ पं० तिर्यचमां स्त्यस्तिः ३३. [प्र०] जो (सं० पं० तिर्यंचो) मनुष्योणी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संज्ञी मनुष्योणी आवी उत्पन्न थाय के असंज्ञी मनु-ष्योणी आवी उत्पन्न थाय है [उ०] हे गौनम ! तेओ संज्ञी अने असंज्ञी ए बने प्रकारना मनुष्योणी आवीं उत्पन्न थाय.

असंबी मनुष्योनी सं• पं॰ तिर्यचर्मा एएसि. ३४. [प्र०] हे भगवन् ! असंबी मनुष्य, जे पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे ते केटल काळनी स्थितिवाळा संबी पं० तिर्यंचमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गीतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा संबी पं० तिर्यंचमां उत्पन्न थाय. प्रियवीकायिकोमां उत्पन्न थनार असंबी मनुष्यनी प्रथमना त्रण गमकमां जे वक्तव्यता कही छे ते अहीं प्रथमना त्रण गमकमां कहेवी. अने संवेध असंबी पंचेन्द्रियना मध्यम त्रण गमकमां कहो छे ते प्रमाणे आहें कहेवी.

- ३५. [प्र०] जद सम्निमणुस्तेष्टितो० कि संबेजवासाउयसम्निमणुस्तेष्टितो०, असंकेजवासाउयसम्निमणुस्तेष्टितो० ? [उ०] गोयमा ! संबेजवासाउय०, नो वसंबेजवासाउय०।
- ३६. [प्र॰] जर्र संबेखवासाउय॰ कि पज्जत्त॰, भपज्जतः । [उ॰] गोयमा ! पज्जतसंबेखवासाउय॰, भपज्जतसंबे-ज्ञवासाउय॰।
- ३७. [प्र॰] सिमणुस्से णं मंते ! जे मिषप पंचिषियतिरिक्सजोणियसु उवविक्तिसप से णं मंते ! केविति ? [उ॰] गोयमा ! जहसेणं अंतोमुहुत्त॰, उद्योसेणं तिपितिओवमिट्टिनिएसु उववस्त्रिति ।
- ३८. [प्र०] ते णं भंते !० [उ०] लखी से जहा एयस्सेव सिन्नमणुस्सस्स पुढिविकाइएसु उववज्जमाणस्स पढमगमए जाव-'मवादेसो'ति । कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुद्दुता, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओयमाई पुत्रकोडिपुहत्तमन्महियाई १ ।
- ३९. सो खेव जहन्नकालद्वितिपसु उववन्नो पस चेव वत्तवया । णवरं कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुत्रकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अन्महियाओ २ ।
- ४०. सो चेय उद्योसकालद्वितिपसु उववन्नो जहन्नेणं तिपिलिओवमद्विद्दपसु, उद्योसेण वि तिपिलिओवमद्विद्दणसु—सन्नेव यसवया । नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलपुहत्तं, उद्योसेणं पंच धणुसयादं । ठिती जहन्नेणं मासपुहत्तं, उद्योसेणं पुन्नोडी । एवं अणुवंघो वि । मवादेसेणं दो भवग्गहणादं, कालादेसेणं जहन्नेणं तिन्नि पिलिओवमादं मासपुहत्तमन्मिहयादं, उद्योसेणं तिन्नि पिलिओवमादं पुन्नकोडीए अब्महियादं-पवितयं० ३ ।
- ३५. [प्र॰] हे भगवन् ! जो (मंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थेच ) संज्ञी मनुष्योथी आदी उत्पन्न थाय तो छुं संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योथी के असंख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय ? [त०] हे गौतम ! तंओ संख्याता वर्षना आयुष-याळा संज्ञी गनुष्योथी आमी उत्पन्न थाय, पण असंख्याता वर्षना आयुषवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न न थाय.

संशी मनुष्योनी संशी पं॰ तिर्येषमां सत्पत्तिः

- ३६. [प्र०] जो तेओ (संज्ञी पं० तियंचो) संख्याता वर्षना आयुषवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ता मनुष्योथी के अपर्याप्ता मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गीतम ! तेओ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता वने प्रकारना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय.
- ३७. [प्र०] संख्याता वर्षना आयुपवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य, जे संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते केटला काळनी स्थितिवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचमा उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गीतम ! ते अवन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा सं० पं० तिर्येचमां उत्पन्न थाय.
- ३८. [प्र०] हे भगवन् ! ते रांज्ञी मनुष्यो एक समये केटल उत्पन्न थाय-इस्यादि पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थता ए ज संज्ञी मनुष्यनी प्रथम गमकमां कहेली \*वक्तन्यता यावत्—भवादेश सुधी अहं। कहेवी. काटादेशयी जघन्य वे अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्य अधिक त्रण पल्योपम—एटलो काळ यावत्—गतिआगति करे (१).

३९. जो त संज्ञी मनुष्य जघन्य काळर्ना स्थितिबाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्धेचयोनिकमां उत्पन्न याय तो तेने ए ज पूर्ीक वक्त-व्यता कहेत्री. परन्तु काळादेशथी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटी वर्ष-एटले काळ यावत्-गमनागमन करे (२).

संशी मनुष्यनी जप॰ सं॰ पं॰ तिर्थेचमां उत्पत्ति-

परिमाणादिः

४०. जो ते ज मनुष्य उन्क्रष्ट काळनी स्थितिवाळा तिर्यंचमां उत्पन्न थाय तो ते जघन्य अने उन्क्रष्ट त्रण पन्योपमनी स्थितिवाळा संत्री पं जित्यंचमां उत्पन्न थाय. (अहीं पण) ए ज पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के शरीरप्रमाण जघन्य अंगुळ्युयक्त अने उत्कृष्ट प्रांचसो धनुष होय छे. आयुष जघन्य मासपृथक्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी होय छे. ए प्रमाणे अनुबंध पण जाणवी. भवादे-शर्थी ब भव तथा काळादेशथी जघन्य मासपृथक्त अधिक त्रण पत्योपम अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक त्रण पत्योपम—एटल्यो काळ यावत्—गमनागमन करे (३).

संशी मनुष्यनी ख॰ सं॰ पं॰ तियैचमां अल्पत्तिः

३८-३९ \* पृथिवीकायिकमां उत्पन्न यता संज्ञी मनुष्यनी प्रथम गममां कहेली वक्तव्यता आ प्रमाणे छे. परिमाण—एक गमये जघन्य एक, वे अने उत्कृष्ट संख्याता उत्पन्न थाय छे. कारण के संज्ञी मनुष्यो हमेशां संख्याता ज होय छे. तेने छ संघयण होय छे. उत्कृष्ट पांचसो धनुषनी अवगाहना, छ संस्थान, त्रण दृष्टि, विकल्पे चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान, त्रण योग, वे प्रकारनो उपयोग, चार संज्ञा, चार कथाय, पांच इन्द्रिय, छ ममुद्घात, साता अने अशाता, त्रण दृष्टि, विकल्पे चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान, त्रण योग, वे प्रकारनो उपयोग, चार संज्ञा, चार कथाय, पांच इन्द्रिय, छ ममुद्घात, साता अने अशाता, त्रण येद, ज॰ अन्तर्मुहूर्त् अने त्र॰ पूर्वकोटिनुं आयुष, प्रशस्त अने अप्रशस्त अध्यवसाय, स्थितिना समान अनुवन्ध अने संवेध. जघन्य वे अव अन्तर्मुहूर्त् अने उ॰ चार अन्तर्मुहूर्त् अधिक उत्कृष्ट आठ भव होय छे. बीजा गममां प्रथम गममां कहेली वक्तव्यता कहेवी. परन्तु काळनी अपेक्षाए ज॰ वे अन्तर्मुहूर्त् अने उ॰ चार अन्तर्मुहूर्त् अधिक चार पृथकोटि संवेध आणवो.—टीका.

४० र्ग त्रीजा गममां पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणपुं. परन्तु अवगाहना अंगुलपृथकत्व—वे अंगुलशी नव अंगुल प्रमाण अने आयुष मासपृथकत्व जाणपुं. आ कथनबी एटलुं जाणी शकाय छे के अंगुलपृथकत्वची न्यून शरीरवाळी तथा मासपृथकत्वची हीन आयुषवाळी मनुष्य उत्कृष्ट आयुषवाळा तिर्येचमां उत्सव यतो लबी.—टीका.

- ४१. सो खेब मन्पणा जहज्ञकालद्विरको जाओ, जहा सम्निपंचिवियतिरिक्कजोवियस्स पंचिवियतिरिक्कजोिकसू इववज्जमाणस्स मन्द्रिमेसु तिसु गमपसु वत्तवया भणिया पस चेव पयस्स वि मन्द्रिमेसु तिसु गमपसु निरवसेसा मार्कि-यद्या । नवरं परिमाणं उद्योसेणं संखेजा उववज्ञंति, सेसं तं चेव ६ ।
- ४२. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितिओ जातो सद्येव पढमगमगवत्तद्वया। नवरं ओगाइणा जहकेणं पंच धणुसयाई। वक्कोसेणं पंच धणुसयाई। दिती अणुवंधो जहकेणं पुष्टकोडी, उद्घोसेण वि पुत्रकोडी, सेसं तहेव जाव-'भवावेसो'ति, कालोदेसेणं जहकेणं पुष्टकोडी अंतोमुद्दत्तमम्मिद्दया, उक्कोसेणं तिक्वि पिल्नोवमाई पुत्रकोडिपुदत्तमम्मिद्दियाई-एवतियं ७।
- ४३. सो चेव जहस्रकालद्वितिपसु उववस्रो एस चेव वस्त्रवया । नवरं कालादेसेणं जहस्रेणं पुषकोडी अंतोमुहुस्त्रमध्य-हिया, उक्रोसेणं चत्तारि पुषकोडीओ चर्डार्ड अंतोमुहुस्तेहिं अन्महियाओ ८ ।
- ४४. सो चेव उक्कोसकालिट्टितिएसु उववक्षो, जहन्नेणं तिश्चि पिलओवमाई, उक्कोसेण वि तिश्चि पिलेओवमाई, एस बेव लदी जहेव सत्तमगमे । भवादेसेणं दो भवग्गहणाई । कालादेसेणं जहन्नेणं तिश्चि पिलेओवमाई पुत्रकोडीए अन्महियाई, उक्को-सेण वि तिश्चि पिलेओवमाई पुत्रकोडीए अन्महियाई—एवतियं ९ ।
- ७५. [प्र०] जर देवेहितो उचयज्जति कि मवणवासिदेवेहितो उचयज्जति, वाणमंतरः, जोहसियः, वेमाणियदेवेहितोः १ [उ०] गोयमा ! मवणवासिदेवेहितो वि०, जाव-वेमाणियदेवेहितो वि०।
- ४६. [प्र०] जर् भवणवासि० कि असुरकुमारभवण०, जाय-थणियकुमारभवण० १ [उ०] गोयमा । असुरकुमार०, जाय-थणियकुमारभवण० ।
- ४७. [पठ] असुरकुमारे णं भंते ! जे भविष पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उवयिज्ञक्त से णं भंते ! केवति० ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुक्तिएसु, उक्कोसेणं पुत्रकोडिआउएसु उवयद्भति । असुरकुमाराणं लद्धी णयसु वि गमएसु जहा पुढविकारएसु उवयद्भमाणस्स, एवं जाव-ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी । भवादेसेणं सहत्य अट्ठ भवग्गहणारं, उक्कोसेणं जहकेणं दोन्नि भवग्गहणारं । ठिति संवेहं च सद्वत्य जाणेजा ९ ।

जघ॰ संबी मनुष्यनी सं॰ पं॰ तिर्यंचमां छत्पत्तिः ४१. जो ते संज्ञी मनुष्य पोते जघन्यस्थितित्राळो होय तो तेने जेम पंचेन्द्रिय निर्यंचमां उत्पन्न यता पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी मध्यम त्रण गमकोनी वक्तव्यता कही छे तेम आनी पण मध्यम त्रण गमकोनी बधी यक्तव्यता कहेबी. पण विशेष ए के परिमाण 'उत्कृष्ट संख्याता उपजे' एम कहेबुं, अने वाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणबुं. (६)

उल्क्षष्ट॰ संबीमनु-ष्यनीसं॰ पं॰ तिर्थे-चमां उत्पक्ति-

४२. जो ते (संज्ञी मनुष्य) पोते उत्कृष्ट काळनी स्थितिबाळो होय तो तेने प्रथम गमकर्ना वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के शरीरंगी अनगाहना जघन्य अने उत्कृष्ट प्रविकोटी होय छे. बाकी बधुं यावत्—भवादेश मुधी ते ज प्रमाण जाणबुं. काळादेशथी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटी अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त अधिक त्रण पत्योपम—एटलो काळ यावत्—गतिआगित करे (७).

उ॰ संही मनुष्यती जव॰ सं॰ पं॰ तिर्य-चमां उत्पत्ति- ४३. जो ते ज मनुष्य जघन्य स्थितियाळा तिर्येचमां उत्पन्न याय तो तेने ए ज वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के काळादेशथी जघन्य अन्तर्मुहुर्त अधिक पूर्वकोटी अने उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहुर्त अधिक चार पूर्वकोटी—एटलो काळ यावत्—गतिआगति करे (८).

उ॰ संग्री मनुष्यनी उ॰ संग्री पं॰ तिर्थेः चर्मा उत्पत्तिः ४४. जो ते ज मनुष्य उत्कृष्टकाळनी स्थितियाळा संज्ञी पं० तिर्थैचयोनिकमां उत्पन्न थाय तो ते जघन्य अने उत्कृष्ट त्रण पल्यो-पमनी स्थितियाळा संज्ञी० पं० तिर्थेचमां उत्पन्न थाय. अहिं पूर्वोक्त सातमा गमकनी वक्तव्यता कहेवी. भवादेशथी वे भव अने काळादे-श्राधी जधन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक त्रण पल्योपम—एटलो काळ यावत्—गतिआगति करे (९).

देवोनी सं॰ पं॰ तियंचोमां उत्पत्तिः ४५. जो ते (सं० पं० तिर्यंचो) देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो द्यां भवनवासी देवोथी, वानव्यन्तर देवोथी, ज्योतिषिक देवोथी के वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ भवनवासी देवोथी, अने यावत्—वैमानिक देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय.

असुरकुमार-भवनवासी देवोनी सं॰ पं॰ तिर्वचीमां उपपातः

- ४६. [प्र०] जो ते भवनवासी देवोधी आवी उत्पन्न थाय तो द्युं असुरकुमार भवनवासीधी के यावत्—स्तनितकुमार भवनवासी देवोधी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गीतम ! तेओ असुरकुमारोधी, यावत्—स्तनितकुमार भवनवासी देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे.
- ४७. [प्र०] हे भगवन् ! जे असुरकुमार भवनवासी देव सं० पंचेन्द्रिय तियंचयोनिकोम! उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा संज्ञी पं० तियंचमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा संज्ञी पं० तियंचमां उत्पन्न थाय . तेने नवे गमकमां जे वक्तव्यता पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थता असुरकुमारोनी कही छे तेम कहेवी. ए प्रमाणे यावत्—ईशानदेव लोक सुधी पण ते प्रमाण वक्तव्यता कहेवी. भयादेश बधे ठेकाणे उत्कृष्ट आठ मव अने जघन्य वे भव होय छे. अर्हा सर्व ठेकाणे स्थिति अने संवेध भिन्न जाणवो (९).

- ४८. [४०] नागकुमारे णं मंते ! जे भविष० ! [उ०] एस खेष वसक्वया । नवरं ठिति संवेद्धं च जाणेखा । एवं जाब-चणियकुमारे ९ ।
  - ४९. [प्र०] जर बाणमंतरेहितो० कि पिसाय० ! [४०] तहेव । जाय-
  - ५०. [४०] बाणमंतरे णं मंते ! जे मबिए पंसिदियतिरिक्क० ! [४०] एवं चेव । नवरं ठिति संवेद्यं च जाणेजा ९ ।
  - ५१. [प्र०] जइ जोतिसिय० ! [उ०] उववाओ तहेव । जाव-
- ५२. [प्र०] जोतिसिए णं मंते ! जे मिष्य पंचित्रियतिरिक्कः ? [उ०] एस चेष वस्तवया । जहा पुरितकाद्यवदे-सए मवग्गहणाइं णवसु वि गमपसु अहु, जाव-कालादेसेणं जहन्नेणं अटुमागपिलओवमं अंतोमुहुस्तमध्मिहियं, उद्गोसेणं बसारि पिल्नोवमाइं चर्डाहे पुत्रकोडीहि चर्डिय वाससयसहस्तेहि अम्मिहियाइं-एवितयं । एवं नवसु वि गमपसु, नवरं ठितिं संवेहं च जाणेजा ९।
- ५३. [प्र०] जह वेमाणियदेवेहितो० किं कप्पोवगवेमाणिय०, कप्पातीतवेमाणिय० शिवणीयमा कप्पोवगवेमाणिय०, नो कप्पातीतवेमाणिय० । जह कप्पोवग० जाय-सहस्सारकप्पोवगवेमाणियवेवेहितो वि उववर्जात, नो आणय०, जाय-णो अनुयकप्पोवगवेमाणिय०।
- ५४. [प्र०] सोहम्मदेवे णं मंते ! जे भविष पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उपविद्यास्तर से णं मंते ! केवति० ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुच०, उद्घोसेणं पुषकोडीआउपसु, सेसं जहेव पुढविकार्यउद्देसप नवसु वि गमपसु । नवरं नवसु वि गमपसु जहकेणं दो भवग्गहणारं, उद्घोसेणं अट्ट भवग्गहणारं । ठिति कालादेसं च जाणिज्ञा, पवं ईसाणदेवे वि । एवं एएणं कमेणं अवसेसा वि जाव-सहस्सारदेवेसु उवचापयद्या । नवरं ओगाहणा जहा ओगाहणासंठाणे, लेस्सा-सणंकुमार-
- ४८. [प्र॰] हे भगवन् ! जे नागकुमार, पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा सं॰ पं॰ तिर्यचमां उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गौतम ! अहीं बधी पूर्वोक्त वक्तन्यता कहेबी. पण विशेष ए के स्थिति अने संवेध (भिन्न) आणवो. ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

नागकुमारनी संश पंश्वतियेचमां नत्पत्ति-

४९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते (संज्ञी पं० निर्थेचो) वानव्यन्तरोधी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पिशाच यानव्यन्तरोधी आवी उत्पन्न याय—हत्यादि वधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. यावत्—

बानव्यतरोबी सं॰ पं॰ निर्येचमा उत्पत्तिः

- ५०. [प्र०] हे भगवन् ! जे वानव्यन्तर, पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा संज्ञी पं ० तिर्यंचमां उत्पन्न थाय १ [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. पण विशेष ए के अही स्थिति अने सवेध भिन्न जाणवो.
- ५१. [प्र॰] जो ते (संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच) ज्योतिषिकोधी आबी उत्पन्न थाय तो तेने पूर्वे कह्या प्रमाणे-पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थता संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचने कह्या प्रमाणे उपपात कहेवो. यावत्—

ज्योतिषिकोनी सं° पं॰ तिर्यचर्मा उत्पत्तिः

- ५२. [प्र०] हे भगवन् ! जे ज्योतिषिक, पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे ते केटला काळनीं स्थितिवाळा सं० पं० तिर्यंचमां उत्पन्न याय ! [उ०] ए ज पूर्वोक्त वक्तव्यता जेम पृथिवीकायिक उद्देशकमां कहेली छे तेम कहेवी. नवे गमकमां आठ मबो जाणवा. यावत्—काळादेशयी जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट चार पूर्वकोटी अधिक पल्योपम— एटलो काळ यावत्—गतिआगति करे. ए प्रमाणे नवे गमकोमां जाणवुं. पण विशेष ए के अहीं स्थिति अने संवेध भिन्न जाणवो. (९)
- ५३. [प्र०] जो तेओ वैमानिक देवोथी आश्री उत्पन्न थाय तो शुं कल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी के कल्पातीत वैमानिक देवोथी आश्री उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम! तेओ कल्पोपपन्नक वैमानिक देवोथी आश्री उत्पन्न थाय, पण कल्पातीत वैमानिक देवोथी आश्री न उत्पन्न थाय. जो कल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आश्री उत्पन्न थाय तो यावत्—सहस्रार कल्पोपपन्नक वैमानिक देवोथी आश्री उत्पन्न थाय, पण आनत कल्पोपपन्नक, यावत्—अन्युतकल्पोपपन्नकथी आश्री उत्पन्न न थाय.

वेमानिक देवोनी संव पंव तियंचमा उत्पत्तिः

५४. [प्र०] हे मगवन् ! जे सौधर्म देव, पंचेन्द्रिय तिर्येचयोनिकोमां उत्पन्न यवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा पंचे-न्द्रिय तिर्येचमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी आयुषयाळा पंचेन्द्रिय निर्येचमां उत्पन्न थाय. बाकी बधुं नवे गमकोने आश्रयी पृथिवीकायिक उद्देशकमां कह्या प्रमाणे कहेतुं. पण विशेष ए के नवे गमकोमां संवेध-भवनी अपेक्षाए जघन्य वे भव अने उत्कृष्ट आठ भवनो होय छे. स्थिति अने काळादेश (भिन्न भिन्न) जाणवा. ए प्रमाणे ईशान देव संवंधे पण जाणवुं.

सीपर्मथी सहस्राए पर्वत देवोनी सं॰ पं० विथे गमा उत्पन्तिः माहित्-बंगलोपसु प्या पम्हलेस्सा, सेसाणं एगा सुक्रलेस्सा । वेदे नो इत्थिवेदगा, पुरिस्तवेदगा, णो नपुंसगवेदगा । आउ-भंणुबंधा जहा टितिपदे, सेसं जहेब ईसाणगाणं कायसंबेहं च जाणेजा । 'सेवं भंते ! सेवं मंते' ! सि ।

#### चउवीसतिमे सए वीसतिमो उद्देसो समत्तो ।

तथा ए ज क्रमवडे बाकी बधा देवोनो यावत्—सहस्रार देत्र सुधी उपपात कहेवो. परन्तु अवगाहना, \*अवगाहनासंस्थानपदमां कह्या प्रमाणे जाणवी. लेश्या—सनत्वुमार, माहेन्द्र अने बहालोकमां एक पद्मलेश्या अने बाकी बधाने एक गुक्कलेश्या जाणवी. वेदमां स्रीवेदबाळा अने नपुंसकवेदवाळा नथी, पण पुरुषवेदवाळा होय छे. 'स्थितिपदमां कह्या प्रमाणे आयुप अने अनुबंध जाणवी. बाकी बधुं ईशान देवोनी पेठे जाणवुं, तेमज अहं कायसंवेध जुदो कहेवो. 'हे मगवन् । ते एमज छे, हे मगवन् । ते एमज छे.

#### चोवीशमा शतकमां वीशमो उदेशक समाप्त.

## एगवीसतिमो उद्देसो ।

- १. [प्र॰] मणुस्सा णं मंते ! कथोहितो उववज्ञंति ? कि नेरर्पहितो उववज्ञंति ? जाव-देवेहितो उववज्ञंति ? [उ॰] गोयमा ! णेरर्पहितो वि उववज्ञंति, जाव-देवेहितो वि उववज्ञंति, प्रवे उववज्ञंति-प्रवे उववज्ञंति । किम्मुहितो वि उववज्ञंति, णो अहेसत्तमपुहिवनेरर्पहितो उववज्ञंति ।
- २. [प्र०] रयणप्यभपुढिविनेरद्दय णं अंते! जे भविष मणुस्सेसु जवविज्ञत्तिए से णं अंते! केषतिकाळ० ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं मासपुद्दत्तिष्ट्रित, उक्कोसेणं पुद्रकोडिआउपसु, अवसेसा वत्तवया जहा पंचिदियतिरिक्सजोणियसु उववज्जंतस्स तहेव । नवरं परिमाणे जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिश्वि वा, उक्कोसेणं संखेज्ञा उववज्जंति । जहा तिर्दे अंतोमुदुत्तेि तहा दृष्टं मासपुद्दत्तेि संवेदं करेजा, सेसं तं चेव ९ । जहा रयणप्यमाय वत्तवया तहा सकरप्यमाय वि । नवरं जहन्नेणं वासपुद्वत्त-दिरुष्तु, उक्कोसेणं पुद्वकोडी० । ओगाहणा-लेस्सा-णाण-द्विति-अणुवंध-संवेदं णाणतं च जाणेज्ञा जहेव तिरिक्सजोणिय-उद्देसय । पर्य-जाव-तमापुढविनेरदय ९ ।
- ३. [प्र०] जद तिरिक्सजोणिएहिंतो उववज्जंति कि पर्गिदियतिरिक्सजोणिएहिंतो उववज्जंति ? जाव-पंचिदियतिरि-क्सजोणिपहिंतो उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! पर्गिदियतिरिक्सजोणिए० भेदो जहा पंचिदियतिरिक्सजोणिउद्देसए। नवरं तेउ-वाऊ पढिसेद्देयवा, सेसं तं चेव । जाय-

### एकवीशमो उद्देशक.

ब्रमुम्बोनो उपपातः

१. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ! युं नैरियकोथी, के यावत्—देवोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गीतम ! तेओ नैरियकोथी आवी उत्पन्न थाय, यावत्—देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे अहीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक उद्देशकमां कहा प्रमाणे उपपात कहेवो. यावत्—छडी नमा पृथिवीना नैरियकोथी आवी उत्पन्न थाय, पण सातमी तमतमा पृथिवीना नैरियकोथी आवी उत्पन्न थाय.

**रक्ष**प्रमानैरथिकनो **मनुष्य**मां उपपातः २. [प्र०] हे भगवन्! रत्नप्रभाष्ट्रियवीनो नरियक जे मनुष्योमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न थाय! [उ०] हे गाँतम! ते जवन्य ने मासधी आरंभी नव मास सुचीनी अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न याय. बाकी बधी वक्तव्यता पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकमां उत्पन्न यता रत्नप्रभानेरिकनी पेठे कहेवी. परन्तु परिमाण—जवन्य एक, ने के प्रण अने उत्कृष्ट संख्याता उत्पन्न थाय छे. जेम त्यां अन्तर्मुहूर्तवडे संवेध कर्यों छे तेम अहीं मासपृथक्त्ववडे संवेध करवो. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं, रत्नप्रभानी वक्तव्यतानी पेटे शर्कराप्रभानी पण वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के जवन्य वर्षप्रयक्त्वनी स्थितिन वाळा अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न थाय. तथा अवगाहना, लेश्या, ज्ञान, स्थिति, अनुवंध अने संवेध अने तेनी विशेषता निर्यचयोनिकना उदेशकमां कहा। प्रमाणे जाणवी. ए प्रमाणे यावत्—तमा पृथिवीना नैरियक सुची जाणवुं.

तिथचदोनिकनो मनुष्यमं उपपातः ३. [प्र०] जो तेओ तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी के यावत्—पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय—इत्यादि वक्तन्यता पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिक उद्देशकर्मां कहा प्रमाणे जाणवी. पण विशेष ए के, तेजस्काय अने वायुकायनो निषेध करवो. [ त्यांथी आवी मनुष्यमां उत्पन्न न थाय. ] बाकी बधुं पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवुं. यावत्—

५४ \* जुओ प्रज्ञा० पद २९ प० ४१३ – १

- ध. [प्र॰] पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए अणुस्सेसु उथविकत्तिए से णं भंते ! केवति० ! [ड॰] गोयमा ! जहकेणं अंतोनुइत्तद्दितिएसु, उक्कोसेणं पुक्कोडीआउएसु उथविकका ।
- ५. [प्रव] ते णं मंते ! जीवाव ! [उव] एवं जहेव पंचिदियतिरिक्सजोणियसु उववज्रमाणस्य पुढविकाइयस्य वस-ह्या सा सेव हह वि उववज्रमाणस्य माणियन्ना णवसु वि गमपसु । नवरं तितथ-छट्ट-णवमेसु गमपसु परिमाणं जहन्नेणं एको वा वो वा तिनि वा, उक्नोसेणं संबेजा उववज्रंति । जाहे अप्पणा जहन्नकालद्वितियो भवति ताहे पढमगमप अज्य-वसाणा पसत्या वि अप्पसत्या वि, वितियगमप अप्यसत्या, तितयगमप पसत्या भवंति, सेसं तं चेव निरवसेसं ९ ।
- ६. [प्र०] जह आउकार्प० ? [उ०] एवं आउकाहयाण वि । एवं वणस्तरकाहयाण वि । एवं जाव-वडरिंदियाण वि । असिंक्षपंचिंदियतिरिक्कजोणिय-सिंक्षपंचिंदियतिरिक्कजोणिय-असिंक्षप्रणुस्स-सिंक्षप्रणुस्सा य एते सक्के वि जहा पंचिंदियतिरिक्कजोणियउद्देसए तहेव भाणियद्या । नवरं एयाणि चेव परिमाण-अज्यवसाण-णाणताणि जाणिजा पुढविका-इयस्स एत्य चेव उद्देसए भणियाणि । सेसं तहेव निरवसेसं ।
- ७. [प्र०] जह देवेहितो उववज्रंति किं भवणवासिदेवेहितो उववज्रंति, वाणमंतर०, जोहसिय०, वेमाणियदेवेहितो जववज्रंति ! [उ०] गोयमा ! मवणवासिदेवेहितो वि०, जाध-वेमाणियदेवेहितो वि उववज्रंति ।
  - ८. [प्रठ] जइ अवणवासिक किं असुरक, जाव-धणियक १ [उठ] गोयमा ! असुरकुमारक, जाव-धणियक ।
- ९. [प्र०] असुरकुमारे णं अंते ! जे अविष अणुस्तेसु उचयक्कित्तप से णं अंते ! केवति० ! [उ०] गोयमा ! जहकेणं आसपुदृत्तद्वितिपसु, उक्कोत्तेणं पुष्ठकोडिआउपसु उचयक्केका । एवं जक्केव पर्चिदियतिरिक्कजोणिउद्देसए वत्तवया सक्केव पत्थ वि आणियद्या । नवरं जहां तर्हि जहकां अंतोमुदृत्तद्वितिपसु तहा इहं आसपुदृत्तद्विहरूपसु । परिमाणं जहकेणं पक्को वा दो वा
- ४. [प्र०] हे भगवन् ! जे पृथिवीकायिक, मनुष्योमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा यनुष्यमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ने जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न थाय.

पृषिषीकायिकोनो मनुष्यमां उपपातः

- ५. [प्र०] हे भगवन् ! ते (पृथिवीकायिको) एक समये केटला उत्पन्न थाय—हत्यादि पंचेन्द्रिय तिर्पंचयोनिकमां उत्पन्न थता पृथिवीकायिकनी पेठे अहीं मतुष्यमां उत्पन्न थनार पृथिवीकायिकनी वक्तव्यता नवे गमकोमां कहेवी. विशेष एके त्रीजा, छट्टा, अने नवमा गमकमां परिमाण जघन्य एक, वे के त्रण अने उत्कृष्ट मंख्याता उत्पन्न थाय छे. ज्यारे (पृथिवीकायिक) पोते जघन्यकाळनां स्थितिवाळो होय त्यारे [मध्यमना त्रण गमकमांना] \*प्रथम गमकमा अध्यवसायो प्रशस्त अने अप्रशस्त वने प्रकारना होय छे. बीजा गमकमां अप्रशस्त अने त्रीजा गमकमां प्रशस्त होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं.
- ६. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ (मनुष्यो) अष्कायिकोयी आवी उत्पन्न थाय तो अष्कायिकोने तथा वनस्पतिकायिकोने पूर्वोक्त वक्तव्यना कहेवी. ए प्रमाणे यावत्—चउरिन्दियो सुधी जाणवुं. असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचयोनिक, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्येचयोनिक, असज्ञी मनुष्य भने संज्ञी मनुष्य ए बधाने पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकउदेशकमां कह्या प्रमाणे कहेतुं. परन्तु विशेष ए के बधाने परिमाण अने अध्यवसायोनी मिन्नता पृथिवीकायिकने आज उद्देशकमां कह्या प्रमाणे जाणवी. बाकी बधुं पूर्वोक्त जाणवुं.

अप्हारिकनी मनु-प्यमां उपपानः

ं ७. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ ( मनुष्यो ) देवोथी आबी उत्पन्न थाय तो छुं भवनवासी, ज्यानज्यन्तर, ज्योतिविक के वैमानिक देवोथी आबी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेओ भवनवासी देवोथी, यावत्-वैमानिक देवोथी पण आबी उत्पन्न थाय !

देवोनो मनुष्योमां उपपातः

८. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते भवनवासी देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं असुरकुमारोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्—स्तिनित-कुमारोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गौतम ! तेओ असुरकुमारोथी, यावत्—स्तिनितकुमारोथी पण आवी उत्पन्न थाय.

भवनवासी देवोनो मनुष्यमां उपपातः

९. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारदेव, जे मनुष्यमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम! ते जघन्य मासपृथक्त्व अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे पंचिन्द्रिय तिर्यचयोनिकना उदेशकमां जे वक्तन्यता कही छे ते वक्तन्यता अहि पण कहेवी. पण विशेष ए के जेम त्यां जघन्य अन्तर्भुद्धतेनी स्थितिवाळा निर्यचमां उत्पन्न यवानुं कह्युं छे तेम अहीं मासपृथक्त्वनी स्थितिवाळामां उत्पन्न थवानुं कहेवुं. परिमाण—जघन्य एक, वे के त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे थावन्-ईशानदेशे सुघी वक्तन्यता कहेवी. ए ज-उपर कह्या

भशुरकुमागदि देवोनो मनुष्यमी उपपानः

५ \* मध्यमित्रका प्रथम गमकमां जघन्य - पृथिवीकायिकनो मनुष्यमां औधिक उपपात थाय छे. ज्यारे पृथिवीकायिक उ॰ मनुष्यमां उत्पन्न थवानो होय त्यारे तिना अध्यवसायो प्रशस्त होय छे, जघन्य - मनुष्यमां उत्पन्न थवानो होय त्यारे अप्रशस्त अध्यवसायो होय छे. मध्यित्रकना थीजा गमकमां जघन्य - मनुष्यमां उपजवानो होयायी तेना अध्यवसायो अप्रशस्त होय छे, कारण के प्रशस्त अध्यवसायोथी जघन्य स्थितिपणे उप-यात थतो नवी. त्रीजा गमकमां जघन्य - पृथिवीकायिक उ॰ मनुष्यमां उपजतो होवाबी तेना प्रकस्त अध्यवसायो होय छे. —टीका.

तिश्व वा, उक्कोसेणं संसेखा उववर्जात, सेसं तं सेष । एवं जाय-'र्साणदेवो'ित । एयाणि सेव णाणत्ताणि । सणंकुमारा-दीया जाव-'सहस्सारो'ित जहेव पंचिदियतिरिक्सजोणिउद्देसए । नवरं परिमाणं जहकेणं पक्को वा दो वा तिश्वि वा, उक्कोसेणं संखेखा उववर्जाति । उववाओ जहकेणं वासपुद्दत्तद्वितिपसु, उक्कोसेणं पुनकोडीआउपसु उववर्जाति, सेसं तं सेव । संवेदं बासपुदुत्तं पुनकोडीसु करेजा । सणंकुमारे दिती चउगुणिया बट्टावीसं सागरोवमा भवंति, माहिदे ताणि सेव सातिरेगाणि, बम्हलोप चतालीसं, लंतप छप्पकं, महासुके बट्टसाईं, सहस्सारे बावत्तरिं सागरोवमाहं । एसा उक्कोसा दिती भणिया । जह-ब्राह्मितं पि चउ गुणेखा ९ ।

- १०. [प्र०] आणयदेवे णं भंते ! जे मविष मणुस्सेसु उनविक्षसप से णं भंते ! केवति० ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं वासपुरस्तिदृतिपसु, उक्कोसेणं पुत्रकोडीठितीपसु० ।
- ११. [प्र०] ते णं भंते १० [उ०] एवं जहेव सहस्सारदेवाणं वस्तवया । नवरं ओगाहणा-ठिति-अणुषंधे य जाणेखा, सेसं तं चेव । भवावेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाई, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाई । कालादेसेणं जहन्नेणं अट्टारस सागरोबमाई वासपुहुत्तमम्भिहयाई, उक्कोसेणं सत्तावनं सागरोबमाई तिहिं पुक्कोडीहिं अध्मिहयाई-एवतियं कालं । एवं णव वि गमा, नवरं ठितिं अणुषंधं संवेहं च जाणेखा । पाणयदेवस्स ठिती विगुणिया सिंहे सागरोबमाई, आरणगस्स तेबिंहे सागरोबमाई, अखुयदेवस्स छाविंहे सागरोवमाई ।
- १२. [प्र॰] जद्द कप्पातीतवेमाणियदेवेद्दितो उथवज्जंति कि गेथेज्ञकप्पातीत॰, अणुत्तरोववातियकप्पातीत॰ १ [उ॰] गोयमा ! गेथेज्ञकप्पातीत॰, अणुत्तरोववातिय॰।
- १३. [प्रः] जर् गेथेळा० कि हेट्टिम २ गेविजागकप्पातीत० जाव-उवरिम २ गेवेळा० ? [उ०] गोयमा ! हेट्टिम २ गेवेळा०, जाव-उवरिम २०।
  - १४. [प्र०] गेवेज्जदेवे णं भंते ! जे भविष मणुस्सेसु उवविज्ञत्तप से णं भंते ! केवितकाल ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं

वावत् मङ्खार वेदोनां मनुष्यमां उपपातः प्रमाणे विशेषता पण जाणबी. जेम पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकउद्देशकमां कह्युं छे तेम सनन्कुमारथी मांडी यावत्—सहस्रारसुषीना देवो संबंधे कहेतुं. पण विशेष ए के परिमाण जघन्य एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट संख्याता उत्पन्न थाय छे. तेओ जघन्य वर्षपृथक्त्व स्थितिवाळा अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न थाय छे. वाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे कहेतुं. संवेध जघन्य वर्षपृथक्त्व अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वढे करवो. सनन्कुमारमां पोताना आयुपनी स्थितिथी चारगुणी करतां अञ्यावीश सागरोपम थाय छे. माहेन्द्रमां कांड्रक अधिक अठ्यावीश सागरोपम, ब्रह्मछोकमा चालीश, लांतकमां छप्पन्न, महाशुक्रमां अडसट अने सहस्रारमां बहोंतेर सागरोपम थाय छे. ए प्रमाणे उत्कृष्ट स्थिति कहेवी. अने जघन्य स्थितिने पण चारगणी करवी. [एम कायसंवेध कहेवो.] (९.)

भानत देवोनो मनुष्यमां उपपातः

१०. [प॰] हे भगवन् ! जे आनतदेव, मनुष्योमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळर्नाः स्थितिवाळा मनुष्योमां उत्पन्न धाय [उ॰] हे गौतम ! जघन्य वर्षपृथक्त्वनी अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न धाय.

परि माणादि-

११. [प्र०] हे भगवन्! ते (मनुष्यो) एक समये केटला उत्पन्न थाय-इत्यादि जेम सहस्रार देवनी वक्तव्यता कही छे तेम कहियी. पण अवगाहना, स्थिति अने अनुबंधनी विशेषता जाणवी. बाकी बधुं पूर्वे कहा। प्रमाणे जाणवुं. भवादेशथी जघन्य बे भव अने उत्कृष्ट छ भव तथा काळादेशथी जघन्य वर्षपृथक्त्व अधिक अटार सागरोपम, अने उत्कृष्ट त्रण पूर्वकोटी अधिक सत्तावन सागरोपम— एटले काळ यावत्—गमनागमन करे. ए प्रमाणे नवे गमकोमां जाणवुं. परन्तु विशेष ए के स्थिति, अनुबंध अने संवेध मेदपूर्वक जाणवो. ए प्रमाणे यावत्—अन्युत देव सुधी समजवुं. विशेष ए के स्थिति, अनुबंध अने संवेध भिन्न जाणवा. प्राणत देवनी स्थिति त्रणगुणी करतां साठ सागरोपम, आरणनी त्रेसठ सागरोपम, अने अन्युतदेवनी छासठ सागरोपम स्थिति पाय छे.

कस्पातीत देवीनी मनुष्यमा उपपात. १२. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते (मनुष्यो) कल्पातीत वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं प्रैवेयक कल्पातीत वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय के अनुत्तरीपपातिक कल्पातीत देवोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गातम ! तेओ प्रैवेयक अने अनुत्तरीपपा-तिक ए बने प्रकारना कल्पातीत देवोथी आवी उत्पन्न थाय.

ध्रेषेयक देवीनी मनुष्यमा उपपातः

- १३. [प्र∘] जो (मनुष्यो) प्रैवेयककल्पातीत देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो ज्ञुं सौथी नीचेना के सौथी उपरना प्रैवेयक-कल्पातीत देवोथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ो तेओ सौथी नीचेना यावत्—सौथी उपरना प्रैवेयककल्पातीत देवोथी पण उत्पन्न थाय.
  - १४. [प्र॰] हे भगवन् ! प्रैवेयक देव, जे मनुष्यमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला कालनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न धाय !

बासपुर्कितीपसु, उक्कोसेणं पुत्रकोडी॰, अवसेसं जहा आणयवेषस्स वस्तवया। नवरं ओगाहणा—गोतमा। एगे अवधारिवसे सरीरए, से जहकेणं अंगुलस्स असंखेखार्भागं उक्कोसेणं वो रयणीओ। संडाणं—एगे अवधारिवसे सरीरे, से समजवरंससं- दिए पक्तो। पंच समुग्धाया पक्ता, तं जहा—वेदणासमुग्धाए, जाद—तेयगसमुग्धाए, णो खेव णं वेउद्वियतेयगसमुग्धाएहिं समोहाणिसु वा, समोहणिस्तंति वा। दिती अणुवंधो जहकेणं वावीसं सागरोवमाहं, उक्कोसेणं एकतीसं सागरोवमाहं, सेसं तं चेव। कालावेसेणं जहकेणं वावीसं सागरोवमाहं वासपुरक्तमन्मिहयाहं, उक्कोसेणं तेणउति सागरोवमाहं तिहिं पुत्रकोडीहिं अन्मिह्याहं—एवतियं०। एवं सेसेसु वि अटुगमएसु। नवरं दिति संवेहं च जाणेखा ९।

- १५. [प्र०] जद्द अणुत्तरोवबादयकप्पातीतवेमाणिय० कि विजयअणुत्तरोववादय०, वेजयंतअणुत्तरोववातिय०, जाव-सबद्धसिद्ध० ? [उ०] गोयमा ! विजयअणुत्तरोववातिय० जाव-सबद्धसिद्धअणुत्तरोववातिय० ।
- १६. [म०] विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवे णं मंते! जे मिवप मणुस्सेसु उवविज्ञत्तप से णं मंते! केविति [ड०] पवं अदेव गेवेखादेवाणं। नवरं थोगाहणा जहकेणं थंगुलस्स असंकेखा भागं, उक्कोसेणं पगा रयणी। सम्मिदृष्टी, णो मिच्छिदिष्टी, णो सम्मामिच्छिदिष्टी। णाणी, णो अझाणी, नियमं तिझाणी, तं जहा-आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहि. णाणी। दिती जहकेणं पक्कतीसं सागरोवमाहं, उक्कोसेणं तेशीसं सागरोवमाहं, सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहकेणं दो भवगाहणाहं। कालादेसेणं जहकेणं पक्कतीसं सागरोवमाहं वासपुहत्तमम्भिहयाहं, उक्कोसेणं छाविष्टं सागरोवमाहं दोहिं पुषकोडीहिं अध्मिहियाहं-एवतियं०। एवं सेसा वि अट्ट गमगा भाणियद्वा। नवरं दिति अणुवंधं संवेधं च जाणेखा, सेसं एवं चेव।
- १७. [प्रच] सबद्वसिद्धगदेवे णं भंते ! अ भिष्य मणुस्सेसु उषयिक्षस्तप् ? [उ०] सा चेव विजयादिदेववस्तवया भाणियद्या । णवरं दिती अजहस्मणुक्कोसेणं तेसीसं सागरोवमारं । एवं अणुवंधो थि, सेसं तं चेव । भवादेसेणं दो भवग्ग-हणारं, कालादेसेणं जहन्नेणं तेसीसं सागरोवमारं वासपुद्दसम्भिद्धयारं, उक्कोसेणं तेसीसं सागरोवमारं पुत्रकोदीय अध्यद्दि-यारं—एवतियं० १ ।

[उ०] हे गौतम! ते जवन्य वर्षपृथक्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी स्थितवाळा मनुष्यमां उत्पन्न याय. बाकी बधी वक्तन्यता आनत देवनी पेठे कहेवी. परन्तु हे गौतम! तेने एक भवधारणीय दारीर होय छे अने तेनी अवगाहना जवन्य अंगुलनो आंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट बे हाथनी होय छे. तेने एक भवधारणीय दारीर समचतुरस्र संस्थानवाळुं होय छे. पांच समुद्धातो होय छे, ते आ प्रमाणे—१ वेदना समुद्धात अने यावत्—नेजस समुद्धात. पण तेओए वैक्तिय के नेजस समुद्धात करी नधी, करता नथी अने करशे पण निह. स्थिति अने अनुबंध जवन्य बावीश सागरोपम तथा उत्कृष्ट एकत्रीश सागरोपम होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. काळादेशथी जवन्य वर्षपृथक्त अधिक त्राणुं सागरोपम—एटलो काळ—यावत्—गमनागमन करे. बाकीना आठे गमकोमां पण ए प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए के स्थिति अने संवेध (भिन्न) जाणवो.

१५. जो तेओ (मनुष्यो) अनुत्तरीपपातिक कल्पातीत वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो ह्यं विजय, वैजयंत के यावत्— सर्वार्थिसिद्ध अनुत्तरीपपातिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गैतिम ! तेओ विजय अनुत्तरीपपातिकथी यावत्—सर्वार्थिसिद्ध अनुत्तरी-पपातिकथी आधीने उत्पन्न थाय छे.

अनुत्तरीपपातिक देवीनो उपपातः

१६. [प्र०] हे भगवन् ! अनुत्तरौपपातिक विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित देव, जे मनुष्यमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते केटला काळनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न थाय ! [उ०] इत्यादि जेम प्रेनेयक देवो संबंधे कह्युं तेम अहीं कहेतुं. विशेष ए के अवगाहना जधन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट एक हाथनी होय छे. ते सम्यग्दिष्ट होय छे पण मिथ्यादिष्ट के मिश्रदिष्टि नथी होता. ज्ञानी होय छे पण अज्ञानी नथी. तेने अवस्य मित, श्रुत अने अविध-ए त्रण ज्ञान होय छे. तेओनी स्थिति जघन्य एकत्रीश सागरोपमनी अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणतुं. भवादेशथी जघन्य वे मन, अने उत्कृष्ट चार भव, तथा काळादेशथी जघन्य वर्षपृथक्त अधिक एकत्रीश सागरोपम अने उत्कृष्ट वे पूर्वकोटी अधिक छासठ सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गतिआगित करे. ए प्रमाणे बाकीना आठे गमको कहेवा. परन्तु विशेष ए के स्थिति, अनुबंध अने संवेध (मिन्न मिन्न) जाणवो. तथा बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणतुं.

(७. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वार्धसिद्ध देव, जे मनुष्योमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेओनी वक्तल्यता विजयादिदेवनी वक्तल्यता पेटे कहेवी. विशेष ए के अहीं अधन्य निह तेम उत्कृष्ट निह एवी एकज प्रकारे तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति होय छे. ए प्रमाणे अनुबंध पण जाणवो. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. भवादेशथी वे भव तथा काळादेशथी जघन्य वर्षपृथक्त अधिक तेत्रीश सागरोपम अने उत्कृष्ट्यी पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपम-एटलो काळ यावत्—गतिआगति करे (१).

मर्वार्धसिद्ध देवीनरैं मनुष्यम् उपपातः

- १८. सो चेव जहम्मकालद्वितीयसु उववमो एस चेव वत्तद्वया । नवरं कालादेसेणं जहमेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वास-पुरुत्तमन्महियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुरुत्तमन्भवियाइं-एवतियं० २ ।
- १९. सो चेव उक्कोसकालिट्टितीपसु उववको एस चेव वस्तवया । नवरं कालादेसेणं जहकेणं तेसीसं सागरोवमादं पुत्र-कोडीए सम्मिद्दियादं, उक्कोसेण वि तेसीसं सागरोवमादं पुत्रकोडीए अन्मिद्दियादं-एवतियं० ३। एते चेव तिथि गमगा, सेसा ज मण्यंति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते !' सि ।

#### चउवीसतिमे सए एकवीसतिमो उद्देसी समत्ती।

सर्वार्थसिक देवनी स्वय मनुष्यमां स्वयातः १८. जो ते ( सर्वार्थसिद्ध देव ) जघन्यकाळनी स्थितिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न याय तो तेने ए ज वक्तन्यता कहेवी. पण विशेष ए के काळादेशयी जघन्य अने उत्कृष्ट वर्षप्रयक्त्व अधिक तेत्रीश सागरोपम–एटले काळ यावत्—गतिआगति करें (२).

सर्वापेसिद्धनो उ॰ मनुष्यमा उपपातः १९. जो ते उत्कृष्टकाळनी स्थिनिवाळा मनुष्यमां उत्पन्न थाय तो तेने पण ए ज वक्तव्यता कहेवी. परन्तु विशेष ए के काळा-देशयी जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी अधिक तेत्रीण सागरोपम—एटले काळ यावत्—गतिआगित करे (३). अहींआ त्रण गमको ज कहे-बाना छे, बाकीना गमको अहीं कहेवाना नथी. 'हे भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे.'

#### चोवीशमा शतकमां एकवीशमो उद्देशक समाप्त.

#### बावीसतिमो उद्देसो ।

- १. [प्र॰] वाणमन्तरा णं मंते ! कथोहितो उववज्ञांति ! किं नेरश्पहितो उववज्ञांति, तिरिक्ख॰ ! [उ॰] एवं जहेर णागकुमारउद्देसए असबी तहेव निरवसेसं । जर् सम्निपंचिदिय॰ जाव-असंखेज्जवासाउय॰ ।
- २. [प्र०] सिन्नपंचिदिय० जे भविए वाणमंतरेसु उयविज्ञत्तए से णं मंते ! केवति० ! [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं दस-वाससहस्सिटितीएसु, उक्कोसेणं पिल्ञिनेवमिटितिएसु, सेसं तं चेव जहा नागकुमारउद्देसए, जाव—कालादेसेणं जहन्नेणं साति-रेगा पुन्नकोडी दसिंहें वाससहस्सेहिं अन्मिहिया, उक्कोसेणं चन्तारि पिल्ञिनेवमाई—एवतियं १ ।
  - ३. सो चेष जहश्रकालट्टितिएसु उचवन्नो जहेव णागकुमाराणं वितियगमे वसवया २ ।

#### बावीशमो उद्देशक.

व्यन्तर् देवोनो उपपातः शंकीः १. [प्रo] हे मगवन् ! वानव्यन्तर देवो क्यांथी आवी उत्पन्न याय छे-छुं नैरियकोथी, तिर्यंचयोनिकोथी, के देवोथी आवी उत्पन्न याय छे! [उo] इत्यादि जेम निगयकुमारना उद्देशकमां कह्युं छे ते प्रमाण असंज्ञी सुधी बची वक्तव्यता कहेवी. जो ते ( वानव्यन्तर देव ) संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकयी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि यावत्- पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

असंस्थाताण संव पंजतिर्यंचनो वान-भ्यन्तरमा उपपातः

२. [प्र०] हे भगवन्! असंस्थाता वर्षना आयुषवाळो संज्ञी पंचिन्दिय तिर्थेचयोनिक, जे वानन्यन्तरोमां उत्पन्न थयाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा वानन्यन्तरोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य दस हजार वर्षनी अने उत्कृष्ट पत्योपमनी स्थिति-वाळा वानन्यंतरमां उत्पन्न थाय. बाकी वधुं नागकुमारना उद्देशकमां कह्युं छे तेम जाणवुं. यावत्—काळादेशथी जघन्य कांहक अधिक पूर्वकोटी सिहत दस हजार वर्ष अने ‡उत्कृष्ट चार पत्योपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (१).

खसंस्थातः सं १ पं ० तिर्वेचनी ज॰ वानः व्यंतरमां उत्पत्तिः

३. जो ते जघन्यकाळनी स्थितिवाळा वानव्यन्तरमां उत्पन्न थाय तो ते संबंधे नागकुमारना \$बीजा गमकमां कहेली वक्तव्यता कहेबी (२).

९ \* भग० श० २४ उ० ३ पृ०९९

<sup>ी</sup> छुं संख्याता परसना आयुष्याळा सं॰ पं॰ तिर्यंचोबी उत्पन्न याय के असंख्याता वरसना आयुष्याळा सं॰ पं॰ तिर्यंचोबी आवी उत्पन्न याय है हे गौतम ! बन्ने प्रकारना तिर्यंचोबी आवी उत्पन्न थाय छे. जुओ—सू॰ ३

२ ‡ त्रण पत्योपमना आयुषवाळो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थंच पत्योपमना आयुषवाळा व्यंतरमा उत्पन्न थाय. एटडे उत्कृष्ट चार पत्योपमनो कायसंवेष बाय है.

३ की नागकुमारना बीजा गमनी वक्तव्यता प्रथम गम समान अ छे, परन्तु अहि जबन्य अने उत्कृष्ट स्थिति दश हजार वर्षनी जाणवी. संवेध काळावेश-बी जबन्य दश हजार वर्ष अधिक साधिक पूर्वकोटी अने उत्कृष्ट दश हजार वर्ष अधिक त्रण पत्थोपमनो जाणवी. त्रीजा गममां जबन्य स्थिति पत्थोपमनी होय छे. जो के असंख्यात वर्षना आयुषवाळा सं॰ पं॰ तियंचोनी जबन्य स्थिति साधिक पूर्व कोटी वर्षनी होय छे, तो पण आहिं पत्थोपमनी कही तेनुं कारण ए छे के तेने पत्थोपमना आयुषवाळा व्यन्तरमा उपजवानुं छे अने असंख्यात वर्षना आयुषवाळा पोताना आयुष करता अधिक आयुषवाळा देवोमां उपजता नवी.—टीका.

४. सो सेव उक्कोसकालिहितिपसु उववको जहचेणं पिल्योवमिहितीपसु, उक्कोसेण वि पिल्योवमिहितिपसु एस सेव वचड्या । नवरं दिती से जहचेणं पिल्योवमं, उक्कोसेणं तिथि पिल्योवमारं । संवेहो जहचेणं दो पिल्योवमारं, उक्कोसेणं वचारि पिल्योवमारं—पवतियं० ३ । मिज्यमगमगा तिथि वि जहेव नागकुमारेसु पिन्छमेसु तिसु गमपसु तं सेव जहा नागकु-माहदेसप । नवरं दिति संवेहं व जाणेखा । संवेद्धवासाउय० तहेव, नवरं दिती अणुवंधो संवेहं व उममो दितीप कालेखा ।

५. जद मणुस्त० असंके अवासाजयाणं जहेव नागकुमाराणं उद्देसे तहेव वश्ववया। नवरं तद्यगमए ठिती जहकेणं पिलिशोवमं, उद्दोसेणं तिकि पिलिशोवमादं । ओगाहणा जहकेणं गाउयं, उद्दोसेणं तिकि गाउयादं, सेसं तहेव । संवेदो से जहा पत्य चेव उद्देसए असंके अवासाउयसिक्त पंचित्रेयाणं । संके अवासाउयसिक्त मणुस्ते जहेव नागकुमाददेसए । नवरं वाक्र मंतरे ठिति संवेद्यं च जाणेखा । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ? शि ।

#### चउवीसतिमे सए बाबीसतिमो उद्देसी समत्ती ।

४. जो ते ज उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा वानव्यन्तरमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्कृष्ट पल्योपमनी स्थितिवाळा वानव्यनरमां उत्पन्न थाय—इस्पादि पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेंची. पण विशेष ए के तेनी स्थिति जघन्य पल्योपमनी अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी जाणवी. संबेध जघन्य वे पल्योपम अने उत्कृष्ट चार पल्योपमनो होय—एटलो काळ यावत्—गतिआगति करें (३). मध्यमना त्रण गमको नाग-कुमारना मध्यम त्रण गमकोनां पेठे कहेवा. अने छेल्ला त्रण गमको नागकुमारना उदेशकमां कह्या प्रमाणे कहेवा. परन्तु विशेष ए के स्थिति अने संवेध भिन्न भिन्न जाणवो. संख्याता वर्षना आयुषवाळा सं० पं० तिर्येचोनी वक्तव्यता ते ज प्रमाणे जाणवी. पण विशेष ए के स्थिति अने अनुबंध भिन्न भिन्न जाणवो. तथा संवेध बन्नेनी स्थितिने एकठी करीने कहेवो.

असंख्यात० संग पंग्र तिर्येचनी उण गानश्यंतरमां उत्पन्तिः

५. [प्र०] जो तेओ (बानव्यन्तरो) मनुष्योधी आवी उत्पन्न याय तो तेने नागकुमारना उद्देशकमां कहा। प्रमाणे असंख्याता वर्षना आयुषवाळा मनुष्योनी वक्तव्यता कहंबी. पण विशेष ए के त्रीजा गमकमां स्थिति जघन्य पत्योपमनी अने उत्कृष्ट त्रण पत्योपमनी जाणवी. अवगाहना जघन्यथी एक गाउ अने उत्कृष्ट त्रण गाउनी होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कहा। प्रमाणे जाणवुं. बळी तेनो संवेध आज उद्देशकमां जेम असंख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचिन्द्रिय निर्यंचनो कहा। छे तेम कहेवो. तथा जेम नागकुमारना उद्देशकमां कहां छे ते प्रमाणे संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योनी वक्तव्यता कहेवी. पण विशेष ए के बानव्यन्तरनी स्थिति अने संवेध भिन्न जाणवी. हि भगवन् । ते एम ज छे.'

असंरवाता॰ मनुः ष्योनो बानव्यंतरमां उपपातः

#### चोवीशमा शतकमां वावीशमो उद्देशक समाप्त.

### तेवीसतिमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] जोइसिया णं भंते ! कथोहितो उववर्जात ! कि नेरइय० ! [उ०] भेदो जाव-सक्रिपंचिदियतिरिक्सजोणिपहितो उववर्जात, नो असमिपंचिदियतिरिक्स० ।
  - २. [प्रठ] जर् सन्नि० कि संबेज्ज०, असंबेज्ज० ? [उ०] गोयमा ! संबेज्जवासाउय० असंबेज्जवासाउय० ।
- ३. [प्र॰] असंबेज्जवासाउअसिंपांचिदियतिरिक्सजोणिए णं भंते ! जे भविए जोतिसिएसु उवविज्ञित्तर से णं भंते ! केवति॰ ? [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं अटुमागपलिओवमट्टितिएसु, उद्योक्षेणं पलिओवमवाससयसहस्सट्टितिएसु उववज्जह, अवसेसं जहा असुरकुमारुबे्सए। नवरं ठिती जहन्नेणं अटुमागपलिओवमं, उद्योक्षेणं तिन्नि पलिओवमारं। एवं अणुबंधो

#### त्रेवीशमो उद्देशक.

१. [प्रo] हे भगवन् ! ज्योतिपिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय !-शुं नैरियकोधी-इत्यादि मेद कहेवो. यावत्-तेओ संज्ञी पंचे-न्द्रिय तिर्यंचोधी आवी उत्पन्न थाय, पण असंज्ञी पंचेन्द्रिय निर्यंचयोनिकोधी आवी उत्पन्न यता नथी.

ज्योतिषिकतो उपगतः

- २. [प्र०] जो संद्वी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वर्षना आयुषवाळा सं० पं० तिर्यंचोथी के असंख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय १ [उ०] हे गौतम ! संख्याता के असंख्याता वर्षना आयु-प्रवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय.
- सं॰ पं॰ तिर्यंचनी ज्योतिनिक्रमी उपगत-
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! असंस्थाता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, जे ज्योतिपिकोमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा ज्योतिषिकोमां उत्पन्न याय ? [उ०] हे गीतम ! ते जघन्य पत्योपमना आठमा भागनी अने उत्कृष्ट एक लाख

सर्सस्यातः सं व पं तिर्वचीनी ज्योति-विक्रमां उपपात- वि, सेसं तहेव । नवरं कालावेसेणं जहन्नेणं दो अट्टमागपलिओवमार्ग, उक्कोसेणं चत्तारि पलिमोवमार्ग वासस्ययसहस्यमध्य-हिपारं-एवतियं० १ ।

- ४. सो सेव जहस्रकालद्वितीपसु उववस्नो, जहस्रेणं सद्दमागपिलसोवमद्वितिपसु, उद्घोलेणं वि सद्दमागपिलसोसमद्विती-इस एस सेव वत्तवया । नवरं कालादेलेणं आणेखा २ ।
- ५. सो चेव उक्कोसकालिहरपसु उववक्को, एस चेव वश्ववया । णवरं ठिती जहकेणं पलियोवमं वाससयसहस्समण्य-हियं, उक्कोसेणं तिक्षि पलियोवमाइं । एवं अणुवंधो वि । कालावेसेणं जहकेणं दो पलियोवमाइं दोहिं वाससयसहस्सिहं अ-आहियाई, उक्कोसेणं चसारि पलियोवमाइं वाससयसहस्समध्मिहयाइं ३ ।
- ६. सो चेव अप्पणा जहचकालद्वितिओ जाओ, जहकेणं अट्टभागपलिओवमद्वितीएसु, उक्कोसेण वि अट्टमागपलिओवम-द्वितिपसु उवविज्ञज्ञा ४।
- ७. [प्रठ] ते णं भंते ! जीवा० ! [उ०] एस चेव वसहया । नवरं श्रोगाहणा जहन्नेणं घणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरे-गार्च अट्टारसघणुसयादं । टिती जहन्नेणं अट्टमागपिलक्षोवमं, उक्कोसेण वि अट्टमागपिलश्रोवमं। एवं अणुवंधोऽवि, सेसं तहेव । कालादेसेणं जहन्नेणं दो अट्टमागपिलश्रोयमादं, उक्कोसेण वि दो अट्टमागपिलश्रोवमादं-एवतियं । जहन्नकालद्विति-यस्स एस श्रेव एको गमो ६ ।
- ८. सो चेव अप्पणा उद्घोसकालद्वितिको जाओ, सा चेव ओहिया पत्तवया। नवरं ठिती जहन्नेणं तिन्नि पिलेओव-माइं, उद्घोसेण वि तिन्नि पिलेओवमाइं। पवं अणुवंधो वि, सेसं तं चेव। पवं पिन्छमा तिन्नि गमगा णेयद्या। नवरं ठितिं संवेहं च जाणेजा। पते सत्त गमगा।
- ९. [प्र॰] जर संखेळवासाउयसन्निर्पीचदिय॰ ? [उ॰] संखेळवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्रमाणाणं तहेव नव वि गमा भाणियद्या । नवरं जोतिसियिटिति संवेहं च जाणेजा, सेसं तहेव निरवसेसं भाणियद्यं ९ ।

वर्ष अधिक एक पत्थोपमनी स्थितिवाळा ज्योतिपिकोमां उत्पन्न धाय. बाकी बधुं असुरकुमारना उदेशकमां कह्या प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए के जन्नन्य स्थिति पत्थोपमना आठमा भागनी अने उत्कृष्ट स्थिति त्रण पत्थोपमनी होय छे. अनुबंध पण ए प्रमाणे जाणवो. बाकी बधुं ते ज प्रमाणे जाणवुं. परन्तु काळादेशथी जघन्य पत्थोपमना बे आठमा भाग अने उत्कृष्ट लाख वर्ष अधिक चार पत्योपम—एटलो काळ यावत्—गतिआगित करे (१).

४. जो ते (संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थेच) जघन्यकाळनी स्थितिवाळा ज्योतिधिकमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्कृष्ट पत्योपममा आठमा भागनी स्थितिवाळा ज्योतिधिकमां उत्पन्न थाय—इत्यादि पूर्वेक वक्तन्यता कहेवी. विशेष ए के अहीं काळादेश [भिन्न] जाणवो. (२).

भसंस्थात० सं० पं० तिर्येचनी ज्योतिष-कर्मा उपगतः ५. जो ते ज जीव उत्कृष्टकाळनी स्थितियाळा ज्योतिषिकमां उत्पन्न थाय तो तेने पण ए ज वक्तव्यता कहेवी. परन्तु स्थिति जवन्य एक लाख वर्ष अधिक पत्योपम अने उत्कृष्ट त्रण पत्योपमर्ना होय छे. अनुबंध पण ए ज प्रमाण जाणवी. काळ्यदेशथी जघन्य वे छाख वर्ष अधिक वे पत्योपम अने उत्कृष्ट एक लाख वर्ष अधिक चार पत्योपम-एटलो काळ यावत-गतिआगति करे (३).

जब॰ असंख्यात॰ सं• पं॰ तिर्वेचीनी ज्योतिषिक्तमां

६. जो ते ( संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्थेच ) पोते जघन्य काळनी स्थितियाळी होय अने व्योतिपिकमां उत्पन्न थाय तो ते जघन्य अने उत्कृष्ट पल्योपमना आठमा भागनी स्थितियाळा ज्योतिषिकमां उत्पन्न थाय (४).

क्याताषकमा उपपातः बासंस्थातः संश्रपं तियंचीनी उपपातः संस्थाः

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते ( असंख्य वर्षना आयुपबाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय निर्यंचो ) एक समये केटला उत्पन्न याय ! [उ०] पूर्वोक्त वक्तन्यता कहेवी. विशेष ए के शरीरनुं प्रमाण जघन्य धनुषपृथक्त्व अने उत्कृष्ट अदारसो धनुष करतां कांइक अधिक होय छे. स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट पत्योपमना आठमा भागनी अने अनुबंध पण ए ज प्रमाणे होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. काळादे-शर्थी जघन्य अने उत्कृष्ट पत्योपमना वे आठमा भाग-एटलो काळ यावत्-गतिआगित करे. जघन्यकाळनी स्थितिबाळा माटे आ एक जगम होय छे (६).

असंस्यातः सं १ पं० तिर्यं चीनी ज्योति-विकसां उपपातः ८. जो ते (असंख्यात० संज्ञी पं० निर्यंच) पोते उत्कृष्टकाळनी स्थिनिवाळो होय (अने ज्योतिषिकमां उत्पन्न थाय) तो तेने सामान्य गमकनी जेम वक्तज्यता कहेवी. परन्तु स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट प्रण पत्योपमनी जाणयी. अनुबंध पण ए ज प्रमाणे छे. बाकी बधुं ते ज प्रमाणे जाणवुं. ए रीते छेछा त्रण गमको जाणवा. पण विशेष ए के, स्थिति अने संवेध मेदपूर्वक जाणवो. ए प्रमाणे ए सात गमको थया. (७).

संख्यात० सं० पं० तिर्वचोनो ज्योतिष-कमा उपमात- ९. जो तेओ संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पं० तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो तेने अझुरकुमारोमां उत्पन्न थता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी पंठे नवे गमको कहेवा. विशेष ए के ज्योतिषिकनी स्थिति अने संवेध मेदपूर्यक जाणवो. तथा वाकी बधुं ते ज प्रमाणे जाणवुं (९).

- १०, [प्र0] अर मणुस्सेहितो उचवज्रांति० ! [उ०] भेदो तहेव । जाव---
- ११. [१०] असंबेखवासाउयसिमगुस्से णं मंते ! जे मविष जोइसिपस उघविख्य से णं मंते ! ० १ [४०] एवं अहा असंबेखवासाउयसिमपंचिदियस्स जोइसिपस चेव उवविद्यमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साण वि । नवरं ओगाहणा-विसेसी पढमेसु तिसु गमपसु । ओगाहणा जहभेणं सातिरेगाई नव भणुसयाई, उक्कोसेणं तिकि गाउयाई । मिल्रिमगमप जह-क्षेणं सातिरेगाई नव भणुसयाई । पिन्छिमेसु तिसु गमपसु जहभेणं तिकि गाउयाई, उक्कोसेण वि सातिरेगाई नव भणुसयाई । पिन्छिमेसु तिसु गमपसु जहभेणं तिकि गाउयाई, उक्कोसेण वि तिकि गाउयाई । सेसं तहेव निरवसेसं जाव-'संवेहो'कि ।
- १२. [प्र०] जर संखेजवासाउयसिवमणुस्से० ! [उ०] संखेजवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उषवज्जमाणाणं तहेव नव गमना भाणियद्या । नवरं जोतिसियठिति संवेहं च जाणेज्ञा, सेसं तं चेव निरवसेसं । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि ।

#### चउवीसितमे सए तेवीसइमी उदेसी समची।

१०. जो तेओ मनुष्योयी आबी उत्पन्न थाय तो तेने बची विशेषता पूर्वे कहेळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचनी पेठे कहेबी. यावत्-

मनुष्योगी ज्योतिनि-सर्मा उपगतः

- ११. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्याता वर्षना आयुपवाळो संज्ञी मनुष्य जे ज्योतिषिकोमां उत्पन्न ययाने योग्य छे ते कैटला काळनी स्थितिवाळा ज्योतिषिकोमां उत्पन्न थाय ! [उ०] जेम ज्योतिषिकोमां उत्पन्न थता असंख्याता वर्षना आयुपवाळा संज्ञी एंचेन्द्रिय तिर्यंचने सात गमको कहा। छे तेम ज मनुष्योने पण सात गमको कहेवा. परन्तु प्रयमना त्रण गमकोमां शरीरनी अवगाहनानो विशेष छे. अवगाहना जघन्य कांइक अधिक नवसो धनुष अने उत्कृष्ट त्रण गाउनी होय छे. मध्यमना गमकमां जघन्य अने उत्कृष्ट कांइक अधिक नवसो धनुष अने छेल्ला त्रण गमकोमां जघन्य अने उत्कृष्ट त्रण गाउनी छे. बाकी बधुं यावत्—संवेध सुधी ते ज प्रमाणे छे.
- १२. जो ते संस्थाता वर्षना आयुषवाळा संझी मनुष्योषी आवी उत्पन्न याय तो तेने असुरकुमारोमां उपजता संस्थाता वर्षना आयुषवाळा संझी मनुष्योनी पेठे नवे गमको कहेवा. पण ज्योतिषिकनी स्थिति अने संवेध भिन्न जाणवो. बाकी बधुं ते ज प्रमाणे जाणवुं. श्री भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे.'

संबद्धाताः सं मञ्जः चोनो ज्योतिषद्धमां उपपात-

#### चोवीश्रमा शतकमां त्रेवीश्रमो उदेशक समाप्त.

#### चउवीसतिमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] सोहम्मदेवा णं मंते! कओहितो उववज्रंति ? कि नेरहपर्हितो उववज्रंति ? [उ०] भेदो जहा जोहसिय-उद्देशका।
- २, [प्र०] असंखेखवासाउयसिक्यंबिदियतिरिक्कजोणिए णं मंते ! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उवविक्रसए से णं मंते ! केवतिकाल० ! [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पलियोवमहितिएसु, उक्कोसेणं तिपलि भोवमहितीएसु उववज्रेखा ।
  - ् ३. [४०] ते णं भंते ! [७०] अक्सेसं जहा जोहसिएसु उववज्रमाणस्स । नवरं सम्प्रदिट्टी वि, मिच्छादिट्टी वि, णो

### चोवीशमो उहेशक.

१. [प्र॰] हे भगवन् ! सौधर्मदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न याय ! द्युं नैरियकोथी आवी उत्पन्न याय-इत्यादि. [उ०] त्रेवीशमा ज्योतिषिक उदेशकमां कह्या प्रमाणे मेद कहेवो.

वैमानिकोनो उपपातः

२. [प्र॰] हे भगवन् ! असंख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, जे सौधर्मदेवलोकमां उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिबाळा सौधर्म देवमां उत्पन्न धाय ! [उ॰] हे गीतम ! जघन्य "पल्योपमनी अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी स्थितिबाळा सौधर्मदेवोमां उत्पन्न धाय.

नसंख्यातः सं॰ पं॰ तियेचनो सोषमे देवलोकमा उपपातः

३, [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटल उत्पन्न थाय—इत्सादि बाकीनी हकीकत ज्योतिषिकमां उत्पन्न थता असंस्थाता वर्षना आयुषवाळा संही तिर्यंचनी पेठे कहेवी. परन्तु विशेष ए के ते सम्यग्रहिष्ट पण होय अने मिध्यादृष्टि पण होय, पण मिश्रदृष्टि न

परिमाणादि-

२ \* सीघर्म देवलोकमां अघन्य आयुष एक पत्योपमतुं होय छे, तेबी तिर्यंची जघन्य पत्योपमनी स्थितिबाळा देवोमां उत्पन्न थाय छे; अने उत्कृष्ट आयुष वे सागरीपमतुं होय छे. पण तिर्यंची उत्कृषेधी त्रण पत्योपम आयुषवाळा अ होय छे, तेनाबी अधिक देवायुष बांबता नधी. माटे तिर्यंची उत्कृष्ट त्रण पत्थोधजना आयुक्ताळा सीवर्म देवोमां उत्पन्न बाय छे एम कर्जु छे.

सम्मामिकाविद्वी । णाणी वि, अञ्चाणी वि, दो णाणा दो अञ्चाणा नियमं । ठिती जहकेणं पछिओवमं, उक्कोसेणं तिकि पछि-नोयमार्द । एवं अणुवंधो वि, सेसं तहेव । कालादेसेणं जहकेणं दो पछिओवमार्द, उक्कोसेणं छप्पछिओवमार्द्यव-तियं० १ ।

- ४. सो चेष जहस्रकालद्वितिषस्र उचवस्रो एस चेष यत्तवया। नवरं कालादेसेणं जहस्रेणं दो पलिमोधमा, उक्रोसेणं जनारि पलिमोबमारं-एवतियं० २।
- ५. सो खेव उक्कोसकालिट्टितिएसु उववक्को जहनेणं तिपिल्लियोगम०, उक्कोसेण वि तिपिल्लियोगम०—पस खेव वश्ववया। नवरं दिती जहनेणं तिथि पिल्लियोगमाई, उक्कोसेण वि तिथि पिल्लियोगमाई, उक्कोसेण वि उप्पिल्लियोग्द-प्रवादं, उक्कोसेण वि उप्पिल्लियोग्द-प्रवादं, उक्कोसेण वि उप्पिल्लियोग्द-प्रवादं, उक्कोसेण वि उप्पिल्लियोग्द-प्रवादं ३।
- ६. सो चेव अप्यणा जहस्रकालिट्टितिओ जाओ, जहसेणं पिल्योवमिट्टितिपस्त, उद्योसेण वि पिल्योमिट्टितिपस्तुः, एस चेव वस्तवया । नवरं भोगाहणा जहसेणं घणुपुद्दं, उद्योसेणं दो गाउयादं । दिती जहसेणं पिल्योवमं, उद्योसेण वि पिल्य-सोवमं, सेसं तदेव । कालावेसेणं जहसेणं दो पिल्योवमादं, उद्योसेणं पि दो पिल्योवमादं—पवितयंः ६ ।
- ७. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितिओ जाओ, आदिल्लगमगसरिसा तिकि गमगा णेयद्वा । नवरं ठिति कालादेसं च जाणेजा ९।
- ८. [प्र•] जर संकेखवासाउयसिष्ठपंचिदिय॰ ? [उ॰] संकेखवासाउयस्स जहेव असुरकुमारेसु उषवक्षमाणस्स तहेव नव वि गमा । नवरं ठितिं संवेहं च जाणेखा । जाहे य अप्पणा जहभकालट्टितियो मवति ताहे तिसु वि गमपसु सम्मिद्दिः वि, मिच्छादिट्टी वि, णो सम्मामिच्छादिट्टी । दो नाणा दो अभाणा नियमं, सेसं तं चेव ।
  - प्रः विक्रित्रे अववर्जितः ? [उ०] भेदो जहेव जोतिसिप्सु उववज्रमाणस्स । आव—
- १०. [४०] असंखेखवासाउयसिक्रमणुस्से णं भंते! जे भविष सोहम्मे कप्पे देवसाए उवविक्षसप्त ? [४०] एवं होय, ज्ञानी पण होय अने अज्ञानी पण होय. तेओने वे ज्ञान के वे अज्ञान अवस्य होय छे. तेओनी स्थिति जवन्य पल्योपमनी अने उत्कृष्ट प्रण पल्योपमनी होय छे. ए प्रमाणे अनुवंध पण जाणवी. बाकी बधुं ते ज प्रमाणे जाणवुं. काळादेशथी जवन्य वे पल्योपम अने उत्कृष्ट छ पल्योपम-एटलो काळ यावत्-गमनागमन करे (१).

असंस्थातः सं० पं० तिर्यचयोनिकनो जव सीषमे देवलोकमां उपपातः ४. हवे जो ते (असंस्थात वर्षना आयुषवाळो संज्ञी तिर्यंचयोनिक) जघन्यकाळनी स्थितिवाळा सौधर्मदेवमां उत्पन्न थाय तो तेने ए ज बक्तव्यता कहेवी. विशेष ए के काळादेशणी जघन्य वे पत्योपम अने उत्कृष्ट चार पत्योपम—एटळो काळ यावत्—गतिआ-गति करे (२).

ध्यसंब्यात॰ सं॰ यं॰ तिर्वेचनी ७० सौधने देवहोकमां उत्पत्ति. ५. जो ते ज जीव उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळा सौधर्म देवमां उत्पन्न थाय तो जघन्य अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा सौधर्म देवलोकमां उत्पन्न थाय—इत्यादि पूर्वोक्त वक्तव्यता कईवी. विशेष ए के स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी जाणवी. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे कहेवुं. कालादेशयी जघन्य अने उत्कृष्ट छ पल्योपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे (३).

ज॰ जर्सस्यातः सं॰ पं॰ तिर्यचनो सौधमै देवलोकमां उपपातः ६. जो ते पोते जघन्य स्थितिवाळो होय (अने सीधर्म देवमां उत्पन्न ) थाय तो ते जघन्य अने उत्कृष्ट पत्योपमनी स्थितिवाळा सीधर्म देवलोकमां उत्पन्न थाय. तेने पण ए ज पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. विशेष ए के शारीर नुं प्रमाण जघन्य धनुषपृथक्त्व अने उत्कृष्ट वे गाउनुं होय छे. स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट पत्योपमनी होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. कालादेशथी जघन्य अने उत्कृष्ट वे पत्थोपम-एटलो काळ यावत्-गमनागमन करे (६).

स॰ असंस्थात॰ सं॰ पं॰ तिवेशको सीधमै केल्लोकमां उपपात- ७. जो ते पोते उत्कृष्ट स्थितिवाळो होय तो तेने प्रथम गमक जेवा त्रण गमको कहेवा. विशेष ए के स्थिति अने कालादेश मिस जाणवो (९).

संस्थातः सं० पं० तिर्धेचनो सीधरी वेवजोकमां उपपातः ८. जो तेओ (सीधर्म देवो) संस्थाता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी पंचेन्द्रिय तियंचोधी आवी उत्पन्न धाय तो तेने अञ्चरकुमारोमां उत्पन्न धता संस्थाता वर्षना आयुषवाळा तियंचनी पेठे नवे गमको कहेवा. विशेष ए के अहीं स्थिति अने संवेध भिन्न भिन्न जाणवो. क्यारे ते पोते जघन्य स्थितिवाळो होय व्यारे त्रणे गमकोमां सम्यग्दृष्टि अने मिध्यादृष्टि होय, पण मिश्रदृष्टि न होय. वे ज्ञान अने वे अज्ञान अवस्थ होय. बाकी बधुं पूर्वे कहा। प्रमाणे जाणवं.

मनुष्योमी सौधर्म देवजोकमा उपपातः

- ९. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते (सौधर्म देवो ) मनुष्योषी आबी उत्पन्न याय तो—इस्मादि ज्योतिषिकमां उत्पन्न यता संग्री मनुष्यनीः पेठे मेद कहेवो. यावत्—
  - १०. [प्र०] हे भगवन् ! असंस्थ वर्षना आयुषवाळो संग्री मनुष्य, जे सीधर्मकरूपमां देवपणे उत्पन्न चवाने योग्य छे ते केटळा

बहेब असंबेखवासाउपस्य समिपंबिदियतिरिक्सजोणियस्त सोह्म्मे कप्ये उदब्बामाणस्त तहेब सत्त गमगा । नवरं वादि-इप्या दोष्ट्र गमपद्ध मोगाहणा जहनेण गाउपं, उद्योसेणं तिथि गाउयाहं । ततियगमे जहनेणं तिथि गाउयाहं, उद्योसेण वि तिथि गाउयाहं । बडत्यगमप जहनेणं गाउपं, उद्योसेण वि गाउपं । पश्चिमपद्ध तिद्ध गमपद्ध जहनेणं तिथि गाउयाहं, उद्यो-सेण वि तिथि गाउयाहं । सेसं तहेब निरवसेसं ९ ।

- ११. [प्र॰] जह संबेखवासाउयसिमणुस्सेहितो॰ ? [उ॰] एवं संबेखवासाउयसिमणुस्साणं जहेव असुरकुमारेसु कववज्रमाणाणं तहेच जब गमगा माणियवा । नवरं सोहम्मवेचद्विति संवेदं च जाजेखा, सेसं तं चेव ९ ।
- १२. [प्र॰] ईसामदेवा णं भंते! कभोहितो उपवर्जाति ! [उ॰] ईसामदेवाणं एस चेव सोहम्मगदेवसरिसा वस्त्रवया । जबरं मसंबेजवासाउपसमिपंबिदियतिरिक्कजोणियस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्रमाणस्स पिल्नोवमदिती तेसु ठाणेसु इह सातिरेगं पिल्नोवमं कायवं । चउत्यगमे मोगाहणा-जहनेणं चणुपुहत्तं, उद्योसेणं सातिरेगारं दो गाउयारं, सेसं तदेव ९ ।
- १३. मसंबेखवासाउयसिमणुसस्स वि तहेव ठिती जहा पंविवियतिरिक्तजोणियस्स मसंबेखवासाउयस्स । मोगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउयं तेसु ठाणेसु इहं सातिरेगं गाउयं, सेसं तहेव ९ ।
- १४. संमेखनासाउथाणं तिरिक्कजोणियाणं मणुस्साण य जहेव सोहम्मेसु उववख्यमाणाणं तहेव निरवसेसं णव वि गमगा । नवरं ईसाणिटिति संवेहं च जाणेखा ९ ।
  - १५. [प्र०] सर्वकुमारदेवा णं भंते ! कथोहिंतो उपवर्खति ! [उ०] उपवामी जहा सकरव्यमापुडविनेरदयाणं । जाव--
- १६. [प्र०] पञ्जससंबेज्जवासाउयसभिपंचिदियतिरिक्काजोणिय णं भंते ! जे भविष सणंकुमारदेवेसु उवविज्ञस्य० ! [उ०] अवसेसा परिमाणादीया भवादेसपञ्जवसाणा सचेव वस्तवया भाणियद्या जहा सोहम्मे उववज्जमाणस्स । नवरं सणं- कुमारिट्टिति संवेदं च जाणेजा । जाहे य अप्यणा जहस्रकालिट्टितीयो भवित ताहे तिस्तु वि गमपस्तु पंच लेस्सायो बादिल्लामो कार्यद्वामो, सेसं तं चेव ९ ।

काळनी स्थितिनाळा सौधर्म देशोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] सौधर्मकल्पमां उत्पन्न पता असंख्यवर्षना आयुषवाळा संत्री पंचेन्द्रिय तिर्यंचयो-निकनी पेठे साते गमको कहेना. विशेष ए के प्रथमना ने गमकमां शरीरनुं प्रमाण जघन्य एक गाउनुं अने उत्कृष्ट त्रण गाउनुं, त्रीजा गमकमां जघन्य अने उत्कृष्ट त्रण गाउनुं, चोषा गमकमा जघन्य अने उत्कृष्ट एक गाउनुं, अने छेछा त्रण गमकोमां जघन्य अने उत्कृष्ट त्रण गाउनुं होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं (९).

११. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योषी आवी उत्पन्न थाय-इस्यादि असुरकुमारोमां उत्पन्न थता संख्याता वर्षना आयुषवाळा संज्ञी मनुष्योनी पेठे नवे गमको कहेवा. विशेष ए के अहीं सौधर्मदेवनी स्थिति अने संवेध भिन्न जाणवो. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं (९).

संस्थात॰ सं॰ मनुः भ्योनो सीवर्ग देव→ कोकमां उपपात्र-

१२. [प्र०] हे भगवन् ! ईशान देवो क्यांथी आवी उत्पन्न याय ? [उ०] ईशानदेवोनी वक्तव्यता सौधर्मदेवनी पेठे कहेवी. परन्तु जे स्थानोमां असंख्यात वर्षना आयुषवाळा संबी पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकनी पत्योपमनी स्थिति कही छे, ते स्थानोमां आहीं कांहक अधिक पत्योपमनी कहेवी. चोषा गमकमां शरीरनुं प्रमाण जघन्य धनुषपृथक्त अने उत्कृष्ट कांहक अधिक वे गाउनुं होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्मा प्रमाणे जाणवुं (९).

र्षक्षान देवोमी उपमात-

- १३. असंस्थाता वर्षना आयुपवाळा संश्री मनुष्यनी स्थिति तेमज जाणवी—एटले असंस्थातवर्षना आयुषवाळा पंचेन्द्रियतिर्यंचयो-निकनी पेठे जाणवी. अने जे स्थानोमां शरीरनुं प्रमाण गाउनुं कह्युं छे ते स्थानोमां अहीं साधिक गाउ कहेवुं. बाकी बधुं ते ज प्रमाणे जाणवुं ९.
- १४. सौधर्ममां उत्पन्न थनार संख्याता वर्षना आयुषवाळा तिर्येचयोनिको अने मनुष्यो संबंधे नवे गमको कह्या छे तेम ईशान देवो संबंधे अहीं कहेवा. विशेष ए के अहीं ईशानदेवोनी स्थिति अने संवेध जाणवो (९).
  - १५. [प्र०] हे भगवन् ! सनत्कुमारदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] शर्कराप्रभाना नैरियको पेठे तेनो उपपात कहेवो. यावत्—
- १६. [प्रo] हे भगवन् ! संख्याता वर्षना आयुषवाळो पर्याप्त संझी पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक, जे सनत्कुमार देवोमा उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा सनत्कुमार देवमां उत्पन्न थाय—इत्यादि परिमाणयी मांडी भवादेश सुवीनी वधी वक्तव्यता सीध-र्ममां उत्पन्न थनार संख्याता वर्षना आयुषवाळा संझी तिर्यंचनी पेठे कहेवी. विशेष ए के अहीं सनत्कुमारोनी स्थिति अने संवेध सुदों जाजबो. ब्यारे ते पोते जवन्य स्थितिवाळो होय ब्यारे त्रणे गमकोमां प्रथमनी पाँच लेक्याओ जाणवी. बाकी वधुं ते ज प्रमाणे कहेवुं (९).

संस्थातः संबीः पंश् तिर्वेषो मने मनु-ष्योनो प्रशास देव-क्रोकमां उपपातः सनसुमार देवोनो उपपातः

संस्थातः सं पं तिपैचनो सनत्कुनाः रतां प्रचातः

- १७. [ब॰] जर मणुस्सेहितो उववज्रांति॰ ? [ड॰] मणुस्साणं जहेव सकरणमाप उववज्रमाणाणं तहेव अर्थ वि गमर भागियहा । नवरं सणंकुमारद्रिति संवेहं च जाणेजा ९ ।
- १८. [प्र०] माहित्गदेवा णं मंते! कथोहितो उववजंति! [उ०] जहा सणंकुमारगदेवाणं वत्तवया तहा माहित्गदेवाणं माणियवा । नवरं माहित्गदेवाणं ठिती सातिरेगा माणियवा स खेव । एवं वंमलोगदेवाण वि वत्तवया । नवरं वंमलोगिहितिं संवेदं च जाणेजा । एवं जाव—सहस्सारो । णवरं ठितिं संवेदं च जाणेजा । लंतगादीणं जहमकालिहितियस्स तिरिक्खजो-णियस्स तिसु वि गमवसु छप्पि लेस्साको कायवाको । संघयणादं वंमलोग—लंतपसु पंच मादिल्लगाणि, महासुक्रसहस्सारेसु चत्तारि । तिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि, सेसं तं चेव ९ ।
- १९. [प्रo] आणयदेवा णं भंते ! कञोहितो उववज्रांति ? [उ०] उववाओ जहा सहस्सारदेवाणं । णवरं तिरिक्सजो-णिया सोडेयदा, जाव-
- २०. [प्र०] पञ्चलसंके जवासाउयसिक्षमणुस्से णं अंते ! जे अविष आणयदेवेसु उवविज्ञलप् ० ! [उ०] मणुस्साण य वलस्या जहेव सहस्सारेसु उववज्जमाणाणं। जवरं तिक्षि संघयणाणि, सेसं तहेव जाव-अणुकंधो। अवादेसेणं जहनेणं तिक्षि अवगहणाहं, उक्कोसेणं सल्त अवग्गहणाहं। कालादेसेणं जहनेणं अहारस सागरोवमाहं वोहिं वासपुहलेहिं अव्यहियाहं, उक्कोसेणं सल्तावकं सागरोवमाहं चर्जाहे पुषकोडीहिं अव्यहियाहं-एवतियं०। एवं सेसा वि अहु गमगा माणियद्या। नवरं ठिति संवेहं च जाणेजा, सेसं तं चेव ९। एवं जाय-अध्यवेषा, नवरं ठिति संवेहं च जाणेजा ९। चउसु वि संघयणा तिक्षि आणयादीसु।
- २१. [प्र॰] गेथेखगदेवा णं मंते ! कओहिंतो उववर्जाति ? [उ०] पस चेव वत्तवया । नवरं दो संघयणा । ठिति संवेद्यं च जाणेजा ।
  - २२. [प्र॰] विजय-वेजयंत-अयंत-अपराजितदेवा णं मंते ! कतोहितो उववद्धांति ! [उ॰] एस चेव वरावया निर-

भनुष्योनी सनस्तुः भारमां उपपातः १७. [प्र०] जो मनुष्योधी आवी उत्पन्न धाय तो तेने दार्कराप्रभामां उपजता मनुष्योनी पेठे नवे गमको कहेवा. विशेष ए के अहीं सनत्कुमारनी स्थिति अने संवेध जुदो जाणवो (९).

माहेन्द्र वेषोनो ठपपातः १८. [प्र०] हे भगवन् ! माहेन्द्र देवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] जेम सनत्कुमार देवनी वक्तन्यता कही छे तेम माहेन्द्र-देवोनी एण जाणवी. विशेष ए के, माहेन्द्र देवोनी स्थित सनन्कुमार देवो करतां कांह्रक वधारे कहेवी. ए प्रमाणे ब्रह्मछोकना देवोनी एण बक्तन्यता कहेवी. विशेष ए के अहीं ब्रह्मछोकनी स्थिति अने संवेध जुदो जाणवो. ए प्रमाणे यावत्—सहसार देवछोक सुधी जाणवुं. विशेष ए के अहीं स्थिति अने संवेध जुदो जाणवो. छातक वगेरे देवछोकमां उत्पन्न यता जघन्यस्थितिवाळा तिर्यंचयोनिकने त्रणे गम-कोमां छ ए लेदयाओ जाणवी. ब्रह्मछोक अने छांतकमां प्रथमना पांच संघयण होय छे, अर्थात् आदिना पांच सुधीना संघयणवाळा त्यां उत्पन्न थाय छे. महाशुक्र अने सहस्रारमां प्रथमना चार संघयणवाळा उपजे छे. आ वक्तन्यता तिर्यंचो अने मनुष्योने आश्रयी जाणवी. बाकी बधुं ते ज प्रमाणे कहेवुं (९).

स्नानत वेघोनो उपपातः

- १९. [प्र०] हे भगवन् ! आनत देवो क्यांथी आबी उत्पन्न थाय ! [उ०] सहस्रार देवोनी पेटे उपपात कहेवो. विशेष ए के अहीं तिर्यंचयोनिकोनो निषेध करवो. अर्थात् तेओ अहिं उपजता नधी. यावत्क
- २०. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता वर्षमा आयुपवाळो पर्याप्त संज्ञी मनुष्य, जे आनतदेवीमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला काळनी स्थितिवाळा आनत देवोमां उत्पन्न याय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] सहस्रारदेवोमां उत्पन्न यनार मनुष्योनी वक्तव्यता अहीं कहेवी. विशेष ए के प्रथमना त्रण संघयणो आहें कहेवा. अर्थात्—प्रयमना त्रण संघयणवाळा आहें उपजे छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत्—अनुबंध सुधी जाणवुं. भवादेशयी जघन्य त्रण भव अने उत्कृष्ट सात भव तथा काळादेशयी जघन्य वे वर्षपृपक्त अधिक अदार सागरोपम अने उत्कृष्ट चारपूर्वकोटी अधिक सत्तावन सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गतिआगित करे. ए प्रमाणे बाकीना आठ गमको कहेवा. विशेष ए के अहीं स्थिति अने संवेध भिन्न जाणवो. तथा बाकी बधुं तेज प्रमाणे कहेवुं (९). ए प्रमाणे यावत्—अच्युतदेव सुधी जाणवुं. पण विशेष ए के पोतपोतानी स्थिति अने संवेध भिन्न जाणवा. आनतादि चारे खर्गीमां प्रथमना त्रण संघयणवाळा उपजे छे.

श्रेषेवकोती उपपात.

२१. [प्र०] हे मगवन् ! प्रैवेयक देवो क्यांथी आवी उत्पन्न याय-इत्यादि पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. विशेष ए के अहीं प्रयमना वे संवयणवाळा उपजे छे. तथा पोतानी स्थिति अने संवेध जुदो जाणवो.

विजयादिमां स्पपातः

२२. [प्र०] हे भगवन् ! विजय, वैजयंत, जयंत अने अपराजित देवो क्यांची आवी उत्पन्न याय के-ह्यादि पूर्वोक्त वंधी

बसेसा, जाब-'अणुबंधो'ित । नंबर पढमं संघयणं, सेसं तहेव । भवादेसेणं जहनेणं तिनि सवग्गहणारं, उक्कोसेणं पंच भव-ग्राहणारं । काळादेसेणं जहनेणं पक्रतीसं सागरोबमारं दोहिं वासपुहत्तेहिं अन्महियारं, उक्कोसेणं छाविंहं सागरोबमारं तिर्हि पुषकोडीिहं अन्महियारं-पवितयं । एवं सेसा वि बहु गमगा माणियद्या । तबरं ठिति संवेहं च जाणेखा । मणूसे छदी जबसु वि गमपसु जहा गेवेखेसु उववज्रमाणस्स । नवरं पढमसंघयणं ।

- २३. [४०] सम्रहुगसिखगदेवा णं भंते ! कभोद्वितो उववद्धांति ? [४०] उववाओ अहेव विजयादीणं । जाव-
- २४. [४०] से णं भंते ! केवतिकालिट्टितिपसु उववस्रोक्षा ! [४०] गोयमा ! जहकेणं तेत्तीसंसागरोवमिट्टितिपसु, उक्कोसेण वि तेत्तीससागरोवमिट्टितिपसु उववस्रांति, अवसेसा जहा विजयाईसु उववस्रांताणं । नवरं भवादेसेणं तिक्षि भग-गाहणाई, कालादेसेणं जहकेणं तेत्तीसं सागरोवमाई दोहि वासपुहत्तेहि अध्महियाई, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाई दोहि पुक्कोडीहि अग्महियाई-पवितयं ।
- २५. सो चेव अप्यणा जहन्नकालट्टितिओ जाओ एस वचन्नया । नवरं ओगाहणाटितीओ रयणिपुदत्त-वासपुदत्ताणि, सेसं तहेच, संवेदं च जाणेजा २ ।
- २६. सो खेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितिओ जाओ, एस खेव वस्तवया । नवरं ओगाहणा जहकेणं पंच घणुसयाइं, उक्को-इसेणं पंचधणुसयाइं । दिती जहकेणं पुष्ठकोडी, उक्कोसेण वि पुष्ठकोडी, सेसं तहेव जाव—'भवादेसो'ति । कालादेसेणं जहकेणं तेसीसं सागरोवमाइं दोहिं पुष्ठकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेसीसं सागरोवमाइं, दोहि वि पुष्ठकोडीहिं अब्भहियाइं --एवतियं कालं सेवेजा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेजा ३ । एते तिक्रि गमगा सबदुसिख्गदेवाणं । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि मगवं गोयमे जाव-विहराः ।

### षउवीसितमे सए षउवीसहमो उद्देसी समची।

## चउवीसतिमं सयं समत्तं।

वक्तन्यता यावत्—अनुबंध सुधी कहेवी. विशेष ए के अहीं प्रथम संघयणवाळा उपजे छे, बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. भवादेशथी जघन्य त्रण भव अने विल्लष्ट पांच भव सुधी तथा काळादेशथी जघन्य वे वर्षपृथक्त्व अधिक एकत्रीश सागरोपम अने उत्कृष्ट त्रण पूर्वकोटी अधिक छासठ सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. ए प्रमाणे बाकीना आठे गमको कहेवा. विशेष ए के पोतानी स्थिति अने संवेध भिन्न भिन्न जाणवो. मनुष्यने नवे गमकोमां प्रैवेयकमां उत्पन्न थनार मनुष्यनी पेठे लिय —उत्पत्ति कहेवी. विशेष ए के स्था [विजयादिमां ] प्रथम संघयणवाळो उपजे छे.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वार्यसिद्धना देवो क्यांथी आवी उत्पन्न पाय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनो उपपात विजयादिकनी पेठे कहेनो. अने ते यावस्—

सनार्थसिङ् देवीमा उपपान-

- २ ४. [प्र०] हे भगवन् ! ते (संज्ञी मनुष्यो) केटला काळ सुघीनी स्थितिवाळा सर्वार्धसिद्ध देवोमां उत्पन्न याय ! [उ०] हे गौतम ! तेओ जवन्य अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा सर्वार्यसिद्ध देवोमां उत्पन्न याय. ए संबंधे बीजी बधी वक्तव्यता विजयादिकमां उत्पन्न यता मनुष्यनी पेठे कहेवी. विशेष ए के भवादेशथी त्रण भव अने काळादेशथी जघन्य बे वर्षपृथक्त अधिक तेत्रीश सागरोपम एटलो काळ यावत्—गतिआगति करे.
- २५. जो ते (संज्ञी पं० मनुष्य) पोते जघन्य काळनी स्थितियाळो होय तो तेने पण ए ज पूर्वोक्त वक्तव्यता कहेवी. विशेष ए के शरीरनुं प्रमाण बेयी नव हाथ, अने स्थिति बेधी नव वर्ष सुधीनी जाणवी. बाकी बधुं पूर्वे कहा प्रमाणे कहेवुं. तथा अहीं स्थिति अने संबेध भिन्न जाणवो.

ज॰ संशी मनुष्यनी सर्वार्थसिङ देवीमा उपपातः

२६. जो ते (संही मनुष्य) पोते उत्कृष्टकाळनी स्थितिषाळो होय तो तेने ए ज पूर्वोक्त बक्तन्यता कहेवी. विशेष ए के शारीरनुं प्रमाण जघन्य अने उत्कृष्ट पांचसो धनुषनुं तथा स्थिति जघन्य अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीनी होय छे. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे यावत्—मनादेश सुषी जाणवुं. काळदेशथी जघन्य अने उत्कृष्ट वे पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपम—एटलो काळ यावत्—गमनागमन करे. सर्वो-यौसिद देवोने आ त्रण गमको ज होय छे. 'हे भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे'—एम कही भगवान् गौतम यावत्—विहरे छे.

उ० संज्ञी मनुष्यनो सर्वार्थसिङ्गां उपपतिः

चोषीशमा शतकमां चोषीशमो उदेशक समाप्त.

चोवीशमुं शतक समाप्त.

# पंचवीसतिमं सयं।

१ लेसा य २ दब १ संठाण ४ जुम्म ५ पज्जव ६ नियंठ, ७ समणा य । ८ ओहे ९-१० भवियाभविए ११ सम्मा १२ मिच्छे य उद्देसा ॥

## पढमो उद्देसो ।

- १. [४०] तेणं कालेणं तेणं समयणं रायगिहे जाव-एवं वयासी-कित णं मंते! लेस्सामो पश्चामो ! [४०] गोयमा ! छल्लेसामो पश्चामो, तंजहा-कण्डलेसा-जहा पढमसय वितिय उद्देसय तहेव लेस्साविमागो । अप्यावहुगं व जाव-'चउिहराणं वेवाणं चउिहराणं वेवीणं. मीसगं अप्यावहुगंति ।
- २. [प्र०] कतिविद्या णं मंते ! संसारसमावज्ञगा जीवा पञ्चला ! [उ०] गोयमा ! चोइसविद्या संसारसमावज्ञगा जीवा पञ्चला, तंजहा-- १ सुदुमअप्पञ्जलगा, २ सुदुमपञ्चलगा, ३ वाद्रअपञ्चलगा, ४ वाद्रपञ्चलगा, ५ वेद्दिया अप्यञ्चलगा, ६ वेद्दिया पञ्चलगा, ७-८ ववं तेद्दिया, ९-१० एवं चउरिदिया, ११ असिक्रपंचिदिया अप्यञ्चलगा, १२ असिक्रपंचिदिया पञ्चलगा, १३ सिक्रपंचिदिया अपञ्चलगा, १३ सिक्रपंचिदिया अपञ्चलगा, १३ सिक्रपंचिदिया अपञ्चलगा, १३ सिक्रपंचिदिया अपञ्चलगा, १४ सिक्रपंचिदिया पञ्चलगा।

# पचीशमुं शतक.

[ उदेशकार्यसंग्रह—] १ लेक्या वगेरे संबन्धे प्रथम उदेशक, २ हच्य विषे बीजो उदेशक, ३ संस्थान वगेरे संबन्धे श्रीजो टहेशक, ४ युग्य—कृतयुग्मादि राशि संबन्धे चोघो उदेशक, ५ पर्यवादि संबन्धे पांचमो उदेशक, ६ पुलाकादि निर्प्रन्थ विषे छट्टो उदेशक, ७ श्रमणो संबंधे सातमो उदेशक, ८ ओघ—सामान्य नारकादिनी उत्पत्ति विषे आठमो उदेशक, ९ मन्य नारकादि संबन्धे नवमो उदेशक, १० अमन्य नारकादि संबन्धे दशमो उदेशक, ११ सम्यग्दिष्ट नारकादि संबन्धे अगियारमो उदेशक अने १२ मिथ्यान दृष्टि नारकादि संबन्धे बारमो उदेशक—ए प्रमाणे पचीशमा शतकने विषे आ बार उदेशको कहेवाना छे.

## प्रथम उद्देशक.

हेपया.

१. [प्र०] ते काळे अने ते समये राजगृह नगरमां [ भगवान् गौतम ] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! केटली. लेक्याओं कही छे ! [उ०] हे गौतम ! छ लेक्याओं कहीं छे, ते आ प्रमाणे—कृष्णलेक्या—इत्यादि <sup>#</sup>प्रथम शतकना बीजा उदेशकमां कह्या प्रमाणे लेक्याओनो विभाग अने तेनुं अल्पबहुत्व यावस्—चार प्रकारना देवो अने चार प्रकारनी देवीओना <sup>†</sup>मिश्र अल्पबहुत्व सुची कहेतुं.

संसारी जीवना चीद वेद. २. [प्र०] हे भगवन् ! संसारी जीवो केटल प्रकारना कहा छे ! [उ०] हे गौतम ! संसारी जीवो चौद प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—१ अपर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय, २ पर्याप्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय, ३ अपर्याप्त बादर एकेन्द्रिय, ४ पर्याप्त बादर एकेन्द्रिय, ५ अपर्याप्त बेइन्द्रिय, ६ पर्याप्त बेइन्द्रिय, ७—८ ए प्रमाणे पर्याप्त अने अपर्याप्त तेइन्द्रिय, ९—१० पर्याप्त अने अपर्याप्त चडरिन्द्रिय, ११ अपर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रिय, १२ पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय, १२ अपर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रिय, १२ पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रिय.

१ में भग- खं- १ श॰ १ त॰ २ प्र॰ १०४.

<sup>ी</sup> जुओ-प्रज्ञा॰ पद १७ उ॰ १ प॰ ३४३—३४९.

३. [प्र0] यतेसि णं मंते ! बोइसविद्याणं संसारसमाधकार्णं जीवाणं अद्युक्कोसगस्त जोगस्त कयरे क्यरे० जाव-विसेसादिया वा ! [उ०] गोवमा ! सद्ययोवे सुदुमस्त अपक्रतगस्त जद्यय जोय १, वादरस्त अपक्रतगस्त जद्यय जोय असंकेक्ष्युणे २, वेदियस्त अपक्रतगस्त जद्यय जोय असंकेक्ष्युणे २, एवं तेद्दियस्त ४, यतं वर्डारिवयस्त ५, अस-विस्स पंविदियस्त अपक्रतगस्त जद्यय जोय असंकेक्ष्युणे २, सिवस्त पंविदियस्त अपक्रतगस्त जद्यय जोय असंकेक्ष्युणे २, वादरस्त पक्रतगस्त जद्यय जोय असंकेक्ष्युणे ९, सुदु-अस्त अपक्रतगस्त जद्योत्य जोय असंकेक्ष्युणे १०, वादरस्त अपक्रतगस्त जद्योत्य असंकेक्ष्युणे ११, सुदुमस्त पक्रतगस्त उक्कोसय जोय असंकेक्ष्युणे १२, वादरस्त पक्रतगस्त उक्कोसय जोय असंकेक्ष्युणे १३, वेदियस्त पक्रतगस्त जद्यय जोय असंकेक्ष्युणे १४, पवं तेदियस्त एक्रतगस्त जक्रत्य जोय असंकेक्ष्युणे १४, पवं तेदियस्त एक्रतगस्त जक्रत्य पक्रतगस्त जक्रत्य जोय असंकेक्ष्युणे १४, पवं जाव—सिक्यंविदियस्त पक्रतगस्त जक्रतय जोय असंकेक्ष्युणे १८, ववं तेदियस्त व २०, पवं वर्डिवियस्त वि २१, पवं जाव—सिक्यंविदियस्त वपक्रतगस्त जक्रोसय जोय असंकेक्ष्युणे १४, एवं तेदियस्त पक्रतगस्त जक्कोसय जोय असंकेक्ष्युणे २४, एवं तेदियस्त पक्रतगस्त उक्कोसय जोय असंकेक्ष्युणे २४, वर्ड तेदियस्त पक्रतगस्त उक्कोसय जोय असंकेक्ष्युणे २४, एवं तेदियस्त पक्रतगस्त उक्कोसय जोय असंकेक्ष्युणे २४, वर्डिवयस्त पक्रतगस्त उक्कोसय जोय असंकेक्ष्युणे २४, एवं तेदियस्त पक्रतगस्त उक्कोसय जोय असंकेक्ष्युणे २४, वर्डिवयस्त पक्रतगस्त उक्कोसय ज्राप्त वर्यायः

योगर्नु अस्पन्तुत्त-

३. [प्र०] हे भगवन् ! ए चौद प्रकारना संसारी जीवोना जक्ष्य अने उत्कृष्ट योगने \*आश्रयी कया जीवो कोनायी यावत्— विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! स्क्ष्म अपर्याप्त जीवनो जक्ष्य योग असंख्यात गुण छे २. तेथी बादर अपर्याप्त जीवनो जक्ष्य योग असंख्यात गुण छे २. तेथी वरिन्द्रिय अपर्याप्तनो जक्ष्य योग असंख्यात गुण छे ५. तेथी अपर्याप्त असंक्षी पंचेन्द्रियनो जक्ष्य योग असंख्यात गुण छे ५. तेथी अपर्याप्त असंक्षी पंचेन्द्रियनो जक्ष्य योग असंख्यात गुण छे ५. तेथी अपर्याप्त स्क्ष्म एकेन्द्रियनो जक्ष्य योग असंख्यात गुण छे ८. तेथी अपर्याप्त स्क्ष्म एकेन्द्रियनो जक्ष्य योग असंख्यात गुण छे १०. तेथी अपर्याप्त स्क्ष्म एकेन्द्रियनो जक्ष्य योग असंख्यात गुण छे १०. तेथी अपर्याप्त स्क्ष्म एकेन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे १०. तेथी अपर्याप्त स्क्ष्म एकेन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे १२. तेथी पर्याप्त बादर एकेन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे १३. तेथी पर्याप्त स्क्ष्म एकेन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे १३. तेथी पर्याप्त वेहन्द्रियनो जक्ष्य योग असंख्यात गुण छे १३. तेथी पर्याप्त वेहन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे १३. तेथी पर्याप्त वेहन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे १४. ए प्रमाणे असंख्यात गुण छे १९. ए प्रमाणे असंख्यात गुण छे १४. ए प्रमाणे अपर्याप्त तेहन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे २४. ए प्रमाणे अपर्याप्त तेहन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे २४. ए प्रमाणे अपर्याप्त तेहन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे २४. ए प्रमाणे अपर्याप्त तेहन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे २४. अने तेथी पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रियनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे २८.

जबन्य अने उत्कृष्ट योगनुं अल्पबहुत्वः

1	२	į	¥	4	١ ،	v	6	\ <b>S</b>	3.	11	18	93	98
स्का एके निरंग धप- र्याप्त		बादर एके- न्द्रिय अप- योप्त		वेड्टिइय अपर्याप्त	बेइन्द्रिय पर्याप्त	तेइन्द्रिय अपर्याप्त	तेइन्द्रिय पर्याप	चउरिन्द्रिय अपर्याप्त	चन्दिय पर्याप्त	असंग्री पंचेन्द्रिय अपर्याप्त	असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचे- न्द्रिय अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रि पर्याप
जचन्य	ज <b>च</b> न्य	जबन्य	<b>अ</b> घन्य	जचन्य	जवन्य	ज <b>च</b> न्य	जघन्य	<b>जध</b> न्य	जघन्य	जषन्य	<b>अध</b> न्य	जधन्य	जघन्य
१	6	२	९	रे	१४	४	१५	५	१६	(	१७		१८
डत्कृष्ट	उत्कृष्ट	ਰ <b>ਨ੍ਹਾ</b> ਣ	उत्कृष्ट	वत्कृष्ट	वत्क्रप्ट	उत्कृष्ट	उत्कृष्ट	उत्कृष्ट	उत्कृष्ट	उत्कृष्ट	उत्कृष्ट	उत्कृष्ट	उत्कृष्ट
१•	१२	11	११	१५	२४	२•	६५	२१	२ (	११	२ ७	२३	<b>१</b> ८

<sup>\*</sup> आत्मप्रवेशना परिस्पन्दन के इंपनने योग कहे छे. ते योग वीर्यान्तरायकर्मना क्षयोपशमादिनी विश्वित्रताची अनेकविध होय छे. कोइ जीवने आश्रवी अल्प योग होय छे अने तेज बीजा जीवनी अपेक्षाए उत्कृष्ट होय छे. तेना चांद जीवस्थानकोने आश्रवी प्रत्येक्ता जवन्य अने उत्कृष्ट मेद गणतां अञ्चावीस प्रकार बाय छे. आ सूत्रमां तेना अल्पबहुत्बतुं कथन छे. तेमां सूक्ष्म अपर्याप्त एकेन्द्रियनो जवन्य योग सौबी अल्प होय छे. कारण के तेओचुं शरीर सूक्ष्म होवाबी अने अपर्याप्त होवाने छीचे अपूर्ण होवाबी बीजा बधा योगी करतां तेनो योग सौबी बोडो छे अने ते कार्मणवारीर द्वारा औदारिक पुरुत्तो प्रदृण करवाना प्रथम समये होय छे अने पूछा समये समये योगनी चुद्धि बाय छे अने ते उत्कृष्ट योगपर्यन्त बचे छे.

- ध. [प्र०] दो भंते ! नेरितया पहमसमयोषष्वया कि समजोगी, कि विसमजोगी ! [४०] गोयमा ! सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ! [४०] मे केणहेणं मंते ! एवं दुव्यति—'सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ! [४०] गोयमा ! माहार-याचो दा से अणाहारए, अणाहारयाचो वा से बाहारए सिय हीणे, सिय तुष्ठे, सिय मन्मिहए । जह हीणे असंखेखहमा गहीणे दा, संखेखहमागहीणे दा, असंखेखगुणहीणे दा, संखेखगुणहीणे दा। अह अन्मिहए असंखेखहमागमन्मिहए दा, संखेखगुणमन्मिहए दा, संखेखगुणमन्मिहए दा, असंखेखगुणमन्मिहए दा, से तेणहेणं जाव—सिय 'विसमजोगी' । एवं जाव—वेमाणियाणं ।
- ५. [प्र०] कितिविद्दे ण मंते ! जोष पत्रते ? [उ०] गोयमा ! पत्रसिविद्दे जोष पत्रते, तंजहा-सद्यमणजोष १, मोसमण-जोष २, सद्यामोसमणजोष ३, असद्यामोसमणजोष ४, सद्यवद्दजोष ५, मोसवद्दजोष ६, सद्यामोसवद्दजोष ७, असद्यामोस-वद्दजोष ८, भोराल्यिसरीरकायजोष ९, ओराल्यिमीसासरीरकायजोष १०, वेउद्वियसरीरकायजोष ११, वेउद्वियमीसास-रीरकायजोगे १२, आहारगसरीरकायजोगे १३, आहारगमीसासरीरकायजोगे १४, कम्मासरीरकायजोगे १५।
- ६. [प्र०] पयस्त णं मंते! पद्मरसिष्टस्स जहमुक्कोसगस्य कयरे कयरे० जाव-विसेसाहिया वा १ [उ०] गोयमा ! स्वर्षोवे कम्मगसरीरगस्स जहम्रपजोप १, भोरालियमीसगस्स जहमप जोप असंकेजगुणे २, वेउवियमीसगस्स जहमप जोप असंकेजगुणे ३, भोरालियसरीरगस्स जहमप जोप असंकेजगुणे ४, वेउवियसरीरस्स जहमप जोप असंकेजगुणे ५, कम्मग-सरीरस्स उक्कोसप जोप असंकेजगुणे ६, आहारगमीसस्स जहमप जोप असंकेजगुणे ७, तस्स चेव उक्कोसप जोप असंकेजगुणे ८, भोरालियमीसगस्स, वेउवियमीसगस्स य एएसि णं उक्कोसप जोप दोण्डवि तुल्ले असंकेजगुणे ९-१०, असम्बामी-समण्जोगस्स जहमप जोप असंकेजगुणे ११, साहारगसरीरस्स जहमप जोप असंकेजगुणे १२, तिविद्दस्स मणजोगस्स चड-

प्रथम समयमां **उरपञ्च थवे**ला वे नैर-विकने माश्रयी योगः 8. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथम समये उत्पन्न थयेला वे नैरियको समान योगवाळा होय के विषम योगवाळा होय ! [उ०] हे गौतम ! तेओ कदाच समान योगवाळा होय अने कदाच विषम योगवाळा पण होय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुषी एम कहेवाय छे के तेओ कदाच समान योगवाळा होय अने कदाच विषम योगवाळा होय ! [उ०] हे गौतम ! अहारक नारकयी अनाहारक नारक वीन योगवाळो, कदाच तुल्य योगवाळो अने कदाच अधिक योगवाळो होय. अर्थात् आहारक नारकथी अनाहारक नारक हीन योगवाळो, अनाहारकथी आहारक नारकथी अनाहारक नारक हीन योगवाळो, अनाहारकथी आहारक नारकथी अनाहारक नारक हीन योगवाळो होय. जो ते हीनयोगवाळो होय तो ते असंख्यातमा भाग हीन, संख्यातमा भाग हीन, संख्यातमा भाग हीन, संख्यातमा भाग अधिक, संख्यातमा भाग अधिक, संख्यातमा भाग अधिक, संख्यातमा भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक के असंख्यात गुण अधिक होय छे. ते कारणथी यावत्—ते कदाच विषम योगवाळो पण होय. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं.

योगना प्रकार-

५. [प्र०] हे भगवन् ! केटला प्रकारनो योग कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! पंदर प्रकारनो योग कह्यो छे, ते आ प्रमाणे— १ सत्य मनोयोग, २ मृषा मनोयोग, ३ सत्यमृषा मनोयोग, ४ असत्यामृषा मनोयोग, ५ सत्य वचनयोग, ६ असत्य वचनयोग, ७ सत्यमृषा वचनयोग, ९ औदारिकशरीरकाययोग, १० औदारिकमिश्रशरीरकाययोग, ११ वैक्रिय शरीरकाययोग, १२ वैक्रियमिश्रशरीरकाययोग, १३ आहारकशरीरकाययोग, १४ आहारकमिश्रशरीरकाययोग अने १५ कार्मणशरीरकाययोग.

बोगनं जल्पनदुत्व.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जघन्य अने उत्कृष्ट पंदर प्रकारना योगमां कयो योग कोनाधी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! कार्मण शरीरनो जघन्य योग सौथी अल्प छे १, तेथी औदारिकामिश्रनो जघन्य योग असंख्यात गुण छे २, तेथी वैिकायिमिश्रनो जघन्य योग असंख्यात गुण छे ३, तेथी औदारिक शरीरनो जघन्य योग असंख्यात गुण छे ४, तेथी वैिकाय शरीरनो जघन्य योग असंख्यात गुण छे ६, तेथी आहारकामिश्रनो जघन्य योग्य असंख्यातगुण छे ७, तेथी आहारकाशिश्रनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे ८, तेथी औदारिकामिश्र अने वैिकायिमिश्रनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे ८, तेथी औदारिकामिश्र अने वैिकायिमिश्रनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे ८, तेथी औदारिकामिश्र अने वैिकायिमिश्रनो उत्कृष्ट योग असंख्यात गुण छे ८, तेथी असल्यामृष्य मनोयोगनो जघन्य योग असंख्यातगुण छे ११, तेथी आहारक शरीरनो जघन्य योग असंख्यातगुण छे,

४ महारक नारकनी अपेक्षाए अमाहारक नारक हीन योगवाळी होय छे, कारण के जे नारक ऋजु गतिकी आवीने आहारकपणे उत्पन्ध वास छे, ते निरन्तर आहारक होवाने लीवें पुद्गलोबी उपचित होय छे तेवी ते अलिक योगवाळी होय छे. जे नारक विष्ठह गतिबंदे अनाहारक पणे उत्पन्ध वाय छे ते अनाहारक होवाबी पुद्गलोबी अलुंपचित होवाने लीवे हीन योगवाळी होय छे. जेओ समान समयनी विश्वह गतिबी अनाहारकपणे उत्पन्ध वाय, अभवी ऋजुगतिबी आवीने आहारकपणे उत्पन्ध वाय ते बच्चे एक बीजानी अपेक्षाए समानयोगवाळा होय छे.—टीका.

हिहस्स वयजोगस्स-एएसि णं सत्तण्ड वि तुल्ले जहश्रप जोप असंक्षेज्ञगुणे १३-१९, आहारगसरीरस्स उक्कोसप जोप असंक्षेज्जगुणे २०, ओरालियसरीरस्स, वेउवियसरीरस्स, चउविद्दस्स य मणजोगस्स, चउविद्दस्स य वर्ष्जोगस्स —एएसि णं वसण्ड वि तुल्ले उक्कोसए जोए असंक्षेज्जगुणे २१-३०। 'सेवं भंते ! सेवं मंते' ! ति ।

### पणवीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो।

१२, तेथी त्रण प्रकारना मनोयोग अने चार प्रकारना वचनयोग—ए सातनो जघन्य योग असंख्यातगुण अने परन्यर तुल्य होय छे १३—१९, तेथी आहारक शरीरनो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुण होय छे २०, तेथी औदारिक शरीर, वैक्रियशरीर, चार प्रकारना मनोयोग अने चार प्रकारना वचनयोग—ए दसनो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुण अने परम्पर तुल्य होय छे २१—३०. 'हे भगयन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे,

#### पचीशमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

## बीओ उद्देसी।

- १. [प्र०] कतिविद्या णं भंते ! द्वा पन्नता ? [उ०] गोयमा ! दुविद्या द्वा पन्नता, तंजहा-जीवद्वा य अजीव-व्वा य ।
- २. [प्र०] अजीववृद्धा णं भंते ! कतिविद्धा पञ्चला ! [उ०] गोयमा ! वृद्धिहा पञ्चला, तंजहा—कविश्वजीववृद्धा य अक-विश्वजीववृद्धा य । एवं एएणं अभिलावेणं जद्दा अजीवपज्जवा, जाव—से तेण्ट्रेणं गोयमा ! एवं बुद्धह—'ते णं नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता' ।
- ३. [प्र०] जीववृद्या णं भंते ! कि संखेजा, असंखेजा, अणंता ? [उ०] गोयमा ! नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता । [प्र०] केणट्रेणं भंते ! एवं अवश-'जीवदृद्या णं नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता' ? [उ०] गोयमा ! असंखेजा नेरह्या, जाय-असंखेजा वाउकाह्या, अणंता वणस्सहकाह्या, असंखेजा बेंदिया, एवं जाव-वेमाणिया, अणंता सिद्धा, से तेणट्रेणं जाव-'अणंता' ।
- ४. [प्र॰] जीवदद्याणं भंते ! अजीवद्या परिमोगत्ताए द्वयमागच्छंति, अजीवद्याणं जीवद्या परिमोगत्ताए द्वयमान-च्छंति ! [उ॰] गोयमा ! जीवद्याणं अजीवद्या परिमोगत्ताए द्वयमागच्छंति, नो अजीवद्याणं जीवद्या परिमोगत्ताए द्वय-मागच्छंति । [प्र॰] से केण्ट्रेणं भंते ! एवं बुचर-जाव-'दृष्ट्यमागच्छंति' ! [उ॰] गोयमा ! जीवद्या णं अजीवद्ये परियादि-

## द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यो केटलां प्रकारनां कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! द्रव्यो बे प्रकारनां कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—जीवद्रव्य प्र भने अजीवद्रव्यः

द्रन्यना प्रकार-

२. [प्र०] हे भगवन्! अजीवद्रव्यो केटलां प्रकारनां कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! ते वे प्रकारनां कह्यां छे. ते आ प्रमाणे— रूपी अजीवद्रव्यो अने अरूपी अजीवद्रव्यो, ए प्रमाणे ए सूत्रपाठवढे जेम [ "प्रज्ञापना सूत्रना विशेष नामना पांचमा] पदमां अजीवपर्यवो संबन्धे कह्युं छे तेम अहिं अजीव द्रव्य ] संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनंत छे' त्यां सुची कहेवुं.

अजीव दृश्योना प्रकार.

३. [प्र०] हे भगवन् ! छुं जीवद्रव्यो संख्याता छे, असंख्याता छे के अनंत छे ! [उ०] हे गीतम ! जीवो संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनंत छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के 'जीवद्रव्यो संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनंत छे ! [उ०] हे गीतम ! नैरियको असंख्य छे, यावत्—वायुक्तायिक असंख्य छे, वनस्पतिकायिको अनंत छे, बेइंदियो अने ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको असंख्याता छे, तथा सिद्धो अनंत छे. माटे ते हेतुथी जीवो यावत्—अनंत छे.

जीवद्रन्यनी संख्याः जीवद्रम्यो भनंत होवानु कारण !

ष्ठ. [प्र०] हे मगवन् ! अजीवद्रव्यो जीवद्रव्योना परिभोगमां तुरत आवे के जीवद्रव्यो अजीवद्रव्योना परिभोगमां तुरत आवे ! [उ०] हे गौतम ! अजीवद्रव्यो जीवद्रव्योना परिभोगमां तुरत आवे पण जीवद्रव्यो अजीवद्रव्योना परिभोगमां तुरत आवतां नषीं [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुयी एम कहो छो के यावत्—'जीवद्रव्यो अजीवद्रव्योना परिभोगमां यावत्—तुरत आवता नथीं' ! [उ०] हे गौतम ! अजीवद्रव्योनी परिभोष-

३ \* जुओ--प्रज्ञा॰ पद ५ प॰ १९६.

४ र्ग जीवब्रक्यो सचेतन होवाबी अजीवब्रक्योने प्रहण करी सेनो वारीशादिक्षे परिमोग करे छे, साटे ते परिभोक्ता छे, अने अजीवब्रक्यो अचेतन होवाबी प्रहण योग्य छे साटे ते भोग्य छे.

यंति, मजीववष्ठे परियादिइत्ता ओरालियं वेउष्ठियं आहारगं तेयगं कम्मगं, सोइंदियं जाव-फासिदियं, मणजोगं षद्दजोगं कायजोगं, आणापाणुत्तं च निष्ठत्तयंति, से तेणट्टेणं जाव-'ह्वमागच्छंति'।

- ५. [प्र०] नेरितयाणं मंते ! अजीवद्वा परिभोगत्ताप हृत्वमागच्छंति, अजीवद्वाणं नेरितया परिभोगत्ताप० ! [उ०] गोयमा ! नेरितयाणं अजीवद्वा जाव-हृद्वमागच्छंति, नो अजीवद्वाणं नेरितया हृद्वमागच्छंति । [प्र०] से केणट्रेणं० ! [उ०] गोयमा ! नेरितया अजीवद्वे परियादियंति, अ० २ परियादिहत्ता वेउविय-तेयग-कम्मगं सोहंदियं० जाव-कासिदियं भाणापाणुत्तं च निव्वत्तयंति, से तेणट्रेणं गोयमा ! एवं बुच्चर-एवं जाव-वेमाणिया । नवरं सरीरहंदियजोगा भाणियवा जस्स जे अत्थि ।
- ६. [प्र॰] से नूणं भंते ! असंखेजे लोप अणंताई दहाई आगासे भइयबाई ! [उ॰] हंता गोयमा ! असंखेजे लोप जाय-भइयबाई ।
- ७. [प्र॰] लोगस्स णं भंते ! एगंप्रि आगासपएसे कतिदिसि पोग्गला चिक्रंति ! [उ॰] गोयमा ! निष्वाधाएणं छिद्दिति, षाधायं पहुच सिय तिदिसि, सिय चउदिसि, सिय पंचदिसि ।
- ८. [प्र॰] लोगस्स णं भंते ! एगंमि आगासपपसे कतिदिसि पोग्गला छिजंति ! [उ॰] एवं चेव, एवं उबचिजंति, एवं अवचिजंति ।
- ९. [त्र ०] जीवे णं भेते ! जाइं द्वाइं ओरालियसरीरत्ताण गेण्डइ ताइं किं ठियाई गेण्डइ, अठियाई गेण्डइ ? [त्र ०] गोयमा ! ठियाई पि गेण्डइ, अठियाई पि गेण्डइ ।
- १० [प्र०] ताई मंते ! किं दच्चओ गेण्हइ, खेसाओ गेण्हइ, कालओ गेण्हइ, भावओ गेण्हइ ? [उ०] गोयमा ! दच्चओ वि गेण्हइ, खेसाओ वि गेण्हइ, कालओ वि गेण्हइ, भावओ वि गेण्हइ । ताई दक्षओ अणंतपपसियाई दच्चाई, खेसाओ असं-

जीवद्रत्र्यो अजीवद्रत्योने प्रहण करे छे अने प्रहण करी तेने औदारिक, वैकिय, आहारक, तैजस, अने कार्मण—ए पांच शरीररूपे, श्रोत्रें-द्विय, यावत्—स्पर्शेन्द्रिय—ए पांच इन्द्रियपणे, मनोयोग, बचनयोग अने काययोग तथा खासोच्छ्वासपणे परिणमावे, ते कारणधी अजीवद्रत्यो जीवद्रव्योना परिभोगमां यावत्—तुरत आवे छे, पण जीवद्रव्यो अजीवद्रव्योना परिभोगमां तुरत आवतां नथी.

नैरियकोने अजीवद्र-स्थोनो परिभोग-

५. [प्र०] हे भगवन् ! अजीवद्रन्यो नैरियवोना पिरिभोगमां तुरत आवे के नैरियको अजीवद्रन्योना पिरिभोगमां तुरत आवे ! [उ०] हे गौतम ! अजीवद्रन्यो नैरियकोना पिरिभोगमां शीव्र आवे छे, पण नैरियको अजीवद्रन्योना पिरिभोगमां तुरत आवतां नथी. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे ! [उ०] हे गौतम ! नैरियको अजीवद्रन्योने प्रहण करे छे अने प्रहण करीने वैकिय, तैजस, अने कार्मणशरीररूपे, श्रोत्रेदिय यावत्—स्पर्शेन्द्रियरूपे तथा श्वासो छु। परिणमावे छे. ते हेतुथी हे गौतम ! एम कह्युं छे, ए रीते यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु जेने जेटलां शरीर, इन्द्रिय अने योग होयं तेटलां तेने कहेवां.

असंस्य लोकाका शम/ अनन्त द्रव्यीः नी स्थितिः ६. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्य छोकाकाशमां अनंत द्रव्यो रही शके ! [उ०] हे गौतम ! हा, असंख्य प्रदेशात्मक छोकाकाशमां अनन्त द्रव्यो रही शके.

एक भाकाश प्रदे शमा पुत्रजोती चयापनयः

- ७. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना एक आकाराप्रदेशमां केटली दिशाओथी (आवीने) पुद्गली एकठां याय ! [उ०] हे गौतम ! ज्याघात (प्रतिबंध) न होय तो छए दिशामांथी आवीने अने जो प्रतिबंध होय तो कदाच त्रण दिशामांथी, कदाच चार दिशामांथी अने कदाच पांच दिशामांथी आवी पुद्गलो एकठो थाय छे.
- ८. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां केटली दिशाओमांथी आवी पुद्गलो छेदाय—छूटां थाय ! [उ०] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे जाणतुं. ए प्रमाणे स्कन्धरूपे पुद्गलो [ अन्य पुद्गलोना मळवाथी ] उपचित थाय अने ( जुदा पडवाधी ) अपचित थाय.

केंद्र।रिकादि शर्रार-रूपे स्थित के अस्थि-त द्रव्यो शहण

त द्रव्यो महण कराय ! द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावधी द्रव्य-स्रहण.

- ९. [प्र०] हे भगवन्! जीव जे पुद्गल द्रव्योने आंदारिकशरीरपणे प्रहण करे ते "स्थित द्रव्योने प्रहण करे के अस्थित द्रव्योने प्रहण करे! [उ०] हे गौतम! ते स्थित द्रव्योने प्रहण करे अने अस्थित द्रव्योने पण प्रहण करे.
- १०. [प्र०] हे भगवन् ! हां ते द्रव्योने द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी प्रहण करे ! [उ०] हे गौतम ! ते द्रव्योने द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी प्रहण करे छे. द्रव्यथी अनंतप्रदेशिक द्रव्यने प्रहण करे छे. क्षेत्रथी असंस्य प्रदेशाश्रित द्रव्यने प्रहण करे छे.

५ \* जेटला आकाशक्षेत्रमां जीव रहेलो छ तेनी अंदर रहेलां जे पुद्गलहच्यो ते स्थित हच्यो कहेवाय छ अने तेनी बहारना क्षेत्रमां रहेलां पुद्गलहच्यो ते अस्थित हय्यो कहेवाय छ, तेने स्थानी खंचीने प्रदण करे छे. ते संगन्धे अन्य आचार्य एम कहे छे के गति रहित हच्यो ते स्थितहच्यो अने गतिसिंहत हच्यो ते अस्थित हच्यो कहेवाय छे-टीका.

केञ्जपपसोगाढारं-पर्व जहा पत्रवणाप पढमे आहारुदेसप, जाव-निद्वाघाएणं छिद्दिस, वाघायं पदुच सिय तिदिसि सिय चरुदिसि, सिय पंचित्रिसि ।

- ११. [प्र॰] जीये णं मंते ! जाई दबाई वेउधियसरीरसाएः गेण्डह ताई किं ठियाई गेण्डह, अठियाई गेण्डह ! [उ॰] एवं चेव, जबरं नियमं छहिसि, एवं आहारगसरीरसाए वि ।
- १२. [प्र०] जीवे णं भंते ! जार्र दचार्ष तेयगसरीरत्ताय गिण्हर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ठियार् गेण्हर, नो अठि-यार्र गेण्हर, सेसं जहा ओराल्यिसरीरस्स । कम्मगसरीरे एवं चेव । एवं जाव-मावझो वि गिण्हर ।
- १३. [प्र॰] जाई व्हाई दह्मओ गेण्हह ताई कि यगपपसियाई गेण्हह, दुपपसियाई गेण्हह ? [उ॰] एवं जहा भासा-परे, जाय-'आणुपुष्टिं गेण्हह, तो अणाणुपुष्टिं गेण्हह ।
  - १४. [प्र0] ताई अंते ! कतिविसि गेण्डह ! [उ 0] गोयमा ! निश्वाघाएणं 0, जहा ओरालियस्स ।
- १५. [प्र०] जीवे णं मंते ! जारं द्वारं सोशंदियत्ताय गेण्हर् ? [उ०] जहा वेउन्नियसरीरं, यवं जाय-जिम्मिदियत्ताय, फासिदियत्ताय जहा ओरालियसरीरं, मणजोगत्ताय जहा कम्मगसरीरं । नवरं नियमं छिद्दिसिं, यवं वर्रजोगत्ताय वि, काय-जोगत्ताय वि जहा ओरालियसरीरस्स ।
- १६. [प्र॰] जीवे णं मंते ! जाइं दबाइं आणापाणुत्तायः गेण्हइ जहेव ओरालियसरीरत्ताय, जाव-सिय पंचिद्सि । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! [त्ति] केइ चउचीसदंडपणं पयाणि पदाणि मर्जात-'जस्स जं अत्थि'

#### पणवीसइमे सए बीओ उद्देसी समत्ती।

ए प्रमाणे \*प्रज्ञापनासूत्रना प्रथम आहारोद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत्—'प्रतिबंध सिवाध छए दिशाओमांथी अने प्रतिबंध होय तो कदाच त्रण दिशामांथी, कदाच चार दिशामांथी अने कदाच पांच दिशामांथी आवेला पुद्गलोने प्रहण करे'—त्यां सुधी कहेंबुं.

- ११. [प्र०] हे भगवन् ! जीव जे पुद्गल द्रव्योने वैक्षियशारीरपणे ग्रहण करे ते स्थित द्रव्यो होय छे के अस्थित द्रव्यो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे जाणबुं. विशेष ए के वैक्षियशारीरपणे जे द्रव्योने ग्रहण करे छे ते अवस्य <sup>†</sup>छए दिशामांथी आवेखा होय छे. ए प्रमाणे आहारकशरीर संबंधे पण जाणबुं.
- १२. [प्र०] हे भगवन् ! जीव जे द्रव्योने तैजराशरीरपणे प्रहण करे छे, ते स्थित द्रव्यो होय तो प्रहण करे–इलादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते द्रव्यो स्थित होय तो प्रहण करे छे, पण अस्थित होय तो प्रहण करतो नथी. बाकी व्ययुं औदारिक शरीरनी पेठे जाणबुं. तथा कार्मण शरीर संबंधे पण एमज समजबुं, ए प्रमाणे यावत्—'भावथी पण प्रहण करे छे' त्यां सुधी कहेबुं.
- १३. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यथी जे द्रव्योने प्रहण करे छे, ते द्रव्यो हां (द्रव्यथी) एक प्रदेशवाळां प्रहण करे, बे प्रदेशवाळां प्रहण करे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] ए प्रमाणे ‡भाषापदमां कह्या प्रमाणे यावत्—क्रमपूर्वक ग्रहण करे छे, पण क्रम सिवाय ग्रहण करतो नथीं त्यां सुधी जाणवुं.
- १४. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटली दिशामांथी आवेला पुद्गलोने प्रहण करे छे ! [७०] हे गातम ! प्रतिबंध सिवाय—[ छए दिशाथी आवेला स्कन्धो प्रहण करे—इसादि ] औदारिक शरीरनी पेठे (सू० ८) जाणवुं.
- १५. [प्र०] हे भगवन् । जे जीव जे द्रव्योने श्रोत्रेंद्रियपणे प्रहण करे छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गाँतम ! वेकिय शरीरनी पेठे [स्० ९ ] यावत्—जिह्नेंद्रिय सुधी जाणवुं, अने स्परीद्रिय संबंधे औदारिक शरीरनी पेठे समजवुं. मनोयोग संबंधे कार्मण शरीरनी पेठे जाणवुं. पण विशेष एके अवश्य छए दिशामांथी आवेलां पुद्गलो प्रहण करे छे. ए प्रमाणे वचनयोग संबंधे पण जाणवुं. काययोग संबंधे औदारिक शरीरनी पेठे समजवुं.
- १६. [प्र०] हे भगवन् ! जीव जे द्रव्योने श्वासोच्छ्वासपणे प्रहण करे छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] आंदारिक शरीरनी पेठे जाणबुं, यावत्—कदाच श्रण दिशा, चार दिशा, के पांच दिशामांशी आवेठां पुद्गलो प्रहण करे छे. कोई आचार्यों 'जेने जे होय तेने ते कहेबुं'— ए पदोने चोवीस दंडके कहे छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

## पचीशमा शतकर्मा द्वितीय उदेशक समाप्तः

१३ 🕽 याबत् अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध प्रहण करे ? हे गीतम । एक प्रदेशिक, याबत् अधेख्य प्रदेशिक स्कन्धो न प्रहण करे, पण अनन्त प्रदेशिक

रकन्धो प्रहण करे.—जुओ प्रज्ञा० पद ११ प० २६१-१.

९० <sup>#</sup> प्रज्ञा० पद [ ].

<sup>99</sup> र् 'वैक्रियशरीरप्रायोग्य द्रव्यो छए दिशामांबी आवेलां प्रहण करे छे'-ते कहेवानो एवा असिप्राय छे के उपयोगपूर्वक वैक्रिय शरीर करनार पंचेन्द्रिय ज होय छे अने ते जसनादीना मध्यमागमां होवाबी तेने अवस्य छ दिशाना आहारनो संभव छे. यदापि वायुकायिकने वैक्रिय शरीर होवाबी तेनी अपेक्षाए वैक्रिय शरीरने आश्रयी लोकान्त निष्कुटने विषे पांच दिशादिना आहारनो संभव छे, परन्तु तेओ उपयोगपूर्वक वैक्रिय शरीर करता नवी, तेमज तेने सातिशय वैक्रिय शरीर नथी. तेथी तेनी विवक्षा कर्या सिवाय कहां छे.

# तईओ उद्देसो।

- १. [प्र॰] कित जं मंते ! संठाणा पन्नता ! [उ॰] गोयमा ! छ संठाणा पन्नता, तं जहा-१ परिमंडले, २ वहे, ३ तंसे, ४ चउरंसे, ५ वायते, ६ जिल्ह्यंथे ।
- २. [प्र॰] परिमंडला णं भंते ! संठाणा दबद्वयाप कि संखेजा, असंखेजा, अणंता ? [उ॰] गोयमा ! नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता ।
- ३. [प्र०] बहुा णं भंते ! संटाणाः ? [७०] एवं चेय, एवं जाय-अणित्थंथा, एवं एएसहुराए वि, एवं द्वहुएए-सहयाए वि।
- ध. [प्र॰] पपसि णं भंते ! परिमंडल-वह्-तंस-चउरंस-आयत-अणित्यंथाणं संठाणाणं द्वह्याप पपसट्टयाप द्वह-पपसट्टयाप क्यरे क्यरेहितो जाव-विसेसाहिया वा ! [उ०] गोयमा ! सद्वत्थोवा परिमंडलसंठाणा द्वह्याप, वहा संठाणा द्वह्याप संखेजगुणा, चउरंसा संठाणा द्वह्याप संखेजगुणा, तंसा संठाणा द्वह्याप संखेजगुणा, आयतसंठाणा द्वह-याप संखेजगुणा, अणित्यंथा संठाणा द्वह्याप असंखेजगुणा । पपसट्टयाप-सद्वत्थोवा परिमंडला संठाणा पपसट्टयाप, वहा संठाणा प्रेसट्टयाप संखेजगुणा, जहा द्वह्याप तहा पपसट्टयाप वि, जाव-अणित्यंथा संठाणा पपसट्टयाप असंखेजगुणा । द्वह्यपपसट्टयाप-सद्वत्थोवा परिमंडला संठाणा द्वह्याप, सो चेव गमओ भाणियद्वो, जाव-अणित्यंथा संठाणा प्रसट्टयाप असंखेजगुणा, अणित्यंथिहितो संठाणेहितो देवट्टयाप परिमंडला संठाणा पपसट्टयाप असंखेजगुणा, वहा संठाणा पपसट्टयाप संखेजगुणा-सो चेव पपसट्टयाप गमओ भाणियव्वो, जाव-अणित्यंथा संठाणा पपसट्टयाप असंखेजगुणा ।
  - 4. [प्र॰] कति णं मंते ! संटाणा पत्रता ! [ज॰] गोयमा ! पंच संटाणा पत्रता, तं जहा-परिमंडले, जाय-आयते ।

# तृतीय उद्देशक.

संस्थान-

१. [प्र०] हे भगवन्! संस्थानो—पौद्गलिक स्कंधना आकारो केटलां कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! छ संस्थानो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे— १ परिमंडल-बल्याकार, २ वृत्त-गोळ, ३ त्र्यक्ष-त्रिकोण, ४ चतुस्त-चतुष्कोण, ५ आयत-दीर्घ अने ६ अनित्थंस्थ- परिमंडलादियी भिन्न आकारवाळुं.

परिमंडलनी संख्या.

२. [प्र॰] हे भगवन् ! परिमंडल संस्थान द्रव्यार्थरूपे ह्युं संख्याता छे, असंख्याता छे के अनंत छे ! [उ॰] हे गौतम ! ते संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनंत छे.

वृत्तादिनी संस्याः

३. [प्र०] हे भगवन् ! वृत्त संस्थान द्रव्यार्थरूपे शुं संख्याता छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. एम यावत्—अनित्यंस्थ संस्थान सुघी जाणवुं. ए प्रमाणे प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थ—प्रदेशार्थपणे पण समजवुं.

अल्पबहुस्व.

४. [प्र०] हे भगवन् ! परिमंडल, वृत्त, ज्यस, चतुरस्न, आयत अने अनित्यंस्य संस्थानोमां द्वन्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्वन्यार्थरूपे कयां संस्थानो कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! द्वन्यार्थरूपे \*परिमंडल संस्थानो सोधी थोडां छे, तेथी वृत्त संस्थानो द्वन्यार्थरूपे संख्यातगुणां छे, तेथी ज्यस्रसंस्थानो द्वन्यार्थरूपे संख्यातगुणां छे, अने तेथी अनित्यंस्य संस्थानो द्वन्यार्थरूपे असंख्यातगुणां छे. प्रदेशार्थरूपे परिमंडल संस्थानो सौधी थोडां छे, तेथी वृत्त संस्थानो प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुणां छे-इत्यादि जेम द्वन्यार्थरूपे कह्युं छे तेम प्रदेशार्थरूपे पण यावत्—'प्रदेशार्थरूपे अनित्यंस्य संस्थानो असंख्यातगुणां छे' त्यां सुधी कहेवुं. द्वन्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणां छे.' द्वन्यार्थरूपे असंख्यातगुणां छे.' द्वन्यार्थरूपे असंख्यातगुणां छे.' द्वन्यार्थरूपे असंख्यातगुणां छे.' द्वन्यार्थरूपे अनित्यंस्य संस्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणां छे, तेथी वृत्त संस्थानो प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुणां छे.' द्वन्यार्थरूपे अनित्यंस्य संस्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुण छे, तेथी वृत्त संस्थानो प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुणां छे-इत्यादि प्रतेश परिमंडल संस्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुण छे, तेथी वृत्त संस्थानो प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुणां छे-इत्यादि प्रतेश परिमंडल संस्थानो असंख्यातगुण छे, तेथी वृत्त संस्थानो प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुणां छे-इत्यादि प्रतेश संस्थानो असंख्यातगुण छे' त्यां सुधी कहेवो.

ट्रव्यार्थरूपे.

५. [प्र॰] हे भगवन् ! केटला <sup>1</sup> संस्थानो कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! पांच संस्थानो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे-१ परिमंडल, यायत्-५ आयत.

संस्थान.

१ 'दःबद्वयाए हिंतो'ग-रू ।

<sup>\*</sup> ४ अहि संस्थानोनी जयन्य अवगाहनानो विचार कयों छे. जे संस्थानो जे संस्थाननी अपेक्षाए बहुप्रदेशावगाही छे ते खाआविष रीते थोडां छे. परिसंडल संस्थान जयन्यथी वीश प्रदेशनी अवगाहनावाहुं होय छे, अने यृत्त, चतुरक्ष, त्र्यक्ष अने आयत संस्थान जयन्यथी अनुक्रमे पांच, चार, त्रण अने वे प्रदेशावगाही छे. माटे परिसंडल बहुतरप्रदेशावगाही होवाथी सर्वथी योडां छे, तेबी यृत्तादि संस्थानो अल्प अल्प प्रदेशावगाही होवाथी संस्थातगुणा अधिक अधिक होय छे.

५ † संस्थाननी सामान्य प्रहपणा करी. इवे रक्षप्रभादिने विषे प्रहपणा करवानी इच्छाश्री पुनः संस्थान संबन्धी प्रश्न करे छे. आहीं अन्य संस्थानोना संयोगजन्य होवाश्री छठ्ठा अनित्यंस्थ संस्थाननी विवक्षा करी नशी, तेशी पांच ज संस्थान कह्यां छे—टीका.

- ६. [४०] परिमंडला णं मंते ! संदाणा कि संबेखा, असंबेखा, अणंता ! [उ०] गोयमा ! नो संबेखा, नो असं-
  - ७. [प्र॰] वहा जं भंते ! संठाणा कि संबोजा॰ ! [७०] एवं चेव । एवं जाव-आयता ।
- ८. [प्र॰] इमीसे णं भंते! रयणप्पनाथ पुढवीय परिमंडला संठाणा कि संसेजा, असंसेजा, अणंता ? [उ०] गोयमा ! नो संसेजा, नो असंसेजा, अणंता।
  - ९. [प्रo] बहुा णं भंते ! संडाणा कि संखेजा, असंखेजाः १ [उ०] एवं चेव, एवं जाव-आयया ।
- १०. [प्र०] सक्करप्यभाष णं भंते ! पुरुषीष परिमंडळा संद्याणा० ! [उ०] एवं चेव, एवं जाव-आयया । एवं जाव-सहेसचमाप ।
  - ११. [प्रः] सोहम्मे णं भंते ! कप्पे परिमंडला संठाणाः ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव-असुप ।
- १२. [प्र०] गेबेद्धविमाणाणं मंते ! परिमंडलसंठाणा० ? [उ०] पवं चेव, पवं अणुत्तरविमाणेसु वि, पवं ईसिपण्मा-राप वि।
- १३. [प्र॰] जत्थ णं अंते ! एगे परिमंडले संटाणे जवमज्झे तत्थ परिमंडला संटाणा कि संखेजा, असंखेजा, अणंता ! [उ॰] गोयमा ! नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता ।
  - १४. [प्र०] वहा णं अंते ! संटाणा कि संबोजा, असंबोजा० ! [उ०] एवं चेव, जाव-आयता ।
- इ. [प्र०] हे भगवन् ! परिमंडल संस्थानो द्युं संख्याता छे, असंख्याता छे के अनंत छे ! [उ०] हे गौतम ! संख्याता नथी, असं- करमंडलनी संख्या ख्याता नथी, पण अनंत छे.
- ७. [प्र०] हे मगवन् ! वृत्त संस्थान शुं संख्याता छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे समजबुं. ए प्रमाणे थावत्—आयत संस्थान कृतनी संख्याः सुची जाणबुं.
- ८. [प्र०] हे भगवन् ! भा रत्नप्रभा पृथिवीमां परिमंडल संस्थानी द्युं संख्याता छे, असंख्याता छे के अनंत छे ! [उ०] हे गौतम ! रत्नप्रभामां परिमंडल ते संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनंत छे.
- ९. [प्र॰] हे भगवन् ! वृत्त संस्थानो हुं संख्याता छे, असंख्याता छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे. यावत्—आयत संस्थान इत्तसंस्थानः सुधी समजवुं.
- १०. [प्र०] हे भगवन्! शर्कराप्रभा पृथिवीमां परिमंडल संस्थानो शुं संख्याता छे-इस्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. शकंराप्रभामां प्रमाणे यावत्—आयत संस्थान सुधी समजवुं. यावत्—अधःसप्तम पृथिवी सुधी ए प्रमाणे जाणवुं.
- ११. [प्र०] हे भगवन् ! सौधर्म कल्पमां \*पार्रमंडल रांस्थानो द्धुं संख्याता छे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणदुं. एम सीधर्माद कल्पमा पायत—अन्युतकल्प सुधी जाणदुं.
- १२. [प्र०] हे भगवन् । प्रैनेयक त्रिमानोमां द्वां परिमंडल संस्थानो संख्याता छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. एम विवेधक विमानमा परिमंडल संस्थान.
- १२. [प्र॰] हे भगवन् ! <sup>१</sup>उयां एक यवाकार परिमंडलसंस्थानसमुदाय छे त्यां यवाकार परिमंडलसमुदाय सिवाय बीजां परि- यवमध्यक्षेत्रमाबीजा परिमंडल संस्थानो संख्याता, असंख्याता के अनंत छे ! [उ॰] हे गौतम ! संख्याता नथी, असंख्याता नथी पण अनंत छे.
- १४. [प्र०] हे भगवन्! स्यां वृत्त संस्थानो कुं संख्याता छे, असंख्याता छे के अनंत छे? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. एम यावत्— इस संस्थानो- आयत संस्थान सुधी समजवुं.

१९ \* सर्व लोक परिमंडलसंस्थानवाळा पुद्रलस्कन्धोवडे निरंतर भरेलो छे. तेमां तुल्यप्रदेशवाळा, तुल्यप्रदेशावगाही अने तुल्य वर्णाद पर्यायवाळा जे जे परिमंडल द्रव्यो होय ते बधाने कल्पनाथी एक एक पंक्तिमां स्थापित करवा. अने तेना उपर अने नीचे एक एक जातिवाळा परिमंडल द्रव्यो एक एक पंक्तिमां स्थापित करवा. तेथी तेमां अल्पबहुत्व धवाधी परिमंडल संस्थाननो समुदाय यवना आकारवाळो थाय छे. तेमां जचन्य प्रदेशिक द्रव्यो समावधी अल्प होवाधी प्रथम पंक्ति नानी होय छे अने त्यार पछी बाकीनी पंक्ति अधिक अधिकतर प्रदेशवाळी होवाधी अनुक्रमे मोटी अने वधारे मोटी याय छे. त्यार पछी कमशः घटतां छेवटे उत्कृष्ट प्रदेशवाळा अने तेथी अन्य परिमंडल द्रव्यो वहे यवाकार क्षेत्र थाय छे.

९३ † ज्यां एक यवाकृतिनिष्पादक परिमंडलसंस्थानसमुदाय होय छे ते झेत्रमां यवाकारनिष्पादक परिमंडल सिवाय बीजा केटला परिमंडल संस्थानी होय छे-ए प्रश्न छे. सेनो उत्तर अनंत परिमंडल संस्थानो होय छे. ए प्रमाणे बृत्तादि संस्थानो संबन्धे पण जाणवुं.—टीका.

- १५. [प्र॰] जत्य णं मंते । एरो घट्टे संटाणे जधमज्ज्ञे तत्थ परिमंडला संटाणा॰ ? [उ॰] एवं चेव, घट्टा संटाणा एवं चेव, एवं जाव—आयता । एवं एकेकेणं संटाणेणं पंच वि चारेयज्ञा ।
- १६. [प्र॰] जत्थ णं भंते ! इमीसे रयणप्यभाष पुढवीष एगे परिमंडले संठाणे जवमज्झे तत्थ णं परिमंडला संठाणा कि संखेजा-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता । [प्र॰] वट्टा णं भंते ! संठाणा कि संखेजां-! [उ॰] एवं चेव. एवं जाव-आयता ।
- १७. [प्र०] जत्य णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाप पुढवीप एगे वहे संठाणे जवमज्झे तत्य णं परिमंडला संठाणा कि सं-लेजा०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता । वहा संठाणा एवं चेव, एवं जाव-आयता । एवं पुण-रिव एक्सेकेणं संठाणेणं पंच वि चारेयद्वा जहेव हेहिला, जाव-आयतेणं, एवं जाव-अहेसत्तमाए, एवं कप्पेसु वि, जाव-ईसी-पन्भाराय पुढवीप ।
- १८. [प्र०] बहे णं मंते! संठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पन्नते! [उ०] गोयमा! बहे संठाणे दुविहे पन्नते, तं जहा—घणबहे य पयरबहे य । तत्थ णं जे से पयरबहे से दुविहे पन्नते, तंजहा—ओयपपिसप य जुम्मपपिसप य । तत्थ णं जे से ओयपपिसप से जहनेणं पंचपपिसप, पंचपपिसोगाढे; उक्कोसेणं अणंतपपिसप, असंखेजपपसोगाढे । तत्थ णं जे से जुम्मपपिसप से जहनेणं बारसपपिसप, बारसपपिसोगाढे; उक्कोसेणं अणंतपपिसप, असंखेजपपसोगाढे । तत्थ णं जे से घण- बहे से दुविहे पन्नते, तंजहा—ओयपपिसप य जुम्मपपिसप य । तत्थ णं जे से ओयपपिसप से जहनेणं सत्तपपिसप, सत्त-पप्सोगाढे पन्नते, उक्कोसेणं अणंतपपिसप असंखेजपप्सोगाढे पन्नते । तत्थ णं जे से जुम्मपपिसप से जहनेणं बत्तीसपपिसप वसीसपपिसोगाढे पन्नते, उक्कोसेणं अणंतपपिसप असंखेजपप्सोगाढे ।

षृत्त संस्थान साथै परिषंडन्मदिनो संदन्धः १५. [प्र०] हे भगवन् । ज्यां (यनाकृति निष्पादक) एक वृत्त संस्थान छे त्यां परिमंडल संस्थानो केटलां छे ! [उ०] पूर्वे कहा। प्रमाणे जाणवुं, त्यां वृत्त संस्थानो पण एव प्रमाणे जनन्त समजवां. ए प्रमाणे यावत्—आयत संस्थान सुधी जाणवुं. एक एक संस्थान साथे पांचे संस्थानोनो संबन्ध विचारवो.

रक्षप्रभामां परिम-लादि मंस्थानोः

- १६. [प्र०] हे भगवन्! आ रत्नप्रभा पृथियीमां ज्यां यत्राकारनिष्पादक एक परिमंडल संस्थान समुदाय छे त्यां बीजा परिमंडल संस्थानो द्युं संख्याता छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गानम! गंख्याना नथी, पण अनंत छे. [प्र०] हे भगवन्! वृत्त संस्थानो द्युं संख्याता छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] ए प्रमाणे (अनंत) छे. एम यावत्—आयत सुधी जाणवुं.
- १७. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवीमां ज्यां एक ( यवाकृतिनिष्पादक ) वृत्तसंस्थानसमुदाय होय छे त्यां परिमंडल संस्थानो द्युं संख्याता छे—इत्यादि प्रश्न. [७०] हे गौतम! संख्याता नथी, असंख्याता नथी, पण अनंत छे. वृत्त संस्थानो पण एज प्रमाणे जाणवा. एम आयत संस्थान सुधी समजद्यं. वळी ए प्रमाणे पूर्वे कह्या प्रमाणे अहिं फरीने पण एक एक संस्थान साथे पांचे संस्थाननो आयत संस्थान सुधी विचार करवो, तथा यावत्—अधःसतम पृथिवी, कल्पो अने ई्षत्याग्भारा पृथिवीने विषे पण समजदुं.

कृत्त संस्थान फेटला प्रदेशवार्छ अने केटला प्रदेशमा अवगाढ दोय ! १८. [प्र०] हे भगवन् ! वृत्त संस्थान केटला प्रदेशवाळुं छे अने केटला आकाश प्रदेशमां अवगाद—रहेलुं छे ! [उ०] हे गौतम ! वृत्त संस्थान वे प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे— "घनवृत्त अने प्रतरवृत्त. तेमां जे प्रतरवृत्त छे, ते वे प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे— ओजप्रदेशवाळुं—एकीसंख्यावाळुं अने युग्ममंख्याप्रदेशवाळुं—वेकी संख्यावाळुं. तेमां जे ओजप्रदेशवाळुं प्रतरवृत्त छे ते जघन्यथी पांच प्रदेशवाळुं अने पांच आकाश प्रदेशमां अवगाद छे, तथा उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने असंख्यात आकाशप्रदेशमां अवगाद छे. तेमां जे युग्मप्रदेशवाळुं प्रतरवृत्त छे ते जघन्य वार प्रदेशवाळुं अने वार आकाश प्रदेशमां अवगाद छे, तथा उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने असंख्यात आकाशप्रदेशमां अवगाद छे. तेमां जे घनवृत्त छे ते वे प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—ओजप्रदेशिक—एकीसंख्यावाळुं अने युग्मप्रदेशिक—वेकी संख्यावाळुं. तेमां जे ओजप्रदेशिक घनवृत्त छे ते जघन्य सात प्रदेशवाळुं अने सात आकाश प्रदेशमां अवगाद छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने वत्रीश आकाश प्रदेशमां अवगाद छे, अने उत्कृष्टथी अनंत प्रदेशवाळुं अने असंख्य आकाश प्रदेशमां अवगाद छे.

१ 'पुच्छा गोयमा ! नो संखेजा, नो असंखेजा, अणंता'-इनि धपुस्तके ।

९८ \* दडानी पेठे सर्व बाजु समप्रमाण ते घनवृत्त अने मांडानी पेठे सात्र जाडाइमां ओछुं होय ते प्रतरकृत. ओजप्रदेशिक प्रतरकृत ः आ प्रमाणे पांच प्रदेशांचुं अने युग्मप्रदेशिक प्रतरकृत आ प्रमाणे १९६० वार प्रदेशांचुं होय छे. ओज प्रदेशिक घनकृत एक मध्य परमाणुनी नीचे एक परमाणु अने उपर एक परमाणु, तथा तेनी चारे बाजु बार परमाणुओ एम ए जघन्य सात प्रदेशोंचुं छे. ते आ प्रमाणे.—•००

<sup>े</sup> युग्मप्रदेशिक घनवृत्त बत्रीय प्रदेशोनुं होय छे. तेमां प्रथम आ प्रमाणे व्हुद्धः बार प्रदेशोनो प्रतर स्थापनो, तेना उपर एज रीते बीजो बार प्रदेशोनो प्रतर मूकने अने बन्ने प्रतरना मध्य भागना चार चार अणुओनी उपर बीजा चार अणुओ मुकना. ए रीते बत्रीय प्रदेशोनो गुग्मप्रदेशिक घनवृत्त बाय छे.

- १९. [प्रo] तंसे णं अंते ! संटाणे कतिपदेसिए कितपदेसीगाढे पश्चते ! [उ०] गोयमा ! तंसे णं संटाणे दुविहे पश्चते । तंत्र्य णं जे से पयरतंसे य । तत्य णं जे से पयरतंसे य । तत्य णं जे से पयरतंसे य । तत्य णं जे से अग्रेयप्रसिए य हुम्मपप्सिए य । तत्य णं जे से ओयप्रसिए सं जहन्नेणं तिप्रसिए तिप्रसोगाढे पश्चते , उक्कोसेणं अणंतप्रसिए असंखेजप्रसोगाढे पश्चते । तत्य णं जे से जुम्मप्रसिए सं जहनेणं छप्प्रसिए छप्प्रसीगाढे पश्चते , उक्कोसेणं अणंतप्रसिए असंखेजप्रसोगाढे पश्चते । तत्य णं जे से ओयप्रसिए से जहनेणं पणती-सप्रसिए पणतीसप्रसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतप्रसिए नतं चेय । तत्य णं जे से ओयप्रसिए से जहनेणं चउप्प्रसिए चउप्परसिए पणतीसप्रसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतप्रसिए नतं चेय । तत्य णं जे से जुम्मप्रसिए से जहनेणं चउप्परित्र चउप्परित्र स्वागढे पश्चते, उक्कोसेणं अणंतप्रसिए नतं चेय । तत्य णं जे से जुम्मप्रसिए से जहनेणं चउप्परित्र चउप्परित्र चउप्परित्र स्वागढे पश्चते, उक्कोसेणं अणंतप्रसिए नतं चेय ।
- २०. [प्र०] चउरंसे णं मंते! संठाणे कितपदेसिए-पुच्छा। [उ०] गोयमा! चउरंसे संठाणे दुविहे पक्षते, भेदो ज्ञ-हेव वहस्स, जाव-तत्थ णं जे से ओयपपसिए से जहकेणं नयपपसिए नवपपसोगाढे पक्षते, उक्कोसेणं अणंतपपसिए असंखे-ख्रपपसोगाढे पक्षते। तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहकेणं चउपपसिए चउपपसोगाढे पक्षते, उक्कोसेणं अणंतपपसिए-तं चेव। तत्थ णं जे से घणचउरंसे से दुविहे पक्षते, तंजहा-ओयपपसिए य जुम्मपपसिए य। तत्थ णं जे से ओयपपसिए से जहकेणं सत्तावीसहपपसिए सत्तावीसितपपसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपपसिए तहेव। तत्थ णं जे से जुम्मपपसिए से अहकेणं महुपपसिए सहुपपसोगाढे पक्षते, उक्कोसेणं अणंतपपसिए तहेव।
- २१. [प्र॰] आयए णं भंते ! संठाणे कतिपदेसिए कतिपएसोगाढे पक्ते ? [४०] गोयमा ! आयए णं संठाणे तिबिहे पक्ते । तंजहा-सेडिआयते, पयरायते, घणायते । तत्थ णं जे से सेडिआयते से दुविहे पक्ते, तंजहा-ओयपएसिए य ज्ञम्म-
- १९. [प्रo] हे भगवन्! त्रयस संस्थान केटला प्रदेशवालुं अने केटला आकाश प्रदेशमां अवगात छे? [उo] हे गीतम! त्रयस संस्थान वे प्रकारनं कहुं छे. ते आ प्रमाणे—घन त्रयस अने प्रतरत्रयस. तेमां जे प्रतर त्रयस छे ते वे प्रकारनं कहुं छे ते आ प्रमाणे—ओजप्रदेशिक अने युग्मप्रदेशिक. तेमां जे ओजप्रदेशिक प्रतर त्रयस छे ते जघन्य त्रय प्रदेशवालुं अने त्रण आकाश प्रदेशमां अवगात छे, तथा उत्कृष्टथी अनंतप्रदेशमां अवगात छे, अने उत्कृष्टथी अनंतप्रदेशमां अवगात छे. तेमां जे युग्म प्रदेशिक प्रतर त्रयस छे ते जघन्य छ प्रदेशवालुं अने छ आकाश प्रदेशमां अवगात छे. तेमां जे घन त्रयस छे ते वे प्रकारनं कह्यं छे, ते आ प्रमाणे—ओजप्रदेशिक अने युग्मप्रदेशिक. तेमां जे ओजप्रदेशिक "घन त्रयस छे ते जघन्य पांत्रीश प्रदेशवालुं अने पांत्रीश आकाश प्रदेशमां अवगात छे. तेमां जे युग्मप्रदेशवालुं अने पांत्रीश आकाश प्रदेशमां अवगात छे. तेमां जे युग्मप्रदेशवालुं अने पांत्रीश आकाश प्रदेशमां अवगात छे. तेमां जे युग्मप्रदेशमां अवगात छे.

व्यव्यसंस्थान केटला प्रदेशवाद्धं अने केटला आकाश प्रदेशमां अवगाद होप ?

२०. [प०] हे भगवन्! चतुरस्न संस्थान केटला प्रदेशवालुं छे अने केटला आकाश प्रदेशमां अवगाद होय छे? [उ०] हे गौतम ! चतुरस्न—चतुष्कोण संस्थान वे प्रकारनुं छे, तेना कृत संस्थाननी पेठे घन चतुरस्न अने प्रतर चतुरस्न भेद कहेवा. यावत्-तेमां जे ओज प्रदेशिक प्रतर चतुरस्न छे ते जघन्य नव प्रदेशवालुं अने नव आकाश प्रदेशमां अवगाद छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवालुं अने असंख्य आकाशप्रदेशमां अवगाद छे. अने जे गुग्म प्रदेशिक प्रतर चतुरस्न छे ते जघन्य चार प्रदेशवालुं अने चार आफाश प्रदेशमां अवगाद छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवालुं अने असंख्य आकाशप्रदेशमां अवगाद छे. तेमां जे घन चतुरस्न छे ते वे प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—ओजप्रदेशिक अने गुग्मप्रदेशिक. तेमां जे ओजप्रदेशिक घन चतुरस्न छे ते जघन्य सत्तावीश प्रदेशवालुं अने सत्तावीश आकाश प्रदेशमां अवगाद छे, तथा उत्कृष्ट अनंतप्रदेशवालुं अने असंख्य आकाश प्रदेशमां अवगाद छे. अने जे गुग्म प्रदेशिक घन चतुरस्न छे ते जघन्य मेआठ प्रदेशवालुं अने आठ आकाश प्रदेशमां अवगाद छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवालुं अने असंख्य आकाश प्रदेशमां अवगाद छे.

चतुरस्र सं॰ केटला प्रदेशबाङ्ग अने केटला प्रदेशमां अबगाद होय !

२१. [प्र०] हे मगवन् ! आयत संस्थान केटला प्रदेशवाळुं छे अने केटला आकाशप्रदेशमां अवगाढ छे? [उ०] हे गीतम ! आयत संस्थान त्रण प्रकारनुं छे, ते आ प्रमाणे—ैंश्रेणिआयत, प्रतरायत अने घनायत. तेमां जे श्रेणि आयत छे ते बे प्रकारनुं छे, ते आ आयत सं० केटला प्रदेशवाडुं अने केटला आकारा प्रदेशमा अवगाढ होय!

- १९ \* ओजप्रदेशिक घन त्र्यस जघन्य पांत्रीश प्रदेशोनुं थाय छे. तेमां प्रथम "क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म पदर प्रदेशोना प्रतर जघर बीजो दश प्रदेशोनो प्रतर, तेना उपर जीजो छ प्रदेशोनो प्रतर, वेना उपर चोथो त्रण प्रदेशोनो प्रतर अने तेना उपर एक परमाणु मुक्को. ए प्रमाणे पांत्रीश प्रदेशो थाय छे.
  - २० । 👯 भा प्रमाणे नवप्रदेशिक प्रतरनी उपर तेवा बीजा वे प्रतर मुकवा एटले सत्तावीश प्रदेशनुं ओजप्रदेशिक घन चतुरस्र थाय छे.
  - 🎙 चतुःप्रदेशिक प्रतरनी उपर मीजुं चतुःप्रदेशिक प्रतर मुकवाथी आठ प्रदेशनुं युग्मप्रदेशिक घन चतुरस्र थाय छे. 👶
- २९ \$ प्रदेशनी श्रेणिरूप श्रेण्यायत कहेवाय छे. तेमां जघन्य ओजप्रदेशिक श्रेण्यायत श्रणप्रदेशात्मक होय छे. .... युग्मप्रदेशिक श्रेण्यायत बे प्रदेशनं होय छे:— ••
- वे प्रण-इत्यादि विष्कम्भ श्रेणिरूप प्रतरायत कहेवाय छे. जाडाइ अने विष्कम्भ सहित अनेक श्रेणिओने घनायत कहे छे. ओजप्रदेशिक श्रेण्यायत जवन्य त्रिप्रदेशिक होय छे:— ••• अने युग्म प्रदेशिक श्रेण्यायत द्विप्रदेशिक छे:— ••

पपिसप य। तत्थ णं जे श्रोयपपिसप से जहन्नेणं तिपपिसप तिपपसोगाढे, उद्घोसेणं अणंतपपिसप—तं चेव। तत्थ णं जे से जुम्मपपिसप से जहन्नेणं दुपपिसप दुपपसोगाढे, उद्घोसेणं अणंत विदेव। तत्थ णं जे से पयरायते से दुविदे पन्नसे तंजहा— श्रोयपपिसप य जुम्मपपिसप य। तत्थ णं जे से ओयपपिसप से जहनेणं पन्नरसपपिसप पन्नरसपपसोगाढे, उद्घोसेणं अणंत विदेव। तत्थ णं जे से जुम्मपपिसप से जहनेणं छप्पपिसप छप्पपसोगाढे, उद्घोसेणं अणंत विदेव। तत्थ णं जे से जुम्मपपिसप य जुम्मपपिसप य । तत्थ णं जे से ओयपपिसप से जहनेणं पणयालीसपपिसप पणयालीसपपिसप य । तत्थ णं जे से ओयपपिसप से जहनेणं पणयालीसपपिसप पणयालीसपपिसप को जहनेणं बारसपपिसप बारसपपिसप उद्घासेणं अणंत विदेव। तत्थ णं जे से जुम्मपपिसप से जहनेणं बारसपपिसप बारसपपिसोगाढे, उद्घोसेणं अणंत विदेव।

- २२. [४०] परिमंडले णं भंते ! संठाणे कतिपदेसिए—पुच्छा । [७०] गोयमा ! परिमंडले णं संठाणे दुविहे पक्षचे, तं-जहा—घणपरिमंडले य पयरपरिमंडले य । तत्थ णं जे से पयरपरिमंडले से जहन्नेणं वीसतिपदेसिए वीसइपएसोगाढे, उद्घो-सेणं अणंतपदेसिए तहेव । तत्थ णं जे से घणपरिमंडले से जहन्नेणं चत्तालीसतिपदेसिए चत्तालीसपएसोगाढे पश्चने, उद्घोसे णं अणंतपप्रसिप असंकेजपप्सोगाढे पश्चने ।
- २३. [प्र०] परिमंडले णं मंते ! संटाणे दबटुयाए कि कडजुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलियोए ? [उ०] गोयमा ! नो कडजुम्मे, णो तेयोए, णो दावरजुम्मे, कलियोए । वट्टे णं मंते ! संटाणे दबटुयाए० ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव-आयते ।

प्रमाणे—ओजप्रदेशिक अने युग्मप्रदेशिक. तेमां जे ओजप्रदेशिक श्रेणि आयत छे ते जघन्य त्रण प्रदेशवाळुं अने त्रण आकाशप्रदेशमां अवगाढ छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने अगंद्य आकाशप्रदेशमां अवगाढ छे. जे युग्मप्रदेशिक श्रेणि आयत छे ते जघन्य बे प्रदेशवाळुं अने बे आकाशप्रदेशमां अवगाढ छे, तथा उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने अरांद्य आकाशप्रदेशमां अवगाढ छे. तेमां जे प्रतरायत छे ते वे प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—ओजप्रदेशिक अने युग्मप्रदेशिक. जे अजप्रदेशिक प्रतरायत छे ते जघन्य पंदर प्रदेशवाळुं अने पंदर आकाशप्रदेशमां अवगाढ छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने असंद्य आकाश प्रदेशमां अवगाढ छे. तेमां जे युग्मप्रदेशिक प्रतरायत ते जघन्य छ प्रदेशवाळुं अने छ आकाश प्रदेशमां अवगाढ छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने असंद्यात आकाश प्रदेशमां अवगाढ छे. तेमां जे धनायत छे ते वे प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—ओजप्रदेशिक अने युग्मप्रदेशिक. तेमां जे ओजप्रदेशिक घनायत छे ते जघन्य पिस्ताळीश प्रदेशवाळुं अने पिस्ताळीश आकाश प्रदेशमां अवगाढ छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने पिस्ताळीश आकाश प्रदेशमां अवगाढ छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने प्रमाप्त छे ते जघन्य वार प्रदेशवाळुं अने बार आकाश प्रदेशमां अवगाढ छे. तथा उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने असंद्य आकाशप्रदेशमां अवगाढ छे.

यरिमंडल सं व केटला प्रदेशवाकुं अने केटला आकाश प्रदेशमा अवगाढ होय है

२२. [प्र०] हे भगवान् ! परिमंडल संस्थान केटला प्रदेशवाळुं, अने केटला आकाशप्रदेशमां अवगाद होय! [उ०] हे गौनम परिमंडल मंस्थान वे प्रकारनुं कहां छे, ते आ प्रमाणे—धन परिमंडल अने प्रतर परिमंडल. तेमां जे प्रतर परिमंडल छे ते जघन्य <sup>†</sup>वीश प्रदेशवाळुं अने वीश आकाश प्रदेशमां अवगाद छे, अने उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने असंख्यात आकाश प्रदेशमां अवगाद छे. तेमां जे धन परिमंडल छे ने जघन्य चाळीस प्रदेशवाळुं अने चाळीस आकाश प्रदेशमां अवगाद छे, तथा उत्कृष्ट अनंत प्रदेशवाळुं अने असंख्य प्रदेशमां अवगाद छे.

परिमंडलादि संस्था-ननी कृतयुग्मादि-स्पता-

२३. [प्र०] हे भगवन् ! परिमंडल मंस्थान द्रव्यार्थरूपे शुं कित्तयुग्म छे, त्र्योज छे, द्वापरयुग्म छे के कल्योज छे! [उ०] हे गौतम ! ते कृतयुग्म नथी, त्र्योज नथी, द्वापरयुग्म नथी, पण कल्योजरूप छे. [प्र०] हे भगवन् ! वृत्तमंस्थान द्रव्यार्थपणे शुं कृत-युग्म छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] उत्तर पूर्व प्रमाणे जाणवो. ए प्रमाणे यावत्—आयत संस्थान सुधी समजबुं.

२१ ैं ओजप्रदेशिक प्रतरायत जघन्य पंदर प्रदेशनुं होय छे:— ﷺ, अने युग्मप्रदेशिक प्रतरायत छ प्रदेशनुं होय छे:— ﷺ, एम पंदर प्रदेशना प्रतरायत उपर बीजा के तेवा प्रतरायतो मूकवाथी जघन्य पीस्ताटीश प्रदेशनुं ओजप्रदेशिक घनायत थाय छे, अने छ प्रदेशना युग्म प्रदेशिक प्रतरायत उपर बीजुं तेज प्रतरायत मूकवाथी बार प्रदेशनुं युग्मप्रदेशिक घनायत थाय छे.

२२ <sup>†</sup> परिमंडल संस्थान मात्र युग्मप्रदेशिक छे, तेमां प्रतर परिमंडल जघन्य वीश प्रदेशवाद्धं छे, तेना बीजं प्रतर परिमंडल मूकवाकी अधन्य चाळीश प्रदेशनं घन परिमंडल याय छे.

२३ ौ परिमंडल संस्थान द्रव्यरूपे एक छे, अने एक वस्तुनो चार चारबी अपहार बतो नथी, तेथी एकज बाकी रहे छे माटे ते कस्योजरूप छे. ए प्रमाण वृत्तादि संस्थान माटे जाणबुं. परन्तु सामान्य रीते बधा परिमंडल संस्थाननो विचार करीए खारे तेनो चार चारबी अपहार करता कोह वस्ताते काह पण बाकी न रहे, कदाचित त्रण, कदाचित वे अने कदाचित एक पण बाकी रहे, माटे कदाचित कृतयुग्मरूप होय अने यावन्-कदाचित कस्योजरूप पण होय. उदारे विदोय दृष्टियी एक एक संस्थाननो विचार करीए खारे चारबी अपहार न बती होवाबी एकज बाकी रहे तेबी कस्योजरूपज होय.

- २४. [प्र०] परिमंडला णं मंते ! संठाणा दबहुयाए कि कडलुम्मा, तेयोर्यो-पुच्छा । [उ०] गोवमा ! बोघादेलेणं सिय कडलुम्मा, सिय तेओगा, सिय वाषरतुम्मा, सिय किल्योगा; विद्याणादेलेणं नो कडलुम्मा, नो तेओगा, नो वाषरजुम्मा, किल्योगा, एवं जाव-भायता ।
- २५. [प्र॰] परिमंडले णं मंते ! संवाणे पपसद्वयाप किं कडलुम्मे-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय कडलुम्मे, सिय ते-योगे, सिय दावरलुम्मे, सिय कलियोप । एवं जाव-भायते ।
- २६. [प्र॰] परिमंडला णं भंते ! संटाणा पएसट्टयाए कि कडलुम्मा-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! ओघावेसेणं सिय कड-जुम्मा, जाव-सिय किल्योगाः विहाणावेसेणं कडलुम्मा वि, तबोगा वि, वावरलुम्मा वि, कलियोगा वि । एवं जाव-भाषता ।
- २७. [प्र॰] परिसंडले णं भंते! संठाणे किं कडज्रुम्मपपसोगाढे, जाब-कलियोगपपसोगाढे? [उं॰] गोयमा! कडज्रु-स्मपपसोगाढे, णो तेयोगपपसोगाढे, नो दाचरज्ञुम्मपपसोगाढे, नो कलियोगपपसोगाढे।
- २८. [प्र०] बहे जं मंते ! संठाणे कि कडजुमो-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपय-सोगाढे, तो वाबरज्ञम्मपयसोगाढे, सिय किल्योगपयसोगाढे ।
- २९. [प्र०] तंसे णं मंते ! संठाणे०-पुच्छा । [७०] गोयमा ! सिय कडजुम्मपपसोगाढे, सिय तेयोगपपसोगाढे, सिय वाबरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलिओगपपसोगाढे ।
  - ३०. [प्रठ] चउरंसे णं भंते ! संटाणे० ! [उ०] जहा वहे तहा चउरंमे वि।
  - ३१. [प्र०] आयए णं भंते !०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय कडज्रम्मपएसोगाढे, जाव-सिय कर्लिओगपएसोगाढे ।
- २४. [प्र०] है भगवन्! परिमंडल संस्थानो द्रव्यार्थपणे हुं कृतयुग्म छे, त्र्योज छे, द्वापरयुग्म छे के कलियोग छे! [उ०] है गौतम! ओघादेश—सामान्यतः सर्वसमुदितन्देप कदाच कृतयुग्म, कदाच त्र्योज, कदाच द्वापग्युग्म, अने कदाच कल्योजरूप होय छे. तथा विधानादेश—प्रत्येकनी अपेक्षाए कृतयुग्म रूप नथी, त्र्योज नथी, द्वापरयुग्म नथी, पण कल्योजरूप छे. ए प्रमाणे यावत्—आयत संस्थान सुधी जाणवुं.

परिमंडल।दिसंस्था-ननी इत्युग्मादि-रूपताः

२५. [प्र०] हे भगवन् ! परिमंडल संस्थान प्रदेशार्थपणे ह्यं कृतयुग्म हो—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कदाच कृतयुग्म होय, कदाच त्र्योज, कदाच द्वापरयुग्म अने कदाच कल्योजरूप होय छे. ए प्रमाणे यावत्—आयन संस्थान सुधी जाणवुं.

परिमङ्कादिसंस्था-नोनी प्रदेशरूपे कू-तयुग्मादिरूपता-

२६. [प्रo] हे भगवन् ! परिमंडल संस्थानो प्रदेशार्थपणे शुं कृतयुग्म छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ओप्रादेश—सामान्यरूपे कदाच कृतयुग्म होय, यावत्—कदाच कल्योजरूप पण होय. विधानादेश—एक एकनी अपेक्षाए कृतयुग्म होय, त्र्योज पण होय, द्वापर-युग्म पण होय अने कल्योजरूप पण होय. ए प्रमाणे यावत्—आयत संस्थानो सुधी जाणबुं.

परिमंडलादिसंस्थानी प्रदेशरूपे शु कृतः युग्मादिरूपे छे ?

२७. [प्र॰] हे भगवन् ! परिमंडल संस्थान शुं ऋतयुग्मप्रदेशावगाढ छे के यावत्—कल्योजप्रदेशावगाढ छे ! [उ॰] हे गीतम ! कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे, पण त्र्योज प्रदेशावगाढ नथी, द्वापरयुग्मप्रदेशावगाढ नथी, तेम कल्योजप्रदेशावगाढ पण नथी. परिमंडलसंग्यान केटला प्रवेशाः क्याद शोयः

२८. [प्र०] हे भगवन् ! वृत्त संस्थान द्युं कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे-इत्सादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच कृतयुग्म प्रदेशाव-गाढ होय, कदाच ज्योजप्रदेशावगाढ होय, कदाच कत्योजप्रदेशावगाढ होय, पण डापरयुग्मप्रदेशावगाढ न होय.

वृत्तसंस्थान.

- २९. [प्र०] हे भगवन् ! त्र्यस्न संस्थान शुं कृतयुग्मप्रदेशावगाढ होय-इत्सादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! ते कदाच कृतयुग्मप्रदे- व्यवसंस्थान शावगाढ होय, कदाच त्र्योजप्रदेशावगाढ होय, कदाच द्वापरयुग्मप्रदेशावगाढ होय, पण कल्योजप्रदेशावगाढ न होय.
- ३०. [प्र०] हे भगवन् ! चतुरस्र—चोरस संस्थान ह्यं कृतयुग्मप्रदेशावगाद हे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] वृत्तसंस्थाननी पेठे चतुरस्र चतुरस्रसंस्थान संस्थान जाणवं.
- ३१. [प्र०] हे भगतन् ! आयतमंस्थान संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच कृतयुग्मप्रदेशावगाढ होय अने यावत्— आयतसंस्थानः कदाच कल्योजप्रदेशावगाढ पण होयः

- ६२. [प्र॰] परिमंडला णं भंते ! संठाणा कि कडलुम्मपपसोगाढा, तेथोगपपसोगाढा—पुच्छा । [ड॰] गोयमा ! भोघा-देसेण वि विद्याणादेसेण वि कडलुम्मपपसोगाढा, णो तेयोगपपसोगाढा, तो दावरलुम्मपपसोगाढा, तो कलियोगपप-सोगाढा ।
- ३३. [४०] वट्टा णं भंते ! संटाणा कि कडज्जम्मपपसोगाटा-पुच्छा । [७०] गोयमा ! घोषादेसेणं कडज्जम्मपपसो-गाटा, नो तेयोगपपसोगाटा, नो दावरज्जम्मपपसोगाटा, नो कलियोगपपसोगाटा । विद्वाणादेसेणं कडज्जम्मपपसोगाटा वि, तेयोगपपसोगाटा वि, नो दावरज्जम्मपपसोगाटा, कलियोगपपसोगाटा वि ।
- ३४. [प्र॰] तंसा णं मंते ! संटाणा कि कडजुम्म०-पुष्छा । [उ०] गोयमा ! श्रोधादेसेणं कडजुम्मपपसोगाढा, नो तेयोगपपसोगाढा । विद्वाणादेसेणं कडजुम्मपपसोगाढा कि, तेयोगपपसोगाढा । विद्वाणादेसेणं कडजुम्मपपसोगाढा कि, तेयोगपपसोगाढा । श्रिज्ञं क्रांत्रम्मपपसोगाढा कि, तेयोगपपसोगाढा । श्रिज्ञं क्रांत्रम्मपपसोगाढा कि, तेयोगपपसोगाढा । श्रिज्ञं क्रांत्रम्मपपसोगाढा । श्रिज्ञं क्रांत्रमा अर्थे ।
- ३५. [४०] भायया णं मंते ! संडाणा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! भोघादेसेणं कडज्रुम्मपपसोगाडा, नो तेयोगपपसो-गाडा, नो दावरज्ञुम्मपपसोगाडा, नो कलिओगपपसोगाडा । विद्वाणादेसेणं कडज्रुम्मपपसोगाडा वि, जाव-कलिओगपपसो-गाडा वि ।
- ३६. [प्र॰] परिमंडले णं भंते ! संठाणे कि कडजुम्मसमयिवतीप, तेयोगसमयवितीप, दावरजुम्मसमयिवतीप, किल-भोगसमयिवतीप ? [उ॰] गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयिवतीप, जाव-सिय कलिभोगसमयिवतीप, पर्व जाव-भायते ।
- ३७. [प्र॰] परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं कडज़म्मसमयिठतीया-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कड-ज़ुम्मसमयिद्वतीया, जाव-सिय कलियोगसमयिद्वतीया । विद्वाणादेसेणं कडज़ुम्मसमयिद्वतीया वि, जाव-कलियोगसमयिद-तीया वि । एवं जाव-आयता ।
- ३८. [प्र∍] परिमंडले णं भंते ! संडाणे कालवन्नपज्जवेहिं किं कडज्जमो, जाव—कलियोगे ? [उ०] गोयमा ! सिय कड-जुम्मे, पर्व पपणं अभिलावेणं जहेव ठितीप, पर्व नीलवन्नपज्जवेहिं, पर्व पंचहिं वजेहिं, दोहिं गंवेहिं, पंचहिं रसेहिं, अट्टहिं फासेहिं, जाव∽जुक्लफासपज्जवेहिं ।

परिमंडलसंस्थानी.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! परिमंडल संस्थानो क्यं कृतयुग्मप्रदेशावगाढ होय, त्रयोजप्रदेशावगाढ होय—इत्यादि प्रश्न. [७०] हे गौतम ! ते सामान्यतः वधां मळीने तथा विधानादेश—एक एकनी अपेक्षाए कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे, पण त्र्योजप्रदेशावगाढ नथी, द्वापर-युग्मप्रदेशावगाढ नथी, तेम कल्योजप्रदेशावगाढ पण नथी.

दृत्तसंस्थान<u>ो</u>.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! वृत्त संस्थानो कुं कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते सामान्यतः बधां मळीने कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे, पण त्र्योजप्रदेशावगाढ नथी, द्वापरयुग्मप्रदेशावगाढ नथी, तेम कल्योजप्रदेशावगाढ पण नथी. विधानादेश वर्षे कृतयुग्मप्रदेशावगाढ पण छे, त्र्योजप्रदेशावगाढ पण छे, द्वापरयुग्मप्रदेशावगाढ नथी, पण कल्योजप्रदेशावगाढ छे.

त्र्यस्रसंस्थानी-

३४. [प्र०] हे भगवन् ज्यस्न गंस्यानो शुं कृतयुग्मप्रदेशावगाट छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गातम ! सामान्य विवक्षाए कृतयुग्म प्रदेशावगाट छे, पण ज्योज, द्वापर के कल्योज प्रदेशावगाट नथी. विशेषनी अपेक्षाए कृतयुग्मप्रदेशावगाट पण छे, ज्योजप्रदेशावगाट पण छे, ज्योजप्रदेशावगाट पण छे, पण द्वापरयुग्मप्रदेशावगाट नथी, कल्योज प्रदेशावगाट छे. चतुरस्न—चोरससंस्थानो कृत संस्थाननी पेठे जाणवां.

चतुरस्रसंस्थानोः आयत्तसंस्थानोः

३५. [प्र०] हे भगवन् ! आयत संस्थानो शुं कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे—इस्थादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते ओघादेशवडे कृतयुग्म प्रदेशावगाढ छे, पण त्र्योज, द्वापर के कल्योजप्रदेशावगाढ नथी. विधानादेशवडे कृतयुग्मप्रदेशावगाढ पण छे अने यावत्—कल्योज-प्रदेशावगाढ पण छे.

परिमंडलसंस्था-मनी स्थितिः ३६. [प्र०] हे भगवन् ! परिमंडल संस्थान द्युं कृतयुग्मसमयनी स्थितिवाळुं छे, त्र्योज समयनी स्थितिवाळुं छे, द्वापरसमयनी स्थितिवाळुं छे के कल्योजसमयनी स्थितिवाळुं छे ! [उ०] हे गौतम ! कदाच कृतयुग्मसमयनी स्थितिवाळुं छे, अने यावत्—कदाच कल्योजसमयनी स्थितिवाळुं एण छे. ए प्रमाणे यावत्—आयत संस्थान सुधी जाणवुं.

परिमंडल संस्था-नोनी स्थितिः ३७. [प्र०] हे भगवन् ! परिमंडल संस्थानो ज्ञुं कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळां छे—इस्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ओघादेश-वडे कदाच कृतयुग्मसमयनी स्थितिवाळां छे, यावत्—कदाच कल्योजसमयनी स्थितिवाळां पण छे. विधानादेशवडे कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळां पण छे, यावत्—कल्योज समयनी स्थितिवाळां पण छे. ए प्रमाणे यावत्—आयत संस्थानो सुधी समजवुं.

परिमंडलादि संस्था-नना वर्णादि पर्यायोः ३८. [प्र०] हे भगवन् ! परिमंडल संस्थानना काळावर्णना पर्यायो ह्यं कृतयुग्म छे के यावत्—कल्योजरूप छे ! [उ०] हे गौतम ! कदाच कृतयुग्मरूप होय—इत्यादि पूर्वोक्त पाठबंडे जेम स्थिति संवन्चे कह्युं छे तेम कहेवुं. एम लीला वगेरे पांच वर्ण, वे गंघ, पांच रस, अने आठ स्पर्श संवन्चे यावत्—रुक्ष स्पर्शपर्यवो सुची कहेवुं.

- ३९. [प्रः] सेढीको णं भंते ! वृष्ठद्वयाय कि संकेखाको, असंकेखाको, अणंताओ ! [उ०] गोयमा ! नो संकेखाको, मो असंकेखाको, अणंताओ ।
- ४०. [प्र०] पाईणपडीणायताओ णं भंते ! सेढीओ दश्चट्टयाए कि संखेखाओ० १ [उ०] एवं चेय । एवं दाहिणुत्तराय-ताओ वि, एवं उद्दमहायताओ वि ।
- ४१. [प्र॰] छोगागाससेदीयो णं मंते! दबहुयाए कि संखेजायो, असंखेजायो, अणंतायो ! [उ॰] गोयमा ! नो संखे-जायो, असंखेजायो, नो वर्णतायो ।
- ४२. [प्र०] पाईणपडीणायतामो णं मंते ! लोगागाससेढीओ द्वट्टयाप कि संबेजाओ० ? [उ०] पवं चेवः पवं दा-हिणुक्तरायपाओ वि: पवं उड्डमहायताओ वि ।
- ४३. [म०] अलोयागाससेढीओ णं भंते ! द्वहुयाए कि संखेजाओ, असंखेजाओ, अणंताओ ? [उ०] गोयमा ! नो संखेजाओ, नो असंखेजाओ, अणंताओ । एवं पाईणपडीणाययाओ वि, एवं दाहिणुसराययाओ वि, एवं उहुमहायता-ओ वि ।
- ४४. [ब॰] सेढीओ णं भंते ! पपसट्टयाप कि संखेजाओ॰ ? [७०] जहा दबदुयाप तहा पपसट्टयाप वि, जाव-उह-महाययाओ वि, सन्नाओ अणंताओ ।
- ४५. [प्र०] लोयागाससेढीओ णं मंते ! पपसट्टयाप किं संबेजाओ-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय संबेजाओ, सिय असंबेजाओ, नो अणंताओ । पवं पार्रणपडीणायताओ वि, वाहिणुत्तरायताओ वि पवं चेव, उद्वमहायताओ वि नो संबेजाओ, असंबेजाओ, नो अणंताओ ।
- ३९. [प्र०] हे भगवन् ! (आकाराप्रदेशनी ) श्रेणिओ द्रव्यरूपे शुं संख्याती छे, असंख्याती छे, के अनंत छे ! [उ०] हे गौतम ! ते संख्याती नथी, असंख्याती नथी, पण अनंत छे.

व्यक्षे भाकाश प्रदेशनी श्रेणिओनी संख्याः

- ४०. [प्र०] हे भगवन् ! पूर्व अने पश्चिम लांबी श्रेणिओ इञ्यरूपे द्युं संख्याती छे, असंख्याती छे के अनंत छे ! [उ०] पूर्वे प्रमाणे (अनंत) जाणवी. एज प्रमाणे दक्षिण अने उत्तर लांबी तथा ऊर्व्व अने अधो लांबी श्रेणिओ संबंधे पण जाणवुं.
- ४१. [प्रo] हे भगवन्! लोकाकारानी श्रेणिओ द्रन्यरूपे शुं संख्याती छे, असंख्याती के अनंत छे? [उo] हे गैातम! ते संख्याती नथी, तेम अनंत नथी, पण असंख्याती छे.

लोकाकाशनी अणिओ.

- ४२. [प्र॰] हे भगवन् ! पूर्व अने पश्चिम लांबी लोकाकाशनी श्रेणिओ द्रव्यक्त्ये शुं संख्याती छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गीनम ! पूर्व प्रमाणे (असंख्याती) जाणवी. दक्षिण अने उत्तर लांबी तथा ऊर्च अने अधी लांबी लोकाकाशनी श्रेणिओ संबंधे पण ए प्रमाणे जाणवुं.
- ४३. [प्र०] हे मगवन् ! अलोकाकाशानी श्रेणिओ द्रञ्यरूपे शुं मंख्याती छे, असंख्याती छे के अनंत छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संख्याती नथी, असंख्याती नथी, पण अनंत छे. ए प्रमाणे पूर्व अने पश्चिम लांबी, दक्षिण अने उत्तरमां लांबी तथा उंचे अने नीचे लांबी अलोकाकाशानी श्रेणिओ संबन्धे पण जाणायुं.

अलोकाकाशनी श्रणिओः

- ४४. [प्र०] हे भगवन् ! आकाशनी श्रेणिओ प्रदेशरूपे शुं संख्याती छे–इत्सादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेम द्रव्यक्षे कहीं छे तेम प्रदेशरूपे पण कहेतुं. ए प्रभाणे यावतू–ऊर्ध्व अने अधो लांबी बधी श्रेणिओ अनंत जाणवी.
- 84. [प्रo] हे भगवन् ! लोकाकाशनी श्रेणिओ प्रदेशरूपे शुं मंख्याती छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कोई \*संख्यात प्रदेशरूप छे, कोई असंख्यात प्रदेशरूप छे, पण अनंतप्रदेश रूप नथी. ए प्रमाणे पूर्व अने पश्चिम, दक्षिण अने उत्तर लांबी श्रेणिओ जाणवी. तथा ऊर्ध्व अने अधो लांबी लोकाकाशनी श्रेणिओ <sup>†</sup>संख्यात प्रदेशरूप नथी, पण असंख्यात प्रदेशरूपक छे.

आकारा श्रेणिनी प्रदेशरूपे संख्याः

४५ \* लोकाकाशनी पूर्य-पश्चिम अने उत्तर-दक्षिण श्रेणिओ संख्याता प्रदेशरूपे शी रीते होय ! आ संबन्धे टीकामां नीचे प्रमाणे चूर्णिकार अने प्राचीन टीकाकारना उन्नेखो टांकी समाधान करें छे–अहिं चूर्णिकार जणावे छे के दृत्ताकार लोकना दन्तक जे शलोकमां गयेला छे तेनी श्रेणिओ संख्यातप्रदेशात्मक अने बाकीनी श्रेणिओ असंख्यात प्रदेशात्मक होय छे. प्राचीन टीकाकार कहेछे के लोकाकाश दृत्ताकार होताथी पर्यन्तवर्गा श्रेणिओ संख्यात प्रदेशात्मक होय छे.

<sup>†</sup> लोकाकाशनी कर्ष्य लोकथी आरंभी अधोलोक पर्यन्त कर्ष्यं—अधो लांबी श्रेणि असंख्यात प्रदेशनी छे, पण संख्यात के अनन्त प्रदेशनी नथी, अधोलोकना खुणाथी के प्रदाद लोकना तीरछा प्रान्त भागथी जे श्रेणिओ नीकटे छे ते पण आ सूत्रना कथनथी सख्यात प्रदेशनी नथी होती, पण असंख्यात प्रदेशनी को छे.

- ४६. [प्र॰] अलोगागाससेढीओ णं भंते ! पपसट्टयाप-पुच्छा । [ज॰] गोयमा ! सिय संखेजाओ, सिय असंखेजा-ओ, सिय अणंताओ ।
- ४७. [র০] पार्रणपत्रीणाययाओ ण मंते ! अलोया०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो संकेखाओ, नो असंकेखाओ, अणंताओ । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि ।
  - ४८. [प्रव] उ हमहायताथी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय संखेजाओ, सिय असंखेजाओ, सिय अणंताओ ।
- ४९. [प्र०] सेढीओ णं अंते! किं सार्याओ सपज्जवसियाओ १, सार्रयाओ अपज्जवसियाओ २, अणादीयाओ सप-ज्ञवसियाओ २, अणादीयाओ अपज्जवसियाओ ४ ? [उ०] गोयमा! नो सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अप-ज्ञवसियाओ, णो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, अणादीयाओ अपज्जवसियाओ । एवं जाव-उद्दमहायताओ ।
- ५०. [प्र०] होयागाससेढीब्रो णं मंते ! किं सादीयाओं सपज्जवसियाओं—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सादीयाओं सप-ज्जवसियाओं, नो सादीयाओं अपज्जवसियाओं, नो अणादीयाओं सपज्जवसियाओं, नो अणादीयाओं अपज्जवसियाओं । पवं जाव-उद्दमहायताओं ।
- ५१. [प्र०] अलोयागाससेदीओ णं मंते ! किं सादीयाओ०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय साइयाओ सपज्जविस-याओ १, सिय साईयाओ अपज्जविसयाओ २, सिय अणादीयाओ सपज्जविसयाओ ३, सिय अणाइयाओ अपज्जविसयाओ ४। पाई णपडीण।ययाओ दाहिणुक्तरायताओ य एवं चेव । नवरं नो सादीयाओ सपज्जविसयाओ, सिय साईयाओ अपज्जव-सियाओ; सेसं तं चेव । उद्दमहायताओ जहा ओहियाओ तहेव चउभंगो ।

अक्रोकनी वेणि.

- ४६. [प्र०] हे भगवन् ! अलोकाकाशनी श्रेणिओ द्युं संख्यातप्रदेशरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! कोईक \*संख्यात प्रदेशरूप होय, कोई असंख्यात प्रदेशरूप होय अने कोई अनंतप्रदेशात्मक पण होय.
- ४७. [प्र०] हे भगवन् ! पूर्व अने पश्चिम लांबी अलोकाकाशनी श्रेणिओ द्युं संख्यात प्रदेशनी होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! संख्यात प्रदेशनी नथी, पण अनंत प्रदेशनी होय छे. ए प्रमाणे दक्षिण अने उत्तर लांबी श्रेणिओ संबंधे पण जाणवुं.
- ४८. [प्र०] हे भगवन् ! उंचे अने नीचे लांबी अलोकाकाशनी श्रेणिओ संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कदाच ते संख्यात प्रदेशनी होय, कदाच असंख्यात प्रदेशनी होय.
- ४९. [प्र०] हे भगवन् ! श्रेणिओ द्युं १ सादि—आदिवाळी अने सपर्यवसित—सान्त छे, २ सादि अने अन्तरहित छे, ३ अनादि अने सान्त छे के ४ अनादि अने अनन्त (अन्तरहित) छे! [उ०] हे गातम ! १ सादि अने सान्त नथी, २ सादि अने अनंत नथी, ३ अनादि अने सान्त नथी, पण ४ अनादि अने अनन्त छे. ए प्रमाणे यावत्—ऊर्घ्व अने अधो टांबी श्रेणिओ संबंधे समज्हुं.

होकाकाश श्रेणिओ अने सादि सप-थेवसित भंग- ५०. [प्र०] हे भगवन् ! लोकाकाशनी श्रेणिओ शुं सादि अने सान्त छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गैतिम ! ते सादि अने सान्त छे, पण सादि अने अनन्त पण नथी. ए प्रमाणे यावत्—ऊर्घ्व अने अधो लांबी श्रेणिओ संबंधे पण जाणवुं.

श्रहोकाकाशनी श्रेन णिओ संबंधे सादि स्पर्धवसिनादि भागा- ५१. [प्र०] हे भगवन्! अलोकाकाशनी श्रेणिओ शुं सादि अने सान्त छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! कोइक <sup>†</sup>सादि अने सान्त होय, कोइक सादि अने अनन्त होय. ए प्रमाणे पूर्व— पश्चिम लोबी अने दक्षिण—उत्तर लोबी श्रेणिओ संबंधे जाणबुं. परन्तु ते सादि अने सांत नथी, पण कोइक सादि अने अनन्त छे—इत्यादि बाकी बधुं पूर्वीक्त कहेतुं. तथा सामान्य श्रेणिओनी पेटे ऊर्ध्व—अधो लोबी श्रेणिओ संबंधे पण पूर्व प्रमाणे चार मांगा करवा.

४६ <sup>१</sup> अलोबाकाशनी संख्यात अने असंख्यात प्रदेशनी श्रेणिओ कही छे ते लोकमध्यनती क्षुद्धक प्रतरनी नजीकमां आवेली कर्ध्व-वाघो लांबी अघो लोकनी श्रेणिओने आश्रयी समजवुं. तेमा जे प्रारंभमा आवेली श्रेणिओ छे ते संख्यात प्रदेशनी छे, अने त्यार पछी आवेली श्रेणिओ असंख्यात प्रदेशनी छे. तिरही लांबी अलोबाकाशनी श्रेणिओ तो अवस्य अनंत प्रदेशरूप होय छे

५१ <sup>†</sup> सप्यलोकवर्ता श्रुष्ठक प्रतरनी नजीक आयेकी ऊर्ध्व अने अभ्रो लांबी श्रेणिओने आश्रयी प्रथम सादि सान्त भांगो जाणवो. लोकान्तथी आरंभी चोतरफ जती श्रेणिओने आश्रयी बीजो सादि अनन्त भंग जाणवो लोकान्तनी पासे यथी श्रेणिओनो अन्त यतो होवायी तेने आश्रयी त्रीजो अनादि सान्त भांगो जाणवो. लोकने लोबीने जे श्रेणिओ आवेली के ते आश्रयी चोथो अनादि अनन्त भांगो थाय के.

<sup>‡</sup> अलोकने विषे पूर्व-पश्चिम अने उत्तर-दक्षिण श्रेणिओनी आदि छे, पण तेनो अन्त नधी तथी प्रथम सादि सान्त भांगो घटी शकतो नधी. ते सिवायना वाकीना त्रण भांगाओ संभवे छे.

५२. [प्र०] संदीयो णं मंते ! द्वट्टयाप कि कडलुम्माओ, तेओयाओ-पुच्छा । [७०] गोयमा ! कडलुम्माओ, नो ते बोयाबो. नो दावरक्कमाबो, नो कलियोगाओ । एवं जाव-उडुमहायताओ । छोगागाससेढीओ एवं चेव । एवं बलोगागास-सेदीयो वि।

५३. [४०] सेढीओ णं भंते ! पपसदृयाप कि कडज़ुम्माओ०-पुच्छा । [४०] एवं चेव, एवं जाव-उद्दमहायताओ ।

५७. [प्र०] लोषागाससेढीओ णं भंते ! पपसद्वयाप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, सिय दावरज्ञम्माओ, नो किल्लोगाओ । एवं पाईणपडीणायताओ वि. दाहिणुत्तरायताओ वि ।

५५. [प्र०] उद्दमहाययाओ णं०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! कडजुम्मामो, नो तेओगाओ, नो दादरजुम्माओ, नौ कछियोगाओ ।

५६. [प्र०] अलोगागाससेढीओ णं भेते ! पपसद्वयाप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय कडजुम्माओ, जाव-सिय किन-बोगाओ । पर्व पाईणपडीणायताओ वि: पर्व दाहिणुत्तरायताओ वि: उद्दमहायताओ वि पर्व चेव । नवरं हो किल्योगाओ, सेसं तं चेव ।

५७. [प्र0] कित णं मंते ! सेढीओ पन्नताओ ? [उ0] गोयमा ! सत्त सेढीओ पन्नताओ, तंजहा-१ उज्जनायता, २ एगओबंका, ३ दुहओवंका, ४ एगओखहा, ५ दुहुओखहा, ६ चक्कवाला, ७ अद्भचक्कवाला ।

५२. [प्र०] हे भगवन् ! आकाशनी श्रेणिओ द्रव्यार्थपणे-द्रव्यक्षे शुं कृतयुग्म छे, त्र्योज छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कृतवुरमरूप छे. पण त्र्योज, द्वापर्युरम के कल्योजरूप नथी. ए प्रभाणे यावतू— प्रध्व अने अधी आंबी श्रेणिओ संबन्धे पण जाणतुं. तथा होकाकाशनी अने अहोकाकाशनी श्रेणिओ पण ए प्रमाणे कृतयुग्मरूप जाणवी.

भाकाशनी अणिओ इब्बरूपे कृत्युरमा-दि रूपे हे !

५३. प्रिच् हे भगवान् ! श्रेणिओ प्रदेशार्थपणे—प्रदेशरूपे द्यं कृतयुग्म छे—इस्लादि प्रश्न. [उच्चे कह्या प्रमाणे जाणवी. ए प्रमाणे यावत्-ऊर्घ्यं अने अधो लांबी श्रेणिओ जाणवी.

श्रदेशक्षे कृत्यु-रमादि हे ?

५४. [प्र०] हे भगवन् ! लोकाकाशनी श्रेणिओ प्रदेशरूपे हां कृतयुग्य ले~इलादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच कृतयुग्य छे, त्र्योज नथी, कदाच द्वापरयुग्म छे, पण कल्योजरूप नथी. ए प्रमाणे पूर्व-पश्चिम अने दक्षिण-उत्तर टांबी श्रेणिओ संबंधे जाणहुं.

लोकाकादानी श्रणिओ.

५५, [प्रo] ऊर्ध्व अने अभी लांबी लोकाकाशनी श्रेणिओ संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कृतसुरम रूप छे, पण अ्योज, द्वापरयुग्म अने कल्योजरूप नथी.

उच्चं भने अधी लांबी बेणिबी.

५६. |प्र०] हे भगवन् । अलोकाकाशर्ना श्रेणिओ प्रदेशरूपे कृतयुग्म होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कोई कृतयुग्म रूप होय. यावत-कोई कल्योज रूप पण होय. एम पूर्व अने पश्चिम लांबी तथा दक्षिण अने उत्तर लांबी श्रेणिओ संबन्धे जाणवुं, ऊर्ध्व अने अधो ढांबी श्रेणिओ संबन्धे पण एमज समजबुं, परन्तु ते कल्योजरूप नथी. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणबुं.

*भ*लोकाकाशनी श्रेणिश्रो.

५७. [प्रo] हे भगवन् ! केटली श्रेणिओ कही छे ! [उ o] हे गौतम ! सात श्रेणिओ कही छे. ते आ प्रमाणे १\*ऋज्वायत—सीघी अणिना सान प्रकार-लांबी श्रेणि, २ एकतः वक्ता-एक तरफ वांकी, ३ उभयतः वन्ना-बे तरफ वांकी, ४ एकतः खा-एक तरफ लोकनाडी सिवायना आकाश-बाळी. ५ उभयतः खा—बे तरफ लोकनाडी सिवायना आकाशवाळी. ६ चक्रवाळ—मंडलाकार गतिबाळी, तथा ७ अर्धचक्रवाल—अर्ध-मंडलकार गतिवाळी.

५७ 🔭 श्रेणि–ज्यां जीव अने पुद्रलोनी गति थाय ते आकाश प्रदेशनी पंक्ति, तेना सात प्रकार छे. १ जीव अने पुद्रलो जे श्रेणिद्वारा ऊर्ध्व लोकादिशी अभोलोकादिमां सीधा जाय छे ते ऋज्वायत श्रेणि कहेवाय छे. (२) जे श्रेणिद्वारा ऋजु–सीधा जड्ने वकगति करे अर्थात् बीजी श्रेणिमां प्रवेश करे ते एकतः वकशेणि कहेवाय छे. (३) जे शेलिद्वारा जईने वे बार वकगति करे एटले वे बार मीजी श्रेणिमां प्रवेश करे ते उभयतः वकशेलि कहेवाय छे आ श्रेणि ऊर्ष्वे टोक्सी आप्रेमी दिशाषी अधोटोकनी वायवी दिशामां जे उत्पन्न थाय तेने होय छे. प्रथम समये आप्रेमी दिशामांकी तीरछो नैर्ऋती दिशामां जाय, त्यांगी बीजा समये तीरछो वायवी दिशामां जाय, अने लाधी त्रीजा समये अधो-नीचे वायवी दिशामां जाय. आ त्रण समयनी गति त्रसनाधीमां **अथवा** तेनी बहारना भागमां थाय छे. (४) जे श्रेणिद्वारा जीव अने पुदुरु त्रसनाबीना वाम पार्श्वादि भागथी त्रसनाबीमां प्रवेश करे अने पुनः ते त्ररानाबी-हारा जईने तेना बाम पार्श्वादि भागमां उत्पन्न थाय ते एकतःसा श्रेणि कहेनाय छे, कारण के तेनी एक दिशामां स-लोकनानी सिवायनो आकाश-आवेलो छै. आ श्रेणि वे, त्रण अने चार समयनी वक्रगति सहित होवा छतां क्षेत्रनी विशेषताश्री जुदी कही छे. (५) त्रसनाद्यीनी बहार तेना वाम पार्श्वादि भागथी प्रवेश करीने ते त्रसनाबीद्वारा जहने तेना ज दक्षिण पार्थादि भागभां उत्पन्न थाय ते उभयतःखा श्रेणि कहेवाय छे. केमके तेने त्रसनाबीनी बहारना वास अने दक्षिण आकाशनी बाजुनो स्पर्श थाय छे. (६) जे श्रेणिद्वारा परमाण्वादि गोळ भगीने उत्पन्न थाय ते चकवाल. (७) अने अर्थ गोळ भमीने उत्पन्न वाय ते अर्धसक्रवाह.

५८. [ब्र॰] परमाणुपोग्गलाणं संते ! कि अणुसेढीं गती पवचति, विसेढिं गती पवचति १ [ड॰] गोयमा ! अणुसेढीं गति पवचति. नो विसेढीं गती पवचति ।

५९. [प्र॰] दुपपसियाणं मंते ! संघाणं अणुसेढीं गती पवस्ति, विसेढीं गती पवस्ति ! [उ॰] एवं चेघः एवं जाव-अणंतपपसियाणं संघाणं ।

६०. [प्र॰] नेरहयाणं अंते ! कि अणुसेढीं गती पवस्तति, विसेढीं गती पवस्तति ? [उ॰] पवं चेव, पवं जाध-वेमा-णियाणं ।

६१. [प्र॰] स्मीसे णं भंते ! रयणप्पभाष पुढवीष केवतिया निरयावाससयसहस्सा पत्रता ! [उ॰] गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पत्रताः एवं जहा पढमसते पंचमुद्देसगे जाव-'अणुत्तरविमाण' ति ।

६२. [प्र॰] कहविहे णं मंते ! गणिपिडए पश्चते ? [उ॰] गोयमा ! दुवालसंगे गणिपिडए पश्चते; तंजहा-आयारो, जाव-विद्रिवाओ ।

६३. [प्र॰] से कि तं आयारो ? [उ॰] आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार—गोयर०-एवं अंगपद्भवणा माणियश्वा जहा नंदीप, जाव-''सुत्तत्थो खलु पढमो बीओ निञ्ज्तिमीसओ भणिओ । तहओ य निरवसेसो पस विही होह अणुओगे''॥

६४. [प्र०] पपसि णं भंते ! नेरतियाणं, जाय-देवाणं, सिद्धाण य पंचगतिसमासेणं कयरे कयरे०-पुच्छा । गोयमा ! अप्पाबहुयं जहा बहुवत्तवयाप, अट्टगहसमासअप्पाबहुगं च ।

६५. [प्र॰] एएसि णं भंते ! सहंदियाणं, एगिदियाणं, जाब-अणिदियाण य कयरे कयरे॰ १ [उ॰] एयं पि जहा बहु-बत्तवयाए तहेव ओहियं एयं भाणियवं, सकाहयअप्याबहुगं तहेव ओहियं भाणियवं ।

परमाणुनी गतिः

५८. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गळनी गति \*अनुश्रेणि—आकाशप्रदेशनी श्रेणिने अनुसारे—धाय छे के विश्रेणि—श्रेणि विना गति थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! परमाणु पुद्गळनी गति अनुश्रेणि—श्रेणिने अनुसारे थाय छे, पण विश्रेणि—श्रेणि सिवाय थती नथी.

दिमदेशिक स्कन्धः

५९. [प्र०] हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कन्धनी गति श्रेणिने अनुसारे थाय छे के श्रेणि विना थाय छे है [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. एम यावत्—अनंत प्रदेशिक स्कंध संबंधे पण समजवुं.

नैरयिकोनी गतिः

६०. [प्रo] हे भगवन् ! नैरियकोनी गिति श्रेणिने अनुसारे धाय छे के श्रेणि सिवाय थाय छे ! [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. एम यावत्-वैमानिको सुधी समजवुं.

नरकावास-

६१. [प्र०] हे भगवन् ! आ रह्मप्रभा पृथिवीमां केटला लाख नरकावासी कह्या छे ? [उ०] हे गैतिम ! तेमां त्रीरा लाख नरका-वासी कह्या छे—इलादि <sup>†</sup>प्रथम रातकना पांचमां उदेशकमां कह्या प्रमाणे यावत्—अनुत्तर विमान सुधी कहेतुं.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! गणिपिटक—आगम केटला प्रकरानुं कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! बार अंगवाळुं गणिपिटक कह्युं छे. ते आ रीते—१ आचारांग यावत्—१२ दृष्टिवाद.

आचारांगादि.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! आचारांग ए शुं छे ? [उ०] हे गोतम ! आचारांगमां श्रमण निर्प्रथोनो आचार, गोचर—भिक्षाविधि— इस्पादि चारित्र धर्मनी प्ररूपणा कराय छे. ए प्रमाणे नंदीमूत्रमां कहा। प्रमाणे वध। अंगोनी प्ररूपणा करवी. यावत्—''प्रथम सूत्रार्थ-मात्र कहेवो, बीजो निर्युक्तिमिश्र अर्थ कहेवो, अने त्रीजुं सर्व अर्थनुं कथन करवुं. आ अनुयोग संबंधे विधि छे.

यांन गतिनु अस्प-बहुत्व-आठ गतिनुं भस्प-बहुत्व-

६४. [प्र०] हे भगवन् ! ए नैरियको, यावत्—देवो अने सिद्धो—ए पांच गतिना समुदायमां कया जीवो कोनाथी यावत्—विशेषाधिक होय छे ! [उ०] हे गौतम ! प्रज्ञापना स्त्रन। बहुवक्तत्र्यता पदमां कद्या प्रमाणे अल्पबहुत्व जाणदुं. तथा आठ गतिना समुदायनुं पण अल्पबहुत्व जाणदुं.

सेन्द्रियादि जीवी<u>न्</u> अस्पवतुरवः ६५. [प्र०] हे भगवन् ! सेन्द्रिय, एकेन्द्रिय यावत्—अनिन्द्रिय—इन्द्रियना उपयोग रहित जीवोमां क्या जीवो कोनाथी यावत्— विशेषाधिक छे ! [उ०] ए संबन्धे पण भैप्रज्ञापनाना बहुवक्तव्यना पदमां कहेल सामान्य पद कहेतुं. भैसकायिकोनुं पण तेज प्रमाणे सामान्य अल्पबद्धत्व कहेतुं.

५८ \* पूर्वादि दिशाना अभिमुख आक्षायाप्रदेशना थेणि ते अनुधेणि, अने विदिशाने आश्रित जे श्रेणि ते विधेणि.

६१ † भग० खं० १ सा० १ उ० ५ ए० १४१.

६३ 🕽 जुओ नंदीसूत्र प. २१२.

६४ 🎙 जुओ-प्रज्ञा० पट्ट ३ प० ११९

६५ ६ सर्वेथी थोडा पंचिन्द्रिय जीवो छे, तेथी चउरिन्द्रिय थिदोषाधिक छे, तेथी तेइन्द्रिय थिदोषाधिक छे, तेथी बेइन्द्रिय विदोषाधिक छे, तेथी अनिन्द्रिय अनन्तगुण छे, तेथी एकेन्द्रिय अनन्तगुण छे, तथी एकेन्द्रिय अनन्तगुण छे, अने तेथी सेन्द्रिय विदोषाधिक छे. जुओ प्रज्ञा० पद ३ प० १२०.

<sup>ुं</sup> अहिं सकायिक, प्रथिवीकायिकादि अने अकायिकतुं अल्पबहुत्व कहेवातुं छे. सर्व करतां योडा त्रसकायिको छे, तेथी सकायिक जीवो असंख्यात गुण छे, तेथी प्रथिवीकायिक, अपकायिक, अने वायुकायिक उत्तरोत्तर विशेषाधिक छे. तेथी अकायिक अनन्तगुण छे. तेथी वनस्पतिकायिक अनन्तगुण छे अने तेथी सकायिक विशेषाधिक छे. जुओ प्रज्ञा॰ पद ३ प॰ १३२.

६६. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं, पोग्गलाणं, जाय-सञ्चयज्ञवाण य कयरे कयरे० जाव-वर्षवचायाय ।

६७. [प्र०] एपसि णं मंते ! जीवाणं, आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अवंधगाणं-! [उ०] जहा बहुवसम्रयाप जाव-आउयस्स कम्मस्स अवंधगा विसेसाहिया । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' सि ।

### पणवीसहमे सए तईओ उद्देसी समत्तो।

६६. [प्र०] हे भगवन् । ए जीव अने पुद्गल यावत्—सर्व पर्यामोमां कया कोनायी यावत्—विशेषाधिक छे—इत्यादि—[उ०] यावत् \*बहुवक्तन्यतामां कह्या प्रमाणे अल्पबहुत्व कहेवुं.

नीव, पुद्गलोना सर्व पर्यायोजु अस्पवदुत्व.

६७. [प्र०] हे भगवन् । ए आयुष कर्मना बंधक अने अवंधक हस्यादि जीवोमां कया जीवो कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे! [उ०] <sup>†</sup>बहुवक्तन्यतामां कह्या प्रमाणे जाणतुं. यावत्—आयुष कर्मना अबंधक जीवो विशेषाधिक छे. 'हे भगवन् । ते एमज छे, हे भगवन् । ते एमज छे.'

व्यस्पवद्वस्यः मायुध्यस्योगन्थकः अवन्यकः ब्रह्मादिनुं स्रह्मपदुस्यः

### पचवीग्रमा शतकमां तृतीय उद्देशक समाप्त.

# चउत्थो उद्देसो ।

- १. [प्र0] कति णं अंते ! ज़म्मा पश्चना ! [उ०] गोयमा ! चत्तारि ज़ुम्मा पश्चना, तं जहा-कडज़ुम्मे, जाब-कलिखोगे । [प्र0] से केणट्रेणं अंते ! एवं दुच्छ-'चत्तारि ज़ुम्मा, पश्चना-कडज़ुम्मे जाव-कलियोगे' ! [उ०] एवं जहा अहारसमसते चउत्थे उद्देसए तहेव जाव-से तेणट्रेणं गोयमा ! एवं दुच्छ ।
- २. [प्र॰] नेरहयाणं अंते ! कित जुम्मा पश्चता ! [उ॰] गोयमा ! खत्तारि जुम्मा पश्चता, तं जहा-कडजुम्मे, जाव-किलेमोप । [प्र॰] से केण्ट्रेणं अंते ! एवं बुखइ-'नेरहयाणं खत्तारि जुम्मा पश्चता, तं जहा-कडजुम्मे' ! [उ॰] सट्टो तहेव । एवं जाव-वाउकाहयाणं ।
  - ३. [प्र०] वणस्सद्काद्याणं भंते !-पुच्छा । [४०] गोयमा ! वणस्सद्काद्या सिय कडज्रुम्मा, सिय तेयोया, सिय

# चतुर्थ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटलां युग्मो—राशिओं कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! चार युग्मों कह्यां छे, ते आ प्रमाणे—कृतयुग्म अने यावत्—कल्योज. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुयी कहो छे के 'चार युग्मों कह्यां छे—कृतयुग्म, यावत्—कल्योज' ! [उ०] !अटारमा शतकना चोथा उदेशकमां कह्या प्रमाणे अहिं जाणतुं, यावत्—'ते कारणथी हे गौतम ! ए प्रमाणे कह्युं छे.'

शुगाना प्रकार-

२. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियकोने विषे केटलां युग्मो कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओने विषे चार युग्मो कह्यां छे, ते आ रीते— कृतयुग्म, अने यावत्—कल्योज. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के 'नैरियकोने विषे चार युग्मो छे, ते आ प्रमाणे—कृत-युग्म'—इत्यादि पूर्वोक्त अर्थ कहेवो, ए प्रमाणे यावत्—वायुकायिक सुधी जाणवुं.

नैरविकोमां केटला युग्मो होयाँ

३. [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिकोमां केटलां युग्मो कहाां छे ! [उ०] हे गातम ! वनस्पतिकायिको कदाचित् कृतयुग्म होय, कदाचित् त्र्योज होय, कदाचित् द्वापरयुग्म होय, अने कदाचित् कल्योज होय. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुयी कहो छो के 'वनस्प-ितकायिको यावत्-कल्योजरूप होय' ! [उ०] हे गातम ! इउपपातनी अपेक्षाए ए प्रमाणे कहां छे, ते हेतुथी यावत्-पूर्वोक्त रूपे बनस्पति

वनरपतिकायिकमां कृतयुग्मादिनुं अवनरण-

६६ \* जीव, पुद्रल, अद्वासमय, सर्व द्रव्य, सर्व प्रदेशो अने सर्व पर्यायोना अल्पबहुत्व संबन्धे प्रश्न छे. तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे—सर्व करता योजा जीवो छे, तेथी पुद्रल अनन्तगुण छे, तेथी अवन्तगुण छे, तेथी सर्व पर्यायो अनन्त गुण छे. जुओ प्रज्ञा॰ पद ३ प॰ १४३–२.

६७ ी अहिं आयुष कर्मना बन्धक, अबन्धक, पर्याप्त, अपर्याप्त, स्रोतेला, जागृत, समुद्धातने पाप्त ययेला, समुद्धातने नहि पामेला, साता वेदक, असाता-वेदक, इन्द्रियना उपयोगवाळा, नोइन्द्रियना उपयोगवाळा, साकार उपयोगवाळा अने अनाकार उपयोगवाळाओचुं अन्यबहुत्व कहेळुं छे. जुओ प्रज्ञा० पद ३ प० १५२.

१ रें जे राधिमांथी चार चार नो अपहार करतां छेवटे चार बाकी रहे ते राधिने फ़तयुग्म कहे छे, त्रण बाकी रहे तेने त्र्योज कहे छे, वे बाकी रहे तेने क्रांज कहे छे, वे बाकी रहे तेने क्रांज कहे छे, जे बाकी रहे तेने क्रांज कहे छे. जुओ—भग० खं० ३ ६० १८ उ० ४ ए० ५९.

३ \$ यद्यपि वनस्पतिकायिको अनन्त होवाबी स्वाभाविक रीते कृतसुरम रूप ज होय छे, तो पण तेमां बीजी गतिथी आवीने एक वे इत्यादि जीनोनो उपपात थतो होवाबी ते जीनो चारै राविरूप होय छे. जेम उपपातने आश्रयी कर्षुं तेम उद्दर्तना—मरणने आश्रयीने पण वनस्पतिकायिको चारै राविरूप होई शके, परन्तु बाहि तेनी विवक्षा नवी.—टीका.

दाबरजुम्मा, सिय कल्लियोगा । [म०] से केणट्टेणं अंते ! एवं बुखर-'वणस्सरकारया जाव-कलियोगा' ! [७०] गोयमा ! उचवायं पहुच, से तेणट्टेणं तं चेव । बेंदियाणं जहा नेरहयाणं । एवं जाव-वेमाणियाणं, सिद्धाणं जहा वणस्सरकारयाणं ।

- ४. [प्र॰] कतिविद्या णं भंते ! सञ्चद्या पञ्चला ? [उ॰] गोयमा ! छित्रहा सञ्चद्या पञ्चला, तंजहा-धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, जाव-अद्धासमए ।
- ५. [प्र॰] धम्मत्थिकाए णं मंते ! दबट्टयाए किं कडज़ुम्मे, जाव-किओगे ? [उ॰] गोयमा ! नो कडज़ुम्मे, नो सेयोए, नो दाबरज़ुम्मे, कलिओए । एवं अहम्मित्थकाए वि, एवं आगासत्थिकाए वि ।
  - ६. [प्र०] जीवत्थिकाप णं भंते !-पुच्छा [उ०] गोयमा ! कडज्रुम्मे, नो तेयोये, नो दावरज्ञुम्मे, नो किलयोये ।
- ७. [प्र॰] पोग्गङस्थिकाए णं मंते !–पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय कडज्ञुम्मे, जाव–सिय कलियोगे । अद्धासमये जहा जीवस्थिकाए ।
- ८. [प्र०] धम्मत्थिकाए णं संते ! पएसट्टयाए कि कडज़ुम्मे-पुच्छा । गोयमा ! कडज़ुम्मे, नो तेयोए, नो दावरज़ुम्मे, नो किळियोगे । एवं जाव-अज्ञासमए ।
- ९. [प्र॰] पपसि णं मंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय॰ जाव-अद्यासमयाणं दश्चट्टयाप॰ ? [उ॰] पपसि णं अप्पा-बहुगं जहा बहुवस्तवयाप तहेव निरवसेसं ।
  - १०. [प्र०] धम्मत्थिकाप णं भंते ! किं ओगाढे, अणोगाढे ? [उ०] गोयमा ! ओगाढे, नो अणोगाढे ।
- ११. [प्र॰] जह ओगाढे कि संखेज्जपण्सोगाढे, असंखेज्जपण्सोगाढे, अणंतपण्सोगाढे ? [उ॰] गोयमा ! नो संखेज, पण्सोगाढे, असंखेजपण्सोगाढे, नो अणंतपण्सोगाढे ।

कायिको कह्या छे. नैरियकोनी पेठे बेइंद्रियो विषे समजवुं. तथा ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. सिद्धो वनस्पतिकायिकोनी पेठे जाणवा.

द्रव्यना प्रकारः

8. [प्र०] हे भगवन् ! सर्व द्रव्यो केटलां प्रकारनां कह्यां छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्व द्रव्यो छ प्रकारनां कह्यां छे, ते आ प्रमाणे— १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, भने यावत्—६ अद्धा समय (काल).

धर्मास्तिकायादि द्र-व्यमां कृतसुरमादिनु अवनरण.

५. [प्र॰] हे भगवन् ! धर्मास्तिकाय द्रव्यार्थरूपे कृतयुग्म छे के यावत्—कल्योज छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते कृतयुग्म नथी-त्र्योज नयी, द्वापरयुग्म नथी, पण <sup>\*</sup>कल्योज छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय संबंधे पण जाणवुं.

जीवास्तिकाय द्रष्य-रूपे शुं होय ! ६. [प्र०] हे भगवन् ! जीवास्तिकाय दव्यार्थरूपे छुं कृतयुग्म छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! <sup>†</sup>जीवास्तिकाय दव्यक्ष्पे कृतयुग्मरूप छे, पण त्र्योज, द्वापर के कल्योजरूप नधी.

पुद्गलास्तिकायमां कृतयुग्मादिनुं ७. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलस्तिकाय संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच ‡कृतयुग्म होय अने यावत्—कदाच कल्योज, रूप पण होय. जीवास्तिकायनी पेठे अद्धासमय पण [ कृतयुग्मरूप ] जाणवो.

भवतरणः धर्मास्तिकायनाः प्रदेशोः

८. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मास्तिकाय प्रदेशार्थक्ष्ये हुं कृतयुग्म छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! [तेना अवस्थित अनन्त प्रदेशो होवाथी ] ते कृतयुग्म छे, पण त्र्योज, हापरयुग्म के कल्योज नथी. ए प्रमाण यावत्—अद्धा समय सुधी जाणवुं.

धर्मास्तिकागादिनं अल्पबद्वत्व.

९. [प्रo] है भगवन् ! ए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, यावत्—अद्धासमयोनुं द्रव्यार्थरूपे अल्पबहुत्व केवी रीते छे ! [उ०] अबहुवक्तव्यतामां कह्या प्रमाणे एओनुं बधुं अल्पबहुत्व कहेतुं.

धर्मास्तिकाय अव-गाड छे के भनः वगाट रि १०. [प्र॰] हे भगवन् ! धर्मास्तिकाय शुं अवगाद-आश्रित छे के अनवगाद-अनाश्रित छे ? [उ॰] हे गाँतम ! ते अवगाद छे,

लोकाकाशमां अव-गाडनाः ११. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते अवगाढ छे तो शुं संख्यात प्रदेशमां अवगाढ—आश्रित छे, असंख्यात प्रदेशमां आश्रित छे के अनंत प्रदेशमां आश्रित छे ! [उ०] हे गौतम ! ते लोकाकाशना संख्यात प्रदेशमां अर्थत प्रदेशमां आश्रित छे ! [उ०] हे गौतम ! ते लोकाकाशना संख्यात प्रदेशमां आश्रित छे.

५ \* धर्मास्तिकाय एक द्रव्यरूप होताथी तेनो चारणी अपहार करतां एक ज बाकी रहे छे तेथी ते कल्योज क्ष्प छे.

६ 🕇 जीवास्तिकाय अनन्त होयाथी ते कृतयुगम हुप ज छे.

<sup>🗸 🕽</sup> पुद्रलास्तिकाय अनन्त छे तो पण तेना संघात अने मेदथी तेनुं अनन्तपणुं अनवस्थित होवाशी ते चारे राशिक्ष्प होय छे.

९ के धर्मास्तिकायादि त्रणे एक एक द्रव्यरूप होवाधी द्रव्यरूपे तुल्य छे अने बीजा द्रव्य करतां थोडा छे, तेबी जीवास्तिकाय अनन्तगुण छे, तेबी पुद्रलास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायना असंख्यात प्रदेश होवाधी प्रस्पर तुल्य छे अने बीजा बधा द्रव्यथी थोडा छे, तेबी जीव, पुद्रल, सद्धासमय अने आकाशास्तिकाय उत्तरोत्तर अनन्तगुण छे. जुओ प्रज्ञा० पद ३ प० १४०-१.

- १२. [प्रव] जर असंखेळपण्यसोगाढे कि कडजुम्मपण्यसोगाढे-पुष्का। [उठ] गोयमा। कडजुम्मपण्यसोगाढे, नो ते स्रोगठ, नो दावरजुम्मव, नो किल्योगपण्यसोगाढे। एवं अधम्मस्थिकाये वि, एवं आगासस्थिकाये वि, जीवस्थिकाये, पुग्गल-स्थिकाये, अञ्चासमण् एवं चेष।
- १३. [ब॰] इसा णं भंते ! रयणप्पमा पुढवी किं ओगाढा, अणोगाढा ? [ब॰] जहेव धम्मत्थिकाए, एवं जाव-सहे-सत्तमा, सोहम्मे एवं चेव, एवं जाव-ईसिपब्मारा पुढवी ।
- १४. [प्र०] जीवे णं मंते ! वृष्ठद्वयाप कि कडजुम्मे-युच्छा । [७०] गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावर-जुम्मे, कलिओप । एवं नेरइप वि: एवं जाव-सिज्ञे ।
- १५. [प्रव] जीवा णं संते ! दश्चद्वयाप किं कडज़ुम्मा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओघावेसेणं कडज़ुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरज़ुम्मा, नो कलिओगा । विद्वाणादेसेणं नो कडज़ुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरज़ुम्मा, कलियोगा ।
- १६. [प्र०] नेरहया णं भंते ! दबदुयाप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडन्रमा, जाव-सिय किल-योगा । विद्वाणादेसेणं णो कडन्रमा, णो तेयोगा, णो दावरन्तमा, कलिओगा । एवं जाव-सिद्धा ।
- १७. [प्र॰] जीवे णं मंते ! पपसट्टयाप कि कडजुम्मे-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! जीवपपसे पहुच कडजुम्मे, नो तैयोगे, नो वायरजुम्मे, नो किल्योगे । सरीरपण्से पहुच शिय कडजुम्मे, जाव-सिय कल्लियोगे । एवं जाव-वेमाणिए ।
- १८. [प्र०] सिद्धे णं भंते ! पपसट्टयाप किं कडजुम्मे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावर-जुम्मे, नो कलिओप ।
- १२. [प्र०] हे भगवन्! जो ते असंख्याता आकाशप्रदेशमां आश्रित छे नो शुं कृतयुग्म राशिवाळा प्रदेशोमां आश्रित छे—इत्सादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! ते कृतयुग्म राशिवाळा प्रदेशमां आश्रित छे, पण ज्योज, द्वापर के कल्योज राशिवाळा प्रदेशमां आश्रित नथी. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्रलास्तिकाय अने अद्वारामय संबंधे पण जाणवुं.

असंख्यानप्रदेशमा अस्गादनाः

१३. [प्र०] हे भगवन् ! आ रतप्रमा पृथिवी कोइने आश्रित छे के अनाश्रित छे ? [उ०] गीतम ! धर्मास्तिकायनी पेठे जाणदुं. ए प्रमाणे यावत्—अधःसप्तम पृथिवी सुधी जाणदुं. तथा सौधर्म अने यावत्—ईपत्प्राग्मारा पृथिवी संबंधे पण एमज समजदुं.

रत्नप्रभानी अव-गावताः

१४. [प्रo] हे भगवन् ! जीव द्रव्यार्थरूपं द्यं कृतयुग्म छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कृतयुग्म, व्योज के द्वापरयुग्म रूप नथी, पण \*कल्योज रूप छे. ए प्रमाणे नैरियक यावत्—सिद्ध सुधी जाणदुं.

जीवद्रव्यमां कृत यु-रमाविनी सहस्पान

१५. [प्र०] हे भगवन् ! जीबो द्रव्यार्थपणे शुं कृतयुग्म छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जीवो सामान्यतः—बधा मळीने कृतयुग्म छे, पण त्र्योज, द्वापर के कल्योज रूप नथी. अने विशेष—एक एकनी अपेक्षाए कृतयुग्म, त्र्योज के द्वापरयुग्म नथी, पण कल्योजरूप छे.

जीवोमां कृतयुग्मादि राशिओनुं अवतरणः

१६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको संबन्धे द्रव्यार्थरूपे प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! नैरियको सामान्यतः कदाच कृतयुग्ग अने पावत्— कदाच कल्योज पण होय, अने विशेष—व्यक्तिनी अपेक्षाए कृतयुग्म, त्र्योज के द्वापरयुग्म नथी, पण कल्योज रूप छे. ए प्रमाणे यावत्— सिद्धो सुधी जाणवुं.

नैरियकोमां कृतयु-ग्मादि राज्ञिओनु अवतरणः

१७. [प्र०] हे भगवन् ! जीव प्रदेशार्थरूपे छुं कृतसुग्म छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! <sup>†</sup>जीवप्रदेशनी अपेक्षाए जीव कृतसुग्म छे, पण त्र्योज, द्वापर के कल्योज नथी, अने शरीरप्रदेशनी अपेक्षाए कदाच कृतसुग्म होय अने यावत्—कदाच कल्योज पण होय. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी जाणहुं.

जीवभदेशीमां क्रव सुरमादि राशिओः

१८. [प्र०] हे भगवन् ! सिद्ध प्रदेशार्थपणे शुं कृतयुग्म छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कृतयुग्म छे, पण ज्योज, द्वापरयुग्म के कत्योजरूप नथी.

सिद्धोर्भा कृतयुग्मादि भी समयतारः

१४ \* जीव इध्यरूपे एक ज व्यक्ति होवाथी मात्र कल्योज रूप छे, धने जीवो प्रव्यरूपे अनन्ता अवस्थित होवाथी सामान्यरूपे तेओ कृतयुग्य रूपज होय छे.

९७ ं जीवप्रदेशनी अपेक्षाए समस्त जीवोना प्रदेशो अवस्थित अनन्तरूपे होवाधी अने एक एक जीवना प्रदेशो अवस्थित असंख्याता होवाधी नार चारनो अपहार करतां छेवटे चार बाकी रहे छे, माटे कृतयुग्म रूपज होय छे. शरीरप्रदेशनी अपेक्षाए सामान्यरूपे सर्व जीवना शरीरप्रदेशो संघात अने मेदधी अनवस्थित अनन्त रूपे होवाधी भिन्न भिन्न समये तेमां चतुर्विध राशिनो समवतार धई शके छे. विशेषरूपे एक एक जीवशरीरना प्रदेशोमां एक समये पण चतुर्विध राशिनो समवतार थाय छे. कारण के कोइक जीवशरीरना प्रदेशो कृतयुग्म रूप होय छे, तो अन्य जीवशरीरना प्रदेशो बीजी राशिक्ष होय छे.

- १९. [प्र०] जीवा णं भंते ! पएसट्टयाप किं कडजुम्मा० पुच्छा। [उ०] गोयमा ! जीवपपसे पडुच बोघादेसेण वि विद्वाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो किल्बोगा। सरीरपपसे पडुच ओघादेसेणं सिव कड-जुम्मा, जाव-सिय किल्योगा; विद्वाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव-किल्योगा वि। पवं नेरहया वि; पवं जाव-वेमाणिया। [प्र०] सिद्धा णं भंते !-पुच्छा। [उ०] गोयमा ! ओघादेसेण वि विद्वाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलिओगा।
- २०. [प्र०] जीवे णं भंते ! किं कडजुम्मपप्सोगाढे—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय कडजुम्मपप्सोगाढे, जाव–सिय कठिओगपप्सोगाढे । एवं जाव–सिब्हे ।
- २१ [प्र०] जीवा णं भंते ! किं कडज्रम्मपपसोगाढा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओघादेसेणं कडज्रुम्मपपसोगाढा, नो तेयोग०, नो दावर०, नो कलियोग० । विद्वाणादेसेणं कडज्रुम्मपपसोगाढा वि, जाव-कलियोगपपसोगाढा वि ।
- २२. [प्र॰] नेरहयाणं-पुच्छा [उ०] गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मपपसोगाढा, जाय-सिय किटयोगपपसो-गाढा । विहाणादेसेणं कडजुम्मपपसोगाढा वि, जाय-किटयोगपपसोगाढा वि । एवं एगिदिय-सिद्धवज्ञा सब्ने वि; सिद्धा एगिदिया य जहा जीवा ।
- २३. [प्र०] जीवे णं भंते ! किं कडज़म्मसमयद्वितीष-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! कडज़म्मसमयद्वितीष, नो तेयोग०, नो दावर०, नो कळियोगसमयद्वितीष ।
- २४.  $[g_0]$  नेररप **णं** मंते !-पुच्छा ।  $[g_0]$  गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयद्वितीप, जाव-सिय किल्योगसमयद्वि-तीप । एवं जाव-वेमाणिप; सिद्धे जहा जीवे ।
- २५. [प्र०] जीवा णं मंते !-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओघावेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मसमयद्वितीया, नो तेओग०, नो दावर०, नो कलिओग०।

जीनोमां प्रदेशापेक्षा बी कृतसुरमादिः सिद्धोमां ध्रदेशनी अपेक्षाए कृतः युग्मादिः १९. [प्र०] हे भगवन्! जीवो प्रदेशार्थरूपे द्युं कृतयुग्म छे—इत्यादि प्रश्ना. [उ०] हे गौतम! जीवप्रदेशोनी अपेक्षाए जीवो सामान्य अने विशेषरूपे कृतयुग्म छे, पण त्र्योज, द्वापरयुग्म के कल्योज नथी. अने शरीरप्रदेशोनी अपेक्षाए सामान्यतः कदाच कृत-युग्म होय अने यावत्—कल्योज पण होय. ए प्रमाणे नैर-यिकोथी आरंभी यावत्—वैमानिको सुची जाणवुं. [प्र०] हे भगवन्! सिद्धो (जीवप्रदेशनी अपेक्षाए) द्युं कृतयुग्म छे—इत्यादि प्रश्ना. [उ०] हे गौतम! सामान्य अने विशेषने आप्रयी सिद्धो कृतयुग्म छे, पण त्र्योज, द्वापर के कल्योज रूप नथी.

ण्कजीवाश्रित आ-सादाप्रदेशमां कृत-युग्मादि राशिओः अनेक जीवो संबन्धे प्रश्नः

- २०. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं जीव आकाशना कृतयुग्म संग्र्यात्राळा प्रदेशोने आश्रयी रहेलो छे--इलादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कदाच कृतयुग्म प्रदेशोने आश्रयी रहेलोहोय अने यावत्—कदाच कल्योज प्रदेशोने आश्रयी रहेलो होय छे. ए प्रमाणे यावत्—सिद्ध सुपी जाणवुं.
- २१. [प्र०] हे भगवन् ! क्युं जीत्रो आकाशना कृतयुग्म प्रदेशोने आश्रयी रहेला छे—इत्सादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सामान्य रूपे कृतयुग्म प्रदेशोने आश्रयी रहेला नथी. अने विशेषरूपे कृतयुग्म प्रदेशोने आश्रयी रहेला छे, यावत्—कल्योज प्रदेशोने आश्रयी रहेला छे, यावत्—कल्योज प्रदेशोने आश्रयी रहेला छे.

नेरविकादि दंडको अने सिद्धोः

२२. [प्र०] हे भगवन् ! ह्यं नैरियको कृतयुग्म संख्यावाट्य आकाश प्रदेशोने आश्रयी रहेला छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सामान्य रूपे कदाच कृतयुग्म प्रदेशोने आश्रयी रहेला होय अने यावत्-कदाच कल्योज प्रदेशोने आश्रयी रहेला होय. विशेषरूपे कृत-युग्म प्रदेशावगाढ पण होय यावत्-कत्योज प्रदेशावगाढ पण होय. एकेन्द्रिय अने सिद्ध सिवाय बाकीना बधा जीवो माटे एज प्रमाणे जाणवुं. सिद्धो अने एकेन्द्रियो सामान्य जीवोनी पेठे जाणवा.

जीवना स्थितिकाळ ना समयोगा कृत-युग्मादि राशिओः नैरयिकादिः २२. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं जीव कृतयुग्म समयनी स्थितिचाळो छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! \*कृतयुग्म समयनी स्थिति-वाळो छे, पण "योज, द्वापर के कल्योज समयनी स्थितिचाळो नधी.

२४. [प्र॰] हे मगवन् ! जुं नैरियक कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळो छे-इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! कदाच कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळो होय अने कदाच कल्योज समयनी स्थितिवाळो होय. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिक सुधी जाणवुं. सिद्धने जीवनी पेठे जाणवुं.

जीवोनी स्थितिकाळ ना भमयोमां कृत-सुरमादि राशिओ

- २५. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं जीनो कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळा होय छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! तेओ †सामान्यादेश अने विशेषादेशनी अपेक्षाए कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळा होय छे, पण त्र्योज, द्वापर के कल्योज समयनी स्थितिवाळा होता नधी.
- २३ \* सामान्य जीवनी स्थिति सर्व काळमां शास्त्रत होवाथी अने सर्वकाळ नियत अनन्त समयात्मक होवाथी जीव कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळो कहेवाय छे. अने नारकादिनी भिन्न स्थिति होवाथी कोईवार ते कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळो होय छे, तो कोई वार यावत्—कृत्योज समयनी स्थितिवाळो होय छे.
  - २५ ा सामान्य।देश अने विशेषादेशयी जीवोनी स्थिति अनायनन्त काळनी होवाथी तेओ कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळा छे.

- २६. प्रिव] नेररयाणं-पुरुष्ठा । [उव] गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयद्वितीया, जाव-सिय कलियोगस-मयद्भितीया वि । विद्याणादेसेणं कडज्रम्मसमयद्वितीया वि, जाब-कलियोगसमयद्वितीया वि । एवं जाब-वेमाणियाः सिद्धा जहा जीवा।
- २७. [प्र॰] जीवे णं मंते ! कालवन्नपज्जवेहि किं कडजुम्मे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जीवपपसे पहच णो कडजस्मे. जाब-जो किलयोगे। सरीरपपसे पहुच सिय कडजुम्मे, जाव-सिय किलयोगे। एवं जाव-वेमाणिए। सिद्धो ज चेव पुच्छिजति ।
- २८. [प्र०] जीवा ण भंते ! कालवन्नपञ्जवेहिं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जीवप्रक्ते पुजुष भोघावेसेण वि विहाणा-वेसेण वि णो कडजुम्मा, जाव-णो कळिओगा। सरीरपपसे पद्धव ओघादेसेणं सिय कडज्रम्मा, जाव-सिय कळियोगाः विद्याणादेसेणं कडज्रम्मा वि, जाव-कलिओगा वि। एवं जाव-वेमाणिया। एवं नीलवन्नपञ्जवेद्धं दंडओ भाणियद्वो। पगत्तपुरुतेणं; पवं जाव-छुक्खफासपञ्जवेदि ।
- २९. [प्र0] जीवे णं भंते! आमिणिबोहियणाणपज्जवेहि कि कड हुम्मे-पुच्छा। [उ०] गोयमा! सिय कड हुम्मे, जाब-सिय कलियोगे । पर्व पर्गिदिययज्ञं जाब-वेमाणिए ।
- ३०. [प्रज] जीवा णं भंते ! आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं-पुरुछा । [उज्ज] गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, जाब-सिय किंग्योगा । विद्याणादेसेणं कडजुम्मा वि, जाव-किंग्योगा वि । एवं एगिदियवज्ञं जाव-वेमाणिया । एवं
- **२६. प्र**ा हे भगवन् ! द्युं नैरयिको कृतयुग्मसमयनी स्थितिबाळा छे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ सामान्यादेशनी *नैरविकादि इंडक*ो. अपेक्षाए कदाच \*कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळा होय, यायत् कदाच कल्योज समयनी स्थितिवाळा एण होय. तथा विशेपादेशनी अपे• क्षाए कृतयुग्म समयनी अने यावत्-काल्योज समयनी स्थितियाळा पण होय. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुची जाणवुं. सामान्य जीवोनी पेटे सिद्धोने पण समजबं.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! छुं जीवना †काळावर्णना पर्यायो कृतयुग्म गशिरूप छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! जीवप्रदेशोनी भपेक्षाए ते कृतयुग्म, त्र्योज, द्वापर के कल्योज रूप नथी; पण शरीर प्रदेशोनी अपेक्षाए ते कदाच कृतयुग्म रूप होय. यावत—कल्योज रूप पण होय. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिक सुची जाणयुं तथा सिद्ध संबन्धे आ विषय बाबत कांह न पूछतुं.

जीवना काळावणीना पर्यावो.

- २८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवोना काळा वर्णपर्यायो कृतयुगमराशिरूप छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! जीव प्रदेशोने आश्रयी सामान्यादेशयी अने विशेषादेशयी कृतयुग्ध रूप नथी, अने यावत्—कल्योज रूप पण नथी, शरीरप्रदेशोनी अपेक्षाए सामान्या-देशथी कदाच कृतयुग्म अने यावत्—कदाच कल्योज रूप पण होय, विशेषादेशथी कृतयुग्म, यावत्—कल्योजराशिरूप पण होय. ए प्रमाणे यावत्–वैमानिको सुधी जाणबुं. तथा ए प्रमाणे एक बचन अने बहुबचनवडे लीला वर्णना पर्यायोनो पण दंडक कहेवो. एम यावत्-रुक्ष स्पर्श पर्यायो सुधी जाणहुं.
- २९. [प्र०] हे भगवन् शुं जीवना आभिनिबोधिकज्ञानपर्यायो कृतयुग्म राशिरूप छे–इसादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कदाच 1कृतयुग्म रूप होय अने यावत्—कदाच कल्योज रूप पण होय. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवायना जीवोने यावत्—वैमानिक सुधी जाणवा.

जीवना आभिनि-बोधिक पर्यायोः

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ञुं जीवो आभिनिवोधिक ज्ञान पर्यायो वडे कृतसुरम छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते ीसामान्या-देशयी कदाच कृतयुग्म अने कदाच कल्योज रूप पण होय, तथा विशेषादेशथी कृतयुग्म, यावत्-कल्योज रूप पण होय. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवायना जीवोने यावत्-त्रैमानिको सुभी जाणवुं. श्रुतज्ञानना पर्यायो अने अवधिज्ञानना पर्यायो संबन्धे एमज समजवुं. पण

जीवोना आमिनि नेधिकादि शानना पर्वायोः

३६ \* बधा नारकादिनी स्थितिना समयो मेळवतां अने चारथी अपहार करता बधा नैरियको सामान्यादेशथी कृतपुरम समयनी स्थितियाळा, यायत्-कल्योज समयनी स्थितिषाळा होय छे. अने विशेषादेशायी एक समये चारे प्रकारना होय छे.--टीका.

२७ † अहिं जीवप्रदेशी अमूर्त होवाथी तेने आध्रयी काळादिवर्णना पर्यायो होता नशी, पण वारीरविशिष्ट जीवनुं प्रहण होवाथी शरीरना वर्णनी अपेक्षाए कमदाः चारे राज्ञिनो व्यवहार थइ शके छे.

२९ | शाबरणना क्षयोपशमनी विचित्रताथी आभिनिबोधिक ज्ञाननी विशेषताओ अने तेना सूक्ष्म अविभाज्य अंशोने आभिनिबोधिक ज्ञानना पर्यायो कहे छे. ते अनन्त छे, पण क्षयोपशमनी विचित्रताथी तेनुं अनन्तपणुं चोकस नथी, तेथी ते भिन्न भिन्न समयने आश्रयी चारे राशिरूप होय छे. पकेन्द्रिय जीवने सम्यक्त्व नाहे होवाथी आभिनिनोधिक होतुं नथी, माटे एकेन्द्रिय सिवायना जीवोने कह्युं छे.

३० ¶ बधा जीवोने आश्रयी सर्व आभिनिबोधिकज्ञानना पर्यायो एकठा करीए तो सामान्यादेशथी भिन्न भिन्न काठनी अपेकाए चारे राजिहर थाय, कारण के क्षयोपशमनी विचित्रताथी तेना पर्यायो अनवस्थितपणे अनन्ता होय छे. विशेषादेशथी एक काळे पण चारे राशिरूप थाय. केवल ज्ञानना पर्यायोतुं अनन्तपणुं अवस्थित होवाबी ते इत्युग्मराधिरूपज होय छे-टीका.

सुयणाणपञ्जवेहि वि । ओहिणाणपञ्जवेहि वि एवं चेव । नवरं विकिंतिदयाणं नित्य ओहिनाणं । मणपञ्जवनाणं पि एवं चेव: नवरं जीवाणं मणुस्साण य, सेसाणं नित्य ।

- ३१. [प्र॰] जीये णं मंते ! केवलनाणपञ्जवेहिं किं कडज़ुम्मे-पुच्छा । [ज॰] गोयमा ! कडज़ुम्मे, णो तेयोगे, णो वावरज़ुम्मे, णो कलियोगे । एवं मणुस्से विः, एवं सिखे वि ।
- ३२. जीवा णं भंते ! केवलनाण-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओघावेसेण वि विद्याणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेस्रोग्म, नो दावरज्जम्मा, णो कलियोगा । एवं मणुस्सा वि; एवं सिद्धा वि ।
- ३३. [प्र॰] जीवे णं मंते ! महअन्नाणपज्जवेहि किं कडजुम्मे॰ ? [ड॰] जहा आभिणिबोहियणाणपज्जवेहि तहेव दो दंडगा । एवं सुयन्नाणपज्जवेहि वि, एवं विभंगनाणपज्जवेहि वि। चक्कुद्ंसण-अचक्कुद्ंसण-ओहिद्ंसणपज्जवेहि वि एवं चेयः, नवरं जस्स जं अस्थि तं भाणियवं । केवलदंसणपज्जवेहि जहा केवलनाणपज्जवेहि ।
- ३४. [प्र०] कति ण मंते ! सरीरगा पन्नता ! [उ०] गोयमा ! पंच सरीरगा पन्नता, तंजहा–श्रोरालिप, जाव-कम्मए । एत्थ सरीरगपर्व निरवसेसं भाणियन्नं जहा पन्नवणाए ।
- ३५. [प्र०] जीवा णं मंते ! किं सेया णिरेया ! [उ०] गोयमा ! जीवा सेया वि, निरेया वि । [प्र०] से केण्हेणं मंते ! एवं वुषाति—'जीवा सेया वि निरेया वि' ! [उ०] गोयमा ! जीवा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—संसारसमावन्नगा य ससंसारसमावन्नगा य, तत्थ णं जे ते असंसारसमावन्नगा ते णं सिद्धा । सिद्धा णं दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—अणंतरसिद्धा य परंपरसिद्धा य । तत्थ णं जे ते परंपरसिद्धा ते णं निरेया; तत्थ णं जे ते अणंतरसिद्धा ते णं सेया ।
- ३६. [प्र॰] ते णं मंते ! कि देसेया सब्वेया ? [ज॰] गोयमा ! णो देसेया, सब्वेया । तत्थ णं जे ते संसारसमावज्ञगा ते दुविहा पन्नता, तंजहा-सेलेसिपडिवन्नगा य असेलेसिपडिवन्नगा य । तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवन्नगा ते णं निरेया।

विशेष ए के, विकलेंद्रिय जीवोने अवधिज्ञान होतुं नथी. एम मनःपर्यवज्ञानना पर्यायो संबन्धे पण जाणबुं, पण विशेष ए के, ते सामान्य जीवो अने मनुष्योने होय छे, पण बाकीना दंडकोमां होतुं नथी.

जीवना केवलज्ञानः ना पर्यायोः ३१. [प्र०] हे भगवन् ! जीवना केवल्ज्ञानना पर्यायो शुं कृतयुग्म राशिरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कृतयुग्मरूप छे, पण त्र्योज, द्वापर के कल्योज रूप नथी. ए प्रमाणे मनुष्य तथा सिद्ध संबंधे पण समजवुं.

जीवीना केवलः ग्रानना पर्यायोः ३२. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोना केवल्ज्ञानना पर्यायो चुं कृतयुग्म रूप छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते सामान्य अने विशेषादेशवडे कृतयुग्म रूप छे, परंतु त्र्योज, द्वापर के कल्योजरूप नथी. ए प्रमाणे मनुष्यो अने सिद्धो संबंधे पण जाणहुं.

जीवना मतिअज्ञा नना पर्यायोः ३३. [प्र०] हे भगवन् ! जीव मतिअज्ञानना पर्यायोवडे शुं कृतयुग्म रूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेम आभिनिबोधिक ज्ञानना पर्यायो संबन्धे वे दंडको कहाा छे तेमज अहिं पण वे दंडको कहेवा. श्रुत अज्ञान, विभंगज्ञान, चक्षुर्दर्शन अचक्षुर्दर्शन अने अवधिदर्शनना पर्यायो संबन्धे पण ए ज प्रमाणे कहेवुं. विशेष ए के, श्रुतअज्ञानादिमांषी जेने जे होय ते तेने कहेवुं. तथा केवरुदर्शनना पर्यायो संबन्धे केवरुज्ञानना पर्यायोनी पेठे समजवुं.

वागीरना प्रकार.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! केटलां शरीरो कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! पांच शरीरो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे—भीदारिक, यावत्— कार्मण, अहिं "प्रकापनासूत्रनुं बधुं शरीरपद कहेवुं.

सन्य अने निष्कर्य

३५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो सकंप होय छे के निष्कंप होय छे ! [उ०] हे गैतिम! जीवो सकंप पण छे अने निष्कंप पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेत्थी एम कहो छो के 'जीवो सकंप पण छे अने निष्कंप पण छे' ! [उ०] हे गौतम! जीवो बे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—संसारसमापन्न—संसारी अने असंसारसमापन्नक—मुक्त, तेमां जे असंसारसमापन्न जीवो छे ते सिद्ध जीवो छे. ते सिद्धों वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—अनंतर सिद्ध अने परंपर सिद्ध. तेमां जे जीवो परंपर सिद्ध छे ते निष्कंप छे, अने जे जीवो अनंतर सिद्ध छे ते निष्कंप छे.

देशभी के सर्वभी सकस्प !

३६. [प्र∘] हे भगवन् ! ते (अनन्तर सिद्धो) शुं अमुक अंदो सकंप छे के सर्वोदो सकंप छे! [उ०] हे गौतम ! ते अमुक अंदो सकंप नथी, पण सर्वोदो सकंप छे. तेमां जे संसारने प्राप्त थयेला जीवो छे ते वे प्रकारे कह्या छे, ते आ प्रमाणे–दौलेद्गीने प्राप्त थयेला

३४ \* जुओ प्रज्ञा- यद १२ प- २६८.

३५ ं सिद्धत्वनी प्राप्तिना प्रथम समये अनन्तर सिद्ध कहेवाय छे, कारण के त्यारे एक समयनुं पण अन्तर नथी. जेओ सिद्धत्वने प्रथम समये वर्तमान सिद्ध जीवी छे तेओमां कंपन छे, कारण के सिद्धिगमनसमय अने सिद्धत्वप्राप्तिनो समय एक ज होवाणी अने सिद्धिगमनसमये गमन किया वती होवाणी ते वक्तते तेओ सकंप होय छे. जेने सिद्धत्व प्राप्ति वया पछी समयादिनुं अन्तर पडे छे ते परम्पर सिद्ध कहेवाय छे अने तेओ निष्कंप होय छे.

तत्य णं जे ते असेळेसीपिडिवन्नगा ते णं सेया । [प्र०] ते णं भंते ! कि देसेया सहया ! [उ०] गोयमा ! देसेया वि. सहया षि। से तेणट्रेणं जाव-निरेया वि।

- ३७. [प्र०] नेरहया णं भंते ! किं देसेया सबेया ! [उ०] गोयमा ! देसेया वि, सबेया वि । [प्र०] से केणट्टेणं जाब-सबेया वि १ [उ०] गोयमा ! नेरह्या दुविहा पश्चा, तंजहा-विग्गहगतिसमावन्नगा य अविग्गहगतिसमावन्नगा य । तत्य णं जे ते विग्नह्रगतिसमावस्रमा ते णं सबेयाः तत्थ णं जे ते अविग्मह्रमतिसमावस्रमा ते णं देसेयाः से तेणट्रेणं जाव-'सबेया वि'। एवं जाव-वेमाणिया।
- ३८. [४०] परमाणुपोग्गला र्ण भंते ! कि संखेजा असंखेजा अर्णता ? [उ०] गोयमा ! नो संखेजा, नो असंखेजा, अर्णता । एवं जाव-अर्णतपपसिया खंधा ।
- ३९. [प्र०] एगएएसोगाढा णं भंते ! पोग्गला कि संखेजा, असंखेजा, अणंता ! [उ०] एवं चेव । एवं जाय-असं-सेजपपसोगाढा ।
  - ४०. [प्र०] एगसमयिटतीया णं भंते ! पोग्गला कि संखेजा० ? [उ०] एवं चेवः एवं जाव-असंखेजसमयिट्टतीया ।
- ४१. प्रि. प्रि. प्राप्तुणकालमा मं अंते ! पोरमला कि संखेजा० ? [उ०] एवं चेय, प्रवं जाव-अर्णतगुणकालमाः प्रवं अवसेसा वि वण्णगंधरसफासा णेयद्वा जाव-'अणंतगुणलक्ख'ति।
- ४२. [प्र०] एपसि णं भंते! परमाणुपोग्गलाणं, दुपएसियाण य संधाणं वृष्ठद्रयाए कयरे कयरेटितो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा, विसेसाहिया वा १ [उ०] गोयमा ! दुपण्सिर्णाहेतो संधेहितो परमाणुपोग्गला दबद्रयाप बहुगा ।

अने **रौलेशीने अप्राप्त. तेमां जे<sup>\*</sup> रौलेशीने प्राप्त जीवो छे** ते निष्कंप छे अने जे देखिशीने प्राप्त थयेला नयी ते सकंप छे. [प्र**ा** हे भगवन् ! जेओ दौले**दानि प्राप्त परे**ला नथी ते जीवो हुं अंदातः<sup>†</sup> सफंप छे के सर्वोद्दो सकंप छे ! [उ०] हे गैातम ! ते अंदातः सकंप **छे** अने सर्वाहो पण सकंप छे. ते हेतुथी यात्रत्—ते निष्कंप पण छे.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियको ह्यं अंशतः सकंप छे के सर्वाशे सकंप छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ अंशतः सकंप छे अने सर्वारी पण सकंप छे. [प्र०] सा हेनुथी एम कहो छो के ते यावत्—सर्वारी पण मर्जप छे ! [उ०] हे गौतम ! नैरियको वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे-विप्रह्मानिने प्राप्त थयेला अने विप्रह्मातिने निहं प्राप्त थयेला. तेमां जे विप्रह्मातिने प्राप्त थयेला छे ते सर्वारो सकंप छे. अने जे विम्रह्मतिने प्राप्त थयेन्य नथी ते अमुक अंशे सकंप छे. ते हेत्थी यावतू-तेओ सर्वारो पण मकंप छे. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं.

३८. [प्र०] है भगवन् ! ह्यं परमाणुपुद्रलो संख्याता छे, असंख्याता छे के अनंत छे ! [उ०] हे गौतम ! ते संख्याता नथी, अमंख्याता नथी, पण अनंत छे. ए प्रमाणे यावत्-अनंत प्रदेशवाळा स्कंथो सुधी जाणवुं.

एक बाकाशप्रदेशमा रहेका पुद्गको.

वरमाजु.

- ३९. [प्र०] हे भगवन् ! आकाशना एक प्रदेशमां रहेखां पुद्रखो शुं संख्याता छे, असंख्याता छे के अनंत छे ? [उ०] पूर्वे कहा। प्रमाणे जाणवं. ए रीते यावत्—असंख्यात प्रदेशमां रहेलां प्रदृत्वो विषे पण समजवं.
- ४०. [प्रo] हे भगवन् ! एक समयनी स्थितित्राळां पद्मलो ह्यं संख्याता छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवं. ए एकसमयनी स्थिति-बाळा पुद्गली. प्रमाणे यावत्—असंद्याता समयनी स्थितिवाळां पुद्गलो संबंधे पण जाणवं.
- **४१. प्र∘ो हे भगवन् ! एकगुण काळां पुद्र**ङो छुं संख्याता होय–इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे व्यक्तीय काञ्च-यावत्-भनंतगुण काळा पुद्रत्यो संबन्धे पण समजबुं, एम एज रीते बाकीना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श संबंधे यावत्-अनंत गुण रुक्ष सुधी समजवुं.

**४२. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्रल अने द्विप्रदेशिक स्कंध, एमां द्रव्यार्यरूपे कोण कोनाधी अल्प, अधिक, तुल्य अने** विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कंधो करतां परमाणु पुद्रलो द्रव्यार्थरूपे घणां छे.

प(माणु अने दिप-देशिक स्थान्धनं सन्प्यद्वास.

पुटमस्रो.

३६ \* जेओ मोक्षगमनसमय पहेलां शेलेशीने प्राप्त ययेला छे तेओने योगनो रोध सर्वेथा होवाथी ते निष्कंप छे

<sup>ं</sup> इंजिका गतिथी उत्पत्तिस्थाने जनां जीवो देशतः सकम्प छे, कारण के तेनो पूर्वना शरीरमां रहेले अंश गतिकियारहित होवाथी ते निश्चल छे.

३७ 🗜 विष्रहगतिने प्राप्त थयेला एटके जेओ मरीने विष्रह गतिवडे उत्पत्ति स्थाने जाय छे तेओ दडानी गतिशी सर्वात्मरूपे उपजे छे, माटे ते सर्वरूपे सकम्प छे. अने जेओ विप्रहुगतिने प्राप्त थयेला नशी ते ऋजुगतिवाळा अने अवस्थित ए वे प्रकारना छे तेमां आहें मात्र अवस्थित घटण करेला होय तेम संभवे छे. तेओ शरीरमां रहीने मरणसमुद्धात करी ईंढिका गतिवडे उत्पत्ति क्षेत्रनो अंशतः स्पर्श करे छे, माटे ते देशधी सकंप छे. अथवा सक्षेत्रमां रहेला जीवो हस्तपादादि अवयवोने चलाववा द्वारा देवाथी सकंप छे.---टीका.

धरे. [प्रव] एपसि णं भंते ! दुपपसियाणं तिष्यपसियाण य संघाणं व्यद्वयाप कयरे कयरेहितो बहुया ! [उ०] गोयमा ! तिपपसिपहितो संधेहितो दुपपसिया संधा व्यद्वयाप बहुया; एवं एपणं गमएणं जाव-दसपपसिपहितो संधे-हितो नवपपसिया संधा व्यद्वयाप बहुया।

४४. [प्र॰] एएसि णं भंते ! इसपएसिए॰-पुच्छा [उ॰] गोयमा ! इसपएसिएहितो खंधेहितो संखेजपरसिया खंधा इन्नद्रयाए बहुया ।

४५. [प्र॰] एएसि णं भंते ! संसेज्ज॰-पुच्छा । [उ॰] गोयमा! संसेज्जपपसिपर्हितो संधेर्हितो असंसेज्जपपसिया संधा दबद्वयाप बहुया ।

४६. एएसि णं भंते ! असंखेजा०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अणंतपपसिपहितो संधेहितो असंखेजपपसिया संधा दहरूयाए बहुया ।

४७. [त्र॰] एपसि णं अंते ! परमाणुपोग्गलाणं दुपपसियाण य खंधाणं पपसट्टयाप कयरे कयरेहितो बहुया ! [उ॰] गोयमा ! परमाणुपोग्गलेहितो दुपपसिया खंधा पपसट्टयाप बहुया । एवं पपणं गमएणं जाव-नवपपसिपहितो खंधेहितो दसपपसिया खंधा पपसट्टयाप बहुया; एवं सक्षत्य पुच्छियत्वं । दसपपसिपहितो खंधेहितो संखेज्जपपसिया खंधा पपस-ट्टयाप बहुया । संखेज्जपपसिपहितो खंधेहितो असंखेज्जपपसिया खंधा पपस-

४८. [प्र०] एएसि णं भंते ! असंखेजपरिस्थाणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अणंतपरिसरिहितो खंधेहितो असंखेजपर-सिया खंधा परसद्वयार बहुया ।

धर. एपसि जं भंते ! प्रमप्पसोगाढाणं दुपपसोगाढाण य पोग्गलाणं दबद्वयाप कयरे कयरेहितो जाव-विसेसाहिया वा ? [उ॰] गोयमा ! दुपपसोगाढेहितो पोग्गलेहितो पगपपसोगाढा पोग्गला दब्बद्वयाप विसेसाहिया । एवं एएणं गमएणं

द्विमदेशिक अने त्रि-मदेशिक स्कन्धनुं अल्पवहुत्यः ४३. [प्र०] हे भगवन् ! ए द्विप्रदेशिक स्कंघ अने त्रिप्रदेशिक स्कंघ एमां द्रव्यार्थपणे कया पुद्गलस्कन्धो कोनाथी यावत्—विशेषा-धिक छे ! [उ०] हे गीतम ! त्रिप्रदेशिक स्कंघो करतां \*द्विप्रदेशिक स्कंघो द्रव्यार्थपणे घणा छे. ए प्रमाणे ए गमक—पाठ वडे यावत्—दश प्रदेशवाळा स्कंघो करतां नव प्रदेशवाळा स्कंघो द्रव्यार्थपणे घणा छे.

दशमदेशिक अने स-स्यात मदेशिकनुं अल्पन्नुत्व- ४४. [प्र॰] हे भगवन् ! दरा प्रदेशवाळा स्कंधो संबंधे पूर्व प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! दरा प्रदेशवाळा स्कंधो करतां संख्यात प्रदेशवाळा स्कंधो द्रव्यार्थक्ष्पे घणा छे.

संस्थात प्रदेशिक अ-ने असंख्यात प्रदे-शिक स्कन्धनु अल्पनपुत्व-असंख्यात प्रदेशिक ४५. [प्र॰] हे भगवन् ! ए संख्यात प्रदेशवाळा स्कंधो संबंधे प्रश्न. [७०] हे गौतम ! संख्यात प्रदेशिक स्कंधो करतां असंख्यात प्रदेशिक स्कंधो दन्यार्थपणे घणा छे.

भने भनन्त प्रदेशिक स्कन्धनं अस्पः बहुत्वः परमाणु भने दिप्रदे-शिक स्कन्धनं प्रदे-शार्थस्य अस्पः बहुत्वः ४६. [प्र०] हे भगवन् ! ए असंख्यात प्रदेशिक स्कंधो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! द्रव्यार्थ रूपे अनंत प्रदेशिक स्कंधो करतां असंख्यात प्रदेशिक स्कंधो धणा छे.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणु पुद्गल अने द्विप्रदेशिक स्कंधमां प्रदेशार्थरूपे कया कया शाधी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! प्रदेशार्थरूपे परमाणुपुद्गलो करतां द्विप्रदेशिक स्कंधो घणा छे. एम आ पाठ वर्डे यावत्—नव प्रदेशिक स्कंधो करतां दश प्रदेशिक स्कंधो प्रदेशार्थरूपे घणा छे. ए राते सर्वत्र प्रश्न करवो. दश प्रदेशिक स्कंधो करतां संख्यात प्रदेशवाळा स्कंधो प्रदेशार्थरूपे घणा छे. संख्यात प्रदेशवाळा स्कंधो करतां असंख्यान प्रदेशिक स्कंधो प्रदेशार्थरूपे घणा छे.

स्मसंख्यात प्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशि-कनुं अन्पबहुन्यः प्रदेशावगाद पुर्ग-कोनुं द्रष्यरूपे अस्पबहुत्यः ४८. [प्र०] हे भगवन् ! ए असंख्यात प्रदेशिक स्कंधो संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! अनंत प्रदेशिक स्कंधो करतां असंख्य प्रदेशिक स्कंधो प्रदेशार्थपणे घणा छे.

४९. [प्र॰] हे भगवन् ! एक प्रदेशमां रहेला अने वे प्रदेशमां रहेला पुद्गलोमां द्रव्यार्थरूपे कया कोनाथी यावत्—विद्योपाधिक छे ! [उ॰] हे गौतम ! वे प्रदेशमां रहेला पुद्गलो करतां <sup>†</sup>एक प्रदेशमां रहेला पुद्गलो द्रव्यार्थरूपे विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे ए पाठवडे जाण

४९ 1 परमाणुशी मांडी अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध सुधी एक प्रदेशावगाढ होय छे अने ह्मणुकशी मांडी अनन्ताणु स्कन्ध सुधी वे प्रदेशावगाढ होय छे. एम त्रिप्रदेशिक रकन्भशी आरंभी अनन्त प्रदेशिक स्कन्ध सुधी त्रिप्रदेशावगाढ होय छे. ए प्रमाणे चतुःप्रदेशावगाढ, यावत्-असंख्य प्रदेशावगाढ स्कन्धो जाणवा.

४३ \* इसणुक करतां परमाणुओ स्क्ष्मपणाशी अने एक होयाशी घणा छे, द्विप्रदेशिक स्कन्धो परमाणु करतां स्थूल होवाशी थोडा छे. एम पछीना सूत्र माटे जाणबुं. पूर्व पूर्वनी संख्या बहु छे अने पछी पछीनी थोडी छे. पण दशप्रदेशिक स्कन्धो करतां संख्यात प्रवेशिक स्कन्धो घणा छे. कारण के संख्यातना घणा स्थानो होय छे. संख्यातप्रदेशिक स्वन्ध करतां असंख्यातना घणा स्थानो होय छे. संख्यातप्रदेशिक स्वन्ध करतां असंख्यातना घणा स्थानो होय छे. परंतु असंख्यात प्रदेशिक स्वन्धो करतां अनन्त प्रदेशिक स्वन्धो थोडा छे. कारण के तेनो तथाविध स्कूम परिणाम थाय छे.—टीका.

तिषय सोगादेहितो पोग्गलेहितो दुपयसोगादा पोग्गला दबट्टयाय विसेसाहिया; जाव-इसपयसोगादेहितो पोग्गलेहितो नवपयसोगादा पोग्गला दबट्टयाय विसेसाहिया। इसपयसोगादेहितो पोग्गलेहितो संक्षेज्जपयसोगादा पोग्गला दबट्टयाय बहुया; संक्षेज्जपयसोगादेहितो पोग्गलेहितो असंक्षेज्जपयसोगादा पोग्गला दबट्टयाय वहुया। पुच्छा सब्द्राथ भाणियवा।

- ५०. [प्र०] एएसि णं भंते ! पगपएसोगाढाणं दुपएसोगाढाण य पोगगलाणं पपसट्टयाप कपरे कयर्राहंतो जाव-विसेसाहिया वा ! [उ०] गोयमा ! एगपपसोगाढेहितो पोगगलेहितो दुपएसोगाढा पोगगला पपसट्टयाए विसेसाहिया, एवं जाव-नवपपसोगाढेहितो पोगगलेहितो दसपपसोगाढा पोगगला पएसट्टयाप विसेसाहिया; दसपपसोगाढेहितो पोगगले-हितो संखेज्जपपसोगाढा पोगगला पपसट्टयाप बहुवा; संखेज्जपपसोगाढेहितो पोगगलेहितो असंखेज्जपपसोगाढा पोगगला-पपसट्टयाप बहुवा।
- ५१. [प्र०] एपसि णं भंते ! एगसमयद्वितीयाणं दुसमयद्वितीयाण य पोग्गलाणं द्वद्वयापः ? [उ०] जहा ओगाह-णाप वस्तवया पवं ठितीए वि ।
- ५२. [प्र०] एपसि णं मंते ! एगगुणकालयाणं दुगुणकालयाण य योग्गलाणं दबदृयाए० ! [उ०] एपसि णं जहा परमाणुपोग्गलादीणं तहेय वस्तवया निरयसेसा; एवं सबेसि वस्न-गंध-रसाणं।
- ५३. [प्र०] एएसि णं संते ! एगगुणकक्ष्यडाणं नुगुणकक्ष्यडाण य पोग्गलाणं द्वट्टयाए कयरे कयरेहितो जाव— विसेसाहिया वा ! [७०] गोयमा ! एगगुणकष्यडेहितो पोग्गलेहितो नुगुणकष्यडा पोग्गला द्वट्टयाए विसेसाहिया; एवं जाव—नवगुणकक्ष्यडेहिनो पोग्गलेहितो दसगुणकक्ष्यडा पोग्गला द्वट्टयाए विसेसाहिया; दसगुणकक्ष्यडेहितो पोग्गले हितो संखेळगुणकष्यडा पोग्गला व्वट्टयाए यहुया; संखेळगुणकष्यडेहितो पोग्गलेहितो असंखेळगुणकष्यडा पोग्गला द्वट्टयाए बहुया; असंखेळगुणकथ्यडेहितो पोग्गलेहितो अणंतगुणकष्यडा पोग्गला द्वट्टयाए बहुया। एवं पएसट्टयाए। सञ्चत्य पुच्छा माणियद्या। जहा कक्ष्यडा एवं मत्रय-गहय-लहुया वि। सीय-उसिण-निद्य-लुक्खा जहा वक्षा।

प्रदेशमां रहेला पुद्रलो करनां वे प्रदेशमां रहेला पुद्रलो द्रन्यार्थरूपे विशेषाधिक छे. यावत्—दश प्रदेशमां रहेला पुद्रलो करनां नव प्रदेशमां रहेला पुद्रलो द्रव्यार्थरूपे विशेषाधिक छे. दश प्रदेशमां रहेला पुद्रलो करनां संस्थाता प्रदेशमां रहेला पुद्रलो द्रव्यार्थरूपे घणां छे. संस्थाता प्रदेशमां रहेला पुद्रलो करनां असंस्थाता प्रदेशमां रहेला पुद्रलो द्रव्यार्थरूपे घणां छे. सर्वत्र प्रश्न करवा.

५०. [प्र०] हे भगवन् ! एक प्रदेशमां रहेला अने वे प्रदेशमा रहेला ए पुद्रलोमां प्रदेशार्थक्त्ये क्या पुद्रलो कोतायी यावत्— विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! एक प्रदेशमां रहेला पुद्रलो करतां वे प्रदेशमां रहेला पुद्रलो प्रदेशार्थक्त्ये विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे यावत्—नव प्रदेशमां रहेला पुद्रलो करतां दश प्रदेशमां रहेला पुद्रलो प्रदेशार्थक्त्ये विशेषाधिक छे. दश प्रदेशमां रहेला पुद्रलो करतां संख्याता प्रदेशमां रहेला पुद्रलो प्रदेशार्थक्त्ये घणां छे. संख्याता प्रदेशमां रहेला पुद्रलो करतां अरांख्याता प्रदेशमां रहेला पुद्रलो प्रदेशार्थक्त्ये घणां छे.

प्रदेशावगाड पुद्ग-लोनु प्रदेशरूपे अल्पवहुत्व-

५१. [प्र०] हे भगवन् ! एक समयनी स्थितिवाळां अने बे समयनी स्थितिवाळां पुद्रलोमां द्रव्यार्थरूपे कयां पुद्रलो कोनाथी यावत्— विशेषाधिक छे ! [उ०] जेम अवगाहनानी वक्तव्यता कही छे (सू० ४८-४९) तेम स्थितिनी पण वक्तव्यता कहेवी.

समबस्थितिबाळा पु-द्गलीनुं अस्पबद्धत्व

५२. [प्र०] हे भगवन् ! एक गुण काळां अने द्विगुण काळां पुद्रछोमां द्रव्यार्थरूपे कया पुद्रछो कोनाथी विशेषाधिक छे—हत्यादि परमाणुपुद्रछादिनी वक्तव्यतानी पेठे बधी वक्तव्यता कहेवी. ए प्रमाणे बधा वर्ण, गंध्र अने रस संबंधे पण वक्तव्यता कहेवी. वर्ण, गन्ध अने रस विशिष्ट पुद्गलीनुं अस्पवदुत्यः

५३. [प्र०] हे भगवन् ! एकगुण कर्करा अने द्विगुण कर्करा पुद्रलोमां द्वव्यार्थक्त्ये क्या पुद्रलो कोनाधी यावत्-विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गाँतम ! एकगुण कर्करा पुद्रलो करतां द्विगुण कर्करा पुद्रलो द्वव्यार्थक्त्ये विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे यावत्-नवगुण कर्करा पुद्रलो करतां दशगुण कर्करा पुद्रलो करतां दशगुण कर्करा पुद्रलो द्वव्यार्थएणे घणां छे. संख्यातगुण कर्करा पुद्रलो करतां असंख्यातगुण कर्करा पुद्रलो द्वव्यार्थएणे घणां छे. संख्यातगुण कर्करा पुद्रलो करतां असंख्यातगुण कर्करा पुद्रलो द्वव्यार्थएणे घणां छे. असंख्यातगुण कर्करा पुद्रलो करतां असंख्यातगुण कर्करा पुद्रलो द्वव्यार्थएणे घणां छे. ए प्रमाणे प्रदेशार्थपणे पण सर्वत्र प्रश्न करवो. जेम कर्करा स्पर्श संबंधे कह्युं छे तेम सृदु, गुरु अने छघु स्पर्श विशे पण कर्हेदुं. तथा शीत, उष्ण, क्विग्ध अने रुक्ष स्पर्श संबन्धे वर्णनी पेठे कहेदुं.

रपर्शविशिष्ट पुद्ग-लोनुं अस्पनदृत्यः ५४. [प्र०] प्यसि णं भंते ! प्रमाणुपोग्गलाणं संखेळप्यसियाणं, असंखेळप्यसियाणं, अणंतप्यसियाण य संघाणं द्वहुयाय प्यसहुयाय द्वहुप्यसहुयाय क्यरे कयरे॰ जाव-विसेसाहिया वा १ [उ॰] गोयमा ! सद्वत्योवा अणंतप्यसिया संघा द्वहुयाय, प्रमाणुपोग्गला द्वहुयाय अणंतगुणा, संखेळप्यसिया संघा प्यसहुयाय संखेळगुणा, असंखेळप्यसिया संघा प्रसहुयाय, प्रमाणुपोग्गला अप्यसहुयाय अणंतगुणा, संखेळप्यसिया संघा प्रसहुयाय, प्रमाणुपोग्गला अप्यसहुयाय अणंतगुणा, संखेळप्यसिया संघा प्रसहुयाय असंखेळगुणा; द्वहुप्यसहुयाय—सद्व-त्योवा अणंतप्यसिया संघा प्रमहुयाय असंखेळगुणा; द्वहुप्यसहुयाय—सद्व-त्योवा अणंतप्यसिया संघा द्वहुयाय, ते चेव प्रसहुयाय अणंतगुणा, परमाणुपोग्गला द्वहुप्यसहुयाय अणंतगुणा, संखे-ळप्यसिया संघा द्वहुयाय संखेळगुणा, ते चेव प्रसहुयाय संखेळगुणा, असंखेळप्रपिया संघा द्वहुयाय असंखेळगुणा, ते चेव प्रसहुयाय संखेळगुणा, असंखेळप्रपिया संघा द्वहुयाय असंखेळगुणा, ते चेव प्रसहुयाय संखेळगुणा, असंखेळप्रपिया संघा द्वहुयाय असंखेळगुणा,

५५. [प्र०] एएसि णं भंते ! प्रापपसोगाढाणं, संखेजप्रसोगाढाणं, असंखेजप्रसोगाढाण य पोग्गलाणं द्वह्यार प्रपसह्यार द्वहुपएसह्यार कर्यरे कर्यरे जाव विसेसाहिया वा ! [उ०] गोयमा ! स्वत्थोवा प्रापपसोगाढा पोग्गला द्वहुयार, संखेजप्रसोगाढा पोग्गला द्वहुयार संखेजगुणा, असंखेजप्रसोगाढा पोग्गला द्वहुयार असंखेजगुणा, परसहुयार—स्वत्थोवा प्रापपसोगाढा पोग्गला अपप्रसहुयार, संखेजप्रसोगाढा पोग्गला प्रसहुयार असंखेजगुणा, असंखेजप्रसोगाढा पोग्गला प्रसहुयार असंखेजगुणा, द्वहुपएसहुयार—स्वत्थोवा प्रापपसोगाढा पोग्गला द्वहुअपदेसहुयार, संखेजप्रसोगाढा पोग्गला द्वहुआर असंखेजगुणा, ते चेव प्रसहुयार संखेजगुणा, असंखेजगुणा, असंखेजगुणा, ते चेव प्रसहुयार संखेजगुणा।

५६. [प्र॰] एपसि णं भंते! पगसमयद्वितीयाणं, संखेजसमयद्वितीयाणं, असंखेजसमयद्वितीयाण य पोग्गलाणं॰ ? [उ॰] जहा ओगाहणाए तहा ठितीए वि माणियम्नं अप्पाबहुगं।

षरमाणुयी आरभी अन-त प्रदेशिक स्त्र-भोनुं अल्पबद्धत्व- ५४. [प्र०] हे भगवन् ! ए परमाणुपुद्रलो संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने अनंतप्रदेशिक स्कंधोमां द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे क्यां पुद्रल्यक्ष्यो कोनाथी यात्रत्—विशेपाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! द्रव्यार्थरूपे सीपी थोडा अनंतप्रदेशिक स्कंधो छे. तेथी परमाणु पुद्रलो द्रव्यार्थरूपे अनंख्यातगुण छे, तेथी संख्यातप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थरूपे संख्यातगुण छे, तेथी परमाणुपुद्रलो \*अप्रदेशार्थरूपे अनंख्यातगुण छे, तेथी संख्यातप्रदेशिक स्कंधो प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुण छे, तेथी असंख्यातप्रदेशिक स्कंधो प्रदेशार्थरूपे अनंख्यातगुण छे, तेथी असंख्यातप्रदेशिक स्कंधो प्रदेशार्थरूपे अनंख्यातगुण छे, द्रव्यार्थरूपे—अनंतगुण छे, तेथी संख्यातप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थरूपे सौधी थोडा छे, अने तेज स्कंधो प्रदेशार्थरूपे अनंतगुण छे, तेथी परमाणुपुद्रलो द्रव्यार्थ-अप्रदेशार्थरूपे अनंतगुण छे, तेथी संख्यातप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुण छे, क्ये तेथी तेज स्कंधो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुण छे, तेथी असंख्यातगुण छे, तेथी असंख्यातगुण छे, अने तेथी तेज स्कंधो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुण छे, तेथी असंख्यातगुण छे, अने तेथी ते ज स्कंधो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुण छे,

प्रदेशावगाद पुद्र-लोनु अस्पवतुत्वः ५५. [प्र०] हे भगवन्! एक प्रदेशमां रही शके तेवा, रांख्यात प्रदेशमां रही शके तेवा अने असंख्यात प्रदेशमां रही शके तेवा ए पुद्रलोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कया पुद्रलो कोनाथी यावत्—विशेपाधिक छे ! [उ०] हे गीतम! एक प्रदेशमां रही शके तेवा पुद्रलो द्रव्यार्थरूपे सौंद्या थें छे, तेथी संख्यात प्रदेशमां रही शके तेवा पुद्रलो द्रव्यार्थरूपे संख्यातगुण छे, तेथी असंख्यात प्रदेशमां रही शके तेवा पुद्रलो द्रव्यार्थरूपे अरांख्यातगुण छे. प्रदेशार्थरूपे—एक प्रदेशमां रही शके तेवा पुद्रलो अप्रदेशार्थरूपे सौंद्या थें थोडां छे, तेथी संख्यातगुण छे. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे—एक प्रदेशमां रही शके तेवा पुद्रलो असंख्यात प्रदेशमां रही शके तेवा पुद्रलो द्रव्यार्थ-अप्रदेशार्थरूपे सौंधी थोडां छे, तेथी संख्यातगुण छे. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुण छे, अने तेज पुद्रलो प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुण छे, तेथी असंख्यात प्रदेशमां रही शके तेवा पुद्रलो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुण छे अने ते तेथी तेज पुद्रलो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुण छे.

ण्यः समयादि स्थि-तियाया पुत्रलोनुं अस्पमृत्यः

५६. [प्र॰] हे भगवन् ! एक समयनी स्थितिवाळा, संख्यात समयनी स्थितिवाळा अने असेख्यात समयनी स्थितिवाळा ए पुह-लोमां कयां कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे ? [उ॰] जेम अवगाहना संबंधे अल्पबहुत्व कहुं छे, तेम स्थिति संबन्धे पण अल्पबहुत्व कहेवुं.

१ पर्सहुयाए ग-छ । २ असंखेज छ । १ दव्वहुव्पर्सह-छ ।

७४ \* परमाणु अप्रदेशी होवाथी एटले तेने प्रदेश निह होवाथी अप्रदेशार्थहरे अनन्तगुण कहा। हे.

<sup>ं</sup> परमाणुओ द्रव्यनी विवधामां द्रव्यहर छ अने प्रदेशविवक्षामां तेने प्रदेशो नहि होवाथी द्रव्यार्थ-अप्रदेशार्थहरे अनन्तगुण कता छे.

- ५७. [प्र॰] ययसि णं भंते ! यगगुणकालगाणं, संखेजगुणकालगाणं, भसंखेजगुणकालगाणं, अणंतगुणकालगाण य पोग्गलाणं दबद्वयाय, पयसद्वयाय, दबद्वपयसद्वयाय० ! [उ॰] ययसि जहा परमाणुपोग्गलाणं अध्याबहुनं तहा वयसि वि अध्याबहुनं, यसं सेसाण वि वस्न-गंध-रसाणं ।
- ५८. [प्र०] एएसि णं मंते ! प्रागुणकक्षडाणं, संबेखगुणकक्षडाणं, असंखेखगुणकक्षडाणं, अणंतगुणकक्षडाणं य पोग्गलां व्यह्यापं, प्रप्सहयापं, द्वहप्यसह्यापं कयरे कयरे॰ जाय-विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सद्वत्योवा प्रागुणकक्षडा पोग्गला द्वहयापं, संखेखगुणकक्षडा पोग्गला द्वहयापं संखेखगुणा, असंखेखगुणकक्षडा पोग्गला द्वहयापं अणंतगुणा, प्रप्सहयापं पर्व चेवः नवरं संखेखगुणकक्षडा पोग्गला प्रप्सहयापं अणंतगुणा, प्रप्सहयापं पर्व चेवः नवरं संखेखगुणकक्षडा पोग्गला प्रप्तह्यापं अणंतगुणा, प्रप्सहयापं पर्व चेवः नवरं संखेखगुणकक्षडा पोग्गला प्रप्तह्यापं असंखेखगुण-कक्षडा पोग्गला व्वह्यपं संखेखगुण-कक्षडा पोग्गला व्वह्यपं संखेखगुणाः, ते चेव प्रपाहयापं संखेखगुणाः, ते चेव प्रपाहयापं अणंतगुणाः। एवं मजय-ग्रहय-लक्ष्यापं अणंतगुणाः अणंतगुणाः अणंतगुणकक्षडाः व्वह्यापं अणंतगुणाः। एवं मजय-ग्रहय-लक्ष्याणं वि अप्पावष्ट्यां। सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खाणं जहां वद्याणं तहेवः।
- ५९. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं मंते ! दघट्टयाप किं कडजुम्मे, तेयोप, दावरजुम्मे, कलियोगे ! [उ०] गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोप, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एवं जाव--अणंतपपसिप संधे ।
- ६०. [प्र०] परमाणुपोग्गला णं भंते ! दब्बद्वयाप किं कडज्रुम्मा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कड-ज्रुम्मा, जाध-सिय किंत्योगा; विद्वाणादेसेणं नो कडज्रुम्मा, नो तेयोगा, नो दायरज्ञुम्मा, किंत्योगा । एषं जाध-अणंतपप-सिया खंधा ।
- ६१. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं भंते ! पपसट्टयाप किं कडन्नुस्मे० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो कडन्नुस्मे, नो तेयोगे, नो वायरज्ञस्मे, किंद्योगे ।

५७. [प्र०] हे भगवन् ! एकगुण काळा, संख्यातगुण काळा, असंख्यातगुण काळा अने अनंतगुण काळा ए पुद्रलोमां द्रव्या-र्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्यार्थप्रदेशार्थरूपे कया पुद्गलो कोनाथी यावद्—विशेषाधिक छे ! [उ०] जेम परमाणुपुद्रलोनुं अल्प-बहुत्व कह्युं छे (सू० ५३) तेम एओनुं पण अल्पबहुत्व कहेबुं. एम काळा सिवायना बाकीना वर्ण, गंध अने रस संबंधे पण जाणबुं.

वर्णादिविशिष्ट पुद्-गलोतुं अस्पबद्धतः

- ५८. [प्र०] हे भगवन् ! एक्तगुण वर्करा, संख्यातगुण कर्करा, असंख्यातगुण कर्करा अने अनंतगुण कर्करा ए पुद्रलोमां द्रव्यार्थक्रपे, प्रदेशार्थक्रपे तथा द्रव्यार्थप्रदेशार्थक्रपे क्या पुद्रलो कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! एकगुण कर्करा पुद्रलो द्रव्यार्थक्रपे संख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यातगुण कर्करा पुद्रलो द्रव्यार्थक्रपे असंख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यातगुण कर्करा पुद्रलो द्रव्यार्थक्रपे अनंतगुण छे. प्रदेशार्थक्रपे पण ए ज रीते जाणवुं. परन्तु विशेष ए के, संख्यातगुण कर्करा पुद्रलो प्रदेशार्थक्रपे असंख्यातगुणा छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. द्रव्यार्थप्रदेशार्थक्रपे—एकगुण कर्करा पुद्रलो द्रव्यार्थ—प्रदेशार्थक्रपे—असंख्यातगुणा छे, अने तेज पुद्रलो प्रदेशार्थक्रपे असंख्यातगुणा छे, तेथी असंख्यातगुण कर्करा पुद्रलो द्रव्यार्थक्रपे असंख्यातगुण छे, अने तेथी असंख्यातगुण कर्करा पुद्रलो द्रव्यार्थक्रपे असंख्यातगुण छे, अने तेथी असंख्यातगुण छे, अने तेथी अनंतगुण छे. एज रीते मृदु, गुरु अने छघु स्पर्शोनुं पण अल्पबहुत्व कहेवुं. शीन, उष्ण, क्षिण्ध अने रक्ष स्पर्शोनुं अल्पबहुत्व वर्णोनी पेटे जाणवुं.
- ५९. [प०] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्गल इञ्यार्थरूपे कृतयुग्म छे, ज्योज छे, द्वापरयुग्म छे के कल्योज छे ! [उ०] हे गौतम ! कृतयुग्म नथी, ज्योज नथी, द्वापरयुग्म नथी, पण \*कल्योजरूप छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी जाणहुं.

परमाणुमा कृतयु ग्यादि राशिना समवतारः

६०. [प्र०] हे भगवन् ! युं परमाणुपुद्गलो द्रव्यार्थपणे कृतयुग्म छे—हत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कदाच सामान्यादेशधी कृतयुग्म होय, यावत्—कदाच कल्योज रूप होय. अने विशेषादेशधी कृतयुग्म, त्र्योज के द्वापरयुग्म नथी, पण कल्योजरूप होय छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंत प्रदेशिक स्कंधो सुधी जाणवुं.

परमाणुओ.

६१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्रल प्रदेशार्थरूपे कृतयुग्म छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! ते कृतयुग्म नथी, त्र्योज परमाणु प्रदेशरूपे. नथी, तेम द्वापरयुग्म नथी, पण कल्योजरूप छे.

५९ \* विधानादेशकी एक परमाणुपुद्गलने चार संस्थाणी अपहार करतां एक बाकी रहे माटे ते हमेशां कस्योजकप होय छे. २९ अ० स्०

- ६२. [प्र०] तुपपसिप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो कडलुम्मे, नो तेयोये, दावरलुम्मे, नो किल्योगे ।
- ६३. [प्र०] तिपपसिए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो कडजुम्मे, तेयोप, नो दावरजुम्मे, नो किटयोप ।
- ६४. [प्र०] चउप्पप्तिप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेओप, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । पंचपप्रिस्प जहा परमाणुपोग्गले । छप्पप्तिप जहा दुप्पप्रिस्प । सत्तपप्रित्प जहा तिपप्रित्प । अट्टपप्रित्प जहा चउप्पप्रित्प । नव-पर्पिप जहा परमाणुपोग्गले । दसप्रपित्प जहा दुप्पप्रित्प ।
- ६५, [प्र॰] संखेजपरिसर णं भंते ! पोग्गले-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय कडजुम्मे, जाव-सिय कलियोर । रवं असंखेजपरिसर वि, अणंतपरिसर वि ।
- ६६. [प्र॰] परमाणुपोग्गला णं अंते ! पपसट्टयाण किं कडज्जम्मा–पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! ओघावेसेणं सिय कडज्जम्मा, जाव–सिय कलियोगा । विद्याणादेसेणं नो कडज्जम्मा, नो तेयोया, नो दावरज्जम्मा, कलियोगा ।
- ६७. [प्र०] दुप्पपसिया णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! भोघावेसेणं सिय कडजुम्मा, नो तेयोया, सिय दावरज्जम्मा, नो कलियोगा । विद्वाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोया, दावरज्जम्मा, नो कलियोगा ।
- ६८. [प्र०] तिपप्सिया णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडज्रम्मा, जाव-सिय कलियोगा । विद्वाणा-देसेणं नो कडज्रम्मा, तेयोगा, नो दावरज्ञम्मा, नो कलियोगा ।
- ६९. [प्र॰] चउप्पप्सिया णं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा । पंचपप्सिया जहा परमाणुपोग्गला । छप्पप्सिया जहा दुप्पप्सिया । सत्तपप्सिया जहा तिप-प्रसिया । अट्टप्प्सिया जहा चउपप्सिया । नवपप्सिया जहा परमाणुपोग्गला । दसपप्सिया जहा दुपप्सिया ।
- ७०. [प्र॰] संखेजपपिसया णं-पुछा । [ज॰] गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, जाव-सिय कलियोगा । विद्वा-णादेसेणं कडजुम्मा वि, जाव-कलियोगा वि । एवं असंखेजपपिसया वि, अणंतपपिसया वि ।

दिप्रदेशित स्कन्ध-

६२. [प्र0] द्विप्रदेशिक स्कंध संबन्धे प्रश्न. [उ0] हे गौतम! ते कृतयुग्म, त्र्योज के कल्योज रूप नथी, पण द्वापरयुग्म छे.

त्रिप्रदेशिक स्कन्ध-

६३. [प्र०] त्रिप्रदेशिक स्कंध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! ते कृतयुग्म, द्वापर के कल्योज नथी, पण त्र्योज छे.

चतुःप्रदेशिकादि स्कन्धः ६४. [प्र०] चार प्रदेशवाळा स्कंथ संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! कृतयुग्म छे, पण श्योज, द्वापर के कल्योज नथी. परमाणुपुद्ग-ल्नों पेठे पांच प्रदेशवाळो स्कंध, द्विप्रदेशिक स्कन्धनों पेठे पट्प्रदेशिक स्कंध, त्रिप्रदेशिक स्कन्धनों पेठे सप्त प्रदेशिक स्कंध, चतुः-प्रदेशिकनी पेठे आठ प्रदेशवाळो स्कंध, परमाणुपुद्गलनी पेठे नव प्रदेशिक स्कंध अने द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे दशप्रदेशिक स्कंध जाणनी.

संख्यातप्रदेशिक रकन्भः ६५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं संख्यातप्रदेशिक स्कंध कृतयुग्म छे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच कृतयुग्म होय सने यावत्–कदाच कल्योजरूप होय. ए प्रमाणे असंख्यात प्रदेशिक तथा अनंतप्रदेशिक स्कंध संबंधे जाणबुं.

परमाणुओमां प्रदेश-रूपे कृतयुग्मादि राशिओः ६६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्गलो प्रदेशार्थपणे कृतयुग्म छे-इत्सादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सामान्यादेशयी कदाच कृतयुग्म छे, अने यावत्—सदाच कल्योज छे. तथा विशेषादेशनी अपेक्षाए कृतयुग्म, त्र्योज के द्वापरयुग्म नधी, पण कल्योज छे.

द्विप्रदेशिक रक्तन्थी.

६७. [प्र०] हिप्रदेशिक स्कंधो संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सामान्यादेशनी अपेक्षाए कदाच ऋतयुग्म होय अने कदाच हापरयुग्म होय, पण त्र्योज के कल्योजरात्रि रूप न होय. विशेषनी अपेक्षाए कृतयुग्म, त्र्योज के कल्योजरूप न होय, पण द्वापरयुग्म राशिक्ष्य होय.

त्रिप्रदेशिक स्कन्धो.

६८. [प्र०] त्रिप्रदेशिक स्कंधो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सामान्यादेशथी कदाच कृतयुग्म, यावत्—कदाच कल्योज होय, विशेषादेशथी कृतयुग्म, द्वापरयुग्म के कल्योज न होय, पण त्र्योज होय.

नतुष्प्रदेशिकादि स्कन्धोः ६९. [प्र०] शुं चतुष्प्रदेशिक स्कन्धो इतयुग्म छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सामान्यादेश अने विशेषादेशनी अपेक्षाए कृतयुग्मरूप छे, पण त्र्योज, द्वापरयुग्म अने कल्योजरूप नथी. पंचप्रदेशिक स्कन्धो परमाणुपुद्गलनी पेठे (सू० ६०-६१) जाणना. छप्रदेशिक स्कन्धोने द्विप्रदेशिक स्कन्धोनी पेठे (सू० ६८), अष्टप्रदेशिक स्कन्धो चतुष्प्रदेशिकनी पेठे, नवप्रदेशिक स्कन्धो परमाणुपुद्गलोनी जेम (सू० ६०-६१) अने दशप्रदेशिक स्कन्धो द्विप्रदेशिक स्कन्धो द्विप्रदेशिक स्कन्धो परमाणुपुद्गलोनी जेम (सू० ६०-६१) अने दशप्रदेशिक स्कन्धो द्विप्रदेशिक स्कन्धो विष्रदेशिक स्कन्धो नि

संख्यातप्रदेशिकादि स्कन्धोः ७०. [प्र०] द्युं संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो कृतयुग्मराशि रूप होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] सामान्यादेशधी कदाच कृतयुग्मरूप होय, यावत्—कदाच कल्योजरूप पण होय. विशेपादेशधी पण कदाच कृतयुग्मरूप होय, यावत्—कदाच कल्योजरूप पण होय. एम असंख्यात प्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो जाणवा.

- ७१. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं कडजुम्मपपसोगाढे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो कडजुम्मपपसोगाढे, नो तेयोग०, नो दावरज्ञम्म०, किंग्रोगपपसोगाढे ।
- ७२. [प्र०] तुपपसिप णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो कडन्नुम्मपपसोगाढे, जो तेयोग०, सिय दावरज्ञुम्मपपसोगाढे, सिय किश्योगपपसोगाढे ।
- ७३. [प्र०] तिपपसिए णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! णो कडज्जम्मपपसोगाढे, सिय तेयोगपपसोगाढे, सिय दावरज्ज-म्मपपसोगाढे, सिय किन्नयोगपपसोगाढे ३ ।
- ७४. [प्र॰] चउप्पपसिए णं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय कडजुम्मपपसोगाढे, जाव -सिय कठियोगपपसोगाढे ४ । एवं जाव-अणंतपपसिए ।
- ७५. [प्र०] परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं कड तुम्म-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओघादेसेणं कड तुम्मपपसोगाढा, णो तेयोग०, नो कलियोग० । विहाणादेसेणं नो कड तुम्मपपसोगाढा, णो तेयोग०, नो वायर०, कलिओगपप-सोगाढा ।
- ७६. [प्रव] दुष्पपसिया णं-पुच्छा । [उव] गोयमा ! श्रोघादेसेणं कडन्तुम्मपपसोगाडा, तो तेयोगव, नो दाबरव, नो किंखोगव। विद्याणादेसेणं नो कडन्नमपपसोगाडा, नो तेयोगपपसोगाडा, दावरनुम्मपपसोगाडा वि, किल्योगपप-सोगाडा वि।
- ७७. [प्र॰] तिप्पप्सिया णं—पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! ओघादेसेणं कडञ्चम्मपप्सोगाढा, नो तेयोग॰, नो दावर॰, नो कलि॰। विद्याणादेसेणं नो कडञ्चम्मपप्सोगाढा, तेओगपप्सोगाढा वि, दावरञ्चम्मपप्सोगाढा वि, कलिओगपप्सोगाढा वि ३।
- ७८. [प्र॰] चउप्पप्सिया णं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! ओघादेसेणं कडन्नुम्मपप्सोगाढा, नो तेयोग॰, नो दावर॰, नो कलिओग॰ । विहाणादेसेणं कडन्नुम्मपप्सोगाढा वि, जाव-कलिओगपप्सोगाढा वि ४ । पवं जाव-अणंतपप्सिया ।
- ७९. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं कडज़ुम्मसमयद्वितीप, पुच्छा । [४०] गोयमा ! सिय कडज़ुम्मसमयद्वितीप, जाव−सिय कल्किओगसमयद्वितीप । एवं जाव–अणंतपपसिप ।
- ७१. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गल कृतयुग्मप्रदेशावगाढ होय—श्लादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कृतयुग्मप्रदेशावगाढ, त्र्योज परमाणुनी प्रदेशा-प्रदेशावगाढ अने द्वापरयुग्मप्रदेशावगाढ न होय, पण कल्योजप्रदेशावगाढ होय.
- ७२. [प्र०] द्विप्रदेशिक स्कंध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गाँतम । ते कृतयुग्म के त्र्योज प्रदेशाश्रित नथी, पण कदाच द्वापरयुग्म के दिप्रदेशिक कदाच कल्योज प्रदेशाश्रित छे.
- ७३. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं त्रिप्रदेशिक स्कंध कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कृतयुग्म- রিষ্টিকিক प्रदेशाश्रित नथी. पण कदाच त्र्योज, कदाच ढापरयुग्म के कदाच कल्योजप्रदेशाश्रित होय छे.
- ७४. [प्र०] चतुःप्रदेशिक स्कंध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच कृतयुग्मप्रदेशाश्रित होय छे अने यावत्—कदाच चतुःप्रदेशिक कल्योजप्रदेशाश्रित होय छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी जाणहुं.
- ७५. [प्र०] हे मगवन्! द्युं परमाणुपुद्रलो कृतयुग्मप्रदेशाश्रित होय छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सामान्यादेशथी कृतयुग्म परमाणुपुद्गलो प्रदेशाश्रित होय छे, पण ज्योज, द्वापर के कल्योजप्रदेशाश्रित नथी. तथा विशेषादेशथी कृतयुग्म, ज्योज के द्वापरयुग्मप्रदेशाश्रित नथी, पण कल्योजप्रदेशाश्रित होय छे.
- ७६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं द्विप्रदेशिक स्कंधो कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सामान्यादेशथी कियदेशिक स्कन्धो-कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे, पण त्र्योज, द्वापर के कल्योजप्रदेशावगाढ नथी, अने विशेषादेशथी कृतयुग्म प्रदेशमां रहेल नथी, त्र्योज प्रदेशमां रहेल नथी, पण द्वापरयुग्म प्रदेशाश्रित अने कल्योजप्रदेशाश्रित छे.
- ७७. [प्र०] हे भगवन् ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध कृतयुग्मप्रदेशावगाढ छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! सामान्यादेशथी कृतयुग्म- क्षिप्रदेशिक स्कन्धो- प्रदेशाश्रित छे, पण त्र्योज, द्वापर के कल्योज प्रदेशाश्रित नथी. तथा विशेषादेशथी कृतयुग्मप्रदेशाश्रित नथी, पण त्र्योज, द्वापर के कल्यो- जप्रदेशाश्रित होय छे.
- ७८. [१०] चतुःप्रदेशिक स्कंधो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सामान्यादेशथी कृतयुग्मप्रदेशाश्रित होय छे, पण त्र्योज, द्वापरयुग्म के कल्योजप्रदेशाश्रित नथी, तथा विशेषादेशथी कृतयुग्मप्रदेशाश्रित होय छे, यावत्—कल्योजप्रदेशाश्रित पण होय छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्कंधो सुधी जाणुदं.
- ७९. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्गल कृतयुग्मसमयनी स्थितिवाळुं छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! कदाच कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळुं होय छे, यावत्—कदाच कल्योज समयनी स्थितिवाळुं होय छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी जाणवुं.

चतुःप्रदेशिक स्कन्धोः

बनन्तप्रदेशिक परमाण्यादिनी कृत-युग्मादि समयनी स्थितिः

- ८०. [४०] परमाणुपोग्गला णं अंते ! किं कडलुम्म०-पुच्छा । [७०] गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडलुम्मसमयि-तीया, जाय-सिय कलियोगसमयिद्वतीया ४ । विद्वाणादेसेणं कडलुम्मसमयिद्वतीया वि, जाय-कलियोगसमयिद्वतीया वि ४ । एवं जाय-अणंतपरिसया ।
- ८१. [प्र॰] परमाणुपोग्गले णं भंते ! कालवक्षपद्धवेहि किं कडजुम्मे, तेओगे- हैं [ ड॰ ] जहा दितीय वसदया पर्व वश्रेसु वि सहेसु, गंधेसु वि एवं चेव, [एवं] रसेसु वि जाव-'महुरो रसो' ति ।
- ८२. [प्र०] अर्णतपपसिप णं मंते ! संघे कक्सडफासपज्जघेहि कि कडलुम्मे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय कडलुम्मे, जाव-सिय कलिओगे ।
- ८३. [प्र०] अणंतपप्रसिया णं भंते ! संधा कक्सडफासपज्जवेहि किं कडज्रम्मा-पुच्छा । [७०] गोयमा ! ओघावेसेणं सिय कडज्रम्मा, जाय-सिय कलियोगा ७ । विहाणावेसेणं कडज्रम्मा वि, जाय-कलियोगा वि ७ । एवं मउय-गरय-छड्ड्या वि भाणियद्या । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्सा जहा वन्ना ।
  - ८४. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं भंते ! कि सहे अणहे ? [उ०] गोयमा ! नो सहे, अणहे ।
- ८५. [प्र०] तुपपसिए णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सहे, नो अणहे । तिपपसिए जहा परमाणुपोग्गले । चउपपसिए जहा दुपपसिए । पंचपपसिए जहा तिपपसिए । छप्पपसिए जहा दुपपसिए । सन्तपपसिए जहा तिपपसिए । अट्टपपसिए जहा दुपपसिए । नवपपसिए जहा तिपपसिए । दसपपसिए जहा दुपपसिए ।
- ८६. [प्र॰] संखेजापपसिए णं मंते ! खंधे-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय सहे, सिय अणहे । एवं असंखेजापपसिए वि । एवं अणंतपपसिए वि ।
- ८०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्गलो कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळां छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सामान्यादेशधी कृतयुग्म समयनी स्थितिवाळां होय अने यावत्—कदाच कल्योज समयनी स्थितिवाळां होय. तथा विशेषादेशधी कृतयुग्म-समयनी स्थितिवाळां पण होय अने यावत्—कल्योज समयनी स्थितिवाळां पण होय. ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्कंधो सुधी जाणवुं.

वर्णादि पर्यायोनी कृतयुग्मादिरूपताः

- ८१. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्गलना काळा वर्णपर्यायो कृतयुग्मरूप छे, त्र्योज छे–इस्यादि प्रश्न. [उ॰] जेम स्थितिनी कक्तव्यता कही तेम सर्व वर्णनी वक्तव्यता कहेवी. एम बधा गंधो अने रसोने विषे पण यावत्–मधुर रस सुधी एज प्रमाणे जाणातुं.
- ८२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं अनंतप्रदेशिक स्कंधना कर्कशस्पर्शपर्यायो कृतयुग्म छे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच कृतयुग्म छे अने यायत्—कदाच कल्योजकृत्य छे.
- ८३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं अनंत प्रदेशवाळा स्कंधोन। कर्कशर्तपर्शपर्यायो कृतयुग्म छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सामान्या-देशयी कदाच कृतयुग्म अने यावत्—कदाच कल्योज रूप पण होय छे. विशेषादेशथी कृतयुग्म पण छे अने यावत्—कल्योजरूप पण छे. ए प्रमाणे मृदु—कोमळ, गुरु—भारे अने लघु—हळवो—ए स्पर्श कहेवा. अने शीत—ठंडो, उष्ण—उनो, क्रिग्ध—चिक्णो अने रुक्ष—छुखो— ए स्पर्शो वर्णोनी पेठे कहेवा.

परमाणु सार्घ के अनर्थ ! ८४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्रल सार्ध (जेनो अरघो भाग थइ शके तेबुं) छे, के अनर्ध (जेनो अरघो भाग न यह शके तेबुं) छे १ [उ०] हे गौतम ! ते सार्ध नथी, पण अनर्ध छे.

हिप्रदेशिकादि स्थल्य

- ८५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं वे प्रदेशवाळो स्कंध सार्ध छे के अनर्ध छे ! [उ०] हे गौतम ! ते \*सार्ध छे, पण अनर्ध नधी. ए रीते परमाणुपुद्रलनी पेठे त्रण प्रदेशवाळो स्कंध, वे प्रदेशवाळा स्कंधनी पेठे चार प्रदेशवाळो स्कंध, त्रण प्रदेशवाळानी पेठे पांच प्रदेशवाळो स्कंध, वे प्रदेशवाळो स्कंध, वे प्रदेशवाळानी पेठे आठ प्रदेशवाळो स्कंध, त्रण प्रदेशवाळानी पेठे लव प्रदेशवाळो स्कंध, त्रण प्रदेशवाळानी पेठे लव प्रदेशवाळो स्कंध, त्रण प्रदेशवाळानी पेठे लव प्रदेशवाळो स्कंध अने वे प्रदेशवाळानी पेठे दश प्रदेशवाळो स्कंध समजवो.
- ८६. [प्र०] हे भगवन् ! ह्युं संख्यातप्रदेशवाळो स्कंध सार्ध छे के अनर्ध छे ! [उ०] हे गौतम ! ते कदाच सार्ध छे अने कदाच अनर्ध छे. ए प्रमाणे असंख्यात प्रदेशवाळा तथा अनंत प्रदेशवाळा स्कंध संबंधे पण समजबुं.

८५ \* सम-बेकी संख्यावाळा प्रदेशोना जे स्कन्धों छे ते सार्थ छे, कारण के तेना रारखा वे अर्थ भाग यह शके छे. अने विषम-एकी संख्यावाळा प्रदेशोना जे स्कन्धों छे ते अनर्थ छे, कारण के तेना सरखा वे अर्थ भाग यह शकता नवी.

- ८७. [प्र॰] परमाणुपोग्गळा णं संते ! कि सहा, अणहा ? [७०] गोयमा ! सहा वा, अणहा वा । एवं जाव-अणंतपरसिया ।
- ८८. [ब॰] परमाणुपोग्गले णं भंते ! कि सेप, निरेष १ [ज॰] गोयमा ! सिय सेप, सिय निरेष । एवं जाव-अणंत-क्पसिय ।
- ८९. [प्र०] परमाणुपोग्गला णं भंते ! कि सेया, निरेया ! [उ०] गोयमा ! सेया वि, निरेया वि । एवं जाव-अणंतप-पसिया ।
- ९०. [प्र०] परमाणुपुग्गले णं मंते ! सेप कालओ केवचिरं होऱ ! [उ०] गोयमा ! जद्दकेणं एकं समयं, उक्कोसेणं आवित्याप असंखेजक्मागं ।
- ९१. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं संते ! निरेष कालओ केवचिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं असंखेकं कार्ल । एवं जाव-अणंतपपसिष ।
  - ९२. [प्र॰] परमाणुपोग्गला णं भंते ! सेया कालओ केवचिरं होन्ति ! [उ०] गोयमा ! सद्यन्नं ।
- ९३. [प्र॰] परमाणुपोग्गला णं भंते ! निरेया कालओ केवचिरं होंति ! [उ॰] गोयमा ! सद्वद्धं । एवं जाव-अर्णत-पर्यासया ।
- ९४. [प्र॰] परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! सेयस्स केवतियं कालं अंतरं होर १ [उ॰] गोयमा ! सट्टाणंतरं पडुच जह-क्षेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेजं कालं; परट्टाणंतरं पडुच जहभ्रेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेजं कालं।
- ८७. [प्र०] हे भगवन् ! हुं परमाणुपुद्गलो सार्थ छे के अनर्थ छे ! [उ०] हे गौतम ! ते "सार्थ पण छे अने अनर्थ पण छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंत प्रदेशवाळा स्कंधो सुधी समजवुं.
- ८८. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं परमाणुपुद्गल सकंप छे के निष्कंप छे १ [उ०] हे गीतम ! ते कदाच सकंप छे अने कदाच सकंप अने क्षयंव निष्कंप पण छे. ए प्रमाणे यावत्-अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी जाणवुं.
- ८९. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं परमाणुपुद्गलो सकंप छे के निष्कंप छे ! [उ०] हे गौतम ! ते सकंप पण छे अने निष्कंप पण छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंत प्रदेशवाळा स्कंधो सुधी समजवुं.
- ९०, [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गल केटला काल सुधी संकंप रहे ! [उ०] हे गौतम ! ते (परमाणुपुद्गल) जघन्य एक भागाणुर्ता संकंपान समय सुधी अने उत्कृष्ट आवलिकाना असंख्यातमा भाग सुधी सकंप रहे.
- ९१. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्रल केटला काळ सुधी निष्कंप रहे ? [उ०] हे गौतम ! परमाणुपुद्रल जघन्य एक समय कामाणुनी निष्कंप सने उत्कृष्ट असंख्याता काळ सुधी निष्कंप रहे. ए प्रमाणे यात्रत्—अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी जाणवुं.
- ९२. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुङ्गलो केटला काळ सुधी कंपायमान रहे ? [उ०] हे गौतम ! परमाणुपुङ्गलो सदा काळ कंपा-यमान रहे.
- ९३. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गलो केटलो काळ निष्कंप रहे ! [उ०] हे गौतम ! सदा काळ निष्कंप रहे. ए प्रमाणे यावत्— परगाणुओगी निष्कं-धनंतप्रदेशवाळा स्कंधो सुधी जाणवं.
- ९४. [प्र०] हे भगवन्! संकप परमाणुपुद्गलने केटला काळनुं अंतर होय ! अर्थात् पोतानी कंपायमान अवस्थायी बंध पडी पाछो केटले काळे कंपे ! [उ०] हे गौतम ! <sup>†</sup>खस्थानने आश्रयी जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट असंख्य काळनुं अंतर होय. परस्थानने आश्रयी जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट असंख्य काळनुं अंतर होय.

नकप परमाणुन् अंतर.

८० \* ज्यारे घणा परमाणुओ समसंख्याबाळा होय छे त्यारे ते सार्ध अने विषमसंख्याबाळा होय छे त्यारे अनर्ध कहेवाय छे, कारण के संघात-परस्पर मळवाशी क्षने मेद-जुदा पडवाशी तेनी संख्या अवस्थित होती नधी, तेशी ते वजे रूपे छे.

९४ । परमाणु परमाणुअवस्थामां -स्कन्धवी वियुक्तावस्थामां होय त्यारे खस्थान कहेवाय छे, अने ज्यारे स्कन्धावस्थामां होय छे त्यारे परस्थान कहेवाय छे, अने ज्यारे स्कन्धावस्थामां होय छे त्यारे परस्थान कहेवाय छे, अने जस्त्यान काल पर्यन्त चलनिव्याची बन्ध पडी फरी चाले त्यारे खस्थानने आथयी जघन्यची एक समयनुं अतर होय छे, अने उत्कृष्टची ते परमाणु असंख्यात काल पर्यन्त कोह स्थले स्थिर रहीने पुनः बाले त्यारे असंख्यात कालनुं अन्तर होय छे. ज्यारे परमाणु द्विप्रदेशादिक स्कन्धना अन्तर्गत होय अने जघन्य एक समयनुं अन्तर होय पण ज्यारे ते परमाणु असंख्यात काल पर्यन्त द्विप्रदेशादिक स्कन्यक्पे रहीने पुनः ते स्कन्धयी जुदो पडीने चाले त्यारे परस्थानने आध्यी उत्कृष्ट असंख्यात काल पर्यन्त द्विप्रदेशादिक स्कन्यक्पे रहीने पुनः ते स्कन्धयी जुदो पडीने चाले त्यारे परस्थानने आध्यी उत्कृष्ट असंख्यात कालने छे।

- ९५. [प्र०] निरेयस्स केवतियं कालं अंतरं हो १ [उ०] गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच जहकेणं एकं समयं, उक्कोसेणं आविक्रयाप असंखेळाइभागं; परट्ठाणंतरं पडुच जहकेणं एकं समयं, उक्कोसेणं असंखेळं कालं।
- ९६. [प्र०] दुपपसियस्स णं मंते ! खंधस्स सेयस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सहाणंतरं पडुच जहन्नेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेळां कालं, परहाणंतरं पडुच जहनेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं । [प्र०] निरेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सहाणंतरं पडुच जहनेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं आविलयाप असंखेळाइमागं; परहाणंतरं पडुच जहनेणं पकं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं । एवं जाव-अणंतपपसियस्स ।
- ९७. [प्र०] परमाणुपोग्गलाणं अंते ! सेयाणं केवतियं कालं अंतरं होत् ! [उ०] गोयमा ! नित्य अंतरं । [प्र०] निरेवा-णं केवतियं कालं अंतरं होत् ! [उ०] गोयमा ! नित्य अंतरं । एवं जाव-अणंतपप्रसियाणं संघाणं ।
- ९८. [प्र॰] पपसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सेयाणं, निरेयाण य कयरे कयरेहितो जाव-विसेसाहिया वा १ [उ०] गोयमा ! सहत्योचा परमाणुपोग्गला सेया, निरेया असंग्रेजगुणा, पवं जाव-असंग्रिजणपसियाणं संधाणं ।
- ९९. [प्र०] एपसि णं भंते ! अणंतपपसियाणं खंधाणं सेयाणं, निरेयाण य कयरे कयरे० जाव-विसेसाद्विया चा ! [७०] गोयमा ! सद्वत्थोवा अणंतपपसिया खंधा निरेया, सेया अणंतगुणा ।
- १००. [प्र०] एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं संखेजपएसियाणं, असंखेजपपसियाणं, अणंतपपसियाण य संघाणं सेयाणं निरेयाण य वृद्यद्वयाप परसद्वयाप वृद्यद्वपएसद्वयाप कयरे कयरे० जाव-विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सद्यत्थोषा

निष्कम्प परमाणुनुं अन्तरः ९५. [प्र॰] हे भगवन् ! निष्कंप परमाणुपुद्गलनुं केटळा काळतुं अंतर होय !–निष्कंप परमाणुपुद्गल कंपीने पाछी केटले काळे निष्कंप थाय ! [उ॰] हे गौतम ! <sup>\*</sup>स्वस्थानने आश्रयी जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट आवलिकाना असंख्य भागतुं तथा परस्था-नने आश्रयी जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट असंख्य काळतुं अंतर होय.

सकम्य अने निष्कम्य हिमदेशिकादि स्क-न्धनु अन्तरः निष्कम्य द्विभदेशि-कादि स्कन्धनु अन्तरः ९६. [प्र०] हे भगवन् ! सकस्प वे प्रदेशवाळा स्कंधने केटला काळनुं अंतर होय ? [उ०] हे गौतम ! क्स्याननी अपेक्षाए जघन्य एक समयनुं अने उत्कृष्ट असंख्यात काळनुं तथा परस्थाननी अपेक्षाए जघन्य एक समयनुं अने उत्कृष्ट अनंत काळनुं अंतर होय . [प्र०] हे भगवन् ! वे प्रदेशवाळा निष्कंप स्कंधने केटला काळनुं अंतर होय ? [उ०] हे गौतम ! खस्थाननी अपेक्षाए जघन्य एक समयनुं अने उत्कृष्ट अनंत काळनुं अंतर होय . ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी जाणवुं.

सकम्य परमाणुओनु अन्तर.

९७. [प्र०] हे भगवन् ! सकम्प परमाणुपुद्गलोनुं केटला काळनुं अंतर होय ! [उ०] हे गौतम ! देखोनुं अंतर नथी. [प्र०] निष्कंप परमाणुपुद्गलोनुं केटलुं अंतर होय ! [उ०] हे गौतम ! अंतर नथी. ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्कंधो सुधी जाणबुं-

सकप अने निष्काप परमाणुओनु अवप बहुद्दः असंख्यात प्रदेशिक स्वान्धीः सकम्प अने निष्कम्प अनन्तः प्रदेशिक स्कन्धोनु अन्प-बहुत्वः

अस्पबद्गुन्त्.

९८. [प्र०] हे भगवन् ! पूर्वोक्त सकंप अने निष्कंप परमाणुपुद्गलोमां कया परमाणुपुद्गलो कोनाथी यावत्—विशेषाधिक होय छे ! [उ०] हे गौतम ! सकम्प परमाणुपुद्गलो सीथी थोडां छे, अने निष्कंप परमाणुपुद्गलो असंख्यातगुणां छे. ए प्रमाणे यावत्—असंख्यात प्रदेशवाळा स्कंबो सुधी जाणुतुं.

९९. [प्र०] हे भगवन् ! ए पूर्वोक्त सकम्प अने निष्कंप अनंत प्रदेशवाळा स्कंधोमां कया स्कन्धो कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! अनंत प्रदेशवाळा निष्कंप रकंधो सौथी थोडा छे, अने तेथी अनंत प्रदेशवाळा सकंप स्कंधो अनंतगुण छे.

१००. [प्र०] हे भगवन् ! ए सकंप अने निष्कंप परमाणुपुद्गलो, संख्यात प्रदेशवाळा स्कंधो, असंख्यात प्रदेशवाळा स्कंधो अने अनंत प्रदेशवाळा स्कंधोमां ह्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे तथा द्रव्यार्थप्रदेशार्थपणे कया पुद्गलो कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गीतम ! १ श्वनंत प्रदेशवाळा निष्कंप स्कंधो द्रव्यार्थपणे सौथी योडा छे. २ तेथी अनंत प्रदेशवाळा सकंप स्कंधो द्रव्यार्थपणे अनं-

९५. \* न्यारे परमाणु निश्चल-स्थिर यहंने जघन्य एक रामय पर्यन्त परिश्रमण करी पुनः स्थिर थाय अने उत्कृष्ट आविलेकाना असंख्यातमा आगरूप असंख्य समय पर्यन्त परिश्रमण करी पुनः स्थिर थाय त्यारे खस्थानने आश्रयी जघन्य समय अने उत्कृष्ट आविलेकानो असंख्यातमो भाग अन्तर होय. परमाणु निश्चल थई पोताना स्थानथी चलित थाय अने जचन्य एक समय पर्यन्त द्विप्रदेशादि स्कन्धरूपे रहीने पुनः निश्चल थाय अने उत्कृष्ट असंस्थ्यात काळ सुधी द्विप्रदेशादि स्कन्धरूपे रही तेथी जुदो थईने स्थिर थाय त्यारे परस्थानने आश्रयी जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तर होय.

९६ दिप्रदेशिक स्कन्ध चलित थईने अनन्त काळपर्यन्त उत्तरोत्तर बीजा अनन्त पुद्रलोनी साथै संबन्ध करतो पुनः तेज परमाणुनी साथै संबद्ध थईने पुनः चाले त्यारे परस्थानने आध्यी उत्कृष्ट अनन्त बाळनुं अन्तर होय.—टीका.

९० 🕽 सकम्प परमाणुपुद्गलो लोकमां सर्घदा विद्यमान होवाशी तेने विषे अन्तर होतुं नशी.

९०० परमाणुपुहलो, संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशिक स्कन्धोना सकंप अने निष्कम्य पक्षना इच्यार्थरूपे आठ विकल्प थाय छे, ए प्रमाणे प्रदेशार्थरूपे पण आठ विकल्प थाय छे. उभयार्थरूपे चौद विकल्पो थाय छे, कारण के सकम्प अने निष्कम्प परमाणुओना इन्यार्थता अने प्रदेशार्थता पदने बदले इन्यार्थाप्रदेशार्थता रूप एकज पद कहेलुं. एटले सोळ विकल्पना बदले चाँच विकल्पो थाय छे.

अणंतपयसिया संधा निरेया द्वहुयाए १, अणंतपयसिया संधा सेया द्वहुयाय अणंतगुणा २, परमाणुणेग्गला सेया द्वहु-याय अणंतगुणा ३, संसे ज्ञपयसिया संधा सेया द्वहुयाय असंसे ज्ञगुणा ४, असंसे ज्ञपयसिया संधा सेया द्वहुयाय असंसे-ज्ञगुणा ५, परमाणुपोग्गला निरेया द्वहुयाय असंसे ज्ञगुणा ६, संसे ज्ञपयसिया संधा निरेया द्वहुयाय संसे ज्ञगुणा ७, अ-संसे ज्ञपयसिया संधा निरेया द्वहुयाय असंसे ज्ञगुणा ८। पयसहुयाय एवं चेव। नवरं परमाणुपोग्गला अपयसहुयाय माणि-यद्वा। संसे ज्ञपयसिया संधा निरेया पयसहुयाय असंसे ज्ञगुणा; सेसं तं चेव। द्वहुययय-सहयाय-सव्हयाय अणंतगुणा ३, ते चेव पयसहुयाय अणंतगुणा ४, ते चेव पयसहुयाय अणंतगुणा २, अणंतपयसिया संधा सेया द्वहुयाय असंसे ज्ञगुणा ६, ते चेव पयसहुयाय असंसे ज्ञगुणा ६, ते चेव पयसहुयाय असंसे ज्ञगुणा ७, असंसे ज्ञपयसिया संघा सेया द्वहुयाय असंसे ज्ञगुणा १, परमाणुपोग्गला निरेया द्वहुयाय असंसे ज्ञगुणा १०, संसे ज्ञगुणा १०, परमाणुपोग्गला निरेया द्वहुयाय असंसे ज्ञगुणा १०, संसे ज्ञगुणा विवास स्वव्या स्वया स्वय

- १०१. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं मंते ! किं देसेष, सम्वेष, निरेष ! [उ०] गोयमा ! नो देसेष, सिय सम्वेष, सिय निरेष ।
- १०२. [प्र०] दुपपसिए णं भंते ! खंधे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय वेसेप, सिय सन्नेप, सिय निरेप । एवं जाव-
- १०३. [प्र०] परमाणुपोग्गला णं मंते ! कि देसेया, सक्वेया, निरेया ! [उ०] गोयमा ! नो देसेया, सक्वेया वि निरेया वि ।
- १०४. [प्रc] दुपपसिया णं भंते ! खंघा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! देसेया वि, सद्वेया वि, निरेया वि । एवं जाध-

तगुणा छे. ३ तेथी सकंप परमाणुपुद्गलो द्रव्यार्थपणे अनंतगुणां छे. ४ तेथी संख्यात प्रदेशबाळा सकंप स्कंबो द्रव्यार्थपणे असंख्यात-गुणां छे. ५ तेथी असंख्यात प्रदेशबाळा सकंप स्कंघो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणां छे. ६ तेथी निष्कंप परमाणुपुद्गलो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणां छे. ७ तेथी असंख्यात प्रदेशबाळा निष्कंप स्कंघो द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणां छे. ८ तेथी असंख्यात प्रदेशबाळा निष्कंप स्कंघो द्रव्यार्थपणे अमंख्यातगुणां छे. प्रदेशार्थपणे पण एज रीते आठ विकल्पो जाणवा. विशेष ए के, परमाणुपुद्गलो (प्रदेशार्थने बदले) अप्रदेशार्थपणे कहेवां. संख्यात प्रदेशबाळा निष्कंप स्कंघो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे. बाकी वधुं तेज प्रमाणे समजवुं. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे—१ अनंतप्रदेशबाळा निष्कंप स्कंघो द्रव्यार्थपणे सौथी योडा छे. २ अने तेज स्कंघो प्रदेशार्थपणे अनंतगुणा छे. ३ अनंत प्रदेशबाळा सकंप स्कंघो द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा छे. ५ सकंप परमाणुपुद्गलो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. ५ अने तेज स्कंघो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे. ८ असंख्यात प्रदेशबाळा सकंप स्कंघो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. ८ असंख्यात परमाणुपुद्गलो द्रव्यार्थ-अप्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे. १० निष्कंप स्कंघो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. १० अने तेज स्कंघो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. १० अने तेज स्कंघो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे.

१०१. [प्र०] हे भगवन् ! ह्युं परमाणुपुद्गल अमुक अंदो कंपे छे, सर्व अंदो कंपे छे, के निष्कंप छे ! [उ०] हे गौतम ! ते परमाणुनो कम्प अमक अंदो कंपतो नथी, पण कदाच सर्व अंदो कंपे छे अने कदाच निष्कंप रहे छे.

१०२. [प्र०] हे भगवन् ! क्युं द्विप्रदेशिक स्कंध अमुक अंशे कंपे छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच अमुक अंशे किपदेशिकादि कर न्धनो कर्प कंपे छे, कदाच सर्व अंशे कंपे छे अने कदाच निष्कंप पण रहे छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंत प्रदेशवाळा स्कंध सुधी जाणवुं.

१०३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्गली अमुक अंशे कंपे छे, सर्व अंशे कंपे छे के निष्कंप रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! परमाणुओनो बन्ध. तेओ अमुक अंशे कंपता नथी, पण सर्व अंशे कंपे छे अने निष्कंप पण रहे छे.

१०४. [प०] हे भगवन् ! शुं दिप्रदेशिक स्कंधो अमुक अंशे कंपे छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ अमुक अंशे डिप्रदेशिकादि स्कं स्थीनो कम्प. कंपे छे, सर्व अंशे पण कंपे छे अने निष्कंप पण रहे छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंत प्रदेशवाळा स्कंध सुधी जाणतुं.

१०० क हव्यार्थतासूत्रने विषे संख्यातप्रदेशिक निष्कंप स्कन्धो निष्कस्प परमाणुओशी संख्यातपुणा कह्या, अने प्रदेशार्थतासूत्रमा ते परमाणुओ करतां ते स्कन्धो असंख्यात गुणा कह्या, तेतुं कारण ए छ के निष्कस्प परमाणुओशी निष्कस्प संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो हव्यार्थक्षे संख्यातपुणा होय छे, अने तेमांना घणा स्कन्धोमां उत्कृष्ट संख्याबाळा प्रदेशो होबाथी निष्कस्प परमाणुओशी प्रदेशार्थक्षे असंख्यातपुणा होय छे. केमके उत्कृष्ट संख्यामां एक संख्या उमेरतां असंख्यात थाय छे.

- १०५. [प्रव] परमाणुपोग्गले णं भंते ! सम्रेप कालओ केवचिरं होह ! [जव] गोयमा ! जहमेणं पकं समयं, उद्योसेणं आविलयाप असंसेज्जहमागं।
  - १०६. [प्र०] निरेये कालओ केवचिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! अहचेणं एकं समयं, उद्गोसेणं असंकेखं काछं ।
- १०७. [प्र॰] दुपएसिए णं भंते ! संघे वेसेए कालओं केवनिरं होह ? [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं, उन्नोसेणं भावलियाए असंखेजहमागं ।
- १०८. [प्र०] सब्वेप कालक्षो केविचरं होइ ? [उ०] गोयमा ! जहक्रेणं पकं समयं, उक्कोलेणं आविलयाप असंखे-जहभागं।
- १०९. [प्र०] निरेष कालओ केवचिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं पकं समयं, उक्कोलेणं असंकेळां कालं । पदं आव–अणंतपप्रसिष् ।
  - ११०. [प्रत] परमाणुपोग्गला णं मंते ! सब्वेया कालओ केवचिरं होति ! [उ०] गोयमा ! सब्बदं ।
  - १११. [प्रः] निरेया कालओ केवचिरं होंति ? [उ०] सबद्धं।
  - ११२. [प्र०] तुप्पपसिया णं भंते ! संधा देसेया कालओ केविचरं० ? [उ०] सच्छं ।
  - ११३. [प्र०] सबेया कालओ केवचिरं० ? [उ०] सबद्धं।
  - ११४. [प्र०] निरेया कालओ केवचिरं० ? [उ०] सष्ठदं । एवं जाव-अणंतपपसिया ।
- ११५. [प्र०] परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! सब्वेयस्स केवतियं कालं अंतरं होर ? [उ०] गोयमा ! सहाणंतरं पहुच जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं असंखेजं कालं; परहाणंतरं पहुच जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं एवं चेव ।
- ११६. [प्र०] निरेयस्स केवतियं अंतरं होइ ! [उ०] सट्ठाणंतरं पडुच जहन्नेणं पक्कं समयं, उक्कोसेणं भावलियाप असं-केज्जइमागं; परट्ठाणंतरं पडुच जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं असंखेजं कालं।

परमाणुना कपननी काळ १०५. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गल केटला वसत सुधी सर्व अंशे कंपे ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य एक समय सुधी अने उत्कृष्ट आवलिकाना असंख्यातमा भाग सुधी सकंप होय.

परमाणुना अक्षप-बनो काळ १०६. [प्र०] ते केटल बखन सुची निष्कंप रहे ! [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक समय सुधी अने उत्कृष्ट असंख्यात काळ सुधी निष्कंप रहे.

द्विमदेशिकादि स्कन्ध नो देशकपनकाळ.

१०७. [प्र०] हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध केटला काल सुधी देशथी—अमुक अंशे कंपे ! [उ०] हे गौतम ! ते जबन्य एक समय सुधी अने उत्कृष्ट आविलकाना असंख्यातमा भाग सुधी देशथी कंपे.

सर्वर्कपनकाञ्च.

१०८. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटला वखत सुधी सर्व अंशे कंपे ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट आव-लिकाना असंख्यातमा भाग सुधी सर्व अंशे कंपे.

निष्कपन काळ

१०९. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटला काळ सुधी निष्कंप रहे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य एक समय सुधी अने उत्कृष्ट असंख्य काळ सुधी निष्कंप रहे. ए प्रमाणे यावत्—अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी जाणवुं.

परमाणुओनो कपन काळ. निष्कंपन काळ. डिप्र देशिकादि स्कर्योः

नो देशकपन काळः

- ११०. [प्र॰] हे भगवन् ! परमाणुपुद्रलो केटला काळ सुधी सर्व अंशे कंपे ! [उ॰] हे गौतम ! तेओ सदा काळ कंपे.
- ११९. [प्र०] हे भगवन् ! तेओ केटला काल सुधी निष्कंप रहे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ बधी काल निष्कंप रहे.
- ११२. [प्रत] हे भगवन् ! वे प्रदेशवाळा स्कंबो केटला वखन सुची देशथी कंपे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ बघो काळ देशथी कंपे.
- ११३. [प्र०] तेओ केटला वखत सुधी सर्व अंशे कंपे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ बधो काळ सर्व अंशे कंपे.

सर्वेकपन कोळ. अकंपन कोळ. ११४. [प्र॰] तेओ केटला वखत सुधी निष्कंप रहे ? [उ॰] हे गौतम । तेओ बघी काळ निष्कंप रहे. ए प्रमाणे यात्रत्—अनंत प्रदेशबाळा स्कंघी सुधी जाणबुं.

सर्वांचे सर्वांपर- ११५. [प्र०] हे भगवन्! सर्वांदो सकंप परमाणुपुद्गलनुं केटला काळनुं अंतर होय**? [उ०] हे गौतम**! स्वस्थानने आश्रयी जघन्य एक समयनुं अने उत्कृष्ट असंख्यात काळनुं अंतर होय. तथा परस्थाननी अपेक्षाए जघन्य एक समयनुं अने उत्कृष्ट असंख्य काळनुं अंतर होय-

निष्कप परमाणुनु अंतर.

११६. [प्र०] हे भगवन् ! निष्कंप परमाणुपुद्रलतुं केटला काळतुं अंतर होय? [उ०] हे गौतम ! स्वस्थानने आश्रयी जघन्य एक समयतुं अने उत्कृष्ट आवित्काना असंख्यातमा भागतुं अंतर होय. तथा परस्थानने आश्रयी जघन्य एक समयतुं अने उत्कृष्ट असंख्यात काळतुं अंतर होय.

१ संखेजगुणा ग-घ.

- ११७. [प्र०] तुपपसियस्स णं भंते ! खंधस्स देसेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ? [उ०] सट्टाणंतरं पहुच अहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं असंखेखं कालं; परट्टाणंतरं पडुच जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं।
  - ११८. [प्र॰] सम्वेयस्स केवतियं कालं॰ ? [उ॰] एवं चेव जहा देसेयस्स ।
- ११९. [प्र०] निरेयस्स केवतियं० ? [उ०] सट्टाणंतरं पहुच जहस्रेणं एकं समयं, उक्कोसेणं आविष्टियाए असंखेजह-भागं, परद्वार्णतरं पडुच जहन्नेणं एकं समयं, उक्तोसेणं अर्णतं कालं । एवं जाव-अर्णतपप्रसियस्स ।
  - १२०. [प्र०] परमाणुपोग्गलाणं भंते ! सबेयाणं केयतियं कालं अंतरं होइ ? [उ०] नित्य अंतरं ।
  - १२१. [प्र०] निरेयाणं केषतियं० ? [उ०] नित्थ अंतरं।
  - १२२. [प्र०] दुपएसियाणं भंते ! खंधाणं देसेयाणं केवतियं कालं० ! [उ०] नित्य अंतरं ।
  - १२३. [प्र०] सब्वेयाणं केवतियं कालं० १ [उ०] नत्थि अंतरं ।
  - १२४. [प्र॰] निरेयाणं केवतियं कालं॰ ! [उ॰] निष्य अंतरं । एवं जाव-अणंतपप्रसियाणं ।
- १२५. [प्र०] एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सबेयाणं निरेयाण य कयरे कयरे० जाव-विसेसाहिया या ? [उ०] गोयमा ! सद्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सबेया, निरेया असंखेजागुणा ।
- १२६. [प्र०] एएसि णं भंते ! दुपपसियाणं खंधाणं देसेयाणं, सन्नेयाणं, निरेयाण य कयरे कयरे० जाव-विसेसा-हिया वा ? [उ०] गोयमा ! सद्वत्थोवा दुपपसिया खंघा सद्वेया, देसेया असंखेळगुणा, निरेया असंखेळगुणा। एवं जाव-असंखेजापपसियाणं संघाणं।
- ११७. [प्र०] हे भगवन् ! अंशतः सकंप द्विप्रदेशिक स्कंधने केटल काळतुं अंतर होय ? [उ०| हे गातम ! स्वस्थाननी अपे क्षाए जबन्य एक समयनुं, अने उत्कृष्ट असंख्यात काळनुं अंतर होय; तथा परस्थाननी अपेक्षाए जबन्य एक रामय अने उत्कृष्ट अनंत काळनं अंतर होय.

देशथी मकंप दिप्रदेशिक सान्धर्नु अंतर.

- ११८. [प्रव] हे भगवन् ! सर्व अंशे सकंप द्विप्रदेशिक स्कंधने केटल काळने अंतर होय ! [उव] हे गौनम ! देशथी-अमुक सर्वेगकष डिप्रदेशिक स्क्रास्थनं अन्तर-अंशे सकंप द्विप्रदेशिक स्कंधनी पेठे तेनं अंतर जाणवं.
- ११९, [प्र०] हे मगवन् ! निष्कंप द्विप्रदेशिक स्कंधने केटला काळनुं जंतर होय ? [उ०] हे गाँतम ! स्वस्थाननी अपेक्षाए निष्याप दिष्यदे शिक्तने जधन्य एक समयनुं अने उत्कृष्ट आविष्काना असंख्यातमा भागनुं; तथा परस्थाननी अपेक्षाए जघन्य एक समयनुं अने उत्कृष्ट अनंत अन्तर. काळनुं अंतर होय. ए प्रमाणे यावत्-अनंतप्रदेशिक स्कंध सुधी जाणवुं.
  - १२०. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वांशे संकंप परमाणुपुद्रलोने केटला काळतुं अंतर होय ! [उ०] हे गौतम ! तेओने अंतर नथी.

गरप परमाणुक्रीतुं अन्तर.

१२१. [प्र०] हे भगवन् ! निष्कंप परमाणुपुद्गलोने केटल काळतुं अंतर होय ! [उ०] हे गीतम ! तेओतुं अंतर नथी.

अवस्य परमाणुको**तुं** अंतर

१२२. [प्र०] हे भगवन् ! अमुक अंशे सकंप द्विप्रदेशिक स्कंधोने केटल काळनुं अंतर होय ! [उ०] हे गीतम ! तेओने अंतर नथी.

अंशव'स्यत्य दि**प्र**-देशिक स्युन्धोनं

१२३. [४०] हे भगवन्! सर्वोशे सकंप द्विप्रदेशिक स्कंधोने केटला काळतुं अंतर होय! [उ०] हे गीनम! तेओने सर्वतः वर्तप डिप्रदे-अंतर नधी.

> नियाम दिन्देशिक रक्षां अन्तरः

िक म्बर्ग्गानु

- १२४. [प्र०] हे भगवन् ! निष्कंप द्विप्रदेशिक स्कंषोने केटला काळनुं अंतर होय ! [उ०] हे गौतम ! तेओने अंतर नथी, ए प्रमाणे यावत्—अनंत प्रदेशवाळा स्कंघो सुधी समजवं.
- १२५. [प्र०] हे भगवन् ! सकंप अने निष्कंप ए परमाणुपुद्गलोमां कया परमाणुपुद्गलो कोनाथी यायत्—विदोपाधिक होय ! सक्षय अने निध्यंत्र परमाणुकोनु अस्प-[उ॰] हे गौतम ! सकंप परमाणुपुद्गलो सौथी थोडां छे, अने तेथी निष्कंप परमाणुपुद्गलो अमंख्यातगुणां छे. वषुत्व-
- १२६. [प०] हे भगवन् ! ए अंशतः सकंप, सर्वांश सकंप अने अकंप द्विप्रदेशिक स्कन्धोमां कया स्कन्धो कोनायी यावत्-विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! सर्वोश संकंप द्विप्रदेशिक स्कंधो सौथी घोडा छे, तेथी अंशतः संकंप द्विप्रदेशिक स्कंधो अनंस्यात गुणा छे अने तेपी अकंप द्विप्रदेशिक स्कंघो असंख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे यावत्—असंख्यातप्रदेशिक स्कंधो सुधी जाणवुं.

स । प अने निश्तंप द्विप्रदेशिक स्कल्पी<u>न</u> ३ ३५ वहा**त.** 

१२७. [प्र॰] पपसि णं मंते ! अणंतपपसियाणं संघाणं देसेयाणं, सद्येयाणं, निरेयाण य कयरे कयरे॰ जाव-विसे-साहिया वा १ [उ॰] गोयमा ! सद्यत्थोवा अणंतपपसिया संघा सद्येया, निरेया अणंतगुणा, देसेया अणंतगुणा ।

अनन्तप्रदेशिकर्तुं अल्पवनुःस- १२७. [प्र०] हे भगवन् ! अंशतः सर्कप, सर्वोश सर्कप अने अकंप अनेत प्रदेशिक स्कंधोमां कया स्कन्धो कोनाथी यावत्— विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! सर्वोश सर्कप अनंतप्रदेशिक स्कंधो सौधी थोडा छे, तेथी निष्कंप अनंत प्रदेशिक स्कंधो अनंत-गुणा छे, अने तेथी अंशतः सर्कप अनंतप्रदेशिक स्कंधो पण अनंतगुणा छे.

द्रव्यार्थादिरूपे पर-माणु वगेरेनु अल्प-बहस्ब-

१२८. प्रि. हे भगवन् ! अंशतः सकप, सर्वांश सकप अने निष्कंप परमाणुपद्गलोना संख्यात प्रदेशिक स्कंबी, असंख्यात प्रदेशिक स्कंधो तथा अनंतप्रदेशिक स्कंधोमां इच्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने इच्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कया स्कन्धो कोनाथी यावत्-विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! १ सर्वोश सकंप अनंतप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे सीथी थोडा छे. २ निष्कंप अनंतप्रदे-शिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा छे. ३ अंशतः सकंप अनंत प्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा छे. ४ सर्वौश सकंप असंख्यातप्रदेशिक स्कंभो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुण छे. ५ सर्थोशे सकप संख्यातप्रदेशिक स्कंभो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. ६ सर्वारो सकंप परमाणुपुद्रहो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छै. ७ अंशतः सकंप संख्यातप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. ८ अंशतः सकंप असंख्यातप्रदेशिक स्कंघो द्रव्यार्थपणे अमंख्यातगुण। छे. ९ निष्कंप परमाणुपुद्धछो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. १० निष्कंप संख्यातप्रदेशिक स्कंघो द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा छे. ११ निष्कंप असंख्यातप्रदेशिक स्कंघो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. प्रदेशार्थपणे—सर्वोरो सकंप अनंतप्रदेशिक रकंघो प्रदेशार्थपणे सौथी थोडा छे. ए प्रमाणे प्रदेशार्थपणे पण जाणवं. विशेष ए के. परमाणुपुद्गलो अप्रदेशार्थपणे कहेवां. संख्यातप्रदेशिक निष्कंप स्कंघो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवं. द्रव्यार्थप्रदेशार्थपणे—१ सर्वीशे संकंप अनंतप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे, सीथी धोडा छे. २ अने तेज स्कंधो प्रदेशार्थपणे अनंतगुणा छे. ३ अनंतप्रदेशिक निष्कंप स्कंघो द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा छे. अने ४ तेज स्कंघो प्रदेशार्थपणे अनंतगुणा छे. ५ अंशतः सकंप अनंतप्रदेशिक स्कंभो द्रव्यार्थपणे अनंतगुणा छे. ६ अने तेज स्कंभो प्रदेशार्थपणे अनंतगुणा छे. ७ सर्वोशे सकंप अमंख्यातप्रदेशिक स्कंघो द्रव्यार्थपणे अनंत्गुणा छे. ८ अने तेज प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे. ९ सर्वोशे सकंप संख्यातप्रदेशिक स्कंघो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. १० अने तेज स्कंधो प्रदेशार्थपणे संख्यातगुणा छे. ११ सर्वोशे सकंप परमाणुपुद्गलो द्रव्यार्थ-अप्रदेशार्थपणे असंख्या-तगुणा छे. १२ अंशतः सकंप संख्यात प्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. १३ अने तेज स्कंधो प्रदेशार्थपणे संख्यातगुणा के. १९ अंशतः सकंप असंख्यातप्रदेशिक स्कंधो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा के. १५ अने तेज स्कंधो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा के. ९६ निष्कंप परमाणुपद्वलो द्रव्यार्थ-अप्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे. १७ संख्यातप्रदेशिक निष्कंप स्कंधो द्रव्यार्थपणे संख्यातगुणा

अगुणा १६, संबेजपपिसया खंघा निरेया द्वह्याप संबेजगुणा १७, ते चेव पपसट्टयाप संबेजगुणा १८, असंबेजपपिस-या निरेया द्वह्याप असंबेजगुणा १९, ते चेव पपसट्टयाप असंबेजगुणा २०।

१२९. [प्र०] कित णं भंते ! धम्मित्यकायस्स मज्झपपसा पन्नता ? [७०] गोयमा ! अट्ट धम्मित्यकायस्स मज्झप-पसा पन्नता ।

- १३०. [प्र०] कति णं मंते ! अधम्मत्थिकायस्य मञ्झपएसा पन्नत्ता ? [उ०] एवं चेव ।
- १३१. [प्र॰] कति णं भंते ! आगासत्थिकायस्स मज्झपपसा पन्नता ? [उ०] एवं चेव ।
- १३२. [प्र॰] कति णं मंते ! जीवत्थिकायस्स मज्झपपसा पन्नता ? [उ॰] गोयमा ! अट्ट जीवत्थिकायस्स मज्झपपसा पन्नता ।
- १३३. [प्र॰] एए णं मंते ! अट्ठ जीवित्यकायस्स मज्झपपसा कितसु आगासपपसेसु श्रीगाहंति ? [उ॰] गोयमा ! जहनेणं पकंसि वा दोहिं वा तीहिं वा चउहिं वा पंचिंहे वा छिंह वा उक्रोसेणं अट्टसु, नो चेव णं सत्तसु । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! ति' ।

#### पणवीसहमे सए चउत्थो उद्देसी समत्तो ।

छे. १८ अने तेज स्कंघो प्रदेशार्थपणे संख्यातगुणा छे. १९ असंख्यात प्रदेशिक निष्कंप स्कंघो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. २० अने तेज स्कंघो प्रदेशार्थपणे असंख्यातगुणा छे.

१२९. [प्र॰] \*हे भगवन् ! धर्मास्तिकायना मध्य ग्रदेशो केटला कह्या छे ? [उ॰] हे गौतम ! धर्मास्तिकायना \*आठ मध्य प्रदेशो कह्या छे.

धर्मान्तिकायना मध्य प्रदेशीः

१३०. [प्र०] हे भगवन् ! अधर्मास्तिकायना मध्य प्रदेशो केटला कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! एज प्रमाण जाणवुं.

भधभौसिकायना मध्य प्रदेशी-आकाशना मध्य

१३१. [प्र॰] हे भगवन् ! आकाशास्तिकायना मध्य प्रदेशो केटला कहा छे ! [उ॰] हे गाँतम ! एज प्रमाणे जाणवुं.

प्रदेशो-

१३२.[प्र०] हे भगवन् ! जीवास्तिकायना मध्य प्रदेशो केटल कदा छे ! [उ०] हे गौतम ! जीवास्तिकायना आठ गध्य <sub>जीवना मध्य प्रदेशो</sub>. प्रदेशो कहा छे-

१३३. [प्र०] हे भगवन् ! जीवास्तिकायना ए आठ मध्य प्रदेशो आकाशास्तिकायना केटच्य प्रदेशोमां समाइ शके ! [उ०] हे जीव गौतम ! ते जघन्य गेएक, बे, त्रण, चार, पांच, अने छ प्रदेशमां समाय तथा उत्कृष्ट आठ प्रदेशमां समाय, पण सात प्रदेशमां न समाय. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ने एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

जीवना मध्य प्रदे-जीनी अवगाहना-

# पचीशमां शतकमां चतुर्थं उद्देशक समाप्त.

# पंचमो उद्देसो।

१. [प्र॰] कतिविहा णं भंते ! पज्जवा पम्नत्ता ? [उ॰] गोयमा ! दुविहा पज्जवा पन्नत्ता; तंजहा-जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य । पज्जवपदं निरवसेसं भाणियन्नं जहा पन्नवणाय ।

#### पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! ‡पर्यवो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पर्यवो बे प्रकारना कह्या छे, ने आ प्रमाणे— जीवपर्यवो अने अजीवपर्यवो. अहिं प्रज्ञापनासूत्रनुं समप्र पर्यवपद कहेवुं.

पर्योद-

#### र ओगादा होति का।

१३३ † जीवप्रदेशोनो संकोच अने विकास धर्म होवाबी तेना मध्यवर्ता आठ प्रदेशो जघन्यवी एक आकाशप्रदेशवी मांबी छ आकाशप्रदेशवां रही शके छे अने उत्कृष्ट आठ आकाश प्रदेशमां रहे छे, पण वस्तुस्थभावबी सात आकाशप्रदेशने आश्रयी रहेता नथी.-टीका.

‡ १ पर्यव—गुण, धर्म, विशेष. जीवपर्यव—जीवधर्म, अजीवपर्यव—अजीवधर्म. ते धर्मी अनन्त होय छे. जुओ प्रज्ञा० पद ५ प० १७९-२०३

१२९. \* 'धर्मास्तिकायना आठ मध्य प्रदेशो आठ इनकप्रदेशवर्ता होय छे, 'एम चूर्णिकार कहे छे, अने ते रुचकप्रदेशो मेरना मूळमागना मध्यवर्ती छे. यद्यपि धर्मास्तिकायादि लोकप्रमाण होवाबी तेनो मध्य भाग रुचकथी असंख्य योजन दूर रक्षप्रभाना आकाशनी अंदर आवेलो छे, रुचकवर्ती नथी, तो पण दिशा अने विदिशानी उत्पत्तिस्थान रुचक होवाथी धर्मास्तिकायादिना मध्य तरीके तेनी विवक्षा करी होय एम संभवे छे.-टीका.

- २. [प्र॰] आवल्या णं भंते ! किं संखेजा समया, असंखेजा समया, अणंता समया ? [उ॰] गोयमा ! नो संखेजा समया, असंखेजा समया, नो अणंता समया।
  - ३. [प्रत] आणापाणूणं भंते ! कि संखेजाः ! [उठ] एवं चेव ।
- ४. [प्र०] थोवे णं अंते ! किं संखेजा० ? [उ०] एवं चेव । एवं लवे विः, मुहुत्ते विः, एवं अहोरत्ते, एवं एक्के, मासे, उऊ, अयणे, संवच्छरे, जुगे, वाससये, वाससहस्से, वाससयसहस्से, पुद्वंगे, पुद्वंगे, तुडियंगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववंगे, अववे, हुदुयंगे, हुहुए, उप्पलंगे, उप्पलंगे, पउमेंगे, पउमे, निल्णंगे, निल्णेंगे, केंच्छिपपूरंगे, अच्छिणपूरे, अउयंगे, अउयंगे, निल्णेंगे, निल्णेंगे, निल्णेंगे, निल्णेंगे, निल्णेंगे, पउप, चूलियंगे, चूलिए, सीसपहेलियंगे, सीसपहेलियाः, पिल्ओवमे, सागरोवमे, ओस-िपणी, एवं उस्सिप्पणी वि ।
- ५. [प्र॰] पोग्गलपरियट्टे णं अंते ! कि संखेजा समया, असंखेजा समया, अणंता समया-पुच्छा ।[उ॰] गोयमा ! नो संखेजा समया, नो असंखेजा समया, अणंता समया । एवं तीयद्धा, अणागयद्धा, सम्बद्धा ।
- ६. [प्र॰] आवित्याओ णं मंते! किं संखेजा समया-पुच्छा। [उ॰] गोयमा! नो संखेजा समया, सिय असंखेजा समया, सिय अणंता समया।
  - ७. [प्र॰] आणापाणू णं भंते ! किं संखेजा समया ३ ! [उ॰] एयं चेव ।
  - ८. [प्र॰] थोवा णं भंते ! कि संखेजा समया ३ ! [उ॰] एवं चेव । एवं जाव-'ओसप्पिणीओ' चि ।
- ९. [प्र॰] पोग्गळपरियष्टा णं भंते ! किं संखेजा समया-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! जो संखेजा समया, जो असंखेजा समया, अर्णता समया ।
- १०. [प्र०] आणापाण् णं भंते ! कि संखेजाओ आवित्याओ-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! संखेजाओ आवित्याओ, जो असंखेजाओ आवित्याओ । एवं थोवे वि, एवं जाव-'सीसपहेतिय' सि ।

**आव**लिकाः

२. [प्र॰] हे भगवन् ! आविष्याता समयरूप छे, असंख्याता समयरूप छे के अनंत समयरूप छे ? [उ॰] हे गीतम ! आविष्यता संख्याता रामयरूप नथी, तेम अनंत समयरूप पण नथी, परंतु अमंख्याता समयरूप छे.

आनप्राणादि.

- **३.** [प्र॰] हे भगवन् ! आनप्राण-श्वासोच्छास ए श्चं संख्याता समयरूप छे-इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे जाणवुं.
- ४. [प्र०] हे भगवन् ! स्तोक संस्थाता समयरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! एज प्रमाणे जाणवुं. अने ए प्रमाणे लव, मुहूर्त, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, अयन , संवत्सर, युग, सो वर्ष, हजार वर्ष, लाख वर्ष, पूर्वाग, पूर्व, त्रृटितांग, त्रृटित, अटटांग, अटट, अववांग, अवव, हूहूकांग, हूहूक, उत्पलांग, उत्पल, पद्मांग, पद्म, निल्नांग, निल्न, अच्छिनिप्रांग, अच्छिनिप्र, अयुतांग, अयुत, नयु-तांग, नयुत, प्रयुतांग, प्रयुत, चूलिकांग, चूलिकां, शीर्षप्रहेलिकांग, शीर्षप्रहेलिकां, पल्योपम, सागरोपम, अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणीना समयो संबंधे पण जाणवुं. अर्थात्—एमांना प्रत्येकना असंख्याता समयो छे.

पुद्रलपरिवर्त.

५. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलपरिवर्त ए शुं संख्याता समयरूप छे, असंख्याता समयरूप छे के अनंत समयरूप छे ! [उ०] हे गौतम ! ते संख्याता समयरूप नथी, असंख्याता समयरूप नथी, पण अनंत समयरूप छे. ए प्रमाणे भूतकाळ, भविष्यत्काळ तथा सर्व-काळ विषे पण जाणवुं.

व्यावलिकाओ.

६. [प्र०] हे भगवन् ! आविलकाओ चुं संख्याता समयरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आविलकाओ संख्याता सम-यरूप नथी, पण कदाच असंख्याता समयरूप होय, अने कदाच अनंत समयरूप होय.

व्यानप्राणी.

७. [प्र०] हे भगवन् ! आनप्राणो हुं संख्याता समयरूप छे—इत्सादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणहुं.

स्तोको-

८. [प्र॰] हे भगवन् ! स्तोको द्युं संख्याता समयरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. अने ए प्रमाणे यावत्—अव-सर्पिणीओ सुधी समजवुं.

पुद्रलपरिवर्ती.

९. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्रल्परिवर्ती ए शुं संख्याता समयरूप छे—इत्यादि प्रश्नः [उ०] हे गौतम ! संख्याता समयरूप नथी, असंख्याता समयरूप नथी, पण अनंत समयरूप छे.

थानप्राण.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! आनप्राण ए शुं संख्याती आविलकारूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते संख्याती आविलकारूप छे, पण असंख्याती के अनंत आविलकारूप नथी. ए प्रमाणे स्तोक संबंधे पण जाणवुं. यावत्—वीर्षप्रहेलिका सुधी पण एम जाणवुं.

- ११. [प्र॰] परिभोषमे णं भंते ! कि संखेखा ६-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! णो संखेखाओ आविरुयाओ, असंखेखाओ भाविरुयाओ, नो अणंतामो आविरुयाओ । एवं सागरोवमे विः, एवं ओसन्पिणी विः, उस्सिप्पिणी विः।
- १२. [प्र॰] पोग्गलपरियहे—पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! नो संखेजाओ आविलयाओ, णो असंखेजाओ माविलयाओ, अर्णताओ आविलयाओ । एवं जाव–सद्वद्धा ।
- १३. [प्र॰] आणापाणू णं मंते ! कि संखेजाओ आवित्याओ-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय संखेजाओ आवित्र-याओ, सिय असंखेजाओ, सिय अणंताओ । एवं जाव-सीसपहेत्रियाओ ।
- १४. [प्र॰] पिल्योवमा णं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! णो संखेखाओ आविल्याओ, सिय असंखेखाओ वाविल्याओ, सिय अणंताओ आविल्याओ । एवं जाव-उस्सिप्पिणीओ ।
- १५. [म॰] पोग्गलपरियद्वा णं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! णो संखेजाओ आविलयाओ, णो असंखेजाओ आविलयाओ, अर्णताओ आविलयाओ ।
- १६. [प्र॰] षोवे णं मंते ! ार्फे संसेजाओ आणापाणूओ, असंसेजाओ० ? [उ०] जहा आवलियाप वसवया एवं आणापाणूओ वि निरवसेसा । एवं एतेणं गमएणं जाव—सीसपहेलिया भाणियवा ।
- १७. [प्र॰] सागरोबमे णं मंते ! किं संखेजा पिल्योवमा?-पुरुष्ठा ! [उ॰] गोयमा ! संखेजा पिल्योवमा, णो असं-खेजा पिल्योबमा, णो अणंता पिल्योवमा । एवं ओसिप्पणीय वि, उस्सिप्पणीय वि ।
- १८. [प्र॰] पोग्गलपरियट्टे णं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! णो संकेजा पलिओयमा, णो असंवेजा पिलेओयमा, अणंता पिलेओयमा । एवं जाय-सञ्चला ।
- १९. [प्र॰] सागरोबमा णं मंते ! किं संखेजा पिल्ञोबमा-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय संखेजा पिल्ञोबमा, सिय अणंता पिल्ञोबमा । एवं जाव-ओसिपणी वि, उस्सिपणी वि ।
- ११. [प्र०] हे भगवन् ! पत्योपम शुं गंढ्याती आवित्कारूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते संख्याती आवित्कारूप क्योपम नथी, तेम अनंत आवित्कारूप नथी, पण असंख्याती आवित्कारूप छे. ए प्रमाणे सागरोपम, अवसीर्पणी अने उत्सीर्पणी संबंधे पण जाणवुं.
- १२. [प्र॰] पुद्गलपरिवर्त केटली आविष्किराद्यप छे--इस्मादि प्रश्नः [उ॰] हे गौतम ! ते संख्याता आविलकारूप नथी, असंख्याती प्रश्नलपर्विके आविलकारूप नथी, पण अनंत आविलकारूप छे. ए प्रमाणे यावत्—सर्वाद्धा सुधी जाणवुं.
- १३. [प्र०] हे भगवन् ! आनप्राणो द्युं सख्याती आविष्यकारूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच संख्याती आव- अनिकारूप एण होय, कदाच असंख्याती आविष्यकारूप एण होय अने कदाच असंत आविष्यकारूप एण होय. ए प्रमाणे यावत्—शीर्पप्रहे- विका सभी जाणवं.
- १४. [प्र॰] हे भगवन् ! पल्योपमो शुं संख्याती आविङकारूप छे-इत्सादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! ते संख्याती आविङकारूप कल्योपमो. नथी, पण कदाच असंख्याती अने कदाच अनंत आविङकारूप छे. ए प्रमाणे यावतू—उत्सर्पिणीओ सुधी जाणवुं.
- १५. [प्र॰] हे भगवन् ! पुद्रलपरिवर्ती द्युं संख्याती आविलकारूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! संख्याती आविलकारूप पुद्रलपरिवर्ती नथी, असंख्याती आविलकारूप नथी, पण अनंत आविलकारूप छे.
- १६. [प्र॰] हे भगवन् ! स्तोक द्युं संख्याता आनप्राणरूप छे के असंख्याता आनप्राणरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] जेम आवलिका स्रोक संबंधे क्कान्यता कही तेम बधी आनप्राण संबंधे पण जाणवी. ए प्रमाणे ए पूर्वोक्त गम—पाठवडे यावत्—शीर्षप्रहेलिका सुधी समजबुं.
- १७. [प्र॰] हे भगवन् ! सागरोपम द्युं संख्याता पत्योपमरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! ते संख्याता पत्योपमरूप छे, मागरोपम पण असंख्याता के अनंत पत्योपमरूप नथी. ए प्रमाणे अवसर्पिणी अने उत्सर्पिणी संबन्धे पण जाणदुं.
- १८. [प्र०] हे भगवन्! पुद्रलपरिवर्त शुं संख्याता पत्योपमरूप छे-इत्सादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! संख्याता के असंख्याता प्रद्रव्यविकां पत्योपमरूप निर्माण यावत्—सर्वोद्धा सुधी जागतुं.
- १९. [प्र॰] हे भगवन्! सागरोपमो शुं संख्याता पल्योपमरूप छे—हत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम! ते कदाच संख्याता पल्योपम- सागरोपमो होय छे, कदाच असंख्याता पल्योपमरूप होय छे अने कदाच अनंत पल्योपमरूप पण होय छे. ए प्रमाणे यावत्—अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणी संबंधे पण जाणवं.

- २०. [प्र०] पोग्गरुपरियष्टा णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! णो संखेजा परिश्रोवमा,णो असंखेजा परिश्रोवमा, अणंता परिश्रोवमा ।
- २१. [प्र॰] ओसप्पिणी णं भंते ! किं संखेजा सागरोवमा॰ ? [उ॰] जहा पिल्लओवमस्स वत्तवया तहा सागरो-वमस्स वि ।
- २२. [प्र॰] योग्गलपरियद्दे णं भंते ! किं संखेजाओ ओसप्पिणि–उस्सप्पिणीओ–पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! **णो संखे**-जाओ ओसप्पिणि–उस्सप्पिणीओ, णो असंखेजाओ, अणंताओ ओसप्पिणि–उस्सप्पिणीओ । एवं जाव–सबदा ।
- २३. [प्र॰] पोग्गलपरियष्टा णं भंते ! कि संखेजाओ ओसप्पिणि-उस्सिप्पिणीओ-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! णो संखे-जाओ ओसप्पिणि-उस्सिप्पिणीओ, णो असंखेजाओ, अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सिप्पिणीओ ।
- २४. [प्र॰] तीतद्वा णं मंते ! कि संखेजा पोग्गलपरियद्दा–पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! नो संखेजा पोग्गलपरियद्दा, नो असंखेजा, अणंता पोग्गलपरियद्दा । एवं अणागयद्वा विः, एवं सद्वद्वा वि ।
- २५. [प्र॰] अणागयाद्वा णं मंते ! कि संखेजाओ तीतद्वाओ, असंखेजाओ, अणंताओ ! [उ॰] गोयमा ! णो संखे-जाओ तीतद्वाओ, णो असंखेजाओ तीतद्वाओ, णो अणंताओ तीतद्वाओ । अणागयद्वा णं तीतद्वाओ समयाद्विया, तीतद्वा णं अणागयद्वाओ समयूणा ।
- २६. [प्र॰] सद्यद्या णं भंते ! कि संखेजाओ तीतद्याओ-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! णो संखेजाओ तीतद्याओ, णो असंखेजाओ, णो अणंताओ तीयद्याओ । सद्यद्या णं तीयद्याओ सातिरेगदुगुणा, तीतद्या णं सद्यद्याओ धोवूणए अद्रे ।

पुद्रलपरिवर्ती-

२०. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्रळपरिवर्तो छुं संख्याता पल्योपमरूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते संख्याता पल्योपम-रूप नथी, असंख्याता पल्योपमरूप नथी, पण अनंत पल्योपमरूप छे.

अवसपिणी.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! अवसर्पिणी द्यं मंख्याता सागरोपमो छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेम पत्योपमनी वक्तव्यता कही तेम सागरोपमनी पण वक्तव्यता कहेवी.

पुटलपरिवर्तः

२२. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्रलपरिवर्त हां संख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीरूप छे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते संख्याती के असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीरूप नथी, पण अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीरूप छे. ए प्रमाणे यावत्—सर्वाद्धा सुधी जाणवुं.

पुद्रलपरिवर्तीः

२३. [प्र॰] हे भगवन् ! पुद्रलपरिवर्ती द्यं संख्याती उत्सर्पिणीओ अने अवसर्पिणीओ छे-इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गीतम ! ते गंख्याती के असंख्याती उत्सर्पिणीओ अने अवसर्पिणीओ नथी, पण अनंत उत्सर्पिणीओ अने अवसर्पिणीओ छे.

अतीताद्वा.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! अतीताद्धा—भूतकाळ ए शुं संख्याता पुद्रलपरिती छे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! ते संख्याता के असंख्याता पुद्रलपरिवर्ती नथी, पण अनंत पुद्रलपरिवर्ती छे. ए प्रमाणे अनागन काळ अने सर्वाद्धा विषे पण जाणबुं.

अनागताद्धाः

२५. [प्र०] हे भगवन् ! अनागताद्वा—भविष्यत्काळ द्यं संख्याता \*अतीताद्वारूप छे, असंख्याता अतीताद्वारूप छे के अनंत अतीता-द्वारूप छे ! [उ०] हे गौतम ! भविष्यत्काळ संख्याता अतीताद्वा, असंख्याता, के अनंत अतीताद्वारूप नथी, पण अतीताद्वा—भूतकाळथी अनागताद्वा—भविष्यत्काळ एक समय अधिक छे अने भविष्य काळ करतां भूतकाळ एक समय न्यून छे.

सर्वाङ्गः

२६. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वाद्धा संख्याता अतीताद्धारूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! संख्याता, असंख्याता के अनंत अती-ताद्धारूप नयी, किंतु अतीताद्धा—भूतकाळ करतां <sup>†</sup>सर्वाद्धा कांईक अधिक बमणो छे, अने अतीताद्धा—भूतकाळ सर्वाद्धा करतां कांइक न्यून अर्धभागरूप छे.

२५ \* अतीताद्वाची अनागताद्वा समयाधिक छे, कारण के अतीतकाळ अने अनागत काळ अनादिपणाची अने अनन्तपणाची समान छे, ते बक्षेनी बक्षे भगवंतनो प्रश्न समय छे अने ते अविनष्ट होवाची अतीतकाळमां तेनो समाविश्च थतो नधी, पण अविनष्टत्व धर्मना साधम्यंची तेनो अनागत काळमां समाविश याय छे. माटे अतीतकाळची अनागतकाळ समयाधिक छे, अने अनागत काळची अतीतकाळ समय न्यून छे.

१६ <sup>†</sup> सर्वोद्धा अतीतकाळ करतां वर्तमान समय अधिक बमणो छे, अने अतीतकाळ सर्वाद्धा करतां समय न्यून अर्ध भागक्ष्प छे. अहिं कोह आचार्य कहे छे के अतीतकाळथी अनागतकाळ अनन्त गुण छे, ''तेणंता तीशद्धा अणागयद्धा अनन्तगुणा''॥ अनन्त पुद्रल परावर्तक्ष्य अतीताद्धा छे, तेषी अनन्तगुण अनागताद्धा छे. जो वर्तमान समये अतीतकाळ अने अनागत काळ सरखा होय तो वर्तमान समयनो अतिकम यतां अनागतकाळ एक समय न्यून बको, अने पछी बे, त्रण, चार इत्यादि समयो घटता तेनुं सरखापणुं रहेरो निहं, भाटे बच्चे काळ समान नधी, पण अतीतकाळथी अनागत काळ अनन्तगुण छे. तेणी अनन्त काळनो अतिकम थवा छतां तेनो क्षय यतो नथी.'' तेनो उत्तर ए छे के अतीतकाळ अने अनागत काळनुं समानपणुं कहेवामां आवे छे ते अनादित्य अने अनन्तत्वयडे विवक्षित छे. जेम अतीतकाळनी आदि नथी, तेम अनागत काळनो अन्त नथी, माटे बच्चे सरखापणुं छे.—टीका.

- २७. [प्र॰] सप्तता णं भन्ते ! किं संखेजाओ अणागयदाओ-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! णो संखेजाओ अणागय-दाओ, णो असंखेजाओ अणागयदाओ, णो अणंताओ अणागयदाओ । सप्तदा णं अणागयदाओ थोवूणगदुगुणाः अणा-गयदा णं सप्तदाओ सातिरेगे अदे ।
- २८. [प्र॰] कतिविद्या णं मंते ! णिओवा पश्चता ! [उ॰] गोयमा ! दुविद्या णिओदा पश्चता । तंजदा-णिओयगा य णिओयगजीवा य ।
- २९. [प्र॰] णिओदा णं मंते ! कतिविद्या पद्मत्ता ? [७०] गोयमा ! दुविद्या पद्मत्ता, तंजदा-सुदुमनिगोदा य बाय-रनिओगा य, पर्व निओगा भाणियद्या जद्या जीवाभिगमे तदेव निरवसेसं ।
- ३०. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! णामे पन्नते ! [उ०] गोयमा ! छिन्नहे णामे पन्नते, तंजहा-१ओदहए, जाय-६सिन्नवाहए । [प्र०] से किं तं उदहए णामे ! [उ०] उदहए णामे दुविहे पन्नते, तंजहा-उदए य उदयनिष्कन्ने य-एवं जहा सत्तरसमसए पढमे उद्देसए भावो तहेय हह वि । नवरं हमं नामणाणतं, सेसं तहेय, जाय-सन्नियाहए । 'संवं भंते ! सेवं भंते ! ति ।

#### पणवीसइमे सए पंचमी उद्देशी समतो।

२७. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वाद्धा शुं संख्याता अनागताद्धा—भविष्यत्काळ रूप छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गीतम ! ते संख्याता, असंख्याता के अनंत अनागताद्धारूप नथी, किंतु भविष्यत्काळ करतां सर्वाद्धा काईक न्यून वमणो छे, अने अनागताद्धा सर्वाद्धा करतां कांइक अधिक अरधो छे.

सर्वाद्धा अने भविष्यत्माळ.

२८. [प्र॰] हे भगवन् ! निगोदो केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ॰] हे गीतम ! निगोदो वे प्रकारना कहा छे. ते आ प्रमाणे— \*निगोदो अने निगोदजीवो. निगोदना प्रकार-

२९. [प्र०] हे भगवन् ! निगोदो केटल प्रकारना कहा। छे ! [उ०] हे गीतम ! निगोदो बे प्रकारना कहा। छे. ते आ प्रमाणे— सूक्ष्मनिगोद अने बादरनिगोद. ए प्रमाणे <sup>†</sup>जीवाभिगम सूत्रमां कहा। प्रमाणे बधा निगोदो कहेवा-

निगोदोना प्रकारः

नामना प्रकार-

३०. [प्र०] हे भगवन्! नाम-भाव केटल प्रकारनुं कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! नाम-भाव छ प्रकारनुं कह्युं छे. ते आ प्रमाणे-१ औदियक, यावत्-६ सांनिपातिक. [प्र०] हे भगवन्! औदियक नाम-भाव केटला प्रकारनुं छे ? [उ०] हे गौतम ! औद-यिक नाम वे प्रकारनुं कह्युं छे. ते आ प्रमाणे-उदय अने उदयनिष्णत्न. ए प्रमाणे बधुं !सत्तरमा शतकना प्रथम उद्देशकमां भाव संबन्धे कह्युं छे ते प्रमाणे अहिं पण कहेनुं. पण तेमा विशेष आ प्रमाणे छे-त्यां भाव संबन्धे कह्युं छे अने अहीं नाम संबंधे यावत्-सांनिपातिक सुची कहेनुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'-एम कही यावत्-विहरे छे.

### पचीशमा शतकमां पंचम उद्देशक समाप्त.

#### छद्वओ उद्देसो ।

पन्नवण १ वेद २ रागे ३ कप्प ४ चिरत्त ५ पिडसेवणा ६ णाणे ७।
तित्थे ८ लिंग ६ सरीरे १० खेते ११ काल १२ गृह १३ संजम १४ निगासे १५॥ १॥
जोगु १६ वओग १७ कसाए १८ लेसा १९ पिरणाम २० वंध २१ वेदे २२ य।
कम्मोदीरण २३ जवसंपजहन्न २४ सन्ना २५ य आहारे २६॥ २॥
भव २७ आगरिसे २८ कालं २९ तरे ३० य समुग्धाय ३१ खेत्त ३२ फुसणा य ३३।
भावे ३४ पिरमाणे ३५ वि य अप्पाबहुयं ३६ नियंठाणं ॥ ३॥

#### छट्टो उद्देशक.

आ उद्देशकमां निर्प्रन्थोने विषे नीचे दर्शावेला छत्रीश विषयो कहेवाना छे—१ प्रज्ञापन, २ वेद, ३ राग, ४ कल्प, ५ चारित्र; ६ प्रतिसेवना, ७ ज्ञान, ८ तीर्घ, ९ लिंग, १० शरीर, ११ क्षेत्र, १२ काळ, १३ गति, १४ संयम, १५ निकाश—मंनिकर्ष, १६ योग, १७ उपयोग, १८ कषाय, १९ लेक्या, २० परिणाम, २१ बन्ध, २२ वेद—कर्मनुं वेदन, २३ उदीरणा, २४ उपमंपद्—हान (स्वीकार अने स्थाग), २५ संज्ञा, २६ आहार, २७ भव, २८ आकर्ष, २९ काळमान, ३० अन्तर, ३१ समुद्धात, ३२ क्षेत्र ३३ स्पर्शना, ३४ माव, ३५ परिमाण, अने ३६ अल्पवहुल्व.

२९ \* अनन्तकायिक जीवना शारीरने निगोद कहेवामां आवे छे अने अनन्तकायिक जीवोने निगोदना जीवो कहे छे. चर्मचधुणी जे शरीरो देखी शकाय ते बादर निगोद अने जे देखी न शकाय तेने सूक्ष्म निगोद कहे छे. २९ † जीवा० प्रति० ५ उ० २ प० ४२३–२ ‡ ३० जुओ भग० श० १७ उ० १ ९० ३२०

- १. [प्र॰] रायगिहे जाव-एवं वयासी-कित णं भंते ! णियंटा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंच णियंटा पन्नत्ता, तंजहा-१ पुलाए, २ वउसे, ३ कुसीले, ७ णियंटे, सिणाए ।
- २. [प्र॰] पुलाए णं भंते ! कतिविहे पश्चसे ? [उ॰] गोयमा ! पंचिवहे पश्चसे, तंजहा-१ नाणपुलाए, २ दंसणपु-लाए, ३ चरित्तपुलाए, ४ लिंगपुलाए, ५ अहासुहुमपुलाए णामं पंचमे ।
- ३. [प्र०] वउसे णं भंते ! कतिविद्दे पन्नसे ? [उ०] गोयमा ! पंचविद्दे पन्नसे, तंजहा-१ आभोगवउसे, २ अणामो-गवउसे, ३ संबुडवउसे, ७ असंबुडवउसे, ५ अहासुहुमवउसे णामं पंचमे ।
- ४. [प्र॰] कुसीले णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–पडिसेयणाकुसीले य कसाय-कुसीले य ।
- ५. [प्र०] पडिसेयणाकुसीले णं भंते ! कतिविहे पन्नते ! [उ०] गोयमा ! पंचिवहे पन्नते, तंजहा-१ नाणपिडसेय-णाकुसीले, २ दंसणपिडसेयणाकुसीले, ३ चरित्तपिडसेयणाकुसीले, ४ लिंगपिडसेयणाकुसीले, ५ अहासुहुमपिडसेयणाकु-सीले णामं पंचमे ।

१ प्रज्ञापन∽ निर्धन्यना प्रकारः १. [प्र०] राजगृह नगरमां [ भगवान् गीतम ] यावत्–आ प्रमाणे बोल्या–हे भगवन् ! निर्प्रन्थो केटला कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! निर्प्रन्थो पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे– १ प्रलाक, २ बकुश, ३ कुशील, ४ निर्प्रन्थ अने ५ स्नातक.

पुलाकना प्रकार-

२. [प्र॰] हे भगवन् ! पुळाकना केटला प्रकार कह्या छे ! [उ॰] हे गीतम ! पुळाकना पांच प्रकार कह्या छे. ते आ प्रमाणे— १ <sup>†</sup>ज्ञानपुळाक, २ दर्शनपुळाक, ३ चारित्रपुळाक, ४ ळिंगपुळाक अने ५ यथासृहसपुळाक.

बकुशना प्रकार-

३. [प्र०] हे भगवन् ! बकुराना केटला प्रकार कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! बकुराना पांच प्रकार कह्या छे, ते आ प्रमाणे— [१आभोगबकुरा, २ अनाभोगबकुरा, ३ संवृतबकुरा, ४ असंवृतबकुरा अने ५ पांचमो यथासृक्ष्मबकुरा.

कुशीलता प्रकार-

४. [प्र०] हे भगवन् ! कुशीलना केटला प्रकार कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! कुशीलना बे प्रकार कह्या छे, ते आ प्रमाणे प्रतिसेवनाकुशील अने कपायकुशील.

प्रतिसेवना कुर्शालना प्रकार ५. [प्र०] हे भगवन् ! प्रतिसेवनाकुशीलना केटल प्रकार कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रतिसेवनाकुशीलना पांच प्रकार कह्या छे, ते आ प्रमाणे—\$१ ज्ञानप्रतिसेवनाकुशील, २ दर्शनप्रतिसेवनाकुशील अने ५ पांचमो यथामृक्ष्मप्रतिसेवनाकुशील.

१ \* बाह्य अने अभ्यन्तर प्रन्थ-परिप्रहरहित निर्प्रन्थ या सापुओ कहेवाय छे ते बधाने सर्वविरित चारित्र छता चारित्रमोहनीय कर्मना क्षयोपरामा-दिकृत विशेषनाथी तेना पुलाकादि पांच मेदो छे. पुलाक-निःसार धान्यनो कण, तेनी पेठे संयमसाररहित पुलाक कहेवाय छे. ते संयमवान् छतां दोषवडे संयमने कईक असार करे छे. वकुश-चित्र वर्ण, तेनुं चारित्र विचित्र होवाथी ते बकुश कहेवाय छे. दोषना संबन्धथी जेनुं शील कुत्सित-मिलन थयुं छे ते कुशील. प्रन्थ-मोहनीय रहित ते निर्प्रन्थ वाने घाती कर्मनुं क्षालन करवाथी आत-शुद्ध थयेल ते आतक कहेवाय छे. पुलाकना वे प्रकार छे-लव्धिपुलाक अने प्रतिसेवापुलाक. लव्धिपुलाक-पुलाकलव्धियुक्त, जे पोतानी लव्धियी संघादिना कार्यनिमित्ते चक्रवर्तिनो पण नाश करे. आ संबन्धे अन्य आचार्यो आ प्रमाणे कहे छे-'प्रतिसेवनथी-विराधनाथी जे शानपुलाक छे तेने ज आवी लब्धि होय छे अने तेज लब्धिपुलाक कहेवाय छे. ते सिवास बीजो कोइ लब्धि-पुलाक नथी.

२ <sup>†</sup> प्रतिसेवनापुलाकने आश्रयी पुलाकना पांच प्रकार छे. ज्ञाननी विराधना करनार ज्ञानपुलाक, एवी रीते दर्शनादिपुलाक पण जाणवा. ''जे स्विलितादि दूषणविं ज्ञानने, शंकादि दृषणविं सम्यक्तने अने अहिंसादि मूलगुण तथा उत्तरगुणनी विराधनाथी चारित्रने विराधे छे-दृषित करे छे ते अनुक्रमे ज्ञानपुलाक, दर्शनपुलाक अने चारित्रपुलाक जाणवा. जे निष्कारण अन्य लिंग धारण करे ते लिंगपुलाक, अने जे मनथी अकल्पित-सेववा अमोग्य दोषोने ग्रेवे ते यथासूक्ष्म कहेवाय छे.—टीका.

३ ‡ बकुराना वे प्रकार छे-उपकरणबकुरा अने शरीरबबुद्धा. जे बक्षपात्रादि उपकरणनी विश्वषा करवाना खभाववाळी होय ते उपकरणबकुरा अने जे हाथ, पग, नख, मुख वगेरे शरीरना अवयवने सुशोमित राखे ते शरीरबबुद्धा. आ बन्ने प्रकारना बकुराना पांच प्रकार छे-१ शरीर-उपकरणादिने सुशो-भित करवा साधुओंने अयोग्य छे एम जाणवा छतां तेवा प्रकारनो दोष सेवे ते आभोगबकुरा अने अजाणतां दोष सेवे ते अनाभोगबकुरा. चारित्रना आहेंसादि मूळ गुणो अने उत्तरगुणोवडे ढंकायेखो होय ते संवृत अने तेशी भिन्न ते असंवृत. आंख अने मुखने साफ राखनार यथासुस्मवकुरा कहेवाय छे.

४ <sup>¶</sup> प्रतिसेवना—विराधना, कर्याचिद् उत्तर गुणोनी विराधनावडे कुक्तील–दूषित चारित्रवाळो प्रतिसेवनाकुक्तील क्षने संज्वलन कवायोव**वे दूषित चारि-**त्रवाळो कवायकुक्तील.

५ \$ प्रतिसेवनाकुत्तीलना पांच प्रकार छे. ज्ञानादिवडे उपजीविका करनार ज्ञानादिकुतील कहेवाय छे. अने 'आ तपस्त्री छे'–एवी प्रजांसाची जे खुरा धाय ते यथास्क्ष्म कुत्तील कहेवाय छे.

- ६. [प्र०] कसायकुसीले णं भंते ! कतिविहे पन्नते ! [उ०] गोयमा ! पंचविहे पन्नते, तंजहा-१ नाणकसायकुसीले, २ दंसणकसायकुसीले, ३ चरित्तकसायकुसीले, ४ लिंगकसायकुसीले, ५ अहासुहुमकसायकुसीले णामं पंचमे ।
- ७. [प्र॰] नियंडे णं भंते ! कितियिहे पश्चते ! [उ॰] गोयमा ! पंचिवहे पश्चते, तंजहा-१ पढमसमयनियंडे, २ अपढमस-मयनियंडे, ३ चरमसमयनियंडे, ४ अवरमसमयनियंडे, ५ अहासुहुमनियंडे णामं पंचमे ।
- ८. [प्र॰] सिणाए ण भंते ! कतिविद्दे पन्नते ? [उ०] गोयमा ! पंचविद्दे पन्नते, तंजहा-१ अच्छवी, २ असवले, ३ अकम्मेसे, ७ संसुद्धन।णदंसणधरे अरहा जिणे केवली, ५ अपरिस्तावी १।
  - [प्रo] पुलाए जं भंते ! कि सवेयए होजा, अवेदए होजा ! [उ०] गोयमा ! सवेयए होजा । जो अवेयए होजा ।
- १०. [प्र०] जह सवेयए होजा कि रिथियेवए होजा, पुरिसवेयए होजा, पुन्सिनपुंसगवेदए होजा? [उ०] गोयमा! नो रिथिवेदए होजा, पुरिसवेयए होजा, पुरिसनपुंसगवेयए वा होजा।
  - ११. [प॰] बउसे णं मंते ! कि सबेदए होजा, अवेदए होजा ! [उ॰] गोयमा ! सवेदए होजा, जो अधेदए होजा।
- १२. [प्र॰] जह सवेदए होजा कि इत्यिवेयए होजा, पुरिसवेयए होजा, पुरिसवपुंसगवेदए होजा ? [उ॰] गोयमा ! इत्थिवेयए वा होजा, पुरिसवेयए वा होजा, पुरिसवपुंसगवेयए वा होजा । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।
- ६. [प्र०] हे भगवन् ! कपायकुशीलना केटला प्रकार कत्या छे ? [उ०] हे गाँतम ! 'कपायकुशीलना पांच प्रकार कत्या छे. ते आ प्रमाणे-१ ज्ञानकपायकुशील, २ दर्शनकपायकुशील, २ चारित्रकपायकुशील, ४ विंगकपायकुशील अने पांचमो ५ यथासूक्ष्म-कषायकुशील.

कपायकुशीलना प्रकार-

७. [प्र०] हे भगवन् ! निर्प्रथना केटला प्रकार कहा। छे ! [उ०] हे गैतम ! निर्प्रथना पांच प्रकार कहा छे. ते आ प्रप्राणे—१ प्रिथमसमयवर्ती निर्प्रथ, २ अप्रथमसमयवर्ती (प्रथम समय सिवायना समयोमां वर्तमान ) निर्प्रथ, ३ चरमसमयवर्ती निर्प्रथ, ४ अचरम-समयवर्ती (चरम सभय सिवायना समयोमां वर्तमान ) निर्प्रथ अने पांचमो ५ यथामुरुष निर्प्रथ.

निधन्धना प्रकारः

८. [प्र०] हे भगवन् ! स्नातकना केटल प्रकार कहा छे ! [उ०] ह गीतम ! स्नातकना ‡पांच प्रकार कहा छे, ते आ प्रमाणे–१ अच्छवी ( शरीररहित, काथयोगरहित ) २ अशव ४-दोपरहित विशुद्ध चारित्रवाळो, ३ अकर्मीश ( वार्ता कर्मरहित ), ४ संशुद्ध ज्ञान अने दर्शनने भरनार—आरहेत-जिन—केवली अने ५ पांचमो अपरिस्नामि ( कर्मवन्धरहित )

स्नातकना प्रकारः

९. [प्र०] हे भगवन् ! ह्युं पुलाक निर्प्रत्थ वेदराहित छे के वेदरहित छे : [उ०] हे गातम ! पुलाक वेदसहित छे, पण वेदरहित नथी.

र वेदद्वार− पुलाकने वेदः

- १०. [प्र०] हे भगवन् ! जो पुलाक वेदसहित छे तो छुं ते स्त्रीवेदवाळी हे, पुरुषवेदवाळी छे के पुरुषवपुंगकवेदवाळी छे १ [उ०] हे गोतम ! ते क्लीवेदवाळो नधी, पण पुरुषवेदवाळो अने पुरुषवपुंसकवेदवाळो छे.
  - ११. [प्र०] हे भगवन्! छुं वकुश वेदसहित छे के वेदरहित छे? [उ०] हे गाँतम! बकुश वेदसहित छे, पण वेदरहित नथी.

बतुःश सदेद के बेदरहित?

१२. [प्र०] हे भगवन्! जो बकुरा वेदसहित छे तो छुं ते क्षीयेदवाळो छे, पुरुपवेदवाळो छे क पुरुपनपुंसकवेदवाळो छे १ [उ०] हे गौतम! ते स्त्रीवेदवाळो, पुरुपवेदवाळो अने पुरुपनपुंसकवेदवाळो होय छे. ए प्रभाण प्रांतसेवनाकुसीछ पण जाणवी.

६ <sup>अ</sup> ज्ञान, द्र्यन अने लिंग-वेशनो बोधमानादि कषायमां उपयोग करे ते अनुक्रमे ज्ञानकपायकुरील, दर्शनकपायकुरील अने लिंगकपायकुरील कहेवाय छे. कषायशी जे शाप आपे ते चारित्रकषायकुरील अने जे मात्र मनवी कोषादिने सेवे ते यथासूक्षकपायकुरील कहेवाय छे. अयवा कपायोगडे ज्ञानादिनो विराधक ते ज्ञानादिकषायकुरील कहेवाय छे.

७ ! उपशांतमोह अने क्षीणमोह छन्नस्थनो काळ अन्तर्मुहूर्त प्रमाण छे, तेना प्रथम समयमां वर्तमान प्रथमसमय निर्धन्य अने बाकीना समयमां वर्तमान अप्रथमसमय निर्धन्य कहेवाय छे. एम उपशांतमोह अने क्षीणमोहना चरम समयमां वर्तमान चरम समयनिर्धन्य अने बाकीना समयमां वर्तमान अचरससमयनिर्धन्य कहेवाय छे. सामान्यतः प्रथमादि समयनी विवक्षा सिवायनो निर्धन्य यथाम्६म निर्धन्य कहेवाय छे.

८ ‡ कोहपण टीकाकारे आहिं के अन्यत्र स्नातकना अवस्थाकृत भेदोनी व्याख्या करी नथी, माटे शक-पुरन्दरादिनी पेटे नेओनो सब्दनयकृत मेद होय एम संभवे छे—टीका.

९ ी भहिं पुलाक, बकुश अने प्रतिसेवाकुवीलने उपशमधीण अने क्षपकधीणनो अभाव होवाणी तेओ अवेदक नवी.

१० \$ जीने पुलाकङिथ होती नथी, पण पुलावलिधवाळो पुरुष के पुरुष⊸नपुंसक होय छे. अहिं पुरुष छतां लिगछेदादिवडे कृत्रिमनपुंसक होय ते पुरुषनपुंसक जाणवो, पण खरूपतः नपुंसकवेदवाळो न होय.

- १३. [प्र०] कसायकुसीले णं भंते ! किं सवेवप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सवेदप वा होजा, अवेदप वा होजा ।
- १४. [प्र०] जह अवेदए कि उवसंतवेदए, खीणवेदए होजा ? [उ०] गोयमा ! उवसंतवेदए वा खीणवेदए वा होजा ।
- १५. [प्र०] जह सवेयए होजा कि हत्थिषेदप-पुच्छा। [उ०] गोयमा! तिसु वि जहा बउसो।
- १६. [प्र०] णियंडे णं भंते ! कि सबेदए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! णो सबेयए होजा, अवेयए होजा ।
- १७. [प्र०] जद अवेयए होजा कि उवसंत-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! उवसंतत्रेयए वा होजा, स्रीणवेयए वा होजा ।
- १८. [प्र॰] सिणाए णं भंते ! किं सबेयए होजा॰ ? [उ॰] जहा नियंठे तहा सिणाए वि । नवरं णो उवसंतबेयए होजा, स्रीणवेयए होजा ।
- १९. [प्र॰] पुलाप णं भंते ! किं सरागे होजा, वीयरागे होजा ! [उ॰] गोयमा ! सरागे होजा, णो वीयरागे होजा, पवं जाव–कसायकुसीले ।
  - २०. [प्र०] णियंटे णं भंते ! कि सरागे होजा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! णो सरागे होजा, वीयरागे होजा ।
- २१. [प्र॰] जह वीयरांग होजा कि उवसंतकसायवीयरांगे होजा, खीणकसायवीयरांगे होजा ? [उ॰] गोयमा ! उवसंतकसायवीयरांगे वा होजा, खीणकसायवीयरांगे वा होजा । सिणाप पर्व चेव । नवरं णो उवसंतकसायवीयरांगे होजा, खीणकसायवीयरांगे होजा ३।
- २२. [प्र॰] पुलाए णं भंते ! किं टियकप्पे होजा, अट्टियकप्पे होजा ! [उ॰] गोयमा ! टियकप्पे वा होजा, अट्टियकप्पे वा होजा । एवं जाव-सिणाए ।
- २३. [प॰] पुरुाप णं भंते ! किं जिणकप्पे होजा, थेरकप्पे होजा, कप्पातीते होजा ? [उ॰] गोयमा ! नो जिण-कप्पे होजा, थेरकप्पे होजा, णो कप्पातीते होजा।

कषायकुशील मने-दी के अवेदी ?

- १३. [प्र०] हे भगवन् ! युं कषायकुशील वेदसहित छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गातम ! कपायकुशील \*वेदसहित पण होय अने वेदरहित पण होय.
- १४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वेदरहित होय तो छुं ते उपशांतवेदवाळी होय के क्षीणवेदवाळी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते उपशांतवेदवाळो पण होय अने क्षीणवेदवाळो पण होय.
- १५. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वेदसहित छे तो द्धां ते स्त्रीवेदसहित होय—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! ते बकुशनी पेठै त्रणे वेदमां होय.

म्नेग्रन्य वेदसहित के वेटरहित है

- १६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं निर्प्रथ वेदसिंहत छे-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौनम ! निर्प्रथ वेदसिंहत नथी, पण वेदरिंहत छे.
- १७. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वेदरहित होय तो छुं ते उपशांतवेद होय—इत्यादि पृच्छाः [उ०] हे गौतम ! ते उपशांतवेद पण होय अने क्षीणवेद पण होय.

म्भातकः सवेद के निवेद ? १८. [प्र०] हं भगवन् ! शुं स्नातक वेदसहित होय-इत्यादि पृष्छा. [उ०] हे गाँतम ! ते निर्प्रथनी पेठे वेदरहित होय. पण विशेष ए के, स्नातक उपशांतवेद न होय, पण क्षीणवेद होय.

३ समहार-पुटाक, बकुझ अने कुझील मराग छे के १९. [प्र०] हे भगवन् ! युं पुराक रागसहित होय के वीतराग होय ? [उ०] हे गैतिम ! पुराक रागसहित होय, पण वीतराग न होय. ए प्रभाणे यावत्–कपायकुर्शाल सुधी जाणयुं.

कुशाल मराग छ प बीनराग ? निर्धन्य मराग के बीतराग ?

- २०. [प्र०] हे भगवन्! छुं निर्प्रथ सराग होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गाँतम! ते सराग नथी, पण चीतराग होय छे.
- २१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वीतराग होय तो द्धं उपशांतकपाय वीतराग होय के क्षीणकषाय वीतराग होय. [उ०] हे गौतम ! ते उपशांतकपाय वीतराग होय अने क्षीणकपाय वीतराग पण होय. ए प्रमाण स्नातक पण जाणवो. विशेष ए के स्नातक उपशांतकषाय वीतराग न होय, पण क्षीणकपाय वीतराग होय.

४ कहरदार्-स्थित अने अस्थित-कल्पः

होय अने अस्थितकल्पमा पण होय. ए प्रमाणे यावत्-स्नातक सुधी जाणवु.

णलाक अने कहत.

२३. [प्र॰] हे भगवन् ! क्यं पुलाक जिनकल्पमां होय, स्थविरकल्पमां होय के कल्पातीत होय ! [उ॰] हे गौतम ! ते जिनकल्पमां न होय, कल्पातीत न होय, पण स्थविरकल्पमां होय.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं पुळाक<sup>ा</sup>स्थितकल्पमां होय के अस्थितकल्पमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते स्थितकल्पमां पण

१४ \* कवायकुशील सूक्ष्मसपराय गुणस्थानक सुधी द्वीय छे, ते प्रमत्त, अप्रमत्त अने अपूर्वकरणने विषे सचेद होय अने अनिवृत्तिबादर अने सूक्ष्म-संपरायने यिषे उपशांत के शोणनेद थाय त्यारे अनेदक होय.—टीका.

२२ † पहेला अने छेब्रा तीर्थकरना साधुओ आचेलक्यादि दश कल्पमां स्थित छे, कारण के तेनुं पालन तेओने आवश्यक छे, माटे तेओनो स्थित-कल्प कहेवाय छे, अने तेमां पुरुषक होय छे. मध्यम बावीश तीर्थकरना साधुओ ते कल्पमां कदाच स्थित होय के अस्थित होय, कारण के तेओनुं पालन तेमने आवश्यक नथी, माटे तेओनो अस्थित कल्प छे, अने तेमां पण पुलाक होय छे. एम कातक स्थी जाणबुं.

- २४. प्रिवी बउसे मं-पुच्छा। [उव] गोयमा! जिलकप्ये वा होजा, थेरकप्ये वा होजा, नो कप्पातीते होजा। एवं पडिसेवणाकसीले वि ।
  - २५. [प्र०] कसायकुसीले णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जिणकव्ये वा होजा, थेरकव्ये वा होजा, कव्यातीते वा होजा।
- २६. [प्र॰] नियंटे णं-पुच्छा । [७०] गोयमा ! नो जिणकप्पे होजा, नो धेरकप्पे होजा, कप्पातीते होजा । एवं सिजाए वि ४।
- २७. [प्रः] पुलाप णं भंते ! कि सामाध्यसंजमे होजा, छेओवडावणियसंजमे होजा, परिहारविसुद्धियसंजमे होजा, सुहुमसंपरागसंजमे होजा, अहक्कायसंजमे होजा ? [उ०] गोयमा ! सामाइयसंजमे या होजा, छेओवट्रावणियसंजमे बा होजा, णो परिदारविसुद्धियसंजमे दोजा, णो सुद्दमसंपरागसंजमे होजा, णो अद्दम्खायसंजमे होजा। एवं बउसे वि, पवं पडिसेवणाकुसीले वि ।
- २८. प्रि. कसायकुसीले णं-पुच्छा । जि. गोयमा ! सामाइयसंजमे वा होजा, जाव-सहमनंपरागसंजमे वा होजा, जो अहम्खायसंजमे होजा।
- २९ [प्र०] नियंटे णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! णो सामाइयसंजमे होजा, जाव-णे! सुदुमसंपरागसंजमे होजा, अहक्लायसंजमे होजा। एवं सिणाए वि ५।
- ३०. प्रिटी पुरुष णं भंते ! कि पडिसेयए होजा, अपडिसेयए होजा ! [उठ] गोयमा ! पडिसेयए होजा, णो अपिसिषए होजा।
- ३१. [प्र०] जद पहिसेवप होजा कि मृलगुणपहिसेवप होजा, उत्तरगुणपहिसेवप होजा? [उ०] गोयमा! मूल-गुणपडिसेवए वा होजा, उत्तरगुणपडिसेवए वा होजा। मूलगुणपडिसेवमाणे पंचण्हं आसवाणं अन्नयरं पडिसेवेजाः उत्तरगुणपडिसेवमाणे दसविद्दस्स पश्चक्खाणस्स अन्नयरं पडिसेवेजा ।
- २४. [प्रच] हे भगवन् ! ह्यं वकुश जिनवल्पमां होय-इलादि पृच्छा. [उ०] हे गीतम ! ते जिनवल्पमा होय अने स्थविरवल्पमां होय, पण कल्पातीत न होय. ए प्रमाणे प्रतिसेवनाकुरील पिष पण समज्यं.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! ह्यं कपायकुशील जिनकल्पमां होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गीतम ! ते जिनकल्पमां होय, स्थविरक-कपायकु**त्री**छ अने कल्प. ल्पमा होय, अने 'कल्पातीत पण होय.

२६. [प्र.] हे भगतन् ! क्यं निर्प्रय जिनकल्पमा होय-इत्यादि पृष्टा. [उ.०] हे गौतम ! ते जिनकल्पमां अने स्थनिरकल्पमां न निपन्ध अने कल्प होय, पण किल्पातीत होय. ए प्रमाणे स्नातक सर्वधे पण जाणवुं.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! कुं पुलाक सामायिक संयममां होय, छेदोपस्थानीय रायभगां होय, परिहारविशुद्ध संपामां होय, सूक्ष्म-५ चारित्र~ पुलाव, अने चारिध-संपराय संज्ञममां होय के यथाख़्यात रायममां होय १ (उ०) है गीतम ! ते मामायिक संयममां अने छेदोपस्थापनीय ज्ञायममा होय, पण परिहारविञ्चाद्ध, सुक्ष्ममंपराय के यथाख्यान संयममां न होय. ए प्रमाण वकुश अने प्रांतसेवनाकुक्षील पण समजवी.

२८. प्रि. हे भगवन् ! कपायकुशील कया संयममां होय ! [उ.] हे गीतम ! सामायिक संयम, अने यायत्–सूक्ष्मगंपराय कपायकुशील भने चारिश्र. संयममां होय. पण यथाख्यात संयममां न होय.

२९. [प्रo] हे भगवन् ! निर्प्रथ कया संयममां होय ! [उ०] हे गौतम ! सामायिक के यायत्—सुरुमसंपराय संयममां न होय, पण यथाद्यात संयममां होय. ए प्रमाणे स्नातक विषे पण समजवं.

३०. [प्र०] हे भगवन्! द्युं पुराक चारित्री प्रतिसेचक (संयमविराधक) होय के अप्रतिसेवक (अविराधक) संयमाराधक होय ? [उ ० ] हे गौतम ! ते प्रांतसंबक होय, पण अप्रांतसेवक न होय.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते प्रतिसेवक होय, तो द्युं प्राणातिपानिवरमणादि मृत्युणनो प्रतिसेवक-विराधक होय के प्रत्या-ह्यानादि उत्तरगणनो प्रतिसेवक होय ? [उ०] हे गाँतम ! ते मूलगुणनो प्रतिसेवक-विराधक होय अने उत्तरगुणनो पण प्रतिसेवक होय. मुल्गुणनी विराधना करतो पांच आस्रवोमांना कोइ एक आसवने सेवे. तथा उत्तरगुणनी विराधना करतो दश प्रकारना प्रत्याख्यानमांथी कोई एक प्रत्याख्यानने विराधे.

बक्क्स अने बल्प-

नियंन्थने चारित्र-

६ प्रांतसेयना-पुरुषा अने प्रति-

सेमना-

२५ 🌯 कल्पानीत छद्मस्थ तीर्थंकर सक्ष्यायी होवाबी ते अपेक्षाए कल्पातीतमां पण क्ष्यायकुशील होय.

२६ 🕇 निर्धन्थ कल्पातीत अ होथ छे, कारण के तेने जिनकल्प अने स्थविरकल्पना धर्मो होता नथी. एम झातक पण कल्पातीत अ होय छे.—टीका.

३० 1 संज्वलन कषायना उदयशी संयमिकद्ध आचरण करे ते प्रतिसेवक-संयमिक्सिधक कहेवाय छे.

- ३२. [प्र॰] बउसे णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पडिसेवप होजा, णो अपडिसेवप होजा ।
- ३३. [प्र॰] जर् पडिसेवप होजा कि मूलगुणपडिसेवप होजा, उत्तरगुणपडिसेवप होजा? [उ॰] गोयमा! जो मूलगुणपडिसेवप होजा, उत्तरगुणपडिसेवप होजा। उत्तरगुणपडिसेवमाणे दसविहस्स पद्मक्जाणस्स अन्नयरं पडिसेवेजा। पडिसेवणाङ्गसीले जहा पुलाए।
- ३४. [प्र॰] कसायकुसीले णं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा! जो पडिसेषप होजा, अपडिसेषप होजा। एवं निग्गंधे वि: एवं सिजाए वि ६।
- ३५. [प्र०] पुलाए णं भंते ! कितसु नाणेसु होजा ? [उ०] गोयमा ! दोसु वा तिसु वा होजा । दोसु होज्जमाणे दोसु आभिणिषोहियनाणे सुयनाणे होजा; तिसु होमाणे तिसु आभिणिषोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे होजा । एवं वउसे वि, एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।
- ३६. [प्र०] कसायकुर्साले णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा होजा । दोसु होमाणे दोसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होजा; महचा तिसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-मणपज्जवनाणेसु होजा; चउसु होमाणे चउसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-सुयनाण-ओहिन्नाण-मणपज्जवनाणेसु होजा; चउसु होमाणे चउसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिन्नाण-मणपज्जवनाणेसु होजा। एवं नियंटे वि ।
  - ३७. [प्र॰] सिणाप णं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! एगंमि केवलनाणे होजा ।
- ३८. [प्र॰] पुलाए णं भंते ! केवतियं सुयं अहिज्जेजा ? [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं नवमस्स पुष्टस्स तितयं आयार-वत्थुं, उक्कोसेणं नय पुष्टाइं अहिज्जेजा ।
- ३९. [प्र॰] घउसे-पुच्छा । [उ०] गोयमा! जहन्नेणं अट्ट पवयणमायाओ, उक्कोसेणं देस पुचारं अहिजेखा। एवं पिडसेवणाकुसीले वि।

बकुद्या अने प्रसि-सेवनाः

- ३२. [प्र०] हे भगवन् ! छुं बकुश प्रतिसेवक—विराधक होय—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! ते विराधक होय, पण अविराधक न होय-
- ३३. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते विराधक होय तो द्यं मूलगुणनो विराधक होय के उत्तरगुणनो विराधक होय ! [उ०] हे गीतम ! ते मूलगुणनो विराधक न होय, पण उत्तरगुणनो विराधक होय. उत्तरगुणने विराधको दश प्रकारना प्रस्याख्यानमांथी कोह एक प्रस्याख्यानने विराधे. पुलाकनी पेटे प्रतिसेवनाकुक्षील पण जाणवो.

क्षायकुशील अने प्रतिसेवनाः ३४. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं कपायकुशील संयमितराधक होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गाँतम ! ते विराधक न होय, पण आराधक होय. ए प्रमाणे निर्प्रेय अने स्नातक विषे पण समज्ञुं.

७ शानस्थर-पृलाकने शानः ३५. [प्र०] हे भगवन् ! पुत्राक केटला ज्ञानोमां वर्ते ? [उ०] हे गाँतम ! वे ज्ञानोमां होय के त्रण ज्ञानोमां होय. ज्यारे ते वे ज्ञानोमां होय त्यारे गाँत अने अवधिज्ञानमां होय. ए प्रमाणे बकुश अने प्रतिसेवनाकुशील पण जाणवो.

कषायकुशील अने निर्यन्थोने ज्ञानः ३६. [प्र०] हे भगवन् ! कपायकुशील केटला ज्ञानोमां वर्तमान होय ? [उ०] हे गै।तम ! वे ज्ञानोमां होय, त्रण ज्ञानोमां होय, अथवा चार ज्ञानोमां एण होय. ज्यारे ते वे ज्ञानोमां होय त्यारे मितज्ञान, अवज्ञान अने अवधिज्ञानमां होय, अथवा मित, श्रुत, अविष्ठ अने मनःपर्यवज्ञानमां होय, अने ज्यारे ते चार ज्ञानमां होय त्यारे मित, श्रुत, अविष्ठ अने मनःपर्यवज्ञानमां होय, ए प्रमाणे निर्प्रथिविषे पण जाणवुं.

स्नातयने ज्ञानः

३७. [प्र०] हे भगवन् ! स्नातक केटला ज्ञानमां वर्तमान होय ? [उ०] हे गौतम ! स्नातक एक केवल्ज्ञानमां होय.

८ श्रुतद्वार-पुलाकने श्रुतः ३८. [प्र०] हे भगवन् ! पुटाक केटलुं श्रुत भणे ? [उ०] हे गौतम ! पुटाक जघन्य नवमा पूर्वनी श्रीजी आचार वस्तु सुधी भणे अने उत्कृष्ट संपूर्ण नव पूर्वीने भणे.

बकुञ्चने श्रुतः

३९. [प्र॰] हे भगवन् ! बकुश केटछुं श्रुत मणे ! [उ॰] हे गौतम ! जघन्य \*आठ प्रवचन माता सुधी अने उत्कृष्ट दश पूर्वी भणे. ए प्रमाणे प्रतिसेवनाकुशील पण जाणवो.

१ बोइस-क।

३९ \* पांच समिति अने त्रण गुप्ति रूप अष्ट प्रवचन मातानुं पालन करवारूए चारित्र होय छे, माटे चारित्रवाळाने आष्ट प्रवचन मातानुं परिज्ञान आवर्यक छे, कारण के चारित्र ज्ञानपूर्वक होय छे. माटे बकुशने एटलुं जघन्य भुत होय छे.

- ४०. [प्र०] कसायकुसीले-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अट्ट पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोइस पुषाइं अहि-जोजा । एवं नियंटे वि ।
  - ध१. [प्रo] सिणाए-पुच्छा । [उo] गोयमा! सुयवतिरित्ते होज्जा ७ ।
- ४२. [प्र०] पुलाप णं भंते ! कि तित्थे होजा, अतित्थे होजा ? [उ०] गोयमा ! तित्थे होजा, णो अतित्थे होजा। एवं बउसे वि; एवं पडिसेवणाकुसीले वि।
  - ४३. [प्रo] कसायकुसीले-पुच्छा । [उo] गोयमा ! तित्ये वा होजा, श्रतित्ये वा होजा ।
- ४४. [प्र॰] जह अतित्थे होज्जा कि तित्थयरे होजा; पत्तेयबुद्धे होजा? [उ०] गोयमा ! तित्थगरे वा होज्जा, पत्ते-यहुद्धे वा होज्जा। पवं नियंडे वि; एवं सिणाप वि ८।
- ४५. [प्र॰] पुलाप णं मंते ! कि सिलिंगे होजा, अन्निलेगे होजा, गिहिलिंगे होजा ? [उ॰] गोयमा ! दबलिंगं पहुच सिलेंगे वा होजा, अन्निलेंगे वा होजा, गिहिलिंगे वा होजा, भाविलेंगं पहुच नियमा सिलेंगे होजा, एवं जाव-सिणाप ९ ।
  - ४६. [प्र॰] पुलाप णं भंते ! कइसु सरीरेंसु होजा ! [उ॰] गोयमा ! तिसु ओरालिय-तेया-कम्मपसु होजा ।
- ४७. [प्र॰] बउसे णं भंते !-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तिसु वा चउसु वा होजाः, तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मपसु होजा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउन्निय-तेया-कम्मपसु होजा । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।
- ४८. [प्र०] कसायकुसीले-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा होजा । तिसु होमाणे तिसु भोरा-लिय-तेया-कम्मपसु होजा; चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउविय-तेया-कम्मपसु होजा; पंचसु होमाणे पंचसु ओरा-लिय-वेउविय-आहारग-तेया-कम्मपसु होजा । णियंटो सिणाओ य जहा पुलाओ ।
- ୱ ୦. [प्र०] हे भगवन् ! कपायबुद्धील केटलुं श्रुत भणे १ [उ ०] हे गौतस् ! जघन्य आठ प्रत्रचन माता भणे अने उत्कार चौद क्रवायक्रजीवने ब्रत. पूर्वी भणे. ए प्रमाणे निर्प्रेथ विषे पण जाणबुं.
  - ४१. [प्रo] हे भगवन् ! स्नातक केटलुं श्रुत भणे ! [उ o] हे गीतम ! स्नातक श्रवासीत होय.
- ४२. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं पुराक नीर्थमां होय के नीर्थना अभावमां होय ! [उ०] हे गौतम ! ते नीर्थमां होय, पण तीर्थना ং नीर्थहार-अभावमां न होय. ए प्रमाणे बकुश अने प्रतिसेवनाकुशील पण जाणवो.
- ४३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं कपायकुः ीछ तीर्थमां होय के \*अतीर्थमां होय ! [उ०] हे गीतम ! कपायकुरीछ तीर्थमां होय अने कपायकुरीछ नीर्थ. नीर्थ.
- ४४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते (कपायकुरिताल) अतीर्थमां होय तो द्युं ते तीर्थकर होय के प्रत्येकबुद्ध होय ! [उ०] हे गीतम ! ते तीर्थकर पण होय के प्रत्येकबुद्ध पण होय. ए प्रमाणे निर्प्रथ अने स्नातक विष पण जाणवुं.
- ४५. [प्र॰] हे भगवन् ! जुं पुलाक खिंटगमां होय, अन्यितिमां होय के गृहस्थितिमां होय ? [उ॰] हे सितम ! <sup>†</sup>द्रव्यितिमने आश्रयी खिंटगमां होय, अन्यितिमां होय के गृहस्थितिमां पण होय. भावितिमने आश्रयी अवस्य व्यक्तिमां होय. ए प्रमाणे यावत्— स्नातक सुधी जाणतुं.
  - ४६. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाक केटला शरीरोमां होय ! [उ०] हे गातम ! आंदारिक, नजस अने कार्मण–ए त्रण शरीरोमां होय.
- ४७. [प्र०] हे भगवन् ! बकुश केटल शरीरोगां होय ? [उ०] हे गौतम ! बकुश त्रण शरीर के चार शरीरमां होय. ज्यारे ते त्रण शरीरमां होय त्यारे औदारिक, तैजस अने कार्मण शरीरमां होय. ज्यारे ते चार शरीरमां होय त्यारे औदारिक, वैकिय, नैजस अने कार्मण शरीरमां होय. ए प्रमाणे प्रतिसेवनाकुशील पण जाणवो.
- ४८. [प्र०] हे भगवन् ! कपायकुशील केटला शरीरोमां होय ! [उ०] हे गौतम ! त्रण, चार के पाच शरीरमां होय. ज्यारे ते त्रण शरीरमां होय त्यारे औदारिक, तैजस अने कार्मण शरीरमां होय. ज्यारे ते चार शरीरमां होय त्यारे औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मण शरीरमां होय, अने ज्यारे ते पांच शरीरमां होय त्यारे औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण शरीरमां होय. निर्प्रथ अने कातकने पुलाकनी पेटे जाणवा.

११ झसंस्टार-पुरुक्तने झसर.

≖कदाने द्वारीर-

१० लिंगहार-पुलाक भने लिंगः

ग्रमाययुक्तीलने अगर-

४३ \* छद्मस्थानस्थामां तीर्थंकर कषायकुद्मील होय ते अपेक्षाए ते अतीर्थंमां पण होय, अथवा तीर्थंनो विच्छेद थया पछी अन्य वास्त्रि कषाय-कुत्रील होय तेनी अपेक्षाए पण अतीर्थमां होय.—टीका.

४५ † द्रव्य अने भावने आश्रयी लिंग वे प्रकारनुं छे. तेमां ज्ञानादि भावलिंग छे अने ते ज्ञानादि भाव आईतोने होवाथी ए ज स्वर्लिंग कहेवाय छे. द्रव्यलिंग स्वलिंग अने परलिंगना मेदशी वे प्रकारनुं छे. तेमां रजोहरणादि द्रव्यथी स्वलिंग छे. परलिंग वे प्रकारनुं छे—कुतीर्थिकलिंग अने यहस्थलिंग. पुलाकने प्रणे प्रकारनुं द्रव्य लिंग होय छे, कारण के चारित्रनो परिणाम कोइ पण एक द्रव्यलिंगनी अपेक्षा राखतो नवी.—टीका.

४९. [प्र०] पुलाए णं भंते ! कि कम्मभूमीए होजा, अकम्मभूमीए होजा ? [उ०] गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पदुच कस्मभूमीए होजा, णो अकम्मभूमीए होजा।

५०. [प्र०] वउसे णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पहुच कम्मभूमीए होज्जा, णो अकम्मभूमीए होज्जा; साहरणं पहुच कम्मभूमीए वा होज्जा, अकम्मभूमीए वा होज्जा । एवं जाव-सिणाए ।

५१. [प्र॰] पुलाप णं भंते ! किं ओसप्पिणिकाले होजा, उस्सप्पिणिकाले होजा, णोओसप्पिणि-णोउस्सप्पिणिकाले वा होजा ? [उ॰] गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होजा, उस्सप्पिणिकाले वा होजा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होजा ।

५२. [प्र०] जह ओसप्पिणिकाले होजा कि सुसमसुसमाकाले होजा १, सुसमाकाले होजा २, सुसमदूसमाकाले होजा २, सुसमदूसमाकाले होजा २, दूसमसुसमाकाले होजा ४, दूसमाकाले होजा ५, दूसमदूसमाकाले होजा ६ ! [उ०] गोयमा ! जंमणं पहुच जो सुसमसुसमाकाले होजा १, जो सुसमाकाले होजा २, सुसमदूसमाकाले वा होजा ३, दूसमसुसमाकाले वा होजा ४, जो दूसमदूसमाकाले होजा ५, जो दूसमदूसमाकाले होजा ६ । संतिभावं पहुच जो सुसमसुसमाकाले होजा, जो सुसमाकाले होजा । स्तिमावं पहुच जो सुसमसुसमाकाले होजा, जो सुसमदूसमाकाले होजा।

५३. [प्र०] जह उस्सिप्पणिकाले होजा कि दूसमदूसमाकाले होजा १, दूसमाकाले होजा २, दूसमसुसमाकाले होजा २, दूसमसुसमाकाले होजा २, सुसमदुसमाकाले होजा २, सुसमदुसमाकाले होजा १, सुसमाकाले होजा १, दूसमाकाले वा होजा १, दूसमाकाले वा होजा १, दूसमाकाले वा होजा १, पो सुसमाकाले होजा १, पो सुसमाकाले होजा १, पो सुसमाकाले होजा १, पो दूसमाकाले होजा १, पो सुसमाकाले ह

१२ होत्रद्वार-पुलाक भने होत्रः у९. [प्रठ] हे भगवन् ! क्युं पुलाक कर्मभूमिमां होय के अकर्मभूमिमां होय ! [उ०] हे गौतम ! \*जन्म अने सद्भावने अपेक्षी कर्मभूमिमां होय, पण अकर्मभूमिमां न होय.

बकुश अने क्षेत्र.

५०. [प्र०] हे भगवन् ! युं बक्कश कर्मभूमिमां होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौनम ! जन्म अन सद्भावने आश्रयी कर्मभूमिमां होय, पण अकर्मभूमिमां न होय, अने संहरणने अपेक्षी कर्मभूमिमां पण होय अने अकर्मभूमिमां पण होय. ए प्रमाणे यावत्—स्नातक सुधी जाणवुं.

**१३** काळद्वार− पुलाकनो काळः ५१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं पुटाक <sup>†</sup>अवसीर्पणी काळमां होय, उत्सीर्पणी काळमां होय के नोअवसीर्पणी–नोउत्सीर्पणी काळे होय ? [उ०] हे गौनम ! अवसीर्पणी काळमां होय, उत्सीर्पणा काळमां होय अने नोअवसीर्पणी–नोउत्सीर्पणी काळे पण होय.

५२. [प्र०] हे भगवन्! जो ते (पुलाक) अवसर्षिणी काळमां होय तो शुं १ सुपमसुपमा काळे (पहेला आरामां) होय, २ सुपमकाळे (बीजा आरामां) होय, ३ सुपमदु पमा काळे (बीजा आरामां) होय, ४ दु:पमसुपमा (चोथा आरामां) होय, ५ दु:पमा काळे (पांचमा आरामां) होय के ६ दु:पमदु पमा काळे (छट्टा आरामां) होय? [उ०] हे गैतिम! जन्मनी अपेक्षाए सुपमसुपमा अने सुपमा काळे न होय, पण सुपमदु:पमा काळे होय, दु:पमसुपमा काळे होय, दु:पममुपमा काळे न होय, पण सुपमदु:पमा काळे पण न होय. तथा सद्भावनी अपेक्षाए सुपमसुपमा काळे अने दु:पमदु:पमाकाळे न होय, पण सुपमदु:पमा काळे होय, दु:पमसुपमाकाळे होय अने दु:पमसुपमा काळे होय.

५३. [प्र०] हे भगवन् ! तो ते (पुलाक) उत्सर्षिणी काळे होय तो द्युं १ दुःपमदुःपमा काळे होय, २ दुःपमा काळे होय, ३ दुःपमसुपमा काळे होय, ४ सुपमदुःपमा काळे होय, ५ सुपमसुपमा काळे होय के ६ सुपमसुपमा काळे होय ? [उ०] हे गौतम ! जन्मने आश्रयी दुःपमदुःपमा काळे न होय, दुःपम काळे होय, दुःपमसुपमा काळे होय, सुपमदुःपमा काळे होय, पण सुपमा काळे अने सुपमसुपमा काळे न होय. सङ्गवने आश्रयी दुःपमदुःपमा काळे न होय, दुःपमसुपमा काळे न होय, सुपमसुपमा काळे होय, सुषमदुःषमा काळे होय, पण सुपमा काळे होय, सुषमदुःषमा काळे होय, पण सुपमा तथा सुपमसुपमा काळे न होय.

४ ै जन्म-जयात्त अने सद्भाव-चारित्रभाव-थी अस्तित्व जन्म अने सद्भावनी अपेक्षाए पुलाक कर्मभूमिमां होय. एटले त्यां जन्मे अने त्यां विहरे, पण अकर्मभूमिमा उत्पक्ष न थाय, केमके त्या जन्मेलाने चारित्र न होय. तम सहरणधी अक्ष्मभूमिमां न होय, कारण के देवादि पुलाकलब्धिवाळाने संहरी न शके.

५: । काळ त्रण प्रकारनो छे-उत्पर्धिणी, अवसर्धिणी अने नोउन्सर्षिणी-नोअवसर्धिणी. तेमां भरत अने एरावत क्षेत्रमां पहेला वे प्रकारनो काळ छे, अने त्रीजा प्रकारनो काळ महाथिदेह अने हैमवतादि क्षेत्रोमां छे.

५२-५३ ई पुलाक जन्मनी अपेक्षाए त्रीजा अने चोथा आरामां होय, अने सद्भावनी अपेक्षाए त्रीजा, चोथा अने पांचमा आरामां पण होय. तेमां जे चोथा आरामां जन्म अने सद्भाव बने होय. उत्मर्पणीमा बीजा, त्रीजा अने चोथा आरामां जन्म अने सद्भाव बने होय. उत्मर्पणीमा बीजा, त्रीजा अने चोथा आरे जन्मधी होय. तेमां मीजा आराने अन्ते जन्मे अने त्रीजा आरामां चारित्रनो स्वीकार करे, त्रीजा अने चोथा आरामां जन्म अने बारित्र बने होय. सद्भावने आश्रमी त्रीजा अने चोथा आरामां ज होय. केमके ते ज आरामां चारित्रनी प्रतिपत्ति होय छे.—टीका.

- ५४. [प्र०] जद्द णोबोसप्पिण-नोउस्ससप्पिणकाले होजा कि सुसमसुसमापिलमागे होजा, सुसमापिलमागे होजा, सुसमदूसमापिलमागे होजा, दूसमसुसमापिलमागे होजा ! [४०] गोयमा ! जंगण-संतिमावं पहुष णो सुसमसु-समापिलमागे होजा, णो सुसमापिलमागे०, णो सुसमदूसमापिलमागे होजा, दूसमसुसमापिलमागे होजा।
- ५५. [प्र॰] बउसे णं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्ञा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्ञा, नोओस-पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होजा ।
- ५६. [प्र०] जइ ओसप्पिणिकाले होजा कि सुसमसुसमाकाले होजा-पुच्छा। [उ०] गोयमा ! जंमण-संतिमार्थ पडुच णो सुसमसुसमाकाले होजा, णो सुसमाकाले होजा, सुसमदूसमाकाले वा होजा, दूसमसुसमाकाले वा होजा, दूषमाकाले वा होजा, णो दूसमदूसमाकाले होजा; साहरणं पडुच अन्नयंरे समाकाले होजा।
- ५७. [प्र०] जइ उस्सिष्पिणिकाले होजा कि दूसमदूसमाकाले होजा ६-पुच्छा। [उ०] गोयमा! जम्मणं पहुच गो दूसमदूसमाकाले होजा जहेय पुलाप। संतिभावं पहुच गो दूसमदूसमाकाले होजा, गो वृसमाकाले होजा; एवं संतिभावंण वि जहा पुलाप जाय-णो सुसमसुसमाकाले होजा। साहरणं पहुच अन्नयरे समाकाले होजा।
- ५८. [प्र०] जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होजा-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पहुच णो सुसमसुसमापिलभागे होजा जहेव पुलाप जाव-दूसमसुसमापिलभागे होजा । साहरणं पहुच अन्नयरे पिलभागे होजा । जहा बउसे । एवं पिडसेवणाकुसीले वि; एवं कसायकुसीले वि । नियंठो सिणाओ य जहा पुलाओ । नवरं पर्तेसि अध्महियं साहरणं भाणियवं, सेसं तं चेव १२ ।
- ५९. [प्र॰] पुलाए णं मंते ! कालगए समाणे किं (कं) गतिं गच्छति ! [उ॰] गोयमा ! देवगितं गच्छति । [प्र॰] देवगितं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेजा, वाणमंतरेसु उववज्जेजा, जोइसि॰, वेमाणिएसु उववज्जेजा ! [उ॰] गोयमा ! णो
- ५४. [प्र०] जो ते (पुलाको) नोउत्मर्पिणी-नोअवसर्पिणी काळे होय तो शु "सुपमसुपमा समान काळे होय, सुपमासमान काळे होय, सुपमासमान काळे होय के दु:पमसुपमासमान काळे होय है [उ०] हे गोलम ! जन्म अने सङ्गावने आश्रयी सुपममुषमा समान काळने विषे न होय, सुपमसमान काळे न होय, सुपमसुपमासमान काळे न होय, पण दु:पमसुपमासमान काळे होय.
- ५५. [प्र०] हे भगवन् ! बकुरा कये काळे होय- इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गानम ! अवसर्पिणी काळे होय, उत्सर्पिणी काळे होय. पण नोउत्सर्पिणी—नोअवसर्पिणी काळे न होय.

पह. [प्रठ] हे भगवन् i जो ते बकुरा अवसीर्पणी काळे होय, तो शुं सुपमसुपमा काळे होय -इत्यादि पृच्छा. [उठ] हे गीतम ! जन्म अने सद्भावने अपेक्षी सुपमसुपमा काळे न होय, सुपमा काळे न होय, सुपमदु:पमा काळे होय, दु:पमसुपमा काळे होप के दु पमा-काळे होय, पण दु:पमदु:पमा काळे न होय. संहरणने अपेक्षी कोड पण काळे होय.

५७. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते बकुश उत्सिपिणी काळे होय, तो छुं दुःपमदुःपमा काळे होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गाँतम ! जन्मने आश्रयी दुःपमदुःपमा काळे न होय-इत्यादि बधुं पुलाकर्ना पेठे जाणबुं. सद्भावने आश्रयी दुःपमदुःपमा काळे न होय, दुःपम काळे न होय, पुलाकर्ना पेठे जाणबुं. यात्रत्-सुपमसुपमा काळे न होय. गंहरणने अपेक्षी कोइ पण काळे होय.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते बकुश नोअवसर्पिणी-नोउत्सर्पिणी काळे होय तो-इत्यादि प्रच्छा. [उ०] हे गौतम ! जन्म अने सद्भावने आश्रयी सुपमसुपमासमान काळे न होय-इत्यादि वशुं पुत्राकर्ना पेटे जाणवुं, यावत्-दुःपमसुपमासमान काळे होय. सहरणने भपेक्षी कोइ पण काळे होय. जेम बकुश संबन्धे कह्युं तेम प्रतिसेवनाकुशील संबन्धे पण कहेवुं. एम कपायकुशील पण जाणबो. निर्प्रेय अने स्नातक पण पुत्राकर्नी पेटे समजवा. विशेष ए के निर्प्रेय अने स्नातकने संहरण अधिक कहेवुं. एटले संहरणने आश्रयी सर्व काळे होय-एम कहेवुं. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणबुं.

५९. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाक मरण पामीने कइ गतिमां जाय? [उ०] हे गौतम ! देवगतिमां जाय. [प्र०] देवगिनमा जनी द्युं भवनवासिमां, वानव्यंतरमां, ज्योतिष्कमां के वैमानिकोगां उपजे ! [उ०] भवनवासीमां न उपजे, वानव्यंतरमां न उपजे, ै.४ गतिहार− यन्द्रस्ती गतिः

वकुशनो दाव.

५४ \* खुषममुषमानी समान काळ देव कुछ अने उत्तरकुष्ठमां होय छे. सुषमासमान काळ हरिवर्ष अने रम्यक क्षेत्रमां होय छे, सुषमतु पमासमःन काळ हिमवत अने ऐरुष्यवत क्षेत्रमां अने दुःषमसुषमा समान काळ महाविदेहमां होय छे.—टीका.

५८ † निर्प्रन्थ अने स्नातकनो संहरण आध्यी सर्च काळे सद्भाव काचो ते पूर्वे संहरेलाने निर्प्रन्थपणा अने स्नातकपणानी प्राप्ति थाय ते अपेक्षाए समजबुं, कारण के वेदरहित मुनिओ नं सहरण धर्तुं नथी. कह्युं छे के "ध्रमणी-साध्वी, वेदरहित, परिहारविश्चाद्धि, गुलाकलिशवाळा, अप्रमन्त, चीद पूर्वभर स्ने आहारक लिथवाळानुं सहरण धर्तुं नथी.—टीका.

भवणवासीसु, णो वाण०, णो जोइ०, वेमाणिएसु उववज्जेजा । वेमाणिएसु उववज्जमाणे जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे उववज्जेजा । बउसे णं एवं चेव । नवरं उक्कोसेणं अद्युप कप्पे । पश्चिसेवणाकुसीले जहा बउसे । कसा-यकुसीले जहा पुलाए । नवरं उक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेजा ।

- ६०. [प्र०] णियंठे णं मंते १० १ [उ०] एवं चेव, जाव-वेमाणिएसु जववज्रमाणे अजहन्नमणुक्कोसेणं अणुत्तरियमाणेसु जयवज्ञेजा ।
  - ६१. [ब्र॰] सिणाए णं भेते! कालगए समाणे कि (कं) गति गच्छइ ! [उ॰] गोयमा! सिद्धिगति गच्छइ ।
- ६२. [प्र॰] पुलाए णं मंते ! देवेसु उववज्जमाणे कि इंदत्ताए उववज्जेजा, सामाणियत्ताए उववज्जेजा, तायसीसाए उववज्जेजा, लोगपालत्ताए उववज्जेजा, अहमिंदत्ताए वा उववज्जेजा ! [उ॰] गोयमा ! अविराहणं पहुच्च इंदत्ताए उववज्जेजा, सामाणियत्ताए उववज्जेजा, तायत्तीसाए उववज्जेजा । विराहणं पहुच्च अन्नयरेसु उववज्जेजा । एवं वउसे वि; एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।
- ६३. [प्र॰] कसायकुसीले-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! अविराहणं पहुच इंदत्ताए वा उववजेजा, जाव-अहर्मिवृत्ताए या उवजेजा, विराहणं पहुच अन्नयरेसु उववजेजा ।
- ६४. [प्र॰] नियंठे-पुच्छा [उ॰] गोयमा ! अविराहणं पडुच जो इंदत्ताए उववज्रेजा, जाव-जो लोगपालत्ताए उववज्रेजा; अहर्मिद्ताए उववज्रेजा । विराहणं पडुच अन्नयरेसु उववज्रेजा ।
- ६५. [प्र०] पुलायस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमपुदुत्तं, उक्कोसेणं अट्टारस सागरोवमारं ।
- ६६. [प्र०] बउसस्स-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहझेणं पिलओवमपुहुत्तं, उक्कोसेणं वाबीसं सागरोवमाइं । एवं पिंडसेवणाकुसीले वि ।

उपजे, पण वैमानिकमां उपजे. वैमानिकमां उत्पन्न थतो पुलाक जघन्यथी सौधर्म कल्पमां अने उत्कृष्ट सहस्रार कल्पमां उत्पन्न थाय. बकुश विषे पण एज प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए के ते उत्कृष्ट अन्युन कल्पमां उत्पन्न थाय. बकुशनी पेटे प्रतिसेत्रनाकुशील विषे पण समजवुं. अने पुलाकनी पेटे कपायकुशीलने पण जाणवुं. विशेष ए के, कपायकुशील उत्कृष्ट अनुत्तरविमानमां उत्पन्न थाय.

निमन्धनी गर्ल.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! निर्प्रथ मरण पामीने कड् गतिमां जाय ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं. यावत्–वैमानिकोमां उत्पन्न धतो जवन्य अने उत्कृष्ट सिवाय एक अनुत्तर विमानमां उत्पन्न याय.

सानकनी गांत-

६१. [प्र०] हे भगवन् ! स्नातक मरण पामीने कइ गतिमां जाय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक सिद्धगतिमां जाय.

पुलाक कया देवपणे उपजे ? ६२. [प्र०] हे भगवन् ! दंबोगां उत्पन्न थतो पुछाक हुं इंद्रपणे उत्पन्न थाय, सामानिकपणे उत्पन्न थाय, त्रायिद्विशदेवपणे उत्पन्न थाय, लोकपाळपणे उत्पन्न थाय के अहमिद्रपणे उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम ! अविराधनाने आश्रयी इंद्रपणे उत्पन्न थाय, सामानिक-पणे उत्पन्न थाय, त्रायिक्षशदेवपणे उत्पन्न थाय अने लोकपाळपणे उपन्न थाय, पण अहमिद्रपणे न उत्पन्न थाय. अने विराधना करीने भवनपति यगेरे कोइ पण देवमां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे बकुश अने प्रतिसेवनाकुशील जाणवी.

कषायकुर्जाल कया देवपण उपजे ? ६३. [प्र॰] हे भगवन् ! कपायकुशील कया देवपणे उत्पन्न थाय ! [उ॰] हे गाँतम ! गंयमनी विराधना न करी होय तो ते इंद्रपणे, यावत्—अहिंद्रपणे उत्पन्न थाय, अने गंयम विराधना करी होय तो ते भवनपति बगेरे कोड पण देवमां उत्पन्न थाय.

निर्मन्थ क्या देवपणे उपजे ६४. [प्र०] हे भगवन् ! निर्प्रेय कया देवमां उपजे ? [उ०] हे गौतम ! संयमनी अविराधनाने आश्रयी इंद्रपणे यावत्— खोकपाउपण न थाय, पण अहमिद्रपणे थाय, अने संयमनी विराधनाने आश्रयी भवनवासी वगेरे कोइ पण देवपणे उत्पन्न थाय.

पुलाकती देव जोवामां स्थितिः ६५. [प्र०] हे भगवन् ! दंबलोकोमां उत्पन्न थता पुलाकनी केटला काळ सुधीनी स्थिति कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जन्नन्य पन्योपमपृथकत्र-बेथी नव पन्योपम सुधीनी अने उत्क्रष्ट अदार सागरोपमनी स्थिति कही छे.

६६. [प्र॰] हे मगवन् ! टेवलोकोमां उत्पन्न यता बकुदानी केटला काळ सुधीनी स्थिति कही छे ? [उ॰] हे गौतम ! जघन्य बेथी नव पत्योपम सुधीनी अने उत्क्रप्ट बावीस सागरोपम सुधीनी स्थिति कही छे. प्रमाणे प्रतिसेवनाकुरील विषे पण समजवुं.

६९ <sup>त</sup> ज्ञानादिनी अविराधना के लब्धिनो प्रयोग कर्या सिवाय इन्द्रादि रूपे उपजे, अने विराधना करीने भवनपत्रादि को**इ एण देव**मां उपजे. पुरुषकनो मात्र वैमानिकमां उत्पाद करोो ते संयमनी अविराधनानी अपेक्षाए जाणवुं.—टीका.

- ६७. [त्र॰] कसायकुसीलस्स-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमपुदुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोयमाई ।
- ६८. [प्र०] णियंडस्स-पुच्छा । [७०] गोयमा ! अजहस्रमणुकोसेणं तेसीसं सागरीवमारं १३ ।
- ६९. [प्र०] पुलागस्स णं मंते ! केवतिया संयमहाणा पन्नता ! [उ०] गोयमा ! असंखेजा संयमहाणा पन्नता । एवं जाब-कसायकुसीलस्स ।
- ৩০. [प्र०] नियंटस्स णं मंते ! केवदया संजमट्ठाणा पश्चता ? [उ०] गोयमा ! एगे अजहश्चमणुकोसए संजमट्ठाणे; एवं सिणायस्स वि ।
- ७१. [प्र०] पतेसि णं मंते ! पुलाग-वजस-पडिसेयणा-कसायकुसील-नियंट-सिणायाणं संज्ञमट्टाणाणं कयरे कयरे जाव-विसेसाद्दिया वा ! [उ०] गोयमा ! सद्वत्योचे नियंटस्स सिणायस्स य एगे अजहक्षमणुक्कोसए संज्ञमट्टाणे, पुलागस्स णं संज्ञमट्टाणा असंखेळागुणा, वजसस्स संज्ञमट्टाणा असंखेळागुणा, पडिसेयणाकुसीलस्स संज्ञमट्टाणा असंखेळागुणा; कसायकुसीलस्स संज्ञमट्टाणा असंखेळागुणा; कसायकुसीलस्स संज्ञमट्टाणा असंखेळागुणा १४ ।
- ७२. [प्र॰] पुरुागस्स णं भंते ! केवतिया चरित्तपञ्जवा पन्नता ! [उ॰] गोयमा ! अणंता चिन्तिपञ्जवा पन्नता, एवं जाव-सिणायस्स ।
- ७३. [१०] पुलाए णं मंते ! पुलागस्स सट्टाणसिश्वगासेणं चिरित्तपज्जविद्धि कि हीणे, मुहे, अन्मिद्दए ! [उ०] गोयमा ! सिय हीणे १, सिय मुहे २, सिय अन्मिद्दए ३ । जह हीणे अणंतभागहीणे वा, असंखेजहभागहीणे वा, संखेजहभाग-हीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा, असंखेज्जगुणहीणे वा, अनंतगुणहीणे वा । अह अन्मिहए अणंतभागमन्मिहए वा, असंखेजह-भागमन्मिहए वा संखेजहभागमन्मिहए वा, संखेजगुणमन्मिहए वा, असंखेजगुणमन्मिहए वा, अणंतगुणमन्मिहए वा।

६७. [प्र०] हे भगवन् ! देवळोकमां उत्पन्न थन। कपायकुशीळनी केटळा काळ सुधीनी स्थिति कही छे ! [उ०] हे गीतम ! जघन्य बेथी नव पल्योपम सुधीनी अने उत्कृष्ट तैत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे.

लोकमा स्थिति. विर्धन्यनी देवली-

कपायकशील नी देव-

६८. [प्र०] देवलोकमां उत्पन्न यता निर्प्रयनी केटला काल्क्रनी स्थिति कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट सिवाय तेत्रीश सागगेपमनी स्थिति कही छे.

कमां स्थितिः

६९. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाकने केटलां संयमस्थानो कहेलां छे १ [उ०] हे गीतम ! \*अगल्याता संयमस्थानो कह्यां छे. ए प्रमाणे यावत्—कषायकुत्तील सुघी जाणबुं.

१४ संयमद्वार-पुलाकने संयम-स्थानी-

७०. [प्र०] हे भगवन् ! निर्प्यने केटलां संयमस्थानो कहेलां छे ! [उ०] हे गौतम ! तेने जधन्य अने उन्क्रष्ट सिवाय एक संयमस्थान कह्युं छे. ए प्रमाणे स्नातक निपे पण जाणबुं.

निर्धन्थने संवप-ग्यान-

७१. [प्र०] हे मगवन् ! ए पूर्वोक्त पुलाक, बकुरा, प्रतिसेवनाकुशील, कपायकुशील, निर्प्रेथ अने स्नातकना संयमस्थानोमां कयां कोनाधी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! निर्प्रेथ अने स्नातकने सर्व करतां अल्प अजधन्य अनुष्कृष्ट एक ज संयमस्थान छे. तेथी पुलाकने असंख्यातगुणां संयमस्थानो छे, तेथी बकुराने असंख्यातगुणां संयमस्थानो छे, तेथी प्रतिसेवनाकुशीलने असंख्यातगुणां संयमस्थानो छे, तेथी क्षायकुशीलने असंख्यातगुणां संयमस्थानो छे.

संबमग्यानीनुं अस्प-वहुःचः

७२. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाकने केटला चारित्रपर्यवो होय ! [उ०] हे गौतम ! पुलाकने अनन्त चारित्रपर्यवो होय. ए प्रमाणे यावत्—स्नातक सुची जाणवुं.

पुलाकादिने चारित्र-पर्यायः

७३. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाक †सस्यानसंनिक्ष-पोताना सजातीय चारित्रपर्यायोगी अर्थात्-एक पुलाक बीजा पुलाकना चारित्रपर्यायनी अपेक्षाए हुं हीन होय, तुल्य होय के अधिक होय ! [उ०] हे गीतम | कदाच हीय, कदाच तुल्य होय, अने कदाच अधिक होय जो हीन होय तो अनंतभाग हीन होय, असंख्यागा हीन होय, रांख्यातभाग हीन होय, रांख्यातगुण हीन होय अने अनंतगुण हीन होय. जो अधिक होय तो अनंतभाग अधिक होय, असंख्यानगुण अधिक होय, रांख्यातगुण अधिक होय, असंख्यातगुण अधिक होय, असंख्यातगुण अधिक होय.

१५ अंतिकर्षदार-पुलाकनी स्तस्थान-गतिकर्षः

६९ के संयम-चारित्रना शुद्धि-अशुद्धिना वक्ता ओछापणाने ठीचे थयेला मेदो ते संयमस्थान. ते असंख्याता होय छे. तेमां प्रत्येक संयमस्थानना सर्वाकाशप्रदेश गुणित सर्वाकाश प्रदेश प्रमाण (अनन्तानन्त) पर्यायो (अंशो) होय छे. ते संयमस्थानो पुलाकने असंख्यात होय छे. कारण के चारित्र-मोहनीयनो क्षयोपशम विचित्र होय छे. एम यावत्—कषायकुषील सुधी जाण्युं. निर्धन्यने एक असंयमस्थान होय छे, कारण के कषायनो ध्रय के उपशम एक प्रकारनो होनाथी तेनी शुद्धि पण एक प्रकारनी छे.

७३ <sup>†</sup> निकर्ष-संनिकर्ष, पुलाकादिनुं परस्पर संयोजन, स्व-पोताना सजातीय, स्थान-पर्यवोनुं आध्य, अर्थात् पुलाकादिने पुलाकादिनुं संनिकर्य-संयोजन ते स्वस्थानसंनिकर्ष कहेवाय छे,

<sup>‡</sup> विश्वाद संयमस्थानना संबन्धी होवाथी विश्वद्वतर पर्यायनी अपेक्षाए अविश्वद्व संयमस्थानना संबन्धी होवाथी अविश्वदतर पर्यवो हीन कहेवाय छे अने ते पर्यववाळा साधु पण हीन कहेवाय छे. समान एवा श्वद्व पर्यवोना संबन्धकी तुल्य अने विश्वद्वतर पर्यवना योगणी अधिक कहेवाय छे.∽टीका.

७४. [प्र०] पुलाप णं भंते ! वउसस्स परद्वाणसिक्षगासेणं चरित्तपञ्जवेद्दि कि द्वीणे, तुछे, अन्मद्विप ? [उ०] गोयमा ! द्वीणे, नो तुछे, नो अन्मद्विप, अणंतगुणद्वीणे । पर्व पडिसेवणाकुसीलस्स वि । कसायकुसीलेणं समं छट्ठाणविदय जदेव सद्वाणे । नियंटस्स जद्दा वउसस्स; पर्व सिणायस्स वि ।

७५. [प्र०] बउसे णं अंते ! पुलागस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपञ्जवेदि कि दीणे, तुल्ले, अम्मदिए ! [उ०] गोयमा ! जो दीजे, जो तुल्ले, अम्मदिए, अणंतगुणमन्मदिए ।

७६. [प्र॰] बउसे णं भंते ! बउसस्स सट्टाणसिश्वगासेणं चिरत्तपञ्जवेदिं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय द्दीणे, सिय तुहुं, सिय अन्भद्दिए । जद्द द्दीणे छट्टाणविद्धए ।

७७. [प्र०] वउसे णं भंते ! पडिसेवणाकुसीलस्स परट्टाणसन्निगासेणं चरित्रपञ्जवेद्दि कि द्दीणे० ? [उ०] छट्टाणव-डिए; एवं कसायकुसीलस्स वि ।

७८. [प्र॰] बनसे णं अंते ! नियंदस्स परद्वाणसन्निगासेणं चरित्तपञ्जविद्वि-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! द्वीणे, णो तुल्ले, णो अय्मिद्विप, अणंतगुणद्वीणे, एवं सिणायस्स वि । पद्विसेवणाकुसीलस्स एवं चेव वजसवत्तवया भाणियवा । कसायकु-सीलस्स एस चेव वजसवत्तवया । नवरं पुलापण वि समं छट्टाणविद्विप ।

७९. [प्र॰] णियंठे णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं-पुच्छा । [७०] गोयमा ! णो हीणे, णो तुह्ने, अन्महिषः, अणंतगुणमन्महिषः, पवं जाव-कसायकुसीलस्स ।

पुलाकनी वक्**कारी** सपेक्षाए परस्थान-संनिक्षं ७४. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाक (पोताना चारित्रपर्यायोवडे) बकुराना परस्थानसंनिकर्य-विजातीय चारित्रपर्यायोनी अपेक्षाए शुं हीन छे, तुल्य छे के अधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! हीन छे, पण तुल्य के अधिक नथी, अने ते अनंतगुण हीन छे. ए प्रमाणे प्रति-सेवनाकुरित्रण चारित्रपर्यायनी अपेक्षाए "पुलाक अनन्तगुण हीन छे. पुलाक जेम खस्थान—सजातीय पर्यायनी अपेक्षाए छ स्थानपतित कहारे छे तेम कषायकुरित्रणी साथे पण छ स्थानपतित जाणवो. बकुरानी पेठे निर्प्रन्थनी साथे जाणवुं. एम स्नातकनी साथे पण समजवुं.

बकुशना पुटाकनी अपेक्षाए चारित्र-पर्यायो ७५. [प्र०] हे भगवन् ! <sup>†</sup>वकुरा पुलाकना परस्थान—विजातीय चारित्रपर्यायनी अपेक्षाए शुं हीन छे, तुल्य छे के अधिक छे <sup>१</sup> [उ०] हे गौतम ! हीन नथी, तुल्य नथी, पण अधिक छे, अने ते अनंतगुण अधिक छे.

बकुदाना ध्वस्थाननी अपेक्षाप चारित्र पर्यायोः ७६. [प्र०] हे भगवन् ! बकुरा बकुराना सजातीय चारित्रपर्यायने आश्रयी द्युं हीन छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! कदाच हीन होय, कदाच तुल्य होय, अने कदाच अधिक होय. जो हीन होय तो ते छस्थानक पतित होय.

बबुशना प्रतिसेवना-कुशीलनी अपेक्षाए चारित्र पर्यायोः ७७. [प्र०] हे भगवन् ! बकुरा प्रतिसेवनाकुरीलिना विजातीय चारित्रपर्यवोधी द्युं हीन छे ! [उ०] हे गौतम ! छस्थानकपतित होय. ए प्रमाणे कपायकुरीलिनी अपेक्षाए पण जाणबुं.

वकुरान। निशन्यारी अपेक्षापः चारित्र-पर्यायो-प्रशिवनातुःशील अने क्षायकुरी-लना चारित्र ৩८. [प्र०] हे भगवन् ! बकुश निर्प्रथना विजातीय चारित्रपर्यायनी अपेक्षाए द्युं हीन होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! हीन छे, तुल्य नधी अने अधिक पण नधी. अने ते अनंतगुण हीन छे. ए प्रमाणे स्नातकनी अपेक्षाए पण समजवुं. तथा प्रतिसेवनाकु-शीलने एज प्रमाणे विकुशनी वक्तव्यता (सू० ७६–७९) कहेवी. कपायकुशीलने एज प्रमाणे जाणवुं. परन्तु पुलाकनी अपेक्षाए कपायकुशील छस्थानपनित होय छे.

पर्यायोः पुरुषका भपेक्षाए निर्मन्थना चारित्र-पर्यायोः

७९. [प्र॰] हे भगवन् ! निर्प्रथ पुलाकना परस्थानसंनिकर्ष-विजातीय चारित्रपर्यवोधी द्युं हीन छे-इस्मादि पृच्छा. [उ॰] हे गौतम ! ते हीन नधी, तुस्य नथी पण अधिक छे, अने ते अनंतगुण अधिक छे. ए प्रमाणे यावत्—कषायकुरालिना संबंधनी अपेक्षाए पण जाणवुं.

अप \* पुलाक स्वस्थाननी अपेक्षाए जेम षदस्थानपतित कहा तेम कषायकुक्षीलनी अपेक्षाए पण षट्स्थानपतित कहेवो. पुलाक अने कषायकुक्षीलना सर्च जघन्य संयमस्थान साँधी नीचे छे. त्यांधी ते बने साथे असंख्य संयमस्थान सुधी जाय छे. कारण के त्यां सुधी बनेना दुल्य अध्यवसायो होय छे. त्यांधी पुलाक हीन परिणाम होवाधी संयमस्थानमा वधतो अटकी जाय छे, अने त्यार पछी कषायकुक्षील एकाकी असंख्य संयमस्थान सुधी बाय छे. त्यांधी कषायकुक्षील प्रतिसेवनाकुक्षील अने बकुक्ष साथे असंख्य संयमस्थान सुधी जाय छे. त्यां बकुक्ष अटके छे. पछी प्रतिसेवनाकुक्षील अने कषायकुक्षील असंख्य संयमस्थान सुधी जाय छे. त्यां प्रतिसेवनाकुक्षील अटके छे. त्यार पछी आगळ निर्मय अने सातक एकज संयम स्थानने प्राप्त करे छे. साटे पुलाक निर्मयना चारित्रपर्यामीधी अनन्तगुणहीन छे.

৬५ <sup>†</sup> बकुश पुलाकर्यी अनन्तगुण अधिक छे, अने पुलाक बकुशायी हीन, तुल्य के अधिक छे. बकुश प्रतिसेवाकुशील अने कथायकुशीलयी पण हीनादि छे, निर्मन्थ अने झातकथी तो हीन ज छे.

७८ ‡ प्रतिसेवाकुशील अने कषायकुशील बकुशनी पेठे जाणवा. परन्तु त्यां पुलाकवी बकुश अधिक कह्यों छ अने अहीं पुलाकवी कषायकुशील बट्स्यान पतित जाणवो. केमके तेना परिणाम पुलाकनी अपेक्षाए हीन, सम अने अधिक छै.—टीका.

- ८०. [प्र०] णियंटे णं भंते ! णियंटस्स सद्वाणसिक्षगासेणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो हीणे, तुह्ने, जो अध्महिए । प्रवं सिणायस्स वि ।
- ८१. [प्र०] सिणाए णं मंते ! पुलागस्स परट्वाणसिष्ठागासेणं० ? [उ०] एवं जहा नियंद्रस्स वस्तवया तहा सिणायस्स वि माणियवा । जाव-सिणाए णं मंते ! सिणायस्स सट्टाणसिष्ठगासेणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! णो हीणे, तुहे, णो सम्मिष्ट ।
- ८२. [४०] पपिस णं मंते ! पुलाग-बकुस-पिडसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंड-सिणायाणं जहमुक्कोसगाणं चिरत्तपञ्जवाणं कयरे कयरे-जाव-विसेसाहिया वा ! [४०] गोयमा ! १ पुलागस्स कसायकुसीलस्स य पपिस णं जहम्रगा चिरत्तपञ्जवा दोण्ह वि तुल्ला सम्वत्योषा । २ पुलागस्स उक्कोसगा चिरत्तपञ्जवा अणंतगुणा । ३ वजसस्स पिडसेवणाकु-सीलस्स य पपिस णं जहम्रगा चिरत्तपञ्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा । ७ वजसस्स उक्कोसगा चिरत्तपञ्जवा अणंतगुणा । ५ कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चिरत्तपञ्जवा अणंतगुणा । ५ कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चिरत्तपञ्जवा अणंतगुणा । ७ णियंठस्स सिणायस्स य पतेसि णं अजहम्रमणुक्कोसगा चिरत्तपञ्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा १५ ।
- ८३. [प्र०] पुलाप णं भंते ! किं सयोगी होजा, अजोगी होजा ? [उ०] गोयमा ! सयोगी होजा, नो अयोगी होजा। [प्र०] जह सयोगी होजा किं मणजोगी होजा, वहजोगी होजा, कायजोगी होजा ? [उ०] गोयमा ! मणजोगी होजा, वयजोगी वा होजा, कायजोगी घा होजा। एवं जाव-नियंठे।
- ८४. [प्र०] सिणाए णॅ-पुच्छा। [उ०] गोयमा! सयोगी वा होज्जा, अयोगी वा होज्जा। जह सयोगी होज्जा कि मणजोगी होज्जा-सेसं जहा पुरुगगस्स १६।
- ८५. [म॰] पुलाए णं संते ! कि सागारीवडले होजा, अणागारीवडले होजा ! [ड॰] गोयमा ! सागारीवडले वा होजा, अणागारीवडले वा होजा। एवं जाव-सिणाए १७।
- ८०. [प्र०] हे भगवन् ! निर्प्रथ निर्प्रथना सजातीय चारित्रपर्यवोयी शुं हीन छे-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! ते हीन नथी अने अधिक नथी, पण तुल्य छे. ए प्रमाणे स्नातकनी अपेक्षाए पण समजतुं.

निर्मन्थना सजातीय-नी अपेक्षाए चारित्र-पर्यायो-

८१. [प्र०] हे भगवन् ! स्नातक पुराकता विजातीय चारित्रपर्यवोधी द्युं हीन छे—इत्सादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! जैम निर्मेष संबन्धे वक्तव्यता कही तेम स्नातक संबन्धे पण वक्तव्यता कहेवी. यावत्—[प्र०] हे भगवन् ! स्नातक स्नातकता सजातीय चारित्रप-र्यवोधी द्युं हीन छे इत्सादि पृच्छा. [उ०] हे गीतम ! ने हीन नधी, अधिक नधी, पण तुल्य छे.

स्नातकना पृलाकनी अमेक्षाय चारित्र-पर्यायः

८२. [प्र०] हे भगवन् ! ए पुटाक, बकुश, प्रतिसेवनाकुशीट, कपायकुशीट, निर्पेष अने स्नानकना जघन्य अने उत्कृष्ट चारित्र-पर्यवो कोना कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! १ पुटाक अने कपायकुशीटना जघन्य चारि पर्यवो परस्पर तुल्य छे अने सौथी थोडा छे. २ तेथी पुटाकना उत्कृष्ट चारित्रपर्यवो अनंतगुण छे. ३ तेथी बकुश अने प्रतिसेवनाकुशीटना जघन्य चारित्रपर्यवो अनंतगुण अने परस्पर तुल्य छे. ४ तेथी बकुशना उत्कृष्ट चारित्रपर्यवो अनंतगुण छे. ५ तेथी प्रतिसेवनाकुशीटना उत्कृष्ट चारित्रपर्यवो अनंतगुण छे. ६ तेथी कपायकुशीटना उत्कृष्ट चारित्रपर्यवो अनंतगुण छे. ७ तेथी निर्पेष अने स्नातक ए बनेना अजघन्य तथा अनुत्कृष्ट चारित्रपर्यवो अनंतगुण अने परस्पर तुल्य छे.\* अल्पवदुष्ट.

८३. [प्र०] हे भगवन् ! पुटाक सयोगी होय के अयोगी होय ? [उ०] हे गौतम ! सयोगी होय, पण अयोगी न होय. [प्र०] जो सयोगी होय तो शुं मनयोगी होय, वचनयोगी होय के काययोगी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनयोगी होय, वचनयोगी होय अने काययोगी पण होय. ए प्रमाणे यावत्—निर्प्रंथ सुची जाणतुं.

१६ योगद्वार-पुरुषक अने योग.

८४. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं स्नातक सयोगी होय-इत्यादि पृच्छा. [उ॰] हे गीतम ! ते सयोगी पण होय अने अयोगी पण होय. जो ते सयोगी होय तो शुं मनयोगी होय, वचनयोगी होय के काययोगी होय-इत्यादि बधुं पुलाकनी पेठे जाणबुं. मानक अने योग.

८५. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं पुलाक साकार उपयोगवाळो छे के अनाकार उपयोगवाळो छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते साकार उपयोगवाळो छे. ए प्रमाणे यावत्—स्नातक सुची समजवुं.

१७ उपयोगद्वार-पुट्टाक अने उपयोगः

जघन्य अने उत्कृष्ट चारित्रपर्यायोनुं शल्पबहुत्वदर्शकृयम्त्र.

८२ \* ९ पुलाक ) जघन्य ॰ ३ पुलाक उ॰ अनन्तगुण ६ बकुश उ॰ प्रतिसेवना कु॰ उ॰ ९ निर्धन्य } परस्पर तुल्य २ कथायकुशील }परस्पर तुल्य ४ बकुश } ज॰ परस्पर तुल्य ८ कथायकु॰ उ॰ ९॰ स्नातक } ५ प्रतिसेवना कु॰

- ८६. [प्र०] पुलाए णं भंते ! सकसायी अकसायी होजा ? [उ०] गोयमा ! सकसायी होजा, णो अकसायी होजा । [प्र०] जह सकसाई से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होजा ? [उ०] गोयमा ! चउसु कोह-माण-माया-लोमेसु होजा । एवं वउसे वि, एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।
- ८७. [प्र॰] कसायकुसीले णं-पुच्छा [उ॰] गोयमा! सकसायी होजा, णो अकसायी होजा । [प्र॰] जर सक-सायी होजा से णं मंते! कतिसु कसाएसु होजा! [उ॰] गोयमा! बउसु वा तिसु वा दोसु वा एगंमि वा होजा। चउसु होमाणे चउसु संजलणकोह-माण-माया-लोमेसु होजा; तिसु होमाणे तिसु संजलणमाण-माया-लोमेसु होजा, दोसु होमाणे संजलणमाया-लोमेसु होजा, एगंमि होमाणे संजलणलोमे होजा।
- ८८. [प्र॰] नियंडे णं-पुच्छा [उ॰] गोयमा । णो सकसायी होजा, अकसायी होजा। [प्र॰] जह अकसायी होजा । कि उवसंतकसायी होजा, जीणकसायी होजा ! [उ॰] गोयमा ! उवसंतकसायी वा होजा, जीणकसायी वा होजा। सिणाए एवं चेव; नवरं णो उवसंतकसायी होजा। सीणकसायी होजा १८।
- ८९. [प्र॰] पुलाप णं भंते ! कि सलेस्से होजा, गलेस्से होजा ! [उ॰] गोयमा ! सलेस्से होजा, णो गलेस्से होजा। [प्र॰] जह सलेस्से होजा, से णं भंते ! कितसु लेस्सासु होजा ! [उ॰] गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होजा; तंजहा—तेउलेस्साप्, पम्हलेस्साप, सुक्कलेस्साप । पर्व वउसस्स विः, पर्व पिडसेयणाकुसीले वि ।
- ९०. [प्र०] कसायकुसीले-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सलेस्से होजा, णो अलेस्से होजा; । [प्र०] जह सलेस्से होजा, से णं अंते ! कतिसु लेसासु होजा ! [उ०] गोयमा ! छसु लेसासु होजा, तंजहा-कण्हलेस्साप, जाव-सुक्रलेस्साप।
- ९१. [प्रo] नियंदे णं भंते !-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सलेस्से होजा, णो अलेस्से होजा । [प्रo] जह सलेसे होजा से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होजा ? [उ०] गोयमा ! एकाए सुक्कलेस्साए होजा ।

**१८ क**षापडार-पुरुषक्ते कथाथीः ८६. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाक सकपायां होय के कषायरहित होय ! [उ०] हे गौतम ! ते \*सकपायां होय, पण कषायरहित न होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते कपायवाळो छे तो तेने केटला कषायो होय ! [उ०] हे गौतम ! तेने क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार कपाय होय. ए प्रमाणे बकुदा तथा प्रतिसेवनाकुशील पण जाणवो.

कपायकुर्सालने कपायो- ८७. [प्र०] हे भगवन् ! कपायकुशील कपायवाळो होय के कपाय विनानो होय ! [उ०] हे गौतम ! ते कषायवाळो होय, पण कपाय विनानो न होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते सकपायी होय तो तेने केटला कपायो होय ! [उ०] हे गौतम ! तेने नेचार, त्रण, बे अने एक कपाय होय. जो तेने चार कषायो होय तो सञ्चलन क्रोध, मान, माया अने लोम ए चार कषाय होय. जो तेने त्रण कषायो होय तो संज्वलन माया अने लोभ होय. अने जो तेने एक कषाय होय तो एक संज्वलन लोभ होय.

निर्धन्यने कपाय.

८८. [प्र०] हे भगवन् ! निर्प्रथ कषायवाळो होय—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! ते कपायवाळो न होय, पण कषायरिहत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते कषायरिहत होय तो छुं ते उपशांतकषाय होय के क्षीणकपाय होय ? [उ०] हे गौतम ! ते उपशांतकपाय होय अने क्षीणकपाय पण होय. ए प्रमाणे खातक संबन्धे पण समजवुं. परन्तु खातक क्षीणकषाय ज होय, पण उपशांतकषाय न होय.

**१९ है** (याद्वार्-पुरुषकने टेस्या- ८९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं पुलाक लेश्याबाळो होय के लेश्यारहित होय ! [उ०] हे गौतम ! लेश्याबाळो होय, पण लेश्यारहित न होय. जो ते लेश्याबाळो होय तो तेने केटली लेश्या होय ! [उ०] हे गातम ! तेने त्रण विशुद्ध लेश्या होय. ते आ प्रमाणे—तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्रलेश्या. ए प्रमाण बकुश तथा प्रतिसेवनाकुशीलसंबन्धे पण समजबुं.

कपायकुर्शास्त्रे हेर्याः ९०. [प्र०] हे भगवन् ! युं कपायकुर्तीय लेक्यावाळो होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! ते लेक्यावाळो होय, पण लेक्या- रहित न होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते लेक्यावाळो होय तो तेने केटली लेक्या होय ! [उ०] हे गौतम ! तेने छ लेक्या होय. ते आ- प्रमाणे—९ कृष्णलेक्या अने यावत्—६ शुक्कलेक्या.

निर्धन्थने हेदया. स्मातकने हेदया.

९१. [प्र०] हे मगवन् ! शुं निर्पंथ त्रेयावाळो होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गीतम ! ते लेश्यावाळो होय, पण लेश्या विनानो न होय. [प्र०] जो ते लेश्यावाळो होय तो तेने केटली लेश्या होय ! [उ०] हे गीतम ! तेने एक शुक्कलेश्या होय.

८६ \* पुलाकने कषायोनो क्षय के उपराम होतो नथी एटले ते सकवायी ज होय छे.

८७ <sup>†</sup> उपशमश्रेणि के क्षपकश्रेणिमां संज्वलन कोधनो उपशम के क्षय ययो होय स्मारे त्रण कवायो, माननो क्षय के उपशम थाय त्यारे वे अने माया जाय त्यारे स्क्षमसंपरायशुणस्थानके एक संज्वलन लोभ होय.—टीका.

- ९२. [प्र०] सिणाए-पुन्छा । [प्र०] गोयमा ! सबेस्से वा होजा, अबेस्से वा होजा । [प्र०] जर सबेस्से होजा, से णं अंते ! कतिसु बेस्सासु होजा ? [प्र०] गोयमा ! एगाए परमसुक्रवेस्साय होजा १९ ।
- ९३. [प्र०] पुलाए णं भंते ! किं बहुमाणपरिणामे होजा, हीयमाणपरिणामे होजा, अबद्वियपरिणामे होजा ! [उ०] गोयमा ! बहुमाणपरिणामे वा होजा, हीयमाणपरिणामे वा होजा। एवं जाव-कसायकुसीले।
- ९४. [प्र०] णियंटे णं-पुच्छा [उ०] गोयमा! बहुमाणपरिणामे होज्ञा, जो हीयमाणपरिणामे होज्ञा, अवट्टियपरि-णामे वा होज्ञा। एवं सिणाप वि।
- ९५. [प्र॰] पुलाए णं भंते ! केवइयं काळं वहुमाणपरिणामे होजा ! [उ॰] गोयमा ! जहनेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।
  - ९६. [प्र०] केवतियं कालं द्वीयमाणपरिणामे होजा ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुद्धत्तं ।
- ९७. [प्र॰] केयहयं कार्ळ अयद्वियपरिणामे होजा ? [ड॰] गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं, उकोसेणं सत्त समया। एवं जाव-कसायकुसीले।
- ९८. [प्र॰] नियंडे णं भंते ! केवतियं कालं वहमाणपरिणामे होजा ! [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्को-सेण वि अंतोमुहुत्तं।
  - ९९. [प्र०] केवतियं कालं अवद्वियपरिणामे होजा ! [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पकं समयं, उक्नोसेणं अंतोमुहुत्तं ।
- ९२. [प्र०] हे भगवन्! जुं स्नातक लेश्यावाळो होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम! ते लेश्यावाळो होय अने लेश्यारहित पण होय. [प्र०] जो ते लेश्यावाळो होय तो ते केटली लेश्यावाळो होय! [उ०] हे गौतम! तेने एक <sup>\*</sup>परमञ्जूऋ लेश्या होय.
- ९३. [प्र०] हे मगवन् ! पुलाक वधता परिणामवाळो होय, घटता परिणामवाळो होय के स्थिर परिणामवाळो होय ! [उ०] हे गीतम ! वधता परिणामवाळो होय, हीयमान-घटता परिणामवाळो होय अने स्थिर परिणामवाळो पण होय. ए प्रमाणे यावत्—कपाय-कुशील सुधी जाणवुं.

२० परिणामद्वार-पुलाक अने परिणामः

९४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं निर्प्रेष वधता परिणामवाळो होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! ते वधता परिणामवाळो होय, स्थिरपरिणामवाळो होय, पण <sup>†</sup>हीयमान परिणामवाळो न होय. ए प्रमाणे स्नातक संबन्धे पण जाणवुं.

निर्धन्थ अने परिणामः

९५. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाक केटला काळ सुची वधता परिणामवाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्य ‡एक समय अने उत्कृष्ट अंतर्मुहर्त सुची वधता परिणामवाळो होय.

पुलाकना परिणा-मनी वाल.

- ९६. [प्र०] हे भगवन्! (पुलाक) केटला काळ सुधी हीयमान परिणामवाळो होय! [उ०] हे गैतिम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त सुधी हीयमानपरिणामवाळो होय.
- ९७. [प्र०] केटल काळ सुधी स्थिर परिणामवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट सात समय सुधी स्थिर परिणामवाळो होय. ए प्रमाणे यावत्—कषायकुशील संबन्धे पण समजवुं.
- ९८. [प्र०] हे भगवन् ! निर्पंथ केटला काळ सुधी वधता परिणामवाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्य <sup>श</sup>अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट <sub>निर्यस्थना परिणाम.</sub> पण अंतर्मुहूर्त सुची वधता परिणामवाळो होय.
- ९९. [प्र०] हे मगवन्! ते केटला काळ सुची स्थिर परिणामवाळो होय? [उ०] हे गौतम ! जघन्य एक समय सुची अने उत्कृष्ट अंतर्मुहुर्त सुधी स्थिर परिणामवाळो होय.

९२ \* शुक्राच्यानना त्रीजा मेद समये एक परमशुक्र लेदया होय अने अन्यदा शुक्रलेदया होय, अने ते पण इतर जीवनी शुक्रलेदयानी अपेक्षाए तो परमशुक्र लेदया होय.

९४ † निर्धन्य हीयमान परिणासवाळो न होय, जो तेना परिणासनी हानि थाय तो ते कवायकुक्षील कहेवाय. झातकने तो परिणासनी हानिनुं कारण निह होवाबी ते हीयमान परिणासवाळो न होय.

९५ 1 पुलाकना परिणाम ज्यारे वधता होय अने कषायवडे बाधित याय त्यारे एकादि समय वर्धमान परिणामनो अनुभव करे, तेथी तेनो काठ जबन्यथी एक समय होय अने उत्कर्षणी अन्तर्भुहूर्त होय. एम बकुश, प्रतिसेवाकुशील अने कषायकुशीलने विषे पण जाणवुं. परन्तु बकुशादिने जधन्यथी एक समय हाँय अने उत्कर्षणी अन्तर्भुहूर्त होय. एम बकुश, प्रतिसेवाकुशील अने कषायकुशीलने विषे पण जाणवुं. परन्तु बकुशादिने जधन्यथी एक समय घटी शकतो नथी, ते मरणसमये कथायकुशीलन्तादिकपे परिणमे छे. पुलाकने मरण कह्यं ते भूतभावनी अपेक्षाए जाणवुं.

९८-९९ ी निर्प्रन्य जघन्य अने उत्कर्षथी धन्तर्मुहूर्त सुधी वर्धमानपरिणामबाळो होय, अने ज्यारे केवळज्ञान उपजे त्यारे तेना परिणामान्तर श्राय. निर्प्रम्थने अवस्थित परिणाम जघन्यतः एक समय मरणवी घटी शके.

- १००. [प्रठ] सिणाए णं भंते ! केवइयं कालं वहुमाणपरिणामे होजा ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं अंतोमुहुत्तं, उको-सेण वि अंतोमुहुत्तं ।
- १०१. [प्र०] केवहयं कालं अवट्टियपरिणामे होजा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुष-कोडी २०।
  - १०२. [प्र०] पुलाए णं संते ! कति कम्मपगडीओ बंधति ![उ०] गोयमा ! आउयवज्राओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति ।
- १०३. [प्र0] वउसे-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्टविहबंधए वा । सत्त वंधमाणे आउयवजामो सत्त कम्मप्पगडीओ वंधति; अट्ट बंधमाणे पडिपुन्नाओ अट्ट कम्मप्पगडीओ वंधइ । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।
- १०४. [प्र०] कसायकुसीले पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तविद्वबंघर वा, अट्टविद्वबंधर वा, छविद्वबंधर वा । सत्त वंधमाणे आउयवज्ञाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वंधर, अट्ट बंधमाणे पडिपुन्नाओ अट्ट कम्मप्पगडीओ बंधर, छ बंधमाणे आउय-मोद्दणिज्ञवज्ञाओ छक्रमप्पगडीओ बंधर ।
  - १०५. [प्र०] नियंटे णं-पुच्छा। [उ०] गोयमा! एगं वेयणिकं कम्मं यंधइ।
- १०६. [प्र०] सिणाए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगविह्रबंधए वा, अवंधए वा। एगं वंधमाणे एगं वेयणिज्ञं कम्मं बंधइ २१।
- १०७. [प्र०] पुलाए ण मंते ! कित कम्मप्पगडीओ वेदेश श [उ०] गोयमा ! नियमं अट्ट कम्मप्पगडीओ वेदेश । एवं जाय-कसायकुसीले ।
- १००. [प्र०] हे भगवन् ! स्नातक केटल काळ सुची वधता परिणामवाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! ইলঘन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पण अंतर्मुहूर्त सुधी वधता परिणामवाळो होय.
- १०१. [प्र०] स्नातक केटला काळ सुधी स्थिर परिणामवाळो होय ! [उ०] हे गैातम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट कांहक (आठ वरस) न्यून पूर्वकोटी वर्ष सुधी ते स्थिर परिणामवाळो होय.

६१ बन्धदार-पुलाकने कर्तप्रकृति-ओनो बंधः बकुशने कसैप्रकृति-ओनो बन्धः १०२. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाक केटली कर्मप्रकृतिओने बांघे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक आयुष सिवायनी \*सात कर्मप्रकृ-ओने बांघे.

१०३. [प्र०] हे भगवन् ! बकुरा केटली कर्मप्रकृतिओने बांचे ! [उ०] हे गौतम ! ते सात कर्मप्रकृतिओने के आठ कर्मप्र-कृतिओने बांचे. जो सात कर्मने बांचे तो आयुष सिवायना सात कर्मने बांचे, अने जो आठ प्रकृतिओ बांचे तो संपूर्ण आठ प्रकृतिओ बांचे. ए प्रमाणे प्रतिसेवनाकुशील पण जाणवो.

कपायकुशीलने प्रकृ-तिओनो दन्धः १०४. [प्र०] हे भगवन् ! कपायकुरील केटली कर्मप्रकृतिओने बांधे ? [उ०] हे गौतम ! ते सात कर्मप्रकृतिओ, आठ कर्म-प्रकृतिओं के छ कर्मप्रकृतिओने बांधे, जो सातने बांधे तो आयुष सिवायनी सात बांधे, आठने बांधे तो प्रतिपूर्ण साठ प्रकृतिओने बांधे, अने छने बांधे तो <sup>†</sup>आयुप अने मोहनीय सिवायनी छ कर्मप्रकृतिओने बांधे.

निर्भःधने कर्मेप्रकृति-भोनो बंध. स्नान्त्रने कर्मप्रकृति-तिओनो बध- १०५. [प्र०] हे भगवन् ! निर्फ्य केटली कर्मप्रकृतिओने बांधे ! [उ०] हे गौतम ! ते मात्र एक विदनीय कर्मने बांधे.

१०६. [प्र॰] हे भगवन् ! स्नातक केटली कर्मप्रकृतिओने बांधे ! [उ॰] हे गौतम ! ते एक कर्मप्रकृतिने बांधे, अथवा न <sup>१</sup>बांधे. जो एकने बांधे तो एक वेदनीयकर्मने बांधे.

२२ वेटद्वार-पुष्णकने कर्मनुं नेदनः १०७. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाक केटली कर्मप्रकृतिने वेदे—अनुभवे ! [उ०] हे गौतम ! ते अवश्य आठे कर्मप्रकृतिओने वेदे. ए प्रमाणे यावत्—कपायकुरील संबन्धे जाणबुं.

९०० \$ स्नातक जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त वर्धमान परिणामवाळो होय, केमके शैलेशी अवस्थामां वर्धमान परिणाम अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होय. तेने अवस्थित परिणामनो काळ पण जघन्यवी अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त होय, जे केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी अन्तर्मुहूर्त घुधी अवस्थित परिणामवाळो थईने शैलेशीने स्वीकारे तेनी अपेक्षाए जाणवो. उत्कर्षथी कांइक न्यून पूर्वकोटि वर्ष काळ होय. कारण के पूर्वकोटी आयुववाळा पुरुषने जन्मधी अधन्य नव वरस गया पछी केनलज्ञान उपजे तेवी ते नव वरस न्यून पूर्वकोटि वर्ष पर्यन्त अवस्थित परिणामवाळो धईने शैलेशी छुधी बिहरे अने शैलेशीमां वर्धमान परिणामवाळो होय.

१०२ \* पुलाकने आयुषनो बन्ध थतो नबी, कारण के तेने आयुषबन्धयोग्य अध्यवसायस्थानको नबी.

१०४ <sup>†</sup> कषायकुषील स्क्ष्मसंपराय गुणस्थानके आयुष न बांधे, कारण के आयुषनो बन्ध अप्रमत्त गुणस्थानक सुधी होय हे, अने मोहनीय बादरक पायोदयना अभावयी न बांधे, माटे मोहनीय अने आयुष तिवाय बाकीनी छ प्रकृतिओ बांधे.

१०५ ! निर्पंथ योगनिमित्त एक वेदनीय कर्म बांधे, कारण के तेने बन्धहेतुओमां मात्र योगनो ज सद्भाव होय छे.

१०६ ी स्नातक अयोगी गुणस्थानके बन्धहेतुना अभावधी अवन्धक छे.

- १०८. प्रिः नियंटे णं-पुच्छा । उ० ] गोयमा ! मोहणिजवजाओ सत्त कम्पप्पगडीओ वेदेह ।
- १०९. [प्रठ] सिणाए णं-पुच्छा। [उठ] गोयमा ! वेयणिख-आउय-नाम-गोयाओ वसारि कम्मप्यगडीओ वेदेश २२ ।
- ११०. [प्रव] पुलाप णं भंते ! कित कामाव्यगडीओ उदीरेति ! [उ०] गोयमा ! आउय-वेयणिज्ञवज्ञाओ छ कम्म-व्यगडीओ उदीरेद ।
- १११. [प्र०] वउसे-पुष्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तविह्उदीरप वा, अट्टविह्उदीरप वा, छविह्उदीरप वा । सत्त उदीरेमाणे आउथवज्ञाको सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति; छ उदीरेमाणे अउय-वेयणिज्ञवज्ञाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति । पडिसेवणाकुसीळे पर्व वेव ।
- ११२. [प्र०] कसायकुसीले-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्टविहउदीरए वा, छिष्ठहउदीरए वा, प्रविहउदीरए वा, प्रविहउदीरए वा, प्रविहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्ञाओं सत्त कम्मप्यगडीओं उदीरेति, अट्ट उदीरेमाणे पिडिपुकाओं अट्ट कम्म-प्यगडीओं उदीरेति, एंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ञ-मोहणिज्ञवज्ञाओं एंच कम्मप्यगडीओं उदीरेति।
- ११३. [प्र॰] नियंठे-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! पंचविहउदीरप वा, तुविहउदीरप वा । पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिख-मोहणिजवजाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेति, दो उदीरेमाणे णाम च गोयं च उदीरेति ।
- ११४. [प्र०] सिणाए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! बुविहत्तदीरए वा अणुदीरए वा । दो उदीरेमाणे णामं च गोयं च उदीरेति २३।
- ११५. [प्र॰] पुलाप णं भंते ! पुलायत्तं जहमाणे किं जहित, किं उवसंपज्जति ! [उ॰] गोयमा ! पुलायत्तं जहित, कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा उवसंपज्जति ।
- ११६. [प्र०] वउसे णं मंते ! वउसत्तं जहमाणे कि जहित, कि उवसंपद्धति !। [उ०] गोयमा ! वउसत्तं जहित, पिडसेवणाकुसीलं वा कसायकुसीलं वा असंजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपद्धति ।
  - १०८. [प्र०] हे भगवन् ! निर्प्रथ केटली कर्मप्रकृतिओने वेदे ! [उ०] हे गौतम ! मोहनीय सिवायनी सात कर्मप्रकृतिओने वेदे.

निर्धन्थने कर्मवेदन-

- १०९. [प्र०] हे भगवन् ! स्नातक केटली कर्मप्रकृतिओने वेदे ? [उ०] हे गौतम ! वेदनीय, आयुप, नाम अने गोत्र—ए चार स्नातकने कर्मवेदनः कर्मप्रकृतिओने देदे.
- ११०. [प्र०] हे भगवन् ! पुळाक केटली कर्मप्रकृतिओंने उर्दारे? [उ०] हे गौतम ! \*आयुप अने वेदनीय सिवाय छ कर्म- । प्रकृतिओंने उदीरे.

२**३** उदीरणा-पुरुषकेने उदीरणा-

१११. [प्रo] बकुरा केटली कर्मप्रकृतिओने उदीरे ! [उo] हे गौतम ! सात, आठ के छ कर्मप्रकृतिओने उदीरे. जो ते सातने उदीरे तो आयुप सिवायनी सात कर्मप्रकृतिओने उदीरे, जो आठ प्रकृतिओने उदीरे तो संपूर्ण आठे कर्मप्रकृतिओने उदीरे, अने जो छने उदीरे तो आयुप अने वेदनीय सिवायनी छ कर्मप्रकृतिओने उदीरे. प्रतिसेवनाकुरील पण एज प्रमाणे समजवो.

बकुशने उदीरणा-

११२. [प्र०] हे भगवन् ! कषायकुशील केटली कर्मप्रकृतिओने उदीरे ! [उ०] हे गौतम ! ते सात, आठ, छ के पांच कर्मप्रकृतिओने उदीरे . सातने उदीरतो आयुष सिवायनी सात कर्मप्रकृतिओने उदीरे, आठने उदीरतो संपूर्ण आठ कर्मप्रकृतिने उदीरे, छने उदीरतो आयुष अने वेदनीय सिवायनी छ प्रकृतिओने उदीरे, अने पांचने उदीरतो आयुष, वेदनीय तथा मोहनीय सिवायनी पांच कर्मप्रकृतिओने उदीरे.

कपायकुद्गीलने उदीरणाः

११३. [प्र०] हे भगवन् । निर्प्रथ केटली कर्मप्रकृतिओने उदीरे ! [उ०] हे गौतम ! ते पांच के वे कर्मप्रकृतिओने उदीरे. पांचने उदीरतो आयुष, वेदनीय अने मोहनीय सिवायनी पांच कर्मप्रकृतिओने उदीरे, अने बेने उदीरतो नाम अने गोत्र ए वे कर्मप्रकृतिओ उदीरे.

स्नातकने उदीरणा-

२४ उपसंपद्-दानदार~

- ११४. [प्र०] हे भगवन्! स्नातक केटली कर्मप्रकृतिओने उदीरे ! [उ०] हे गौतम ! ते वे कर्मने उदीरे अथवा न उदीरे. बेने उदीरतो नाम अने गोत्र कर्मने उदीरे छे.
- ११५. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाक पुलाकपणानो त्याग करतो शेनो त्याग करे अने शुं प्राप्त करे ? [उ०] हे गौतम ! पुलाकपणानो त्याग करे अने कषायकुक्कीलपणुं पामे के असंयतपणुं पामे.

पुलाकनो उप-संपद्-हान मकुदानी उपसंपद् अने द्वानः

११६. [प्र०] हे भगवन् ! बकुश बकुशपणाने छोडतो शुं छोडे अने शुं पामे ! [उ०] हे गौतम ! बकुशपणुं छोडे अने प्रतिसे-बाकुशील्पणुं, कथायकुशील्पणुं, असंयम के संयमासंयमने पामे.

११०-११३ \* पुलाक आयुष अने बेदनीय कर्मने उदीरतो नशी, कारण के तेने तथाविध अध्यवसायस्थानको नशी. परन्तु ते पूर्वे उदीरीने पुलाकपणाने पामे छे. प्रमाण जे जे प्रकृतिओने उदीरतो नशी ते ते प्रकृतिओने पूर्वे उदीरतो बकुशादिपणाने पामे छे. ज्ञातक सयोगी अवस्थामां नाम-गोप्र कर्मनो उदीरक छे अने आयुष अने बेदनीय कर्मनी पूर्वे उदीरणा कहेली छे.

११७. [प्र॰] पडिसेवणाकुसीले णं भंते ! पडि॰-पुच्छा । गोयमा ! पडिसेवणाकुसीलक्तं जहित, वउसं वा, कसाय-कुसीलं वा, अस्संजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ।

११८. [प्र०] कसायकुसीले-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! कसायकुसीलक्तं जहति, पुलायं वा, वउसं वा पडिसेवणा-कुसीलं वा, णियंटं वा, अस्संजमं वा, संयमासंयमं वा उघसंपद्धति ।

११९. [प्र०] णियंडे-पुच्छा । [उ०] गोयमा । नियंडतं जहति, कसायकुसीलं वा, सिणायं वा, अस्संजमं वा उयसंपद्धति ।

१२०. [प्र०] सिणाप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिणायसं जहति, सिद्धिगतिं उवसंपज्जति २४ ।

१२१. [प्र०] पुलाप णं मंते ! कि सन्नोवउत्ते होजा, नोसन्नोवउत्ते होजा ! [उ०] गोयमा ! णोसन्नोवउत्ते होजा ।

१२२. [प्र॰] बउसे णं भंते !-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सन्नोवउसे वा होज्जा, नोसन्नोवउसे वा होज्जा। एवं पिर-सेवणाकुसीले वि; एवं कसायकुसीले वि । नियंटे सिणाए य जहा पुलाए २५ ।

१२३. [प्र॰] पुरुष णं भंते ! किं आहारप होजा, अणाहारप होजा ? [उ॰] गोयमा ! आहारप होजा, णो अणा-हारप होजा । एवं जाय-नियंटे ।

१२४. [प्र०] सिणाए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! आहारप वा होजा, अणाहारप वा होजा २६ ।

१२५. [४०] पुलाप णं भंते ! कित भवग्गहणाई होज्जा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पक्कं, उक्कोसेणं तिन्नि ।

मनिसेवनाकुशीलनी उपसंपद् अने हान- ११७. [प्र०] हे भगवन् ! प्रतिसेवनाकुशील प्रतिसेवनाकुशीलपणुं छोडतो छुं छोडे अने छुं पामे ! [उ०] हे गौतम ! प्रतिसेव-नाकुशीलपणुं छोडे अने बकुशपणुं, कथायकुशीलपणुं, असंयम के मंयमामंयम पामे.

कपायकुशीलनी उपसंपद अने हानः ११८. [प्र०] हे भगवन् ! कपायकुशील कषायकुशीलपणुं छोडतो शुं छोडे अने शुं पामे ? [उ०] हे गौतम ! कषायकुशीलपणुं छोडे अने पुलाकपणुं, बकुशपणुं, प्रतिसेवनाकुशीलपणुं, निर्भेषपणुं, असंयम के संयमासंयमने पामे.

निर्धन्य ज्ञं छोडे अने झं पामे ! ११९. [प्र॰] हे भगवन् ! निर्प्रथ निर्प्रथपणुं छोडतो हां छोडे अने हां पामे ? [उ०] हे गौतम ! \*निर्प्रथपणुं छोडे अने कषायकु-शीलपणुं, स्नातकपणुं के असंयम पामे.

मातक ह्यं छोडे भने ह्यं पामे. ! १२०. [प्र०] हे भगवन् ! स्नातक स्नातकपणुं छोडतो हां छोडे अने हां पामे ? [उ०] हे गौतम ! स्नातकपणुं छोडे अने सिद्धिगतिने पामे.

२५ संबादार~ पुलाक अने संका-

१२१. [प्र०] हे भगवन्! पुलाक <sup>†</sup>संज्ञोपयुक्त—आहारादिनी आसक्ति युक्त छे के नोसंज्ञोपयुक्त—आहारादिनी अनासक्ति युक्त छे? [उ०] हे गौतम! संज्ञोपयुक्त नथी, पण नोसंज्ञोपयुक्त छे.

बकुश अने संज्ञाः

१२२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं बकुश संज्ञोपयुक्त छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! संज्ञोपयुक्त छे अने नोसंज्ञोपयुक्त पण छे. ए प्रमाणे प्रतिसेवनाकुशील अने कपायकुशील पण जाणवा. स्नातक अने निर्प्रेथ पुलाकनी पेठे (नोसंज्ञोपयुक्त ) जाणवा.

२६ आहारडार-पुलाक अने आहार.

१२३. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं पुलाक आहारक होय के अनाहारक होय ? [उ॰] हे गौतम ! अाहारक होय, पण अनाहारक न होय. ए प्रमाणे यावत्—निर्प्रेथ सुधी जाणवुं.

अवातक अने आहार. स्नातक अने आहार.

१२४. [प्र॰] हे मगवन् ! द्युं स्नातक आहारक होय के अनाहारक होय ! [उ॰] हे गौतम ! आहारक पण होय अने अनाहारक पण होय.

२७ भवद्वार-पुलायने भवः

१२५. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाकने केटलां भव**प्रह**ण याय ! [उ०] हे गौतम ! "जघन्य एक अ**ने** उन्**कृष्ट त्रण भवप्रहण याय.** 

११९ में उपदामनिर्प्रन्थ श्रेणिथी पड़तो सक्षाय-कषायकुशील थाय, अने श्रेणिमा शिखरे मरण पामी देवपणे उत्पन्न थतो असंयत थाय, पण देशिक-रित न थाय. कारण के देवपणामां देशियरित नथी. यदापि श्रेणिथी पड़ीने देशिवरित पण थाय छतां ते आहें न कह्यो, कारण के श्रेणिथी पड़ीने तुरत ज देश-विरित थतो नथी, पण क्षायकुशील थईने पड़ी देशिवरित थाय छे.

१२९ ं आहारादि संज्ञामां उपयुक्त-आहारादिना अभिलावनाळो संज्ञोपयुक्त कहेवाय छे. आहारादिनो उपभोग करवा छतां तेने विषे आसिक्तरिहित नोसंज्ञो पयुक्त कहेवाय छे. तेमां आहारादिने विषे आसिक्तरिहत होनाची पुलाक, निर्मन्य अने झातक नोसंज्ञोपयुक्त होय छे. यद्यपि निर्मन्य अने झातक तो वीतराग होनाची नोसंज्ञोपयोगयुक्त छे, पण गरागी होनाची पुलाक नोसंज्ञोणयुक्त केम होइ शके-ए शंका न करवी, केमके सरागपणामां सर्वथा आसिक्तरिहतपणुं नची एम न कही शकाय. बकुशादि सराग होना छतां पण निःसंग छे एम प्रतिपादन करेलुं छे. चूर्णिकार कहे छे के-नोसंज्ञा-ज्ञानसंज्ञा, तेमां पुलाक, निर्मन्य अने झातक नोसंज्ञोणयोग सहिन होय छे एटले ज्ञानप्रधान उपयोगवाळा होय छे पण आहारादि संज्ञाना उपयोगवाळा होता नधी. बकुशादि तो नोसंज्ञा अने संज्ञा विषेना उपयोगवाळा होता होता हो छे.

१२३ ‡ पुलाकशी आरेमी निर्धन्य सुधीना मुनिने विप्रहगत्यादि रूप अनाहारकपणाना कारणनो अभाव होवाशी आहारकपणुं ज छे. सातक केविल-रामुद्धातना त्रीजा चोथा अने पांचमा समयमां अने अथोगी अवस्थामां अनाहारक छे अने ते सिवाय अन्यत्र आहारक छे.

१२५ <sup>श</sup> जघन्यतः एक भवमां पुलाक थइने कपायकुशीलपणादि अन्य कोइ पण संयतपणाने एक वार के अनेक वार ते भवमां के अन्य अवमां पामीने सिद्ध थाय छे अने उन्कृष्ट देवादिभव वडे अंतरित त्रण भव सुधी पुलाकपणुं पामे छे.

- १२६. [प्र॰] वजसे-पुरुष्ठा । [ज॰] गोयमा ! जहन्नेण एकं, उक्कोलेणं सट्ट । एवं पडिसेवणाकुसीले वि, एवं कसा-यकुसीले वि । नियंठे जहा पुलाप ।
  - १२७. [प्रव] सिणाए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एकं २७ ।
- १२८. [प्रव] पुलागस्स णं मंते ! प्रगमवगाहणीया केवितया आगरिसा पत्रता ! [उ०] गरेयमा ! जहचेषं पद्धो, जकोसेणं तिन्नि ।
- १२९. [प्र०] यउसस्स णं-पुरुष्ठा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पक्को, उक्कोसेणं सतग्गसो । एवं पिडसेवणाकुसीले वि, एवं कसायकुसीले वि ।
  - १३०. [प्र०] णियंडस्स णं-पुरुछा । [उ०] गोयमा ! जदलेणं एको, उक्रोसेणं दोनि ।
  - १३१. [प्र.] सिणायस्स णं-पुरुछा । [उ.] गोयमा ! एको ।
- १३२. [प्र॰] पुरुष्णस्स णं सते ! नाणाभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पञ्चता ! [उ॰] गोयमा ! जहनेणं दोनि, उद्योतेणं सत्त ।
- १३६. [प्र०] वजसस्स-पुच्छा । [उ०] गोयमा! जहन्नेणं दोन्नि, उक्कोसेणं सहस्सम्मसो; पर्व जाव-कसाय-कुसीलस्स ।
  - १३४. [प्र०] नियंठस्स णं-पुरुछा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं दोन्नि, उक्रोसेणं पंच ।
- १२६. [प्रठ] हे भगवन्! बकुराने केटलां भवप्रहण थाय ? [उठ] हे गौतम ! जघन्य \*एक अने उत्कृष्ट आठ भवप्रहण थाय. ए वकुराने भव-प्रमाणे प्रतिसेवनाकुरील अने कपायकुरील संबन्धे पण जाणबुं. तथा पुलाकनी पेठे निर्प्रथने पण जाणबो.
  - १२७. [प्राव] हे भगवन् ! स्नातकने केटलां भवप्रहण थाय ! [उ ० ] हे गौतम ! एक भवप्रहण थाय .

स्नातकने भव-

१२८. [प्र०] हे मगवन् ! पुलाकने एक भवमां केटला आकर्ष ( चारित्रप्राप्ति ) कहेला छे ? [उ ০] हे गोतम ! जघन्य <sup>†</sup>एक। भने उत्कृष्ट त्रण आकर्ष थाय.

२८ धाकर्ष-पुरुषको भाकर्षः

१२९. [प्रठ] हे भगवन् ! बकुशने एक भवमां केटल आकर्ष थाय ! [उठ] हे गौतन ! जबन्य एक अने उत्कृष्ट शतपृथक्य— बसोधी मांडी नवसो सुधी आकर्ष थाय. ए प्रमाणे प्रतिसेशनाकुशील अने कपायकुशील संबन्धे पण जाणकुं-

बकुशने आकर्ष.

१२०. [प्र०] हे भगवन् ! निप्रन्थने एक भवमां केटला आकर्ष थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेने जवन्य रिक अने उत्कृष्ट वे निर्धन्थने बाकर्ष-आकर्ष थाय.

१३१. [प्र०] हे भगवन् ! स्नानकने एक भवमां केटला आकर्ष थाय ? [उ०] हे गौतम ! एक आकर्ष थाय.

स्नातकने आकर्ष-

१३२. [प्र०] हे भगवन् ! पुलाकने अनेक भवमां केटला आकर्ष थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेने जवन्य "वे अने उत्कृष्ट सात आकर्ष थाय.

पुलाकने भनेक भवमां आकर्षः

१३३. [प्र०] हे भगवन् ! बकुराने अनेक भवमां केटला आकर्ष थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेने जघन्य वैवे अने उत्कृष्ट वे हजारथी नव हजार सुची आकर्ष होय. ए प्रमाणे यावत्—कपायकुशील संबंधे पण जाणवुं.

बकुताने अनेवः भव-मां आवर्षः

१३४. [प्र॰] हे भगवन् ! निर्प्रथने अनेक भन्नमां केटला आकर्ष थाय ! [उ॰] हे गौतम ! जन्नन्य प्रेवे अने उत्कृष्ट पांच आकर्ष थाय.

निर्धन्थने आकर्ष.

१२८ में आकर्ष-चारित्रना परिणाम, तेवा आकर्ष पुलाकने जधन्यतः एक अने उत्कर्षणी त्रण होय छे, अने बकुशने जधन्यणी अने उत्कर्षणी शतपृथक्तव (बसोबी नव सो सुधी) होय छे.

१३० 🕇 निर्प्रत्यने एक भवमां जघन्यथी एक अने वे बार उपशमश्रेणि करवाणी उत्कृष्ट वे आकर्ष होय छे.

9३२ पुलाकने एक भवमां एक अने अन्य भवमां बीजो-एम अनेक भवने आश्रवी जघन्यथी वे आकर्ष होय छे अने उत्कृष्ट्यी सात आकर्ष होय छे. पुलाकपणुं उत्कृष्ट त्रण भवमां होय, तेमां एक भवमां उत्कृष्टितः त्रण बार होय. प्रथम भवमां एक आकर्ष अने बीजा वे भवोमां त्रण त्रण आकर्ष होय-इत्यादि विकल्पयी सात आकर्ष होय.

१३३ ६ वकुशने उत्कर्षणी आठ सब होय छे, अने तेमांना प्रत्येक भवमां उत्कर्षणी अतपृथकत्व आकर्ष होय. ज्यारे आठे भवोमां उत्कर्षणी प्रत्येके नवसो नवसो आकर्ष होय∽एटले नवसोने आठे गुणतां सात हजार ने बसो याय. ए प्रमाणे बकुशने अनेक सबने आश्रयी सहस्राष्ट्रयक्त आकर्ष होय. —टीका.

१२४ § निर्प्रन्यने उत्कृष्ट त्रण मव होय. तेमांना प्रथम मदमां ने आकर्ष, बीजा भदमां ने अने त्रीजा मदमां एक. श्रपक निर्प्रन्थरणानी आकर्ष करी सिंद्र थाय. एम अनेक भदमां निर्प्रन्थने पांच आकर्ष होय.

१२६ \* अहीं कोई एक भवमां बकुशपणुं अने कषायकुशीलपणुं पामीने सिद्ध थाय, अने कोई एक भवमां बकुशपणुं पामी भवान्तरे बकुशपणुं पाम्पा सिवाय सिद्ध थाय, माटे बकुशने जधन्य एक भव कलों छे, अने उत्कृष्ट आठ भवो कला छे, कारण के उत्कृष्टपणे आठ भवछुची चारित्रनी प्राप्ति याय छे. तेमां कोइक ते आठ भवो बकुशपणावडे अने तेमां छेल्लो भव सकषायत्वादि युक्त बकुशपणावडे पूरो करे छे, अने कोइ तो दरेक भव प्रतिसेवाकुशीलत्वादियुक्त बकुशपणावडे पूर्ण करे छे.

१३५. [प्र॰] सिणायस्स-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! नत्थि एको वि २८ ।

१३६. [प्र०] बुहाय जं भंते ! कालको केवचिरं होइ ! [उ०] गोयमा ! जहन्नेजं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतो-सहत्तं।

१३७. [प्रः] वउसे-पुच्छा । [उः] गोयमा ! अह्षेणं एकं समयं, उक्रोसेणं देस्णा पुषकोडी । एवं पडिसेषणा-कुसीले वि, कसायकुसीले वि ।

१३८. [प्र०] नियंठे-पुष्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।

१३९. [प्र०] सिणाप-पुष्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्रोसेणं देसूणा पुष्ठकोडी ।

१४०. [प्रः] पुलाया णं भंते! कालभो केवचिरं होति? [उ०] गोयमा! जहकेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतो-सुदुत्तं।

१४१. [प्र॰] वउसे णं-दुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सद्यद्धं; एवं जाव-कसायकुसीला । नियंटा जहा पुलागा, सिणाया, जहा वउसा २९ ।

१४२. [प्र॰] पुलागरस णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ! [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ ओसप्पिणि-उरसप्पिणीओ कालमो, स्रेसओ अवहृपोग्गलपरियष्टं देसूणं । एवं जाव-नियंउस्स ।

१४३. [प्र॰] सिणायस्स-पुच्छा । [उ॰] गोयमा । नन्धि अंतरं ।

खातकने आकर्ष-

१३५. [प्र०] हे भगवन् ! स्नातकने अनेक भवमां केटला आकर्ष धाय ? [उ०] हे गौतम ! तेने एक पण आकर्ष न धाय.

२९ काळदार-पुलाकनो काळः १३६. [प्र०] हे भगवन् ! पुराक काळनी अपेक्षाए केटला काळ सुची रहे ! [उ०] हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट \*अंत-र्सुइर्त सुची रहे.

बकुरानी काळ.

१३७. [प्र•] हे भगवन् ! बकुश केटला काळ सुची रहे ! [उ॰] हे गौतम ! जघन्य । एक समय अने उत्कृष्ट कईक न्यून पूर्व-कोटि वर्ष सुची रहे. ए प्रमाणे प्रतिसेवनाकुशील अने कषायकुशील विषे पण समजवुं.

निर्धन्धनो काळ.

१३८. [प्र०] हे भगवन् ! निर्प्रंथ केटला काळ सुधी रहे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अंतर्भुद्धर्त सुधी रहे.

स्नातकनो काळ-

१३९. [प्र॰] स्नातक केटला काळ सुघी रहे । [उ॰] हे गौतम ! जधन्य अंतर्मुहूर्न अने उत्कृष्ट कंइक न्यून पूर्वकोटि वर्ष सुधी रहे.

पुलाकोनो काळ-

१४०. [प्र०] हे मगवन् ! पुराको काळनी अपेक्षाए केटरा काळ सुची रहे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ जवन्य !एक समय अने उत्कृष्ट अंतर्मृहृते सुची रहे.

बकुशोनी काळ.

१४१. [प्र०] बकुशो केटला काळ सुची रहे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सर्य काळ रहे. ए प्रमाणे यायत्—कपायकुशीलो सुची जाणबुं. निर्मेषो पुलाकोनी पेठे जाणवा, अने स्नातको बकुशोनी पेठे जाणवा.

३. अंतरदार− पुरुकादिनु अंतरः

१४२. [प्र०] हे भगवन् ! पुराकने केटला काळ सुचीनुं अंतर होय ! [उ०] हे गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अनंत काळनुं अंतर होय. काळथी अनंत अवसर्पिणी—उत्सर्पिणीनुं, अने क्षेत्रणी कंहक न्यून अपार्ध <sup>ग</sup>पुद्गलपरावर्तनुं अंतर होय छे. ए प्रमाणे यावत्—निर्पेष सुधी जाणवुं.

जातकनुं अंतरः

१४३. [प्र०] स्नातकने केटला काळनुं अंतर होय ? [उ०] हे गौतम! अंतर नथी.

<sup>9</sup>३६ \* पुलाकपण।ने प्राप्त थयेलो ज्यां सुधी अन्तर्भृहूर्त पूर्व न धाय त्यां सुधी भरे नहि, तेम पडे पण नहि. तेबी अधन्यबी तेनो काळ अन्तर्भु-हूर्तनो होय अने उत्कृष्टवी पण अन्तर्भुहूर्त होय.

९३७ <sup>†</sup> बकुषाने चारित्र प्राप्त चया पछी तुरत ज मरणनो संभव होवाधी जघन्य एक समय धने पूर्वकोटी वर्षना आयुववाळो आठ वरसने अंते चारित्र अहण करे ते अपेक्षाए कहंक न्यून पूर्वकोटी वर्ष उत्कृष्ट काळ होय.—टीका.

१४० ‡ एक पुलाक पोताना अन्तर्मुहूर्तना अन्त्य समये वर्तमान होय ते वस्तते बीजो पुलाकपणुं पामे त्यारे बन्ने पुलाकोनो एक समये सद्भाव थाय अने वे होवाबी अनेक पुलाकोनो जयन्य काळ एक समय होय. अने तेओनो उत्कृष्ट काळ अन्तर्मुहूर्त होय. केमके पुलाको एक समये उत्कृष्टवी सहस्रपृथक्त्व होय, अने तेओ घणा होवा छतां तेओनो काळ अन्तर्मुहूर्त छे. केवळ अनेक पुलाकोनी स्थितितुं अन्तर्मुहूर्त एक पुलाकनी स्थितिना अन्तर्मुहूर्तबी मोटुं छे.

१४२ ¶ पुद्रलपरावर्तनुं खरूप था प्रमाणे छे-कोइ प्राणी आकावाना प्रत्येक प्रदेशे मरण पामतो मरणवडे जेटला काळे समस्त लोक व्याप्त करें बेटला काळे क्षेत्रकी पुद्रलपरावर्त थाय.

- १४४. [प्र॰] पुलायाणं भंते ! केवतियं काछं अंतरं होइ ? [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं पकं समयं, उक्कोलेणं संकेजाहं वासाइं।
  - १४५. [प्र॰] बउसाणं भंते ! पुष्छा । [उ॰] गोयमा ! नित्थ अंतरं; एवं जाव-कसायकुसीलाणं ।
- १४६. [प्र०] नियंठाणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा जहन्नेणं पक्षं समयं, उक्षोतेणं छम्मासा । सिणायाणं जहा
- १४७. [प्र०] पुलागस्स णं भंते ! कति समुखाया पत्रता ! [उ०] गोयमा ! तित्रि समुखाया पत्रता, तंत्रहा-चेयणासमुखाय, कीसांयसमुखाय, मारणंतियसमुखाय ।
- १४८. [प्र॰] वउसस्स णं मंते !-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! पंच समुग्वाया पत्रसा, तंत्रहा-वेयणासमुग्वाप, जाव-तेयासमुग्वाप । पर्व पडिसेवणाकुसीळे वि ।
- १४९. [प्र॰] कसायकुसीलस्स-पुच्छा । [उ॰] गोयमा! छ समुग्घाया पश्चा; तंत्रदा-वेयणसमुग्धाप, जाब-आहारगसमुग्धाप।
  - १५०. [घ०] नियंडस्स णं-पुच्छा। [उ०] गोयमा! नित्य पक्को वि।
  - १५१. [प्रव] सिणायस्त-पुद्धा । [उव] गोयमा ! एवे केवलिसमुखाए पश्चते ३१ ।
- १५२. [प्र॰] पुलाप मंते! लोगस्स कि संखेजहमागे होजा १, असंखेजहमागे होजा २, संखेजेसु भागेसु होजा २, असंखेजेसु भागेसु होजा ४, सहलोप होजा ५? [उ॰] गोयमा! मो संखेजहभागे होजा, असंखेजहमागे होजा, मांसेखेजेसु भागेसु होजा, मो असंखेजेसु भागेसु होजा, मो सहलोप होजा। एवं जाव-नियंदे।
- १५३. [प्र०] सिणाए णं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! णो संबेजहमागे होजा, असंबेजहमागे होजा, णो संबेजसु मागेसु होजा, असंबेजेसु भागेसु होजा, सष्टलोए वा होजा ३२ ।
- १४४. [प्र०] हे भगवन्! पुलाकोने केटल काळ सुचीनुं अंतर होय १ [उ०] हे गौतम ! जबन्य एक समय, अने उत्कृष्ट प्रलाकोनुं अंतर संस्थाता वर्षीनुं अंतर होय.
- १४५. [प्र०] हे मगवन् ! बकुशोने केटळा काळ सुधीनुं अंतर होय ! [उ०] हे गैतिम ! अंतर नधी. ए प्रमाणे यावत्—कषाय- किशीले अंतर-कुशीलो सुधी जाणवुं.
- १५६. [प्र०] हे भगवन् ! निर्प्रथोने केटला काळनुं अंतर होय ! [उ०] हे गाँतम ! तेओने जघन्य एक समय, अने उत्कृष्ट छ निर्प्रथोनुं अंतर. मासनुं अंतर होय. स्नातको बकुशोनी पेठे जाणवा.
- १४७. [प्रत] हे भगवन् ! पुलाकने केटला "समुद्धातो कह्या छे ! [उ०] हे गैतिम ! त्रण समुद्धातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे— १९ समुद्धात-वेदनासमुद्धान, कषायसमुद्धात अने मारणांतिकसमुद्धात.
- १४८. [प्र०] हे भगवन् ! बकुराने केटला समुद्धातो कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! पांच समुद्धातो कह्या छे, ते आ प्रमाणे— बङ्गाने समुद्धातो . वेदनासमुद्दात अने यावत्—तैजसमुद्दात. ए प्रमाणे प्रतिसेवनाकुत्तीलने पण जाणवुं.
- १४९. [प्र०] हे भगवन् ! कपायकुशीलने केटला समुद्धातो कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! छ समुद्धातो कह्या छे. ते आ क्षायकुशीलने ममुद्दातोः अमाणे-वेदनासमुद्धात अने यावत्-आहारकसमुद्धात.
  - १५०. [प्र०] निर्प्रयने केटला समुद्वातो कहा। छे ? [उ०] हे गौतम! नेने एक पण समुद्वात नथी.
  - १५१. [प्र०] हे भगवन् ! स्नातकने केटला समुद्वातो होय ? [उ०] हे गौतम ! एक केवलिसमुद्वात होय.
- १५२. [प्र०] हे भगवन् ! पुटाक कि कि संख्यातमा भागमां रहे, असंख्यातमा भागमां रहे, संख्याता भागोगां रहे, असंख्याता भागोमां रहे के सर्व छोकमां रहे ? [उ०] हे गौतम ! संख्यातमा भागमां न रहे, संख्याता भागोमां न रहे, असंख्याता मागोमां न रहे अने आखा छोकमां पण न रहे, किंतु छोकना असंख्यातमा भागमां रहे. ए प्रमाणे यावत्—निर्मेथ सुधी समजवुं.
- १५३. [प्र॰] हे मगवन् ! स्नातक छोकना संख्यातमा भागमां रहे—इत्यादि प्रथ्न. [उ॰] हे गै।तम ! छोकना संख्यातमा भागमां न रहे, पण असंख्यातमा भागमां रहे, असंख्याता भागोमां रहे अने संपूर्ण छोकमां पण रहे.

निर्धन्थने समुदाती-

.

स्नातकने समुद्धात-३२ क्षेत्रहार-

पुलाकनु क्षेत्र-

१४० \* पुलाकने संज्वलन कवायनो उदय होवाथी कपायसमुद्धात संभवे छे. यदापि पुलाकने मरण नदी तो पण मारणांतिक समुद्धात होय छे, कारण के मरणसमुद्धातवी निश्च थया पछो कवायक्क्ष्यीलस्थादिक्य परिणामना सद्धावमां तेनुं मरण थाय छे.

<sup>943</sup> किविलिससुद्धातावस्थामां स्नातक शरीरस्थ होय के दंडकगटावस्थामां होय त्यारे ते लोकना स्नसंस्थातमा भागमां रहे छे. मन्यानावस्थामां तेणे कोकनो घणो भाग न्याप्त करेलो होवायी अने योडो भाग अन्याप्त होवायी लोकना असंस्थाता भागोमां वर्ते छे, अने ज्यारे सम्म लोक न्याप्त करे त्यारे संपूर्ण लोकमां होय छे.—टीका.

१५४. [प्र०] पुराद जं मंते ! स्रोगस्स कि संकेद्धहमागं फुसर्, असंकेद्धरमागं फुसर् ? [उ०] दवं जहा ओगाहणा मणिया तहा फुसणा वि माणियचा जाव-सिणाद ३३।

१५५. [प्र०] पुलार णंभंते ! कतरंमि भावे होज्जा ! [उ०] गोयमा ! स्रओवसमिष भावे होज्जा । पर्व जाव--

ृ ५६. [ब्र॰] नियंटे-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! उवसमिए वा मावे होजा, सर्ए वा भावे होजा ।

१५७. [प्र०] सिणाए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! लाइए भावे होजा ३४ ।

१५८. [प्र०] पुलाया णं भंते ! एगसमयणं केवितया होजा ? [उ०] गोयमा ! पिडवजमाणय पहुच सिय अत्यि, सिय नित्य । जह भत्य जहकेणं एको वा दो वा तिक्रि वा, उक्रोसेणं सयपुद्दसं । पुत्रपिडवन्नप पहुच सिय त्थि, सिय नित्य । जह अत्यि जहकेणं एको वा दो वा तिक्रि वा, उक्रोसेणं सहस्सपुद्दसं ।

१५९. [प्रव] बउसा णं मंते! पगसमएणं-पुच्छा। [उव] गोयमा! पडिवज्जमाणए पहुच सिय अत्यि सिय नित्यि। जह अत्यि जहक्षेणं पक्को वा दो वा तिक्षि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं। पुत्रपडिवन्नए पहुच जहक्षेणं कोडिसयपुहुत्तं, उक्कोसेण वि कोडिसयपुहुत्तं। एवं पडिसेवणाकुसीले वि।

१६०. [प्र०] कसायकुसीलाणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पडिवज्रमाणप पडुच सिय अत्यि, सिय नित्य । जह अत्यि जहसेणं पक्को वा दो वा तिम्नि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुद्दत्तं । पुष्टपडिवन्नप पडुच जहनेणं कोडिसहस्सपुदुत्तं, उक्कोसेण वि कोडिसहस्सपुदुत्तं ।

१६१. [प्र०] नियंठाणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पडिवज्जमाणप पहुच सिय अत्थि, सिय नित्थि; जह अत्थि जहन्नेणं

**३३ स्पर्शनादार**-

१५४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं पुलाक लोकना संख्यातमा भागने स्पर्शे के असंख्यातमा भागने स्पर्शे १ [उ०] जेम \*अवगाहना कही तेम स्पर्शना पण जाणवी. ए प्रमाणे यावत्—स्नातक सुधी समजवुं.

१४ भावद्वार~ पुलाकने मानः १५५. [प्र॰] हे भगवन् ! पुलाक कया भावमां होय ! [उ॰] हे गौतम ! क्षायोपशमिक भावमां होय. ए प्रमाणे यावत्— कषायकुशील सुधी जाणतुं.

निर्मन्थने भाव-

१५६. [प्र॰] हे भगवन्! निर्प्रंथ कया भावमां होय ? [उ॰] हे गीतम! ते आंपशमिक भावमां होय, अथवा क्षायिक भावमां पण होय.

कातकने भाव-

१५७. [प्र॰] हे भगवन् ! स्नातक कया भावमां होय? [उ॰] हे गीतम ! ते क्षायिक भावमां होय.

१५ परिमाणहार-पुलाकोनी संस्थाः १५८. [प्र०] हे भगवन् ! एक समये केटला पुलाको होय ! [उ०] हे गौतम ! प्रतिपद्यमान (तत्काळ पुलाकपणाने प्राप्त पता) पुलाकने आश्रयी कदाच होय अने कदाच न होय. प्रतिपद्यमान—पुलाकत्वने प्राप्त यता पुलाक होय तो जघन्य एक, वे के त्रण होय, अने उत्कृष्ट शतपृथक्व—बसोयी नवसो सुची पुलाको होय. तथा पूर्वप्रतिपन (पूर्वे पुलाकपणाने पामेला) पुलाकोनी अपेक्षाए कदाच पुलाको होय अने न होय. जो होय तो जघन्य एक, वे के त्रण होय अने उत्कृष्ट सहस्रप्रथक्व—वे हजारथी नय हजार सुची होय.

बक्रशोनी संस्थाः

१५९. [प्र०] हे मगवन् ! एक समये केटला बकुशो होय ? [उ०] हे गौतम ! प्रतिपद्यमान (वर्तमान समये बकुशात्वने प्राप्त यता ) बकुशोने आश्रयी कदाच होय अने कदाच न होय. जो होय तो जघन्य एक, वे भने त्रण होय. तथा उत्कृष्ट शतपृपक्त्य—बसोधी नव सो सुधी बकुशो होय. पूर्वप्रतिपन्न (बकुशात्वने पूर्व प्राप्त थएला) बकुशो जघन्य अने उत्कृष्ट वे कोडधी नव कोड सुधी होय.

क्रवायकुशीलोनी संख्या- १६०. [प्र०] हे भगवन् ! एक समये केटला कषायकुर्तालो होय. [उ०] हे गौतम ! प्रतिपद्यमान (वर्तमान समये कषायकुर्नालको होय. जो होय तो जघन्य एक, वे अने त्रण होय, अने उत्कृष्ट वे हजारथी नव हजार सुधी होय. पूर्वप्रतिपन्न कषायकुर्तालोने आश्रयी जघन्य अने उत्कृष्ट <sup>†</sup>वे क्रोडधी नव क्रोड सुधी होय.

निर्वन्थोनी संस्या-

१६१. [प्र॰] हे मगवन् ! एक समये केटला निर्प्रेषो होय ! [उ॰] हे गौतम ! प्रतिपद्यमान (वर्तमान समये निर्प्रन्थत्वने प्राप्त थता) निर्प्रन्थो कदाच होय भने कदाच न होय. जो होय तो जघन्य एक वे अने त्रण होय अने उत्कृष्ट एकसोने आठ क्षपकश्रेणिवाळा अने

१५४ \* स्पर्शना क्षेत्रनी पेठे जाणवी, परन्तु जेटलो भाग अवगाह-आश्रित होय ते क्षेत्रनी अवगाहना, अने अवगाह क्षेत्र अने तेना पार्श्वतीं क्षेत्रनी स्पर्शना होय छे.—टीका.

९६० र सर्व संयतोनुं प्रमाण कोटीसहस्नपृथकत्व छे, अने अहीं तेटछं प्रमाण तो केवळ कवायकुक्तीलोनुं कह्युं, अने तेमां पुलाकादिनी संख्या उमेरतां अधिक संख्या यह जाय तो विरोध केम न आवे ? ए शंका न करवी, कारण के कवायकुक्तीलनुं कोटीसहस्नपृथकत्व प्रमाण कह्युं छे ते वे त्रण कोटी सहस्वस्य करवीने तेमां पुलाक-बकुक्तादिनी संख्या उमेरवी तेबी सर्व संयतनुं प्रमाण कह्युं छे तेबी अधिक संख्या नहि याय.— टीका.

पको वा वो वा तिकि वा, उक्कोसेणं वाबट्टं सतं-अट्टसयं अवगाणं, चउप्पन्नं उवसामगाणं । पुत्रपश्चित्रम् परुच सिय मत्यि सिय नित्य । जद्द अत्य, जह्रनेणं एको वा वो वा तिष्ठि वा, उक्रोसेणं सयपुद्धसं ।

१६२. [प्र०] सिणायाणं पुष्णा । [उ०] गोयमा ! पडियज्जमाणए पहुष सिय अत्थि सिय नत्थिः जह अत्थि जह-श्रेणं पक्को वा वो वा तिक्षि वा, उक्कोसेणं अट्टसतं । पुष्ठपिडवक्षय पदुष्ठ जहन्नेणं कोडिपुर्ह्सं, उक्कोसेण वि कोडिपुर्ह्सं ३५ ।

१६६. [प्र०] पपसि णं मंते ! पुरुाग-बउस-पडिसेघणाकुसील-कसायकुसील-नियंट-सिणायाणं कयरे कयरे-जाव-विसेसाहिया वा ? [७०] गोयमा ! सद्वत्थोवा नियंटा, पुलागा संबेजगुणा, सिणाया संबेजगुणा, वजसा संबेजगुणा, परिसेषणाङ्गसीला संबेखगुणा, कसायङ्गसीला संबेखगुणा । 'सेष भंते ! सेषं भंते' ! ति जाव–विहरति ।

#### पणवीसहमें सए छद्री उद्देसओ समत्ती।

चोपन उपशम श्रेणिवाळा मळीने एकसोने बासठ होय. पूर्वप्रतिपन्न निर्पेषो कदाच होय अने कदाच न होय. जो होय तो जघन्य एक बे के त्रण निर्प्रयो होय अने उत्कृष्ट बसोयी नवसो सुची होय.

१६२. [प्र०] एक समये स्नातको केटला होय? [उ०] हे गौतम! प्रतिपद्यमान स्नातको कदाच होय अने कदाच न होय. जो होय तो जघन्य एक, वे अने त्रण होय अने उत्कृष्ट आठसो होय. पूर्वप्रतिपन्न स्नातको जघन्य अने उत्कृष्ट वे कोडधी नव कोड सुधी होय.

सातकोनी संख्याः

३६ अस्पन्तस्य-

१६३. [प्र०] हे भगवन् ! पुरुक्त, बकुश, प्रतिसेवनाकुशील, क्यायकुशील, निर्प्रय भने स्नातक, ए बधामां कया कोनाधी यावत्-विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! निर्प्रेषो सौषी घोडा छे, ते करतां पुराको संख्यातगुण छे. तेथी जातको संख्यातगुण छे, तेथी बकुशो संख्यातगुण छे, तेथी \*प्रतिसेवनाकुशीलो संख्यातगुण छे भने तेथी क्षपायकुशीलो संख्यातगुण छे. "हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज हे"-एम कही यावत्-विहरे छे.

#### पचीशमा शतकमां पष्ट उद्देशक समाप्त.

### सत्तमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] कति णं भंते ! संजया पश्चला ! [उ०] गोयमा ! पंच संजया पन्नला, तंजहा-१ सामाइयसंजय, २ छेदो-बट्टावणियसंजय, ३ परिहारविसुद्धियसंजय, ४ सुहुमसंपरायसंजय, ५ अहबस्रायसंजय।
- २. प्रिव] सामाइयसंजय णं भंते! कतिविद्दे पश्रते ! जिव] गोयमा! दुविद्दे पश्रते, तंजहा—इत्तरिय य आव-कद्दिए य।
  - ३. [प्र०] छेबोबट्टावणियसंजय ण-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहे पन्नते, तंजहा-सातियारे य निरतियारे य ।

## सप्तम उद्देशक.

१. [प्रo] हे भगवन् ! केटला संयतो कह्या छे ? [उ o] हे गौतम पांच संयतो कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ सामायिकसंयत, २ छेदोपस्थापनीयसंयत, ३ परिहारविश्चद्धिकसंयत, ४ सूक्ष्मसंपरायसंयत अने ५ यथाद्यातमंयत.

र प्रशापना-संयतना प्रकार-

- २. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयतना केटला प्रकार कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेना वे प्रकार कह्या छे, ते आ प्रमाणे— १ म्हलरिक (अल्पकालीक) अने २ यावरकयिक (जीवनपर्यंत).
- सामायिक संयतना मकार.
- २. [प्र॰] हे भगवन् ! छेदोपस्थापनीयसंयतना केटला प्रकार कह्या छे ! [उ॰] हे गौतम! तेना वे प्रकार कह्या छे, ते आ डेदोपस्थापनीय सं-प्रमाणे-!सातिचार अने निरतिचार.

यतना प्रकार.

१६३ \* बकुण अने प्रतिसेवनाकुष्मीलनुं प्रमाण कोटीबातपृथक्त वसुं हे तो बकुण करतां प्रतिसेवनाकुरील संख्यातगुणा केम घटी शके ? ए शंकानुं समाधान आ प्रभाणे छे—बदुशनुं कोटीशतपृथक्त प्रमाण कहां छे ते वे त्रण कोटीशतरूप जाणवुं अने प्रतिसेवाङ्गतीलनुं कोटीशतपृथकत प्रमाण चार छ कोटीशतरूप जाणवुं.--टीका.

९ <sup>†</sup> जे सामायिक संयतने चारित्र प्रदृण कर्या पछी भविष्यमां छेदोपस्थानीय संयतपणानो व्यपदेश—व्यवद्वार थाय ते इत्वरिक−अल्पकालिक सामा-चिक संगत कहेवाय **छे अने जेने सामा**जिक चारित्र लीधा पछी बीजो व्यवदेश न बाग ते गावत्कचिक सामाजिक संगत कहेवाय छे.

र 🕽 अतिचारगुक साधुने बीक्षापर्याय छेन्री करी महावत आपवा ते सातिबार छेदोपस्थापनीय कहेवाय अने प्रथम बीक्षित साधुने तथा पार्श्वनाथना तीर्यंबी महाबीरना चीपैमां प्रवेश करनार साधुने फरी महाबत आपवा ते निरितवार छेदोपस्थापनीय कहेवाय छे. छेदोपस्थापनीय साधु प्रथम तीर्थेकर अने पश्चिम वीर्यंकरना तीर्यमां ज होय छे.

- ४. प्रिः परिहारविसुद्धियसंजय-पुच्छा । [उः] गोयमा ! दुविहे पत्रते, तंत्रहा-णिविसमाणय य निविद्वकारय य ।
- ५. प्रिव] सुद्दमसंपराग-पुच्छा । उिव] गोयमा ! दुविहे पन्नते, तंत्रहा-संकिलिस्समाणप य विसुद्धमाणप य ।
- ६. [प्र०] अहम्सायसंजय-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहे पत्रसे, तंजहा—छउमत्थे य केवली य ।
  सामाइयंमि उ कप चाउज्जामं अणुत्तरं धम्मं । तिविहेणं फासयंतो सामाइयसंजओ स खलु ॥ १ ॥
  छेत्तृण उ परियागं पोराणं जो ठवेइ अप्पाणं । धम्मंमि पंचजामे छेदोषट्टावणो स खलु ॥ २ ॥
  परिहरक् जो विसुद्धं तु पंचयामं अणुत्तरं धम्मं । तिविहेणं फासयंतो परिहारियसंजओ स खलु ॥ ३ ॥
  कीभाणू वेययंतो जो खलु उवसामओ व खबओ वा । सो सुहुमसंपराओ अहखाया ऊणओ किचि ॥ ४ ॥
  उवसंते सीणंमि व जो खलु कम्मंमि मोहणिक्रंमि । छउमत्थो व जिणो वा अहसाओ संजओ स खलु ॥ ५॥ (१)
- ७. [प्र०] सामाइयसंजप णं मंते ! कि सवेदप होजा अवेदप होजा ? [उ०] गोयमा ! सवेदप वा होजा, अवेदप वा होजा। जह सवेदप—पवं जहा कसायकुसीले तहेच निरवसेसं। एवं छेदोबट्टाविणयसंजप वि । परिहारविसुद्धियसं- जओ जहा पुलाओ । सुदुमसंपरायसंजओ यहक्खायसंजओ य जहा नियंडो (२)।
- ८. [प्र०] सामाइयसंजप णं मंते ! किं सरागे होज्ञा वीयरागे होज्ञा ? [उ०] गोयमा ! सरागे होज्ञा, नो वीयरागे होज्ञा । एवं जाव-सुहुमसंपरायसंजप । अहक्सायसंजप जहा नियंटे (३) ।
- ९. [प्र॰] सामाइयसंजप णं भंते ! किं ठियकप्पे होजा, अट्टियकप्पे होजा ! [उ॰] गोयमा ! ठियकप्पे वा होजा। अट्टियकप्पे वा होजा।
- १०. [प्र०] छेदोबट्टाविणयसंजय-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ठियकप्ये होजा, नो अद्वियकप्ये होजा । पवं परिहार-विसुद्धियसंजय वि । सेसा जहा सामाइयसंजय ।

परिहारविशुक्तिका प्रकार ४. [प्र॰] हे भगवन् ! परिहारविशुद्धिक संयतना केटला प्रकार कह्या छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेना वे प्रकार कह्या छे. ते आ प्रमाणे—निर्विशमानक ( तप करनार ) अने निर्विष्टकाथिक ( वैयावृत्त्य करनार ).

**स६**मसंपरायना प्रकार- प. [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्मसंपराय गंयतना केटळा प्रकार कहा। छे ! [उ०] हे गौतम ! बे प्रकार कहा। छे, ते आ प्रमाणे→ संह्रिश्यमानक (उपश्रेणिशी पडतो) अने विद्युध्यमानक (उपशामश्रेणि के क्षपकश्रेणि पर चढतो).

यधास्यात संवतना प्रकार-सामायिक संवत-क्रेट्रोपस्वापनीय-परेद्दार विश्वद्भिक-सक्ष्मसंपराय- ६. [प्र०] हे भगवन् । यथाख्यान संयतना केटला प्रकार कहा छे ? [उ०] हे गीनन! वे प्रकार कहा छे, ते आ प्रमाणे—छग्नस्थ अने केवळी. सामायिक स्वीकार्या पछी चार महावतस्य प्रधान धर्मने मन, वचन अने कायार्थी त्रिलिये जे पाळे ते 'सामायिकसंयत' कहेवाय.

पूर्वना पर्यायनो छेद करी जे पोताना आत्माने पांच महात्रतरूप धर्ममां स्थापे ते 'छेदो स्थापनीयसंयत' कहेवाय छे. जे पाच महात्रतरूप अने उत्तमोत्तम धर्मने त्रिविधे-मन यचन अने कायाथी पाळतो अमुक प्रकारनं तप करे ते 'परिहारविद्युद्धिकसंयत' कहेवाय छे.

ंज छोमना अणुओने वेदतो चारित्रमोहने उपरामाने के क्षय करे ते 'सूक्ष्ममंपराय' कहेवाय छे अने ते यथाख्यातसंयतयी कईक न्यून होय छे. मोहनीय कर्म उपराान्त के क्षीण थया पछी जे छग्नस्थ होय के जिन होय ते 'यथाख्यानसंयत' कहेवाय छे.

२ **वेद-**सामायिक संयतने नेदः

७. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयत वेदवाळो होय के वेद वरहित होय ! [उ०] हे गौतम ! ते \*वेदवाळो होय अने वेदिवर-हित पण होय. जो वेदवाळो सामायिकसंयत होय तो तेने बधी हकी कत कपायकुशीलनी पेठे जाणवी. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीयसंयत पण समजवो. परिहारविद्युद्धिक संयत संबंधी हकीकत पुलाकनी पेठे जाणवी. सूक्ष्मगंतराय संयत अने यथाख्यात संयत निर्पयनी पेठे (अवेदक ) जाणवा.

३ राग-सामायिक संयत अने रागः ४ कल्प- ८. [प्र॰] हे भगवन् ! कुं सामायिक संयत रागवाळो होय के वीतराग होय ! [उ॰] हे गौतम ! ते रागवाळो होय, पण वीतराग न होय. ए प्रमाण सूक्ष्मसंपराय संयत संबंधे पण जाणबुं. यथाख्यात संयतने निर्प्रयनी पेठे जाणबुं. ९. [प्र॰] हे भगवन् ! कुं सामायिक संयत स्थितकन्पमां होय के अस्थितकन्पमा होय ! [उ॰] हे गौतम ! स्थितकन्पमां पण

ह अल्प~ सामायिक संयतने कल्प-छेदोपस्यापनीयने

कल्प.

- होय अने अस्थितकल्पमां पण होय. १०. [प्र०] हे भगवन् ! ग्रुं छेदोपस्थापनीय संयत स्थितकल्पमां होय के अस्थितकल्पमां होय ? [उ०] हे गौतम ! †स्थितकल्पमां
- होय, पण अस्थितकल्पमां न होय. ए प्रमाणे परिहारिवशुद्धिक संयतने पण जाणवुं. अने बाकीना बधा सामायिक संयतनी पेठे जाणवा.

१ लोभमणं बेदतो क ।

७ \* नवमा गुणस्थानक सुधी सामायिक संयत कहेवाय छे. नवमा गुणस्थानके वेदनी उपराम अथवा क्षय थाय छे, माटे त्यां सामायिक संयत अवेदक होय छे अने तेना पूर्ववर्ती गुणस्थाने सर्वेदक होय छे. जो ते स्वेदक होय तो ते त्रण वेदवाळी होय छे अने अवेदक होय तो ते श्लीमवेद होय के उपशान्तवेद होय. परिहारविद्यद्विक संयत पुलाकनी पेठे पुरुषवेदवाळो के पुरुषनपुंसकवेदवाळो (कृत्रिमनपुंसक) होय छे.

१० ं अस्थितकल्प मध्यम बाबीश जिनना तीर्थमां अने महाविदेह जिनना तीर्थमाः होय छ, अने त्यां छेदोपस्थापनीय चारित्र नथी. तेथी छेदोपस्थापन पनीयसंयतने अस्थितकल्प न होय.

- ११. [प्र0] सामाइयसंजप णं मंते ! किं जिणकप्पे होजा, धेरकप्पे होजा, कप्पातीते होजा ? [उ०] गोयमा ! जिणकप्पे वा होजा, जहा कसायकुसीले तहेव निरवसेसं । छेदोबट्टावणिओ परिहारिवसुद्धिओ य जहा वउसो, सेसा जहा नियंटे (४) ।
- १२. [प्र॰] सामादयसंजय णं मंते! किं पुलाय होजा, बजसे, जाब-सिणाय होजा! [उ॰] गोयमा! पुलाय बा होजा, बजसे, जाब-कसायकुसीले वा होजा, नो नियंटे होजा, नो सिणाय होजा। यवं छेदोबट्टाबणिय वि।
- १३. परिहारविद्धिद्धियसंजय णं अंते !-पुष्छा । [उ०] गोयमा ! नो पुलाप, नो वउसे, नो पिडसेवणाकुसीले होजा। कसायकुसीले होजा, नो नियंडे होजा, नो सिणाय होजा । एवं सुहुमसंपराय वि ।
- १४. [प्र∘] अहक्कायसंजप-पुक्छा । [४०] गोयमा ! नो पुलाप होज्ञा, जाव-नो कसायकुसीले होज्ञा, नियंटे बा होज्ञा, सिणाप वा होज्ञा (५)।
- १५. [प्र०] सामाइयसंजय णं मंते ! कि पडिसेषय होजा, अपिडसेषय होजा ! [उ०] गोयमा ! पिडसेषय वा होजा । जद पिडसेषय होजा, कि मूलगुणपिडसेषय होजा, सेसं जहा पुलागस्स । जहा सामा-इयसंजय पवं छेदोषट्टायणिय वि ।
- १६. [प्र०] परिहारविसुद्धियसंजप-पुच्छा । [उ०] गोयमा! नो पडिसेवप होजा, अपडिसेवप होजा । पवं जाय-अहक्कायसंजप (६) ।
- १७. [प्र०] सामारयसंजय णं मंते ! कतिसु नाणेसु होजा ? [उ०] गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेसु होजा ? [उ०] गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेसु होजा, यवं जव-सुंहुमसंपराय । अहक्कायसंजयस्स पंच नाणारं भयणाय जहा नाणुदेसय ।
- १८. [प्र॰] सामाइयसंजय णं भंते ! केवतियं सुयं अहिज्जेजा ? [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं अट्ट पत्रयणमायाओ, जहा कसायकुसीले । एवं छेदोषट्टावणिए वि ।
- ११. [प्र॰] हे भगवन् ! कुं सामायिकसंयत जिनकल्पमां होय, स्थविरकल्पमां होय के कल्पातीत होय है [उ०] हे गौतम ! ते जिनकल्पमां होय—इत्यादि बाकी बधुं कषायकुशीलनी पेंटे जाणवुं. छेदोपस्थापनीय अने परिहारिवशुद्धिकनी हकीकत बकुशनी पेठे जाणवी अने बाकी बधा निर्प्रयनी पेठे समजवा.
- १२. [प्र०] हे भगवन् ! ज़ुं सामायिकसंयत पुलाक होय, बकुरा होय के यायत्—स्नातक होय ! [उ०] हे गौतम ! ते पुलाक पण होय, बकुरा पण होय, यावत्—कपायकुरािल होय, पण निर्प्रैथ के स्नातक न होय. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीयसंयत संबंधे पण जाणबुं

१३. [प्र०] हे भगवन् । परिहारविश्चद्धिकसंयत शुं पुलाक होय—इस्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पुलाक न होय, बकुरा न होय, प्रतिसेवनाकुरील न होय, निर्प्रथ न होय अने स्नातक न होय, पण कवायकुरील होय. ए प्रमाणे स्क्मसंपराय संयत पण जाणवो.

१४. [प्र॰] यथाएयातसंयत शुं पुलाक होय-इत्यादि प्रभ. [उ॰] हे गौतम ! पुलाक न होय अने यावत्–कपायकुशील न होय, पण निर्पय होय अथवा जातक होय.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सामायिकसंयत प्रतिसेवक—चारित्रविराधक होय के अप्रतिसेवक—आराधक होय ! [उ०] हे गौतम ! प्रतिसेवक पण होय अने अप्रतिसेवक पण होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते प्रतिसेवक होय तो शुं अहिंसादि मूलगुणनो प्रतिसेवक होय के प्रत्याख्यानरूप उत्तरगुणनो प्रतिसेवक होय ! [उ०] बाकी बधुं पुलाकनी पेठे जाणवुं. सामायिकसंयतनी पेठे छेदोपस्थापनीय संयत पण जाणवो.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं परिहारविशुद्धिक संयत प्रतिसेवक छे के अप्रतिसेवक छे ! [उ०] हे गौतम ! ते प्रतिसेवक नथी, पण अप्रतिसेवक छे. ए प्रमाणे यावत्—यथाख्यात संयत सुधी जाणवुं.

१७. [प्र०] हे भगवन् । सामायिकसंयतने केटलां ज्ञान होय ? [उ०] हे गौतम ! तेने वे, त्रण के चार ज्ञान होय. ए प्रमाणे कषायकुरितिनों पेठे चार ज्ञान भजनाए होय छे. ए प्रमाणे यावत्—सूक्ष्मसंपराय संयत सुधी जाणतुं. तथा \*ज्ञानोदेशकमां कह्या प्रमाणे यथाख्यात संयतने पांच ज्ञान \*मजनाए होय छे.

१८. [प्र॰] हे भगवन् ! सामायिकसंयत केटछं श्रुत भणे ! [उ॰] हे गौतम ! ते जघन्य भाठ प्रवचनमाता रूप श्रुतनुं अष्ययन करे-इत्यादि वधी हकीकत कषायकुशीलनी पेठे जाणवी. तथा एज रीते छेदोपस्थायनीयसंयतने पण समजबुं. सामायिक जने पुरुषकादि-

परिहारविशुद्ध **अने** पुलाकाविः

> यधास्यात अने पुलाकादि-

५ प्रतिसेवा~ सामाधिक संयत अने प्रतिसेवक-

परिचार विश्वासिक अने प्रतिसेवक-

६ शानदार-

७ श्रुतद्वार-सामायिक संबतने श्रुतः

१ 'सुद्रुमसंपराद्यु स' का।

९७ \* जुओ भग । सं । ३ वा । ८ व । २ पृ० ६९.

- १९. [प्र॰] परिहारविसुद्धियसंजप-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं नवप्रस्स पुद्यस्स तितयं आयारवत्थुं, उद्गो-सेणं असंपुन्नाहं वस पुचाहं अहिजेजा । सुहुमसंपरायसंजप जहा सामाहयसंजप ।
- २०. [प्र०] अहक्षायसंज्ञप-पुच्छा । [उ०] गोयमा! जहन्नेणं अट्ट पवयगमायाओ, उक्रोसेणं चोहस पुडाई अहि-क्रोज़ा, सुयवितिरित्ते वा होज्जा (७) ।
- २१. [प्र॰] सामाइयसंजप णं मंते ! कि तित्ये होजा, स्रतित्ये होजा ! [उ॰] गोयमा ! तित्ये वा होजा, स्रतित्ये वा होजा, तहा कसायकुसीले । छेरोबट्टावणिप परिहारविश्वद्धिय य जहा पुलाप, सेसा जहा सामाइयसंजप (८)।
- २२. [प्र॰] सामादयसंजय णं भंते ! कि सिंछंगे होजा, अन्नर्छिंगे होजा, गिहिलिंगे होजा [उ॰] जहा पुरुष्य । एवं छेदोवट्रावणिय वि ।
- २३. [प्र०] परिहारविसुद्धियसंजए णं भंते ! कि-पुच्छा [उ०] गोयमा ! दव्विंठंगं पि भाविंतं पि पहुच सर्लिगे होजा, नो अविंठंगे होजा। सेसा जहा सामार्यसंजए (९)।
- २४. [प्र॰] सामार्यसंजप णं भंते ! कतिसु सरीरेसु होजा ? [उ॰] गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा—जहा कसायकुसीले । एवं छेदोवट्टावणिप वि, सेसा जहा पुलाप (१०) ।
- २५. [प्र०] सामाइयसंजय णं मंते ! किं कम्मभूमीय होजा, अकम्मभूमीय होजा ? [उ०] गोयमा ! जम्मणं संतिभावं पहुच कम्मभूमीय, नो अकम्मभूमीय-जहा बउसे । एवं छेदोवट्टावणिय वि । परिहारिवसुद्धिय य जहा पुलाय, सेसा जहा सामाइयसंजय (११)
  - २६. [प्र०] सामाइयसंजप णं भंते! किं ओसप्पिणीकाले होजा, उस्सप्पिणिकाले होजा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पि-

परिद्वार विद्युद्धिः कने श्रुतः १९. [प्र॰] हे भगवन् ! परिहारिवशुद्धिकसंयत केटलं श्रुत भणे ? [उ॰] हे गौतम ! ते जघन्य नवमा पूर्वनी त्रीजी आचारवस्तु सुधी, भने उत्कृष्ट अपूर्ण दस पूर्वी भणे. तथा सुक्षमसंपराय संयत सामायिकसंयतनी पेठे जाणवी.

यथारूयातने द्युतः २०. [प्र०] हे भगवन् ! यथास्यातसंयत केटलुं श्रुत भणे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य आठ प्रवचनमाना रूप श्रुत भणे अने उत्कृष्ट चाद पूर्व भणे अथवा श्रुतरहिन (केवली ) होय.

८ तीर्धद्वार-

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सामायिक संयत तीर्थमां होय के तीर्थना अभावमां होय ? [उ०] हे गौतम ! तीर्थमां पण होय अने तीर्थना अभावमां पण होय—इत्यादि बधी हकीकत कपायकुरीलनी पेठे जाणवी. छेदोपस्थापनीय अने परिहारविद्यद्भिक पुलाकनी पेठे जाणवा, अने बाकी बधा सामायिकसंयतनी पेठे जाणवा.

९ डिंगदार-

- २२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सामाधिकसंयत खिंग-साधुना िंगमां होय, अन्य-तापसादिना िंगमां होय के गृहस्थना िंगमां होय? [उ०] ते संबंधी बधी हकीकत पुलाकनी पेठे जाणवी. ए प्रमाणे छंदोपस्थापनीय संयत माटे पण जाणवुं.
- २३. [प०] हे भगवन् ! शुं परिहारिवशुद्धिक संयत खिंठंगे होय, अन्यिक्षंगे होय के गृहस्थितिंगे होय? [उ०] हे गीतम! ते द्रव्यिक्षंग अने भाविक्षंग आश्रयी खिंठगमां होय, पण अन्यिक्षंगे के गृहस्थितिंगे न होय. बाकी बधुं सामायिकसंय-तनी पेठे जाणवुं.

**१० श**रीरद्वार-

२४. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयतने केटलां शरीर होय ! [उ०] हे गीतम ! तेने त्रण, चार, के पांच शरीर होय— इत्यादि बधुं कपायकुशीलनी पेटे जाणवुं. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय संयत विषे पण जाणवुं. बाकीना बधा संयतो पुलाकनी पेठे समजवा.

११ क्षेत्रदार-

२५. [प्र॰] हे भगवन् ! सामायिक संयत कर्मभूमिमां याय के अकर्मभूमिमां थाय ! [उ॰] हे गौतम ! ते जन्म अने सद्भाष बन्नेनी अपेक्षाए कर्मभूमिमा थाय, पण अकर्मभूमिमां न थाय—इत्यादि बधुं बकुशनी पेठे जाणवुं. ए रीते छेदोपस्थापनीय संयतने पण समजवुं. परिहारियशुद्धिकने पुलाकनी पेठे जाणवुं अने बाकी बधा संयती सामायिकसंयतनी पेठे जाणवा.

११ काळ्दार-

२६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञुं सामायिकसंयत उत्सर्पिणीकाळे थाय, अवसर्पिणीकाळे पाय के \*नोउस्सर्पिणी—नोअवसर्पिणी काळे थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते उत्सर्पिणीकाळे थाय—इत्यादि बधुं बकुशनी पेठे (पृ०२४७, सू०५५) जाणवुं. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय संयत पण जाणवो. पण विशेष ए के जन्म अने सद्भावनी अपेक्षाए चारे परिभागमां—सुषमासुषमा, सुषमा

२६ \* नोउरसर्पिणी-नोअवसर्पिणी ना सुषमादि समान त्रण प्रकारना काळमां ( देवकुर्षादिमां ) बकुशनो जनम अने सद्भावशी निवेध कवीं है, अने दुःषमधुषमा समान काळमां ( महाविदेहमां ) तेतुं अस्तित्व हे, परन्तु हेदोपस्थापनीय संयततुं त्यां पण श्वस्तित्व नवी.

णिकाले होखा ? [उ०] गोयमा ! भोसप्पिणिकाले-जद्दा बउसे । एवं छेदोबट्टावणिए वि । नवरं जम्मण-संतिमावं पडुच चउसु वि पित्रमागेसु नत्थि, साहरणं पहुच अन्नयरे पिडमागे होजा, सेसं तं चेष ।

- २७. [प्र०] परिहारविसुद्धिए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होजा, उस्सप्पिणिकाले वा होजा, नो-मोसप्पिण-नोउस्सप्पिणिकाले नो होजा । जह ओसप्पिणिकाले होजा-जहा पुलाओ । उस्सप्पिणिकाले वि जहा पुलाओ । सुदुमसंपरार्भो जहा नियंठो । एवं महक्काओ वि (१२) ।
- २८. [प्र॰] सामाइयसंजप णं भंते ! कालगए समाणे कि(कं)गति गच्छति ! [उ॰] गोयमा ! देवगति गच्छति । [प्र॰] देवगर्ति गच्छमाणे कि भवणवासीसु उववज्जेजा, वाजमंतरेसु उववज्जेजा, जोइसिएसु उववज्जेजा, वेमाणिएसु उववज्जेजा ? [उ०] गोयमा ! णो भवणवासीसु उवयज्जेज्ञा–जद्दा कसायकुसीले । एवं छेदोबट्टावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहा पुलाप । सुद्भमसंपराप जहा नियंटे ।
- २९. [प्र०] अहक्काप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एवं अहक्कायसंजय वि जाव-अजह्ममणुकोसेणं अणुक्तरविमाणेसु उषवज्रेजाः अत्थेगतिए सिज्यति, जाव-अंतं करेति।
- ३०. [प्र०] सामाइयसंजए जं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणे कि र्दसाए उववज्जति-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अवि-राहुणं पदुचा, एवं जहा कसायकुसीले । एवं छेदोबट्टावणिए वि । परिहारियसुद्धिए जहा पुलाए । सेसा जहा नियंठे ।
- ३१. [प०] लामाइयसंजयस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्रमाणस्स केवतियं कालं डिती पन्नता ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं दो पिलओवमार्द, उद्घोसेणं तेसीसं सागरोबमार्द । पवं छेदोबट्टावणिप वि ।
- ३२. [प्र॰] परिहारविसुद्धियस्त-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं दो पिक्षभोवमाई, उक्कोसेणं अट्टारस सागरोव-मार्, सेसाणं जहा नियंडस्स (१३)।
- ३३. [प्र०] सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केयइया संज्ञमट्टाणा पन्नता ? [उ०] गोयमा ! असंखेजा संजमट्टाणा पन्नता, प्त्रं जाघ-परिद्वारिवसुद्धियस्स ।

दुःषमा, अने दुःपमासुपमाना समान काळे न होय. अने संहरणनी अपेक्षाए चारमांधी कोई पण एक परिभागमां होय. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवं.

- २७. [प्र०] हे भगवन् ! य़ां परिहारविशुद्धिक संयत अवसर्षिणीकाळे होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! अवसर्षिणीकाळे होय अने उत्सर्पिणीकाळे पण होय, पण नोउत्सर्पिणी-नोअत्रसर्पिणी काळे न होय. जो ते अवसर्पिणी के उत्सर्पिणीकाळे होय तो, ते संबंधे पुलाकनी पेठे (उ०६ सू० ५२) समजवुं. सूक्ष्मसंपराय संयत निर्प्रयनी पेटे (उ० ६ मू० ५८) जाणवो. ए प्रमाणे यथाख्यात संयत पण जाणवो.
- २८. प्रिव्] हे भगवन् ! सामायिकसंयत काळगत थया पछी कइ गतिमां जाय ? [उव्] हे गौतम ! देवगतिमां जाय. प्रिव्] देवगतिमां जतो सामायिकसंयत शुं भवनवासी देवोमां उत्पन्न थाय, वानव्यंतरोमां उत्पन्न थाय, ज्योतिपिकोमां उत्पन्न थाय के वैमानिकोमां उत्पन्न थाय १ [उ०] हे गौतम ! भवनवासीमां न उत्पन्न थाय-इत्यादि बघी वक्तन्यता क्यायकुशीळनी पेठे (उ० ६ सृ० ५९) जाणवी. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय संयत संबंधे पण जाणबुं. परिहारविश्चद्धिक संयत पुलाकनी पेठे अने सूक्ष्मसंपराय निर्प्रथनी पेठे (उ० ६ सू० ६०) जाणबा.
- २९. [प्र.] यथाख्यात संयत कड़ गतिमां जाय ? [उ.०] हे गौतम ! यथाख्यात संयत पण पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत— जवन्य अने उत्कृष्ट सिवाय अनुत्तरविमानमां उत्पन्न थाय अने केटलाक तो सिद्ध थाय यावत्-सर्व दुःखनो अन्त करनार थाय.
- ३०. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिकसंयत देवलोकोमां उत्पन्न थतो क्षुं इंद्रपणे उपजे-इत्यादि पुच्छा. [उ०] हे गौतम ! संयमनी अनिराधनाने अपेक्षी-इत्यादि बधुं कपायकुरीलर्ना पेठे ( उ० ६ सू० ६३ ) जाणबुं. छेदोपस्थापनीय संयतने पण ए प्रमाणे समजबुं पुटाकनी पेठे ( उ० ६ सू० ६२ ) परिहारविशुद्धिक अने बाकी बधा निर्धेथनी पेठे ( उ० ६ सू० ६४ ) जाणवा.
- ३१. [प्र०] हे भगवन् ! देवलोकमां उत्पन्न थता सामायिकसंयतनी केटली स्थिति कही छे ! [उ०] हे गीतम ! तेनी जघन्य सामायिक संवतनी बे पल्योपमर्ना अने उत्क्रष्ट तेत्रीश सागरोपमर्ना स्थिति कही छे. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय संयत विषे पण समजवं.

स्थिति-परिदार पिशुक्ति-

कनीस्थितिः

११ गतिहार.-

३२. [प्र०] हे भगवन् ! देवलोंकमां उत्पन्न थता परिहारविशुद्धिक संयतनी केटली स्थिति कही छे ! [उ०] हे गीनम ! तेनी जघन्य वे पल्योपमनी अने उत्कृष्ट अढार सागरोपमनी स्थिति कही छे. बाकीना बधा संयतो संबंधे निर्प्रथनी पेटे जाणहं.ै

> १४ संयमश्यान− सामायिक संयतना संवमसान.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिकसंयतनां केटलां संयमस्थानो कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! असंख्य संयमस्थानो कह्यां छे.

ए प्रमाणे यावत्-परिहारविशुद्धिक सुधी जाणवं.

३४ म॰ स्॰

- ६४. [प्र०] सुहुमसंपरायसंजयस्त-पुच्छा । [७०] गोयमा ! असंखेजा अंतोमुहुत्तिया संजमट्टाणा पन्नता ।
- ३५. [१०] अहक्सायसंजयस्स-पुच्छा । [७०] गोयमा ! एगे अजहम्मणुक्कोसए संजमट्टाणे पन्नते ।
- ३६. [प्र०] एएसि णं भंते ! सामादय-छेदोवट्टावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुद्रुमसंपराग-अहक्षायसंजयाणं संजम-द्रुाणाणं कयरे कयरे-जाव-विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सद्वत्थोवे अहक्षायसंजमस्स एगे अजह्वममणुक्कोसए संजम-द्रुाणे, सुद्रुमसंपरागसंजयस्स अंतोमुद्रुत्तिया संजमट्टाणा असंखेजगुणा, परिद्वारविसुद्धियसंजयस्स संजमट्टाणा असंखेजगुणा, सामाद्यसंजयस्स छेदोवट्टावणियसंजयस्स य एएसि णं संजमट्टाणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेजगुणा (१४)।
- ३७. [प्र०] सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवइया चरित्तपज्जवा पन्नता ? [उ०] गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पन्नता, एवं जाय–अहक्कायसंजयस्स ।
- ३८. [प्र०] सामाइयसंजप णं भंते ! सामाइयसंजयस्स सट्ठाणसिक्षगासेणं चरित्तपज्जवेहि कि द्वीणे, तुह्ने, अब्मिद्धिए ! [उ०] गोयमा ! सिय द्वीणे-छट्ठाणविष्ठप ।
- ३९. [प्र॰] सामाइयसंजए णं भंते ! छेदोवट्टावणियसंजयस्स परट्टाणसन्निगासेणं चरित्तपञ्जवेहि-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! सिय हीणे, छट्टाणविडए । एवं परिहारिवसुद्धियस्स वि ।
- ४०. [प्र०] सामाइयसंजप णं भंते ! सुद्वमसंपरागसंजयस्स परट्ठाणसन्निगासेणं चरित्तपज्जवेहिं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अन्महिष, अणंतगुणहीणे । पवं अहम्खायसंजयस्स वि । पवं छेदोयट्ठावणिप वि हेट्ठिलेसु तिसु वि समं छट्ठाणविष्ठप, उवरिल्लेसु दोसु तहेव हीणे । जहा छेदोयट्ठावणिए तहा परिद्वारविसुद्धिष वि ।
- ४१. [ब्र॰] सुहुमसंपरागसंजप णं भंते ! सामाइयसंजयस्स परट्टाण-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! नो हीणे, नो तुह्वे, अन्भहिप, अणंतगुणमन्मिहिप । एवं छेओवट्टायणिय−परिहारिवसुद्धिपसु वि समं । सट्टाणे सिय हीणे, नो तुह्ने, सिय अन्भ-हिप । जह हीणे अणंतगुणहीणे, अह अन्भहिप अणंतगुणमन्मिहिप ।

सक्ष्ममंपरायनाः संयमस्यानः ३ ૪. [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्मयंपराय संयतनां केटलां संयमस्थानो कह्यां छे १ [उ०] हे गैं।तम ! तेनां असंख्य संयमस्थानो छे भने तेनी अंतर्मुहूर्तनां स्थिति छे.

वधाएयातना संय-भस्यान રૂપ. [प्र०] हे भगवन् ! यथाख्यातसंयतनां केटलां संयमस्थानो कह्यां छे ? [૩०] हे गैातम ! तेओनुं जघन्य अने उत्कृष्ट सिवाय एक संयमस्थान कह्यं छे.

संयमस्यानीनु अल्पन्हुत्व. ३६. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिकसंयत, छेदोपस्थापनीयसंयत, परिहारिविद्युद्धिक्तसंयत, सूक्ष्मसंपरायसंयत अने यथाख्यात-संयत, एओना संयमस्थानोमां कोना संयमस्थानो कोना संयमस्थानोथी यात्रत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! यथाख्यात संयतनुं अजघन्य अनुत्कृष्ट एक संयमस्थान होताथी साँधी अल्प छे, तेथी सूक्ष्मसंपगय संयतनां अंतर्भुहूर्त सुधी रहेनारा संयमस्थानो असंख्यगुणां छे, तेथी परिहारिविद्युद्धिकनां संयमस्थानो असंख्यगुणां छे, तेथी सामायिकसंयत अने छेदोपस्थापनीयसंयतना संयमस्थानो असंख्य-गुणां छे अने परस्पर सरखां छे.

१५ संनिकर्षदार-सामायकसंयतना चारित्रपर्यनो-सामायिक संयतनुं सजानीय पर्योचनी अपेक्षार अल्पबहुत्व-सामायिक अने छे-दोपस्यापनीयनु पर्या-वापेक्षार अल्पबहुत्व-

सामाथिकना सङ्ग्म सपरावनी अपे-

क्षाए पर्यायो.

- ३७. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिकसंयतना केटल चारित्रपर्यवी कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेना अनंत चारित्रपर्यवी कह्या छे . ए प्रमाणे यावत्—यथाख्यातसंयत सुधी जाणवुं.
- ३८. [प्र०] हे भगवन्! सामायिकसंयत बीजा सामायिकसंयतना सजातीय चारित्रपर्यायनी अपेक्षाए हुं हीन होय, तुल्य होय के अधिक होय? [उ०] हे गैंतिम! कदाच हीन होय, तुल्य होय अने अधिक होय अने तेमां—हीनाधिकपणामा छ स्थान पतित होय.
- ३९. [प्र॰] हे मगवन् ! एक सामायिकसंयत छेदोपस्थापनीयसंयतना विजातीय चारित्रपर्यायना संबन्धनी अपेक्षाए शुं हीन होय— इत्यादि पृच्छा. [उ॰] हे गौतम ! कदाच हीन होय—इत्यादि छ स्थान पतित होय. ए प्रमाणे परिहारविशुद्धिक संबंधे पण समजबं
- ४०. [प्र०] हे भगवन् ! एक सामायिकगंयत सूक्ष्मसंपरायसंयतना विजातीय चारित्रपर्यायनी अपेक्षाए हीन होय—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! हीन होय, तुल्य न होय, तेम अधिक पण न होय. तेमां पण अनंतगुण हीन छे. ए प्रमाणे यथाख्यातरांयत संबंधे पण जाणवुं. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय पण नीचेना व्रणे चारित्रनी अपेक्षाए छ स्थानपतित छे अने उपरना वे चारित्रधी तेज प्रमाणे अनन्तगुण हीन छे. जेम छेदोपस्थापनीयसंयत विषे कह्युं तेम परिहारविद्युद्धिक संबंधे पण जाणवुं.

स्क्ष्मसंपरायना सा-मायिकनी अपेक्षाए पर्यायो ४१. [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्मरांपरायसंयत सामायिकरांयतना विजातीय पर्यायोनी अपेक्षाए हुं हीन छे— इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गातम ! ते हीन नथी, सरखो नथी, पण अधिक छे अने ते अनंत गुण अधिक छे. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय अने परिहार- विशुद्धिकर्नी साथे जाणतुं. पोताना सजातीय पर्यायनी अपेक्षाए कदाच हीन होय, कदाच तुल्य होय अने कदाच अधिक होय. जो हीन होय तो अनंतगुण हीन होय, जो अधिक होय तो अनंतगुण अधिक होय.

- ४२. [प्र०] सुहुमसंपरायसंजयस्स अहक्कायसंजयस्स परद्वाण-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अन्भ-हिए, अणंतगुणहीणे । अहक्काए हेट्किलाणं चउण्ह वि नो हीणे, नो तुल्ले, अन्भहिए, अणंतगुणमन्भहिए । सट्ठाणे नो हीणे, तुल्ले, नो अन्भहिए ।
- ४३, [प्र०] एएसि णं भंते ! सामार्य-छेदोयहायणिय-परिहारिवसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्कायसंजयाणं जहन्नुको-सगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे कयरे-जाव-विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सामार्यसंजयस्स छेओवहुावणियसंजयस्स य एपसि णं जहन्नगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुझा सद्यत्थोवा, परिहारिवसुद्धियसंजयस्स जहन्नगा चरित्तपज्जवा अणं-तगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, सामार्यसंजयस्स छेओवट्टावणियसंजयस्स य एएसि णं उक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुझा अनंतगुणा, सुहुमसंपरायसंजयस्स जहन्नगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, तस्म चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा अहक्कायसंजयस्स अजहन्नमणुकोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा (१५)।
- ४४. [प्र॰] सामाइयसंजप णं भंते ! किं सजोगी होजा, अजोगी होजा ! [उ॰] गोयमा ! सजोगी-जहा पुलाप । एवं जाव-सुहुमसंपरायसंजप । अहक्खाप जहा सिणाप (१६) ।
- ४५. [प्र०] सामाइयसंजप णं भंते ! कि सागारीवउत्ते होजा अणागारीवउत्ते होजा ? [उ०] गोयमा ! सागा-रोवउत्ते-जहा पुटाप । एवं जाव-अहक्साप । नवरं सुहुमसंपराप सागारीवउत्ते होजा, नो अणागारीवउत्ते होजा (१७) ।
- ४६. [प्र॰] सामाइयसंजप णं भंते ! कि सकसायी होजा, अकसायी होज्जा ? [उ॰] गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा-जहा कसायकुसीले । एवं छेदोबट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहा पुलाए ।
  - ью. [яо] सुद्रुमसंपरागसंजप-पुच्छा । [зо] गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ।
- ४८. [प्र॰] जद सकसायी होजा, से णं भंते ! कतिसु कसायेसु होजा ? [उ॰] गोयमा ! एगंमि मंजलणलोभे होजा । अहक्सायसंजप जहा नियंटे (१८) ।
- ४२. [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्मसंपरायसंयत यथाख्यातसंयतना विजातीय चारित्रपर्यायोगी अपेक्षाए हीन होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गानम ! तेओ हीन छे, सरखा नधी अने तुत्य पण नधी, गण अधिक छे. अने ते अनंतगुण हीन छे. यथाख्यात संयत नंचिना चारेनी अपेक्षाए हीन नथी, तुत्य नधी, पण अधिक छे अने ते अनंतगुण अधिक छे. पोताना स्थानमां हीन अने अधिक नथी पण सरखा छे.
- ४३. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयत, छेदोपस्थापनीय संयत, पिरहारिवशुद्धिक संयत, सृक्ष्मसंपराय संयत अने यथाख्यात संयत, एओना जघन्य अने उत्कृष्ट चारित्रपर्यशोमां कोना कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे ! [उ०] हे गौतम ! सामायिक संयत अने छेदोपस्थापनीय संयत—ए बन्नेना जघन्य चारित्रपर्यशे परस्पर सरखा अने सौथी थोडा छे, तेथी परिहारिवशुद्धिक संयतना जघन्य चारित्र पर्यशे अनंत गुणा छे, अने तेथी तेनाज उत्कृष्ट चारित्रपर्यशे अनंत गुणा छे, तेथी सामायिक संयत अने छेदोपस्थापनीय संयतना उत्कृष्ट चारित्रपर्यशे अनंतगुणा अने परस्पर सरखा छे, तेथी स्कृष्मसंपराय संयतना जघन्य चारित्रपर्यशे अनंतगुणा छे अने तेथी तेनाज उत्कृष्ट चारित्रपर्यशे अनंतगुणा छे, अने तेथी यथाख्यात संयतना अजघन्य अने अनुत्कृष्ट चारित्रपर्यशे अनंतगुणा छे.

४४. [प्र०] हे भगवन्! द्धं सामायिक संयत सयोगी होय के अयोगी होय १ [उ०] हे गाँतम ! ते सयोगी होय-इत्यादि बधुं पुलाकती पेटे (उ० ६ सू० ८३) जाणबुं. ए प्रमाणे यावत्-सूक्ष्मसंपराय संयत संबंधे समजबुं. अने यथाख्यात संयत संबंधे स्नातकती पेटे (उ० ६ सू० ८४) जाणबुं.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सामायिकसंयत साकार-ज्ञानउपयोगवाळो होय के अनाकार-दर्शन उपयोगवाळो होय ! [उ०] हे गातम ! साकारउपयोगवाळो होय-इत्यादि बधुं पुलाकर्ना पेठे ( उ० ६ सू० ८५ ) जाणबुं. ए रीते यावत्-यथाख्यात संयत संबंधे समजबुं. त्रिशेष ए के सूक्ष्मसंपराय संयत साकार उपयोगवाळो होय, पण अनाकार उपयोगवाळो न होय.

४६. [प्रo] हे भगवन् ! शुं सामायिक संयत कपायवाळो होय के कपायरहित होय ! [उ०] हे गौतम ! ते कपायवाळो होय, पण कषायरहित न होय—इत्यादि कषायकुशीलनी पेठे (उ० ६ सू० ८६ ) जाणबुं. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय पण जाणत्रो. परिहार-विश्चद्विक संयतने पुलाकनी पेठे (उ० ६ सू० ८७ ) जाणबुं.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सूक्ष्मसंपराय संयत कपायवाळो होय के कपायरहित होय १ [उ०] हे गीतम ! कपायवाळो होय, पण कपायरहित न होय.

४८. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते (सृह्तमसंपराय संयत)कषायवाळो होय तो ते केटला कषायवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! तेने मात्र एक संज्वलन लोभ होय. यथाख्यात संयत संबंधे निर्मेथनी पेठे ( ૩૦ ६ सू० ८८ ) जाणहुं.

शामाविक संयता∽ दिनुं अरुपददुत्व.

१६ योगद्वार-

१७ उपयोगद्वार-

. १८ कपायहार− ध्र९. [प्र॰] सामादयसंजय णं मंते ! किं सलेस्से होजा, अलेस्से होजा ! [उ॰] गोयमा ! सलेस्से होजा—जहा कसायकुसीले । यवं छेदोबट्टावणिय वि । परिहारविसुद्धिय जहा पुलाय । सुदुमसंपराय जहा नियंठे । अहक्साय जहा सिणाय । नवरं जह सलेस्से होजा, यगाय सुद्धलेस्साय होजा (१९) ।

५०. [प्र॰] सामाइयसंजप णं भंते ! किं बहुमाणपरिणामे होजा, द्दीयमाणपरिणामे, अवट्टियपरिणामे ? [उ॰] गोयमा ! बहुमाणपरिणामे–जहा पुलाप । पवं जाव–परिहारविसुद्धिप ।

५१. [प्र०] सुहुमसंपराप-पुच्छा । [उ०] गोयमा! बहुमाणपरिणामे वा होजा, हीयमाणपरिणामे वा होजा, नो अबहुियपरिणामे होजा । अहक्काप जहा नियंठे ।

५२. [प्र०] सामाइयसंजय णं भंते ! केवतियं कालं वहुमाणपरिणामे होज्ञा ! [उ०] गोयमा ! जहकेणं एकं समयं— जहा पुलाय । एवं जाव–परिहारविसुद्धिय ।

५३. [प्र०] सुहुमसंपरागसंजय ण भंते ! केवतियं कालं वहुमाणपरिणामे होजा ? [उ०] गोयमा ! जहनेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । [प्र०] केवतियं कालं हीयमाणपरिणामे ? [उ०] एवं चेव ।

५४. [प्र०] अहक्ष्वायसंजय णं भंते ! केवतियं कालं घड्डमाणपरिणामे होजा ! [उ०] गोयमा ! जहक्षेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । [प्र०] केवतियं कालं अवट्टियपरिणामे होजा ! [उ०] गोयमा ! जहक्षेणं एकं समयं, उक्कोसेणं देसूणा युद्धकोडी (२०)।

५५. [प्र०] सामाइयसंजय णं भंते ! कह कम्मप्पगडीओ वंघह ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहवंधय वा, अट्टविहवंधय वा–एवं जहा बजसे । एवं जाव–एरिहारविसुद्धिय ।

५६. [प्र०] सुद्दुमसंपरागसंजप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! आउय-मोहणिज्ञवज्ञाओ छ कम्मप्यगङीओ बंधति । अहक्कापसंजप जहा सिणाप (२१) ।

१९ छेइयाडार-

४९. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं सामायिक संयत त्रेश्यासिहन होय के त्रेश्यारिहत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते त्रेश्यासिहत होय— इत्यादि बधुं कपायकुशील्नी पेटे (उ० ६ सू० ९०) जाणवुं. छेदोपस्थापनीयने पण ए प्रमाणे जाणवुं. पुलाकनी पेटे (उ० ६ सू० ८१) परिहारिविद्यद्भिक्त समजवुं. सृक्ष्मसंपराय संयत निर्प्रथनी पेटे (उ० ६ सू० ९.१) जाणवो. अने स्नातकनी पेटे यथाख्यात संयत विषे जाणवुं. परन्तु जो लेक्यासिहत होय तो ते एक शुक्कलेक्यावाळो होय.

२० परिणामदार-

५०. [प्र०] हे भगधन् ! द्यं \*सामायिक संयत चढता परिणामवाळो होय, हीयमान—पडता परिणामवाळो होय के स्थिर परिणाम-वाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! ते चढता परिणामवाळो होय—इत्यादि वधुं पुलाकनी पेटे (उ० ६ सू० ९३) जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्— परिहारविद्युद्धिक संयत सुधी समजवुं.

५१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं स्क्ष्मसंपराय संयत चढता परिणामवाळो होय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गातम ! ते चढता परिणामवाळो होय, पडता परिणामवाळो होय, पण स्थिर परिणामवाळो न होय. यथाख्यात संयतने निर्प्रथनी पेटे (उ०६सू०९४) जाणवुं.

परिणामनी काळ.

५२. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयत केटला काळ सुधी चढता परिणामवाळो होय ! [उ०] हे गौतम ! ते जघन्य एक समय सुधी चढता परिणामवाळो होय-इत्यादि बधुं पुलाकनी पेठे (उ०सू०९५) आणवुं तथा ए प्रमाणे यावत्—परिहार विशुद्धिक संबंधे पण समजवुं.

५३. [प्र०] हे भगवन् ! स्क्ष्मसंपराय संयत केटला काळ सुधी चढता परिणामवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते जवन्य एक समय सुधी अने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त सुधी चढता परिणामवाळो होय ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं.

५४. [प्र०] हे भगवन् ! यथाख्यात संयत केटला काळ सुची चढता परिणामवाळो होय ? [उ०] हे गीतम ! ते जघन्य अने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्न सुधी चढता परिणामवाळो होय . [प्र०] ते केटला काळ सुची स्थिर परिणामवाळो होय ? [उ०] हे गीतम ! ते जघन्य एक समय, अने उत्कृष्ट अंशतः न्यून पूर्वकोटि सुधी स्थिर परिणामवाळो होय.

या बन्धद्वार्-

५५. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयत केटली कर्मप्रकृतिओने बांधे ! [उ०] हे गौतम ! ते सात कर्म प्रकृतिओ के आठ कर्म प्रकृतिओने बांधे-इत्यादि बधुं बकुशनी पेठे (उ० ६ सू० १०२) जाणवुं. ए प्रमाणे यात्रत्—परिहारविश्चद्विक संयत सुधी समजवुं.

५६, [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्मसंपराय संयत केटली कर्मप्रकृतिओने बांधे ! [उ०] हे गौतम ! ते आयुप अने मोहनीय सिवाय छ कर्मप्रकृतिओने बांधे. यथास्यात संयत संबंधे स्नातकनी पेटे (उ० ६ सू० १०६) जाणवुं.

५९ \* स्क्ष्मसंपराय ज्यारे श्रेणि उपर चढतो होय खारे वर्धमान परिणामवाळो अने श्रेणिधी पडतो होय त्यारे हीयमान परिणामवाळो होय, पण खाभाविक रीते स्थिर परिणामवाळो न होय.

- ५७. [प्रव] सामाहयसंजय णं मंते ! कित कम्मप्यगडीओ वेदेति ? [उव] गोयमा ! नियमं अट्ट कम्मप्यगडीओ वेदेति । एवं जाव-सुदुमसंपराय ।
- ५८. [प्र०] अहम्साए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तविहवेयए वा, चउविहवेयए वा । सत्त वेदेमाणे मोहणि-जावजाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेति, चत्तारि वेदेमाणे वेयणिजा-उय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्पप्पगडीओ वेदेति (२२) ।
- ५९. [ब्र॰] सामाइयसंजप णं मंते ! कति कम्मप्पगडीओ उदीरेति ! [ज॰] गोयमा ! सत्तविद्द-जद्दा बउसो । एवं जाव-परिद्वारिवसुद्धिए ।
- ६०. [प्र०] सुदुमसंपराप-पुच्छा । [उ०] गोयमा! छन्निहउदीरप वा पंचिवहउदीरप वा । छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ञवज्ञाओ छ कामप्पगडीओ उदीरेद्द; पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ञ-मोद्दणिज्ञवज्ञाओ पंच कामप्पग-डीओ उदीरेद्द ।
- ६१. [प्र०] अहक्सायसंजप-पुच्छा । [उ०] गोयमा! पंचविद्वउदीरप वा वुविद्वउदीरप वा अणुदीरप वा। पंच उदीरेमाणे आउय०-सेसं जहा नियंडस्स (२३)।
- ६२. [प्र०] सामाइयसंजप णं भंते ! सामाइयसंजयसं जहमाणे किं जहित, किं उवसंपज्जित ! [उ०] गोयमा ! सामाइयसंजयसं जहित, छेदोबहुावणियसंजयं वा, सुदुमसंपरागसंजयं वा, असंजमं वा, संजमासंजमं या उवसंपज्जि ।
- ६३. [प्र०] छेमोवट्ठावणिप-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! छेभोवट्ठावणियसंजयत्तं जहति, सामाइयसंजमं वा, परि-हारविसुद्धियसंजमं वा, सुहुमसंपरागसंजमं वा, असंजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपञ्जति ।
- ६४. [प्र०] परिहारविसुद्धिए-पुच्छा । [उ०] गोयमा! परिहारविसुद्धियसंजयसं जहित, छेदोबट्टावणियसंजयसं वा असंजमं वा उचसंपद्धति ।

५७. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयत केटली कर्मप्रकृतिओने वेदे—अनुभवे ? [उ०] हे गौतम ! ते अवश्य आठ कर्म-प्रकृतिओने वेदे. ए प्रमाणे यावत्—सृक्ष्मसंपराय सुधी जाणदुं.

२२ वेदनद्वार-

- ५८. [प्र॰] हे भगवन् ! यथाख्यात संयत केटली कर्मप्रकृतिओंने वेदे ! [७०] हे गौतम ! ते सात कर्मप्रकृतिओंने वेदे के चार कर्मप्रकृतिओंने वेदे. ज्यारे ते सात कर्मने वेदतो होय त्यारे मोहनीय सिवायना सात कर्मने वेदे, अने ज्यारे ते चार प्रकारनां कर्मने वेदतो होय त्यारे वेदनीय, आयुप, नाम अने गोत्र-ए चार कर्मप्रकृतिओंने वेदे.
- ५९. [प्र०] हे भगवन् ! सामाधिक संयत केटली कर्मप्रकृतिओने उदीरे ! [उ०] हे गौतम ! ते सात कर्मप्रकृतिओने उदीरे-इत्यादि बधुं बकुशनी पेठे (उ० ६ सू० १११) जाणबुं. यावत्—पिहारविद्युद्धिक ए प्रमाण जाणबो.

२१ उदीरणादार-

- ६०. [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्मसंपराय केटर्ला कर्मप्रकृतिओने उदीरे ! [उ०] हे गौतम ! छ कर्मप्रकृतिओनी अथवा पांच कर्मप्रकृतिओनी उदीरणा करे. जो छ कर्मनी उदीरणा करे तो आयुप अने वेदनीय सिवाय बाकीनां छ कर्मनी उदीरणा करे. जो पांच कर्मनी उदीरणा करे तो आयुप, वेदनीय अने मोहनीय कर्म सिवाय बाकीनां पांच कर्मनी उदीरणा करे.
- ६१. [प्र०] हे भगवन् ! यथाख्यात संयत केटली कर्मप्रकृतिओने उदीरे ! [उ०] हे गौतम ! ते पांच कर्भप्रकृतिओने उदीरे के ने कर्मप्रकृतिओने उदीरे । विकास कर्मप्रकृतिओने उदीरे । विकास कर्मप्रकृतिओने उदीरे । विकास कर्मप्रकृतिओने उदीरे । विकास कर्मित अने मोहनीय कर्म सिवाय बाकीनां पांच कर्मनी उदीरणा करें —इत्यादि बधुं निर्मेथनी पेटे (उ० ६ सू० ११३ ) जाणहुं.
- ६२, [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयत सामायिकसंयतपणानो त्याग करतो शुं छोडे, शुं प्राप्त करे ? [उ०] हे गौतम ! सामायिकसंयतपणानो त्याग करे अने छेदोपस्थापनीयसंयतपणुं, सूक्ष्मसंपरायसंयतपणुं, असंयम के संयमासंयम—देशिवर-तिपणुं प्राप्त करे.

२४ उपसपद्दान-सामायिकसंयत शुं छोडे अने कोने स्वीकारे

६२. [प्र॰] हे भगवन् ! छेदोपस्थापनीय संयत शुं छोडे अने शुं प्राप्त करे ! [उ॰] हे गातम ! \*हेदोपस्थापनीयसंयतपणानो स्थाग करे अने सामायिकसंयतपणुं, परिहारविशुद्धिकसंयतपणुं, सूक्ष्मसंपरायसंयतपणुं, असंयम के देशविरतिपणुं प्राप्त करे.

डेदोपस्थापनीय श्रुं छोडे अने श्रुं प्राप्त करे !

६४. [प्र०] पिरिहारविशुद्धिक संबंधे पृच्छा. [उ०] हे गीतम ! ते परिहारविशुद्धिकसंयतपणानो त्याग करे अने छेदोपस्था-पनीयसंयतपणुं के असंयम प्राप्त करे.

६३ \* जेम प्रथम तीर्थंकरना तीर्थंना साधु अजितजिनना तीर्थमां प्रवेश करे त्यारे छेदोपस्थापनीय चारित्र छोडी सामायिक चारित्र अंगीकार करे. ए रिते छेदोपस्थापनीय संयत तेनो त्याग करतो सामायिकसंयतपणुं स्त्रीकारे.

६४ † परिहारविद्युद्धिक संयत परिहारविद्युद्धिक संयतपणानी त्याग करी गच्छमां प्रवेश करे त्यारे छेदीपस्थापनीयसंयतपणुं पामे, अने देवगतिमां जाय तो असंयतपणुं पामे.

६५. [प्र०] सुहुमसंपराप-पुच्छा । [उ०] गोयमा । सुहुमसंपरायसंजयत्तं जहित, सामार्यसंजयं वा, छेओषट्ठावणि-यसंजयं वा, अहक्कायसंजयं वा, असंजमं वा उवसंपजर ।

६६. [प्र॰] अहक्कायसंजय-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! अहक्कायसंजयसं जद्दति, सुहुमसंपरागसंजयं वा, असंजमं वा, सिद्धिगति वा उवसंपज्जति (२४) ।

६७. [प्रत] सामाइयसंजप णं भंते ! किं सन्नोवउत्ते होजा, नोसन्नोवउत्ते होजा ? [उ०] गोयमा ! सन्नोवउत्ते जहा वजसो । एवं जाव-परिहारविसुद्धिप । सुदुमसंपराप अहम्खाप य जहा पुलाप (२५) ।

६८. [प्र॰] सामाइयसंजय णं भंते ! कि आहारय होजा, अणाहारय होजा । [उ॰] जहा पुलाय । यवं जाब-सुद्रुमसंपराय । अहक्खायसंजय जहा सिणाय (२६) ।

६९.. [प्र०] सामाइयसंजय णं भंते ! कित भवग्गहणाइं होज्जा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं एकं, उक्कोसेणं अट्ट । एवं छेदोवट्टावणिय वि ।

७०. [प्र०] परिहारविसुद्धिए-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं एकं, उक्कोसेणं तिन्नि । एवं जाय-अहक्साए (२७) ।

७१. [प्र॰] सामाइयसंजयस्स णं भंते ! एगभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पन्नसा ! [उ॰] गोयमा ! जहन्नेणं--जहा बउसस्स ।

७२. [प्र०] छेदोवट्टावणियस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पक्रो, उक्कोसेणं वीसपुदुत्तं ।

७३. [प्र०] परिहारविसुद्धियस्सपुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पैको, उक्रोसेणं तिन्नि ।

६५. [प्र॰] सूक्ष्मसंपराय संबंधे पूर्ववत् पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! ते \*सूक्ष्मसंपरायसंयतपणानो त्याग करे अने सामायिक संयतपणुं, छेदोपस्थापनीयसंयतपणुं, यथाख्यातसंयतपणुं के असंयम प्राप्त करे.

६६. [प्र०] यथाख्यातसंयत संबन्धे पृच्छा. [उ०] हे गौतम! ते <sup>।</sup>यथाख्यातसंयतपणानो त्याग करे अने सूक्ष्मसंपराय संयम, असंयम के सिद्धिगतिने प्राप्त करे.

६५ संबादार-

६७. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं सामायिक संयत संज्ञोपयुक्त—आहारादिमां आसक्त होय के नोमंज्ञोपयुक्त—आहारादिमां आसक्तिरहित होय ! [उ॰] हे गौतम ! ते संज्ञोपयुक्त होय-इत्यादि वधुं बकुरानी पेठे जाणबुं. ए प्रमाणे यावत्—परिहारविद्युद्धिक संयत सुधी जाणबुं. सृक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात संबन्धे पुलाकर्ना पेठे ( उ॰ ६ सू॰ १२२ ) जाणबुं.

**२६ आहारकडार-**

६८. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं सामायिक संयन आहारक होय के अनाहारक होय ! [उ॰] हे गौतम ! गुरुकिनी पेठे (उ॰ ६ सू॰ १२३ ) जाणवुं. ए रीते यावत्— सृक्ष्मसंपराय सुधी समजवुं. यथाख्यात संयत स्नातकनी पेठे (उ॰ ६ सू॰ १२४ ) जाणवो.

२७ भवद्वार-

६९. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयत केटलां भवग्रहण करे [उ०] हे गैतिम ! जगन्य एक भव अने उत्क्रष्ट आठ भवग्रहण करे. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय क्षि पण जाणवुं.

७०. [प्र०] हे भगवन् ! परिहारिवशुद्धिक केटला भव प्रहण करे ? [उ०] हे गीतम ! जघन्य एक भव अने उत्कृष्ट त्रण भव-ग्रहण करे ए प्रमाणे यात्रत्—यथाख्यान गंयन संबंधे जाणबुं.

२८ आकर्षद्वार−

७१. [प्र॰] हे भगवन्! सामायिक गंयतने एक भवमां प्रहण करी शकाय तेवा केटला आकर्ष कह्या छे—अर्थात् एक भवमां केटली वार सामायिक संयम प्राप्त थाय ? [उ॰] हे गौतम ! जधन्य [एक अने उत्कृष्ट शतपृथक्तव होय ]—इत्यादि बधुं बकुशनी पेठे (उ॰ ६ सू॰ १३०) समजबुं.

७२. [प्र॰] हे भगवन् ! छेदोपस्थापनीय संयतने एक भवमां प्रहृण करी शकाय तेवा केटल आकर्ष कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! तेने जघन्य एक अने उत्कृष्ट वीशपृथक्त्य— बेथी नच वीश आकर्ष कह्या छे.

परिहारविञ्जुद्धिकने आकर्ष ७३. [प्र०] परिहारविद्युद्धिक संबन्धे पृच्छा. [उ०] हे गाँतम! तेने जधन्य रेएक अने उत्कृष्ट त्रण आकर्ष कह्या छे.

१ सर्वत्र 'एकं' इति पाठ ग-घ-पुस्तके उपलभ्यते, परं क-ङपुस्तके 'एको' इति पाठः ।

६५ \* सृक्ष्मसंपरायसंयत श्रेणिशी पडतो स्क्ष्मसंपरायसंयतपणानो लाग करी जो पूर्वे सामायिक संयत होय तो सामायिकसंयतपणुं प्राप्त करे अने पूर्वे छेदोपस्थापनीय संयत होय तो छेदोपस्थापनीयसंयतपणुं पामे. जो श्रेणि उपर चढे तो यथाख्यातसंयतपणुं पामे.

६६ <sup>†</sup> यथाख्यात संयत श्रेणियी पडवाथी यथाख्यानसंयतपणानो स्वाग करतो सूक्ष्मसंपरायसंयतपणुं पामे अने उपशातमोहावस्थामां मरण पामे तो देवगिनमां असंयतपणुं पागे, अने जो स्नातक होय तो सिद्धिगति पामे.

७३ 🕻 परिहारविशुद्धिकपणुं एक भवमां त्रण वार प्राप्त थाय छे.

- ७४. [४०] सुहुमसंपरायस्स-पुच्छा । [४०] गोयमा ! जहन्नेणं पक्को, उक्कोसेणं चत्तारि ।
- ७५. [प्र०] अहक्खायस्स-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं एको, उक्नोसेणं दोन्नि ।
- ७६. [प्र०] सामाइयसंजयस्स णं भंते! नाणाभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पश्चता ! [उ०] गोयमा! जहा इउसे।
- ७७. [प्र०] छेदोबट्टाविणयस्स-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जद्दश्चेणं दोन्नि, उक्कोसेणं उवारं नवण्दं सयाणं अंतो सह-स्तस्स । परिद्वारिवसुद्धियस्स जद्दश्चेणं दोन्नि, उक्कोसेणं सत्त । सुदुमसंपरागस्स जद्दश्चेणं दोन्नि, उक्कोसेणं नव । अद्दक्का-यस्स जद्दश्चेणं दोन्नि, उक्कोसेणं पंच ।
- ७८. [प्र०] सामाइयसंजय णं भंते ! कालभो केविचरं होइ ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं देसूय-एहिं नविंह वासींह ऊणिया पुष्ठकोडी । एवं छेदोबट्टाविणए वि । परिहारिवसुद्धिए जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं देसू-णएहिं एकूणतीसाय वासींहें ऊणिया पुष्ठकोडी । सुहुमसंपराए जहा नियंटे । अहक्काए जहा सामाइयसंजय ।
  - ७९. [प्र०] सामाइयसंजया णं मंते ! कालभो केवियरं होंति ? [उ०] गोयमा ! सबदं ।
- ८०. [प्र०] छेदोवट्टावणिपसु पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अहाइजाइं वाससयाइं, उक्कोसेणं पन्नासं सागरोवम-कोडिसयसहस्साइं ।
  - ৩৪. [प्र०] सुक्ष्मसंपराय संबंधे पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेने जवन्य \*एक अने उत्कृष्ट चार आकर्ष कह्या छे.
  - ৩৭. [प्र०] यथाल्यान संबन्धे पृच्छा. [उ०] हे गातम ! तेने <sup>†</sup>जबन्य एक अने उन्कृष्ट वे आकर्प होय छे.
- ७६. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयतने अनेक भवमां प्रहण करी शकाय तेवा केटल आकर्ष कह्या छे ! [उ०] हे गीतम ! —इत्यादि बधुं बकुशनी पेठे ( उ० ६ सू० १३४ ) जाणतुं.
- ৩৩. [प्र०] छेदोपस्थापनीय संयत संबन्धे पृष्छा. [उ०] हे गौतम ! तेने जघन्य बे अने उत्कृष्ट नवसो उपर अने हजारनी झंदर आकरों कह्या छे. पिरिहारविद्युद्धिकने जधन्य वे अने उत्कृष्ट सान, सून्भसंपरायने जघन्य वे अने उत्कृष्ट नव तथा यथाएयातने जघन्य वे अने उत्कृष्ट पांच आकर्षों कह्या छे.
- ७८. [प्र०] हे भगवन् ! सामाधिक संयत काळधा क्यां सुधी होय ! [उ०] हे गाँतम ! जघन्य ैएक समय अने उत्कृष्ट कांइक ऊणा—नव वरस न्यून पूर्वकोटि वर्ष सुधी होय. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय संबंधे पण समजबुं.—परिहारविशुद्धिक जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट कांइक न्यून ओगणत्रीश वर्ष ऊणी पूर्वकोटि वर्ष सुधी होय. सृक्ष्ममंपराय संबंधे निग्नैयनी पेठे (उ० ६ सू० १३९) जाणबुं. यथाख्यातने सामाधिक संयतनी जेम समजबुं.
  - ७९. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयतो काळथी क्यां सुधी होय ! [ट०] हे गाँतम ! ఫోतेओ सर्व काळे होय.
- ८०. [प्र०] हे भगवन् ! छेदोपस्थापनीय संयतो काळपी क्यांसुधी होय ? [उ०] हे गाँतग ! तेओ जन्नन्य अढीसो वर्ष सुधी अने उत्कृष्ट पचासळाख क्रोड सागरोपम सुधी होय.

सामायिकादि संय-तोनो काळ.

२९ काळद्वार-

सक्ष्मसंपरायसंब-

तने आकर्ष-

यथाख्यातसंयतने **व्यक्त**र्वः

सामायिक संवतने

भनेक भवमां भाकर्ष-

- ७४ \* सूक्ष्मसंपराय संयतने एक भवमां ने वार उपशमश्रेणिनो संभव होबाधी अने प्रत्येक श्रेणिमां संक्रिश्यमान अने विशुध्यमान एम ने प्रकारना सूक्ष्म-संपराय होवाशी चार वार सुक्ष्मसंपरायपणानी प्राप्ति थाय छे.
  - ७५ † यथाख्यात संयतने ने वार उपशमध्रेणिनो संभव होनाथी ने आफर्ष होय है.
- ७० ‡ परिहारविशुद्धिक संयतने एक भवमा उत्कृष्ट त्रण वार परिहारविशुद्धिचारित्र प्राप्त थाथ छे अने ते तेने त्रण भवमां होय छे. एक भवमां त्रण बार, मीजा भवमां वे बार अने त्रीजा भवमां वे बार-इत्यादि विकल्पणी तेने अनेक भवमां सात आकर्ष थाय छे. स्इससंपरायने एक भवमां चार आकर्ष होय छे अने त्रण भवमां स्क्ष्मसंपराय होय छे. तेने एक भवमा चार, बीजा भवमां चार अने एक भवमां एक-एम अनेक भवमां नव आकर्ष थाय छे. यथाख्यात संयतने एक भवमां वे आकर्ष, यीजा भवमां वे अने त्रीजा भवमां एक-एम त्रण भवमां बधा मळीने पांच आकर्ष होय छे.
- ७८ म सामायिक चारित्रनी प्राप्तिना समय पछी तुरत ज मरण थाय ते अपेक्षाए सामायिक संयतनो काळ जवन्य एक समय छे, अने उत्कृष्ट नव वर्ष न्यून पूर्वकोटीवर्ष छे ते गर्मसमयणी आरंभीने तेनी गणना जाणवी. जन्मदिवसणी गणना करीए तो बाठ वरस न्यून पूर्वकोटी वर्ष काळ होय. परिहारिय छु-दिकने जपन्य एक समय मरणनी अपेक्षाए होय अने उत्कृष्ट कांद्रक न्यून ओगणत्रीश वरस ओछी पूर्वकोटि वर्ष प्रमाण होय. पूर्वकोटि वर्षना आयुषवाळो कोइ मनुष्य कंद्रक न्यून नव वरसनी उमरे दीक्षा प्रहण करे, तेने वीश वरसनो दीक्षापर्याय याय त्यारे दिष्टिनादना अध्ययननी अनुज्ञा मळे, त्यार पछी ते परि-हारिवशुद्धिचारित्र स्वीकारे अने तेनुं अडार मासनुं प्रमाण छतां अविच्छिक तेज परिणामे जीयनपर्यन्त पाळे−एम ओगणत्रीश वर्ष न्यून पूर्वकोटि वर्ष पर्यन्त परिहारिवशुद्धिक संयत रहे. यथाख्यात संयतने उपशमावस्थामां मरणनी अपेक्षाए जघन्यणी एक समय होय अने झातकने यथाख्यात संयतनी अपेक्षाए देश न्यून पूर्वकोटि वर्ष होय.
- ७९ \$ उत्सर्पिणीमां आदि तीर्थंकरना तीर्थ मुधी छेदोपस्थापनीय चारित्र होय अने तेत्रं तीर्थं अढीसो वरम मुधी होय, तेथी छेदोपस्थापनीय संयतोनो काळ जघन्यथी अढीसो यरस होय. अवसर्पिणी काळमां प्रथम तीर्थंकरना तीर्थं सुधी छेदोपस्थापनीय होय अने ते पचासकोड लाख सागरोपम सुधी होय, माटे उत्कृष्टणी तेटलो काळ छद्यस्थ संयतोनो होय छे.

- ८१.[प्र०]परिहारविसुद्रीपसु-पुच्छा।[उ०]गोयमा! जहन्नेणं देस्णारं दो वाससयारं, उक्कोसेणं देस्णाओ दो पुचकोडीओ।
- ८२. [प्र॰] सुहुमसंपरागसंजया णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अहक्कायसं-जया जद्दा सामाइयसंजया (२९)।
- ८३. [प्र०] सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ? [उ०] गोयमा ! जहक्षेणं जहा पुलागस्स । एवं जाब-अहक्कायसंजयस्स ।
  - ८४, [प्र॰] सामास्यसंजयाणं भंते ! पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! नत्थि अंतरं ।
- ८५. [प्र०] छेदोबट्टावणिय-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं तेवार्द्धे वाससहस्साई, उक्कोसेणं अट्टारस सागरोवमको-डाकोडीओ।
- ८६. [प्र०] परिहारविसुद्धियस्स पुच्छा । [७०] गोयमा ! जहभ्रेणं चउरासीइं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अट्टारस सागरोवमकोडाकोडीओ । सुदुमसंपरायाणं जहा नियंठाणं । अहक्सायाणं जहा सामाहयसंजयाणं (३०)।
- ८७. [प्र०] सामार्यसंजयस्स णं भंते ! कति समुग्वाया पन्नसा ! [उ०] गोयमा ! छ समुग्वाया पन्नसा-जहा कसा-यकुसीलस्स । एवं छेदोवट्टावणियस्स वि । परिद्वारिवसुद्धियस्स जद्दा पुलागस्स । सुद्रुमसंपरागस्स जद्दा नियंठस्स । अह्द्यकायस्य जहा सिणायस्य (३१)।
- ८१. [प्र०] हे भगवन् ! \*परिहारविशुद्धिक रांयतो काळथी क्यांसुधी होय ! [उ०] हे गौतम ! तेओ जघन्य कांइक ऊणा बसो वर्ष सुधी अने उत्कृष्ट कांइक न्यून बे पूर्वकोटि वर्ष सुधी होय.
- ८२. [प्र॰] हे भगवन् ! सृक्ष्मसंपराय संयतो संबंधे पृच्छा. [उ॰] हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त सुधी होय. यथाख्यात संयतो सामायिक संयतोनी पेठे जाणवा.
- ८३. [प्र॰] <sup>1</sup>हे भगवन् ! सामायिक संयतने केटला काळतुं अंतर होय ? [उ॰] हे गै।तम ! जघन्य [ एक समय ]—इस्यादि
  - ८४. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयतोने केटला काळनुं अंतर होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने अंतर नयी.
- ८५. [प्र०] छेदोपस्थापनीय मंयतो संबंधे पृच्छा. [उ०] हे गौतम! तेओने जघन्य त्रेसठ हजार वर्ष अने उत्कृष्ट अढार कोडाकोडि सागरोपमनुं अंतर होय छे.
- ८६. [प्र०] परिहारविशुद्धिक संयतो संबंधे पृच्छा. [उ०] हे गोतम ! तेओने जघन्य चोराशी हजार वर्ष अने उस्कृष्ट अढार कोडाकोडि सागरोपमनुं अंतर होय. सृक्ष्मसंपरायो निर्प्रयोनी पेठे (उ०६ सृ०१४७) जाणवा. अने यथाख्यात संयतो सामायिक संयतोनी जैम समजवा.
- ८७. [प्र०] 🕏 भगवन् ! सामायिक संयतने केटला समुद्घातो कहाा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने छ समुद्घातो कहाा छे. ते कपायकुक्तीलनी पेटे (उ० ६ सू० १५०) जाणवा. ए प्रमाणे छेदोपस्थापनीय संयत संबंधे पण समजबुं. पुलाकनी पेटे (उ०६ सू०१४८) परिहारविञ्जद्भिक्तने जाणतुं. निर्प्रथनी पेठे (उ०६ सू०१५१) सूक्ष्ममंपराय संबंधे जाणतुं, अने स्नातकनी पेठे (उ० ६ सू० १५२ ) यथाख्यात संयत संबंधे पण समजबुं.

३० अन्तरद्वार-मामायिकादि सेय-बधुं पुलाकनी पेटे ( उ० ६ सू० १४५ ) जाणवुं. ए रीते यावत्—यथाख्यात संयत सुधी समजवुं.

तनुं अन्तर-सामायिकादि संय तोनुं अन्तरः

३१ समुद्यात-

- ८९ \* परिहारविशुद्धिक संयतानो काळ कांइक (अट्टावन वरस) न्यून बसो वर्ष होय छे. जेम के उत्सर्पिणीमां प्रथम तीर्थंकरनी पासे सो वरसना आयुषवाळी मनुष्य परिहारविशुद्धि चारित्र प्रहण करे अने तेन। जीवितना अन्ते तेनी पासे सी वरसना आयुषवाळो **वीजो कोइ मनुष्य परिहारविशुद्धि चारित्र** स्त्रीकारे, त्यार पर्छा तेनी पासे पीजो कोइ नारित्र न प्रदण करी दाके. एम बसो वर्ष थाय. परन्तु प्रत्येकने ओगणत्रीचा वरस गया **बाद चारित्रप्रतिपत्ति** होय एटले अञ्चावन वरम न्यून वरो वरस जघन्य काळ होय. चूर्णिकारनी ब्याख्या पण एमज छे, परन्तु ते अवसर्पिणीना क्षन्तिम जिननी अपेक्षाए छे. उन्कृष्ट काळ देशन्यून वे पूर्वकोट वर्ष छे जेमके अवगर्पिणीमां प्रथम तीर्थंकरनी पासे पूर्वकोटि आयुषवाळो मनुष्य परिहारविशुद्धि नारित्र प्रहण करे अने तेना जीवितना अन्ते तेनी पासे तेटलाज आयुषवाळो परिहारविद्यां छचारित्र छे. तेमांथी प्रखेकना ओगणत्रीश वरस बाद करता देश (अट्ठावन वर्ष) न्यून वे पूर्वकोटि वर्ष होय.
- ८३. 🕇 अवरार्पिणीमां दुष्पमा काळसुधी छेदोपस्थापनीय चारित्र होय छे. अने त्यार पद्यी एकवीश हजार वर्ष प्रमाण छट्टा आरामां अने उत्सर्पिणीना तेटला प्रमाणवाळा पहेला अने मीजा भारामां छेदोपस्थापनीयचारित्रनो अभाव होय छे. एम त्रेसट हजार वरस प्रमाण छेदोपस्थापनीय संयतोतुं जघन्य अन्तर अने उत्कृष्ट अडार कोटाकोटी सागरोपमनुं अन्तर होय छे. ते आ प्रमाणे-उत्पर्पिणीना चोवीश्वमा जिनना तीर्यसुधी छेदोपस्थापनीय चारित्र होय छे. त्यार पढी वे कोटाकोटी प्रमाण चोधा आरामां, त्रण कोटाकोटी प्रमाण पांचमा आरामां अने चार कोटाकोटी प्रमाण छट्टा आरामां तथा अव-सार्पिणीना अनुक्रमे चार, त्रण अने वे कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण पहेला, बीजा अने त्रीजा आरामां छेदोपस्थापनीय चारित्र होतुं नबी, पण त्यार पछी अव-सर्पिणीना चोथा आरामां प्रथम जिनना तीर्थमां छेदोपस्थापनीय चारित्र होय छे, माटे उपर कहेतुं छेदोपस्थापनीय संयतोतुं उत्कृष्ट अंतर छे. अहीं भोडो काळ ओछो रहे छ अने जघन्य अंतरमां थोडो काळ बधे छे ते अल्प होवाथी विवक्षित नथी.
- ८६ 🕇 अवसर्पिणीना पांचमो अने छहो आरो तथा उत्सर्पिणीनो पहेलो अने बीजो आरो प्रत्येक एकवीश हजार वर्ष प्रमाणना छे अने तेमां परिहारविद्यु-दिक चारित्र होतुं नवी, तेबी चोराशी हजार वर्ष परिहारविद्युदिक संयतोनुं जघन्य अन्तर छे. अहीं छेल्ला तीर्थकरनी पछी पांचमा आरामां परिहारविद्युदिक चारित्रनो काळ, अने उत्सर्पिणीना त्रीजा आरामां परिहारविशुद्धिचारित्रनो स्वीकार कर्या पूर्वनो काळ अल्प होवादी तेनी विवक्षा करी नदी. तथा उत्कृष्ट अन्तर अडार कोटाकोटी सागरोपमनुं छे ते छेदोपस्थापनीय चारित्रनी पेठे जाणबुं.—टीका.

- ८८. [प्र॰] सामाइयसंजप णं भंते ! छोगस्स कि संखेखाइमागे होजा, असंखेखाइमागे-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! तो संखेखाइ-जहा पुलाप । एवं जाव-सुहुमसंपराप । अहक्खायसंजप जहा सिणाप ३२ ।
  - ८९. [प्र०] सामाइयसंजप णं भंते ! लोगस्स कि संखेखहमागं फुसह० ! [उ०] जहेव होखा तहेव फुसह (३३)।
- ९०. [प्र०] सामादयसंजप णं मंते ! कयरंमि मावे होजा ! [उ०] गोयमा ! स्रमोवसमिए भावे होजा । एवं जाव-
  - ९१. [प्र॰] महक्सायसंजप-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! उवसमिए वा बहर वा भावे होजा (३४) ।
- ९२. [प्र॰] सामाइयसंजया णं भंते ! एगसमपणं केवतिया होजा ? [उ॰] गोयमा ! पडिचज्रमाणप य पडुच जहा कसायकुसीला तहेव निरवसेसं ।
- ९३. [प्रव] छेदोबट्टावणिया-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नन्धि । जड् अत्थि जहनेणं पको वा दो वा तिम्नि वा, उक्कोसेणं सयपुदुसं । पुष्ठपडिवम्नए पडुच्च सिय अत्थि निय नन्धिः, जद्द अत्थि जहनेणं कोडिसयपुदुसं, उक्कोसेण वि कोडिसयपुदुसं । परिहारविसुद्धिया जहा पुलागा । सुहुमसंपराया जहा नियंदा ।
- ९४. [प्र॰] अहक्कायसंजया णं पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! पडिवज्जमाणप पहुच्च सिय अस्थि सिय नित्थ । जह अस्थि जहन्नेणं पक्को वा दो वा तिश्रि वा, उक्कोसेणं बावट्टसयं-अट्टुत्तरसयं स्रवगाणं, चउप्पन्नं उवसामगाणं । पुडपडिवन्नप पहुच्च जहन्नेणं कोडिपुहुत्तं, उक्कोसेण वि कोडिपुहुत्तं ।
  - ९५. [प्र०] एपसि णं भंते ! सामाइय-छेओवट्टाविणय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्सायसंजयाणं कयरे
- ८८. [प्र०] हे भगवन् । शुं सामायिक संयत छोकना संख्यातमा भागे होय के असंख्यातमा भागे होय ? [उ०] हे गौतम ! ३२ क्षेत्रदार-छोकना संख्यातमा भागे न होय—इत्यादि पुलाकर्ना पेठे (उ० ६ सू० १५४) जाणवुं. ए रीते यावत्—सूक्ष्मसंपराय सुधी जाणवुं. तथा स्नातकर्ना पेठे (उ० ६ सू० १५४) यथाख्यात संयतने विषे समजवुं.
- ८९. [प्र०] हे भगवन् ! कुं सामायिक संयत ठोकना संख्यानमा भागने स्पर्शे ! [उ०] हे गीतम ! जेटला भागमां होय तेटला 🤫 स्पर्धनाहार-भागनो स्पर्श करे, अर्थात् जेटला क्षेत्रनी अत्रगाहना कहीं तेटला क्षेत्रनी स्पर्शना जाणवी.
- ९०. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयत कथा भाषमां होय ! [उ०] हे गौतम ! क्षायोगशमिक भाषमां होय. ए रीते यावत्— हिम्मसंपराय सुधी जाणवुं.
  - ९१. [प्र०] हे समयन् ! यथास्यात रायन कया भावमां होय ! [उ०] हे गौतम ! औपराणिक के क्षायिक भावमां होय.
- ९२. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिक संयतो एक समये केटला होय ? [उ०] हे गीतम ! प्रतिपद्यमान ( वर्तमान समये सामायिक- १५ परिनाणदार-संयतपुणाने प्राप्त ) सामायिक संयतोनी अपेक्षाए—इत्यादि बधुं कपायकुकीळर्ना पेटे (उ० ६ सू० १६०) जाणगुं.
- ९३. [प्र०] हे भगवन् ! छेदोपस्थापनीय संयतो एक समये केटला होय ! [उ०] हे गौतम ! \*प्रतिपद्यमानने आश्रयी छेदोपस्थापनीय संयतो कदाच होय अने कदाच न होय. जो होय तो जघन्य एक, बे के त्रण अने उत्कृष्ट बसोधी नवसो सुधी होय. पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी— जेओ पूर्वे छेदोपस्थानीय चारित्रने प्राप्त थयेला छे तेओनी अपेक्षाए—कदाच होय अने न होय. जो होय तो जघन्य अने उत्कृष्ट बसोधी नवसो कोड सुधी होय. परिहारविश्चद्विको पुलाकोनी पेठे (उ०६ सू०१५८) अने सूक्ष्मसंपरायो निर्मथोनी पेठे (उ०६ सू०१६१) जाणवा.
- ९४. [प्र०] हे भगवन् ! यथाख्यात संयतो एक समये केटला होय ! [उ०] हे गौतम ! प्रतिपद्यमान यथाख्यात संयतोनी अपेक्षाए कदाच होय भने कदाच न होय. जो होय तो जघन्य एक, वे अने त्रण तथा उत्कृष्ट एकसो बासठ होय. तेमां एकसो आठ क्षपको भने चोपन उपरामको होय. पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी जघन्य अने उत्कृष्ट वे कोडथी नव कोड सुधी होय.
- ९५. [प्र०] हे भगवन् ! ए पूर्वोक्त सामायिक संयत, छेदोपस्थापनीय संयत, परिहारविद्युद्धिक संयत, <sup>†</sup>सूक्ष्मसंपराय संयत अने ययाद्ध्यात संयतमां क्रया कोनाथी यावत्—विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सूक्ष्मसंपरायसंयतो सोथी घोडा छे, तेथी परिहारविद्यु-

३६ अस्पनतुत्व-

९३ <sup>क</sup> छेदोपस्थापनीय संयतनुं उत्कृष्ट परिभाण प्रथम जिनना तीर्यने आश्रयी संभवे छे. पण जघन्य परिमाण बरोबर समजातुं नथी. कारण के पांचमा आराने अन्ते भरतादि दश क्षेत्रोमां प्रलेक क्षेत्रे बच्चे संयतो होवाथी जघन्य वीश छेदोपस्थापनीय संयत होय. कोह आन्वार्यो एम कहे छे के जघन्य परिभाण पण प्रथम जिनना तीर्थने आश्रयी जाणबुं. जघन्य कोटिशतपृथकत्व शक्ष अने उत्कृष्ट कोटिशतपृथकत्व अधिक जाणबुं-टीका

९५ † सौथी थोडा स्क्ष्मसंवराय संयतो छे, कारण के तेनो काळ थोडो छे. अने ते निर्प्रन्थना तुल्य होवाथी एक समये शतपृथक्त-बसोथी नवसो सुधी होय छे. तेथी परिहारविद्युद्धिक संयतो संख्यातगुणा छे, कारण के तेनो काल तेथी अधिक छे, अने तेओ पुलाकनी पेटें सहस्रपृथक्त होय छे. तेथी यथाक्ष्यात संयतो संख्यातगुणा छे, कारण के तेनुं प्रमाण कोटिपृथक्त छे. तेथी छेदोपस्थापनीय संयतो कोटिशतपृथक्त प्रमाण होवाथी संख्यातगुणा छे. तेथी सामायिक संयतो कवायकुक्षीलना तुल्य कोटीसहस्रपृथक्त प्रमाण होवाथी संख्यातगुणा छे.-टीका.

कयरे-जाव-विसेसाद्दिया वा ? [उ०] गोयमा ! सञ्चत्थोवा सुद्दुमसंपरायसंजया, परिद्वारिवसुद्धियसंजया संक्षेत्रगुणा, अद्दुक्कायसंजया संक्षेत्रगुणा, छेओवट्टावणियसंजया संक्षेत्रगुणा, सामाद्दयसंजया संक्षेत्रगुणा (३६)।

- ९६. पंडिसेवण <sup>व</sup>दोसा55 छै।यणा य आँछोयणारिद्दे चेष । तत्तो सामीयारी पीयच्छित्ते तँवे चेष ।
- ९७. [प्र॰] कहविहा णं संते ! पडिसेवणा पन्नसा ! [उ०] गोयमा ! दसविहा पडिसेवणा पन्नसा, तं जहा— वैष्पप्पेमावऽणामोगे आउरे आवतीति य । 'संकिन्ने सहसकारे संयप्पेमोसा य 'वीमंसा ।
- ९८. दस आलोयणादोसा पन्नता, तंजहा-''आकंपहत्ता अणुमाणहत्ता जं विद्वं बीयरं च सुहुमं वा । र्छन्नं सैहाउलयं बहुजण श्रेष्ठत तेंस्सेवी ।
- ९९. दसिंह ठाणेहि संपन्ने अणगारे अरिहति अत्तदोसं आलोइत्तप्, तंजहा-जीतिसंपन्ने, कुँलसंपन्ने, विणयसंपन्ने, णाणसंपन्ने, दंसणसंपन्ने, कैंलसंपन्ने, क्षंते, दंते, अमायी, अप्चाणुताबी।

द्धिक संयतो संख्यातगुणा छे, तेथी यथाख्यात संयतो संख्यातगुणा छे, तेथी छेदोपस्थापनीय संयतो संख्यातगुणा छे अने तेथी सामायिक संयतो संख्यातगुणा छे.

९६. १ प्रतिसेवना, २ आलोचनाना दोपो, ३ दोपोनी आलोचना, ४ आलोचना आपवा योग्य गुरु, ५ सामाचारी, ६ प्रायिश्वत्त अने ७ तप—ए सात विषयो संबन्धे कहेवानुं छे.

प्रतिसेवनाना प्रकार-

९७. [प्र०] हे भगवन् ! प्रतिसेवना केटल प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! दस प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे— १ \*दर्पप्रतिसेवन!—अहंकारथी थती प्रतिसेवना—संयमनी विराधना, २ प्रमादथी थती प्रतिसेवना, ३ अनाभोगथी थती प्रतिसेवना, १ आनुरपणाथी यती प्रतिसेवना, ५ आपदायी यती प्रतिसेवना, ६ संकीर्णता—संकडाराथी थती प्रतिसेवना, ७ सहसाकार—आकस्मिक कियाथी थती प्रतिसेवना, ८ भयथी यती प्रतिसेवना, ९ प्रद्वेप—कोध वगेरे कपायोथी यती प्रतिसेवना अने १० विमर्श—शैक्षकादिनी परीक्षा करवाथी थती प्रतिसेवना—ए रीते प्रतिसेवनाना दस प्रकार छे.

आलोचनाना-दस दोप- ९८. आलोचनाना दस दोपो कह्या छे, ते आ प्रमाणे---

१ प्रसन्न थयेटा गुरु थोडुं प्रायिश्वत्त आपशे माटे तेने सेनादिथी प्रसन्न करी तेनी पासे दोपनी आलोचना करवी, २ तद्दन नानो अपराध जणानवाथी आचार्य थोडुं प्रायिश्वत्त आपशे एम अनुमान करी पोताना अपराधनुं खतः आलोचन करवुं, ३ जे अपराध आचार्या-दिके जोयो होय तेनुं ज आलोचन करवुं, ४ मात्र मोटा आंतचारोनुं ज आलोचन करवुं, ५ जे सूक्ष्म अतिचारोनुं आलोचन करे ते स्थूल अतिचारोनुं आलोचन केम न करे एवो आचार्यनो विश्वास उत्पन्न करवा मृक्ष्म अतिचारोनुं ज आलोचन करवुं, ६ घणी शरम आवधाने लीधे प्रच्छन (कोइ न सांमळे तेम ) आलोचन करवुं, ७ बीजाने मंमळाववा खूब जोय्यी बोलीने आलोचन करवुं, ८ एकज आंतचारना घणा गुरु पासे आलोचना करवी, ९ अर्गानार्थनां पासे आलोचना करवी, अने १० जे दोपनुं आलोचन करवानुं छे ते दोषने सेवनार आचार्य पासे तनुं आलोचन करवुं.

भारोचना करवा योग्य साधुः ९९.. दस गुणोथी युक्त अनगार पोताना दोपनी आलोचना करवाने योग्य छे—१ उत्तम जातिवालो, २ उत्तम कुळवाळो, ३ विनयवान्, ४ ज्ञानवान्, ५ दर्शनसंपन्न-श्रद्धालु, ६ चारित्रयंपन्न, ७ क्षमावाळो, ८ दान्त-इंद्रियोने वशा राखनार, ९ अमायी— कपटरहित, सरळ अने १० अपश्चात्तापी—आलोचना लीधा पछी पस्तावो नहीं करनार.

९७. \* दर्पादि दश हेतुथी प्रतिसेवना-संयमिवराधना थाय छे. ते दश हेतु आ प्रमाणे—१ दर्प-अभिमान, २ मद्यपान, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथाहप प्रमाद, ३ अनाभोग-अज्ञान, ४ आतुर-भुख, तरसनी पीडाथी व्याकुळपणुं, ५ आपद्ना चार प्रकार छे-(१) इच्यापत्-प्रासुकादि इच्यनी अप्राप्ति, (२) क्षेत्रापत्-अटवीमां आवी पडवुं, (३) कालापत्-दुर्भिक्षकालप्राप्ति अने (४) भावापत्-रलानपणुं. ६ संकीणे—स्वपक्ष अने परपक्षणी यती क्षेत्रनी संकटाश, ७ शंकित-आधाकमादि दोषनी शंकावाळो खाहार, अथवा 'तितिण' गुनो निश्चीथनो पाठ खीकारीए तो 'आहारादिनी अप्राप्तिमां खेदपूर्वक वचन' एवो अर्थ थाय छे, ८ सहसाकार-आकस्मित्र किया करवी. जेमके पूर्वे जोया विवाय पग मूकी पछी जुए तो ते पगने पाछो वाळी न शके, ९ भय-प्रदेश-विद्यादिनो भय अने कोधादि, १० विमर्श-शैक्षकादिनी परीक्षा. ए प्रमाणे दश प्रकारना कारणथी दश प्रतिसेवना थाय छे.-टीका.

९९ † आलोचनाने योग्य साधुमां दश गुण होवा जोहए. (१) जातिसंपन्न श्रायः अकृत्य न करं, अने कर्युं होय तो तेनी सम्यक् आलोचना करे. (२) कुलसंपन्न अंगीकृत प्रायक्षित्तने बरोबर करे. (३) विनयसंपन्न बंदनादि आलोचना सामाचारी करे. (४) ज्ञानसंपन्न कृत्याकृत्यना विभागने जाणे. (५) दर्शनसंपन्न प्रायक्षित्तची थती शुद्धिनी श्रद्धा करे. (६) चारित्रसंपन्न प्रायक्षित्तनो स्त्रीकार करे. (७) क्षान्त-गुहए उपको आप्यो होय तो ते गुस्से न थाय. (८) दान्त-इन्द्रियोनुं दमन करेलुं होवाची गुद्धि धारण करे. (९) अमायी अपराधने लुपाव्या सिवाय आलोचना करे. अने १० अपक्षात्तापी-आलोचना लीघा पछी तेनो पक्षात्ताप न करे.

१००. अट्टर्डि टाणेडि संपन्ने अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तप, तंजहा-आयारवं, आहारवं, वैवहारवं, उँद्वी-रूप, पेंकुद्वप, अपरिस्सावी, निज्जवप, अवायवंसी ।

१०१. दसविद्या सामायारी पत्रसा, तंजदा— देंच्छा मिंच्छा तेंद्रकारे आवस्सिया य ॅनिसीदिया। आपुच्छणा य पॅडिपुच्छा 'छंदणा य 'निमंतणा। डेंबसंपया य काळे सामायारी भवे दसदा।

१०२. वसविद्दे पायच्छित्ते पद्मत्ते, तंजहा-आलोयणारिद्दे, पंडिक्कमणारिद्दे, तैदुभयारिद्दे, विवेगारिद्दे, विवरस-गारिद्दे, तैवारिद्दे, 'छेदारिद्दे, मूलारिद्दे, अंणवटुप्पारिद्दे, पंगरंचियारिद्दे ।

१०३. बुविहे तबे पन्नसे, तंजहा-बाहिरप य अधिमतरप य।

१००. आठ गुणोधी युक्त साधु आलोचन। आपवाने योग्य छे—१ आचारवान्—ज्ञानादि आचारवालो, २ आधारवान्—जणावेल अतिचारोने मनमां धारण करनार, ३ व्यवहारवान्—आगम- श्रुतादि पांच प्रकारना व्यवहारवालो, ४ अपवीदक—शरमणी पोताना अतिचारोने छुपावता शिष्यने मीठा वचनोथी समजावी शरमनो त्याग करावी सारी रीते आलोचना करावनार, ५ प्रकुर्वक—आलोचित अपराधनुं प्रायिक्षत्त आपीने अतिचारोनी छुद्धि कराववाने समर्थ, ६ अपरिस्नावी—जणावेल अतिचारोने बीजाने नहीं संभळावनार, ७ निर्मापक—असमर्थ एवा प्रायिक्षत्त लेनार शिष्यने थोडे थोडे प्रायिक्षत्त आपीने निर्वाह करनार अने ८ अपायदशी—आलोचना नहीं लेवामां परलोकनो भय देखाडनार.

आहोचना **आप**-नारना गुण-

१०१. सामाचारी दस प्रकारनी कही छे— \*१ 'इच्छाकार, २ मिध्याकार, ३ तथाकार, ४ आवश्यकी, ५ नैपेधिकी, ६ आपृ-च्छना, ७ प्रतिष्टच्छना, ८ छंदना, ९ निमंत्रणा अने १० उपसंपदा-ए रीते काळे आचरया योग्य दस प्रकारनी सामाचारी छे.''

सामाचारीना दश्च प्रकारः

१०२. प्रायश्चित्तना दस प्रकार कहा छे—१ आलोचनाने योग्य, २ प्रतिक्रमणने योग्य, ३ आलोचना अने प्रतिक्रमण बनेने योग्य, ४ विवेक—अञ्चद्ध भक्तादिना त्यागने योग्य, ५ कायोत्सर्गने योग्य, ६ तपने योग्य, ७ दीक्षापर्यायना छेदने योग्य, ८ मूळने योग्य-परीथी महाव्रत लेवा योग्य, ९ अनवस्थाप्याई—तप करीने परी महाव्रत लेवा योग्य, १० पारांचिक—गच्छथी बहार करवा योग्य, चिन्नद्वे लिंग धारण करवा योग्य.

प्रायश्चित्तना दश प्रकार-

१०३. तपना बे प्रकार छे--बाह्य अने अभ्यन्तर.

तपना प्रकार-

- १०१ \* (१) साधु अन्य साधुनी कोइयण कार्यमाटे अध्यर्थना करे अने ते साधु तेनुं इच्छित कार्य करे तो ते प्रार्थना करनार अने कार्य करनार बजेए बलास्कार न थाय माटे 'इच्छाकार' कहेवो जोइए. एटले मार्च कार्य तमारी इच्छा होय तो करो; अथवा आ कार्य तमे इच्छो तो हुं कर्व. (२) सिच्छाकार—संयमयोगमां तत्पर साधुए विवरीत आचरण कर्यु होय तो ए मार्च इच्छा तो स्वां प्रायां- एम समजी 'सिच्छाकार' कहेवो जोइए. (३) तथाकार—स्प्रादि-विवयक प्रथ्न करता गुरु उत्तर आपे त्यारे 'तमे कहो छो ते बरोबर छे-ए अर्थनो स्वक तथाकार काव्य कहेवो जोइए (४) आवाद्यका-उपाध्ययी आवद्यक कार्य निमित्त बहार गमन करता सापुए 'आवाद्यका' कहेवी. (५) नैपेधिकी-बहारथी पाछा उपाध्ययादिमां प्रवेश करतां 'निसीतीया-नेपेधिकी कहेवी. (६) आप्रच्छना-अमीष्ट कार्यमां प्रश्नित करता शिष्ये गुरुने पूछुं के, हे भगवन्! आ कार्य कर्ष ' (७) प्रतिष्टच्छना-गुरुए पूर्व निषद करेल कार्यमां प्रयोजनवन्नायी प्रयत्ति करती पढे तो फरी पूछ्युं के आपे पूर्व आ कार्यनी ना करी छे, पण मारे ते कार्यनुं प्रयोजन छे, जो आप फरमात्रो तो कर्र. (८) छंदना—पूर्वे छावेला भाहारादिवडे बाकीना साधुने आयत्र्यण करतुं के आ अप्रदारनो उपयोग होय तो आप्र प्रहण करो. (९) निमन्त्रणा—आहार लाववा बाटे साधुओने निमन्त्रण करतुं के तमारा माटे आहारादि लावुं ? (१०) उपसंपद्व जानादि निमित्त खगच्छादिनो खाग करी विविष्ठश्रुतादियुक गुरुनो आध्य करवो.
- १०२ <sup>†</sup> (१) आलोचना—संयममां टागेला दोपने गुरुसमक्ष बचनवडे प्रयट करवा ते आलोचना, जे प्रायिक्त आलोचनामात्रथी ग्रुद थाय ते आलोचनाने योग्य होवाधी कारणने विषे कार्यनो उपचार करवाधी ते आलोचनाप्रायिक्त कहेवाय छे. (२) प्रतिक्रमण—दोषधी पालुं जलुं, अने फरी निह करवा हुए मिथ्यादुस्कृत आपनुं, तेने योग्य प्रायिक्त पण प्रतिक्रमण कहेवाय छे. (३) मिथ्र—जे प्रायिक्त आलोचना अने प्रतिक्रमण उभयथां ग्रुद थाय ते उनसने योग्य होवाधी प्रतिक्रमण केश्वयां छे. (३) मिथ्र—जे प्रायिक्त आलोचना अने प्रतिक्रमण उभयथां ग्रुद थाय ते उनसने योग्य होवाधी मिश्रप्रायिक्त कहेवाय छे. (४) विवेक जे प्रायिक्त आधारामिकादि आहारनो विवेक लाग करवाधी ग्रुद थाय ते विवेक ने योग्य होवाधी विवेक प्रायिक्त कहेवाय छे. (४) व्यवक्त ने योग्य होवाधी विवेक प्रायिक्त कहेवाय छे. (५) व्यवक्त ने योग्य होवाधी व्यवक्त विवेक प्रायिक्त विवेष विवेक प्रायिक्त विवेक्त विवेक प्रायिक्त विवेक प्

१०७. [प्र०] से कि तं बाहिरए तवे ? [उ०] बाहिरए तवे छविहे पन्नते, तंजहा-अणसणं, ओमोदेरिया, अभिक्काय-रिया, रेंसपरिकाओ, कायकिलेसो, पंडिसंलीणता ।

१०५. [प्र०] से कि तं अणसणे ? [उ०] अणसणे दुविहे पन्नते, तंजहा-इत्तरिए य आवकहिए य।

१०६. [प्र०] से कि तं इत्तरिए ? [उ०] इत्तरिए अणेगविहे पश्चते, तंजहा-चउत्थे भत्ते, छट्टे मत्ते, अट्टमे भत्ते, दसमे भत्ते, दुवालसमे भत्ते, चोइसमे भत्ते, अञ्चमासिए भत्ते, मासिए भत्ते, दोमासिए भत्ते, तेमासिए भत्ते, जाव-छम्मासिए भत्ते । सेतं इत्तरिए ।

१०७. [प्रः] से कि तं आवकहिए ? [उ०] आवकहिए दुविहे पन्नते, तंजहा-पाओवगमणे य भत्तपवक्ताणे य।

१०८. [प्र०] से कि तं पाओवगमणे ? [उ०] पाओवगमणे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-नीहारिमे य अणीहारिमे य, नियमं अपिकम्मे । सेतं पाओवगमणे ।

१०९. [प्रत] से कि तं मत्तपञ्चक्काणे ? [उत] भत्तपञ्चक्काणे दुविहे पश्चते, तंजहा-नीहारिमे य अनीहारिमे य, नियमं सपष्टिकम्मे । सेत्तं भत्तपञ्चक्काणे । सेत्तं आवकहिए । सेत्तं अणसणे ।

११०. [प्र०] से किं तं ओमोद्रिया ? [उ०] ओमोद्रिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-द्वोमोयरिया य भाषोमोयरिया य।

१११. [प्र०] से किं तं द्वोमोयरिया ? [उ०] द्वोमोयरिया दुविहा पश्चा, तंजहा-उवगरणद्वोमोयरिया य मत्तपाणद्वोमोयरिया य ।

११२. [प्र०] से किं तं उवगरणदृष्ठोमोयरिया ? [उ०] उवगरणदृष्ठोमोयरिया तिविद्दा पन्नत्ता, (तंजहा-) पगे वत्थे, पगे पादे, चियत्तोवगरणसातिज्ञणया । सेत्तं उवकरणदृष्ठोमोयरिया ।

१०४. [प्र॰] बाह्य तपना केटला प्रकार छे ! [उ०] बाह्य तपना छ प्रकार छे—१ अनशन–आहारत्याग, २ ऊनोदरी– कंड्क ओछो आहार करवो, ३ मिक्षाचर्या, ४ रसनो त्याग करवो, ५ कायक्केश–शरीरने कष्ट आपबुं अने ६ प्रतिसंलीनता–इन्द्रिय– कपायादिनो निप्रह करवो.

अनुशनना प्रकार.

१०५. [प्र०] अनरानना केटला प्रकार छे ? [उ०] अनरानना बे प्रकार छे, ते आ प्रमाणे–इत्वरिक–अमुक काळ सुधी आहार त्याग अने यावत्कथिक–जीवनपर्यन्त आहारत्याग.

इस्वरिक अनदा-नना प्रकार- १०६. [प्र०] इत्वरिक अनशनना केटल प्रकार छे ! [उ०] इत्वरिक अनशन अनेक प्रकारतुं कहां छे, ते आ प्रमाणे— चतुर्थ भक्त-एक उपवास, पष्ट भक्त-वे उपवास, अप्टम भक्त-त्रण उपवास, दशम भक्त-चार उपवास, द्वादश भक्त-पांच उपवास, चतुर्दश भक्त-छ उपवास, अर्थमासिक भक्त-पक्षना उपवास, मासिक भक्त-मासना उपवास, द्विमासिक भक्त-वेमासना उपवास, त्रिमासिक भक्त-त्रण महीनाना उपवास, यावत्-पट्मासिक भक्त-छ गहीनाना उपवास. ए प्रमाणे इत्वरिक अनशन कहां.

यावस्कृषिक अन-दानना प्रकार-

१०७. [प्र०] यावत्कथिक अनदानना केटला प्रकार छे ? [उ०] यावत्कथिक अनदानना बे प्रकार छे.—पादपोपगमन अने भक्तप्रत्याख्यान.

पादपोपगमनना प्रकार १०८. [प्र०] पादपोपगमनना केटला प्रकार छे? [उ०] पादपोपगमनना वे प्रकार छे, ते आ प्रमाणे—निर्द्दारिम (जेमां मृत शरीर उपाश्रयादिथी बहार काढवानुं होय ते ) अने अगिर्द्दारिम (जेमां मृत शरीर बहार काढवानुं न होय ते ). तेमां अनिर्द्दारिम अनशन अवस्य सेवादि प्रतिकर्मरहित छे. ए रीते पादपोपगमन अनशन संबन्धे कथुं.

भक्तप्रत्याख्यानः ना प्रकारः १०९. [प्र०] भक्तप्रसाख्यान केटला प्रकारनुं छे ? [उ०] भक्तप्रसाख्यानना **वे प्रकार छे—निर्हारिम अने अनिर्हारिम. ते** बन्ने अवस्य सेवादि प्रतिकर्मवाळां छे. ए प्रमाणे भक्तप्रसाख्यान कह्युं. एम यावक्तिषक अनशन कह्युं, अने ए रीते अनशन पण कह्युं.

ऊनोदरिकाना मकार₊

११०. [प्र०] जनोदरिकाना केटला प्रकार छे ? [उ०] जनोदरिकाना वे प्रकार छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यजनोदरिका अने भावजनोदरिका-

द्रव्यऊनोदरिका-ना प्रकार-

१११. [प्र०] द्रव्यऊनोदरिकाना केटला प्रकार छे ! [७०] द्रव्यऊनोदरिकाना बे प्रकार छे, ते आ प्रमाणे—उपकरणद्रव्य— ऊनोदरिका अने भक्तपानद्रव्यऊनोदरिका.

खपकरण द्रव्यक नोवरिकाना अकार- ११२. [प्र०] उपकरण द्रन्यऊनोदिरकाना केटल प्रकार छे ! [उ०] उपकरणद्रन्यऊनोदिरकाना त्रण प्रकार छे, (ते आ प्रमाणे—) एक वस्त, एक पात्र, चियत्तोपकरणस्वदनता—संयतोए स्थाग करेला वस्त्र पात्र सिवायना उपकरणोनो उपभोग करनो. ए रीते उपकरणद्रव्य- ऊनोदिरका कही छे.

- ११३. [प्र०] से कि तं असपाणद्वोमोयरिया ? [उ०] अस० २ अट्टकुकुडिअंडगप्यमाणमेसे कवले आहारं आहारे-माणे अप्याद्दारे, तुवालस० जहा सत्तमसप पढमोद्देसप जाय-नो 'पकामरसमोजी'ति वत्तवं सिया । सेसं मत्तपाणद्वोमो-यरिया । सेसं द्वोमोयरिया ।
- ११४. [व॰] से किं तं भावोमोयरिया ? [उ॰] भावोमोयरिया अणेगविद्या पत्रसा, तंजहा-अप्पकोहे, जाव-अप्प-क्षोभे, अप्पसहे, अप्पत्रम्मे, अप्पतुमंतुमे । सेत्तं भावोमोवरिया । सेत्तं ओमोयरिया ।
- ११५. [प्रः] से कि तं भिक्सायरिया ? [उ०] भिक्सायरिया अणेगविद्या पश्चता, तंत्रहा-दश्चाभिग्गहचरप्-जहा उववाहप्, जाव-सुद्धेसणिष्, संस्नादस्तिष् । सेसं भिक्सायरिया ।
- ११६. [प्र॰] से किं तं रसपरिश्वाप ? [उ॰] रसपरिश्वाप अणेगविहे पश्चते, तंजहा-निव्विगितिप, पणीयरसिब-वज्जप-जहा उववाहप जाव-लुहाहारे । सेचं रसपरिश्वाप ।
- १९७. [प्र॰] से कि तं कायकिलेसे १ [उ॰] कायकिलेसे अणेगविद्दे पश्चते, तंजहा-ठाणादीय, उक्कुद्वयासणिय, जहा-उववाहय जाव-सद्वगायपरिकम्म-विभूसविष्यमुक्के । सेचं कायकिलेसे ।
- ११८. [प्र॰] से कि तं पडिसंठीणया १ [ड॰] पडिसंठीणया चडिश्वहा पन्नसा, तंजहा-द्रंदियपडिसंठीणया, कसाय-पडिसंठीणया, जोगपडिसंठीणया, विवित्तसयणासणसेवणया ।
- ११९. [प्र॰] से कि तं इंदियपिडसंलीणया ! [उ॰] इंदिय॰ २ पंचविद्या पन्नसा, तंत्रहा-सोइंदियविसयप्पयारणि-रोहो वा, सोइंदियविसयप्पत्तेष्ठ वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो, चिन्नं इंदियपिडसंलीणया। रोहो वा फासिदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो। सेसं इंदियपिडसंलीणया।
- ११३. [प्र०] भक्तपानद्रव्यक्रनोदिरकाना केटला प्रकार छे ! [उ०] कुकडीना इंडा प्रमाण आठ कोळिया आहार ले ते अल्पाहारी कहेशाय अने जे बार कोळिया आहार ले–इत्यादि बधुं "सानमा शतकना प्रथम उदेशकमां कहा प्रमाणे यावत्—'ते प्रकाम रसनो भोजी न कहेशाय'—त्यां सुधी कहेबुं. ए प्रमाणे भक्तपानद्रव्यक्रनोदिरिका कही अने ए रीते द्रव्यक्रनोदिरिका पण कही.

मक्तपान **इच्य-**छनोदरिका

११४. [प्र०] भावऊनोदरिकाना केटला प्रकार कहाा छे ? [उ०] भावऊनोदरिका अनेक प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे— क्रोध ओछो करवो, यावत्—लोभ ओछो करवो; अल्प बोलवुं, धीमे बोलवुं, गुस्सामां निरर्थक बहु प्रलाप न करवो, हृदयस्थ कोप ओछो करवो.—ए रीते भाव ऊनोदरिकासंबंधे कह्युं अने एम ऊनोदरिकासंबंधे पण कह्युं.

भावजनोदरिका ना प्रकारः

११५. [प्र०] भिक्षाचर्या केटला प्रकारनी छे ? [उ०] भिक्षाचर्या अनेक प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—द्रव्याभिग्रहचर— भिक्षामां अमुक चीजोने ज ग्रहण करवाना नियमपूर्वक भिक्षा करे, अमुक क्षेत्रना अभिग्रह पूर्वक भिक्षा करे—इत्यादि जेम <sup>†</sup>आपपातिक सूत्रमां कहुं छे तेम जाणहुं. यावत्—शुद्ध निर्दोष भिक्षा करवी, दत्तिनी संख्या करवी. ए प्रमाणे भिक्षाचर्या संबंधे हकीकत कही.

भिक्षाचर्याना प्रकारः

११६. [प्र०] रसपरित्यागना केटला प्रकार छे ! [उ०] रसपरित्यागना अनेक प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—पृतादि विकृति (विगइ) नो त्याग करवो, स्निग्ध रसवाळुं भोजन न करवुं—इत्यादि जेम ‡औपपातिक सूत्रमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावत्—छत्वो आहार करवो. ए प्रमाणे रसपरित्याग विषे कह्युं.

रसपरित्यागः ना प्रकारः

११७. [प्र०] कायक्केशना केटल प्रकार छे ? [उ०] कायक्केश अनेक प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—कायोत्सर्गादि आसने रहेवुं, उत्कटासने रहेवुं—इत्यादि प्रऔपपातिक सूत्रमां कह्युं छे तेम जाणवुं. यावत्—शरीरना सर्व प्रकारना संस्कार अने शोभानो त्याग करवो. ए प्रमाणे कायक्केश संबंधे कह्युं.

कायङ्केशना भकारः

११८. [प्र०] प्रतिसंकीनताना केटला प्रकार छे ! [उ०] प्रतिसंकीनता चार प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—१ इन्द्रियप्रतिसं-लीनता—इंद्रियोनो निप्रह करवो, २ कपायप्रतिसंलीनता—कषायोनो निप्रह करवो, योगसंलीनता—मन, वचन कायाना व्यापारनो निप्रह करवो, अने विविक्तरायनासनसेवन, स्त्री—पशु अने नपुंसक रहित वसतिमां निर्दोष रायनादि उपकरणोनो स्वीकार करी रहेवुं.

प्रतिसंहीनताः ना प्रकारः

११९. [प्र०] इंदियप्रतिसंठीनता केटल प्रकारनी छे ! [उ०] इंदियप्रतिसंठीनताना पांच प्रकार छे—१ श्रोत्रेन्द्रियना विषय प्रचारने रोक्तवो के श्रोत्रेन्द्रियद्वारा प्राप्त पयेल विषयमां रागद्वेषनो निरोध करवो, २ चक्षुना विषयप्रचारनो रोध करवो, के चक्षुद्वारा प्राप्त विषयमां राग देख न करवो. ए प्रमाणे यावत्—५ स्पर्शनेन्द्रियना विषय प्रचारनो निरोध करवो अने स्पर्शनेन्द्रियद्वारा अनुभवेल पदार्थोंने विषे रागद्वेषनो निप्रद्व करवो. ए रीते इंदियप्रतिसंठीनता कही.

इन्द्रियप्रतिसंही-नताना प्रकार-

१९३ \* भग० खं० ३ श० ७ उ० १ पृ० ६ स्० २२.

११५ | औप॰ प्र॰ ३८-२. आहारादिनो पात्रमां एक बार क्षेप ते दत्ति, अभिप्रहमां दत्तिनी संख्यानो नियम होय छे.

११६ ‡ औप० पृ० ३९-२.

११७ पे औप • प • ३९-२.

- १२०. [प्र०] से कि तं कसायपडिसंलीणया १ [उ०] कसायपडिसंलीणया चउन्निहा पत्रत्ता । तंजहा–कोहोव्यनि-रोहो वा उदयपत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं, पयं जाय-लोभोदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोभस्स विफलीकरणं । सेत्तं कसायपडिसंलीणया ।
- १२१. [प्र०] से किं तं जोगपडिसंलीणया ? [उ०] जोगपडिसंलीणया तिविद्या पन्नत्ता, तंजद्या—१ अकुसलमणनिरोही था, २ कुसलमणउदीरणं वा, ३ मणस्स वा एगसीभायकरणं, १ अकुसलवद्दनिरोहो वा, २ कुसलवद्दर्वरणं वा, ३ वद्दर वा, एगसीभायकरणं ।
- १२२. [प्र॰] से कि तं कायपडिसंळीणया १ [उ॰] कायपडिसंळीणया जन्नं सुसमाहियपसंतसाहरियपाणिपाए कुम्मो इव गुर्सिदिए अल्लीणे पित्नीणे चिट्टति, सेसं कायपडिसंळीणया । सेसं जोगपडिसंळीणया ।
- १२३. [प्र०] से कि तं विवित्तसयणासणसेवणया ? [उ०] विवित्तसयणासणसेवणया जन्नं आरामेसु वा उज्जाणेसु वा— जहा सोमिलुद्देसए जाव—सेज्ञासंथारगं उवसंपज्जित्ता णं विहरद् । सेत्तं विवित्तसयणासणसेवणया । सेत्तं पिडसंठीणया । सेत्तं बाहिरए तवे १ ।
- १२४. [प्रः] से कि तं अधिंगतरप तये ? [उ०] अधिंगतरप तये छिष्ठिद्दे पन्नत्ते, तंजदा—१ पायच्छित्तं, २ विणओ, ३ वेयावयं, ४ सज्ज्ञाओ, ५ झाणं, ६ विजसग्गो ।
- १२५. [प्र॰] से कि तं पायिञ्छत्ते ? [उ०] पायिञ्छत्ते दसविद्दे पन्नत्ते, तंज्ञहा–आलोयणारिद्दे, जाव–पारंचियारिद्दे । सेत्तं पायिञ्जत्ते ।
- १२६. [प्र॰] से किं तं विणए ! [उ॰] विणए सत्तिविहे पन्नते । तं जहा-१ नाणविणए, २ दंसणविणए, ३ चरित्त-विणए, ४ मणविणए, ५ वयविणए, ६ कायविणए, ७ लोगोवयार्रविणए ।
- १२७. [प्र॰] से किं तं नाणविणए १ [उ॰] नाणविणए पंचविद्दे पन्नसे, तंज्ञहा–१ आभिणिबोहियनाणविणए, जाव–५ केवळनाणविणए । सेसं नाणविणए ।

कपायप्रतिसंठीन-ताना प्रकारः १२० [प्र०] कपायप्रतिमंशीनताना केटला प्रकार छे ? [उ०] कपायप्रतिमंशीनताना चार प्रकार छे—१ क्रोधना उदयनो निरोध करवो, अथवा उदय प्राप्त क्रोधने निष्फळ करवो. ए प्रमाणे यावत्—५ लोभना उदयनो निरोध करवो के उदय प्राप्त लोभने निष्फळ करवो. ए रीते कपायप्रतिमंशीनता कही.

योगसंत्रीनताना प्रकार-

१२१. [प्र०] योगमंद्यीनताना केटला प्रकार छे ? [उ०] योगमंद्यीनताना त्रण प्रकार छे—१ अकुशल मननो निरोध करवो २ कुशल मननी प्रवृत्ति करवी अने ३ मनने एकाप्र—िस्थर करबुं. १ अकुशल वचननो निरोध करवो, २ कुशल वचन बोलबुं अने ३ वचनने स्थिर करबुं.

कायसंत्रीनतान। प्रकार-

- १२२. [प्र०] कायसंकीनता केश प्रकारनी छे ! [उ०] सार्ग रीते समाधिपूर्वक प्रशांत थई हाथ पगने मंकोची काचवानी पेठे गुप्तेन्द्रिय थई आठीन अने प्रठीन—स्थिर रहेवुं ते कायमंठीनता कहेत्राय छे. ए रीते कायमंठीनता कही.
- १२३. [प्र०] विक्तिशयनासनसेवना केवा प्रकारनी छे? [उ०] जे आरामोमां, उद्यानोमां—इत्यादि 'सोमिछना उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत्— शम्या अने संधाराने छड्ने विहरे ते विविक्तशयनासनसेवना छे. ए रीते विविक्तशयनासनसेवना कही. एम प्रतिसंछीनता संबंधे हकीकत पण कही. ए रीते बाह्य तपसंबंधे पण कह्युं.

अभ्यन्तर तपना प्रकार- १२४. [प्र०] अभ्यंतर तप केटला प्रकारे छे ? [उ०] अभ्यंतर तप छ प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—१ प्रायश्वित्त, २ विनय, ३ वैयाबृत्त्य, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान अने ६ न्युत्सर्ग.

मायश्चित्तना प्रकारः १२५. [प्र०] प्रायश्चित्त केटला प्रकारे छे ? [उ०] प्रायश्चित्त दस प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—१ आलोचनाने योग्य अने यावत्— १० पारांचितकने योग्य. ए रीते प्रायश्चित्त कह्युं.

विनयना प्रकार.

१२६. [प्र०] विनय केटल प्रकारनो छे? [उ०] विनयना सान प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—१ ज्ञाननो विनय, २ दर्शननो विनय, ३ चारित्रविनय, ४ मनरूप विनय, ५ वचनरूप विनय, ६ कायरूप विनय अने ७ लोकोपचार विनय.

शानविनयना प्रकार- १२७. [प्र०] ज्ञाननो यिनय केटला प्रकारे छे ? [उ०] ज्ञाननो विनय पांच प्रकारनो छे—१ आभिनिबोधिक—मतिज्ञाननो विनय, यावत्—५ केवल्ज्ञाननो विनय. ए रीते ज्ञाननो विनय कह्यो. १२८. [प्र॰] से कि तं दंसणविणय १ [उ॰] दंसणविणय दुविहे पश्चसे तंत्रहा—सुस्स्सणाविणय य अणवासादणा-विणय य ।

१२९. [प्र०] से कि तं सुस्सूसणाविणप ? [उ०] सुस्सूसणाविणप अणेगविहे पन्नते, तंजहा-सकारे इ, वा सम्माणे इ वा-जहा चोइसमसप ततिप उद्देसप जाव-पडिसंसाहणया । सेत्तं सुस्सूसणाविणप ।

१३०. [प्र०] से कि तं अणबासायणाविणए ? [उ०] अणबासायणाविणए पणयालीसर्विहे पश्चते । तंत्रहा-१ अरहंताणं अणबासादणया, २ अरहंतपश्चस्स धम्मस्स अणबासादणया, ३ आयरियाणं अणबासादणया, ४ उचन्द्रायाणं अणबासादणया, ५ येराणं अणबासादणया, ६ कुलस्स अणबासादणया, ७ गणस्स अणबासादणया, ८ संघस्स अणबासादणया, ९ किरियाण अणबासादणया, १० संभोगस्स अणबासायणया, ११ आभिणियोहियनाणस्स अणबासायणया, जाव-१५ केवलनाणस्स अणबासावणया, ३० पपसि चेव भत्ति-बहुमाणेणं, ४५ पपसि चेव वश्वसंजलणया। सेत्तं अण-बासायणयाविणए। सेत्तं दंसणविणए।

१३१. [प्र०] से किं तं चरित्तविणए ? [उ०] चरित्तविणए पंचविद्दे पश्चते, तंजहा—१ सामाइयचरित्तविणए, जाब-५ अहम्खायचरित्तविणए । सेत्तं चरित्तविणए ।

१३२. [प्र०] से कि तं मणविणए ? [उ०] मणविणए दुचिहे पश्चते, तंजहा-पसत्थमणविणए, अपसत्थमणविणए य ।

१३३. [प्र०] से किं तं पसत्थमणियणए १ [उ०] पसत्थमणिवणप सत्तिविद्दे पन्नते, तंजहा-१ अपावप, २ असावज्रे, ३ अकिरिप, ४ निरुवक्रेसे, ५ अणण्हवकरे, ६ अच्छविकरे, ७ अभूयाभिसंकणे । सेत्तं पसत्थमणविणय ।

१३४. [प्र॰] से कि तं अपसत्थमणविणए ? [उ॰] अप्पसत्थमणविण्य सत्तविहे पप्रत्ते, तंजहा-१ पावए, २ सावज्रे, ३ सकिरिए, ४ सउवक्रेसे, ५ अण्डवयकरे, ६ छविकरे, ७ भूयाभिसंकणे । सेत्तं अप्पसत्थमणविणय । सेत्तं मणविणय ।

१३५. [प्र०] से कि तं वहविणए ? [उ०] वहविणए दुविहे एम्नसे, तंजहा-पसन्थवहविणए य अप्पसन्थवहविणए य।

१२८. [प्र०] दर्शननो विनय केटला प्रकारे छे ? [उ०] दर्शननो विनय वे प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे--शुश्रूपाविनय अने अनाशातनारूप विनय.

दर्शनविनयना प्रकारः

१२९. [प्र०] क्युश्रृपाविनयना केटला प्रकार छे <sup>१</sup> [उ०] श्रुश्रृपा विनय अनेक प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—सत्कार करवो, सन्मान करतुं वगेरे—<sup>\*</sup>चौदमा शतकना त्रीजा उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत्–प्रतिसंसाधनना सुधी जाणतुं, ए प्रमाणे शुश्रृपाविनय कह्यो. शुश्रुषाविनयना प्रकार-

- १३०. [प्र०] अनाशातना विनय केटला प्रकारे छे ? [उ०] अनाशातना विनयना पिस्ताळीश भेद छे. ते आ प्रमाणे—१ अरिहंतोनी अनाशातना, २ अरिहंतोए कहेल धर्मनी अनाशातना, ३ आचार्योनी अनाशातना, ४ उपाध्यायोनी अनाशातना, ५ स्थविरोनी
  अनाशातना, ६ कुळनी अनाशातना, ७ गणनी अनाशातना, ८ संघनी अनाशातना, ९ क्रियानी अनाशातना, १० समानधार्मिकनी
  अनाशातना, ११ मितिज्ञाननी अनाशातना अने यावत्—१५ केवळ ज्ञाननी अनाशातना, अने एज रीते ३० अरिहंतादि पंदरनी भिक्त
  अने बहुमान, तथा ४५ एओना गुणोना कीर्तनबडे तेनी कीर्ति करवी. ए रीते अनाशातना विनयना पिस्ताळीश प्रकार छे. ए रीते
  अनाशातनारूप विनय कह्यो अने एम दर्शनविनय पण कह्यो.
- १३१. [प्र०] चारित्रविनय केटला प्रकारनो छे? [उ०] चारित्रविनय पांच प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे-१ सामायिकचारित्रविनय, अने यावत्-५ यथाख्यातचारित्रविनय. एम चारित्रविनय कहाो.

न्या**रित्रविनयना** प्रकारः

१३२. [प्र०] मनविनय केटला प्रकारनो छे १[उ०] मनविनयना बे प्रकार छे. ते आ प्रमाणे–प्रशस्तमनविनय अने अप्रशस्तमनविनय.

मनविनयना प्रकार-प्रश्नास्त मनविनयना प्रकार-

१३३. [प्र०] प्रशस्त मनविनय केटला प्रकारनो छे ! [उ०] प्रशस्त मनविनयना सात प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—१ पापरहित, २ कोधादि अवद्य रहित, ३ कायिनयादि क्रियामां आसक्तिरहित, ४ शोकादि उपक्रेशरहित, ५ आश्रवरहित, ६ स्वपरने आयास करवा रहित, अने ७ जीवोने भय न उत्पन्न करवो. एम प्रशस्त मनविनय कहाो.

भप्रशस्तविनयना प्रकार

१३४. [प्र०] अप्रशस्त मनविनयना केटला प्रकार छे ! [उ०] अप्रशस्त मनविनयना सात प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—१ पापरूप, २ अवद्यवाळो, ३ कायिक्यादि कियामां आसक्तिसहित, ४ शोकादिउपक्षेशयुक्त, ५ आश्रवसहित, ६ ख—परने आयास उत्पन्न करनार अने ७ जीवोने भय उपजावनार. एम अप्रशस्त मनविनय कह्यो. अने ए रीते मनविनय पण कह्यो.

> बचन विजयना प्रकार-

१३५. [प्र०] वचनविनयना केटला प्रकार छे ? [उ०] वचनविनयना बे प्रकार छे-प्रशस्त वचनविनय अने अप्रशस्त वचनविनय.

१३६. [प्र०] से कि तं पसत्थवर्षिणए ? [उ०] पसत्थवर्षिणए सत्तविहे पत्रते, तंजहा-१ अपायए, २ असावज्जे, जाव-७ अभूयामिसंकणे । सेत्रं पसत्थवर्षिणए ।

१३७. [प्र०] से किं तं अप्पसत्थवर्षिणए ? [उ०] अप्पसत्थवर्षिणए सत्तविद्वे पन्नते तंत्रदा-१ पावए, २ सावजे, जाव-७ भूयाभिसंकणे । सेत्तं अप्पसत्थवर्षिणए । सेत्तं वर्षिणए ।

१३८. [प्र०] से किं तं कायविणए ? [उ०] कायविणए दुविहे पश्चत्ते, तंत्रहा-पसत्थकायविणए य अप्यसत्थकाय-विणए य ।

१३९. [प्र०] से किं तं पसत्थकायविणप ? [उ०] पसत्थकायविणप सत्तविद्दे पन्नसे, तंजहा-१ आउत्तं गमणं, २ आउत्तं टाणं, ३ आउत्तं निसीयणं, ४ आउत्तं तुयदृणं, ५ आउत्तं उह्नंघणं, ६ आउत्तं पह्नंघणं, ७ आउत्तं सार्धिवियजोग-ज्ञंजणया । सेत्तं पसत्थकायविणप ।

१४०. [प्र०] से कि तं अप्पसत्थकायविणप ? [उ०] अप्पसत्थकायविणप सत्तविद्दे पत्रत्ते, तंजहा-१ अणाउत्तं गमणं जाव-७ अणाउत्तं सिंहिदियजोगर्ज्जजणया । सेत्तं अप्पसत्थकायविणप । सेत्तं कायविणप ।

१४१. [प्र०] से कि तं लोगोवयारविषय ? [उ०] लोगोवयारविषय सत्तविद्दे पन्नसे, तंजहा-१ अन्भासवित्तयं, २ परच्छंदाणुवित्तयं, ३ कज्जदेवं, ४ कयपिडकितया ५ असगवेसणया, ६ देसकालण्णया, ७ सञ्चत्थेसु अव्यक्तिया । सेसं लोगोवयारविषय । सेसं विषय ।

१४२. [प्र०] से कि तं वेयावचे ? [उ०] वेयावचे दसिष्ठ पद्मले, तंत्रहा-१ आयरियवेयावचे, २ उवज्झायवेयावचे, ३ थेरवेयावचे, ४ तवस्सिवेयावचे, ५ तिलाणवेयावचे, ६ सेट्वेयावचे, ७ कुलवेयावचे, ८ गणवेयावचे, ९ संघवेयावेच, १० साहम्मियवेयावचे । सेतं वेयावचे ।

१४३. [प्र॰] से कि तं सज्झाप ! [उ०] सज्झाप पंचविद्दे पश्चसे, तंजहा-१ वायणा, २ पडिपुच्छणा, ३ परियष्टणा, ध अणुप्पेहा, ५ धम्मकहा । सेत्तं सज्झाप ।

प्रवास्त वचनविनः यना प्रकारः १३६. [प्रञ] प्रशस्त बचनविनय केटला प्रकारे छे १ [उ०] प्रशस्त बचनविनयना सात प्रकार कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ पापरहित, २ असावद्य, यावत्–७ जीवोने भय न उपजाववो. ए रीते प्रशस्त बचनविनय कह्यो.

भप्रशस्त वचनवि-नयना प्रकारः १३७. [प्र॰] अप्रशस्त वचनित्रनय केटला प्रकार छे ? [उ॰] अप्रशस्त वचनित्रनयना सात प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—१ पापसहित, २ सावध अने यावत्—जीवोने भय उपजाववो. ए रीते अप्रशस्त वचनित्रनय कह्यो अने ए रीते वचनित्रनय पण कह्यो.

१३८. [प्र०] कायविनय केटला प्रकारे छे? [उ०] कायविनयना ने प्रकार छे. ते आ प्रमाणे-प्रशस्त कायविनय अने अप्र-शस्त कायविनय.

प्रदास्त कायविनः यना प्रकारः १३२. [प्र०] प्रशस्त कायिवनय केटल प्रकारे छे ? [उ०] प्रशस्त कायिवनयना सात प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—१ सावधानता-पूर्वक जबुं, २ सावधानतापूर्वक स्थिति करबी, ३ सावधानतापूर्वक बेसबुं, ४ सावधानतापूर्वक (पथारीमां) आळोटबुं, ५ सावधानता-पूर्वक उछुंघन करबुं, ६ सावधानतापूर्वक बधारे उछुंघन करबुं अने ७ सावधानतापूर्वक बधी इंदियोनी प्रवृत्ति करवी. ए प्रमाणे प्रशस्त कायिवनय कहाो छे.

अप्रशस्त कायविन-यना प्रकार- १४०. [प्र०] अप्रशस्त कायविनय केटला प्रकारनो छे? [उ०] अप्रशस्तकायरूप विनयना सात प्रकार छे. ते आप्रमाणे—सावधा-नता सिवाय जतुं, यावत्—सावधानता सिवाय बधी इंदियोना प्रवृत्ति करवी. एप्रमाणे अप्रशस्त कायविनय कह्यो. एम कायरूप विनय पण कह्यो.

लोकोपचार विन-यना प्रकारः १४१. [प्र०] होकोपचारिवनय केटला प्रकारे छे ? [ट०] होकोपचारिवनयना सात प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—१ गुर्नीदि बडिल-वर्गनी पासे रहेतु, २ तेओनी इच्छाप्रमाणे वर्ततुं, ३ कार्यनी सिद्धि माटे हेतुओनी सबड करी आपवी, ४ करेला उपकारनो बदलो देवो, ५ रोगीओनी संमाह राखवी, ६ देशकालक्कता—अवसरोचिन प्रवृत्ति करवी अने ७ सर्व कार्योमां अनुकूलपणे वर्ततुं. एम होकोपचारिवनय कह्यो. अने ए रीते विनयसंबंधे कह्युं.

वैयाक्स्यना प्रकार.

१४२. [प्र०] वैयावृत्त्य केटला प्रकारनुं छे ? [उ०] वैयावृत्त्यना दस प्रकार छे. ते आ प्रमाणे—१ आचार्यनुं वैयावृत्त्य, २ उपा-ध्यायनुं वैयावृत्त्य, ३ स्थविरनु वैयावृत्त्य, ४ तपस्तीनुं वैयावृत्त्य, ५ रोगीनुं वैयावृत्त्य, ६ हौक्ष—प्राथमिक शिष्योनुं वैयावृत्त्य, ७ कुल-एक आचार्यना शिष्योना परिवारनुं वैयावृत्त्य, ८ गण—साथे अध्ययन करता साधुओना समृह्—नुं वैयावृत्त्य, ९ संघनुं वैयावृत्त्य, अने १० साधर्मि-कनुं वैयावृत्त्य. ए रीते वैयावृत्त्य कर्त्वुं.

साध्यायना प्रवार.

१४३. [प्र०] खाष्याय केटला प्रकारनुं छे ? [उ०] खाष्यायना पांच प्रकार छे. ते आ प्रमाणे–१ वाचना–अध्ययन, २ पृच्छना, ३ पुनरावर्तन करबुं, ४ चिंतन करबुं अने ५ धर्मकथा. ए रीते खाष्याय संबंधे कर्बुं.

१४४. [प्र॰] से कि तं झाणे ? [उ०] झाणे चउन्निहे पन्नते, तंजहा--१ अट्टे झाणे, २ रोहे झाणे, ३ घम्मे झाणे, ध सुके साणे।

१४५. [प्र०] अहे झाणे चउन्निहे पन्नते, तंजहा-१ अमणुष्यसंपयोगसंपउत्ते तस्स विष्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवर, २ मणुष्रसंपओगसंपउसे तस्स अविष्पयोगसतिसमन्नागए याचि भवर, ३ आयंकसंपयोगसंपउत्ते तस्स विष्पयोगसति-समन्नागए यावि भवर्, ४ परिज्ञसियकामभोगसंपयोगसंपउत्ते तस्त अविष्पयोगसितसमन्नागए यावि भवर्। अट्रस्स णं झाणस्स चत्तारि रुक्सणा पन्नता, तंजहा⊸१ कंदणया, २ सोयणया, ३ तिव्यणया, ४ परिदेवणया ।

१४६. [प०] रोहे झाणे चउच्चिहे पन्नचे, तंजहा-१ हिंसाणुबंधी, २ मोसाणुबंधी, ३ तेयाणुबंधी, ४ सारक्सणाणु-वंधी । रोइस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नता, तजहा-१ ओस्सन्नदोसं, २ बहुलदोसे, ३ अण्णाणदोसं ४ आमर-णांतदोसे ।

१४७. [प्र०] धम्मे झाणे चउन्निहे चउप्पडोयारे पप्रसे, तंत्रहा-१ थाणाविजय, २ अवायविजय, ३ विवासविजय, ४ संठाणविजय । धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्ष्यणा पन्नत्ता, तंजहा-१ आणारुयी, २ निसम्मरुयी, ३ सुत्तरुयी, ४ ओगा-ढबर्या । धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पन्नत्ता, तंजहा-१ वायणा, २ पडिपुच्छणा, ३ परियट्टणा, ४ धम्मकहा । धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुष्पेहाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-१ एगत्ताणुष्पेहा, २ अणिबाणुष्पेहा, ३ असरणाणुष्पेहा, **४ संसाराणु**ष्पेहा ।

१४८. [प्रo] सुके झाणे चउन्निहे चउप्पडोयारे पन्नत्ते, तंजहा-१ पुहुत्तवियके सवियारी, २ पर्गतवियके अवियारी, ३ सुद्रमिकरिप अनियट्टी, ४ समोच्छिन्नकिरिप अप्पडिवायी । सुकस्स णं झाणस्स चत्तारि उपखणा पन्नता, तंजहा-१

१४४. [प्र०] ध्यान केटला प्रकारे छे ? [उ०] ध्यानना चार प्रकार छे. ते अ। प्रमाणे—१ आर्तध्यान, २ रौद्रभ्यान, ३ धर्मध्यान अने ४ शुक्रध्यानः

ध्यानना प्रकार-

१२५. आर्तध्यानना चार प्रकार छे. ते आ प्रमाणे--१ अनिष्ट वस्तुओनी प्राप्ति यतां तेना वियोगनुं चिन्तन करवुं, २ इष्ट वस्तु-ओनी प्राप्ति थतां तेन। अवियोगनं चितन करवं, ३ रोगादि कप्ट प्राप्त थतां तेना वियोगनं चितन करवं अने ४ प्रीति उत्पन्न करनार कामभोगादिकनी प्राप्तिमां तेना अवियोगनुं चितन करतुं. आर्तध्याननां चार उक्षण कह्यां छे. ते आ प्रमाणे–१ आकंदन–मोटेथी रोद्वं, २ दीनता, ३ आंखुओ पाडवा अने ४ वारंवार क्रेशयुक्त बोलवुं.

आर्तध्यानना प्रकार, आर्विध्यानना स्रधानः

१४६. रीइप्यानना चार प्रकार कहा। छे. ते आ प्रमाणे -१ हिसानुवन्धी-हिंसा संबंधी निरंतर चिन्तन, २ मृषानुबन्धी-खोट्ट बोठ्या संबंधी निरंतर चिन्तन, ३ स्तेयानुबन्धी- चोरी करवा संबन्धे निरंतर चिन्तन अने ४ संरक्षणानुबंधी-धन वगेरेना संरक्षण संबन्धे निरंतर चिन्तन, रीद्र ध्याननां चार लक्षण कह्यां छे. ते आ प्रमाणे-१ ओसन्नदोष-जेमां हिंसा बगेरेथी नहीं अटकवा रूप धणा दोष छे ते. २ बहुळदोप-जेमां हिंसा वगेरेमां प्रवृत्ति करवारूप घणा दोष छे ते, ३ अज्ञानदोप-हिंसादि अधर्ममां धर्मबुद्धिथी प्रवृत्ति करवा रूप दोप अने ८ आमरणान्तदोष-मरण पर्यन्त पापनो पश्चात्ताप नहि थवा रूप दोष.

रीद्रध्यानना प्रकारः रोद्रध्यानना लक्षणः

१४७. धर्मध्यानना चार प्रकार छे. ते आ प्रमाणे-१ आज्ञाविचय-जेमां जिन प्रवचननो निर्णय छे एवं चिन्तन, २ अपायिव-चय-सगढ़ेपादिजन्य अनर्थो संबंधे चिन्तन, ३ विपाकविचय-कर्मनां फळ संबंधे चिंतन अने ४ संस्थानविचय-रोकना-द्वीप समदादिना आकार संबन्धे चिन्तन. धर्मध्याननां चार एक्षणो कह्यां छै. ते आ प्रमाणे-१ आज्ञारुचि-जिनोपदेशमां रुचि, २ निस्र्गरुचि-म्ब्रभावधी तत्त्वरुचि, ३ सूत्ररुचि-आगमधी तत्त्वरुचि थवी अने ४ अवगादरुचि-द्वादशांगना सविस्तर अवगाहनथी रुचि थवी. धर्मध्याननां चार आलंबनो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे-१ वाचना, २ प्रांतपृच्छना, ३ परिवर्तना-पुनरावर्तन करवं अने ४ धर्मकथा करवी. धर्मध्याननी चार भावनाओं कही छै. ते आ प्रमाणे-१ एकत्वभावना, २ अनित्यभावना, ३ अशरणभावना अने ४ गंसारभावना.

धर्मध्यानना प्रकारः धर्मेध्यानना लक्षण. धमैधानना धालबन. धर्मध्यानती चार भावना.

१४८. जुक्कथ्यानना चार प्रकार कहाा छे. ते आ प्रमाणे-१ \*पृथक्तवितर्क सिवचार, २ एकत्वितर्क अविचार, ३ सृक्ष्मिकेय अञ्चानना प्रकार अनिष्टति अने ४ समुच्छिन्नत्रिय अप्रतिपाति. शुक्कध्याननां चार उक्षणो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे-१ क्षमा, २ नि:स्पृहता, ३ आर्जव-

१४८ \* १ पृथक्त-एक इन्यने आश्रित उत्पादादि पर्यायोगा मेद बडे वितर्क-पूर्वगत श्रुतानुसारी अथवा नानानयानुसारी सविन्तार-अर्थथी शब्दमाँ अने शब्दशी अर्थमां मनप्रमुख योगोमाना कोइपण एक योगशी बीजा योगमां उपयोगपूर्वक संकान्तियुक्त चिन्तन ते पृथकलवितर्क सविचारः २ एकल-उत्पा-दादि पर्यायोना अभेदयी कोइ पण एक पर्यायद्वारा वितर्क-पूर्वगतश्चनाश्चित व्यंजनरूप के अर्थरूप अधिचार—अर्थ, व्यंजन अने योगनी संक्रान्तिरहित चिन्तन ते एकत्ववितकंअविचार. ३ मन अने वचनयोगनो सर्वथा रोध करवाथी अने काययोगमां बादरकाययोगनो रोध करेलो होवाथी सक्ष्मिकियावाद्धं पाछुं न पडे ते सूक्ष्मिकयअनियृत्तिग्रुक्रथ्यान. आ ध्यान निर्वाणगमनसमये के बलीने होय छे. ४ ज्यां योगनो सर्वथा रोध करेलो होनाथी कायिक्यादि कियानो सर्वेथा उच्छेद थयो छे एवं समुच्छित्रकिय अनिवृत्ति गुक्कथ्यान कहेवाय छे—टीका.

खंती, २ मुत्ती, ३ अजवे, ४ महवे। सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पन्नता, तंजहा-१ अबहे, २ असंमोहे, ३ विवेगे, ४ विउसगो। सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्येहाओ पन्नताओ, तंजहा-१ अणंतवत्तियाणुप्येहा, २ विष्यरिणामाणुप्येहा, ३ असुमाणुप्येहा, ४ अवायाणुप्येहा। सेत्तं झाणे।

१४९. [प्र०] से कि तं विउसग्गे ? [उ०] विउसग्गे दुविहे पन्नते, तंजहा-१ दच्चविउसग्गे य भावविउसग्गे य ।

१५०. [प्र०] से किं तं दब्वविउसग्गे [उ०] दब्वविउसग्गे चउित्वहे पन्नसे, तंजहा-गणविउसग्गे, सरीरविउसग्गे, उविह्विउसग्गे, भत्तपाणविउसग्गे । सेसं दब्वविउसग्गे ।

१५१. [प्र०] से कि तं भावविउसग्गे ? [उ०] भावविउसग्गे तिविहे पन्नसे, तंजहा–कसायविउसग्गे, संसारविउ-सग्गे, कम्मविउसग्गे ।

१५२. [प्र॰] से किं तं कसायविजसग्गे ? [उ॰] कसायविजसग्गे चडिष्ट पन्नत्ते, तंजहा-कोहविजसग्गे, माणविज-सग्गे, मायाविजसग्गे, होभविजसग्गे । सेत्तं कसायविजसग्गे ।

१५३. [प्र०] से कि तं संसारविउसग्गे ? [उ०] संसारविउसग्गे चउिष्ठहे पन्नसे,तंज्ञहा—नेरहयसंसारविउसग्गे, जाव— देयसंसारविउसग्गे । सेत्तं संसारविउसग्गे ।

१५४. [प्रc] से कि तं कम्मविउसग्गे ? [उ०] कम्मविउसग्गे अट्टविद्दे पन्नसे, तंजहा-णाणावरगिज्जकम्मविउसग्गे, जाव-अंतराइयकम्मविउसग्गे। सेसं कम्मविउसग्गे। सेसं भावविउसग्गे। सेसं अधिभतरए तवे। 'सेवं भंते । सेवं भंते' ! सि।
पणविसतिमे सए सत्तमो उद्देसओ समत्तो।

शुक्रध्यानना चार लक्षणः शुक्रस्थानना चार सार्वदनः

भानंबन. शुक्कस्थानर्गः चार

भावनाः स्युत्सर्गना प्रकारः

द्भव्यन्युत्भर्गना प्रकारः

भावव्युत्मर्गनाः प्रकारः

क्रपायञ्युत्सर्गना प्रकार

संसारव्युत्सनंना प्रकारः

कर्मन्युत्सर्गना प्रजार

नारकोनी उत्पत्ति.

सरलता अने १ मार्दव—माननो स्थाग. शुक्रध्याननां चार आलंबन कहाां छे. ते आ प्रमाणे—१ अन्यथा—भयनो अभाव, २ असंमोह—भ्रान्तिनो अभाव, ३ विवेक—दारीरथी आत्मानी भिन्नता अने १ व्युत्सर्ग—असंगपणुं, स्थाग. शुक्रध्याननी चार भावनाओ छे, ते आ प्रमाणे—१ संसारना अनंतवृत्तिपणा संबन्धे विचार, २ प्रत्येक क्षणे वस्तुओमा थता विपारणाम संबंधे विचार, ३ संसारना अशुभपणा संबंधे चिंतन अने १ हिमादि जन्य अनर्थोनो विचार. ९ रीते ध्यान मंबंधे कहां.

१४९. [प्र०] ब्युत्सर्ग केटल प्रकारे छे ! [उ०] ब्युत्सर्गना बे प्रकार छे. ते आ प्रमाणे-द्रव्यव्युत्सर्ग अने भावव्युत्सर्ग.

१५०. [प्र०] द्रव्यन्युत्मर्ग केटला प्रकारे छे ? [उ०] द्रव्यव्युत्सर्गन। चार प्रकार कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ गणन्युत्सर्ग, २ शरी-रव्युत्मर्ग, ३ उपधिन्युत्मर्ग अने ४ आहार—पाणीनो न्युत्सर्ग. (ब्युत्सर्ग—असंगपणुं, त्याग.) ए रीते द्रव्यव्युत्सर्ग कह्यो.

१५१. [प्र०] मायव्युक्तर्ग केटला प्रकारे छे ! [उ०] भावव्युत्सर्गना त्रण प्रकार छे. ते आ प्रमाण–१ कवायव्युत्सर्ग, २ संसार-ब्युत्सर्ग अने ३ कर्मस्युत्सर्ग.

१५२. [प्र०] कपायन्युत्सर्गना केटल प्रकार छे ? [उ०] कपायन्युत्सर्गना चार प्रकार छे. ते आ प्रमाणे–१ क्रोधन्युत्सर्ग, २ मानन्युत्सर्ग, ३ मायान्युत्सर्ग अने ४ लोभन्युत्सर्ग. एम कपायन्युत्सर्ग कह्यो.

१५३. [४०] मंसारव्युत्मर्गना केटला प्रकार छे ! [उ०] मंसारव्युत्सर्गना चार प्रकार कहा छे. ते आ प्रमाणे–१ नैरियकसंसार-व्युत्मर्ग, अने यावत–४ देवसंसारव्युत्सर्ग. ए रीते संमारव्युत्सर्ग कहा.

१५४. [प्र०] कर्मब्युत्सर्गना केटचा प्रकार छे ? [उ०] कर्मब्युत्सर्गना आठ प्रकार कह्या छे. ते आ प्रमाणे–१ ज्ञानावरणीय– कर्मब्युत्सर्ग अने यावत्–८ अंतरायकर्मब्युत्सर्ग. ए प्रमाणे कर्मब्युत्सर्ग कह्यो. ए रीत भावब्युत्सर्ग विषे पण कह्यं, अने ए प्रमाणे अभ्यंतर तप संबंधे कह्यं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही यावत्–विहरे छे.

### पचीशमा शतकमां सप्तम उद्देशक समाप्त.

## अट्टमो उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाय-एवं वयासी-नेरहया णं भंते ! कहं उत्तवज्ञंति ? [उ०] से जहानामए पवए पवमाणे अज्झ-वसाणनिञ्चत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं ठाणं विष्यजहित्ता पुरिमं ठाणं उघसंपज्जित्ता णं विहरह, एयामेव एए वि जीवा पवओ विव पवमाणा अञ्झवसाणनिष्ठत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं भवं विष्यअहित्ता पुरिमं भवं उवसंपज्जिता णं विहरन्ति ।

#### अप्टम उद्देशक.

१. [प्रत] राजगृह नगरमां यावत्—[भगवान् गाँतम] आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन् ! नैरियको केवी रीते उत्पन थाय छे ! [उत] जेम कोइ एक कूदनारो कूदतो कूदतो अध्यवसाय—इच्छाजन्य करण—क्रियाना साधन—वडे ते स्थळने तजीने भविष्यमां आगळना बीजा स्थानने मेळवीने विहरे छे एज रीते ए जीवो पण कूदनारानी पेठे कूदता कूदता अध्यवसाय—परिणाम जन्य (कर्मरूप) क्रियाना साधनधी ते भवने छोडी दइने भविष्यमां मेळवा योग्य आगळना भवने मेळवीने विहरे छे.

- २. [प॰] तेसि णं मंते ! जीवाणं कहं सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पक्षत्ते ? [उ॰] गोयमा ! से जहानामए केह पुरिसे तहणे बळवं-एवं जहा चोइसमसए पढमुद्देसए जाव-तिसमएण वा विग्गहेणं उववजंति, तेसि णं जीवाणं तहा सीहा गई, तहा सीहे गतिविसए पक्षते ।
- ३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा कहं परमवियाउयं पकरेंति ! [उ०] गोयमा ! अज्झवसाणजोगनिष्कत्तिएणं करणोवाएणं पवं खलु ते जीवा परभवियाउयं पकरेन्ति ।
- ध. [प्र॰] तेसि णं भंते! जीवाणं कहं गती पवत्तद ? [उ॰] गोयमा ! अ(उक्सपणं, भवक्सपणं, टिइक्सपणं, पर्व खलु तेसि जीवाणं गती पवत्तति ।
- ५. [प्र०] ते णं भंते! जीवा कि आयद्दीप उववज्रंति, परिद्वीप उववर्ज्ञति ! [उ०] गोयमा ! आध्द्वीप उववर्ज्ञति, नो परिद्वीप उववर्ज्ञति ।
- ६. [प्र॰] ते ण भंते ! जीवा कि आयकम्मुणा उववज्जंति, परकम्मुणा उववज्जंति ? [उ॰] गोयमा ! आयकम्मुणा उचवज्जंति, नो परकम्मुणा उववज्जंति ।
- ७. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा कि आयप्पयोगेणं उचवर्ज्जति, परप्पयोगेणं उचवर्ज्जति ! [उ॰] गोयमा ! आयप्पयोगेणं उववर्ज्जति, नो परप्पयोगेणं उचवर्ज्जति ।
- ८. [प्रव] असुरकुमारा णं मंते ! कहं उषयक्रंति ? [उव] जहा नेरतिया तहेव निरवसेसं, जाव-नो परप्पयोगेणं उच-वक्रंति । एवं एगिदियवक्रा जाव-वेमाणिया । एगिदिया एवं चेव । नवरं चउसमध्यो विग्गहो, सेसं तं चेव । 'सेवं मंते ! सेवं भंते'! सि जाव-विहरा ।

### पणवीसइमे सए अडुमो उद्देसी समत्ती।

२. [प्रo] हे भगवन् ! ते नारकोनी गति केवी सीघ्र होय छे अने तेओनो गतिविषय केवो सीघ्र होय छे ? [उo] हे गोतम ! जेम कोइ पुरुष तरुण अने बलवान् होय−इल्पादि <sup>\*</sup>चौदमा शतकना पहेचा उदेशकमां कह्या प्रमाणे जाणबुं. यावत्—ते त्रण समयनी विप्रहर्गातिथी उत्पन्न थाय छे, तेम ते जीबोनी तेवी सीघ्रगति छे अने ते प्रकारे ते जीबोनो सीघ्र गतिविषय छे.

नारकोनी गति-

- ३. [प्र०] हे भगवन्! ते जीवो कया प्रकारे परभवनुं आयुप बांधे ? [उ०] हे गौतम! ते जीवो पोताना परिणामरूप अने मन वगेरेना व्यापारम्या वरणोपाय-कर्मबंधना हेतु-हारा परभवनुं आयुप बांधे छे.
- परमवायुषर्वधर्तुः कारणः
- ४. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवोनी गांत शाथी प्रवर्ते छे ! [उ॰] हे गीतम ! ने जीवोना आयुपनो क्षय धवाशी, ते जीवोना भवनो क्षय धवाथी अने ते जीवोनी स्थितिनो नाश थवाथी ते जीवोनी गांत प्रवर्ते छे.

ने जीवोनी गतिनुं कारण-

- ५. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो द्यं पोतानी ऋद्विथी—शक्तिथी उपजे छे के पारकी ऋद्विथी उपजे छे ! [उ०] हे गौतम ! ते जीवो पोतानी ऋद्विथी उपजे छे, पण परनी ऋद्विथी उपजता नथी.
- ६. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो छुं पोताना कर्मथी उपजे छे के पारका कर्मथी उपजे छे ? [उ॰] हे गाँतम ! ते जीवो पोताना कर्मथी उपजे छे, पण पारका कर्मथी नधी उपजता.

उत्पत्तिनं कारण स्वीय कर्म के पर-कीय कर्म-

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो शुं पोताना प्रयोग—ब्यापारथी उपजे छे के पारका प्रयोगथी उपजे छे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो पोताना प्रयोगथी उपजे छे, पण पारका प्रयोगथी उपजता नथी.

उत्पत्तिनुं कारण स्वप्रयोग के पर-प्रयोग ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारों केवी रीते उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! जेम नैरियक विषे कह्युं तेम बर्भुं असुरकुमार संबंधे पण जाणवुं, यावत्—'तेओ पोताना प्रयोगयी उत्पन्न थाय छे, पण परप्रयोगथी उत्पन्न थता नथी'. ए प्रमाण एकेंद्रिय सिवाय यावत्— वैमानिक सुधी बधा जीवो संबंधे समजवुं. एकेंद्रियो विपे पण तेज प्रकारे जाणवुं, मात्र विशेष ए के, तेओनी विष्रहगति चार समयनी होय छे. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं. हि भगवन् ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

श्रमुग्युमार्गी उत्प∙ चिकेम थाय रि

### पचीशमा शतकमां आठमो उद्देशक समाप्त.

२ \* जुओ भग । खं । ३ श ० १४ उ० १ पृ० ३४०.

#### नवमो उद्देसो ।

१. [प॰] भवसिद्धियनेरहया णं भंते ! कहं उववज्ञंति ! [उ॰] गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे-अवसेसं तं चेव, जाव-वेमाणिए । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।

#### पणवीसहमे सए नवमो उद्देसो समत्तो ।

#### नवमो उद्देशक.

भवसिदिक नैरपि-कृती जरपत्ति. १. [प्र०] हे भगवन् ! भवसिद्धिक नैरियको केवी रीते उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! 'जैम कोइ एक क्दनारो क्दतो क्दतो'— इत्यादि पूर्वोक्त समजवुं. बाकी बधुं ते ज रीते यावत्—वैमानिक सुधी समजवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'— एम कही यावत्—बिहरे छे.

#### पचीशमा शतकमां नवमो उद्देशक समाप्त.

### दसमो उद्देसओ।

१. [प्र॰] अभवसिद्धियनेरह्या णं भंते ! कद्दं उववर्ज्जति ! [उ॰] गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे-अवसेसं तं चेव, एवं जाव-वेमाणिए । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

### पणवीसइमे सए दसमी उदेसी समत्ती ।

#### दसमो उद्देशक.

भभवनिद्धिक नैग्यि-भनी उत्पत्तिः १. [प्र०] हे भगवन् ! अभवसिद्धिक नैरियको केवी रीते उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! 'जेम कोइ एक क्दनारी कूदतो कूदतो'—इत्यादि वाकीनुं वधुं पूर्वोक्त जाणवुं, अने ए रीते यावत्-वैमानिक सुधी समजवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### पचीशमा शतकमां दसमी उद्देशक समाप्त.

### एकारसमो उद्देसो ।

१. [प्र॰] सम्मदिद्विनेरद्दया णं भंते ! कहं उवयज्ञंति ! [उ॰] गोयमा ! से जहानामए पवए पयमाणे-अवसेसं तं चेब, एवं एगिदियवज्ञं जाय-वेमाणिया । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! सि ।

### पणवीसहमे सए एकारसमी उद्देसी समत्ती।

#### अगियारमो उद्देशक.

सम्यग्दृष्टि नैर्यकती उत्पत्तिः १. [प्र०] हे भगवन् ! सम्यग्दिष्ट निरियको केवी रीते उपजे ! [उ०] हे गौतम ! जेम कोई कूदनार कूदनो कूदतो हत्यादि बाकीनुं बधुं पूर्वोक्त जाणबुं. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवाय यावत्-वैमानिक सुधी जाणबुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### पचीशमा शतकमां अगियारमो उद्देशक समाप्त.

### बारसमो उद्देसो।

१. [प्र०] मिच्छदिट्टिनेरहया णं भेते ! कहं उवयज्ञंति ? [उ०] गोयमा ! से जहानामप पथप पवमाणे-अवसेसं तं चेव, एवं जाय-वेमाणिए । 'सेवं भेते ! सेवं भेते !' ति ।

### पणवीमितमे सए बारसमी उद्सी समत्ती।

### पणवीसइमं सयं समत्तं।

### बारमो उद्देशक.

मिध्यार्टाष्ट नेरयिको केम उपजे ( १. [प्र॰] मिध्यादिए नरियको केवी राते उपजे १ [उ॰] हे गीतम ! जेम कोई कूदनार कूदतो कूदतो—इस्पादि बाकीनुं बधुं वैमा-निक सुधी जाणनुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

## पचीशमा शतकमां बारमो उद्देशक समाप्त.

## पचीशमुं शतक समाप्त.

### छवीसतिमं सयं।

#### नमो सुयदेवयाए भगवईए।

१ जीवा य २ लेस्स ३ पिक्खिय ४ दिट्टि ५ अन्नाण ६ नाण ७ सन्नाओ । ८ वेय ९ कसाए १० उवओग ११ जोग १२ एकारस वि टाणा ॥

#### पढमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समयणं रायगिहे जाव-एवं वयासी-जीवे णं मंते! पावं कम्मं किं वंधी वंधइ वंधिस्सइ १, वंधी वंधइ ण वंधिस्सइ २, वंधी न वंधइ वंधिस्सइ ३, वंधी न वंधइ न वंधिस्सइ ४? [उ०] गोयमा! अत्थेगतिए वंधी वंधइ वंधिस्सइ १, अत्थेगतिए वंधी ण वंधइ वंधिस्सइ ३, अत्थेगतिए वंधी ण वंधइ ण वंधिस्सइ ३, अत्थेगतिए वंधी ण वंधइ ण वंधिस्सइ ४ (१)।
- २. [प्र०] सलेस्से णं मंते ! जीवे पायं कम्मं कि वंधी बंधइ वंधिस्सइ १, बंधी बंधइ ण बंधिस्सइ २-पुच्छा । [उ०] गोयमा! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ १, अत्थेगतिए-एवं चउमंगो ।

## छबीशमुं शतक

आ शतकमां अगियार उद्देशको छे अने तेमां प्रत्येक उद्देशके (१) जीवो, (२) लेश्याओ, (३) पाक्षिको (शुक्रपाक्षिको अने कृष्णपाक्षिको), (४) दृष्टि, (५) अज्ञान, (६) ज्ञान, (७) संज्ञा, (८) वेद, (९) कपाय, (१०) योग अने (११) उपयोग-एम अगियार स्थानो-विषयोने आश्रयी बन्धवक्तव्यता कहेवानी छे.

### प्रथम उद्देशक.

[सामान्य जीव अने नैरियकादि चोवीश दंडकने आश्रयी उपर कहेला अगियार द्वारवडे पापकर्म अने ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मनी बन्धवक्तव्यता—]

१. [प्र०] ते काले, ते समये राजगृह नामना नगरमां [भगवान् गीतम] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या—हे भगवन्! शुं जीवे पापकर्म बांध्युं, बांधे छे अने नहीं बांधशे ? ३ अथवा शुं जीवे पापकर्म बांध्युं, बांधे छे अने नहीं बांधशे ? ३ अथवा शुं जीवे पापकर्म बांध्युं, नथी बांधतो अने नहीं बांधशे ? [उ०] हे गीतम ! १ कोइ जीवे पापकर्म बांध्युं, नथी बांधतो अने बांधशे नहीं, ३ कोइ जीवे पाप कर्म बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधशे नहीं, ३ कोइ जीवे पाप कर्म बांध्युं छे, नथी बांधतो अने बांधशे नहीं.

१ जीवद्वार्-सामान्थ जीवने आश्रयी पापकर्मेनी बन्धवक्तत्व्यताः

२. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं लेश्यावाळा जीवे पापकर्म बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधरो ? अथवा द्युं तेणे पाप कर्म बांध्युं छे, वांधे छे अने बांधरो नहीं—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गैंतम ! कोइ लेश्यावाळो जीव पाप कर्म बांधतो हतो, बांधे छे अने बांधरो—इत्यादि चार भागा जाणवा.

२ लेक्याद्वार-सलेक्य जीवने आश्रयी वन्धः

९ \* तेमां प्रथम संग असन्यने आश्रयी छे. जे क्षपकत्वने प्राप्त धवानो छे एवा सन्य जीवने आश्रयी बीजो भंग छे. जेणे मोहनो उपशम कर्यो छे एवा जीवने आश्रयी त्रीजो मंग छे अने चोषो मंग क्षीणमोहनी अपेक्षाए छे.

- ३. [प्र०] कण्हलेस्से णं भंते! जीवे पार्व कम्मं कि बंघी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्येगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्येगतिए बंधी बंधइ न वंधिस्सइ, एवं जाव-पम्हलेस्से । सञ्चत्थ पढम-बितियमंगा । सुकलेस्से जहा सलेस्से तहेव सदमंगो ।
  - ध. [प्र॰] अलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं कि बंधी-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ (२) ।
  - ५. [प्र॰] कण्हपक्ष्मिण णं अंते ! जीवे पार्व कम्मं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी० पढम-बितिया भंगा ।
  - ६. [प्रः] सुक्रपक्ष्त्रिय णं भंते ! जीवे-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! चउभंगो भाणियद्वो (३)।
  - ७. सम्मिद्देशेणं चत्तारि भंगा, मिच्छादिद्वीणं पढम-बितिया, सम्मामिन्छादिद्वीणं पवं चेष ( ४ )।
- ८. नाणीणं चत्तारि भंगा, आभिणिबोहियणाणीणं जाव-मणपञ्जवणाणीणं चत्तारि भंगा; केवलनाणीणं चरमो भंगो जहा अलेस्साणं (५)। अन्नाणीणं पढम-बितिया, एवं महअन्नाणीणं, सुयअन्नाणीणं विभंगणाणीण वि (६)।
  - ९. आहारसन्नोवउत्ताणं जाव-परिग्गहसन्नोवउत्ताणं पढम-वितिया, नोसन्नोवउत्ताणं चत्तारि ( ७ )।
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं कृष्णलेश्यायाळो जीव पूर्वे पापकर्म बांधतो हतो बांधे छे अने बांधशे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कोइ जीव पापकर्म बांधतो हतो, बांधे छे अने बांधशे अने कोइ जीव पाप कर्म बांधतो हतो, बांधे छे अने बांधशे नहि. ए प्रमाणे यावत्— पद्मलेश्यायाळा जीव सुधी समजवुं. बधे स्थळे पहेलो अने बीजो—एम वे भांगा जाणवा. शुक्कलेश्यायाळाने लेश्यावाळा जीव संबन्धे जेम \*कबुं छे तेम चारे भांगा कहेवा.

केश्यारहित जीवने वन्धः थ. [प्र∍] हे भगवन् ! जुं लेक्यारहित जीवे पाप कर्म बांध्यु हतुं–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते जीव पूर्वे पाप कर्म बांधनो हतो. अल्यारे नधी बांधतो अने बांधशे नहीं.

व पाश्चिमद्वार्-कृष्ण पाक्षिकने आश्रयी बन्धः ५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ¹कृष्णपक्षिक जीव पूर्वे पाप कर्म बांधतो हतो–इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! कृष्णपक्षिक कोइ जीव पूर्वे पाप कर्म बांधतो हतो, बांधे छे अने बांधशे–ए रीते पहेलो अने बीजो भांगो जाणवो.

शुकुपाक्षिकने आ-श्रयी बन्ध.

४ दृष्टिहार्-

- ६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं |शुक्रपाक्षिक जीव पाप कर्म बांधतो हतो-इत्यादि पुन्छा. [उ०] हे गौतम ! पूर्वोक्त चारे भांगा कहेवा.
- ७. सम्यग्दिष्ट जीवोने चारे भांगा अने "मिध्यादिष्टजीवोने पहेलो अने बीजो-एम बे भांगा कहेवा. तथा सम्यग्मिथ्यादिष्टि जीवोने निषे पण एमज जाणवुं.

५-६ ज्ञान अने अज्ञान- ८. ज्ञानीन चार भांगा, आभिनिबोधिक—मिनज्ञानी अने यावत्—मनःपर्यवज्ञानीने चार भांगा कहेवा, क्ष्वेवळ्ज्ञानीने लेश्यारहित जीवनी पेठे एक छेल्लो भांगो कहेवो. ईअज्ञानी संबंधे पहेला बे भांगा, अने ए सिते मिनअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी तथा विभंगज्ञानीने पण बे भांगा जाणवा.

७ संशादार-

९. |आहारसंज्ञाथी मांडी यावत्—परिप्रहसंज्ञामां उपयुक्त जीवोने प्रथम अने बीजो भांगो समजवो. नोसंज्ञामां उपयुक्त जीवोने चारे भांगा जाणवा.

३ \* रालेरय जीवने चारे भागा होय छे, कारण के शुक्रलेश्यावाळा जीवो पापकर्मना बन्धक पण होय छे। कृष्णादि पांच ऐश्यावाळाने प्रथमना वे ज भागा होय छे, कारण के तेने वर्नभानकाळे मोहनीयरूप पापकर्मनो क्षय के उपशम नथी, तेथी तेने छेहा वे भागा नथी होता.

५ ने जे जीवोने अर्धपुद्रलपगवर्तकाळथी अधिक संसार बाकी छे ते कृष्णपाक्षिक अने जेने अर्धपुद्रलपरावर्तभी अधिक संसार बाकी नबी पण तेनी अंदर जे मोझे जवाना छे ते कुछपाक्षिक कहेवाय छे तेमां कृष्णपाक्षिकने आदिना वे माना होय छे. केमके वर्तमानकाळे तेनामां पापकमें नुं अबन्धकपण्ने नथी. कुछपाक्षिकने चारे भागा होय छे—१ पापकमें बाध्युं हतुं, बांधे छे अने बांधशे—आ प्रथम भंग प्रश्नसमयनी अपेक्षाए अनन्तर (तुरतना) भविष्य समयने आध्यों छे र बाध्युं हतुं, बांधे छे अने बाधशे निहं—आ बीजो भंग पछीना भविष्य समयमा क्षणकपणानी प्राप्तिनी अपेक्षाए जाणवो. ३ बाध्युं हतुं, बांधतो नथी पण बाधशे—आ बीजो भंग जे मोहनीय कर्मनो उपकाम करी पछी पडवानो होय तेनी अपेक्षाए छे, अने व 'बांध्यु हतुं बांधतो नथी अने बांधशे नहि'—आ चोथों भंग क्षपकपणानी अपेक्षाए होय छे.

६ ‡ कृष्णपार्थसको 'वाधवे नहि' ए अशमी असगव होवा छता पण बीजो भांगी मानेको छे तो गुक्रपाक्षिको उपर कहेल 'बाधवे नहि'-ए अंशनी अवस्य संभव होवाधी 'वाधवे' ए अशर्चाटत प्रथम भागो केम घट ? आ प्रथमा उत्तरमा गुक्रपाक्षिकने प्रश्नसमयना अनन्तर ( पछीना ) समयनी अपेक्षाए प्रथम भागो, अने कृष्णपाक्षिकने वाकीना समयनी अपेक्षाए बीजो भागो होय छे.

७ ¶ सम्बर्ग्हाष्ट जीवोने शुक्कपाक्षिकनी पेठे चारे मांगा होय छे, अने मिथ्यादृष्टि तथा मिश्रदृष्टिने आदिना बेज मांगा होय छे. कारण के तेओने मोहनो बन्ध होवाथी छेला बे भांगा होता नथी.

८ \$ केवलज्ञानीने वर्तमान अने भविष्यत्काळमां बन्ध यतो नश्री तेश्री तेने एक छेस्रो भागो होय छे.

<sup>🖔</sup> अज्ञानीने मोहनीय कर्मनो क्षय अने उपशम नहि होवाधी पहेलो अने बीजो मांगो होय छे.

९ में आहारादिनी यंज्ञा-आसक्तिवाळा जीवोने क्षपकपणुं अने उपशमकपणुं नहिं होवाथी पहेलो अने बीजो भागो होय छे. नोसंज्ञामां--आहारादिनी अनासिकमां उपयोगवाळा जीवोने मोहनीयनो क्षय तथा उपशमनो संभव होवाथी चारे मांगाओ संभवे छे.

- १०. सवेदगाणं पढम-बितिया । एवं इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुंसगचेदगा वि । अवेदगाणं चत्तारि (८) ।
- ११. [प्र०] सकसाईणं चत्तारि, कोहकसाईणं पढम-वितिया भंगा, एवं माणकसायिस्स वि, मायाकसायिस्स वि। स्रोमकसायिस्स चत्तारि मंगा।
- १२. [प्र॰] अकसायी णं मंते ! जीवे पाघं कम्मं कि बंधी-पुच्छा । [ज॰] गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधि-स्सइ ३, अत्थेगतिए बंधी ण बंधइ ण बंधिस्सइ ४ (९)।
- १३. [प्र०] सजोगिस्स चडमंगो, एवं मणजोगिस्स वि, वहजोगिस्स वि, कायजोगिस्स वि। अजोगिस्स चरिमो (१०)। सागारोवउसे चसारि, अणागारोवउसे वि चसारि मंगा (११)।
  - १४. [प्र०] नेररूप णं भंते! पात्रं कम्मं कि बंधी बंधइ बंधिस्सइ? [उ०] गोयमा! अत्थेगतिए बंधी० पढम-बितिया।
- १५. [प्र०] सलेस्से णं मंते! नेरितए पावं कमं-! [उ०] एवं चेव। एवं कण्डलेस्से वि, नीललेस्से वि, काउलेस्से वि। एवं कण्डलेस्से वि, नीललेस्से वि, काउलेस्से वि। एवं कण्डलेस्से वि, नीललेस्से वि, काउलेस्से वि। एवं कण्डलेस्से एक्षिकाणी, सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, सम्मामिच्छादिद्वी, णाणी, आधिणवीडियनाणी, सुयनाणी, ओडिणाणी, अन्नाणी, महअन्नाणी, सुयअन्नाणी विभंगनाणी; आहारसन्नोवउन्ते जाव-परिग्गहसन्नोवउन्ते, सवेदए, नपुंमकवेदए, सकसायी जाव-लोभकसायी, सजोगी, मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी, सागरोवउन्ते, अणागारोवउन्ते-एएस सबेसु एदेसु एड-म-बितिया भंगा भाणियद्या। एवं असुरकुमारस्स वि वत्तद्वया माणियद्या, नवरं तेउलेस्सा, इत्थिवयग-पुरिसवेयगा य अध्म-
- १०. \*वेदबाळा जीवोने पहेलो अने बीजो-एम बे मांगा जाणवा. अने ए राते स्त्रावेदबाळा, पुरुषवेदबाळा तथा नपुंसकवेदबाळाने पण जाणवुं. वेद विनाना जीबोने चारे भांगा जाणवा.

८ वेदद्वार-

११. कियायबाटा जीवीन चारे मागा जाणवा, औषवतपायबाटा जीवीन पहेला वे मांगा जाणवा. ए रीते मानकपावबाटा असे मायाकपायबाटाने पण समज्ञुं. ठीमकपावबाटाने पार भागा सगज्जा.

९ कषा यदार-

- १२. [प्रच] हे भगवन् ! ह्यं अकषार्या जीवे पूर्वे पाप कर्म बांध्युं हतुं–इलादि प्रच्या. [उठ] हे गातम ! कोइ अकषार्या जीव पूर्वे पाप कर्म बावतो हतो, अल्पारे बांधनो नथी अने बांधरो. अथवा कोइ अकषार्या जीव पाप कर्म बावतो हतो, बांधतो नथी अने बांधरो पण नहीं.
- १३. "स्योगी जीवन चार भागा जाणवा. ए रीते मनयोगवाळा, बचनयोगवाळा अने काययोगवाळा जीवने पण रामजबुं. अयोगीने छेल्हो भांगो कहेवो. साकार उपयोग अने अनाकार उपयोगवाळाने चारे भांगा जाणवा.

१०-११ योग अने उपयोग-

१४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैश्यिक जीव पापकर्म वाधतो हतो, बांघे छे अने बाधरो ? [૩०] हे गीतम ! कोइ नैरियक पाप कर्म बांधतो हतो—इत्यादि ६पहेलो अने बीजो भांगो जाणबो.

नेरियकादि दशकने भाजयी पापकर्मनी बन्धवक्तव्यतहरू

१५. [प्रठ] हे मगवन् ! द्धं लेखावाळो नेत्यिक पाप कर्म बाधतो हतो-इत्यादि पृष्टा. [उठ] हे गीतम ! एव राते पूर्वोक्त प्रथमना हे भागा जाणवा. एप्रमाणे कृष्णलेखावाळा, नीललेखावाळा, कापोतलेखावाळा, कृष्णपाक्षिक, ग्रुक्चपाक्षिक, सम्यादिष्ट, सिध्यादिष्ट, सम्यामिध्या-दृष्टि, झानी, आमिनियोधिकझानी, श्रुतझानी, अवधिझानी, अझानी, मातअझानी, श्रुतअझानी, विभंगज्ञानी, आहारसंझामी उपयोगवाळा, यावत्— परिमहसंझामी उपयोगवाळा, वेदवाळा, नपुंसकतेदवाळा, कपायवाळा, यावत्—लोनकपायवाळा, सयोगी, मनोयोगी, वचनयोगी, काययोगी,

९० \* वेदनो उदय होय त्यां सुधी जीवने मोहनीयनो क्षय अने उपशम निह यतो होवाधी प्रथमना वे भागा होय छे. वेदर्गहतने पोतानो वेद उपशान्त थाय त्यारे मोहनीयरूप पाप कर्मने स्क्ष्मसंपराय प्राप्त न थाय सुधी बांधे हो अने बांधेशे, अथवा त्यांथी पडीने पण वांधशे १. वेद क्षीण गणा पछी पाप कर्म बांधे छे पण स्क्ष्मसंपरायादि अवस्थामां बांधतो नथी २. उपशान्तवेद स्क्ष्मसंपरायादि अवस्थामां पाप कर्म बांधतो नथी, पण त्यांथी पडीने बांधे छे ३. वेद क्षीण थया पछी सूक्ष्मसंपरायादि गुणस्थानके बांधतो नथी अने पछी बांधेशे पण निह ४.

<sup>99 ै</sup> सक्रयायीन चार भागा होय छे. तेमा प्रथम भंग अभन्यन अने बीजो भंग जैने मोहनीयकर्मनो क्षय थवानो छे एवा मञ्चने आश्रयी छै. उपदासक स्क्ष्मसंपरायने अपेक्षी त्रीजो भंग अने क्षयक स्क्ष्मसंपरायने अपेक्षी चतुर्थ भंग होय छे. एम लोभववायीने पण समजवुं. त्रोध ध्वायीने पहेलो अने बीजो ए वे भंग ज होय छे. तेमां प्रथम भंग अगव्यने अने बीजो भंग भव्यविशेषने आश्रयी छे. तेने त्रीजो अने चोथो भांगो नथी, कारण के कोधनो उदय होय त्यारे अवन्धकपणुं होतुं नथी,

<sup>9</sup>२ ‡ 'बाध्युं हुतुं, बांधतो नथी अने बाधदी'-ए भांगो अकषायीने उपशासक आश्रयी होय छे, अने बांध्युं हुतुं, बांधतो नथी अने बाधदो नहि'-ए भंग क्षपक आश्रयी जाणवो.

<sup>9</sup>३ ी सयोगी अभव्य, मध्यविशेष, उपरामक अने क्षपकने आध्यी क्रमशः चारे भागा जाणवा. अयोगीने पापकर्म वंपातुं नथी तेम यंधावानुं पण नथी, माटे एक छिक्को भागो होय छे.

१४ \$ नारकने उपश्रमश्रेणि अने क्षपकश्रेणि नहि होवाथी प्रथमना वे भागा होय छे. एम सलेर्य-इत्यादि विशेषण युक्त नारकपद जाणयुं. ए रीते असुरकुमारादिने पण जाणी लेखुं.

हिया, नपुंसगयेदगा न भन्नति, सेसं तं चेव, सद्यत्य पढम-वितिया भंगा। एवं जाव-थणियकुमारस्स। एवं पुढविकाइयस्स वि, आउकाइयस्स वि, जाव-पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स वि सद्यत्य वि पढम-वितिया मंगा, नवरं जस्स जा लेस्सा। दिट्ठी, णाणं, अन्नाणं, वेदो, जोगो य अत्थि तं तस्स भाणियद्यं, सेसं तहेव। मणूसस्स ज चेव जीवपदे वत्तद्वया स चेव निर-वसेसा भाणियद्या। वाणमंतरस्स जहा असुरकुमारस्स। जोइसियस्स वेमाणियस्स एवं चेव, नवरं लेस्साओ जाणियद्याओ, सेसं तहेव भाणियद्यं।

- १६. [प्र०] जीवे णं मंते ! नाणावरणिक्जं कम्मं किं वंधी वंधइ वंधिस्सइ- ! [उ०] एवं जहेव पावकम्मस्स वस्तवया तहेव नाणावरणिक्जस्स वि भाणियद्वा, नवरं जीवपदे मणुस्सपदे य सकसाई, जाव-लोभकसाईमि य पढम-वितिया भंगा, अवसेसं तं चेव जाव-वेमाणिया । एवं दरिसणावरणिक्जेण वि दंडगो भाणियद्वो निरवसेसो ।
- १७. [प्र०] जीवे णं भंते ! वेयणिजां कम्मं कि वंधी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिए वंधी वंधइ वंधिस्सइ १, अत्थेगतिए वंधी वंधइ न वंधिस्सइ ८, सलेस्से वि एवं चेव ततियविद्वणा भंगा । कण्डलेस्से जाव-पम्हलेस्से एढम-वितिया भंगा, सुकलेस्से तिर्यावद्वणा भंगा, अलेस्से चरिमो मंगो । कण्डपक्किए एडम-

साकार उपयोगवाळा अने अनाकार उपयोगवाळा-ए वधां पदोमां पहेलो अने बीजो-ए वे मांगा कहेवा. अर्थात् ए बधा प्रकारना नैरियक जीवोने प्रथमना वे मांगा कहेवा. असुरकुमारने पण ए प्रमाणे वक्तव्यता कहेवी. परन्तु विशेष ए के तेओने तेजोलेक्या, स्रीवेद अने पुरुषनेद अधिक कहेवी अने नपुंसकवेद न कहेवी. बाकी वधुं पूर्वे कहाा प्रमाणे जाणवुं. बधे पहेलो अने बीजो मांगो कहेवी. ए रीते यावत्— स्तिगितकुमार सुधी जाणवुं. एम पृथिवीकायिक, अप्कायिक अने यावत्— पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोगिकने पण सर्वत्र पहेलो अने बीजो—ए बे मांगा जाणवा. परन्तु विशेष ए के, जे जीवने जे लेक्या, दृष्टि, ज्ञान, अज्ञान, वेद अने योग होय ते तेने कहेवी, अने बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं. मनुष्यने जीवपद संबंधे जे वक्तव्यता कही छे ते बधी वक्तव्यता कहेवी. असुरकुमारनी पेठे वानव्यंतरने जाणवुं. तथा ज्योतिषिक अने वैमानिक संबंधे पण एज रीते समजवुं. परन्तु विशेष ए के अर्हा लेक्याओ कहेवी अने वाकी बधुं ते ज प्रमाणे कहेवुं.

हानावरणीयनो वन्धः

१६. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं जीवे ज्ञानावरणीय कर्म बांध्युं हतुं बांधे छे अने बांधरों ! [उ०] हे गातम ! जेम पाप कर्म संबंधे वक्तव्यता कही ते प्रमाणे ज्ञानावरणीय कर्म संबंधे पण कहेवी. परन्तु विशेष ए के, जीवपद अने मनुष्यपदमां सकपायी यावत्—लोभ-कपायीने आश्रयी पहेटो भने बीजो भांगो कहेवो. बाकी बधुं तेमज कहेवुं. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिक सुधी जाणवुं. ज्ञानावरणीय कर्मनी पेठे दर्शनावरणीय कर्मनी पण संपूर्ण दंडक कहेवो.

वेदनीयकरी बन्ध.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! युं जीवे वेदनीय कर्म बांध्युं हतुं, बांधे छे अने बांधरो-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गीतम ! १ मिनोइ जीवे बांध्युं हतुं, बांधे छे अने बांधरों, २ कोइ जीवे बांध्युं हतुं, वांधे छे अने बांधरों नहीं. १ कोइ जीवे बांध्युं हतुं, नथी वांधरों अने बांधरों नहीं. १ कोइ जीवे बांध्युं हतुं, नथी वांधरों अने बांधरों नहीं. १ कोइ जीवे वांधरें त्रहां वांधरें 
१६ \* पापकमेना दंडकमां जीवपद अने मनुष्यपद संबंधे राकषायी अने लोभकषायीनी अपेक्षाए स्क्षमसंपराय मोहनीयस्प पापकर्मनो अवंधक होवाथी चार भागा कहा हना, परन्तु ज्ञानावरणीयना दंडकमां प्रथमना वे ज भागा जाणवाः कारण के सकषायी अवदय ज्ञानावरणीय कर्मनो बंधक होय छै, पण अवन्यक होतो गथीः

<sup>90 ी</sup> यंदनीय कर्मने विषे पहेली गांगी अभन्यने आश्रयी हैं, जे भन्य निर्वाण पामवानी है तेनी अपेकाए बीजो भांगी है. त्रीजा भांगानी संगव नथी, कारण के वेदनीयनी अवस्थ करनार पुन. तेनी बस्थ करती नथी, अने चोथो भांगी अथोगी केवलीने आश्रयी होय हैं.

<sup>्</sup>रै मलेश्य जीवने पृत्तेक्त हेनुथी त्रीजा भंग गिवायना भांगा जाणवा. परन्तु तेमां 'पूर्व श्रांश्वुं हतुं, बांधतो नथी अने बांधरा नहि'-ए चोथो भंग घटी शकतो नथी. पण आ भंग लेश्यार्राहत अयोगीने ज घटे छे. केमके लेश्या तेरमा गुणस्थानक पर्यन्त होय छ, अने त्यां गुणी तेओ वेदनीय कर्मना बन्धक छे. कोइ आचार्य एवं नमाधान करे छे के आज स्वना बन्धभी अयोगिताना प्रथम समये घंटालाला न्यायशी परमञ्ज्वलेश्या संभवे छे, अने तेथी ज सलेश्यने नोथो भागो घटी शके छे. तत्त्य बह्युतगम्य-टीका.

<sup>ै</sup> कृष्णादि पाच लेदयावाळाने अयोगिषणानी अभाव होवाधी तेओ बंदनीय कर्मना अबंधक नश्री माटे तेओने आदिना वे भांगा होय छे. शुक्रलेदया-वाळाने सलेदयनी जेम त्रण भांगा होय छे. लेदयारहित देंल्यांगत केवली अने सिद्ध होय छे अने तेने 'पूर्व वांग्युं हतुं, बांधती नथी अने बांधशे नहिं आ एकज भांगो होय छे. कृष्णपक्षिक अयोगिषणाना अभावधी प्रथमना वे भांगा होय छे, अने शुक्रपक्षिक अयोगी पण होय छे माटे तेने त्रीजा भांगा सिवायना वाकीना भांगा होय छे.

<sup>\$</sup> सम्यग्र्हाप्रने अयोगीपणानी संभव होवाधी बन्ध थतो नधी, तेथी श्रीजा सिवायना भांगा होय छे. मिथ्यादृष्टि अने मिश्रदृष्टिने अयोगिपणाना अगावधी चेदनीयनु अवन्धकपणुं नधी तेथी प्रथमना वे ज मांगा होय छे. ज्ञानीने अने केवरुज्ञानीने अयोगीपणामां छेह्नो भांगो होय छे, एटडे त्रण भांगा जाणवा. आभिनिवोधिकादि ज्ञानवाळामां अयोगिपणानो अभाव होवाधी छेह्नो मांगो होतो नधी, मात्र तेने प्रथमना वे भांगा होय छे.

वितिया । सुक्रपिकाया ततियविद्वणा । एवं सम्मविद्विस्स विः मिष्छाविद्विस्स सम्मामिष्छाविद्विस्स य पदम-वितिया । णाणिस्स ततियविद्वणा, आभिणिबोहियनाणी, जाव-मणपज्जवणाणी पढम-बितिया, केवलनाणी ततियविद्वणा । एवं नोस-क्रोवडरो. अवेदए, अकसायी । सागारोवडरो अणागारोवडरो एएस्ड ततियविद्वणा । अज्ञोगिम्मि य चरिमो, सेसेसु पदम-वितिया ।

- १८. [प्रठ] नेरहए णं मंते ! बेयणिजं करमं बंधी बंधह-! [उठ] एवं नेरतिया, जाव-वेमाणिय सि। जस्स जं अधि सञ्चन्य वि पडम-बितिया, नघरं मणुस्से जहा जीवे।
- १९. [प्र०] अवि णं मंते ! मोहणिकां कम्मं कि बंधि बंधर्-! [उ०] जहेव पावं कम्मं तहेव मोहणिकां पि निरध-सेसं जाघ-बेमाणिए ।
- २०. [प्र०] जीवे णं मंते ! आउयं कम्मं किं बंधी बंधइ-युच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्येगतिए वंधी-चउमंगी । सहेस्से, जाव-सुक्रहेस्से चत्तारि भंगाः भहेस्से चरिम्रो मंगो ।
- २१. प्रि. कण्हपविकार णं-पुच्छा । जि. गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सद। अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सर् । सुक्रपिक्कप सम्मविट्टी मिच्छादिट्टी चत्तारि मंगा ।
- २२. प्रि. सम्मामिर छादिद्री-पुरुष्ठा । जि. गोयमा । अत्येगतिए बंधी न बंधद बंधिरसद्दः अत्येगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ: नाणी जाव-ओहिनाणी चत्तारि मंगां।
- २३. प्रि. मणपज्जवनाणी-पुरुखा । [उ.] गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिरसह, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ । केवलनाणे खरमो भंगो । एवं एएणं कमेणं नोसन्नोवउसे वितिययिद्वणा जहेव मणपज्जवनाणे । अवेदए अकसाई य ततिय-चउत्था जहेव सम्मामिन्छत्ते । अजोगिम्मि चरिमो, सेसेस्र परेस् चत्तारि भंगा जाव-अजागारोषउत्ते ।

श्रुणे भांगा कहेवा. आभिनिबोधिकज्ञानी अने यावत मनःपर्यवज्ञानीने पहेळो अने वीजो भांगो कहेवो, अने केवळ्ज्ञानीने त्रीजा भांगा सिवाय बाकीना त्रणे भांगा कहेवा. ए प्रमाणे नोसंज्ञामां उपयुक्त, वेदरहित, अकपायी, साकार उपयोगवाळा अने अनाकार उपयोगवाळा-ए बधा जीवोने त्रीजा भांगा सिवाय बाकीना (त्रणे ) भांगा कहेवा. अयोगी जीवने छेल्लो भांगो अने बाकी बधे स्थले पहेलो अने बीजो -एम **बे** भांगा जाणवा.

१८. [प्रत] हे भगवन् । शुं नैरियक जीवे वेदनीय कर्म बांध्युं हतुं, बांधे छे–इत्यादि पृच्छा. [उत्] पूर्व प्रमाणे जाणवं, ए रीते कैरियकादिने भाव-नैरियकोशी मांडी थावत्-वैमानिक सुधी जेने जे होय तेने ते कहेतुं. तथा बधे पहेलो अने बीजो भांगो समजवो. परन्त विशेष ए के. जीवनी पेठे मनुष्यो संबंधे कहेतुं.

यी वेदनीय कमेंबन्ब-

- १२. [प्र०] हे भगवन् ! ह्युं जीवे मोहनीय कर्म बांध्युं हतुं, बांधे छे अने बांधरो ? [उ०] जेम पापकर्म संबंधे कह्युं तेम मोह-मोइनीय कमैंबन्धः नीय कर्भ संबंधे पण जाणबुं. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिक सुधी समजबुं.
- २०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवे आयुष कर्म बाध्युं हतुं, बांधे छे–इत्यादि प्रच्छा. [उ०] हे गीतम ! कोइ जीवे बाध्युं हतुं– इत्यादि चारे भांगा जाणवा. लेक्यावाळा जीवो अने यावत्–ग्रुक्कलेक्यावाळा जीवोने चार भांगा जाणवा, अने लेक्यारहित जीवने छेल्लो भांगी जाणवी.

आयुषकर्भवन्ध-

- २१. [प्रत] कृष्णपाक्षिक संबंधे पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! कोइ जीवे आयुष बांध्युं हतुं, बांधे छे अने बांधरो. अथवा कोइ जीवे आयुप बांच्यं हतुं, नथी बांधतो अने बांधरो. ग्रुक्कपाक्षिक, सम्यग्दष्टि अने मिध्यादृष्टि जीवोने चारे भागा जाणवा.
- २२. [प्र०] सम्यग्निथ्यादृष्टि संबन्धे पृच्छा. [उ०] हे गौतम! कोइक मिथ्यादृष्टि जीवे आयुप बांध्युं हर्तु, बांघतो नथी अने बांधरो, कोइक जीवे बांध्युं हुतूं, नथी बांधतो अने बांधरो नहीं. ज्ञानी, यावत्—अवधिज्ञानीने चारे मांगा कहेगा.
- २३. [प्र०] मन:पर्यवज्ञानी संबन्धे पृष्छा. [उ०] हे गौतम ! कोइक मन:पर्यवज्ञानीए आयुप बांध्युं हतुं, बांधे छे अने बांधरो. कोइए बांध्युं हतुं, नथी बांधतो अने बांधरो नहीं. केवळज्ञानीने छेल्लो भांगी जाणवी. एज प्रकारे ए कमवडे नोशंज्ञामां उपयुक्त जीव संबंधे बीजा भांगा सिवाय बाक्तीना त्रणे भांगा मनःपर्यायज्ञानीनी पेठे जाणवा, वेदरहित अने अकषायी जीवने सम्यग्मिध्यादृष्टिनी पेठे त्रीजो अने चोथो भांगो कहेवो, अयोगीने विषे छेल्लो भांगो कहेवो अने बाकीनां पदोने विषे चारे भांगा यावत्—अनाकार उपयोगवाळा जीव सुघी जाणवा.

- २४. [प्र०] नेरइए णं भंते ! आउयं कम्मं कि वंधी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिए चत्तारि भंगा, एवं सबत्थ वि नेरइयाणं चत्तारि भंगा, नवरं कण्हलेस्से कण्डपिक्खए य पढम-तितया भंगा, सम्मामिच्छत्ते तितय-चउत्था । असुरकु-मारे एवं चेव, नवरं कण्डलेस्से वि चत्तारि भंगा भाणियद्या, सेसं जहा नेरइयाणं, एवं जाव-धणियकुमाराणं । पुढिषकाइयाणं सबत्य वि चत्तारि भंगा, नवरं कण्डपिक्खए पढम-तितया भंगा ।
- २५. [प्रव] तेउलेस्से-पुच्छा। [उव] गोयमा विधी न विधा विधिस्ताः, सेसेसु सद्वत्य चतारि भंगा। एवं आउक्कार्य-वणस्सद्दकाद्रयाण वि निरवसेसं। तेउकाद्रय-वाउक्काद्रयाणं सद्वत्य वि पढम-तितया भंगा। वेदंदिय-वर्डिदियाणं पि सद्वत्य वि पढम-तितया भंगा। नवरं सम्मत्ते, नाणे, आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे तितेओ भंगे। पंचिदियतिरिक्खजो-णियाणं कण्डपिक्खप पढम-तितया भंगा, सम्मामिच्छते तितय-चउत्थो भंगो, सम्मत्ते, नाणे, आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे, स्रोहिनाणे एएसु पंचसु वि पदेसु वितियविद्वणा भंगा, सेसेसु चत्तारि भंगा। मणुस्ताणं जहा जीवाणं। नवरं सम्मते, ओहिप नाणे, आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे एएसु वितियविद्वणा भंगा, सेसं तं चेव। वाणमंतर-जोहिसय-वेमा-णिया जहा असुरकुमारा। नामं गोयं अंतरायं च एयाणि जहा नाणावरणिजं। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! ति जाव-विद्दरित।

#### छवीसतिमे बंधिसए पढमो उद्देसओ समत्तो ।

नैर्विकने वाश्रयी जायुवनन्त्र.

- २४. [प्र०] हे भगवन् ! युं नैरियक जीवे आयुप कर्म बांध्युं हतुं—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! कोइक नैरियक जीवे बांध्युं हतुं—इत्यादि चार भांगा कहेवा. ए प्रमाणे बधे ठेकाणे पण नैरियको संबंधे चार भांगा जाणवा. परन्तु विशेष ए के, कृष्णले-इयावाळा अने कृष्णपाक्षिकने पहेलो अने बीजो भांगो जाणवो, राम्धिनध्यादृष्टिमां त्रीजो अने चोथो भांगो कहेवो. अमुरकुमारोमां एज रीते जाणवुं, पण विशेष ए के कृष्णलेश्यावाळा जीवोने चार भागा कहेवा. बाकी बधुं नैरियकोनी पेठे समजवुं. ए रीते यावत्—स्तनित-कुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिकोने बधे ठेकाणे चारे भांगा कहेवा. पण विशेष ए के कृष्णपक्षिकमां पहेलो अने बीजो भांगो कहेवो.
- २५. [प्र०] तेजोलेश्यावाळा संबंधे प्रक्ष. [उ०] हे गौतम! तेणे बांध्युं हतुं, बांधतो नधी अने बांधशे. बाकी बधे स्थले चार भांगा कहिवा. ए प्रमाणे अप्कायिक अने वनस्पतिकायिकने पण बधुं जाण हुं. तेजस्कायिक अने वायुकायिकने विपे बधे पहेलो अने त्रीजो भांगो कहिवो. बेहंदिय, तेहंदिय अने चर्डारेदियने बधे पहेलो अने त्रीजो भांगो जाणवो. पण विशेष ए के, सम्यक्त्व, ज्ञान, आभिनिवोधि-कज्ञान अने श्रुतज्ञान संबंधे त्रीजो भांगो कहिवो. पंचेन्दिय तिर्यंचयोनिकोने कृष्णपाक्षिक संबंधे पहेलो अने त्रीजो भांगो कहेवो. सम्यग्नि-ध्यात्वमां त्रीजो अने चोथो भांगो कहेवो. सम्यक्त्व, ज्ञान, आभिनिवोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान—ए पांचे पदोमां बीजा भागा सित्राय वाकीना त्रणे भांगा कहेवा, अने बाकीनां पदोभां चारे भांगा कहेवा. जेम जीवो संबन्धे कह्युं छे तेम मनुष्योने पण कहेवुं. पण विशेष ए के, सम्यक्त्व, ऑधिक—सामान्य ज्ञान, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान—ए वधा पदोमां बीजा भांगा सिवाय बाकीना त्रणे भांगा कहेवा; अने बाकी बधुं पूर्वोक्त जाणवुं. जेम असुरकुमारो संबंधे कह्युं छे तेम वानव्यंतर, अ्योतिषिक अने वैमानिक संबंधे पण कहेवुं. जेम ज्ञानावरणीय कर्म संबंधे कह्युं छे तेम नाम, गोत्र अने अतराय संबंधे पण कहेवुं. 'हे मगवन्! ते एमज छे, हे मगवन्! ते एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

#### छवीशमा बंधिशतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त ।

### बीओ उद्देसो।

- १. [प्र॰] अर्णतरोववन्नए णं भंते ! नेरहए पावं कम्मं किं बंधी-पुच्छा तहेव । [उ॰] गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी-पढम-वितिया भंगा ।
- २. [प्र०] सलेस्से णं मंते ! अणंतरोववन्नए नेरहए पावं कम्मं कि बंधी-पुच्छा [उ०] गोयमा ! पढम-वितिया भंगा, एवं खलु सञ्चत्थ पढम-वितिया भंगा; नवरं सम्मामिच्छत्तं मणजोगो वहजोगो य न पुच्छिज्ञह । एवं जाव-थणियकुमाराणं । वेहं-

### द्वितीय उद्देशक.

जनन्तरोपपन्न नैरयि कने पापकसैनो बन्ध-

- [ अनन्तरीपपन नैरियकादि चोवीरा दंडकोने आश्रयी उक्त अगियार द्वारोवडे पापकर्मादिनी बन्धवक्तव्यता— ]
- १. [प्र०] हे भगवन् ! शुं अनन्तरोपपन्न नैरियके पाप कर्म बांध्युं हतुं–इत्यादि पूर्ववत् पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! कोइए बांध्युं हतुं–इत्यादि पहेलो अने बीजो भांगो कहेबो.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं लेक्यावाळा अनन्तरोपपन्न नै(यिके पापकर्म बांध्युं हतुं—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! अहीं पहेलो अने बीजो भांगो कहेनो. एम लेक्यादि बधा पदोमां पहेलो अने बीजो भांगो कहेनो. पण सम्यग्निध्यात्व (मिश्रदृष्टि ) मनो-

दिय—तेर्विय—चर्जरिवियाणं वयजोगो न मन्नर्। पंचिदियतिरिक्सञ्जोणियाणं पि सम्मामिच्छत्तं, ओहिनाणं, विभंगनाणं, मणजोगो, वयजोगो—पयाणि पंच पदाणि ण असंति । मणुस्साणं अलेस्स—सम्मामिच्छत्त—मणपञ्जवणाण—केवलनाण—विभंगनाण—नोस-स्रोवजत्त—स्रवेदग—स्रकसायी—मणजोग—वयजोग—स्रजोगि—पयाणि पद्धारस पदाणि ण असंति । वाणमंतर—जोर्दसिय—वेमाणि-याणं जहा नेरस्याणं तहेव ते तिश्चि न भसंति । सद्देसि जाणि सेसाणि टाणाणि सद्यत्थ पढम—वितिया भंगा । एगिवियाणं सद्यत्थ पढम—वितिया भंगा । एगिवियाणं सद्यत्थ पढम—वितिया भंगा । जहा पावे पदं नाणावरणिजोण वि दंडशो, एवं आउयवज्ञेसु जाव—अंतराहण् वंडशो ।

- ३. [प्र०] अणंतरोषयन्नप णं भंते ! नेररप आउयं कम्मं कि बंधी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! बंधी न बंधह बंधिस्सह ।
- ४. [प्र०] सलेस्से णं भंते । अणंतरोववन्नप नेरइप आउयं कम्मं कि बंधी-! [उ०] पर्व चेव तितओ भंगो, पर्व जाव-अणागारोवज्ते । सद्यत्य वि तितओ भंगो । पर्व मणुस्सवज्ञं जाव-वेमाणियाणं । मणुस्साणं सद्यत्य तितय-चज्रत्था भंगा, नवरं कण्डपिष्क्रपसु तितओ भंगो, सद्वेसि नाणनाइं ताइं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! शि ।

#### छवीसतिमे वंधिसए बीओ उद्देसी समत्ती।

योग अने वचनयोग संबन्धे न \*पूछ्वं. ए प्रमाणे यावत्—स्तिनिकुमारो सुधी जाणवं. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, अने चउरिन्द्रियने वचनयोग न कहेवो. पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकोने सम्यग्मिध्यात्व, अविध्ञान, विभगज्ञान, मनोयोग अने वचनयोग—ए 'गंच पदो न कहेवां. मनुष्योने अले-स्यपणुं, सम्यग्मिध्यात्व, मनःपर्यवज्ञान, केवछज्ञान, विभगज्ञान, नोसंज्ञोपयोग, अवेदक, अकपायित्व, मनोयोग, वचनयोग अने अयोगित्व—ए अगियार पदो न कहेवा. जेम नैरियकोने कह्युं छे तेम वानन्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकने पण पूर्वोक्त त्रण पद न कहेवा. बाकीनां बधा स्थाने पहेछो अने बीजो भांगो जाणवो. एकेन्द्रियने सर्वंत्र पहेछो अने बीजो भांगो कहेवो. जेम पापकर्म संबन्धे कह्युं तेम ज्ञानावरणीय कर्म संबंधे पण दंडक कहेवो. ए रीते आयुप सिवाय यावत्—अंतरा कर्म सुधी पण दंडक कहेवो.

३. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं अनंतरोपपन्न नैरियके आयुष्य कर्म बांध्युं हतुं--इत्सादि पृच्छा. [उ०] हे गीतम ! तेणे पूर्वे आयुप कर्म बांध्युं हतुं, बांधतो नयी अने बांधशे.

मायुधनो सम्धः

४. [प्र०] हे भगवन् ! जुं लेक्यावाळा अनन्तरोपपन्न नैरियके आयुष कर्म बांध्युं हतुं—इत्यादि पृष्ठा. [उ०] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे व्रीजो भांगो जाणवो. ए प्रमाणे यावत्—अनाकार उपयोग सुधी बधे त्रीजो भांगो जाणवो. एम मनुष्य सिवाय यावत्—वैमानिको सुधी जाणवुं. मनुष्योने बधे त्रीजो अने चोथो भांगो जाणवो. परन्तु विशेष ए के, ऋष्णपाक्षिकने त्रीजो भांगो कहेवो. वधार्मा पूर्व प्रमाणे मिन्नता जाणवी. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

### छवीशमा बंधिशतकमां द्वितीय उद्देशक समाप्त.

### तईओ उद्देसो।

१. [प्र०] परंपरोववन्नए णं भंते ! नेरहए पावं कम्मं किं वंधी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिए पढम-वितिया । एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नपहि वि उद्देसओ भाणियद्यो नेरहयाहओ तहेव नवदंडगसिहओ। अट्टण्ड वि कम्मप्प-गडीणं जा जस्स कम्मस्स वसद्यया सा तस्स अहीणमतिरित्ता नेयद्या जाव-वेमाणिया अणागारोवउत्ता । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ।

### छवीसतिमे बंधिसए तईओ उद्देसी समत्ती।

### त्रीजो उद्देशक.

[ परंपरोपपन्न नैरियकादि चोवीश दंडकने आश्रयी पापकर्मादिनी बन्धवक्तव्यता— ]

१. [प्रo] हे भगवन् । युं परंपरोपपन नैरियके पापकर्म बांध्यं हतुं—इत्सादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम । कोइके बांध्यं हतुं—इत्सादि पिहेलो अने बीजो भांगो समजवो. जेम प्रथम उद्देशक कहो छे तेम परंपरोपपन नैरियकादिसंबंधे पापकर्मादि नत्र दंडक सिंहत आ उद्देशक कहेवो. आठ कर्म प्रकृतिओमां जेने जे कर्मनी वक्तव्यता कही छे तेने ते कर्मनी वक्तव्यता बराबर कहेवी. ए प्रमाणे यावत्—अनाकार उपयोगवाळा वैमानिको सुधी जाणवं. 'हे भगवन् । ते एमज छे, हे भगवन् । ते एमज छे.'

परंपरोपपन्न नैरियकः ने पापकर्मनी बन्धः

### छवीशमा बंधिशतकमां तृतीय उद्देशक समाप्त.

२ \* अनन्तरोपपण नैरियको अपर्याप्त होवाबी तेने मिश्र दृष्टि, मनोयोग अने वचनयोग होता नथी माटे ए त्रण बाबत न पूछवी.

#### चउत्थी उद्देसी।

१. [प्र॰] अणंतरोगाहप णं भंते! नेरहप पावं कम्मं किं बंधी-पुच्छा । [उ॰] गोयमा! अत्थेगतिए-पवं जहेव अणं-तरोववन्नपाँह नवदंडगसंगिहओ उद्देसो भणिओ तहेव अणंतरोगाहपिह वि अहीणमितिरित्तो भाणियद्वो नेरहयादीप जाब-बेमाणिए । 'सेवं मंते! सेवं मंते'! सि ।

### छवीसतिमे बंधिसए चउत्थो उद्देसो समचो । चतुर्थ उद्देशक.

[ अनन्तरावगाढ नैरियकादि चोत्रीश दंडकने आश्रयी पापकर्मादिनी बन्धवक्तव्यता ]

अनन्तरावगाट नैर-विकने आश्रयी कमै-बन्ध- १. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं \*अनंतरावगाढ नैरियके पाप कर्म बांध्युं हतुं—इत्सादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! जेम अनंतरोपपननी साथे पापकर्मादि नवदंडकसंगृहीत उद्देशक कहोते से अनंतरावगाढ नैरियकादि संबंधे पण वैमानिक सुची उद्देशक कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### छवीशमा शतकमां चतुर्थ उदेशक समाप्त.

#### पंचमो उद्देसो ।

१.  $[g_0]$  परंपरोगाढए णं भंते ! नेरहए पावं कम्मं कि बंधी-?  $[g_0]$  जहेव परंपरोबवन्नपिंह उद्देसो सो चेव निरुवसेसो भाणियहो । 'सेवं भंते ! सेव भंते' ! क्ति ।

### छवीसतिमे बंधिसए पंचमो उद्देसो समत्तो ।

#### पांचमो उद्देशक.

परंपरावगाढ नैरयि-कने आश्रयी कमै-वन्ध-

१. [प्रo] हे भगवन् ! क्युं परंपरावगाढ नैरियके पापकर्म बांध्युं हतुं—इत्सादि पृच्छा. [उ०] जेम परंपरोपपन्नक संबन्धे उदेशक कहा तेम परंपरावगाढ संबंधे पण संपूर्ण उदेशक कहेबो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### छवीशमा शतकमां पंचम उद्देशक समाप्त.

### छट्टओ उद्देसो।

१. [प्र॰] अर्णतराहारए णं भंते ! नेरतिए पावं कम्मं किं बंधी-पुच्छा । [उ॰] एवं जहेव अर्णतरोववक्षपहि उद्देसी तहेव निरवसेसं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।

### छवीसतिमे सए छहुओ उद्देसो समचो । छट्टो उद्देशक.

व्यनन्तराद्वारकने कमैयन्यः १. [प्रo] हे भगवन्! शुं अनन्तराहारक (आहारना प्रथमसमये वर्तमान) नैरियके पापकर्म बांध्युं हतुं—इत्यादि पृच्छा. [उo] हे गौतम! जेम अनन्तरोपपन संबन्धे उदेशक कहोतो. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे,

#### छवीशमा शतकमां छट्टो उद्देशक समाप्त.

#### सत्तमो उद्देसो ।

१. [प्र॰] परंपराहारए णं भंते ! नेरहए पावं कम्मं कि बंधी-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! एवं जहेव एरंपरोचवचपिंह उद्देसो तहेव निरवसेसो माणियद्यो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! ति ।

### छवीसतिमे सए सत्तमो उद्देसी समत्ती।

### सप्तम उद्देशक.

परंपराहारक नैरयि-कने कसैनन्थ.

१. [प्र०] हे भगवन् ! छुं परंपराष्ट्रारक (आहारना द्वितीयादि समये वर्तमान ) नैरियके पापकर्म बांध्युं – इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! जेम परंपरोपपन्नक संबंधे उदेशक कहो छे ते ज रीते परंपराष्ट्रारक संबंधे पण संपूर्ण उदेशक कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

#### छवीशमा शतकमां सातमी उद्देशक समाप्त.

<sup>9</sup> र जे जीव एक पण समयना अन्तर सिवाय उत्पत्तिस्थानने आश्रयी रहेलो होय ते अनन्तरावगाढ कहेवाय छे, परन्तु तेवो अर्थ करतां अनन्तरोपपन्न अने अनन्तरावगाढना अर्थमां भिषता थती नथी. तेथी उत्पत्तिना एक समय पछी एक पण समयना अंतर सिवाय उत्पत्तिस्थानने अवगाही रहेल होय ते अनन्तरावगाढ, अने एकादि समयनुं अन्तर होय ते परंपरावगाढ, अर्थात्—अनन्तरावगाढ उत्पत्तिना द्वितीय समयवर्ता होय छे अने परंपरावगाढ उत्पत्तिना तृतीयादिसमयवर्ता होय छे.—टीका.

#### अहमो उद्देसी।

१. [ब्र॰] अणंतरपञ्जलप णं भंते ! नेरहप पावं कम्मं किं वंधी-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! जहेव अणंतरोववन्नपहिं उद्देशो तहेव निरवसेलं । 'सेवं भंते ! सेवं मंते'! ति ।

#### छवीसतिमे सए अहुमो उद्देसो समचो।

#### आठमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! शुं अनंतरपर्याप्त (पर्याप्तपणाना प्रथम समयवर्ती) नैरियके पाप कर्म बांध्युं हतुं—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे अन् गौतम! जेम अनन्तरोपपन संबंधे उदेशक कहा तेम अनंतरपर्याप्तक संबंधे पण संपूर्ण उदेशक कहेवो. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

#### अनन्तरपर्याप्तने कर्मवन्त्र-

#### छवीशमा शतकमां आठमो उद्देशक समाप्त.

### नवमो उद्देसो।

१. [प्र०] परंपरपञ्जसप णं भंते ! नेरहप पावं कम्मं कि बंधी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पवं जहेव परंपरोबवन्नपर्धिः उद्देसी तहेव निरवसेसी माणियन्नो । 'सेवं मंते ! सेवं भंते'! ति । जाव-विहरह ।

#### छवीसतिमे वंधिसए नवमो उद्देसी समत्ती।

#### नवमो उहेशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! जुं परंपरपर्याप्त (पर्याप्तपणाना दिनीयादि समायतीं) नैरियके पापकर्म बांध्युं हर्तु—इस्मादि पृष्का. [उ०] हे गौतम! जेम परंपरोपपन्नक संबंधे उदेशक कहा छे तेम परंपरपर्याप्त मंबंधे पण संपूर्ण उदेशक कहेवो. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

#### परंपर्पयांसने कमैपन्थ-

#### छवीशमा शतकमां नवमी उद्देशक समाप्त.

### दसमो उदेसो ।

१. [प्र०] चरिमे णं भंते! नेरहए पानं कम्मं कि वंधी-पुच्छा। [उ०] गोयमा! पत्रं जहेव परंपरोववक्रपहिं उद्देशी तहेव चरिमेहिं निरवसेसो। 'सेवं भंते! सेवं मंते'! ति २ जाव-विहरित।

### छवीसतिमे वंधिसए दसमो उद्देसो समत्तो ।

#### द्शमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं चरम (जेने नारकभव होझो छे एवा) नैरियके पापकर्म बांध्युं हतुं—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! जेम परंपरोपपन्नक संबंधे उदेशक कहो तेम चरम नैरियकादि संबंधे पण एज रीते <sup>\*</sup>संपूर्ण उदेशक कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे'.

### छवीशमा शतकमां दसमो उद्देशक समाप्त.

### एकारसमी उद्देसी।

१, [प्र॰] अचिरिमे णं भंते ! नेरहप पावं कम्मं किं बंधी-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! अत्थेगहप-पवं जहेव पढमोहेसप, पढम-बितिया भंगा भाणियद्या सञ्चत्थ जाव-पंचिदियतिरिक्सजोणियाणं ।

### अगियारमो उद्देशक.

१. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं अचरम नैरियके पापकर्म बांध्युं हतुं—इत्यादि पृच्छा. [उ॰] हे गौतम ! प्रथम उदेशकमां कह्या प्रमाणे पहेलो अने बीजो—एम बे भागा बधे स्थळे यावत्—पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक सुधी कहेवा.

अचरम नैर्राये**कने** कर्मयन्<del>य</del>-

९ \* अहीं चरमोद्देशक परंपरोद्देशकनी पेटे कह्यों छे, अने परंपरोद्देशक प्रथम उद्देशकनी पेटे छे. छतां तेमां मनुष्यपदने आश्रयी आयुषकर्मना बन्धमां आ विशेषता छे--प्रथम उद्देशकमां आयुषकर्मने अपेक्षी सामान्यतः चार भांगा कह्या छे, पण चरम मनुष्यने आश्रयी मात्र चोथो भांगो घटी शके छे. जे चरम मनुष्य छे तेणे पूर्वे आयुष बांध्युं छे, पण वर्तमान समये बांधतो नथी, तेम भविष्यकाळमां बांधशे पण नहि.--टीका

- २. [प्र०] अचिरिमे णं मंते ! मणुस्से पावं कस्मं कि बंधी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्येगतिप बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्येगतिप बंधी न बंधइ वंधिस्सइ।
- ३. [प्र॰] सलेस्से णं अंते ! अचरिमे मणूसे पावं कम्मं कि वंधी-! [उ॰] एवं चेघ तिन्नि अंगा चरमविहूणा भाणि-यद्या एवं जहेच पढमुहेसे । नवरं जेसु तत्य वीससु चसारि अंगा तेसु इह आदिहा तिन्नि अंगा भाणियद्या चरिमअंगवज्ञा । अलेस्से केवलनाणी य अजोगी य एए तिन्नि वि न पुच्छिजंति, सेसं तहेव । वाणमंतर-जोहसिय-वेमाणिए जहा नेरहए ।
- ४. [म॰] अचरिमे णं भंते ! नेरइए नाणावरणिक्रं कम्मं कि वंधी-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! एवं जहेव पावं॰ । नवरं मणुस्सेसु सकसाईसु लोभकसाईसु य पढम-वितिया भंगा, सेसा अट्ठारस चरमविद्वणा, सेसं तहेव जाव-वेमाणियाणं । वरि-सणावरणिक्रं पि एवं चेव निरवसेसं । वेयणिक्रे सद्वत्थ वि पढम-वितिया भंगा जाव-वेमाणियाणं, नवरं मणुस्सेसु अलेस्से, केवली अजोगी य नित्थ ।
- ५. [प्र०] अचरिमे णं मंते ! नेरहप मोष्टणिजं कस्मं कि वंधी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहेव पावं तहेव निरवसेसं जाव-वेमाणिए ।
- ६. [प्र०] अचिरमे णं भंते! नेरइए आउयं कम्मं कि बंधी-पुच्छा। [उ०] गोयमा! पढम-बितिया मंगा, एवं सब्व-पदेशु वि। नेरइयाणं पढम-तित्या भंगा, नवरं सम्मामिच्छत्ते तित्रओ भंगो, एवं जाव-धणियकुमाराणं। पुढविकाइय-आउ-काइय-वणस्सइकाइयाणं तेउलेस्साए तित्रओ भंगो, सेसेसु पदेसु सबत्य पढम-तित्या भंगा, तेउकाइय-वाउकाइयाणं सबत्य पढम-तित्या भंगा, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं एवं चेव, नवरं सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे एएसु चउसु वि टाणेसु तित्रओ भंगो। पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मामिच्छत्ते तित्रओ भंगो, सेसेसु पदेसु सबत्य पढम-तित्या भंगा। मणुस्साणं सम्मामिच्छत्ते अवेदए अकसाइम्मि य तित्रओ भंगो, अलेस्स-केवलनाण-अजोगी य न पुच्छजांति; सेस-

भवरम मनुष्यने यन्थः २. [प्र०] हे भगवन् ! क्युं अचरम मनुष्ये पापकर्म बांध्युं हतुं–इत्यादि पृष्ठा. [उ०] हे गौतम ! १ कोइए पापकर्म बांध्युं हतुं, बांधे छे भने बांधरो; २ कोइए बांध्युं हतुं, बांधे छे अने बांधरो नहि, ३ कोइए बांध्युं हतुं, नथी बांधतो अने बांधरो.

केश्यासहित अचरम मनुष्यने बन्धः ३. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं लेक्यायाळा अचरम मनुष्ये पापकर्म बांध्युं हुनुं-इत्सादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! उपर कह्या प्रमाणे छेल्ला सिवायना बाकीना त्रण भांगा कहेवा. बाकी बधुं प्रथम उदेशकर्मा कह्युं छे तेम जाणवुं. परन्तु विशेष ए के, जे वीश पदोमां चार भांगा कह्या छे तेमांथी अर्हा छेल्ला भांगा सिवायना प्रथमना त्रण भांगा कहेवा. लेक्यारहित, केवल्ज्ञानी अने अयोगी मनुष्य-ए त्रण संबंधे न पूछवुं. वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने नेरियकोनी पेटे जाणवुं.

अचरम नैरिक्तने सानावरणीयनो बन्धः ध्र. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञुं अचरम नैरियके ज्ञानावरणीय कर्म बांच्युं हतुं—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! जेम पाप कर्म संबन्धे कह्युं छे तेम अही पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए के कपायी अने लोभकषायी मनुष्योमां पहेलो अने वीजो भांगो कहेबो, तथा बाकीना अदार पदमां छेला भागा सिवायना बाकीना बधा (त्रणे) भांगा कहेबा. बाकी बधुं ए प्रमाणे जाणवुं. ए रीते यावत्—वैमानिको सुधी समजवुं. दर्शनावरणीय कर्म सबंधे पण ए रात बधुं जाणवुं. वेदनीय कर्म संबंधे बधे स्थळे पहेलो धने बीजो भांगो—एम बे भांगा यावत्—वैमानिको सुधी जाणवा. विशेष ए के, मनुष्यपदमा लेश्यारहित, केवळी अने अयोगी अचरम मनुष्य नथी.

भचरम नैरियकने मोहनीय बन्धः ५. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं अचरम नैरियके मोहनीय कर्म बांध्युं हतुं–इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गीतम ! जेम पापकर्म संबंधे कह्युं तेम बधुं यावत्–वैमानिको सुधी जाणवुं.

अचरम नैयिरकने भागुषवन्धः इ. [प्र०] हे भगवन् ! शुं अचरम नैरियके आयुष कर्म बांध्युं हतुं—इस्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! पहेलो अने बीजो भांगो जाणवो. ए रीते वधां पदोमां पण जाणवुं. नैरियको विषे पहेलो अने बीजो भांगो कहेवो. यिशेष ए के, सम्यक्त्विमध्यात्वमां त्रीजो भांगो जाणवो. ए रीते यावत्—स्तनितनुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिक, अध्कायिक अने वनस्पनिकायिकोने तेजोलेश्यामां त्रीजो भांगो कहेवो. बाकी बधां पदोमां वधे स्थळे प्रथम अने तृतीय भांगो कहेवो. बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चडरिन्द्रयने विषे पण एमज जाणवुं. पण विशेष ए के सम्यक्त्व, औषिकज्ञान, आभिनिवोधिक ज्ञान अने श्रुतज्ञान—ए चारे स्थानोमां त्रीजो भांगो समजवो. पंचेद्रिय तिर्यंचयोनिकोने सम्यग्मिध्यात्वमां त्रीजो भांगो अने बाकीनां स्थानोमां सर्वत्र प्रथम अने तृतीय भांगो जाणवो. मनुष्योने सम्यग्मिध्यात्व, अवेदक अने अकषायी—ए त्रण पदोमां त्रीजो भांगो जाणवो. लेश्यारहिन, केवलज्ञान अने अयोगी संबंधे प्रश्न न करवो. बाकी बधां पदोमां सर्वत्र प्रथम अने तृतीय भांगो कहेवो. जेम नैरियको संबंधे कह्युं तेम

परेष्ठ सद्यत्थ पढम-तिया भंगा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरह्या । नामं गोयं अंतराइयं च जहेव नानावर-णिजं तहेव निरवसेसं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि जाव-विहरह ।

छवीसितमे बंधिसए एकारसमो उदेसो समत्तो।

### छवीसतिमं सयं समत्तं।

वानन्यंतर, ज्योतिथिक अने वैमानिको संबंधे एण जाणबुं. जेम ज्ञानावरणीय कर्मसंबंधे जणान्युं तेम नाम, गोत्र अने अंतराय संबंधे बधुं समजबुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'--एम कही यावत्-विहरे छे.

छवीशमा शतकमां अगियारमी उद्देशक ममाप्त.

छवीशमुं शतक समाप्त.



## सत्तवीसतिमं सयं।

- १. [प्र॰] जीवे णं अंते ! पायं कर्म्म कि करिसु करेन्ति करिस्संति १, करिसु करेंति न करिस्संति २, करिसु न करेंति करिस्संति ३, करिसु न करेंति न करेस्संति ७ ! [उ॰] गोयमा ! अत्थेगतिए करिसु करेंति करिस्संति १, अत्थेगि-तिए करिसु करेंति न करिस्संति २, अत्थेगतिए करिसु न करेंति न करेस्संति ।
- २. [प्र॰] सलेस्से णं भंते ! जीवे पार्व कम्मं-एवं एएणं अभिलावेणं जबेव वंधिसए वसवया सबेव निरयसेसा भाणियवा, तहेव नववंडगसंगहिया एकारस उद्देसगा भाणियवा।

#### सत्तविसतिमं करिंसुसयं समत्तं।

## सत्यावीशमुं शतक.

- १. [प्रo] हे भगवन् ! १ जीवे \*पापकर्म वर्स्य हतुं, करे छे अने करशे ? २ कर्युं हतुं, करे छे अने करशे निह ! ३ कर्युं हतुं, करतो निध अने करशे ! १ कर्युं हतुं, करतो निध अने करशे हतुं, करे छे अने करशे निह ! [उठ] हे गौतम ! १ कोइक जीवे कर्युं हतुं, करे छे अने करशे निह . ३ कोइक जीवे कर्युं हतुं, करतो निध अने करशे. अने कोइक जीवे कर्युं हतुं, करतो निध अने करशे निह.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! लेश्यावाळा जीवे पाप कर्म कर्युं हतुं--इत्यादि पूर्वोक्त पाठ वडे वंधिशतकमां जे वक्तव्यता कही छे ते बची वक्तव्यता अहीं कहेवी. तेमज नव दंडक सहित अगियार उदेशको पण अहीं कहेवा.

#### सत्यावीशमुं \*करिंसु शतक समाप्त.



<sup>9</sup> में प्रश्नमां बन्धिपद होवाथी छवीशमुं बन्धिशतक कहेवाय छे तेम अहीं प्रश्नमां 'करिंसु' पद होवाथी सलावीशमुं किंसुशतक कहेवामां आने छे. यद्यपि कर्मना बन्ध अने करणमां कांइ पण मेद नथी तो पण बन्ध एटले सामान्यरूपे कमेनुं बांधलुं अने करण एटले संकमादि खक्षे कर्तुं–ए विशेषता जणाववा बन्ध अने करणनो जुदो निर्देश कर्यों छे.

## अट्टवीसतिमं सयं।

#### पढमो उद्देसो।

- १. [प्र॰] जीवा णं भंते! पावं कम्मं किहं समिजिणिसु, कीहं समायिसु ! [उ॰] गोयमा! सम्ने वि ताव तिरि-क्सजोणिएसु होजा १, अहवा तिरिक्सजोणिएसु य नेरहएसु य होजा २, अहवा तिरिक्सजोणिएसु य मणुस्सेसु य होजा ३, अहवा तिरिक्सजोणिएसु य वेवेसु य होजा ४, अहवा तिरिक्सजोणिएसु य नेरहएसु य मणुस्सेसु य होजा ५, अहवा तिरिक्सजोणिएसु य नेरहएसु य वेवेसु य होजा ६, अहवा तिरिक्सजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होजा ७, अहवा तिरिक्सजोणिएसु य नेरहएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होजा ७, अहवा तिरिक्सजोणिएसु य नेरहएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होजा ७, अहवा तिरिक्सजोणिएसु य नेरहएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होजा ८।
- २. [प्र०] सलेस्सा णं भंते ! जीवा पावं कम्मं किंह समिजिणिसु, किंह समायरिसु ? [उ०] एवं स्रेव । एवं कण्हलेस्सा, जाव-अलेस्सा । कण्हपक्ष्मिया । एवं जाव-अणागारोवउत्ता ।
- ३. [प्र॰] नेरहया णं मंते ! पावं कम्मं कोंद्रं समिर्ज्ञाणंसु, कोंद्रं समायरिंसु ? [उ॰] गोयमा ! सबे वि ताव तिरिक्सजोणियसु होज्ज ति -यवं चेव अट्ट मंगा भाणियद्वा । यवं सबत्य अट्ट मंगा, यवं जाव-अणागारोवउत्ता वि ।

## अठ्यात्रीशमुं शतकः

### प्रथम उद्देशक'.

१. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोए कई गतिमां पाप कर्मनुं समर्जन-प्रहण करुँ हतुं अने कई गतिमां पाप कर्मनुं आचरण करुँ हतुं ! [उ०] हे गीतम ! १ बधा जीवो \*तिर्यंचयोनिमां हता, २ अथवा बधा जीवो निर्यंचयोनिमां अने नैरियकोमां हता, ३ अथवा बधा जीवो निर्यंचयोनिमां अने देवोमां हता, ५ अथवा बधा जीवो तिर्यंचयोनिमां, नैरियकोमां अने देवोमां हता, ५ अथवा बधा जीवो तिर्यंचयोनिमां, नैरियकोमां अने देवोमां हता, ७ अथवा बधा जीवो निर्यंचयोनिमां, मनुन्योमां हता, ८ अथवा बधा तिर्यंचयोनिमां, नैरियकोमां अने देवोमां हता, ७ अथवा बधा तिर्यंचयोनिमां, मनुन्योमां अने देवोमां हता, ८ अथवा बधा तिर्यंचयोनिमां, नैरियकोमां, मनुष्योमां अने देवोमां हता. [अने ते गतिमां तेओए पापकर्मनुं सम-जन अने समाचरण कर्षे हतुं.]

वाइ गतिमां पापवः मेर्नु समर्जन भागः !

- २. [प्र०] हे भगवन् ! लेक्यावाळा जीवोए कह गतिमां पाप कर्मनुं । समर्जन अने समाचरण कर्युं हतुं ! [उ०] हे गाँतम ! पूर्वनी पेठे जाणवुं. कृष्णलेक्यावाळा यावत्—अलेक्या—लेक्यारहित, कृष्णपक्षिक, शुक्रपक्षिक, यावत्—अनाकार उपयोगवाळा संबंधे पण एज प्रमाणे समजवुं.
- प्रमाण समजबु. ३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरियक्कोए कइ गतिमां पापकर्म उपार्जन कर्युं हतुं अने कइ गतिमां पाप कर्मनुं आचरण कर्युं हतुं श [उ०] हे गौतम ! बधाय जीवो तिर्यंचयोनिकोमां हता-इस्यादि पूर्वनी पेठे आठे भांगा कहेवा, एम सर्वत्र आठे भांगा कहेवा. ए प्रमाणे

नेदया.

[उ०] हे गौतम । बधाय जीवो तिर्यंचयोनिकोमां हता-इत्यादि पूर्वनी पेठे आठ भागा कहेंग, एम सवत्र आठ भागा कहेंगा, ए प्रभाण

नेग्यिकोने पाप-पर्मतुं समर्जन-

<sup>9 \*</sup> अहीं तिर्यंचयोनि घणा जीवोनो आश्रय होवाची सर्व जीवोनी माताना स्थाने छ. तेथी अन्य नारकादि वधा जीवो कदाचिद् निर्यंचोची आपी उत्पन्न थया होय, माटे ते वधा तिर्यंचयोनिकोमां हता एम कहेवाय छे, अने त्यां तेओए नरकगत्यादिना हेनुभूत पापकर्मेनुं रामर्जन पर्यु हतुं.

२ पाप कर्मनुं समर्जन-उपार्जन अने समाचरण-पापकर्मना हेतुभूत पापिकयानुं आचरण, अर्थात् पापिकियाना समाचरणद्वारा जीवे पाप कर्में कह गतिमां उपार्जन कर्युं हतुं ? अथवा रामर्जन अने समाचरण बन्ने पर्यायशब्दो छे एटले बन्ने एकज अर्थना बोधक छे. सृत्रनी विचित्र केंग्री होवाबी समर्जन अने समाचरण बन्ने कहेवामां आच्या छे.

पवं जाब-वेमाणियाणं । पवं नाणावरणिज्ञेण वि दंडओ, एवं जाव-अंतराइएणं । एवं एए जीवादीया वेमाणियपञ्जवसाणा नव दंडगा भवंति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! सि जाव-विहरर ।

#### अट्टवीसितमे सए पढमो उद्देसी समत्तो ।

यावत्—अनाकारोगयोगवाळा संबंधे समजवुं. अने [ दंडकना क्रमथी ] यावत्—वैमानिको सुधी एज रीते जाणवुं. एम ज्ञानावरणीय, यावत्— अंतराय कर्मवडे पण दंडक कहेवो. एम जीवथी मांडीने वैमानिक पर्यन्त नव दंडक थाय छे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

### अट्यावीशमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

### बीओ उद्देसी.

१. [प्र०] अणंतरोववज्ञगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्मं काँहं समिजिणिसु, किंहं समायरिसु ! [उ०] गोयमा ! सक्के वि ताब तिरिक्खजोणिपसु होजा, पवं पत्थ वि अट्ट भंगा । पवं अणंतरोववज्ञगाणं नेरइयाईणं जस्स जं अत्थि लेसादीयं अणागारोवओगपज्जवसाणं तं सबं पयाप भयणाप भाणियष्ठं जाव—वेमाणियाणं । नबरं अणंतरेसु जे परिहरियद्वा ते जहा बंधि-सप तहा इदं पि । एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ, एवं जाव—अंतराइएणं निरवसेसं । एसो वि नवदंडगसंगिहओ उद्देसओ माणियको । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

# अहावीसितमे सए बीओ उद्सी समत्ती ।

## द्वितीय उद्देशक.

अनन्तरोपपन्न नैर∙ विकोने पापकर्मनु सम√न- १. [प्र०] हे भगवन् ! अनंतरोपपन्न (तुरत उत्पन्न थयेटा ) नैरियकोए कई गतिमां पाप कर्मनुं समर्जन कर्युं अने कई गतिमां पाप कर्मनुं समाचरण कर्युं ! [उ०] हे गौतम ! ते बधा य निर्यग्योनिकोमां हता. एम अहीं पण आठ भांगा जाणवा. अनंतरोपपन्नक नैरिय-कोने अपेक्षी जेने जे छेश्यादिक अनाकार उपयोग सुधी होय ते बधुं विकल्पयी यावत्—वैमानिको सुधी कहेवुं. पण विशेष ए के, जे अनंतरोपपन्न जीवोमां जे जे बावत (मिश्रदृष्टि, मनोयोग, यचनयोगादि) परिहार करवा योग्य होय ते ते बाबत बंधिशतकमां कह्या प्रमाणे परिहरवी. ए रीते ज्ञानावरणीय अने यावत्—अंतराय कर्म बडे पण नव दंडकसिहत आ उदेशक कहेवो. 'हे भगवन्! ते एमज छे'.

### अठ्यावीशमा शतकमां बीजो उद्देशक समाप्त

### ३-११ उद्देसगा।

१. एवं एएणं कमेणं जद्देव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी तद्देव इद्दं पि अट्टुसु भंगेसु नेयहा । नवरं जाणियद्वं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियद्वं जाव-अचरिमुद्देसो । सद्वे वि एए एकारस उद्देसगा । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति जाव-विदृरह ।

# अद्वावीसतिमे सए ३-११ उद्देसगा समत्ता

## अद्वावीसतिमं कम्मसमञ्जणसयं समत्तं।

### ३-११ उद्देशको.

१. एम एज क्रमर्था जेम बंधिशतकमां उदेशकोनी परिपाटी कही छे तेम अहीं पण आठे भौगामां जाणवी. परन्तु विशेष ए के, जेने जे होय तेने ते छेल्ला उदेशक सुधी कहेवुं. एम बधा मळीने अगियार उदेशको याय छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, हे

अठ्यावीश्रमा शतकमां २-११ उद्देशको समाप्त. अठ्यावीशमुं कर्मसमर्जन शतक समाप्त.



## एग्एगतीसतिमं सयं

#### पढमो उद्देसो ।

- १. [प्र॰] जीवा णं मंते ! पावं कम्मं कि समायं पट्टविंसु समायं निट्टविंसु १, समायं पट्टविंसु विसमायं निट्टविंसु २, विसमायं पट्टविंसु २, विसमायं पट्टविंसु १ [उ॰] गोयमा ! अत्थेगहया समायं पट्टविंसु समायं निट्टविंसु १, जाव-अत्थेगहया विसमायं पट्टविंसु विसमायं निट्टविंसु ४।
- २. [प्र०] से केणट्रेणं भंते! एवं बुका-'अत्थंगाया समायं पट्टविंसु समायं निट्टविंसु'-तं चेव ? [उ०] गोयमा ! जीवा चउ विद्वा पत्रत्ता, तंजहा-अत्थेगाया समाउया समोववन्नगा १, अत्थेगाया समाउया विसमोववन्नगा २, अत्थेगाया विसमोववन्नगा २, अत्थेगाया विसमोववन्नगा ४ । १ तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्टविंसु । २ तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्टविंसु विसमायं निट्टविंसु । २ तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं विसमायं पट्टविंसु । तत्थ णं जे ते विसमाउया ममोववन्नगा ते णं पावं कम्मं विसमायं पट्टविंसु । से तेणट्टेणं गोयमा ! तं चेव ।

## ओगणत्रीशमुं शतक

### प्रथम उद्देशक.

१. [प्रच] हे भगवन् ! १ ह्यं घणा जीवो पाप कर्मने भोगववानी शहआत एक काळे करे छे अने तेनो अंत पण एक काळे करे छे १ सोगववानी शहआत एक काळे करे छे अने तेनो अत भिन्न काळे करे छे १ सोगववानी शहआत भिन्न काळे करे छे अने अंत एक काळे करे छे के तेने भोगववानी शहआत भिन्न काळे करे छे अने तेनो अंत पण भिन्न काळे करे छे १ [उ ०] हे गीतम ! केटलाक जीवो पाप कर्मने भोगववानी शहआत एक काळे करे छे अने तेनो अंत पण एक काळे करे छे. ए रीते यावत्—कोड जीवो तो पाप कर्मने भोगववानी शहआत भिन्न काळे करे छे अने तेनो अंत पण भिन्न काळे करे छे.

पापकर्मना नेदननी प्रारंभ अने अन्तः

२. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'केटलक जीवो पाप कर्मने भोगववानी शहआत एक काळे करे छे अने तेनो अंत पण एक काळे करे छे'~इलादि पूर्वमां कहां छे ते प्रमाणे कहेतुं. [उ०] हे गौतम! जीवो चार प्रकारना कहा छे. ते आ प्रमाणे—१ केटलक जीवो समान काळे आयुषना उदयवाळा अने समकाळे भवान्तरमां उत्पन्न धयेला, २ केटलक जीवो समान काळे आयुषना उदयवाळा अने साथे अयुषना उदयवाळा अने नाथे उत्पन्न धपेला तथा ४ केटलाक जुदा जुदा काळे आयुषना उदयवाळा अने नाथे उत्पन्न धपेला तथा ४ केटलाक जुदा जुदा काळे आयुषना उदयवाळा अने नाथे उत्पन्न धपेला तथा ४ केटलाक जुदा जुदा काळे आयुषना उदयवाळा अने प्रमाम साथे उत्पन्न धपेला होय छे तेओ एक ज काळे पाप कर्मने भोगववानी शहआत करे छे अने तेनो अंत पण एक काळे करे छे. २ जे जीवो समान काळे आयुपना उदयवाळा अने जुदा जुदा समये परभवमां उत्पन्न धपेला होय छे तेओ पाप कर्मने भोगववानी शहआत एक काळे करे छे अने तेनो अंत पण जुदा जुदा समये परभवमां उत्पन्न धपेला होय छे तेओ पाप कर्मने भोगववानी शहआत एक काळे करे छे अने तेनो अंत पण जुदा जुदा समये परभवमां उत्पन्न धपेला होय छे तेओ पाप कर्मने भोगववानी शहआत एक काळे करे छे अने तेनो अंत पण जुदा जुदा समये परभवमां उत्पन्न धपेला छे तेओ पाप कर्मने भोगववानी शहआत जुदा जुदा काळे आयुपना उदयवाळा अने जुदा जुदा समये परभवमां उत्पन्न धपेला छे तेओ पाप कर्मने भोगववानी शहआत जुदा जुदा काळे करे छे अने तेनो अंत पण जुदा जुदा समये परभवमां उत्पन्न धपेला छे तेओ पाप कर्मने भोगववानी शहआत जुदा जुदा काळे करे छे अने तेनो अंत पण जुदा जुदा काळे करे छे. ए कारणधी हे गौतम!—हत्यादि पूर्व प्रमाणे करेतुं.

रेग बहेबानं कारण.

- ३. [प्र०] सलेस्सा णं भंते ! जीवा पावं कर्म्म-! [उ०] पवं चेव, पवं सबद्वाणेसु वि जाव-अणागारोवउत्ता । एए सबे वि पया एयाए वत्तवयाए भाणियवा ।
- ४. [प्र०] नेराया ण भंते! पावं कम्मं कि समायं पट्टविसु समायं निट्टविसु—पुच्छा । [उ०] गोयमा! अत्थेगहया समायं पट्टविसु—पवं जहेव जीवाणं तहेव भाणियन्नं जाव—अणागारोवउत्ता । पवं जाव—वेमाणियाणं जस्स जं अत्थि तं पपणं चेव कमेणं भाणियन्नं । जहा पावेण दंडभो, पपणं कमेणं अट्टसु वि कम्मप्पगडीसु अट्ट वंडगा भाणियन्ना जीवादीया वेमाणि-यपज्जवसाणा । पसो नवदंडगसंगहिओ पटमो उद्देसो भाणियन्नो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! सि ।

### एगूणतीसितमे सए पढमो उद्देसी समची।

हेरयाने आश्रयी प्रस्थापन अने निष्ठापनः २. [प्र०] हे भगवन् ! शुं लेश्यावाळा जीवो पाप कर्मने भोगववानी शरुआत एक काळे करे छे—इत्यादि पूर्व प्रमाणे पूछवुं. [उ०] हे गौतम ! उत्तर पूर्व प्रमाणे समजवो. बर्धा स्थानोमां पण यावत्—अनाकार उपयोगवाळा सुधी समजवुं. ए बर्धा पदो पण ए ज वक्तन्यतायी कहेवां.

नैर्यिकोने आश्रयी प्रस्थापन अने निष्ठापनः ३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरियको पाप कर्मने भोगववानी शरुआत एक काळे करे छे अने तेनो अंत पण एक काळे करे छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! जेम जीवो संबंधे आगळ जणाव्युं तेम नैरियको संबंधे पण जाणवुं. एम यावत्—अनाकार उपयोग्गवाळा नैरियको संबंधे समजवुं. एज प्रकारे यावत्—वैमानिको सुधी जेने जे होय ते तेने आज कमथी कहेवुं. जेम पाप कर्म संबंधे दंडक कहो। तेम ए कमवडे जीवधी मांडीने वैमानिको सुधी आठे कर्मप्रकृतिओ संबंधे आठ दंडक कहेवा. ए रीते नवदंडकसहित आ प्रथम उदेशक कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे'.

#### ओगणत्रीयमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

## बीओ उद्देसी।

- १. [प्रव] अणंतरोषवद्मगा णं भंते ! नेरहया पावं कम्मं कि समायं पट्टिषेषु समायं निट्टिषेसु-पुष्छा । [उ व] गोयमा ! अत्येगह्या समायं पट्टिषसु समायं निट्टिषसु, अत्येगहया समायं पट्टिषसु विसमायं निट्टिषसु ।
- २. [प्र०] से केणट्रेणं मंते ! एवं बुका-'अत्थेगहया समायं पट्टविंसु-तं चेव' ! [उ०] गोयमा ! अणंतरोववक्षमा नेरहया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-अत्थेगहया समाउया समोववन्नमा, अत्थेगहया समाउया विसमोववन्नमा । तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नमा ते णं पावं कम्मं समायं पट्टविंसु समायं निट्टविंसु । तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नमा ते णं पावं कम्मं समायं पट्टविंसु । ते वेव ।
  - ३. [प्र॰] सलेस्सा णं भंते! अणंतरीववन्ना नेरह्या पावं-१ [उ॰] पवं चेव, पवं जाव-अणागारीवजन्ता। एवं अञ्च-

### द्वितीय उद्देशक.

अनन्तरोपपन्न नैर-यिकने आश्रयी सम-क प्रस्थापनादि-

१. [प्र॰] हे भगवन् ! छुं अनंतरोपपन्न ( तुरतमां उत्पन्न थयेला ) नैरियको एक काळे पाप कर्मने भोगववानी शहआत करे छे अने तेनो अंत पण एक काळे करे छे—इत्यादि पृथ्ला. [उ॰] हे गौनम ! तेओमां केटलाक एक काळे पाप कर्मने भोगववानी शहआत करे छे अने तेनो अंत पण एक काळे ज करे छे अने केटलाक एक काळे पाप कर्मने भोगववानी शहआत करे छे अने तेनो अंत जुदा जुदा समये करे छे.

तेगो हेतु-

२. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'केटलाक एक काळे पाप कर्मने भोगववानी शरुआत करे छे भने तेनो अंत पण एक काळे करे छे—' इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! अनंतरोपपल नैरियको बे प्रकारना कहा छे. ते आ प्रमाणे— १ केटलाक समकाळे आयुपना उदयवाळा अने समकाळे परभवमां उत्पन्न धयेला, २ अने केटलाक समकाळे आयुपना उदयवाळा अने जुदा जुदा काळे परभवमां उत्पन्न धयेला होय छे. तेमां जेओ समकाळे आयुपना उदयवाळा अने परभवमां साथे उत्पन्न धयेला छे तेओ एक काळे पापकर्मने भोगववानी शरुआत करे छे अने तेनो अंत पण एक काळे करे छे. तथा जेओ समकाळे आयुपना उदयवाळा अने जुदा जुदा समये परभवमां उत्पन्न धएला छे तेओ पाप कर्मने भोगववानी शरुआत तो एक काळे करे छे अने तेनो अंत जुदा जुदा काळे करे छे. ए कारणियी ए प्रमाणे कहां छे.

सलेश्य नैरियकने आश्रयी समक प्र-स्थापनादि. २. [प्र०] हे भगवन् ! शुं लेश्यावाळा अनंतरोपपन नैरियको पापकर्मने भोगनवानी शहआत एक काळे करे छे—हत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! पूर्वना पेठे जाणवुं, ए रीते यावत्—अनाकार उपयोगवाळा सुची समजवुं, एम असुरकुमारो अने यावत्— रकुमाराणं। एवं जाव-वेमाणियाणं, नवरं जं जस्त अत्थि तं तस्त भाणियद्यं। एवं नाणावरणिक्षेण वि दंडको, एवं निरव-सेसं जाव-अंतराइएणं। 'सेवं मंते! सेवं मंते! सि जाव-विद्वरति।

## एगूणतीसितमे सए बीओ उद्देसी समत्ती।

वैमानिको संबंधे पण जाणबुं. पण विशेष ए के, जेने जे होय तेने ते कहेबुं. ए प्रमाणे ज्ञानावरणीय कर्म संबंधे पण दंडक कहेबो, अने एम यावत्—अंतराय कर्म सुधी जाणबुं. 'हे भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.' एम कही यावत्—बिहरे छे.

### औगणत्रीश्रमा शतकमां बीजो उद्देशक समाप्त.

### ३-११ उद्देसगा।

पर्व एएणं गमएणं जन्नेच वंधिसए उद्देसगपरिवाडी सबोव इह वि भाणियद्या जाव-अचरिमो सि । अणंतरउद्देसगाणं चर्डण्ड वि एका वसदया, सेसाणं सत्तण्हं एका ।

## एगूणतीसतिमे सए ३-११ उद्देसगा समत्ता एगूणतीसतिमं कम्मपट्टनणसयं समत्तं ।

### ३-११ उदेशको.

एम ए पाठनंडे जैम बंधिशतकामां उदेशकानी परिपाटि कही छे ते बधी उदेशकानी परिपाटी अहीं पण पानत्—अवरम उदेशका सुधी कहेनी. अनन्तरसंबंधी चारे उदेशकोनी एक नक्तन्यता कहेगी अने बाकीना (सात) उदेशकोनी एक नक्तन्यता समजनी.

जोगणत्रीश्वमा शतकमां ३-११ उद्देशको समाप्त । ओगणत्रीशमुं कर्मप्रस्थापनशतक समाप्त.



## तीसइमं सयं

### पढमो उद्देसो ।

- १. [प्र॰] कर णं भंते ! समोसरणा पश्चता ! [उ॰] गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पश्चता, तंजहा-किरियावादी, अिकरियावादी, अन्नाणियवार्द, वेणदयवार्द ।
- २. [प्रः] जीवा णं भंते ! कि किरियावादी, अकिरियावादी, अक्षाणियवादी, वेणद्यवादी ? [उ॰] गोयमा ! जीवा किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अक्षाणियवादी वि, वेणद्यवादी वि ।
- ३. [प्र०] सलेस्सा णं भंते ! जीवा कि किरियावादी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अफ्रियावादी वि, अफ्रियावादी वि। एवं जाव-सुक्रलेस्सा ।

# त्रीशमुं शतक

### प्रथम उद्देशक.

मगबमरण.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटला \*समबसरणो-मतो-कह्या छे ! [उ०] हे गीतम ! चार समवसरणो कह्या छे. ते आ प्रमाणे-१ कियाबादी, २ अकियाबादी, ३ अज्ञानवादी अने ४ विनयवादी.

जीवो अने कियावाः दिल्लादिः २. [प्रo] हे भगवन् ! शुं जीवो क्रियावादी छे, अक्रियावादी छे, अज्ञानवादी छे के निनयवादी छे ! [उ o ] हे गौतम ! जीवो क्रियावादी छे, अक्रियावादी छे, अज्ञानवादी छे अने विनयवादी पण छे.

महेर्य भीवो अने जियावादिग्वादिः ३. [प्र॰] हे भगवन् ! ग्रुं लेश्यावाळा जीवो क्रियावादी छे—इत्यादि पृच्छा. [उ॰] हे गीतम ! तेओ क्रियावादी छे, अक्रियावादी छे, अक्रियावादी छे अने विनयवादी एण छे. ए प्रमाणे यावत्—शुक्कलेश्यावाळा जीवो संबंधे समजबुं.

- 9 \* अनेवप्रकारना परिणामवाळा जीवो जेने विषे रहे ते समवगरण-मत अथवा दर्शन कहेवाय छे. तेना चार प्रकार छे- १ कियावादी, २ अकियावादी, ३ अज्ञानवादी अने ४ विनयवादी. आ मतोना संबंधमां राविस्तर हकीकत मळी शकती नथी. सूत्रकृतांगना प्रथम श्रुतस्कन्धना बारमा समवसरण अध्ययनमा आ मतोनुं संक्षिप्त वर्णन छे. तेम ज आचारांगनी टीकामां तेना मेदप्रमेदोनुं वर्णन छे. ( जुओ अध्य ० १ उ० १ प० १६ ) परन्तु ते उपरथी तेनी चोक्करा श्री मान्यता हती ते स्पष्ट जाणी शकातुं नथी. तो पण एटलुं तो जाणी शकाय छे के कियावादी वगेरे खतन्त्र मतो निह होय, पण भगवान महावीरना रामयमां जे मतो अचितित हता ते बधानो पूर्वोक्त चार प्रकारमां समावेश कर्यो होय एम छागे छे. जेमके आत्माना अस्तित्वने माननारा वधा दर्शनो कियावादीमां गणी शकाय. तेनी रीते आत्माने क्षणिक माननारा बाह्यदि दर्शन अकियावादी कहेवाय.
- १ फ्रियाचादी आ मतोनी भिन्न भिन्न व्याख्या छे. प्रथम व्याख्या प्रमाणे किया कर्ता सिवाय संभवती नथी, माटे कियाना कर्ता तरीके आत्माना अस्तित्वने माननार कियावादी कहेवाय छे. बीजी व्याख्या प्रमाणे किया प्रधान छे अने ज्ञाननुं कंइपण प्रयोजन नथी एवी कियाप्रधान्यनी मान्यतावाळा होय ते कियावादी. त्रींजी व्याख्या प्रमाणे जीवादिपदार्थना अस्तित्वने माननारा कियावादी कहेवाय छे. तेना एकसो एंगी प्रकार छे. तेथोनो मत पण अमेदोपचारणी कियावादी कहेवाय छे.
- २ अिक्रयाचादी—तेओनुं एवं मन्तन्य छे के कोइ पण अनवस्थित पदार्थमां किया होती नशी, जो तेमां किया होय तो तेनी अनवस्थिति न होय माटे कियाना अभावने माननार अक्रियाचारी छे. अथवा कियानुं छुं प्रयोजन छे १ मात्र चित्तशुद्धि ज आवश्यक छे−एवी मान्यताबाळा अक्रियाचारी कहे-वाय छे. अथवा जीवादिना नाम्तित्यने माननारा अक्रियाचारी कहेवाय छे. तेना चोराशी प्रकार छे.
- ३ अज्ञानवादी अज्ञान श्रेयरूप छे, कारण के ज्ञानधी कर्मनो तीय बन्ध थाय छे अने अज्ञानपूर्वक कर्मधन्ध निष्फळ थाय छे एवी मान्य-तावाळा अज्ञानवादी कहेवाय छे. तेना सडसठ प्रकार छे.
- ४ विनयवादी—स्वर्गापवर्गादि श्रेयनुं कारण विनय छे, विनयने ज प्रधानपणे माननारा अने जेने कोइ पण प्रकारनुं निश्चित लिंग, आचार के शास्त्र नथी ते विनयवादी कहेवाय छे, तेना बत्रीश प्रकार छे. आ बधा मिथ्यादृष्टि छे, तो पण अहीं कियावादी जीवादिना अस्तित्वने मानता होवाथी सम्यग्दृष्टि जाणवा. विशेष माटे जुओ-( आचारांग अध्य॰ १ ड॰ १ टीका प॰ १६ ).

- ४. [प्र॰] अक्रेस्सा णं भंते ! जीवा-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! किरियाबादी, नो अकिरियाबादी, नो अक्राणियवादी, नो बेणइयवादी ।
- ५. [प्र०] कण्हपक्सिया णं मंते ! जीवा कि किरियावादी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरिया-वादी, अन्नाणियवादी वि, वेणश्यवादी वि । सुक्रपिक्किया जहा सलेस्सा । सम्मिविट्टी जहा अलेस्सा । मिण्छादिट्टी जहा कण्हपिक्किया ।
- ६. [प्र०] सम्मामिच्छादिद्वीणं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो किरियावादी, नो अकिरियावादी, अन्नाणियवादी वि, वेणायवादी वि । णाणी जाव-केवलनाणी जहा अलेस्से । अन्नाणी जाव-विभंगनाणी जहा कण्हपक्षिया । आहारसन्नोवलत्ता जाव-परिग्गहसन्नोवलत्ता जहा सलेस्सा । नोसन्नोवलत्ता जहा अलेस्सा । सबेदगा जाव-नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा । अकेदागा जहा अलेस्सा । सन्नोगी जाव-काययोगी जहा सलेस्सा । अजोगी जहा अलेस्सा । सामारोवलत्ता अणागारोवलता जहा सलेस्सा ।
  - ७. [प्र०] नेराया णं अंते ! कि किरियावादी-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! किरियावादी वि, जाव-वेणायवादी वि ।
- ८. [प्र०] सलेस्सा णं भंते ! नेरइया कि किरियावादी-१ [उ०] एवं चेव । एवं जाय-काउलेस्सा । कण्डपक्षित्रया किरियाविषित्रया । एवं पएणं कमेणं जचेव जीवाणं वत्तवया सच्चेय नेरइयाणं वत्तवया वि जाव-अणागारोवउत्ता । नवरं जं अत्यि तं भाणियवं, सेसं न भण्णति । जहा नेरइया एवं जाव-थणियकुमारा ।
- ९. [प्र०] पुढविकाइया णं भंते! किं किरियावादी-पुच्छा । [उ०] गोयमा! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अक्रियावादी वि, अक्रियावादी वि, जो वेणइयवादी । पवं पुढविकाइयाणं जं अत्थि तत्थ सद्यत्य वि एयाई दो मजिस्ह्लाई समोसरणाई
- ४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं लेश्यारहित जीवो क्रियावादी छे—इस्वादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ क्रियावादी छे, पण अक्रियावादी नथी, अज्ञानवादी नथी तेमज विनयवादी पण नथी.

तेदयारहित जीवो भने कियावादि-खादि-

५. [प्र०] हे भगवन् ! द्युं कृष्णपाक्षिक जीवो क्रियावादी छे – इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ क्रियावादी नथी, पण अक्रियावादी छे, अज्ञानवादी छे अने विनयवादी छे. गुक्रपाक्षिको लेश्यावाळा जीवोनी पेठे जाणवा अने \*सम्यग्दिए जीवो लेश्यारहित जीवोनी पेठे जाणवा. मिथ्यादिष्टेन कृष्णपाक्षिक जीवोनी पेठे जाणवा. मिथ्यादिष्टेन कृष्णपाक्षिक जीवोनी पेठे जाणवा.

कृष्णपाक्षिमः अने कियाबादित्यादिः

६. [प्र०] हे भगवन्! शुं सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवो क्रियावादी छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम! तेओ क्रियावादी नथी, अने विनयवादी छे. लेश्यारहित जीवोनी पेठे ज्ञानी अने यावत्—केवल्ज्ञानी जीवो जाणवा. तथा अज्ञानी अने यावत्—विभंगज्ञानी जीवो कृष्णपाक्षिक जीवोनी पेठे जाणवा. आहारसंज्ञामां उपयोगवाळा अने यावत्—परिग्रहसंज्ञामां उपयोगवाळा जीवो लेश्यावाळा जीवोनी जेम जाणवा. नोसंज्ञामां उपयोगवाळा जीवो लेश्यावाळा जीवोनी पेठे जाणवा. वेदवाळा अने यावत्—नपुंसकवेदवाळा लेश्यावाळा जीवोनी पेठे समजवा. वेदरहित जीवो लेश्यारहित जीवोनी जेम जाणवा. सकपायी अने यावत्— लोभक्षायी लेश्यासहित जीवोनी जेम समजवा. अकपायी जीवो लेश्यारहित जीवोनी पेठे जाणवा. यावत्— काययोगी लेश्यावाळा जीवोनी जेम जाणवा. अयोगी जीवो लेश्यारहित जीवोनी पेठे समजवा. साकार अने अनाकार उपयोगवाळा जीवो सलेश्य जीवोनी जेम जाणवा.

मिश्रगृष्टिने कियाव। दिस्वादिः

७. [प्र॰] हे भगवन् ! शुं नैरियको कियावादी छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ कियावादी छे, अने यावत्— विनयवादी पण छे.

नेरयिको अने क्रिय। वादिरव।दि-

- ८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं लेक्यायाळा नैरियको क्रियावादी छे— इत्यादि प्रच्छा. [उ०] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए रीते यावत्—कापोतलेक्यायाळा नैरियको सुधी जाणवुं. कृष्णपाक्षिक नैरियको क्रियावादी नधी. ए कम प्रमाणे जीवो विषे जे वक्तव्यता कहीं छे तेज वक्तव्यता नैरियको संबंधे पण समजवी. तथा ए रीते यावत्—अनाकार उपयोगवाळा नैरियको सुधी समजवुं. विरोप ए के, जेने जे होय तेने ते कहेवुं, बाकीनुं न कहेवुं. जेम नैरियको संबंधे जणाव्युं तेम यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.
  - ९. [प्र०] हे भगवन् ! क्युं पृथिवीकायिको कियावादी छे-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ कियावादी नपी, तेम विनय-

पृथियीकाथिको अने कियावादित्वादिः

५ \* छेदयारहित अयोगी अने सिद्धो होय छे, अने तेओ कियावादना कारणस्प दृव्य-पर्यायना यथार्थ ज्ञानयुक्त होवाची कियावादी छे. अहीं जे सम्यग्दिष्टिने योग्य अछेदयत्व, सम्यग्दर्शन, ज्ञानी, नोसंज्ञोपयुक्त अने अनेदकत्वादि स्थानो छे ते बधानो कियावादमां अने निष्यादिष्टिने योग्य मिथ्यात्व अज्ञानाहि स्थानो छे तेनो बाकीना त्रण समवसरणमां समावेश याय छे. मिश्रदृष्टि साधारण परिणामवाळो होवाधी तेनी गणना आस्तिक के नास्तिकमां करी नची, तेथी ते अज्ञानवादी अने निनयवादी ज होय छे.—टीका.

जाब-मणागारोवउत्ता वि । एवं जाव-खर्जारेदियाणं । सद्वट्टाणेसु एयाई चेष मिन्सिह्नगाई दो समोसरणाई । सम्मत्तनाणेहि वि एयाणि चेव मिन्सिह्नगाई दो समोसरणाई । पंचिदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा । नवरं जं अत्थि तं माणिया । मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं । वाणमंतर-जोहसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ।

- १०. [प्र०] किरियावादी णं मंते! जीवा कि नेरहयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, देवाउयं पकरेंति ! [उ०] गोयमा! नो नेरहयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति ।
- ११. [प्र॰] जर देवाउयं पकरेंति किं भवणवासिदेवाउयं पकरेंति, जाव-वेमाणियदेवाउयं पकरेंति १ [उ॰] गोयमा ! नो भवणवासीदेवाउयं पकरेंति, नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेंति, नो जोरसियदेवाउयं पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेंति ।
- १२. [प्र॰] अकिरियावादी णं भंते ! जीवा कि नेरायाउयं पकरेंति, तिरिक्स॰-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! नेरायाउयं पि पकरेंति, जाव-देवाउयं पि पकरेंति । एवं अक्षाणियवादी वि, वेणायवादी वि ।
- १३. [प्र॰] सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति-पुच्छा । [७०] गोयमा ! नो नेरइयाउयं-पदं जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चडहि वि समोसरणेहिं माणियद्या ।
- १४. [प्र०] कण्डलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी कि नेरद्दयाउयं पकरेंति–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नेरद्दयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति । अकिरियवादी अन्नाणियवादी वेणद्दयवादी य चत्तारि वि आउयादं पकरेंति । एवं नीललेस्सा वि ।

वादी नथी, किंतु \*अफियावादी छे अने अज्ञानवादी छे. ए प्रमाणे पृथिवीकायिकोने लेक्स्यादिक जे जे पदो संभवता होय ते ते बधां पदोमां (अफियावादिल सने अज्ञानवादिल—) ए वे वचलां समन्तसरणो जाणवा. ए रीते यावत्—अनाकार उपयोगवाळा पृथिवीकायिको सुधी जाणवुं. एम यावत्—चर्डारेद्रिय जीवो संबंधे कहेवुं. सर्व स्थानकोमां ए वे वच्चेना ज समवसरणो जाणवां. एओनां सम्यक्तव अने ज्ञानमां पण ए वे ज वचलां समसरणो समजवां. पंचेंद्रिय तिर्वचयोनिको संबंधे जीवोनी जेम जाणवुं. विशेष ए के, जेने जे होय तेने ते कहेवुं. जीवो संबंधे जे हकीकत कही छे ते बधी ते ज रीते मनुष्यो संबंधे पण समजवी. वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने अधुरकुमारोनी जेम जाणवुं.

कियाबादीने आयु-यनो बन्ध-

- १०. [प्र०] हे भगवन् ! कियावादी जीवो क्युं नैरियकतुं आयुष बांधे, तिर्यंचयोनिकतुं आयुष बांधे, मनुष्यतुं आयुष बांधे के देवतुं आयुष बांधे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियक अने तिर्यंचयोनिकतुं आयुष न बांधे पण मनुष्य अने देवतुं आयुष बांधे.
- ११. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ देवनुं आयुष बांधे तो ह्युं भवनवासी देवनुं आयुष बांधे के यावत्—वैमानिक देवनुं आयुष बांधे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ भवनवासी देवनुं आयुष बांधता नधी, तेम वानन्यंतर देवनुं अने ज्योतिषिक देवनुं पण आयुष बांधता नथी, किंतु वैमानिक देवनुं आयुष बांधे छे.

र्धाव्याचादीने आयु-पनी **ग**न्ध- १२. [प्र०] हे भगवन् ! अक्रियावादी जीवो ह्युं नैरियकनुं आयुप बांधे, तिर्यंचनुं आयुप बांधे–इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गीतम ! तेओ नैरियकनुं आयुप यावत्–देवनुं आयुप पण बांधे. ए प्रमाणे अज्ञानवादी अने विनयवादी संबंधे पण समजनुं.

सहेदय क्रियावादीने आयुवनी बन्ध. १३. [प्र०] हे भगवन् ! लेश्यावाळा कियावादी जीवो ह्युं नैरियकतुं आयुष बांघे— इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियकतुं आयुप नयी बांधता–इत्यादि जेम जीवो संबन्धे उपर जणाव्युं छे तेम ज अहीं पण (लेश्यावाळा जीवोने पण) चारे समवसरणोने आश्रयी कहेतुं.

कृष्णठेदयायाळा क्रियावादीने **भायु**-वसी वन्ध-

१४. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा क्रियावादी जीवो द्युं नैरियकतुं आयुप बांधे—इत्सादि पृष्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियक, तिर्यंच अने देवतुं आयुष बांधता नथी, पण मनुष्यतुं आयुप बांधे छे. कृष्णलेक्ष्यावाळा अक्रियावादी, अज्ञानवादी अने विनयवादी जीवो चारे प्रकारना आयुपनो बन्ध करे छे. ए ज रीने नीळलेक्ष्यावाळा अने कापोतलेक्ष्यावाळा संबंधे पण जाणवुं.

पृथिवीकायिकोने सलेदयत्व, कृष्ण, नील, कापोन अने तेजोलेदया तथा कृष्णपाक्षिकन्वादि जे होय छे, ते बधामां अिक्रयावादी अने अज्ञानवादी ए वे समवसरण होय छे. ए प्रमाणे चलरिन्द्रिय सुधी जाणबुं. अहीं एटलुं समजबुं आवदयक छे के कियावाद अने विनयवाद विविध सम्यक्त्वादि परिणामना सद्भावमां होय छे तेथी वेदन्द्रियादिने साखादननी प्राप्तिमा सम्यक्त्व अने ज्ञाननो अंश होवा छतां पण तेओ कियावादी अने विनय-वादी कहेवाता नथी.

९ \* पृथिवीकाथिकादि मिथ्यादिए होवाबी तेओ अकियावादी अने अज्ञानवादी होय छे. यदापि तेओमां वचनना अभावबी वाद नशी, तोपण ते ते वाद योग्य परिणाम होवाबी तेओ अकियावादी अने अज्ञानवादी कहा। छे. अने तेओमां विनयवादने थोग्य परिणाम नथी तेबी तेओ विनयवादी नशी.

- १५. [प्र॰] तेउलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावादी किं नेरायाउयं पकरेत् !-युच्छा । [उ॰] गोयमा ! नी नेरहयाउयं पकरेत्, नो तिरिक्कजोणियाउयं पकरेत्, मणुस्साउयं पकरेत्, देवाउयं पि पकरेत् । जत्र देवाउयं पकरेत्-तहेव ।
- १६. [प्र०] तेउछेस्सा णं भंते! जीवा अकिरियावादी किं नेरहयाउयं-पुच्छा। [उ०] गोयमा! नो नेरहयाउयं पकरेह, मणुस्साउयं पि पकरेह, तिरिक्सजोणियाउयं पि पकरेह, देवाउयं पि पकरेह। एवं अन्नाणियवादी वि, वेणह्यवादी वि। जहा तेउछेस्सा एवं पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायवा।
- १७. [प०] अछेस्सा णं मंते ! जीवा किरियावादी किं णेरहयाउयं-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नेरहयाउयं पकरेह, नो तिरिक्स ०, नो मणु०, नो देवाउयं पकरेह ।
- १८. [प्र॰] कण्हपक्सिया ण संते! जीवा अकिरियावादी कि नेरहसाउयं-पुच्छा । [७०] गोयसा! नेरहसाउयं पि पकरेर्-यवं चडविद्दं पि । एवं अन्नाणियवादी वि, वेणहयवादी वि । सुक्रपक्सिया जहा सलेस्सा ।
- १९. [प्र०] सम्मिद्दी णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरहयाउयं-पुच्छा । [उ०] गोयमा! नो नेरहयाउयं पकरेह, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेह, मणुस्साउयं पकरेह, वेवाउयं पि पकरेह । मिच्छादिट्टी जहा कण्हपक्खिया ।
- २०. [प्र॰] सम्मामिङ्छादिद्वी णं मंते ! जीवा अञ्चाणियवादी कि नेरहयाउयं- ! [उ॰] जहा अलेस्सा । एवं वेणहयवादी वि । णाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्महिद्वी ।
- २१. [प्र०] मणपञ्जवणाणी णं भंते !-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नेरहयाउयं पकरेह, नो तिरिक्स०, नो मणुस्त०, देवाउयं पकरेह ।
- २२. [प्र॰] जद देवाउयं पकरेद किं मवणवासि०-पुच्छा । [उ॰] गोयमा! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेद, नो वाण-मंतर॰, नो जोदसिय॰, वेमाणियदेवाउयं पकरेद्द। केवलनाणी जहा अलेस्सा । अन्नाणी जाव-विमंगनाणी जहा कण्हपिस्खया । सन्नासु चउसु वि जहा सलेस्सा । नोसन्नोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी । सवेदगा जाव-नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा । अवे-
- १५. [प्र०] हे भगवन् ! तेजोलेश्यावाळा कियावादी जीवो शुं नैरियेकतुं आयुप बांधे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौनम ! तेओ नरियेकतुं अने तिर्येचतुं आयुप बांधता नथी, पण मनुष्य अने देवतुं आयुप बांधे छे. जो तेओ देवोनुं आयुप बांधे तो ते पूर्ववत् आयु- षनो बन्ध करे छे.

तेजोजेश्यावाळा कियाबादीने आयु-पनो वन्धः

- १६. [प्र॰] हे भगवन्! तेजोलेश्यावाळा अिकयायादी जीवो द्यं नैरियकतुं आयुप बांधे-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम! तेओ नैरियकतुं आयुष बांधता नयी, पण तिर्थेच, मनुष्य अने देवतुं आयुष बांधे छे. ए ज रीते अज्ञानवादी अने विनयवादी जीवो संबंधे पण समजवुं. जेम तेजोलेश्यावाळा संबंधे जणाव्युं तेम पद्मलेश्यावाळा अने शुक्कलेश्यावाळा जीवो संबंधे पण समजवुं.
- १७. [प्र०] हे भगवन् ! लेश्यारहित क्रियावादी जीवो ह्युं नैरियकतुं आयुप बांधे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियक, तिर्यंच, मनुष्य के देवतुं पण आयुष बांधता नधी.

लेश्यारहित किया-वादीने आयुपनो वन्ध.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णपाक्षिक अक्रियावादी जीवो शुं नैरियकतुं आयुप्र वांधे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियक अने तिर्यंच वगेरे—चारे प्रकारनां आयुषो वांधे छे. ए रीते कृष्णपाक्षिक अज्ञानवादी अने विनयवादी विपे पण जाणबुं. जेम लेक्यावाळा जीवो संबंधे कह्युं छे तेम शुक्रपाक्षिक संबंधे पण जाणबुं.

कृष्णपाक्षिक अकि-यावादीने आयुषनो अन्ध-

१९. [प्र॰] हे भगवन् ! सम्यग्दिष्ट कियावादी जीत्रो शुं नैरियकर्तुं आयुष्य बांधे-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियक अने तिर्येचनुं आयुष बांधता नथी, पण मनुष्य अने देवनुं आयुष बांधे छे. मिध्यादिष्टिने कृष्णपाक्षिकोनी जेम जाणवुं.

सम्यग्दृष्टि वित्याचा-दीने भाषुपतो बन्ध-

२०. [प्र०] हे भगवन् ! सम्यग्मिथ्यादृष्टि अज्ञानवादी जीवो शुं नैरियकतुं आयुष बांधे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! लेश्यारहित जीबोनी पेठे जाणवं. ए प्रमाणे विनयवादी संबंधे पण समजवुं. ज्ञानी, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानीने सम्यग्दृष्टिनी पेठे समजवुं.

सम्यग्निध्या-दृष्टि भन्नानवादीने जायुषनो मन्धः मनःपर्यवन्नानीने जायुषनो बन्धः

- २१. [प्र०] हे भगवन् ! मनःपर्यवज्ञानी (क्रियाचादी) जीयो द्युं नैरियकतुं आयुप बांधे—इत्यादि पृच्छा. [૩०] हे गौतम ! तेओ नैरियक, तिर्यंच के मनुष्यतुं आयुष बांधता नथी, पण देवतुं आयुष बांधे છે.
- २२. [प्र०] हे भगवन् । जो तेओ देवनुं आयुप बांधे तो शुं भवनवासी देवनुं आयुप बांधे--इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ भवनवासी देवनुं बानव्यंतर देवनुं के ज्योतिषिक देवनुं आयुप बांधता नथी, पण वैमानिक देवनुं आयुप बांधे छे. केवलज्ञानीने लेक्सारिहत जीवोनी पेठे जाणवुं. अज्ञानी, यावत्-विभंगज्ञानीने कृष्णपाक्षिकोनी जेम समजवुं. चारे संज्ञामां उपयोगवाळ जीवोने लेक्सा-वाळा जीवोनी जेम समजवुं. नोसंज्ञामां उपयोगवाळा जीवोने मनःपर्यवज्ञानीनी जेम जाणवुं. वेदवाळा अने यावत्---नपुंसकवेदवाळाने लेक्सावळानी जेम अने वेद विनाना जीवोने लेक्सारिहत जीवोनी पेठे समजवुं. कषायवाळा अने यावत्--लोमकषायवाळा जीवोने लेक्सा-

दगा जहा महेस्सा । सकसायी जाव-होभकसायी जहा सहेस्सा । धकसायी जहा महेस्सा । सयोगी जाव-काययोगी जहा सहेस्सा । अजोगी जहा महेस्सा । सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य जहा सहेस्सा ।

२३. [प्र०] किरियावादी णं भंते! नेरहया कि नेरहयाउयं-पुष्का । [उ०] गोयमा ! नो नेरहयाउयं०, नो तिरिक्ता०, मणुस्साउयं पकरेह, नो देवाउयं पकरेह ।

२४. [प्र॰] अकिरियावादी णं मंते! नेरह्या-पुष्छा । [ड॰] गोयमा ! नो नेरह्याउयं॰, तिरिक्सजोणियाउयं पकरेह, मणुस्साउयं पि पकरेह, नो देवाउयं पकरेह । एवं अक्षाणियवादी वि, वेणह्यवादी वि ।

२५. [प्र०] सलेस्सा णं भंते! नेराया किरियावादी कि नेरायाउयं० ? [उ०] एवं सब्वे वि नेराया जे किरियावादी ते मणुस्साउयं एगं एकरेर, जे अकिरियावादी, अम्राणियवादी, वेणद्वयवादी ते सब्द्वाणेसु वि नो नेरायाउयं एकरेर, तिरि-क्सजोणियाउयं पि एकरेर, मणुस्साउयं पि एकरेर, नो देवाउयं एकरेर, । नवरं सम्मामिच्छचे उवरिद्धेदि दोहि वि समोसरणेदि न किंचि वि एकरेर जहेव जीवएवे। एवं जाव-धणियकुमारा जहेव नेराया।

२६. [प्र॰] अकिरियावादी णं मंते! पुढविकार्या-पुच्छा । [उ०] गोयमा! नो नेरायावयं पकरेर, तिरिक्कजोणि-याउयं॰, मणुस्साउयं॰, नो देवाउयं पकरेर् । एवं अज्ञाणियवादी वि ।

२७. [प्र०] सलेस्सा णं मंते १०? [उ०] एवं जं जं पदं अत्थि पुढिवकाइयाणं तिहं तिहं मिन्हमेसु दोसु समोसरणेसु एवं चेव दुविहं आउयं पकरेइ। नवरं तेउलेस्साप न कि पि पकरेइ। एवं आउकाइयाण वि, एवं वणस्सइकाइयाण वि। तेउका-इआ वाउकाइआ सबट्टाणेसु मिन्हमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरहयाउयं पकरेइ, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेइ, नो मणुस्सा-उयं०, नो देवाउयं पकरेइ। वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं जहा पुढिवकाइयाणं। नवरं सम्मत्त-नाणेसु न एकं पि आउयं पकरेइ।

वाळा जीवोनी जेम जाणतुं. क्षपायरिहत जीवोने लेक्स्यारिहत जीवोनी जेम जाणतुं. योगवाळा अने यावत्—काययोगवाळा जीवो लेक्स्या-वाळा जीवोनी जेम जाणवा. योगरिहत जीवोने लेक्स्यारिहत जीवोनी पेठे समजतुं. साकारोपयोगवाळा अने अनाकारोपयोगवाळाने लेक्स्यावाळा जीवोनी जेम जाणतुं.

कियावादी नैरियकोः ने मायुषवन्ध

अफ्रियावादी नैरयि-कोने आयुषयन्थः

सहेदय कियावादी नैर्विकोने आयुष- २३. [प्र॰] हे भगवन् ! क्रियावादी नैरियको शुं नैरियकनुं आयुप बांधे—इत्यादि पृष्छा. [उ॰] हे गीतम ! तेओ \*नैरियकनुं आयुप, तिर्यचनुं आयुप अने देवोनुं आयुष बांधता नथी, पण मनुष्यनुं आयुष बांधे छे.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! अकियावादी नैरियको द्यां नैरियकतुं आयुष बांधे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियक सने देवतुं आयुष बांधता नथी, पण तिर्यंच सने मनुष्यतुं आयुष बांधे छे. ए प्रमाणे अङ्गानवादी अने विनयवादी संबंधे पण जाणतुं.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! लेदयावाळा क्रियावादी नैरियको द्युं नैरियकतुं आयुष बांधे—हत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! जे नैरियको क्रियावादी छे तेओ बधा एक मनुष्यनुं ज आयुष बांधे छे; अने जेओ अक्रियावादी, अज्ञानवादी अने विनयवादी छे तेओ बधां स्थानोमां पण नैरियक अने देवनुं आयुष बांधता नथी, पण तिर्यंच अने मनुष्यनुं आयुष बांधे छे. पण विशेष ए के, सम्यिग्मध्यादृष्टि उपरनां अज्ञानवादी अने विनयवादी—ए बे समवसरणमां जेम जीवपदमां कह्युं छे तेम कोइ पण आयुषनो बन्ध करतो नथी. जेम नैरियकोने कह्युं तेम यावत्—स्तनितकुमारोने पण समजदुं.

अकियावादी पृथिवी काथिकोने आयुष वन्धः

२६. [प्र०] हे भगवन् ! अक्रियावादी पृथिवीकायिको ज्ञुं नैरियकतुं आयुष बांधे—इत्यादि पृष्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियकतुं भने देवतुं आयुप नथी बांधता, पण तिर्थैच भने मतुष्यतुं आयुष बांधे छे. ए प्रमाणे अङ्गानवादी संबंधे पण समजवुं.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! लेश्यावाळा पृथिवीकायिको संबन्धे पृच्छा. [उ०] ए प्रमाणे जे जे पद पृथिवीकायिक संबंधे होय ते ते पद संबंधी वश्चेना (अिकयावादी अने अज्ञानवादीना) वे समवसरणोगां पूर्वे कह्या प्रमाणे वे प्रकारनुं मनुष्यायुष अने तिर्यंचायुष बांधे छे. परन्तु । तेजोलेश्यामां कोइ पण आयुपनो बन्ध करतो नथी. ए रीते अप्कायिक अने वनस्पतिकायिक संबंधे पण समजबुं. अग्निकाय अने वायुकाय बधां स्थानोमां वचलां वे समवसरणोने आश्रयी नैरियक, मनुष्य अने देवनुं आयुष बांधता नथी, पण मात्र तिर्यंचनुं आयुष बांधे छे. वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चलरिद्रिय जीवोने पृथिवीकायिकोनी पेठे जाणबुं, पण इसम्यक्त्व अने ज्ञानमां तेओ एक पण आयुषनो बन्ध करता नथी.

२३ \* कियावादी नारको नारकभवस्त्रभावयी नैरियश्चयुष अने देवायुष बांधता नथी. अने तिर्यंचायुष बांधता नथी ते कियावादना स्वभावयी जाणवुं. बाकीना अकियावादादि त्रण समनसरणमा नारकोने सर्वत्र तिर्यंचायुष अने मनुष्यायुषनो ज बन्ध होय छे. सम्यग्निभ्यादृष्टि नारकोने छेत्रां वे समवसरणो होय छे, पण गुणस्थानकना समावयी तेओने कोई पण आयुषनो बन्ध यतो नथी.—टीका.

२० 1 प्रियंशिकाथिकोने अपर्यासावस्थामां ज इन्द्रियपर्यासि पूरी यथा पहेला तेजोलेश्या होय छ अने इन्द्रियपर्यासि पूरी वया पछी ज परभवनुं आयुव वंशाय छे माटे तेजोलेश्याना अभावमां ज आयुवनो बन्ध याय छे.-टीका.

<sup>्</sup>री बेहिन्द्रियादिने साखादन होवाणी सम्यक्त्य अने ज्ञान होय छे, परन्तु तेनो अस्य काळ होवाणी ते समये आयुषनो बन्ध यतो नची, साटे सम्यक्त्य अने ज्ञानना अभावमां आयुषनो बन्ध याय छे.-टीका.

- २८. [प्र॰] किरियावादी र्णं अंते ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया कि नेरायाउयं पकरेर-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! जहा मणपञ्जवनाणी । अकिरियावादी अन्नाणियवादी वेणायवादी य चेउन्निहं पि पकरेर । जहा ओहिया तहा सलेस्सा वि ।
- २९. [त्र०] कण्डलेस्सा णं संते! किरियावादी पंचिदियतिरक्जजोणिया कि नेरह्यालयं-पुच्छा। [त्र०] गोयमा! नो नेरह्यालयं पकरेह, णो तिरिक्क०, नो मणुस्सालयं०, नो देवालयं पकरेह। अकिरियावादी अञ्चाणियवादी वेणह्यवाई चलिहें पि पकरेह। जहा कण्डलेस्सा एवं नीललेस्सा वि, काललेस्सा वि, तेललेस्सा जहा सलेस्सा। नवरं अकिरियावादी, अञ्चाणियवादी, वेणह्यवादी य णो नेरह्यालयं पकरेह, देवालयं पि पकरेह, तिरिक्कजोणियालयं पि पकरेह, मणुस्सालयं पि पकरेह। एवं पम्हलेस्सा वि, एवं सुक्कलेस्सा वि माणियहा। कण्डपिक्या तिर्हि समोसरणेहि चलिहें पि जालयं पकरेह। सुक्कपिक्या जहा सलेस्सा। सम्मदिट्टी जहा मणपञ्चवनाणी तहेव वेमाणियालयं पकरेह। मिच्छिदिट्टी जहा कण्डपिक्या। सम्मामिच्छादिट्टी ण य पक्कं पि पकरेह जहेव नेरह्या। णाणी जाव—मोहिनाणी जहा सम्मदिट्टी। मन्नाणी जाव—विमंगनाणी जहा कण्डपिक्या। सेसा जाव—मणागरीवल्या सबे जहा सलेस्सा तहा चेव माणियहा। जहा पंचित्रतिरिक्कजोणियाणं वच्चवा मणिया एवं मणुस्साण वि माणियहा, नवरं मणपञ्चवनाणी नोसन्नोवल्या य जहा सम्महिट्टी तिरिक्कजोणियाणं वच्चवा मणियहा। अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसायी अयोगी य एए न एगं पि आलयं पकरेह। जहा जोहिया जीहा सेसं तहेव। वाणमंतर—जोहसिय—वेमाणिया जहा असुरकुमारा।
- ३०. [प्र॰] किरियावादी णं भंते ! जीवा किं मवसिद्धीया अभवसिद्धीया ! [७०] गोयमा ! मवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया।
- ३१. [प्र॰] अकिरियावादी णं मंते! जीवा कि मवसिद्धीया-पुच्छा । [उ॰] गोयमा! भवसिद्धीया वि, अमवसिद्धीया वि । एवं अञ्चाणियवादी वि, वेणायवादी वि ।
- २८. [प्र०] हे मगवन् ! क्रियावादी पर्चेदिय तियँचयोनिक जीवो द्युं नैरियक्तुं आयुष बांधे—इस्मादि प्रच्छा. [उ०] हे गौतम ! मनःपर्यवद्यानीनी ऐठे जाणबुं. अक्रियावादी, अज्ञानवादी अने विनयवादी पंचेंदिय तियँचयोनिक जीवो चारे प्रकारना आयुषनो बन्ध करे छे. लेक्यावाळा जीवो औषिक पंचेन्दिय तियँचयोनिकनी ऐठे कहेवा.

कियाबादी पं॰ ति यें चने आयुषनी बन्ध.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा क्रियावादी पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक जीवो शुं नैरियेकनुं आयुष वांधे—हलादि पृष्छाः [उ०] हे गीतम ! तेओ "नैरियक, तिर्यंच, मनुष्य के देवनुं आयुष वांधता नथी. अक्रियावादी, अक्कानवादी अने विनयवादी चारे प्रकारना आयुपने वांधे छे. जेम कृष्णलेश्यावाळाने कहां तेम नीटलेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळाने समजवुं. 'लेश्यावाळानी जम तेजोलेश्यावाळा जाणवाः परन्तु अक्रियावादी, अक्कानवादी, अने विनयवादी नैरियकनुं आयुष वांधता नथी, पण देवनुं, तिर्यंचनुं अने मनुष्यनुं आयुष वांधे छे. ए रीते पद्मलेश्यावाळा तथा शुक्कलेश्यावाळाने पण कहेवुं. कृष्णपाक्षिक त्रण (क्रियावादी सिवाय वाकीनां) समवसरणो वढे चारे प्रकारनुं आयुष वांधे छे. शुक्रपाक्षिकने लेश्यावाळानी पेठे जाणवुं. सम्यग्दष्टि मनःपर्यवज्ञानीनी जेम वैमानिकनुं आयुष वांधे छे. कृष्णपाक्षिकोनी जेम मिथ्यादिष्ट जाणवाः सम्यग्दिष्टि एक पण आयुप वांधता नथी, अने तेओने नैरियकोनी जेम खेलुं वे समवसरणो जाणवाः क्रानी अने यावत्—अवधिक्वानी सम्यग्दिष्टिनी जेम जाणवाः अक्वानी अने यावत्—विभंगक्षानी कृष्णपा-क्षिकोनी जेम जाणवाः वाकीना यावत्—अनाकार उपयोगवाळा सुधी बधाने लेश्यावाळानी जेम जाणवुं. जेम पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिकानी वक्तव्यता कही छे एम मनुष्योनी पण वक्तव्यता कहेवीः परन्तु मनःपर्यवज्ञानी अने नोसंज्ञामां उपयुक्त जीवोने सम्यग्दिष्ट तिर्यंचयोनिकानी जेम जाणवुं. लेश्यारिहत, केवळ्जानी, वेदरिहत, कषायरिहत अने योगरिहत जीवो औधिक जीवोनी जेम आयुप वांधता नथीः बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकाने असुरकुमारोनी जेम समजवुं.

क्रुप्पहेब्याबाळा कि-यावादी एं० तिर्यंच-ने जायुषनो बन्ध-

३०. [प्रo] हे भगवन् ! शुं क्रियावादी जीवो भवसिद्धिक छे के अभवसिद्धिक छे ! [उo] हे गीतम ! तेओ भवसिद्धिक छे पण अभवसिद्धिक नथी.

कियावादी भव्य के अभव्य है

३१. [प्र०] हे भगवन् ! क्युं अक्रियावादी जीवो भवसिद्धिक छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ भवसिद्धिक पण छे अने अभवसिद्धिक पण छे. ए ज रीते अज्ञानवादी अने विनयवादी संबंधे पण समजवं.

अकियानादी भव्य के समस्य !

<sup>।</sup> चढहिं पि श−छ ।

२९ <sup>क</sup> ज्यारे सम्यग्दिष्ट पंचेन्द्रिय तिर्यंच कृष्णादि अञ्चभ केर्याना परिणामनाळा होय छे त्यारे तेओ कोइ पण आयुषनो बन्ध करता नची अने तेकोकेर्यादि शुभ परिचामनाळा होय छे स्वारेज केवळ देमानिकायुषनो चन्ध करे छे.-टीका.

<sup>ी</sup> तेओछेरयाबाळाने केर्याबाळानी पेठे आयुषमो बन्ध जाणको एटले कियाबादी वैमानिकायुष ज बांघे अने बीजा श्रण समवसरणवाळा चारे अकारतुं आयुष बांधे, कारणके केर्याबाळाने ए प्रमाणे आयुषनो बन्ध कहेलो छे.

- ३२. [प्र॰] सलेस्सा णं मंते ! जीवा किरियावादी कि मव-पुष्छा । [४०] गोयमा ! भवसिद्धीया, नो समवसिद्धीया।
- ३३. [प्र॰] सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी कि मव-पुष्छा । [उ॰] गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धी-या वि । एवं अज्ञाणियवादी वि, वेणश्यवादी वि जहा सलेस्सा । एवं जाव-सुकलेस्सा ।
- ३४. [प्र०] अलेस्सा णं अंते! जीवा किरियावादी कि म य-पुच्छा। [उ०] गोयमा! मवसिद्धीया, नो अमवसि-द्धीया। एवं एएणं अमिलावेणं कण्हपिक्स्या तिसु वि समोसरणेसु भयणाय। सुक्रपिक्स्या खडसु वि समोसरणेसु भवसि-द्धीया, नो अमवसिद्धीया। सम्मदिट्टी जहा अलेस्सा। मिच्छाविट्टी जहा कण्हपिक्स्या। सम्मामिच्छाविट्टी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा। नाणी जाव-केवलनाणी भवसिद्धीया, नो अमवसिद्धीया। अन्नाणी, जाव-विभंगनाणी जहा कण्डपिक्स्या। सन्नासु खडसु वि जहा सलेस्सा। नोसन्नोवज्ञता जहा सम्मदिट्टी। सवेदगा जाव-नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा सम्मदिट्टी। सकसायी, जाव-लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा सम्मदिट्टी। सागोपी जाव-कायजोगी जहा सलेस्सा। अयोगी जहा सम्मदिट्टी। सागारोवज्ञता अणागारोवज्ञता जहा सलेस्सा। एवं नेरहया वि माणियहा, नवरं नायवं जं अत्य। एवं असुरकुमारा वि जाव-थणियकुमारा। पुढविकाह्या सब्दुगणेसु वि मजिसलेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं जाव-वणस्सह्काह्या। वेदंदिय-वेदंदिय-चडरिंदिया एवं चेव। नवरं संमत्ते ओहि-नाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे एएसु चेव दोसु मजिसमेसु समोसरणेसु मवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया, सेसं तं चेव। पंचिदियतिरिक्सजोणिया जहा नेरहया। नवरं नायवं जं अस्थ। मणुरसा जहा ओहिया जीवा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमा-णिया जहा असुरकुमारा। 'सेवं मंते! सेवं मंते! सेवं मंते'! कि।

#### तीसहमे सए पढमो उहेसो समत्तो ।

सडेश्य कियाबादी भन्य के अभव्य र

३२. [प्र०] हे भगवन् ! लेश्यावाळा क्रियावादी जीवो छुं भवसिद्धिक छे के अभवसिद्धिक छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ भवसि-द्धिक छे, पण अभवसिद्धिक नथी.

सकेरय अकियावादी भव्य के अभव्य है

३२. [प्र०] हे भगवन् ! लेश्यावाळा अक्रियावादी जीवो द्यं भवसिद्धिक छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ भवसिद्धिक पण छे अने अभवसिद्धिक पण छे. एम अज्ञानवादी अने विनयवादी संबंधे पण जाणवुं. जैम लेश्यावाळा कहा। तेम [कृष्णलेश्यावाळा ] यावत्—द्युक्कलेश्यावाळा पण समजवा.

हेश्यारहित किया-वादी भन्य के सभन्य ?

२४. प्रि. है भगवन् ! लेश्यारहित कियावादी जीवो हा भवसिदिक छे के अभवसिदिक छे! उि. है गौतम ! तेओ मब-सिद्धिक छे, पण अभवसिद्धिक नथी. ए प्रमाणे ए अभिलापबढे कृष्णपाक्षिक जीवो [क्रियावादी सिवायना ] त्रणे समवसरणोमां विकल्पे (भवसिद्धिक ) जाणवा. ग्राक्कपाक्षिक जीवो चारे समवसरणोमां भवसिद्धिक छे, पण अभवसिद्धिक नथी, सम्यन्दृष्टि लेश्या विनाना जीवोनी जेम जाणवा, मिध्यादृष्टि कृष्णपाक्षिकोनी जेम जाणवा अने सम्यग्मिध्यादृष्टि (मिश्रदृष्टि), अञ्चानवादी अने विनयवादी-ए बने समनसरणोमां लेश्यारहित जीवोनी जेम (भवसिद्धिक ) जाणवा. ज्ञानी अने यावत्—केवल्ज्ञानी जीवो भवसिद्धिक जाणवा, पण अभवसिद्धिक न जाणवा. अज्ञानी अने यावत्-विभंगज्ञानी जीवो कृष्णपाक्षिकनी जेम बने प्रकारना समजवा. आहारसंज्ञामां, यावत् परि-प्रहसंज्ञामां उपयोगवाळा लेक्यावाळा जीवोनी जेम जाणवा. नोसंज्ञामां उपयुक्त जीवो सम्यग्दृष्टिनी जेम जाणवा. वेदवाळा अने यावत्-नपुंसकवेदवाळा लेक्यावाळानी जेम बने प्रकारना जाणवा. वेदरहित जीवो सम्यग्द्रष्टिनी पेठे समजवा. कथायवाळा अने यावत-छोभक्यायवा-ळाने लेश्यावाळानी जेम जाणबुं. कषायरहित जीवोने सम्यग्दृष्टि जीवोनी जेम जाणबुं. योगवाळा, यायत्-काययोगवाळा जीवोने सम्यग्दृष्टि जीवोनी जेम समजवा. साकार-ज्ञानपयोगवाळा अने अनाकार-दर्शनोपयोगवाळा जीवो लेक्स्यायुक्त जीवोनी जेम जाणवा, ए प्रमाणे नैरियको पण कहेवा. विशेष ए के, जेने जे होय तेने ते जाणवुं. ए रीते अञ्चरकुमारो अने यावत्–स्तनितकुमारो संबंधे पण जाणवुं. पृथिवीका-यिको बधा स्थानकोमां वचटा बन्ने समयसरणोमां भवसिद्धिको अने अभवसिद्धिको होय छे. ए रीते यावत्—वनस्पतिकायिको सुची सम-जबुं. बेइंदिय, तेइंदिय अने चउरिन्द्रिय संबंधे पण एज रीते जाणवुं. विशेष ए के, तेओने सम्यक्त्य, अवधिज्ञान, मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानमां बने वचर्या समवसरणोने आश्रयी भवसिद्धिको कहेवा, पण अभवसिद्धिको न कहेवा. बाकी बधुं पूर्वे कहा। प्रमाणे जाणवुं. पंचेन्द्रिय निर्यंचयोनिकोने नैरियकोनी जेम समजवुं. विशेष ए के, जेने जे होय तेने ते जाणवुं. मनुष्योने शौधिक जीवोनी जेम समजवुं. वानन्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने असरकुमारोनी जेम समजवं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### त्रीश्रमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

#### बीओ उद्देसी।

- १. [प्र०] क्षणंतरोववक्रमा णं संते ! नेरहया कि किरियावादी-पुष्छा [उ०] गोयमा ! किरियावादी वि, जाव-वेण-इयवादी वि।
- २. [प्र॰] सलेस्सा णं मंते ! अणंतरोववक्षमा नेरहया कि किरियावादी ? [उ॰] एवं चेव, एवं जहेव पढमुद्देसे नेरहयाणं वस्तवया तहेव इह वि माणियवा । नवरं जं जहस अख्यि अणंतरोववक्षमाणं नेरहयाणं तं तस्स भाणियवं । एवं सवजीवाणं जाव-वेमाणियाणं । नवरं अणंतरोववक्षमाणं जं जिहें अख्यि तं तिहें भाणियवं ।
- ३. [प्र॰] किरियावाई णं भंते! अणंतरोववक्षणा नेरदया कि नेरदयाज्यं पकरेद-पुच्छा । [उ॰] गोयमा! नो नेरदया-उयं पकरेंति, नो तिरि॰, नो मणु॰, नो देवाज्यं पकरेद । एवं अकिरियावादी वि अन्नाणियवादी वि वेणदयवादी वि ।
- थ. [प्र॰] सळेस्सा णं भंते ! किरियावादी अणंतरोववक्षमा नेरदया कि नेरदयाउयं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! नो नेर-इयाउयं पकरेद, जाब-नो देवाउयं पकरेद्द । एवं जाब-वेमाणिया । एवं सबद्वाणेसु वि अणंतरोववक्षमा नेरदया न किंचि वि आउयं पकरेति जाब-अणागारोवउचित्त । एवं जाब-वेमाणिया, नवरं जं जस्स अस्थि तं तस्स माणियवं ।
- ५. [प्र॰] किरियाबादी णं मंते! अणंतरोषवद्मना नेरहया कि भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया ? [उ॰] गोयमा! भवसि-द्धिया, नो अभवसिद्धिया।
- ६. [प्र॰] अकिरियावादी णं-पुच्छा । [७०] गोयमा ! मवसिद्धिया वि , अभवसिद्धिया वि । एवं अन्नाणियवादी वि वेणस्यवादी वि ।
- ७. [प्र०] सहेस्सा णं मंते ! किरियाचादी अणंतरोववज्ञगा नेरहया कि अवसिद्धिया, अभवसिद्धिया ? [उ०] गोवमा ! भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया। एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए उद्देसए नेरहयाणं वत्तवया मणिया तहेव इह वि माणि-यद्या जाव-अणागारोवउत्तरि । एवं जाव-वेमाणियाणं । नवरं जं जस्स मत्थि तं तस्स माणियवं । इमं से लक्ष्यणं-जे किरि-

#### द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र॰] हे भगवन् ! अनंतरोपपन्नक (तुरत उत्पन्न थयेटा) नैरियको शुं कियावादी छे—हत्यादि पृच्छा. [उ॰] हे गौतम ! तेओ कियावादी पण छे अने यावत्—विनयवादी पण छे.

अनन्तरोषपत्र नेर-विकोने कियादा− दित्वादि-

- २. [प्र०] हे भगवन् ! लेश्यावाळा अनंतरोपपन्नक नैरियको द्यां क्रियावादी छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! जेम प्रथम उदेशकमां वक्तव्यता कही छे तेम अहीं पण कहेची. विशेष ए के, अनंतरोपपन्नक नैरियकोमां जेने जे संभवे तेने ते कहेवुं. ए प्रमाणे सर्व जीवो यावत्—वैमानिकोने पण समजवुं. विशेष ए के, अनन्तरोपपन्न जीवोने जे संभवे ते तेने कहेवुं.
- ३. [प्र॰] हे भगवन् ! क्रियावादी अनन्तरोपपन्नक नैरियको छुं नैरियकनुं आयुप बांधे-इत्यादि पृच्छा. [उ॰] हे गौतम ! तेओ नैरियक, तिर्यंच, मनुष्य के देवनुं आयुप बांधता नथी. एज रीते अक्रियावादी, अज्ञानवादी अने विनयवादी संबन्धे पण जाणुनुं.

क्रियायादी अनन्त-रोपपम नेरियकोने आयुष्यन्थः

- ४. [प्र०] हे भगवन् ! लेक्यावाळा अनन्तरोपपचक कियावादी नैरियको द्युं नैरियकतुं आयुष वांचे—इत्यादि पृष्ठा. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियकतुं यावत्—देवतुं आयुप बांधता नथी. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुधी समजवुं. ए रीते सर्व स्थानोमां अनन्त-रोपपचक नैरियको कोइ पण आयुषनो बन्ध करता नथी. ए प्रमाणे यावत्—अनाकार उपयोगवाळा जीवो सुधी जाणवुं. एम यावत्—विमानिको सुधी जाणवुं. विदेष ए के जेने जे होय ते तेने कहेवुं.
- ५. [प्र॰] हे भगवन् ! कियावादी अनन्तरोपपन्न नैरियको शुं भवसिद्धिक छे के अभवसिद्धिक छे ! [उ॰] हे गौतम ! तेओ अवसिद्धिक छे, पण अभवसिद्धिक नथी.

अनन्तरोपपत्र कियाः बादी नेर्रायको सच्य छे के अभन्य छे ।

- ६. [प्र॰] अक्रियाबादी संबंधे पृष्छा. [उ॰] हे गौतम ! तेओ भवसिद्धिक पण छे अने अभवसिद्धिक पण छे. ए प्रमाणे अज्ञान-बादी अने बिनयबादी संबंधे पण समजबं.
- ७. [प्र०] हे भगवन् ! लेक्याबाळा अनन्तरोपपन कियावादी नैरियको ग्रुं भवसिद्धिक छे के अभवसिद्धिक छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ भवसिद्धिक छे, पण अमवसिद्धिक नधी. ए प्रमाणे ए अभिकापथी जेम औदिक उदेशकमां नैरियकोनी वक्तव्यता कही तेम अहीं

यावादी सुक्रपिस्त्रया सम्मामिन्छिदिट्टीया एए सब्वे भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धीया, सेसा सब्वे भवसिद्धीया वि अभवसि-द्धीया वि । 'सेवं मंते! सेवं भंते'! ति ।

### तीसइमे सए बीओ उद्देसी समसी।

पण कहेवी अने ते यावत्—अनाकारोपयोगवाळा सुची समजवी. ए प्रमाणे यावत्—वैमानिको सुची जाणवुं. पण जेने जे होय तेने ते कहेवुं. आ तेनुं उक्षण छे—जे कियावादी, शुक्कपक्षिक, अने सम्यग्मिध्यादृष्टि तेओ बधा भवसिद्धिक होय \*छे पण अभवसिद्धिक होता नधी, अने वाकी वधा भवसिद्धिक पण होय छे अने अभवसिद्धिक पण होय छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### त्रीशमा शतकमां द्वितीय उदेशक समाप्त.

## तईओ उद्देसो ।

१. [प्र०] परंपरोवववागा णं संते! नेरहया किरियावादी० ? [उ०] एवं जहेव औहिओ उद्देसको तहेव परंपरोवव-कप्त वि नेरहयादीको तहेव निरवसेसं माणियवं, तहेव तियवंडगसंगहिओ। 'सेवं मंते! संवे मंते'! कि जाव-विहरह।

#### तीसहमे सए तईओ उदेसी समत्ती।

### तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] है भगवन् ! परंपरोपपन्नक नैरियको छुं क्रियावादी छे—इत्यादि पुच्छा. [उ०] हे गौतम ! जेम औषिक उदेशकमां कह्युं छे तेम परंपरोपपन्नक नैरियको संबंधे पण नैरियकथी मांडी (वैमानिक पर्यन्त) समग्र उदेशक (क्रियावादित्वादि, आयुषबन्ध अने भव्यामव्यत्वादिप्ररूपक) ते ज प्रकारे त्रण दंडक सिहत कहेवो. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

#### त्रीश्रमा शतकमां तृतीय उदेशक समाप्त.

#### ४-११ उद्देसगा।

१. पर्व पपणं कमेणं असेव वंधिसप उद्देसगाणं परिवाडी ससेव इदं पि जाव-अवरिमो उद्देसो। नवरं अणंतरा चत्तारि वि पक्रगमगा, परंपरा चत्तारि वि पक्रगमपणं। पर्व चरिमा वि अवरिमा वि पर्व चेव। नवरं अलेस्सो केवली अजोगी न अवद, सेसं तहेव। 'सेवं मंते! सेवं मंते'! ति। एए पक्रारस वि उद्देसगा। ४-११.

### तीसइमं समवसरणसयं समत्तं।

### ध-११ उद्देशको.

१. [प्र०] ए प्रमाणे ए क्रमघडे बंधिशतकमां उद्देशकोनी जे परिपाटी छे ते ज परिपाटी अहीं पण यावत्—अचरम उद्देशक धुषी जाणवी. विशेष ए के, 'अनंतर' शब्दघटित चारे उद्देशको एक गमवाळा छे अने 'परंपर' शब्दघटित चारे उद्देशको एक गमवाळा छे. ए रीते 'चरम' अने 'अचरम' शब्दघटित उद्देशको संबंधे पण समज्ञ हो. ए के लेश्यारहित, केवळ्ड्यानी अने अयोगी संबंधे अहीं कांइ पण न कहे हुं अने बाकी बधुं पूर्वे कहा। प्रमाणे जाणहुं. 'हे भगवन् । ते एमज छे, हे भगवन् । ते एमज छे' ए रीते अगियार उद्देशको कहेवा.

# त्रीशमा शतकमां ४-११ उदेशको समाप्तः त्रीशमुं समवसरण शतक समाप्त ।



 <sup>\*</sup> सम्यग्हिष्ट, ज्ञानी, अवेदी, अकवायी अने अयोगी ए पण भव्य ज होय छ, पण ते प्रसिद्ध होवादी तेनी अहीं परिगणना करी नदी.

### इकतीसइमं सयं।

#### पढमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] रायगिहे जाव-पवं वयासी-कित णं भंते । जुड़ा जुम्मा पत्रता । [उ०] गोयमा । जचारि खुड़ा जुम्मा पत्रता । तंजहा-१ कडजुम्मे, २ तेयोप, ३ दावरजुम्मे, ४ किल शेष । [प्र०] से केण्हेणं भंते । यवं दुष्ण 'चचारि खुड़ा जुम्मा पत्रता, तंजहा-कडजुम्मे, जाव-किल योगे' ? [उ०] गोयमा । जे णं रासी चउक्रपणं अवहारेणं अवहारे
- २. [प्रc] खुडुागकडजुम्मनेरह्या णं मंते ! कओ उचवजंति ? कि नेरहपहितो उचवजंति ? तिरिक्क-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नेरहपहितो उचवजंति । एवं नेरहयाणं उचवाओ जहा वर्कतीप तहा माणियस्रो ।
- ३. [प्र॰] ते णं मंते । जीवा एगसमएणं केवऱ्या उचवजंति ? [उ॰] गोयमा । चत्तारि वा अट्ट वा वारस वा सोळस वा संकेजा वा असंकेजा वा उचवजंति ।

## एकत्रीशमुं शतक.

### प्रथम उद्देशक.

१. [प्रत] राजगृह नगरमां यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन्! क्षुद्ध (नानां) युग्मो केटलां कहां छे ! [उ०] हे गौतम ! \*चार क्षुद्रयुग्मों कहां छे, ते आ प्रमाणे—१ कृतयुग्म, २ त्र्योज, २ हापरयुग्म अने ४ कल्योज. [प्र०] हे मगवन्! शा हेतुयी एम कहों छो के कृतयुग्म यावत्—कल्योजरूप चार क्षुद्ध युग्मों कहां छे ! [उ०] हे गौतम! जे संख्यामांथी चार चारनो अपहार करतां छेवटे चार बाकी रहे ते संख्याने क्षुद्ध कृतयुग्म कहेवाय छे. जे संख्यामांथी चार चारनो अपहार करतां छेवटे त्रण बाकी रहे ते संख्याने क्षुद्ध त्र्योज कहेवामां आवे छे. जे संख्यामांथी चार चारनो अपहार करतां छेवटे वे बाकी रहे ते संख्याने क्षुद्ध हापरयुग्म कहेवामां आवे छे. अने संख्यामांथी चार चारनो अपहार करतां छेवटे एक बाकी रहे ते संख्या क्षुद्ध कल्योज कहेवाय छे. ते कारणथी यावत्—कल्योज कहेवाय छे.

शुद्रयुग्मः चार् श्चद्र युग्मो कहेवानो देवुः

२. [प्र०] हे भगवन् ! क्षुद्र कृतयुग्म राशि प्रमाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! क्युं नैरियकोथी आवी उत्पन्न थाय छे ! तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरियकोथी आवी उत्पन्न थता नयी, [ पण पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने गर्भज मनुष्यथी आवी उत्पन्न थाय छे ]—इत्यादि नैरियकोनो उपपात जेम क्युंत्कान्ति पदमां कह्यों छे तेम अहीं जाणवो.

नेर्यिकोनो उपपातः

३. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! चार, आठ, बार, सोळ अथवा संख्याता के असंख्याता उत्पन्न याय छे.

उपपातसंस्या-

<sup>? &</sup>quot; लघु संख्याबाळा राशिविशेषने छुद्र सुरम कहे छे. तेमां सार, बाठ, बार बगेरे संख्याबाळा राशिने छुद्र इतयुग्म, त्रण, सात, अगियार बगेरे राशिने छुद्र त्र्योज, वे, छ बगेरे राशिने छुद्र द्वापरयुग्म अने एक, पांच बगेरे संख्याबाळा राशिने छुद्र कल्योज कहेवामां आवे छे.

३ ∱ जुओ प्रज्ञा• पद ६ प∙ २०४–२९८.

- ध. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा कहं उषवज्रंति ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्ञवसाण०-एवं जहा पंचविस्तिमे सप अट्टमुद्देसप नेरहयाणं वत्तवया तहेव इह वि माणियवा जाव-आयप्पभोगेणं उववर्ज्ञति नो परप्पयोगेणं उववर्ज्ञति ।
- ५. [प्र०] रयणप्पभापुदविखुङ्गागकङञ्जम्मनेरदया णं भंते ! कओ उषवर्जाति ? [उ०] पवं जहा ओहियनेरदयाणं वस्त-इया सम्बेव रयणप्पभाप वि भाणियद्या जाव--नो परप्पयोगेणं अववर्जाति । पवं सक्करप्पमाप वि जाव-अहेससमाप-पवं उववाओ जहा वर्कतीप । ''अस्सभी खलु पढमं दोचं व सरीसवा तद्दय पक्की''।--गाहाप उषवापयद्वा, सेसं तहेच ।
  - ६. [प्र॰] खुडुागतेयोगनेरह्या णं भंते ! कसो उचवर्जाति ! कि नेरहपहितो-! [उ॰] उचवाओ जहा वक्कंतीप ।
- ७. [प्र॰] ते णं मंते ! जीवा पगसमपणं केवर्या उववर्जाति ! [उ॰] गोयमा ! तिश्रि वा सत्त वा पकारस वा पन्नरस वा संखेजा वा असंखेजा वा उववर्जाति । सेसं अहा कडजुम्मस्स, एवं जाव—अहेसन्तमाप ।
- ८. [४०] खुड्डागदावरजुम्मनेरस्या णं भंते ! कओ उचवर्ज्जति ! [उ०] पवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे । नवरं परिमाणं दो वा छ वा दस वा चोड्स वा संकेजा वा असंकेजा वा, सेसं तं चेव जाव-अहेसरामाप ।
- ९. [प्र०] खुड्डागकिलओगनेरद्या णं भंते ! कथो उचवर्जाति ? [उ०] एवं जहेव खुड्डागकडनुम्मे । नवरं परिमाणं एको वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेजा वा असंखेजा वा उचवर्जाति—सेसं तं चेव । एवं जाव—अहेससमाए । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि २ जाव—विहरति ।

#### इकतीसइमे सए पढमो उद्देसी समची।

उपपातनो मकार-

४. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो केवी रिते उपजे ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई कूदनार कूदतो [ पोताना पूर्वना स्थानने छोडी आगळना स्थानने प्राप्त करे तेम नारको पण पूर्ववर्ती भवने छोडी अध्यवसायरूप कारण वढे आगळना भवने प्राप्त करे छे ]— इस्थादि पचीशमा शतकना थाठमा उदेशकमां नैरियको संबंधे जे वक्तव्यता कही छे ते अहीं पण कहेवी. यावत्—ते आत्मप्रयोगयी उत्पन्न थाय छे, पण परप्रयोगयी उत्पन्न थता नथी.

रहमभा नैरयिकोनो उपपान-

५. [प्र०] हे भगवन् । क्षुद्र कृतयुग्मराशि प्रमाण रत्नप्रभाना नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि पृच्छा. [७०] हे गौतम ! जेम सामान्य नैरियकोनी वक्तव्यता कही छे तेम रत्नप्रभाना नैरियकोनी पण कहेवी. यावत्—ते परप्रयोगथी उपजता नथी. एम शर्कराप्रभा अने यावत्—अधःसप्तम पृथिवी संवंधे पण जाणवुं. ए रीते \*व्युत्जान्ति पदमां कह्या प्रमाणे अहीं उपपात कहेवो. 'असंज्ञी जीवो पहेली नरक सुधी, सर्पो बीजी नरक सुधी अने पक्षीओ त्रीजी नरक सुधी जाय छे'—इत्यादि गाथा वडे उपपात कहेवो. वाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे कहेवुं.

श्रुद्र त्र्योजराति-प्रमाण नैर्यकोनो उपपात- ६. [प्र०] हे भगवन् ! क्षुद्र त्र्योजराशि प्रमाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ! शुं नैरियकोयी आवी उत्पन्न थाय-इत्या-दि पृच्छा. [उ॰] हे गोतम <sup>\*</sup>व्युत्कान्तिपदमां कह्या प्रमाणे उपपात कहेवो.

उपपानसंख्याः

७. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय ? [उ॰] हे गौतम ! त्रण, सात, अगियार, पंदर, संख्याता के असंख्याता उत्पन्न याय छे. बाकी बधुं कृतयुग्म नैरियकोनी पेठे जाणबुं. ए प्रमाणे यात्रत्— सप्तम नरकपृथिवी सुधी जाणबुं.

धुद द्वापरयुग्म नै-रियकोनो खपपात-

८. [प्र०] हे भगवन्! क्षुद्र द्वापरयुग्म प्रमाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय—इत्यादि पृच्छा. [उ०] जेम क्षुद्र कृतयुग्म संबंधे कह्युं छे तेम आ संबंधे पण समजवुं. परन्तु परिमाण—वे, छ, दश्चा, चौद, संख्याता के असंख्याता उत्पन थाय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्—अधःसप्तम नरकपृथिवी सुधी जाणवुं.

क्षद्रकस्थोज नैरपि-कोनो उपपातः ९. [प्र०] हे भगवन् ! क्षुद्र कल्योज राशि प्रमाण नैरियको क्यांथी आत्री उत्पन्न थाय—इस्यादि पृच्छा. [उ०] जेम क्षुद्र कृतयुग्म संबंधे कह्युं छे तेम आ संबंधे पण समजवुं. परन्तु परिमाणमां एक, पांच, नव, तेर, संख्याता अथवा असंख्याता उत्पन्न थाय छे. बाकी क्युं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्—सातमी नरकपृथिवी सुधी समजवुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एम ज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

### एकत्रीशमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

### बीओ उद्देसी।

- १. [प्र॰] कण्डलेस्सखुद्वागकडज्जम्मनेरस्या णं मंते ! कओ उववज्जंति ! [उ॰] एवं चेव जहा ओहियगमो जाव-तो परप्ययोगेणं उववज्जंति । नवरं उववाओ जहा वक्कंतीय धूमप्पमापुटविनेरस्याणं, सेसं तं चेव ।
- २. [प्र०] भूमप्पमापुद्वविकण्डलेस्सखुड्डागकडज्जम्मनेरद्दया णं मंते ! कथ्रो उववर्ज्जति ! [उ०] एवं चेव निरवसेसं । एवं तमाए वि, अहेससमाए वि । नवरं उववाध्रो सद्दत्य जहा वर्क्कतीए ।
- ३. [४०] कण्हलेस्सलुङ्गगतेओगनेरदया णं मंते ! कओ उववज्ञंति ? [उ०] एवं चेव, नवरं तिश्रि वा सत्त वा एका-रस वा पन्नरस वा संकेजा वा असंकेजा वा, सेसं तं चेव । एवं जाव-अहेसत्तमाए वि ।
- धः [प्र॰] कण्हलेस्सखुद्वागदावरज्ञम्मनेरस्या णं मंते ! कभो उत्तवर्क्काति ! [उ॰] एवं चेव । नवरं दो वा छ वा दस वा चोइस वा, सेसं तं चेव, धूमण्यभाप वि जाव-अहेसत्तमाप ।
- ५. [प्र॰] कण्डलेस्सखुड्डागकलियोगनेरहया णं मंते ! कभो उववज्रंति ! [उ॰] एवं चेव । नवरं एको घा एंच वा नव या तेरस वा संखेखा वा असंखेखा वा, सेसं तं चेव । एवं धूमप्पमाए चि, तमाए चि, अहे सत्तमाए वि। 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! सिवं

#### इकतीसइमे सए बीओ उदेसो समसो।

#### द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र॰] हे भगवन् ! क्षुद्रकृतसुरमराशिप्रमाण कृष्णलेक्यावाळा नैरियको क्यांथी आत्री उत्पन्न थाय छे—इत्सादि पृष्का. [उ॰] औषिक-सामान्य गममां कह्या प्रमाणे अहीं पण जाणबुं, यावत्—परप्रयोगधी उपजता नथी. पण विशेष ए के, \*ब्युक्तांतिपदमां कह्या प्रमाणे उपपात कहेवो अने धूमप्रभाष्ट्रियीना नैरियको संबन्धे प्रश्न उत्तर वगेरे बाधी बधुं पूर्व कह्या प्रमाणे जाणबुं.

ध्रहकृतयुग्म कृष्ण-लेक्याबाळा नैरयि-कोनो उपपातः

- २. [प्र॰] हे भगवन् ! क्षुद्रकृतयुग्मराशिप्रमाण कृष्णलेश्यावाळा धूमप्रभाष्ट्रियिवीना नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न याय-इत्यादि पृष्ट्या. [उ॰] पूर्व प्रमाणे बधु जाणवुं. ए रीते तमःप्रभा अने अधःसप्तम नरकपृथिवी संबंधे पण समजवुं. पण विशेष ए के, बधे स्थळे उपपात संबंधे क्ष्युत्क्रांतिपदमां कह्या प्रमाणे जाणवुं.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! क्षुद्रत्र्योजराशिप्रमाण कृष्णलेश्याबाळा नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे—इत्यादि पृष्छा. [उ०] उपर कह्या प्रमाणे जाणतुं. पण विशेष ए के, त्रण, सात, अगियार, पंदर, संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं पूर्ववत् जाणतुं. एम यावत्—सधःसप्तम पृथिवी सुधी जाणतुं.

क्रणण् धुद्रव्योज नैरयिकोनो उपपात

४. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा क्षुद्रद्वापरयुग्मराशिप्रमाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न याय—इत्यादि पृच्छा. [उ०] एज प्रमाणे जाणवुं. पण विशेष ए के, बे, छ, दश के चौद (संख्याता के असंख्याता ) आवी उत्पन्न थाय छे. वाकी बर्धु पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे धूमप्रमा यावत्—अधःससम पृथिवी सुची पण जाणवुं.

कृष्ण० धुद्रद्वापर-युग्म नेरियकोनी उपपात-

५. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेखावाळा क्षुद्रकल्योजराशिप्रमाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौनम ! एज प्रमाणे जाणवुं. पण विशेष ए के, एक, पांच, नव, तेर, संख्याता अथवा असंख्याता उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे धूमप्रभा, तमःप्रभा अने अधःसाम नरकपृथिवी संबंधे पण समजवुं. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

कृष्ण० श्रुद्दकस्योज नैर्ययकोनो उपपात-

### एकत्रीश्रमा शतकमां नीजी उद्देशक समाप्त.

## तईओ उद्देसो।

१. [प्र॰] नील्लेस्सखुद्दागकदञ्चम्मनेरस्या णं मंते ! क्रओ उववज्जंति ? [उ॰] एवं जहेव कण्हलेस्सखुद्दागकडज्जमा । नवरं जववाको जो वालुयप्पभाष, सेसं तं चेव । वालुयप्पभाषुद्दविनील्लेस्सखुद्दागकडज्जम्मनेरस्या एवं चेव, एवं पंकप्पभाष

### तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे मगवन् । नीललेश्यावाळा क्षुद्रककृतयुग्मप्रमित नैरियको क्यांची आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] कृष्णलेश्यावाळा क्षुद्र-कृतयुग्म नैरियको संबंधे कह्युं छे ते ज प्रमाणे अहीं पण जाणवुं. परन्तु विशेष ए के वालुकाप्रभामां जे उपपात कह्यो छे ते प्रमाणे अहीं कहेवुं. बाकी बधुं तेज रीते समजवुं. नीललेश्यावाळा क्षुद्रककृतयुग्मप्रमित नैरियकोने पण एज रीते जाणवुं. ए प्रमाणे पंकप्रभा अने धूमप्रमा संबंधे

नीरू॰ भुदक्तयुग्म-नेर्यथकोनो उपपात. यालुकापमा.

१-२ \*प्रज्ञा॰ यद ६ प॰ २०४-२१८.

४० म० स्०

षि, एवं धूमण्यमाए वि । एवं चउसु वि ज्ञुम्मेसु । नवरं परिमाणं जाणियद्यं । परिमाणं जहा कण्हलेस्सउद्देसए । सेसं तहेव । 'सेवं भंते ! सेवं मंते' ! सि ।

### इकतीसहमे सए तईओ उदेसी समत्ती।

पण जाणवुं. एम चारे युग्मोमां समजवुं. पण विशेष ए के, जेम कृष्णलेश्याना उद्देशकमां कह्युं छे तेम परिमाण जाणवुं. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### एकत्रीशमां शतकमां तृतीय उदेशक समाप्त.

### चउत्थो उद्देसो ।

- १. [प्र॰] काउलेस्सखुद्दागकडज्जम्मनेरस्या णं भंते ! कओ उववज्रंति ? [उ॰] एवं जहेव कण्हलेस्सखुद्दागकडज्जम्म॰, नवरं उववाओ जो रयणण्यभाए; सेसं तं चेव ।
- २. [प्र०] रयणप्पमापुद्धविकाउलेस्सखुड्डागकडचुम्मनेरस्या णं भंते ! कथो उववज्रंति ! [उ०] पवं खेव । पवं सकर-प्यमाप वि, पवं वालुयप्पमाप वि । पवं चउसु वि जुम्मेसु । नवरं परिमाणं जाणियत्रं, परिमाणं जहा कण्डलेस्सउद्देसप्, सेसं तं खेव । 'सेवं मंते ! सेवं भंते'! ति ।

## इकतीसइमे सए चउत्थो उद्देसी समची। चतुर्थ उद्देशक.

कापोत॰ धुद्रकृतयु-ग्म नैरियको क्यांबी व्यावी उपजे है

- १. [प्र०] हे भगवन् ! कापोतलेक्यावाळा क्षुद्रकृतयुग्मराशिप्रमित नैरियको क्यांधी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] जेम कृष्ण-लेक्यायाळा क्षुद्रकृतयुग्म नैरियको संबंधे कह्युं छे तेम आ संबंधे पण कहेवुं. पण विशेष ए के, रह्मप्रभामां जे उपपात कह्यो छे ते अहीं जाणवो क्षत्रे वाकी वधुं तेज प्रमाणे समजवुं.
- २. [प्रo] हे भगवन् ! कापोतलेक्यावाळा क्षुद्रकृतयुग्मराशिप्रमाण रत्नप्रभाना नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] पूर्वे कहा प्रमाणे जाणवुं. ए रीते शर्कराप्रभामां, वालुकाप्रभामां पण चारे युग्मो विषे समजवुं. पण विशेष ए के, कृष्णलेखा उदेशकमां जे परिमाण कह्युं छे ते अहीं जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे.'

### एकत्रीशमा शतकमां चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

## पंचमो उद्देसो ।

- १. [प्रo] भवसिद्धीयलुद्धागकडलुम्मनेरस्या णं भंते ! कओ उवबज्जंति ! कि नेरस्य० ! [उ०] एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेसं जाव-नो परप्ययोगेणं उवबज्जंति ।
- २. [प्र॰] रयणप्यभाषुढविभवसिद्धीयखुद्दागकडज्जम्मनेरस्या जं भंते॰ १ [उ॰] एवं चेव निरवसेसं, एवं जाव-अद्देसत्तः माए । एवं भवसिद्धियखुद्दागतेयोगनेरस्या वि । एवं जाव-कित्योग ति । नवरं परिमाणं जाणियदं, परिमाणं पुद्यभणियं जद्दा पढमुद्देसए । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

# इकतीसहमें सए पंचमी उदेसी समची।

#### पंचम उद्देशक.

भन्य धुद्रकृतगुण्म नैर्याकोनो उपपात.

- १. [प्र०] हे भगवन् ! क्षुद्रकृतयुग्मराशिप्रमाण भवसिद्धिक नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ! शुं नैरियकोथी आवी उत्पन थाय-इत्यादि पृच्छा. [उ०] जेम औधिक-सामान्य गम कह्यो तेम अहीं पण निरवशेष जाणवुं, यावत्–ते परप्रयोगयी उत्पन यता नयी.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रमा पृथिवीना क्षुद्रकृतयुग्मराशिप्रमाण भविसिद्धिक नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे—इत्यादि पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! पूर्वे कह्या प्रमाणे बधुं जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्—अधःसप्तम पृथिवी सुधी समजवुं. एम भविसिद्धिक क्षुद्र- त्र्योजराशिप्रमित नैरियकोने पण जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्—कल्योज सुधी समजवुं. पण परिमाण भिन्न जाणवुं, अने ते आगळ प्रथम उद्देशकर्मा जाणाव्युं छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

### एकत्रीशमा शतकमां पंचम उदेशक समाप्त.

### छट्टो उद्देसो ।

१. [प्र॰] कण्डलेस्सभवसिद्धियलुङ्गाकडलुम्मनेराया णं भंते ! कभो उववर्जाति ? [उ॰] एवं जहेव मोहिमो कण्डले-ल्रद्धी उद्देशक.

कुष्म॰ भन्य कृतयुग्म नैरमिकोनो उपशतः

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेक्यावाळा भवसिद्धिक क्षुद्रकृतयुग्मप्रमाण नैरियको क्यांपी आवी उत्पन्न याय ! ऋं नैरियकोपी

स्सउद्देसको तहेव निरवसेसं खउसु वि सुम्मेसु भाणियद्यो, जाव-[प्र०] महेसत्तमपुदविकण्हलेस्सखुद्वागकित्योगनेराया णं मंते ! कक्षो उववर्जाति ! [उ०] तहेव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! चि ।

#### इकतीसहमे सए छट्टी उदेसी समत्ती।

भावी उत्पन्न याय—इत्यादि पृष्छा. [उ०] औदिक कृष्ण लेक्साना उदेशकमां जे प्रमाणे कह्युं छे ते प्रमाणे बधुं चारे युग्मोमां जाणवुं. यावत्—[प्र०] हे भगवन् ! अधःसप्तम पृथिवीना कृष्णलेक्साबाळा क्षुद्र कल्योजराशिप्रमाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. 'हे मगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### एकत्रीयमा शतकमां छट्टो उद्देशक समाप्त.

#### ७-२८ उद्देसगा।

- १. नीललेस्समविद्या चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियद्या जहा ओहिए नीललेस्सउहेसए। 'सेव भंते ! सेवं भंते' ! ति जाव-विहरर । ३१. ७.
- २. काउलेस्सा मवसिद्धिया चउसु वि ज्ञुमोसु तहेव उववापयहा जहेव ओहिए काउलेस्सउहेसए। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! ति जाव-विहरह । ३१. ८.
- ३. जहा भवसिक्रिएहिं चत्तारि उद्देसया भणिया एवं अभवसिक्रीएहि वि चत्तारि उद्देसगा भाणियद्वा जाव-काउलेस्साउद्देसमो ति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति । ३१. ९-१२.
- ४. एवं सम्मिद्दिहि वि लेस्सासंज्ञुसेहिं चसारि उद्देसगा कायहा, नवरं सम्मिद्दि पटमिवितिएसु वि दोसु वि उद्दे-सप्तु बहेससमापुटवीए न उववाएयहो, सेसं तं चेव। 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि । ३१. १३–१६.
  - ५. मिच्छादिट्टीहि वि चत्तारि उद्देसगा कायद्वा जहा भवसिद्धियाणं । 'सेघं भंते ! सेवं भंते' ! ति । ३१. १७-२०.
- ६. प्रवं कण्डपिक्कपिट वि लेस्सासंजुत्तेहि चत्तारि उद्देसगा कायदा जहेव भवसिद्धिपिट । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति । ३१. २१–२४.
- ७. सुक्रपिक्सपिंदे एवं चेच चत्तारि उद्देसमा भाषियद्या । जाच-वालुयण्पभाषुदविकाउलेस्ससुक्रपिक्सयसुद्धामकिल-भोगनेरात्या णं भंते ! कभो उववर्क्सति ! तद्देव जाव-नो परप्पयोगेणं उववक्संति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति । सद्दे वि एए भट्टावीसं उद्देसमा । ३१. २५-२८.

## इकतीसइमे सए ७-२८ उद्देसगा समता । इकतीसइमं उववायसयं समत्तं ।

### ७-२८ उद्देशको.

- १. नीललेश्याबाळा भवसिद्धिक नैरियको चारे शुग्मोमां औधिक नीललेश्या उदेशकमां कह्या प्रमाणे कहेवा. 'हे भगवन् ! ते इमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावत् विहरे छे. ३१.७.
- २. कापोतल्डेन्याबाळा भनिसिद्धिक नैरियकोनो चारे युग्ममां औधिक कापोत लेड्याउदेशकमां कथा प्रमाणे उपपात कहेनो. 'हे मगबन् । ते एमज छे, हे मगबन् । ते एमज छे'—एम कही बिहरे छे. ३१.८.
- ३. जेम भवसिद्धिकना चार उदेशको कहा तेम अभवसिद्धिकना पण चार उदेशको कापोनलेक्याउदेशक पर्यन्त कहेवा. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'-एम कही यावद्-विहरे छे. ३१. ९-१२.
- ४. एम सम्यग्दिशना पण छेर्या साथे चार उदेशको कहेवा. परंतु पहेला अने बीजा बन्ने उदेशकमां सम्यग्दिशनो अधःसप्तम नरक-प्रथिवीमां उपपात न कहेवो. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३१. १३–१६.
  - ५. मिध्यादृष्टिना पण चारे उद्देशको भवसिद्धिकनी पेठे कहेवा. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन् ते एमज छे'. ३१. १७-२०.
- ६. एम कृष्णपाक्षिकना लेक्यासंयुक्त चार उद्देशको भवसिद्धिकनी जेम कहेवा. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—३१. २१—२४.
- ७. शुक्कपाक्षिकना पण एम चार उदेशको कहेबा. यावत्—हे भगवन् ! वाङ्यकाप्रभा पृथिवीना कापोतलेश्यावाळा शुक्रपाक्षिक क्षुद्रकल्योजराशिप्रमित नैरियको क्यांथी आवीने उत्पन्न थाय ! [उ०] पूर्ववत् उत्तर जाणवुं. यावत्—परप्रयोगधी उत्पन्न थता नथी. 'हे अगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. बधा मळीने अठ्यावीश उदेशको थाय छे. २१.२५—२८.

#### एकत्रीश्रमा शतकमां ७-२८ उद्देशको समाप्त.

## एकत्रीशमुं उपपातशतक समाप्त.

## बत्तीसइमं सयं

#### १-२८ उद्देसा ।

- १. [प्र॰] खुड्डागकडन्त्रस्मनेरद्या णं भंते ! अणंतरं उन्नष्टित्ता किंद्द गच्छंति, किंद्द उपवज्रंति ! कि नेरद्द उपवज्रंति ! तिरिक्कजोणिएस्र उपवज्रंति ! [उ॰] उन्नष्टणा जहा वकंतीए ।
- २. [प्रo] ते णं मंते ! जीवा पगसमपणं केवरया उद्यष्टिति ! [उ०] गोयमा ! चत्तारि वा भट्ट वा वारस वा सोखस वा संक्षेजा वा असंक्षेजा वा उद्यष्टिति ।
- ३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा कहं उच्चहंति ! [उ०] गोयमा ! से जहा नामप प्रयप-प्यं तहेव । प्रवं सो चेव गममो जाच-आयष्पयोगेणं उच्चहंति, नो परप्पयोगेणं उच्चहंति ।
- ४. [प॰] रयणप्पभापुढविखुद्दागकड॰ ? [उ॰] एवं रयणप्पमाए वि, एवं जाव—सद्वेसस्त्रमाए । एवं खुद्दागतेयोग— खुद्दागदावरज्ञम्म–खुद्दागकिलयोगा । नवरं परिमाणं जाणियद्वं, सेसं तं चेय । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि । ३२–१.
- ५. कण्डलेस्सकद्भमनेरहया-एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए बहुाबीसं उद्देसगा भणिया तहेव उच्चहुणासए वि अहुाबीसं उद्देसगा भाणियद्या निरवसेसा। नवरं 'उद्वहंति'सि अभिलावो भाणियद्यो, सेसं तं चेव। 'सेवं मंते! सेवं मंते'! सि जाव-विहरह।

## वत्तीसइमं उद्दहणासयं सम्मत्तं।

## बत्रीशमुं शतक.

## १-२८ उद्देशको.

झद्रकतयुग्म राशि~ रूप नैरियकोनी उद्दर्वना-एकसमये उद्दर्वनानी संस्था- १. [प्र०] हे भगवन् ! क्षुद्रकृतयुग्म राशिरूप नैरियको मरण पामीने तुरत क्यां जाय, अने क्यां उत्पन्न थाय ! ह्यं नैरियकोमां उत्पन्न थाय छे ! तिर्यंचयोनिकोमां उत्पन्न थाय छे—इत्सादि पृच्छा. [उ०] "ब्युक्तान्तिपदमां कद्या प्रमाणे समजवुं.

२. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उद्दर्ते—मरण पामे ! [उ०] हे गौतम ! चार, आठ, बार, सोळ, संख्याता के असंख्याता जीवो उद्दर्ते छे.

केवी रीते उदर्ते.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो केवी रीते उद्दर्ते ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ एक कूदनार-इत्यादि पूर्वे कहेल गमक जाणवी. यावत-ते पोताना प्रयोगथी उद्दर्ते छे, पण परप्रयोगथी उद्दर्तता नथी.

कृतयुग्मरूप रत्न-प्रभा नैरयिकोनी उद्वर्षना-

- ४. [प्र०] रत्नप्रमा पृथिवीना क्षुद्र कृतयुग्म राशिरूप नैरियको नीकळीने क्यां जाय ! [उ०] रत्नप्रभाषृथिवीना नैरियकोनी उद्दर्तना कहेवी. एम क्षुद्र त्र्योजयुग्म, क्षुद्रक द्वापरयुग्म अने क्षुद्रक कल्योज संबंधे पण समजवुं. पण विशेष ए के, परिमाण पूर्वे कह्या प्रमाणे (त्रण, सात, बे, छ, एक, पांच वगेरे) जुदुं जुदुं जाणवुं अने बाकी बधुं तेमज कहेवुं. कि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३२.—१.
- ५. [प्र॰] कृष्णलेश्यावाळा क्षुद्रकृतगुग्मराशिरूप नैरियको नीकळी क्यां जाय ? [उ॰] ए रीते ए क्रमवर्ड जेम उपपात शतकमां अठ्या-वीश उद्देशको कह्या छे तेमज उद्दर्तना शतकमां पण बधा मळीने अठ्यावीश उद्देशको कहेवा, पण [ 'उत्पन्न याय छे' ] तेने बदले 'उद्दर्तें छे' एयो पाठ कहेवो, अने बाकी बधुं तेमज जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही यावत्-बिहरे छे-

# षत्रीरामुं उद्वर्तनारातक समास.

<sup>9 \*</sup> देओ नरकशी नीकळी पर्याप्त संख्याता वर्षना आयुषवाळा मनुष्य अने तिर्यंचयोनिमां उत्पन्न थाय छे-जुओ प्रज्ञा॰ पद ६. प॰ १०४-११८.

## तेत्तीसइमं सयं

### पढमं एगिंदियं सयं ।

- १. [प्र०] कतिविद्या णं अंते ! प्रिनिया पञ्चचा ? [उ०] गोयमा ! पंचिवद्या प्रानित्या पञ्चना, तंजहा-पुरुविकाइया, जाय-वणस्सदकाइया ।
- २. [प्र॰] पुढविकाइया णं मंते ! कतिविद्दा पश्चता ? [ड॰] गोयमा ! दुविद्दा पश्चता, तंत्रहा-सुदुमपुढविकाइया य बायरपुढविकाइया य ।
- ३. [प्र॰] सुहुमपुदविकाश्या णं भंते ! कतिविहा पन्नसा ! [उ॰] गोयमा ! दुविहा पन्नसा, तंत्रहा-पज्जसा सुहुम-पुढविकाश्या य अपज्जसा सुहुमपुदविकाश्या य ।
- ४. [प्र॰] बायरपुढविकाद्या णं भंते ! कतिविहा पश्चता ? [उ॰] गोयमा ! यदं चेव, यदं आउक्काद्या वि चउक्कपणं भेवेणं भाणियद्या, यदं जाव-वणस्सद्कादया ।
- ५. [प्र॰] अपज्ञत्तसुदुमपुदविकाश्याणं भंते ! कति कम्मप्पगश्चीओ पश्चताओ ? [उ०] गोयमा ! बट्ट कम्मप्पगश्चीओ पश्चताओ, तंत्रहा-नाणावरणिक्रं, जाव-अंतराह्यं ।
- ६. [प्र०] पज्रससुदुमपुढिविकार्याणं मंते ! कित कम्मप्पगडीओ पञ्चताओ ? [ट०] गोयमा ! अट्ट कम्मप्पगडीओ पञ्चताओ, तंजहा—नाणावरणिकां, जाव—अंतरार्यं ।

## तेत्रीशमुं शतक

#### प्रथम एकेन्द्रिय शतक.

- १. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीवो केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे— एकेन्द्रियना प्रकारन पृथिवीकायिक अने यावत्—वनस्पतिकायिक.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीवो केटल प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ वे प्रकारना कह्या छे. ते पृथिवीकायिक अने बादर पृथिवीकायिक.
- ३. [प्र॰] हे भगवन् ! सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवो केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ॰] हे गौतम ! तेओ बे प्रकारना कह्या छे. ते सहम पृथिवीकायना मक्तरः । प्रमाणे—पर्यात सुक्ष्म पृथिवीकायिक अने अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक.
- ४. [प्र॰] हे भगवन् ! बादर पृथिवीकायिको केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ॰] हे गौतम ! उपर कह्या प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे बादर पृथिवीकायिक कना प्रकारः अध्कायिकोना पण चार मेद कहेवा. ए रीते यावत्—वनस्पतिकायिक सुधी समजवुं.
- ५. [म॰] हे भगवन् । अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकार्यिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ होय ! [उ॰] हे गौतम ! तेओने आठ कर्मप्रकृतिओ कर्मप्रकृतिओ होय. ते आ प्रमाणे—१ ज्ञानावरणीय अने यावत्—अंतराय.
- ६. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्यास स्क्ष पृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ होय ! [उ॰] हे गौतम ! तेओने आठ कर्मप्रकृतिओ होय छे. ते आ प्रमाणे—१ ह्यानावरणीय अने यावत्—८ अंतराय.

- ७. [प्र॰] अपञ्चत्तवायरपुढविकादयाणं भंते ! कति कम्मप्यगडीओ पन्नताओ ? [उ॰] गोयमा ! पवं खेव ।
- ८. [प्र०] पञ्जत्तावायरपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ-? [उ०] एवं चेव ८ । एवं एएणं कमेणं जाव— वायरवणस्साइकाइयाणं पञ्जत्तगाणं ति ।
- ९. [प्र०] अपज्जत्तसुद्वमपुद्रविकाश्याणं भंते ! कित कम्मप्पगडीओ बंधंति ? [उ०] गोयमा ! सत्तविह्वंधगा वि, स्रद्विह-वंधगा वि । सत्त वंधमाणा आउयवजाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वंधंति, अट्ट वंधमाणा पडिपुकाओ अट्ट कम्मप्पगडीओ वंधंति ।
  - १०. [प्र०] पज्जत्तसुदुमपुदविकाइया णं भंते ! कति कम्म०! [उ०] एवं चेव, एवं सचे; जाव-
  - ११, प्रिव पञ्जलवायरवणस्सद्काद्या णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वंधति ! [४०] एवं चेव ।
- १२. [प्र०] अपजानसुदुमपुद्धविकाऱ्या णं भंते ! कित कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तंजहा—नाणावरणिकं, जाव-अंतराद्दयं, सोद्दंदियवज्यं, चिन्निवियवज्यं, घणिदियवज्यं, जिम्मिदियवज्यं, इत्यिवे-दवज्यं, पुरिसवेदवज्यं। एवं चजकपणं भेदेणं जाव—
- १३. [प्र०] पञ्जसवायरवणस्तरकार्या णं भंते ! कित कम्मप्पगडीओ वेदेंति ! [उ०] गोयमा ! पवं खेव चोह्स कम्मप्पगडीओ वेदेंति । 'सेवं मंते ! सेवं भंते' ! सि । ३३-१।
- १४. [प्रः] कहिवहा णं भंते ! अणंतरोववसमा प्रिंगिदिया पत्रता ! [उ०] मोयमा ! पंचविहा अणंतरोववसमा प्रिंगिदिया पत्रता, तंजहा-पुटविकाइया, जाब-वणस्सदकादया ।
- १५. [प्र०] अणंतरोवयद्मगा णं भंते ! पुढविकाइया कतिविहा पद्मता ? [उ०] गोयमा ! दुविहा पद्मता, तंजहा— सुद्वमपुढविकाइया य वायरपुढविकाइया य, एवं दुपपणं भेदेणं जाव–वणस्सइकाइया ।
- १६. [प्र॰] अणंतरोवसमगसुहुमपुदविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पन्नसाओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट कम्म-प्पगडीओ पन्नसाओ, तंजहा—नाणावरणिखं, जाय-भंतराइयं ।
  - ७. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ होय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे जाणवुं.
- ८. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकोने केटली कर्म प्रकृतिओ होय ! [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी प्रमाणे ज जाणवुं. ए रीते ए क्रमयी यावत्—पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको सुधी समजवुं.

कर्मप्रकृतिओनी बन्धः

- ९. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ! [उ०] हे गौनम ! तेओ सात कर्मप्रकृतिओ क्षने आठ कर्मप्रकृतिओ बांधे छे. ज्यारे सात कर्मप्रकृतिओ बांधे त्यारे आयुष सिवायनी सात कर्मप्रकृतिओ बांधे अने ज्यारे आठ कर्मप्रकृतिओने बांधे त्यारे परिपूर्ण आठे कर्म प्रकृतिओ बांधे.
- १०. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ! [उ०] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे जाणवुं. तथा ए रीते सर्व एकेन्द्रिय संबंधे दंडको कहेवा. यावत्—
  - ११. [प्र०] हे भगवन् ! पर्यात बादर वनस्पतिकायिको केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ! [उ०] हे गौतम ! एज प्रमाणे जाणवुं.

क्षम्प्रकृतिओनु वेदन-

- १२. [प्रo] हे भगवन्! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिको केटली कर्मप्रकृतिओने नेदे? [उo] हे गीतम! तेओ चौद कर्मप्रकृतिओ नेदे. ते आ प्रमाणे—१ ज्ञानावरणीय अने यावत्—८ अंतराय, तथा ९ श्रीत्रेन्द्रियवच्य (श्रोत्रेन्द्रियावरण), १० चक्कुरिद्रियावरण, ११ प्राणेंद्रियावरण, १२ जिह्नेन्द्रियावरण, १३ स्त्रीवेदावरण अने १४ पुरुषवेदावरण. ए रीते, सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त अने अपर्याप्तना चार मेदपूर्वक यावत्—पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक द्वाची समजदुं. यावत्—
- १२. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिको केटली कर्मप्रकृतिओने वेदे ? [उ०] हे गौतम ! उपर प्रमाणे चौद कर्म-प्रकृतिओने वेदे छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३३-१.

अनन्तरोपपत्र एके न्द्रियना प्रकारः

- १४. [प्र०] हे भगवन् ! अनंतरोपपन (तुरत उत्पन्न ययेला) एकेंद्रिय जीवो केटल प्रकारना कहा। छे ! [उ०] हे गौतम ! अनंतरोपपन एकेंद्रियो पांच प्रकारना कहा। छे. ते आ प्रमाणे—१ पृथिवीकायिक, यावत्—५ वनस्पतिकायिक.
- १५. [प्र०] हे मगवन् ! अनंतरीपपल पृथ्वीकायिको केटला प्रकारना कह्या छे ! [ट॰] हे गौतम ! तेओ वे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-सूक्ष्म पृथ्वीकायिको अने बादर पृथ्वीकायिको. ए प्रमाणे वे मेद वढे यावत्-वनस्पतिकायिक सुधी समजदुं.

अनन्तरोपपन्न एके-न्द्रियने कर्म-प्रकृतिओ. १६. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन सूक्ष्मपृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओने आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे--- १ ज्ञानावरणीय अने यावत्-८ अंतराय.

- १७. [प्र०] अर्णतरोववक्षगवाव्रपुढविकाश्याणं संते ! कति कम्मप्पगडीओ पत्रसाओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट कम्मप्पयडीओ पत्रसाओ, तंजहा-नाणावरणिखं, जाव-संतराश्यं । पदं जाव-अर्णतरोववक्षगवाद्यवणस्तरकाश्याणं ति ।
- १८. [प्र०] अणंतरोववक्षमसुदुमपुदविकादयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वंधंति ? [उ०] गोयमा ! आउयवज्राओ सक्त कम्मप्पगडीओ वंधंति । एवं जाय-अणंतरोववक्षगवाद्दवणस्सद्दकाद्दय चि ।
- १९. [प्र०] अणंतरोववस्नगसुदुमपुदविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! चउद्दस कम्म-प्पगडीओ वेदेंति, तंजहा—नाणावरणिक्कं, तद्देव जाव—पुरिसवेदवज्ञं । एवं जाव—अणंतरोववस्नगबादरवणस्सद्काइय सि । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि । ३३–२ ।
- २०. [प्र०] कतिबिहा णं भंते ! परंपरोववज्ञमा पर्गिदिया पचचा ? [उ०] गोयमा पंचिवहा परंपरोववज्ञमा प्रिविया पचचा, तंजहा-पुढविकाहया-पर्व चडकभो भेवो जहा भोहिउहेसए ।
- २१. [४०] परंपरोववज्ञगमपञ्चसुद्भुमपुढविकाश्याणं मंते ! कर कम्मप्यगढीओ पश्चसाओ ? [४०] एवं एएणं अभिला-वेणं जहा ओहिउदेसए तहेव निरवसेसं माणियवं जाव-'वउद्दस वेदेंति' । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि । ३३–३ ।
  - २२. अणंतरोगाढा जहा अणंतरोवधन्नगा ३३-४।
  - २३. परंपरोगाडा जहा परंपरोवषक्रमा ३२-५।
  - २५. अणंतराहारमा जहा अणंतरोववश्वमा ३३-६।
  - २५. परंपराहारमा अहा परंपरोबवन्नमा ३३-७।
  - २६. अणंतरपञ्जत्तगा जहा अणंतरोबवन्नगा ३३-८ ।
  - २७. परंपरपञ्जसमा जहा परंपरोववन्नमा ३३-९।
  - २८. चरिमा वि जहा परंपरोववन्नगा तहेव ३३-१०।
  - २९. एवं अचरिमा वि ११। एवं एए एकारस उद्देसना। 'सेवं भंते! सेवं भंते' रित । जाव-विदृरह ।

#### पढमं एगिदियसयं समत्तं।

- १७. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन बादर पृथिवीकायिकोने केटलं कर्मप्रकृतिओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने आठ कर्म-प्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे—१ ज्ञानावरणीय अने यावत्—अंतराय. ए प्रमाणे यावत्—८ अनंतरोपपन बादर वनस्पतिकायिक संबंधे जाणहुं.
- १८. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन्न सूक्ष्म पृथिवीकायिको केटली कर्मप्रकृतिओ बांधे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ आयुष सिवाय सात कर्मप्रकृतिओ बांधे छे. ए प्रमाणे यावत्—अनंतरोपपन बादरवनस्पितकायिक सुधी जाणवुं.

१९. [प्र०] हे मगवन्! अनन्तरोपपन सूक्ष्म पृथ्वीकायिको केटली कर्मप्रकृतिओ वेदे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ चौद कर्म-प्रकृतिओने वेदे छे. ते आ प्रमाणे—१ ज्ञानावरणीय अने यावत्—१४ पुरुषवेदावरण. ए प्रमाणे यावत्—अनंतरोपपन बादर वनस्पतिका-यिको सुधी समजबुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ते एमज छे'. ३३—२.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरोपपन (जेनी उत्पत्तिने बे त्रण वगेरे समयो थयेला छे एवा) एकेन्द्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिक—ए प्रमाणे औधिक उदेशकमां कह्या प्रमाणे प्रत्येकना चार चार मेद जाणवा.

२१. [प्र०] हे मगवन् ! परंपरोपपन अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ होय ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे— ए अभिलापबढे औषिक उदेशकमां कह्या प्रमाणे निरवशेष कहेतुं. यावत्—चौद कर्मप्रकृतिओने वेदे छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३३—३.

२२. अनन्तरीपपननी पेठे अनन्तरानगाढ संबंधे समजबुं. ३३-४.

- २३. परंपरोपपन्ननी पेठे परंपरावगाढ संबंधे समजदुं. ३३-५.
- २ ४. अनन्तरोपपन्ननी पेठे अनन्तराहारक संबंधे समजवुं. ३३-६.
- २५. परंपरोपपन्ननी पेठे परंपराहारक संबंधे समजवुं. ३३-७.
- २६. अनंतरोपपक्तनी पेठे अनन्तर पर्याप्त विषे पण जाणबुं. ३३-८.
- २७. परंपरोपपन्ननी पेठे परंपर पर्यात संबंध समजवुं. ३३-९.
- २८. परंपरोपपन्तनी पेठे चरम संबंधे पण समजनुं. ३३-१०.
- २९. ए रीते अचरमो संबंधे पण समजदुं. ए प्रमाणे ए अगियार उदेशको कह्या. 'हे मगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'. २३-११.

तेत्रीश्रमा श्रतकमां प्रथम एकेन्द्रिय श्रतक समाप्त.

अनन्तरोप९च एके-न्द्रियने वर्नेप्रकु-तिओनो बन्ध-

अनन्तरोपपन्न पके न्द्रियने कर्मेन्रहतिः ओनुं वेदनः

परंपरोपपच एकेन्द्रि-योना प्रकार

परंपरोपपन्न एकेन्द्रि-यने कसैमकृतिओः

#### बीअं सयं ।

- १. [प्र॰] कर्रविद्या णं अंते ! कण्हलेस्सा एगिदिया पन्नता ! [७०] गोयमा ! पंचिद्या कण्डलेस्सा परिदिया पन्नता, तंजहा-पुटविकार्या, जाव-वणस्सर्कार्या ।
- २. [प्र॰] कण्हलेस्सा णं संते ! पुटविकाश्या कश्विहा पन्नता ! [७०] गोयमा ! दुविहा पन्नता, तंजहा-सुहुमपुदवि-काश्या य बादरपुरविकाश्या य ।
- ३. [प्र०] कण्डलेस्सा णं भंते ! सुदुमपुदविकाइया कड्विहा पन्नता ! [उ०] गोयमा ! एवं एएणं अभिलावेणं चउक्रभेदो जहेव ओहिउद्देसप, जाव-वणस्सद्काइय ति ।
- ४. [४०] कण्डलेस्सअपञ्चससुदुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पन्नसाओ ! [४०] एवं चेव एएणं अभि-लावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव पन्नसाओ, तहेव वंधंति, तहेव वेदेंति । 'सेवं भंते ! सेवं मंते' ! सि ।
- ५. [प्र॰] कद्दविहा णं मंते ! अणंतरोववश्वगकण्डलेस्सप्निदिया पश्चता ? [उ॰] गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववश्वगा कण्डलेस्सा प्रिविया--प्वं प्रपणं अभिलावेणं तहेव दयओ मेदो जाव-वणस्सदकाह्य चि ।
- ६. [प्र०] अणंतरोववक्षगकण्डलेस्ससुडुमपुदविकाश्याणं मेते ! कर कम्मप्पगडीओ पक्षताओ ? [उ०] एवं एएणं सिम-लावेणं जहा ओहिओ अणंतरोववक्षगाणं उद्देसओ तहेव जाव—वेर्देति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति ।
- ७. [प्र०] कहविहा णं भंते ! परंपरोववक्रमा कण्हलेस्सा पर्गिदिया पक्ता ! [७०] गोयमा ! पंचविहा परंपरोववक्रमा कण्हलेस्सा पर्गिदिया पक्षता, तंजहा-पुढविक्काहया-पर्य प्रपणं अभिलावेणं तहेव चउक्कमो भेदो जाव-वणस्सदकाहय ति ।
- ८. [प्र०] परंपरोचयक्षगकण्हलेस्सअपज्जससुद्वमपुढिविकाइयाणं मंते । कह कम्मण्यगडीओ पक्षसाओ ? [उ०] एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ परंपरोचवक्षगउदेसओ तहेव जाव-वेदेंति । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिएगिवियसए एकारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससते वि भाणियद्वा जाव-अचरिमचरिमकण्हलेस्सा एगिविया ।

#### बितियं एगिदियसयं समत्तं।

### द्वितीय एकेन्द्रिय शतक.

कृष्णलेख्यावाळा **धके**न्द्रियोना प्रकार. १. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा एकेन्द्रिय जीवो केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाळा एकेन्द्रियो पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ प्रथिवीकायिक अने यावत्-५ वनस्पतिकायिक.

पृषिदीका यिको ना प्रकारः

२. [प्र०] हे भगवन् । কূষ্পাलेक्याबाळा पृथिवीकायिको केटला प्रकारना कह्या छे । [उ०] हे गौतम । बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे–१ सुक्ष्म पृथिवीकायिक अने २ बादर पृथिवीकायिक.

कृष्णलेदयादाळा सुक्ष्म पृथिवीकाः विकोना प्रकारः

- ३. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेश्यायाळा सूक्ष्म पृथिवीकायिको केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! जेम औषिक उद्देशकमां कह्युं छे तेम ए अभिलाप वडे चार मेदो यायत्—वनस्पतिकायिको सुधी जाणवा.
- ४. [प्र०] हे भगवन्! कृष्णोठेत्रयावाळा अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ होय ! [उ०] \*उपर प्रमाणे जेम औषिक उद्देशकमां कह्युं छे तेम ए अभिलाप वहे ते रीते ते कर्मप्रकृतिओ कहेवी. ते कर्मप्रकृतिओ तेवी रीते बांधे छे अने तेवी रीते तेतुं वेदन पण करे छे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.' ३३. २.

भन-तन्तरोपपत्र कृष्णलेहयावाटा एकेन्द्रियोना प्रकार-

- ५. [प्र०] हे भगवन् ! अनंतरोपपन्न कृष्णलेक्यावाळा एकेन्द्रियो केटला प्रकारना छे ! [उ०] हे गौतम ! अनन्तरोपपन्न कृष्ण-लेक्यावाळा एकेन्द्रियो पांच प्रकारना कह्या छे. ए रीते ए अमिलापवडे पूर्वनी प्रमाणे तेना बे मेद यावत्—वनस्पतिकाय सुधी जाणवा.
- ६. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन्न कृष्णलेश्यायाळा सूक्ष्म पृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ! [उ०] ए प्रमाणे पूर्वे कहेला अमिलाप वडे औषिक अनन्तरोपपन्नना उदेशकमां कह्यां प्रमाणे यावत्—'वेदे छे' लासुची जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एगज छे. ३३. ३.

परंपरोपपन्न कृष्ण-केश्याबाट्या एके-न्द्रियना प्रकार-

- ७. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरोपपन्न कृष्णलेक्यावाळा एकेन्द्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! परंपरोपपन्न एकेन्द्रियो पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिको वगेरे. एम ए अमिलापवडे तेज प्रकारे चार मेद यावत्—वनस्पतिकाय सुवी कहेवा.
- ८. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरोपपन्न कृष्णलेक्यावाळा अपर्याप्त सृक्ष्म पृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ होय छे ! [उ०] ए प्रमाणे ए अभिलापवढे औषिक उदेशकमां कहेल परंपरोपपन संबंधी बची हकीकत अहीं जाणवी. तेज प्रमाणे यावत्—वेदे छे— ए प्रकारे ए अभिलापवढे जेम औधिक एकेन्द्रियशतकमां अगियार उदेशको कह्या छे तेम कृष्णलेक्या शतकमां पण कहेना, यावत्—अचरम अने चरम कृष्णलेक्यावाळा एकेन्द्रियो सुधी कहेतुं.

### तेत्रीशमा शतकमां बीखं एकेंद्रिय शतक समाप्त.

### तईयं सयं.

१. जहा कण्डलेस्सोहें मणियं पर्व नीललेस्सेहि वि सयं भाणियत्रं। 'सेवं मंते! सेवं मंते'! सि ।
तियं एगिंदियसयं समंतं।

### त्रीजुं एकेन्द्रिय शतक.

१. [प्र□] जेम कृष्णलेक्याबाळा संबंधे कह्युं तेम नीङलेक्याबाळा संबन्धे पण शतक कहेबुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

#### तेत्रीशमा शतकमा त्रीजं एकेन्द्रिय शतक समाप्त.

#### चउत्थं सयं.

१. एवं काउछेस्सेहि वि सयं भाणियत्रं, नवरं 'काउलेस्से'ति अभिलावो भाणियत्रो ।

#### चउत्थं एगिंदियसयं समसं।

### चोथुं एकेन्द्रिय शतक.

१. ए रीते कापोतलेक्याबाळा संबंधे पण शतक कहेवुं. पण विशेष ए के, 'कापोतलेक्याबाळा' एवी अभिलाप—पाठ कहेवी.

### तेत्रीश्रमा शतकर्मा चोथुं एकेन्द्रिय शतक समाप्त.

#### पंचमं सयं.

- १. [प्र०] कर्रविद्या णं भंते ! भवसिद्धीया प्रिविया पन्नसा ? [उ०] गोयमा ! पंचविद्या भवसिद्धीया प्रिविया पन्नसा, तंजदा-पुढविकार्या, जाव-वणस्सरकार्या, भेदो चउक्रओ जाव-वणस्सरकार्य सि ।
- २. [प्र॰] मधिसिद्धियभपज्जत्तसुद्धुमपुढिविकाइयाणं भंते ! कित कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? [उ॰] एवं एएणं अभि-लावेणं जहेच पढिमिल्लगं एगिदियसयं तहेच भवसिद्धियसयं पि भाणियद्यं । उद्देसगपरिवाडी तहेच जाव-अचरिमो ति । 'सेवं भंते! सेवं भंते'! ति ।

### पंचमं एगिदियसयं समत्तं।

### पांचमुं एकेन्द्रिय शतक.

- १. [प्र०] हे भगवन् ! भवसिद्धिक एकेंद्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! भवसिद्धिक एकेन्द्रियो पांच प्रकारना भवसिद्धिक एकेन्द्रि कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ पृथिबीकायिक अने यावत्—५ वनस्पतिकायिक. एओना चारे भेद वगेरे हकीकत वनस्पतिकायिक सुधी जाणवी.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! भवसिद्धिक अपर्यात सूक्ष्म पृथियीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ होय छे ! [उ०] ए रीते ए अभिला-पवडे जेम पहेलुं एकेंद्रिय शतक कां छे तेम आ भवसिद्धिक शतक पण कहेवुं. उदेशकोनी परिपाटी पण तेज रीते यावत्—अचरम उदेशक सुची कहेवी. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

### पांचम्रं एकेन्द्रिय शतक समाप्त.

### छद्वं सयं.

१. [प्र॰] कर्विद्या णं मंते ! कण्डलेस्सा भवसिद्धिया प्रीगिदिया पश्चता ? [७०] गोयमा ! पंत्रविद्या कण्डलेस्सा भवसिद्धिया प्रीगिदिया पश्चता, तं जहा-पुढिविद्यारया जाव-वणस्सद्दकार्या ।

### छद्वं एकेन्द्रिय शतक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेक्यावाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! कृष्णलेक्यावाळा भवसिद्धिक एकेन्द्रियो पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—१ पृथ्वीकायिक अने यावत्—५ वनस्पतिकायिक.

कुण्डिय भवति दिक एकेट्रियोः प्रकारः

ब्धनन्तरोपपन्न कृष्ण० अस्य एकेन्द्रियना

प्रकार-

- २. [प्र॰] कण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविकाइया णं भंते ! कतिविद्दा पश्चचा ! [उ॰] गोयमा ! वुविद्दा पश्चचा, तंजहा-सुदुमपुढविकाइया य वायरपुढविकाइया य ।
- ३. [प्र०] कण्हलेस्सभवसिद्धीयसुद्दुमपुढिविकाइया णं भंते ! कद्दविद्दा पश्चता ? [उ०] गोयमा ! दुविद्दा पश्चता, तंजहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । एवं वायरा वि । एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कमो भेदो भाणियद्यो ।
- ४. [प्र०] कण्डलेस्समयसिद्धीयअपज्ञससुदुमपुढविकादयाणं भंते ! कद्द कम्मप्यगडीओ पन्नसाओ ? [उ०] एवं एएणं अभिलावेणं जहेच ओहिउद्देसए तहेव जाव–वेवेंति ।
- ५. [प्र०] कद्दविद्वा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्डलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पन्नता ! [उ०] गोयमा ! पंचिवद्वा अणंतरोववन्नगा० जाव-वणस्सद्काइया ।
- ६. [प्र०] अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविकाहया णं भंते ! कतिविहा पन्नता ? [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नता, तंजहा—सुदुमपुढविकाहया—एवं दुयओ भेदो ।
- ७. [प्र॰] अणंतरोववन्नगकण्हलेस्समविसद्वीयसुहुमपुढविक्काइयाणं मंते ! कर् कम्मप्यगडीओ पन्नसाओ ? [उ॰] एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणंतरोववन्नउद्देसओ तहेव जाव वेदेंति । एवं एएणं अभिलावेणं एक्कारस वि उद्देसगा तहेव माणियवा जहा ओहियसए जाव-'अचरिमो'सि ।

#### छट्टं एगिदियसयं समतं।

- २. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा भवसिद्धिक पृथिवीकायिको केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ बे प्रकारना कह्या छे . ते आ प्रमाणे—सूक्ष्मपृथिवीकायिको अने बादरपृथिवीकायिको.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेक्यावाळा भवसिद्धिक सूक्ष्मपृथिवीकायिको केटला प्रकारना कद्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ वे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तको अने अपर्याप्तको. ए रीते वादर पृथिवीकायिको संबंधे पण समजवुं. ए अमिलापवडे तेज प्रकारे चार मेदो कहेवा.
- ४. [प्र॰] हे भगवन् ! कृष्णलेक्यात्राळा भत्रसिद्धिक अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ होय छे ! [उ॰] एम ए अमिलाप वडे जेम औषिक उदेशकमां कहुं छे तेम आ संबंधे यात्रत्—'वेदे छे' त्यां सुधी समजवुं.

५. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन्नक कृष्णलेश्यात्रात्या भवसिद्धिक एकेंद्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—अनन्तरोपपन्न पृथिवीकायिक अने यावत्—वनस्पतिकायिक.

६. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन कृष्णलेख्यावाळा भवसिद्धिक पृथितीकायिको केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—सुक्ष्म पृथितीकायिको अने बादर प्रथितीकायिको—ए रीते बे मेद कहेवा.

७. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन्न कृष्णलेश्यावाळा भवसिद्धिक सूक्ष्मपृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ होय छे ! [उ०] ए प्रमाणे ए अभिलापयी जेम अनन्तरोपपन्न संबंधे औधिक उद्देशकमां कह्युं छे तेमज आ संबंधे पण यावत्—'वेदे छे' त्यां सुधी जाणवुं. ए रीते ए अभिलापवडे औधिक शतकमां कह्या प्रमाणे अगियार उद्देशको यावत्—छेल्ला 'अचरम' नामना उद्देशक सुधी कहेवा.

### तेत्रीशमा शतकमां छहुं एकेंद्रिय शतक समाप्त.

### सत्तमं सयं.

१. जहा कण्हलेस्समविसिद्धिपिंह सर्यं भणियं एवं नीललेस्समविसिद्धिपिंह वि सर्यं माणियां ।

#### सत्तमं एगिदियसयं समत्तं।

### सातमुं एकेन्द्रिय शतक.

१. जे रीते कृष्णलेश्यावाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो संबंधे शतक कह्युं छे ते ज रीते नीटलेश्यावाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो विषे पण शतक कहेतुं.

#### तेत्रीशमा शतकमां सातम्नं एकेंद्रिय शतक समाप्त.

अद्वमं सयं.

१. पर्व काउलेस्समवसिद्धीपहि वि सयं।

अहमं एगिदियसयं समत्तं। आठमुं एकेन्द्रिय शतक.

१. ए ज रीते कापोतलेश्यावाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो निपे पण शतक कहेवुं.

तेत्रीश्रमा शतकमां आठम्नं एकेंद्रिय शतक समाप्त.

नवमं सयं.

१. [प्र०] करविद्वा णं भंते ! अभवसिद्धीया प्रिंतिया पन्नता ? [उ०] गोयमा ! पंचविद्वा अभवसिद्धिया प्रिंतिया पन्नता, तंजहा-पुढविद्वाह्या, जाव-वणस्सरकारया । एवं जहेव भवसिद्धीयसयं भणियं, [ एवं अभवसिद्धियसयं । ] नवरं नव उद्देसगा चरमअचरमउद्देसगवजा, सेसं तहेव ।

नवमं एगिंदियसयं समत्तं। नवमुं एकेन्द्रिय शतक.

१. [प्र०] हे मगवन्! अभवसिद्धिक एकेंद्रियो केटल प्रकारना कहा छे ! [उ०] हे गौतम! अभवसिद्धिक एकेन्द्रियो पांच प्रकारना कहा छे ते आ प्रमाणे—१ प्रथिवीकायिक अने यावत्—५ वनस्पतिकायिक ए प्रमाणे जे रीते भवसिद्धिक संबंधे शतक कहां छे ते ज रीते अभवसिद्धिको संबंधे पण शतक कहेवुं. पण विशेष ए के, 'चरम' अने 'अचरम' सिवायना नव उदेशको कहेवा. अने बाकी बधुं तेमज समजवुं.

तेत्रीशमा शतकमां नवसुं एकेंद्रिय शतक समाप्त.

दुसमं सयं.

१. पर्व कण्डलेस्सयभवसिद्धीयप्रांगिदियसयं पि ।

दसमं एगिदियसयं समत्तं। दसमुं एकेन्द्रिय शतक.

१. ए ज रीते कृष्णलेश्याबाळा अभवसिद्धिक एकेंद्रियो संबंधे पण शतक समजर्बुः

तेत्रीशमा शतकमां दशमुं एकेंद्रिय शतक समाप्त

इकारसमं सयं.

१. नीललेस्सनभवसिद्धीयपर्गिविपहि वि सयं।

इकारसमं एगिदियसयं समतं। अगियारमुं एकेन्द्रिय शतक.

१. ए ज प्रकारे नीललेख्यावाळा अभवसिद्धिक एकेंद्रियो संबंधे पण रातक कहेर्नु.

तेत्रीश्वमा शतकमां अगियारम्धं एकेंद्रिय शतक समाप्त-

बारसमं सयं.

१. काउरुस्त्रमवसिद्धीयसयं, पवं चत्तारि वि अभवसिद्धीयसयाणि, णव णव उद्देसगा भवंति, पवं पयाणि बारस प्रितिवस्त्रयाणि भवंति ।

बारसमं एगिंदियसयं समत्तं । तेत्तीसइमं सयं समत्तं । बारमुं एकेन्द्रिय शतक.

१. ए ज रीते कापोतलेश्यायाळा अभवसिद्धिक एकेन्द्रिय संबंधे पण रातक कहेतुं. ए प्रमाणे अभवसिद्धिक संबंधे चार रातको अने तेना नय नय उद्देशको छे. ए रीते ए बार एकेंद्रिय शतको छे.

तेत्रीशमा शतकमां बारसं एकेंद्रिय शतक समाप्त.

तेत्रीशमुं शतक समाप्त,

## चोत्तीसमं सयं

## पढमं एगिदियसयं

#### पढमो उद्देसो ।

- १. [प्र॰] कहविद्या णं अंते ! एगिविया पश्चता ? [उ॰] गोयमा ! पंचविद्या पश्चता, तंजहा-पुढविकाह्या, जाव-वणस्सहकाह्या । एवं पतेणं चेव चउक्कपणं भेदेणं भाणियद्या जाव-वणस्सहकाह्या ।
- २, [प्र०] अपज्जससुदुमपुद्धविकाहय णं भंते ! इमीसे रयणप्यमाय पुद्धीय पुरिच्छिमिह्ने चरिमंते समोहय, समोह-णित्ता जे भविष इमीसे रयणप्यमाय पुद्धीय पद्मच्छिमिह्ने चरिमंते अपज्जससुदुमपुद्धविकाहयत्ताय उवविज्ञत्तय, से णं भंते ! कह्समप्रणं विग्गहेणं उववज्जेजा ! [उ०] गोयमा ! एगसमह्यण वा दुसमह्यण वा तिसमह्यण वा विग्गहेणं उववज्जेजा ।
- ३. [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! एवं बुच्चर्-'एगसमर्एण वा दुसमर्एण वा जाव-उववज्रेजा' [उ०] एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पन्नताओ, तंजहा-१ उज्ज्यायता सेढी, २ एगयओवंका, ३ दुहओवंका, ७ एगयओखहा, ५ दुहओखहा, ६ खकवाला, ७ अञ्चलकवाला । १ उज्ज्ञायताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमर्एणं विग्गहेणं उववज्जेजा । २ एगओवंकाए.

## चोत्रीशमुं शतक

## प्रथम एकेन्द्रिय शतक

#### प्रथम उद्देशक.

[आ शतकमां एकेन्द्रियो संबंधे कहेवानुं छे. तेना अवान्तर बार शतक छे. तेमां प्रथम शतकना प्रथम उद्देशकमां एकेन्द्रियोनी गति संबंधे कथन छे—]

एकेन्द्रियना प्रकार-

१. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियो केटला प्रकारना कहा। छे ! [उ०] हे गौतम ! एकेन्द्रियो पांच प्रकारना कहा। छे . ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिको, यावत्—वनस्पतिकायिको. एम पूर्वोक्त (बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त अने अपर्याप्त ) ए चार मेद यावत्—वनस्पतिकायिक सुची कहेवा.

व्यपर्याप्त सूक्ष्म पृथिः वीकायिकनी गतिः

२. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव, जे आ रत्नप्रभा पृथिवीना पूर्व चरमान्तमां—पूर्व दिशाने छेडे मरणसमु-द्वात करीने आ रत्नप्रभा पृथिवीना पश्चिम चरमान्तमां—पश्चिम दिशाने अन्ते अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे, ते हे भगवन् ! केटला समयनी विग्रहगतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! एक समय, वे समय के त्रण समयनी विग्रहगतिथी उत्पन्न थाय.

एक, ने अने ज्ञण समय ववानुं कारणः

३. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कही छो के तेओ एक समय, वे समय के त्रण समयनी विप्रह्नगतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे में सात श्रेणिओ कही छे, ते आ प्रमाणे—१ ऋज्वायत (सीधी लांवी), २ एक तरफ वक्र, ३ द्विधा वक्र, ४ एकतः खा (एक तरफ त्रसनाडी सिवायना आकाशवाळी), ५ दिधाखा (बन्ने तरफ त्रसनाडी सिवायना आकाशवाळी), ६ चक्र-वाल (मंडलाकार) अने ७ अर्धचक्रवाल (अर्धमंडलाकार). \*जो पृथिवीकायिक ऋज्वायत श्रेणियी उत्पन्न याय तो ते एक समयनी

३ \* सात श्रेणिओना खरूपवर्णन माटे जुओ-भग० श० २५ उ० ३ पृ० २१३ तुं टिप्पन.

सेदीए उदबज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उदवज्जेजा । ३ दुहमोवंकाए सेदीए उदबज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उदवज्जेजा । से तेणहेणं गोयमा ! जाव-उदवज्जेजा ।

- ध. [प्र०] जयज्ञससुदुमपुढिविकाइय वं मंते! इमीसे रयणप्यमाय पुढवीय पुरिष्ठिमिक्के चरिमंते समोइय, समोइणित्ता जे मिवय इमीसे रयणप्यमाय पुढवीय पद्मिक्किमिक्के चरिमंते पज्जससुदुमपुढिविकाइयत्ताय उवविज्ञस्य से वं मंते!
  कर्समद्यणं विग्गहेणं उववज्जेजा? [उ०] गोयमा! यगसमद्यण वा—सेसं तं चेव, जाव—से तेणट्टेणं जाव—विमाहेणं उववज्जेजा । यवं अपज्जससुदुमपुढिविकाइओ पुरिष्ठिमिक्के चरिमंते समोहणावेत्ता पद्मिक्किमिक्के चरिमंते वादरपुढिविकाइयसु
  अपज्जस्यसु उववाययहो, ताहे तेसु चेव पज्जस्यसु छ । यवं आउकाइयसु चत्तारि आलावगा—१ सुदुमेहि अपज्यस्यहि, २
  ताहे पज्जस्यहि, ३ वायरेहि अपज्जस्यहि, ४ ताहे पज्जस्यहि उववाययहो । यवं चेव सुदुमतेउकाइयहि वि अपजन्यहि १,
  ताहे पज्जस्यहि उववाययहो २ ।
- ५. [प्र०] अपज्ञससुहुमपुढविकाइय णं भंते ! इमीसे रयणप्यभाय पुढवीय पुरिष्ण्यिक्षे चरिमंते समोहण, समोहणित्ता जे मिष्य मणुस्सक्षेत्रे अपज्ञसवादरतेउकाइयत्ताय उवविज्ञत्तय से णं भंते ! कदसमद्दर्णं विग्णहेणं उवविज्ञाः ! [उ०] सेसं तं चेव । एवं पज्जसवायरतेउकादयत्ताय उववाययहो ४ । वाउकादयसु सुदुमवायरेसु जहा आउकादयसु उववादमो तहा उववाययहो ४ । एवं वणस्सद्दकाद्दसु वि २० ।
- ६. [प्र०] पज्जससुद्वमपुद्धविकाद्य णं मंते ! इतीसे रयणप्यभाय पुद्धवीय० ? [उ०] एवं पज्जससुद्वमपुद्धविकाद्यों वि पुरिष्क्रिमिल्ले चिरमंते समोहणावेसा एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीससु ठाणेसु उववाएयद्वो जाव-बाद्रवणस्सद्दक्ताद्रपुद्धविकाद्यों वि ६०। एवं पज्जसवाद्रपुद्धविकाद्यों वि ८०। एवं आउकाद्यों वि चउसु वि गमएसु पुरिष्क्रिमिल्ले चिरमंते समोहण, एयाए चेव वसवयाए एएसु चेव वीसद्दाणेसु उववाएयद्वो १६०। सुदुमतेउकाद्यों वि अपजन्मों पज्जस्यों य एएसु चेव वीसाए ठाणेसु अववाएयद्वो ।

विप्रहगतिथी उत्पन्न थाय. जो एकवक श्रेणिथी उत्पन्न थाय तो ते बे समयनी विष्रहगतिथी उत्पन्न थाय. जो ते हिधावक श्रेणिथी उत्पन्न थाय तो त्रण समयनी विष्रहगतिथी उत्पन्न थाय. ते कारणथी हे गैतम ! 'एक समय, बे समय के त्रण समयनी विष्रहगतिथी उत्पन्न थाय छे' एम कहां छे.

8. [प्र०] हे भगवन्! अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक जे आ रत्नप्रमा पृथिवीना पूर्व चरमान्तमां मरणसमुद्घात करीने आ रत्नप्रमा पृथिवीना पश्चिम चरमान्तमां पर्याप्त सृक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन्! केटला समयनी विष्रह्र गितियी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! एक समयनी [ बे समयनी, के त्रण समयनी ] विष्रह्रगतिथी उत्पन्न थाय—इत्यादि बधुं पूर्वनी पेटे यावत्—ते कारणथी विष्रह्रगतिथी उत्पन्न थाय छे—त्यां सुधी जाणवुं. एम अपर्याप्त राक्ष्म पृथिवीकायिकनो पूर्वचग्मान्तमां मरणसमुद्घात करावी पश्चिम चरमान्तमां बादर अपर्याप्त पृथिवीकायिकपणे उपपात कहेवो अने पुनः त्यां ज पर्याप्तपणे उपपात कहेवो. ए प्रमाणे अप्का-ियकने विषे पूर्वोक्त चार आलापक कहेवा. १ राष्ट्रम अपर्याप्त, २ सूक्ष्म पर्याप्त, ३ बादर अपर्याप्त अने ४ बादर पर्याप्त अप्कायिकमां उपपात कहेवो ४. एम सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त अने पर्याप्तमां उपपात \*कहेवो ६२.

अपर्याप्त सहस्र प्री बीकायिकनी पर्यो स्क्ष्म पृथिबीकायि प्रो विश्ववृगतिः

५. [१०] हे भगवन् ! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक जे आ रक्षप्रभा पृथिवीना पूर्व चरमान्तमां मरणसमुद्घात करीने मनुष्यक्षेत्रमां अपर्याप्त वादर तेजस्कायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन् ! केटल समयनी विष्रह गतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] वाकी बधुं यूर्वेनी पेटे समजवुं. एम पर्याप्त बादरतेजस्कायिकपणे पण उपपात कहेवो ४. जेम सूक्ष्म अने बादर अध्कायिकमां उपपात कहो तेम सूक्ष्म अने बादर वायुकायिकमां पण उपपात कहेवो. वनस्पतिकायिकमां पण ए प्रमाणे जाणवुं. ४. (२०).

अप॰ स्॰ पृथिः काषिकनी बाद तेजस्काथिकपणे विद्यहगति.

६. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक आ रक्षप्रभा पृथिवीना—इस्मादि पूर्वोक्त प्रश्न. [उ०] पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वी-कायिकने पण रक्षप्रभाना पूर्व चरमांतमां मरणसमुद्घात करावी अनुक्रमे ए दीशे स्थानोमां यावत्—बादरपर्याप्त वनस्पतिकायिक सुधी उत्पन्न करावनो. (४०). ए प्रमाणे अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिक (६०) अने पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकने पण पूर्ववत् जाणतुं (८०). एम प्रमाणे अप्कायिकने पण चारे गमकने आश्रयी पूर्वचरमांतमां समुद्घातपूर्वक ए पूर्वोक्त वक्तव्यतावडे उपरना वीश स्थानकोमां उत्पन्न करावनो (१६०). अपर्याप्त अने पर्याप्त बन्ने प्रकारना सूक्ष्म तेजस्कायने पण ए ज वीश स्थानकोमां उपर कहा। प्रमाणे उत्पन्न करावनो (२००).

पर्याप्त स्थम पृथि काशिकः

४ के रक्षप्रभाना पश्चिम चरनान्तमां बादर तेजस्कायिकनो असंभव होवाची स्थम पर्याप्त अने अपर्याप्तना वे भांगा कह्या अने बादरपर्याप्त अने अपर्याप्तना वे भांगा मनुष्यक्षेत्रने आश्रयी पद्धीना सूत्रद्वारा कहे छे.

- ७. [प्र॰] अपज्जत्तवायरतेउद्वाइप णं संते ! मणुस्सकेते समोद्दप, समोद्दणिता जे मविष इमीसे रयणप्यभाप पुढवीप प्रविक्वित्रहे चिरमंते अपज्जत्तसुदुमपुढिविद्वाइयत्ताप उवविज्ञत्तप से णं भंते ! कद्दसम्दर्ण विग्मदेणं उववज्रेजा ! [उ॰] सेसं तद्देव जाव-से तेणट्टेणं॰। एवं पुढविद्वाइपसु चउविदेसु वि उववापयद्वो, एवं आउकाइएसु चउविदेसु वि, तेउकाइपसु सुदुमेसु अपज्जत्तपसु पज्जत्तपसु य एवं चेव उववापयद्वो।
- ८. [प्र०] अपज्जसवायरतेजकाहर णं मंते ! मणुस्सकेसे समोहर, समोहणिसा जे मिष्य मणुस्सकेसे अपज्जसवायरतेउक्काहरमाय उवविज्ञस्य से णं मंते ! कितसमएणं० ? [उ०] सेसं तं चेव । एवं पज्जसवायरतेजकाहरमाय वि उववाययद्यो ।
  बाउकाहरमाय य वणस्सहकाहरमाय य जहा पुढविकाहरसु तहेव चउक्करणं मेदेणं उववाययद्यो । एवं पज्जसवायरतेजकाहबो वि समयकेसे समोहणावेसा एएसु चेव वीसाय ठाणेसु उववाययद्यो । जहेव अपज्जसको उववाहको, एवं सद्यस्य वि
  बायरतेजकाहरा अपज्जसमा य पज्जसमा य समयकेसे उववाययद्या समोहणावेयद्या वि २४०। वाजकाहरा वणस्सकाहरा
  ब जहा पुढिवकाहरा तहेव चजकरणं मेदेणं उववाययद्या । जाव-
- ९. [प्रठ] पञ्जन्तावायरवणस्सद्दकाष्ट्रय णं मंते ! इमीसे रयणप्यभाय पुढवीय पुरच्छिमिल्ले चरिमंते समोहप, समो-हणित्ता जे भविष इमीसे रयणप्यभाय पुढवीय पश्चच्छिमिल्ले चरिमंते पञ्जन्तवायरवणस्सद्दकार्यन्ताय उवविज्ञन्तय से णं भंते ! कतिसमद्द्यणं० ? [उ०] सेसं तहेव जाव-से तेणहेणं० ।
- १०. [प्र०] अपज्जत्तसुहुमपुदिविकाह्य णं भंते ! हमीसे रयणप्यभाय पुदवीय पश्चिच्छिमिह्ने चिरमंते समोह्य, समोहणित्ता जे भविय हमीसे रयणप्यभाय पुदवीय पुरिच्छिमिह्ने चिरमंते अपज्जत्तसुहुमपुदिविकाह्यत्ताय उवविज्ञत्तय से णं भंते !
  कहसमह्यणं० ! [उ०] सेसं तहेव निरवसेसं । यवं जहेय पुरिच्छिमिह्ने चिरमंते सम्नयहेसु वि समोह्या पश्चिच्छिमिह्ने चिरमंते
  समयहोते य उववाह्या, जे य समयहोत्ते समोह्या पश्चिच्छिमिह्ने चिरमंते समयहोत्ते य उववाह्या, पवं एएणं चेव कमेणं
  पश्चिक्षिमिह्ने चिरमंते समयहोत्ते य समोह्या पुरिच्छिमिह्ने चिरमंते समयहोत्ते य उववाययद्वा तेणेव गमएणं । एवं एएणं गमएणं
  दाहिणिह्ने चिरमंते समयहोत्ते य उववाययद्वा तेणेव गमएणं ।

अपर्याप्त बादरतेजः स्कायनो उत्पादः

- ७. [प्र०] हे भगवन्! अपर्यात बादर तेजस्काय, जे मनुष्यक्षेत्रमां मरणसमुद्धात करी रक्षप्रमा पृथ्वीना पश्चिम चरमांतमां अपर्यात सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन्! केटला समयनी विग्रह्णतिथी उत्पन्न थाय! [उ०] बाकीनुं पूर्वनी पेठे यावत्—ते कारणथी एम कहेवाय छे—त्यां सुधी जाणबुं. ए रीते (अपर्यात बादर तेजस्कायने) चारे प्रकारना पृथिवीकायिकोमां, चारे प्रकारना अप्कारकोमां तथा अपर्याप्त अने पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकोमां पण उपजाववो.
- ८. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक, जे मनुष्यक्षेत्रमां मरणसमुद्घात करी मनुष्य क्षेत्रमां अपर्याप्त बादर तेज-स्कायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य होय ते हे भगवन् ! केटला समयनी विप्रहगतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. अने ए ज रीते तेने पर्याप्त बादर तेजस्कायपणे पण उत्पन्न कराववो. जेम पृथिवीकायिकोमां कत्तुं छे तेम चारे मेदथी वायुकायिकपणे अने बनस्पतिकायिकपणे पण उपजाववो. ए रीते पर्याप्त बादर तेजस्कायिकने पण समयक्षेत्रमां समुद्घात करावी ए ज वीशस्थानकोमां उत्पन्न कराववो. जेम अपर्याप्तनो उपपात कह्यो तेम सर्वत्र पण पर्याप्त अने अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकोने समयक्षेत्रमां उत्पन्न कराववा अने समुद्घात कराववी. (२४०) जेम पृथिवीकायिकोनो उपपात कह्यो तेम चार मेदथी वायुकायिको (३२०) अने वनस्पतिकायिकोने पण उपजाववा. (४००) यावत्—

पर्याप्त बादर बनस्प-तिकायिकनो उत्पादः ९. [प्र०] हे भगवन् ! जे पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक आ रत्नप्रभा पृथिवीना पूर्व चरमांतमां मरणसमुद्वात करी आ रत्नप्रभा पृथिवीना पश्चिम चरमांतमां बादर वनस्पतिकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते, हे भगवन् ! केटला समयनी विष्रहगितथी उत्पन्न थाय ! [उ०] बाकी बधुं तेमज जाणवुं. यावत्—ते कारणथी एम कहेवाय छे—त्यांद्वधी समजवुं.

अवर्याप्त सुक्स पृषिः नीकायिकनो उत्पादः

१०. [प्र०] हे भगवन्! जे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक आ रत्नप्रभा पृथिवीना पश्चिम चरमांतमां समुद्धात करी आ रतन प्रभा पृथिवीना पूर्व चरमांतमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न धवाने योग्य छे ते हे भगवन्! केटला समयनी विष्रहगितियी उत्पन्न थाय! [उ०] बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे जेम पूर्व चरमांतमां सर्वपदोमां समुद्धात करी पश्चिम चरमांतमां अने समयक्षेत्रमां उपपात कह्यो तेम एज क्रमबडे पश्चिम चरमांतमां अने समयक्षेत्रमां तेम एज क्रमबडे पश्चिम चरमांतमां अने समयक्षेत्रमां समुद्धातपूर्वक पूर्व चरमांतमां अने समयक्षेत्रमां तेज गमवडे उपपात कहेवो अने बधुं ते ज गमवडे कहेतुं. ए प्रमाणे ए गमवडे दक्षिणना चरमांतमां समुद्धातपूर्वक उत्तरना चरमांतमां अने समयक्षेत्रमां उपपात कहेवो, अने ए ज रीते उत्तर चरमांतमां अने समयक्षेत्रमां समुद्धात करावी दिक्षण चरमांतमां अने समयक्षेत्रमां तेज गमवडे उपपात कहेवो.

y e

- ११. [प्र०] अपज्रससुदुमपुदिवकाइए णं भंते ! सकारप्यभाए पुदवीए पुरिच्छिमिह्ने चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भिष्य सकारप्यभाए पुदवीए पचिछिमिह्ने चरिमंते अपज्रससुदुमपुदिवकाइयसाए उवविज्ञसए० ! [उ०] एवं जहेव रयणप्यभाए जाव—से तेणट्रेणं०। एवं एएणं कमेणं जाव-पज्ञसपसु सुदुमतेउकाइएसु ।
- १२. [प्र०] अपज्जत्तसुहुमपुद्दविकाहर णं भंते ! सकरप्यभार पुद्धवीर पुरिक्किमिहे चिरिमंते समोहर, समोहणित्ता जे भिष्य समयकेते अपज्जत्तवायरतेषकाहयत्तार उवविज्ञत्तर से णं मंते ! कितसमर्गणं०-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! हुसमहर्गण वा तिसमहर्गण वा विग्गहेण उवविज्ञज्ञा ।
- १३. [प्र०] से केणहेणं० ? [उ०] एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ एकताओ, तंत्रहा-१ उज्जयायता, जाव-अद्धचक्रवाला । एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेजा, दुइओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं
  विग्गहेणं उववज्जेजा, से तेणहेणं० । एवं पज्जत्तपसु वि वायरतेउकाइएसु । सेसं जहा रयणप्यभाए । जे वि वायरतेउकाइया
  अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयक्षेत्रे समोद्दणिता दोखाए पुढवीए पष्टिक्छिमिल्ले चिरमंते पुढविकाइएसु चउिष्ठेसु, आउकाइएसु
  चउिष्ठेसु, तेउकाइएसु दुविहेसु, वाउकाइएसु चउिष्ठेसु, वणस्सकाइएसु चउिष्ठेसु उववज्जंति ते वि एवं चेव दुसमइएण
  वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववाएयद्या । वायरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जंति ताहे
  जहेव रयणप्यभाए तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइयविग्गहा भाणियद्या सेसं जहेव रयणप्यभाए तहेव निरवसेसं । जहा
  सक्ररप्यमाए वत्तवया भणिया एवं जाव-अहे सत्तमाए वि भाणियद्या ।
- १४. [प्र०] अपज्ञत्तसुद्दुमपुदिकाइए णं भंते ! अहोलोयकेत्तनालीए बाहिरिक्षे के समोहए, समोहणिता जे भविए उद्दुलोयकेत्तनालीए बाहिरिक्षे केते अपज्ञत्तसुदुमपुदिकाइयत्ताए उवविज्ञत्तए से णं भंते ! कहसमाइएणं विग्गहेणं उववज्ञेजा ! [उ०] गोयमा ! तिसमाइएण वा चउसमाइएण वा विग्गहेणं उववज्जेजा । [प्र०] से केणहेणं भंते ! एवं बुचाइ—'निसमाइएण वा चउसमाइएण वा विग्गहेणं उववज्जेजा' ? [उ०] गोयमा ! अपज्ञत्तसुदुमपुदिकाइए णं अहोलोयकेत्तनालीए बाहिरिक्षे केते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उद्दुलोयकेत्तनालीए वाहिरिक्षे
- ११. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्याप्त सूक्ष्मपृथ्वीकायिक, रार्कराप्रभाषृथिवीना पूर्व चरमांतमां मरणसमुद्धात करीने रार्कराप्रभाना पश्चिम चरमांतमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला समयनी विप्रह्गितिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] जैम रत्नप्रभाष्ट्रियी संबंधे कर्क्षु तेम आ संबंधे यावत्—पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक सुधी जाणवं.

अपर्याप्त सुस्म एरं निष्यनो शर्कराश्र भाना पूर्वचरमातः पश्चिमचरमातमा उपपातः

- १२. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्यात सूक्ष्म पृथिवीकायिक, दार्कराप्रभाना पूर्व चरमान्तमां मरणसमुद्घात करी पश्चिम चरमांतमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटल समयनी विप्रहर्गातिथी उत्पन्न धाय ! [उ०] हे गौतम ! वे समय के त्रण समयनी विप्रहर्गातिथी उत्पन्न धाय.
- १३. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुयी कहो छो ? [उ०] हे गीतम! में सात श्रेणीओ कही छे, ते आ रीते—१ ऋज्वायत धने यावत्—७ अर्धचक्रवाल. जो एकवक श्रेणिरूप गिनयी उत्पन्न थाय तो ते वे समयनी विप्रह्मानिथी उत्पन्न थाय अने जो द्विधा-वक्रश्रेणीरूप गिनयी उत्पन्न थाय तो ते त्रण समयनी विप्रह्मातिथी उत्पन्न थाय. ते कारणथी हे गीतम! एम कहां छे. ए रीते पर्याप्त बादर तेजस्कायिक संबंधे पण जाणवुं. बाकी बधुं रत्नप्रभानी जेम समजवुं. जे पर्याप्त अने अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकों समयक्षेत्रमां समुद्धात करी बीजी पृथिवीना पश्चिम चरमांतमां चारे प्रकारना पृथिवीकायिकोने विषे, चारे प्रकारना अष्कायिकोने विषे, वे प्रकारना तेजस्कायिकोने विषे, चारे प्रकारना बायुकायिकोने विषे अने चारे प्रकारना वनस्पतिकायिकोने विषे उत्पन्न याय छे तेओने पण वे समयनी के त्रण समयनी विप्रह्मातिथी उत्पन्न कराववा. ज्यारे पर्याप्त अने अपर्याप्त बादर तेजस्कायिको तेओमांज उत्पन्न थाय तो तेने जेम रत्नप्रभा संबंधे कहां तेम एक समयनी, वे समयनी अने त्रण समयनी विप्रह्माति समजवी, बाकी बधुं रत्नप्रभानी पेठे जाणवुं. जेम शर्कराप्रभा संबंधे वक्त-ज्यता कही छे तेम यावत्—अधःसप्तम पृथिवी सुधी जाणवी.
- १४. [प्र०] हे मगवन् ! जे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक जीव अधोलोक क्षेत्रनी त्रसनाडीनी बहारना क्षेत्रमां मरणसमुद्घात करी ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनी त्रसनाडीनी बहारना क्षेत्रमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन् ! केटल समयनी विप्रहगतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! तेओ त्रण समयनी के चार समयनी विप्रहगतिथी उत्पन्न थाय . [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के तेओ त्रण समयनी के चार समयनी विप्रहगतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! जे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक अधोलोक क्षेत्रनी त्रसनाडीना बहारना क्षेत्रमां मरणसमुद्घात करी ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनी त्रसनाडीना बहारना क्षेत्रमां भएणसमुद्घात करी ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनी त्रसनाडीना बहारना क्षेत्रमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीका-

अपर्याप्त स्वस्म पृष्टि बीकायिकनी विश्वद्य गति. जण समयनी के चार समयनी विश्वद्य गतिनुं कारण. ढीए उवचित्रस्य से णं तिसमर्पणं विगाहेणं उववक्षेजा, जे भविष विसेढीए उववित्रसप् से णं श्वउसमर्पणं विगाहेणं डववज्रेजा, से तेणहेणं जाव-उववज्रेजा । एवं पज्रससुदुमपुढविकादयसाप वि, एवं जाव-पज्रससुदुमतेउकादयसाय ।

- १५. [प्र०] व्याज्ञत्तसुहुमपुदविकारए णं भंते ! अहेलोग- जाय-समोहणिता जे भविए समयक्षेत्रे व्याज्जत्तवायरते-डकाइयत्ताए उववजित्तए से णं मंते ! कइसमहएणं विग्गहेणं उववजेजा ! [उ०] गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विनाहेणं उच्यज्ञेखा । [प्र०] से केणट्रेणं० ? [उ०] एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पद्मताओ, तंजहा–१ उज्जवायता, जाव-७ अद्भवक्रवाला । एगभोवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेजा, दुहश्रोवंकाए सेढीए उववज्ज-माणे तिसमहएणं विग्गहेणं उववज्रेजा, से तेणट्टेणं । एवं पज्रस्तपुतु वि बायरतेउकाहपुतु वि उववाएयद्यो । वाउकाहय-धणस्सद्काद्यसाय चडकपण भेदेणं जहा आउकादयसाय तहेव उपवापयको २०। पयं जहा अपजनसनुदुमपुद्धविकादयस्स गमभो मणियो एवं पज्जसाहमपुढविकाइयस्स वि भाणियद्यो, तहेव वीसाए ठाणेसु उववाएयद्यो ४०।
- १६. प्रि ा॰ अहोळोयखेलनालीप बाहिरिक्षे खेते समोहप, समोहणित्ताः ! [उ०] एवं बायरपुढविकार्यस्स वि भपञ्चत्तगस्स पञ्जत्तगस्स य भाणियद्यं ८०। पर्व आउद्घाइयस्स चउद्विहस्स वि भाणियद्यं १६०। सुहमतेउद्घाइयस्स द्वविद्वस्स वि एवं खेव २००।
- १७. [प्र०] अपञ्चलवायरतेउकार्य णं मंते ! समयखेले समोहप, समोहणित्ता जे भविप उहुलोगखेलनालीप बाहि-रिष्टे सेसे भपज्जससुद्वमपुढविकाइयसाय उवविज्ञसय से णं भंते ! कइसमइयणं विग्गहेणं उववज्जेजा ? [उ०] गोयमा ! तुस-मापण वा तिसमापण वा चउसमापण वा विगाहेणं उववजीजा। [प्र०] से केणट्रेणं० ! [उ०] अट्टो जहेव रयणप्यमाप तहेव सत्त सेटीयो । एवं जाव-
- १८. [प्र०] अपज्जन्तवायरतेउकाइए णं भंते ! समयखेने समोहए, समोहणिना जे भविए उहलोगसेन्तनालीए बाहि-रिह्ने सेते पजनसुदुमतेउकाश्यनाए उववजित्तए से णं भंते ! ०१ [७०] सेसं तं चेव।

यिकपणे एक प्रतरमां अनुश्रेणी—समश्रेणिमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते त्रण समयनी विप्रह्नगतिथी उत्पन्न याय, जे विश्रेणीमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते चार समयनी विप्रहर्गानधी उत्पन्न याय. माटे ते कारणधी यात्रत्−ित्रण समय के चार समयनी विप्रहर्गातेधी ] उत्पन्न थाय छे. ए रीते पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे अने यावत्-पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकपणे जे उपजे ते माटे पण एमज जाणवं.

हो अप॰ स्॰पृषिवी-कायिकनी बा॰ तेजः स्कायिकपणे केटला समयनी गति होय 🖡

- १५. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक अधोटोक क्षेत्रनी त्रसनाडीनी बहारना क्षेत्रमां मरणसमुद्रचात करी समय क्षेत्रमां अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते, हे भगवन् ! केटला समयनी विम्रह्रगतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम । ते बे समयनी निप्रहर्गातथी उत्पन्न थाय के त्रण समयनी निप्रहर्गातिथी उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! एम द्या हेत्थी कही छी है [उ०] हे गौतम! में सात श्रेणिओ कही छे, ते आ प्रमाणे–१ ऋजु आयत—सीवी लांबी श्रेणि अने यावत्–७ अर्धचकवाल. जो ते जीव एक तरफ वक्र श्रेणीथी उत्पन्न थाय तो वे समयनी विष्रह्मातिथी उत्पन्न याय अने जो उभयतः वक्र श्रेणीथी उत्पन्न याय तो त्रण समयनी विप्रहर्गातेथी उत्पन्न थाय, ते कारणथी एम कथुं छे. एम पर्यात बादर तेजस्कायिकोमां पण उपपात कराववी. अध्कायिकनी पेठे बायुकायिक अने वनस्पतिकायिकपणे चारे भेदवडे उपपात कराववो (२०). ए प्रमाणे जेम अपर्याप्त सुक्ष्म पृथ्वीकायिक संबंधे गमक कह्यो तेम पर्याप्त सुक्ष्म पृथ्वीकायिक संबंधे पण गमक कहेवो अने तेज प्रकारे तेने वीरो स्थानकमां उपजावयो (४०).
- १६. अधोलोकक्षेत्रनी त्रसनाडीना बहारना क्षेत्रमां मरणसमुद्वात करी-इत्यादि पर्याप्त अने अपर्याप्त बादर प्रध्वीकायिक संबंधे पण एमज कहेतुं. अने ए रीते चारे प्रकारना अध्यायिक संबंधे पण कहेतुं १६०. बने प्रकारना सूक्ष्म तेजस्कायने पण एमज जाणवुं २००.

अपर्याप्त बादर तेज-स्कायिकनी विमन् गति.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्याप्त बादर तेजस्कायिक समयक्षेत्रमां मरणसमुद्धात करी ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनी त्रसनाडीना बहारना क्षेत्रमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते, हे भगवन् ! केटला समयनी विम्रहगतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! बे समयनी, त्रण समयनी के चार समयनी विप्रहगतिथी उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुपी एम कहेबाय छे ! [उ०] हे गौतम ! रहप्रभा संबंधे पूर्वोक्त सात श्रेणीओना कथनरूप जे हेतु कह्यो छे यावत्—ते हेतु जाणवी.

अप॰वा॰ तेजस्का-विकती प॰ स॰ तेज-स्कायिकरूपे विम्रह गति.

१८. [प्र०] हे मगवन् ! जे पर्याप्त बादर तेजस्कायिक समयक्षेत्रमां मरणसमुद्धात करीने उर्ध्वलोक क्षेत्रनी त्रसनाडीनी बहारना क्षेत्रमां पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन् ! केटला समयना विप्रह्रगतिथी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गीतम ! बाकी बधुं तेमज जाणवं.

- १९. [म०] अपञ्चलवायरते उकाइए णं मंते ! समयक्षेत्रे समोहए, समोहणिता जे भविए समयक्षेत्रे अपञ्चलवायरते उकाइयत्ताय उवविज्ञास्य से णं मंते ! कर्समर्पणं विग्गहेणं उवविज्ञाला ! [उ०] गोयमा ! एगसमर्पण वा वुसमर्पण वा तिसमर्पण वा विग्गहेणं उवविज्ञाता । [म०] से केणहेणं ! [उ०] अहो जहेव रयणप्यभाप तहेव सत्त सेढीओ । एवं पञ्चलवायरते उकाइयत्ताय वि । वाउकाइपसु वणस्सरकाइपसु य जहा पुढविकाइपसु उववादओ तहेव चउकाएणं मेवेणं उववापयद्यो । एवं पञ्चलवायरते उकाइयो वि एपसु चेव ठाणेसु उववापयद्यो । वाउकाइय—वणस्सरकाइयाणं जहेव पुढविकाइयत्ते उववापयद्यो । वाउकाइय माणियद्यो ।
- २०. [प्र०] अपजाससुदुमपुदविकाहर णं मंते ! उहलोगलेसनालीर बाहिरिल्ले खेसे समोहर, समोहणिसा जे मविर अहेलोगलेसनालीर बाहिरिल्ले क्षेत्रे अपजाससुदुमपुदविकाहरयत्तार उवविज्ञासर से णं मंते ! कहसमर्यणं० ! [उ०] एवं ।
- २१. अहुलोगकेत्तनालीए बाहिरिक्के केत्ते समोहयाणं अहेलोगकेत्तनालीए बाहिरिक्के केत्ते उववज्जयाणं सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियद्यो, जाव-बायरवणस्सदकादओ पज्जत्तभो बायरवणस्सदकादपसु पञ्चत्तपसु उववादओ।
- २२. [प्र०] अपज्रसमुद्दुमपुद्दविकाद्द्रण मंते! लोगस्स पुरिच्छिमिल्ले चिरमंते समोद्दण्ता जे भविप लोगस्स पुरिच्छिमिल्ले चेव चिरमंते अपज्रसमुद्दुमपुद्दविकाद्द्रयसाप उवविज्ञस्य से णं मंते! कद्दसमुद्दणं विग्गहेणं उववज्जिति! [प्र०] से केणहेणं मंते! पवं वुच्द-'पगसमृद्द्रण वा जाव-उववज्जेजा'! [उ०] पवं अलु गोयमा! मप सत्त सेदीओ पन्नसाओ, तंजहा—१ उज्जुआयता, जाव-७ अज्ञस्तक्रवाला। उज्जुआययाप सेदीप उववज्जमाणे एगसमृद्द्रणं विग्गहेणं उववज्जेजा। एगओवंकाप सेदीप उववज्जमाणे जे भविप पगपयरंसि अणुसेदी उववज्जित्रप से णं तिसमृद्द्रणं विग्गहेणं उववज्जेजा। हृद्द्रओवंकाप सेदीप उववज्जमाणे जे भविप पगपयरंसि अणुसेदी उववज्जित्तप से णं तिसमृद्द्रणं विग्गहेणं उववज्जेजा। हृद्द्रओवंकाप सेदीप उववज्जनाणे जे भविप पगपयरंसि अणुसेदी उववज्जित्तप से णं तिसमृद्द्रणं विग्गहेणं उववज्जेजा, जे भविप विसेदिं उवविज्ञत्तप से णं स्वउसमृद्द्रणं विग्गहेणं उववज्जेजा, से तेणहेणं० जाव—उववज्जेजा। पवं अपज्ञसमुद्दुमपुद्दविकाद्द्रओ लोगस्स पुरिच्छिमिल्ले चेव चिरमंते अपज्ञसपसु पज्जसपसु य सुदुमपुद्दविकाद्द्रपसु, सुदुमआउकाद्द्रपसु, अपज्ञसपसु पज्रसपसु पुरुमते-उक्काद्रपसु, अपज्ञसपसु पुरुमते-उक्काद्रपसु, अपज्ञसपसु पुरुमते-उक्काद्रपसु, अपज्ञसपसु य सुदुमवाउकाद्रपसु, अपज्ञसपसु वायरवाउकाद्रपसु, अपज्ञसपसु पुरुमते-
- १९. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्यात बादर तेजस्कायिक समयक्षेत्र—मनुष्यक्षेत्रमां समुद्धात करी समयक्षेत्रमां अपर्यात बादर तेजस्कायिकपणे उत्पन्न धवाने योग्य छे ते, हे भगवन् ! केटला ममयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न धाय ! [उ०] हे गौतम ! ते एक समयनी, बे समयनी के त्रण समयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न धाय . [प्र०] एम श्रण हेतुथी कहेवाय छे ! [उ०] रत्नप्रमा संबंधे जे हेतु कह्यो हतो तेज सात श्रेणिक्तप हेतु जाणवो. एम पर्यात बादर तेजस्कायिकपणे पण जाणवुं. जेम पृथिवीकायिकने विषे उपपात कह्यो तेम वायुकायिकोमां अने बनस्पतिकायिकोमां चारे मेदे उपपात कहेवो. ए रीते पर्यात बादर तेजस्कायिकनो पण एज स्थानकोमां उपपात कहेवो. जेम वायुकायिक अने बनस्पतिकायिकनो पृथिवीकायिकनो पृथिवीकायिकनो पृथिवीकायिकनो पृथिवीकायिकनो प्रथात कहेवो.

अपर्याप्त बादर तेजस्कायिकनी विद्यहर्गाते.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक ऊर्ध्यटोक क्षेत्रनी त्रसनाडीना बहारना क्षेत्रमां भरणसमुद्धात करीने क्षधोटोक क्षेत्रनी त्रसनाडीनी बहारना क्षेत्रमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते, हे भगवन् ! केटला समयनी विप्रहगतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

अपर्याप्त स्० पृत्रिवी कायिकनी अर्थेली कमांथी अधीलोकम विग्रहगतिः

२१. ऊर्ध्वलोक क्षेत्रनी त्रसनाडीनी बहारना क्षेत्रमां मरणसमुद्धात करी अधीलोक क्षेत्रनी त्रसनाडीनी बहारना क्षेत्रमां उत्पन्न धता [ पृथिवीकायिकादि ] संबंधे पण तेज संपूर्ण गम कहेवो यावत्—पर्याप्त बादर वनस्पनिकायिकानो पर्याप्त बादर वनस्पनिकायिकोमां उपपात कहेवो.

२२. [प्र०] हे भगवन्! जे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक छोकना पूर्व चरमांतमां मरणसमुद्घात करी छोकना पूर्व चरमांतमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न धवाने योग्य छे ते हे भगवन्! केटला समयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न धाय ! [उ०] हे गौतम ! एक समयनी, वे समयनी के चार समयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन्! शा हेनुथी एम कहो छो के एक समयनी यावत्—चार समयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न धाय ! [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे खरेखर में सात श्रेणिओ कही छे, ते आ प्रमाणे— १ ऋज्वायत,—यावत्—७ अर्धचक्रवाल, जो ऋज्वायत—सीघी लांबी श्रेणीथी उत्पन्न धाय तो एक समयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न धाय, एकतरफ वक्र श्रेणीथी उत्पन्न धाय तो ते वे समयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न धाय. उभयतः वक्रश्रेणीथी उत्पन्न धाय तो जे एक प्रतरमां अनुश्रेणी—समश्रेणिथी उत्पन्न धवानो छे ते त्रण समयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न धाय, अने जे विश्रेणिमां उत्पन्न धवानो छे ते चार समयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न धाय, अने जे विश्रेणिमां उत्पन्न धवानो छे ते चार समयनी विप्रहगितिथी उत्पन्न धाय. ते कारणथी हे गौतम ! एम कह्युं छे. ए प्रमाणे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक छोकना पूर्व चरमांतमां समुद्धात करी छोकना पूर्व चरमांतमां २ अपर्याप्त स्वन्न पूर्वविकायिकोमां, ६ अपर्याप्त करी चरमांतमांज २ अपर्याप्त स्वन पूर्वविकायिकोमां, ६ अपर्याप्त स्वन पूर्वविकायिकोमां स्वन पूर्वविकायिकोमां स्वन पूर्वविकायिक स्वन पूर्वविकायिकोमां स्वन पूर्वविकायिकोमां स्वन पूर्वविकायिक स्वन स्वन स्वन स्वन स्वन स्व

लोकना पूर्व चरम' तमा पृथिपीकाथिक यिकनी विमङ्गतिः सुदुमवणस्सद्दकार्पस्, अपज्ञसपस् पज्जसपस् य बारसस् वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियद्यो । सुदुमपुढिविकाद्दमो पज्ज-सबो-एवं चेव निरवसेस्तो बारसस् वि ठाणेसु उववापयद्यो २४ । एवं एएणं गमएणं जाव-सुदुमवणस्सद्दकार्मो पज्जसमो सुदुमवणस्सद्दकारपस्च पज्जसपस्च चेव भाणियद्यो ।

- २३. [प्र०] अपज्ञस्तसुहुमपुदविकार्य णं मंते ! लोगस्स पुरिष्धिमेश्चे चिरमंते समोद्दय, समोद्दिणिता जे मिष्य लोगस्स व्राहिणिले चिरमंते अपज्ञस्तसुहुमपुदिकार्यसु उवयज्ञिस्य से णं मंते ! कर्सम्मर्णणं विग्गहेणं उववज्जेजा ! [उ०] गोयमा ! वुसमर्पण वा तिसमर्पण वा चउसमर्पण वा विग्गहेणं उववज्जर । [प्र०] से केणट्टेणं मंते ! यवं बुखर ! [उ०] यवं कतु गोयमा ! मय सत्त सेदीयो पश्चा, तंजहा—१ उज्जुभायता, जाव—७ अस्चकवाला । पग्थोवंकाय सेदीय उववज्जमाणे दुसम-र्पणं विग्गहेणं उववज्जेका, तुह ओवंकाय सेदीय उववज्जमाणे जे भविष पग्ययंमि अणुसेदीओ उववज्जित्तय से णं तिसमर्पणं विग्गहेणं उववज्जेका, जे भविष विसेदि उववज्जित्तय से णं चउसमर्पणं विग्गहेणं उववज्जेका से तेणट्टेणं गोयमा !०। यवं यपणं गमपणं पुरिष्ठिमिले चिरमंते समोद्दय दाहिणिले चिरमंते उववाण्यवो, जाव—सुहुमवणस्सर्कार्मो पञ्चसभो सुहुमव-णस्सर्कार्यसु पज्जस्तपसु चेव । सद्देशि दुसमर्भो तिसमर्भो चउसमर्भो विग्गहो भाणियद्यो ।
- २५. [प्र०] अपजलसुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरिष्णिमिल्ले चिरमंते समोहए, समोहणिता जे भविए लोगस्स प्रविष्णिमिल्ले चिरमंते अपजलसुहुमपुढविकाइयत्ताए उवविज्ञित्तए से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उवविज्ञेजा ! [उ०] गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उवविज्ञेजा । [प्र०] से केण्ट्रेणं० ! [उ०] एवं । जहेव पुरिष्णिमिल्ले चिरमंते समोहया पुरिष्णिमिल्ले चेव चिरमंते उववाइया तहेव पुरिष्णिमिल्ले चिरमंते समोहया प्रविद्यामिल्ले चिरमंते उववाइया तहेव पुरिष्णिमिल्ले चिरमंते उववाएया सबे ।
- २५. [प्र०] अपज्जत्तसुद्वमपुदविकारए णं भंते ! लोगस्स पुरिष्क्रिमिल्ले चिरमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमंते अपज्जत्तसुद्वमपुदविकारयत्ताए उचयिजन्तिए से णं भंते० ! [उ०] एवं जहा पुरिष्क्रिमिल्ले चिरमंते समोहबी दाहिणिल्ले चरिमंते उचवारओ तहा पुरिष्क्रिमिल्ले समोहबो उत्तरिल्ले चरिमंते उचवाएयद्यो ।

तेम धवानुं कारण.

अने पर्याप्त सृक्ष्म तेजस्कायिकोमां, ८ अपर्याप्त अने पर्याप्त सृक्ष्म वायुकायिकोमां, १० अपर्याप्त अने पर्याप्त बादर वायुकायिकोमां, तथा १२ अपर्याप्त अने पर्याप्त अने पर्याप्त अने पर्याप्त अने पर्याप्त अने पर्याप्त स्थानकोमां क्रमपूर्वक कहेवो. सूक्ष्म पृथिवीका- यिकपर्याप्तानो एज प्रमाणे बारे स्थानकोमां समग्र उपपात कहेवो. ए राते ए गमवडे यावत्—पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकनो पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोमांज उपपात कहेवो.

अप॰ स्॰ पृथिवीका-यिकनो उपपात.

- २३. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिक, छोकना पूर्व चरमांतमां समुद्वात करी छोकना दक्षिण चरमांतमां अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन् ! केटछा समयनी विष्रहगतिथी उत्पन्न थाय. [उ०] हे गौतम ! ते वे समयनी, त्रण समयनी के चार समयनी विष्रहगतिथी उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! एम ज्ञा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! मे खरेखर सात श्रेणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे—१ ऋज्वायता अने यावत्—७ अर्धचक्रवाला. जो ते जीव एक तरफनी वक्र श्रेणीथी उत्पन्न थाय तो ते वे समयनी विष्रहगतिथी उत्पन्न थाय, उभयतः वक्र श्रेणीथी उत्पन्न थाय तो जे एक प्रतरमा अनुश्रेणि—समश्रेणिए उत्पन्न थवानो छे ते त्रण समयनी विष्रहगतिथी उत्पन्न थाय. हे गौतम ! ते कारणथी ए प्रमाणे कह्युं छे. ए रीते ए गमवडे पूर्व चरमांतमां समुद्धातपूर्वक दक्षिण चरमांतमां उपजाववो. यावत्—पर्याप्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिकानो पर्याप्त स्कृम वनस्पतिकायिकानो उपपात कहेवो अने बधाने वे समयनी, त्रण समयनी अने चार समयनी विष्रह गति कहेवी.
- २४. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्याप्त सृक्ष्म पृथिवीकायिक लोकना पूर्व चरमांतमां समुद्वात करी लोकना पश्चिम चरमांतमां अपर्याप्त स्क्ष्म पृथिवीकायिकपण उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन् ! केटला समयनी विष्रहगतिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ते एक
  समयनी, वे समयनी, त्रण समयनी के चार समयनी विष्रहगतिथी उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कही छो ! [उ०] हे
  गौतम ! पूर्व प्रमाणे जाणबुं. जेम पूर्व चरमांतमां समुद्वात करी पूर्व चरमांतमांज उपपात कहो तेमज पूर्व चरमांतमां समुद्वात करवा
  पूर्वक पश्चिम चरमांतमां बधाना उपपात कहेवा.

लोकना पूर्वचरमा-न्त्रयी पश्चिम चरमा-न्त्रमां विग्रह्मति. २५. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्यात स्१म पृथिवीकायिक छोकना पूर्व चरमांतमां मरणसमुद्वात करी छोकना उत्तर चरमांतमां अपर्यात स्१म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला समयनी विग्रहगतियी उत्पन्न धाय ! [उ०] जेम पूर्व चरमांतमां समुद्धातपूर्वक दक्षिण चरमांतमां उपपात कहो। तेम पूर्व चरमांतमां समुद्धातपूर्वक उत्तर चरमांतमां उपपात कहेगो.

२६. [प्र०] अपज्यसमुद्वायद्वाद्वार णं भंते ! लोगस्स दाहिणिले चिरमंते समोहण, समोहणिसा जे भविष लोगस्स दाहिणिले चेव चिरमंते अपज्यसमुद्वायदाए उवविज्ञसणः १ [उ०] एवं जहा पुरिच्छिमिले समोहओ पुरिच्छिमिले वेव उववादयो, तहेव निरवसेसं जाव-सुद्वुमवणस्सद्दाशो एजसओ सुद्वुमवणस्सद्द्वाद्वयस्य वाहिणिले चिरमंते उववादयो, तहेव निरवसेसं जाव-सुद्वुमवणस्सद्द्वाद्वयस्य चेव पज्जस्य दाहिणिले चिरमंते उववादयो, एवं दाहिणिले समोहओ प्रचच्छिमिले चिरमंते उववादयो । नवरं दुसमद्य-तिसमद्य-चउसमद्यविग्गहो, सेसं तहेव । दाहिणिले समोहओ उत्तरिले चिरमंते उववादयो जहेव सहाणे तहेव। एगसमद्य-दुसमद्य-तिसमद्य-चउसमद्यविग्गहो। पुरिच्छिमिले जहा पचिछिमिले, तहेव दुसमद्य-तिसमद्य-चउसमद्यविग्गहो। पुरिच्छिमिले जहा पचिछिमिले, तहेव दुसमद्य-तिसमद्य-चउसमद्यविग्गहो। पचिछिमिले वेव उववज्जमाणाणं पगसमद्यो विग्गहो नित्य, सेसं तहेव। पुरिच्छिमिले वेव उववज्जमाणाणं पगसमद्यो विग्गहो नित्य, सेसं तहेव। पुरिच्छिमिले उववज्जमाणाणं प्रत्यस्व विग्गहो नित्य, सेसं तहेव। उत्तरिले समोहयाणं पुरिच्छिमिले उववज्जमाणाणं पवं चेव। नवरं पगसमद्यो विग्गहो नित्य। उत्तरिले समोहयाणं दाहिणिले उववज्जमाणाणं जहा सद्वाणे, उत्तरिले समोहयाणं पुरिच्छिमिले उववज्जमाणाणं पवं चेव। नवरं पगसमद्यो विग्गहो नित्य। उत्तरिले समोहयाणं दाहिणिले उववज्जमाणाणं जहा सद्वाणे, उत्तरिले समोहयाणं प्रचिष्ठि उववज्जमाणाणं पगसमद्द्यो विग्गहो नित्य। उत्तरिले समोहयाणं दाहिणिले उववज्जमाणाणं जहा सद्वाणे, उत्तरिले समोहयाणं प्रचिष्ठि उववज्जमाणाणं पगसमद्द्यो विग्गहो नित्य, सेसं तहेव। जाव-सुद्वुमवणस्सद्द्वाद्व्य पज्जस्य चेव।

२७. [प्र०] किं णं मंते ! वायरपुदिविकादयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नता ! [उ०] गोयमा ! सट्टाणेणं अट्टसु पुद्धवीसु— जहा ठाणपदे, जाव-सुद्धुमवणस्सद्दकादया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सच्चे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सचलोगपरि-यावका पन्नता समणाउसो !।

२८. [प्र०] अपज्जससुदुमपुदविकादयाणं भंते ! कित कम्मप्पगडीओ पन्नसाओ ! [उ०] गोयमा ! अट्ट कम्मप्पगडीओ पन्नसाओ, तंजहा-१ नाणावरणिज्ञं जाव-८ अंतरादयं। एवं चउक्कएणं भेवेणं जहेव प्रगिद्दियसपसु जाव-बायरवणस्सद-काद्याणं पज्जसगाणं।

२६. [प्र०] हे भगवन् ! जे अपर्यात स्क्ष पृथिवीकायिक छोकना दक्षिण चरमांतमां मरणसमुद्घात करी छोकना दक्षिण चरमांतमां अपर्यात सूक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न धवाने योग्य छे ते केटला समयनी विप्रहर्गातिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गोतम ! जेम पूर्व चरमांतमां समुद्घात करी पूर्व चरमांतमां उपपात कहें ।— इत्यादि बधुं पूर्व प्रमाणेज कहें युं, यात्र — पर्यात सूक्ष्म वनस्पतिकायिकनो पर्यात सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोगां दक्षिण चरमांतमां उपपात कहों एम दक्षिण चरमांतमां समुद्धात अने पश्चिम चरमांतमां उपपात कहें वो. विशेष ए के, वे समय, त्रण समय के चार समयनी विप्रहर्गात जाणवी अने बाकी बधुं तेमज जाणवुं. जेम खस्थानमां कह्यं तेम दक्षिण चरमांतमां समुद्धात अने उत्तर चरमांतमां उपपात कहें यो, अने पत्र समय, वे समय, त्रण समय के चार समयनी विप्रहर्गात जाणवी. पश्चिम चरमांतमां समुद्धात करी धने पश्चिम चरमांतमां वत्र चया पृथिवीकायिकादि संबंधे जेम खस्थानमां कह्यं तेम जाणवुं. उत्तर चरमांतमां उपपात करे अने पश्चिम चरमांतमां वत्र चया प्रथिवीकायिकादि संबंधे जेम खस्थानमां कह्यं तेम जाणवुं. उत्तर चरमांतमां उपपात वाकी बधुं तेमज जाणवुं. पूर्व चरमांत संबंधे खस्थाननी पेठे समजवुं. दक्षिण चरमांतमां एक समयनी विप्रहर्गात नथी अने बाकी बधुं तेमज सम्पन्तुं. उत्तरमां समुद्धातने प्राप्त थएला अने उत्तरमां उपज्ञ विशेष ए के, एक समयनी विप्रहर्गात नथी. उत्तरमां समुद्धातने प्राप्त थएला अने दक्षिणमां उत्पन्न थता प्रथिन स्वर्णा विशेष खस्थाननी पेठे जाणवुं. उत्तरमां समुद्धातने प्राप्त थएला अने दिष्ठणमां उत्पन्न थता जीवो संबंधे खस्थाननी पेठे जाणवुं. उत्तरमां समुद्धातने प्राप्त थरेला अने दिष्ठणमां उत्पन्न थता जीवो संबंधे खस्थाननी पेठे जाणवुं. यावत्—पर्यात सूक्ष्म वनस्पतिकायिकानो पर्यात सूक्ष्म वनस्पतिकायिकानो पर्यात कहें तेमज जाणवुं. यावत्—पर्यात सूक्ष्म वनस्पतिकायिकानो पर्यात सूक्ष्म वनस्पतिकायिकानो उपपात कहें तेमज जाणवुं. यावत्—पर्यात सूक्ष्म वनस्पतिकायिकानो पर्यात कहें तेमज जाणवुं. यावत्—पर्यात सूक्ष्म वनस्पतिकायिकानो पर्यात कहें तेमज जाणवुं. यावत्—पर्यात कहें विप्रहर्गात कहें तेमज जाणवुं. यावत्—पर्यात कहें तेमज वावत्वी तेमज जाणवुं. यावत् व्यात कहें तेमज वावत्वी तेमज व्यात कहें तेमज वावत्वी तेमज विप्रहर्गात करें तेमज वावत्वी तेमज वावत्वी तेमज वावत्वी तेमज वावत्वी तेमज वावत्वी तेमज वावत्

२७. [प्र०] हे भगवन् । पर्याप्त बादर पृथिवीकायिकोनां स्थानो क्यां क्रें शित्र । तेओनां स्थान खस्थानने अपेक्षी आठ पृथ्वीओमां छे—इत्यादि \*स्थानपदमां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत्—पर्याप्त अने अपर्याप्त ते बधा सूक्ष्म वनस्पतिकायिको एक प्रकारना छे, तेओमां कांइ पण विशेष या भिन्नता नथी. हे आयुष्पन् श्रमण । तेओ सर्वलोकमां व्याप्त छे.

बादर पृथिवीकारि कोनां स्थानः

२८. [प्र०] हे भगवन्! अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओं कही छे ! [उ०] हे गौतम! तेओने आठ कर्म प्रकृतिओं कही छे, ते आ प्रमाणे—ज्ञानावरणीय अने यात्रत्—अंतराय. ए प्रमाणे चारे मेदो वडे जेम एकेंद्रिय रातकमां कह्युं छे, तेम यावत्—पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक सुधी जाणहुं.

अपर्यात स्ट्रम एः वीकायने कमै प्रकृतिओः

- २९. [प्र०] अपज्जत्तसुदुमपुढविकादया णं भंते ! कति कम्मप्यगडीओ वंधंति ! [उ०] गोयमा ! सत्तविद्दवंधगा वि, अटूचिद्दवंधगा वि, जहा एगिदियसएसु जाव-पज्जत्ता वायरवणस्सद्दकादया ।
- ३०. [प्र०] अपजात्तसुहुमपुढविकादया णं भंते ! कित कम्मप्पगडीओ वेदेंति ! [उ०] गोयमा ! वोद्स कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तंत्रहा—नाणावरणिजं, जहा पर्गिदियसपसु जाव-पुरिसवेदवज्झं, पवं जाव-वादरवणस्सदकादयाणं पजात्त्वगाणं ।
- ३१. [प्र॰] पगिदिया णं भंते ! कओ उवधक्रांति ? कि नेरइपहितो उवबक्रांति ? ৹ [उ॰] जहा वक्रंतीय पुरुषिका-इयाणं उववाओ ।
- ३२. [प्र०] एगिदियाणं भंते ! कइ समुग्धाया पन्नता ! [उ०] गोयमा ! चत्तारि समुग्धाया पन्नता, तंजहा—सेदणा-समुग्धाय, जाव-वेउश्वियसमुग्धाय ।
- ३३. [प्र०] एगिदिया णं अंते ! किं तुल्लद्वितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ! तुल्लद्वितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ! वेमायद्वितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ! वेमायद्वितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ! [उ०] गोयमा ! अत्थेगह्या तुल्लद्वितीया तुल्लद्विसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगह्या वेमायद्वितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगह्या वेमायद्वितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । [प्र०] से केणद्वेणं मंते ! एवं वुष्वह—'अत्थेगह्या तुल्लद्वितीया जाव—वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ! [उ०] गोयमा ! एगिदिया चउिष्वहा पक्षत्ता, तंजहा—अत्थेगह्या समोउया समोवविष्वा १, अत्थेगह्या समाउया विसमाउया समोवविष्या ३, अत्थेगह्या विसमाउया विसमोवविष्या १ । तत्थ णं जे ते समाउया समोवविष्या ते णं तुल्लद्वितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति १, तत्थ णं जे ते समाउया विसमाउया वियम वियम वियम विसमाउया विसमाउया विसमाउया वियम वियम वियम विसमाउया वियम वियम वियम वियम वियम वियम वियम वि

अपर्याप्त सहम पृथि-वीकाधिकने कर्मै-बन्धः

- मन्यः एकेन्द्रियने कर्मनुं वेदनः
- २९. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त सूक्ष पृथ्वीकायिको केटली कर्मप्रकृतिओ बांचे छे ! [उ०] हे गौतम ! सात कर्मप्रकृतिओ बांधे छे अथवा आठ कर्मप्रकृतिओ बांधे छे—इत्यादि जेम एकेंद्रियशातकमां कह्युं छे तेम यावत्—पर्याप्त बादर वनस्पतिकायिक सुधी जाणवुं.
- २०. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त सृक्ष्म पृथिवीकायिको केटली कर्मप्रकृतिओने वेदे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ चौद कर्मप्रकृतिओने वेदे छे. ते आ प्रमाणे-ज्ञानावरणीय ( वगेरे आठ प्रकृतिओ, वेइन्द्रियादि चार आवरण, स्त्रीवेद अने पुरुपवेदप्रतिबन्धक कर्म )-इस्यादि जेम एकेंद्रिय रातकमां कह्युं छे तेम यावत्-पुरुपवेदप्रतिवन्धक कर्मप्रकृति सुधी यावत्-पूर्याप्त वादर बनस्पतिकायिक सुधी जाणवुं.

एकेन्द्रियोनो उपपातः ३१. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीवो क्यांथी आवी उत्पन्न याय ! शुं नैरियकोषी आवी उत्पन्न याय-इत्यादि. [उ०] जेम <sup>क</sup>ैंच्युत्कांतिपदमां पृथिनीकायिकोनो उपपात कह्यो छे तेम अहीं जाणवो.

एकेन्द्रियने समुद्धातः ३२. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीवोने केटला समुद्धातो कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओने चार समुद्धातो कह्या छे, ते आ प्रमाणे—१ वेदनासमुद्धात, (२ कपाय, ३ मरण) अने यावत्-४ वैक्रियसमुद्धात.

प्रकेन्द्रियो शुं तुस्य विशेषाधिक कर्म करे ? ३३. [४०] हे भगवन्! जुं तुल्य स्थितिवाळा—समान आयुपवाळा एकेंद्रिय जीवो तुल्य अने विशेपाधिक कर्मनो बन्ध करे छे ! तुल्य स्थितिवाळा परस्पर तुल्य विशेपाधिक कर्मवन्ध करे छे ! भिन्न भिन्न स्थितिवाळा परस्पर तुल्य विशेपाधिक कर्मवन्ध करे छे ! [उ०] हे गौतम ! १ केटलाक तुल्य स्थितिवाळा एकेंद्रियो परस्पर तुल्य विशेपाधिक कर्मवन्ध करे छे , २ केटलाक तुल्य स्थितिवाळा भिन्न भिन्न विशेपाधिक कर्मवन्ध करे छे , ३ केटलाक भिन्न भिन्न स्थितिवाळा तुल्य विशेपाधिक कर्मवन्ध करे छे अने ४ केटलाक भिन्न भिन्न स्थितिवाळा भिन्न भिन्न विशेपाधिक कर्मवन्ध करे छे अने ४ केटलाक भिन्न भिन्न स्थितिवाळा भिन्न भिन्न विशेपाधिक कर्मवन्ध करे छे ! [उ०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के केटलाक एकेन्द्रियो तुल्यस्थितिवाळा यावत्—भिन्न भिन्न विशेपाधिक कर्मवन्ध करे छे ! [उ०] हे गौतम ! एकेंद्रिय जीवो चार प्रकारना कह्या छे . ते आ प्रमाणे—१ केटलाक समान आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला, २ केटलाक समान आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला, अने केटलाक समान आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला, अने केटलाक जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला, अने केटलाक जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला होय छे नेओ तुल्यस्थितिवाळा छे अने तेओ तुल्य विशेपाधिक कर्मबंध करे छे. जेओ समान आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला छे तेओ जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला छे तेओ जुदा जुदा आयुपवाळा छे अने तुल्य विशेपाधिक कर्मबंध करे छे. जेओ जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला छे तेओ जुदा जुदा आयुपवाळा छे अने तुल्य विशेपाधिक कर्मबंध करे छे. तथा जेओ जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला छे तेओ जुदा जुदा आयुपवाळा छे अने तुल्य विशेपाधिक कर्मबंध करे छे. तथा जेओ जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन थयेला छे तेओ जुदा जुदा आयुपवाळा छे अने तुल्य विशेपाधिक कर्मबंध करे छे. तथा जेओ जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला छे तेओ जुदा जुदा आयुपवाळा छे अने तुल्य विशेपाधिक कर्मबंध करे छे. तथा जेओ जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला छे तेओ जुदा जुदा आयुपवाळा छे अने तुल्य विशेपाधिक कर्मबंध करे छे. तथा जेओ जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन्ध थयेला छे तेओ साथेला छे लेला जुदा जुदा आयुपवाळा छे अने तुल्य विशेपाधिक कर्मबंध करे छे.

<sup>\*</sup> ३१ प्रज्ञा॰ पद ६ प॰ २१२–१.

विसमोववक्तगा ते णं वेमायद्वितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ४ । से तेणट्रेणं गोयमा ! जाव-वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! त्ति २ जाव-विहरति ।

#### चोत्तीसइमे सए पढमे एगिदियसए पढमो उद्देसी समत्तो।

अने जुदा जुदा समये उत्पन्न थयेला छे तेओ भिन्न भिन्न स्थितिवाळा छे अने जुदुं जुदुं विशेषाधिक कर्म करे छे. हे गौतम! ते कारणधी यावत्—भिन्न मिन्न विशेषाधिक कर्म करे छे 'हे मगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे' एम कही यावत्—विहरे छे.

#### चोत्रीशमा शतकमां प्रथम एकेन्द्रियशतकनो प्रथम उदेशक समाप्त.

### बीओ उद्देसो।

- १. [प्र०] कद्दविद्वा णं भंते ! अणंतरोववन्नमा प्रिनिद्या पन्नसा ! [उ०] गोयमा ! पंचविद्वा अणंतरोववन्नमा प्रिनिद्या पन्नसा, तंजहा-१ पुढविकाइया-दुयामेदो जहा प्रिनिद्यसपसु जाव-बायरवणस्सद्दकाद्दया य ।
- २. [प्र०] किंद्रं णं भंते ! अणंतरोववश्वगाणं वायरपुढविकाद्याणं ठाणा पश्चता ? [उ०] गोयमा ! सद्दाणेणं अदृषु पुढवीसु, तंजहा—रयणप्पभाप जहा ठाणपवे, जाव—वीवेसु समुद्देसु । पत्थ णं अणंतरोववश्वगाणं वायरपुढविकाद्याणं ठाणा पश्चता, उववापणं सद्यलोप, समुग्धापणं सद्यलोप, सद्दाणेणं लोगस्स असंखेजदमागे । अणंतरोववश्वगसुदुमपुढविकादया प्रगिविद्दा अविसेसमणाणत्ता सञ्चलोप परियावश्चा पश्चता समणाउसो ! । एवं पएणं कमेणं सद्ये पिगिदिया भाणियद्या, सद्दाणादं सद्वेसि जहा ठाणपदे । तेसि पज्चनाणं वायराणं उववाय—समुग्धाय—सद्दाणाणि जहा तेसि चेव अपज्वत्तगाणं वायराणं । सुदुमाणं सद्येसि जहा पुढविकाद्याणं भणिया तहेव भाणियद्या जाव—वणस्सद्दकाद्द्य ति ।
- ३. [प्र०] अणंतरोववश्वगाणं सुदुमपुढिविकादयाणं भंते । कर कम्मप्पगडीओ पश्चताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ट कम्मप्पगडीओ पश्चताओ-पवं जहा प्रगिद्यसपसु अणंतरोववश्वगउद्देसप् तहेव पश्चताओ, तहेव वंधंति, तहेव वंदंति, जाय-अणंतरो-यवश्वना वायरवणस्सद्दकाद्द्या ।
  - ध. [प्र०] अणंतरोचवन्नगर्पागिदिया णं भंते ! कओ उषवज्ञांति ? [उ०] जहेच ओहिए उद्देसको भणिओ तहेव ।
- ५. [प्र॰] अणंतरोववन्नगर्पांगिदियाणं भंते ! कित समुग्धाया पन्नसा ! [उ०] गोयमा ! दोन्नि समुग्धाया पन्नसा, तंजहा-वेदणासमुग्धाय य कसायसमुग्धाय य ।

### द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र॰] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन्न (तुरत उत्पन्न थयेन्य ) एकेंद्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त-रोपपन्न एकेंद्रियो पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिक वगेरे. तेना बे मेद जेम एकेंद्रिय शतकोमां कह्या छे तेम यावत्–बादर वनस्पतिकायिक सुधी कहेवा.

अनन्तरोपपन्न । न्द्रियना प्रका

अनन्तरोपपन्न व पृथिवीकायन

स्थानो.

- २. [प्र०] हे भगवन्! अनन्तरोपपन्न बादर पृथिवीकायिकोनां स्थानो क्यां कह्यां छे? [उ०] हे गौतम! खस्थाननी अपेक्षाए आठे पृथितीओमां, ते आ प्रमाणे—रत्नप्रमामां—इत्यादि जेम \*स्थानपदमां कह्युं छे तेम यावत्—द्वीपोमां अने समुद्रोमां अनन्तरोपपन्न पृथिवीकायिकोनां स्थानो कह्यां छे. उपपातनी अपेक्षाए सर्व छोकमां अने समुद्र्घातने आश्रयी सर्व छोकमां छे. खस्थानने अपेक्षी तेओ छोकना असंख्यानमा भागमां रहे छे. अनंतरोपपन्न स्कृष्म पृथिवीकायिको बधा एक प्रकारना विशेषता या भिन्नता रहित छे. तथा हे आयुष्मन् श्रमण! तेओ सर्वछोकमां न्यास छे. ए रीते ए कमवडे बधा एकेद्रियो संबंधे कहेवुं. ते बधानां खस्थानो \*स्थानपदमां कह्या प्रमाणे जाणवां. जेम पर्यास वादर एकेद्रियोनां उपपात, समुद्घात अने खस्थानो कह्या छे तेम अपर्यास वादर एकेद्रियोनां जाणवां. जेम स्थानपिकोनां उपपात, समुद्घात अने खस्थानो कह्या छे तेम वधा स्कृष्म एकेट्रियोना यावत्—वनस्पतिकायिक सुधी जाणवा.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन स्हम पृथिवीकायिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे इत्यादि जेम एकेद्रिय रातकोमां अनन्तरोपपन उदेशकने विषे कह्या प्रमाणे कर्मप्रकृतिओ कहेवी. यावत् तेज रीते बांधे छे, ते ज रीते वेदे छे, यावत् अनन्तरोपपन बादर वनस्पतिकायिक सुधी समजवुं.

अनन्तरीपपन्न न्द्रियने कर्नैः दृतिओः

थ. [प्र∘] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गैातम ! जेम औघिक—सामान्य उदेशकमां कक्षुं छे तेम कहीं जाणवुं.

उपपात.

५. [प्र०] हे भगवन् । अनंतरोपपन्न एकेंद्रियोने केटल समुद्धातो कह्या छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओने वे समुद्धातो कह्या छे. ते आ प्रमाणे—वेदनासमुद्धात अने कषायसमुद्धात.

अननारोपपन्न न्द्रियने स**मुद्धा**  ५. [प्र०] अणंतरोववञ्चगएगिविया णं भंते ! किं तुल्लद्वितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेति-पुच्छा तहेव । [उ०] गोयमा ! अत्येगह्या तुल्लद्वितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेति । विश्व से केणदेणं जाय-विसेसाहियं कम्मं पकरेति ! [प्र०] से केणदेणं जाय-विमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति ! [उ०] गोयमा ! अणंतरोववञ्चगा पगिदिया दुविहा पञ्चला, तंजहा-अत्येगह्या समाउया समोववञ्चगा, अत्येगह्या समाउया विसमोववञ्चगा । तत्थ णं जे ते समाउया समोववञ्चगा ते णं तुल्लद्वितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेति । तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववञ्चगा ते णं तुल्लद्वितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति । से तेणदेणं जाव-वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

### चोत्तीसइमे सए पढमे एगिदियसए बीओ उद्देसी समत्ती।

कमैं वंधनी विशेषताः

५. [प्र०] हे भगवन् ! तुल्य स्थितिवाळा—समान आयुषवाळा अनंतरोपपन्न एकेंद्रियो द्धां परस्पर तुल्य विशेषाधिक कर्म बांघे छे—हत्यादि पूर्ववत् पृच्छा. [उ०] हे गौतम ! केटलाक तुल्यस्थितिवाळा एकेंद्रियो तुल्य विशेषाधिक कर्म बांघे छे, केटलाक तुल्यस्थितिवाळा एकेंद्रियो जुदुं लुदुं विशेषाधिक कर्म बांघे छे. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुपी कहो छो के, यावत्—लुदुं लुदुं विशेषाधिक कर्म बांघे छे ? [उ०] हे गौतम ! अनंतरोपपन्न एकेंद्रियो बे प्रकारना कद्या छे. ते आ प्रमाणे—केटलाक समान आयुषवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला अने केटलाक समान आयुषवाळा अने लुदा लुदा समये उत्पन्न थयेला. तेमां जे समान आयुषवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला छे तेओ तुल्य स्थितिवाळा होइ तुल्य विशेषाधिक कर्म बांघे छे अने जेओ तुल्य स्थितिवाळा अने विषमोपपन—लुदा लुदा समये उत्पन्न थयेला छे तेओ तुल्यस्थितिवाळा अने लुदुं लुदुं विशेषाधिक कर्म बांघे छे. माटे ते कारणपी यावत्—भिन्न भिन्न विशेषाधिक कर्म बांघे छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

#### चोत्रीशमा शतकमां प्रथम एकेन्द्रियशतकनो द्वितीय उद्देशक समाप्त.

## तईओ उदेसो।

- १. [प्र०] करविद्या णं मंते ! परंपरोववन्नगा पर्गिदिया पन्नत्ता ! [उ०] गोयमा ! पंचविद्या परंपरोववन्नगा पर्गिदिया पन्नत्ता, तंज्ञद्दा-पुडविकाद्या-भेदो चउकभो जाय-वणस्सरकादय ति ।
- २. [प्र॰] परंपरोववन्नगभपज्जससुदुमपुदविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुदवीए पुरच्छिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुदवीए जाव-एकच्छिमिल्ले चरिमंते अपज्जससुदुमपुदविकाइयसाए उवविज्ञस्यिः? [ज॰] एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पदमो उद्देसओ जाव-लोगचरिमंतो सि ।
- ३. [४०] किंद्र णं अंते ! परंपरोववन्नगवायरपुढिविकादयाणं ठाणा पन्नता ? [४०] गोयमा ! सट्टाणेणं अट्टसु पुढवीसु— एवं एएणं अभिकायेणं जहा पढमे उद्देसए जाय—तुङ्खद्वितीय ति । 'सेवं अंते ! सेवं अंते' ! ति ।

### चोत्तीसइमे सए पढमे एगिदियसए तईओ उदेसो समत्तो ।

### त्रीजो उद्देशक.

परपरोपपण ५के-न्द्रियोना प्रकारः १. [प्र॰] हे भगवन् ! परंपरोपपन ( उत्पत्तिना द्वितीयादिसमये वर्तमान ) एकेंद्रियो केटला प्रकारना कहाा छे ! [४०] हे गौतम ! तेओ पांच प्रकारना कहा। छे. ते आ प्रमाणे-पृथियीक।यिक वगेरे तेना चार भेद यावत्—वनस्पतिकायिक सुधी जाणवा.

परंपरोपपन्न एकेन्द्रिः बनी विग्रहगतिः

- २. [प्र॰] हे भगवन् ! जे परंपरोपपन अपर्याप्त सृक्ष्म पृथ्वीकायिक आ रत्नप्रभा पृथिवीना पूर्व चरमांतमां मरण समुद्धात करी आ रत्नप्रभा पृथिवीना यावत्—पश्चिम चरमांतमां अपर्याप्त सृक्ष्म पृथिवीकायिकपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते हे भगवन् ! केटला समयनी विग्रहगतिथी उपजे ! [उ॰] ए रीते ए अभिलापथी जेम प्रथम उद्देशक कह्यो तेम यावत्—लोकचरमांत सुधी जाणवुं.
- २. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरोपपन्न बादर पृथिवीकायिकोनां स्थानो क्यां कह्यां छे ! [उ०] हे गौतम ! खस्थानने अपेक्षी आठे पृथिवीमां छे. ए रीते ए अभिलापधी जेम प्रथम उद्देशकमां कह्युं छे तेम यावत्—तुल्यस्थितियाळा सुधी जाणवुं. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे,

### चोत्रीशमा शतकमां प्रथम एकेन्द्रिय शतकनो त्रीजो उद्शक समाप्त.

#### ४-११ उद्देसगा।

पर्व सेसा वि अट्ट उद्देसगा जाव-'अचरमो'सि । नवरं अर्णतरा अर्णतरसरिसा, परंपरा परंपरसरिसा, चरमा य अचरमा थ पर्व चेव । पर्व पते पकारस उद्देसगा ।

## चोत्तीसइमे सए पढमे एगिंदियसए ४-११ उद्देसा समता।

#### पढमं एगिदियसेढीसयं समर्च ।

## ४-११ उद्देशको.

ए रीते बाकीना पण आठ उदेशको यावत्—'अचरम' सुधी कहेत्रा. परंतु विशेष ए के, अनंतर उदेशको अनंतर जेवा अने परंपर उदेशको परंपर समान जाणवा. चरम अने अचरम विषे पण एज रीते जाणवुं. ए रीते ए अगियार उदेशको कहेवा. ३४–११.

#### चोत्रीशमा शतकमां प्रथम एकेन्द्रियशतकना ४-११ उद्देशको समाप्त.

#### चोत्रीशमा शतकमां प्रथम एकेंद्रियश्रेणीशतक समाप्त.

#### बितीयं सयं.

- १. [प्र॰] कहिवहा णं भंते ! कण्हलेस्सा प्रािंदिया पन्नता ! [उ॰] गोयमा ! पंचिवहा कण्हलेस्सा प्रािंदिया पन्नता, भेदो चउक्कभो जहा कण्हलेस्साप्रािंदियसप, जाय-वणस्सहकाइय ति ।
- २. [प्र॰] कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढिविकारए णं अंते ! स्मीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरिच्छिमिले॰ ! [उ॰] एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउहेसओ जाव-'लोगचरिमंते' ति । सद्यत्थ कण्डलेस्सेसु चेव उववाएयद्यो ।
- ३. [प्र॰] किंद्रे णं भंते ! कण्डलेस्सभपज्ञत्तवायरपुदविकाऱ्याणं टाणा पश्चता ? [उ॰] पवं पपणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसओ जाव-नुहुद्विदय सि । 'सेयं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।

एवं पएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव पकारस उद्देसगा भाणियन्ना ३४-११।

### नितियं एगिदियसेटिसयं समत्तं।

#### द्वितीय शतक.

१. [प्र॰] हे भगवन् ! कृष्णलेस्यावाळा एकेंद्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ! [उ॰] हे गौतम ! तेओ कृष्णलेस्यावाळा एकेंद्रियो क्ष्णियांच प्रकारना कह्या छे. तेना चार भेद कृष्णलेष्यावाळा एकेंद्रिय शतकमां कह्या प्रमाणे यावत्—वनस्पनिकायिक सुधी जाणवा.

कृष्णलेक्ष्याबाळा एकेन्द्रियोना प्रकार-

२. [प्र०] हे भगवन् ! जे कृष्णलेश्यावाळो अपर्यात सूक्ष्म पृथिवीकायिक आ स्वप्नमा पृथिवीना पूर्व चरमांतमां समुद्धात करी पश्चिम चरमांतमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते केटला समयनी विप्रहर्गानिथी उत्पन्न थाय ! [उ०] इत्यादि पाठवडे जेम औषिक उदेशकमां कह्युं छे तेम यावत्—लोकना चरमांत सुधी समजद्वं. सर्वत्र कृष्णलेश्यावाळामां उपपात कहेवो.

कृष्णलेदयावाळा एकेन्द्रियोनो वि**गर** गांतथी उपपातः

३. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेक्यावाळा अपर्याप्त बादर प्रथिवीकायिकोनां स्थानो क्यां कह्यां छे ? [उ०] ए अभिन्यपथी आधिक उदेशकमां कह्या प्रमाणे यावत्—'तुल्यस्थितिवाळा' सुधी समजबुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ए अभिन्यपथी जेम प्रथम श्रेणीशतक कह्युं तेमज बीजा श्रेणिशतकना अगियार उदेशको कहेवा.

कृष्णलेखावाटा एकेन्द्रियना स्थानी-

### बीजं एकेंद्रियश्रेणीशतक समाप्त.

#### ३-५ सयाइं

एवं नील्लेस्सेहि वितर्यं सयं । काउलेस्सेहि वि सयं । एवं चेव चउत्थं सयं । मविसिद्धियपहि वि सयं पंचमं समत्तं ।

#### चोत्तीसइमे सए ३-५ सवाइं समत्ताइं।

#### ३-५ शतको.

ए प्रमाणे नीललेश्यानाळाओ संबंधे त्रीजुं शतक कहेबुं. कापोतलेश्यानाळाओ संबंधे पण एज रीते चोथुं शतक कहेबुं अने भवसिद्धिक एकेद्रियो संबंधे पण एज प्रकारे पांचमुं शतक कहेबुं.

#### चोत्रीशमा शतकमां २-५ शतको समाप्त.

## छट्टं सयं.

- १. [प्र०] कद्दविहा णं मंते कण्हलेस्सा भवसिद्धिया परित्या पन्नता ? [उ०] एवं जहेव ओहियउहेसओ।
- २. [प्र०] कहिंबहा णं मंते ! अणंतरोबवका कण्हळेस्सा मयसिद्धिया प्रिंगितिया पश्चता ? [उ०] जहेब अणंतरोबव-श्रउहेसओ ओहिओ तहेव ।
- ३. [प्र०] कद्दविहा णं भंते ! परंपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धियपगिविया पन्नता ? [उ०] गोयमा ! पंचिवहा परंपरोववन्ना कण्हलेस्सभवसिद्धियपगिविया पन्नता-ओहिओ भेदो चउक्कथो जाव-वणस्सद्दकाइयत्ति ।
- ४. परंपरोववन्नकण्हलेस्समवसिद्धियअपज्जत्तसुद्दुमपुढविकाइप णं मंते I इमीसे रयणप्पभाप पुढवीप-पवं पपणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उहेसओ जाव लोयचरमंते सि । सञ्चत्थ कण्डलेस्सेसु भवसिद्धिपसु उववापयच्चो ।
- ५. [प्र॰] किं णं भेते ! परंपरोववक्षकण्डलेस्समविसिश्चियपञ्चत्तवायरपुढिविकाइयाणं ठाणा पक्षता ! [उ॰] एवं पएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाब-'तुङ्खद्विदय' ति । एवं एएणं अभिलावेणं कण्डलेस्समविसिद्धियएगिदिएहि वि तहेव एकारसउद्देसगसंज्ञतं छट्टं सतं ।

#### चोत्तीसइमे सए छट्टं सयं समत्तं।

# छदुं शतक.

कृष्णलेखाबाळा अवसिद्धिक एकें-द्वियोना प्रकारः

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेक्यावाळा भवसिद्धिक एकेन्द्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] जैम औधिक उद्देशकमां कह्युं छे तेमज जाणबुं.

अनन्तरोपपन्न कु० भव० एकेन्द्रियना प्रकार २. [प्र०] हे भगवन् ! अनंतरोपपन्न कृष्णलेक्यावाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अनंतरोपपन्नक संबंधी औधिक उदेशकमां कह्या प्रमाणे जाणवुं.

परंपरोपपत्र कृष्ण० भव० एकेन्द्रियना श्रकार- ३. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरोपपन्न कृष्णलेदयावाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गीतम ! परंपरो-पपन्न कृष्णलेदयावाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो पांच प्रकारना कह्या छे. एम औधिक चारे मेद यावत्—वनस्पतिकायिक सुधी कहेवा.

विमह्मति.

४. हे भगवन् ! जे परंपरोपपन कृष्णलेश्यावाळो भवसिद्धिक अपर्यात सूक्ष्म पृथिवीकायिक आ रतप्रभा पृथिवीना [पूर्व चरमान्तमां मरणसमुद्धात करी पश्चिम चरमान्तमां उत्पन्न धाय तो केटला समयनी विष्रहगितयी उत्पन्न धाय ? ]--इस्यादि पूर्वोक्त पाठवडे औधिक उदेशक लोकचरमांत सुधी कहेवो. सर्वत्र कृष्णलेश्यावाळा भवसिद्धिकोमां उपपात कहेवो.

वृषिनीकायिकना स्यानी- ५. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरोपपन कृष्णलेश्यावाळा भविभिद्धिक पर्यात बादर पृथिवीकायिकोनां स्थानो क्यां कह्यां छे ! [उ०] एम ए अभिन्नापथी तुल्यस्थितिवाळा सुची औधिक उदेशक कहेवो. ए रीते ए अभिन्नापथी कृष्णलेश्यात्राळा भविसिद्धिक एकेंद्रियो संबंधे पण ते प्रमाणे अगियार उदेशक सहित छट्टं शतक कहेवुं. ३४–६.

## चोत्रीशमा शतकमां छट्टं शतक समाप्त.

### ७-१२ सयाई ।

नीललेस्सभवसिद्धियपींगिद्यसु सयं सत्तमं। एवं काउलेस्सभवसिद्धियपींगिद्देपिष्ट वि अट्टमं सर्थ । जहा मवसिद्धिपीर्ध बत्तारि सथाणि एवं अभवसिद्धिपिष्ट वि चत्तारि सथाणि भाणियद्वाणि । नवरं चरमअवरमबद्धा नव उद्देसगा भाणियद्वा, सेसं तं चैव । एवं पयाई वारस पींगिद्देयसेढीसथाई । 'सेवं मंते ! सेवं भंते'! ति जाव-विद्दर । पींगिद्यसेढीसथाई समत्ताई ।

### चउतीसइमं एगिदियसेढिसयं समत्तं।

#### ७--१२ शतको.

नील्लेक्यायाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो संबंधे सातमुं शतक कहेवुं. ३४-७. ए रीते कापोतल्लेश्यावाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो संबंधे पण चार शतक कहेवां. पण आठमुं शतक कहेवुं. ३४-८. जेम भवसिद्धिको संबंधे चार शतको कहाां छे तेम अभवसिद्धिको संबंधे पण चार शतक कहेवां. पण विशेष ए के, चरम अने अचरम सिवायना नव उद्देशको कहेवा. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. एम ए बार एकेंद्रियश्रेणीशतको कहाां. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'-एम कही यावत्-विहरे छे. ३४-१२. एकेन्द्रियश्रेणिशतको समाप्त.

# चोत्रीशमुं एकेंद्रियश्रेणीशतक समाप्त.



## पणतीसइमं सयं

#### पढमो उद्देसो ।

- १. [प्रव] कह वं भंते ! महाज्ञुम्मा पन्नता ! [उ०] गोयमा ! सोलस महाज्ञुम्मा पन्नता, तंजहा-कडजुम्मकडजुम्मे १, कडजुम्मतेओं २, कडजुम्मदावरज्ञुम्मे ३, कडजुम्मकिलयोंगे ४, तेओगकडजुम्मे ५, तेओगतेओंगे ६, तेओगदावरज्ञुम्मे ७, तेओगकिलओप ८, दावरज्ञुम्मकडज्ञुम्मे ९, दावरज्ञुम्मतेओप १०, दावरज्ञुम्मदावरज्ञुम्मे ११, दावरज्ञुम्मकिलयोंगे १२, किलोगकडज्ञुम्मे १३, कलियोगतेओंगे १४, कलियोगदावरज्ञुम्मे १५, कलियोगकिलओंगे १६।
- २. [य०] से कणट्टेणं मंते ! एवं वुच्छ-'सोलस महाज्ञम्मा पन्नता, तंजहा-कडज्ञम्मकडज्ञम्मे, जाव-कियोगक-लियोगे' ! [उ०] गोयमा ! जे णं रासी चउक्कपणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्ञवसिष, जे णं तस्स रासिस्स अवहार-समया ते वि कडज्ञम्मा, सेत्तं कडज्ञम्मकडज्ञम्मे १ । जे णं रासी चउक्कपणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्ञवसिष, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडज्ञम्मा, सेत्तं कडज्ञम्मतेयोप २ । जे णं रासी चउक्कपणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्ञ-वसिष, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडज्ञम्मा, सेत्तं कडज्ञम्मदावरज्ञम्म ३ । जे णं रासी चउक्कपणं अवहारेणं

## पांत्रीशमुं शतक

### प्रथम उद्देशक.

**महासु**ग्मना प्रकार-

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटलां महायुग्मो—महाराशिओ कहां छे ! [उ०] हे गौतम ! सोळ महायुग्मो कहां छे. ते आ प्रमाणे— १ कृतयुग्मकृतयुग्म, २ कृतयुग्मन्योज, ३ कृतयुग्मद्वापरयुग्म, ४ कृतयुग्मकल्योज, ५ त्र्योजकृतयुग्म, ६ त्र्योजन्योज, ७ त्र्योजहापरयुग्म, ८ त्र्योजकल्योज, ९ द्वापरयुग्मकृतयुग्म, १० द्वापरयुग्मन्त्र्योज, ११ द्वापरयुग्मद्वापरयुग्म, १२ द्वापरयुग्मकल्योज, १५ कल्योजकृतयुग्म, १४ कल्योजन्योज, १५ कल्योजद्वापरयुग्म, १६ कल्योजकल्योज.

सोळ महाश्रुग्म कहेवानुं कारण- २. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी आप एम कहो छो के कृतयुग्मकृतयुग्मधी मांडी कल्योजकल्योज सुची सोळ महायुग्मो कहां छे? [उ०] हे गीतम । जे राशिने चार संख्याना अपहारथी अपहारतां चार बाकी रहे, अने ते राशिना अपहारसमयो पण कृतयुग्म होय तो ते (राशि) कृतयुग्मकृतयुग्म कहेवाय १. जे राशिने चार संख्याना अपहारथी अपहारतां त्रण बाकी रहे अने ते राशिना अपहारसमयो पण कृतयुग्म होय तो ते राशि कृतयुग्मत्र्योज कहेवाय २. जे राशिने चार संख्याना अपहारथी अपहारतां वे बाकी रहे अने ते राशिना अपहारसमयो कृतयुग्म होय तो ते कृतयुग्महापरयुग्म कहेवाय ३. जे राशिने चार संख्याना अपहारथी अपहारतां एक बाकी रहे अने ते राशिना अपहारसमयो कृतयुग्म होय तो ते कृतयुग्मकल्योज कहेवाय ४. जे राशिने चार संख्याना अपहारथी अपहारशे अपहारतां चार बाकी रहे अने ते राशिना अपहारसमयो ज्योज होय तो ते कृतयुग्मकल्योज कहेवाय ४. जे राशिने चार

१ युग्म—राशिविशेष, ते राशिओ खुलक-खुद्ध एण होय अने मोटा पण होय, तेमां पूर्वे खुलक राशिनी प्रस्तणा करी, ह्वे अहीं महायुग्म-मोटा राशिओनी प्रस्तणा करवानी छे. जे राशिने प्रतिसमय चार चारना अपहारथी अपहरतां छेषटे चार बाकी रहे अने अपहारसमयोने पण चार चारना अपहारथी अपहरतां छेषटे चार बाकी रहे अने अपहारसमयोने पण चार चारना अपहारथी अपहरतां छेषटे चार बाकी रहे अने समयनी अपेक्षाए बन्ने रीते ते कृतयुग्मक्ष्म छे. ए प्रमाणे अन्य राशिसंबंधे पण जाणवुं. जेमके सोळ संस्था जघन्य कृतयुग्मकृतयुग्मराधि रूप छे, तेने चारनी संख्याची अपहरता छेषटे चार बच्चे छे अने अपहार समयो पण चार छे. जेमके जघन्यथी ओगणीशनी संख्याने प्रतिसमय चारणी अपहरता छेषटे त्रण बाकी रहे अने अपहारसमयो चार होय तो ते अपहरता इन्यनी अपेक्षाए त्र्योज अने अपहारसमयो अपेक्षाए कृतयुग्म एटले ते राशि कृतयुग्मत्र्योज कहेवाय छे. अहीं बच्चे अपहारक समयनी अपेक्षाए आया पद छे अने अपहरता इन्यनी अपेक्षाए बीजुं पद छे. ते राशिनी जघन्य संस्था अनुक्रमे नीचे प्रमाणे छे—(१) १६, (१) १९, (१) १८, (४) १८, (५) १८, (५) १८, (५) १८, (५) १८, (५) १८, (५) १८, (१८) १८, (१८) १८,

- ३. [प॰] कडलुम्मकडलुम्मपर्गिदिया णं अंते ! कओ उवधर्जाति ! कि नेरहिपर्दितो॰ ! [उ॰] जहा उप्पलुदेसप तहा उववाओ ।
- ४. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा पगसमपणं केवश्या उववर्जाति ? [उ॰] गोयमा ! सोलस वा, संखेजा वा, असंखेजा वा, अणंता वा उववर्जाति ।
- ५. [प्र॰] ते णं अंते ! जीवा समय समय-पुष्छा । [उ॰] गोयमा ! ते णं अणंता समय समय अवहीरमाणा २ अणंताहि उस्तप्पिणी-अवसप्पिणीहि अवहीरंति, णो चेव णं अवहरिया सिया । उच्चत्तं जहा उप्पलुद्देसय ।

३. [प्र॰] हे भगवन् ! कृतयुग्मकृतयुग्म राशिक्सप एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न घाय छे ! शुं नैरियकोथी उत्पन्न धाय छे—इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! जेम उत्पलोदेशकमां उपपात कहो छे ते प्रमाणे अहीं उपपात कहेगे.

४. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय छे ! [उ॰] हे गौतम ! सोळ, संख्याता, असंख्याता के अनंत जीवो एक समये उत्पन्न थाय छे.

५. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो समये समये—[अनन्ता अपहराय तो केटला काळे खाळी थाय] ! [उ॰] हे गीतम ! ते जीवो समये समये अनन्ता अपहराय अने अनंत उत्सर्पिणी अने अनंत अवसर्पिणी सुधी अपहरीए तो पण तेओ खाळी थाय नहीं. तेओनी उंचाई \*उत्पलेडेराकमां कह्या प्रमाणे जाणवी.

कृतयुग्म २ राशिक्ष एकेन्द्रियोनो उपपात-

एक समयमां उप-यातसंख्याः

जीवोनी संस्या-

५ मग व् लं ४ रा ११ तः १ ए । २०८-

- ६. [४०] ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिक्रास्स कम्मस्स कि वंधगा, अवंधगा ! [उ०] गोषमा ! वंधगा, वो अवंधगा । एवं सबेसि आउथवज्ञाणं । आउथस्स वंधगा वा अवंधगा वा ।
  - ७. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्ञस्स-पुच्छा [७०] गोयमा ! वेदगा, नो भवेदगा । एवं सबेसिं ।
- ८. [प्र०] ते णं मंते ! जीवा किं सातावेदगा, असातावेदगा—पुच्छा। [उ०] गोयमा ! सातावेदगा वा असाता-वेदगा वा। एवं उप्पञ्जदेसगपरिवाडी। सद्वेसिं कम्माणं उदर्घ, नो अणुदर्घ। छण्डं कम्माणं उदीरगा, नो अणुदीरगा। वेदणिजा-उयाणं उदीरगा वा अणुदीरगा वा।
- ९. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं कण्ह-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा । नो सम्मिव्छादिद्वी, मिच्छादिद्वी । नो नाणी, अन्नाणी-नियमं दुअन्नाणी, तंजहा-महअनाणी य सुयअन्नाणी य । नो मणजोगी, नो वहजोगी, काययोगी । सागारोवउत्ता वा, अणागारोवउत्ता वा ।
- १०. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरा कितवज्ञा-जहा उप्पलुद्देसप सवस्य पुष्छा । [उ०] गोयमा ! जहा उप्पलुद्देसप असासगा वा, नीसासगा वा, नो उस्सासनीसासगा वा । आहारगा वा अणाहारगा वा । नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । सिकरिया, नो अकरिया । सत्तविद्द्यंधगा वा अट्टविद्द्वंधगा वा । आहारसन्नोवउत्ता वा जाव-पिरग्ग-हसन्नोवउत्ता वा । कोहकसायी वा, माणकसायी, जाव-लोभकसायी वा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा । इत्थिवेययंधगा वा पुरिसवेदवंधगा वा नपुंसगवेदवन्धगा वा । नो सन्नी, असन्नी । सद्देदिया, नो अणिदिया ।
- ११. [प्र॰] ते णं मंते ! कडज़म्मकडज़म्मपर्गिदिया कालओ केषचिरं होति ! [७०] गोयमा ! जहचेणं पकं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-अणंता उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ, वणस्सहकाहयकालो । संवेहो न भन्नह, आहारो जहा उप्पलुदेसप, नवरं निवाघाएणं छहिसि, वाघायं पडुच सिय तिदिसि, सिय चउदिसि, सिय पंचितिस, सेसं तहेव । ठिती जहचेणं

क्ष्यः ६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं तेओ (एकेन्द्रियो ) ज्ञानावरणीय कर्मना बंधक छे के अबंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ बंधक छे, पण अबंधक नथी. ए रीते आयुप सिवाय बधां कर्मी बिषे जाणबुं, तेओ आयुषना बंधक पण छे अने अबंधक पण छे.

७. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो ज्ञानावरणीयना वेदक छे-इस्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम ! तेओ वेदक छे, पण अवेदक नथी. ए प्रमाणे बधा कर्म संबंधे समजवुं.

सातावेदक अने असातावेदक

वेदक.

८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते जीवो साता—सुखना वेदक छे के असाता—दुःखना वेदक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ साताना वेदक छे अने असाताना वेदक पण छे. जेम "उत्पल उदेशकमां कर्म संबंधे जे परिपाटी कही छे ते अहीं जाणवी. तेओ बधाय कर्मोना उदयी छे पण अनुदयी नथी. छ कर्मोना उदीरक छे, पण अनुदीरक नयी. वेदनीय अने आयुष कर्मना उदीरक पण छे अने अनुदीरक पण छे.

हेदया.

९. [प्र॰] हे भगवन्! ज्ञुं ते जीवो कृष्णलेश्यावाळा छे—इस्सादि प्रश्न. [उ॰] हे गौतम! तेओ कृष्णलेश्यावाळा, नील्लेश्यावाळा, कापोतलेश्यावाळा तथा तेजोलेश्यावाळा छे. तेओ सम्यग्द्रष्टिओ नथी, सम्यग्मिथ्याद्रष्टिओ नथी, पण मिथ्याद्रष्टिओ छे. हानी नथी, अज्ञान नथी, पण अवश्य वे अज्ञानवाळा छे. ते आ प्रमाणे—मतिअज्ञानवाळा अने श्रुतअज्ञानवाळा. तेओ मनोयोगवाळा नथी, बच्चनयोगवाळा नथी, मात्र काययोगवाळा छे. साकार उपयोगवाळा छे अने अनाकार उपयोगवाळा एण छे.

श्रीरोना वर्णादे-

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ते एकेन्द्रिय जीवोनां शरीरो केटला वर्णवाळां होय छे—इत्यादि चेउत्यलोदेशकमां कह्या प्रमाणे सर्व अर्थना प्रश्नो करवा. [उ०] हे गौतम !— इत्यादि उत्यलोदेशकमां कह्या प्रमाणे [तेओना शरीरो पांच वर्ण, पांच रस, वे गंध अने आठ स्पर्शवाळा] जाणवा तेओ उच्छ्वासवाळा, निःश्वासवाळा अने उच्छ्वासिनःश्वास विनाना पण छे. आहारक अने अनाहारक छे. सर्वविरतिवाळा अने देशविरतिवाळा नथी, पण अविरित्वाळा छे. कियावाळा छे, पण किया विनाना नथी. सात प्रकारना कर्मना बंधक छे अने आठ प्रकारना कर्मना बंधक छे. आहार संज्ञाना उपयोगवाळा छे, यावत्—परिप्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा छे. कोधकषायवाळा, मानकषायवाळा अने यावत्—लोभक्यायवाळा छे. स्नीवेदवाळा नथी, पुरुषवेदवाळा नथी, पण नपुंसकवेदवाळा छे. स्नीवेदवंधक छे, पुरुषवेदवंधक छे अने इंद्रियविनाना छे.

अनुबन्धकाळ,

११. [प्र0] हे भगवन् ! ते कृतयुग्मकृतयुग्मराशिरूप एकेंद्रियो काळथी क्यां सुची होय ! [उ0] हे गौतम ! तेओ जचन्य एक

८ \* भग० ख० ३ श० ११ उ० १ पू० २०९.

९० में भग• सार ३ वार ९९ उर ९ ए० २१० – २१३.

मंतोसुदुर्चं, उद्योखेणं वावीसं वाससदृस्सारं । समुन्धाया माविङ्का चत्तारि । मारणंतियसमुन्धातेणं समोद्दया वि मरंति, वासमोद्दया वि मरंति । उद्युष्णा जद्दा उप्युत्तदेसय ।

- १२. [प्र०] अह मंते ! सहपाणा, जाव-सहसत्ता कडज्रम्मकडज्रुम्मपर्गिदियत्ताप उववश्रपुदा ? [उ०] हंता गोयमा ! मसदं यदुवा अमंतसुत्तो ।
  - १३. [४०] कड्युम्मतेबोयएगिविया णं संते ! कओ उचवद्धति ? [उ०] उववाओ तहेव ।
- १४. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा एगसमप-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! एकूणवीसा वा, संबेखा वा, असंबेखा वा, अणंता वा उचवर्जात, सेसं जहा कडजुम्मकडजुम्माणं जाव-अणंतखुत्ती ।
  - १५. [प्र०] कडन्नुम्मदावरन्नुम्मपर्गिविया णं भंते ! कओहितो उघवज्जंति ? [उ०] उचवाओ तहेव ।
- १६. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा पगसमपणं-पुच्छा । [उ॰] गोयमा ! अट्टारस वा संबोजा वा असंबोजा वा अणंता वा उचवज्रंति, सेसं तहेव जाव-अणंतखुत्तो ।
- १७. [प्र॰] कडन्नुम्मकलियोगर्पगिदिया णं भंते ! कओहितो उववज्रांति ? [उ॰] उववाओ तहेव । परिमाणं सत्तरस वा, संखेजा वा, असंखेजा वा, अणंता वा, सेसं तहेव जाव-अणंतखुत्तो ।
- १८. [प्रव] तेयोगकउत्तुम्मर्णागिविया णं भंते ! कओदितो उववजंति ? [उव] उववाओ तहेव, परिमाणं बारस वा संक्षेजा वा भणंता वा उववजंति, सेसं तहेव जाय-अणंतखुत्तो ।

समय सुधी अने उत्कृष्ट अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीसुधी वनस्पतिकायिकना काळ पर्यन्त होय. \*संबेध कहेवानो नयी. उत्पल उदेशकमां कह्या प्रमाणे (खं० ३ पृ० २१३) आहार कहेवो. पण विशेष ए हे, तेओ दिशानो प्रतिबंध न होय तो छए दिशामांथी आवेलो आहार प्रहृण करे छे, अने जो प्रतिबंध होय तो कदाच त्रण दिशामांथी, चार दिशामांथी के पांच दिशामांथी आवेला आहारने प्रहृण करे छे. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. तेओनी स्थिति जघन्य एक समयनी अने उन्कृष्ट बावीश हजार वर्षनी छे. तेओने आदिना चार समुद्धातो होय छे. ते बधाय मारणांतिकसमुद्धातथी मरे छे अने ते सिवाय पण मरे छे. <sup>†</sup>उत्पलोदेशकमां कह्या प्रमाणे उद्दर्तना कहेवी.

१२. [प्रव] हे भगवन् ! बधा प्राणो यावत्—बधा सत्त्वो कृतयुग्मकृतयुग्ग राशिक्ष एकेंद्रियपणे पूर्वे उत्पन्न थया छे ! [उ०] हे गीतम ! हा, अनेकवार अथवा अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थया छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मञ्योज राशिरूप एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेठे उपपात कहेवो

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ओगणीश, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं कृतयुग्मकृतयुग्म राशिप्रमाण एकेंद्रियो संबंधे जेम कह्युं तेम यावत्—'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे' त्यां सुची जाणवुं.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मद्वापरयुग्मप्रमाण एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गीतम ! तेओनो उपपात तेमज जाणनो.

१६. [प्र०] हे मगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय छे ? [प्र०] हे गौतम ! तेओ एक समये अढार, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं यावत्—'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे' त्यां हुधी तेमज जाणबुं.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मकल्योजराशिप्रमाण एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [प्र०] हे गौतम ! तेओनो उपपात तेमज जाणवो. तेओनुं परिमाण— सत्तर, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं यावत्—'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे' व्यां सुधी तेमज जाणवुं.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! त्र्योजकृतयुग्मराशिप्रमाण एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! उपपात तेमज जाणवो. तेओनुं परिमाण—एक समये बार, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे . बाकी बधुं तेमज आण्वुं. यावत् -'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे'.

सर्व जीवोनो इतयुग्म कृतयुग्मस्मिइत्प एकेन्द्रियपणे
उत्पादः
इतयुग्मस्योजराषिइतयुग्मस्योजराषिइतयुग्मस्योजराषिइत्युग्मस्योजराषिइत्युग्मस्योजराषिइत्युग्मस्योजराषिइत्युग्मस्योजराषिइत्युग्नस्योजराष

संवेषादि-

कृतयुग्मदापर प्रमाण एकेन्द्रियोनो उत्पद्धः

उत्पाद संख्याः

उपपात संख्या-

कृतयुग्म कल्योजरूप एकेन्द्रियोनी उत्पाद.

व्योज कृतयुग्म प्रमाण एकेन्द्रियोनो उत्पादः

<sup>99 \*</sup> उत्पत्नोद्दाकमां उत्पत्नना जीवनो उत्पाद विविद्धित छे अने ते पृथ्विकायिकादि अन्य कायमां जई पुनः उत्पत्नमां आवी उपजे त्यारे तेनो संवेध थाय छे, पण अहीं कृतयुगमकृतयुगमराधिक्य एकेन्द्रियोनो उत्पाद अधिकृत छे अने एकेन्द्रियो तो अनन्त उत्पत्त थाय छे, अने तेओ त्यांधी नीकळी सजातीय के विजातीय कायमां उत्पत्त थाद पुनः एकेन्द्रियपणे उपजे त्यारे संवेध याय छे. पण तेओनुं त्यांधी नीकळवुं असंभवित होबाधी संवेध यतो नवी. खे कृतयुग्मकृतयुग्मादि राशिक्ष एकेन्द्रियोनो उत्पाद कहा। छे ते असकायिकथी आवीने उत्पत्त थाय तेनी अपेक्षाए छे, पण ते बाल्यविक उत्पाद नथी, कारण के एकेन्द्रियोमां प्रतिसमय अनन्त वीचोनो उत्पाद थाय छे. तेथी अहीं एकेन्द्रियोनी अपेक्षाए संवेधनो असंभव होवाथी कहा। नथी.—टीका.

र्रभग॰ सं• ३ श॰ ११ उ॰ १ १० २१३.

- १९. [त्रठ] तेयोयतेयोयपिंगिदिया णं मंते! क्रजोहितो उचवज्जंति! [उठ] उचवाओ तहेव। परिमाणं पणरस चा, संखेजा वा, असंखेजा वा, अणंता वा सेसं तहेव जाव-अणंतखुत्तो। एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एको गममो। नवरं परिमाणे नाणसं-तेयोयदावरज्जम्मेसु परिमाणं चोहस वा, संखेजा वा, असंखेजा वा, अणंता वा उचवज्जंति। तेयोगक-लियोगेसु तेरस वा, संखेजा वा, असंखेजा वा, असंखेजा वा, असंखेजा वा, असंखेजा वा, असंखेजा वा, असंखेजा वा, अणंता वा उचवज्जंति। दावरज्जम्मतेयोगेसु एकारस वा, संखेजा वा, असंखेजा वा, अणंता वा उचवज्जंति। दावरज्जम्मत्वावरज्जम्मेसु वस वा संखेजा वा असंखेजा वा अणंता वा, दावरज्जम्मकिलयोगेसु नव वा, संखेजा वा, असंखेजा वा, अणंता वा उचवज्जंति। किलयोगकडज्जम्मे चत्तारि वा, संखेजा वा, असंखेजा वा, अणंता वा उचवज्जंति। किलयोगतेयोगेसु सत्त वा, संखेजा वा, असंखेजा वा, अणंता वा उचवज्जंति। असंखेजा वा, अणंता वा उचवज्जंति।
- २०. [प्र०] कलियोगकिलयोगएगिदिया णं भंते ! कओ उववर्जाति ! [उ०] उववाओ तहेव । परिमाणं पंच वा, संक्षेजा वा, असंक्षेजा वा, अणंता वा उचवर्जाति ! सेसं तहेव जाव-अणंतखुत्तो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

## पणतीसइमे सए पढमो उद्देसी समची।

व्योजभ्योज प्रमाण प्रकेन्द्रियोनी उपपातः १९. [प्रठ] हे भगवन् ! त्र्योजत्रयोजराशिरूप एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उठ] उपपात पूर्वनी पेठे जाणवी. परिमाण—प्रतिसमय पंदर, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. वाकी बधुं तेमज जाणवुं. यावत्—'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे. ए प्रमाणे ए सोळे महायुग्मोमां एकज प्रकारनो गम जाणवी. मात्र परिमाणमां विशेषता छे—त्र्योजद्वापरयुग्ममां परिमाण चौद संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. त्रापरयुग्मत्रवीजमां तेर, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. द्वापरयुग्मत्रवीजमां अगियार, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. द्वापरयुग्मत्रवीजमां अगियार, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. द्वापरयुग्मकल्योजमां नव, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. कल्योजकृतयुग्ममां चार, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. कल्योजकृतयुग्ममां चार, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. कल्योजकृतयुग्ममां चार, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. कल्योजकृतयुग्ममां चार, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. कल्योजक्रतपुग्ममां छ, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे.

कल्योजकस्योजराः शिरूप एकेन्द्रियोनी उत्पाद-

२०. [प्र०] है भगवन् ! कल्योजकल्योजराशिप्रमाण एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] उपपान पूर्वनी पेठे जाणको. परिमाण—पाच, संख्याता, असंख्याता के अनंत उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं यावत्-पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे थां सुधी तेमज जाणबुं. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

#### पांत्रीशमा शतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

#### बीओ उद्देसो।

१. [प्र॰] पदमसमयकडजुम्मकडजुम्मर्गिदिया णं भंते ! कश्रो उचवर्जाति ! [उ॰] गोयमा ! तहेष, एवं जहेष पदमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो षितिओ वि माणियद्यो, तहेव सद्यं । नवरं इमाणि य दस नाणत्ताणि- ! श्रोगाहणा जहनेणं श्रंगुलस्स असंखेजहमागं, उद्योसेण वि श्रंगुलस्स असंखेजहमागं । २ आउयकम्मस्स नो बंधगा, अबंधगा । ३ आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा । ४ नो उस्सासगा, नो निस्सासगा, नो उस्सासिनस्सासगा । ५ सत्तविद्वंधगा, नो अट्टविद्वंधगा ।

#### द्वितीय उद्देशक.

प्रथम समयोत्पन्न इतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रियोनी उत्पाद- १. [प्र०] है भगवन् ! जेने उत्पन्न थयाने पहेलो समय थयो छे एवा कृतयुग्मकृतयुग्मराशिरूप एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! तेमज जाणहुं. जेम प्रथम उद्देशक कह्यो तेमज [ सोळ राशिने आश्रयी ] सोळ वार पाठना कथनपूर्वक बीजो उद्देशक कहेवो. बाकी बधुं तेमज कहेवुं. परन्तु दस बाबत विशेषता छे— (१) तेओनी अवगाहना—शरीरनुं प्रमाण जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागनी अने उत्कृष्ट अंगुलना असंख्यातमा भागनी होय छे. (२) आयुष कर्मना बंधक नथी, पण अनुदीरक होय छे. (३) आयुष कर्मना उदीरक नथी, पण अनुदीरक होय छे. (४) उच्छासवाळा नथी, नि:श्वासवाळा नथी अने उच्छासनि:श्वासवाळा पण नथी. (५) सात प्रकारना कर्म बंधक होय छे. पण आठ प्रकारना बंधक नथी होता.

६. [त्र॰] ते वं मंते ! 'पडमसमयकडबुस्मकडबुस्मप्गिदिय'चि कालमो केविकरं होर ! [उ॰] गोयमा ! पकं समयं । एवं ठितीप वि । समुग्वाया बादिल्ला दोषि । समोह्या न पुच्छिजंति । उन्नहुणा न पुच्छिजर । सेसं तहेव सर्व निरवसेसं । सोस्रससु वि गमपसु जाव-भणंतखुको । 'सेवं मंते ! 'सेवं मंते' ! ३५-२ ।

२. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथम समये उत्पन्न यएला कृतयुग्मकृतयुग्मराशिक्ष्प प्केंद्रियो काळ्या क्यां सुधी होय छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ एक समय सुधी होय. ए रीते स्थिति संबंधे पण समजवुं. तेओने आदिना वे समुद्धातो होय छे. समुद्धातवाळा संबंधे धने उद्दर्तना संबंधे असंभव होवाधी पूछवानुं नथी अने बाकी बधुं सोळे महायुग्मोमां तेज प्रमाणे जाणवुं, यावत्—पूर्वे अनंतवार उत्पन धया छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

अनुबन्ध-

#### पांत्रीश्वमा श्रवकमां द्वितीय उदेशक समाप्त.

### ३-११ उदेसा।

- १. [प्र॰] अपडमसमयकडज्जम्मपिनिदया णं भंते ! कभो उवयक्रांति ! [उ॰] एसो जहा पढमुदेसो सोख-सिंह वि जुम्मेसु तहेव नेयहो, जाव-किल्योगकिल्योगसाय जाव-अणंतखुत्तो । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि ।३५।३।
- २. [प्रo] चरमसमयकडज्ञुम्मकडज्ञुम्मपगिदिया णं भंते ! कओहिंतो उववर्जाति ? [उ०] एवं जहेव पढमसमय-डहेसमो । नवरं देवा न उववर्जाति, तेउलेस्सा न पुच्छिजति, सेसं तहेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।३५।४।
- ३. [प्र०] असरमसमयकडजुम्मकडजुम्मपिविया णं मंते ! कओ उववजंति ! [उ०] जहा अपटमसमयउद्देसी तहेव निरवसेसो भाणियदो । 'सेवं मंते ! सेवं भंते' ! सि ।३५-५।
- ध. [प्र०] पढमसमयकडनुम्मकडनुम्मपरिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्रंति ? [उ०] जहा पढमसमयउद्देसओ तद्देव निरवसेसं । 'सेवं मंते ! सेवं मंते !' क्ति जाव-विदृश्य ।३५-६।
- ५. [म॰] पटमअपटमसमयकर जुम्मकर जुम्मपिनिया णं मंते ! कओ उचवर्जाति ? [उ॰] जहा पटमसमय उर्देसी तहेष भाषियहो । 'सेषं भंते ! सेषं भंते' ! ति ।३५-७।

#### ३-११ उद्देशको.

१. [प्र०] हे भगवन् ! अप्रथम समयना—( जेने उत्पन्न थयाने द्वितीयादि समयो थया छे एवा ) कृतयुग्मकृतयुग्म राशिरूप एकेंद्रियो क्यांची आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] जेम प्रथम उदेशक कहो। छे तेमज आ उदेशक पण सोळे महायुग्मोमां समजवो. यावत्—कल्योज-कल्योजपण पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३५—३.

अप्रथम समयोत्पन्न इत्तर्युग्मकृतयुग्मरूप एकेन्द्रियोनो उत्पाद

२. [प्र०] हे मगवन् ! \*चरम समयना कृतयुग्मकृतयुग्मरूप एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ! [उ०] हे गौतम ! ए संबंधे जेम प्रथम समय संबंधे उदेशक कहा तेम अहीं कहेवुं. पण देवो अहीं उत्पन्न थता नथी. तेजोलेक्या संबंधे पूछवानुं नथी. बाकी बधुं तेमज जाणवं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३५-४.

चरमसमयकृत युग्मकृतयुग्म एके द्वियोनो उरपादः

३. [प्र०] हे भगवन् ! अचरमसमय (चरमसमय सिवायना समयोमां वर्तमान) कृतयुग्मकृतयुग्म राशिरूप एकेन्द्रियो क्यांधी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! जेम अप्रथम समय संबंधे उदेशक कहो छे तेमज बधुं कहे बुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.' ३५-५.

अचरमसमय कृत-युग्मकृतयुग्मरूप एकेन्द्रियोनो उत्पाद.

- ४. [प्र॰] हे भगवन् ! <sup>†</sup>प्रथम समयना कृतयुग्मकृतयुग्मप्रमाण एकेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ॰] हे गौतम ! जेम प्रथम समय संबंधी उद्देशक कहो छे तेमज बधुं जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावत्— बिहरे छे. ३५–६.
- ५. [प्र०] हे भगवन् । प्रथम—अप्रथम समयवर्ती इत्तयुग्मकृतयुग्मरूप एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जैम प्रथम समय संबंधी उदेशक कहो तेमज अहीं पण कहेतुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३५-७.

३ \* आहे चरमसमयहाब्दथी एकेन्द्रियोनो मरणसमय विवक्षित छे, अने ते तेना परभवायुवनो प्रथम समय जाणवो. तेमां वर्तमान कृतयुग्मकृतयुग्मरा-विक्षण एकेन्द्रियोने प्रथमसमयना एकेन्द्रियोहेशकनी पेठे जाणवुं. तेमां जे दश बाबतनी विशेषताओं छे ते आहीं जाणवी. पण प्रथम समय अने चरम समयमां आ विशेषता छे के आहीं देवो उत्पन्न थता नथी अने तेथीज तेओने तेओलेश्या होती नथी. एकेन्द्रियोमां ज्यारे देवो उत्पन्न थाय छे लारे तेओ तेओलेश्या-सहित उत्पन्न पाय छे. आहें देवोत्पादनो संभव नथी, माटे तेजोलेश्यावाळा एकेन्द्रियो संबन्धे प्रश्न करता नथी. ३५. ४.

४ र प्रयमसमयोत्पन्न अने कृतयुग्मकृतयुग्मत्वना अनुभवने प्रथम समये वर्तमान एवा एकेन्द्रियो ते प्रयमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मएकेन्द्रियो कहेवाय छे.

५ ‡ सप्तम उद्देशकमां प्रथमसमयोत्पन्न छतां कृतयुग्मकृतयुग्मराधिनो पूर्व भवमां भनुभव करेलो होवाथी अप्रथमसमयकृतयुग्मराधिक्ष एकेन्द्रियो करेवाय छे. आहीं एकेन्द्रियपणानी उत्पक्तिने प्रथम समये वर्तमान अने पूर्व भवमां विवक्षितराधिरूप र्यक्यानो अनुभव करेलो होवाथी अप्रथम समयवर्ती एकेन्द्रियो जाणवा.

- ६. [प्र॰] पटमचरमसमयकडलुम्मकडलुम्मपिनिया णं मंते ! कमो उपवक्रंति ! [४०] जहा चरमुदेसमी तहेव निरवसेसं । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि । ६५-८ ।
- ७. [प्र॰] पटमअसरमसमयकडजुम्मकडजुम्मर्गिदिया णं भेते ! कश्रो उपवर्जति ! [उ॰] जहा वीभ्रो उद्देसमी तहेष निरवसेसं । 'सेवं भेते ! सेवं भेते' ! सि जाय-विहरह । ३५-९ ।
- ८. [प्र०] चरमचरमसमयकडजुम्मकडजुम्मपिनिदेया णं भंते ! कओ उथवर्जाति ! [४०] जहा चउत्थो उद्देसमो तद्देय । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति । ३५-१० ।
- ९. [प्र०] चरमञ्चरमसमयकडजुम्मकडजुम्मपर्गिषिया णं मंते ! कञो उचवज्रांति ! [उ०] जहा पढमसमयउद्देसको तहेय निरवसेसं। 'सेवं मंते क्षेत्रं मंते' ! क्ति जाव-विहरति । ३५-११ ।

पवं पप पकारस उद्देसगा। पढमो तितमो पंचमओ य सरिसगमा, सेसा अट्ट सरिसगमगा। नवरं चउत्थे छट्टे अट्टमे दसमे य देवा न उववज्जंति। तेउछेस्ता नित्य।

### पणतीसहमे सए पढमं एगिंदियमहाजुम्मसयं समसं ।

- ६. [प्रo] हे भगवन् ! प्रथम—चरमसमयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्मराशिरूप एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ o] हे गौतम ! जेम चरमउदेशक कहा तेमज बाकीनं बधुं जाणवं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३५-८.
- ७. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथम-अचरमसमयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्मराशिक्ष्य एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न धाय ? [उ०] हे गीतम ! जेम बीजो उदेशक कह्यो तेमज बधुं समजबुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही यावत्-विहरे छे. ३५-९
- ८. [प्र०] हे भगवन् ! चरम—चरमसमयवर्ती कृतयुग्मकृतयुग्मरूप एकेन्द्रियो क्यांथी आयी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] जेम चोथो उदेशक कह्यो तेमज बधुं जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३५-१०.
- ९. [प्र०] हे भगवन् ! चरम-अचरमसमयवर्ता कृतयुग्मकृतयुग्मराशिरूप एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! जेम प्रथम समय संबंधे उदेशक कह्यो तेमज बधुं जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कही यावत्— विहरे छे. ३५-११.
- ए रीते ए अगियार उद्देशको कहेवा. पहेलो, त्रीजो अने पांचमो सरखा पाठवाळ छे, अने बाकीना आठ उद्देशको सरखा पाठवाळा छे, परन्तु चोथा, छट्टा, आठमा अने दसमा उद्देशकमां देवो उपजता नथी अने तेओने तेजोलेश्या नथी.

#### पांत्रीशमा शतकमां प्रथम एकेन्द्रिय महायुग्मशतक समाप्त.

#### बितियं पुगिदियं महाजुम्मसयं

१. [प्र॰] कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मपर्गिदिया णं भंते ! कथो उवघज्रंति ? [उ॰] गोयमा ! उववाभो तहेव, पवं अहा ओहिउद्देसपः । नवरं ६मं नाणसं–ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ? [उ॰] हंता कण्हलेस्सा ।

## द्वितीय एकेन्द्रिय महायुग्म शतक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा कृतयुग्मकृतयुग्मराशिरूप एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! धाँघिक उदेशकमां कह्या प्रमाणे उपपात जाणवो. पण तेमां आ विशेषता छे—

६ \* आठमा उद्देशकमां विवक्षित संख्याना अनुभवना प्रथम समयवर्ती होवाबी प्रथम अने चरम समय-मरणसमयवर्ती एवा कृतयुग्म कृतयुग्मराशि रूप एकेन्द्रियो ते प्रथमचरमसमयकृतयुग्मकृतयुग्मकृष एकेन्द्रियो कहेवाय छे.

ण † नवमा उद्देशकमां प्रथम-विविद्धित संख्याना अनुभवना प्रथम समये वर्तमान, तथा अचरम समय-( एकेन्द्रियोत्पादनी अपेक्षाए) प्रथम समयवर्ती अहीं विविद्धित छे. केमके तेओमां चरमत्वनो निवेध छे. जो एम न होय तो बीजा उद्देशकमां कहेलुं अवगाहनादिनुं साम्य न घटी शके. माटे तेओ प्रथम-अचरमसमय कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रियो कहेवाय छे.

८ ‡ दशमा उद्देशकमां चरम-विवक्षित संख्यानी राशिना अनुभवना छेला-समये वर्तमान, अने चरमसमय-मरणसमयवर्ती एवा हलाबुरम २ एकेन्द्रियों ते चरम-चरमसमयकृतवृग्य २ एकेन्द्रियों कहेवाय छे.

९ <sup>श</sup> अगियारमा डहेशकमां चरम-विवक्षित संख्यानी राश्चिना अनुभवने छेक्षे-समये वर्तमान, अचरमसमय-एकेन्द्रियोत्पादनी अपेक्षाए प्रथमसमय**न्दी** एवा कृतयुग्म २ एकेन्द्रियो ते चरम-अचरम कृतयुग्म २ एकेन्द्रियो कहेवाय छे.

- २. [प्र०] ते जं मंते ! 'कण्डलेस्सकडज्ञुम्मकडज्ञुम्मप्निविय'त्ति कालओ केविवरं होर ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेजं एकं समयं, उक्कोसेणं भंतोमुहुत्तं । पवं दितीप वि । सेसं तहेव जाव-अणंतखुत्तो । पवं सोलस वि ज्ञुम्मा माणियचा । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति । ३५-२-१ ।
- इ. [प्रo] पहमसमयकण्डलेस्सकडल्लुम्मकडल्लुम्मपिनिया णं मंते! कथो उववर्क्षति ? [उ०] जहा पढमसमयउद्देसको। नवरं [प्रo] ते णं मंते! जीवा कण्डलेस्सा ? [उ०] इंता कण्डलेस्सा, सेसं तं चेव। 'सेवं मंते! सेवं मंते'! सि । ३५-२-२ ।
- ध. एवं जहा ओहियसप एकारस उद्देसगा मणिया तहा कण्हलेस्ससप वि एकारस उद्देसगा माणियका। पढमो तहा पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ट वि सरिसगमा। नवरं चउत्थ-छट्ट-अट्टम-दसमेस्ट उववाओ नत्थि देवस्स। 'सेवं मंते! सेवं मंते'! ति । ३५-२-११।

#### पणतीसइमे सए वितियं एगिदियमहाज्ञम्मसयं समत्तं ।

[प्रo] हे भगवन् ! ते जीवो कृष्णलेश्यावाळा छे ! [उ o] हा गौतम ! तेओ कृष्णलेश्यावाळा छे.

- २. [प्र०] हे भगवन् ! ते कृष्णलेश्याबाळा कृतयुग्मकृतयुग्म रूप एकेन्द्रियो काळधी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त सुधी होय. एम स्थिति संबंधे पण जाणवुं. बाकी बधुं यावत्—'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे' त्यां सुधी तेमज जाणवुं. ए रीते सोळे युग्मो कहेवा. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३५–२–१.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथम समयना कृष्णलेश्यावाळा कृतयुग्मकृतयुग्म एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम प्रथम समयना उदेशक संबंधे कह्युं तेम जाणवुं. परन्तु आ विशेषता छे—[प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो कृष्णलेश्यावाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, ते जीवो कृष्णलेश्यावाळा छे. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ३५-२-२.
- ४. जेम औधिक शतकमां अगियार उद्देशको कहा तेम कृष्णलेक्याबाळा शतकमां पण अगियार उद्देशको कहेवा. पहेलो, त्रीजो अने पांचमो सरखा पाठवाळा छे अने वाकीना आठ सरखा पाठवाळा छे. विशेष ए के चोथा, छहा, आठमा अने दसमा उद्देशकमां देवनो उप-पात पतो नथी. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. ३५–२–११ ।

#### पांत्रीशमा अतकमां द्वितीय एकेन्द्रियमहायुग्मशतक समाप्त.

#### ततियं एगिदियमहाजुम्मसयं

पवं नील्लेस्सेहि वि सयं कण्हलेस्ससयसरिसं, पकारस उद्देसगा तद्देव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! कि ।

## पणतीसर्मे सए ततियं एगिदियमहाज्रम्मसयं समत्तं ।

## तृतीय एकेन्द्रियमहायुग्मशतक.

ए रीते नीललेक्स्यावाळा संबन्धे पण कृष्णलेक्साशतकानी जेम कहेतुं अने अगियार उदेशको पण एमज कहेवा. 'हे भगवन्! ते एमज छे.

#### पात्रीश्रमा शतकमां तृतीय एकेन्द्रियमहायुग्नशतक समाप्त.

## चउत्थं एगिदियमहाजुम्मसयं

पवं काउलेस्सेहि वि सयं कण्हलेस्ससयसिसं। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! सि ।

पणतीसहमें सप चउत्यं एगिदियमहाजुम्मसयं समत्तं।

#### चतुर्थ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक.

ए रीते कापोतलेश्यावाळा संबंधे पण कृष्णलेश्यादातकनी पेठे कहेतुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

#### पांत्रीश्रमा शतकमां चतुर्थ एकेन्द्रियमहायुग्मशतक समाप्त.

#### पंचमं एगिदियमहाज्ञम्मसयं।

- १. [म॰] मवसिवियकडजुम्मकडजुम्मपींगिदिया णं भंते ! कभो उववज्रांति ! [ड॰] जहा मोहियसयं तहेय । नवरं पांचमुं एकेन्द्रियमहायुग्मशतक.
- १. [म॰] हे भगवन् ! भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्म रूप एकेन्द्रियो क्यांयी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ॰] हे गीतम ! जेम औधिक ४४ म॰ स्॰

पकारससु वि उद्देसपसु-[प्र०] वह भंते ! सबे पाणा जाव-सबे सत्ता भवसिद्धियकडञ्जम्मकडञ्जम्मपगिदियसाप उवक्कपुद्धा ! [७०] गोयमा ! जो इजहे समट्टे, सेसं तद्देव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! त्ति ।

पणतीसइमे सए पंचमं एगिदियमहाजुम्मसयं समर्च ।

कह्युं तेमज जाणबुं. परन्तु अगियारे उदेशकोमां—[प्र०] हे भगवन् ! सर्व प्राणो, यावत्—सर्व सत्त्वो भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मक्र एकेंद्रियणणे पूर्वे उत्पन्न थया छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नथी. बाकी बधुं तेमज जाणबुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

## पांत्रीश्वमा शतकमां पांचग्रुं एकेन्द्रियमहायुग्मश्चतक समाप्त.

छद्वं एगिदियमहाजुम्मसयं ।

१. [प्र॰] कण्डलेस्सभवसिद्धियकडज्रुम्मकडज्रुम्मपिगिदियां णं मंते । कशोहितो उववज्रांति ! [उ॰] पवं कण्डलेस्स-मवसिद्धियपिगिदिपिड वि सर्य वितियसयकण्डलेस्ससरिसं माणियवं । 'सेवं भंते ! सेवं मंते' ! ति ।

#### पणतीसइमे सए छहं एगिंदियमहाजुम्मसयं समत्तं।

छड्डं एकेन्द्रियमहायुग्मशतक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेक्यावाळा भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मप्रमाण एकेन्द्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! कृष्णलेक्यावाळा भवसिद्धिक एकेन्द्रियो संबंधे पण बीजा कृष्णलेक्यावानकनी पेठे शतक कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे ?

#### पांत्रीश्रमा शतकमां छट्टं एकेन्द्रियमहायुग्मश्रतक समाप्त.

सत्तमं एगिदियमहाजुम्मसयं।

पवं नील्लेस्समवसिक्वियपगिदियपहि वि सयं । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

पणतीइसमे सए सत्तमं एगिदियमहाजुम्मसयं समत्तं।

सात्मुं एकेन्द्रियमहायुग्मशतक.

ए रीते नीडलेक्यावाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो संबंधे पण शतक कहेवुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

पांत्रीशमा शतकमां सातम् एकेन्द्रियमहायुग्मणतक समाप्त.

#### अद्यमं एगिदियमहाजुम्मसयं ।

पवं काउलेस्समवसिद्धियपगिदिपहि वि तहेव पकारसउद्देसगसंद्धसं सयं । पवं प्याणि चत्तारि भवसिद्धियसयाणि । चउसु वि सपसु सबे पाणा आव-उववश्रपुद्धा ? नो इण्ट्रे समट्टे । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति ।

#### पणतीसइमे सए अट्टमं एगिदियमहाजुम्मसयं समत्तं।

आठमुं एकेन्द्रियमहायुग्मशतक.

ए रीते कापोतलेक्याबाळा भवसिद्धिक एकेंद्रियो संबंधे पण अगियार उदेशको सहित एमज शतक कहेतुं. ए रीते ए चार भवसिद्धिक वानको जाणवां. ए चारे शतकोमां—'सर्व प्राणो, यावत्—पूर्वे उत्पन्न यया छे'—ए प्रश्नना उत्तरमां ए अर्थ समर्थ नथी—एम कहेतुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

## पांत्रीश्वमा शतकमां आठम्नं एकेन्द्रियमहायुग्मशतक समाप्त.

## ९-१२ एगिदिययमहाजुम्मसयाई ।

जहा भवतिद्विपिंह चसारि सयाई मणियाई पर्व अभवतिद्विपिंह वि चसारि स्वयाणि हेस्सासंज्ञुत्ताणि माणिय-बाणि । सब्बे पाणाः तहेव नो इण्हे समहे । एवं एयाई बारस प्रिंग्दियमहाज्ञुम्मसयाई मवंति । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि ।

## पणतीसइमं सयं समत्तं।

९-१२ एकेन्द्रियमहायुग्मशतको.

ए रीते जेम भविसिद्धिको संबंधे चार शतको कहाां छे तेम अभविसिद्धिको संबंधे पण चार शतको लेक्यासिद्धित कहेवां. 'बधा प्राणो यावत्—सत्त्वो पूर्वे उत्पन्न थया छे' ! ए प्रश्नना उत्तरमां 'ए अर्थ समर्थ नथी'—एम कहेवुं. ए रीते ए बार एकेंद्रिय महायुग्मशतको छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

## पांत्रीशमुं शतक समाप्त.

## छत्तीसइमं सयं पढमं बेंदियमहाजुम्मसयं पढमो उदेसो ।

- १. [प्र०] कडजुम्मकडजुम्मवेविया णं अंते! कओ उवषञ्जित ? [उ०] उक्वाओ जहा वक्रतीए। परिमाणं सोलस वा संबेजा वा उववज्जित । अवहारो जहा उप्पलुदेसए। ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंबे- अहमागं, उक्नोसेणं वारस जोयणाई। एवं जहा एगिवियमहाज्ञम्माणं पढमुदेसए तहेव। नवरं तिन्नि लेस्साओ, देवा न उववज्जित। सम्मदिट्टी वा मिच्छविट्टी वा; नो सम्मामिच्छाविट्टी। नाणी वा अन्नाणी वा। नो मणयोगी, वययोगी वा कायजोगी वा।
- २. [प्र०] ते णं अंते ! कडजुम्मकडजुम्मवेंदिया कालओ केविवरं होह ? [उ०] गोयमा ! जहकेणं एकं समयं, उक्कोसेणं संकेजं कालं। दिती जहकेणं एकं समयं, उक्कोसेणं वारस संवच्छराई। आहारी नियमं छिहिसि। तिकि समु-ग्याया। सेसं तहेच जाव-अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु। 'सेवं अंते ! सेवं अंते' ! शि।

छत्तीसइमे सए पढमे बेंदियमहाजुम्मसए पढमो उद्देसओ सम्भत्तो ।

## छत्रीरामुं शतक प्रथम बेइन्द्रियमहायुग्मशतक प्रथम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! कृतयुग्मकृतयुग्मराशिप्रमाण बेहिन्द्रयो क्यांथा आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम! \*व्युक्तांतिपदमां कह्या प्रमाणे तेओनो उत्पाद जाणवो. परिमाण—तेओ [एक समये] सोळ, संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. तेओनो उत्पाद जेम 'उत्पन्नोहेशकमां कह्या छे तेम जाणवो. तेओनुं शरीर जघन्यथी अंगुल्ना असंख्यातमा भाग जेटलुं होय छे अने उत्कृष्टथी बार योजन प्रमाण होय छे. ए रीते जेम एकेंद्रियमहायुग्मराशि संबंधे प्रयम उद्देशक कह्या तेम बधुं समजवुं. विशेष ए के अहीं त्रण लेश्याओ होय छे अने देवोथी आवी उपजता नथी. तेओ सम्यग्द्रष्टि अने भिथ्याद्रष्टि होय छे, पण सम्यग्मिथ्याद्रष्टि—मिश्रद्रष्टि होता नथी. तेओ ज्ञानी अथश अज्ञानी होय छे. मनोयोगी नथी होता, पण वचनयोगी अने काययोगी होय छे.

वेश्निद्योनो अनु-भन्ध काळ.

कृतयुग्म २ रूप वेद-निद्रयोनो उत्पादः

२. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मकृतयुग्मराशिप्रमाण बेइन्द्रियो काल्थी क्यां सुची होय ! [उ०] हे गौतम ! जधन्य एक समय सुधी अने उत्कृष्ट संख्याता काळ सुची होय छे. तेओनी जघन्य स्थिति एक समयनी अने उत्कृष्ट स्थिति बार वरसनी होय छे. तेओनी आहार अवश्य छ दिशानो होय छे. तेओने त्रण समुद्घातो होय छे. अने बाकी बधुं यावत्—'अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थया छे' त्यां सुधी तेमज जाणवुं. ए रीते सोळे युग्मोमां समजवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

छत्रीश्वमा शतकमां प्रथम बेइन्द्रियमहायुग्मशतकनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

#### २-११ उद्देसा।

- १. [प्र॰] पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मवेंदिया णं भंते ! कश्रो उववज्रंति ? [उ॰] पवं जहा परिदियमहाज्ञम्माणं २--११ उद्देशको.
- १. [प्र०] हे भगवन् ! प्रयमसमयोत्पन कृतयुग्मकृतयुग्मराशिष्रमाण वेइन्द्रियो क्यांथी आवी वत्पन थाय छे ! [उ०] हे गौतम !

प्रथमसमयकृततुग्य २ वेदन्द्रियोनी जन्मार पदमसमयउद्देसप । दस नाणत्ताई ताई चेव दस इह वि । पक्कारसमं इमं नाणतं—नो मणयोगी; नो वहयोगी, काययोगी । सेसं जहा वेदियाणं चेव पढमुद्देसप । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति । पवं पप वि जहा परिदियमहाजुम्मेसु एकारस उद्दे-सगा तहेव माणियद्या । नवरं चउत्थ—छट्ट-अट्टम-दसमेसु सम्मत्त-नाणाणि न भवंति । जहेव परिदिपसु पढमो तहनो पंचमो य एकगमा सेसा अट्ट एकगमा ।

#### छत्तीसइमे सए पढमं वेइंदियमहाजुम्मसयं समत्तं।

जैम एकेंद्रियमहायुग्मोना प्रथम समय सबन्वी उद्देशक कहा। छे तेम अहीं जाणवुं. जे दस बावतनी विशेषता छे ते अहीं पण जाणवी. अने-अगियारमी आ विशेषता छे—तेओ मनयोगी तथा वचनयोगी नधी होता, पण मात्र काययोगी होय छे. बाकी बधुं वेहन्द्रियना प्रथम उद्दे शक्मां कहां छे तेम समजवुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्। ते एमज छे'. जेम एकेंद्रियमहायुग्मोमां अगियार उद्देशको कहा। तेम अहीं पण कहेवा. पण विशेष ए के, चोषा, छट्टा, आठमा अने दसमा उद्देशकमां सम्यक्त अने ज्ञान होता नथी. एकेंद्रियोनी पेठे पहेलो, त्रीजो अने पांचमो उद्देशक सरखा पाठवाळा छे अने बाकीना आठ उद्देशको सरखा पाठवाळा छे.

#### छत्रीशमा शतकमां प्रथम बेइन्द्रियमहायुग्मशतक समाप्त-

#### २-८ बेंदियमहाजुम्मसयाई।

१. [प्र॰] कण्हलेस्सकडज्ञम्मकडज्ञम्मवेदंदिया णं भंते ! कओ उववर्ज्जति ! [उ॰] एवं चेव । कण्हलेस्सेसु वि एकारसउद्देसगसंज्ञत्तं सर्थ । नवरं लेस्सा, संचिट्टणा, ठिती जहा प्रगिदियकण्डलेस्साणं ।

#### छत्तीसइमे सए वितियं वेदियमहाज्ञम्मसयं समत्तं।

### २-८ बेइन्द्रियमहायुग्मशतको.

१. [प्र०] हे भगवन्! कृष्णलेश्यावाळा कृतयुग्मकृतयुग्मप्रमाण बेहिन्द्रय जीत्रो क्यांघी आवी उत्पन्न याय छे ? [उ०] हे गौतम ! एमज जाणवुं. कृष्णलेश्यावाळा संबंधे अगियार उद्देशकसहित शतक कहेवुं. पण विशेष ए के, कृष्णलेश्यावाळा एकेन्द्रियोनी पेटे लेश्याओ संचिट्टणा—स्थितिकाळ अने आयुषस्थिति जाणवी.

#### छत्रीश्रमा शतकमां द्वितीप बेइन्द्रियमहायुग्मश्रतक समाप्त.

तईयं बेंदियमहाजुम्मसयं।

पवं नीललेस्सेहि वि सयं।

छत्तीसहमे सए ततियं बेहन्दियमहाजुम्मसयं समतं । त्रीजुं बेहन्द्रियमहायुग्मशतक.

ए प्रमाणे नीळलेश्यायाळाओ संबंधे पण रातक कहेतुं.

छत्रीश्रमा शतकमां त्रीजुं बेइन्द्रिय महायुग्मशतक समाप्त.

चउत्थं बेदियं महाजुम्मसयं।

पर्व काउलेस्सेहि वि।

चउत्थं बेइन्दिय महाजुम्मसयं समत्तं । चतुर्थे बेइन्द्रियमहायुग्मशतक.

ए प्रमाणे कापोतलेक्स्यावाळा संबंधे पण शतक कहेर्नु.

छत्रीश्रमा शतकमां चतुर्थ बेइन्द्रियमहायुग्मशतक समाप्त.

#### पंचमं बेंदियमहाजुम्मसयं।

१. [प्र॰] भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मवेईविया णं भंते !० ? [उ०] एवं भवसिद्धियसया वि चत्तारि तेणेव पुवनमपणं नेयदा । नवरं सद्वे पाणा॰ ? णो तिणट्टे समट्टे । सेसं तद्देव ओद्दियसयाणि चत्तारि । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति । ५-८

#### छत्तीसमे सए अट्टमं वेंइदियमहाजुम्मसयं समत्तं।

## ५-८ बेइन्द्रियमहायुग्मशतको.

१. [प्र०] भवसिद्धिक कृतयुग्मकृतयुग्मराशिरूप बेइन्द्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय? [उ०] एम भवसिद्धिक संबंधे चार शत्को पूर्वना पाठवडे जाणवा. विशेष ए के सर्व प्राणो अहीं पूर्वे अनन्तवार उत्पन्न थया छे ? तेना उत्तरमां निषेध करवो. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. चार औधिक शतको पण तेमज जाणवां. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### छत्रीशमा शतकमां ५-८ वेइन्द्रियमहायुग्मशतको समाप्त.

## ९-१२ वेइंदियमहाजुम्मसयाइं।

जहा भवसिद्धियसयाणि बत्तारि एवं अभवसिद्धियसयाणि चत्तारि भाणियद्वाणि । नवरं सम्मत्त-नाणाणि नित्य, सेसं तं बेव । एवं एयाणि बारस बेइंदियमहाजुम्मसयाणि भवंति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।

## वेंदियमहाजुम्मसयाई समत्ताई छत्तीसतिमं सयं समत्तं।

#### ९-१२ बेइन्द्रियमहायुग्मशतको.

जेम भवसिद्धिक संबंधे चार शतको कहां तेम अभवसिद्धिक संबंधे पण चार शतको कहेवां. विशेष ए के, तेओमां सम्यक्त्व अने ज्ञान नथी. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. ए रीते ए बार बेइन्द्रियमहायुग्मशतको छे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.'

#### ९-१२ बेइन्द्रिय महायुग्मशतको सभाप्त.

## छत्रीशमुं शतक समाप्त.



## सत्ततीसइमं सयं

१. [प्र०] कडजुम्मकडजुम्मतेंदिया णं भंते! कश्रो उववर्जाति! [उ०] एवं तेहंदिएसु वि बारस सया कायबा बेहंदियसयसरिसा। नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेजहमागं, उक्कोसेणं तिन्नि गाजयाहं। दिती जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं एकुणवन्नं राहंदियाहं, सेसं तहेच। 'सेवं भंते! सेवं भंते! सि ।

तेंदियमहाजुम्मसया समत्ता सत्ततीसङ्गमं सयं समत्तं।

## साडत्रीशमुं शतकः

कृतयुग्म २ ह्रव तेइ: न्द्रियोनो उत्पाद १. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मकृतयुग्मप्रमाण तेइन्द्रिय जीवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] एम बेइन्द्रियशतकोनी पेठे तेइंदियसंबंधे पण बार शतको करवां. परन्तु अवगाहना—शरीरनुं प्रमाण जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट त्रण गाउनी होय छे. स्थिति जघन्य एक समयनी अने उत्कृष्ट ओगणपचास रात्री—दिवसनी जाणवी. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे.

तेइन्द्रियमहायुग्मशतको समाप्तः

साडत्रीशमुं शतक समाप्त.



## अट्टतीसइमं सयं।

चउरिदिपहि वि पवं चेष बारस सया कायदा । नवरं ओगाहणा जहकेणं अंगुलम्स असंबेजहभागं, उक्कोमेणं चत्तारि गाउयाहं। टिती जहकेणं एकं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा। सेसं जहा बेंदियाणं। 'सेवं मंते! सेवं मंते'! ति।

चउरिदियमहाजुम्मसया समत्ता ।

अहतीसइमं सर्यं समत्तं।

## आडत्रीशमुं शतक.

एज प्रमाणे चर्जरिद्रियो संबंधे एण बार शतको कहेवां. परन्तु अवगाद्दमा—शरीरप्रमाण जघन्य अंगुळनो असंख्यातमो भाग अने क्षत्युग्य २ ६५ वड-रिन्द्रियोनो जलाद-उत्कृष्ट चार गाउनी जाणवी. स्थिति जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट छ मास. बाकी बधुं बेइन्द्रियोनी पेटे जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

चउरिन्द्रियमहायुग्मशतको समाप्तः

आडत्रीशमुं शतक समाप्त.



## एगूणयालीसइमं सयं।

१. [प्र०] कडजुम्मकडजुम्मअसिंबर्गियां णं भंते! कओ उवयक्रान्ति? [उ०] जहा बेन्वियाणं तहेब असिंबसु वि बारस सया कायश्वा। नवरं ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंबेज्जहमागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं । संचिट्ठणा जहनेणं एकं समयं, उक्कोसेणं पुष्ठकोडीपुदुत्तं । दिती जहनेणं एकं समयं, उक्कोसेणं पुष्ठकोडी, सेसं जहा बॅदियाणं। सेवं भंते! सेवं भंते'! ति ।

असिष्पंचिदियमहाजुम्मसया समत्ता एगूणयालीसइमं सयं समत्तं।

## ओगणचालीशमुं शतक.

कृतयुग्म २ हरा अ संजी पंचेन्द्रियनो उत्पादः १. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुरमकृतयुरमप्रमाण असंज्ञी पंचेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] एम बेहन्द्रियोनी पेठे असंजीना पण बार शतको करवां. परन्तु विशेष ए के, अवगाहना—शरीरप्रमाण जघन्य अंगुल्लो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट एक हजार योजन होय छे. संचिट्टणा—स्थितिकाळ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट वे पूर्वकोडधी नष पूर्वकोड सुधीनी होय छे, स्थिति जझन्य एक समय अने उत्कृष्ट पूर्वकोटि. बाकी बधुं बेहन्द्रियोनी जैम जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

असंहीपंचेंद्रियमहायुग्मशतको समाप्त.

ओगणचालीशमुं शतक समास.



#### चत्तालीसतिमं सयं

## पढमं सिन्नपंचिदियमहाजुम्मसयं।

- १. [प्र०] कडजुम्मकडजुम्मसिपंचिदिया णं मंते ! कओ उथवज्जन्ति ! [उ०] उववाओ चउसु वि गईसु । संके-ज्ञवासाडयथसंकेजवासाउयपज्जनभपज्जन्तपसु य न कभी वि पडिसेही जाव-'अणुत्तरविमाण' ति । परिमाणं. थवहारी ओगाहणा य जहा असम्रिपंचिदियाणं ।
- २. वेयणिजावजाणं सत्तण्हं पगडीणं बंधमा वा अबंधमा या, वेयणिजारम बंधमा, नो अबंधमा । मोहणिजास्स वेदमा वा अवेदमा या, सेसाणं सत्तण्ह वि वेदमा, नो अवेयमा । सायावेयमा वा असायावेयमा या । मोहणिजास्स उद्दे वा अणुव्दे वा, सेसाणं सत्तण्ह वि उदयी, नो अणुद्दे । नामस्स गोयस्स य उदीरमा, नो अणुद्दीरमा, सेसाणं छण्ह वि

## चालीशमुं शतक

### प्रथम संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मकृतयुग्मराशिरूप संज्ञी पंचेद्रियो क्यांधी आवी उत्पन्न याय छे ? [उ०] हे गौतम ! चारे गतिमांधी आवी उत्पन्न थाय छे . संख्याता वर्षना आयुषवाळा, असंख्याता वर्षना आयुप्त्वाळा पर्यात तथा अपर्यात जीवोधी आवी उत्पन्न थाय छे, क्यांह्मी पण निषेध मधी, यावत्—अनुत्तर विमान सुधी जाणवुं. परिमाण, अपहार अने अवगाहना संबन्धे जेम असंज्ञिपंचेंद्रियो संबंधे कहां छे तेम जाणवुं.

कृतसुरम २ ह्न **संशी** पंचेरिद्रयोनी उत्पादः

२. वेदनीय सिवाय सात क्रमेशकृतिना तेओ बंधक छे अने अवंधक पण छे. अने \*वेदनीयना तो बंधक ज छे पण अवंधक नथी. मोहनीयना वेदक छे अने अवेदक पण छे. अने वाकीनी साते कर्मप्रकृतिना वेदक छे पण अवेदक नथी. साताना वेदक छे अने असाताना वेदक छे. 'मोहनीयना उदयवाळा छे अने अवेदक—अनुदयवाळा पण छे, अने ते सिवाय वाकीनी साते कर्मप्रकृतिना उदयवाळा छे, पण अनुदयी नथी. †नाम अने गोत्रना उदीरक छे पण अनुदीरक नथी. बाकीनी छए कर्मप्रकृतिओना उदीरक पण छे अने अनुदीरक पण छे. तेओ दर्भना दन्धकः

२ ण अही वेदनीय कर्मनो विशेषतः बन्ध कहे छे—उपशान्तमोहादि वेदनीय सिवाय सात कर्मना अवन्धक छे, बाकीना यथासंभव बन्धक छे. केब-लीपणा सुधी बधा संज्ञी पंचेन्द्रिय कहेवाय छे, अने लां सुधी तेओ अवदय बेदनीय कर्मना बन्धक ज होय छे, अवन्धक होता नथी. तेमां स्क्ष्मसंपराय सुधीना संज्ञी पंचेन्द्रिय मोहनीयना वेदक होय छे, अने उपशान्तमोहादि अवेदक होय छे. उपशान्तमोहादि जे संज्ञी पंचेन्द्रिय होय छे ते मोहनीय सिवाय साते प्रकृति-ओना वेदक छे, पण अवेदक नथी. यदापि केवलकानी चार अधाती कर्म प्रकृतिओना वेदक छे, पण ते इन्द्रियना उपयोगरहित होवाथी पंचेन्द्रिय नथी.

<sup>†</sup> स्थमसंपराय गुणस्थानक सुधी मोहनीय कर्मना उदयबाळा होय छे अने उपशान्तमोहादि अनुद्यवाळा होय छे. वेदकपणुं अने उदय ए बेमां एटली विशेषता छे के अनुक्रमे अने उदीरणाकरणयी उदय आवेला-फलोन्मुख थयेला कर्मनो अनुभव करवो ते वेदकल, अने अनुक्रमे उदय आवेला कर्मनो अनुभव करवो ते वेदकल, अने अनुक्रमे उदय आवेला कर्मनो अनुभव करवो ते उदय.

<sup>‡</sup> नाम अने गोत्र कमैना अक्षाय (श्रीणमोह गुणस्थान) पर्यन्त बधा संज्ञी पंचेन्द्रिय वदीरक छे. बाकीनी छ प्रकृतिओना यथासंभव उदीरक पण छे अने उत्तरिक पण छे. उदीरणानो कम आ प्रमाणे छे-प्रमत्त पर्यन्त सामान्य रीते बधा आठ कमैना उदीरक छे, अने उपारे आयुष आविलका मात्र बाकी रहे त्यारे तेओ आयुष सिवाय सात कमैना उदीरक छे. अप्रमत्तादि चार वेदनीय अने आयुष सिवाय छ कमैना उदीरक छे, अने स्क्षमसंपराय आविलका मात्र बाकी होय त्यारे मोहनीय, वेदनीय अने आयुष सिवाय पांच कमैना उदीरक छे. उपशान्तमोह एव पांच कमैना उदीरक छे. क्षीणकषाय पोतानो काळ आविलका बाकी होय त्यारे नाम अने गोत्रकमैना उदीरक छे. स्थोगी पण तेवी ज रीते उदीरक छे अने अयोगी अनुदीरक छे.

उदीरगा वा अणुदीरगा वा । कण्हलेस्सा वा जाव-सुक्कलेस्सा वा । सम्मिदिट्टी वा, सिच्छाविट्टी वा, सम्मामिच्छाविट्टी वा । णाणी वा अन्नाणी वा, मणजोगी बहजोगी कायजोगी । उवस्रोगो, वन्नमादी, उस्सासगा वा नीसासगा वा, आहारगा व जहा एगिवियाणं; विरया य भविरया य विरयाविरया य । सकिरिया, नो अकिरिया ।

- ३. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा कि सत्तविद्दबंधगा वा अट्टविद्दबंधगा वा छविद्दबंधगा वा एगविद्दबंधगा वा ! [उ॰] गोयमा ! सत्तविद्दबंधगा वा, जाव-एगविद्दबंधगा वा ।
- ४. [प्रव] ते णं भंते ! जीवा कि आहारसन्नोवउत्ता, जाय-परिगाहसन्नोवउत्ता वा, नोसन्नोवउत्ता वा ! सहत्य पुच्छा माणियवा । [उ०] गोयमा ! आहारसन्नोवउत्ता जाय-नोसन्नोवउत्ता वा । कोहकसायी वा जाय-लोमकसायी वा, अकसायी वा । इत्यिवेदगा वा पुरिसवेदवंधगा वा नपुंसगवेदगा वा अवेदगा वा । इत्यिवेदवंधगा वा पुरिसवेदवंधगा वा नपुंसगवेदगा वा अवेदगा वा । इत्यिवेदवंधगा वा । सन्नो, नो असन्नी । सहंदिया, नो आणिदिया । संचिट्टणा जहन्नेणं एकं समयं, उक्नोसेणं सागरोपमसयपुद्धतं सातिरेगं । आहारो तहेव जाव-नियमं छिहितं । दिती जहन्नेणं एकं समयं, उक्नोसेणं तेत्रीसं सागरो, वमाइं । छ समुग्याया आदिलगा । मारणंतियसमुग्याएणं समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति । उद्दृशा जहेव उववाओ, न कत्थइ पडिसेहो, जाव-अणुत्तरविमाण ति ।
- ५. बह मंते ! सञ्चपाणा जाव-अणंतखुत्तो । एवं सोलसु वि जुम्मेसु भाणियवं जाव-अणंतखुत्तो । नवरं परिमाणं जहा वेहंदियाणं, सेसं तहेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति । ४०-१ ।
- ६. [प्रव] पदमसमयकड्जुम्मकड्जुम्मसिक्षंचित्या णं भंते! कथो उद्यवज्ञन्ति? [उ०] उद्यवामो, परिमाणं-आहारो जहा पप्रसि चेव पदमोद्देसप । ओगाहणा बंधो वेदो वेदणा उदयी उदीरगा य जहा बेन्दियाणं पदमसमयाणं, तहेव कण्हलेस्सा वा जाव-सुकलेस्सा वा । सेसं जहा बेन्दियाणं पदमसमद्ग्याणं जाव-अणंतखुसो । नवरं इत्यिवेदगा वा

कृष्णलेखावाळा यावत्—ग्रुक्रलेखावाळा होय छे, सम्यग्दिष्ट, मिध्यादिष्ट अने सम्यग्निध्यादिष्ट पण होय छे. अञ्चानी अथवा ज्ञानी होय छे. अने मनोयोगवाळा वचनयोगवाळा, अने काययोगवाळा पण होय छे. तथा तेओनो उपयोग, वर्णादि, उच्छ्वासक, निःश्वासक तथा आहारक— इत्यादि एकेद्रियोनी पेठे जाणवुं. तेओ विरतिवाळा, अविरतिवाळा अने विरताविरत—देशविरतिवाळा होय छे. तथा सिक्रिय होय छे, पण अक्रिय नथी होता.

मन्ध्.

३. [प्र○] हे भगवन् ! शुं ते जीवो सप्तविध कर्मना बंधक छे, अष्टविध कर्मना बंधक छे, छ प्रकारना कर्मना बंधक छे के एकविध कर्मना बंधक छे १ [उ०] हे गौतम ! तेओ सप्तविध कर्मना बंधक छे, यावत्—एकविध कर्मना बंधक छे.

संज्ञा-

- 9. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते जीवो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्—परिप्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा के नोसंज्ञाना उपयोगवाळा छे १—एम बधी पृच्छा करवी. [उ०] हे गौतम ! तेओ आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा छे अने यावत्—नोसंज्ञाना उपयोगवाळा छे. तेओ कोधकरायी यावत्—छोभकरायी के अकरायी होय छे. तेओ क्षिवेदवाळा, पुरुषवेदवाळा, नपुंसकवेदवाळा अने यावत्—वेदरिहत होय छे. खीवेदवंधक, पुरुषवेदवंधक, नपुंसकवेदवंधक अने अवंधक पण होय छे. संज्ञी होय छे पण असंज्ञी नथी होता. तेम इन्द्रियवाळा होय छे पण अनिदिय होता नथी. मंसिथितिकाळ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट कांइक अधिक बसोधी नवसो सागरोएम जाणचो. आहार संबंधे तेमज जाणवुं, यावत्—अवस्य छए दिशानो आहार होय छे. स्थिति जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी छे. आदिना छए समुद्धातो होय छे. मारणांनिक समुद्धातथी समवहत थइने मरे छे अने समवहत थया सिवाय पण मरे छे. उपपातनी पेठे उद्दर्तना पण जाणवी. अने तेनो क्यांइ पण निपेध नथी. एम यावत्—अनुत्तरिवमान सुधी जाणवुं.
- ५. [प्र०] हे भगवन् ! बधाय प्राणो यावत्-पूर्वे अहीं अनंतवार उत्पन्न थया छे ? [उ०] यावत्-पूर्वे अनन्तवार उत्पन्न थया छे. ए प्रमाणे सोळो युग्मोमां यावत्-अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थया छे त्यां सुची कहेवुं. विशेष ए के, परिमाण बेइन्द्रियोनी पेठे जाणवुं अने बाकी बधुं तेमज समजवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ४०-१.

कृतयुग्म २ रूप संज्ञी पंचेन्द्रियोनी उत्पादः

६. [प्र०] हे मगवन् ! प्रथम समयना कृतयुग्महतयुग्मराशिष्रमाण संज्ञी पंचेन्द्रियो क्यांची आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] तेओनो उपपात, परिमाण अने आहार प्रथम उदेशकमां कह्युं छे तेम जाणवो. तथा जेम प्रथम समयना बेइन्द्रियोने कह्युं तेम अवगाहना, बंध, वेद, वेदना, उदयी अने उदीरको संबंधे जाणवुं. तेमज कृष्णलेश्यावाळा अने यावत्—कुक्कलेश्यावाळा संबंधे जाणवुं. वाकी बधुं प्रथम समयना बेइन्द्रियोनी पेठे समजवुं. यावत्—'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे'. परन्तु खीवेदवाळा, पुरुषवेदवाळा अने नपुंसकवेदबाळा होय

४ \* इत्तयुग्म २ ६प संज्ञों पंचेन्द्रियोनो अवस्थितिकाळ जघन्य एक समय छे, कारण के समय पछी संख्यान्तर थवानो संभव छे अने उत्कृष्ट साग-रोपमशतप्रथक्त छे, कारणके ए पछी संज्ञी पंचेन्द्रियहूपे धतो नधी.-टीका.

पुरिसवेदगा वा नवुंसगवेदगा वा, सिन्नजो असनीजो, सेसं तहेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु परिमाणं तहेव सर्व। 'सेवं अंते! सेवं मंते'! चि । ४०–२।

एवं एत्य वि एकारस उद्देसगा तद्देव, पढमो तद्दको पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ट वि सरिसगमा । चउत्थ-छट्ट-मट्टम-व्समेसु नत्थि विसेसो कायद्यो । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि ।

#### चत्तालीसतिमे सते पढमं सिष्णपंचिदियमहाज्ञम्मसयं समत्तं।

है, संब्रीओ अने असंब्री-इस्यादि बाकी बधुं तेमज जाणवुं. ए रीते सोळे युग्मोमां तेमज समजवुं. तया तेओनी परिमाण वगेरे बधी हकीकत पूर्वनी पेठे जाणवी. हि भगवन् । ते एमज छे, हे भगवन् । ते एमज छे'. ४०--२.

ए प्रमाणे अहीं पण अगियार उदेशको तेमज कहेवा. प्रथम, तृतीय अने पंचम उदेशक सरखा पाठवाळा छे, अने बाकीना आठे उदेशको सरखा पाठवाळा छे. तथा चोथा, छठ्ठा, आठमा अने दशमा उदेशकोमां कोइ पण प्रकारनी विशेषता न करबी. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### चाळीश्वमा शतकमां प्रथम संज्ञीपंचेन्द्रियमहायुग्मशतक समाप्त.

## बितीयं सनिपंचिदियमहाजुम्मसयं।

- १. [प्र॰] कण्डलेस्सकडजुम्मसङ्जुम्मसिप्रंचिदिया णं भंते ! कभो उववर्जाति ! [उ॰] तहेष जहा पटमुद्देसधो सन्नीणं। नवरं बन्धो येभो उदयी उदीरणा लेस्सा बन्धग-सन्ना कसाय-वेदबंधगा य पयाणि जहा वेदियाणं। कण्डलेस्साणं वेदो तिथिहो, अवेदगा नित्धा। संचिट्ठणा जहन्नेणं एकं समयं, उद्गोसेणं तेत्तीसं सागरोवमादं अंतोमुहुत्तमन्भिद्दयादं। एवं ठितीए वि। नवरं ठितीए अंतोमुहुत्तमन्भिद्दयादं न भन्नति । सेसं जहा पर्णासं चेच पढमे उद्देसए जाय-अणंतखुत्तो। एवं सोलसस्र वि सुम्मेसु। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! ति।
- २. [प्र०] पढमसमयकण्डलेस्सकडज्रुम्मकडज्रुम्मसिन्नपंचिदिया णं भंते ! कओ उववज्जन्ति ! [उ०] जहा सिन्नपंचिदियपढमसमयउद्देसए तहेष निरवसेसं । नवरं [प्र०] ते णं भंते ! जीवा कण्डलेस्सा ! [उ०] हंता कण्डलेस्सा, सेसं तं चेष । एवं सोलसम्रु वि जुम्मेसु । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि । एवं एए वि एकारस वि उद्देसगा कण्डलेस्ससए । एढम-तितय-पंचमा सरिसगमा, सेसा अट्ट वि एकगमा । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! सि ।

## चत्तालीसइमे सए बितियं सिन्नमहाजुम्मसयं समत्तं।

#### द्वितीय संज्ञीमहायुग्मशतक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा कृतयुग्मकृतयुग्मराशिप्रमाण संत्री पंचेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न याय छे ! [उ०] हे गौतम ! जैम संत्री संबंधे प्रथम उदेशक कहा छे तेम आ पण समजवो. निशेष ए के बंध, वेद, उदयी, उदीरणा, लेश्या, बंधक, संज्ञा, कषाय अने वेदबंधक—ए बधा जेम बेइन्द्रियोंने कह्या छे तेम अहीं कहेवा. कृष्णलेश्यावाळा संज्ञीने त्रणे प्रकारनो वेद होय छे, अवेदक होना नथी. तेओनो पण स्थिति काळ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट "अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीश सागरोपम होय छे. एम स्थिति संबंधे पण समजवुं. विशेष ए के, स्थितिमां अंतर्मुहूर्त अधिक न कहेवुं. बाकी बधुं जेम एओना प्रथम उद्देशकर्मा कह्युं छे तेम यावत्—'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न यया छे' त्या सुची जाणवुं. एम सोळे युग्मोमां कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. २—१.

कृष्ण लेदयाबाळा कृत० २ सं० प० नी तत्पादः

२. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथम समयना कृष्णलेश्यावाळा कृतयुग्मकृतयुग्मराशिप्रमाण संज्ञी पंचेंद्रियो क्याथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] जेम प्रथम समयना संज्ञी पंचेंद्रियोना उद्देशकमां कह्युं छे तेमज बधुं जाणवुं. विशेष ए के—[प्र०] हे भगवन् ! द्युं ते जीवो कृष्णलेश्यावाळा छे बाकी बधुं तेमज समजवुं. ए सेते सोळे युग्मोमां कहेवुं. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

कृष्णलेश्याबाव्य कृतसुरम २ संबी वंगेन्द्रियोनी सरपादः

ए रीते कृष्णलेश्याशतकमां आ अगियारे उदेशको कहेवा. पहेलो, त्रीजो अने पांचमो सरखा पाठवाळा छे अने बाकीना आटे एक पाठवाळा छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### चाळीशमा शतकमां द्वितीय संज्ञीमहायुग्मशनक समाप्त.

१ \* अहीं कृष्णदेश्यानी अवस्थितिकाळ सातमी नरकपृथिवीना नारकनी उत्कृष्ट स्थिति अने पूर्वभवना पर्यन्तवर्ती परिणामने आश्रयी अन्तर्भुहूर्त मळी अन्तर्भुहर्त अधिक तेत्रीश सागरोपम होय छे.

#### तइयं सन्निमहाजुम्मसयं।

पवं नील्लेस्सेसु वि सर्य। नवरं संचिट्टणा जहन्नेणं एकं समयं, उक्नोसेणं इस सागरोवमादं पिल्नेशेवमस्स असंबेखार-मागमन्मिद्दियादं। एवं दितीए । एवं तिसु उद्देसपसु, सेसं तं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।

#### चत्तालीसहमे सए तह्यं सिममहाजुम्मसयं समत्तं।

#### तृतीय संज्ञीमहायुग्मशतक.

नीलडेदवावाळा कृतयुरम २ संहीनो उत्पादः

ए प्रमाणे नीटलेश्याबाट्य संबंधे पण शतक कहेतुं. विशेष ए के, स्थितिकाट जघन्य एक समय अने उत्क्रष्ट पत्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक \*दस सागरोपम जाणवो. ए प्रमाणे स्थितिसंबंधे पण समजतुं, तथा ए रीते (पहेला, त्रीजा अने पांचमा—) ए त्रणे उदेशकोमां जाणतुं अने बाकी बधुं तेमज जाणतुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### चाळीश्रमा शतकमां तृतीय संज्ञीमहायुग्मशतक समाप्त.

## चउत्थं सन्निमहाजुम्मसयं ।

पवं काउलेस्ससयं पि । नवरं संचिद्धणा जहन्नेणं पकं समयं, उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाहं पिल्नेविमस्स असंखेजह-मागमन्मिहियाहं । एवं ठितीप वि, एवं तिसु वि उद्देसपसु, सेसं तं चेव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते'! ति ।

#### चत्तालीसहमे सए चउत्थं सिषमहाजुम्मसयं समत्तं।

## चतुर्थ संज्ञीमहायुग्मशतक.

कापोतलेदगावाला कुतयुग्म २ राशिक्य संज्ञी पचेन्द्रियनो जन्मार ए रिते कापोतल्दिया संबंधे पण शतक कहेतुं. पण विशेष ए के, स्थितिकाळ जघन्य एक समय अने उत्कष्ट <sup>†</sup>पल्योपमना अमं-स्थातमा भाग अधिक त्रण सागरोपम. ए प्रमाणे स्थिति संबंधे पण समजवुं, तथा एम त्रणे उदेशकोमां जाणवुं अने बाकी बधुं तेमज जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### चाळीश्रमा शतकमां चतुर्थ संज्ञीमहायुग्मशतक समाप्त.

#### पंचमं सन्निमहाजुम्मसयं।

पवं तेजलेस्सेसु वि सयं । नवरं संचिट्टणा जहन्नेण पकं समयं, उक्कोसेणं दो सागरीवमारं पिलमोवमस्स असंखेजरभा-गमन्भिद्दियारं । एवं दितीप वि । नवरं नोसन्नोवजसा वा । एवं तिसु वि उद्देसपसु, सेसं तं चेव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि । चत्तालीसरमे सए पंचमं सिन्नमहाजुम्मसयं समर्तं ।

#### पांचमं संजीमहायुग्मशतक.

तेजोहेदयावाळा सं १ पण भी उत्पादः १. एम तेजोलेश्या संबंधे पण शतक कहेबुं. विशेष ए के, स्थिनिकाळ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट ‡पल्योपमना असंख्यातमां भाग अधिक वे सागरोपम होय छे. ए रीते स्थितिसंबंधे पण समजबुं. विशेष ए के नोमंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे. एम त्रणे उद्दे-शकोमां समजबुं. वाकी बधुं तेमज जाणबुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### चाळीशमा शतकमां पांचम्नं संज्ञीमहायुग्मशतक समाप्तः

## छट्टं सन्निमहाजुम्मसयं।

१. [प्र॰] जहा तेउछेस्सासतं तहा पम्हछेस्सासयं पि । नवरं संचिट्टणा जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेणं दस सागरी-

## छडुं संज्ञीमहायुग्मशतक.

पमलेखाताळा संर्ता पं॰ नी जन्मादः १. जेम तेजोळस्या संबंधे शतक कहां छे तेम पद्मलेस्या संबंधे पण आ शतक समजवुं. विशेष ए के संस्थितिकाल जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक दस सागरोपम छे. एम रिश्यति संबंधे पण समजवुं. विशेष ए के, अहीं अधिक अंतर्मुहूर्त न कहेवुं.

<sup>9 \*</sup> पांचमी नरकपृथिवीना उपरना प्रतरमां पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक दश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष छे अने त्यां नीललेक्या छे. अहीं पूर्वना अन्तिम अन्तर्भुहृतेनी गणना न करी तेनुं कारण पल्योपमना असंख्यातमा भागमां तेनो समावेश कर्यो छे.

२ <sup>†</sup> त्रीजी नरकपृथिनीना उपरना प्रतरनी स्थिति पत्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक त्रण सागरोपमनी छे, अने लां कापोतलेद्या छे तेथी उपर कहेजी स्थिति घटी शके छे.

१ ौ तंजीलेर्यानी उरकृष्ट स्थिति ईशानदेवलोकना देवोना परमायुवने आश्रयी जाणवी.

<sup>🤊 🖟</sup> पद्मलेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति ब्रह्मदेवलोकना देवोने आश्रयी पूर्वभवना वन्तिम अन्तर्भुहूर्तेसहित दस सागरोपम जाणवी.-टीका.

वमारं अंतोगुहुत्तमभ्महियारं । एवं वितीए वि । नवरं अंतोगुहुत्तं न मन्नति, सेसं तं चेव । एवं एएसु पंचसु सएसु जहा कण्डलेस्सासए गमनो तहा नेयद्यो, जाव-अणंतखुत्तो । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति ।

## चत्तालीसतिमे सप छद्वं सिश्रमहाजुम्मसयं समत्तं।

बाकी बर्धु तेमज जाणबुं. एम पांचे शतकोमां जेम कृष्णलेश्याना शतकमां जे पाठ कहाो छे ते पाठ कहेवो. यावत्—'पूर्वे अनंत वार उत्पन्न धया छे'. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

## चाळीश्रमा श्रुतकमा छद्वं ग्रुतक समाप्त.

## सत्तमं सन्निमहाजुम्मसयं।

१. सुक्कछेस्ससयं जहा ओहियसयं । नधरं संचिट्टणा ठिती य जहा कण्डलेस्ससय, सेसं तहेव जाव-भणतयुत्तो । 'सेषं मंते ! सेषं मंते' ! सि ।

## चत्तालीसइमे सए सचमं सिममहाजुम्मसयं समत्तं।

#### सातमुं संज्ञीमहायुग्म शतक.

१. जेम औधिक शतक कह्युं छे तेम शुक्कलेक्ष्य। रांबंधे पण शतक कहेबुं. विशेष ए के, स्थितिकाळ अने स्थिति संबंधे "कुष्ण- সুষ্কलेक्षावाळा लेक्ष्याशतकनी जेम जाणबुं. तथा बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणबुं. यावत्—'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे'. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, उत्पादः हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### चाळीश्रमा शतकमां सातम्नं संज्ञीमहायुग्मशतक समाप्त.

## अडमं सिन्नमहाजुम्मसयं।

१. [प्र०] भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मसिप्रंचिविया णं मंते ! कथो उववज्रन्ति ? [उ०] जहा पढमं सिन्नसतं तहा णेयतं भवसिद्धियाभिलावेणं । नवरं-[प्र०] सञ्चपाणा० ? [उ०] णो तिणहे समहे । सेसं तहेव, 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि । चत्रालीसहमे सए अद्भमं सिन्महाज्ञम्मसयं समत्तं ।

#### आठमुं संज्ञीमहायुग्म शतक.

१. [प्र०] हे भगवन् । कृतयुग्मकृतयुग्मराशिप्रमाण भवसिद्धिक संज्ञी पंचेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न याय छे १ [उ०] जेम पहेलुं संज्ञी शतक कहां छे ते प्रमाणे भवसिद्धिकना आलापथी कहेतुं. विशेष ए के, बधा जीवो अहीं पूर्वे उत्पन्न यया छे १ ए उपपातना प्रश्ननो ए अर्थ समर्थ नथी—ए निपेधारमक उत्तर आपवो. वाकी वधुं तेमज जाणतुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

कृत० २ सं० पं० भवसिद्धिकोनोः उत्पारः

#### चाळीश्रमा शतकमां आठष्ठं संज्ञीमहायुग्मशतक समाप्त.

#### नवमं सनिमहाजुम्मसयं।

१. कण्डलेस्सभवसिद्धीयकडज्जम्मकडज्जम्मसिक्रपंचिविया णं भंते ! कत्रो उचयज्जन्ति ? [उ०] एवं एएणं अभिलावेणं-जडा ओड्डियकण्डलेस्सस्यं । 'सेवं भंते ! सेवं मंते' ! सि ।

#### चत्तालीसर्मे सए नवमं सिन्नमहाजुम्मसयं समत्तं।

## नवमुं संज्ञीमहायुग्मशतक.

१. [प्र॰] हे भगवन् । कृतयुग्मकृतयुग्मराशिप्रमाण कृष्णलेश्यावाळा भवसिद्धिक संज्ञी पंचेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? कृष्ण॰ भव॰ स॰ वं॰ नो उत्पादः [उ॰] ए रीते ए अभिकापयी जेम कृष्णलेश्यावाळा संबंधे आधिकशतक कह्युं छे तेम अहीं पण जाणवुं. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

## चाळीशमा शतकमां नवधुं संश्लीमहायुग्मश्रतक समाप्त.

## दशमं सन्निमहाज्ञम्मसयं।

पवं नीललेस्समवसिद्धीए वि सयं। 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ति ।

#### चतालीसइमे सए दसमं सिषमहाजुम्मसयं समत्तं।

#### दशमुं संज्ञीमहायुग्मशतक.

ए रीते नीळलेश्यावाळा भवसिद्धिको संबंधे पण शतक कहेवुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

नील्लेस्यावाळा कृत० २ भवसिद्धिक सं० प० नो उत्पाद-

#### चाळीशमा शतकमां दशसुं संज्ञीमहायुग्मशतक समाप्त.

१ \* गुरूलेस्यानी स्थिति पूर्वभवना अन्तिस अन्तर्सुहूर्त सहित अनुत्तर देवना उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमना आयुषने आश्रवी जाणवी.-टीका.

#### ११-१४ सन्निमहाजुम्मसयं।

पवं जहा मोहियाणि सिन्नपंचिवियाणं सत्त सयाणि भणियाणि, एवं भवसिद्धीपिह वि सत्त सयाणि कायबाणि। नवरं सत्तसु वि सपसु सबपाणा जाव-णो तिणट्टे समट्टे, सेसं तं चेव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति । भवसिद्धियसया समजा। चत्तालीसहमे सए चोहसमं सिन्नमहाजुम्मसयं समत्तं।

#### ११-१४ संज्ञीमहायुग्मशतको.

१. जेम संज्ञी पंचेंद्रियो संबंधे सात औघिक शतको कह्यां छे ए रीते भवसिद्धिको संबंधे पण सात शतको करवां. विशेष ए के साते शतकोमां सर्व प्राणो पूर्वे अहीं उत्पन्न थया छे—ते प्रश्नना उत्तरमां यावत्—'ए अर्थ समर्थ नथी'—एम कहेवुं. बाकी बधुं तेमज जाणवुं, 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

#### चाळीशमा शतकमां ११-१४ संज्ञीमहायुग्मशतको समाप्त.

#### पन्नरसमं सन्निमहाजुम्मसयं ।

- १. [प्रव] अभवसिद्धियक इन्तमक इन्तमसिप्रींचिदिया णं भंते ! कक्षो उववज्रान्ति ! [उठ] उववाभो तद्देव अणुत्तरिवमाणवज्रो । परिमाणं, अवहारो, उद्यनं, वंघो, वेदो, वेदणं, उद्यक्षो, उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससप । कण्हलेस्सा वा
  जाव-सुक्कलेस्सा वा । नो सम्मिदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अन्नाणी-पवं जहा कण्हलेस्ससप । नवरं नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । संचिट्टणा िती य जहा ओहिउ हेसप । समुग्वाया आदिल्लगा
  पंच । उन्नदृष्णा तद्देव अणुत्तरिवमाणवज्ञं । सन्नपाणाठ णो जाव-तिणद्वे समद्वे, सेसं जहा कण्हलेस्ससप, जाव-अणंतखुत्तो ।
  पवं सोलसस्र वि जुम्मेस्र । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति ।
- २. [प्र०] पढमसमयअभवसिद्धियकडज्जम्मकडज्जम्मसिष्ठपंत्रिदिया णं मंते ! कओ उववज्जन्ति ! [उ०] जहा सन्नीणं पढमसमयउद्देसए तहेव । नवरं सम्मत्तं, सम्मामिच्छत्तं, नाणं च सन्नत्थ नत्थिः सेसं तहेव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति । एवं एत्य वि एक्कारस उद्देसगा कायद्वा पढम-तद्दय-पंचमा एक्कगमा, सेसा अट्ट वि एक्कगमा । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! ति । अभवसिद्धियमहाज्जम्मसयं समत्तं ।

#### चत्तालीसइमे सए पनरसमं सन्निपंचिदियमहाज्ञम्मसयं समत्तं ।

#### पंदरमुं संज्ञीमहायुग्म शतक.

कृत०२ अभवसिद्धिक सं० पं० नो उत्पादः

१. [प्र०] हे भगवन् । कृतयुग्मकृतयुग्मराशिप्रमाण अभवसिद्धिक संज्ञी पंचेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] अनुत्तर विमान सिवाय बधेधी तेमज उपपान जाणवो. परिमाण, अपहार, उंचाई, बंध, वेद, वेदन, उदय अने उदीरणा—ए बधुं कृष्णलेश्याशतकनी पेठे जाणवुं. तेशो कृष्णलेश्यायाळा अने यावत्—ग्रुक्रलेश्यायाळा होय छे, तेओ सम्यग्दिष्ट नयी अने सम्यग्मिष्पादिष्ट नयी, पण मिष्यादिष्ट छे. ज्ञानी नथी अज्ञानी छे, ए रीते जेम कृष्णलेश्याशतकमां कह्युं छे तेम समजवुं. विशेष ए के, तेओ विरतिवाळा नथी, तेम विरताविरन नथी. पण विरतिरिहित छे. तेओनो स्थितिकाळ अने स्थितिसंबंधे जेम औषिक उद्देशकमां कह्युं छे तेम समजवुं. तेओने खादिना पांच समुद्धातो होय छे. उद्धर्तना अनुत्तर विमानने वर्जीने पूर्वनी पेठे जाणवी. ''सर्व प्राणीओ पूर्वे अहीं उत्पन्न थया छे''—ए प्रश्नना उत्तरमां 'ए अर्थ समर्थ नयी' तेम कहेवुं. बाकी बधुं कृष्णलेश्याना शतकने विषे कह्युं छे तेम यावत्—'पूर्वे अनंतवार उत्पन्न थया छे'—त्यांसुधी कहेवुं. ए रीते सोळे युग्मोमां जाणवुं. 'ह भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

भयम समय कृत० २ अभवसिडिक सं० पं० नो उत्पाद-

२. [प्र०] हे भगवन् । प्रथम समयना कृतयुग्यकृतयुग्मराशिप्रमाण अभवसिद्धिक संज्ञी पंचेदियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! जेम प्रथम समयना संज्ञीना उदेशकमां कह्युं छे तेमज समजवुं. विशेष ए के, सम्यक्त्व, सम्यिगिध्यात्व अने ज्ञान वधे नथी. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. एम अहीं पण अगियार उदेशको कहेवा. पहेलो, त्रीजो अने पांचमो उदेशक सरखा पाठवाळा छे. अने बाकीना आठे उदेशको सरखा पाठवाळा छे. 'है भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. प्रथम अभवसिद्धिकमहायुग्मशतक समाप्त.

#### चाळीशमा शतकमां पत्ररहुं संझीमहायुग्मशतक समाप्त.

#### सोलसमं सन्निमहाजुम्मसयं ।

१. [प॰] कण्डलेस्सथमवसिद्धियकडनुम्मकडनुम्मसन्निर्पाचिदिया णं भंते ! कथो उववज्रान्ति ![७०] जहा पर्पास खेव ओहियसयं तहा कण्डलेस्ससयं पि । नवरं [प्रo] ते णं मंते ! जीवा कण्डलेस्सा ? [उ o] हंता कण्डलेस्सा । ठिती, संचिद्रणा य जहां कन्हुलेस्सासए सेसं तं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति । वितियं अभवसिद्धियमहाज्ञम्मसयं ।

#### चत्तालीसतिमे सते सोलसमं सिमहाज्ञम्मसयं समत्तं।

#### सोळमुं संज्ञीमहायुग्मशतक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मकृतयुग्मराशिप्रमाण कृष्णलेश्यावाळा अभवसिद्धिक संज्ञी पंचेंद्रियो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गीतम! जैम एओनुं औषिक रातक कहां छे तेम कृष्णलेक्यारातक पण कहेनुं. विरोप ए के—[प्रo] हे भगवन्! द्धां ते जीवो कृष्ण- संबंध ने उत्पाद-लेक्याबाळा छे ? [उ ० ] हा, कृष्णलेक्याबाळा छे. तेओनो स्थितिकाळ अने स्थिति संबंधे जेम कृष्णलेक्यावातकमां कहां छे तेम कहेतुं, अने बाकी बधुं तेमज जाणवुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'. द्वितीय अभवसिद्धिकमहायुग्मशतक समाप्त.

#### चाळीशमा शतकमां सोळग्नं संज्ञीमहायुग्मश्चतक समाप्त.

#### सत्तरसमं सयं ।

१ एवं छहि वि लेस्साहि छ सया कायदा जहा कण्हलेस्ससयं। नवरं संबिद्धणा दिती य जहेव ओहियसप तहेव माणियद्या । नवरं सुक्रलेस्साप उक्नोसेणं पक्रतीसं सागरोवमाइं अंतोमुद्दचमन्मदियाइं । ठिती पर्यं चेव । नवरं अंतोमुद्दचं नित्य जहन्नगं, तहेव सद्यत्य सम्मत्त-नाणाणि नित्य । विर्श् विरयाविर्श् अणुसरविमाणोववसि-एयाणि नित्य । सद्यपाणा० (जाव-) णो तिणहे समट्टे। 'सेवं मंते! सेवं मंते'! ति। एवं एयाणि सत्त अभवसिद्धियमहाज्ञुस्मसया भवन्ति। 'सेवं भंते! सेवं भंते' ! ति । एवं एयाणि एकवीसं सन्निमहाज्ञम्मसयाणि । सन्नाणि वि एकासीतिमहाज्ञम्मसयारं समत्तारं ।

## चत्तालीसतिमं सन्निमहाजुम्मसयं समत्तं।

#### १७-२१ संज्ञीमहायुग्म शतको.

१. ए प्रमाणे जेम कृष्णलेक्या संबंधे रातक कहां छे तेम छए लेक्या संबंधे छ रातको कहेवां. विशेष ए के, औधिक रातकमां जणाच्या प्रमाणे स्थितिकाळ अने स्थिति जाणवी. तेमां विशेष ए के, शुक्कलेश्यानी उत्कृष्ट स्थितिकाळ अन्तर्मुहूर्त अधिक <sup>\*</sup>ए फ्रत्रीश सागरोपम होय छे अने स्थिति पूर्वोक्तज जाणवी. पण जघन्य अंतर्मुहूर्त अधिक न कहेवुं. बधे ठेकाणे सम्याज्ञान नथी, विरति, विरताविरति अने अनुत्तर विमानथी आवीने उपजवुं ते पण नथी. वधा जीवो पूर्वे अहीं उत्पन्न यया छे १ ए प्रश्नना उत्तरमां 'ए अर्ध समर्थ नथी' एम कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ए रीते ए सात अभवसिद्धिकमहायुग्भशतको थाय छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. एम एकवीश संज्ञीपंचेंदियमहायुग्म शतको कह्यां. बधाय मळीने एकाशी महायुग्मशतको समाप्त थयां.

## चाळीशमुं शतक समाप्त.



<sup>🤊</sup> अभन्य संही पंचेन्द्रियनी शुक्रछेदयानी स्थिति अन्तर्मुहुतं अधिक एकत्रीश सागरोपमनी कही ते पूर्व भवना अन्तना अन्तर्मुहुर्तसहित नवमा प्रैवेयकनी एक त्रीच सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थितिने आश्रयी जाणवुं. अभव्यो उत्कृष्टवी नवमा प्रैवेयक सुधी जाय छे अने त्यां शुक्रकेश्या होय छे−टीका.

## एगचत्तालीसतिमं सयं पहमो उद्देसो ।

- १. [प्र०] कह णं मंते ! रासीज्ञम्मा पन्नता ! [उ०] गोयमा ! चत्तारि रासीज्ञम्मा पन्नता, तंजहा-कडज्ञम्मे, जाव-किलयोगे । [प्र०] से केणहेणं मंते ! एवं बुच्ह-'चत्तारि रासीज्ञम्मा पन्नता, तंजहा-जाव-किलयोगे' ! [उ०] गोयमा ! जे णं रासी चउकपणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्ञवसिए सेत्तं रासीज्ञम्मकडज्ञम्मे । एवं जाव-जे णं रासी चउकपणं अवहारेणं एगपज्जवसिए सेत्तं रासीज्ञम्मकिलयोगे, से तेणहेणं जाव-किल्योगे ।
  - २. [प्र॰] रासीजुम्मकडजुम्मनेरद्रया णं मंते ! कथो उधवज्रन्ति ! [उ॰] उववाओ जहा वर्कतीए ।
- ३, [प्र०] ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवरया उचवज्रन्ति ! [उ०] गोयमा ! चत्तारि वा भट्ट वा बारस था सोलस वा संक्षेत्रा वा असंक्षेत्रा वा उचवज्रंति ।
- ४. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा कि संतरं उचवज्जन्ति, निरंतरं उचवज्जन्ति ! [उ०] गोयमा ! संतरं पि उववज्जन्ति, निरंतरं पि उववज्जन्ति। निरंतरं पि उववज्जन्ति। निरंतरं उववज्जन्ति। निरंतरं उववज्जन्ति। निरंतरं उववज्जन्ति। निरंतरं उववज्जन्ति।
- ५. [प्र०] ते णं भंते! जीवा जंसमयं कडजुम्मा तंसमयं तेयोगा, जंसमयं तेयोगा तं समयं कडजुम्मा! [उ०] णो तिणट्टे समट्टे।

## एकताळीशमुं शतक

#### प्रथम उद्देशक.

राशियुग्मना प्रकार-

चार राशियुग्म बहेबार्नु बारण- १. [प्र०] हे भगवन्! केटलां राशियुगमो कह्यां छे? [उ०] हे गौतम! चार राशियुग्मो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे—यावत्—१ कृतयुग्म अने यावत्—४ कल्योज. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी कृतयुग्म अने यावत्—कल्योज—ए चार राशियुग्मो कहेलां छे! [उ०] हे गौतम! जे राशियुग्म वार चार संख्यानो अपहार करतां छेवटे चार बाकी रहे ते राशियुग्म कृतयुग्म कहेवाय छे, अने यावत्—जे राशिमांथी चार चार संख्यानो अपहार करतां छेवटे एक बाकी रहे ते राशियुग्म कहेवाय छे. हे गौतम! ते कारणवी यावत्—कल्योज कहेवाय छे.

कृतयुग्महप नैरः यिकोनो उपपानः

- २. [प्र॰] हे भगवन् ! ছুরযুग्मराशिप्रमाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ॰] हे गौतम ! जेम \*व्युत्कातिपदमा उपपात कह्यो छे तेम अहीं पण कहेवो.
- ३. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो एक समये केटला उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! चार, आठ, बार, सोळ, संख्याता के असंख्याना उत्पन्न थाय छे.

मान्तर के निरन्तर उत्पाद. ४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते जीवो सांतर—अन्तरसिंहन उत्पन्न थाय छे के निरंतर—अंतररिंहत उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गीनम! तेओ सांतर उत्पन्न थाय छे अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे. सांतर उत्पन्न थता तेओ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट असंख्य समयनुं अंतर करीने उत्पन्न थाय छे, अने निरंतर उत्पन्न थना जघन्य वे समय सुधी अने उत्कृष्ट संख्याता समय सुधी निरंतर—प्रतिसमय अविरहितपणे उत्पन्न थाय छे.

हनयुग्म अने ग्योज राक्षिनी परापर संबंध छै

५. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो जे समये कृतयुग्मराशिरूप होय ते समये त्र्योजराशिरूप होय अने जे समये त्र्योजराशिरूप होय ते समये कृतयुग्मराशिरूप होय ? [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ समर्थ–यथार्थ नथी.

- ६. [प्र॰] जं समयं कडजुम्मा तं समयं वावरजुम्मा, जं समयं वावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा ! [उ॰] नो तिणहे समहे ।
- ७. [१०] जं समयं कडजुम्मा तं समयं किलयोगा, जं समयं किलयोगा तं समयं कडजुम्मा ! [उ०] जो तिणहे समहे।
- ८. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा कहिं उचवक्जन्ति ? [उ॰] गोयमा ! से जहा नामए पवए पवमाणे-एवं जहा उववा-यसए जाव-'नो परप्पयोगेणं उचवक्जन्ति'।
- ९. [प्र॰] ते णं मंते ! जीवा किं आयजसेणं उववज्रान्ति, आयअजसेणं उववज्रान्ति ? [उ॰] गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्राति, आयअजसेणं उववज्रान्ति ।
- १०. [प्र०] जर मायमजलेणं उववस्रन्ति किं भायजलं उवजीवंति, भायमजलं उवजीवंति ? [उ०] गोयमा ! नो भायजलं उवजीवंति, भायमजलं उवजीवंति ।
  - ११. [प्र०] जा आयअजसं उवजीवंति कि सलेस्सा अलेस्सा ? [उ०] गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ।
  - १२. [प्र०] जइ सलेस्सा कि सकिरिया अकिरिया ? [उ०] गोयमा ! सकिरिया नो अकिरिया ।
  - १३. [प्र०] जद सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति, जाव-अंतं करेंति ? [४०] णो तिणद्वे समट्टे ।
- १४. [प्र०] रासीज्ञम्मकडज्ञम्ममञ्जरकुमारा णं भंते! कमो उववज्जन्ति ! [उ०] जहेव नेरतिया तहेव निरवसेसं। एवं जाव-पंचिदियतिरिक्खजोणिया। नवरं वणस्सरकायिया जाव-धसंखेजा वा अणंता वा उववज्जति, सेसं एवं चेव। मणुस्सा वि एवं चेव, जाव-'नो आयजसेणं उववज्जन्ति, आयअजसेणं उववज्जति ।
- १५. [प्र०] जद्द आयअजसेणं उचवज्रन्ति, कि आयजसं उचजीवंति आयअजसं उचजीवंति ? [उ०] गोयमा ! आय-जसं पि उवजीवंति, आयअजसं पि उचजीवंति ।
- ६. [प्रo] जे समये कृतयुग्मरूप होय ते समये द्वापरयुग्मरूप होय अने जे समये द्वापरयुग्म होय ते समये कृतयुग्मरूप होय? [उo] ए अर्थ समर्थ नथी.

कृतयुग्म अने दापर-युग्मनो संबंध दोवा

७. [प्र०] जे समये कृतयुग्मराशिरूप होय ते समये कल्योजराशिरूप होय अने जे समये कल्योजरूप होय ते समये कृतयुग्म-राशिरूप होय ! [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी.

ज राक्तिनो संबन्ध होय <sup>श</sup> जीवोनो उपपात

केवी रीते थाय!

कृतयुग्म अने कस्योः

- ८. [प्र॰] हे भगवन् ! ते जीवो केवी रीते उत्पन्न थाय छे ! [उ॰] हे गौतम ! जेम कोइ एक प्रवक (कूदनार) होय अने ते जेम कूदतो योताने स्थानके जाय छे—इत्यादि जेम \*उपपातशतकमां कह्युं छे तेम बधुं अहीं समजवुं. यावत्—पोतानी मेळे उत्पन्न थाय छे, पण परप्रयोगथी उत्पन्न थता नथी.
- ९. [प्र॰] हे भगवन् ! ह्यं ते जीवो आत्माना यशयी—संयमधी उत्पन्न याय छे के आत्माना अयशयी—असंयमधी उत्पन्न थाय छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओ आत्माना यशयी उत्पन्न थता नथी, पण आत्माना अयशयी उत्पन्न थाय छे.

. उपपातनो हेतु भारमानो असंयम-

१०. [प्र०] जो तेओ आत्माना असंयमधी उत्पन्न थाय तो शुं आत्मसंयमनो आश्रय करे छे के आत्माना असंयमनो आश्रय करे छे ! [उ०] हे गीतम ! तेओ आत्मसंयमनो आश्रय करता नथी पण आत्माना असंयमनो आश्रय करे छे.

आत्मसंयम के आ-त्मअसंयमनो आ-अन्य करे हैं !

- ११. [प्र०] जो तेओ आत्माना असंयमनो आश्रय करे छे तो छुं तेओ लेश्यावाळा छे के लेश्यारहित छे ? [उ०] हे गौतम ! सलेश्य के बलेश्य ! तेओ लेश्यावाळा छे, पण लेश्यारहित नथी.
- १२. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ लेश्याबाळा छे तो शुं तेओ क्रियाबाळा छे के क्रियारहित छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ सकेदय सक्रिय होय के अक्रिया
- १३. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ कियावाळा छे तो शुं तेओ तेज भवमां सिद्ध थाय छे, यायत्—कर्मनो अंत करे छे ? [उ०] है गौतम ! ते अर्थ समर्थ नथी.
- १८. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मराशि प्रमाण असुरकुमारो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] हे गौतम ! जैम नैरियको संबंधे कासुं तेम असुरकुमारो संबंधे पण बधुं जाणवुं. ए रीते यावत्—पंचेंद्रिय तिर्यचयोनिको सुधी समजवुं. पण विशेष ए के, वनस्पतिकायिको असंख्याता के अनंता उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं तेमज समजवुं. ए रीते मनुष्यो संबंधे पण समजवुं. यावत्—आत्माना संयमयी उत्पन्न थाता नथी पण आत्माना असंयमथी उत्पन्न थाय छे.

कृतयुग्मराशिष्टप अप्तरकुमारनी उत्पत्तिः

१५. [प्र॰] हे मगवन्! जो तेओ आत्माना असंयमधी उत्पन्न थाय छे तो शुं तेओ आत्मसंयमनो आश्रय करे छे के आत्माना असंयमनो आश्रय करे छे! [उ॰] हे गौतम! तेओ आत्मसंयमनो पण आश्रय करे छे अने आत्माना असंयमनो पण आश्रय करे छे.

मनुष्योना उपपातनु कारण थारमानी असंयमः

८ \* मग- सं॰ ४ श॰ ३१ उ० १ ए० ३१२.

- १६. [प्र०] जर आयजसं उवजीवंति कि सलेस्सा अलेस्सा ? [उ०] गोयमा ! सलेस्सा वि अलेस्सा वि ।
- १७. [प्र०] जद अलेस्सा किं सकिरिया अकिरिया ? [उ०] गोयमा ! नो सकिरिया, अकिरिया ।
- १८. [४०] जइ अकिरिया तेणेष भवग्गहणेणं सिज्झंति, जाष-अंतं करेंति ![उ०] हंता सिज्झंति, जाष-अंतं करेन्ति ।
- १९. [प्र०] जा सलेस्सा कि सिकरिया, अकिरिया ? [उ०] गोयमा ! सिकरिया, नो अकिरिया।
- २०. [प्र०] जह सिकरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति, जाव-अंतं करेन्ति ? [उ०] गोयमा ! अस्थेगहया तेणेव भवनाहुणेणं सिज्यंति, जाव-अंतं करेन्ति, अत्थेगाया नो तेणेव भवनाहुणेणं सिज्यंति, जाव-अंतं करेन्ति ।
  - २१. [प्र॰] जर आयमजसं उवजीवंति किं सलेस्सा अलेस्सा ! [उ०] गोयमा ! सलेस्सा नो अलेस्सा ।
  - २२. [प्र॰] जर सलेस्सा कि सिकरिया, अकिरिया ! [ड॰] गोयमा ! सिकरिया, नो अकिरिया ।
- २३. [प्र०] जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहृणेणं सिज्झंति, जाव-अंतं करेंति ? [उ०] नो इणद्वे समद्वे । वाणमंतर-जोहसिय-वेमाणिया जहा नेरहया। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! ति।

#### इकचत्तालीसइमे रासीज्ञम्मसए पढमो उद्देसओ समत्तो।

१६. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ आत्मसंयमनो आश्रय करे छे तो द्यां तेओ लेक्यासहित छे के लेक्यारहित छे ! [उ०] है भारमतंत्रमी मनुष्यो सहेदय छे के अलेह्य! गौतम ! तेओ लेक्यासहित छे अने लेक्यारहित पण छे.

१७. [प्रo] हे भगवन् । जो तेओ लेदयारहिन छे तो ह्यं तेओ कियावाळा छे के कियारहित छे ? [उ o] हे गौतम ! तेओ बेदयारहित मनुष्यो स्क्रिय के अक्रिय ! क्रियासहित नथी, पण कियारहित छे.

१८. [प्र0] हे भगवन्! जो तेओ कियारहिन छे तो ह्यं तेओ तेज भवमां सिद्ध थाय छे, यावत्-सर्व दुःखनो अंत करे छे ! [उ0] कियारहितनी सिक्धि-हे गौतम ! हा, तेओ सिद्ध थाय छे यावत्—सर्व दुःखनो अंत करे छे.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ लेक्सावाळा छ तो छुं तेओ सिकाय छे के अफिय छे ! [उ०] हे गाँतम ! तेओ सिकाय छे केश्याबाटा मनुष्योः नी सकियता-पण अक्रिय नधी.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! जो तेओ सिक्रिय छे तो हां तेज भवमां सिद्ध थाय छे, यावत्—सर्व दुःखनो अंत करे छे ! [उ०] हे सक्रिय वे भवमां सिद्ध धाय के नहिं! गौतम ! केटलाक तेज भवमां सिद्ध थाय छे, यावत्—सर्व दुःखनो अंत करे छे भने केटलाक ते भवमां सिद्ध थता नयी भने यावत्—सर्व दु:खनो अंत करता नथी.

२१. [प्रo] जो तेओ आत्माना असंयमनो आश्रय करे छे तो द्यां तेओ लेक्यासहित छे के लेक्यारहित छे ? [उ o ] हे गौतम ! तेओ बारमञस्यमी सरे-इस के के अलेइय के ? लेश्यासहित छे, पण लेश्यारहित नथी.

२२. [प्र०] जो तेओ लेक्यासहित छ तो द्धं तेओ सिकाय छे के अिकाय छे ! [उ०] हे गौतम ! तेओ सिकाय छे, पण अिकाय नयी. सक्रिय मनुष्य ते २३. [प्र०] जो तेओ सिक्रिय छे तो ज्ञुं तेज भवमां सिद्ध धाय छे, यावत्—सर्व दुःखनो अंत करे छे ! [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ भवमां सिद्ध थाय के समर्थ नथी. वानव्यंतरो, ज्योतिषिको अने वैमानिको-ए वधा नैरियकोनी पेठे जाणवा. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-

#### एकताळीश्रमा राशियुग्मशतकमां प्रथम उद्देशक समाप्त.

#### बीओ उद्देसी।

१. [प्र०] रासीज्ञम्मतेओयनेरहया णं भंते ! कओ उववज्रंति ? [उ०] एवं खेव उद्देखको भाणियहो । नवरं परिमाणं तिन्नि या सत्त या पकारस वा पन्नरस वा संखेजा वा असंखेजा वा उववज्रंति । संतरं तहेव ।

#### दितीय उद्देशक.

**ट**ी जराबिप्रमाण नैर्विकोनो उन्पाद.

सलेदय मनुष्यनी

सक्रियता-

नहिं ?

१. [प्र०] हे भगवन् ! राशियुग्ममां त्र्योजराशिप्रमाण नैरयिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेठे आ संबंधे उद्देशक कहेबो. विशेष ए के परिमाण—त्रण, सान, अगियार, पंदर, संख्याना के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. सांतर संबंधे तेमज जाणवं.

- २. [प्र॰] ते वं मंते ! जीवा जं समयं तेयोगा तं समयं कडजुम्मा, जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा ! [५०] जो इणहे समहे ।
- ३. [प्र०] जं समयं तेयोया तं समयं वावरज्ञम्मा, जं समयं दावरज्ञम्मा तं समयं तेयोया १ [ड॰] जो इजहे समहे । एवं किल्योगेण वि समं, सेसं तं चेव जाव-वेमाणिया । नवरं उववाओ सहेसिं, जहा वकंतीए । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! क्ति । ध१-२।

#### बीओ उद्देसी समत्ती।

२. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो जे समये त्र्योजराशिप्रमाण छे ते समये कृतयुग्मप्रमाण छे के जे समये कृतयुग्म छे ते समये त्र्योजप्रमाण छे ! [उ ०] हे गीतम ! ए अर्थ समर्थ नथी.

कृतयुग्म भने श्योज राहिनो परस्पर संबन्धः

३. [प्रठ] हैं मगवन्! ते जीवो जे समये त्र्योजराशिप्रमाण छे ते समये द्वापरयुग्मप्रमाण छे अने जे समये द्वापरयुग्मराशि-प्रमाण छे ते समये त्र्योजराशिप्रमाण छे ? [उ०] हे गैतिम! ते अर्थ समर्थ नथी. ए रीते कल्योज राशिनी साथे पण समजबुं. अने बाकी बर्ध वैमानिको सुची तेमज जाणवुं. परन्तु बथाओनो उपपात "न्युत्कांतिपदमां कह्या प्रमाणे जाणवो. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'.

त्र्योज भने द्वापर-युग्मनो परस्पर संगन्धः

#### एकताळीशमा शतकमां द्वितीय उद्देशक समाप्त.

## तईओ उद्देसो।

- १. [प्र॰] रासीज्ञम्मदावरज्ञम्मनेरदया णं भंते ! कओ उववज्जन्ति ? [उ०] एवं चेव उद्देसओ । नवरं परिमाणं दो वा छ वा दस वा संकेजा वा असंकेजा वा उववजंति; संगेहो ।
- २. [प्र॰] ते णं भंते ! जीवा जं समयं वावरज्ञम्मा तं समयं कडज्ञम्मा, तं समयं कडज्ञम्मा तं समयं दावरज्ञम्मा ! [उ॰] णो इणट्टे समट्टे । एवं तेयोएण वि समं, एवं किल्योगेण वि समं । सेसं जहा पढमुद्देसए जाव-वेमाणिया । 'सेबं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।४१-३।

## तईओ उद्देसी समत्ती।

#### तृतीय उद्देशक.

१. [प्रo] हे भगवन् ! राशियुग्ममां द्वापरयुग्मराशिप्रभाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उo] हे गौनम ! पूर्वनी पेठे उदेशक कहेवो. पण परिमाण—के, छ, दस, संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. अने संवेध पण कहेवो.

द्वापरयुग्मराणि प्रमाण नैरयिकोनी उत्पादः

२. [प्रo] हे भगवन् ! ते जीवो जे समये द्वापरयुग्म छे ते समये कृतयुग्म छे, के जे समये कृतयुग्म छे ते समये द्वापरयुग्म छे ! [उo] हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए रीते त्र्योजराशि अने कल्योजराशि साथे पण समजवुं. बाकी बधुं प्रथमोदेशकनी पेठे यावत्— वैमानिको सुधी समजवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

द्वापरयुग्म अने कृत-युग्मनो परस्पर संबन्ध-

## तृतीय उद्देशक समाप्तः

## चउत्थो उद्देसो ।

- १. [प्र०] रासीजुम्मकिओगनेरस्या णं मंते ! कओ उवयज्ञंति ? [उ०] एवं चेव । नवरं परिमाणं-एको वा पंच बा नव वा तेरस वा संखेजा वा असंखेजा उवयज्ञन्ति, संबेही ।
  - २. [प्र॰] ते णं मंते! जीवा जं समयं किलयोगा तं समयं कडजुम्मा, जं समयं कडजुम्मा तं समयं किलयोगा ?

## चतुर्थ उद्देशक.

१. [प्र॰] हे भगवन् ! रात्रियुग्ममां कल्योजप्रमाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ॰] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. परन्तु परिमाण–एक, पांच, नव, तेर, संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. संवेध पूर्वनी पेठे जाणवो.

कस्योज प्रमाण नैरयिकोनो उत्पाद-

२. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो जे समये कल्योजराशिप्रमाण छे ते समये कृतयुग्मराशिप्रमाण छे अने जे समये कृतयुग्मराशि-

कत्योज भने कृतयु-गमनो परस्पर संबन्धः [४०] जो रणहे समहे। एवं तेयोएण वि समं, एवं दावरजुम्मेण वि समं। सेसं अहा परमुद्देसए जाव-वेमाणिया। 'सेवं भंते ! सेवं मंते' ! कि १४१-४।

#### चउत्थो उदेसो समत्तो।

प्रमाण छे ते समये कल्योजराशिप्रमाण छे ! [उ०] हे गौतम ! ए अर्घ समर्थ नथी. ए रीते त्र्योज अने द्वापरयुग्न साथे पण कहेबुं. बाकी बधुं प्रथमोदेशकनी पेठे यावत्—वैमानिको सुची जाणबुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### चतुर्थ उद्देशक समाप्त-

#### पंचमो उहेमो ।

१. [प्र०] कण्डलेस्सरासीज्ञुम्मकडञ्जम्मनेरहया णं मंते ! कथो उववज्रन्ति ? [उ०] उववायो जहा धूमप्यभाष, सेसं जहा पढमुद्देसप । असुरकुमाराणं तहेव, पवं जाव-वाणमंतराणं । मणुस्साण वि जहेव नेरहयाणं 'आयभजसं उवजीवंति । अलेस्सा, अकिरिया, तेणेव मवणाहणेणं सिज्झंति पवं न भाणियदं । सेसं जहा पढमुदेसप । 'सेषं मंते ! सेवं मंते' ! सि । । । । ।

#### पंचमो उद्देसी समची।

## पंचम उद्देशक.

कुणकेस्यानाटा कुत्तवुरम प्रमाण नेर-विकोनो उत्पादः १. [प्र०] हे भगवन् ! राशियुग्ममां कृतयुग्मप्रमाण कृष्णलेश्यावाळा नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] धूमप्रभानी पेठे उपपात जाणवो. बाकी बधुं जेम प्रथमोदेशकमां कह्युं छे तेम कहेवुं. असुरकुमारो संबंधे पण तेमज जाणवुं. ए रीते यावत्—बानव्यंतरो सुधी समजवुं. जेम नैरियकोने कह्युं तेम मनुष्यो संबंधे पण समजवुं. तेओ आत्माना असंयमनो आश्रय करे छे. 'ते लेश्यारहित छे, कियारहित छे अने तेज भवमां सिद्ध थाय छे' एटलुं न कहेवुं. बाकी बधुं प्रथमोदेशकनी पेठे समजवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### पंचम उदेशक समाप्त.

#### छद्दो उद्देसो ।

१. कण्डलेस्सतेयोपिंद्व वि पर्य चेव उद्देसको । 'सेवं अंते ! सेवं अंते' ! सि । ॥ १ – ६।

#### छट्टो उद्देसो समत्तो ।

## छट्टो उद्देशक.

न्दोत्रराशि ममाण कुणकेरवादांका नैर-विकोनो स्ट्रायट. १. कृष्णलेक्यावाळा राशियुग्ममां ऱ्योजयुग्मप्रमाण (नैरियको) संबंधे पण पूर्व प्रमाणे उदेशक कहेबो. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'. ११–६.

#### पष्ट उद्देशक समाप्त.

#### सत्तमो उद्देसो ।

१. कण्डलेस्सव्यवरद्भुम्मेहि एवं चेष उद्देसओ । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! कि ।४१-७।

#### सचमो उद्देशो समचो।

#### सातमो उद्देशक.

१. द्वापरयुग्मप्रमाण कृष्णलेक्याबाळ्य (नैरियिको) संबंधे पण एमज उदेशक कहेबो. दि भगवन् । ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### सातमी उद्देशक समाप्त.

#### अहमो उदेसो।

१. फण्डलेस्सकिनोप्डि वि पवं नेव उद्देसमो । परिमाणं संवेदो य जहा मोहिएस उद्देसपस्छ । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! सि ।४१-८।

#### अद्वमी उद्देसी समत्ती ।

#### आठमो उद्देशक.

रै. कन्योजराशिप्रमाण कृष्णलेश्याबाळा (नैरियको ) संबंधे पण एज रीते उद्देशक कहेवो. परिमाण अने संवैध औषिक उद्देशकर्या कह्या प्रमाणे जाणवा. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

कृष्णकेषयावाळा कृष्णोच प्रमाण नैष् विकोनो जल्पाट-

#### आठमो उद्देशक समाप्त.

#### ९-१२ उद्देसगा ।

अहा कण्डलेस्सेहि एवं नीललेस्सेहि वि बचारि उद्देसगा भाणियद्या निरवसेसा । नवरं नेररयाणं उववाओ अहा बालुयप्पभाष, सेसं तं चेव । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! चि ।४१-१२।

#### ९-१२ उदेसा समता।

#### ९-१२ उदेशको.

जेम कृष्णलेश्याबाळाओं संबंधे जणाव्युं छे तेम नीटलेश्याबाळाओं विषे पण चारे संपूर्ण उदेशकों कहेवा. परन्तु बालुकाप्रमानी पेठे नैरियकोनो उपपात कहेवो. बाकी बधुं तेमज छे. हि भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ४१–१२.

#### ९-१२ उद्देशको समाप्तः

#### १३-१६ उद्देसगा ।

काउलेस्सेहि वि एवं चेव चसारि उद्देसना कायबा। नवरं नेरह्याणं उववाओ जहा रयणप्यमाए, सेसं तं चेव। 'सेबं अंते! सेवं अंते'! सि १४१-१६।

#### १३-१६ उदेसा समचा।

#### १३-१६ उद्देशको.

कापोतलेश्यावाळा संबंधे पण एज रीते चार उदेशको कहेगा. परन्तु नैरियकोनो उपपात रत्नप्रभानी जेम जाणवो, अने बाकी बधुं तेमज समजबुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### १३-१६ उद्देशको समाप्त-

#### १७-२० उद्देसगा।

१. [प्र॰] तेडलेस्सरासीश्वम्मकडलुम्ममसुरकुमारा णं भंते ! कभो उववज्रन्ति ! [ड॰] एवं चेव । नवरं जेसु तेड-लेस्सा मस्यि तेसु भाणियवं । एवं एए वि कण्हलेस्सासरिसा चत्तारि उद्देसगा कायवा । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! चि ।४१–२०।

#### १७-२० उद्देशा समता।

## १७-२० उद्देशको.

१. [प्र०] हे भगवन् ! राशियुग्ममां कृतयुग्मराशिप्रमाण तेजोलेश्यावाळा असुरकुमारो क्यांथीं आवी उत्पन्न याय छे ! [उ०] पूर्वनी पेटे जाणवुं. परन्तु विशेष ए के जेओने तेजोलेश्या होय तेओ संबंधेज कहेवुं. ए रीते आ पण कृष्णलेश्या सरखा चार उदेशको कहेवा. 'हे भगवन् ! ते एमज छे'.

कृतयुग्मराशिश्रमाख तेजोहेदयाबाळा अष्टरकुमारोन्ग्रे उत्पाद-

## १७-२० उद्देशको समाप्त-

#### २१-२४ उद्देसगा।

पवं पम्हलेस्साप वि बत्तारि उद्देसगा कायद्या। पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाण व पर्पास पम्हलेस्सा, सेसाणं नित्थ। 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! त्ति । ४१-२४।

२१-२४ उद्देसा समता।

#### २१-२४ उद्देशको.

ए रीते पद्मलेश्या संबंधे पण चार उदेशको कहेवा. पंचेंद्रिय तिर्यचो, मनुष्यो अने वैमानिकोने पद्मलेश्या होय छे अने बाकीनाओने होती नथी. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### २१-२४ उद्देशको समाप्त.

#### २५-२८ उद्देसगा।

जहा पम्हलेस्साए एवं सुकलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायद्या । नवरं मणुस्साणं गमओ जहा ओहिउद्देसएसु, सेसं तं चेव । एवं एए छसु लेस्सासु चउवीसं उद्देसगा, ओहिया चत्तारि, सबै ते महावीसं उद्देसगा भवंति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति ।४१–२८।

#### २५-२८ उद्देशा समता।

#### २५-२८ उद्देशको.

जैम पद्मलेश्या संबंधे कह्यं एम शुक्कलेश्याने विषे पण चार उद्देशको कहिया. परन्तु मनुष्योने जैम औधिक उद्देशकमां कह्यं छे तेम जाणवुं. अने बाकी बधुं तेमज जाणवुं. ए रिते छ लेश्या संबंधे चार चार उद्देशको अने सामान्य चार उद्देशको—ए बधा मळीने २८ उद्देशको याय छे. 'हे मगबन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### २५-२८ उद्देशको समाप्त.

## २९-५६ उद्देसगा।

- १. [प्र॰] मबसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरहया णं मंते ! कभो उववर्जाति ? [उ॰] जहा ओहिया पढमगा बत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं एए चत्तारि उद्देसगा । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! ति ।४१-३२।
- २. कण्हलेस्समबसिद्धियरासीन्तुम्मकडन्नुम्मनेरस्या णं भंते ! कथो उववर्क्कति ? [उ०] जहा कण्हलेस्साप चत्तारि उद्देसगा मबंति तहा इमे वि भवसिद्धियकण्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा कायद्वा ।४१-३६।
  - ३. पर्व नीळलेस्समवसिद्धिपहि वि चत्तारि उद्देसगा कायद्वा ।४१-४०।
  - ४. एवं काउछेस्सेहि वि बसारि उद्देसगा ।४१-४४।
  - ५. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा ।४१-४८।
  - ६. पम्हळेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ।४१-५२।

#### २९-५६ उद्देशको.

अवसिद्धिक कृतयुग्म प्रमाण नैरिक्कोनी उत्पाद-

- १. [प्र०] है मगवन् । भवसिद्धिक राशियुग्ममां कृतयुग्मराशिप्रमाण नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न भाय छे ! [उ०] जैम पहेला चार औषिक उद्देशको कहा छे तेमज आ संबंधे पण आ चार उद्देशको संपूर्ण कहेवा. 'हे मगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. २९—३२.
- कृष्णकेश्याबाळा अवसिक्षिक कृतकुष्प नेरियकोनो उत्पादः जैम कृष्णलेश्या संबंधे चार उदेशको थाय छे तेम आ भवसिद्धिक कृष्णलेश्यावाळा जीवो संबंधे पण चार उदेशको कहेवा. ३३—३६.
  - ए प्रमाणे नील्लेक्यावाळा भवसिद्धिको संबंधे पण चार उद्देशको कहेवा. ३७–४०.
  - ए प्रमाणे कापोतलेक्याबाळा संबंधे पण चार उदेशको कहेवा. ४१–४४.
  - ५. एम तेजोलेक्यावाळा संबंधे पण औषिक समान चार उद्देशको कहेवा. ४५-४८.
  - ६. ए रीते पद्मलेक्यावाळा संबंधे पण चार उद्देशको कहेवा. ४९-५२.

७. सुकलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा। एवं एए वि मवसिद्धिएहि वि मट्टावीसं उद्देसगा भवंति। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! ति १४१-५६।

#### २९-५६ उद्देसा समता।

७. গুক্ত देशवानाळा संबंधे पण औषिक सरखा चार उद्देशको कहेवा. अने एवी रीते मवसिद्धिको संबंधे अठ्यावीश उद्देशको थाय छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ५३–५६.

## २९-५६ उद्देशको समाप्त.

#### ५७-८४ उद्देसगा ।

- १. [प्र॰] अभवसिद्धियरासीज्ञम्मकडज्जम्मनेरस्या णं भंते ! कथो उववज्जन्ति ! [उ॰] जहा पढमो उद्देसगो । नवरं मणुस्सा नेरस्या य सरिसा भाणियद्वा।सेसं तहेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! ति । एवं चउस्न वि ज्ञम्मेस्न चत्तारि उद्देसगा ।
- २. [प्र०] कण्हलेस्सभमवसिद्धियरासीजुम्मकडज्रुम्मनेरहया णं भंते ! कथो उववर्जीते ? [उ०] एवं चेव चत्तारि उद्देसगा ।
  - ३. एवं नीललेस्सअभवसिज्ञियरासीज्ञम्मकड्जमनेरह्याणं चत्तारि उद्देसगा ।
  - काउलेस्लेहि वि चत्तारि उद्देसगा।
  - ५. तेउछेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा।
  - ६. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा।
- ७. सुक्रलेस्सश्रमवसिद्धिए वि चत्तारि उद्देसगा । एवं एएसु अट्टावीसाए वि अभवसिद्धिएउद्देसएसु मणुस्सा नेरहब-समेणं नेयद्या । 'सेवं अंते ! सेवं अंते' ! ति । एवं एए वि अट्टावीसं उद्देसगा ।४१--८४।

#### ५७-८४ उद्देसा समत्ता।

#### ५७-८४ उद्देशको.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मराशिप्रभाण अभवसिद्धिक नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ०] प्रथम उदेशकमां कहा। प्रमाणे जाणवुं- परन्तु विशेष ए के, मनुष्यो अने नैरियको समान रीते कहेवा, अने बाकी बधुं तेमज जाणवुं- 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे,

अभवसिद्धिक इत-युग्म प्रमाण नेर्**य-**कोनो उत्पाद-

- २. [प्र०] हे भगवन् ! इतयुग्मराशिप्रमाण कृष्णठेश्यावाळा अभवसिद्धिक नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] एम चार उदेशको कहेवा
  - ३. ए रीते नीललेश्याबाळा कृतयुग्मराशिष्रमाण अभवसिद्धिको संबंधे पण चार उदेशको कहेना.
  - एम कापोतलेक्याबाळा संबंधे पण चार उदेशको कहेवा.
  - प. ए रीते तेजोलेश्याबाळा संबंधे पण चार उद्देशको समजवा.
  - ६. पद्मलेश्यावाळा संबंधे पण एज प्रकारे चार उदेशको कहेना.
- ७. शुक्रलेश्यावाळा अभवसिद्धिको संबंधे पण चार उदेशको कहेवा. ए रीते ए अठ्याविशे अभवसिद्धिक उदेशकीमां मनुष्यो नैर-यिकोना समान गमवडे जाणवा. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. ए रीते ए अठ्यावीश उदेशको थया.

## ५७-८४ उद्देशको समाप्त.

#### ८५-११२ उद्देसगा ।

१. [प्र॰] सम्मिरिट्टीरासीजुम्मकडजुम्मनेरहया णं भंते ! कत्रो उववज्रंति ? [उ॰] एवं जहा पढमो उद्देसओ । एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायझा । सेवं भंते ! 'सेवं भंते' ! ति ।

## ८५-११२ उद्देशको.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मप्रमाण सम्यग्दिष्ट नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] जेम प्रथम उदेशक कहाो छे तेम आ उदेशक कहेवो. एम चारे युग्मोमां भवसिद्धिक समान चार उदेशको कहेवा. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'. कृतयुग्म ध्रमाण सम्बग्दृष्टि नेर्यिः कीनो उन्पादः २. [ब्र॰] कण्डलेस्ससम्मिवृद्वीरासीज्ञम्मकडज्जम्मनेरस्या णं मंते ! कथो उथवर्जाते ! [ब्र॰] पर वि कण्डलेस्ससिरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायद्या । एवं सम्मिवृद्वीसु वि भवसिज्ञियसिरसा अट्टावीसं उद्देसगा कायद्या । 'सेवं मंते ! सेवं मंते ! सेवं मंते ! सेवं मंते ! सेवं

#### ८५-११२ उद्देसा समत्ता।

२. [प्र०] हे भगवन् ! कृतयुग्मराशिप्रमाण कृष्णलेश्यावाळा सम्यग्दिष्ट नैरियको क्यांची आवी उत्पन्न थाय छे ? [उ०] ए संबंधे पण कृष्णलेश्यावाळानी जेम चारे उदेशको कहेवा. ए प्रमाणे सम्यग्दिष्टओने विषे पण भवसिद्धिकनी पेठे अठ्यावीश उदेशको करवा. है भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'-एम कहीने यावत्-विहरे छे.

#### ८५-११२ उद्देशको समाप्त

## ११३-१४० उद्देसगा।

१. [प्र०] मिच्छादिद्वीरासीज्ञम्मकडज्ञम्मनेरदया णं भंते ! कओ उववर्क्सति ! [उ०] एवं एत्य वि मिच्छादिद्विस्रीम-स्रावेणं समवसिद्धियसरिसा सहावीसं उद्देसगा कायद्या । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! क्ति ।११३–१४०।

#### ११३-१४० उद्देसा समत्ता।

#### ११३-१४० उद्देशको.

कृतयुग्म प्रमाण मिथ्यादृष्टि नैरचि-कोनो जरपादः १. [प्रo] हे भगवन् ! कृतयुग्मराशिप्रमाण मिध्यादृष्टि नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ o ] अहीं पण मिध्यादृष्टिना अभिलाप—उन्चारणथी अभवसिद्धिकना समान अठ्यावीश उद्देशको कहेवा. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### ११३-१४० उद्देशको समाप्त.

#### १४१-१६८ उद्देसगा ।

१. [प्र॰] कण्डपिक्सयरासीज्ञस्मकडज्ञस्मनेरस्या णं भंते ! कओ उववर्क्सति ! [उ॰] एवं पत्य वि अभवतिज्ञियस-रिसा अट्टावीसं उद्देसगा कायचा । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! सि ।१४१-१६८।

#### १४१-१६८ उद्देशा समत्ता।

#### १४१-१६८ उद्देशको.

कृतयुग्न प्रमाण कृष्ण पाक्षिक नैरमिकोनी जल्पाट- १. [प्र॰] हे भगवन् । कृतयुग्मप्रमाण कृष्णपाक्षिक नैरियको क्यांणी आवी उत्पन्न थाय छे ! [उ॰] अहीं पण अभवसिद्धिकना समान अन्यावीश उदेशको कहेवा. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

#### १४१-१६८ उद्देशको समाप्त.

#### १६९-१९६ उद्देसगा।

र. [४०] सुक्रपिक्वयरासी हुम्मक ड जुम्मनेराया णं भंते ! कथो उववर्जाति ! [४०] एवं पत्य वि भवति द्वियसिरसा बहुाबीसं उद्देसगा भवंति । एवं एए सद्वे वि छक्षउयं उद्देसगसयं भवन्ति रासी जुम्मसयं । जाव–सुक्कलेस्सा सुक्रपिकव-

#### १६९-१९६ उद्देशको.

कृतयुग्म प्रमाण शुक्क पाक्षिक नैरमिकोनो जन्मार- १. [प्र॰] हे भगवन् ! कृतयुग्मप्रमाण शुक्रपाक्षिक नैरियको क्यांथी आवी उत्पन्न याय छे ! [उ॰] अहीं पण मवसिद्धिक सरखा अठ्यावीश उदेशको पाय छे. ए प्रमाणे ए बधा मळीने १९६ उदेशकोनुं राशियुग्मशतक थाय छे. यावत्-[प्र॰] शुक्रलेक्यात्राळ शुक्र- रासीज्ञस्मकित्योगवेमाणिया जाय-जर सिकरिया तेणेव मवग्गद्दणेणं सिल्संति, जाव-अंतं करेंति ? [४०] को रणहे समद्दे । 'सेवं मंते ! सेवं मंते' ! चि ।

मगर्ष गोयमे समर्ण मगर्व महावीरं तिच्छुचो आयाहिण-पयाहिणं करेड, करेचा वंदति नमंतति, वंदिचा नमंसिचा पर्व क्यासी-'एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिखमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पिडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पिडच्छियमेर्यं मंते ! सम्बे णं पसमद्वे, जे णं तुज्हो वदह'ति कहु अपूतिवयणा खलु अरिहंता मंगवंतो, समणं मगवं महाबीरं यंत्रति नमंसति, वंविचा नमंसिचा संजमेणं तवला अप्पाणं भावेमाणे विहरदः। रासीजुम्मसयं समत्तं। सद्वाष मनवर्ष अद्भतीसं सतं १३८ सयाणं, उद्देसगाणं १९२५ । १६९-१९६ ।

खुलसीय(र्ष)सयसहस्सा पदाण पवरवरणाणवंसीहि । भावाभावमणंना पस्रता पत्थमंगीम ॥ तवनियमविणयवेलो जयति सदा नाणविमलविपुलजलो । देतुसतविपुलवेगो संघसमुद्दो गुणविसालो ॥

#### इगचत्तालीसमं सयं समत्तं

#### भगवती समत्ता।

\*णमो गोयमाईणं गणहराणं, णमो मगवर्षय विवाहपन्नत्तीय, णमो दुवालसंगस्स गणिपिङगस्स । कुम्मसुसंठियचलणा अमलियकोरंटवेंटसंकासा । सुयदेवया मगर्वा मम मतितिमिरं पणासेउ ॥

पन्नत्तीए आरमाणं अट्टण्हं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिजन्ति । णवरं खउत्थे सप पहमदिचसे अट्ट, वितियिविवसे दो उद्देसगा उद्दिसिक्जंति । नवमाओ सतामो आरकं जावद्यं जावद्यं पवेद तावतियं तावतियं एगदिवसेणं

पाक्षिक कल्योजराशिप्रमाण वैसानिको यावत्-जो क्रियावाळा छे तो शुं तेओ तेज भवमां सिद्ध थाय छे, यावत्-सर्व दुःखोनो संत करे छे ! [उ०] ए अर्थ समर्थ नथी. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करे छे, प्रदक्षिणा करी वर्ष्ट छे, वांदी नमे छे, नमीने भगवान् गौतम आ प्रमाणे बोल्या—'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते प्रकारेज छे, हे भगवन् ! ए सत्यज छे, हे भगवन् ! ते असंदिग्ध छे, हे भगवन् ! ते मने इच्छित छे, हे भगवन् ! ते मने प्रतीच्छित-स्वीकृत छे, हे भगवन् ! ते डांच्छत अने प्रतीच्छित छे, हे भगवन् ! ते सत्य छे के तमे जे कही छो, 'अरिहंत भगवंतीनी वाणी पनित्र होय छे. 'अपुज्यवयणा' एवो पाठ स्वीकारीए तो अरिहंत भगवंतीनी वाणी अपूर्व होय छे'-एम कही श्रमण भगवंत महावीरने (फरी वार) बांदे छे, नमे छे अने वांदी तथा नमी संयम अने तपपूर्वक आत्माने मावित करता विहरे छे. गशियुग्मरातक समाप्त, सर्व भगवतीना मळीने <sup>†</sup>१३८ उदेशको अने १९२५ शतको थाय छे. १६९-१९६.

उत्तमोत्तम ज्ञानवडे सर्वदर्शी पुरुषोए आ अंगमां चोराशी लाख प्रदो कहा। छे. तेमज अनन्त-अपरिमित भाव-विधि अने भगवर्तानुं परिमाणः निषेधो कहेला छे.

तप, नियम अने विनयरूप बेला-भरतीयाळा, निर्मळ ज्ञानरूप विपुष्ट पाणीयाळा, सेंकडो हेतुरूप महान वेगवाळा अने गुणथी मंघनी स्त्रुतिः विशाल एवा संघसमुद्रनो जय थाय छे.

## एकताळीशमुं शतक समाप्त. श्रीभगवतीसूत्र समाप्त.

\*गौतमादि गणधरोने नमस्कार, भगवती व्याख्याप्रज्ञप्तिने नमस्कार, द्वादवांग गणिपिटकने नमस्कार. काचबानी पेठे सुंदर चरणकमल्याळी, निह चोळायेल कोरंट बृक्षनी कळी समान एवी पूज्य श्रुतदेवी मारा मितअज्ञाननो नाश करो. न्यास्त्याप्रइतिना आदिना आठ शतकना बन्बे उद्देशकोनो एक एक दिवसे उपदेश कराय छे. परन्तु प्रथम दिवसे चोथा शतकना आठ उद्देशको अने बीजे दिवसे वे उदेशको उपदेशाय छे. नत्रमा शतकथी आरंमी जेटलुं जेटलुं जाणी शकाय तेटलुं तेटलुं एक एक दिवसे उप-

<sup>\*</sup> अहींबी आरंभी आगळनो पाट पुस्तकना लेखककृत छे, ते संबंधे टीकाकार जणाने हे के 'णमो गोयमाईण गणहराण' इत्यादयः पुस्तकलेखककृता

<sup>†</sup> शतकनुं परिमाण आ प्रमाणे छे–प्रथमना बत्रीश शतकोमां अवान्तर-पैटा शतको नधी अने तेत्रीशथी ओगणचालीश सुधीना सात शतकोमां नमस्काराः प्रकाटार्थाखेति न व्याक्याताः'। बार बार अवान्तर शतको छे एट**छे ८४ शतको थया. चाळीशमां शतकमां एकवीश अ**वान्तर शतको छे. एकताळीशमां शतकमां अवान्तर शतक नवी, ३२-८४-२१-१-ए सर्व शतको मळीने एकसी आडत्रीश शतको याय छे.

अहीं पदोनी संख्या चौराश्ची लाख कही छे, पण तेनी गणना शी रीते करी छे तेनो कंइपण ख्याल आवी शकतो नथी. ते संबंधे टीकाकार जणाने छे के पदोतुं खद्दप विशिष्ट संप्रदायगम्य छे.

४७ म॰ स**॰** 

उहिसिज्जित, उक्कोसेणं सतं पि धगिद्वसेणं, मिज्जिमेणं दोहि दिवसेहि सतं, जहनेणं तिहि दिवसेहि सतं। एवं जाय-वीसितमं सतं। णवरं गोसालो पगिद्वसेणं उिद्विस्तिजित, जिद ियो पगेण चेव आयंषिलेणं अणुम्बति। अह ण्णं िक्षतो आयंबिलेणं छट्टेणं अणुण्णव्यति। पक्षवीस-वाबीस-तेवीसितमाइं सताइं एकेकदिवसेणं उिद्विस्तिनितः। चउचीसितमं सयं दोहि दिवसेहि छ छ उद्देसगा। पंचवीसितमं दोहि दिवसेहि छ छ उद्देसगा। वंधिसयाइं अट्टस्त्याइं एगेणं दिवसेणं, सेष्टि-स्त्याइं वारस एगेणं, प्रिंगिद्वियमहाज्ञुम्मस्त्याइं वारस प्रेणं, प्रवं वेदियाणं वारस, तेइंदियाणं वारस, चउरिदियाणं वारस प्रेण, असिक्षिपंचिदियाणं वारस, हाभिपंचिदियमहाज्ञुम्मस्ताइं पक्षवीसं प्रविद्वसेणं उिद्विस्त्वानित, रासीज्ञुम्मसतं प्रविद्वसेणं उिद्विस्त्वाति॥

वियसियअरविंदकरा नासियतिमिरा सुयाहिया देवी । मज्यं पि देउ मेहं बुहविबुहणमंसिया णिचं ॥ सुयदेवयाप पणिममो जीप पसापण सिक्खियं नाणं । अण्णं पवयणदेवी संतिकरी तं नमंसामि ॥ सुयदेवया य जक्को कुंभधरो बंभसंति वेरोहा । विज्ञा य अंतहुंडी देउ अविग्धं लिहंतस्स ॥

देशाय छे, उत्कृष्टपणे शतकनो पण एक दिवसे उपदेश कराय छे. मध्यमपणे बे दिवसे शतकनो अने जघन्यपणे त्रण दिवसे शतकनो उपदेश कराय छे. एम वीशमा शतक सुधी जाणबुं. परन्तु पंदरमा गोशालक शतकनो एक दिवसे उपदेश कराय छे. जो बाकी रहे तो तेनो
एक आयंबिल करीने उपदेश कराय छे, छतां बाकी रहे तो बे आयंबिल करीने उपदेश कराय छे. एकवीशमा, बावीशमा अने
तेवीशमा शतकनो एक एक दिवसे उपदेश कराय छे. चोवीशमुं शतक एक एक दिवसे छ छ उद्देशको वडे एम बे दिवसे उपदेशाय छे.
पर्चाशमुं शतक छ छ उद्देशको वडे बे दिवसे उपदेशाय छे. बन्धिशतकादि आठ शतको एक दिवसे, श्रेणिशतादि बार शतको एक दिवसे,
एकेन्द्रियना बार महायुग्मशतको एक दिवसे, एम बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय अने असंज्ञी पंचेन्द्रियना बार बार शतको तथा संज्ञी
पंचेन्द्रियना एकवीश महायुग्मशतको अने राशियुग्मशतको एक एक दिवसे उपदेशाय छे.

जेना हाथमां विकसित कमळ छे, जेणे अङ्गाननो नाश कर्यों छे अने बुध-पंडितो अने विबुध-देवोए जेने हमेशां नमस्कार कर्यो छे एवी श्रुताधिष्ठित देवी मने पण बुद्धि आपो.

अमे श्रुतदेवताने प्रणाम करीए छीए, जेनी कृपाथी ज्ञाननी शिक्षा मळी छे. अने ते सिवाय शान्ति करनार प्रवचनदेवीने पण नमस्त्रार कहं छूं.

श्रुतदेयता, कुंभधर यक्ष, ब्रह्मशान्ति वैरोट्या, विद्या अने अंतहुंडी लेखकने अविध्न आपो.

श्रीव्याख्याप्रज्ञप्तिनाम पंचम अंगनो अनुवाद समाप्त.



# परिशिष्ट १ भगवतीसूत्रमां आवेला पारिभाषिक शन्दो.

## 

<b>1</b> 0	Ão	श =	पृ॰	श =	वृ∙
	अ	<b>अ</b> णचासायणाविणय	च० २७९.	अणंत <b>रवंध</b>	च॰ ११४.
	र द्वि∙ १२३	अणण्ह्य	प्र० २८३.	अणंतरसिद्ध	च⊳ ३२∨.
अर्काय	ik । १५१ हि॰ १५३.	अणण्ह्यफल	प्रव २७९.	अणंतरागम	द्धि• १८३.
शर <b>ा</b> 		धणत्ता	तृ० ३६३.	अ <b>णंतराहार</b>	तृ⊳ ३०३.
<b>अ</b> उअंग	" घ॰ १२१, १२२.	अण <b>दञ</b>	- च <b>० ६</b> .	अणंतराहारय	च• २५२.
<b>अक</b> तिसंचिय 	तृ∘ ३.	भगवटप्पारिद्	ৰাত ইওপ	अणंतरोगाढ	प्राच ५९, च ० २९२.
अ <b>रुम्म</b>	तृ॰ ११५, च० २ <b>६३</b> .	<b>अ</b> णस <b>ण</b>	च०२७६	अणंतरो <b>व</b> गाढ	त्तृ० व्∿िवे.
शकम्बर् <i>षि</i>	तृ १३६, च २८७.	भ्रणाउस	तृ । ५	अणंतरोयव <b>ज्ञ</b> ग	तु॰ ३०३,३४०, च०२९८.
<b>अ</b> कसा <b>इ</b>	तृ० ९५.	क्षणागयद्वा	च० २३८.	अणंतरो <b>ववस्य</b>	च० ३३६.
अकामनिक <b>र</b> ण	ए° ५ %.	अणागारोब उत्त	हि॰ २८२, तृ॰ ७१,	अणंतसंसार	द्धि≂ ३∀.
<del>श</del> किरिय	पृ∘ उ. प्र• <b>३</b> ८४.	1	२०२, च० १६७.	अ <b>तित्य</b>	च० २६१.
<b>अकिरिया</b> - किरियास	च०३०३.	अणागारोवओग	च॰ दे४, ९९.	<b>अ</b> तिवाय	ਰੂ∘ ਵੋ.
<b>अकिरियावादि</b>	त्∘ ५८.	अणागारोवओगनिष्वत्ति	च॰ ५३.	अतिहिसंविभाग	ਰੂ∙ ९₌
<b>अक्</b> रोस	प्र <sup>ु</sup> २००, ३१०.	अणादीयवी ससाबंध	च० ५७.	असकड	च॰ ३९.
<b>अगुरुलहुं अ</b>	प्र• ३१०.	अणाभियोगिअ	द्वि० ९८.	अ <del>तता</del> संवु <b>ड</b>	द्धि ७ ७८.
<b>अगुरुयलहुयगुण</b>	प्र• २३५.	भणाभोग	च० २७४	असागम	द्वि॰ १८३.
अगुरुअलहुअप <b>ज</b> व	हि॰ १९०, १९३, च० ४४.	अणाभोगनिम्बस्तिया वय	त्⊳ १९.	, आधणिटा	द्वि० १५३.
	हि॰ <b>११</b> ०.	<b>छणारे</b> म	_ दि∩ २३६.	<b>शस्थणि</b> उ <b>रंग</b>	"
श्रामिक्सारी	हि॰ १२३.	अणालो <b>इयपडिकं</b> त	द्वि० २०९.	अत्थपडिणीय	तृ० ९ <b>३</b> -
अतिगमाणव		अणाद्दारय	तृष्ट, च०४६,	अत्ययाच्या	प्र• १६८.
<b>अगिमसीह</b>	हि <sub>ण</sub> १२३. — ०.० ३९४		च० २७०.	अत्थिकाय	प्र≖ २२३.
<b>अ</b> रगेयी ,	तृ० १८९, ३१४.	आं <b>ण</b> त्थं <b>य</b>	<b>ভা</b> ∘ ২০४.	अत्थोगगह	तृ० ५९₌
अ <b>चक्</b> युदंसण	प्र० ३०९.	1 _	प्र= ९८.	l l	च० २१३, ३२५.
<del>श्चवखुदं</del> सणी	द्विष २८०,तृ० ३०२.	Λ	प्र∘ २३९.	अद्भक्षवाला	द्वि॰ १८१.
<b>अचरिम</b>	द्वि॰ ३४, २८२, तृ॰ ३०३			अद्धमागहा	प्र- १६८.
	च॰ ४८,५१, २९३.		, १८७, २६०, तु <i>ल देपा</i>	1	तृ० <b>१</b> ३४.
अचित्त	प्र० २७९, च० ६४.	. अणुत्तरविमाण	द्वि० ३१५.	। अद्धाकाल । अद्धासमय	्र प्र⊬३, १०, तृ०३२१,
अचित्ताहार	तृ० ३२४.	अणुभाग	у∘ 9 <b>₹9</b> .	. બહારાનન	३९९, च ० २१६.
<b>अचे</b> यक <b>ड</b>	च • ६.	अणुभागकम्म	प्र∘ ९३२. चित्रक	242	प्रविद्दं, तृष्ट रेप्ट्
अचेल	तृ॰ ९८	अणुभागनामनिह्स	द्विष् ३३९.	अदिण्णादाण	
अबुध	प्र॰ १०८, द्वि॰ ५१	<b>I</b>		अधम्मत्थिकाय	प्रव देवप, देवदे, तृब देवप,
अच्छ	तृ० ३८७.	अणु मान	Я□ ∠٩.	ļ	३२१, च० ५८, ९८, २१६, <b>२३</b> ५. —    -
अजीबदव्यदेस	प्र० ३१०.	अणुमाणइता	च॰ २७४.	अधिकरण	च॰ २. 
धजीवपजन	च० २३६.	अणुष्यय	স্ত ৭০৭.	अधिकरणी	च० २. प्र• २० <b>१</b> .
<del>अ</del> जोगी	चि० २६७.	अणेसणा	प्र• २८२. —	अनागारोवओग	
अञ्चलसाण	तृ० १३३, च∘ १४२		ট্রিভ ৭ <b>९</b> ९.	अनागयद्वा	ኳ∘ ٩६८.
अ <b>ज्ञा</b> वसाणावरणि	ब त्∘ १३०.	अणंतपएसिय	तृष २७०. स. १५३	अनिहारिम	সুত বৃষ্ড,
धार	चा∘ २८९.	अणंतर	प्र¤ १५२. <del>कि</del> - कु∨्ट		द्वि० २१४, २१५, २१६, २१७.
अङ्ग्लाण	ৱি∙ <b>∨°</b> .	अणंतरखेत्तोगाढ	ह्रिण <b>१</b> ४६. 	अनंतरोवव <b>जग</b>	द्वि० १८६. -
<b>अ</b> द्वपण् <b>सि</b> भ	तृ० २६४ च० १०	अणंतरखेदोवन जग	तृ० ३४२. तृ० ३४१.	<b>अनीइ।रिम</b>	चिष्ट २७६.
<b>अट्टमभ</b> त्त	द्वि० ५६.	भणंतरनि <b>रगय</b>	ए° र्°ा. तु० र्°िन्.	<b>अज</b> उत्थिभ	प्र॰ २२३, द्वि॰ १९३, २०८०
<b>अट्टम</b> भत्तिभ	ৰ∘ ••.	<b>अणंतरप<del>जत</del></b>	ए° ४°४. च० २९३.		तृ० ३६, ८१, ११८.
<b>अहुमं</b> अहुम	प्र= २४९, द्वि० २	), अणंतरपजस्य	_	अद्मगिलायय	ৰ৹ ጜ.
अद्वियकप्प	ण- २६२.	अणंतरपरंपरअणुवयः अणंतरपरंपरअनिगगय	· -	अन्नत्यदंडवेरम	
<b>শ্ৰ</b> ম্ভ	द्वि १५३.	अणंतरपरपर्वानगर	_	अज्ञाणलि	तृ∙ ६५.
अडवंग	द्वि० १५१.	· <b>अ</b> णत्यस्यस्य	ura 😼 Yr r		

₹•	पृ•	ग ॰	ā.	चा•	<b>ā-</b>
<b>अन्ना</b> णल <b>दी</b> य	तृ०६८.	<b>अरिइं</b> त	प्र॰ ३०३.		द्वि॰ ११५, १२१.
अजाणियवाइ.	च । ३०३,	अरिहंतचेइअ	द्वि० ५३, ५८.	थसेकेसिपडिवण्णय प्र• १९	•
अन्नाणि	तृ० ६०.	अदहंत	Я° Y.		द्वि॰ १०१.
भग्रस	द्धिः २८६.	अरुवि	प्रव है ०५,	असोचाकेवलि	तृ• १२८.
<b>अपन्</b> क खाँग	प्र०२९०, द्वि०२९८.	अरूविद्वव	प्र०२०१.	असं <b>खे</b> जपएसिअ	द्वि० २७९, तृ० २६९.
<b>अपच</b> क् <b>छाणी</b>	द्वि॰ २९८, तृ॰ ९.	<b>अरूवीअजीवद</b> म्ब	च० २०९.	असंग	द्वि॰ १२०.
<b>अपच</b> क्खाणकिरिया	द्वि० २०३.	अलाभ	तृ० ९८.	<b>अर्च</b> जम	प्र॰ २०४.
अपचक्रखाणणिव्यक्तियाउय	द्वि व २९९.	अह्रियादणबंध	तृ॰ १०२, १०३.	\ <i>'</i>	६, १०८, द्वि० १८०,
<b>अ</b> पच्छिममारणंतियसंलेह्णा	तृ∘ ९.	अलोय	त्∘ २३१.	વ	७९,तृ० १०,च० ७०.
भपजत	द्वि॰ १८६, तृ॰ ६३.	अवलम्ब <b>गसं</b> चिय	च∘ १२¶.	असंजयभवियद्भवेद	प्रव १०९.
<b>अ</b> पडिसेन्य	च० २६३.	अवसदंसण	च= १५.	<b>असंबु</b> ड	त्र॰ ८१, तृ०७, २९,
<b>अ</b> पढम	च• ४८.	अवव	द्वि० १५३.	_	च॰ १६.
<b>अपमत्तरंज</b> म	द्वि॰ ८९.	<b>अववं</b> ग	द्वि <b>॰ १५</b> ३.	असंसारसमावण्णग	प्र॰ ७६.
<b>अ</b> पमत्तर्संजय	द्वि० ८९.	अलेहस	च० २६८,२८६,३०३.	असंसारसमाव <b>ण</b> ग	चि० २२०.
भपमाय	प्र॰ २३६.	अलोय	तृ० २३१.	अस्सायावेयणिज	प्र॰ ८१.
अपरिन	द्वि॰ २८१.	अवद्वियपरिणाम	च॰ २६८.	अहक्खायसं <b>ज</b> य	च॰ १६१.
भपरिग्गह	द्वि॰ २२६.	अवसप्पिणी	द्वि० ३४.	अह्व्यणवेद	प्र• ६३१.
भपाणय	तृ॰ ३८८.	अवाय	तृ∘ ५९, ३७७.	अहातच	च॰ १५.
<b>अपकम्मतरा</b> य	ਰੂ∘ ਵੇ⊀.	अविग्गह	ष्र० १५२.	अहिगरणि	तृ॰ ३.
अप्यकिरिया	च॰ ८६.	अविक्रमहुगति	प्र॰ १७८.	अहिगरणिआ	प्र॰ १९२, तृ० ७९.
<b>अ</b> प्पचनस्राणकिरिया	प्र॰ ९२.	अविभागपलिरखेर्	द्वि० १२१.	अं कवर्डे <b>स</b> य	द्वि॰ १३॰.
<b>अ</b> प्यडिब <b>द्ध्</b> या	च० ३७.	अविरह्अ	¶∘ 6¥.	अंजण	द्वि० १२३.
अप्पिडिह्यवर्नाणदंगणघर	प्र॰ १८.	अविराहिअसंजम	স০ 106.	अंतकड	प्र• २३९.
अप्पृष्टीअ	्तृ॰ १९३, रे४६.	श्रविराहि असंजमार्संजम	प्रव १०८.	अंतकिरिया	प्र= १०८.
<b>अ</b> प्पनि ज् <b>रा</b>	द्वि० २६०.	अवीरिय	प्र॰ १९४.	अंतराइय द्वि	२७६, च० ६६, ३४
अप्पवेदण	द्वि० २५६, २६०.	अविसुद्धलेस्स	तृ∘ ३४०.	अंतो <b>मुहु</b> त्त	प्र॰ ६९.
अप्पवेयणतराय	तृ∘ ३९.	अविमुद्ध <b>ले</b> स्पतराग	प्र <sup>क</sup> ्ष.	- अंतोसक्र <b>मर</b> ण	प्र॰ २३७.
<b>अ</b> प्यसत्यकायवि <b>णय</b>	च॰ २८०.	आवज्ञ इल्स्वतराग अवीचिदव्य	तृः ३५२.	अंब	द्वि॰ १९६.
अफासुअ	द्धि• १९९.	अवीर्यापंथ	ए" ४०० त्∘ १९१.	अवर्षि	द्विण ११६.
अबहिब्लेस	प्रव २४०.	अवेद	रु॰ १३५.	आ	
अबाह)	द्वि॰ २७६	अन्त्रस	च । २०४.	্ ভা <b>হে</b>	द्वि० २८०.
<b>अबाहु</b> णिआ -	द्वि॰ २७६.	अव्वा <b>गह</b>	तृ०३६०च०७५,७६.	आउका <b>र्</b> य	प्र० १५५.
<b>अबुद्ध</b> जागरिआ	तृ० २५५.	अरतीपोसणया असतीपोसणया	तृ॰ ८३.	आउक्खय	प्र• २४६.
<b>अ</b> षोहिआ	प्रः ३०७.	असद् <b>परिण</b> य	हु॰ २२२.	<b>आ</b> उत्त	द्वि० ७८, तृ० २३.
धन्भक्षाण	प्र∘ १६६.	। अस्तिपंचिदियाअप्यजन्तगः । अस्तिपंचिदियाअप्यजन्तगः		<b>आउ</b> य	च० २८९.
<b>अब्स</b> क्सणदाण	স• १९६.	असमिपंथिदियापजलग	च॰ १९८.	आउयबंधय	द्धि ३३१.
श्रविभेत्तरय	चाण २७८.	1		आउयाय	¥° 10°.
भभवसिद्धिय प्र०१६७,द्वि०३४,२७४,द्वि०३८०.		असनि	द्वि॰ २८०, तृ०३०२.	भाउर	ৰ  ২৬४.
=	०२, च०६, च०२८४.	असायाचेत्रणिज्ञ	तृ॰ २०. -	आओवक्रम	च• १२१.
<b>भ</b> भासय	द्वि॰ २८१.	असासग	त्∘ ११, १८ <b>१</b> .	भाकंपइसा	च॰ २७४.
अभिगम	प्र• २०७,तृ० <b>१६</b> ४.	असि 	द्धि ११६. ए- १६७	आग्रन्थः। आगम	ਰੁ∞ ₹¥.
अभिगाद	प्र• १२, द्वि० २६.	असिद्ध असिद्धि	স∘ १६७. Я∘ १६७.	्रागरिस आगरिस	वि० २५७,
अमरवर्	द्धि० <b>१</b> २३.	l e	त्र∘ 145. द्वि∘ 19६.	आगारभावप <b>डो</b> यार	द्वि० ३२५, तृ० २०.
<b>असाइमिच्छादिद्विउवदश्च</b> ग	द्वि० १८६.	असिपत्त असम्बद्धाः	до 114. До <b>1</b> =4,		
अमायिसम्मदिद्विउववश्वग	च॰ १२. E- ०००	अमुक्रकार		आगासस्यकाय तृ० ३२५	, मण्यल, ४०, ४१७. द्विण १८८.
अमिभगइ	द्वि १२३.	1 -	, द्वि॰ २८, <b>२</b> ९, ४८,	आगासपएस आजीविय	ाह्र १८६. तृष्ये ६६, वे९१.
<b>अमि अवाह्</b> ण	द्वि॰ १२३. जिल्लाक	1	, 44, 994, <b>9</b> 29,	आजीवयोवासय आजीवयोवासय	-
भमोह 	द्वि॰ १२॰. 	1	क, २४७, <b>२५९, २२६</b> ,	आजावयावासय   आजीवियोबासिया	तृ॰ ४१. तृ॰ १६७.
अरति अर्जन	ਰੂ∙ ९८.		४, १४८, चे॰ ६०,	आजीवयासम् आजीवियसमय	ए॰ २ <b>५</b> ०. तु॰ ८३.
अरहंत	Я° Ц.		, <b>ባ</b> ባԿ. Я∘ ዓԿ₹.	आजपाणय   आजपाणय	पु॰ च्य. तु० ३०९
भरहा	प्रव २३४, तृव २.	असुर्कुमारावाष	A- 174.	आरगमान्य	<b>%</b> : ₹**

ह्य ०	ã.	<b>स</b> ॰	<b>7</b> 0	र्ग ॰	T.
<b>आ</b> णापाणु	तृ॰ २७१, च॰ २३६.	आहारपञ्चलि	च॰ १५.	उदह्य	च॰ ३२.
आणय-पाणय-आरण-अ <b>यु</b>		आहारय प्र०१५८	, च॰ २७०, तृ॰ ३३२,	उदय	च॰ २११.
<b>आ</b> णा	त्∙ ८३.	٦,	च० ४६.	<b>उदयनि</b> प्प <b>न</b>	च० ३२, २३१.
<b>मादि</b> तियमरण	त्र ३३३, ३१२.	भाहारयमीसय	तृ• १३२.	उदहिकुमार हि	[० १९७, १२३, च० २८.
आपुच्छणा	च ० २७५.	<b>आहारसन्ना</b>	च॰ ३४, ९९.	<b>उद्</b> हिकुमारी	द्वि॰ ११७.
आभिणिबो हियणाण	Я॰ <b>१५१, ऌ॰ ५</b> ९,	आहार्य <b>जो</b> वउस	द्वि० ४९२, च० २८६.	<b>उद्याणंतरपच्छाकड</b>	प्रः १२१.
_	१६०, च० १४, ९९.	आहोहिय प्र॰ १३७, तृ	०२५,तृ०३६५,च०७२.		द्वि० १८७.
आक्षिणिबोद्धियणाणपञ्चव	प्रकृष्ट.	n	Ę	उदीरणाभविय	प्रव १२१.
<b>आभिणिबोह्नियणाणल</b> द्धी		इच्छा (सामाचारी)	च॰ २७५.	उदी रिज्जमाण	ጃ° ¥1.
	द्वि० २८१, ३१२ तृ० ७४.	इत्तरिअ	च० २७६.	उवसंपया	चि० र्७५.
आमिणिबोहियणाणपञ्ज		इत्थिवेद	प्रव २७१.	उप्प <b>त्तिय</b> ।	तृ० २७६ ≈० १४.
आमियोग	द्वि <b>० ९८, १</b> ९५.	इत्थिवेदकरण	चि० ९४.	उपल	द्वि ० १५३.
धाभोगनि <b>व्यक्ति</b> याउय	तृ० ९९.	इत्थी	प्रक २७२, तृ० १८.	उपलंग	द्वि० ५५३.
<b>आयअ</b> जस	च० ३६१.	इरथीपच्छाकड	<b>নু</b> ০ <b>९</b> ५.	उच्चा यगञ्जय	च० २६.
	(० ९७, च० १२१, १८३.	<b>इरिआवहि</b> आ	Я• ጓፃጓ.	उम्माद	सृ० ३४३ -
<b>आ</b> यजस	ચ- ३६૧.	इरिआसमिअ	प्र॰ २३९.	उरगजातिआसीविस	तृ० ५६.
आय <b>न्ध्री</b> य	तृ० <b>१९</b> ३.	इसिपब्सारा	हिं ४८.	<b>उ</b> गद्द	प्रव ५५.
आयत श्रायत	च∘ २०४.	इह्मवियातग	प्र०१०४,	उष्टत	द्विण १८६.
आयतसंठाणकरण आयतसंठाणकरण	ਚ <b>਼ ९</b> ૪.	<b>इह</b> स्रोगपडिणीय	<b>त</b> ∽ ९३.	<b>তৰ্</b> জাশ	प्र• १४३, च॰ २१.
आयपयोग आयपयोग	द्वि० ८७, च०२८३.	<b>इंगालकम्म</b>	त्∘ ८₹.	उद्योगगुण	प्रविद्
		इंद	तृ० १८१, ३१४.	उवओगनिव्यत्ति	च॰ ५३.
आयप्य <b>ोगनिव्यत्ति</b> य	च॰ ३.	इंदिय	च० ३५.	उबओगल५ खण	স্ত ই০৭,
<b>आ</b> यय	चार्य २०७.	इंदियलदी	ત્7ુ∾ <b>६६</b> , પા∘.	उबओगाया	त्० २९४.
आयरियपिंडणीय	तृ∘ ५३, १८३. ि च	इंदियजवणिज	च॰ ७५.	। उथक्रमिआ	प्र• १३२-
आयरीय - उत्रज्ञाय	द्विण <b>२</b> ९०.	<b>इं</b> दियपटिमेलीणया	चि० २७७.	उपगरणदृष्टी मोयरि	
आयसरीरखेतोगाढ	द्वि० ३४६.	Ì	ş	उवज्झायपाडिणीय	तृ∘ ९३, १८३.
आयाणभंडभत्तनिकखेव		देवियावदिया दि० ७	८, तृष् <b>१,५,२</b> ३, न० उद	, उवभोगपरिभोगपरि	
आयार	च∘ २१४.	देशियावहियवं <b>ध</b> य	द्वि० २७४.	) उवासय	द्वि० ३२२.
<b>आयाहिकरणी</b>	च० ३.	इंरियावहियावंघ	तृ० ९४.	<b>उवरिमगेविज्ञ</b> य	प्रव नेव्ट.
<b>आयाहिणपयाहिण</b>	प्र″३३.	<b>इंरियासमि</b> अ	द्वि० ७८.	বৰৰাহ্য	च० २७७.
<b>भा</b> यं <b>वि</b> रु	ह्यि २१.		द्वि॰ २३, २७, १२९, १३	, . उद्यवाय	<b>д</b> о 9 о <b>0</b> ,
<i>जारा</i> ह्अ	प्र <b>०११</b> ४.	\ \	े हर् १८६, ३५३.	। उनवायावरहकाल	प्र• २२२.
भाराहणा प्र	ro ४३, द्वि० ९३, तृ० १९८	। स्थाणकप्प	हिं॰ २१, २९.	उदबायसभा प्र	<sub>॰</sub> २९९, ट्रि॰ १७, २९, च० ५३.
आराह्य	द्वि॰ ३४, २८, तृ० ८५	. इंसाणबर्डे(डिं)सय	द्वि०२३, २९, च०३	५. उवसमिअ	चिव २७३ चिव १२.
<b>कारं</b> भ	हि॰ ७६.	इसिप्पब्भारा	च० ३४.	उदसामग	च० र७३₋
आरंभिया	द्वि• २०६.	<b>इंसी</b> पल्भारा	प्रव ३१३, द्विः ३२५	्र उवसंतकसाञ	দ্ৰুত পুৰ্ত .
<b>था</b> लसिय <b>त्त</b>	द्वि० २६०.	RET	तृः ५९, २७७.	उबसंतकसाइ	तृ∘ ९३६.
आलोइयपडिकंत द्वि	० १७, २१, ९३, ५८, २०	९   <b>६</b> हा-अवाय	च • <b>१</b> ४.	<b>उवसंतमोह</b>	द्वि० १८७.
आलावणबंध	तृ० १०२.	-, · · ·	- ਰ	उवसंत वेद	<b>ह∘ १३६.</b> च ६≅
आलोयणया	च० ३७.	उक्तिहा	ह्यि॰ २८, ५८.	उवहि	च ६४.
<b>आ</b> लोयणादोस	च० २७४.	उद्धुद्धयासणिय -	च॰ २७७.	उवहीपश्रक्लाण	चिव दे७.
	ा० २७४, २७५, ३७८.	उग्गह	प्रव १४, तृव ५९, १	७७, उन्बह	प्र <sup>त</sup> १७६.
<b>धावकद्वि</b> अ	च• ३७६.	24-16	च० ५, ९९, ३४.	उासण	तृ• १९९. — १.
भावस	द्वि० १२३.	उरग	च॰ १९८.	उसिणपरिसह	तृ० ९८.
आवति	ৰ্০ ২৬४,	उच्यकंध	तृ० १०३.	उस्सप्यिणी प्र॰	२२७, द्वि॰ ५२, ११५, २४८,
	० ३०४, द्वि० ३२९, २२०	1	चि॰ २१३, ३२५.		३२३, च॰ ११६.
जीनाल्या य	१४८, च० २३६.	' उन्नुआयता उन्नोभ	द्वि० २४६.		<b>ऊ</b>
A	च० रूप्प.		च	ऊसास	द्वि॰ ३२१
<b>आव</b> स्सिया	度。 334.	वहाण उत्तरगुणपचक्साण		<b>ऊ</b> द्यासनीसास	द्वि० ३२९.
क्षावी <b>चियम</b> रण 		उत्तर्युणपचनकाण उत्तर्युणपचनकाण	=	1	प
आसष	Яв <b>२५</b> ७, — <del></del>		_	एगओ(यओ)स	
आहाकस्म	प्रव २१० द्विष्ट २०६	. उत्तरपग(य)।डबय उत्तरवेडिवय	द्वि० २८.	एगओ(यओ)वं	का च॰२१३.
आहारगस <b>मु</b> ग्घाय	च० २५५.	। यत्तरवश्चन	18A - 1-7	-	

'ছা॰	<b>T</b> °	श ॰	<u>ā</u> .	<b>য</b> ়	ā.
एगगुणक्रक्श्वड	ጃ። ላላ.	कप्पोदवस्तिआ	স্ত গুৰুত্ত	कायजोगचलणा	च• १६.
एगपुणकालय	द्वि० २२०,च० २२३.	कम्म	प्र०४, द्वि० २००, २२५,	कायओगनिव्यक्ति	च॰ ९३.
एगपएसोगाड	द्वि , २१९, २२१ च० २२२.		च॰ ९९.	कायजोगि प्र॰ १५	१, तृ॰ ३०१, च॰ ८१.
एगंतदंड	ਰ∙ ∨.	कम्मआसीविस	तृ० ५६, ५७.	<b>फायप</b> िसंत्रीणया	च• २७८.
एगंतपंडिश	সু৽ १८९ নূ৹ ড.	कम्भकडा	ጃ• የሀሃ.	कायप्ययोग	द्वि॰ २७३.
एगंतवास	तृ॰ ७, ११, च॰ ३३, ७१.	कम्मकर्ण	द्वि≖ २५८.	कायगोगि	ጃ• የሣላ.
एगिंदिभदेख	স• <b>३</b> ৭০.	कम्मग	प्र०२०२.	कायविणय	च॰ २७८.
एगिदियपदेख	प्र० ११०.	कम्मगसरीरकरण	च० ९३.	कायसमनाहरणया	च० ३७.
एयणा	च॰ ३५.	कम्मद्विति	तृ० २७६.	<b>फायसमिभ</b>	प्र• २३९.
्र एसणा	प्र० २८२.	<b>इ.</b> म्सण	प्र०२०२.	<b>कायसुप्पणिहाण</b>	च० ६५.
<b>एसणासमि</b> क्ष	ञ∗ २३९.	कम्मला	प्र॰ ५५.	দাল স	<b>१३, हि॰ १२३, १२६.</b>
एसणिज	प <b>ः</b> २९०.	कम्मद्ध्यवग्गण।	<b>ጃ</b> ∘ ५४.	काल <b>करण</b>	च॰ ९३.
•	ओ	कम्मनिष्यत्ति	च∘ ९१.	कालतुह्यया	तृ० ३५५.
ओगाह्णाठाणाउय	द्धि० २२२.	कम्मनिसेअ	द्वि०२०६.	कालपरमाणु	च० ११२.
आगाह्णाठाणाउय ओगाह्णानामनिध	_ '	कम्मपगडी !	प्र० १३१, द्वि० १७३, २७५.	काळेयणा	चि० हे५.
आगाह्यानामाचन ओरगह	प्राप्त । इ.च. १७८.		तृ०९७, च०७.	<b>काललोय</b>	तृ० २५८. -
आरगह ओद <b>इ</b> य	त्र° २७८. च० २३९.	कम्मप्पइद्विय	प्र∘ १७९.	कालवाल -	द्वि० १२२.
आद <b>इ</b> थ <b>ओमोद्</b> रिया	च॰ २५५. च० २ <b>७</b> ६.	कम्मभूमि	च॰ १९६, २६३.	<b>कालातिक</b> त	<b>ਰ</b> ∘ ५.
आगादार्या ओराल	तृ॰ <b>३३२.</b>	कम्भय	तृ॰ १९०,३३२, च० ३.	<b>फालादेस</b>	द्वि॰ २३३, २८६.
भाराल भोरालिय	प्र ४४२. प्र• ११५ तृ० १९०, च० ३.	कम्मसरीरचलणा	चि० ३६.	के <b>चर</b>	प्र॰ २७७, द्वि॰ १२३.
	रेयट्ट तृ∘ २७१.	कम्मविउसग्ग	च० २८२.	कि विवसिया	प्र <b>०११०.</b>
ओरालियमी <b>स</b> य	तृ∘ ३३२.	कम्ममंगहिअ	<b>ያ</b> 0 ዓህ0.	किमाहार	নু∘ ३५२. ———
	द्वि० २६० च० ३,४,९९.	कम्मापोग्गलपरियह	तृ० २∨९.	किंपुरिस	<b>प्र∘२७७.</b>
ओरास्टियस <b>री</b> रकर	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	कम्भिया	प्र० २८०, तृ० २७६.	किरिया प्र०९७	4, हि॰ ७३, ७५, ७६, —
ओराहियसरीरचल		कम्मोबचय	द्वि० २७३, २७४.		च॰ ९, ३०. E
ओसप्विणी -	प्र• २ <b>२</b> ७, द्वि• १५५, २४८,	कायकिलेस	च॰ २७७.	अजीवपाओसिधा	ট্রি <b>॰ ৬</b> ∀.
	. ३, तृ० २०, च० ११६, २३८ <i>.</i>	करण	प्रव २३९.	अणुवरयकायकिरिया	ব্লি∘ ৬४. ব্লি∘ ৬४.
ओ <b>हारिणी</b>	प्र= २९१.	<b>धरणसम्ब</b>	च॰ १७.	अहिगरणिक्षा अंतकिरिक्षा	द्धि ७६. द्वि ७६.
•	त्र २२). १० १५२ द्वि० ५७, च० २७.	कहाणफडविवागसंज्	!स तृ∘ <b>३</b> ८.	जतकारजा <b>काइ</b> आ	ाह्रण ७६. द्विण ७४, २७६₋
आ <b>ह</b> ओ <b>हिअचाणि</b>	ह• <b>३</b> ०३.	क्रिओग	चि० ५९, २१५, ३११	जीवपाओसिआ	द्वि० ७४.
आह् <b>जमा</b> ः ओहिणाणि	पूर्व २८१. द्वि० २८१.	कलियोगकडजुम्म	च० १३८.	दुप्पउत्तकायकिरिया	
आहुगाप ओ <b>हिदंसणप</b> ज्जव	प्र <sub>थ</sub> २०१,	कलियोगकलिओग	,,	निव्वत्तणाहिगरण <b>कि</b> रि	
आहिदंसणि ओहिदंसणि	प्राप्ताः द्विष् २८०,तृ० ३०२.	कलियोगतेओगे	च• <b>३३८</b> .	सदृःयपाणाइवायकिरिय	• •
आहिपसान ओहिनाणप <b>ज्जव</b>	प्रकर्णकार्यः प्रकृतिकार	कलियोगदावरजुम्म	1)	परहत्थपाणाइवायकिरि	
ओहिनाणल <b>हि</b>	नर रुः। द्वि० १०१, १० <b>२</b> .	कसायकरण	च०९४.	परहत्थपारिआवणिया	द्वि० ७४.
ओ <b>हिमरण</b>	तृ० ३३२, ३३३.	कसाय <b>कुसी</b> ल	चि २४१.	सहत्थपारि आवणिया	J)
-1114-17-1	क क	कसायनिव्वत्ति	च०९१.	<b>पाओसि</b> भा	द्वि॰ ७४.
	-	कसायपद्यक्ताण	च∘ ३७.	पाणाइवायकिरिया	द्वि॰ ७४, २०६.
ककसवेयणिज	तृ० <b>१</b> ९, <b>३</b> १२.	कसायपिडसंसीणया		पारिआवणिआ	द्वि० ७४.
<b>क</b> डजुम्म	चि० ५९.	कसायविजसग्ग	च० २८३.	संयोजणाहि गरणकि रिय	•
कडजुम्मकडजुम्म कडजुम्मतेओग	• •	कसायसमुग्घाय प्र॰	२६१, च० ८२, च० २५९.	किरीया <b>वादि</b>	च॰ ३०२,
कडजुम्मत्रजाग क <b>ड</b> जुम्मदावरजुम	य॰ ३३८.	<b>क</b> सायाया	तृ० २९४.	<b>किंजोणि</b> अ	तृ० ३५२.
क <b>र</b> जुम्मदलियोग	•	काइया !	प॰ १९२, तृ॰ ७९, च॰ <b>३</b> ०.	<b>कि</b> ंठितिय	तृ∘ ३५३.
_	••	काउलेस्स :	प्र० १०२, १५१, द्वि० ९०,	किपरिणाम	नृ∘ <b>१</b> ५२.
कण्हपक्कीय	च० १८६, ३०३, तृ० ३०१.	]	तृ० ३०९, च० ५४.	किंपुरिस	द्वि॰ १२३.
कण्हराइ	द्धिः ३०७.	काम	तृ ० २३.	<b>कीयगढ</b>	द्वि• २०९.
कण्हलेस (स्स)	प्रव ७८, १०२, २०१, द्विक	कामकंखिय	प्र• १८३.	कुत्तियावण	तृ० १७३.
	९०, तृ० ७१, २७७,	कामपिवासिअ	प्र• १८३.	कुलगर	हिं १९५.
-000	च॰ ३४, ९९, २८६.	कामी	त्∘ २४.	<b>कुलपरिणीय</b>	तृ∘ ५३.
<b>क</b> तिकिरिय	च॰ ३१.	कायकरण	द्वि० २५८.	कुसील	च ० २४० <u>.</u>
कतिसंचिय	च॰ १२ <b>१</b> , १२२.	कायगुत्त	प्र॰ २३९.	क्डागारदिष्टंत	₹° ५٩.
<b>कप्पात्तीतगवेमाणि</b>	य तृ०४३.	कायजोय	प्र०१५१, च०३.	केवलणाण	<b>স∙ १५</b> 5.

<del>प</del> ॰	ā.	घ०	पृ• ।	য় ০	g.
<b>केव</b> लणाणी	द्वि० २८१.	स्रेस।वीचियमरण	तृ॰ ३३२.	- चरण	
केवलणाणपञ्चव	प्रव ३०४.	संध	प्र <sup>०</sup> २१५, तृ० ३४७.	चरण <b>चर</b> म	प्र∘ २३९. >>०
<b>केवलद</b> ंसणय <b>ञ्</b> व	प्र= ३०९.	संघदेश	प्रव ३१०.	परम चरित्तप <b>डि</b> णीय	त्≖ १३९.
केवलदंसणी	द्विव २८०.	संधपएस	प्र• ३१०.	चरित्तमोह चरित्तमोह	तृ॰ <b>९३</b> .
<b>के</b> बळिप <b>ल्ल</b>	प्र• २३७.			चरित्तमोहणीज	प्र• ६५. क्षेत्र
केवलिसमुग्याय	प्र• १६१, च० २५९.		Π	चारतमाह्याम चरित्तलङ्की	द्विः १७२ तृः ९७.
केबलि	द्वि॰ १७०,१८८,३४७,	गणपडिणीय	तृ॰ ९३.	चरित्तलक्षा चरित्तलद्धीय	द्वि॰ ६६.
-	तृष्येष, च० ५२.	गणहरू	ਸ∘ <b>१</b> ४.	चारताळ्डाय चरित्तविणय	त्∙ ६८.
<b>केव</b> ही उवासण	हि॰ १८३,तृ॰ १२८.	गतिपरिणास	তু∘ ३.	चरित्तसंपन	चित्र <b>२७८.</b>
केवलीउवासिया	द्वि॰ १८३,तृ॰ १२८.	गतिनामनिह्साउय गब्भवकृतिय	द्वि ३३१.	चरित्तसंप <b>न</b> या	¤° <b>१७</b> ८. च॰ <b>१</b> ७
केवली सावय	क्षि १८३,तृ• १२८,	<u> </u>	নৃ∘ ধ≹়	चरिताचरित्त	प्रण ८५.
केवलीसाविया	द्वि० १८३,तृ० १२८.	गहअलहुअपख्य	प्र॰ २३५.	<b>चरित्ताचरित्तलदी</b>	तृ० ६६.
केसरिआ	प्रकार्त्य, पृष्या <b>रह.</b> प्रकारहरू.	गहयस् गरुल	तृ॰ २५८.	चरिसाचरिसतद्वीय	तृ∘ ६९.
केसवाणिक केसवाणिक	न• ५६५. तु• ८३ॅं.	गरेल गिद्धपट्ट	प्रव २५७.	चरित्ताया	तृ । <b>१९४</b> .
कोरव्य		गिलाणप <b>कि</b> णीय	प्र° २३७ तु॰ <b>२</b> .	चरित्ताहारणा	तृष <b>१</b> ५८.
	च <b>० ११८.</b>	गिलाण <b>मरा</b>	ए॰ ५. द्वि० २०९.	1	१४, २८३ है॰ ३०३, च <b>॰</b>
को(ऌ)वाल 	द्वि० १२२.	- गीअ <b>ज</b> स	ह्मि॰ १२३.	नारम हिं	२०, २०५ ए० २०२, ५० ८८, ३९३ च० ४८, ५१.
कोसल	तृ॰ ३८७.	गीअर्इ	ाद्व १९२. द्वि० १२३.	चरिमकम्म -	द्विण १८४.
कोहकसाह	तृ० ३०३.	गुण		् चरिमणिजरा   चरिमणिजरा	द्वि» १८४.
कोहवसट	तृ० २६०.	्राणर् <b>ग</b> णसंबच्छा	तृ∞ ८९. हा- २५-४	चलणा	प्रकार चें⊓ ३६,
कोहविवेग	तृ० <b>१</b> ९,३९,२७६.	पुरुष्य अस्य देश प्रशास	Я• २५८. П• እን።	चंबला	चिं देष• र्िदेट.
	<b>च≖ ३४</b> , ३७.	गुराबंभयारि गुराबंभयारि	प्र• <b>वेदे</b> द.	1	
<b>को</b> होवउ <b>ल</b>	ጃ፣ ባሄሄ.	गुतिबन्धार गुतिबिय	प्र• <b>२३९</b> दि० ७८.	चाउज्ञाम	प्रध्ये विष्युक्ति स्थल स्थल
कंखपओस	प्र०८, रे३२.	1	प्र• <b>२३</b> ९.		<b>994,</b> 240.
<b>फंलामोहणि</b> ज	प्र॰ ११३.	गुरुयळहुअ   गंधकरण	प्रवास	चारण	च॰ ११८.
कंतारभत्त	ह्रि० २०९.	गंधपज्जव - गंधपज्जव	च° ९४.	चारित्तपज्जव चित्त	प्र <b>० २३६.</b>
<b>इंद</b> प्प	द्वि० १९५.	गंध <b>ः</b> व	प्र° द्रुं∪्. उ- ४३	L _	द्वि॰ १२३, च॰ ५१. वि
कुंभ	द्वि० ११६.	_	्रु∘ ४३. —	चित्तप्रक्ष विज्ञानीय	द्वि० १२२. ज- ॥-
	ख	1	घ	चितासुविण चुलसीतिसमज्जिअ	चि० ९५. च० ९२५.
सद्भ	च० २७३.	धणवाय	प्र॰ १६८, च॰ ४२.	चुअवर्डेस्य	पुरुष् द्वि∾ १९०.
जरू <sup>ज</sup> खओवसम	Я» <b>1</b> २४.	घणवायवलय	च॰ ४२.	<b>जू</b> तिअ	हि॰ १५३.
खओ <b>र</b> समिभ	प्र- १२७ च०२०1.	घणोदहि	प्र॰ १६८.	चूलिअंग	द्वि० १५३.
खमा	च∘ ३७.	घाइ	प्र• १२४. — •	चेयकड	की ० <b>६</b> .
खमापणया	च० १७.	यो रतवस्सि	प्र= हेर्रे.	चोत्तीसहमं चोत्तीसहम	प्रव २४१.
खनग	यण २७३. सण्ये	धोरबंभचेरवासि 	प्रविदेश	चोदसपुन्दि	प्र॰ ३३, द्वि॰ ११०.
खन्तर <b>ख</b> न्तर	নু- <b>১৭.</b> দ্লি∾ <b>१९</b> ६.	घोस	द्वि० १२३.	चंडा	द्वि• २८, १२७.
जरतर <b>जह</b> यर	.≝ੂ 114. ਰੂ∘ ¥ੀ.		<b>च</b>	चंपयव <b>डें</b> सय	द्धि ११०.
सद्भर स्रित्तेयण	पुट <b>वर.</b> च० <b>१</b> ५₀	चउक्किरिय	तृ० ८७.	111041	
खीगक् <b>सा</b> इ	न- <b>१</b> । तु॰ ११६-	चउट्टाणविष्ठअ	Я፣ ९८.	l	<b></b>
जागक्रवाह <b>जी</b> ग <b>मोह</b>	यु- १९५. द्वि∘ १८७.	चउत्थभस	प्र॰ ६८, च॰ ९०	छ उमस्य	प्रवाहत है । १६५, १७२,
स्राणनार्षः स्त्रीणवेद	त्रु॰ १३६. तु॰ १३६.	चउत्थंचउत्थ	प्र= २४१.		१९३, तृ० २७ ५८, २५,
	ए॰ १९९० च॰ ३१९.	वउनाणोवगअ	प्र• ३३.		३६५ च० ७२
<b>बु</b> ङ्गाजुम्म		चउपएसिअ द्वि०२१	४, तृ० २६२, च० ३०२.	<b>छउ</b> मस्थकालिय	हि०५६, च०१७.
<b>ब्ह्याग्यस्य</b>	प्र• ३११.	चउरंस	चै०२०४,२०७,२०९.	छक्समज्जि अ	च <b>० १</b> २२.
<b>खुा</b> गतेओगनेरइय	प्र॰ ३११.	चर्डारेदिय	प्र००३, च० १९८.	छकोडी	<b>प्र• २९८.</b>
खुनुगक्षिओमनेरह्य	प्र०३११.	चउबीसइमंचउवीसइम	प्र∘ २४¶.	<b>छह</b> भत्त	স্ত <b>৩</b> ४, বিভ <b>१</b> ০.
<b>खुगगदावर्</b> खुम्मने <b>रह्</b> य	प्र॰ ३११.	चक	प्र॰ २४, द्वि॰ ११९.	<b>छ</b> डंछट्ठ	प्र॰ २४१, द्वि॰ १७,
<del>बेत्त</del> ट्टाणाउय	द्वि० २२२.	<b>चक्</b> वाल	च॰ २१३, ३२५.	_	२६, ५६, च० ९.
बेत्ततुष्रय	夏 <b>•</b> 국식식.	<b>च</b> विस्त्रदियवसष्ट	तु <b>० २६</b> ०.	छप्पएसिअ	तृ० २६३ च० १०५.
केताविषंत	तृ• ५.	चक्युर्दसण	च॰ ३४, ५९.	छष	च॰ २७४.
बेत्तादेश	द्विष्यहरू.	चक्खुदंसणी	द्वि० २८०, तृ० ३०२.	<b>छाउम</b> रिषअसमुग्धाय	प्र• २६१.
बेत्तपरमाणु	<b>₹• 99</b> ₹.	चतुकिरिय	<b>ሃ</b> ∘ <b>1</b> 99.	<b>बुहापरिसह</b>	तृ॰ ९८.
केत्तलोय	सु० २२८.	विसर द्वि <b>०३</b> ,५	, ४७, १०६ १२७, १२२.	ं छेओवद्वावणासंजय	च० २६९.
l .					

श ०	ā.	<b>য়</b> ৽	ā.	स-	<b>प्र</b> •
<b>छेदारिह</b>	ক∘ ২ড€.	ण		तिकिरिय	प्र॰ १९१, स्०८७.
छेवट्ट	স্ত	णउअ	हि॰ १५३.	तिस्थ	प्र०१४, च० २६३.
<b>छंदणा</b>	च० २७५.	णउअंग	हि॰ १५३.	तित्थगर	प्र∘ १८.
	<b>.</b>	ण <b>क्स</b> त	हि॰ ११०.		198, 299, 290, 296,
<b>जह</b> णा	 द्वि० २८,	णयंतर	प्र॰ १२५.	,	तृ०२६२च०१०१.
जसा	च ७५.	णरक्ष	प्र॰ ३३.	तिरिक्खअसिकाउध	я» <b>1</b> 99.
	२४, १३०, <b>१</b> ०९, ११५.	णागकुमार	স্ত তথ্য	तिरिक्खजोणियद्ववित	च० ३६.
जमकाइय	हि॰ ११५.	णाण प्र०७९,द्वि	, १७०, सृ० ५९, ७४.	तिरिक्खजोणियपवेसण	व्॰ १५५.
जमा	तुः १८९.	णाण <b>दंसणधर</b>	সি° ৭३७.	तिरिक् <b>खजोणिया</b> ज्य	স <b>ু १</b> ९१.
जयणावर्णिज	₹° १३°.	णाणनिव्य <b>त्ति</b>	च० ९२.	तिरिक् <b>खसंसारसंचि</b> द्वणव	त्र <b>स्थान्य प्रकार</b>
जरा	च <b>.</b> ५.	णाणपञ्जव	प्रव २३६.	तिरियभवत्थ	त्∘ ६४.
जल	द्धि- १२३.	<b>णाणल</b> द्धि	तृ० ६५.	तिरिया <b>उ</b> य	ጃ© 55, <b>11</b> 9.
जलकंत	द्वि० १२३.	<b>णाणसेपञ्च</b> या	च० १७.	तिस <b>इमं</b> तिस <b>इम</b>	प्र∘ २४१.
जलपभ	द्वि० १२३.	णाणावरणिज	द्वित २७६, २८०.	तीतदा	चा॰ २३८.
जलस्अ	द्वि० १२३.	णाणी	ৰ০ ४७.	तुरिअगड्	द्धि∾ ¶२३.
जवणिज्ञ	≅০৬৸,	णिओद	चि० २३९.	तुरिया	द्वि० २८.
जारगोयनिह <del>त्त</del>	द्वि॰ ३३१.	णिकायण	Я• ५४.	ते इंदिय	प्र०७३ च० १९८.
जाहगोयनिहृत्ताउग	हि॰ ३३५.	<b>णिका</b> इंति	Я፣ ५४,	तेउ	प्र०७७, द्वि० १२३.
जाइनामनिउस	द्धि॰ ३३१.	<b>णिका</b> थिंसु	प्र० ५४.	तेउअ	प्र॰ २६२,
जाइनामगोयनिवस	द्धि ३३१.	णिकाये <b>स्</b> पंति	त्र० ५४.	तेउकंत	द्विष् १२३.
जाइनामगोयनिउत्ताखय	द्वि० ३३१.	णिजरा	तृ॰ १३	तेउपभ	द्वि० १२३.
जागर	च- १६.	णिजरंति	<b>Я∘ Ч</b> ¥.	तेउयाञ्च	प्रव देव्य.
जाग <b>रियसा</b>	तृ० <b>२५९</b> .	णियंठ	वाव २४०.	तेउलेस(स्स)	तृ० ३९, च० ४२,
जातिआ <b>सी</b> विरा	त्रु० ५६.	णिह्सण	Я॰ ५४.		प्रच पट, द्विच ९७.
जायणा	पू- १९. तृ• ९८.	णिह <del>ातिंस</del> ु	Я० ५४.	तेउलेस्सा	प्रव १०२ चे व २९०.
जायम्बवर्डेसय	<sup>१८ -</sup> १३१	णिह <del>रें।स्वं</del> ति	प्र०५४.	तेउ <b>सीह</b>	द्धि• १२३.
जाया-व्यवस्य जाया	द्विव १२७.	णेरइयसंसारसंचि <b>ट्ठणका</b> ळ	प्रविषय, ५३.	तेओग <del>कडजुम्म</del>	च० ३३८.
जाय। जीय	ाड्ड १२०. लु <b>० ९४</b> .	ण <b>रइ</b> याउ <b>अ</b>	प्र० १८९.	तेओगक्रिओय	33 33
	४, द्वि० ३४४, च० ३४.	त		तेओग <b>दावर तु</b> म्म	<b>11</b> 71
		तणुवाञ प्र०१६०	नृ० २७७, च० ४२.	तेओगतेओग	)) is
जीवस्थिकाय	সংখ্যুত, নৃত্যুণ্ণ,	तणुवायवलय	च∘ ४२.	तेयाकम्मत्ता	۶۰ <sup>۱</sup> ۷۰.
-0	च० १८, २३६.	तिस्वाज्ञावसाण	प्रव १८३,	तेअय	Я፡ 9४%.
जीव <b>दव्य</b>	चि <b>० २०</b> ९. — ०२	तदुभयक्ड	चाव देष.	तेय <del>छेस्</del> मा	प्र• ३३, तृ० ३६४.
जीवनिव्यक्ति जीवपद्मव	चि <b>० ९३.</b> 	तदुभयारिह	चि० २८५.	तेयापोरगलपरियद्व	तृ० २७९.
<sub>जावपञ्चन</sub> जीवपयोगवंध	चि० २३५. च० <b>१</b> ९४.	तदुभयप्पयोगनिव्यत्तिय	चं∘ ३.	तेयोय	च॰ ३१९.
जावस्यागमध जीवाया	च॰ १४,	तदुभयाहिकरणी	च०३.	नंस	चा० २०७, २०५.
		तपिक्खयउवासग	द्वि० १८३.	तहकार	च॰ २७५.
जुगंतरपस्रोयणा ——	प्र॰ २८१.	तपक्खिडवासिया	द्वि• १८३.		<b>u</b>
जुम्मा ->	च= २९५. <del>-</del>	तपिक्सयसावग	द्वि० १८३.	थणियकुमार	प्रव्यंत्रक, द्विव्यंत्र,
जोइस	द्वि० २२७, <b>२४</b> ७.	तपिक्खयसाविगा	द्वि० १८३.	_	१७, १२३, २२६.
जोइसिय प्र०५६	, द्वि० १४, ९०, ३५२,	तमतमा	डि॰ ३१५.	थणियकुमारी	हि॰ ११७.
<del></del>	तृ० <b>३०७</b> .	तमा	तृ० १८९, ३०५. -	थालपाणय	तृ० ३८८.
जोगनिव्यसि	च०५३.	तमुकाय	हिं० ३०२ तृ० ३४४.	<b>थेर</b>	प्रव १०६,
जोगप <b>चक्खाण</b> जोगप <b>डिसं</b> ठीणया	च <b>०</b> ३७.	तयापागय	तृ० ३८८.	थे (पश्डिणीय	तृ॰ ९३.
	ব৹ ২৬৬.	तब	चै० २७४.	थोव	द्वि० ३२९, च० ३३६. -
जोगस <b>च</b>	च∘ ३७.	तवस्सिपश्चिणीय	ष्ट्र ०९३.		<b>द</b>
	हि॰ ३१८, तृ॰ <b>१</b> ९१.	त्त <b>ारिह</b>	चि० २७५.	दक्खरा	तृ∘ २६०.
जोय 	ৰ• ২৭.	तिष्ववरीय	<b>ચૈ</b> ૦ ૧ <b>૫</b> .	दति	ጃ። ጳካካ,
जंघाचारण 	च० १ <b>१९, १२०</b> . —	तसकाय	স্ <b>০ ২</b> ৭০.	व्षप	चिक्ष २७४.
जंतपी <i>लणकम्म</i>	तृ० ८३.	तसपाणसमारम	तृ∘ ३.	दरिसणावरणिक	हि॰ १७३,२७६,२८७
जंदूरीव जंमय	স• <b>ব</b> ৭মূ. — মুনু	तस्सेवी	ৰ৹ ৭৬৮.	दवियाया	त्∘ ४९४.
অপ্ৰ	त्∘ ३१६.	<sup>।</sup> तायत्तीसय हि	o वे, वेथ, सृ० १९६. ।	र्ण्य	प्र॰ <b>३, वै॰ १०१</b> .

<b>ग</b> ०	ጀ• [	म् ॰	ā.	व -	y.
द्व्यक्र(ण	च॰ १३.	<b>तुह</b> ओषंका	वा• २१३, ३६५.	नरदेव	तृ॰ २८८.
<b>दञ्च</b> िसद् <del>यद</del> णआ	तृ• ८३.	देवधसिक्षधाउअ	স• १११_	नलिण	द्धि १५३.
<b>रम्ब</b> ह्यापात्रय	द्वि= २२२.	वेवकिच्बिसय	तृ• १८२.	नलिणंग	द्धि० १५३.
दब्बह्विअ	प्रवाद्य	देवपवेसण	तृ० १५६.	नवपएसिय	चि १०८.
देव्वपएस	प्र∙ १६८.	देवभवत्थ	ਰ• ਵ∀.	नाग	¥= 9¥3.
दम्बपरमाणु	च॰ ११२.	देवसंसारसंचिद्वणकार		नागकुमार प्र०५	६८, द्वि० १९७, च०४३, ६९.
दव्यकंघ	च• ५६.	देवाउय	Яо <b>9</b> 08.	नागकुमारी	底• 990.
दक्वेयणा	चा० ३५.	देवाभिदेव	मृ• २८९.	नाणप <b>डिणी</b> य	नृं∘ ९३.
<b>दब्ब</b> छेस्सा	प्र• <b>२</b> ०१.	देविदोग्गह	४- २०१/ च¤ ५,	नाणाया	तृ० २९४.
दब्बलोय	ह∙ २२८.	<b>दे</b> स <b>ण्य</b> क्खाण	ત્ર- ). ત્ર∘ ૧ુઽ૦.	नाणलद्भिय	लु^ ६६, ७०.
द्वविजसगग	च० २८२.	देसमृलगुणपचक्खाण		नाणाराहणा	রু∙ ৭৭৫.
दव्यादितियमरण	व॰ ३३३.	देसमूलगुणपचक्साणि	_		। ३४, ९९, ११५, च०२८७,
द्व्यादेस	क्रि॰ २३३.	देसावगासिय -	पु• ५. तु• ५.	नाणावरणिज्वोदय	च <b>० ११</b> ५.
द्वाभिग्गहचर्य	च० २७७.	दे <u>श</u> ्चरगुणपचक्खाण		नाणि	तृ०६०, च०८९.
द्वावीचियमरण	त्∘ ३३२.	देशुतारगुणपच्चवाण वेशुतारगुणपच्चवाण		नाणविणय	च॰ २७८.
दर्विविय	у 1<1. Я° 1<1.	<b>दो</b> सालोयणा	_	नाणंतर	प्र• १२५.
द्व्योमोयरिया इन्योमोयरिया	च <b>० २७५</b> .	_	च्ि <b>१७४</b> , उ- ≀ै	नारयभवंतर	No gav.
द्वोहिमरण	त्∘ ३३३.	दंतवाणिजकम्म	₹ <b>०८</b> },	नाराय	Я∘ ₹У.
द्सपण्सिय	ए॰ ५५१- च• १०८.	l .	० ७९, द्वि० १५०, तृ० ९३.	निगां <b>अ</b>	An Joh.
		दंसणंतर	স <b>০ १२५.</b> ——————	निरगं <b>थ</b>	प्र• ३३,
<b>दसम</b> भत्त 	च∙ ९०.	दंसणपञ्जव	प्र॰ २३६.	निच्छ <b>द्</b> यनय	य- ११. चे० <b>६</b> २,
दसमंदसम	प्र०२४१.	दंसणपरिसद्	तृ∘ ९७.	निच्छयपहाण विच्छयपहाण	प॰ ५५, प्र० २८६.
दाणामा	द्धि॰ ५५.	दंशणमोह	प्र∘ ६५.	ागच्छपञ्चहाण निज्ञरा	प्र• २७७, तृ० १३, ८४.
दावर तुम्म	च० ५९,	दंसणमोहणिज प्र	• १३३, तृ० ९७, त्त० १९६.	ान करा जिज्जरापोग्गल	
दावरजुम्मकङजुम्म	च॰ ३३८. ""	दंखणलही	तृ० ६'⊀.	ነ	च० ५६, ५८. ≈० ०∨
दावरजुम्मक्रियोग		दंसणलद्धाय	तृ∘ ६८.	निजरासमय	<b>तृ∘</b> १४.
दावरजुम्मतेओय	,, ,,	दंसणवावन्नग	प्रव १०८.	निजरिजमाण	3° ¥9.
दावरजुम्मदावरजुम्		दंशभविणय	चि० २७८.	निजिण <del>२ - १</del> ०-	Я» У¶.
दिद्विपदाण	प्र∘ ६१.	दंसणसंप <b>ज</b>	प्रव २५८.	नित्थारिअ	प्र∘ २३८.
दिह	च• २०४.	दंगणसंपन्नया	च० ३७.	निष्यश्वकसाण-पो	
दिद्वीकरण	च <u>•</u> ९४.	दंसणाया	त्∘ २९४.	निसंतणा	चि० २७५,
	हु० १८८, द्वि० ११९, १२३.	दंसणाराह्रणा	तृ० ९१८.	नियंठ	प्र० १२८, च० २४१.
दिसाकुमार	द्वि० ११९.	दंसणावरणिज्ञ	प० पृद्दे.	निरय	प्रः १४१.
दिसा <b>कु</b> गारी	द्धि० १९९.		ঘ	निरयभवत्थ -	₹° €¥.
<b>दिसि</b> ञ्चय	ਰੂ• ੰ.	घणियबंधणबंध	২০ ५৬.	निरयवाल	द्वि॰ ११५.
<b>दी</b> वकुमार	ह्रि॰ <b>११</b> ९, १२३, च॰ २७.	भग	तृ० १२८, च० <b>२</b> ०१.	निरयावास	Я• ¶४¶.
'धीवकुमारी	द्वि० ११९.	धम्मजागरिया ।	प्रवास्त्र,	निरहिकरणी	च० ३.
<b>दीवस</b> मुद्	द्वि॰ ३३४, तृ० ८८.	1		निरुवक्सम	च० <b>१</b> २९.
<b>বু</b> ম্ব্ৰ	ą∘ v.	धम्मत्थिकाय प्र	० २००, तृ० ३०५, च० ५८,	14 44441 21	च० १२०.
<b>दु</b> क्षिख	₫° ¥.		<b>९७, ९८, २१६</b> , २३५.	निर्वगणया	तृ• ३.
दुगुणकालय	चं∘ २२३.	धम्मत्यिकायपदेस	प्र∘ ३०६.	निह्नंछणकम्म	तृ∘ ८३.
दुपश्वक्खाय	<b>შ</b> ∘ ^•	धम्मदेव	तृ∘ २८८.	निब्वेय	च॰ ३७.
<b>द्व</b> पएसोगा <b>ढ</b>	च <b>० १</b> २२.	धम्मवर्चाउरतचक		निविवगितिय	च० २७७.
	हे॰ २१४, २१६, २१७, २२१,	भर्ण	द्वि॰ १३, १२२.	निहत्त	प्र• १८४.
2 15(0) II	तृ० २६०, च० १०८.	The Literature of the Land Land	९, ९ <b>४, २७७, च</b> ० ३४, ९९.	निस्संगया	तृ∘ ३.
दुप्पणिहाण	प्र॰ १२२, च॰ ६५.	CONTRACT OF	तृ∘ २८०.	निसीहिय।	तृ० ९८, च० २ <b>०</b> ५.
दु-पागहाग दुव्भिक्खभत्त	त्रण १९९, ५० ६२. ब्रिल् २०९.	धूमप्पभा	तृ• ३०५.	नि(नी)हारिम	प्रबर्ग, च०२७६.
दुःग्नयसम् दुल्लमघोहि	द्वि० ३४.		<u> </u>	नीकलेस(स्य)	प्र०७८, ११२, द्विलं ५०, १३५
दुलनगाह् दुसमदुसमा	क्षिण्यस्यः द्विण्यस्यः, तृष्यस्यः	नपुंसकवेदग	्. तृ॰ ३०२.	नेरइ(ति)य	प्र०८,द्वि० १३३, १६७, २३९,
	ाक्षण २२२, ए० ५०. द्विण ३२३.	1 -	पुण्य रुप्त. च• <b>९</b> ४.		तृ० ४०१, ३४८, च० ६१.
दुसम्यु <b>चमा</b>	क्षिण्यस्यः द्विण्यस्यः	नपुंसगवेदकरण वर्षसम्बद्धाः	य• ४०. ह= ९५.	नेरइयअसमिआ	_
दुसम्। इस्योगना		नपुंसगपच्छ।कड ===	ए° ነግ. ጃ• <b>ጚ</b> ፟፟፟፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፟	नेरइयखेलेयणा	च∘ ३६.
दुह्ओखहा दुह्ओलोगप <b>डि</b> णीय	च०३२५. ज∾०३	न्य	त्र∘ २२१. प्र∘ २८६.	नरइयदब्वेयणा	च॰ ३६.
	् तु॰ ९३. म• सू॰	नयप्पहाण	<i>ማ</i> ራ <i>ጎ</i> ቀቒ.	-1 <b>/4</b> 6 a 4 - 4 a	. , , ,

चा ॰	यु•	श ०	ā.	ष्:	पृ•
नेरइथपवेद्यण	त्∘ १३४.	भासा •	द्वि॰ १७, ३०.	परिनिष्णुट	प्र• <b>२</b> ०८,
नेरइयाजय	Я° 111.	मण•	υ , , , , .	परिमंडल	च० २०४, २०८, २०९,
नोइंदियधार्णा	ਰੂ <b>૰ ५</b> ९.	पक्रव	प्र• १६८, च० २१५.	1	न• ५४.
नोइंदियोक्तर	तृ० ३०₹.	परिकृत	प्र∘ २४६.	परिष्णह	प्र॰ २०, तृ० ९७,
नोकामीण	तृ० २५.	पडिक्सणारिह	च० २७६.	परिसहवत्तिय	স∙ १७५,
नोइंदियजव <b>णि</b> ज्ञ	च॰ ७५, ७६.	परिपुच्छा	चा० २७५.	परिद्वारविद्युद्धियसंज्ञ	
नोचुल <b>धीतिसम्बि</b> ग	च० १३४,	पश्चिमापश्चित्रस्य	द्वि• २६०,	परो <b>वकम्ब</b>	र चल्येहर, <b>१६३</b> , चल्येकरु
नोछ <b>कसमजिय</b>	च॰ १२२.	पडिसेषणा	च॰ २७४.	पुरिस <b>वेदफ</b> रण	च° १४.
नोपञ्चत्तगा-नोधपञ		परिसेवणाकुसील	चि॰ २४०,	पुरिसर्वेदग	तृ॰ ३०२,
नोपजलय-नोश्रपा	त्तय द्वि०२८९.	पिंडसेषय	चि० २६३.	परंपरखेलोगाड	पुण्ययम्. द्वि• ३४६.
नोपरित्त-नोअपरित	द्वि० २८९.	पिंडसंलीणया	चि० २७७.	परंपर <b>खेदोचवज्ञ</b> ग	हाँच ई.स.व. १६० ई.स.व.
नोबारससम <b>ा</b> वय	च० १२५.	पणिहान	चॅ० ६५.	परेपरनिस्तय	रू° <b>१४९</b> .
नोभवसिद्धिय-नोक्षर	विसिद्धिय द्वि० २८०,तृ० ६५.	पणीय	द्वि॰ १८६.	परेपरपळ्ला	
नोभोगीण	₹° ₹4,	पणीयरसविवद्भय	ৰি০ ২৩৩.	परेपरबंध	तृ० ३०३, <b>च०२५३</b> ,
नोसची-नोअसचि	द्वि० २८०.	पभ	द्वि॰ १२३.	परंपरसिद्ध	विव ११४.
नो <b>समो</b> वउत्त	चै० २७०, २८६.	पभकंत	द्धि १२३.	परंपरागम	च॰ २२०. <del>कि</del>
नोसुहुम-नोबादर	द्धि॰ २८२.	पभंजण	द्धि॰ १२३.	<b>परेपराहार</b>	द्वि॰ १८३.
नोसंजय-नो <b>धसंज</b> य	द्वि॰ २७९.	पमत्त	प्र० १२९.	परेपरोगाहय	तृ० <b>३०३.</b> च-
नोसंजया-संजय	हि॰ २७९,	पमस्जोग	সৃত ওও,	1 -	च <b>० १</b> ९२.
नंदिआवस	द्धि॰ १२३.	पमलर्सजम	हि॰ ८१.	परेपरोववज्ञग(य)	० १८६, त्व ३०३, ३४०.
	q	पमसर्वजय	স• ৬६, ট্ৰ <b>০ ১</b> ৭.		तृष्ट्रेष्ट्रे, चण्ट्रेष्ट्रे.
पउध	हि॰ १५३.	पमाणकाल	त्र• २ <b>१</b> ४.	ं पालभावम् ः	मण्डल, द्विण १९६, १२०,
पउभंग	ছি০ ৭५३.	पमाणातिकंत	2° ₹₹♥. 편♥ ५.		१५३, ३२२ स० २३७,
पउट्टमरिहार	ऌ० ३८९, ३८२.	पमाद	_	प्रविधण	च॰ ११८.
पउम	द्वि १५३.	पम्हळेस	प्र• १२०, च० २७४. —	पदयणमाद्या	प्र• १३७.
पर्संग	द्धि १५३.	पयाण	द्वि० ९०.	पवेषण(य)	ह० १३८, च० १२९.
<b>प</b> एस <b>कस्म</b>	प्र• १३२.	पयोगबंध	च॰ <b>१</b> ५.	पच्चराहु	तृ० ३८०.
पएसरग	प्र॰ ८१.	पयोगसा	हि॰ ९०९.	पसत्यकायविणय	चि <b>० ३८०</b> .
<b>प</b> णसनामनि <b>इ</b> त्ताख्य	हि॰ ३३ <b>१</b> .	परकम्म	द्विः २७२.	पसत्यनिञ्जरा	द्वि० २५६.
पञोग	R• 19⊎.	परपद्योग	₹• १२१.	पसत्थवयविणय	च० २८०.
पओगपरिणय	हु० ४९, ४२, ४८.	परपयोगनिध्यक्तिय	चै० <b>१</b> २१.	पाओवगमण	प्रव २३७, द्विव २८, ५५
पओगकंघ	यण्या, इर, इट. चेल्पह, प्रक्	परभवियाउय	चि० हे. जन्म	_	च॰ २७६.
पश्रोस	च० २७४. च० २७४.	परमा   परमा	चै० २८३	<b>पाउ</b> सिया	प्र० १९२.
पकाम <b>निकरण</b>	नुष् <b>२६.</b> तृष् २६.		चै० ८८.	पाओवगमरण	₫• <b>}</b> }¥.
पगडि	पुरुष्क्र प्राचीत्रक्त	परमाणु	च॰ ११२.	पाण	त्र हर, तृष्ट हेटण.
प्रवक्काण	व- १५७. द्वि• २९८, तृ० ८, ८१.	परमाणुपोग्गल प्र	॰ २१३, द्वि॰ २१३, २१६,	पाणय प्र॰ १	४३, द्वि० २१, तृ० ३५३.
<b>पश्चक्साणनिब्ब</b> त्तियाउ	य दि०२९९. यि दि०२९९.		२१७, २१९, २२१, तृ०		१० १६५, तृ० १९, २७५,
पषक्काणफल	प• २८ <b>३</b> .		३४८, २६२ च० २५, ५८,		10 ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) ( ) (
प्रवद्शाणापञ्चक्साण	वि० २९८.	_	49, WY, 900.	पाणाइवायकरण	च ६४.
	ाध <sup>ु</sup> २५७. नेव्यक्तियाउय द्विष् २९९.	परमाहोहिय	प्र <sup>०</sup> १३७, हु० २५, ३६५,	पाणाह्वायकिरिया	ग• २. <b>य</b> ∘ २.
पञ्चक्खाणापञ्चक्खाण	नव्यात्तयाउथ ।हरू ३९९. द्वि० २९८.		च० पर.	पाणा <b>इ(ति)वायवेरम</b> ण	স• १९९, লু• १९.
पञ्चकसाणि	, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	पर <b>लोगपचिणी</b> य	<b>ट</b> ॰ <b>९</b> ३.		यः ।२३,५२ ।३३ ।७६, च• ३४, ५८, ९९,
पश्चक्सायपावकस्म	हि॰ <b>१</b> ९८. प्र• ८४.	परा <b>हिकरणी</b>	च∙ ३.	पाणाम	प्र• देदे४.
		परिगाह	ऌ० २७५, च∞ ६५.	पाणामा	द्वि॰ २६,२७.
पजस प्र०१५२,	हि॰ १८६, २८१,		१९, ३९, २७६ च ब्रू.	पाषा	हि॰ ३२१.
	लु० ४४, ६३.	परिग्गह सन्नापरिणाम	तृ० ३४६.	_	। हु॰ २२७. ० २७९ च० <b>२७४, २७८</b> .
पञ्जरित	प्र॰ १८३, द्वि॰ १७,५७,	परिग्गहसनोवउत्त	तृ॰ ३०२ च० २८६.	पारे चियारिष्ट	च॰ २७५, २ <b>७८.</b>
	₹॰ १५, ४८.	परिग्गहिआ	द्वि० २०३.	पाक्य	ч•
आहार <i>-</i>	द्विण १७.	परिणय		पा <b>वयणी</b>	त्र" ११. च• ११८.
सरीर • <del>-10</del> -	., 	परिणाम प्रका		पासायवर्डिसय	
इंदिय •	1)	परिणामिक्ष		पेवासापरिस <b>इ</b>	प्र• १९८. स- • •
आजपाष ॰	"	परित्तसंसार		पिश्वाय -	₹• ५८,
			-• • -		हे॰ ४३.

<b>H</b> o	ष्ट•	' श -	Ę۰	<b>গ</b> ়	<b>7</b> •
पुढ विकाय	द्वि॰ ३०२ च० ५८.	नारससमजिय	च० १२४.	मिक्खपडिमा प्र०१४०।	
पुरुष	द्वि० १२३-	बालपंडिय	च॰ ३३.		
पुष्णभद	द्वि॰ १९९.	बालमरण	i i	_	दे॰ १२३. =
पुण्नरक्क	द्धि- ११५.	वे <b>दंदिया अपञ्चल्त</b> ग	तृ॰ ३३२, ३३३. च॰ १९८.	_	तु॰ ४३. चे- ००-
पुरिसकारपरकम	च= ९९.	बोह्य	तृ० १२८, च० ५४.		द्वेण १२२.
पुरिसपच्छाकड	तृ० ९५.	मंघ	= -		<b>च∘ १</b> ९८.
पुरिसबेद	प्र- १.५ प्र- २७१.	न न बंधणपन्त्रह्य	तृ॰ ३. =- ३०३	H	- La
पुलाय	व• २४°.	वंभचेरवास	तृष् १०२. =- १३०		तृष् <b>५९.</b> 
<b>पुष्य</b> पओग	तृ∘ ४.	वंभलोग-लंतग	त्० १२ <b>९.</b>		ચે° <b>૧</b> ૨.
पुब्बप्यओगपच्च (य			च॰ ६९.		प्र∘ ३०१.
पुष्पसंजय	प्र• २८°.	भ भत्तप <b>ब</b> क्खाण	•	<b>A</b> 1	द्विण २८९, हृ ३०२. चन्द्र
पोग्गल	त्रव ५३, द्विव ३, ६५, ९५,	भ <b>त्तपच</b> क्खाय	च॰ ३७, २७६, ३३४.		तृष्य, 
11-413	<b>ずる。 近。 よざみ" ぎぶつ'</b> …。 かんいばっ もい チン・フン	भसपाणद्व्योमोयरिया	तृ० ३५६, ज- २५६		, ३३०, च० ८१.
पोरगलकरण	चाव ९४. १०० एव १९०, १६०,	मत्त्राग्युज्यामायार्यः भवष्यओस	चीव २७६.	1	५८. २५९. च० ९४
पोग्ग <b>लस्थिकाय</b>	प्रणाप्ति । प्रणाप्ति । स्वर्थ	भवकरण	च॰ २७४. च॰ <b>९३</b> .	मणगुरा	प्र- २३९.
पोरगल <b>परिणाम</b>	द्वि॰ २४६, तृ॰ १२॰, ३४६.	भवणवा	मण्डेर. प्रष्टिप्.	भणजोगचलणा मणजोगनिब्बत्ति	च॰ ३६.
पोग्गलपरिय <u>ङ</u>	तृ० २७१, च० २३६,	· ·	२७, २५२, तृ०३०७.	मणजोग व्यास मणजोग	च ८६३.
40.40.41648		भवतुष्ठय	लु० ३५५.	मण(पो)जोय	तृ॰ ३०२. <b>च</b> ० ८१.
पोग्गलि	२३७, २ <b>३</b> ८.	सर्वधारणिज्ञ	पुरु <b>९४९.</b>	मणदुप्पणिहाण मणदुप्पणिहाण	चे ३, ३४, ९९.
	রু• ৭২¥.	भवसिद्धि	ति॰ २८०.		चै० ६५.
पोसद	तृ० २५३, २५४.		१६७, द्वि॰ ३४, २७४.	मणनिव्यत्ति	च <b>०११.</b>
<b>पोसहोबना</b> स <del>संस्थानम</del>	∂″ ደ <b>ጓ.</b> ≅- እ-৮	l <b>-</b>			क्ति ५७.
पंकप्पभा <del>र्वचित्र</del> ा	₹°4.	ज्यातास्यगरम्य ः	वण्डरक्षत्वण्डस्य, २५८ वण्ड <b>, च</b> ण्ड, ४ <b>६</b> .	मणपञ्जवणाण	प्रव ३०९.
पंचिकरिय संचिक्तरम	ጃ• የ९१, ቪ• ረ⊍. ፰- እየኮ	भवसिद्धियविरहिय	त्रा, पर ४, ०४. तृष्ट २५९.	्रमणपञ्चवनाणि   सण्य <del>ाच्याच्याच्याच्या</del>	हि॰ २८९ च०२८ <b>९</b> . जन्म
पंचि <b>रधका</b> य <del>रंजन्य १</del> ०००	तृ० <b>३१५</b> .	भविथदव्यअसुरकुमार	पु॰ ५१३. च॰ ७३.	। मणपज्जवनाणलद्भिय मणप्ययोग	तृ॰ ६७. विक २०३
पंचपएतिअ 	द्वि॰ २१४, च॰ १०४.	भवियद्व्यदेव	न्५. तृ• ८८, २८९.	। मणबिणय	द्वि॰ २७३.
पंचमहव्य <b>इय</b> 	Я» २०७. 7- Рис	, भावयदञ्जनेरह्य । भवियदञ्जनेरह्य	च० ७२, ७३.	i	चि॰ २७८. च॰ ३७.
पंचमुद्धिय <del></del> -	ਰ੍• ੧੫੫. ਕਾ- ੨੬੨	i _		मणसमञ्जाहारणया मणसुप्पणिहाण	च॰ ६५.
पंचयाम <del>संभिन</del> ्न	च• २६२,	भावयद्व्यपुढविकाइय	ৰ≎ ৬३, হঃ. ১৮	मणुस्सजातिआ <b>सी</b> विस	यण्या. तु∾ ५६.
पंडिय :0	₹ 33.	भवेयणा	च० ३५. इ.: ४३	मणुस्सप्पवेसण	र्णुः १ <b>५</b> ६.
	प्रव्यव्य तृष्य ३३२, ३३४.	भाडीकम्म	त् ७८३. त्∘ १•२.	मणुस्सभवत्थ	तृ० ६४.
पं <b>डि</b> यवीरियत्ता	प्र∘ १३१.	भायणपञ्चह्य	तृथ । ७२. चा¤ ३९, २६०.	मणुस्तसंसारसंचिद्वणकाल	
	फ	भाव	च० <b>५३</b> .	मणोदन्ववरगणा	<sub>दिन</sub> १८७.
<b>फलिहु व डें</b> सय	द्धि १३१.	भावकरण	च्या २२. द्विच २२२.	मति <b>अन्नाण</b>	च० ३४.
फास <b>करण</b>	च० ९४.	भावद्वाणाउय	ह <sub>ै १५५</sub> .	मणुस्सअसि आउय	я∘ 999.
कासिंदिय	तृष २६०, च ० ३.	भावतुष्ट्रय भावदेव	ए" र ५ ५. तु० २८९.	मर्णकाल	तृ• २३४.
फा <b>सिंदियकरण</b>	च॰ ९४.	भावपरमाणु	ए° २०३० च० <b>१</b> १२.	महर्	्र २०,३१. तु∘ ३०,३१.
फासिदियचलणा	च॰ ३६.	भावपरमाणु   भावबंध	चा∘ ५६₌	मह <b>स्</b> य	पु- २७, र ।. तृ० ३४६,
फासिंदियसंवर	चा० ३७.		-	मह्ब्य	प्ट- २०२. प्रा० १०६, २४३.
फासिवियोवउत्त	त्∘ ३०२.	भावलेस्सा	স• २०१. 	महाकप्पस्य	तृ॰ ३८१.
फा <b>धु</b> -एसणिज	तृ∘ ३.	भावविउसम्ग	च॰ २८२. <del>-</del>	महाकम्म	तृ- ५७।. द्वि० २७०.
भाषु यविहार	्र च०७५,७६.	भावसच	च॰ ३७. कि. २२२		द्वि० २०५, तृ० ३९.
फो <b>डी</b> कम्म	तृ	भाषादेस	द्वि॰ २३३.	महाकम्भतराय	हि॰ १२३.
all of mark	<del>-</del>	भावियप	국	महाकाय	हि॰ ११६, १२३.
	<b>u</b>	भावेयणा	चा० ३५.	महाकाल महाकिरिय	हि॰ २७०, च॰ ८६.
<b>प</b> उस	च० २४०.	भावोमोयरिया	च०२७६.	महाकिरियतराय सहाकिरियतराय	द्वित २०५, तृ० ३९.
<b>ब</b> ल	च	भाविदिय	স্	महाघोस -	द्वि० ५१६, १२३.
बढि	प्र॰ ११, १२२, च॰ २६.	भासय	द्वि• २८१. 	भहाजम्म   महाजुम्म	च॰ ३३८.
बहुजण	च० २७४.	भासा	तृ∘ ३२४.	महानिज्ञर महानिज्ञर	च ० ८६.
बाद(य)र	द्वि० २८२, च० २७४.	भासाकरण	च॰ <b>९४</b> ॥०	महानिजरा	द्वि॰ २५६, २६ <b>०</b> .
बादरभपजस्म	₹º 1९८.	मासानिव्य <b>त्ति</b>	ৰা⊳ <b>९</b> १. ≕- ১৬	महानंदीआवत्त	द्वि» १२३.
बादर्पजलग	च॰ १९८. 	भासामणपजति	ਚਾ <b>੦ ੧੫.</b> ਕਾਨ ੨੫੦੦	महापञ्जवसाण सहापञ्जवसाण	तृ॰ २५.
बादर(य)परिणश	हि०२२०, च०१०८.	भिक्खा यरिया	चा० २७७.	। अर्थारच्याराः	<b>E</b> , 1,

য় ৽	দূ৹ ∣	ধা	Ã۰	ध् -	ā.	
	प्र०२५५.	मृलपग <b>िर्वंध</b>	য৹ ५৬,	1	ŧ	
महाप <b>डिमा</b>	प्रवर्गाः द्वि≃ १२३.	मूलारिह	च० २७५.	बह्करण	द्वि० २५८.	۱۲)
महापुरिस	हि॰ १२३.	मेहुण मेहुण	तृ∞ ३०३.	वहजोय	द्विष ३५१, च॰ ३०	
महामीमें	हि० २५६, २७०, २६०,	भोह्	प्र <sup>.</sup> १२४.	<b>यह्</b> जोगि	प्रः १५१, तृ० ३०२.	4
महाचेद(य)ण	तृष् १८, च० ८६.		o २८९ प्र० १३१.	वद्योग्गलपरियष्ट	तृ० २७१.	
	हि॰ २०५, २७०, तृ० ९८,	मोहपत्ति <b>अ</b>	प्र• २८१.	वरूपयोग	द्वि०२७३.	
महावेदणतराय	वेद' अव ८६'	मंडुकजाइआसी <b>यि</b>		वद्दोसहनारायसंघयण	तृ ०१३२.	
ware a	हि० २०५, २७० च० ८६.	सुंडभाव -	л. २. Х. २. У.	वहरोसहनाराय	<b>ቻ</b> ∘	
महासद	हि० ३९.	3-111	₹	वइसम्बाहरणया	ল্ল ३৬.	بذ
महासवतराय महासिलाकंटय	ए° ३०,३९.	रच्यग	द्वि० २० <b>९</b> ,	व <b>इ</b> सुप्प <b>णिहाण</b>	च॰ ६५	÷
	ए° २°, २१. द्वि० १७९, च० ६९.	रक्स	हि॰ १ <b>५९</b> .	448 - 11-161-1	च॰ ८१.	
महासुक महासुविष	च॰ १६, <b>१७</b> .	रतिकरपव्यय	ચ° <b>પ</b> .	वर <b>पु</b>	द्वि १३०.	
- <del>-</del>	_ '		रू॰ पर्०, २४०, ३१ <b>५, ३</b> २७.			
माईमिच्छादिही <b>उ</b> ष		(44-140)	त्० ३०४ त्राराण्यास्य	वजारिसहनारायसंघयण	प्र॰ ३३.	
मागह	प्र∘ २३९. Ө- ००३ (००० <b>)</b>	रयणवर्डेसय	ए ५० <b>०</b> हि॰ <b>१</b> ३१	वजि	तृ० ३०, ३१.	
माणिभद्	द्धिः १२३ (११९).	l .	।४४ । २ । च • ९४	बट	च० २०४,२०७,२०५.	
माणुसुत्तरप <b>ष्य</b> य	तृष् ११°.	रसकरण रसपरिचाय	चा० २७७	वणकम्म	तृ० ८३.	
माणोव <b>उत्त</b>	সৃ <b>০ १४</b> ४.	रसपारचाय रसवाणिज्ञ		वण्णपञ्जाब	प्र° २३५. -	
माया <b>मोस</b>	प्र• १ <b>९९.</b>		तृ॰ ३ 	वणस्सइकाइय	ৰ ০ ५८.	
मायावत्तिय	प्र०९२, २३९, द्वि० २०३.	रहमुसल	तृ० ३३,३१,३२.	वद्तियाभत्त	द्विण २०९.	
मायोवउत्त	ጃ። የኖዩ.	रायपिंड	द्वि० २ <b>९</b> ०	वसकरण	व॰ १४.	
मारणंतियअ <b>हि</b> यास		रायोग्गह	चि०६	<b>वयशुक्त</b>	प्र∘ २३९.	
मार् <b>णंतियसमुग्</b> याय		रासीजुम्म	च० ३६०	वययोगनिव्वति	च  ९३.	
	च० ४२, ८२.	रासीजुम्मकलिओ		<b>वयजोगि</b>	चि०८१.	
मासख्यण	সুত <b>২</b> ४३. -	रासीजुम्मदावरजुम	म ,, ,,	वयविणय	च॰ २४८.	
माहिंद	द्विण् २१.	<b>ब्र्</b>	দ্ৰি <b>৽ ৭</b> ৭६	वरुण	द्वि० १०९,१२२,१२४,	
मिच्छ <del>त्त</del> किरिय	नृ∘ १६.	<b>हयर्गिद</b>	च॰ २६		१३०,१९७. तु०३२,३५.	
मिच्छ(च्छा)दिद्वि		<b>स्वीअजीवद्</b> व	चा०२०९	वरणकाइय	द्वि० १ <b>१७</b> .	
	१७१, २८०, च० ८०.	रूष	द्वि० १२३	वरणदेवकाद्य	द्विष् ११७.	
मिच्छा	च॰ २७५.	<b>€</b> अकंत	द्यि० १२३	ववहारपडिणीय	तृ∘ ३४.	
मिच्छादिट्टी <b>नेरइ</b> य		स्थपम	हिं १२३	वसहमरण	प्र॰ २३७.	
<b>मिच्छादि</b> द्वीनि <b>व्य</b> ि	त च०५२.	रूअंस	डि॰ि १२३	वाउकाय	द्वि॰ ८७.	
<b>मिच्छादं</b> सण	ጃ≎ ዓ५٩.	रोद्द	चै० २८१	वारकुमार	प्र० १४२, द्वि० १२३.	
मिच्छादंसण <b>व</b> त्ति			स	वाणमंत	ጃ0 ጓ <b>९५</b> .	
<b>मिच्छादंमणलद्धी</b>	थ तृ∘६८.	लक्खवाणि ज	तृ० ८३	वाणमंतर	त्र० ७५, दि॰ १४,११६,	
<b>मिच्छादंसणस</b> ह	प्र॰ १९९, तृ० <b>९९,</b> च० ३४,	लब -	प्र <b>० ६९, द्वि</b> ० ३२१.		२२ <sup>°</sup> ७, २४७. २५२.	
	५८, ८१, ९९.	लवसत्तम	तृ० ३६७.		तृ० ३०७, च० ६९.	
मिच्छादंसणसङ्गी	येथेग तृ० १९, ३९, २७६,	लाढ	तृ० ३८७.	वाणमंतरी	द्वि॰ ११५.	
	च॰ ३४, ९९.	लेच् <b>छ ६</b>	प्रण २४८, तृष ३०, ३१.	वायुकुमार	द्वि० ११०. च० ४४.	
मिच्छादंराणसङ्गवे	रमण प्र०१९९, च०५८.	<b>डेसणावंच</b>	तृ० ९०३	<b>बायुकुमारी</b>	द्वि० ११०	
मिच्छानाण	प्र <b>० १</b> २२.	छेसा(स्सा)	प्रव ७८,९५, तृष् ७९, चव् ४२	वारणी	हु॰ १८९.	
<b>मिच्छाबादि</b>	च॰ ६.	लेसाकरण	च॰ १४	वाञ्च	हिं ११६.	
<b>मीसपरिणय</b>	च∘ <b>६</b> ४.	लोगद <b>्व</b>	प्रव ३०६.	वाद्धयपभा	द्वि० २४०, तृ० ३०५.	
मीससापरिणय	तृ∘ ४९.	<b>छोगोवयार्</b> विणय	चै० २७८, २८०,	वावहारियनय	च॰ ६२	
मीसापरिणय	तृ० ४७, ४८.	लोगपाल	द्वि० ७,२१,१०६,१२९.	विउन्दिय	प्र॰ १८३,२५१,३३८.	
मीसा <b>द्वा</b> र	नृ∘ ३२४.	लोगंतिगवि <b>माण</b>	द्वि• ३११.		० २०६, च० २७८,२८२.	
मुसा	द्धि॰ १९९.	लोभकस।यि	तृ० ३०२.	विउसमणया	च॰ १७.	
	१६६ तु० २७५, च० ३४, ३८,	1 .	प्र∘ ७२.	विजस्सग्गा <b>रिह</b>	च० २७६,	
G-41.1 -41.	44, 49, 58,	L =	प्र॰ २१५, तृ० २२८	1	<b>ጃ</b> ባ ካ ነ ነ	
<b>मुह</b> पोत्तिश	प्र• २ <b>८१.</b>		वर् <b>१, २८२, च</b> ० २१.	1	द्वि० १२३.	
मुहुत्त	क्रि॰ ३२ <b>१</b> .	लोयाकास	प्र०३९२.	विचित्तपक्ख	द्धि० १२३.	
७४ " मूलगुणपञ्चकस्त्राण		को यालोयप्यमाण		विच्छुअजातिआसीविस	सृ∘ ५६.	
मूलगुणप <del>णक्</del> या	<u> </u>	कंत•	प्र॰ १०३.	विजय	हिं ३१५.	
W 40 - 1 - 4 - 114	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	, <del>.</del>	- 1-		-	

<b>4</b> •	Z. (	श् •	ā.	<b>ग</b> ॰	मृ•
विजय-वेजयंत •	च∘ ६९.	वैदणा	तृ० १३.	समइअ	प्र• ५२.
विज्ञासार्ण	च० ११८,१९९.	वेदणासमय	तृ∘ १४.	समकिरिय	ጃ። ९२.
विजुकुमार	हि॰ १९०,१२३. च० ४३.	वेद(य)णासमुख्याय	प्र॰ २६१, च॰ ४२,२५९.	समचउरससंग्रण	प्र॰ ३३.
वि <b>जु</b> कुमारी	द्वि॰ ११०.	वेमाणिय	प्र॰ १२५, द्वि० ६०, १३९,	समच <b>उ</b> रंससंठिय	<b>ጃ</b> ∘
विषय	च∘ ३७८,		રુપુર, <b>૨૪</b> ૭, ૨ <b>૨૭</b> ,	समणोवासय	प्र०२७६, तृ०२.
विणिषष्टणया	च०३७.		तृ० ३०७. च० ९९.	समणी	प्र• २४३.
विदेहपुत्त विदेहपुत्त	तृ∘ ३९.	वेणइया	त्० २७६.	समय	द्वि <sup>ः</sup> २ <i>४८</i> .
विद्धुत विद्यंग	प्र॰ १५२.	वेयणा	न् तृ० १३, १ <b>९२</b> .	समयक्खेत्त	प्रव <b>्ष</b> े.
ायञ्चन विद्यंगञ्जणाणप <b>ञ्च</b> न	प्रवास	<b>येयणिज</b>	च० २८७.	सम्मदिद्धिनेरद्दय	चा॰ २८४,
विद्मंगणा <b>णि</b>	तृ० ३०२.	वेयरणी	ह्यि॰ ११६.	समार्थ	ট্লি ৬ <b>৬</b> .
विभंगणाण <b>ळ</b> द्दी	द्वि० <b>१०१, १०</b> २.	वेयाव <b>व</b>	च० २७८,	समाहि	प्र० २४५.
विभगनाण विभगनाण	तृ० ५९,६०,७४ व० ५९.	वेलंब	द्वि० १२३.	सम्मामिच्छादिष्टि	च० २ <b>८९</b> . -
	तृ <b>७५</b> .		to 908, 994, 924, 93°-	समिआ	हि॰ <sup>२</sup>
विभंगनाणप <b>ञ्च</b> य	्रु <b>५</b> २. च० <b>९२</b> .	चेसमणदेवकाइ्य	हि॰ <b>१९</b> ८.	समिहि	त्० ९९३.
विभगनाणनिव्यसि 	द्वि० २८९.	वेहाणस	प्रतिकृष.	स <b>मुग्घा</b> य	चि०९६.
विभंगशाणि	तृ० १८६, ३१४.	वंजणोरगद्द	₹° ५९.	समुग्घायकरण	प्र• २६१.
<b>बिम</b> ला	प्र• १८.	1	स	समुचयवंध	त्∘ १० <b>१</b> .
वियदृ <del>छ</del> त्तम	ह्रि॰ १२३ <i>.</i>	सइंगाङ	तृ० <b>५.</b>	समुदाण	प्र• २८१.
विया <b>वस</b>	द्विष् ३४, तृष् ८६.	सकम्म	प्रय ३०९.	<b>ममोसद</b>	प्र० २ <sup>२४</sup> . चाण ३०२ प्र० १८.
विरा <b>ह्</b> य	प्र॰ १०६.	सकसायि	तृ० १३३, २८७, च० ४७.	समोसरण	चाव २०५४० १८. प्रारुष्प.
विगहिअसंजम		संकिष	च्०२७४.	सम्मत्त	
विराहिअसंजमा <b>सं</b> य	• •	सकिरिय	तृ० ७.	सम्मक्तिरिय	्रा॰ ५६. प्र• ९२ हि॰ ३४, ९८०.
विवित्तसयणासणसे	व्यवस्थितः	सक्द f	to 94, 64, 40, 50, 909	सम्मदिष्ठि	प्रकर्णाहरू रुष, रुष्य, प्रकर्णाहरू रुष, रुष्य,
विवेगारिह 	सु∘ ८३. तृ∘ ८३.		तृ व्यार, व्याव, च प, ११	, )	चि० ९२.
दिस <b>कम्म</b>	हु- ५५. द्वि० १२३.	सङ्गरपभा	हि० २४०, तृ० ३०४	, शम्मादिहि <b>निवत्ति</b>	चाव १५ <b>१</b> -
विसिद्ध	हि॰ ३४०,	सक्रा	ሟ" ७०.	सम्मदंसण	प्र° 171• प्र° <b>१</b> २.
वि <b>पुद्धले</b> स्स	प्र०९२.	सकार-पुरकार	तृ० ९८.	तम्मामिच्छदिद्वि	
विसुद्धलेस्स <b>तराग</b>		सनित	च० ६४.	सम्मामच्छिदद्वीनि	लात्त यः २२. द्वि० २८०, च० ८०.
वीतिंगाल	तृ∘ ६.	सचित्ताचित्तमी	सिय डि॰ २२५.	सम्मामिच्छादिद्धि	प्रव १५,१,
वी <b>मं</b> स	য∞ २৬४.	सचित्ताहार	तृ० ३२४.	सम्मामिच्छादसण	प्र∘ ६.
वीयधृम	កូ०६. Яα ९००	सजोगि	तृ० ७१, च० ४८, २६७, २८	७. सम्भावा <b>री</b>	० ७ १ चा० ४७, २६८, २८५.
वीयरागसेजय		सज्ज्ञाध	च० २७८.		
वी <b>यीदव्य</b>	तृ° ३५२. तृ° १९१.	सणंकुमार	ৱি∘ ২৭, <b>নৃ∘ ₹</b> ५		યું રૂપ.
<u>बीयीपंथ</u>	पु"। ∖ाः चय <b>्र</b> ्	राणंकुमार-माहि	ह्दग च०६९.	रारीर्पश्चक्साण	तृ० १०२, १०४.
बीरिय	प्रव १८३, द्वि ० १०		तृ∘ २६४, च० ९०	इ. शरीरप्पओगवंध के ं-	द्वि० १०२, १ <b>०४.</b>
वीरियलद्धी	प्रवृष् <b>र्ह.</b> प्रवृष् <b>र्ह.</b>	सत्तवण्णवर्डेस	य द्वि" १९०.	सरीरबंध	च <sub>व</sub> ३३८, २ <b>३९</b> -
	_	सत्थपरिणामय		सब्बद्धा	हि० <b>१९६</b> .
वीरिय-सजोग-	तृ० १९४.	सत्थानीय	तृ∘ ६.	सवल	तृ <sub>०</sub> १३ <b>५</b> .
वीरियाया	प्र≖ २४¶.	सहपरिणअ	हि० २२०.	सवेद	च० ४८, ३८७.
वीसइमंबीसइम	तृ॰ ४१, ४८.	सधूम	নূ॰ ५.	सर्वेदग सञ्ज्ञोभ <b>द्द</b>	हि॰ १३ <b>॰</b>
वीससापरिणत	तृ० १०१, च॰ ६	,	च॰ ८१.		
<b>बीससाबं</b> ध	तृ∘ ३३२.	सङ्गाकरण	च० ९१.	सम्बदत्तरगुणपच	हि॰ १९९.
वेउग्विय		सम्नानिव्यक्ति	च० ९२.	सव्यकाम	हि॰ १९ <b>९</b> .
वेडिव्यमीसय	<del>-</del>	६ सिक्षयब्भ	नृ० ३८६.	सब्ब जस	द्वि० ३१५.
वेव्वियस <b>मु</b> ग्धा	५८, ८६, च॰	४२. सि <b>भ</b> पंचिदिय	भपज्ञत्तग च∘१९८.	सब्बद्धसिद्ध	द्वि० २१६.
<b>चेउ</b> िबयपोस्गर		सिवाइय	च० ३२, २३९.	सम्बद्ध	·
	<del>-</del>	सिंग	द्वि० २८० तृ० ६५, च० ४	<ul> <li>त्वदुक्खप्पही</li> </ul>	ग द्धि∘ २३१.
चेडवित्रयसरीर <sup>प</sup>	वरुणा च०२७. च०३०२.	सन्नोवउत्त	च॰ २७०.	सम्बद्धारगल	
वेणस्यवाद् <del>रेक्करी</del>	हि० १२ <b>२</b> .	सपएस	द्वि० २१६, २८	६. सब्दम्लगुणपच सब्दम्लगुणप₹	_
वेणुवाहि <del>रेक्टर</del>	द्वि <sub>ण</sub> १२२.	सपिडक्रमण	द्वि० २५०		तृ∘ ₹.
वेणुदेव केटराण	च° ८८°	सपरिग्गह	द्वि० २२५, २३	स्विया	चि० २२∙
बेदकरण <del>केवलवासियास</del>		सप्पुरिस	द्वि० १२३.	ं राज्यम्।	
<b>वेद्णअहि</b> यास	निया				

<b>1</b>	ā.	<b>হা</b> ০	7.	<b>য়া</b> ত	<b>Z•</b>
ब्रञ्चाण	द्वि॰ ११९.	<b>युत्तप</b> डिणीय	त्व ९३.	सोइंदिय	च॰ ३.
सब्बुत्तरगुणपचक्स्राणी		द्वत	च ०१६.	सोब्दियक्लणा	व॰ १६.
सब्ब	प्र॰ ९९.	सुदक्खुजागरिया	तृ० २५५.	सो इंदियवसङ	तृ० २६०.
सहस्राप " "	· प्र० १०९,दि० ११.	मुद	तृ० ३८८.	सोइंदियसंबर	वै० ३७,
साइयवीससाबंध	च० ५७	सुद्धेसणिय	च□ २७७.	सोग	चे॰ ५,
	३२, १५३, २७६, ३२२.	मुप्पभ	द्विण प्रवृत्	सोम f	द्वे० १०९, १२२, १२४, १३०.
	इ०२८२, हु॰ १३२, ३०२,		द्वि ९२३.	सोमकाइय	द्विण १९०.
	86, 69, 260, 260.	<b>सु</b> प्पणि हाण	च॰ ६५.	सोमवेयकाइय	द्वि॰ ११०.
सागार	์ ม <b>ื</b> ค ๆ ๎ ५ ๆ .	कुष्पान्हाः सुमदीहाउयसाय	य- <b>५</b> द्वि० २००.	सोमा	तृ∙ १८९
	प्रव राज्य चर्च रे४, ९९.	<b>मुमण</b>	द्धिः १३०, १३१.	सीयविज्ञाणावरण	प्र∘ १३३.
सागारियडग्गह	च∘ ६.	चुमण <b>भ</b> द्	度 195.	सोयावरण	प्र° १३३.
साडीकम्म	तृ॰ ३३.	सुय	प्र <sub>व</sub> ारः प्रविदेश	सोलसमंद्योलसम	त्र <b>० २४</b> ९.
सारीयवीससाबंध	तृ ७ १०१.	सुय <b>ा</b> माण	न्- १९५. तृ• ५९.	सोवक्रमाज्य	चि≃ १२०.
साम	দ্ধি ৭৭६.	सुय <b>अनाणनिव्य</b> त्ति	_	सोइम्म	द्वि० १७, ५२, तृ० ३०९,
सामाइय	प्र० १२८, तृ० ९.	धुयअ <b>भाषि</b>	द्वि० २८१, तृ० ३०२.	[	च॰ ४१.
सामाइयकड	तृ॰ २.	चुयणाणि सुयणाणि	प्रचारण प्रवास्थान । प्रचारिक स्थापन	सोहम्मवडिंसय	द्वि०५७,५९, ११०,द्वि० ११५.
सामा६य वरित्तलद्भिय	तृ॰ ६९.	सुयनाण सुयनाण	तृ० १३०, ३०२.	संकम	प्र॰ ५५.
सामाइयमाइयाइ	तृ० १६५.	द्धयनाणप <b>ज्ञव</b>	तृष्यास्य, स्या. तृष्यास्य	संकामण	प्रव ५४.
सामाइयसंजय	च० २६१, २६२.	-	च० १७₀	संख्वाल	द्वि॰ 1२२.
सामाणिअपरिरोविवस्त्रय	द्धिः ७०.	सुयसहायता सुयसंप <b>न</b>	य० १७ <b>.</b> तृ० <b>११</b> ८.	संखेजपएसिअ	द्वि० २१६,तृ०२६०.
सामाणिय	प्रव ३००, द्वित ७, ६.	1	ए° ११ट. द्वि॰ १२३.	संघपहिणीय	ह∙ ५३.
सामाणियसाहस्सी	द्वि॰ ३.	सुरूव सुलभवोहि	ह्य । २५. द्वि <b>० ३४</b> .	संजम्फल	प्र॰ २८३.
सामायारी	च० २७४.	सुवरगु	द्विष्याः द्विष्याः	संजमठाण	च॰ २६३.
सायाचेयणि ज	त्० १९.	धुवण्यकुमार सुवण्यकुमार	हि० १९८, च० ४ <b>२</b> .	संजम	प्र॰ ६, हि॰ १९३, तु॰ १२६.
सारंभ	द्वि० ७७, २२५, २२६.	_		संजय प्र॰ ५	६, द्वि० १८०,२७९, च०२५,
सालिभइ	द्वि० ११९.	सुवण्गकुमारी 	द्वि» ११९.		च॰ २६१.
संबज	च॰ ६.	मुविणद्ंमण	च॰ १५. <del>दि</del>		प्र॰ १९, द्वि॰ २७९, तृ॰ १॰.
सासय	त्∘ ९९, १८१.	सुसमवृसमा 	द्विष्ट्रेट्ट.	संजलगलोभ	च० २६७.
साहणणाबंध	तृ० १०३.	मुसम्भुसम्।	द्वि० ३२३.	संज्ह	तृ∙ ३८६.
<b>साह</b> म्मिउग्गह	च□ ६	सुममा	द्वि॰ ३२३.	<b>यं</b> जोयणादोस	₫° ч.
साह्रम्मियमुस्स्मणया	च॰ ३७.	सुस्स् <b>मणाविणय</b>	चाव व्यष	संजोयणादोसविष्य	• •
साहा(धा)रणसरीर	च० ८०, ८३.	। सु <b>हम्म</b> 	স <b>০                                    </b>	सेंदाण	चै० २०४.
साहिकरणि	च०३.	<b>सुह्</b> म्मा	द्वि० ४७, ५९, ७०,	संठाणकरण	चे० ९३.
सिणाय .	च०२४१.		चि॰ २६, ३९,	संठाणतुष्ट्रय	ऌ०३५६.
सिढिलवंधणबंध -	્ च∘ ૫૩.	<b>सुहुम</b>	द्वि॰ २९२, च० २७४.	सेटाणनिव्यत्ति	ৰ ৭২.
िस्	द्वि० ५, च० ४५, ४७.	<b>मुहुमअपज्ञत्त</b> ग	ৰ∘ ৭९८. সং. • • •	संपराइय	तृ॰ २, ५, २३,९६. —
<b>सी</b> यपशेलह	नृ• ९८.	मुहु मपजलग	<b>য৹ १</b> ९८.	संपराह्यवंध <u></u>	तृ∘ ५४.
सीया	तृ० १९१.	<u>सुहु</u> मपरिणश्र	द्वि० २२०,च० ६३.	संभोगपद्मवखाण	च॰ ३ <b>७.</b>
	११८, प्र॰ २७७, तृ॰ ८१.	सुहुमसंपराग	चे० २६२,	संमुच्छिम	ਰੁ∘ ਖ}.
<b>सी</b> सपहेलिया	द्विष् १५३.	स्र	दि॰ ११०, १२३, तृ० २८०.	सं <u>म</u> ुच्छिमचउपय	यक्षयर तु॰ ४४. द्वि॰ ३४०,
<b>ची</b> हगइ 	द्वि० १२३.	स् <b>रिय</b> सेजायरपिंड	द्वि० <b>१</b> ४५, तृ० ३६३. द्वि० २०९.	संमोहय <del>चेनेन्य</del>	
<b>ਜ਼ੁ</b> ਯ	प्र• ३.	1 -		संबेहणा	हि० १७, २८, ५५, ५६.
<b>सुभ</b> णाणप <b>जव</b>	प्र०३०९.	सेजासंयारय सेडि	लु० ९८०. च०३११ ३०३	<u>.                                    </u>	तृ० १६५, च० १५, च०५३.
<b>₹</b>	च॰ २८१. 	साड सेया	च० <b>२</b> ९९, २१ <b>३</b> . च० २२०.	संवर	तृष् <b>ी</b> रेी.
सु <b>क्</b> प <del>वि</del> खय	तृ० ३०२,च०२८६.			संबुद :	प्रकर्वे, तृक्ष, २३, १९१, चिक्षी.
<b>सुद्ध</b> लेस्न 	प्रकृष्ट, ३४, ३९.	सेलेसि केलेल्ला	द्वि २६०, च <b>० १३</b> ५.		यण्यक. य <b>०१६</b> ,
<b>सुक्क लेस्सा</b> ——	ጃ© የሣዓ. 	से लेसिप डि <b>वण्ण</b> य	प्र∘ १९६. कि. ३३०	संबुडासेवुड संवेग	च∘ा∎. च०३७,
<b>स्त</b>	नु∘ ४४	सेक्टेसिप <b>विवस्ता</b> सोइंदियजवउत्त	हि० <b>२२</b> ०. सः ३०२	संसारविडसगग -	च∘ २८३. च० २८३.
<b>सुत्त</b> जागरा	चि० १६. उट्ट २५०	1	तृ० ३०२. च- •३	सिंगलि सिंगलि	च्य ५८५. तृ∘ ३८८.
मुत्तर	तृ० २ <sup>५</sup> ९.	सोइंदियकरण	व० ९३.	10410	A- 1421

# परिशिष्ट २ देश, नगरी, अने पर्वतादिना नाम.

मा ॰	δο	षा०	₽•	श ॰	प्र•
	अ	भारह	द्वि ५४, ५८, २४, ११५.	वाणार <b>सी</b>	電流カッ1. **
<b>क्र</b> येगका	प्र° २३१.	मगह	तृ० ३८७.	वाणियग्गाम	तृ॰ १३८, १५६, २३४.
कायंधी	तृ० १९६.	मख्य	"	विञ्चागिरिपाय	द्वि० ५४.
काषी	तृ॰ १८३.	1 .	ा(प्रक्ष≇ण)प्र∘ २८९.	वीसीभय	तृ• ३२६.
<b>कुम्म</b> क्याम	तृ० ३७३.	माहणकुंडरगाम	तृ∘ ९६२.	वेसाछी	तृ∙ ३२.
कोसंबी	কুত ২৭६.	मिहिला	तृ∘ १२५.	वेभारपञ्चय	द्वि ९२.
कोह्नाक (सचिवः )	কু∘ ३७१. কু∘ ১১৮	में <b>डियगाम</b>	तृ० <b>३</b> ९२.	सर्वण (मिष्णवेश)	तृ० १६८.
खरियकुंदग्गाम चंपा द्वि० १४६	<b>तृ० १६</b> ५. , २ <b>५</b> ३, तृ० १५९, ३२६.	मोया	द्विष्य, २३.	सावत्वी	प्र∘ २३१, तृ० <b>१७९.</b>
त <b>म</b> लिली	, राज्य, एवं १०५, २२५. द्वि० २४.	रायगि <b>ह्</b> लाह	द्वि• २३, तृ• १८७.	सिद्धत्थरगाम	लु० ३७२.
तं नारः स दुंगिया	प्र• २७६.	वच्छ	ए॰ ५८७. तृ० ३८७.	सिंधुमोबीर तृ०	२५ <b>२, ३६७, ३</b> ९२, <b>३३६.</b>
नालंदा	तृ• ३६९.	ৰজা	<u>v</u> - 400.	<b>बुसुमारपुर</b>	द्वि० ५६, ५८, ७०.
नेमेल (सिनवेश)	द्वि० ५५.	वंग	तृ० १८७.	हरिधनागपुर	तृ∙ १२९, २३६.

# परिशिष्ट ३

#### चैत्य अने उचानना नाम.

असोयवणसं <b>ड</b>	द्वित ५६.	णंदण	द्वि० २–३३.	माणिभद्द	Z= 934.
कोद्वय	तृ॰ ३१२, १७९	द्तिपळासय	तृ० २३४, १९६, १३८.	मियवण	तृ० ३२६.
_	२५९, वे६७, वे६२.	पुण्णभद	द्वि॰ १४५, तृ॰ १७९, तृ॰ ३२६.	ं संवरण	त्∘ २≬४.
गुणसिल उ	ra १३, तृष ३८, <b>३</b> ६, ८९, १९८. े	पुष्फवसिया	प्र॰ २८०.	N411	S. 1400
चंदीवतरण	तृ० २५४.	बहुसाल	नु० १६२.	तहसंबदण (उथान)	तृ० २२९, २३६.

# परिशिष्ट ४

#### अन्यतीर्थिक अने तापसो.

अग्गियेसायण (गोशालकविष्य) तृ	• ३८८.   ( क <b>लंद गोशालक</b> की	प्यः )	वेसियायण (बालतपस्वी)	तृ० ३७३.
अच् <b>छर्</b> ,,	,, क्षिणयार	तृ० ३८८.	साण (गोशास्त्रकशिप्य)	तृ॰ ३८८.
	,, कालोदाइ	तृ० ३६, ३८, च॰ ९६.	सेलवालय	तृ• ३६.
	!०३६ गृह्मा <del>ल</del>	द्वि० ५५.	सेलोदाई	हु∙ ३६, च∙ ६६.
<b>अज्ञ</b> तिथाया प्रव २०४, द्वि० १६५, ३४	३,३४५, गोसाल	₹ <i>९५</i> .	<b>सुहत्यि</b>	स्" <b>१६</b> . य-३६
च । ३३, ३		तृ∘ ३६.	सेवालीदाइ	सृ्¤ ३६. च~३६
अयंपुल (आजीविकोपासक ) तृ०३९८.		तृ० ३६.	ं संख्यालय   / -ं <del>।</del>	तृ॰ ३६. स्टब्स्टिक्टरेट ३६५
<b>उदय</b> तृष् ३६.	े पूरण ( तापस )	द्वि ७५५.	हालाहला (कुंभकारी गोद	।।लक्षायका ) तुः २६७-

# परिशिष्ट ५

### साधु अने साध्वी.

महावीर	ጃ® ግሪ.	सञ्चाणुभूति	तृ० ३८४.	मेहिल	प्र॰ २८०.
अभिगभूद	द्वि० ३, १४.	सुण <b>क्खन्त</b>	तृ॰ ३८४.	कालियपुरा	प्र= २८०,
इंदभूइ (गोवम)	प्रव ३३, द्वि १०५, १७८.	<b>बीह</b>	तृ० ३९२.	केसिसामि	স্ভ ২৬৪.
बायुभूद्	द्वि० १४, २०.	सिव (राजर्षि)	तृ० २२१, २३४.		
<b>मंडियपुत्त</b>	द्वि॰ ७३.	<b>उस</b> भ <b>दत्त</b>	तृ० ९६२.	पिंगलय	प्र∘ २३१.
रोह	प्र॰ १६०.	जमाडि	तृ० ९६५.	उदायण ( राजर्षि )	तृ∘ ३२६.
<b>कु</b> रदस्तपुत्त	द्वि० २१.	संदय	प्र०२३१.	) अञ्चवेचाणंदा	तृ० १६५.
णारयपुत्त	द्वि० २३१.	<b>काणंदरिक्सय</b>	प्रव २८०.		
तीसय	ট্রি॰ ৭৩.	कालासबैसियपुत्त	प्र• २०६.	अजबंदणा	तृ० ९६५.
नियंटिपुत्त	द्विं• २३९.	कासव	되= २८=.	अ <b>इगुल</b>	द्वि० १७६.

#### भगवतीसूत्रमां आवेला साक्षीरूपे प्रन्योना नाम.

# परिशिष्ट ६

## आवक अने आविका.

<b>श</b> ्व	· 6.	ঘ ৽	<b>ጀ</b> ∘	स ∘	ā.
े इसिमद्देश के १०१०	. तु॰ ५४५.	रेवती	तृ० ३९२.	कृणि य	त्∘ १∘.
्षंख 🥕	~ तृ व्यपर, देपत.	सुदंसण	त्० २३४.	सहस्साणीय	तृ० १५७.
वोक्ख़िल	तृ० २५३.	पभावइ (उदायनस	य पद्धराङ्गी) तृष् २३६.	सयाणीय	,,
चेडग	तृष् <b>र्</b> षणः	उपला	तृ० २५ <b>३</b> . च्या २५	सिवभद्	 तु॰ २ <b>१</b> १.
<b>भभि</b> ति (उदायनपुत्र) भम्मड (परिवाजक)	) নূ <b>ু 1়ুহ্.</b> নূুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুুু	मिगाव <b>इ</b> जयंती	तु∘ २५७. तु∘ २५७.	बल	तृ∘ २१६.
सेणिय (राजा)	प्र- १३.		पद्दराज्ञी ) तृ० १३.	धारिणी	तृ∘ २३१.

# परिशिष्ट ७

### भगवतीसूत्रमां साक्षीरूपे आवेला ग्रन्थोना नाम.

अणुओगदार	ब्रि॰ १८३.	जीवाभिगम प्रश्रद्भ, द्वि०२०८,   रायप्पसेणह्व द्वि०२३, तृ०३७,	44.
अंतकिरियापयय (प्रज्ञापना	) ጃ፣ የ፡፡፡	रु॰ १६, १७, २०६, २६१, वर्कतिपय (प्रज्ञापना) प्र॰ २२१-	
भाहारउद्देसअ ( प्रज्ञापना )	प्र॰ ५३.	ठाणपद (प्रज्ञापना) प्र॰ २९५. पण्णवणा प्र॰ ५३, द्वि॰ ६७, २६१,	
इंदीयउद्देसअ (प्रज्ञापना)	प्र०२६७.	१३३, १३५, वेब्र्स (जीवाभिगम) प्रव २६५.	
<b>अं</b> दुदीवपन्नत्ति	तृ॰ १२५.	परियारणापय (पञ्चवणा ) प्र० १९९. सिद्धगंडिया (जीवाभिगम ) प्र० २९५.	



